नई किताब

चाइना टूडे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से वेश्यापन, भिखमंगी और बेरोज़गारी को ख़त्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिखमंगे से अन्नदाता बन गया. किस तरह अमरीका की नाकेबन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्दे और कल कारख़ाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया. किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत ख़ोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी ख़त्म की, देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया, वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, एक तिरंगी और तीस एकरंगी तसवीरें, दो रंगीन नक़्शों के साथ—दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 15 शिलिंग.

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये.

मिलने का पता—

मैनेजर, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

چائنا ٹوڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے۔

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہکر کیا کیا دیکھا اور آج کا چین کیسا ہے، کس طرح وہاں سے ویشیاپن، بھکمنگی اور بےروزگاری کو ختم کیا گیا، کس طرح وہاں کے بےزمین کروڑوں کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی قانون سے چین کیسے بھکمنگے سے ان داتا بن گیا، کس طرح امریکہ کی ناکےبندی کے باوجود اس نے اپنے دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو ... بنا لیا، کس طرح اپنے تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر انہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی، کس طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی، کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا کے تین اصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری، کام چوری اور سینہ زوری ختم کی، دیش کی آرتھک سنگٹھن کو ٹھیک کیا، وغیرہ وغیرہ۔

اگر آپ وستار کے ساتھ ان سوالوں کا جواب پانا چاہتے اور یہ جاننا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملے گی۔ ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے۔

700 سے زیادہ صفحے، بڑھیا کاغذ، کپڑے کی جلد، ایک ترنگی اور تیس یک رنگی تصویریں، دو رنگین نقشوں کے ساتھ—دام صرف ساڑھے سات روپئے یا 15 شلنگ۔

اپنے یہاں کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھیے۔

ملنے کا پتہ—

منیجر، نیا ہند، 145، مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ram... at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना ार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों ा छापना.

पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में का मेल बढ़ाना

—:०:—

ोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; ्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल ावरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; —पं० सुन्दरलाल.

ावरनिंग बाडी के और मेम्बर—

० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम का, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम ालीवाल.

ी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

:—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया े पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम े.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لیکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی. جی. کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے –

سندرلال

سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی'

145' مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے .

गांधी बाबा

लेखक—कुदसिया जैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह सचित्र किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की सच्ची और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि मायें अपने बच्चों को बड़ों के जीवन चरित्र कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम कुदसिया जैदी, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी भाषा में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का मज़ा भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (कुदसिया जैदी ने) यह छोटी सी किताब अपने दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्व की और प्यारी चीज़ है... मुझे खुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे कागज पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, [illegible] पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ्ती की मज़बूत [illegible] केवल दो रुपए.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

दो शब्द—महात्मा भगवानदीन

[illegible] के भू-दान-यज्ञ से आज सारे देश [illegible] इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान [illegible] और कैसे शुरू हुआ और इसका [illegible] [illegible] हाथ मिलता [illegible] [illegible] है, दाम 25, नये पैसे [illegible]

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ سچتر کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی سچی اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو بڑوں کی جیونی کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ، اہنسا، پریم کا اپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اٹھانے والے اپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "اُنہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب اپنے دل سے لکھی ہے. وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے... مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، [illegible] پر سندر رنگین کور اور دفتی کی [illegible] مول دو روپیہ.

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

[illegible]

[illegible]

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायेगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा जी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े..."

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی . پوری جانکاری کے لئے لکھئے .

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا .

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا .

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انووادت .

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے . بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے .

آسان بامحاورہ بھاشا . رایل اٹھ پیجی بڑا سائز . لگ بھگ چار سو پنے . کپڑے کی سندر جلد . قیمت کیول ساڑھے سات روپئے .

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے . سی . کمارپا .

انوادک—سریش رام بھائی .

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری، بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے .

مہاتما جی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

ملنے کا پتہ—

منیجر، 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد .

अंगरेज़ी को निकाल बाहर करने का एक ही अचूक नुसखा है और वह है हिन्दुस्तानी को अपना लेना. नाम भले ही उसका हिन्दी रहे, पर उसमें वह सब लफ़्ज़ शामिल हों जो उत्तरी हिन्दुस्तान के गांव गांव में पहुँच गए हैं. और बंगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी, आसामी, तेलगू, तामिल, मलयालम सब में घुल मिल गये हों. पर चाहे वह शब्द अंगरेज़ी के हों, अरबी के हों, फ़ारसी के हों, संस्कृत के तत्सम या तद्भव हों या हिन्दुस्तान की किसी भी बोली के हों. और नए शब्द इन्हीं शब्दों की मदद से बनाये जावें. इन शब्दों का जो कोश हो वही हिन्दी कोश नाम पाए. शब्द सागर बड़े काम का साबित हो सकता है अगर उसमें आज तक के नये शब्द और शामिल कर दिये जायें.

इस नुसखे के इस्तेमाल के बाद ही जनता में वह दम आ सकता है कि वह अंगरेज़ी को राज सिंहासन से धकेल कर हिन्दी या हिन्दुस्तानी को उसकी जगह बिठा दे और अगर यह नुसखा पिये बग़ैर किसी और ने जगह ले ली तो कोई कर तो क्या सकेगा, हां, यह समझ लिया जायगा कि अभी हिन्दुस्तान का राज सिर्फ़ नाम के लिये लोकशाही है काम के लिये नहीं. —भगवानदीन

انگریزی کو نکال باہر کرنے کا ایک ہی اچوک نسخہ ہے اور وہ ہے ہندستانی کو اپنا لینا. نام بھلے ہی اُس کا ہندی رہے' پر اس میں وہ سب لفظ شامل ہوں جو اتری ہندستان کے گاؤں گاؤں میں پہنچ گئے ہیں . اور بنگلہ' مراٹھی' گجراتی' پنجابی'، آسامی' تیلگو' تامل' ملیالم سب میں گھل مل گئے ہیں . پر چاہے وہ شبد انگریزی کے ہوں' عربی کے ہوں فارسی کے ہوں' سنسکرت کے تتسم یا تدبھو ہوں یا ہندستان کی کسی بھی بولی کے ہوں . اور نئے شبد انہیں شبدوں کی مدد سے بنائے جائیں. ان شبدوں کا جو کوش ہو وہی ہندی کوش نام پائے . شبد ساگر بڑے کام کا ثابت ہوسکتا ہے اگر اس میں آج تک کے نئے شبد اور شامل کردئے جائیں .

اس نسخہ کے استعمال کے بعد ہی جنتا میں وہ دم آ سکتا ہے کہ وہ انگریزی کو راج سنگھاسن سے دھکیل کر ہندی یا ہندستانی کو اس کی جگہ بٹھا دے اور اگر یہ نسخہ پئے بغیر کسی اور نے جگہ لے لی تو کوئی کر تو کیا سکیگا' ہاں' یہ سمجھ لیا جائیگا کہ ابھی ہندستان کا راج صرف نام کے لئے لوک شاہی ہے کام کے لئے نہیں .

—بھگوان دین

'नया हिन्द' का ज़मींदारी नम्बर

हमारे पाठकों और प्रेमियों को जान कर यह ख़ुशी होगी कि हमारा दिसम्बर का परचा ग़ैर मामूली रहेगा और 'ज़मींदारी नम्बर' होगा. ज़मीन का सवाल आज हमारे देश के सब से बड़े और अहम सवालों में से है. इस सवाल को हल करने के लिये हमारे सूबे की सरकार ने और हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों की सरकारों ने भी कम व बेश कुछ क़दम उठाने की कोशिश की है. इस नम्बर में यू.पी. के ज़मींदारी अन्त क़ानून पर तफ़सील के साथ विचार किया हुआ एक लेख दिया जा रहा है. इसके अलावा मध्य प्रदेश में इस सम्बन्ध में जो कुछ हुआ है उसकी भी झलक रहेगी. साथ ही साथ ज़मीन के मामले में कश्मीर और हमारे पड़ोसी मुल्क चीन ने जो इनक़लाबी तबदीलियां की हैं उन पर भी रोशनी डालने की कोशिश की जायगी. उम्मीद है कि ज़मीन के सवाल पर अपने नम्बर में काफ़ी खुल कर और बारीकियों में जा कर विचार किया जायगा. हमें यक़ीन है आज का राजकाज और माली मामलों में दिलचस्पी रखने वाले विद्यार्थियों, मास्टरों और जानकारों के लिये यह नम्बर ख़ास काम का साबित हो सकेगा. हमें पूरा भरोसा है कि 'नया हिन्द' के प्रेमी इसका दिल से स्वागत करेंगे. —एडीटर

'نیا ہند' کا زمینداری نمبر

ہمارے پاٹھکوں اور پریمیوں کو جان کر یہ خوشی ہوگی کہ ہمارا دسمبر کا پرچہ غیر معمولی رہیگا اور 'زمینداری نمبر' ہوگا . زمین کا سوال آج ہمارے دیش کے سب سے بڑے اور اہم سوالوں میں سے ہے . اس سوال کو حل کرنے کے لئے ہمارے صوبے کی سرکار نے اور ہندستان کے دوسرے صوبوں کی سرکاروں نے بھی کم و بیش کچھ قدم اٹھانے کی کوشش کی ہے . اس نمبر میں یو . پی . کے زمینداری انت قانون پر تفصیل کے ساتھ وچار کیا ہوا ایک لیکھ دیا جا رہا ہے . اس کے علاوہ مدھیہ پردیش میں اس سمبندھ میں جو کچھ ہوا ہے اُس کی بھی جھلک رہیگی . ساتھ ہی ساتھ زمین کے معاملے میں کشمیر اور ہمارے پڑوسی ملک چین نے جو انقلابی تبدیلیاں کی ہیں اُن پر بھی روشنی ڈالنے کی کوشش کی جائیگی . اُمید ہے کہ زمین کے سوال پر اپنے نمبر میں کافی کھل کر اور باریکیوں میں جاکر وچار کیا جائیگا . ہمیں یقین ہے کہ آج کا راج کاج اور مالی معاملوں میں دلچسپی رکھنے والے ودیارتھیوں' ماسٹروں اور جانکاروں کے یہ نمبر خاص کام کا ثابت ہوسکیگا . ہمیں پورا بھروسہ ہے کہ 'نیا ہند' کے پریمی اس کا دل سے سواگت کرینگے .

—ایڈیٹر

बोल कर कभी बड़े नहीं हो सकते. जिस तरह उनका खाना, कपड़ा, मकान और सवारी जनता से एक दम अलग क़िस्म की होती है वैसी ही उनकी बोली अलग क़िस्म की होनी चाहिये. तभी वह जनता के लिये हमेशा की चीज़ बन सकते हैं और तभी वह उन पर रोब जमा सकते हैं इसलिये हिन्दी, संस्कृत के शब्दों को उलटे सीधे तरीक़े से अपना कर, हिन्दुस्तानी से अलग खड़ा होना चाहती है और राज भाषा बनना चाहती है. उरदू को अगर मौक़ा मिलता तो वह फ़ारसी अरबी के शब्द अपना कर वैसा तमाशा दिखाती और पाकिस्तान में वह वैसा कर भी रही है. आज, अंगरेज़ी का पेड़ जितना रस हिन्दी उरदू के झगड़े से पा रहा है उतना और चीज़ों से नहीं.

यह सब को मालूम है कि उरदू हर तरह हिन्दुस्तानी है क्योंकि हिन्दुस्तान के सिवा वह और कहीं नहीं बोली जाती और हिन्दुस्तान भर में थोड़ी बहुत समझी भी जाती है, पर आज अगर ईश्वर ख़ुद आ कर हिन्दी वालों के सामने यह सवाल रख दे, कि बस दो बोलियों में से, यानी अंगरेज़ी और उरदू में से, सिर्फ़ एक बोली हिन्दुस्तान में रहेगी, बोलो, कौन सी चाहते हो? तो सब हिन्दी वाले एक ज़बान हो कर पुकार उठेंगे, भगवान, अंगरेज़ी! भगवान, अंगरेज़ी! और अगर यही बात उरदू वालों से पूछी जाये कि दो बोलियां, अंगरेज़ी और हिन्दी में से हिन्दुस्तान में सिर्फ़ एक बोली रहेगी तो सब उरदू वाले एक ज़बान पुकार उठेंगे, या ख़ुदा, अंगरेज़ी! या ख़ुदा, अंगरेज़ी! अब कहिये अंगरेज़ी यहां से कैसे जाये!

एक थे हमारे बुज़ुर्ग लोकमान्य तिलक जो खुले दिल मुसलमानों के साथ फ़ैसला किया करते थे कि तुम अस्सी नव्वे फ़ी सदी जितना मांगो लो, किसी तरह स्वराज्य कमा कर लाओ. यही किया हमारे बुज़ुर्ग देशबन्धु दास ने, और इसी क़िस्म के थे हमारे बापू.

हिन्दी और उरदू के नाम पर जब जब शोर मचता है तब तब अंगरेज़ी की जड़ें नीचे नीचे चली जाती हैं. दिल्ली में शायद ही किसी अफ़सर का लड़का ऐसा मिल सकेगा जिससे अगर यह पूछा जाये कि 'दो अट्ठे' कितने होते हैं और वह 'सोलह' जवाब दे. हां, अगर आप उससे अंगरेज़ी में पूछेंगे 'एट टाईम्स टू' कितने होते हैं, तो वह झट 'सिक्सटीन' बोल देगा, क्योंकि वह उस स्कूल में पढ़ता है जिन्हें 'अमरीकी डालर' चला रहा है और 'बरतानी पौंड' पढ़ा रहा है और वही स्कूल सब से अच्छे स्कूल माने जाते हैं! *अंगरेज़ियत की घोड़ी को बगटुट दौड़ने दे कर अंगरेज़ी को रोकने की कोशिश करना हंसी की बात नहीं तो क्या है! जो देश शादी के बुलावे अंगरेज़ी में भेजता है, वह देश अंगरेज़ी का निकाल बाहर करने की बात कहे, उसे हंसी की बात न समझी जाये तो क्या समझी जाये!*

بول کر کبھی بڑے نہیں ہوسکتے . جس طرح ان کا کھانا، کپڑا، مکان اور سواری جنتا سے ایک دم الگ قسم کی ہوتی ہے ویسی ہی ان کی بولی الگ قسم کی ہونی چاہئے. تبھی وہ جنتا کے لئے ہمیشہ کی چیز بن سکتے ہیں اور تبھی وہ ان پر رعب جما سکتے ہیں . اس لئے ہندی، سنسکرت کے شبدوں کو الٹے سیدھے طریقے سے اپناکر، ہندستانی سے الگ کھڑا ہونا چاہتی ہے اور راج بھاشا بننا چاہتی ہے . اردو کو اگر موقع ملتا تو وہ فارسی عربی کے شبد اپناکر ویسا تماشا دکھاتی اور پاکستان میں وہ ویسا کر بھی رہی ہے. آج، انگریزی کا پیڑ جتنا رس ہندی اردو کے جھگڑے سے پا رہا ہے اتنا اور چیزوں سے نہیں .

یہ سب کو معلوم ہے کہ اردو ہر طرح ہندستانی ہے کیونکہ ہندستان کے سوا وہ اور کہیں نہیں بولی جاتی اور ہندستان بھر میں تھوڑی بہت سمجھی بھی جاتی ہے، پر آج اگر ایشور خود آکر ہندی والوں کے سامنے یہ سوال رکھ دے، کہ بس دو بولیوں میں سے، یعنی انگریزی اور اردو میں سے، صرف ایک بولی ہندستان میں رہےگی، بولو، کونسی چاہتے ہو؟ تو سب ہندی والے ایک زبان ہوکر پکار اٹھیںگے، بھگوان، انگریزی! بھگوان، انگریزی! اور اگر یہی بات اردو والوں سے پوچھی جائے کہ دو بولیاں، انگریزی اور ہندی میں سے ہندستان میں صرف ایک بولی رہےگی تو سب اردو والے ایک زبان پکار اٹھیںگے، یا خدا، انگریزی! یا خدا، انگریزی! اب کہئے انگریزی یہاں سے کیسے جائے!

ایک تھے ہمارے بزرگ لوکمانیہ تلک جو کھلے دل مسلمانوں کے ساتھ فیصلہ کیا کرتے تھے کہ تم اسی نوے فیصدی جتنا مانگو لو، کسی طرح سوراجیہ کما کر لاؤ. یہی کیا ہمارے بزرگ دیش بندھو داس نے، اور اسی قسم کے تھے ہمارے باپو .

ہندی اردو کے نام پر جب جب شور مچتا ہے تب تب انگریزی کی جڑیں نیچے نیچے چلی جاتی ہیں . دلی میں شاید ہی کسی افسر کا لڑکا ایسا مل سکےگا جس سے اگر یہ پوچھا جائے کہ 'دو اٹھے' کتنے ہوتے ہیں اور وہ 'سولہ' جواب دے. ہاں، اگر آپ اس سے انگریزی میں یہ پوچھیںگے 'ایٹ ٹائمس ٹو' کتنے ہوتے ہیں، تو وہ جھٹ 'سکسٹین' بول دیگا، کیونکہ وہ اس اسکول میں پڑھتا ہے جنہیں 'امریکی ڈالر' چلا رہا ہے اور 'برطانی پونڈ' پڑھا رہا ہے اور وہی اسکول سب سے اچھے اسکول مانے جاتے ہیں! *انگریزیت کی گھوڑی کو بگٹٹ دوڑنے دیکر انگریزی کو روکنے کی کوشش کرنا ہنسی کی بات نہیں تو کیا ہے! جو دیش شادی کے بلاوے انگریزی میں بھیجتا ہے، وہ دیش انگریزی کو نکال باہر کرنے کی بات کہے، اسے ہنسی کی بات نہ سمجھی جائے تو کیا سمجھی جائے!*

[illegible] 'نیا ہند' [illegible]

उन्हीं के मुंह से निकल सकती है जो यह कहा करते थे, 'अंगरेजों के बिना हिन्दुस्तानी राज नहीं चल सकता'.

अंगरेज़ियत के भूत ने हिन्दुस्तानियों का पीछा, डेढ़ सौ बरस में, सिर्फ़ एक बरस के लिये छोड़ा और वह बरस था सन 1921. उसी साल हिन्दुस्तानियों का मोह अंगरेज़ी से कम हुआ. उसी साल हिन्दुस्तानियों को यह पता चला कि अंगरेज़ी का नशा शराब के नशे से हज़ार गुना तेज़ होता है. वह आदमी को नामर्द बना कर छोड़ता है. गांधीजी ने इसी वास्ते सबसे पहले अंगरेज़ी-तालीमी-शराब-ख़ानों पर छापा मारा और जहां तक भी बन सका जिस कालेज पर उनकी नज़र पड़ी उसको पलक मारते वीराने में तबदील कर दिया. सन 1921 में अंगरेज़ी कालेज और अंगरेज़ी कचहरियों में उल्लू बोलते थे. उन दिनों अगर हम गांधीजी के शब्दों में पहली जनवरी सन 1922 को आज़ाद हो गए होते तो हुकूमत की बोली हिन्दुस्तानी और ख़ालिस हिन्दुस्तानी होती और अंगरेज़ी हिन्दुस्तान के सर से इस तरह दूर हो गई होती जिस तरह गधे के सिर से सींग.

वह होता इन्क़लाब ! वह होती क्रान्ति ! इन्क़लाब और क्रान्ति आदमी में इतनी क़ाबलियत पैदा कर देती हैं कि दस बारह बरस का बच्चा भी अपना कर्तव्य समझने लगता है और इतना इन्साफ़ पसंद बन जाता है जितना हाई-कोर्ट का बूढ़ा जज भी नहीं होता. चीन ने जो जादू इन्क़लाब के ज़रिये दो ढाई बरस में किया है उससे कहीं बढ़ कर जादू हिन्दुस्तान बारह महीने में कर दिखाता, पर वैसा न होना था, न हुआ.

हिन्दुस्तान में सौ में एक भी आज नहीं मिल सकता जो यह चाहता हो कि अंगरेज़ी हमारे सर पर सवार रहे, लेकिन सरकारी मशीन का पुर्ज़ा बन कर जाने अनजाने 99 फ़ी सदी यही चाहने लग जाते हैं कि अंगरेज़ी बनी रहे तो अच्छा.

सांप घर में निकला और हम उसके पीछे दौड़े यह बात किसी हद तक ठीक हो सकती है क्योंकि उसके काटने से आदमी मर जाता है. पर जब हम वफ़ादार कुत्ते के पीछे भी लाठी ले कर दौड़ते हैं तब यही कहना पड़ेगा कि यह हमारा स्वभाव ही है. हम किसी से नफ़रत करते हैं किसी से रग़बत. इसी तरह जो सरकारी मशीन का पुर्ज़ा बन जाता है वह अपनी क़िस्म का अलग आदमी बन जाता है. जाने अनजाने, वह अपनी ज़िन्दगी इसी में समझने लग जाता है कि जनता आपस में लड़ती भिड़ती रहे और वह उनका इन्साफ़ चुकाता रहे. अंगरेज़ी का आज यही हाल है. वह अनजाने यही चाहती है कि हिन्दी उरदू लड़ें और वह उनका इन्साफ़ चुकाती रहे.

हिन्दुस्तानी से अलग हिन्दी कोई बोली नहीं. हिन्दुस्तानी है जनता की बोली. जो हुकूमत करते हैं वह जनता की बोली

ہیں کے منہ سے نکل سکتی ہے جو یہ کہا کرتے تھے'
نگریزوں کے بنا ہندستانی راج نہیں چل سکتا .

انگریزیت کے بھوت نے ہندستانیوں کا پیچھا' ڈیڑھ سو برس میں' صرف ایک برس کے لئے چھوڑا اور وہ برس تھا سن 1921. اسی سال ہندستانیوں کا موہ انگریزی سے کم ہوا . اسی سال ہندستانیوں کو یہ پتہ چلا کہ انگریزی کا نشہ شراب کے نشے سے ہزار گنا تیز ہوتا ہے . وہ آدمی کو نامرد بنا کر چھوڑتا ہے . گاندھی جی نے اسی واسطے سب سے پہلے انگریزی تعلیمی شراب خانوں پر چھاپا مارا اور جہاں تک بھی بن سکا جس کالج پر اُن کی نظر پڑی اس کو پلک مارتے ویرانے میں تبدیل کر دیا . سن 1921 میں انگریزی کالج اور انگریزی کچہریوں میں الو بولتے تھے . ان دنوں اگر ہم گاندھی جی کے شبدوں میں پہلی جنوری سن 1922 کو آزاد ہوگئے ہوتے تو حکومت کی بولی ہندستانی اور خالص ہندستانی ہوتی اور انگریزی ہندستان کے سر سے اس طرح دور ہوگئی ہوتی جس طرح گدھے کے سر سے سینگ .

وہ ہوتا انقلاب ! وہ ہوتی کرانتی ! انقلاب اور کرانتی آدمی میں اتنی قابلیت پیدا کر دیتی ہیں کہ دس بارہ برس کا بچہ بھی اپنا کرتویہ سمجھنے لگتا ہے اور اتنا انصاف پسند بن جاتا ہے جتنا ہائی کورٹ کا بوڑھا جج بھی نہیں ہوتا . چین نے جو جادو انقلاب کے ذریعے دو ڈھائی برس میں کیا ہے اس سے کہیں بڑھ کر جادو ہندستان بارہ مہینے میں کر دکھاتا' پر ویسا نہ ہونا تھا' نہ ہوا .

ہندستان میں سو میں ایک بھی آج نہیں مل سکتا جو یہ چاہتا ہو کہ انگریزی ہمارے سر پر سوار رہے' لیکن سرکاری مشین کا پرزہ بن کر جانے انجانے 99 فیصدی یہی چاہنے لگ جاتے ہیں کہ انگریزی بنی رہے تو اچھا .

سانپ گھر میں نکلا اور ہم اس کے پیچھے دوڑے یہ بات کسی حد تک ٹھیک ہوسکتی ہے کیونکہ اس کے کاٹنے سے آدمی مر جاتا ہے . پر جب ہم وفادار کتے کے پیچھے بھی لاٹھی لیکر دوڑتے ہیں تب بھی کہنا پڑیگا کہ یہ ہمارا سوبھاو ہی ہے . ہم کسی سے نفرت کرتے ہیں کسی سے رغبت . اسی طرح جو سرکاری مشین کا پرزہ بن جاتا ہے وہ اپنی قسم کا الگ آدمی بن جاتا ہے . جانے انجانے' وہ اپنی زندگی اسی میں سمجھنے لگ جاتا ہے کہ جنتا آپس میں لڑتی بھڑتی رہے اور وہ ان کا انصاف چکاتا رہے . انگریزی کا آج یہی حال ہے . وہ جانے انجانے یہی چاہتی ہے کہ ہندی اردو لڑیں اور وہ ان کا انصاف چکاتی رہے .

ہندستانی سے الگ ہندی کوئی بولی نہیں. ہندستانی ہے جنتا کی بولی. جو حکومت کرتے ہیں وہ جنتا کی بولی

ज़ियादा या सब सदस्य इस बात पर राजी हो जायें कि अंगरेजी की जगह हिन्दी ले ले तो क्या आप हिन्दी को अपनाने के लिये राजी हो जायेंगे ? जवाहरलाल जी ने एकदम जवाब दिया, बेशक उनका यह जवाब बनावटी न था. सच्चे जी से निकला हुआ था. अभी उनके जवाब की गूंज लौट कर न आई थी कि मौलाना बोल उठे कि अगर संसद पास कर दे तब भी हम पांच बरस तक अंगरेजी नहीं छोड़ेंगे. इस जवाब में भी पूरी सचाई थी. फ़र्क़ इतना था कि मौलाना अंगरेजी के इतने माहिर नहीं जितने जवाहरलाल.

जो संस्कृत नहीं जानते, जिन्होंने खुले वेद के कभी दर्शन नहीं किये वह वेद की जितनी दुहाई देते हैं, उतने वह नहीं, जो वेद के पूरे माहिर होते हैं. यही हाल अंगरेजी का है. जो अंगरेजी को नहीं जानते या कम जानते हैं वह अंगरेजी पर इतने लट्टू हैं जितने वह नहीं जो अंगरेजी के माहिर हैं. गांधीजी अंगरेजी के माहिर माने जाते हैं, पर वह अंगरेजी को छोड़, उस हिन्दुस्तानी से कभी अंगरेजी में नहीं बोलते थे जो हिन्दुस्तानी समझता हो. गांधीजी बोली का रस गुजराती और हिन्दी में लेते थे, अंगरेजी को तो उन्होंने राजकाजी काम के लिये उठा रखा था.

अंगरेज जब यहां आये तो उन को एक बोली ऐसी ज़रूर मिली जो सारे हिन्दुस्तान में समझी जाती थी. उसका नाम भी मिला. वह था हिन्दुस्तानी. जब अंगरेजों ने कलकत्ता में फ़ोर्ट विलियम कालेज की नींव डाली तो उसके कोर्स में शामिल किया और बोलियों के साथ साथ हिन्दुस्तानी को. उस फ़ोर्ट विलियम कालेज की मोहर आज कोई उठा कर देख सकता है और पढ़ सकता है. उसमें हिन्दुस्तानी में 'किताब' शब्द लिखा है और बंगला में उसी को 'पुस्तक'.

उस समय अंगरेजों ने जो अंगरेजी कोश बनाया उसका नाम हिन्दुस्तानी-अंगरेजी और अंगरेजी-हिन्दुस्तानी रखा. वह करते भी क्या ! हिन्दी उरदू जैसी दो बोला उन दिनों रही भले हों, पर उनको इतनी बुज़ुर्गी नहीं मिल पाई थी कि वह सारे हिन्दुस्तान में फैल चुकी हों. एक, शायद, उन दिनों ब्रज में रास रचा करती थी और दूसरी लखनऊ दिल्ली में तराने सुनाया करती थी. जो हिन्दुस्तान भर में आज़ादी के साथ हवा की तरह बहती थी वह थी हिन्दुस्तानी और उसको अपनाये बिना अंगरेज न यहां ब्योपार कर सकते थे और न अपने पांव जमा सकते थे.

यह बात डेढ़ सौ बरस से ज़ियादा पुरानी नहीं है. इन डेढ़ सौ बरस में हिन्दुस्तानी घटी नहीं है, बेहद बढ़ी है जब डेढ़ सौ बरस पहले उसमें हुकूमत चलती थी और शान के साथ चलती थी तो क्या आज नहीं चल सकती ? 'अंगरेजी के बिना हिन्दुस्तान का राज नहीं चल सकता' ऐसी बात

زیادہ یا سب سدسیہ اس بات پر راضی ہو جائیں کہ انگریزی کی جگہ ہندی لے لے تو کیا آپ ہندی کو اپنانے کے لئے راضی ہوجائیں گے؟ جواہر لال جی نے ایکدم جواب دیا' بیشک . ان کا یہ جواب بناوٹی نہ تھا. سچے جی سے نکلا ہوا تھا . ابھی ان کے جواب کی گونج لوٹ کر نہ آئی تھی کہ مولانا بول اٹھے کہ اگر سنسد پاس کر دے تب بھی ہم پانچ برس تک انگریزی نہیں چھوڑیں گے . اس جواب میں بھی پوری سچائی تھی. فرق اتنا تھا کہ مولانا انگریزی کے اتنے ماہر نہیں جتنے جواہرلال .

جو سنسکرت نہیں جانتے' جنھوں نے کھلے وید کے کبھی درشن نہیں کئے وہ وید کی جتنی دہائی دیتے ہیں' اتنے وہ نہیں' جو وید کے پورے ماہر ہوتے ہیں . یہی حال انگریزی کا ہے . جو انگریزی کو نہیں جانتے یا کم جانتے ہیں وہ انگریزی پر اتنے لٹو ہیں جتنے وہ نہیں جو انگریزی کے ماہر ہیں. گاندھی جی انگریزی کے ماہر مانے جاتے ہیں' پر وہ' انگریزی کو چھوڑ' اس ہندستانی سے کبھی انگریزی میں نہیں بولتے تھے' جو ہندستانی سمجھتا ہو. گاندھی جی بولی کا رس گجراتی اور ہندی میں لیتے تھے' انگریزی کو تو انھوں نے راج کاجی کام کے لئے اٹھا رکھا تھا .

انگریز جب یہاں آئے تو ان کو ایک بولی ایسی ضرور ملی جو سارے ہندستان میں سمجھی جاتی تھی . اس کا نام بھی ملا . وہ تھا ہندستانی . جب انگریزوں نے کلکتہ میں فورٹ ولیم کالج کی نیو ڈالی تو اس کے کورس میں شامل کیا اور بولیوں کے ساتھ ساتھ ہندستانی کو . اس فورٹ ولیم کالج کی موہر آج کوئی اٹھا کر دیکھ سکتا ہے اور پڑھ سکتا ہے . اس میں ہندستانی میں ' کتاب ' شبد لکھا ہے اور بنگلہ میں اسی کو ' پستک '.

اس سمے انگریزوں نے جو انگریزی کوش بنایا اس کا نام ہندستانی انگریزی اور انگریزی ہندستانی رکھا . وہ کرتے بھی کیا ؟ ہندی اردو جیسی دو بولی ان دنوں رہی بھلے ہوں' پر ان کو اتنی بزرگی نہیں مل پائی تھی کہ وہ سارے ہندستان میں پھیل چکی ہوں . ایک' شاید' ان دنوں برج میں راس رچا کرتی تھی اور دوسری لکھنؤ دلی میں ترانے سنایا کرتی تھی. جو ہندستان بھر میں آزادی کے ساتھ ہوا کی طرح بہتی تھی وہ تھی ہندستانی اور اس کو اپنائے بنا انگریز نہ یہاں ویاپار کر سکتے تھے اور نہ اپنے پاؤں جما سکتے تھے .

یہ بات ڈیڑھ سو برس سے زیادہ پرانی نہیں ہے . ان ڈیڑھ سو برس میں ہندستانی گھٹی نہیں' بے حد بڑھی ہے . جب ڈیڑھ سو برس پہلے اس میں حکومت چلتی تھی اور شان کے ساتھ چلتی تھی تو کیا آج نہیں چل سکتی ؟ انگریزی کے بنا ہندستان کا راج نہیں چل سکتا' ایسی بات

पहुँचा हुआ योगी ही हो सकता था. यह वही मुक़ाम है जहां से खड़े हो कर एक मुसलमान सूफ़ी ने कहा था :—

दर मज़हबे आशिक़ाने यक रंग
इबलीस व मुहम्मद अस्त यक संग

—ग़ौस अली शाह क़लन्दर क़ादरी

मैं कहां से कहां चला गया. जो आदमी अमरीका के प्रेज़ीडेन्ट से कह सकता था :—

"Ram is kind enough to bestow on thee, my child ! these few papers."

जो पहाड़ पर से धड़ाधड़ पत्थरों के टूट टूट कर सर पर गिरने पर कह सकता था :—"इस आफ़त की भी जान मैं ही तो हूं !", जो हिमालय के तंग दर्रे में रीछ के जोड़े को जाते हुए देख कर, दोनों के ऊपर हाथ रखते हुए, दोनों से प्यार के साथ रगड़ते हुए बीच से निकल जा सकता था, जो गा सकता था—"बादशाह दुनिया के हैं मोहरे मेरी शतरंज के", जो मौत की बाबत कह सकता था, "मौत को मौत न आ जायगी, क़स्द मेरा जो करके आएगी !", वह सचमुच अमरत्व प्राप्त कर चुका था. स्वामी रामतीर्थ पर इस देश को और मानव समाज को नाज़ है. आपको और आप के साथियों को उनका अस्सीवां जन्म दिन मनाने के लिये मेरी हार्दिक बधाई !

12. 10. 1952 —सुन्दरलाल

अंगरेज़ी कब तक !

तब तक, जब तक कोई दूसरी ऐसी बोली उसकी जगह न ले जिसे जनता बिलकुल न समझती हो या बहुत कम समझती हो, और सरकारी नौकर अफ़सर ख़ूब समझते हों, और इने गिने वह लोग तो इस बोली में माहिर हों जिनके हाथ में राज की बागडोर हो.

यह हिन्दुस्तानी जन राज के लिये कितनी शर्म की बात है कि वह उस बोली का पीछा ही नहीं छोड़ना चाहता जिसने उसे आज़ादी के आसन से बेहद बेईमानी और ज़ुल्म के साथ ढकेल कर ग़ुलामी के गढ़े में पटका था ! अंगरेज़ी अख़बार अंगरेज़ी का गीत गायें तो गायें, कभी कभी ज़िम्मेदार उरदू हिन्दी अख़बार भी यही सुर अलाप बैठते हैं कि अभी अंगरेज़ी के बने रहने में नफ़ा है ! कभी कभी ज़िम्मेदार और ग़ैर ज़िम्मेदार दोनों, रेडियो से उसी सुर में मिलती आवाज़ दुनिया भर में बिखरा देते हैं.

बापू के उठ जाने के बाद वर्धा में कांगरेसियों का एक जमाव भी हुआ. उस जमाव में जवाहरलाल जी और मौलाना आबुल कलाम आज़ाद भी मौजूद थे. हमने जवाहरलाल जी से यह सवाल पूछा, अगर संसद यानी पार्लियामेन्ट के बहुत

پہنچا ہوا یوگی ہی ہو سکتا تھا ۔ یہ وہی مقام ھے جہاں سے کھڑے ہو کر ایک مسلمان صوفی نے کہا تھا :—

در مذہب عاشقاں یک رنگ
ابلیس و محمد است یک سنگ

—غوث علی شاہ قلندر قادری

میں کہاں سے کہاں چلا گیا ۔ جو آدمی امریکہ کے پریزیڈینٹ سے کہہ سکتا تھا :—

"Ram is kind enough to bestow on thee, my child ! these few papers."

جو پہاڑ پر سے دھڑا دھڑ پتھروں کے ٹوٹ ٹوٹ کر سر پر گرنے پر کہہ سکتا تھا :—" اس آفت کی بھی جان میں ہی تو ہوں!" جو ہمالیہ کے تنگ درے میں ریچھ کے جوڑے کو جاتے ہوئے دیکھکر، دونوں کے اوپر ہاتھ رکھتے ہوئے دونوں سے پیار کے ساتھ رگڑتے ہوئے بیچ سے نکل جا سکتا تھا، جو گا سکتا تھا—" بادشاہ دنیا کے ھیں مہرے میری شطرنج کے" جو موت کی بابت کہہ سکتا تھا، "موت کو موت نہ آجائیگی، قصد میرا جو کرکے آئیگی!" وہ سچ مچ امرتو پراپت کر چکا تھا. سوامی رام تیرتھ پر اس دیش کو اور مانو سماج کو ناز ھے. آپ کو اور آپ کے ساتھیوں کو ان کا اسیواں جنم دن منانے کے لئے میری هاردک بدھائی ۔

12-10-1952 —سندر لال

انگریزی کب تک !

تب تک، جب تک کوئی دوسری ایسی بولی اس کی جگہ نہ لے جسے جنتا بالکل نہ سمجھتی ہو یا بہت کم سمجھتی ہو، اور سرکاری نوکر افسر خوب سمجھتے ہوں، اور اِنے گنے وہ لوگ تو اس بولی میں ماہر ہوں جن کے ہاتھ میں راج کی باگ ڈور ہو ۔

یہ ہندستانی جن راج کے لئے کتنی شرم کی بات ھے کہ وہ اس بولی کا پیچھا ہی نہیں چھوڑنا چاہتا جس نے اسے آزادی کے آسن سے بے حد بے ایمانی اور ظلم کے ساتھ دھکیل کر غلامی کے گڈھے میں پٹکا تھا ! انگریزی اخبار انگریزی کا گیت گائیں تو گائیں، کبھی کبھی ذمہ دار اردو ہندی اخبار بھی یہی سُر الاپ بیٹھتے ہیں کہ ابھی انگریزی کے بنے رہنے میں نفع ھے ! کبھی کبھی ذمہ دار اور غیر ذمہ دار دونوں، ریڈیو سے اسی سُر میں ملتی آواز دنیا بھر میں بکھرا دیتے ہیں ۔

باپو کے اٹھ جانے کے بعد وردھا میں کانگریسیوں کا ایک جماؤ بھی ہوا ۔ اس جماؤ میں جواہر لال جی اور مولانا ابوالکلام آزاد بھی موجود تھے ۔ ہم نے جواہر لال جی سے یہ سوال پوچھا، اگر سنسد یعنی پارلیامنٹ کے بہت

कर खड़े हो गए. पांच चार मिनट जो लोग मौजूद थे उनसे कुछ हंस हंस कर एक दो बात की, और तेज़ी के साथ घूमने निकल गए. उसके बाद मैंने फिर स्वामी राम को नहीं देखा. पर उनका वह तेज, उनके अन्दर बिजली की सी तेज़ी और तड़प मुझे हमेशा याद रहेगी.

मैं रूहानियत का मानने वाला हूँ. स्वामी राम को मैं दुनिया की ऊंची से ऊंची रूहानी हस्तियों में गिनता हूँ. वह सच्चे योगी थे. उनका उर्दू रिसाला 'अलिफ़' जिस पर लिखा रहता था—"इक्को अलिफ़ तेरे दरकार"—मैं कभी बड़े प्रेम से पढ़ा करता था. उनके ख़ास शिष्यों में मास्टर अमी चन्द, राय बहादुर बैजनाथ, नारायन स्वामी और पूरन सिंह से मेरा काफ़ी परिचय था. इसमें कोई शक नहीं कि जिन थोड़े से हिन्दुस्तानियों ने पच्छिम के अन्दर बल्कि दुनिया के अन्दर इस देश के नाम को फिर से उजागर किया और चमकाया, उनमें स्वामी राम का स्थान बहुत ऊंचा और शायद रूहानियत की निगाह से सबसे ऊंचा है.

इतनी ज़बरदस्त रूहानी हस्ती होते हुए भी, बल्कि शायद इसी वजह से क्योंकि वह इतनी ज़बरदस्त रूहानी हस्ती थे, वह रूढ़ियों के जंजाल से बिलकुल ऊपर थे. उनकी परम गति से थोड़े ही दिन पहले जब कुछ बड़े बड़े लोगों ने हिन्दुस्तान से प्लेग को भगाने के लिये हरिद्वार में एक बहुत बड़ा यज्ञ रचा और स्वामी राम को उसमें आने की दावत दी, तो स्वामी राम ने साफ़ साफ़ यह कह कर आने से इन्कार कर दिया कि देश से प्लेग को निकालने का तरीक़ा हवन नहीं है. उनकी वह दलीलें भी मुझे अच्छी तरह याद हैं. उन्होंने अपने जवाबी ख़त में पहले यज्ञ करने वालों को यह सुझाया कि जितना रुपया वह घी और सामग्री फूंकने में ख़र्च करेंगे उसके चने ख़रीद कर देश के ग़रीब "नारायनों" में बांट दें तो ज़ियादा लाभ हो. फिर साइन्स की रू से इस दलील को काटा कि इस तरह के हवन से हवा शुद्ध होती है या बीमारियों के कीड़े मरते हैं. मैं इन दलीलों की तफ़सील में यहां जाना नहीं चाहता. पर स्वामी राम के उस ख़त के आख़री शब्द एक बार पढ़ कर याद से नहीं मिट सकते. वह शब्द यह थे :—

"But, you will say we must perform the Yajna as the Shruti says we must perform it, as the Smriti says we must perform it. Damn your Shruti and damn your Smriti For God's sake give up sucking the dry bones of your Shruti ! What Ram says is right and not what Shruti says is right !"

इन शब्दों के कहने का अधिकारी स्वामी राम जैसा

کر کھڑے ہو گئے ۔ پانچ چار منٹ جو لوگ موجود تھے اُن سے کچھ ہنس ہنس کر ایک دو بات کی اور تیزی کے ساتھ گھومنے نکل گئے ۔ اس کے بعد میں نے پھر سوامی رام کو نہیں دیکھا ۔ پر اُن کا وہ تیج' ان کے اندر بجلی کی سی تیزی اور تڑپ مجھے ہمیشہ یاد رہے گی ۔

میں روحانیت کا ماننے والا ہوں ۔ سوامی رام کو میں دنیا کی اونچی سے اونچی روحانی ہستیوں میں گنتا ہوں ۔ وہ سچے یوگی تھے ۔ اُن کا اُردو رسالہ 'الف' جس پر لکھا رہتا تھا—" اکو الف تیرے درکار "—میں کبھی بڑے پریم سے پڑھا کرتا تھا ۔ اُن کے خاص شِشیوں میں ماسٹر امی چند' رائے بہادر بیج ناتھ' نارائن سوامی اور پورن سنگھ سے میرا کافی پریچے تھا ۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ جن تھوڑے سے ہندوستانیوں نے پچھم کے اندر بلکہ دنیا کے اندر اس دیش کے نام کو پھر سے اُجاگر کیا اور چمکایا' ان میں سوامی رام کا استھان بہت اونچا اور شاید روحانیت کی نگاہ سے سب سے اونچا ہے ۔

اِتنی زبردست روحانی ہستی ہوتے ہوئے بھی' بلکہ شاید اسی وجہ سے کیونکہ وہ اتنی زبردست روحانی ہستی تھے' وہ رُوڑھیوں کے جنجال سے بالکل اوپر تھے ۔ اُن کی پرم گتی سے تھوڑے ہی دن پہلے جب کچھ بڑے بڑے لوگوں نے ہندوستان سے پلیگ کو بھگانے کے لئے ہردوار میں ایک بہت بڑا یگیہ رچا اور سوامی رام کو اس میں آنے کی دعوت دی' تو سوامی رام نے صاف صاف یہ کہکر آنے سے اِنکار کر دیا کہ دیش سے پلیگ کو نکالنے کا طریقہ ہون نہیں ہے ۔ اُن کی وہ دلیلیں بھی مجھے اچھی طرح یاد ہیں ۔ اُنہوں نے اپنے جوابی خط میں پہلے یگیہ کرنے والوں کو یہ سمجھایا کہ جتنا روپیہ وہ گھی اور سامگری پھونکنے میں خرچ کریں گے اس کے چنے خرید کر دیش کے غریب "نارائنوں" میں بانٹ دیں تو زیادہ لابھ ہو ۔ پھر سائنس کی رو سے اس دلیل کو کاٹا کہ اس طرح کے ہون سے ہوا شدھ ہوتی ہے یا بیماریوں کے کیڑے مرتے ہیں ۔ میں اِن دلیلوں کی تفصیل میں یہاں جانا نہیں چاہتا ۔ پر سوامی رام کے اس خط کے آخری شبد ایک بار پڑھ کر یاد سے نہیں مٹ سکتے ۔ وہ شبد یہ تھے :—

"But, you will say we must perform the Yajna as the Shruti says we must perform it, as the Smriti says we most perform it. Damn your Shruti and damn your Smriti For God's sake give up sucking the dry bones of your Shurti ! What Ram says is right and not what Shruti says is right !"

اِن شبدوں کے کہنے کا ادھیکاری سوامی رام جیسا

His flood of light was too much ! too much!
Oh ! How could I get my Love's likeness !
I focussed the mind to take His portrait
Adjusted the eyes to take His portrait
The camera of heart to take His portrait
The apparatus all did melt away
His flood of light was too much ! too much!
Oh ! How could I get my Love's likeness !

स्वामी राम पंजाबी, उर्दू, फ़ारसी के बहुत ऊंचे शायर थे. पर इस समय पंजाबी, उर्दू, फ़ारसी की कोई पूरी नज़्म मुझे याद नहीं आ रही है.

स्वामी राम के दर्शन मुझे ज़िन्दगी में केवल एक बार हुए. वह अमरीका से लौट आए थे. मैं कालिज की छुट्टियों में अपने गांव खतौली ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर आया हुआ था. मालूम हुआ कि स्वामी राम मुज़फ़्फ़रनगर आ रहे हैं. मैं घर का त्योहार छोड़ कर उनका उपदेश सुनने मुज़फ़्फ़रनगर पहुंचा. एक और सज्जन मेरे साथ थे. ठीक दीवाली का दिन था. स्वामी राम अपने परम और बूढ़े शिष्य राय बहादुर निहाल चन्द के यहां ठहरे हुए थे. हम लोग वहां पहुंचे. एक शामियाने के नीचे स्वामी राम का लेक्चर होने वाला था. नीचे दरी बिछी हुई थी. बीच में एक आराम कुरसी रखी थी. हम लोग फ़र्श पर बैठ कर इन्तज़ार करने लगे. थोड़ी देर में स्वामी राम जिनकी उम्र शायद क़रीब बत्तीस तैंतीस के थी अपने बूढ़े मेज़बान के साथ आए. आ कर कुरसी पर आराम से बैठ गए. सुनने वाले मुश्किल से पन्द्रह रहे होंगे. स्वामी राम का लेक्चर हुआ. मुझे वह उनका पूरा लेक्चर आज तक याद है. कुरसी पर बैठते ही उन्होंने पहले आंखें बन्द कर लीं. और क़रीब दस मिनट तक वह बड़ी लय के साथ "ओ३म् ओ३म्" गाते रहे. जब वह गा रहे थे तो बिलकुल ऐसा लगता था कि आवाज़ केवल गले से नहीं निकल रही है बल्कि पैरों के नाख़ूनों से ले कर सिर की चांद तक एक एक अंग के अन्दर तार बोल रहे हैं. दस मिनट के बाद उन्होंने आंख खोली और उसी तरह कुरसी पर पड़े पड़े यह शब्द और केवल यह शब्द कहे :—

"भगवान ! आज दीवाली है ! लोग आज लक्ष्मी की पूजा करते हैं. पर लोग यह भूल जाते हैं कि लक्ष्मी विष्णु की पतिव्रता स्त्री हैं. विष्णु को छोड़ कर लक्ष्मी कहीं जा नहीं सकतीं. लक्ष्मी की पूजा नहीं विष्णु की पूजा करो, लक्ष्मी अपने आप पीछे पीछे आएंगी."

बस इतना कहा और फिर आंखें बन्द कर लीं. एक दो मिनट फिर 'ओ३म् ओ३म्' की धुन और फिर आंखें खोल

His flood of light was too much ! too much !
Oh ! How could I get my Love's likeness !
I focussed the mind to take His portrait
Adjusted the eyes to take His portrait
The eamera of heart to take His portrait
The apparatus all did melt away
His flood of light was too much ! too much !
Oh ! How could I get my Love's likeness !

سوامی رام پنجابی' اردو' فارسی کے بہت اونچے شاعر تھے . پر اس سمے پنجابی' اردو' فارسی کی کوئی پوری نظم مجھے یاد نہیں آ رہی ھے .

سوامی رام کے درشن مجھے زندگی میں کیول ایک بار ہوئے. وہ امریکہ سے لوٹ آئے تھے . میں کالج کی چھٹیوں میں اپنے گاؤں کھتولی ضلع مظفرنگر آیا ہوا تھا . معلوم ہوا کہ سوامی رام مظفرنگر آ رہے ھیں. میں گھر کا تیوہار چھوڑ کر انکا اپدیش سننے مظفرنگر پہنچا . ایک اور سجن میرے ساتھ تھے . ٹھیک دیوالی کا دن تھا . سوامی رام اپنے پرم اور بوڑھے ششیہ رائے بہادر نہال چند کے یہاں ٹھہرے ہوئے تھے . ہم لوگ وہاں پہنچے . ایک شامیانے کے نیچے سوامی رام کا لیکچر ہونے والا تھا . نیچے دری بچھی ہوئی تھی. بیچ میں ایک آرام کرسی رکھی تھی . ہم لوگ فرش پر بیٹھ کر انتظار کرنے لگے . تھوڑی دیر میں سوامی رام جنکی عمر شاید قریب بتیس تینتیس کے تھی اپنے بوڑھے میزبان کے ساتھ آئے . آکر کرسی پر آرام سے بیٹھ گئے . سننے والے مشکل سے پندرہ رہے ہونگے . سوامی رام کا لیکچر ہوا. مجھے وہ انکا پورا لیکچر آج تک یاد ہے. کرسی پر بیٹھتے ہی انہوں نے پہلے آنکھیں بند کرلیں . اور قریب دس منٹ تک وہ بڑی لے کے ساتھ "اوم اوم" گاتے رہے . جب وہ گا رہے تھے تو بالکل ایسا لگتا تھا کہ آواز کیول گلے سے نہیں نکل رہی ھے بلکہ پیروں کے ناخنوں سے لیکر سر کی چاند تک ایک ایک انگ کے اندر تار بول رہے ھیں. دس منٹ کے بعد انہوں نے آنکھ کھولی اور اسی طرح کرسی پر پڑے پڑے یہ شبد اور کیول یہ شبد کہے :—

" بھگوان ! آج دیوالی ھے ! لوگ آج لکشمی کی پوجا کرتے ھیں . پر لوگ یہ بھول جاتے ھیں کہ لکشمی وشنو کی پتی ورتا استری ھیں . وشنو کو چھوڑ کر لکشمی کہیں جا نہیں سکتی . لکشمی کی پوجا نہیں وشنو کی پوجا کرو' لکشمی اپنے آپ پیچھے پیچھے آئینگی ."

بس اتنا کہا اور پھر آنکھیں بند کرلیں. ایک دو منٹ پھر ' اوم اوم ' کی دھن اور پھر آنکھیں کھول

हमारी राय ہماری رائے

स्वामी रामतीर्थ

19 अक्तूबर 1952 को लखनऊ में स्वामी रामतीर्थ का अस्सीवां जन्म दिन मनाया गया. उसके लिये हमें जो बुलावा आया उसके जवाब में नीचे लिखा ख़त भेजा गया.

भाई रामेश्वर सहाय सिंह जी,

आपका कृपा निमंत्रन तारीख़ 1. 10. '52 का और निजी ख़त तारीख़ 8 10. '52 का दोनों मिले. हार्दिक धन्यवाद. मुझे खेद है कि दूसरे कामों की वजह से मैं उस दिन लखनऊ तो नहीं आ सकता, पर मेरा दिल आपके साथ है. आपके पत्र ने पचास बरस की पुरानी याद को ताज़ा कर दिया.

इस सदी के ठीक शुरू में मैं लाहौर में पढ़ता था. स्वामी रामतीर्थ जापान और अमरीका जा चुके थे. उनके एक प्रिय शिष्य लाला हीरालाल जिनका मुझसे नज़दीकी सम्बन्ध था, शहर में रहते थे. मैं अकसर उनसे मिलने जाया करता था. उनके पास जापान और अमरीका से स्वामी राम के ख़त आया करते थे. इन ख़तों के और स्वामी राम के बारे में ख़ूब बातें होती थीं. बहुत से ख़त उन्होंने मेरी प्रार्थना पर मुझे दे दिये थे. ख़त कुछ अंगरेज़ी में थे और कुछ उर्दू में. उनमें स्वामी राम की रची हुई बहुत सी अंगरेज़ी, उर्दू और फ़ारसी की नज़में भी थीं. किसी समय मेरे पास इस तरह के एक दर्जन से ज़ियादा ख़त जमा हो गए थे. आज सोच कर दुख होता है कि मैं उन्हें संभाल कर न रख सका. एक नज़्म उन में की इस समय याद आ रही है मैंने बहुत बार उसे मन ही मन में दोहराया है. नज़्म यह है :—

Oh ! How could I get my Love's likeness !
Could any thing like Him be conceived ?
Could He in cameras be received ?
Could artists stand to take His picture ?
Could He appear in colour and figure ?
The apparatus all did melt away.

سوامی رام تیرتھ

19 اکتوبر 1952 کو لکھنؤ میں سوامی رام تیرتھ کا اسیواں جنم دن منایا گیا۔ اس کے لئے ہمیں جو بلاوا آیا اس کے جواب میں نیچے لکھا خط بھیجا گیا۔

بھائی رامیشور سہائے سنگھ جی،

آپکا کرپا نمنترن تاریخ 52' . 10 . 1 کا اور نجی خط تاریخ 52' . 10 . 8 کا دونوں ملے۔ ہاردک دھنیہ واد۔ مجھے کھید ہے کہ دوسرے کاموں کی وجہ سے میں اس دن لکھنؤ تو نہیں آسکتا، پر میرا دل آپ کے ساتھ ہے۔ آپ کے پتر نے پچاس برس کی پرانی یاد کو تازہ کر دیا۔

اس صدی کے ٹھیک شروع میں میں لاہور میں پڑھتا تھا۔ سوامی رام تیرتھ جاپان اور امریکہ جا چکے تھے۔ ان کے ایک پریہ شِشیہ لالہ ہیرا لال، جنکا مجھ سے نزدیکی سمبندھ تھا، شہر میں رہتے تھے۔ میں اکثر ان سے ملنے جایا کرتا تھا۔ ان کے پاس جاپان اور امریکہ سے سوامی رام کے خط آیا کرتے تھے۔ ان خطوں کے اور سوامی رام کے بارے میں خوب باتیں ہوتی تھیں۔ بہت سے خط انہوں نے میری پرارتھنا پر مجھے دے دیئے تھے۔ خط کچھ انگریزی میں تھے اور کچھ اردو میں۔ ان میں سوامی رام کی رچی ہوئی بہت سی انگریزی، اردو اور فارسی کی نظمیں بھی تھیں۔ کسی سمے میرے پاس اس طرح کے ایک درجن سے زیادہ خط جمع ہوگئے تھے۔ آج سوچ کر دکھ ہوتا ہے کہ میں انہیں سنبھال کر نہ رکھ سکا۔ ایک نظم ان میں کی اس سمے یاد آ رہی ہے۔ میں نے بہت بار اسے من ہی من میں دوہرایا ہے۔ نظم یہ ہے :—

Oh ! How could I get my Love's likeness !
Could anything like Him be conceived ?
Could He in cameras be received ?
Could artists stand to take his picture ?
Could He appear in colour and figure ?
The apparatus all did melt away.

सरकार के विकास के प्रोग्राम देश को विनाश की तरफ ले जाने वाले हैं.

बड़ी खुशी के साथ देश के हर अंगरेजी पढ़े लिखे से हम यह अपील करेंगे कि वह इस किताब को पढ़े और गांधीजी के प्रोग्राम के महत्व पर विचार करे.

सर्वोदय अर्थ व्यवस्था

लेखक—जवाहिरलाल जैन; निकालने वाले—भारतीय ग्रंथमाला, दारागंज, इलाहाबाद; लिखावट नागरी; सफे 127; दाम सवा रुपया; पहली बार 1952.

इस किताब के नाम को देख कर कोई यह नहीं अंदाज लगा सकता कि इसके अन्दर क्या है—शायद यह समझेगा कि सर्वोदय अर्थ व्यवस्था की कोई मनगढ़न्त तस्वीर इसमें दी गई होगी और दक़यानूसी ढंग से सर्वोदय का राग अलापा गया होगा. लेकिन यह किताब कट्टर से कट्टर साम्यवादी के हाथ में भी रख दी जाय तो उसको भी यह शिकायत न होगी और वह सोचने लग जायगा कि मार्क्स और गांधी के विचारों में कहां मेल है कहां नहीं. लेखक ने जिस खूबसूरती के साथ पूंजीवाद, साम्यवाद और सर्वोदयवाद को अपनी पैनी छुरी से छांटा है ऐसी छटन हिन्दी में हमें दूसरी किताब में देखने को नहीं मिली. गांधीवाद का पक्ष लेते हुए भी श्री जवाहिर लाल जैन यह असर पाठक पर नहीं पड़ने देते कि मैं गाँधीवादी हूँ और इसलिये आप मेरी बात मानिये. हां यह जरूर है कि जो वो बातें हमने ग्रेग साहब की किताब के बारे में ऊपर कही हैं—अमरीकी पूंजीवाद का साम्राज शाही स्वरूप और रूसी मार्क्सवाद का जनहित कारी स्वरूप—उन पर इसमें भी विचार नहीं किया गया है.

एक चीज लेखक ने सफा नम्बर 53 में कही है—मानव जाति का इतिहास अहिंसा का इतिहास है, मानव संगठन अहिंसा के विकास की कहानी है. अगर ऐसा है—और हम मानते हैं कि ऐसा है—तो हम जंगों, महायुद्धों या ऐटम बम वग़ैरा को मानव समाज के शरीर पर फोड़ो या चीरों की तरह क्यों न देखें जिनके द्वारा इन्सानी समाज अपना विकार निकाल कर निर्मल बनना चाहता है? क्या ही अच्छा हो कि श्री जवाहिरलाल जी इस विषय पर ज़ियादा प्रकाश डालते हुए अहिंसा के विकास की एक कहानी हिन्दी संसार को भेंट करें.

किताब के शुरू में स्वर्गीय आचार्य किशोरलालभाई मशरूवाला की छै सफ़ों की प्रस्तावना है जिसने इस किताब को और भी अनमोल बना दिया है.

सुरेश रामभाई

سرکار کے وکاس کے پروگرام دیش کو وناش کی طرف لے جانے والے ہیں ۔

بڑی خوشی کے ساتھ دیش کے ہر انگریزی پڑھے لکھے سے ہم یہ اپیل کریں گے کہ وہ اس کتاب کو پڑھے اور گاندھی جی کے پروگرام کے مہتو پر وچار کرے ۔

سرووِدے ارتھ ویوستھا

لیکھک—جواہر لال جین؛ نکالنے والے—بھارتیہ گرنتھ مالا' دارا گنج' الہ آباد؛ لکھاوٹ ناگری؛ صفحے 127؛ دام سوا روپیہ؛ پہلی بار 1952 ۔

اس کتاب کے نام کو دیکھکر کوئی یہ نہیں انداز لگا سکتا کہ اسکے اندر کیا ہے—شاید یہ سمجھیگا کہ سرووِدے ارتھ ویوستھا کی کوئی من گھڑنت تصویر اس میں دی گئی ہوگی اور دقیانوسی ڈھنگ سے سرووِدے کا راگ الاپا گیا ہوگا ۔ لیکن یہ کتاب کٹر سے کٹر سامیہ وادی کے ہاتھ میں بھی رکھدی جائے تو اسکو بھی یہ شکایت نہ ہوگی اور وہ سوچنے لگ جائیگا کہ مارکس اور گاندھی کے وچاروں میں کہاں میل ہے کہاں نہیں۔ لیکھک نے جس خوبصورتی کے ساتھ پونجی واد' سامیہ واد اور سرووِدے واد کو اپنی پینی چھری سے چھانٹا ہے ایسی چھٹن ہندی میں ہمیں دوسری کتاب میں دیکھنے کو نہیں ملی ۔ گاندھی واد کا پکش لیتے ہوئے بھی شری جواہر لال جین یہ اثر پاٹھک پر نہیں پڑنے دیتے کہ میں گاندھی وادی ہوں اور اس لئے آپ میری بات مانئیے۔ ہاں یہ ضرور ہے کہ جو دو باتیں ہم نے گریگ صاحب کی کتاب کے بارے میں اوپر کہی ہیں—امریکی پونجی واد کا سامراج شاہی سروپ اور روسی مارکس واد کا جن ہت کاری سروپ—ان پر اس میں بھی وچار نہیں کیا گیا ہے۔

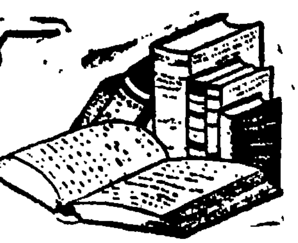
ایک چیز لیکھک نے صفحہ نمبر 53 میں کہی ہے—مانو جاتی کا اتہاس اہنسا کا اتہاس ہے' مانو سنگھٹن اہنسا کے وکاس کی کہانی ہے ۔ اگر ایسا ہے—اور ہم مانتے ہیں کہ ایسا ہے—تو ہم جنگوں' مہایدھوں یا ایٹم بم وغیرہ کو مانو سماج کے شریر پر پھوڑوں یا چیروں کی طرح کیوں نہ دیکھیں جن کے دوارا انسانی سماج اپنا وکار نکال کر نرمل بننا چاہتا ہے ؟ کیا ہی اچھا ہو کہ شری جواہر لال جی اس وشے پر زیادہ پرکاش ڈالتے ہوئے اہنسا کے وکاس کی ایک کہانی ہندی سنسار کو بھینٹ کریں ۔

کتاب کے شروع میں سورگیہ آچاریہ کشور لال بھائی مشروالا کی چھ صفحوں کی پرستاونا ہے جسنے اس کتاب کو اور بھی انمول بنا دیا ہے ۔

—سریش رام بھائی

कुछ किताबें

کچھ کتابیں



विच वे लाइज़ होप ?

लेखक—रिचर्ड बी. ग्रेग; निकालने वाले—नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद; लिखावट अंगरेज़ी; सफ़े 82; दाम सवा रुपया; पहली बार, जून 1952.

भाई रिचर्ड बी. ग्रेग अहिंसा और विकेन्द्रीकरन और खादी के पुराने पक्षपाती हैं और लगभग बीस पचीस बरस से अपने साहित्य और विचारों से वह जो सेवा करते आ रहे हैं उसके कारन हिन्दुस्तान के रचनात्मक कार्यकर्ताओं के दिल में उन्होंने अपनी ख़ासी और ठोस जगह बना ली है. इस किताब में उन्होंने पूंजीवाद, साम्यवाद या कम्युनिज़्म और समाजवाद या सोशलिज़्म—समाज रचना के जो तीन रास्ते आज पच्छिम के सामने माने जाते हैं—को अपनी खरी कसौटी पर कसा है और बताया है कि यह तीनों ही "बड़ी भारी गल्तियां" हैं जिनसे न इन्सान का भला होगा न समाज का. इसलिये उन्होंने एक चौथा रास्ता—जिसे वह गांधीजी का प्रोग्राम कहते हैं—सुझाया है और कहा है कि वह न सिर्फ़ हिन्दुस्तान को बल्कि सारी दुनिया को सुख और शान्ति पहुंचा सकता है. जिस गहराई और ख़ूबी के साथ ग्रेग साहब ने अपनी छान बीन की है उसमें हमें सिर्फ़ इतना अर्ज़ करना है कि उन्होंने अमरीकी पूंजीवाद के नये पहलुओं पर विचार नहीं किया जो आज जापान, कोरिया, फ़िलिपाइन, इन्डोचीन, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, अरब देशों, उत्तर अफ़्रीक़ा और पच्छिमी योरप पर तरह तरह से हावी होने की कोशिश कर रहा है और साम्राजशाही ताक़तों को सहारा दे रहा है. दूसरे, आज साम्यवाद केवल रूस की डिक्टेटरशाही न रह कर एक आज़ाद ताक़त के रूप में भी दुनिया के सामने आ रहा है जो इन्सान को भूक से रोटी की तरफ़ और अन्याय से न्याय की तरफ़ ले जाने का दावा रखता है. बेहतर होता कि ग्रेग साहब इन चीज़ों को भी गांधीवादी चश्मे से देख लेते और फिर दुनिया को बताते—जैसा हम ख़ुद मानते हैं—कि सिवाय गांधीजी के इलाज के दूसरा कोई टिकाऊ और कम तकलीफ़देह चारा दुनिया के आगे नहीं है.

फिर भी जो कुछ दलीलें और आंकड़े ग्रेग साहब ने पेश किये वह आंखें खोल देने वाले हैं. उनसे यह तो ज़ाहिर हो ही जाता है कि आज हिन्दुस्तान में कांगरेस पार्टी जो कर रही है वह गांधीजी का प्रोग्राम नहीं है. यही नहीं, अगर हमें योरप और अमरीका कुछ सिखाते हैं तो यही कि हिन्द

وچ وے لایز ھوپ ؟

لیکھک—رچرڈ بی . گریگ؛ نکالنے والے—نوجیون ٹرسٹ، احمدآباد؛ لکھاوٹ انگریزی؛ صفحے 82؛ دام سوا روپیہ؛ پہلی بار، جون 1952 .

بھائی رچرڈ بی . گریگ اہنسا اور وکیندری کرن اور کھادی کے پرانے پکشپاتی ہیں اور لگ بھگ بیس پچیس برس سے اپنے ساہتیہ اور وچاروں سے وہ جو سیوا کرتے آ رہے ہیں اس کے کارن ہندستان کے رچناتمک کاریہ کرتاؤں کے دل میں انہوں نے اپنی خاصی اور ٹھوس جگہ بنالی ہے. اس کتاب میں انہوں نے پونجی واد، سامیہ واد یا کمیونزم اور سماج واد یا سوشلزم—سماج رچنا کے جو تین راستے آج پچھم کے سامنے مانے جاتے ہیں—کو اپنی کھری کسوٹی پر کسا ہے اور بتایا ہے کہ یہ تینوں ہی " بڑی بھاری غلطیاں " ہیں جن سے نہ انسان کا بھلا ہوگا نہ سماج کا . اس لئے انہوں نے ایک چوتھا راستہ—جسے وہ گاندھی جی کا پروگرام کہتے ہیں—سجھایا ہے اور کہا ہے کہ وہ نہ صرف ہندستان کو بلکہ ساری دنیا کو سکھ اور شانتی پہنچا سکتا ہے . جس گہرائی اور خوبی کے ساتھ گریگ صاحب نے اپنی چھان بین کی ہے اس میں ہمیں صرف اتنا عرض کرنا ہے کہ انہوں نے امریکی پونجی واد کے نئے پہلوؤں پر وچار نہیں کیا جو آج جاپان، کوریا، فلپائن، انڈوچین، ہندستان، پاکستان، عرب دیشوں، اتر افریقہ اور پچھمی یورپ پر طرح طرح سے حاوی ہونے کی کوشش کر رہا ہے اور سامراج شاہی طاقتوں کو سہارا دے رہا ہے . دوسرے آج سامیہ واد کیول روس کی ڈکٹیٹر شاہی نہ رہ کر ایک آزاد طاقت کے روپ میں بھی دنیا کے سامنے آ رہا ہے جو انسان کو بھوک سے روٹی کی طرف اور انیائے سے نیائے کی طرف لے جانے کا دعویٰ رکھتا ہے . بہتر ہوتا کہ گریگ صاحب ان چیزوں کو بھی گاندھی وادی چشمے سے دیکھ لیتے اور پھر دنیا کو بتاتے—جیسا ہم خود مانتے ہیں—کہ سوائے گاندھی جی کے علاج کے دوسرا کوئی ٹکاؤ اور کم تکلیف دہ چارہ دنیا کے آگے نہیں ہے .

پھر بھی جو کچھ دلیلیں اور آنکڑے گریگ صاحب نے پیش کئے وہ آنکھیں کھول دینے والے ہیں. ان سے یہ تو ظاہر ہو ہی جاتا ہے کہ آج ہندستان میں کانگریس پارٹی جو کر رہی ہے وہ گاندھی جی کا پروگرام نہیں ہے . یہی نہیں اگر ہمیں یورپ اور امریکہ کچھ سکھاتے ہیں تو یہی کہ ہند

इसी बालक इस्माईल की एक करामात और भी मशहूर है. अरब के रेगिस्तान में पानी की कमी थी. बालक इस्माईल दो साल की उमर में अपनी मां हाजिरा बेगम की गोद में कहीं जा रहा था. उसकी मां को प्यास लगी. मां ने एक जगह पर इस्माईल को बिठा कर बिनती की. बालक ने रेत की उस जगह पर अंगूठा मारा, कुरेदा तो वहां पानी का एक चश्मा निकल आया. मां ने खूब पेट भर कर पानी पिया. बाद में महात्मा इब्राहीम ने इसी पानी के चश्मे को खुदवा कर कुंआ कर दिया. आज उस कुंए से अनगिनती आदमी पानी लेकर यश लूटते हैं, और उसी कुंए के पानी को "आबे ज़मज़म" के रूप में यात्री हज से लाते हैं और इस जल को बड़ी हिफ़ाज़त व भक्ति से रखते व ख़र्च करते हैं.

हज़रत इब्राहीम और इस्माईल के ख़ानदान में कई पीढ़ियों के बाद इसलाम के बानी पैग़म्बर मुहम्मद का जन्म हुआ.

मस्जिद और पेड़

उस ज़माने में हिन्दुस्तान में औरंगज़ेब की हुकूमत थी. कश्मीर के शहर श्रीनगर में एक बहुत बड़ी मस्जिद थी जिसमें अचानक आग लग गई और वह मस्जिद जल कर ख़ाक हो गई. औरंगज़ेब को इसकी ख़बर दी गई.

वह बिल्कुल नहीं घबराया और बड़े सब्र के साथ पूछा कि मस्जिद के सामने जो चुनार का बड़ा भारी पेड़ था वह क्या हुआ ?

औरंगज़ेब की यह बात सुनकर दूसरे दिन मस्जिद का मुल्ला डरता डरता उसके पास आया और कांपते हुए कहा:

जहांपनाह ! आपको मस्जिद के जल जाने का ज़रा सा भी ग़म न हुआ लेकिन पेड़ की आपने इतनी याद की ?

बादशाह ने जवाब दिया :

मेरे भाई, मैं और क्या करता ? मस्जिद तो दोबारा बनवाई जा सकती है. पर चुनार का वह दरख़्त मेरे बस की चीज़ थोड़ी है.

اسی بالک اسمعیل کی ایک کرامات اور بھی مشہور . عرب کے ریگستان میں پانی کی کمی تھی . بالک سمعیل دو سال کی عمر میں اپنی ماں حاجرہ بیگم کی د میں کہیں جا رہا تھا . اس کی ماں کو پیاس لگی . اں نے ایک جگہ پر اسمعیل کو بٹھا کر بنتی کی . الک نے ریت کی اس جگہ پر انگوٹھا مارا' کریدا تو اں پانی کا ایک چشمہ نکل آیا . ماں نے خوب پیٹ بھر پانی پیا . بعد میں مہاتما ابراہیم نے اسی پانی کے شمے کو کھدوا کر کنواں کر دیا . آج اس کنوئیں سے انگنتی می پانی لے کر یش لوٹتے ہیں اور اسی کنوئیں کے پانی و " آب زم زم " کے روپ میں یاتری حج سے لاتے ہیں اور س جل کو بڑی حفاظت و بھگتی سے رکھتے و خرچ رتے ہیں .

حضرت ابراہیم اور اسمعیل کے خاندان میں کئی یڑھیوں کے بعد اسلام کے بانی پیغمبر محمد کا جنم ہوا .

مسجد اور پیڑ

اس زمانے میں ہندستان میں اورنگزیب کی حکومت ی . کشمیر کے شہر شری نگر میں ایک بہت بڑی مسجد ھی جس میں اچانک آگ لگ گئی اور وہ جل کر خاک و گئی . اورنگزیب کو اس کی خبر دی گئی .

وہ بالکل نہیں گھبرایا اور بڑے صبر کے ساتھ پوچھا ہ مسجد کے سامنے جو چنار کا بڑا بھاری پیڑ تھا وہ یا ہوا ؟

اورنگزیب کی یہ بات سن کر دوسرے دن مسجد کا ملا ڈرتا ڈرتا اس کے پاس آیا اور کانپتے ہوئے کہا :

جہاں پناہ ! آپ کو مسجد کے جل جانے کا ذرا سا بھی م نہ ہوا لیکن پیڑ کی آپ نے اتنی یاد کی ؟

بادشاہ نے جواب دیا :

میرے بھائی میں اور کیا کرتا ؟ مسجد تو دوبارا نوائی جا سکتی ہے . پر چنار کا وہ درخت میرے بس ی چیز تھوڑی ہے .

बच्चों की दुनिया

بچوں کی دنیا

बालक इस्माईल की क़ुर्बानी

(सैयद क़ासिम अली, जबलपुर)

मुसलिम धर्म के त्योहार बड़ी ईद की याद हज़रत इस्माईल और उनके पिता हज़रत इब्राहीम के त्यागी जीवन से इतिहास को अमर सन्देश दे रही है. सन् ईस्वी के एक हज़ार साल पहिले अरब देश के मक्का नगर में हज़रत इब्राहीम रहते थे. उनकी पत्नी हाजिरा और उनका इकलौता लड़का इस्माईल उस रेगिस्तान में धर्मात्मा के नाम से सरनाम थे. महात्मा इब्राहीम को सपने "बलिदान दो" लगातार तीन दिन तक आवाज़ सुनाई दी. दस्तूर के मुताबिक़ उन्होंने पहले दिन सौ ऊंट, दूसरे दिन सारे जानवर भेंट कर दिये, लेकिन "प्यारी चीज़" यानी लड़के के बलिदान का जब साफ़ हुक्म हुआ तब महात्मा इब्राहीम को बड़ी फ़िकर हुई. बालक इस्माईल ने बाप से चिन्ता का कारन पूछा. नब्बे बरस के इब्राहीम ने मालिक का हुक्म सुना दिया. बालक इस्माईल ने जो कि बारह बरस से कम उमर के थे बड़ी ख़ुशी से कहा कि "आपके और मेरे बड़े भाग्य हैं. आप मेरा बलिदान उस सिरजनहार को ज़रूर दे दें. पर मेरी मां को ख़बर न हो और बस्ती से बाहर जंगल में मेरे हाथ पांव बांध कर और आप की व मेरी आंखों में पट्टी बान्ध कर क़त्ल करें." महात्मा इब्राहीम ने ऐसा ही किया. रस्सी, छुरी लेकर वह बस्ती के बाहर आये और उन्होंने इस्माईल के हाथ पैर बांध कर आंखों में पट्टी बान्धी और गले पर छुरी फेर दी. मालिक ने तो उनकी जांच भर की थी. बालक इस्माईल को तो किसी ताक़त ने आसमान पर उठा लिया और उनकी जगह एक भेड़ डाल दी. भेड़ पर छुरी चल गई, आसमान से फूल बरसने लगे. महात्मा इब्राहीम इस लीला से चकित हो गए. आज उस जगह पर जहां बालक इस्माईल को मारा जा रहा था मुसलमान परिक्रमा करके हज करने का पुन्य या सवाब लाते हैं. यह ईदुलज़ुहा हर साल मुसलिम महीने *ज़िल्हिज* की दसवीं तारीख़ को तीन दिन तक होती है.

بالک اسمعٔیل کی قربانی

(سید قاسم علی' جبل‌پور)

مسلم دھرم کے تیوہار بڑی عید کی یاد حضرت اسمٔعیل اور ان کے پتا حضرت ابراھیم کے تیاگی جیون سے اتہاس کو امر سندیش دے رہی ھے. سن عیسوی کے ایک ھزار سال پہلے عرب دیش کے مکہ نگر میں حضرت ابراھیم رھتے تھے. ان کی پتنی ھاجرہ اور انکا اکلوتا لڑکا اسمٔعیل اس ریگستان میں دھرماتما کے نام سے سرنام تھے. مہاتما ابراھیم کو سپنے میں "بلیدان دو" لگاتار تین دن تک آواز سنائی دی. دستور کے مطابق انہوں نے پہلے دن سو اونٹ' دوسرے دن سارے جانور بھینٹ کر دئے' لیکن "پیاری چیز" یعنی لڑکے کے بلیدان کا جب صاف حکم ھوا تب مہاتما ابراھیم کو بڑی فکر ھوئی. بالک اسمٔعیل نے باپ سے چنتا کا کارن پوچھا. نوے برس کے ابراھیم نے مالک کا حکم سنا دیا. بالک اسمٔعیل نے جو کہ بارہ برس سے کم عمر کے تھے بڑی خوشی سے کہا کہ "آپ کے اور میرے بڑے بھاگیہ ھیں. آپ میرا بلیدان اس سرجنہار کو ضرور دیدیں. پر میری ماں کو خبر نہ ھو اور بستی سے باھر جنگل میں میرے ھاتھ پاؤں باندھ کر اور آپ کی و میری آنکھوں میں پٹی باندھ کر قتل کریں." مہاتما ابراھیم نے ایسا ھی کیا. رسی' چھری لیکر وہ بستی کے باھر آئے اور انہوں نے اسمٔعیل کے ھاتھ پیر باندھ کر آنکھوں میں پٹی باندھی اور گلے پر چھری پھیر دی. مالک نے تو انکی جانچ بھر کی تھی. بالک اسمٔعیل کو تو کسی طاقت نے آسمان پر اٹھالیا اور انکی جگہ ایک بھیڑ ڈالدی. بھیڑ پر چھری چل گئی' آسمان سے پھول برسنے لگے. مہاتما ابراھیم اس لیلا سے چکت ھوگئے. آج اس جگہ پر جہاں بالک اسمٔعیل کو مارا جا رہا تھا مسلمان پریکرما کرکے حج کرنے کا پنیہ یا ثواب لوٹتے ھیں. یہ عیدالضحیٰ ہر سال مسلم مہینے ذالحجہ کو دسویں تاریخ کو تین دن تک ھوتی ھے.

धीरे धीरे." पंडित जी ने नौजवानों से अपील की कि वह हिन्दू मुसलिम के भेद भाव को भूल कर आपस में ज़ियादा से ज़ियादा शादी ब्याह की कोशिश करें. उन्होंने लड़कियों से कहा कि उन्हें परदा छोड़ कर बाहर आना चाहिये और देश को आगे बढ़ाने, दुनिया में शान्ति क़ायम करने के लिये मर्दों से आगे बढ़ कर काम करना चाहिये.

सेल्डोह

वर्धा और नागपुर के बीच में वर्धा से अठाईस मील की दूरी पर सेल्डोह एक गांव है. यहां खेती बारी को आगे बढ़ाने के लिये गांधीजी के सिद्धान्तों को सामने रख कर डाक्टर कुमारप्पा ने एक प्रयोग शाला खोल रखी है. यहां बहुत से आदमी काम करते हैं. पंडित सुन्दरलाल जी को उन्होंने घेर लिया और चीन के बारे में सवाल पूछने लगे. पंडित जी उन्हें घंटों चीन के बारे में बताते रहे. लोगों में असन्तोश बहुत है लेकिन उन्हें रास्ता नहीं सूझता—उन्हें एक सहारे की ज़रूरत है, एक लीडर की आवश्यकता है.

शान्ति कानफ़रेन्सें

नागपुर और बंगलोर में शान्ति कान्फ़्रेंसें हुईं. वियना कांगरेस में भारती नुमायन्दों को भेजने के लिये मदरास में भारती शान्ति कौन्सिल की बैठक 15-16 नवम्बर को हो रही है. भारत आज शान्ति क़ायम करने के लिये हर तरफ़ हाथ मार रहा है. शान्ति उसका लक्श है. हमारे आदर्शों के फ़तह का वह दिन होगा जिस दिन हम अमरीका, बरतानिया, रूस, चीन और फ़्रांस को दिल्ली में बुला सकेंगे और उन्हें एक राज़ीनामे पर दसख़त करने पर तैयार कर सकेंगे. जंग की इस घटा को टाल देने के लिये हमें तन मन धन से लग जाना चाहिये—एक आवाज़ हो जाना चाहिये—एक ताक़त बन जाना चाहिये.

—प्रवासी

دھیرے دھیرے." پنڈت جی نے نوجوانوں سے اپیل کی کہ وہ ہندو مسلم کے بھید بھاؤ کو بھول کر آپس میں زیادہ سے زیادہ شادی بیاہ کی کوشش کریں. انہوں نے لڑکیوں سے کہا کہ انہیں پردہ چھوڑ کر باہر آنا چاہئے اور دیش کو آگے بڑھانے، دنیا میں شانتی قائم کرنے کے لئے مردوں سے آگے بڑھ کر کام کرنا چاہئے .

سلڈوہ

وردھا اور ناگپور کے بیچ میں وردھا سے اٹھائیس میل کی دوری پر سلڈوہ ایک گاؤں ہے. یہاں کھیتی باری کو آگے بڑھانے کے لئے گاندھی جی کے سدھانتوں کو سامنے رکھ کر ڈاکٹر کمارپا نے ایک پریوگ شالہ کھول رکھی ہے. یہاں بہت سے آدمی کام کرتے ہیں. پنڈت سندرلال جی کو انہوں نے گھیر لیا اور چین کے بارے میں سوال پوچھنے لگے . پنڈت جی انہیں گھنٹوں چین کے بارے میں بتاتے رہے . لوگوں میں اسنتوش بہت ہے لیکن انہیں راستہ نہیں سوجھتا—انہیں ایک سہارے کی ضرورت ہے، ایک لیڈر کی آوشیکتا ہے .

شانتی کانفرنسیں

ناگپور اور بنگلور میں شانتی کانفرنس ہوئیں . ویانا کانگریس میں بھارتی نمائندوں کو بھیجنے کے لئے مدراس میں بھارتی شانتی کونسل کی بیٹھک 16-15 نومبر کو ہو رہی ہے . بھارت آج شانتی قائم کرنے کے لئے ہر طرف ہاتھ مار رہا ہے. شانتی اس کا لکش ہے. ہمارے آدرشوں کے فتح کا وہ دن ہوگا جس دن ہم امریکہ، برطانیہ، روس، چین اور فرانس کو دلی میں بلا سکیں گے اور انہیں ایک راضی نامے پر دستخط کرنے پر تیار کر سکیں گے . جنگ کی اس گھٹا کو ٹال دینے کے لئے ہمیں تن من دھن سے لگ جانا چاہئے—ایک آواز ہونا چاہئے—ایک طاقت بن جانا چاہئے .

—پرواسی

अमरीकी चुनाव

अमरीका के चुनाव का नतीजा सुनते ही दुनिया की राजधानियों को जो कुछ कहना था वह उन्होंने कह दिया—जो कुछ हुआ अच्छा हुआ. हमारे और अमरीका के सम्बन्ध पर कोई असर नहीं पड़ेगा—आईज़ेनहावर की जीत ने दुनिया को सकते में डाल दिया है. कानाफूसी तो होती है पर डरे डरे, सहमे सहमे, जैसे लोग किसी तूफ़ान का इन्तज़ार कर रहे हों. आईज़ेनहावर को जिताने में वाल स्ट्रीट के कुबेर पतियों का जो भी मनसूबा हो पर जनता ने तो उन्हें सिर्फ़ इसलिये वोट दिया है कि वह डिमोक्रेट्स के शासन से थक गई थी, उससे तबदीली चाहती थी—जनता बेचारी के सामने दो ही के बीच में किसी न किसी को चुनना था—डिमाक्रेट्स या रिपब्लिकन—दूसरी कई पार्टियां भी थीं जो सिर्फ़ शायद क्लब का दर्जा रखती थीं. उन सब के नुमायन्दे भी खड़े थे. प्रोग्रेसिव पार्टी एक तीसरी पार्टी है जिसकी आवाज़ में कुछ ताक़त है, इस के उम्मीदवार को कम्यूनिस्ट पार्टी ने सहायता दी थी. पर कुबेर पतियों ने थैलियां खोल दी थीं. भला ऐटमों की टक्कर में फुलझड़ियां कहां टिक पातीं ! जनता ने आईज़ेनहावर को सिर्फ़ इसलिये चुना है क्योंकि वह भ्रष्टाचार से परेशान हो गई है, वह लड़ाई नहीं चाहती है जैसे ही आईज़ेनहावर की जीत की ख़बर आई है आईज़ेनहावर के हेडक्वार्टर पर जनता ने यही नारे लगाये हैं—आइज़ेनहावर लड़ाई बन्द करेंगे, भ्रष्टाचार दूर करेंगे. आईज़ेनहावर को जो पहला तोहफ़ा मिला है वह एक झाड़ू है. काश आईज़ेनहावर अमरीकी जनता की मनोकामना पूरी कर सकते ! लेकिन वाल स्ट्रीट के कुबेर पति—जिन्होंने चुनाव में डालर बहाये हैं, जो अमरीका के शासक हैं—और जनता की दो अलग राहे हैं, दो अलग मंज़िले हैं—आईज़ेनहावर जनता के नहीं कुबेर पतियों के हैं.

अमरीका में सदर के साथ साथ और बहुत सी तबदीलियां होती हैं. अफ़सर बदलते हैं, राजदूत बदलते हैं और आईज़ेनहावर के आते ही हज़ारों आदमी बदलेंगे. ख़ास कर स्टेट डिपार्टमेन्ट पूरा पूरा बदल जायेगा. शायद हिन्दुस्तान से चेस्टर बाउल्स को भी जाना पड़े.

अलीगढ़

पंडित सुन्दरलाल ने 26 सितम्बर 1952 को अलीगढ़ स्टूडेन्ट फ़ेडरेशन का उद्घाटन किया. तरह तरह के सवाल लोग पूछते थे. चीन के बारे में वह सब जान लेना चाहते थे. दुनिया की हालत पर रोशनी डालते हुए पंडितजी ने कहा—"दुनिया बहुत तेज़ी के साथ बदल रही है और हम कभी आगे, कभी पीछे को सरक रहें हैं, वह भी बहुत

امریکی چناؤ

امریکہ کے چناؤ کا نتیجہ سنتے ہی دنیا کی راجدھانیوں کو جو کچھ کہنا تھا وہ انہوں نے کہہ دیا—جو کچھ ہوا اچھا ہوا، ہمارے اور امریکہ کے سمبندھ پر کوئی اثر نہیں پڑے گا—آئزن ہاور کی جیت نے دنیا کو سکتے میں ڈال دیا ہے۔ کانا پھوسی تو ہوتی ہے پر ڈرے ڈرے، سہمے سہمے جیسے لوگ کسی طوفان کا انتظار کر رہے ہوں۔ آئزن ہاور کو جتانے میں وال اسٹریٹ کے کبیرپتیوں کا جو بھی منصوبہ ہو پر جنتا نے تو انہیں صرف اس لئے ووٹ دیا ہے کہ وہ ڈیموکریٹس کے شاسن سے تھک گئی تھی، اُسے تبدیلی چاہتی تھی—جنتا بیچاری کے سامنے دو ہی کے بیچ میں کسی نہ کسی کو چننا تھا—ڈیموکریٹس یا ریپبلکن—دوسری کئی پارٹیاں بھی تھیں جو صرف شاید کلب کا درجہ رکھتی تھیں۔ اُن سب کے نمائندے بھی کھڑے تھے۔ پروگریسو پارٹی ایک تیسری پارٹی ہے جس کی آواز میں کچھ طاقت ہے، اِس کے امیدوار کو کمیونسٹ پارٹی نے سہائتا دی تھی۔ پر کبیرپتیوں نے تھیلیاں کھول دیں تھیں۔ بھلا ایٹموں کی ٹکر میں پھلجھڑیاں کہاں ٹک پاتیں ! جنتا نے آئزن ہاور کو صرف اس لئے چنا ہے کیونکہ وہ بھرشٹاچار سے پریشان ہو گئی ہے، وہ لڑائی نہیں چاہتی ہے۔ جیسے ہی آئزن ہاور کی جیت کی خبر آئی ہے آئزن ہاور کے ہیڈکوارٹر پر جنتا نے یہی نعرے لگائے ہیں—آئزن ہاور لڑائی بند کریں گے، بھرشٹاچار دور کریں گے۔ آئزن ہاور کو جو پہلا تحفہ ملا ہے وہ ایک جھاڑو ہے۔ کاش آئزن ہاور امریکی جنتا کی منوکامنا پوری کر سکتے ! لیکن وال اسٹریٹ کے کبیرپتی—جنہوں نے چناؤ میں ڈالر بہائے ہیں، جو امریکہ کے شاسک ہیں—اور جنتا کی دو الگ راہیں ہیں، دو الگ منزلیں ہیں—آئزن ہاور جنتا کے نہیں کبیرپتیوں کے ہیں۔

امریکہ میں صدر کے ساتھ ساتھ اور بہت سی تبدیلیاں ہوتی ہیں۔ افسر بدلتے ہیں، راجدوت بدلتے ہیں اور آئزن ہاور کے آتے ہی ہزاروں آدمی بدلیں گے۔ خاص کر اسٹیٹ ڈپارٹمنٹ پورا پورا بدل جائے گا۔ شاید ہندستان سے چیسٹر باؤلس کو بھی جانا پڑے۔

علی گڑھ

پنڈت سندر لال نے 26 ستمبر 1952 کو علی گڑھ اسٹوڈنٹ فیڈریشن کا اُدگھاٹن کیا۔ طرح طرح کے سوال لوگ پوچھتے تھے۔ چین کے بارے میں وہ سب جان لینا چاہتے تھے۔ دنیا کی حالت پر روشنی ڈالتے ہوئے پنڈت جی نے کہا—"دنیا بہت تیزی کے ساتھ بدل رہی ہے اور ہم کبھی آگے، کبھی پیچھے کو سرک رہے ہیں، وہ بھی بہت

लाख सफ़ाई देने पर भी लोगों का शक़ दूर नहीं किया जा सकता. इसलिये शान्ति जन कांगरेस वियना में की जा रही है ताकि वह लोग भी जो शान्ति आन्दोलन के साथ नहीं हैं पर शान्ति क़ायम करना चाहते हैं उसमें भाग ले सकें. इस कांगरेस का ध्येय बयान करते हुए जूलियट क्यूरी ने लिखा है—

"इस शान्ति जन कांगरेस का सिर्फ़ एक ही उद्देश्य है और वह यह कि तमाम उन लोगों को एक साथ लाया जाये जो शान्ति क़ायम रखना चाहते हैं और दुनिया को एक नई लड़ाई से बचाया जाये."

कुछ संस्थाएं हैं जो शान्ति क़ायम करना चाहती हैं पर शान्ति आन्दोलन के साथ काम करने को तैयार नहीं है. उनके दिमाग़ों में तरह तरह के शक हैं. जूलियट क्यूरी ने अपने एक ख़त में यह बात साफ़ कर दी है —

"हमें उन नुक़्तों को ढूंढना चाहिये जिन पर शान्ति क़ायम करने के लिये सब एक राय हो सकें और उन नुक़्तों पर ज़ोर न देना चाहिये जिन का शान्ति से कोई सम्बन्ध नहीं है...अलग अलग देशों के, अलग अलग आदर्शों को मानने वाले लोग जो सोचते हैं—अलग अलग ढंग पर चलने वाले देश शान्ति से रह सकते हैं—राष्ट्रों के बीच का सारा झगड़ा बात चीत और समझौतों से तय हो सकता है—वह वियना कांगरेस में अपने विचारों को ज़ाहिर कर सकते हैं...... यह कांगरेस किसी ख़ास ढंग की सरकार या माली व्यवस्था की भलाई बुराई करने का प्लेटफ़ार्म नहीं बन सकती......"

शान्ति अरबों का धर्म है

दमिश्क़ के मशहूर धार्मिक नेता शेख़ मुहम्मद अल शहर ने वियना कांगरेस का स्वागत करते हुए कहा है—

"अरबों को शान्ति चाहिये. उनके धर्म और उनके सदाचार की यही मांग है. क़ुरान में यह साफ़ लिखा है: जो क़ौम शान्ति की राह पर होती है ख़ुदा भी उसके साथ होता है: क़ुरान में एक दूसरी जगह लिखा है: हमने औरतों, मर्दों, राष्ट्रों और क़बीलों को इसलिये पैदा किया है ताकि वह एक दूसरे की बात सुनें और एक दूसरे को समझने की कोशिश करें—इस कांगरेस का यही मक़सद है.

"किसी राष्ट्र को अपने घरेलू मामलों में किसी का भी दख़ल पसन्द नहीं है. ग़ुलामी से पहले अरब शान्ति से रहते थे. और अब बराबर क़ुरबानियां कर रहे हैं ताकि वह अपनी आज़ादी वापिस ले सकें और खोई शान्ति को फिर से पा सकें. जग शान्ति का मतलब है कि हर राष्ट्र आज़ाद हो और हर राष्ट्र की आज़ादी का मतलब है कि दुनिया में शान्ति क़ायम हो."

لاکھ صفائی دینے پر بھی لوگوں کا شک دور نہیں کیا جاسکتا. اس لئے شانتی جن کانگریس ویانا میں کی جارہی ہے تاکہ وہ لوگ بھی جو شانتی آندولن کے ساتھ نہیں ہیں پر شانتی قائم کرنا چاہتے ہیں اس میں بھاگ لے سکیں. اِس کانگریس کا دھیہ بیان کرتے ہوئے جولیٹ کیوری نے لکھا ہے—

" اِس شانتی جن کانگریس کا صرف ایک ہی اُدیش ہے اور وہ یہ ہے کہ تمام اُن لوگوں کو ایک ساتھ لایا جایا جو شانتی قائم رکھنا چاہتے ہیں اور دنیا کو ایک نئی لڑائی سے بچائے جائے ."

کچھ سنستھائیں ہیں جو شانتی قائم کرنا چاہتی ہیں پرشانتی آندولن کے ساتھ کام کرنے کو تیار نہیں . اُن کے دماغوں میں طرح طرح کے شک ہیں. جولیٹ کیوری نے اپنے ایک خط میں یہ بات صاف کر دی ہے—

"ہمیں اُن نقطوں کو ڈھونڈھنا چاہئے جن پر شانتی قائم کرنے کے لئے سب ایک رائے ہو سکیں اور اُن نقطوں پر زور نہ دینا چاہئے جن کا شانتی سے کوئی سمبندھ نہیں ہے......الگ الگ دیشوں کے' الگ الگ آدرشوں کو ماننے والے لوگ جو سوچتے ہیں—الگ الگ ڈھنگ پر چلنے والے دیش شانتی سے رہ سکتے ہیں—راشٹروں کے بیچ کا سارا جھگڑا بات چیت اور سمجھوتوں سے طے ہو سکتا ہے—وہ ویانا کانگریس میں اپنے وچاروں کو ظاہر کر سکتے ہیں.........یہ کانگریس کسی خاص ڈھنگ کی سرکار یا مالی ویوستھا کی بھلائی برائی کرنے کا پلیٹ فارم نہیں بن سکتی......"

شانتی عربوں کا دھرم ہے

دمشق کے مشہور دھارمک نیتا شیخ محمدالشہر نے ویانا کانگریس کا سواگت کرتے ہوئے کہا ہے—

" عربوں کو شانتی چاہئے . اُن کے دھرم اور اُن کے سدا چار کی یہی مانگ ہے . قرآن میں یہ صاف لکھا ہے جو قوم شانتی کی راہ پر ہوتی ہے خدا بھی اُس کے ساتھ ہوتا ہے : قرآن میں ایک دوسری جگہ لکھا ہے : ہم نے عورتوں' مردوں' راشٹروں اور قبیلوں کو اس لئے پیدا کیا ہے تاکہ وہ ایک دوسرے کی بات سنیں اور ایک دوسرے کو سمجھنے کی کوشش کریں—اس کانگریس کا یہی مقصد ہے .

"کسی راشٹر کو اپنے گھریلو معاملوں میں کسی کا بھی دخل پسند نہیں ہے. غلامی سے پہلے عرب شانتی سے رہتے تھے . عرب برابر قربانیاں کر رہے ہیں تاکہ وہ اپنی آزادی واپس لے سکیں اور کھوئی شانتی کو پھر سے پاسکیں. جگ شانتی کا مطلب ہے کہ ہر راشٹر آزاد ہو اور ہر راشٹر کی آزادی کا مطلب ہے کہ دنیا میں شانتی قائم ہو."

पर जीवन बिना शान्ति के नामुमकिन है. महात्मा जी ने धर्म वालों के सामने एक रास्ता खोला है :—

"हम एक ऐसी आवाज़ उठायें जो दुनिया के सब आदमियों को समान रूप से सुख पहुंचाने वाली हो. वह आवाज़ यही हो सकती है कि आदमी की हिंसा आगे किसी रूप में न होने पाये. सब धर्म इसी बात पर ज़ोर दें:—

(1) आदमी को किसी तरह की तकलीफ़ न होने पाये.

(2) कोई आदमी ऐसा न रहने पाये जो किसी दिन भी भूका सोये.

(3) कोई आदमी ऐसा न रहने पाये जो मजबूर हो कर जाड़े में मरे या लू खाये या बरसात में भीगे.

(4) कोई आदमी ऐसा न रहने पाये जिस के पास रहने के लिये घर की एक झोंपड़ी भी न हो."

वियना शान्ति कांगरेस

12 दिसम्बर से वियना में शान्ति कांगरेस शुरू होने वाली है. हर हर देश में तैयारियां हो रही हैं. इस कांगरेस में सरकारों के नुमाइन्दे नहीं बल्कि जनता के नुमाइन्दे एक साथ मिलेंगे—गोरे, काले, पीले—पच्छिमी, पूरबी—और सबकी एक आवाज़ होगी—शान्ति. पाकिस्तानियों से हिन्दुस्तानी मिलेंगे, अमरीकन से उत्तर कोरिया वाले मिलेंगे, जापानियों से चीनी मिलेंगे. शान्ति की गूंज में भेद भाव डूब जायेंगे, मानवता जाग पड़ेगी.

नेकी की ताक़तें बदी की ताक़तों से बहुत ज़ियादा हैं—लेकिन तितर बितर हैं, बिखरी हुई हैं. शान्ति आन्दोलन उन ताक़तों को इकट्ठा करता है, उनमें एकता पैदा करता है. जिन बातों पर जनता एक राय हो जाती है उसे सरकारों को मानना ही पड़ेगा. वियना कांगरेस के लिये बरतानिया की तैयारी कमेटी ने अपनी अपील में ठीक ही कहा है—"बेबसी और शक की भावना से हमें अपने मक़सद से नहीं डिगना चाहिये. हमें हर देश की जनता के बीच सदभावना फैलाना चाहिये. इसी तरह से हम दुनिया की बिगड़ती हुई हालत को संवार सकते हैं. दुनिया को मुसीबत से बचाने वाली और उसे आगे बढ़ाने वाली जिन जिन बातों पर जनता एक राय हो जायगी उन पर सरकारों को एक राय होना ही पड़ेगा."

एक ज़बरदस्त सवाल यह उठ खड़ा हुआ है कि वियना में शान्ति आन्दोलन की कांगरेस न हो कर शान्ति जन कांगरेस क्यों हो रही है? शान्ति आन्दोलन वाले शान्ति क़ायम करना अपनी इजारेदारी नहीं समझते—हर एक को अधिकार है कि वह जिस तरह चाहे शान्ति क़ायम करने में मदद दे. शान्ति कांगरेस का मतलब होता कि वह लोग ही इस प्लैटफ़ार्म पर आयें जो शान्ति आन्दोलन के साथ हैं.

پر جیون بنا شانتی کے نا ممکن ہے . مہاتما جی نے دھرم والوں کے سامنے ایک راستہ کھولا ہے :—

" ہم ایک ایسی آواز اُٹھائیں جو دنیا کے سب آدمیوں کو سمان روپ سے سکھ پہونچانے والی ہو . وہ آواز یہی ہو سکتی ہے کہ آدمی کی ہنسا آگے کسی روپ میں نہ ہونے پائے . سب دھرم اسی بات پر زور دیں :—

1. آدمی کو کسی طرح کی تکلیف نہ ہونے پائے .

(2) کوئی آدمی ایسا نہ رہنے پائے جو کسی دن بھی بھوکا سوئے .

(3) کوئی آدمی ایسا نہ رہنے پائے جو مجبور ہو کر جاڑے میں مرے یا لو کھائے یا برسات میں بھیگے .

(4) کوئی آدمی ایسا نہ رہنے پائے جس کے پاس رہنے کے لئے گھر کی ایک جھونپڑی بھی نہ ہو ."

ویانا شانتی کانگریس

12 دسمبر سے ویانا میں شانتی کانگریس شروع ہونے والی ہے . ہر ہر دیش میں تیاریاں ہو رہی ہیں . اس کانگریس میں سرکاروں کے نمائندے نہیں بلکہ جنتا کے نمائندے ایک ساتھ ملیں گے—گورے، کالے، پیلے—پچھمی پوربی—اور سب کی ایک آواز ہوگی—شانتی—پاکستانیوں سے ہندستانی ملیں گے، امریکن سے اُتر کوریا والے ملیں گے، جاپانیوں سے چینی ملیں گے . شانتی کی گونج میں بھید بھاؤ ڈوب جائیں گے، مانوتا جاگ پڑے گی . نیکی کی طاقتیں بدی کی طاقتوں سے بہت زیادہ ہیں—لیکن—تتر بتر ہیں، بکھری ہوئی ہیں . شانتی آندولن اُن طاقتوں کو اکٹھا کرتا ہے، اُن میں ایکتا پیدا کرتا ہے . جن باتوں پر جنتا ایک رائے ہو جاتی اُسے سرکاروں کو ماننا ہی پڑے گا . ویانا کانگریس کے لئے برطانیہ کی تیاری کمیٹی نے اپنی اپیل میں ٹھیک ہی کہا ہے—"بے بسی اور شک کی بھاونا سے ہمیں اپنے مقصد سے نہیں ڈگنا چاہئے . ہمیں ہر دیش کی جنتا کے بیچ سد بھاونا پھیلانا چاہئے . اسی طرح سے ہم دنیا کی بگڑتی ہوئی حالت کو سنوار سکتے ہیں . دنیا کو مصیبت سے بچانے والی اور اسے آگے بڑھانے والی جن جن باتوں پر جنتا ایک رائے ہو جائیگی اُن پر سرکاروں کو ایک رائے ہونا ہی پڑے گا ."

ایک زبردست سوال یہ اُٹھ کھڑا ہوا ہے کہ ویانا میں شانتی آندولن کی کانگریس نہ ہو کر شانتی جن کانگریس کیوں ہو رہی ہے ؟ شانتی آندولن والے شانتی قائم کرنا اپنی اجارہ داری نہیں سمجھتے—ہر ایک کو ادھیکار ہے کہ وہ جس طرح چاہے شانتی قائم کرنے میں مدد دے . شانتی کانگریس کا مطلب ہوتا کہ وہ لوگ ہی اس پلیٹ فارم پر آئیں جو شانتی آندولن کے ساتھ ہیں .

एकता का यह नमूना दुनिया को देखने की दावत देता है. न जाड़े में यहां सर्दी होती है और न गर्मी में गर्मी.

हस्तिनापुर ने दूसरे रूप में, दूसरे प्रसंग में फिर आवाज़ उठाई— धर्म की आवाज़—एकता, ईमानदारी की आवाज़— शान्ति की आवाज़—सारे धर्म एक जगह जमा हो गये— द्वेश फैलाने के लिये नहीं, प्रेम का पाठ पढ़ने के लिये. यहां शास्त्रार्थ नहीं हुआ, एक दूसरे पर कीचड़ नहीं उछाला गया. सब एक जगह जमा हो कर यह सीख सके कि धर्म एक है, उसकी जड़ एक है.

हस्तिनापुर 'सर्व धर्म सम्मेलन' के सदर महात्मा भगवानदीन जी थे. उन्होंने अपने भाशन में वह आवाज़ उठाई है जो युग की मांग है, समय की पुकार है—धर्म को ज़िन्दा रहना है तो धर्मों के भेद भाव मिटा कर एक धर्म हो जाना चाहिये—महात्माजी ने यही एक सूत्र दिया है— सर्व धर्म (सारे धर्म) की जगह 'सार्व धर्म' (सब का धर्म) ही असली धर्म को फैलाने का रास्ता है.

शान्ति आज सब से बड़ी समस्या है. एटम बम के धमाके में हड्डि नहीं टिक सकती, धर्म के अंजर पिंजर नहीं टिक सकते. धर्म की आत्मा ही इस तूफ़ान का मुक़ाबला कर सकती है. धर्म की—सारे धर्मों की—यह आत्मा शान्ति है. महात्मा भगवानदीन ने शान्ति क़ायम रखने के लिये नीचे दिये रास्ते सुझाये हैं—

(1) आदमी नाम का प्रानी जहां तक बन सके किसी तरह का दुख न पाये.

(2) उसको मौत की सज़ा न दी जाये.

(3) वह ऐसे कामों में कम से कम वक़्त काम करे जिन कामों में लग कर उसकी उमर कम हो जाती है.

(4) ऐसे हथियार न तैयार किये जायें, जो लाखों आदमियों को मिन्टों में मार डालते हैं.

(5) ऐसी चीज़ें न तैयार की जायें जो आदमी को तड़पा तड़पा कर मारती हैं.

(6) ऐसे पेशों में लोगों को न लगाया जाय, जिनकी वजह से वह समाज की नज़रों में गिर जाते हैं, और ख़ुद अपनी नज़रों में भी गिर जाते हैं.

इस सम्मेलन में समाज को पीछे ढकेलने के बजाये धर्म को मानने वालों ने समाज को आगे बढ़ाने की बात की है. अगर धर्म वाले भगवानदीनजी की बात पर सहमत हो कर, शान्ति की आवाज़ ऊंची कर सकें, दुनिया को लड़ाई से बचा सकें, व्यक्तियों और क़ौमों में सद भावना पैदा कर सकें तो वह धर्म की सेवा कर सकेंगे. शान्ति क़ायम रखना ही समय की आवाज़ है—लेकिन स्मशान की शान्ति जग को नहीं चाहिये, उसे जीने का अधिकार भी चाहिये.

ایکتا کا یہ نمونہ دنیا کو دیکھنے کی دعوت دیتا ہے. نہ جاڑے میں یہاں سردی ہوتی ہے اور نہ گرمی میں گرمی ۔

ہستناپور نے دوسرے روپ میں' دوسرے پرسنگ میں پھر آواز اُٹھائی—دھرم کی آواز—ایکتا' ایمانداری کی آواز—شانتی کی آواز—سارے دھرم ایک جگہ جمع ہوگئے—دویش پھیلانے کے لئے نہیں' پریم کا پاٹھ پڑھنے کے لئے ۔ یہاں شاستر آرتھ نہیں ہوا' ایک دوسرے پر کیچڑ نہیں اُچھالا گیا ۔ سب ایک جگہ جمع ہو کر یہ سیکھ سکے کہ دھرم ایک ہے ۔ اُس کی جڑ ایک ہے. ہستناپور 'سرو دھرم سمیلن' کے صدر مہاتما بھگوان دین جی تھے ۔ اُنھوں اپنے بھاشن میں وہ آواز اُٹھائی ہے جو یگ کی مانگ ہے' سمے کی پکار ہے—دھرم کو زندہ رہنا ہے تو دھرموں کے بھید بھاؤ مٹا کر ایک دھرم ہوجانا چاہئے—مہاتما جی نے یہی سوتر دیا ہے—سرو دھرم (سارے دھرم) کی جگہ 'سارو دھرم' (سب کا دھرم) ہی اصلی دھرم کو پھیلانے کا راستہ ہے ۔

شانتی آج سب سے بڑی سمسیا ہے. ایٹم بم کے دھماکے میں ہڈی ہی نہیں ٹک سکتی' دھرم کے انجر پنجر نہیں ٹک سکتے ۔ دھرم کی آتما ہی اس طوفان کا مقابلہ کر سکتی ہے ۔ دھرم کی—سارے دھرموں کی—یہ آتما شانتی ہے. مہاتما بھگواندین نے شانتی قائم رکھنے کے لئے نیچے دیئے راستے سجھائے ہیں ۔

(1) آدمی نام کا پرانی جہاں تک بن سکے کسی طرح کا دکھ نہ پائے ۔

(2) اُس کو موت کی سزا نہ دی جائے ۔

(3) وہ ایسے کاموں میں کم سے کم وقت کام کرے جن کاموں میں لگ کر اُس کی عمر کم ہو جاتی ہے ۔

(4) ایسے ہتھیار نہ تیار کئے جائیں جو لاکھوں آدمیوں کو منٹوں میں مار ڈالتے ہیں ۔

(5) ایسی چیزیں نہ تیار کی جائیں جو آدمی کو تڑپا تڑپا کر مارتی ہیں ۔

(6) ایسے پیشے میں لوگوں کو نہ لگایا جائے' جن کی وجہ سے وہ سماج کی نظروں میں گر جاتے ہیں' اور خود اپنی نظروں میں بھی گر جاتے ہیں ۔

اس سمیلن میں سماج کو پیچھے ڈھکیلنے کے بجائے دھرم کو ماننے والوں نے سماج کو آگے بڑھانے کی بات کی ہے ۔ اگر دھرم والے بھگوان دین جی کی بات پر سہمت ہو کر شانتی کی آواز اونچی کر سکیں' دنیا کو لڑائی سے بچا سکیں' ویکتیوں اور قوموں میں سدبھاونا پیدا کر سکیں تو وہ دھرم کی سیوا کر سکیں گے ۔ شانتی قائم رکھنا ہی سمے کی آواز ہے—لیکن شمشان کی شانتی جگ کو نہیں چاہئے' اُسے جینے کا ادھیکار بھی چاہئے ۔

प्रवासी की डायरी

धरती काश बोल सकती तो हस्तिनापुर न जाने कितनी कहानियां सुनाता—कितने पापड़ उसके सीने पर बेले गये हैं, कितनी साज़िशें उसके सामने हुई हैं, कितनी बार उसने धर्मों की टक्कर देखी है, बारम्बार उसने द्वेश के पतझड़ का सामना किया है—पर कोई लड़ाई, कोई पतझड़, कोई द्वेश, कोई साज़िश स्थाई नहीं रही. हर पतझड़ से बहार ने टक्कर ली, हर द्वेश को प्रेम ने चूम लिया, हर लड़ाई के बाद शान्ति हुई—सच की जीत झूट की हार—झूट कुछ समय के लिये मैदान छोड़ कर भाग गया. धर्म टकराये, मन्दिरों की मूर्तियां बदल गई, उनका नाम बदल गया—पर उदारता ने कभी हार नहीं मानी, कभी मैदान नहीं छोड़ा. जो धर्म टकराते थे वह मिल भी जाते थे, जो पूजा स्थान को खंडर बनाते थे वह उसकी रचना भी करते थे—न जाने ऐसी कितनी सीख देने वाली घटनायें हस्तिनापुर सुना सकता है. पर न हमें उसकी मूक भाशा समझने का समय है और न हमारी भाशा में बोलने का उसे सामर्थ.

हस्तिनापुर के टीले कहां तक इन भेदों को छिपाते हैं, छिपा कर रखेंगे? आदमी आदमी है और आज कुदरत से टक्कर लेने पर उसने कमर बांध रखी है. हस्तिनापुर की छाती को चीर कर छिपे भेद निकाल लेने की वह कोशिश कर रहा है. बारूद के धमाकों ने, हथौड़ों, कुदालों के शोर ने हस्तिनापुर की शान्ति छीन ली है, उनको बेचैन कर दिया है. टीले फटे जाते हैं और सैकड़ों बरस से छिपे भेद ज़मीन उगलती जाती है.

हस्तिनापुर की ज़मीन पर शायद द्वेश का कोई निशान नहीं पर एक उदारता का प्रतीक ज़रूर खड़ा है. यह खूबसूरत मन्दिर पुकार पुकार कर कह रहा है कि प्रेम तलवार से ज़ियादा धारदार हथियार है. एक समय था जब इसी जगह कोई जैनी मन्दिर नहीं बन सकता था. मन्दिर बनते थे और मुसलमान रांगड़ और हिन्दू ब्राह्मन उन्हें खंडहर बना जाते थे. कितनी बार कोशिश हुई, कितनी ही बार लड़ाई हुई, पर मन्दिर न बन सका. कहा जाता है कि रांगड़ों में कोई सख्त बीमार हो गया था. एक जैनी ने उसकी जा कर बहुत सेवा की. अपने बैरी को ऐसा व्योहार करते देख कर रांगड़ राम हो गये. जिन हाथों से वह मन्दिर को खंडहर बनाते थे उसी हाथ से उन्होंने उसे खड़ा कर दिया, उसके अंग अंग में कला भर दी और आज

پرواسی کی ڈائری

دھرتی کاش بول سکتی تو ہستناپور نہ جانے کتنی کہانیاں سناتا—کتنے پاپڑ اُس کے سینے پر بیلے گئے ہیں' کتنی سازشیں اُس کے سامنے ہوئی ہیں' کتنی بار اُس نے دھرموں کی ٹکر دیکھی ہے' بارمبار اُس نے دویش کے پت جھڑ کا سامنا کیا ہے—پر کوئی لڑائی' کوئی پت جھڑ' کوئی دویش' کوئی سازش استھائی نہیں رہی. ہر پت جھڑ سے بہار نے ٹکر لی' ہر دویش کو پریم نے چوس لیا' ہر لڑائی کے بعد شانتی ہوئی—سچ کی جیت جھوٹ کی ہار—جھوٹ کچھ سمے کے لئے میدان چھوڑ کر بھاگ گیا. دھرم ٹکرائے' مندروں کی مورتیاں بدل گئیں' اُن کا نام بدل گیا—پر اُدارتا نے کبھی ہار نہیں مانی' کبھی میدان نہیں چھوڑا. جو دھرم ٹکراتے تھے وہ مل بھی جاتے تھے' جو پوجا استھان کو کھنڈر بناتے تھے وہ اُس کی رچنا بھی کرتے تھے—نہ جانے ایسی کتنی سیکھ دینے والی گھٹنائیں ہستناپور سنا سکتا ہے. پر نہ ہمیں اُس کی موک بھاشا سمجھنے کا سمے ہے اور نہ ہماری بھاشا میں بولنے کا اُسے سمرتھ.

ہستناپور کے ٹیلے کہاں تک اِن بھیدوں کو چھپاتے ہیں' چھپا کر رکھیں گے؟ آدمی آدمی ہے اور آج قدرت سے ٹکر لینے پر اُس نے کمر باندھ رکھی ہے. ہستناپور کی چھاتی کو چیر کر چھپے بھید نکال لینے کی وہ کوشش کر رہا ہے. بارود کے دھماکوں نے' ہتھوڑوں' کدالوں کے شور نے ہستناپور کی شانتی چھین لی ہے' اُس کو بے چین کر دیا ہے. ٹیلے پھٹتے جاتے ہیں اور سیکڑوں برس سے چھپے بھید زمین اُگلتی جاتی ہے—

ہستناپور کی زمین پر شاید دویش کا کوئی نشان نہیں پر ایک اُدارتا کا پرتیک ضرور کھڑا ہے یہ خوبصورت مندر پکار پکار کر کہہ رہا ہے کہ پریم تلوار سے زیادہ دھاردار ہتھیار ہے. ایک سمے تھا جب اسی جگہ کوئی جینی مندر نہیں بن سکتا تھا. مندر بنتے تھے اور مسلمان رانگڑ اور ہندو برہمن انہیں کھنڈر بنا جاتے تھے کتنی بار کوشش ہوئی' کتنی بار لڑائی ہوئی' پر مندر نہ بن سکا. کہا جاتا ہے کہ رانگڑوں میں کوئی سخت بیمار ہو گیا تھا. ایک جینی نے اس کی جا کر بہت سیوا کی. اپنے بیری کو ایسا بیوہار کرتے دیکھ کر رانگڑ رام ہو گئے. جن ہاتھوں سے وہ مندر کو کھنڈر بناتے تھے اسی ہاتھ سے اُنہوں نے اُسے کھڑا کر دیا' اس کے انگ انگ میں کلا بھر دی اور آج

मैं पूछती हूँ कि दो दिन जो आपने यह स्वांग किया उससे मुल्क का कुछ फ़ायदा हुआ ? हर कोई एक दूसरे पर रोब जमाने और ज़ियादा से ज़ियादा हड़प लेने की कोशिश में था. सभापति और आप सब अपने गरेबान में मुंह डालकर देखें कि क्या वाक़ई यह कान्फ्रेंस कारामद हुई और आप लोग मेरे हित के लिये किसी बात पर भी एक राय हो पाये ? पर आपने इस कान्फ्रेंस में कई हज़ार रुपया जो बरबाद कर दिया वह आख़िर मेरे पेट से ही कट कर आपको मिलेगा न ?

मुझे मालूम हुआ कि आपने कम्यूनिटी प्रोजेक्ट चलाने का फ़ैसला किया है. आपको भोला बच्चा कहूं या फ़ाइनेन्स मिनिस्टर मैं नहीं समझ रही हूं. भला आपने यह भी सोचा समझा कि यह कम्यूनिटी प्रोजेक्ट क्या हैं ? इनमें लगी विदेशी पूंजी और विदेशी दिमाग़ की बात को जाने दीजिये. क्या आप नहीं देखते कि यह प्रोजेक्ट एक साधन हैं किसान की किसानी ख़त्म कर उसे एक मज़दूर बना डालने के ? आपकी खेती अब ट्रैक्टरों और अंगरेज़ी खाद से हुआ करेगी—जिसका मतलब है कि बैल गये और आप अपनी खेती के लिये दूसरों का मुंह ताका करेंगे. बैल के साथ ही साथ गाय का भी नम्बर आयेगा और इस तरह आप का मौजूदा देहाती आर्थिक ढांचा चूर चूर हो जायेगा. अब आप समझे कि इन कम्यूनिटी प्रोजेक्टों का क्या मतलब है ? मगर आप ख़ुद क्या करते हैं—क़लम तोड़ना व ऊंची ऊंची तनख़ाहें लेना. और यह सब ग़ज़ब आप बापू के नाम पर ढाते हैं ? अरे कुछ तो ख़ौफ़ खाइये और ईमान व सादगी की ज़िन्दगी अपनाइये.

मैं ज़ियादा न कह कर बस इतना कहूँगी कि होश में आइये. उन लाखों करोड़ों ग़रीबों और लाचारों को देखिये जिन्हें दो जून रोटी भी नसीब नहीं होती. मैं उनकी तरफ़ से बोल रही हूं. अभी वक़्त है, संभल जाइये और इन्सानियत के नाम पर आप से अपील करती हूँ कि इस मुल्क को बरबाद व ग़ुलाम होने से बचाइये.

[यह कह कर वह न जाने कहां ग़ायब हो गई.]

सभापति (आंखें मलते हुए)—देर काफ़ी हो गई है. अब हम यह इजलास ख़त्म करें. एक बार फिर केन्द्रीय सरकार की तरफ़ से और अपनी तरफ़ से मैं आप सब का, विशेष कर राजाजी का, शुक्रिया अदा करता हूँ जो यहां आये और इतनी दिलचस्पी से दो दिन बिताये.

राजाजी—फ़ाइनेन्स मिनिस्टर को तीन तालियां ! जय हिन्द !

—सुरेश रामभाई

میں پوچھتی ہوں کہ دو دن جو آپنے یہ سوانگ کیا اس سے ملک کا کچھ فائدہ ہوا ؟ ہر کوئی ایک دوسرے پر رعب جمانے اور زیادہ سے زیادہ ہڑپ لینے کی کوشش میں تھا . سبھاپتی اور آپ سب اپنے گریبان میں منہ ڈالکر دیکھیں کہ کیا واقعی یہ کانفرنس کارآمد ہوئی اور آپ لوگ میرے ہت کے لئے کسی بات پر بھی ایک رائے ہو پائے. پر آپ نے اپنی اس کانفرنس میں کئی ہزار روپیہ جو برباد کردیا وہ آخر میرے پیٹ سے ہی کٹ کر آپکو ملیگا نہ ؟

مجھے معلوم ہوا کہ آپ نے کمیونٹی پروجکٹ چلانے کا فیصلہ کیا ہے. آپکو بھولا بچہ کہوں یا فائننس منسٹر میں نہیں سمجھ رہی ہوں . بھلا آپ نے یہ بھی سوچا سمجھا کہ یہ کمیونٹی پروجکٹ کیا ہیں ؟ اِن میں لگی ودیشی پونجی اور ودیشی دماغ کو جانے دیجئے' کیا آپ نہیں دیکھتے کہ یہ پروجکٹ ایک سادھن ہیں کسان کی کسانی ختم کر اُسے ایک مزدور بنا ڈالنے کے. آپ کی کھیتی اب ٹریکٹروں اور انگریزی کھادسے ہوا کرےگی—جس کا مطلب ہے کہ بیل گئے اور آپ اپنی کھیتی کے لئے دوسروں کا منھ تاکا کریں گے. بیل کے ساتھ ہی ساتھ گائے کا بھی نمبر آئےگا اور اِس طرح آپ کا موجودہ دیہاتی آرتھک ڈھانچہ چور چور ہو جائے گا . اب آپ سمجھے کہ اِن کمیونٹی پروجکٹوں کا کیا مطلب ہے . مگر آپ خود کیا کرتے ہیں—قلم توڑنا اور اونچی اونچی تنخواہیں لینا' اور یہ سب غضب آپ باپو کے نام پر ڈھاتے ہیں! ارےکچھ تو خوف کھایئے اور ایمان و سادگی کی زندگی اپنایئے .

میں زیادہ نہ کہکر بس اتنا کہونگی کہ ہوش میں آیئے . ان لاکھوں کروڑوں غریبوں اور لاچاروں کو دیکھئے جنھیں دو جون روٹی بھی نصیب نہیں ہوتی. میں ان کی طرف سے بول رہی ہوں . ابھی وقت ہے سنبھل جایئے اور انسانیت کے نام پر آپ سے اپیل کرتی ہوں کہ اس ملک کو برباد و غلام ہونے سے بچائیے .

[یہ کہکر وہ نہ جانے کہاں غائب ہوگئی.]

سبھاپتی (آنکھیں ملتے ہوئے)—دیر کافی ہوگئی ہے . اب ہم یہ اجلاس ختم کریں . ایک بار پھر کیندری سرکار کی طرف سے اور اپنی طرف سے میں آپ سب کا' وشیشکر راجا جی کا شکریہ ادا کرتا ہوں جو یہاں آئے اور اتنی دلچسپی سے دو دن بتائے .

راجا جی—فائننس منسٹر کو تین تالیاں' جے ہند .

—سریش رام بھائی .

पर टैक्स लगाते हैं और वह आप को उसके लिये भला बुरा कहती है. उससे वह बचने की कोशिश करती है, आपके अफ़सरों को रिश्वत देती और बेईमानी करती है. आपका नया नया टैक्स लगाना माने बेईमानी व धोकेबाज़ी में बढ़ोत्तरी होना. पर उन सब टैक्सों का बोझ आखिर मुझे--जनता को —ही उठाना पड़ता है और आफ़त मेरी आती है.

आप सब मेरे सहारे जीते हैं लेकिन मुझे ही तंग करके आज कल अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने का काम कर रहे हैं. ज़रा देखिये क्या हालत है छोटे धन्दों की–बुनकर, बढ़ई, लुहार, सुनार, रंगरेज़, छीपी, धोबी, कुम्हार, पिसनहारा, वग़ैरा सब ग़ायब होते जा रहे हैं. आप अपने को विदेशी पूंजी और विदेशी अक़्ल के चंगुल में फांसते जा रहे हैं. रही देशी पूंजीपतियों की बात तो आप सारी बागडोर 10-12-15-20 पूंजीपतियोंके हाथ में दे दे रहे हैं और हमेशा के लिये अपने को उनका मुहताज बनाये डाल रहे हैं. मैं पूछ सकती हूँ कि क्या ऐसी हालत में आपकी आज़ादी सलामत रहेगी ? आपके प्रधान मंत्री यहां नहीं हैं वरना मैं उनसे पूछती कि 5 जनवरी 1952 को जो उन्होंने एक काग़ज़ पर दस्तख़त किये वह राज़ीनामा था या ग़ुलामी का पट्टा ? अब भला आप बच सकते हैं अमरीका की मरज़ी का शिकार होने से ? घर में आग लगी हुई है और वह तफ़रीह कर रहे हैं, और आप यहां दिन में बिजली जला कर सूरज के वजूद से भी इन्कार कर रहे हैं. यह तो आपकी कैफ़ियत है.

आप अपने को फ़ाइनेन्स मिनिस्टर कहते हैं. ज़रा अपने दिल पर हाथ रख कर देखिये कि क्या आप सचमुच अपने अपने इलाक़ों के रुपये-माल का उसी तरह ख़्याल करते हैं जिस तरह अपने घर का. अगर आप अपनी जगह ईमानदार और इन्साफ़ पसंद होते तो भला मेरी ऐसी तबाही आ सकती थी ? आप आंख मूंद कर दस्तख़त करते हैं और सरकारी महकमों में बेईमानी, रिश्वत ख़ोरी, चोरी वग़ैरा की तूती बुलवाते हैं. अगर आप अपनी जगह सही और मज़बूत होते तो भला मजाल है कि यह अंधेर हो. आजकल आपने दस्तूर बनाया है आई. सी. एस. अफ़सरों को बाहर भेज कर सौदे करने का. क्या आप भोले बच्चे हैं जो यह नहीं समझते कि इन सौदों में यह अफ़सर मनमाना करते हैं और सरमायेदार बन जाते हैं ? और जब वह ऐसा करेंगे तो भला नीचे वाले 125-150 पाने वाला बाबू और 40-50 पाने वाला बेचारा चपरासी ईमान से रह सकेगा और फिर जनता की क्या हालत होगी ? इस कान्फ्रेंस को ही ले लीजिये.

پر ٹیکس لگاتے ھیں اور وہ آپکو اس کے لئے بھلا برا کہتی ھے . اس سے وہ بچنے کی کوشش کرتی ھے، آپکے افسروں کو رشوت دیتی اور بے ایمانی کرتی ھے . آپکا نیا نیا ٹیکس لگانا معنے بے ایمانی و دھوکے بازی میں بڑھوتری ھونا . پر ان سب ٹیکسوں کا بوجھ آخر مجھے—جنتا کو—ھی اٹھانا پڑتا ھے اور آفت میری آتی ھے .

آپ سب میرے سہارے جیتے ھیں لیکن مجھے ھی تنگ کرکے آجکل اپنے پیر میں کلہاڑی مارنے کا کام کر رھے ھیں . ذرا دیکھئے کیا حالت ھے چھوٹے دھندوں کی—بنکر، بڑھئی، لوھار، سنار، رنگریز، چھیپی، دھوبی، کمہار، پسنہارا، وغیرہ غائب ھوتے جا رھے ھیں . آپ اپنے کو ودیشی پونجی اور ودیشی عقل کے چنگل میں پھانستے جا رھے ھیں. رھی دیسی پونجی پتیوں کی بات تو آپ ساری باگڈور 10-12-15-20 پونجی پتیوں کے ھاتھ میں دے رھے ھیں اور ھمیشہ کے لئے اپنے کو انکا محتاج بنائے ڈال رھے ھیں. میں پوچھ سکتی ھوں کہ کیا ایسی حالت میں آپکی آزادی سلامت رھیگی ؟ آپکے پردھان منتری یہاں نہیں ھیں ورنا میں ان سے پوچھتی کہ 5 جنوری 1952 کو جو انہوں نے ایک کاغذ پر دستخط کئے وہ راضی نامہ تھا یا غلامی کا پٹہ ؟ اب بھلا آپ بچ سکتے ھیں امریکہ کی مرضی کا شکار ھونے سے؟ گھر میں آگ لگی ھوئی ھے اور وہ تفریح رھے ھیں اور آپ یہاں دن میں بجلی جلا کر سورج کے وجود سے بھی انکار کر رھے ھیں . یہ تو آپکی کیفیت ھے.

آپ اپنے کو فائننس منسٹر کہتے ھیں. ذرا اپنے دل پر ھاتھ رکھ دیکھئے کہ کیا آپ سچ مچ اپنے اپنے علاقوں کے روپئے مال کا اسی طرح خیال کرتے ھیں جس طرح اپنے گھر کا. اگر آپ اپنی جگہ ایماندار اور انصاف پسند ھوتے تو بھلا تباھی میری ایسی آ سکتی تھی . آپ آنکھ موند کر دستخط کرتے ھیں اور سرکاری محکموں میں بے ایمانی، رشوت خوری، چوری وغیرہ کی توطی بلواتے ھیں. اگر آپ اپنی جگہ صحیح اور مضبوط ھوتے تو بھلا مجال ھے کہ یہ اندھیر ھو . آج کل آپنے دستور بنایا ھے آئی. سی. ایس. افسروں کو باھر بھیجکر سودے کرنے کا. کیا آپ بھولے بچے ھیں جو یہ نہیں سمجھتے کہ ان سودوں میں یہ افسر من مانا کرتے ھیں اور سرمایہ دار بن جاتے ھیں؟ اور جب وہ ایسا کرینگے تو بھلا نیچے والے 125-150 پانے والا بابو اور 40-50 پانے والا بیچارہ چپراسی ایمان سے رہ سکیگا اور پھر جنتا کی کیا حالت ھوگی ؟ اس کانفرنس کو ھی لے لیجئے .

शाह (यूनियन डिप्टी मिनिस्टर)—नहीं साहब, त्यागी जी नाम के भले त्यागी हों पर कोई चीज़ छोड़ने वाले नहीं हैं. आपने सहयोग का वादा किया उसके लिये हम आपके बहुत अहसानमन्द हैं.

सुब्रह्मण्यम (मद्रास)—एक चीज़ जो मुझे क्या हर प्रदेश वाले को खटकती है वह है केन्द्र के मुलाज़िमों की ऊंची तनख़ाहें. काम एक, ज़िम्मेदारी एक, पर प्रदेश वाले के मुक़ाबले केन्द्र वाले की तनख़ा ज़ियादा, छुट्टियां ज़ियादा, भत्ते ज़ियादा और काम के घंटे भी कम.

हाफ़िज़जी (यू. पी.)—इस चीज़ से वाक़ई हमें बहुत परेशानी उठानी पड़ती है. यह अंगरेज़ों की एक बुरी विरासत है जिससे जल्द से जल्द हमें मुक्त हो जाना चाहिये.

सभापति—केन्द्र का एक अपना तरीक़ा है जिससे वह काम करता आ रहा है. पर आप की इस बात पर हम ग़ौर करेंगे. अब वक़्त पूरा हो रहा है. मुझे मालूम हुआ है कि शाम को 6 बजे जानी वाली गाड़ियों से आप ज़ियादातर भाई जाने वाले हैं. सवाल कई रह गये थे—कामोडिटी दाम कन्ट्रोल, खेती की चीज़ों पर टैक्स, रिज़र्व बैंक के पास प्रदेशों की पूंजी और जमा करने का सिलसिला, वग़ैरा. पर इन पर हम आप को लिख देंगे और आप अपनी क़ीमती राय हमें भेज दें. उनके अनुसार सोच विचार के बाद हम काम करेंगे.

[सभापति ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि मीटिंग का कमरा फट से खुला और धमाके के साथ बन्द हो गया और सारे हाल में अचानक एक रोशनी छा गई, कुछ चमक सी पैदा हुई और फिर गरजती हुई एक आवाज़ सुनाई दी.]

जनता—आप मुझे नहीं जानते, मेरा नाम जनता है और राष्ट्रपति भवन जैसी जगह वग़ैरा में मैं झांकती तक नहीं. पर दूर दूर से जब आप की—जो अपने को ज़िम्मेदार फ़ाइनेन्स मिनिस्टर कहते हैं—बातें कल और आज के अख़बारों में देखीं तो मुझ से न रहा गया और मैं आपसे कुछ खरी खरी कहने आई हूँ.

आप की दो रोज़ की इस बहस से मुझे ऐसा महसूस हुआ कि आप सब के सब, केन्द्र वाले हों या प्रदेश वाले, जनता के सामने पहुंच कर सहयोग का राग अलापते हैं पर अपने घर या आपस में लुटेरों या गिद्ध जैसा बर्ताव करते हैं. आपकी इस कान्फ्रेंस में सहयोग का मुझे कहीं नाम भी नहीं मिला. इस कान्फ्रेंस को टैक्स कलक्टरों की कान्फ्रेंस कहना ज़ियादा ठीक होगा. आप सब के सब इस फ़िराक़ में हैं कि कैसे जनता को ज़ियादा से ज़ियादा चूस लें. आप इन्डस्ट्री

شاہ یونین ڈپٹی منسٹر—نہیں صاحب تیاگی جی نام کے بھلے تیاگی ہوں پر کوئی چیز چھوڑ نے والے نہیں ہیں. آپنے جو سہیوگ کا وعدہ کیا اس کے لئے ہم آپکے بہت احسانمند ہیں ۔

سبرہ منیم (مدراس)—ایک چیز جو مجھے کیا ہر پردیش والے کو کھٹکتی ہے وہ ہے کیندر کے ملازموں کی اونچی تنخواہیں۔ کام ایک' ذمہ داری ایک' پر پردیش والے کے مقابلے کیندر والے کی تنخواہ زیادہ' چھٹیاں زیادہ' بھتے زیادہ اور کام کے گھنٹے بھی کم.

حافظ جی (یو. پی.)—اس چیز سے واقعئی ہمیں بہت پریشانی اٹھانی پڑتی ہے ۔ یہ انگریزوں کی ایک بری وراثت ہے جس سے جلد سے جلد ہمیں مکت ہوجانا چاہئے.

سبھاپتی—کیندر کا ایک اپنا طریقہ جس سے وہ کام کرتا آ رہا ہے. پر آپکی اس بات پر ہم غور کرینگے ۔ اب وقت پورا ہو رہا ہے ۔ مجھے معلوم ہوا ہے کہ شام کو 6 بجے جانے والی گاڑیوں سے آپ زیادہ تر بھائی جانے والے ہیں. سوال کئی رہ گئے تھے—کاموڈٹی دام کنٹرول' کھیتی کی چیزوں پر ٹیکس' ریزرو بینک کے پاس پردیشوں کی پونجی اور جمع کرنے کا سلسلہ' وغیرہ. پر ان پر ہم آپکو لکھ دینگے اور آپ اپنی قیمتی رائے بھیجدیں ۔ ان کے انوسار سوچ وچار کے بعد ہم کام کرینگے ۔

[سبھاپتی نے اپنی بات پوری بھی نہیں کی تھی کہ میٹنگ کا کمرا پھٹ سے کھلا اور دھماکے کے ساتھ بند ہوگیا اور سارے ہال میں اچانک ایک روشنی چھا گئی' کچھ چمک سی پیدا ہوئی اور پھر گرجتی ہوئی ایک آواز سنائی دی ۔]

جنتا—آپ مجھے نہیں جانتے میرا نام جنتا ہے اور راشٹرپتی بھون جیسی جگہ وغیرہ میں میں جھانکتی تک نہیں پر دور دور سے جب آپکی—جو اپنے کو ذمہ دار فائیننس منسٹر کہتے ہیں—باتیں کل اور آج کے اخباروں میں دیکھیں تو مجھ سے نہ رہا گیا اور میں آپ سے کچھ کھری کھری کہنے آئی ہوں ۔

آپ کی دو روز کی اس بحث سے مجھے ایسا محسوس ہوا کہ آپ سب کے سب' کیندر والے ہوں یا پردیش والے' جنتا کے سامنے پہنچکر سہیوگ کا راگ الاپتے ہیں پر اپنے گھر یا آپس میں لٹیرے یا گدھ جیسا برتاؤ کرتے ہیں ۔ آپ کی اس کانفرنس میں سہیوگ کا مجھے کہیں نام بھی نہیں ملا اس کانفرنس کو ٹیکس کلکٹروں کی کانفرنس کہنا زیادہ ٹھیک ہوگا ۔ آپ سب کے سب اس فراق میں ہیں کہ کیسے جنتا کو زیادہ سے زیادہ چوس لیں. آپ انڈسٹری

देना चाहता हूँ कि जिस चश्मे से आप केन्द्र के सवालों को देखते हैं उस चश्मे से आपको प्रदेशों के सवाल नहीं देखना चाहिये. अगर हमारी ज़रूरतें ठीक तरह जानना चाहते हैं तो यह चश्मा बदलिये.

आपने Essential Commodities Act की बात कही. क्या हमें इतनी समझ नहीं है कि किस चीज़ को Essential या ज़रूरी समझें और किस पर कैसा टैक्स लगायें ? केन्द्र ने जो Act पास किया है उस पर मैं उसे मुबारकबाद नहीं दे सकता. एक बद-क़िस्मत क़दम ही कहूंगा. फिर, एक चीज़ एक प्रदेश में ज़रूरी हो सकती है दूसरे में नहीं. अपनी मसलहत के मुताबिक़ हम उस पर टैक्स लगायेंगे. सब धान एक पसेरी न तौले जा सकते हैं और न तौले जाने चाहियें.

सभापति—मुझे अफ़सोस है कि राजाजी मेरे मतलब को नहीं समझे. उनकी या प्रदेशों की दिक़्क़तें मैं महसूस करता हूँ. पर क्या वह इससे इन्कार करेंगे कि जो रियासतें चादर से ज़ियादा पैर फ़ैलायें उन्हें हम अगर होशियार न करें तो कौन उन्हें रास्ते पर लायेगा ? फिर हमें यह भी देखना है कि देश की इन्डस्ट्री व व्यापार को तो धक्का नहीं पहुँच रहा है.

जीवराज (बम्बई)—हां, जो आपे से बाहर हो कर काम करें उन्हें आप ज़रूर बांधे रखिये या जो चाहे सो कीजिये पर जो इस दर्जे में नहीं आते उनके ऊपर अगर आपकी मेहरबानी रहे तो अच्छा है.

सभापति—सेल टैक्स के साथ ही साथ सवाल है रियासतों या केन्द्र में जो नये टैक्स लगाये जाते हैं उनका. क्या उनमें हम कुछ एकता ला सकते हैं ?

हाफ़िज़जी (यू. पी.)—दर असल यह एक बड़ा लम्बा चौड़ा सवाल है और केन्द्र की तरफ़ से जो टैक्स जांच कमेटी बनाई जाने वाली है उसके काम व दायरे पर विचार करने का सवाल है.

अनुग्रह बाबू (बिहार)—मुझे डर है कि हमारे पास इतना वक़्त नहीं है जो इस सवाल में हम इस वक़्त जा सकें. बेहतर हो कि रियासतों को इस सिलसिले में जो राय देनी है वह केन्द्र को भेज दें.

महावीर त्यागी—बड़ी आफ़त है कि वक़्त ख़त्म होने आया. मेरे सामने बड़ी गम्भीर समस्या उन टैक्सों की है जो अब तक वसूल नहीं हुए और रुके पड़े हैं.

सेन (बंगाल)—अरे बाबा, जो मदद हम से कहो देने को तैयार हैं. और क्या चाहते हो ? (सब हंस पड़े)

मानू भाई (सौराष्ट्र)—हम भी त्यागीजी की पूरी मदद करने को तैयार हैं. पर हम समझ रहे थे कहीं उन्होंने अपना मोह त्याग तो नहीं दिया. (और भी हंसी)

دینا چاہتا ہوں کہ جس چشمے سے آپ کیندر کے سوالوں کو دیکھتے ہیں اس چشمے سے آپکو پردیشوں کے سوال نہیں دیکھنا چاہئے. اگر ہماری ضرورتیں ٹھیک طرح جاننا چاہتے ہیں تو یہ چشمہ بدلئے .

آپنے Essential Commodities Act کی بات کہی. کیا ہمیں اتنی سمجھ نہیں ہے کہ کس چیز کو Essential یا ضروری سمجھیں اور کس پر کیسا ٹیکس لگائیں ؟ کیندر نے جو ایکٹ پاس کیا ہے اس پر میں اسے مبارکباد نہیں دے سکتا' ایک بدقسمت قدم ہی کہونگا . پھر ' ایک چیز ایک پردیش میں ضروری ہوسکتی ہے دوسرے میں نہیں. اپنی مصلحت کے مطابق ہم اس پر ٹیکس لگائینگے. سب دھان ایک پسیری نہ تولے جا سکتے ہیں اور نہ تولے جانے چاہئیں.

سبھاپتی—مجھے افسوس ہے کہ راجا جی میرے مطلب کو نہیں سمجھے. ان کی یا پردیشوں کی دقتیں میں محسوس کرتا ہوں . پر کیا وہ اس سے انکار کرینگے کہ جو ریاستیں چادر سے زیادہ پیر پھیلائیں انہیں ہم اگر ہوشیار نہ کریں تو کون انہیں راستے پر لائیگا ؟ پھر ہمیں یہ بھی دیکھنا ہے کہ دیش کی انڈسٹری و ویوپار کو تو دھکا نہیں پہنچ رہا ہے .

جیوراج (بمبئی)—ہاں' جو آپے سے باہر ہوکر کام کریں انہیں آپ ضرور باندھے رکھئے یا جو چاہے سو کیجئے پر جو اس درجے میں نہیں آتے ان کے اوپر اگر آپکی مہربانی رہے تو اچھا ہے .

سبھاپتی—سیل ٹیکس کے ساتھ ہی ساتھ سوال ریاستوں یا کیندر میں جو نئے ٹیکس لگائے جاتے ہیں انکا . کیا انمیں ہم کچھ ایکتا لاسکتے ہیں ؟

حافظ جی (یو. پی.)—دراصل یہ ایک بڑا لمبا چوڑا سوال ہے اور کیندر کی طرف سے جو ٹیکس جانچ کمیٹی بنائی جانے والی ہے اس کے کام و دائرہ پر وچار کرنے کا سوال ہے .

انوگرہ بابو (بہار)—مجھے ڈر ہے کہ ہمارے پاس اتنا وقت نہیں ہے جو اس سوال میں ہم اس وقت جاسکیں. بہتر ہو کہ ریاستوں کو اس سلسلے میں جو رائے دینی ہے وہ کیندر کو بھیجدیں .

مہاویر تیاگی—بڑی آفت ہے کہ وقت ختم ہونے آیا. میرے سامنے بڑی گمبھیر سمسیا اُن ٹیکسوں کی ہے جو اب تک وصول نہیں ہوئے اور رکے پڑے ہیں .

سین (بنگال)—ارے بابا' جو مدد ہم سے کہو دینے کو تیار ہیں. اور کیا چاہتے ہو ؟ (سب ہنس پڑے)

مانو بھائی (سوراشٹر)—ہم بھی تیاگی جی کی پوری مدد کرنے کو تیار ہیں . پر ہم سمجھ رہے تھے کہیں انہوں نے اپنا موہ تیاگ تو نہیں دیا. (اور بھی ہنسی)

मक़नलाल (मध्य प्रदेश)—यह ठीक है. अगर सेन्टर 15 जनवरी तक अपना जवाब दे दे तो फ़रवरी में हम आसानी से अपनी असेम्बलियों के सामने बजट पेश कर सकते हैं.

उज्जल सिंह (पंजाब)—मैं इससे इत्तफ़ाक़ करता हूं. यह एक ऐसा फ़ैसला है जिससे हमें ठोस मदद मिल जायेगी.

सभापति—अब हम <u>सेल टैक्स</u> के सवाल को लेंगें. कमेटी की रिपोर्ट की नक़ल आप सबके पास पहुंच गई है. कमेटी ने बड़े ग़ौर के बाद यह रिपोर्ट तैयार की है.

हाफ़िज़जी (यू. पी.)—कमेटी की रिपोर्ट मुझे उम्मीद है सब भाइयों को ही मंज़ूर होगी मैं कमेटी को मुबारकबाद देता हूं कि ऐसे पेचीदा मसले पर वह एक हमराय रिपोर्ट बना सकी.

अनुग्रह बाबू (बिहार)—अब सवाल इस रिपोर्ट के अमल में लाने का है.

जीवराज (बम्बई)—मेरी सिफ़ारश है कि कुछ रियासतों के अर्थ महकमों के अफ़सरों को मिला कर एक कमेटी बना दी जाये जो इस रिपोर्ट को अमल में उतारे और कुछ रुकावट हो तो हम लोगों को इत्तला दे.

[कुछ बात चीत के बाद यह तय पाया कि इस कमेटी में एक अफ़सर नई दिल्ली के अर्थ महकमे का हो और एक एक हो मदरास, बम्बई. बिहार, बंगाल, पंजाब, ट्रावनकोर कोचीन और दिल्ली के सूबों की सरकारों का.]

सभापति—एक बज रहा है. हम अब उठें और तीन बजे मिलेंगे.

× × ×

[कान्फ्रेंस का आख़री और चौथा इजलास]

सभापति—मुझे नहीं मालूम कि जितने विशय हमारे सामने हैं किस तरह उन सब के साथ हम अब इन्साफ़ कर सकते हैं. आपको मालूम है कि केन्द्र में Essential Commodities Act पास हो चुका है. मुझे अफ़सोस है कि रियासतों ने इसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया और हमें कोई मदद नहीं पहुंचाई. वह अपने मनमाना ही करती हैं और हमें एक साधन बना लिया आये है दिन कुछ न कुछ ले लेने का.

राजाजी—कहना तो नहीं चाहिये मगर बिना कहे दिल भी नहीं मानता. मेरी समझ में नहीं आता कि प्रदेशों को भला बुरा कहने या बदनाम करने की जो लत केन्द्र को पड़ गई है वह कब छूटेगी. मैंने कल भी कहा था और आज फिर कहता हूं कि हम ग़ैरज़िम्मेदार नहीं ज़िम्मेदार आदमी हैं. और सभापति जी ! मैं आपको बता

مکھن لال (مدھیہ پردیش)—یہ ٹھیک ہے . اگر سینٹر 15 جنوری تک اپنا جواب دے دے تو فروری میں ہم آسانی سے اپنی اسمبلیوں کے سامنے بجٹ پیش کر سکتے ہیں .

اجل سنگھ (پنجاب)—میں اس سے اتفاق کرتا ہوں . یہ ایک ایسا فیصلہ ہے جس سے ہمیں ٹھوس مدد مل جائے گی .

سبھاپتی—اب ہم <u>سیل ٹیکس</u> کے سوال کو لیں گے . کمیٹی کی رپورٹ کی نقل آپ سب کے پاس پہنچ گئی ہے . کمیٹی نے بڑے غور کے بعد یہ رپورٹ تیار کی ہے .

حافظ جی (یو . پی .)—کمیٹی کی رپورٹ مجھے امید ہے سب بھائیوں کو ہی منظور ہوگی . میں کمیٹی کو مبارک باد دیتا ہوں کہ ایسے پیچیدہ مسئلے پر وہ ایک ہم رائے رپورٹ بنا سکی .

انوگرہ بابو (بہار)—اب سوال اس رپورٹ کے عمل میں لانے کا ہے .

جیوراج (بمبئی)—میری سفارش ہے کہ کچھ ریاستوں کے ارتھ محکموں کے افسروں کو ملا کر ایک کمیٹی بنا دی جائے جو اس رپورٹ کو عمل میں اتارے اور کچھ رکاوٹ ہو تو ہم لوگوں کو اطلاع دے .

[کچھ بات چیت کے بعد یہ طے پایا کہ اس کمیٹی میں ایک افسر نئی دلی کے ارتھ محکمے کا ہو اور ایک ایک ہو مدراس، بمبئی، بہار، بنگال، پنجاب، ٹراونکور کوچین اور دلی کے صوبوں کی سرکاروں کا .]

سبھاپتی—ایک بج رہا ہے . ہم اب اٹھیں اور تین بجے ملیں گے .

× × ×

[کانفرنس کا آخری اور چوتھا اجلاس .]

سبھاپتی—مجھے نہیں معلوم کہ جتنے وشے ہمارے سامنے ہیں کس طرح ان سب کے ساتھ ہم اب انصاف کرسکتے ہیں . آپ کو معلوم ہے کہ کیندر میں Essential Commodities Act پاس ہو چکا . مجھے افسوس ہے کہ ریاستوں نے اس کی طرف دھیان نہیں دیا اور ہمیں کوئی مدد نہیں پہنچائی . وہ اپنی من مانی ہی کرتی ہیں اور ہمیں ایک سادھن بنا لیا ہے آئے دن کچھ نہ کچھ لے لینے کا .

راجا جی—کہنا تو نہیں چاہئے مگر بنا کہے دل بھی نہیں مانتا . میری سمجھ میں نہیں آتا کہ پردیشوں کو بھلا برا کہنے یا بدنام کرنے کی جو لت کیندر کو پڑ گئی ہے وہ کب چھوٹیگی . میں نے کل بھی کہا تھا اور آج پھر کہتا ہوں کہ ہم غیر ذمہ دار نہیں ذمہ دار آدمی ہیں . اور سبھاپتی جی ! میں آپ کو بتا

सभापति—मैं भी मानता हूँ कि इस तरह की गुंजाइश योजना में रहनी चाहिये और मैं यक़ीन करता हूँ कि प्लानिंग कमीशन के जो मेरे दोस्त यहां बैठे हैं इस पर पूरा ध्यान देंगे. पर मुझे उम्मीद है कि अचानक दुर्घटनाओं के अलावा हम योजना की पूरी पाबन्दी करेंगे और कोई ख़र्च इसके बाहर नहीं करेंगे.

सेन (बंगाल)—इसमें तो हमारा सबका नफ़ा है. हम बाहर जायेंगे ही क्यों ?

गोविन्द मेनन (ट्रावनकोर कोचीन)—मुझे ऐसा लगता है कि क्या सेन्टर, क्या A प्रदेश वालों को, B और C वालों की हालत की जानकारी ही नहीं है. मेरा ख़याल है कि अगर केन्द्र मदद दे तब भी हम पंचसाला योजना को अपने यहां पूरी तरह अमल में नहीं ला सकेंगे क्योंकि हमारे पास साधनों की बहुत कमी है.

ननजप्पा (मैसूर)—ट्रावनकोर कोचीन के भाई की बात से मैं पूरी तरह इत्तफ़ाक़ करता हूँ. छोटे प्रदेशों की हालत तो और भी दर्दनाक है.

माथूराम (राजस्थान)—मेरा ख़्याल है कि हालात के मुताबिक़ पंचसाला योजना में तरमीम की जानी चाहिये.

राजाजी—जैसा मैंने दूसरे सिलसिले में कहा था यह ज़रूरी है कि विशेष हालतों की रोशनी में योजना में तब्दीली की जानी चाहिये. हां, इसमें प्लानिंग कमीशन और केन्द्र दोनों की सलाह से हम काम करेंगे.

गुलज़ारीलाल नन्दा—बहुत बहुत धन्यवाद. लेकिन मैं यह कहना चाहूँगा कि योजना से जितना कम हटा जाये उतना ही अच्छा है वरना योजना का बनना न बनना बराबर हो जायेगा.

अनुग्रह बाबू (बिहार)—आप घबरायें नहीं, हम हत्तुल इमकान पूरी कोशिश करेंगे.

सभापति—अब सवाल है रियासतों की बजट नीति का. अगर यह एक सी हो सके तो अच्छा है. मैं तो यह भी चाहूँगा कि रियासतें अपने बजट बनाने के पहले हमें ख़बर दे दिया करें.

जीवराज (बम्बई)—यह तो बहुत ख़तरनाक बात मुझे मालूम पड़ती है. अगर हमारे बजट सुझाव कहीं बीच में लीक कर (ज़ाहिर हो) गये तब तो हमारे सारे अर्थ बन्दोबस्त पर असर पड़ सकता है और बजट की जो एक आन है वह मिट्टी में मिल जायेगी.

हाफ़िज़जी (यू. पी.)—हम इतना ज़रूर कर सकते हैं कि केन्द्र से हमें जो मदद लेना है उसकी सूचना दिसम्बर के महीने तक पहुँचा दें और फिर जनवरी में केन्द्र हमें बता दे कि हमारी मांग को किस हद तक पूरी कर सकता है.

سبھا پتی—میں بھی مانتا ہوں کہ اس طرح کی گنجائش یوجنا میں رہنی چاہئے اور میں یقین کرتا ہوں کہ پلاننگ کمیشن کے جو میرے دوست یہاں بیٹھے ہیں اس پر پورا دھیان دینگے. پر مجھے اُمید ہے کہ اچانک درگھٹناؤں کے علاوہ ہم یوجنا کی پوری پابندی کرینگے اور اور کوئی خرچ اس کے باہر نہیں کرینگے .

سین (بنگال)—اس میں تو ہمارا سب کا نفع ہے . ہم باہر جائیں گے ہی کیوں ؟

گووند مینن (ٹرانکور کوچین)—مجھے ایسا لگتا ہے کہ کیا سینٹر، کیا A پردیش والوں کو، B اور C والوں کی حالت کی جانکاری ہی نہیں ہے . میرا خیال ہے کہ اگر کیندر مدد دے تب بھی ہم پنچ سالا یوجنا کو اپنے یہاں پوری طرح عمل میں نہیں لا سکیں گے کیونکہ ہمارے پاس سادھنوں کی بہت کمی ہے .

ننجپا (میسور)—ٹرانکور کوچین کے بھائی کی بات سے میں پوری طرح اتفاق کرتا ہوں . چھوٹے پردیشوں کی حالت تو اور بھی دردناک ہے .

ناتھو رام (راجستھان)—میرا خیال ہے کہ حالات کے مطابق پنچ سالا یوجنا میں ترمیم کی جانی چاہئے .

راجا جی—جیسا میں نے دوسرے سلسلے میں کہا تھا یہ ضروری ہے کہ وشیش حالتوں کی روشنی میں یوجنا میں تبدیلی کی جانی چاہئے . ہاں، اس میں پلاننگ کمیشن اور کیندر دونوں کی صلاح سے ہم کام کرینگے .

گلزاری لال نندا—بہت بہت دھنیہ واد . لیکن میں یہ کہنا چاہونگا کہ یوجنا سے جتنا کم ہٹا جائے اتنا ہی اچھا ہے ورنا یوجنا کا بننا نہ بننا برابر ہوجائے گا .

انوگرہ بابو (بہار)—آپ گھبرائیں نہیں، ہم حتّی الامکان پوری کوشش کریں گے .

سبھا پتی—اب سوال ہے ریاستوں کی بجٹ نیتی کا . اگر یہ ایک سی ہو سکے تو اچھا ہے . میں تو یہ بھی چاہوں گا کہ ریاستیں اپنے بجٹ بنانے کے پہلے ہمیں خبر دے دیا کریں .

جیوراج (بمبئی)—یہ تو بہت خطرناک بات مجھے معلوم پڑتی ہے . اگر ہمارے بجٹ سجھاؤ کہیں بیچ میں لیک کر (ظاہر ہو) گئے تب تو ہمارے سارے ارتھ بندوبست پر اثر پڑ سکتا ہے اور بجٹ کی جو ایک آن ہے وہ مٹی میں مل جائے گی .

حافظ جی (یو . پی .)—ہم اتنا ضرور کر سکتے ہیں کہ کیندر سے ہمیں جو مدد لینا ہے اس کی سوچنا دسمبر کے مہینے تک پہنچا دیں اور پھر جنوری میں کیندر ہمیں بتا دے کہ ہماری مانگ کو کس حد تک پوری کر سکتا ہے .

है. इस वक़्त हम पहले पंच साला योजना के अमल में लाने पर विचार करेंगे. इसी के साथ केन्द्रीय मदद और सूबों की बजट पालिसी के मेल मिलाप के सवाल भी आ जाते हैं.

जीवराज (बम्बई)—पंच साला योजना का अमल में लाया जाना बहुत ज़रूरी है. पर हम इतने ही पांव पसार सकते हैं जितनी बड़ी चादर होगी.

हाफ़िज़जी (यू. पी.)—बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जो इस योजना में शामिल नहीं हैं पर जिन पर खर्च करना लाज़मी हो जाता है.

सुब्रह्मन्यम (मद्रास)—साथ ही साथ कुछ क़ुदरती दुर्घटनाओं, अकाल वग़ैरा के भी सवाल हैं जिन पर न सिर्फ़ क़ाफ़ी रुपया खर्च करना पड़ता है बल्कि काफ़ी ताक़त, दिमाग़ और साधन भी खर्च हो जाते हैं. पर पंच साला योजना में भूटे को भी उनके लिये जगह नहीं रखी गई है. हम जब केन्द्र से मदद मांगते हैं तो दो टूक जवाब मिल जाता है.

सभापति—मेरे दोस्त यह क़बूल करेंगे कि केन्द्र के मदद करने की भी हद होती है. उसके पास अथाह भंडार नहीं है. फिर हमें सभी प्रदेशों का सोचना होता है जहां आप सिर्फ़ अपने का विचार करते हैं.

डोगरा (कश्मीर)—पर केन्द्र यह तो सहज देख सकता है कि किसकी ज़रूरत कैसी है और किस तरफ़ केन्द्र को पहले ध्यान देना चाहिये.

सभापति—हम ज़रूर देख सकते हैं कि किसकी ज़रूरत कैसी है. पर जिसकी मदद न करें वही ख़फ़ा हो जाता है. पंच साला योजना में जो 55 प्रोजेक्ट हैं उनको चलाने में रियासतों को कोई कसर बाक़ी नहीं रखनी चाहिये. इसलिये जो चीज़ें प्लान में नहीं हैं उन पर हम खर्च नहीं करें या कम से कम करें.

राजाजी—लेकिन सेन्टर को महसूस करना चाहिये कि अगर मेरे प्रदेश में अकाल पड़ा हो तो प्रोजेक्ट बाद को चलाऊंगा अकाल पहले बचाऊंगा. मेरी सिफ़ारिश तो यह है कि एक अच्छी रक़म अकाल और अज्ञात सूरतों के लिये योजना में रख दी जाये. तीस करोड़ की रक़म मैं तजवीज़ करता हूं. अगर पंचसाला योजना इस तरफ़ से आंख बन्द करती है तो वह कभी असलियत के दायरे में नहीं रह सकती.

हाफ़िज़जी (यू. पी.)—मुझे उम्मीद है कि राजाजी की तजवीज़ पर सेन्टर वाले ध्यान देंगे और इस तरह की कोई सूरत योजना में ज़रूर रक्खेंगे. इसके बिना मुझे डर है योजना पर कामयाबी के साथ हम अमल नहीं कर सकेंगे.

ہے. اس وقت ہم پہلے پنچ سالہ یوجنا کے عمل میں لانے پر وچار کریں گے. اسی کے ساتھ کیندری مدد اور صوبوں کی بجٹ پالیسی کے میل ملاپ کے سوال بھی آ جاتے ہیں.

جیوراج (بمبئی)—پنچ سالہ یوجنا کا عمل میں لیا جانا بہت ضروری ہے. پر ہم اتنے ہی پاؤں پسار سکتے ہیں جتنی بڑی چادر ہوگی.

حافظ جی (یو. پی.)—بہت سی چیزیں ایسی ہیں جو اس یوجنا میں شامل نہیں ہیں پر جن پر خرچ کرنا لازمی ہو جاتا ہے.

سبرامنیم (مدراس)—ساتھ ہی ساتھ کچھ قدرتی درگھٹناؤں، اکال وغیرہ کے بھی سوال ہیں جن پر نہ صرف کافی روپیہ خرچ کرنا پڑتا ہے بلکہ کافی طاقت، دماغ اور سادھن بھی خرچ ہو جاتے ہیں. پر پنچ سالہ یوجنا میں جھوٹے کو بھی ان کے لئے جگہ نہیں رکھی گئی ہے. ہم جب کیندر سے مدد مانگتے ہیں تو دو ٹوک جواب مل جاتا ہے.

سبھا پتی—میرے دوست یہ قبول کریں گے کہ کیندر کے مدد کرنے کی بھی حد ہوتی ہے. اس کے پاس اتھاہ بھنڈار نہیں ہے. پھر ہمیں سبھی پردیشوں کا سوچنا ہوتا ہے جہاں آپ صرف اپنے کا وچار کرتے ہیں.

ڈوگرا (کشمیر)—پر کیندر یہ تو سہج دیکھ سکتا ہے کہ کس کی ضرورت کیسی ہے اور کس طرف کیندر کو پہلے دھیان دینا چاہئے.

سبھا پتی—ہم ضرور دیکھ سکتے ہیں کہ کس کی ضرورت کیسی ہے. پر جس کی مدد نہ کریں وہی خفا ہو جاتا ہے. پنچ سالہ یوجنا میں جو 55 پروجیکٹ ہیں ان کو چلانے میں ریاستوں کو کوئی کسر باقی نہیں رکھنی چاہئے. اس لئے جو چیزیں پلان میں نہیں ہیں ان پر ہم خرچ نہیں کریں یا کم سے کم کریں.

راجا جی—لیکن سینٹر کو محسوس کرنا چاہئے کہ اگر میرے پردیش میں اکال پڑا ہو تو پروجیکٹ بعد کو چلاؤنگا اکال پہلے بچاؤں گا. میری سفارش تو یہ ہے کہ ایک اچھی رقم اکال اور اگیات صورتوں کے لئے یوجنا میں رکھ دی جائے. تیس کروڑ کی رقم میں تجویز کرتا ہوں. اگر پنچ سالہ یوجنا اس طرف سے آنکھ بند کرتی ہے تو وہ کبھی اصلیت کے دائرہ میں نہیں رہ سکتی.

حافظ جی (یو. پی.)—مجھے امید ہے کہ راجا جی کی تجویز پر سینٹر والے دھیان دیں گے اور اس طرح کی کوئی صورت یوجنا میں ضرور رکھینگے. اس کے بنا مجھے ڈر ہے یوجنا پر کامیابی کے ساتھ ہم عمل نہیں کر سکیں گے.

पहले से हमें दे दिया करें ताकि केन्द्र व प्रदेश में टक्कर न हो.

उज्जल सिंह (पंजाब)—इसमें तो किसी प्रदेश को ज़रा भी संकोच नहीं होगा.

सभापति—अब हमारे सामने छोटी मोटी बचत का सवाल है. मुझे दुःख है कि इधर दो तीन बरस से क्या केन्द्र वाले, क्या प्रदेश वाले सभी लापरवाह हो रहे हैं.

भूपेन्द्र सिंह (पेप्सू)—सदर साहब की बात से मैं इत्तफ़ाक़ करता हूं, लेकिन वाक़या यह है कि आज़ादी के बाद से लोगों की हालत में, ख़ास कर छोटे धन्दे वालों की हालत में वह तबाही आई है कि बचत का सवाल उठता ही नहीं है. एक के बाद एक हमारी दस्तकारियां मिटती चली जा रही हैं.

सेन (बंगाल)—पेप्सू के भाई की बात हमारी समझ में नहीं आती. आज किसान रुपये का ढाई सेर ग़ल्ला बेचता है जहां पहले 10-12 सेर बेचता था, आख़िर उसको बचत नहीं होती ?

सुब्रह्मन्यम (मद्रास)—मुझे तो ऐसा महसूस होता है कि हम लोगों को देहात की असली हालत से वाक़फ़ियत ही नहीं है. आज देहात की हालत कहीं ज़ियादा ख़राब है.

ब्रजलाल (मध्य प्रदेश)—मैं पूछ सकता हूं कि तब क्यों मद्रास सरकार किसानों पर नये टैक्स लगा रही है ?

हाफ़िज़जी (यू. पी.)—ऐसा तो हम भी उत्तर प्रदेश में करने जा रहे हैं.

राजाजी—मैं इस मामले को साफ़ कर दूं. जिसके ऊपर मुसीबत पड़ती है वही जानता है. आज कल के बढ़ते हुए ख़र्चों को किसी तरह पूरा तो करना है....बचत के सवाल पर मैं यह अर्ज़ करूंगा कि क्या केन्द्र, क्या प्रदेश सभी इसका ज़ोरदार आन्दोलन करें, लेकिन सेन्टर से एक अर्ज़ है कि अगर प्रदेशों की ख़ास कोशिश से हम लोग कुछ जमा कर पायें तो केन्द्र वाले इस में से कुछ हिस्सा हमें भी दे दें तो बड़ी इनायत हो.

सभापति—मुझे बख़ुशी मंज़ूर है. अब काफ़ी वक़्त हो गया है, सेल टैक्स वाली कमेटी को भी बैठना है. इसलिये हम लोग अब कल सुबह मिलेंगे.

× × ×

[तारीख़ 15 अक्तूबर, सुबह के 9 बजे. कान्फ़रेन्स का दूसरा दिन, तीसरा इजलास.]

सभापति—हमारे पास काम बहुत बाक़ी है लेकिन वक़्त बहुत थोड़ा है. केवल आज का ही दिन है. इसलिये आज हमें वक़्त की तंगी का लिहाज़ रखते हुए काम करना

پہلے سے ہمیں دے دیا کریں تاکہ کیندر و پردیش میں ٹکر نہ ہو۔

اُجّول سنگھ (پنجاب)—اِس میں تو کسی پردیش کو ذرا بھی سنکوچ نہیں ہوگا۔

سبھا پتی—اب ہمارے سامنے چھوٹی موٹی بچت کا سوال ہے۔ مجھے دکھ ہے کہ اِدھر دو تین برس سے کیا کیندر والے، کیا پردیش والے سبھی لاپرواہ ہو رہے ہیں۔

بھوپیندر سنگھ (پیپسو)—صدر صاحب کی بات سے میں اتفاق کرتا ہوں، لیکن واقعہ یہ ہے کہ آزادی کے بعد سے لوگوں کی حالت میں، خاص کر چھوٹے دھندے والوں کی حالت میں وہ تباہی آئی ہے کہ بچت کا سوال اُٹھتا ہی نہیں ہے۔ ایک کے بعد ایک ہماری دستکاریاں مٹتی چلی جا رہی ہیں۔

سین (بنگال)—پیپسو کے بھائی کی بات ہماری سمجھ میں نہیں آتی۔ آج کسان روپیہ کا ڈھائی سیر غلہ بیچتا ہے جہاں پہلے 10-12 سیر بیچتا تھا، آخر اس کو بچت نہیں ہوتی ؟

سبرامنیم (مدراس)—مجھے تو ایسا محسوس ہوتا ہے کہ ہم لوگوں کو دیہات کی اصلی حالت سے واقفیت ہی نہیں ہے۔ آج دیہات کی حالت کہیں زیادہ خراب ہے۔

برجلال (مدھیہ پردیش)—میں پوچھ سکتا ہوں کہ تب کیوں مدراس سرکار کسانوں پر نئے ٹیکس لگا رہی ہے ؟

حافظ جی (یو۔ پی۔)—ایسا تو ہم بھی اُتر پردیش میں کرنے جا رہے ہیں۔

راجا جی—میں اس معاملے کو صاف کر دوں۔ جس کے اوپر مصیبت پڑتی ہے وہی جانتا ہے۔ آج کل کے بڑھتے ہوئے خرچوں کو کسی طرح پورا تو کرنا ہے...... بچت کے سوال پر میں یہ عرض کروں گا کہ کیا کیندر کیا پردیش سبھی اِس کا زور دار آندولن کریں۔ لیکن سینٹر سے ایک عرض ہے کہ اگر پردیشوں کی خاص کوشش سے ہم لوگ کچھ جمع کر پائیں تو کیندر والے اس میں سے کچھ حصہ ہمیں بھی دیدیں تو بڑی عنایت ہو۔

سبھا پتی—مجھے بخوشی منظور ہے۔ اب کافی وقت ہو گیا ہے، سیل ٹیکس والی کمیٹی کو بھی بیٹھنا ہے۔ اِس لئے ہم لوگ اب کل صبح ملیں گے۔

× × ×

[تاریخ 15 اکتوبر، صبح کے 9 بجے۔ کانفرنس کا دوسرا دن، تیسرا اجلاس۔]

سبھا پتی—ہمارے پاس کام بہت باقی ہے لیکن وقت بہت تھوڑا ہے۔ کیول آج کا ہی دن ہے۔ اِس لئے آج ہمیں وقت کی تنگی کا لحاظ رکھتے ہوئے کام کرنا

जीवराज (बम्बई)—मुझे ऐसा लगता है कि फ़िल्म इन्क्वारी कमेटी को हमें विशेश महत्व नहीं देना चाहिये. जिस ज़माने में उसने रिपोर्ट पेश की थी तब से अब तक दुनिया कहीं आगे बढ़ चुकी है. मेरा ख़्याल है कि इस सवाल के ऊपर प्रदेशों की सरकारों को पुरी ख़ुदमुख़्तारी रहनी चाहिये. कम से कम बम्बई की तरफ़ से मैं आपको इतमिनान दिला देना चाहता हूँ कि न हम राजाजी जैसा कोई तूफ़ानी क़दम उठायेंगे और न अपनी आमदनी ही कम होने देंगे.

सभापति—मुझे डाक्टर जीवराज की बात मन्ज़ूर है. हम अब आगे चलें ? जनता से उधार लेने का सवाल लें.

जगजीवन राम—मैं ऐसा देखता हूँ कि आज जनता में उधार देने की ताक़त ख़त्म-सी हो गई है. उसे इतनी तकलीफ़ों का सामना करना पड़ता है कि वह कुछ बचा ही नहीं पाती. कम से कम अपने महकमे, लेबर के बारे में मैं यह अच्छी तरह जानता हूं.

राजाजी—मेरे भाई ने सच कहा कि आज जनता की हालत बहुत ख़राब है, पर मैं जानना चाहूँगा कि हालत अच्छी थी कब. सवाल हालत का नहीं है. सवाल है जनता के पास मुनासिब तरीक़े से जाने का. आप भाइयों को मालूम होगा कि हमने हाल ही में मद्रास में लोन (उधार) बात की बात में ले लिया.

राधानाथ (उड़ीसा)—मैं भी मानता हूं कि सवाल ऐप्रोच (Approach) का है. हम उड़ीसा में भी सोच रहे हैं कि राजाजी की तरह से एक कामयाब क़दम क्यों न उठाया जाय.

सौभाग्य मल (मध्य भारत)—जहां तक मैं इस मसले को समझ पाया हूं आज जनता से उधार लेने के दो रास्ते हैं—एक तो केन्द्री सरकार लेती है और दूसरे सूबों की सरकारें लेती हैं. मैं समझना चाहता हूं कि क्या सभापति जी यह चाहते हैं कि इन दोनों रास्तों को अब एक कर दिया जा जाये.

सभापति—मेरा यह मंशा ज़रा भी नहीं है. मैं महज़ यह चाहता हूं कि हम लोग सोचें कि किस तरह जनता से ज़ियादा से ज़ियादा उधार लिया जा सकता है.

कौल (अजमेर)—जब यह बात है तो क्यों नहीं केन्द्र व प्रदेशों को आज़ादी रहे कि अपने साधनों का बेहतरीन इस्तेमाल करें और जनता से जहां तक हो सके ज़ियादा पैसा वसूल करें ?

सभापति—तब इसमें यह तय पाया कि उधारी जैसे आज-कल ली जाती है वैसे ही ली जाती रहे—केन्द्र व प्रदेश दोनों लें. मगर क्या हम यह आशा करें कि प्रदेश सरकारें जब उधार लेने वाली हों तो उसकी इत्तला

جیوراج (بمبئی)—مجھے ایسا لگتا ہے کہ فلم انکوائری کمیٹی کو ہمیں وشیش مہتو نہیں دینا چاہئے۔ جس زمانہ میں اس نے رپورٹ پیش کی تھی تب سے اب تک دنیا کہیں آگے بڑھ چکی ہے ۔ میرا خیال ہے کہ اس سوال کے اوپر پردیشوں کی سرکاروں کو پوری خود مختاری رہنی چاہئے ۔ کم سے کم بمبئی کی طرف سے میں آپ کو اطمینان دلا دینا چاہتا ہوں کہ نہ ہم راجا جی جیسا کوئی طوفانی قدم اٹھائیں گے اور نہ اپنی آمدنی ہی کم ہونے دیں گے ۔

سبھا پتی—مجھے ڈاکٹر جیوراج کی بات منظور ہے ۔ ہم اب آگے چلیں ؟ جنتا سے ادھار لینے کا سوال لیں ۔

جگ جیون رام—میں ایسا دیکھتا ہوں کہ آج جنتا میں ادھار دینے کی طاقت ختم سی ہوگئی ہے ۔ اسے اتنی تکلیفوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے کہ وہ کچھ بچا ہی نہیں پاتی۔ کم سے کم اپنے محکمے' لیبر کے بارے میں میں یہ اچھی طرح جانتا ہوں ۔

راجا جی—میرے بھائی نے سچ کہا کہ آج جنتا کی حالت بہت خراب ہے ' پر میں جاننا چاہوں گا کہ حالت اچھی تھی کب ۔ سوال حالت کا نہیں ہے ۔ سوال ہے جنتا کے پاس مناسب طریقے سے جانے کا۔ آپ بھائیوں کو معلوم ہوگا کہ ہم نے حال ہی میں مدراس میں لون (ادھار) بات کی بات میں لے لیا ۔

رادھا ناتھ (اڑیسہ)—میں بھی مانتا ہوں کہ سوال اپروچ (Approach) کا ہے ہم اڑیسہ میں بھی سوچ رہے ہیں کہ راجا جی کی طرح سے ایک کامیاب قدم کیوں نہ اٹھایا جائے۔

سوبھاگیہ مل (مدھیہ بھارت)—جہاں تک میں اس مسئلے کو سمجھ پایا ہوں آج جنتا سے ادھار لینے کے دو راستے ہیں—ایک تو کیندری سرکار لیتی ہے اور دوسرے صوبوں کی سرکاریں لیتی ہیں۔ میں سمجھنا چاہتا ہوں کہ کیا سبھا پتی جی یہ چاہتے ہیں کہ ان دونوں راستوں کو اب ایک کر دیا جائے ۔

سبھا پتی—میرا یہ منشا ذرا بھی نہیں ہے ۔ میں محض یہ چاہتا ہوں کہ ہم لوگ سوچیں کہ کس طرح جنتا سے زیادہ سے زیادہ ادھار لیا جا سکتا ہے ۔

کول (اجمیر)—جب یہ بات ہے تو کیوں نہیں کیندر و پردیشوں کو آزادی رہے کہ اپنے سادھنوں کا بہترین استعمال کریں اور جنتا سے جہاں تک ہوسکے زیادہ پیسہ وصول کریں ۔

سبھا پتی—تب اس میں یہ طے پایا کہ ادھاری جیسے آج کل لی جاتی ہے ویسے ہی لی جاتی رہے—کیندر و پردیش دونوں لیں۔ مگر کیا ہم یہ آشا کریں کہ پردیش سرکاریں جب ادھار لینے والی ہوں تو اس کی اطلاع

रामकृष्ण राव (हैदराबाद)—मेरा सुझाव है कि सेल टैक्स पर विचार करने के लिये हम एक कमेटी बना दें जो कल अपनी रिपोर्ट दे.

कामता प्रसाद (भोपाल)—मैं इसकी ताईद करता हूं.

[कुछ चहल पहल और काना फूसी के बाद यह तय पाया कि इस कमेटी के मेम्बर दस जने हों—नई दिल्ली के फ़ाइनेन्स और कामर्स मिनिस्टर और मद्रास, बंगाल, बम्बई, बिहार, पंजाब, ट्रावनकोर कोचीन, हैदराबाद और भोपाल के फ़ाइनेन्स मिनिस्टर. इसके बाद सुबह का इजलास ख़त्म हुआ और दूसरा इजलास तीसरे पहर तीन बजे होगा]

× × ×

[दूसरा इजलास—सुबह आने वालों में से नई दिल्ली वाले कई मिनिस्टर इस समय शरीक नहीं हुए.]

सभापति—सेल टैक्स के मामले पर तो हम कल सुबह बहस करेंगे जब कमेटी की रिपोर्ट हमारे सामने होगी. अब हम मनोरंजन टैक्स की चर्चा करें.

मेलकोटे (हैदराबाद)—इस टैक्स में बड़ा अन्धाधुन्ध चल रहा है. मद्रास में लगभग 40 फ़ी सदी चार्ज किया जाता है और मध्य प्रदेश में शायद 7-8 फ़ी सदी ही.

ब्रजलाल (मध्य प्रदेश)—हमारा सूबा रक़बे के लिहाज़ से हिन्दुस्तान में भले ही सब से बड़ा हो लेकिन हमारी आमदनी बहुत थोड़ी है. हम चाहते हैं कि मनोरंजन टैक्स को अभी कम ही रक्खें और फिर धीरे धीरे बढ़ाते जायं.

केस्कर—अगर यह टैक्स सब प्रदेशों में एक सा हो जाय तो फ़िल्म इन्डस्ट्री के पनपने में बड़ी मदद मिलेगी. केन्द्रीय सरकार ने एक फ़िल्म इन्क्वारी कमेटी बनाई थी जिसने एक बहुत ही लाजवाब रिपोर्ट तैयार की थी और उसमें कहा है कि यह टैक्स 20 फ़ी सदी सब जगह रक्खा जाय.

राजाजी—नम्रता के साथ मेरी राय अपने भाई डाक्टर केसकर से नहीं मिलती. मेरा बस चले तो मैं यह सिनेमा एकदम बन्द कर दूं. जिस तेज़ी के साथ इनकी वजह से हमारे नौजवानों का पतन हो रहा है उसे देख कर मैं कांप उठता हूं. मैं इन दिनों सोच रहा हूं कि क्यों नहीं मद्रास के अन्दर यह टैक्स 100 फ़ी सदी कर दिया जाय.

रामनाथ दास (आसाम)—अगर राजाजी ने यह क्रान्तिकारी क़दम उठा लिया तो हमारे केस्कर साहब को तो छुट्टी मिल जायेगी. (सब हंस पड़े)

केस्कर—आप मेरी फ़िकर न करें, मेरी गुज़र तो आपकी दुआ से चल ही जायेगी.

رام کرشن راؤ (حیدرآباد)—میرا سجھاؤ ہے کہ سیل ٹیکس پر وچار کرنے کے لئے ہم ایک کمیٹی بنا دیں جو کل اپنی رپورٹ دے ۔

کامتا پرساد (بھوپال)—میں اس کی تائید کرتا ہوں ۔

[کچھ چہل پہل اور کاناپھوسی کے بعد یہ طےپایا کہ اِس کمیٹی کے ممبر دس جنے ہوں—نئی دلی کے فائننس اور کامرس منسٹر اور مدراس، بنگال، بمبئی، بہار، پنجاب، ٹراونکور کوچین، حیدرآباد اور بھوپال کے فائیننس منسٹر ۔ اس کے بعد صبح کا اجلاس ختم ہوا اور دوسرا اجلاس تیسرے پہر تین بجے ہوگا ۔]

× × ×

[دوسرا اجلاس —صبح آنے والوں میں سے نئی دلی والے کئی منسٹر اِس سمے شریک نہیں ہوئے۔]

سبھا پتی—سیل ٹیکس کے معاملے پر تو ہم کل صبح بحث کرینگے جب کمیٹی کی رپورٹ ہمارے سامنے ہوگی۔ اب ہم منورنجن ٹیکس کی چرچا کریں ۔

میل کوٹے (حیدرآباد)—اس ٹیکس میں بڑا اندھادھند چل رہا ہے۔ مدراس میں لگ بھگ 40 فیصدی چارج کیا جاتا ہے اور مدھیہ پردیش میں شاید 7-8 فی صدی ہی ۔

برج لال (مدھیہ پردیش)—ہمارا صوبہ رقبہ کے لحاظ سے ہندستان میں بھلے ہی سب سے بڑا ہو لیکن ہماری آمدنی بہت تھوڑی ہے ۔ ہم چاہتے ہیں کہ منورنجن ٹیکس کو ابھی کم ہی رکھیں اور پھر دھیرے دھیرے بڑھاتے جائیں ۔

کیسکر—اگر یہ ٹیکس سب پردیشوں میں ایکساں ہوجائے تو فلم انڈسٹری کے پنپنے میں بڑی مدد ملے گی ۔ کیندری سرکار نے ایک فلم انکوائری کمیٹی بنائی تھی جس نے ایک بہت ہی لاجواب رپورٹ تیار کی تھی اور اِس میں کہا ہے کہ یہ ٹیکس 20 فی صدی سب جگہ رکھا جائے۔

راجا جی—نمرتا کے ساتھ میری رائے اپنے بھائی ڈاکٹر کیسکر سے نہیں ملتی۔ میرا بس چلے تو میں یہ سنیما ایکدم بند کر دوں ۔ جس تیزی کے ساتھ ان کی وجہ سے ہمارے نوجوانوں کا پتن ہو رہا ہے اِسے دیکھکر میں کانپ اُٹھتا ہوں ۔ میں ان دنوں سوچ رہا ہوں کہ کیوں نہیں مدراس کے اندر یہ ٹیکس 100 فی صدی کر دیا جائے ۔

رام ناتھ داس (آسام)—اگر راجا جی نے یہ کرانتی کاری قدم اُٹھا لیا تو ہمارے کیسکر صاحب کو تو چھٹی مل جائے گی ۔ (سب ہنس پڑے)

کیسکر—آپ میری فکر نہ کریں، میری گذر تو آپ کی دعا سے چل ہی جائے گی ۔

हाफ़िज़जी (यू. पी.)—मैं अपने बुज़ुर्ग श्री राजाजी की बात से सोलह आने इत्तिफ़ाक़ करता हूँ.

पी. सी. सेन (बंगाल)—राजाजी की बात सही है. लेकिन जो दिक्क़तें हमारे केन्द्रीय फ़ाइनेन्स मिनिस्टर के सामने हैं उन्हें भी हम न भूलें. आज मेरे बंगाल में पूरब से जो लोगों की बाढ़ आनी शुरू हुई है तो इस आफ़त का मुक़ाबला करने के लिये जितनी ज़ियादा मदद मुझ से हो सकेगी केन्द्रीय सरकार से लुंगा.

हनुमन्तैया (मैसूर)--मुझे अफ़सोस है कि हम शुरू से ही फ़ालतू की बहस में पड़ गये. मेरा ख़्याल है कि हमें बीच का रास्ता निकालना है ताकि न केन्द्र को कोई शिकायत हो न प्रदेशों को.

नाथूराम (राजस्थान)—क्या मैं यह कह सकता हूँ कि हमारे राजस्थान में, ख़ास तौर से पच्छिमी इलाक़े में अरसे से अकाल जैसी हालत है. आम तरीक़े से हम भले इससे इन्कार कर दें लेकिन वह एक सच्ची बात है जिसका हल हमें निकालना है.

गोविन्द मेनन (ट्रावनकोर कोचीन)—अगर राजस्थान की हालत ऐसी ख़राब है तो मेरे यहां और भी भयानक सूरत है. खोपरा काम (Coir Industry) में वह महामारी आई है कि हज़ारों की तादाद में लोग बेकार हो गये हैं.

ब्रजलाल (मध्य प्रदेश)—हैन्डलूम के बुनकरों की तो और भी गई गुज़री हालत हो रही है. नागपुर और कामटी को देख कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं.

ज्ञानी सिंह (पेप्सू)—मैं अर्ज़ करूंगा कि हमनेसे ल टैक्स की चर्चा शुरू की थी और हम लोग अपने को उसी तक महदूद रक्खें.

अनुग्रह बाबू (बिहार)—बेशक हमको विशय पर ही बात चीत करनी चाहिये. लेकिन मैं यह बता दूँ कि हम लोग सेल टैक्स कमिशनर नहीं बल्कि फ़ाइनेन्स मिनिस्टर हैं और हम जो इस समय जमा हुए हैं तो हर आर्थिक सवाल पर हर पहलू से सोचने विचारने के लिये जमा हुए हैं.

सभापति—यह ज़रूर है कि हमको हर मसले पर ग़ौर करना होगा. लेकिन मुझे डर है कि अगर हम इस तरह विशय से हटते रहे तो दो दिन में कुछ भी न कर पायेंगे.

जीवराज (बम्बई)—यह सेल टैक्स का मसला इतना पेचीदा है कि इस पर जितनी बहस हो थोड़ी है. इसमें विधान की धारा 286 का रगड़ा है सो अलग. फिर सुप्रीम कोर्ट के सामने एक अपील भी पड़ी हुई है.

حافظ جی (یو. پی.)—میں اپنے بزرگ شری راجا جی کی بات سے سولہ آنے اتفاق کرتا ہوں .

پی. سی. سین (بنگال)—راجا جی کی بات صحیح ہے. لیکن جو دقتیں ہمارے کیندری فائیننس منسٹر کے سامنے ہیں انہیں بھی ہم نہ بھولیں . آج میرے بنگال میں پورب سے جو لوگوں کی باڑھ آنی شروع ہوئی ہے تو اس آفت کا مقابلہ کرنے کے لئے جتنی زیادہ مدد مجھسے ہوسکیگی کیندری سرکار سے لونگا .

ہنومن تیا (میسور)—مجھے افسوس ہے کہ ہم شروع سے ہی فالتو کی بحث میں پڑگئے. میرا خیال ہے کہ ہمیں بیچ کا راستہ نکالنا ہے تاکہ نہ کیندر کو کوئی شکایت ہو نہ پردیشوں کو .

ناتھورام (راجستھان)—کیا میں یہ کہ سکتا ہوں کہ ہمارے راجستھان میں' خاص طور سے پچھمی علاقے میں عرصہ سے اکال جیسی حالت ہے. عام طریقے سے ہم بھلے اس سے انکار کر دیں لیکن وہ ایک سچی بات ہے جس کا حل ہمیں نکالنا ہے .

گووند مینن (ٹراونکور کوچین)—اگر راجستھان کی حالت ایسی خراب ہے تو میرے یہاں اور بھی بھیانک صورت ہے . کھوپرا کام (Coir Industry) میں وہ مہاماری آئی ہے کہ ہزاروں کی تعداد میں لوگ بیکار ہوگئے ہیں .

برج لال (مدھیہ پردیش)—ہینڈلوم کے بنکروں کی تو اور بھی گئی گذری حالت ہو رہی ہے . ناگپور اور کامٹی کو دیکھکر رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں .

گیانی سنگھ (پیپسو)—میں عرض کرونگا کہ ہم نے سیل ٹیکس کی چرچہ شروع کی تھی اور ہم لوگ اپنے کو اسی تک محدود رکھیں .

انوگرہ بابو (بہار)—بیشک ہم کو وشے پر ہی بات چیت کرنی چاہئے . لیکن میں یہ بتا دوں کہ ہم لوگ سیل ٹیکس کمشنر نہیں بلکہ فائننس منسٹر ہیں اور ہم جو اس سمے جمع ہوئے ہیں تو ہر آرتھک سوال پر ہر پہلو سے سوچنے وچارنے کے لئے جمع ہوئے ہیں .

سبھا پتی—یہ ضرور ہے کہ ہمکو ہر مسئلے پر غور کرنا ہوگا. لیکن مجھے ڈر ہے کہ اگر ہم اس طرح وشے سے ہٹتے رہے تو دو دن میں کچھ بھی نہ کر پائینگے .

جیوراج (بمبئی)—یہ سیل ٹیکس کا مسئلہ اتنا پیچیدہ ہے کہ اس پر جتنی بحث ہو تھوڑی ہے . اس میں ودھان کی دھارا 286 کا رگڑا ہے سو الگ . پھر سپریم کورٹ کے سامنے ایک اپیل بھی پڑی ہوئی ہے .

की उम्मीद है. हां यह ज़रूर है कि हमें अपने बुनियादी उसूलों पर चोट नहीं पहुंचने देना चाहिये.

मुझे अकसर यह महसुस होता है कि हमारे सूबों की सरकारें हमेशा इस फ़िराक़ में रहती हैं कि केन्द्र या मरकज़ की सरकार से जितना पैसा हो सके हथिया लिया जाय. मैं कहना चाहूँगा कि यह मौक़ा इस तरह के सौदे करने का क़तई नहीं है. पर जैसा आपको मालूम है फ़ाइनेन्स कमीशन इस मामले में जांच पड़ताल करके अपनी रिपोर्ट देने वाला है.

आपके पास इस कान्फ्रेंस का एजेन्डा मौजूद है. हमारे सामने इस वक्त चौदह बड़े सवाल हैं जिन पर हमें किसी नतीजे पर पहुंच जाना है—(1) बजट की पालिसी. (2) टैक्स जांच कमेटी का काम. (3) चीज़ों के भाव का कन्ट्रोल. (4) सेल टैक्स. (5) छोटी छोटी बचत का सवाल. (6) सिनीमा और मनोरंजन टैक्स. (7) प्रान्तों की आर्थिक ज़रूरत. (8) पुराने इन्कम टैक्स की वसुली में सूबों का सहयोग. (9) तनख़ा और भत्ते का नाप. (10) जनता से उधार लेना. (11) विकास योजनायें. (12) आमदनी के मौजूदा साधन. (13) नये टैक्सों का सवाल. (14) केन्द्र से मदद. मैं चाहूंगा कि अब इस कान्फ्रेंस की कार्रवाई शुरू की जाय.

जीवराज मेहता (बम्बई)—मेरे ख़्याल से हमारे सामने इस वक़्त सबसे बड़ा सवाल सेल टैक्स का है जिसके बारे में ख़ास तौर से मेरे प्रदेश में आन्दोलन-सा उठा हुआ है. हम पहले इसी को ही ले लें.

टी. टी. कृष्णमचारी—मेरा सुझाव है कि सेल टैक्स के बारे में सब प्रदेशों की एक सी पालिसी होनी चाहिये ताकि आम ख़रीदार को तकलीफ़ न हो.

राजाजी—मैं बड़े अदब के साथ कहना चाहता हूँ कि भगवान ने पांचों उंगलिया भी एक सी नहीं बनाई हैं. कौन इस बात से इन्कार करेगा कि जो ज़रूरत और मुसीबतें बम्बई, मद्रास या यू पी. जैसे बड़े प्रदेशों के आगे खड़ी रहती हैं वह हिमाचल और विन्ध्य प्रदेश या कुर्ग और भोपाल के आगे नहीं ? मैं इस कान्फ्रेंस के शुरू में ही इस बात को साफ़ कर देना चाहता हूं कि हमारी बहस हवाई न हो कर असली दुनिया में होनी चाहिये. मैं यह भी ज़ाहिर कर देना चाहता हूँ कि हम लोग जो यहां अलग अलग प्रदेशों से आये हैं वह समझदार और ज़िम्मेवार आदमी हैं जिनका रात दिन लोगों के दुख दर्द से वास्ता रहता है. पैसा हथियाना हमारा पेशा है न शौक़. हमारे सामने बस एक ही मक़सद रहता है, वह यह कि ज़ियादा से ज़ियादा लोगों की ज़ियादा से ज़ियादा भलाई कैसे हो.

کی اُمید ہے . ہاں یہ ضرور ہے کہ ہمیں اپنے بنیادی اصولوں پر چوٹ نہیں پہنچنے دینا چاہئے .

مجھے اکثر یہ محسوس ہوتا ہے کہ ہمارے صوبوں کی سرکاریں ہمیشہ اس فراق میں رہتی ہیں کہ کیندر یا مرکز کی سرکار سے جتنا پیسہ ہوسکے ہتھیا لیا جائے . میں کہنا چاہونگا کہ یہ موقع اس طرح کے سودے کرنے کا قطعئی نہیں ہے. پر جیسا آپ کو معلوم ہے فائننس کمیشن اس معاملے میں جانچ پڑتال کرکے اپنی رپورٹ دینے والا ہے .

آپ کے پاس اس کانفرنس کا ایجنڈا موجود ہے. ہمارے سامنے اس وقت چودہ بڑے سوال ہیں جن پر ہمیں کسی نتیجے پر پہنچ جانا ہے--, 1) بجٹ کی پالسی. (2) ٹیکس جانچ کمیٹی کا کام. (3) چیزوں کے بھاؤ کا کنٹرول (4) سیل ٹیکس (5) چھوٹی چھوٹی بچت کا سوال. (6) سنیما اور منورنجن ٹیکس. (7) پرانتوں کی آرتھک ضرورت. (8) پرانے انکم ٹیکس کی وصولی میں صوبوں کا سہیوگ . (9) تنخواہ اور بھتے کا ناپ. (10) جنتا سے ادھار لینا. (11) وکاس یوجنائیں . (12) آمدنی کے موجودہ سادھن . (13) نئے ٹیکسوں کا سوال. (14) کیندر سے مدد. میں چاہونگا کہ اب اس کانفرنس کی کارروائی شروع کی جائے .

جیو راج میہتا بمبئی---میرے خیال سے ہمارے سامنے اس وقت سب سے بڑا سوال سیل ٹیکس کا ہے جس کے بارے میں خاص طور سے میرے پردیش میں آندولن سا اُٹھا ہوا ہے. ہم پہلے اسی کو ہی لے لیں .

ٹی. ٹی. کرشنمچاری—میرا سجھاؤ ہے کہ سیل ٹیکس کے بارے میں سب پردیشوں کی ایک سی پالسی ہونی چاہئے تاکہ عام خریدار کو تکلیف نہ ہو .

راجا جی---میں بڑے ادب کے ساتھ کہنا چاہتا ہوں کہ بھگوان نے پانچوں انگلیاں بھی ایک سی نہیں بنائی ہیں. کون اس بات سے انکار کریگا کہ جو ضرورت اور مصیبتیں بمبئی' مدراس یا یو. پی. جیسے بڑے پردیشوں کے آگے کھڑی رہتی ہیں وہ ہماچل اور وندھ پردیش یا کورگ اور بھوپال کے آگے نہیں ؟ میں اس کانفرنس کے شروع میں ہی اس بات کو صاف کردینا چاہتا ہوں کہ ہماری بحث ہوائی نہ ہوکر اصلی دنیا میں ہونی چاہئیے. میں یہ بھی ظاہر کر دینا چاہتا ہوں کہ ہم لوگ جو یہاں الگ الگ پردیشوں سے آئے ہیں وہ سمجھدار اور ذمہ دار آدمی ہیں جنکا رات دن لوگوں کے دکھ درد سے واسطہ رہتا ہے . پیسہ ہتھیانا ہمارا پیشہ ہے نہ شوق . ہمارے سامنے بس ایک ہی مقصد رہتا ہے' وہ یہ کہ زیادہ سے زیادہ لوگوں کی زیادہ سے زیادہ بھلائی کیسے ہو .

फ़ाइनेन्स मिनिस्टरों की कान्फ़्रेंस

[तारीख़ 14 अक्तूबर. नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में एक लम्बा चौड़ा और आलीशान कमरा. मेज़ कुर्सी वग़ैरा बाक़ायदा सजे हुये. प्रधान मन्त्री, शिक्षा मंत्री और फ़ौज मंत्री को छोड़कर बाक़ी क़रीब क़रीब सभी मिनिस्टर—छोटे बड़े तेरह मिनिस्टर—मौजूद. इनके अलावा सूबों से आने वाले बहुत से मिनिस्टर—लगभग हर स्टेट का फ़ाइनेन्स मिनिस्टर, सात सूबों के—मद्रास, हैदराबाद, मैसूर, कुर्ग, हिमाचल, विन्ध्य प्रदेश और पेप्सू के मुख्य मंत्री, रिज़र्व बैंक के डाइरेक्टर और प्लानिंग कमीशन के मेम्बर, सूबों के मिनिस्टरों के साथ साथ उनके यहां के आई. सी. एस. अफ़सर और नई दिल्ली की फ़ाइनेन्स और कामर्स व इन्डस्ट्री मिनिस्ट्रियों और प्लानिंग कमीशन के चोटी के ओहदेदार भी मौजूद.

सुबह नौ बजे का वक़्त. फ़ाइनेन्स मिनिस्टरों की इस कान्फ़्रेंस में सभापति की गद्दी पर श्री चिन्तामन देशमुख, नई दिल्ली के फ़ाइनेन्स मिनिस्टर, विराजमान.]

सभापति—मैं आप सब भाइयों का बहुत ही एहसानमन्द हूं जो अपना क़ीमती समय ख़र्च करके और तकलीफ़ उठा कर नई दिल्ली की इस उभरती हुई सर्दी में आप यहां आये. आपको शायद ख़्याल होगा कि इस तरह की पहली बैठक सन 1948 में हुई थी. इत्तफ़ाक़ की बात कि उसके बाद से हम लोग आज मिल रहे हैं. हम सब महसूस करते हैं कि आज कल की सरकारें जो कुछ भी क़दम उठाती हैं उसका असर पहले के मुक़ाबले में देश के आर्थिक जीवन पर आज कहीं ज़ियादा पड़ता है. अगर हम चाहें कि अपने कुयें की मेंढक बनकर पड़े रहें तो यह असम्भव है. इसलिये ज़रूरी है कि हम लोग मिला करें, की अपने विचारों का मिलान किया करें और अगर हो सके तो कुछ बातों पर राज़ी हो जाया करें ताकि देश की आर्थिक हालत सम्भालने और विकास के काम में ज़ियादा से ज़ियादा एक हो कर चल सकें.

आप सब जानते हैं कि हमारे सामने एक पंचसाला योजना मौजूद है जिसे हमें दिल लगा कर अमल में उतारना है. पर अकसर चीज़ें ऐसी हो जाती हैं जो हमारी योजनाओं के पूरा होने में रुकावट डालती हैं. लेकिन इस मुसीबत को हल करने का रास्ता हमने ढूंढ लिया है. यह यह कि विदेश वालों से मदद मांगी जाय और विदेशी पूंजी के सहारे अपने प्रोग्राम पूरे किये जायें. अमरीका से हमें बहुत काफ़ी मदद मिलने

فائینئس منسٹروں کی کانفرنس

[تاریخ 14 اکتوبر نئی دلی کے راسٹر پتی بھون میں ایک لمبا چوڑا اور عالیشان کمرا . میز کرسی وغیرہ باقاعدہ سجے ہوئے. پردھان منتری' شکشا منتری اور فوج منتری کو چھوڑ کر باقی قریب قریب سبھی منسٹر—چھوٹے بڑے تیرہ منسٹر—موجود. اِن کے علاوہ صوبوں سے آنے والے بہت سے منسٹر—لگ بھگ ہر اسٹیٹ کا فائینئنس منسٹر' سات صوبوں کے—مدراس' حیدرآباد' میسور' کرگ' ھماچل' وندھ پردیش اور پیپسو کے مکھیہ منتری' ریزرو بینک کے ڈائرکٹر اور پلاننگ کمیشن کے ممبر' صوبوں کے منسٹروں کے ساتھ ساتھ ان کے یہاں کے آئی. سی. ایس افسر اور نئی دلی کی فائینئنس اور کامرس و انڈسٹری منسٹریوں اور پلاننگ کمیشن کے چوٹی کے عہدےدار بھی موجود .

صبح نو بجے کا وقت فائینئنس منسٹروں کی اس کانفرنس میں سبھاپتی کی گدی پر شری چنتامن دیش مکھ' نئی دلی کے فائینئنس منسٹر' براجمان.]

سبھاپتی—میں آپ سب بھائیوں کا بہت ہی احسان‌مند ہوں جو اپنا قیمتی سمے خرچ کرکے اور تکلیف اُٹھا کر نئی دلی کی اس اُبھرتی ہوئی سردی میں آپ یہاں آئے . آپ کو شاید خیال ہوگا کہ اس طرح کی پہلی بیٹھک سن 1948 میں ہوئی تھی. اتفاق کی بات کہ اس کے بعد سے ہم لوگ آج مل رہے ہیں . ہم سب محسوس کرتے ہیں کہ آجکل کی سرکاریں جو کچھ بھی قدم اُٹھاتی ہیں اسکا اثر پہلے کے مقابلے میں دیش کے آرتھک جیون پر آج کہیں زیادہ پڑتا ہے. اگر ہم چاہیں کہ اپنے کوئیں کی مینڈھک بن کر پڑے رہیں تو یہ اسمبھو ہے. اس لئے ضروری ہے کہ ہم لوگ ملا کریں' اپنے وچاروں کا ملان کیا کریں اور اگر ہوسکے تو کچھ باتوں پر راضی ہو جایا کریں تاکہ دیش کی آرتھک حالت سنبھالنے اور وکاس کے کام میں زیادہ سے زیادہ ایک ہو کر چل سکیں .

آپ سب جانتے ہیں کہ ہمارے سامنے ایک پنچ‌سالہ یوجنا موجود ہے جسے ہمیں دل لگاکر عمل میں اُتارنا ہے. پر اکثر چیزیں ایسی ہو جاتی ہیں جو ہماری یوجناؤں کے پورا ہونے میں رکاوٹ ڈالتی ہیں لیکن اس مصیبت کو حل کرنے کا راستہ ہمنے ڈھونڈھ لیا ہے . وہ یہ کہ ودیش والوں سے مدد مانگی جائے اور ودیشی پونجی کے سہارے اپنے پروگرام پورے کئے جائیں . امریکہ سے ہمیں بہت کافی مدد ملنے

पहले अपना हिस्सा दें

लेकिन मांगे कौन ? वही मांग सकता है जो खुद अपना हिस्सा दे. और जिसके शुरूआत बड़े लोगों से होना चाहिये. गीता ने तो न्याय या इनसाफ़ ही सिखाया है–'यद् यद् आचरति श्रेष्ठः तत् तदेवेतरोजनः' 'जैसा अच्छे आदमी बरतते हैं, उसी राह पर दूसरे लोग चलते हैं.' तो पहले मेरी मांग है, महाजनों, मिनिस्टरों, पार्लियामेन्ट और असेम्बली के मेम्बरों, कांग्रेस मैन वग़ैरा सब पारटियों के ओहदेदारों और ऐसे ही दूसरे ज़िम्मेवार नेताओं से. उनके पास जो भी ज़मीन हो, उसका छटा हिस्सा टैक्स के रूप में देकर वह इस काम का श्रीगनेश करें. फिर वह देखेंगे कि किस तरह सारा वातावरन फ़ौरन बदल जाता है.

गांधीजी का ही काम

अभी गांधीजी का जन्म-दिन 2 अक्तूबर को सारे देश में मनाया जायगा. मैं ने सुझाया है और कार्यकर्ताओं ने तय किया है कि अक्तूबर का पहला पखवाड़ा पूरा, "भू-दान-यज्ञ पखवाड़ा" के तौर पर मनाया जाय और जिस तरह आम चुनाव के वक़्त पूरी ताक़त के साथ सब कार्यकर्ता प्रचार में भिड़ गए थे, उसी तरह इस पखवाड़े में भूमि जमा करने में लग जायं. सिर्फ़ ज़बान से प्रचार नहीं, ज़ाहिर काम से. गांधीजी के साथ मेरा जन्म नाता है उनके विचार, उनकी भावनाएं मैं अच्छी तरह जानता हूं. उनको इस काम से जितना संतोश होगा उससे ज़ियादा इस वक़्त और किसी भी काम से होने वाला नहीं है, इसमें मुझे ज़रा भी शक नहीं है. मैंने ज़मीन-सवाल के हल की बात की. लेकिन इससे भी बड़ी बात है, अहिंसा का तरीक़ा चलाने की. शान्ति और प्रेम से अगर हम ज़मीन का सवाल हल करते हैं तो अहिंसा पनपती है.

अहिंसा की ताक़त

आर्थिक क्रांति या माली इनक़लाब का काम अगर अहिंसा कर दिखाती है, तो और कौन सा काम वह नहीं कर सकेगी ? मुझे अहिंसा की ताक़त में पूरा विश्वास है. आइये, गांधीजी को याद कर के हम अहिंसा का फिर से आवाहन करें, जिसकी हिन्दुस्तान में पहली ईजाद बिहार सूबे में हुई थी, और जिसे गांधी जी के जाने के बाद इन दिनों हम भूल से गए थे.

बोलो जय अहिंसा ! जय बिहार ! ! जय हिन्द ! ! !

28. 9. '52 —विनोबा

پہلے اپنا حصہ دیں

لیکن مانگے کون ؟ وہی مانگ سکتا ہے جو خود اپنا حصہ دے. اور جس کی شروعات بڑے لوگوں سے ہونا چاہئیے. گیتا نے تو نیائے یا انصاف ہی سکھایا ہے—" یدیدآچرتی شریشٹھ تت تدے ویترو جنہ " ' جیسا اچھے آدمی برتتے ہیں' اسی راہ پر دوسرے لوگ چلتے ہیں.' تو پہلے میری مانگ ہے مہاجنوں' منسٹروں' پارلیامنٹ اور اسمبلی کے ممبروں' کانگریس مین وغیرہ سب پارٹیوں کے عہدے داروں اور ایسے ہی دوسرے ذمےوار نیتاؤں سے . اُن کے پاس جو بھی زمین ہو' اس کا چھٹا حصہ ٹیکس کے روپ میں دیکر وہ اس کام کا شری گنیش کریں . پھر وہ دیکھیں گے کہ کس طرح سارا واتاورن فوراً بدل جاتا ہے .

گاندھی جی کا ہی کام

ابھی گاندھی جی کا جنم دن 2 اکتوبر کو سارے دیش میں منایا جائے گا . میں نے سجھایا ہے اور کاریہ کرتاؤں نے طے کیا ہے کہ اکتوبر کا پہلا پکھواڑا پورا " بھو دان یگیہ پکھواڑا " کے طور پر منایا جائے اور جس طرح عام چناؤ کے وقت پوری طاقت کے ساتھ سب کاریہ کرتا پرچار میں بھڑ گئے تھے اسی طرح اس پکھواڑے میں بھومی جمع کرنے میں لگ جائیں . صرف زبان سے پرچار نہیں' ظاہر کام سے . گاندھی جی کے ساتھ میرا جنم ناتا ہے . ان کے وچار' ان کی بھاؤنائیں میں اچھی طرح جانتا ہوں . ان کو اس کام سے جتنا سنتوش ہوگا اس سے زیادہ اس وقت اور کسی بھی کام سے ہونے والا نہیں ہے' اس میں مجھے ذرا بھی شک نہیں ہے . میں نے زمین سوال کے حل کی بات کی. لیکن اس سے بھی بڑی بات ہے' اہنسا کا طریقہ چلانے کی. شانتی اور پریم سے اگر ہم زمین کا سوال حل کرتے ہیں تو اہنسا پنپتی ہے .

اہنسا کی طاقت

آرتھک کرانتی یا مالی انقلاب کا کام اگر اہنسا کر دکھاتی ہے تو اور کون سا کام وہ نہیں کر سکے گی؟ مجھے اہنسا کی طاقت میں پورا وشواس ہے . آئیے' گاندھی جی کو یاد کر کے ہم اہنسا کا پھر سے آواہن کریں' جس کی ہندستان میں پہلی ایجاد بہار صوبے میں ہوئی تھی' اور جسے گاندھی جی کے جانے کے بعد ان دنوں ہم بھول سے گئے تھے .

بولو جے اہنسا ! جے بہار !! جے ہند !!!

—ونوبا 28-9-52

बिहार वासियों से अपील

आपके इस पाक पवित्र प्रदेश में बे-ज़मीन वालों को ज़मीन दिलाने के लिये मैं पैदल यात्रा कर रहा हूँ. यह तो आप लोगों को मालूम हो गया है. मैंने इसे भू-दान-यज्ञ नाम दिया है. और इससे ज़मीन के सवाल को हम शांति और प्रेम के तरीक़े से हल कर सकते हैं, ऐसा मैंने माना है. अभी तक जो काम हुआ है उससे लोगों को भी कुछ विश्वास पैदा हो गया है.

बिहार में भूमि-क्रान्ति करनी है

बिहार से मैंने पहली क़िस्त के तौर पर चार लाख ऐकड़ की मांग की थी. वह तो मेरी मांग क़ायम है. लेकिन उतने से आज मेरा समाधान नहीं है. मैं अब इससे बहुत आगे बढ़ गया हूँ. मेरी यह इच्छा है कि मेरे इस प्रदेश में रहते बिहार की सारी भूमि समस्या ही हल हो जाय. एक एक प्रदेश में थोड़ी थोड़ी भूमि इकट्ठी करता हुआ मैं अगर सारे भारत में पांव पांव घूमता रहूँ तो कब बेड़ा पार होगा? एक भी प्रदेश में अगर हम पूरा काम करते हैं तो सारे देश का सवाल वैसे ही हल हो जायगा. हमारे पुरखों ने कहा भी है—"एक साधे सब सधे." इसलिये मुझे प्रेरना हुई है कि अगर आप लोग चाहें और सब मुझे मदद करें तो हम बिहार की क्रांति पूरी कर के ही आगे बढ़ें.

अब सारी ताक़त इसमें लगा देनी है

श्रद्धावान बिहार के लिये यह कोई नामुमकिन प्रोग्राम नहीं है. भू-दान-यज्ञ को यहां के छोटे बड़े सब लोगों ने और अलग अलग विचार रखने वाले सब पक्षों ने अपनी सम्मति ज़ाहिर की है. सबको यह प्रोग्राम क़बूल है. सब इसमें भलाई मानते हैं तो सब मिल कर हम इस काम में क्यों न जुट जायं? बाक़ी के सारे काम मामूली समझ कर इस समय हम अपनी सारी ताक़त इसमें क्यों न लगायें?

छटा हिस्सा दान मे दें

इसके लिये क्या करना पड़ेगा, उसका हिसाब सादा-सीधा है. हर एक को अपनी ज़मीन का छठा हिस्सा देना होगा; छोटे बड़े काश्तकार और ज़मींदार, सब अगर अपना छटा हिस्सा दरिद्र नारायन के लिये अर्पन करें तो काम पूरा हो जाता है. मैंने देखा कि लोगों में इसके लिये बहुत उत्सुकता है. लेकिन ज़रूरत है काम करने वालों की, जो कि लोगों के पास पहुँचें, प्रेम से उन्हें समझायें, हर गांव से और हर घर से इस यज्ञ में दरिद्रनारायन का हिस्सा हासिल करें.

بہار واسیوں سے اپیل

آپ کے اس پاک پوتر پردیش میں بےزمین والوں کو زمین دلانے کے لئے میں پیدل یاترا کر رہا ہوں' یہ تو آپ لوگوں کو معلوم ہوگیا ہے۔ میں نے اسے بھودان یگیہ نام دیا ہے۔ اور اس سے زمین کے سوال کو ہم شانتی اور پریم کے طریقے سے حل کرسکتے ہیں' ایسا میں نے مانا ہے۔ ابھی تک جو کام ہوا ہے اُس سے لوگوں کو بھی کچھ وشواس پیدا ہوگیا ہے۔

بہار میں بھومی کرانتی کرنی ہے

بہار سے میں نے پہلی قسط کے طور پر چار لاکھ ایکڑ کی مانگ کی تھی۔ وہ تو میری مانگ قائم ہے۔ لیکن اُتنے سے آج میرا سمادھان نہیں ہے۔ میں اب اس سے بہت آگے بڑھ گیا ہوں۔ میری یہ اِچھا ہے کہ میرے اِس پردیش میں رہتے بہار کی ساری بھومی سمسیا ہی حل ہو جائے۔ ایک ایک پردیش میں تھوڑی تھوڑی بھومی اکٹھی کرتا ہوا میں اگر سارے بھارت میں پاؤں پاؤں گھومتا رہوں تو کب بیڑا پار ہوگا؟ ایک بھی پردیش میں اگر ہم پورا کام کرتے ہیں تو سارے دیش کا سوال ویسے ہی حل ہوجائیگا۔ ہمارے پرکھاوں نے کہا بھی ہے—"ایک سادھے سب سدھے۔" اس لئے مجھے پریرنا ہوئی ہے کہ اگر آپ لوگ چاہیں اور سب مجھے مدد کریں تو ہم بہار کی کرانتی پوری کرکے ہی آگے بڑھیں۔

اب ساری طاقت اس میں لگا دینی ہے

شردھاوان بہار کے لئے یہ کوئی ناممکن پروگرام نہیں ہے۔ بھودان یگیہ کو یہاں کے چھوٹے بڑے سب لوگوں نے اور الگ الگ وچار رکھنے والے سب پکشوں نے اپنی سمّتی ظاہر کی ہے۔ سب کو یہ پروگرام قبول ہے۔ سب اِس میں بھلائی مانتے ہیں۔ تو سب ملکر ہم اس کام میں کیوں نہ جٹ جائیں؟ باقی کے سارے کام معمولی سمجھ کر اس وقت ہم اپنی ساری طاقت اس میں کیوں نہ لگائیں؟

چھٹا حصہ دان میں دیں

اس کے لئے کیا کرنا پڑیگا' اس کا حساب سادہ سیدھا ہے۔ ہر ایک کو اپنی زمین کا چھٹا حصہ دینا ہوگا' چھوٹے بڑے کاشتکار اور زمیندار سب اگر اپنا چھٹا حصہ دردر نارائن کے لئے ارپن کریں تو کام پورا ہوجاتا ہے۔ میں نے دیکھا کہ لوگوں میں اس کے لئے بہت اُتسکتا ہے۔ لیکن ضرورت ہے کام کرنے والوں کی' جو کہ لوگوں کے پاس پہنچیں' پریم سے اُنہیں سمجھائیں' ہر گاؤں سے اور ہر گھر سے اس یگیہ میں دردر نارائن کا حصہ حاصل کریں۔

आज़मगढ़ ज़िले के बुनकरों की दुदशा

आज़मगढ़ ज़िला बुनकर कान्फ़रेन्स 18-19 अक्तूबर को हुई. इसका उद्‌घाटन देवरिया के समाजवादी नेता श्री सत्यदेव शास्त्री ने किया और सभापति थे मौलाना इसहाक़ सम्भली जो यू. पी. प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के नायब सेक्रेट्री हैं. बाहर से आने वालों में ख़ास थे नामी कम्यूनिस्ट नेता डाक्टर ज़ेड. ए. अहमद, कानपुर के लेबर लीडर कामरेड युसुफ़ और प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता श्री झारखंडे राय. कान्फ़्रेन्स ने कई ठहराव पास किये जिनमें केन्द्री व प्रान्ती सरकारों, से मांगें की गई हैं. इस कानफ़रेन्स ने आज़मगढ़ ज़िला बुनकर यूनियन के संगठन पर मुहर लगादी. उस वक़्त तक इसके दो हज़ार से ज़ियादा मेम्बर बन चुके थे. ख़ुशी की बात है कि यह यूनियन जल्दी ही ज़िले के बुनकरों की एक ठोस आवाज़ बन जायेगी.

जैसा हमने शुरू में कहा था चार रोज़ के दौरे के बाद हमारे ऊपर यह असर पड़ा कि मऊ, मुबारकपुर व आस पास में एक आग लगी हुई है जिसे सबको मिलकर बुझा देना चाहिये. चाहे कोई किसी पार्टी का क्यों न हो— कांगरेसी हो जो यह समझता हो कि मौजूदा सरकार से बढ़कर बेहतर कोई दूसरी नहीं हो सकती, कम्यूनिस्ट हो जो यह समझता हो कि मौजूदा सरकार से बढ़कर बदतर कोई दूसरी नहीं हो सकती, प्रजा सोशलिस्ट हो जो यह समझता हो कि यह सरकार बदल कर हमारी सरकार बने तभी देश का भला हो सकता है, या कोई और हो—सबको इसे बुझाने में मिल जाना चाहिये. बिना इसके बुझाये देहात चौपट होने से नहीं बच सकते. बुनकर की तबाही से दूसरे धन्दे वालों पर भी तबाही आता है और सब ही की हालत बिगड़ती है.

सूबे भर में तबाही

आज़मगढ़ ज़िले में बुनकरों की हालत देखने के बाद 26 अक्तूबर को मैं बनारस गया और वहां के रेशमी काम की हालत देखी. वहां के बुनकर भी काफ़ी परेशान थे लेकिन जो सबसे ज़ियादा वहां दुखदाई चीज़ वहाँ मालूम पड़ी वह थी महाजनों की तरफ़से होने वाला बुनकरों पर ज़बरदस्त अन्याय. बनारस के बाद नवम्बर के पहले हफ़्ते में मैं फ़ैज़ाबाद ज़िले के कई स्थानों जैसे टांडा, अकबरपुर, और जलालपुर गया. जो आंकड़े मुझे मिले उनके आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि फ़ैज़ाबाद ज़िले की हालत आज़मगढ़ से भी बदतर हैं. अब जो सूबे के ज़िले ज़िले से सूचनाएं आ रही हैं उनसे पता चलता है कि हर ज़िले के बुनकर एक अनहोनी मुसीबत में फंस गए हैं. इसलिये बुनकरों का सवाल हमारे सूबे और देश का सबसे बड़ा और पहला सवाल बन गया है. —सुरेश रामभाई

اعظم گڑھ ضلع کے بنکروں کی دردشا

اعظم گڑھ ضلع بنکر کانفرنس 19-18 اکتوبر کو ہوئی. اس کا اُدگھاٹن دیوریا کے سماجوادی نیتا شری ستیہ دیو شاستری نے کیا اور سبھا پتی تھے مولانا اسحاق سمبھلی جو یو. پی. پرجا سوشلسٹ پارٹی کے نائب سکریٹری ہیں. باہر سے آنے والوں میں خاص تھے نامی کمیونسٹ نیتا ڈاکٹر زیڈ۔ اے احمد، کانپور کے لیبر لیڈر کامریڈ یوسف اور پرسدھ کرانتی کاری نیتا شری جھارکھنڈے رائے. کانفرنس نے کئی ٹھہراؤ پاس کئے جنمیں کیندری و پرانتی سرکاروں سے مانگیں کی گئیں ہیں. اس کانفرنس نے اعظم گڑھ ضلع بنکر یونین کے سنگھٹن پر مہر لگادی. اس وقت تک اس کے دو ہزار سے زیادہ ممبر بن چکے تھے. خوشی کی بات ہے کہ یہ یونین جلدی ہی ضلع کے بنکروں کی ایک ٹھوس آواز بن جائیگی.

جیسا ہم نے شروع میں کہا تھا چار روز کے دورے کے بعد ہمارے اوپر یہ اثر پڑا کہ مئو، مبارکپور و آس پاس میں ایک آگ لگی ہوئی ہے جسے سب کو مل کر بجھا دینا چاہئے. چاہے کوئی کسی پارٹی کا کیوں نہ ہو— کانگریسی ہو جو یہ سمجھتا ہو کہ موجودہ سرکار سے بڑھ کر بہتر کوئی دوسری نہیں ہو سکتی، کمیونسٹ ہو جو یہ سمجھتا ہو کہ موجودہ سرکار سے بڑھ کر بدتر کوئی دوسری نہیں ہو سکتی، پرجا سوشلسٹ ہو جو یہ سمجھتا ہو کہ یہ سرکار بدل کر ہماری سرکار بنے تبھی دیش کا بھلا ہو سکتا ہے، یا کوئی اور ہو—سب کو اسے بجھانے میں مل جانا چاہئے. بنا اس کے بجھائے دیہات چوپٹ ہونے سے نہیں بچ سکتے. بنکر کی تباہی سے دوسرے دھندے والوں پر بھی تباہی آتی ہے اور سب ہی کی حالت بگڑتی ہے.

صوبے بھر میں تباہی

اعظم گڑھ ضلع میں بنکروں کی حالت دیکھنے کے بعد 26 اکتوبر کو میں بنارس گیا اور وہاں کے ریشمی کام کی حالت دیکھی. وہاں کے بنکر بھی کافی پریشان تھے لیکن جو سب سے زیادہ دکھ دائی چیز وہاں معلوم پڑی وہ تھی مہاجنوں کی طرف سے ہونے والا بنکروں پر زبردست انیائے. بنارس کے بعد نومبر کے پہلے ہفتے میں میں فیض آباد ضلع کے کئی استھانوں جیسے ٹانڈا، اکبرپور اور جلال پور گیا. جو آنکڑے مجھے ملے اُن کے آدھار پر میں یہ کہہ سکتا ہوں کہ فیض آباد ضلع کی حالت اعظم گڑھ سے بھی بدتر ہے. اب جو صوبے کے ضلعے ضلعے سے سوچنائیں آ رہی ہیں اُن سے پتا چلتا ہے کہ ہر ضلع کے بنکر ایک انہونی مصیبت میں پھنس گئے ہیں. اس لئے بنکروں کا سوال ہمارے صوبے اور دیش کا سب سے بڑا اور پہلا سوال بن گیا ہے. —سریش رام بھائی

साथ बुनकर पर हावी हो रहे हैं. बुनकरों की काफ़ी तादाद उनकी क़र्ज़दार हो गई है और रुपये में सोलह आने नहीं तो चौदह आने ज़रूर उनकी आसामी बनती जा रही है. सूत के मंहगे और साड़ी या लुन्गी वग़ैरा के सस्ते हो जाने के अलावा देहात के करघों की आफ़त इन वजहों से भी आई है :—

(i) महाजनों का बुनकर को तरह तरह से तंग करना और मंहगे दाम पर चीज़ बेचना—यानी चीज़ दर चीज़ व्योपार करना.

(ii) मऊ से चीज़ें ले आने ले जाने में मऊ व दूसरे थानों के लोगों की धांधली.

(iii) मऊ की म्यूनिस्पिलटी का देहात से आने वालों से मनमाना चुन्गी लेना.

(iv) मऊ से मोटर में लाने लेजाने में रोडवेज़ वालों की तरफ़ से परेशानी.

(v) डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का टैक्स, जिसकी चर्चा मुबारकपुर के सिलसिले में की जा चुकी है. इस टैक्स का हाल तो हमें यह बताया गया कि 1946 में जहां इससे कुल आमदनी रुपया 150-0-0 थी वह 1951 में रुपया 14,000-0-0 हो गई.

इसी का नतीजा है कि करघे बन्द होते चले जा रहे हैं. हालत का अन्दाज़ा तहसील घोसी के कुछ गांवों या पुरवों की सूरत से लगाया जा सकता है :—

गिनती	नाम गांव	करघे	बन्द	फ़ीसदी
1.	घोसी	1827	1027	55
2.	अदरी	491	बानी पर चल रहे हैं	
3.	दोहरी घाट	272	244	90
4.	बहादुरपुर	30	30	100
5.	दलाली	22	9	90
6.	बस्ती	10	6-7	60-70
7.	अलीपुर	22	सब	100
8.	नेमदाद	66	62	94
9.	कोपागंज	2250	1700	75

बहुत से करघे जो चल भी रहे हैं उनमें से काफ़ी तादाद ऐसों की है जो महाजन की लगार पर बुनते हैं.

मेदापुर में हमारी मुलाक़ात दो बुज़ुर्गों से हुई—जनाब मुहम्मद ताहिर साहब मेदापुरी और मधुबन के मुरब्बी अकबर अली ख़ां साहब. उन्होंने बताया कि किस तरह उनके देखते देखते हाथ की कताई बन्द हुई, मिल का सूत आया और फिर किस तरह मिल के बुने कपड़े ने हैन्डलूम को ख़त्म किया है और अब जो हालत है वह बयान के एकदम बाहर है.

× × ×

ساتھ بنکر پر حاوی ہو رہے ہیں ۔ بنکروں کی کافی تعداد اُن کی قرض دار ہوگئی ہے اور روپئے میں سولہ آنے نہیں تو چودہ آنے ضرور اُن کی اسامی بنتی جا رہی ہے. سوت کے مہنگے اور ساڑی یا لنگی وغیرہ کے سستے ہو جانے کے علاوہ دیہات کے کرگھوں کی آفت اِن وجہوں سے بھی آئی ہے:—

(i) مہاجنوں کا بنکر کو طرح طرح سے تنگ کرنا اور مہنگے دام پر چیز بیچنا—یعنی چیز در چیز بیوپار کرنا ۔

(ii) مئو سے چیزیں لے آنے لے جانے میں مئو و دوسرے تھانوں کے لوگوں کی دھاندھلی ۔

(iii) مئو کی میونسپلٹی کا دیہات سے آنے والوں سے من مانا چنگی لینا ۔

(iv) مئو سے موٹر میں لانے لے جانے میں روڈویز والوں کی طرف سے پریشانی ۔

(v) ڈسٹرکٹ بورڈ کا ٹیکس، جس کی چرچہ مبارکپور کے سلسلے میں کی جا چکی ہے. اس ٹیکس کا حال تو یہ بتایا گیا کہ 1946 میں جہاں اِس سے کل آمدنی روپیہ 150-0-0 تھی وہ 1951 میں روپیہ 14,000-0-0 ہو گئی ۔

اسی کا نتیجہ ہے کہ کرگھے بند ہوتے چلے جا رہے ہیں. حالت کا انداز تحصیل گھوسی کے کچھ گاؤں یا پروں کی صورت سے لگایا جا سکتا ہے :—

گنتی	نام گاؤں	کرگھے	بند	فی صدی
.1	گھوسی	1827	1027	55
.2	ادری	491	بانی پر چل رہے ہیں	
.3	دوہری گھاٹ	272	244	90
.4	بہادر پور	30	30	100
.5	دلالی	22	19-20	90
.6	بستی	10	6-7	60-70
.7	علی پور	22	سب	100
.8	نیمداد	66	62	94
.9	کوپا گنج	2250	1700	75

بہت سے کرگھے جو چل بھی رہے ہیں ان میں سے کافی تعداد ایسوں کی ہے جو مہاجن کی لگار پر بنتے ہیں۔

میدا پور میں ہماری ملاقات دو بزرگوں سے ہوئی— جناب محمد طاہر صاحب میدا پوری اور مدھوبن کے مربی اکبر علی خان صاحب ۔ انہوں نے بتایا کہ کس طرح اُن کے دیکھتے دیکھتے ہاتھ کی کتائی بند ہوئی، مل کا سوت آیا اور پھر کس طرح مل کے بنے کپڑے نے ہینڈلوم کو ختم کیا ہے اور اب جو حالت ہے وہ بیان کے ایک دم باہر ہے ۔

× × ×

(vi) रेलवे पर हो कर जो सामान जैसे सूत या तैयार साड़ी आये जाये, उसकी हिफ़ाज़त की ख़ातिर बनारस या शाहगंज (जो E. I. R. के स्टेशन हैं और मऊ है O.T.R. का) तक अपने ख़र्च पर जाना व वापिसी.

(vii) माल जल्दी बुक कराने छुड़ाने की ख़ातिर रेलवे बाबू की जेब कुछ भरना.

(viii) रेल में बैठते उतरते मऊ के पुलिस वालों की हथेली गरम करना.

(ix) अपनी साड़ी उधार में देना और ख़ुद हर चीज़ नक़द ख़रीदना या साड़ी के एवज़ में 10 से 25 फ़ी सदी मंहगी ख़रीदना.

देहात का काम

जैसा ऊपर कहा जा चुका है मुबारकपुर में बनारसी सिल्क का काम होता है, मऊ में फ़ैन्सी साड़ी का और देहातों में केवल सूती माल बनता है. इन में भी तरह तरह का माल तैयार होता है, जैसे मोटी साड़ी व लुन्गी कोपागंज में, गमछा घोसी में, छोटी साड़ी या फरिया अदरी में, वग़ैरा.

नीचे हम मोटी साड़ी का हिसाब देते हैं जो कोपागंज में मालूम हुआ. करघे पर सादी साड़ी के 18 जोड़ों का 26 नम्बर सूत का ताना तना हुआ था.

गिनती	नाम चीज़	दाम रुपया	आना	पाई
1.	सूत ताना	37	10	0
2.	सूत बाना	37	10	0
3.	रंगाई तानी	16	8	0
4.	रंगाई बाना	16	8	0
5.	तनाई, नरी, माड़ी	6	11	0
6.	रीड व हील वग़ैरा	1	0	0
	जोड़	115	15	0
	बाज़ार में 7–4–0 फ़ी जोड़ा के हिसाब से 18 जोड़ों का दाम	130	8	0
	मज़दूरी व वसूली	14	9	0

हम देखते हैं कि दल्लाली वग़ैरा को छोड़ कर बुनकर को फ़ी जोड़ा एक रुपया भी नहीं बचता.

कोपागंज का माल पहले पूर्वी पाकिस्तान, बिहार, पच्छिमी पाकिस्तान वग़ैरा ख़ूब जाता था. पर अब सिर्फ़ किशनगंज की (जो बिहार के पूर्निया ज़िले में है) मंडी बाक़ी बची है. देहात के लोग अपने लिये सूत वग़ैरा मऊ से ख़रीदते हैं और अपना माल भी मऊ में आ कर बेचते हैं. कोपागंज में यह देखा गया कि दल्लालों का ज़ोर तो कम है लेकिन महाजनों की तूती बोल रही है और वह तेज़ी के

(vi) ریلوے پر ہو کر جو سامان جیسے سوت یا تیار ساڑی آئے جائے، اس کی حفاظت کی خاطر بنارس یا شاہ گنج (جو E. I. R. کے اسٹیشن ہیں اور مئو ہے O. T. R. کا) تک اپنے خرچ پر جانا و واپسی۔

(vii) مال جلدی بک کرانے چھوانے کی خاطر ریلوے بابو کی جیب کچھ بھرنا۔

(viii) ریل میں بیٹھتے اترتے مئو کے پولیس والوں کی ہتھیلی گرم کرنا۔

(ix) اپنی ساڑی ادھار میں دینا اور خود ہر چیز نقد خریدنا یا ساڑی کے عوض میں 10 سے 25 فیصدی مہنگی خریدنا۔

دیہات کا کام

جیسا اوپر کہا جا چکا ہے مبارکپور میں بنارسی سلک کا کام ہوتا ہے، مئو میں فینسی ساڑی کا اور دیہاتوں میں کیول سوتی مال بنتا ہے۔ ان میں بھی طرح طرح کا مال تیار ہوتا ہے، جیسے موٹی ساڑی و لنگی کوپاگنج میں، گمچھا گھوسی میں، چھوٹی ساڑی یا پھریا ادری میں، وغیرہ۔

نیچے ہم موٹی ساڑی کا حساب دیتے ہیں جو کوپاگنج میں معلوم ہوا۔ کرگھے پر سادی ساڑی کے 18 جوڑوں کا 26 نمبر سوت کا تانا تنا ہوا تھا۔

گنتی	نام چیز	دام روپیہ	آنہ	پائی
1.	سوت تانا	37	10	0
2.	سوت بانا	37	10	0
3.	رنگائی تانی	16	8	0
4.	رنگائی بانا	16	8	0
5.	تنائی، نرمی، ماڑی	6	11	0
6.	ریڈ و ہیل وغیرہ	1	0	0
	جوڑ	115	15	0
	بازار میں 7–4–0 فی جوڑا کے حساب سے 18 جوڑوں کا دام	130	8	0
	مزدوری و وصولی	14	9	0

ہم دیکھتے ہیں کہ دلالی وغیرہ کو چھوڑ کر بنکر کو فی جوڑا ایک روپیہ بھی نہیں بچتا۔

کوپاگنج کا مال پہلے پوربی پاکستان، بہار، پچھمی پاکستان وغیرہ خوب جاتا تھا۔ پر اب صرف کشن گنج کی (جو بہار کے پورنیہ ضلعے میں ہے) منڈی باقی بچی ہے۔ دیہات کے لوگ اپنے لئے سوت وغیرہ مئو سے خریدتے ہیں اور اپنا مال بھی مئو میں آ کر بیچتے ہیں۔ کوپاگنج میں یہ دیکھا گیا کہ دلالوں کا زور تو کم ہے لیکن مہاجنوں کی توتی بول رہی ہے اور وہ تیزی کے

ब्योरा यह है :—

गिनती	नाम चीज़	दाम रुपया	आना	पाई
1.	सूत 60 नम्बर	60	0	0
2.	रंगाई ज़मीन	10	0	0
3.	बार्डर में केला व सूत	10	0	0
4.	रंगाई बार्डर	3	0	0
5.	तनाई, नरी भराई, माड़ी	8	0	0
6.	ताना भराई, तनहारी	17	0	0
7.	मज़दूरी	17	0	0
	जोड़	125	0	0
	आठ रुपया साड़ी की दर से 16 साड़ी का दाम	128	0	0
	दल्लाली व कौड़ी	2	8	0
	दाम वसूल	125	8	0

بیورا یہ ہے :—

گنتی	نام چیز	دام روپیہ	آنہ	پائی
.1	سوت (60 نمبر)	60	0	0
.2	رنگائی زمین	10	0	0
.3	بارڈر میں کیلا و سوت	10	0	0
.4	رنگائی بارڈر	3	0	0
.5	تنائی، نری بھرائی، ماڑی	8	0	0
.6	تانا بھرائی، تنہاری	17	0	0
.7	مزدوری	17	0	0
	جوڑ	125	0	0
	آٹھ روپیہ ساڑی کی در سے 16 ساڑی کا دام	128	0	0
	دلالی و کوڑی	2	8	0
	دام وصول	125	8	0

इस तरह अगर बुनकर को दलाल तुरंत दाम दे दे तो 16 साड़ी पर आज के हिसाब से आठ आने बचते हैं! इसलिये अकसर कारख़ाने बन्द हो गये और लोग बानी पर बुनने लगे जिनमें उन्हें रोज़ाना बारह-चौदह आने मज़दूरी पड़ जाती है. अकसर कारीगर साड़ी छोड़ कर चादर बुनने लगे हैं. दिन में दो चादर बुन कर सवा रुपया कमाते हैं जिस में से आठ आने तनहारी, नरी वग़ैरा में ख़र्च हो कर मुश्किल से बारह आने बचते हैं.

मऊ में तबाही के कारण कई हैं :—

(i) पिछले दो बरस में साड़ी का दाम 40 फ़ी सदी के लगभग गिर जाना पर सूत का वही भाव बना रहना.

(ii) सिवाय कलकत्ते को छोड़ कर बाक़ी सभी बाज़ारों का लगभग बन्द हो जाना.

(iii) दल्लालों का एक साड़ी का आठ रुपये में बेच कर बुनकर को साढ़े सात या कुछ कम ही देना और तरह तरह से तंग करना.

(iv) महाजन का साड़ी के दाम के एवज़ में सूत, रंग वग़ैरह कच्चा माल या—जो हाल में नई चीज़ चली है—ज़रूरत की दूसरी चीज़ें जैसे कम्बल, कपड़ा, जूता वग़ैरा ऊंचे भाव पर, यानी सौ की चीज़ सवा सौ तक में देना.

(v) महाजन का साड़ी बेच कर—बुनकर को पैसा देने के बजाये—उस पैसे को दूसरे काम में लगा कर रोज़गार बढ़ाना और धीरे धीरे बुनकरों को अपना मज़दूर या आसामी बनने पर मजबूर करना.

اس طرح اگر بنکر کو دلال ترنت دام دیدیں تو 16 ساڑی پر آج کے حساب آٹھ آنہ بچتے ہیں! اس لئے اکثر کارخانے بند ہوگئے اور لوگ بانی پر بننے لگے جنمیں انہیں روزانہ بارہ چودہ آنے مزدوری پڑ جاتی ہے. اکثر کاریگر ساڑی چھوڑ کر چادر بننے لگے ہیں. دن میں دو چادر بنکر سوا روپیہ کماتے ہیں جسمیں سے آٹھ آنہ تنہاری، نری وغیرہ میں خرچ ہوکر مشکل سے بارہ آنہ بچتے ہیں.

مؤ میں تباہی کے کارن کئی ہیں :—

(i) پچھلے دو برس میں ساڑی کا دام 40 فیصدی کے لگ بھگ گر جانا پر سوت کا وہی بھاؤ بنا رہنا.

(ii) سوائے کلکتے کو چھوڑ کر باقی سبھی بازاروں کا لگ بھگ بند ہو جانا.

(iii) دلالوں کا ایک ساڑی کا آٹھ روپیہ میں بیچکر بنکر کو ساڑھے سات یا کچھ کم ہی دینا اور طرح طرح سے تنگ کرنا.

(iv) مہاجن کا ساڑی کے دام کے عوض میں سوت، رنگ وغیرہ کچا مال یا—جو حال میں نئی چیز چلی ہے—ضرورت کی دوسری چیزیں جیسے کمبل، کپڑا، جوتے وغیرہ اونچے بھاؤ پر، یعنی سو کی چیز سوا سو تک میں دینا.

(v) مہاجن کا ساڑی بیچکر—بنکر کو پیسہ دینے کے بجائے—اس پیسے کو دوسرے کام میں لگا کر روزگار بڑھانا اور دھیرے دھیرے بنکروں کو اپنا مزدور یا آسامی بننے پر مجبور کرنا.

इस के अलावा मुबारकपुर में एक मुसीबत और है. वहां की आबादी लगभग 18,000 है जिस में ज़ियादातर लोग बुनकर या कच्चा-पक्का बुनाई सरंजाम लेने देने वाले हैं, किसान कोई नहीं. इसलिये वहां अनाज बाहर से आता है और मंहगा मिलता है. मुबारकपुर के भाव यह हैं.

गिनती	नाम चीज़	फ़ी रुपया सेर	छटांक
1.	गेहूँ	1	8
2.	जौ	.	4
3.	मकई	2	8
4.	चावल	1	0
5.	घी	0	2½
6.	चना	2	0

मुबारकपुर के आस पास देहातों में एक चीज़ और बड़ी भयानक है. वह है ज़िला बोर्ड का मनमाना टैक्स. इस टैक्स का कोई हिसाब ही नहीं है—बोर्ड की मनमानी चलती है. हमने देखा कि एक घर में चचा, बाप, लड़का तीनों के नाम पर टैक्स लगा था और दादा के नाम पर भी जो 1947 में ही इस दुनिया से कूच कर गये थे ! कहने की ज़रूरत नहीं कि रिशवत ख़ूब चलती है.

इस तरह पता चलता है कि मुबारकपुर और उसके पड़ोस का रेशमी साड़ी का काम तेज़ी से ख़त्म हो रहा है. जो कारख़ाने चल रहे हैं वह ज़ियादातर तो घाटे में या महाजन का दिया सामान बानी पर बुनते हैं. इन कारख़ानों के बन्द होने से उनमें काम करने वाले देहात के हज़ारों लोगों की भी रोज़ी मारी गई है.

मऊ का काम

मऊ उत्तर प्रदेश में हैन्डलूम कपड़े की सबसे बड़ी मंडी है. यहां पास के पूर्बी और पच्छिमी ज़िलों का माल ख़ूब आता था. यहां का माल अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, पूर्वी बंगाल और पच्छिम पाकिस्तान जाता था. अब ले दे कर सिर्फ़ कलकत्ते की मंडी ऐसी बची है जहां से कुछ थोड़ी बहुत निकासी हो पाती है.

मऊ की आबादी 36,000 के लगभग है और यहां 20,000 कारख़ाने हैं जिन में 5,000 के क़रीब तो एक दम बन्द हैं, बाक़ी जो चल रहे हैं उन में से ज़ियादातर दल्लालों और महाजनों के मातहत बानी पर चल रहे हैं और मुश्किल से 25 फ़ी सदी ऐसे होंगे जो पहले की तरह अपने आप चलते हों.

हमने एक कारख़ाना देखा जहां मज़दूर बुन रहा था. करघे पर 16 साड़ियों का ताना तना था. उसके ख़र्च का

اس کے علاوہ مبارکپور میں ایک مصیبت اور ہے. یہاں کی آبادی لگ بھگ 18,000 ہے جسمیں زیادہ تر لوگ بنکر یا کچا پکا بنائی سرانجام لینے دینے والے ہیں' کسان کوئی نہیں. اس لئے وہاں اناج باہر سے آتا ہے اور مہنگا ملتا ہے. مبارکپور کے بھاؤ یہ ہیں .

گنتی	نام چیز	فی روپیہ سیر	چھٹانک
.1	گیہوں	1	8
.2	جو	4	2
.3	مکئی	8	2
.4	چاول	1	0
.5	گھی	0	2½
.6	چنا	2	0

مبارکپور کے آس پاس دیہاتوں میں ایک چیز اور بڑی بھیانک ہے . وہ ہے ضلع بورڈ کا من مانا ٹیکس . اس ٹیکس کا کوئی حساب ہی نہیں ہے—بورڈ کی منمانی چلتی ہے . ہم نے دیکھا کہ ایک گھر میں چچا' باپ' لڑکا تینوں کے نام پر ٹیکس لگا تھا اور دادا کے نام پر بھی جو 1947 میں ہی اس دنیا سے کوچ کر گئے تھے ! کہنے کی ضرورت نہیں کہ رشوت خوب چلتی ہے .

اس طرح پتہ چلتا ہے کہ مبارکپور اور اس کے پڑوس کا ریشمی ساڑی کا کام تیزی سے ختم ہو رہا ہے. جو کارخانے چل رہے ہیں وہ زیادہ تر تو گھاٹے میں یا مہاجن کا دیا سامان بانی پر بنتے ہیں . ان کارخانوں کے بند ہونے سے ان میں کام کرنے والے دیہات کے ہزاروں لوگوں کی بھی روزی ماری گئی ہے .

مئو کا کام

مئو اتر پردیش میں ہینڈلوم کپڑے کی سب سے بڑی منڈی ہے . یہاں پاس کے پوربی اور پچھمی ضلعوں کا مال خوب آتا تھا . یہاں کا مال افریقہ' آسٹریلیا' پوربی بنگال اور پچھم پاکستان جاتا تھا. اب لے دے کر صرف کلکتے کی منڈی ایسی بچی ہے جہاں سے کچھ تھوڑی بہت نکاسی ہو پاتی ہے .

مئو کی آبادی 36,000 کے لگ بھگ ہے اور یہاں 20,000 کارخانے ہیں جنمیں 5000 کے قریب تو ایکدم بند ہیں' باقی جو چل رہے ہیں ان میں سے زیادہ تر دلالوں اور مہاجنوں کے ماتحت بانی پر چل رہے ہیں اور مشکل سے 25 فیصدی ایسے ہونگے جو پہلے کی طرح اپنے آپ چلتے ہوں .

ہم نے ایک کارخانہ دیکھا جہاں مزدور بن رہا تھا . کرگھے پر 16 ساڑیوں کا تانہ تنا تھا . اس کے خرچ کا

करघे के ऊपर पांच बनारसी सिल्क की साड़ियों का ताना कसा हुआ था. इस में ख़र्च का ब्योरा यह है—

गिनती	नाम चीज़	तादाद	दाम (रुपया)		
1.	ज़री	35 × 5 तोले	350	0	0
2.	कतान (जापानी)	10 छटांक	62	8	0
3.	बाना (मालदा)	सवा सेर	62	8	0
4.	खुलाई-रंगाई वग़ैरा		18	12	0
5.	तनाई-नराई वग़ैरा		10	0	0
		जोड़......	503	12	0
	पांच साड़ी की मज़दूरी		70	0	0
		लागत	573	12	0
	बाज़ार भाव से पांच साड़ी का दाम		575	0	0

इस तरह हम देखते हैं कि यह मान कर कि कारख़ाने के रख रखाव व टूट फूट के वास्ते एक पैसा भी नहीं चाहिये, पांच साड़ी पर एक कारीगर को सवा रुपया बचता है. याद रहे कि चौदह रुपया मज़दूरी दो मज़दूरों को मिलती है जो मिल कर दिन भर में आधा गज़ से ज़ियादा नहीं बुन पाते, यानी दोनों जनों को दिन भर में एक रुपये छह आने के क़रीब मिलता है.

ऊपर से मुसीबत यह है कि महाजन लोग तैयार चीज़ का दाम नक़द नहीं देते, अकसर तो दो-दो तीन-तीन महीने तक टालते रहते हैं, या नक़दी की बजाये 75% का सामान जैसे रेशम वग़ैरा और 25% नक़द देते हैं. यह सामान जो वह देते हैं तो कम से कम दस फ़ी सदी ऊंचे दाम लगा कर. इसी का नतीजा है कि मुबारकपुर के लगभग 3500 सिल्क कारख़ानों में 3000 के ऊपर बन्द हैं. जो चल रहे हैं उन में से ज़ियादातर महाजन की बानी पर और काफ़ी लोग गांव छोड़ कर मलाया, मालेगांव, नागपुर और बम्बई रोज़ी की तलाश में चले गए. अगर किराये का इन्तज़ाम हो जाए तो और लोग भी चले जाएं. कुछ लोग मऊ में जा कर ख़ोमचा बेचना वग़ैरा दूसरे काम कर रहे हैं. घरों की औरतों ने जो कभी पर्दे के बाहर नहीं निकली थीं खेतों में जा कर कटाई व निराई का काम किया. अकसर लोगों ने पुरानी कमाई की बचत और घर के बरतन ज़ेवर बेच बाच कर काम चलाया मगर वह दौर भी अब ख़त्म हो गया. हमें मालूम हुआ कि एक कारीगर बीस रुपए क़र्ज़ लेकर फ़र्वरी में बम्बई गया था. उस के स्त्री व चार बच्चे यहीं थे. इन आठ माह में उसने सिर्फ़ चालीस रुपये घर भेजे जिन में बीस रुपए उसके बाप ने क़र्ज़ के अदा कर दिये और बीस रुपए घर के ख़र्चे के लिये बचे—यानी हर माह में औसत ढाई रुपए की आमदनी !

کرگھے کے اُوپر پانچ بنارسی سلک کی ساڑیوں کا تانا کسا ہوا تھا . اُس میں خرچ کا بیورہ یہ ہے .

گنتی	نام چیز	تعداد	دام (روپیہ)		
.1	ذری	5 × 35 تولے	350	0	0
.2	کتان (جاپانی)	10 چھٹانک	62	8	0
.3	بانا (مالدہ)	سوا سیر	62	8	0
.4	کھلائی رنگائی وغیرہ		18	12	0
.5	تنائی نرائی وغیرہ		10	0	0
		جوڑ......	503	12	0
	پانچ ساڑی کی مزدوری		70	0	0
	لاگت		573	12	0
	بازار بھاؤ سے پانچ ساڑی کا دام		575	0	0

اِس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ یہ مانکر کہ کارخانے کے رکھ رکھاؤ و ٹوٹ پھوٹ کے واسطے ایک پیسہ بھی نہیں چاہئے، پانچ ساڑی پر ایک کاریگر کو سوا روپیہ بچتا ہے . یاد رہے کہ چودہ روپیہ مزدوری دو مزدوروں کو ملتی ہے جو مل کر دن بھر میں آدھا گز سے زیادہ نہیں بن پاتے، یعنی دونوں جنوں کو دن بھر میں ایک روپیہ چھ آنے کے قریب ملتا ہے .

اُوپر سے مصیبت یہ ہے کہ مہاجن لوگ تیار چیز کا دام نقد نہیں دیتے، اکثر تو دو دو تین تین مہینے تک ٹالتے رہتے ہیں، یا نقدی کی بجائے 75% کا سامان جیسے ریشم وغیرہ اور 25% نقد دیتے ہیں . یہ سامان جو وہ دیتے ہیں تو کم سے کم دس فی صدی اُونچے دام لگا کر . اسی کا نتیجہ ہے کہ مبارک پور کے لگ بھگ 3500 سلک کارخانوں میں 3000 کے اوپر بند ہیں . جو چل رہے ہیں اُن میں سے زیادہ تر مہاجن کی بانی پر اور کافی لوگ گاؤں چھوڑ کر ملایا، مالے گاؤں ناگپور اور بمبئی روزی کی تلاش میں چلے گئے. اگر کرائے کا اِنتظام ہوجائے تو اور لوگ بھی چلے جائیں. کچھ لوگ مئو میں جاکر خوانچہ بیچنا وغیرہ دوسرے کام کر رہے ہیں . گھروں کی عورتوں نے جو کبھی پردے کے باہر نہیں نکلی تھیں کھیتوں میں جا کر کٹائی و نرائی کا کام کیا . اکثر لوگوں نے پرانی کمائی کی بچت اور گھر کے برتن زیور بیچ باچ کر کام چلایا . مگر وہ دور بھی اب ختم ہوگیا . ہمیں معلوم ہوا کہ ایک کاریگر بیس روپئے قرض لے کر فروری میں بمبئی گیا تھا، اس کے استری و چار بچے یہیں تھے . ان آٹھ ماہ میں اُس نے صرف چالیس روپئے گھر بھیجے جن میں بیس روپئے اُس کے باپ نے قرض کے ادا کر دیئے اور بیس روپے گھر کے خرچ کے لئے بچے— یعنی ہر ماہ میں اوسط ڈھائی روپئے کی آمدنی !

लेकिन अब यह तीनों तरह के ही काम चौपट हो रहे हैं और हैन्डलूम का धन्धा तबाह हो रहा है. इस पर हम अब विस्तार से विचार करेंगे.

बारीक रेशमी काम

यह काम आज़मगढ़ ज़िले की मुहम्मदाबाद तहसील के मुबारकपुर क़सबे और उसके आस पास के गांवों में—अज़मतगढ़, सोनपुर, जियनपुर, खैराबाद, इब्राहीमपुर, वलीदपुर, भीटा, जहानागंज, सठयांवा, डिलिया, पाही, सरैयां, नेवादा, रसूलपुर, अमिलो वग़ैरा में–होता है. मुबारकपुर को दरअसल बनारस की शाख़ कहना चाहिये और पिछले तीस बत्तीस बरस में ही यह काम यहां पनपा है इसके पहले यहां पर संघी और मशरू (जिन में एक धागा रेशम का, दूसरा सूत का रहता था) की बुनाई होती थी.

इस काम में लगने वाले कच्चे माल की ख़ास चीज़ें तीन हैं—ताने का रेशम, बाने का रेशम और ज़री या कलाबत्तू. ताने में बंगलौर से आने वाला देशी सिल्क इस्तेमाल होता है या इटली व जापान का असली या नक़ली रेशम. बाने में कभी विदेशी रेशम और कभी मालदा (बंगाल) में तैयार होने वाला असली रेशम लगता है. ज़री या कलाबत्तू बनारस से आती है. असली रेशम बुनने वाले कारख़ाने में लगभग दस कारीगर का काम रहता है जिन में औरतों का ख़ासा हिस्सा हुआ करता है. नक़ली रेशम में सिर्फ़ तीन आदमियों की ज़रूरत पड़ती है.

मुबारकपुर का तैयार हुआ माल ज़ियादातर मद्रास, लंका, मलाया, पूर्वी बंगाल और पश्चिमी पंजाब जाया करता था. बंटवारे के बाद से और ख़ास कर पिछले डेढ़-दो बरस से सिवाय मद्रास के बाक़ी सब बाज़ार हैन्डलूम के सिल्क के लिये ख़त्म से हो गए हैं. साथ ही साथ विदेश से आने वाली साड़ी के मुक़ाबले की वजह से बनारसी साड़ी के दाम में लगभग सौ रुपया फ़ी साड़ी कमी हो गई है. बाज़ारों का न होना और दाम का गिरना—इन दोनों चीज़ों ने मिल कर इस उद्योग को सख़्त चोट पहुंचाई है. तीसरी चीज़ है कच्चे माल जैसे विदेश से आने वाले असली व नक़ली रेशम के दाम में—सरकार के ज़ियादा से ज़ियादा चुन्गी लगाते जाने के कारन—इज़ाफ़ा हो जाना. इस तरह मुबारकपुर के बुनकर पर तिहेरी मार पड़ी है.

हमने ऊपर कहा है कि बुनाई कारख़ाने तीन तरह के होते हैं. पहली तरह के—यानी बुनकर ही मज़दूर और मालिक—कारख़ाने हमें मुबारकपुर और आस पास में देखने को न मिले, मुश्किल से कुछ ही बचे होंगे. दूसरी तरह के—यानी कारख़ाने का मालिक बुनाई मज़दूरों से कराता है—कई कारख़ाने थे. इनमें से एक कारख़ाने का हाल नीचे दिया जाता है.

لیکن اب یہ تینوں طرح کے ہی کام چوپٹ ہو رہے ہیں اور ہینڈلوم کا دھندا تباہ ہو رہا ہے ۔ اس پر ہم اب وستار سے وچار کرینگے ۔

باریک ریشمی کام

یہ کام اعظم گڈھ ضلعے کی محمدآباد تحصیل کے مبارک پور قصبے اور اُس کے آس پاس کے گاؤں میں— اعظمت گڈھ، سون پور، جین پور، خیرآباد، ابراہیم پور، ولید پور، بھیٹا پور، جہانا گنج، سٹھیاواں، ڈلیا، پاہی، سریاں، نیوادا، رسول پور، عاماو وغیرہ میں—ہوتا ہے ۔ مبارک پور کو دراصل بنارس کی شاخ کہنا چاہئے اور پچھلے تیس بتیس برس میں ہی یہ کام یہاں پنپا ہے ۔ اس کے پہلے یہاں سنگھی اور مشرو (جن میں ایک دھاگا ریشم کا، دوسرا سوت کا رہتا تھا) کی بنائی ہوتی تھی۔

اس کام میں لگنے والے کچے مال کی خاص چیزیں تین ہیں— تانے کا ریشم، بانے کا ریشم اور زری یا کلا بتو ۔ تانے میں بنگلور سے آنے والا دیشی سلک استعمال ہوتا ہے یا اٹلی و جاپان کا اصلی یا نقلی ریشم ۔ بانے میں کبھی ودیشی ریشم اور کبھی مالدا (بنگال) میں تیار ہونے والا اصلی ریشم لگتا ہے ۔ زری یا کلا بتو بنارس سے آتی ہے ۔ اصلی ریشم بننے والے کارخانے میں لگ بھگ دس کاریگر کا کام رہتا ہے جن میں عورتوں کا خاصہ حصہ ہوا کرتا ہے ۔ نقلی ریشم میں صرف تین آدمیوں کی ضرورت پڑتی ہے ۔

مبارک پور کا تیار ہوا مال زیادہ تر مدراس، لنکا، ملایا، پوربی بنگال اور پچھمی پنجاب جایا کرتا تھا ۔ بٹوارے کے بعد سے اور خاص کر پچھلے ڈیڑھ دو برس سے سوائے مدراس کے باقی سب بازار ہینڈلوم کے سلک کے لئے ختم سے ہوگئے ہیں ۔ ساتھ ہی ساتھ ودیش سے آنے والی ساڑی کے مقابلے کی وجہ سے بنارسی ساڑی کے دام میں لگ بھگ سو روپیہ فی ساڑی کمی ہو گئی ہے ۔ بازاروں کا نہ ہونا اور دام کا گرنا—اِن دونوں چیزوں نے مل کر اس اُدیوگ کو سخت چوٹ پہونچائی ہے ۔ تیسرے چیز ہے کچے مال جیسے ودیش سے آنے والے اصلی و نقلی ریشم کے دام میں—سرکار کے زیادہ سے زیادہ چنگی لگاتے جانے کے کارن—اضافہ ہو جانا ۔ اس طرح مبارک پور کے بنکر پر تہری مار پڑی ہے ۔

ہم نے اوپر کہا ہے کہ بنائی کارخانے تین طرح کے ہوتے ہیں ۔ پہلی طرح کے—یعنی بنکر ہی مزدور اور مالک—کارخانے ہمیں مبارک پور اور آس پاس میں دیکھنے کو نہ ملے، مشکل سے کچھ ہی بچے ہونگے ۔ دوسری طرح کے—یعنی کارخانے کا مالک بنائی مزدوروں سے کراتا ہے—کئی کارخانے تھے ان میں سے ایک کارخانے کا حال نیچے دیا جاتا ہے ۔

रसूलपुर के बुज़ुर्ग मुरब्बी अकबर अली खां साहब, मुबारकपुर के मुल्ला अब्दुल अली और अमिलो के भाई अब्दुल हफ़ीज़.

आज़मगढ़ ज़िले में चालीस हज़ार के ऊपर करघे हैं जिन पर मिल का तैयार किया हुआ सूत या रेशम हाथ से बुना जाता है. अपने चार दिन के दौरे में जो मैंने हालत देखी तो ऐसा महसूस हुआ कि इन इलाक़ों में आग लगी हुई है जिसको अगर क्या सरकार, क्या स्यासी पार्टियां, क्या जनता सब ने मिल कर जल्दी ही नहीं बुझाया तो यह इलाक़े तबाह व बरबाद हो जायेंगे.

तीन ख़ास बातें

इस आग की सच्ची तसवीर समझने के लिये तीन बातें हमें जान लेना चाहिये. पहले यह कि करघे या कारख़ाने जो चलते हैं तो तीन तरह से :—

(1) जो कारख़ाने का मालिक है वही मज़दूर है और वही सब काम करता है.

(2) जो कारख़ाने का मालिक है वह बुनाई मज़दूरों से करा कर बाक़ी इन्तज़ाम ख़ुद करता है.

(3) जो कारख़ाने का मालिक तो है मगर किसी महाजन से कच्चा माल (सूत या रेशम वग़ैरा) ले कर मज़दूरी पर बुनता है या मज़दूरों की मदद से बुनवा लेता है. इसका नाम है 'बानी' पर बुनना.

दूसरी चीज़ यह है कि इस धन्धे में तीन तरह के आदमी हैं :—

(1) बुनकर जो बुनाई का काम करते या कराते हैं.

(2) दल्लाल जो तैयार माल बुनकर से ले कर, अपना कुछ कमीशन काट कर, बुनकर को क़ीमत अदा कर देते या अदा कराने का वादा करते हैं.

(3) महाजन या आढ़ती जो दल्लाल से या बुनकर से भी तैयार माल ले कर उसे बाहर या देशावर में भेजते और सारा व्यापार करते हैं.

तीसरी चीज़ यह है कि इस सनअत में आज़मगढ़ ज़िले में काम भी तीन तरह का होता है :—

(1) बारीक रेशमी काम—जिसमें ताना बाना रेशमी या नक़ली सूत के रहते और ज़री का काम भी होता, जो मुबारकपुर और उसके आस पास तैयार होता है.

(2) रेशमी सूती काम—जिसमें ताना सूती या नक़ली रेशम का और बाना सूत का रहता, जो मऊ और उसके आस पास तैयार होता है.

(3) केवल सूती काम—जिसमें ताना-बाना दोनों सूती रहते हैं, जो बाक़ी सारे ज़िले में तैयार होता है.

رسولپور کے بزرگ مربی اکبر علی خاں صاحب، مبارک پور کے ملا عبدالعلی اور امیلو کے بھائی عبدالحفیظ۔

اعظم گڈھ ضلعے میں چالیس ہزار کے اوپر کرگھے ہیں جن پر مِل کا تیار کیا ہوا سوت یا ریشم ہاتھ سے بنا جاتا ہے۔ اپنے چار دن کے دورے میں جو میں نے حالت دیکھی تو ایسا محسوس ہوا کہ اِن علاقوں میں آگ لگی ہوئی ہے جس کو اگر کیا سرکار، کیا سیاسی پارٹیاں، کیا جنتا سب نے مل کر جلدی ہی نہیں بجھایا تو یہ علاقے تباہ و برباد ہو جائینگے۔

تین خاص باتیں

اِس آگ کی سچی تصویر سمجھنے کے لئے تین باتیں ہمیں جان لینا چاہئے۔ پہلے یہ کہ کرگھے یا کارخانے جو چلتے ہیں تو تین طرح سے :—

(1) جو کارخانے کا مالک ہے وہی مزدور ہے اور وہی سب کام کرتا ہے۔

(2) جو کارخانے کا مالک ہے وہ بنائی مزدوروں سے کرا کر باقی اِنتظام خود کرتا ہے۔

(3) جو کارخانے کا مالک تو ہے مگر کسی مہاجن سے کچا مال (سوت یا ریشم وغیرہ) لیکر مزدوری پر بنتا ہے یا مزدوروں کی مدد سے بنوا لیتا ہے۔ اِس کا نام ہے 'بانی' پر بننا۔

دوسری چیز یہ ہے کہ اِس دھندے میں تین طرح کے آدمی ہیں :—

(1) بنکر جو بنائی کا کام کرتے یا کراتے ہیں۔

(2) دلال جو تیار مال بنکر سے لیکر اپنا کچھ کمیشن کاٹ کر، بنکر کو قیمت ادا کر دیتے یا ادا کرنے کا وعدہ کرتے ہیں۔

(3) مہاجن یا آڑھتی جو دلال سے یا بنکر سے بھی تیار مال لیکر اُسے باہر یا دیساور میں بھیجتے اور سارا بیوپار کرتے ہیں۔

تیسری چیز یہ ہے کہ اس صنعت میں اعظم گڈھ ضلعے میں کام بھی تین طرح کا ہوتا ہے :—

(1) باریک ریشمی کام—جس میں تانا بانا ریشمی یا نقلی سوت کے رہتے اور زری کا کام بھی ہوتا، جو مبارک پور اور اُس کے آس پاس تیار ہوتا ہے۔

(2) ریشمی سوتی کام—جس میں تانا سوتی یا نقلی ریشم کا اور بانا سوت کا رہتا، جو مئو اور اُس کے آس پاس تیار ہوتا ہے۔

(3) کیول سوتی کام—جس میں تانا بانا دونوں سوتی رہتے ہیں، جو باقی سارے ضلعے میں تیار ہوتا ہے۔

आज़मगढ़ ज़िले के बुनकरों की दुर्दशा

अक्तूबर के पहले हफ़्ते में पंडित सुन्दरलाल जी के पास ज़िला बुनकर यूनियन, मऊनाथ भंजन, आज़मगढ़, की तरफ़ से भाई इश्तियाक़ आब्दी का एक ख़त आया जिसमें उन्होंने 18-19 अक्तूबर को होने वाली ज़िला बुनकर कान्फ़्रेन्स में पंडित जी को दावत दी. उसके साथ ज़िला बुनकर कनवेनशन (आज़मगढ़) का एक मेमोरेन्डम और बुनकर यूनियन की मांगें भी थीं. यह तीनों चीज़ें हमारे अक्तूबर नम्बर में निकल चुकी हैं. दूसरे ज़रूरी कामों की वजह से पंडित जी उन तारीख़ों में मऊ नहीं जा सकते थे और इसलिये उन्होंने मुझ से वहां जाने और सारे हालात को समझ आने के लिये कहा.

कानफ़रेन्स 18-19 अक्तूबर को थी. मैं 17 तारीख़ की दोपहर को मऊ पहुँच गया. 17 की शाम को मऊ ख़ास में घूम कर वहां के बुनकर कारख़ाने देखे. 18 की सुबह को कोपागंज—जो मऊ से छै मील के फ़ासले पर घोसी तहसील में है (मऊ का क़स्बा मुहम्मदाबाद तहसील में पड़ता है)—गया और दोपहर को वापिस आया. शाम को कान्फ़रेन्स का डेलीगेट सेशन था जिसमें शिरकत की. 19 की सुबह भी डेलीगेट सेशन था पर उसमें शरीक न हो कर घोसी तहसील के सदर मुक़ाम घोसी, जो मऊ से 12 मील के फ़ासले पर है गया और आस पास के गांवों में, जैसे मेदापुर, करीम उद्दीनपुर और बड़े गांव भी घूमा. 19 की शाम को कानफ़रेन्स के खुले इजलास में हिस्सा लिया. कानफ़रेन्स ख़त्म होने के दूसरे दिन मैं मुबारकपुर गया जो मऊ से 18 मील की दूरी पर मुहम्मदाबाद तहसील का एक बड़ा क़स्बा है. उसके नज़दीक के गांव, जैसे अमिलो, निवारा, कटरा, सरैयां भी देखे. वहां से मऊ शाम को वापिस आ कर रात की गाड़ी से इलाहाबाद के लिये चल दिया. इन चार दिन जिस सहूलियत व आराम के साथ मैं यह इलाक़े घूम सका और थोड़ी बहुत जानकारी हासिल कर सका इसके लिये मैं वहां के रहने वालों और कार्यकर्ताओं का बड़ा अहसानमन्द हूँ जिनमें से ख़ास कर इन भाइयों का—मौलवी अब्दुल बाक़ी साहब, सदर ज़िला बुनकर यूनियन, भाई इश्तियाक़ आब्दी, सेक्रेट्री, ज़िला कम्यूनिस्ट पार्टी. डाक्टर फ़ैज़ुल हसन, सेक्रेट्री ज़िला बुनकर यूनियन, मऊ के भाई जय बहादुर सिंह, भाई इरशाद अहमद, भाई मुहम्मद समी और भाई मुस्तफ़ा हुसैन, घोसी के बुज़ुर्ग जनाब मुहम्मद ताहिर साहब और भाई रहमत अली,

اعظم گڈھ ضلعے کے بنکروں کی دردشا

اکتوبر کے پہلے ہفتے میں پنڈت سندرلال جی کے پاس ضلع بنکر یونین' مئوناتھ بھنجن' اعظم گڈھ کی طرف سے بھائی اشتیاق عابدی کا ایک خط آیا جس میں انہوں نے 18-19 اکتوبر کو ہونے والی ضلع بنکر کانفرنس میں پنڈت جی کو دعوت دی. اس کے ساتھ ضلع بنکر کنوینشن (اعظم گڈھ) کا ایک میمورنڈم اور بنکر یونین کی مانگیں بھی تھیں. یہ تینوں چیزیں ہمارے اکتوبر نمبر میں نکل چکی ہیں. دوسرے ضروری کاموں کی وجہ سے پنڈت جی ان تاریخوں میں مئو نہیں جاسکتے تھے اور اس لئے انہوں نے مجھ سے وہاں جانے اور سارے حالات کو سمجھ آنے کے لئے کہا.

کانفرنس 18-19 اکتوبر کو تھی. میں 17 تاریخ کی دوپہر کو مئو پہونچ گیا. 17 کی شام کو مئو خاص میں گھوم کر وہاں کے بنکر کارخانے دیکھے. 18 کی صبح کو کوپاگنج—جو مئو سے چھ میل کے فاصلے پر گھوسی تحصیل میں ہے (مئو کا قصبہ محمدآباد تحصیل میں پڑتا ہے)—گیا اور دوپہر کو واپس آیا. شام کو کانفرنس کا ڈیلی گیٹ سیشن تھا جس میں شرکت کی. 19 کی صبح بھی ڈیلی گیٹ سیشن تھا پر اس میں شریک نہ ہو کر گھوسی تحصیل کے صدر مقام گھوسی—جو مئو سے بارہ میل کے فاصلے پر ہے گیا اور آس پاس کے گاؤں میں جیسے میداپور' کریم الدین پور اور بڑے گاؤں بھی گھوما. 19 کی شام کو کانفرنس کے کھلے اجلاس میں حصہ لیا. کانفرنس ختم ہونے کے دوسرے دن میں مبارکپور گیا جو مئو سے 18 میل کی دوری پر محمدآباد تحصیل کا ایک بڑا قصبہ ہے. اس کے نزدیک کے گاؤں' جیسے امیلو' نوارا' کٹرا' سریاں بھی دیکھے. وہاں سے مئو شام کو واپس آکر رات کی گاڑی سے الہ آباد کے لئے چل دیا. ان چار دن جس سہولت و آرام کے ساتھ میں یہ علاقے گھوم سکا اور تھوڑی بہت جانکاری حاصل کر سکا اس کے لئے میں وہاں کے رہنے والوں اور کاریہ کرتاؤں کا بڑا احسان مند ہوں جن میں سے خاص کر ان بھائیوں کا—مولوی عبدالباقی صاحب' صدر ضلع بنکر یونین' بھائی اشتیاق عابدی' سکریٹری ضلع کمیونسٹ پارٹی' ڈاکٹر فیض الحسن' سکریٹری ضلع بنکر یونین' مئو کے بھائی جے بہادر سنگھ' بھائی ارشاد احمد' بھائی محمد سمیع اور بھائی مصطفیٰ حسین' گھوسی کے بزرگ جناب محمد طاہر صاحب اور بھائی رحمت علی'

लिये एक बड़ी क्रान्ति होगी; वह क्रान्ति आ रही है, देखने वालों को वह आती दिखाई दे रही है. अब भी वक़्त है, आप वक़्त रहते चेत जायें तो अच्छा है.

क्या आप दिमाग़ी लिहाज़ से इतने बूढ़े हो गये हैं कि विदेशी पूंजीवाद, आर्थिक साम्राजवाद, पालियामेन्ट्री तरीक़े और मौजूदा ढंग की लोकशाही के दोषों को जानते हुए भी आप उन्हें बदलने और विकेन्द्रित शासन जारी करने के लिये कुछ ज़ोरदार क़दम नहीं उठा सकते ? अगर ऐसा है तो नये नेता आयेंगे, नया दृष्टिकोन अपनायेंगे, और सच्चा स्वराज, सर्वोदय राज क़ायम करेंगे.

× × ×

लेखक दोस्तों ! आपने कितनी मेहनत और साधना से राजनीति की बड़ी बड़ी किताबों को पढ़ा और उन्हें हज़म किया, और फिर अपनी सुन्दर चीज़ें साहित्य संसार को नज़र कीं. कितनी बारीकियों, कितना तर्क वितर्क, कितनी बाल की खाल आपकी किताबों में भरी पड़ी है. पर उसी से आप कब तक सन्तोश करते रहेंगे ?

बड़ी बड़ी लम्बी चौड़ी किताबों में ख़ुद परेशान होने और पाठकों को परेशान करने की बात छोड़िये. इन्सानियत या मानवता पर सोचिये समझिये. गांवों में जाइये, आस पास के आदमियों के दुख-दर्द की बात सोचिये इंगलैन्ड, अमरीका, रूस और चीन की किताबों में मग़ज़ पच्ची करने की, पालियामेन्ट्री निज़ाम और नौकरशाही की बारीकियों में उलझने की ज़रूरत नहीं. याद रखिये जहां केन्द्रीय हकूमत है वहां नौकरशाही ज़रूर होगी, केन्द्र संचालक चाहे जितना भला आदमी हो उसे नौकरों से ही काम लेना होगा. स्वदेशी नौकरशाही उतनी ही बुरी है जितनी विदेशी नौकरशाही. एक तरह से यह और ज़ियादा बुरी होती है, क्योंकि उसके लिये कुछ लोगों की ममता होती है. इसलिये उसे मिटाने के लिये, विकेन्द्रित राज क़ायम करने के लिये, सर्वोदय भावना का प्रचार कर के अपनी लेखनी व क़लम की शान बढ़ाइये.

मैं तो सिर्फ़ राम का नाम नहीं लेता, सीताराम भी कहता हूं. इस का मतलब है कि ज़मीन के बंटवारे के साथ ग्रामोद्योग भी चाहता हूं. अकसर कहा जाता है कि ग्रामोद्योग का माल मंहगा होता है...मिल के कपड़े पर शुरू से अंत तक उसी ख़ातिर लगने वाले ख़र्च को जोड़िये और फिर देखिये कि यह सस्ता होता है या मंहगा ?...... ज़हर सस्ता है और अमृत मंहगा, इसलिये क्या आप ज़हर ख़रीदेंगे ?

—विनोबा

لئے ایک بڑی کرانتی ہوگی؛ وہ کرانتی آ رہی ہے، دیکھنے والوں کو وہ آتی دکھائی دے رہی ہے. اب بھی وقت ہے، آپ وقت رہتے چیت جائیں تو اچھا ہے .

کیا آپ دماغی لحاظ سے اتنے بوڑھے ہوگئے ہیں کہ ودیشی پونجی‌واد، آرتھک سامراج‌واد، پارلیامنٹری طریقے اور موجودہ ڈھنگ کی لوک‌شاہی کے دوشوں کو جانتے ہوئے بھی آپ انہیں بدلنے اور وکیندرت شاسن جاری کرنے کے لئے کچھ زوردار قدم نہیں اٹھا سکتے ؟ اگر ایسا ہے تو نئے نیتا آئینگے، نیا درشٹی‌کون اپنائینگے اور سچا سوراج، سروودے راج قائم کرینگے .

× × ×

لیکھک دوستو ! آپنے کتنی محنت اور سادھنا سے راج‌نیتی کی بڑی بڑی کتابوں کو پڑھا اور انہیں ہضم کیا، اور پھر اپنی سندر چیزیں ساہتیہ سنسار کو نظر کیں . کتنی باریکیاں، کتنا ترک وترک کتنی بال کی کھال آپ کی کتابوں میں بھری پڑی ہے . پر اسی سے آپ کب تک سنتوش کرتے رہینگے ؟

بڑی بڑی لمبی چوڑی کتابوں میں خود پریشان ہونے اور پاٹھکوں کو پریشان کرنے کی بات چھوڑئیے. انسانیت یا مانوتا پر سوچئے سمجھئے . گاؤں میں جائیے، آس پاس کے آدمیوں کے دکھ درد کی بات سوچئے. انگلینڈ، امریکہ، روس اور چین کی کتابوں میں مغز پچی کرنے کی، پارلیامنٹری نظام اور نوکر شاہی کی باریکیوں میں الجھنے کی ضرورت نہیں. یاد رکھئے جہاں کیندریہ حکومت ہے وہاں نوکر شاہی ضرور ہوگی، کیندر سنچالک چاہے جتنا بھلا آدمی ہو اسے نوکروں سے ہی کام لینا ہوگا. سودیشی نوکر شاہی اتنی ہی بری ہے جتنی ودیشی نوکر شاہی . ایک طرح سے یہ اور زیادہ بری ہوتی ہے، کیونکہ اس کے لئے کچھ لوگوں کی ممتا ہوتی ہے. اس لئے اسے مٹانے کے لئے، وکیندرت راج قائم کرنے کے لئے، سرودے بھاونا کا پرچار کرکے اپنی لیکھنی و قلم کی شان بڑھائیے .

میں تو صرف رام کا نام نہیں لیتا، سیتارام بھی کہتا ہوں. اس کا مطلب ہے کہ زمین کے بٹوارے کے ساتھ گرام ادیوگ بھی چاہتا ہوں . اکثر کہا جاتا ہے کہ گرام ادیوگ کا مال مہنگا ہوتا ہے...مل کے کپڑے پر شروع سے انت تک اسی خاطر لگنے والے خرچ کو جوڑئیے اور پھر دیکھئے کہ وہ سستا ہوتا ہے یا مہنگا؟......زہر سستا ہے اور امرت مہنگا. اس لئے کیا آپ زہر خریدیں گے؟

—ونوبا

उनकी तादाद हजारों तक हो—सुराज नहीं होता. सुराज का मतलब है भारत के छत्तीस करोड़ आदमियों का राज.

आप बालिग़ वोट का हक़ और प्रतिनिधि हुकूमत की बात कह कर हमें भुलावे में नहीं डाल सकते. कहां भारत की भूकी-नंगी जनता, और कहां हजारों रुपये माहवारी तनखा और भत्ते पाने वाले, शाही बंगलों में रहने वाले, बिजली के पंखों और खस की टट्टियों का आनन्द लेने वाले यह प्रतिनिधि !

आपने भारत की नई रचना के लिये अजीब ढंग अपनाया है ! पूंजीवाद और केन्द्री करन ज़ियादा से ज़ियादा बढ़ाया जा रहा है. ग्रामोद्योगों की हिफ़ाज़त कर उनके लिये कोई ऐसा दायरा महफ़ूज़ नहीं किया जा रहा है जिसमें उन्हें मिल उद्योगों से घातक टक्कर न लेनी पड़े.

आप अरबों रुपये का ग़ल्ला विदेशों से मंगाने और करोड़ों रुपया "ज़ियादा अनाज उपजाओ" आन्दोलन में ख़र्च करने को तैयार रहते हैं. लेकिन यह नहीं सोचते कि जिन बेकारों के पास ख़रीदने की ताक़त की कमी है वह देश में ग़ल्ला होते हुए भी भूखे मर सकते हैं. इसलिये ज़रूरी है कि जिन ग्रामोद्योगों से लाखों-करोड़ों आदमियों को रोज़गार मिले, उन्हें मशीन का पुर्ज़ा न बनने दिया जाये, उनका ख़ात्मा रोका जाये और उन्हें काफ़ी प्रोत्साहन दिया जावे.

अफ़सोस ! आपके ज़माने में और आपकी मेहरबानी से अमरीका चुपचाप इस देश पर हावी होता जा रहा है. आप यहां अमरीकी पूंजीवाद और अमरीकी माहिरों को खुली दावत देते जा रहे हैं. भारत की अगली पीढ़ी के लिये यह कैसी तबाहकुन विरासत है !

अमरीकी माहिर, जिन्हें अपने यहां की शहरी हालत का ही तजुरबा है, वह हमारी देहाती हालत का क्या उद्धार करेंगे ! वह मशीनों के आदी हैं और हमारा धन जन शक्ति है. हमारा उनका मेल नहीं बैठता. वह हमारी तरक़्क़ी में रोड़े ही अटकाने वाले हैं. अपनी शाही तनखा, भत्ते और ख़ास हक़ों या सुविधाओं के कारन वह हमारे ग़रीब देश के लिये सफ़ेद हाथी हैं, यह बात रही अलग.

हमें अपनी योजनायें अपने बल बूते पर अमल में लानी चाहियें. हमें दूसरों की आर्थिक गुलामी का शिकार नहीं बनना चाहिये. अमरीका की नक़ल और अंध भक्ति करके आप हमें अमरीका की आर्थिक गुलामी में फंसा दे रहे हैं.

हमें भारत के सुन्दर भविष्य में पूरा यक़ीन है. इस मुल्क ने अंगरेज़ों के साम्राजवाद से मुक्ति पाई है तो वह अमरीका की इस प्रभुता को भी मिटा कर रहेगा. इसके

ان کی تعداد ہزاروں تک ہو—سوراج نہیں ہوتا. سوراج کا مطلب ہے بھارت کے چھتیس کروڑ آدمیوں کا راج .

آپ بالغ ووٹ کا حق اور پرتی ندھی حکومت کی بات کہکر ہمیں بھلاوے میں نہیں ڈال سکتے. کہاں بھارت کی بھوکی ننگی جنتا' اور کہاں ہزاروں روپے ماہواری تنخواہ اور بھتے پانے والے' شاہی بنگلوں میں رہنے والے' بجلی کے پنکھوں اور خس کی ٹٹیوں کا آنند لینے والے یہ پرتی ندھی !

آپ نے بھارت کی نئی رچنا کے لئے عجیب ڈھنگ اپنایا ہے ! پونجی واد اور کیندری کرن زیادہ سے زیادہ بڑھایا جا رہا ہے . گرام ادیوگوں کی حفاظت کر ان کے لئے کوئی ایسا دائرہ محفوظ نہیں کیا جا رہا ہے جس میں انہیں مل ادیوگوں سے گھاتک ٹکر نہ لینی پڑے .

آپ اربوں روپیہ کا غلہ ودیشوں سے منگانے اور کروڑوں روپیہ "زیادہ اناج اپجاؤ" آندولن میں خرچ کرنے کو تیار رہتے ہیں . لیکن یہ نہیں سوچتے کہ جن بیکاروں کے پاس خریدنے کی طاقت کی کمی ہے وہ دیش میں غلہ ہوتے ہوئے بھی بھوکے مر سکتے ہیں . اس لئے ضروری ہے کہ جن گرام ادیوگوں سے لاکھوں کروڑوں آدمیوں کو روزگار ملے' انہیں مشین کا پرزہ نہ بننے دیا جائے' ان کا خاتمہ روکا جائے اور انہیں کافی پروتساہن دیا جائے .

افسوس! آپ کے زمانے میں اور آپ کی مہربانی سے امریکہ چپ چاپ اس دیش پر حاوی ہوتا جا رہا ہے . آپ یہاں امریکی پونجی واد اور امریکی ماہروں کو کھلی دعوت دیتے جا رہے ہیں. بھارت کی اگلی پیڑھی کے لئے یہ کیسی تباہکن وراثت ہے .

امریکی ماہر' جنہیں اپنے یہاں کی شہری حالت کا ہی تجربہ ہے' وہ ہماری دیہاتی حالت کا کیا ادھار کرینگے! وہ مشینوں کے عادی ہیں اور ہمارا دھن جن شکتی ہے . ہمارا انکا میل نہیں بیٹھتا . وہ ہماری ترقی میں روڑے ہی اٹکانے والے ہیں. اپنی شاہی تنخواہ' بھتے اور خاص حقوں یا سویدھاؤں کے کارن وہ ہمارے غریب دیش کے لئے سفید ہاتھی ہیں' یہ بات رہی الگ .

ہمیں اپنی یوجنائیں اپنے بل بوتے پر عمل میں لانی چاہئیں. ہمیں دوسروں کی آرتھک غلامی کا شکار نہیں بننا چاہئے . امریکہ کی نقل اور اندھ بھکتی کرکے آپ ہمیں امریکہ کی آرتھک غلامی میں پھنسا دے رہے ہیں .

ہمیں بھارت کے سندر بھوشیہ میں پورا یقین ہے . اس ملک نے انگریزوں کے سامراج واد سے مکتی پائی ہے تو وہ امریکہ کی اس پربھوتا کو بھی مٹا کر رہیگا . اس کے

राजकाजी बुजुर्गों और साथियों से !

(भगवानदास केला)

सन 1915 से भारतीय शासन और राजनीतिक-आर्थिक सवालों का विचार करते हुए अब 37 साल बाद अपनी जीवन-संध्या की घड़ी में मुझे कुछ प्रकाश मिला है. अब हुकूमत की बागडोर संभालने वालों से—श्री राजेन्द्र प्रसाद से श्री नेहरू से. श्री आजाद से, श्री राजगोपालाचार्य से, श्री पंत से और दूसरे राजकाजी बुजुर्गों से कुछ साफ़ साफ़ निवेदन करना जरूरी है.

मेरे बुजुर्गों ! आपने देश को विदेशी सरकार के जाल से आजाद करने में जिस त्याग, साहस और बर्दाश्त का परिचय दिया उसके लिये आप को हमेशा ही इज्जत और नामवरी मिलेगी. लेकिन पीछे जा कर आपने जाने-अनजाने कई भूल या ग़ल्तियां कीं अगर वक़्त रहते उनका सुधार न किया गया तो उनके लिये इतिहास आपको माफ़ नहीं करेगा.

आपने शासन के इस शाही, केन्द्रित और खर्चीले ढांचे को अपनाया जो अंगरेजों ने यहां जनता का शोशन करने और ऐश-आराम की जिन्दगी बिताने के लिये तैयार किया था, और जिसकी आपने वक़्त वक़्त पर काफ़ी जोशीली और कड़वी आलोचना की थी.

भारत के नये विधान के रूप रंग की बहुत कुछ जिम्मेदारी आप पर है. आपने बड़े ओहदेदारों के लिये इतनी ऊंची तनखाहें और भत्ते रख दिये कि उन गद्दियों पर बैठने वाले आदमी ग़रीब जनता के सेवक न हो कर मालिक ही बन गये. जितने हजार रुपये माहवारी इन्हें देने का बन्दोबस्त किया गया, उतने सौ यानी दसवां हिस्सा भी यहां के मामूली आदमी को मयस्सर नहीं है—उस आदमी को जो भारतीय रिपब्लिक या गनतन्त्र का बराबर का हिस्सेदार कहा जाता है और माना जाता है.

आप इंगलैन्ड अमरीका वग़ैरा की छाप के नाम के 'लोकतन्त्र' या डिमाक्रेसी और पार्लियामेन्ट्री निजाम के मोह जाल में फंसे रहे जिस में होने वाली घातक दल-बन्दी, अनीति से भरा चुनाव और शुरू से लेकर आखिर तक के तरह तरह के भ्रष्टाचारों से आप नावाक़िफ़ नहीं हैं.

क्या आप नहीं जानते कि मरकज़ी निजाम हकूमत में स्वदेशी राज भले ही हो सुराज नामुमकिन है ? स्वदेशी राष्ट्रपति स्वदेशी प्रधान मन्त्री, स्वदेशी राजपाल और मिनिस्टर और स्वदेशियों की बनी पालियामेन्ट या असेम्बलियों के मेम्बर—इन थोड़े से आदमियों से, चाहे

راج کاجی بزرگوں اور ساتھیوں سے

(بھگوان داس کیلا)

سن 1915 سے بھارتی شاسن اور راج نیتک آرتھک سوالوں کا وچار کرتے ہوئے اب 37 سال بعد اپنی جیون سندھیا کی گھڑی میں مجھے کچھ پرکاش ملا ہے . اب حکومت کی باگڈور سنبھالنے والوں سے—شری راجیندر پرساد سے' شری نہرو سے' شری آزاد سے' شری راج گوپال چاری سے' شری پنت سے اور دوسرے راج کاجی بزرگوں سے کچھ صاف صاف نویدن کرنا ضروری ہے .

میرے بزرگو ! آپ نے دیش کو ودیشی سرکار کے جال سے آزاد کرنے میں جس تیاگ' ساہس اور برداشت کا پریچے دیا اس کے لئے آپ کو ہمیشہ ہی عزت اور ناموری ملے گی . لیکن پیچھے جا کر آپ جانے انجانے کئی بھول یا غلطیاں کیں . اگر وقت رہتے ان کا سدھار نہ کیا گیا تو ان کے لئے اتہاس آپ کو معاف نہیں کرے گا .

آپ شاسن کے اس شاہی' کیندرت اور خرچیلے ڈھانچے کو اپنایا جو انگریزوں نے یہاں جنتا کا شوشن کرنے اور عیش آرام کی زندگی بتانے کے لئے تیار کیا تھا' اور جس کی آپ نے وقت وقت پر کافی جوشیلی کڑوی اور آلوچنا کی تھی .

بھارت کے نئے ودھان کے روپ رنگ کی بہت کچھ ذمے داری آپ پر ہے . آپ نے بڑے عہدے داروں کے لئے اتنی اونچی تنخواہیں اور بھتے رکھ دیئے کہ ان گدیوں پر بیٹھنے والے آدمی غریب جنتا کے سیوک نہ ہو کر مالک ہی بن گئے . جتنے ہزار روپیہ ماہواری انہیں دینے کا بندوبست کیا گیا' اتنے سو یعنی دسواں حصہ بھی یہاں کے معمولی آدمی کو میسر نہیں ہے—اس آدمی کو جو بھارتی ریپبلک یا گن تنتر کا برابر کا حصے دار کہا جاتا ہے اور مانا جاتا ہے.

آپ انگلینڈ امریکہ وغیرہ کی چھاپ کے نام کے ' لوک تنتر' یا ڈیما کریسی اور پارلیمنٹری نظام کے موہ جال میں پھنسے رہے جس میں ہونے والی گھاتک دل بندی' انیتی سے بھرا چناؤ اور شروع سے لے کر آخر تک کے طرح طرح کے بھرشٹاچاروں سے آپ ناواقف نہیں ہیں .

کیا آپ نہیں جانتے کہ مرکزی نظام حکومت میں سودیشی راج بھلے ہی ہو سوراج ناممکن ہے ؟ سودیشی راشٹرپتی' سودیشی پردھان منتری' سودیشی راج پال اور منسٹر اور سودیشیوں کی بنی پارلیامنٹ یا اسمبلیوں کے ممبر—ان تھوڑے سے آدمیوں سے' چاہے

यहाँ दौरा करते हैं. वह बड़े बड़े आदमियों से मिलते हैं, अपने दोस्तों से मिलते हैं. कुछ खास विचारों का प्रचार करते हैं. सरकारी नौकरों तक में यह भावना फैलाई जाती है कि हिन्दुस्तान मदद नहीं करता और ब्रिटिश या अमरीका वालों से ही मदद मिल सकती है.

सवाल उठता है कि इस मसले को कैसे हल किया जाय. यूनो की तरफ़ से ऐसी कोशिश की जाती है कि उनकी निगरानी में कश्मीर की जनता की राय ली जाय और जैसा फ़ैसला जनता की तरफ़ से हो उसको माना जाय. लेकिन इस सुझाव में कई दिक़्क़तें हैं. पहले तो यूनो के प्रतिनिधियों के बेलाग होने में शक है. वह साम्राजवादी हैं और अपने हित में फ़ैसला करने की कोशिश करेंगे या इस तरह का फ़ैसला करेंगे जो हमारे आपसी झगड़ों की जड़ों को और भी मज़बूत कर दे. दूसरी बात यह कि विदेशी दख़ल अन्दाज़ी और उनकी फ़ौजों का कश्मीर में आना—यह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, दोनों के लिये ही अपमानजनक बात है. तीसरे यह कि यह लड़ाई की हालत है. इस वक़्त जनता इतमिनान और समझ के साथ अपनी राय नहीं दे सकती. पहिले शान्ति की हालत पैदा होनी चाहिये. दोनों तरफ़ से फ़ौजें हटें, कश्मीर फिर से एक हो. उसका कारोबार चले, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों के साथ ब्योपार बढ़े, ख़ुशहाली आए और तब शान्ति की हालत क़ायम होने पर कश्मीर की जनता की राय ली जाय. कश्मीर का फ़ैसला उसी के ऊपर, उसी की जनता के ऊपर छोड़ा जाय. लेकिन इसके लिये हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच शान्ति क़ायम होना लाज़मी है. यह तभी मुमकिन है जब कि दोनों देश अपने असली हितों की तरफ़ ध्यान दें. यह तभी हो सकता है जब दोनों देश साम्राजशाही से अपना पीछा छुड़ा लें, आपस में मिल कर बैठें और इनसाफ़ के साथ शान्ति के लिए समझौता करें.

लेकिन जब तक यह शान्ति का समझौता नहीं होता, जब तक साम्राजवाद की दख़ल अन्दाज़ी ख़त्म नहीं होती, जब तक हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरकारें एक साथ मिलकर समझौते के लिये नहीं बैठतीं, तब तक क्या किया जाय? जनता का यह फ़र्ज़ है कि वह शान्ति आन्दोलन को बढ़ाए और दोनों सरकारों को इसके लिये मजबूर करे. अभी अभी कश्मीर का सवाल यूनो में उठाया गया है. ब्रिटिश नुमायन्दे ने जो अपनी शैतानी भरी स्पीच दी उससे हमारी ऊपर की बातों पर मुहर ही लगती है. ब्रिटिश-अमरीकी ठहराव क्या हिन्दुस्तान, क्या पाकिस्तान और क्या कश्मीर तीनों के लिये ख़तरनाक है. हिन्द सरकार का फ़र्ज़ है कि साम्राजशाही के चंगुल से निकल कर ईमान और इन्साफ़ की आवाज़ बुलन्द करे.

یہاں دورا کرتے ہیں. وہ بڑے بڑے آدمیوں سے ملتے ہیں' اور اپنے دوستوں سے ملتے ہیں. کچھ خاص وچاروں کا پرچار کرتے ہیں. سرکاری نوکروں تک میں یہ بھاؤنا پھیلائی جاتی ہے کہ ہندستان مدد نہیں کرتا اور برٹش یا امریکہ والوں سے ہی مدد مل سکتی ہے.

سوال اُٹھتا ہے کہ اِس مسئلے کو کیسے حل کیا جائے. یونو کی طرف سے ایسی کوشش کی جاتی ہے کہ اُن کی نگرانی میں کشمیر کی جنتا کی رائے لی جائے اور جیسا فیصلہ جنتا کی طرف سے ہو اس کو مانا جائے. لیکن اِس سجھاؤ میں کئی دقتیں ہیں. پہلے تو یونو کے پرتی ندھیوں کے بے لاگ ہونے میں شک ہے. وہ سامراجوادی ہیں اور اپنے ہت میں فیصلہ کرنے کی کوشش کریں گے' یا اس طرح کا فیصلہ کریں گے جو ہمارے آپسی جھگڑوں کی جڑوں کو اور بھی مضبوط کر دے. دوسری بات یہ کہ ودیشی دخل اندازی اور ان کی فوجوں کا کشمیر میں آنا—یہ ہندستان اور پاکستان' دونوں کے لئے ہی اپمانجنک بات ہے. تیسرے یہ کہ یہ لڑائی کی حالت ہے. اس وقت جنتا اطمینان اور سمجھ کے ساتھ اپنی رائے نہیں دے سکتی. پہلے شانتی کی حالت پیدا ہونی چاہئے. دونوں طرف سے فوجیں ہٹیں' کشمیر پھر سے ایک ہو' اس کا کاروبار چلے' ہندستان اور پاکستان دونوں کے ساتھ بیوپار بڑھے' خوشحالی آئے اور تب شانتی کی حالت قائم ہونے پر کشمیر کی جنتا کی رائے لی جائے. کشمیر کا فیصلہ اِسی کے اوپر' اُسی کی جنتا کے اوپر چھوڑا جائے. لیکن اس کے لئے ہندستان اور پاکستان کے بیچ شانتی قائم ہونا لازمی ہے. یہ تبھی ممکن ہے جب کہ دونوں دیش اپنے اصلی ہتوں کی طرف دھیان دیں. یہ تبھی ہوسکتا ہے جب دونوں دیش سامراج شاہی سے اپنا پیچھا چھڑا لیں' آپس میں ملکر بیٹھیں اور انصاف کے ساتھ شانتی کے لئے سمجھوتہ کریں.

لیکن جب تک یہ شانتی کا سمجھوتہ نہیں ہوتا' جب تک سامراجواد کی دخل اندازی ختم نہیں ہوتی' جب تک ہندستان اور پاکستان کی سرکاریں ایک ساتھ مل کر سمجھوتہ کے لئے نہیں بیٹھتیں' تب تک کیا کیا جائے؟ جنتا کا یہ فرض ہے کہ شانتی آندولن کو بڑھائے اور دونوں سرکاروں کو اس کے لئے مجبور کرے. ابھی ابھی کشمیر کا سوال یونو میں اُٹھایا گیا ہے. برٹش نمائندے نے جو اپنی شیطانی بھری اسپیچ دی اس سے ہماری اوپر کی باتوں پر مہر ہی لگتی ہے. برٹش امریکی ٹھہراؤ کیا ہندستان کیا پاکستان اور کیا کشمیر تینوں کے لئے خطرناک ہے. ہند سرکار کا فرض ہے کہ سامراج شاہی کے چنگل سے نکل کر ایمان اور انصاف کی آواز بلند کرے.

ब्योपार ठप है. हिन्दुस्तान को कपास, अनाज वग़ैरा के लिये अमरीका का मुंह ताकना पड़ता है और पाकिस्तान को कोयला, कपड़े वग़ैरा के लिये विदेशियों की ख़ुशामद करनी पड़ती है. और दोनों को ही करोड़ों का लड़ाई का सामान ब्रिटिश और अमरीकी साम्राजवादियों से ख़रीदना पड़ता है.

अगर कश्मीर की तरफ़ ध्यान दें तो हालत और भी ख़राब मिलती है. लड़ाई पर कश्मीर को भी ख़र्च करना पड़ता है. लड़ाई की वजह से उसका हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से ब्योपार ठप हो गया है. लड़ाई के कारन वहां यात्रियों का जाना बन्द हो गया है. इस तरह कश्मीर की हालत भी बिगड़ गई है. और जब तक हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और कश्मीर के बीच शान्ति क़ायम नहीं होती तब तक आर्थिक, राजकाजी, समाजी और कलचरी सूरत बिगड़ती ही जायगी. वह सुधर नहीं सकती.

इस वक़्त कश्मीर में यूनाइटेड नेशन्स के फ़ौजी आबज़रवरों की एक टुकड़ी मौजूद है. इस में ग्यारह विदेशी राजों के प्रतिनिधि हैं. इनका बड़ा स्टाफ़ है. लेकिन ख़ूबी यह है कि सोवियत देश, चीन, चेकोस्लोवाकिया, पोलेन्ड वग़ैरा देशों के प्रतिनिधि नहीं. इस टुकड़ी में सिर्फ़ साम्राजवादी देश और उनके साथी शामिल हैं. इनको कश्मीर के सब भेदों का पता है. इनकी पहुंच हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की फ़ौजों तक ही नहीं बल्कि इनको कश्मीर के बारे में सभी बातों का पता है. यह भी सुना जाता है कि यह अपना असर बढ़ाने की कोशिश करते हैं. एक बार तो यहां पर यूनो का राज क़ायम करने के लिये कश्मीर में दसख़त भी शुरू हो गए थे. इससे साफ़ ज़ाहिर है कि यूनो की कश्मीर के बारे में क्या नीति है.

कोमिनतांग के भगोड़े जनरल और ब्योपारी भी यहां पड़े हुए हैं. यहां इनका कोई काम नहीं. लेकिन फिर भी मौज की ज़िन्दगी बिताते हैं. इनको फ़ार्मोसा या अमरीका जाना चाहिये लेकिन नहीं जाते. उनको चीन की सरकार से मेल कर के चीन लौटना चाहिये, लेकिन ऐसा भी नहीं करते. कहा जाता है कि यह लोग कभी कभी कश्मीर और चीन की हदों का चक्कर लगाते हैं और कुछ ख़ास तरह की ख़बरों का पता लगाते हैं. यह भी सुना जाता है कि यह कुछ विदेशी साम्राजियों की मदद पर ज़िन्दा हैं.

यही नहीं कि कश्मीर साम्राजवादियों की चालबाज़ियों का अड्डा बनता जाता है, बल्कि विदेशी लोग यहां अपना असर पैदा करने में भी लग गए हैं. यहां पुराने विदेशी मिशन हैं, आस्ट्रेलिया का कालिज है, कुछ अस्पताल हैं, नीम्रो होटल हैं और कुछ कुछ योरपीयन जगह जगह पर पड़े हुए हैं. फिर हर साल और हर मौसम में ख़ास ख़ास विदेशी यहां आते हैं, अमरीकी और ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ

بیوپار ٹھپ ہے. ہندستان کو کپاس، اناج وغیرہ کے لئے امریکہ کا منہ تاکنا پڑتا ہے اور پاکستان کو کوئلہ، کپڑے وغیرہ کے لئے ودیشیوں کی خوشامد کرنی پڑتی ہے. اور دونوں کو ہی کروڑوں کا لڑائی کا سامان برٹش اور امریکی سامراجوادیوں سے خریدنا پڑتا ہے .

اگر کشمیر کی طرف دھیان دیں تو حالت اور بھی خراب ملتی ہے . لڑائی پر کشمیر کو بھی خرچ کرنا پڑتا ہے. لڑائی کی وجہ سے اس کا ہندستان اور پاکستان سے بیوپار ٹھپ ہوگیا ہے . لڑائی کے کارن وہاں یاتریوں کا جانا بند ہوگیا ہے . اس طرح کشمیر کی حالت بھی بگڑ گئی ہے . اور جب تک ہندستان، پاکستان اور کشمیر کے بیچ شانتی قائم نہیں ہوتی تب تک آرتھک، راج کاجی، سماجی اور کلچری صورت بگڑتی ہی جائے گی. وہ سدھر نہیں سکتی.

اس وقت کشمیر میں یونائیٹڈ نیشنس کے فوجی آبزروروں کی ایک ٹکڑی موجود ہے . اس میں گیارہ ودیشی راجوں کے پرتی ندھی ہیں . ان کا بڑا اسٹاف ہے . لیکن خوبی یہ ہے کی سوویت دیش، چین، چیکوسلوواکیا، پولینڈ وغیرہ دیشوں کے پرتی ندھی نہیں . اس ٹکڑی میں صرف سامراجوادی دیش اور ان کے ساتھی شامل ہیں . ان کو کشمیر کے سب بھیدوں کا پتہ ہے. ان کی پہنچ ہندستان اور پاکستان کی فوجوں تک ہی نہیں بلکہ ان کو کشمیر کے بارے میں سبھی باتوں کا پتہ ہے . یہ بھی سنا جاتا ہے کہ یہ اپنا اثر بڑھانے کی کوشش کرتے ہیں . ایک بار تو یہاں پر یونو کا راج قائم کرنے کے لئے کشمیر میں دستخط بھی شروع ہوگئے تھے . اس سے صاف ظاہر ہے کہ یونو کی کشمیر کے بارے میں کیا نیت ہے .

کومنتانگ کے بھگوڑے جنرل اور بیوپاری بھی یہاں پڑے ہوئے ہیں . یہاں ان کا کوئی کام نہیں . لیکن پھر بھی موج کی زندگی بتاتے ہیں . ان کو فارموسا یا امریکہ جانا چاہئے لیکن نہیں جاتے . ان کو چین کی سرکار سے میل کرکے چین لوٹنا چاہئے، لیکن ایسا بھی نہیں کرتے. کہا جاتا ہے کہ یہ لوگ کبھی کبھی کشمیر اور چین کی حدوں کا چکر لگاتے ہیں اور کچھ خاص طرح کی خبروں کا پتہ لگاتے ہیں . یہ بھی سنا جاتا ہے کہ یہ کچھ ودیشی سامراجیوں کی مدد پر زندہ ہیں .

یہی نہیں کہ کشمیر سامراجوادیوں کی چالبازیوں کا اڈا بنتا جاتا ہے، بلکہ ودیشی لوگ یہاں اپنا اثر پیدا کرنے میں بھی لگ گئے ہیں . یہاں پرانے ودیشی مشن ہیں، آسٹریلیا کا کالج ہے، کچھ اسپتال ہیں، نیکرو ہوٹل ہیں اور کچھ یورپین جگہ جگہ پر پڑے ہوئے ہیں . پھر ہر سال اور ہر موسم میں خاص خاص ودیشی یہاں آتے ہیں، امریکی اور برٹش کوٹ نیتگیہ

हां तो ब्रिटिश युद्ध नीतिज्ञों की मदद से पाकिस्तानी फ़ौजों ने पहले ही हमले में हद के बड़े हिस्सों पर क़ाबू पा लिया और आज कश्मीर का 60 फ़ी सदी रक़बा पाकिस्तान के हाथ में है. ध्यान रहे कि कश्मीर की हदें पांच देशों से मिलती हैं. हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, सोवियत एशिया और चीन (सिंग क्यांग और तिब्बत). पाकिस्तानी फ़ौजों ने उस हिस्से को ले लिया जो पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान सोवियत और चीन के सिंग क्यांग हिस्से से मिलता है. इस हिस्से पर पाकिस्तान के क़ाबू पाने के मतलब हैं साम्राजवादियों का क़ाबू होना. अगर यह हिस्सा, या और बाक़ी कश्मीर का हिस्सा पाकिस्तान या साम्राजवादियों के हाथ में रहता है तो वह लड़ाई का अड्डा बनेगा और उससे बीच एशिया और संसार की शान्ति को ख़तरा है.

यह साफ़ है कि बीच एशिया में कश्मीर की वही जगह है जो कि योरप में बलकान की. अगर साम्राजवादी इस देश पर अपना क़ाबू कर लेते हैं तो वह हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान को परेशान कर सकेंगे, उनके ऊपर क़ाबू पाने की कोशिश करेंगे और साथ ही रूस और चीन को भी संकट में डाल देंगे, उनकी आज़ादी और तरक़्क़ी के लिये ख़तरनाक साबित होंगे.

कौन नहीं जानता कि इस सवाल को लेकर किस तरह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान पर दबाव डाला जाता है, किस तरह दोनों ही देशों से मोल भाव किया जाता है. एक बात और भी, और वह यह कि जब शुरू की हार के बाद हिन्दुस्तान की फ़ौजों ने पाकिस्तान की फ़ौजों को खदेड़ना शुरू किया तो कहा जाता है कि ब्रिटिश दबाव डाला गया. और कहा जाता है कि हालांकि हिन्दुस्तानी फ़ौजें हमला करने वालों को मार भगाना चाहती थीं लेकिन विदेशी दबाव की वजह से नेहरू सरकार को लड़ाई बन्द करनी पड़ी. कारन यह बताया जाता है कि ब्रिटिश सरकार पाकिस्तानी फ़ौजों की हार के लिये तैयार नहीं थी और डर यह था कि अगर हिन्दुस्तानी फ़ौजें जीत गईं तो अफ़ग़ानिस्तान और फ़ारिस से ब्रिटिश रोब-दाब और असर ख़त्म हो जायगा. यह देश ब्रिटिश का साथ छोड़ हिन्दुस्तान के साथी हो जायंगे.

आज कश्मीर के सवाल के हल न होने में ही साम्राजवादी शक्तियों का मज़ा है. उन को शान्ति से क्या दिलचस्पी ? रात दिन एक दूसरे को बढ़ावा दिया जाता है और झगड़े के सवालों को उभार कर ऊपर लाया जाता है. साम्राजवादियों को बन्दर के जैसी पोज़ीशन मिल गई है. वह दो बिल्लियों को लड़ा कर अपना हित साधना चाहते हैं. नतीजा यह है कि इन दोनों देशों की हालत बिगड़ती जाती है, लड़ाई के बिल बढ़ते जाते हैं. जो रुपया पैदावार बढ़ाने पर ख़र्च होना चाहिये था वह गोला बारूद पर ख़र्च होता है. यही नहीं, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच का

ہاں تو برٹش یدھ نیتگیوں کی مدد سے پاکستانی فوجوں نے پہلے ہی حملے میں حد کے بڑے حصوں پر قابو پا لیا اور آج کشمیر کا 60 فیصدی رقبہ پاکستان کے ہاتھ میں ہے ۔ دھیان رہے کہ کشمیر کی حدیں پانچ دیشوں سے ملتی ہیں. ہندستان' پاکستان' افغانستان' سوویت ایشیا اور چین (سنگ کیانگ اور تبت) پاکستانی فوجوں نے اس حصے کو لے لیا جو پاکستان' افغانستان' سوویت اور چین کے سنگ کیانگ حصے سے ملتا ہے ۔ اس حصے پر پاکستان کے قابو پانے کے مطلب ہیں سامراجوادیوں کا قابو ہونا. اگر یہ حصہ یا اور باقی کشمیر کا حصہ پاکستان یا سامراج وادیوں کے ہاتھ میں رہتا ہے تو وہ لڑائی کا اڈا بنیگا اور اس سے بیچ ایشیا اور سنسار کی شانتی کو خطرہ ہے ۔

یہ صاف ہے کہ بیچ ایشیا میں کشمیر کی وہی جگہ ہے جو کہ یورپ میں بلکان کی. اگر سامراجوادی اس دیش پر اپنا قابو کرلیتے ہیں تو وہ ہندستان' پاکستان اور افغانستان کو پریشان کرسکینگے' ان کے اوپر قابو پانے کی کوشش کرینگے اور ساتھ ہی روس اور چین کو بھی سنکٹ میں ڈالدینگے' ان کی آزادی اور ترقی کے لئے خطرناک ثابت ہونگے ۔

کون نہیں جانتا کہ اس سوال کو لیکر کس طرح ہندستان اور پاکستان پر دباؤ ڈالا جاتا ہے' کس طرح دونوں ہی دیشوں سے مول بھاؤ کیا جاتا ہے ؟ ایک بات اور بھی' اور وہ یہ کہ جب شروع کی ہار کے بعد ہندستان کی فوجوں نے پاکستان کی فوجوں کو کھدیڑنا شروع کیا تو کہا جاتا ہے کہ برٹش دباؤ ڈالا گیا. اور کہا جاتا ہے کہ حالانکہ ہندستانی فوجیں حملہ کرنے والوں کو مار بھگانا چاہتی تھیں لیکن ودیشی دباؤ کی وجہ سے نہرو سرکار کو لڑائی بند کرنی پڑی. کارن یہ بتایا جاتا ہے کہ برٹش سرکار پاکستانی فوجوں کی ہار کے لئے تیار نہیں تھی اور ڈر یہ تھا کہ اگر ہندستانی فوجیں جیت گئیں تو افغانستان اور فارس سے برٹش رعب داب اور اثر ختم ہو جائیگا. یہ دیش برٹش کا ساتھ چھوڑ ہندستان کے ساتھی ہو جائینگے ۔

آج کشمیر کے سوال کے حل نہ ہونے میں ہی سامراج وادی شکتیوں کا مزہ ہے. ان کو شانتی سے کیا دلچسپی؟ رات دن ایک دوسرے کو بڑھاوا دیا جاتا ہے اور جھگڑے کے سوالوں کو ابھار کر اوپر لایا جاتا ہے. سامراجوادیوں کو بندر کے جیسی پوزیشن مل گئی ہے. وہ دو بلیوں کو لڑا کر اپنا ہت سادھنا چاہتے ہیں ۔ نتیجہ یہ ہے کہ ان دونوں دیشوں کی حالت بگڑتی جاتی ہے' لڑائی کے بل بڑھتے جاتے ہیں ۔ جو روپیہ پیداوار بڑھانے پر خرچ ہونا چاہئے تھا وہ گولا بارود پر خرچ ہوتا ہے ۔ یہی نہیں' ہندستان اور پاکستان کے بیچ کا

कश्मीर का सवाल

(आशा राम)

पिछले लेख में हमने बताया था कि कश्मीर के नेता भारत के साथ रहना चाहते हैं. इस लेख में हम कश्मीर के सवाल के अन्तर क़ौमी पहलू पर ख़ास कर विचार करेंगे.

सवाल उठते हैं कि आख़िर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच कश्मीर के सवाल पर ही क्यों झगड़ा हुआ, हैदराबाद या जूनागढ़ के सवाल पर झगड़ा क्यों नहीं हुआ. पहली तो वजह यह कि इन दोनों रजवाड़ों में हिन्दू और राष्ट्रवादी बहुमत था. दूसरी वजह यह कि यह रजवाड़े हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की सरहद पर न थे. लेकिन सबसे ख़ास वजह यह कि इन जगहों में ब्रिटिश या अमरीकी साम्राजवाद को इतनी दिलचस्पी न थी.

अगर कश्मीर के झगड़े के इतिहास की तरफ़ देखा जाए तो साम्राजवादियों का हाथ साफ़ दिखाई देगा. पाकिस्तान सरकार हमला करने वालों की हिमायत करती थी. लेकिन शुरू में कहती थी कि इस झगड़े में उसका कोई हाथ नहीं. आख़िर जब बहुत से पाकिस्तानी फ़ौज के अफ़सर भी पकड़ गए तो सरकार को मजबूर हो कर माननी पड़ा कि लड़ाई में पाकिस्तान की फ़ौजों का हाथ है. इन फ़ौजों का कमान्डर कौन था, किसने लड़ाई की योजना बनाई और किसने फ़ौजों को हमला करने का हुक्म दिया ? पाकिस्तानी फ़ौजों की रीति नीति बनाने वाले ब्रिटिश अफ़सर थे, कमान्डर ब्रिटिश था. मज़े की बात यह है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की फ़ौजों में आज भी ब्रिटिश अफ़सरों का बोल बाला है और दोनों ही ब्रिटिश सामान से अपनी फ़ौजों को सजाते और तैयार करते हैं. यहां तक कि हिन्दुस्तानी फ़ौजों के पुराने कमान्डर फ़ील्ड मार्शल आकिन लेक दरियों और क़ालीनों के व्योपार के बहाने आज भी पाकिस्तान में पड़े हैं.

दूसरा सवाल उठता है कि ब्रिटिश साम्राजवादियों को पाकिस्तान से इतना मोह क्यों है कि वह उसकी फ़ौजों को मदद दे कर कश्मीर पर हमला कराते हैं ? सच यह कि साम्राजवादियों को न भारत से मोह है और न पाकिस्तान से. उनको मोह है अपने स्वार्थों से और वह इस झगड़े को शुरू करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं. यह सच है कि जिस तरह उन्होंने पाकिस्तान को हमले के लिये उभारा उस तरह वह हिन्दुस्तान को नहीं फंसा सकते थे. वह समझते हैं कि वह पाकिस्तान पर ज़ियादा विश्वास कर सकते हैं, वह उनकी चालों का शिकार जल्द हो सकता है.

کشمیر کا سوال

(آشارام)

پچھلے لیکھ میں ہم نے بتایاتھا کہ کشمیر کے نیتا بھارت کےساتھ رہنا چاھتے ھیں. اس لیکھ میں ہم کشمیر کے سوال کے انترقومی پہلو پر خاص کر وچار کرینگے .

سوال اُٹھتے ھیں کہ آخر ھندستان اور پاکستان کے بیچ کشمیر کے سوال پر ھی کیوں جھگڑا ہوا' حیدرآباد یا جوناگڑہ کے سوال پر جھگڑا کیوں نہیں ہوا. پہلی تو وجہ یہ کہ اِن دونوں رجواڑوں میں ھندو اور راشٹروادی بہومت تھا . دوسری وجہ یہ کہ یہ رجواڑے ھندستان پاکستان کی سرحد پر نہ تھے . لیکن سب سے خاص وجہ یہ کہ اِن جگہوں میں برٹش یا امریکی-سامراجواد کو اتنی دلچسپی نہ تھی .

اگر کشمیر کے جھگڑے کے اتہاس کی طرف دیکھا جائے تو سامراج وادیوں کا ہاتھ صاف دکھائی دیگا . پاکستان سرکار حملہ کرنے والوں کی حمایت کرتی تھی. لیکن شروع میں کہتی تھی کہ اِس جھگڑے میں اُسکا کوئی ہاتھ نہیں. آخر جب بہت سے پاکستانی فوج کے افسر بھی پکڑ گئے تو سرکار کو مجبور ہوکر ماننا پڑا کہ لڑائی میں پاکستان کی فوجوں کا ہاتھ ہے . اِن فوجوں کا کمانڈر کون تھا' کسنے لڑائی کی یوجنا بنائی اور کسنے فوجوں کو حملہ کرنے کا حکم دیا؟ پاکستانی فوجوں کی ریت نیت بنانے والے برٹش افسر تھے' کمانڈر برٹش تھا. مزے کی بات یہ ہے کہ ھندستان اور پاکستان کی فوجوں میں آج بھی برٹش افسروں کا بول بالا ہے اور دونوں ہی برٹش سامان سے اپنی فوجوں کو سجاتے اور تیار کرتے ھیں . یہاں تک کہ ھندستانی فوجوں کے پرانے کمانڈر فیلڈ مارشل آکن لیک دریوں اور قالینوں کے بیوپار کے بہانے آج بھی پاکستان میں پڑے ھیں .

دوسرا سوال اُٹھتا ہے کہ برٹش سامراجوادیوں کو پاکستان سے اِتنا موہ کیوں ہے کہ وہ اُسکی فوجوں کو مدد دیکر کشمیر پر حملہ کراتے ھیں ؟ سچ یہ ہے کہ سامراجوادیوں کو نہ بھارت سے موہ ہے اور نہ پاکستان سے . ان کو موہ ہے اپنے سوارتھوں سے اور وہ اس جھگڑے کو شروع کرکے اپنا اُلو سیدھا کرنا چاھتے ھیں . یہ سچ ہے کہ جس طرح انہوں نے پاکستان کو حملے کے لئے ابھارا اُس طرح وہ ھندستان کو نہیں پھنسا سکتے تھے. وہ سمجھتے ھیں کہ وہ پاکستان پر زیادہ وشواس کرسکتے ھیں' وہ ان کی چالوں کا شکار جلد ہوسکتا ہے .

आवाज़ किसे देता ! दरवाज़े पर एक आदमी तो था !

तब उसने तुम्हें अन्दर जाते रोका नहीं ?

मैंने आंगन में से ही कन्हैया को आवाज़ दी. और क्या मैं उसकी बहू को आवाज़ देता !

कैसे आवाज़ दी ?

कैसे आवाज़ दी ! यह भी कोई पूछने की बात है ? आवाज़ दी, 'कन्हैया है कन्हैया है' और कैसे दी !

तब फिर क्या हुआ ?

क्या क्या हुआ ! दोनों बच्चे नीचे उतर आए. बड़े प्यार से मुझसे लिपट गए. मुझे ऊपर ले गए. तुम्हारी बहू ने मुझे पलंग बिछा दिया. कन्हैया नहा रहा था. थोड़ी देर में वह भी आ कर मेरे पास बैठ गया और ऐसे लिपट गया जैसे तब लिपटा करता था जब वह छोटा था. लोगों ने शहर को बदनाम कर रखा है. कन्हैया के घर में तो गांव का मज़ा है. तुम्हारी बहू के हाथ के पिसे आटे की रोटी खा कर वह तबियत खुश हुई कि क्या कहूं ! मट्ठा, मक्खन, दूध, दही, सब ताज़ा था. तुम्हारे बहू बेटे तो मुझे घर आने ही नहीं देते थे. मैंने कहा, भाई, मैं डिप्टी नहीं हूं, मुझे अपना खेत भी देखना है. तब कहीं उनसे पिन्डा छुड़ा कर आया हूं.

रोटी कौन बनाता है ?

कह तो रहा हूं, तुम्हारी बहू.

तो नौकर कोई नहीं है ?

है क्यों नहीं. कहा था कि नहीं कि बाहर बैठा मिला.

× × ×

कन्हैया की बहू, यह तुम ने क्या हाल कर रखा है !

क्यों पिता जी, क्या !

यह इतने मोटे मोटे कपड़े पहन रखे हैं !

पिता जी, इन कपड़ों के बिना मुहब्बत हो नहीं सकती. मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि बारीक कपड़े और निठल्ला-पन यह दोनों मुहब्बत खा जाते हैं.

जैसे ही कन्हैया लाल ने आ कर पिता जी के पांव छुए वैसे ही पिता तिवारी जी की आंखों से आंसू बह चले, क्योंकि वह बहू जैसे ही मोटे गाढ़े के कपड़े पहने हुए था. उन्होंने उसे गले लगा लिया और ऐसे ही चूमा मानो वह बरस का तीन बालक हो.

रामलाल, यह सब है इस साधू डिप्टी की कहानी ! देवी सरस्वती ने एक दम घर की काया पलट कर दी और अब तिवारी जी जैसा खुश बाप शायद ही ज़िले भर में कोई हो.

—भगवानदीन

آواز کسے دیتا ! دروازے پر ایک آدمی تو تھا ! تب اس نے تمھیں اندر جاتے روکا نہیں ؟

میں نے آنگن میں سے ہی کنھیا کو آواز دی . اور کیا میں اسکی بہو کو آواز دیتا ؟

کیسے آواز دی ؟

کیسے آواز دی ! یہ بھی کوئی پوچھنے کی بات ہے ؟ آواز دی 'کنھیا ہے کنھیا ہے' اور کیسے دی !

تب پھر کیا ہوا ؟

کیا کیا ہوا ! دونوں بچے نیچے اتر آئے' بڑے پیار سے مجھ سے لپٹ گئے' مجھے اوپر لے گئے' تمہاری بہو نے مجھے پلنگ بچھا دیا . کنھیا نہا رہا تھا . تھوڑی دیر میں وہ بھی آ کر میرے پاس بیٹھ گیا اور ایسے لپٹ گیا جیسے تب لپٹا کرتا تھا جب وہ چھوٹا تھا . لوگوں نے شہر کو بدنام کر رکھا ہے . کنھیا کے گھر میں تو گاؤں کا مزا ہے . تمہاری بہو کے ہاتھ کے پسے آٹے کی روٹی کھا کر وہ طبیعت خوش ہوئی کہ کیا کہوں ! مٹھا' مکھن' دودھ' دہی' سب تازہ تھا . تمہارے بہو بیٹے تو مجھے گھر آنے ہی نہیں دیتے تھے . میں نے کہا' بھائی میں ڈپٹی نہیں ہوں' مجھے اپنا کھیت بھی دیکھنا ہے . تب کہیں ان سے پنڈا چھڑا کر آیا ہوں .

روٹی کون بناتا ہے ؟

کہ تو رہا ہوں' تمہاری بہو .

تو نوکر کوئی نہیں ہے ؟

ہے کیوں نہیں . کہا تھا کہ نہیں کہ باہر بیٹھا ملا .

× × ×

کنھیا کی بہو' یہ تم نے کیا حال کر رکھا ہے؟

کیوں پتا جی' کیا !

اتنے موٹے موٹے کپڑے پہن رکھے ہیں !

پتا جی' ان کپڑوں کے بنا محبت ہو نہیں سکتی . مجھے تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ باریک کپڑے اور نکھٹو پن یہ دونوں محبت کھا جاتے ہیں .

جیسے ہی کنھیا لال نے آ کر پتا جی کے پاؤں چھوئے ویسے ہی پتا تواری جی کی آنکھوں سے آنسو بہ چلے' کیونکہ وہ بہو جیسے ہی موٹے گاڑھے کے کپڑے پہنے ہوئے تھا . انہوں نے اسے گلے لگا لیا اور ایسے ہی چوما مانو وہ تین برس کا بالک ہو .

رام لال' یہ سب ہے اس سادھو ڈپٹی کی کہانی ! دیوی سرسوتی نے ایک دم گھر کی کایا پلٹ کر دی اور اب تواری جی جیسا خوش باپ شاید ہی ضلع بھر میں کوئی ہو .

—بھگوان دین .

तिवारी जी बोले, नहीं नहीं बेटा, मैं अब शहर नहीं जाऊंगा. मैं गांव जा रहा हूँ. मुझे जरूरी काम है.

दो एक बार कन्हैयालाल जी ने फिर उन्हें रुकने के लिये कहा. पर वह राजी न हुए. इतने में सरस्वती आ पहुंची. उनके पांव छुए, डबडबाई आंखों से बोली, पिताजी, माफ़ कीजिये !

तिवारी जी, ढीले पड़ गये, बड़े प्यार से बोले, बेटी, मैं इस कन्हैया को डिप्टी कन्हैया लाल साहब कह सकता हूँ. मेरे लिये कोई मुश्किल नहीं. शान के ख़िलाफ़ नहीं, पर मुझे ऐसा मालूम होता है कि इस पाठ को सीखने के लिये मुझे अपना दिल पथराना पड़ेगा. प्यार में तो 'कन्हैया' ही निकलेगा.

पिता जी, आप क्यों अपना दिल पथराएं ? इस बार हमें माफ़ कर दें. अब आप घर लौट चलें.

तिवारी जी राजी हो गये. उन्होंने टिकट फाड़ डाला. घर लौट चले. दो तीन दिन रहे और खुश रहे. बहू ने किसी प्रकार की तकलीफ़ न होने दी. उनके सब काम वह खुद करती यहां तक कि उनकी धोती तक खुद धोती. किसी नौकर की उन तक किसी तरह कभी भी पहुंच न होने देती.

चौथे दिन तिवारी जी चल दिये, बहू बेटा दोनों स्टेशन पहुंचाने आए. दोनों को खुश हो कर आशीर्वाद दिया.

(2)

तिवारी जी, आप इटावा नहीं चलते. इटावा गए आपको बहुत दिन हो गए. बहू बेटे से मिलने को जी नहीं होता ? चलिये न हमारे साथ, हम इटावे जा रहे हैं.

भई आज तो साथ नहीं चलेंगे. तुम ही जाओ, कन्हैया से तो मिलोगे न ?

जरूर मिलूंगा, वह तो मेरा गोद खिलाया है.

अच्छा अच्छा जाओ. वहां से आ कर उसका हाल सुनाना. तब एक दिन मैं भी इटावा जाऊंगा.

× × ×

कहो भिकारी लाल जी, इटावा हो आए ?

हां जी हो आए.

कन्हैया से भी मिले ?

अजी साहब उससे मिल कर तो इतनी तबियत खुश हुई कि इतनी कभी किसी साधू से मिल कर नहीं होती और तिवारी जी, आपकी बहू तो सचमुच देवी है. आपके दोनों पोते हैं तो छोटे छोटे, पर उन्होंने तो मुझे ऐसे अपनाया मानो मैं ही उनका बाबा होऊं. कहां हम मामूली आदमी और कहां डिप्टी साहब के लड़के ! बिलकुल ऐसे लिपट गए जैसे अपने बालक लिपट जाते हैं !

भिकारी लाल जी, यह सब तो पीछे सुनूंगा. पहले यह बताओ जब तुम घर गए तो तुम ने आवाज़ किस को दी. वह सब लोग तो ऊपर रहते हैं !

تواری جی بولے، نہیں نہیں بیٹا، میں اب شہر نہیں جاؤں گا ۔ میں گاؤں جا رہا ہوں ۔ مجھے ضروری کام ہے ۔

دو ایک بار کنہیا لال جی نے پھر انہیں رکنے کے لئے کہا ۔ پر وہ راضی نہ ہوئے ۔ اتنے میں سرسوتی آپہنچی ۔ ان کے پاؤں چھوئے، ڈبڈبائی آنکھوں سے بولی، پتا جی، معاف کیجئے !

تواری جی ڈھیلے پڑ گئے، بڑے پیار سے بولے، بیٹی، میں اس کنہیا کو ڈپٹی کنہیا لال صاحب کہہ سکتا ہوں ۔ میرے لئے کوئی مشکل نہیں ۔ شان کے خلاف نہیں، پر مجھے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اس پاٹھ کو سیکھنے کے لئے مجھے اپنا دل پتھرانا پڑے گا ۔ پیار میں تو 'کنہیا' ہی نکلے گا ۔

پتا جی، آپ کیوں اپنا دل پتھرائیں؟ اس بار ہمیں معاف کر دیں ۔ اب آپ گھر لوٹ چلیں ۔

تواری جی راضی ہوگئے ۔ انہوں نے ٹکٹ پھاڑ ڈالا ۔ گھر لوٹ چلے۔ دو تین دن رہے اور خوش رہے ۔ بہو نے کسی پرکار کی تکلیف نہ ہونے دی ۔ اُن کے سب کام وہ خود کرتی یہاں تک کہ اُن کی دھوتی تک خود دھوتی ۔ کسی نوکر کی اُن تک کسی طرح کبھی بھی پہنچ نہ ہونے دیتی ۔

چوتھے دن تواری جی چل دیئے، بہو بیٹا دونوں اسٹیشن پہنچانے آئے۔ دونوں کو خوش ہو کر آشیرواد دیا ۔

(2)

تواری جی، آپ اِٹاوہ نہیں چلتے ۔ اِٹاوہ گئے آپ کو بہت دن ہوگئے ۔ بہو بیٹے سے ملنے کو جی نہیں ہوتا ؟ چلئے نہ ہمارے ساتھ، ہم اِٹاوہ جا رہے ہیں ۔

بھئی آج تو ساتھ نہیں چلیں گے ۔ تم ہی جاؤ، کنہیا سے تو ملو گے نہ ؟

ضرور ملوں گا، وہ تو میرا گود کھلایا ہے ۔

اچھا اچھا جاؤ ۔ وہاں سے آکر اُس کا حال سنانا ۔ تب ایک دن میں بھی اِٹاوہ جاؤں گا ۔

× × ×

کہو بھکاری لال جی، اِٹاوہ ہو آئے ؟

ہاں جی ہو آئے ۔

کنہیا سے بھی ملے ؟

اجی صاحب اُس سے ملکر تو اتنی طبیعت خوش ہوئی کہ اتنی کبھی کسی سادھو سے ملکر نہیں ہوتی اور تواری جی، آپ کی بہو تو سچ مچ دیوی ہے ۔ آپ کے دونوں پوتے ہیں تو چھوٹے چھوٹے، پر انہوں نے تو مجھے ایسے اپنایا مانو میں ہی اُن کا بابا ہوؤں ۔ کہاں ہم معمولی آدمی اور کہاں ڈپٹی صاحب کے لڑکے ! بالکل ایسے لپٹ گئے جیسے اپنے بالک لپٹ جاتے ہیں !

بھکاری لال جی، یہ سب تو پیچھے سنوں گا ۔ پہلے یہ بتاؤ جب تم گھر گئے تو تم نے آواز کس کو دی ۔ وہ سب لوگ تو اوپر رہتے ہیں !

यही तो अचरज की बात है. पहले से अब उनका अच्छा हाल है. पहले, पटवारी लोगों को सता कर, धोका फरेब कर के, लोगों से पैसे ऐंठता था. अब लोग खुशी खुशी उसका इतना ख़याल रखते हैं मानो वह घर का आदमी हो और उनकी खेती में हिस्सेदार हो. बस इस डिप्टी ने जादू कर दिया, जादू !

आखिर यह डिप्टी इतना भला बन कैसे गया ?

यह न पूछो, यार, सब इसकी औरत की करामात है !

वह किस तरह ?

क़िस्सा लम्बा है. ध्यान से सुनने को तैयार हो तो बताऊं ?

अरे मैं सब काम छोड़ कर सुनूंगा, सुना, भाई, सुना.

हुआ यह, एक दिन इस डिप्टी कन्हैयालाल का बाप रामेश्वर इसके घर शहर में आया. रामेश्वर को तो तुम क्या जानते होगे ?

अरे वह रामेश्वर तिवारी !

हां, हां वही.

अरे वह तो बनारस का पढ़ा हुआ है, वेद पाठी है और फ़ारसी उरदू खूब जानता है. हां, अंगरेज़ी उसको नहीं आती. है बड़ा स्वाभिमानी.

तब तो तुम उसे खूब जानते हो, हां तो बस वह तिवारी जी जब अपने बेटे के शहर के मकान में दाखिल हुए और आंगन में खड़े हो कर जैसे ही 'कन्हैया कन्हैया' आवाज़ लगाई कि उनके चपरासी ने उन्हें निकाल बाहर कर दिया. यह आवाज़ कहीं डिप्टी कन्हैयालाल की पत्नी के कानों में पड़ गई. उसने ससुर की आवाज़ पहचान ली और चपरासी की धमकी सुन ली. वह एक दम घबरा गई, अपने पति से बोली, दौड़िये, दौड़िये गांव से पिता जी आए हैं.

डिप्टी साहब को कुछ देर लगी, नीचे उतरें कि तिवारी जी चल दिये. इधर उधर नज़र फेंकी, कहीं पता नहीं. घबराए हुए ऊपर गए और अपनी पत्नी सरस्वती से पूछा, तुम्हें कहीं धोका तो नहीं हुआ ?

कैसा धोका ! मैं बरसों उनके पास रही हूं. क्या उनकी आवाज़ नहीं पहचानती ! वह ज़रूर नाराज़ हो कर चले गए. जल्दी दौड़िये, हो न हो, स्टेशन गये हों.

तुम भी साथ चलो.

अच्छा चलती हूं.

× × ×

कन्हैयालाल जी स्टेशन पर पहुंचे कि गाड़ी आ कर खड़ी हुई. भीड़ ज़ियादा न थी. जल्दी ही तिवारी जी ब्रेक वाले डब्बे के पास दिखाई पड़ गए. दौड़े दौड़े पहुंचे. उन्हें नमस्कार किया और उनसे घर चलने की बात कही.

یہی تو اچرج کی بات ھے. پہلے سے اب انکا اچھا حال ھے. پہلے' پٹواری لوگوں کو ستاکر' دھوکا فریب کرکے' لوگوں سے پیسے اینٹھتا تھا. اب لوگ خوشی خوشی اُس کا خیال رکھتے ھیں مانو وہ گھر کا آدمی ھو اور اُن کی کھیتی میں حصےدار ھو. بس اِس ڈپٹی نے جادو کردیا' جادو!

آخر یہ ڈپٹی اِتنا بھلا بن کیسے گیا ؟

یہ نہ پوچھو' یار' سب اِس کی عورت کی کرامات ھے!

وہ کس طرح ؟

قصہ لمبا ھے. دھیان سے سننے کو تیار ھو تو بتاؤں ؟

ارے میں سب کام چھوڑ کر سنونگا.' سنا' بھائی' سنا.

ھوا یہ' ایک دن اس ڈپٹی کنھیا لال کا باپ رامیشور اسکے گھر شہر میں آیا. رامیشور کو تو تم کیا جانتے ھوگے ؟

ارے وہ رامیشور تواری !

ھاں' ھاں وھی.

ارے وہ تو بنارس کا پڑھا ھوا ھے' وید پاٹھی ھے اور فارسی اردو خوب جانتا ھے. ھاں' انگریزی اُسکو نہیں آتی. ھے بڑا سوابھیمانی.

تب تو تم اُسے خوب جانتے ھو' ھاں تو بس وہ تواری جی جب اپنے بیٹے کے شہر کے مکان میں داخل ھوئے اور آنگن میں کھڑے ھوکر جیسے ھی 'کنھیا کنھیا' آواز لگائی کہ اُن کے چپراسی نے اُنھیں نکال باھر کردیا. یہ آواز کہیں ڈپٹی کنھیا لال کی پتنی کے کانوں میں پڑگئی. اُسنے سسر کی آواز پہچان لی اور چپراسی کی دھمکی سن لی. وہ ایکدم گھبرا گئی' اپنے پتی سے بولی' دوڑئیے' دوڑئیے' گاؤں سے پتا جی آئے ھیں.

ڈپٹی صاحب کو کچھ دیر لگی' نیچے اُتریں کہ تواری جی چل دیئے. ادھر اُدھر نظر پھینکی کہیں پتہ نہیں. گھبرائے ھوئے اُوپر گئے اور اپنی پتنی سرسوتی سے پوچھا' تمھیں کہیں دھوکا تو نہیں ھوا ؟

کیسا دھوکا! میں برسوں اُنکے پاس رھی ھوں' کیا اُنکی آواز نہیں پہچانتی! وہ ضرور ناراض ھوکر چلے گئے. جلدی دوڑئیے' ھو نہ ھو' اسٹیشن گئے ھوں!

تم بھی ساتھ چلو.

اچھا چلتی ھوں.

× × ×

کنھیا لال جی اسٹیشن پر پہنچے کہ گاڑی آکر کھڑی ھوئی. بھیڑ زیادہ نہ تھی. جلدی ھی تواری جی بریک والے ڈبے کے پاس دکھائی پڑگئے. دوڑے دوڑے پہنچے. اُنھیں نمسکار کیا اور اُن سے گھر چلنے کی بات کہی.

साधू डिप्टी

यह गांव के लोग कहां भागे जा रहे हैं!

भागे नहीं जा रहे हैं, वह साधू डिप्टी आया है न, उसके दर्शन करने जा रहे हैं.

डिप्टी, साधू, दर्शन, यह सब तुम क्या कह रहे हो!

क्यों, इसमें अचरज की कौन बात है?

साधू को डिप्टी नहीं देखा, डिप्टी साधू नहीं हो सकता. कभी किसी डिप्टी कलक्टर के दर्शन की बात नहीं सुनी!

भई, यह डिप्टी, सचमुच, साधू है.

यह बातें रामलाल और श्यामलाल में हो ही रही थीं कि डिप्टी साधू की मोटर गाड़ी सड़क पर आ कर ठहर गई. उसमें से एक ऐसा ही डिप्टी कलक्टर निकला जैसे और डिप्टी कलक्टर हुआ करते हैं, हां, उसके कपड़े बेशक मोटे और गाढ़े के थे, पर ऐसे ही साफ़ थे जैसे और डिप्टियों के हुआ करते हैं. गाड़ी से उतरने, चलने के सब ढंग वैसे ही थे जैसे अफ़सरों के हुआ करते हैं, पुलिस ने उसको ऐसे ही सलामी दी जैसे वह अफ़सरों को देती है. गांव के पटवारी ने और चौकीदार ने उसी तरह झुक झुक कर सलाम किये जैसे वह हमेशा से अफ़सरों को करते आये हैं. डिप्टी साहब ने उन सब के सलाम भी उसी तरह क़बूले जिस तरह डिप्टी को क़बूलने चाहियें. हां, उनसे छुटकारा पा कर जैसे ही डिप्टी साहब उधर बढ़े जिधर गांव वालों की भीड़ थी वैसे ही न जाने कहां उनका डिप्टी पना ग़ायब हो गया. किसी ने उनके पांव छुए, किसी ने गले में माला डाली. कुछ बच्चे उनको फूल देने लगे. दो एक उनकी टांगों से लिपट गए. बड़े लोग उन्हें न छुड़ाते तो वह डिप्टी साहब को बिठा कर पीछा छोड़ते और फिर जैसा उनका बरताव था अजब नहीं उनके कंधों पर चढ़ बैठते!

इतने में श्यामलाल बोल पड़ा, देखा रामलाल, है कि नहीं साधू डिप्टी!

यार, बात तो तुम ठीक कहते हो, पर इस तरह का डिप्टी मैंने अपनी उमर में कभी देखा नहीं!

अरे रामलाल, अभी तुमने इसका हाल ही क्या सुना? इसने तो पटवारी और चौकीदार की रिश्वत बंद करा दी और सारे पटवारी और चौकीदार इससे इतने ख़ुश हैं कि इसको बाप से बढ़ कर समझते हैं. इसे डिप्टी कह कर कोई बोलता कहां है! सब तो इसे बापू कहते हैं!

रामलाल पूछ बैठा, तो फिर पटवारियों की अब गुज़र कैसे होती होगी?

سادھو ڈپٹی

یہ گاؤں کے لوگ کہاں بھاگے جا رہے ہیں!

بھاگے نہیں جا رہے ہیں، وہ سادھو ڈپٹی آیا ہے نہ، اس کے درشن کرنے جا رہے ہیں۔

ڈپٹی، سادھو، درشن، یہ سب تم کیا کہہ رہے ہو!

کیوں، اس میں اچرج کی کون بات ہے؟

سادھو کو ڈپٹی نہیں دیکھا، ڈپٹی سادھو نہیں ہوسکتا۔ کبھی کسی ڈپٹی کلکٹر کے درشن کی بات نہیں سنی!

بھئی، یہ ڈپٹی، سچ مچ، سادھو ہے۔

یہ باتیں رام لال اور شیام لال میں ہو ہی رہی تھیں کہ ڈپٹی سادھو کی موٹر گاڑی سڑک پر آکر ٹھہر گئی۔ اس میں سے ایک ایسا ہی ڈپٹی کلکٹر نکلا جیسے اور ڈپٹی کلکٹر ہوا کرتے ہیں، ہاں، اس کے کپڑے بیشک موٹے اور گاڑھے کے تھے، پر ایسے ہی صاف تھے جیسے اور ڈپٹیوں کے ہوا کرتے ہیں۔ گاڑی سے اترنے، چلنے کے سب ڈھنگ ویسے ہی تھے جیسے افسروں کے ہوا کرتے ہیں، پولیس نے اس کو ایسے ہی سلامی دی جیسے وہ افسروں کو دیتی ہے۔ گاؤں کے پٹواری نے اور چوکیدار نے اسی طرح جھک جھک کر سلام کئے جیسے وہ ہمیشہ سے افسروں کو کرتے آئے ہیں۔ ڈپٹی صاحب نے ان سب کے سلام بھی اسی طرح قبولے جس طرح ڈپٹی کو قبولنے چاہئیں۔ ہاں، ان سے چھٹکارا پاکر جیسے ہی ڈپٹی صاحب ادھر بڑھے جدھر گاؤں والوں کی بھیڑ تھی ویسے ہی نہ جانے کہاں ان کا ڈپٹی پنا غائب ہوگیا۔ کسی نے ان کے پاؤں چھوئے، کسی نے گلے میں مالا ڈالی۔ کچھ بچے ان کو پھول دینے لگے۔ دو ایک ان کی ٹانگوں سے لپٹ گئے۔ بڑے لوگ انہیں نہ چھڑاتے تو وہ ڈپٹی صاحب کو بٹھاکر پیچھا چھوڑتے اور پھر جیسا ان کا برتاؤ تھا عجب نہیں ان کے کندھوں پر چڑھ بیٹھتے!

اتنے میں شیام لال بول پڑا، دیکھا رام لال، ہے کہ نہیں سادھو ڈپٹی!

یار، بات تو تم ٹھیک کہتے ہو، پر اس طرح کا ڈپٹی میں نے اپنی عمر میں کبھی دیکھا نہیں!

ارے رام لال، ابھی تم نے اس کا حال ہی کیا سنا؟ اس نے تو پٹواری اور چوکیدار کی رشوت بند کرا دی اور سارے پٹواری اور چوکیدار اس سے اتنے خوش ہیں کہ اس کو باپ سے بڑھ کر سمجھتے ہیں۔ اسے ڈپٹی کہہ کر کوئی بولتا کہاں ہے! سب تو اسے باپو کہتے ہیں!

رام لال پوچھ بیٹھا، تو پھر پٹواریوں کی اب گزر کیسے ہوتی ہوگی؟

उल्टी बदतर हो गई और बेईमानी, दिखावट या तड़क भड़क और निठल्लेपन की शक्तियां और भी ज़ियादा बे-लगाम होगई.

उसूली तौर पर तो कोई भले यह कह ले कि विदेशी मदद लेने में ज़ियादा हर्ज नहीं है बशर्ते कि वह एक दम बराबरी के दर्जे पर हो और उसके पीछे कोई चाल या राज़ न हो. लेकिन यह बहुत बड़ी शर्त है. न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेंगी. आजकल के ज़माने में अगर कोई देश यह चाहे कि उसकी बाहरी या भीतरी पालिसी ठोस और आज़ाद या खुद मुख़्तार हो तो उसे आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा होना या स्वावलम्बी बनना पड़ेगा. हिन्दुस्तान में आये दिन जो विदेशी पूंजी बढ़ रही है और हमें विदेश के बाज़ारों का जो मुंह ताकना पड़ रहा है उससे साफ़ साफ़ पता चलता है कि हम नाम के ही बेलाग या Neutral हैं.

इन शब्दों के साथ मैं प्लानिंग मिनिस्टर से विनती करूंगा कि अमरीकी मदद के सवाल पर वह फिर से सोचें. मेरा विश्वास है कि शान्ति के साथ अगर वह सारे मामले पर ग़ौर करेंगे तो उन्हें महसूस होगा कि इस "समझौते" के बारे में जो बात स्वर्गीय किशोरलाल भाई कह गये हैं वह एक अटल सत्य है :

> "यह असल में अमरीका के वास्ते एक पट्टा है जिससे वह अपने को हिन्दुस्तान में जमा सके, पहले एक व्यापारी के रूप में और बाद में हिन्दुस्तान के राजनीतिक या सियासी आक़ा के रूप में. हिन्द सरकार ने अपनी सारी इन्तज़ामी मशीनरी अमरीका के सुपुर्द करने और उसकी इश्तहार बाज़ी या प्रोपेगेन्डा करने के लिये रज़ामन्दी दे दी है."

—सुरेश रामभाई

मैं यह मानता हूं कि अगर कोई योजना इस तरह बनाई जाय जिस में किसी देश के कच्चे माल को तो खूब काम में लाया जाय पर वहां की ज़बरदस्त आबादी की रत्ती भर भी परवाह न की जाये तो वह योजना नहीं है मज़ाक़ है…… हिन्दुस्तान के लिये वही योजनाबन्दी ठीक हो सकती है जो यहां की कुल की कुल आबादी से अच्छे से अच्छा काम ले और यहां के कच्चे माल को यहां के लाखों गांवों में तक़सीम कर दे. ऐसी ही योजना से हिन्दुस्तान का सच्चा हित हो सकता है.

—महात्मा गांधी

اُلٹی بدتر ہوگئی اور بے‌ایمانی، دکھاوٹ یا تڑک بھڑک اور نکھٹے پن کی شکتیاں اور بھی زیادہ بے لگام ہوگئیں۔

اُصولی طور پر تو کوئی بھلے یہ کہہ لے کہ ودیشی مدد لینے میں زیادہ حرج نہیں ہے بشرطیکہ وہ ایک دم برابری کے درجے پر ہو اور اُس کے پیچھے کوئی چال یا راز نہ ہو. لیکن یہ بہت بڑی شرط ہے. نہ نو من تیل ہوگا نہ رادھا ناچینگی. آجکل کے زمانے میں اگر کوئی دیش یہ چاہے کہ اُس کی باہری یا بھیتری پالیسی ٹھوس اور آزاد یا خود مختار ہو تو اسے آرتھک روپ سے اپنے پیروں پر کھڑا ہونا یا سواولمبی بننا پڑیگا. ہندستان میں آئے دن یہ ودیشی پونجی بڑھ رہی ہے اور ہمیں ودیش کے بازاروں کا جو منہ تاکنا پڑ رہا ہے اُس سے صاف‌صاف پتہ چلتا ہے کہ ہم نام کے ہی بےلاگ یا Neutral ہیں۔

ان شبدوں کے ساتھ میں پلاننگ منسٹر سے ونتی کرونگا کہ امریکی مدد کے سوال پر وہ پھر سے سوچیں. میرا وشواس ہے کہ شانتی کے ساتھ اگر وہ سارے معاملہ پر غور کرینگے تو انہیں محسوس ہوگا کہ اس "سمجھوتے" کے بارے میں جو بات سورگیہ کشورلال بھائی کہ گئے ہیں وہ ایک اٹل ستیہ ہے :

> "یہ اصل میں امریکہ کے واسطے ایک پٹہ ہے جس سے وہ اپنے کو ہندستان میں جما سکے' پہلے ایک بیوپاری کے روپ میں اور بعد میں ہندستان کے راج نیتک یا سیاسی آقا کے روپ میں. ہند سرکار نے اپنی ساری انتظامی مشینری امریکہ کے سپرد کرنے اور اُس کی اشتہاربازی یا پروپیگنڈا کرنے کے لئے رضامندی دے دی ہے."

—سریش رام‌بھائی.

میں یہ مانتا ہوں کہ اگر کوئی یوجنا اِس طرح بنائی جائے جس میں کسی دیش کے کچے مال کو تو خوب کام میں لیا جائے پر وہاں کی زبردست آبادی کی رتی‌بھر بھی پرواہ نہ کی جائے تو وہ یوجنا نہیں ہے مذاق ہے…… ہندستان کے لئے وہی یوجنا بندی ٹھیک ہو سکتی ہے جو یہاں کی کل کی کل آبادی سے اچھے سے اچھا کام لے اور یہاں کے کچے مال کو یہاں کے لاکھوں گاؤں میں تقسیم کر دے. ایسی ہی یوجنا سے ہندستان کا سچا ہت ہو سکتا ہے.

—مہاتما گاندھی

ले सकती है. क्या यह सच है ? शायद उन्होंने "समझौते" को ग़ौर से नहीं देखा. उसकी चौथी धारा के चौथे पैरे में लिखा है :

'अमरीकी डाइरेक्टर अपनी सेवाएं कमेटी को एक सलाहकार के रूप में देगा प्रोग्राम के सम्बन्ध में कमेटी जो कुछ भी सोचे डाइरेक्टर की सलाह ज़रूर लेगी. और अमरीकी सरकार जो पैसा दे रही है उसके ख़र्च या तक़सीम के सिलसिले में जो भी सिफ़ारिशें कमेटी करेगी उन पर डाइरेक्टर की ताईद लाज़मी है.'

इसी की वजह से मैं अपने लेख में इस नतीजे पर पहुँचा :

'जहां जहां पांव पड़े संतन के तहां तहां बंटा ढार' यानी हमारे देश के फिर बनाव या फिर बसाव या बेहतरी व तरक़्क़ी के किसी काम में अमरीका का अगर धेला भी ख़र्च हुआ तो वह काम, वह प्रोग्राम, उस काम में लगा हमारा पैसा और उसमें काम करने वाले हमारे आदमी, इन सबकी तक़दीर का फ़ैसला फिर हमारे या हमारी सरकार के हाथों में न रह कर अमरीकी डाइरेक्टर और अमरीकी सरकार के हाथों में पहुंच जायगा. अब हमारे देश में अमरीकी डाइरेक्टर या उनके गुट्ट की मरज़ी के ख़िलाफ़ पत्ता भी नहीं खड़क सकता.'

8. हमारे देश के लोग रिपोर्टों और आंकड़ों के चक्कर में ज़ियादा नहीं रहा करते. ख़ुद हमारी सरकार को अपने आंकड़ों पर पूरा भरोसा नहीं है. आंकड़े क्या होते हैं, मेज़ पर बैठे बाबू के दिमाग़ के मिज़ाज का फ़ितूर होते हैं. सच पूछा जाय तो हमारे दिल के अन्दर ही अन्दर एक नामी अमरीकन फ़िलासफ़र की बात जंचती है जिसने कहा था : "दुनिया में तीन तरह के झूट होते हैं, झूट, सफ़ेद झूट और आंकड़े."

आज हिन्दुस्तान के लोगों को रिपोर्टों की नहीं बल्कि दो जून खाने की ज़रूरत है.

अपने लेख में प्लानिंग मिनिस्टर ने कहा है कि उन्हें "समझौते" के अमल पर "पूरा पूरा सन्तोष" है. सवाल उनके या मेरे सन्तोष का नहीं बल्कि जनता के सन्तोष का है. और इसको नापने या पहचानने की कसौटी यह है कि इस "समझौते" से देश के अन्दर कोई नया जोश या जान आई या नहीं जिसकी बदौलत लोग देश को बनाने पर जुट जायं. बड़े दुख के साथ हमें कोरा जवाब देना पड़ता है—"नहीं." जोश या जान पैदा होने की बात तो जाने दीजिये, इस "समझौते" ने लोगों के अन्दर यह डर तक नहीं पैदा किया कि काम पर लग जायं. और फिर कहीं ज़ियादा दर्दनाक बात यह है कि इसका कोई असर या डर सरकारी हुक्कामों (नीचे से ऊपर तक) पर भी नहीं पड़ा कि वह ईमानदारी, सादगी और सेवा से काम करें. बल्कि हालत

لے سکتی هے. کیا یہ سچ هے؟ شاید اُنهوں نے "سمجهوتے" کو غور سے نهیں دیکها. اس کی چوتهی دهارا کے چوتهے پیرے میں لکها هے :

"امریکی ڈائرکٹر اپنی سیوائیں کمیٹی کو ایک صلاح کار کے روپ میں دیگا پروگرام کے سمبندھ میں کمیٹی جو کچھ بھی سوچے ڈائرکٹر کی صلاح ضرور لیگی. اور امریکی سرکار جو پیسہ دے رهی هے اس کے خرچ یا تقسیم کے سلسلے میں جو بھی سفارشیں کمیٹی کریگی ان پر ڈائرکٹر کی تائید لازمی هے.'

اِسی کی وجہ سے میں اپنے لیکھ میں اس نتیجے پر پہونچا :

'جہاں جہاں پاؤں پڑے سنتن کے تہاں تہاں بنٹا ڈهار' یعنی همارے دیش کے پھر بناو یا پھر بساو یا بہتری و ترقی کے کسی کام میں امریکہ کا اگر دهیلا بھی خرچ هوا تو وہ کام، وہ پروگرام، اُس کام میں لگا همارا پیسہ اور اسمیں کام کرنے والے همارے آدمی، ان سب کی تقدیر کا فیصلہ پھر همارے یا هماری سرکار کے هاتھوں میں نہ رہ کر امریکی ڈائرکٹر اور امریکی سرکار کے هاتھوں میں پہونچ جائیگا. اب همارے دیش میں امریکی ڈائرکٹر یا اُنکے گٹ کی مرضی کے خلاف پتہ بھی نهیں کهڑک سکتا.

8. همارے دیش کے لوگ رپورٹوں اور آنکڑوں کے چکر میں زیادہ نهیں رها کرتے. خود هماری سرکار کو اپنے آنکڑوں پر پورا بھروسہ نهیں هے. آنکڑے کیا هوتے هیں، میز پر بیٹھے بابو کے دماغ کے مزاج کا فتور هوتے هیں. سچ پوچھا جائے تو همارے دل کے اندر هی اندر ایک نامی امریکن فلاسفر کی بات جنچتی هے جسنے کہا تھا : "دنیا میں تین طرح کے جھوٹ هوتے هیں، جھوٹ، سفید جھوٹ اور آنکڑے."

آج هندستان کے لوگوں کو رپورٹوں کی نهیں بلکہ دو جون کهانے کی ضرورت هے.

اپنے لیکھ میں پلاننگ منسٹر نے کہا هے کہ اُنهیں "سمجهوتے" کے عمل پر "پورا پورا سنتوش" هے. سوال ان کے یا میرے سنتوش کا نهیں بلکہ جنتا کے سنتوش کا هے. اور اِس کو ناپنے یا پہچاننے کی کسوٹی یہ هے کہ اس "سمجهوتے" سے دیش کے اندر کوئی نیا جوش یا جان آئی یا نهیں جس کی بدولت لوگ دیش کو بنانے پر جٹ جائیں. بڑے دکھ کے ساتھ همیں کورا جواب دینا پڑتا هے— "نهیں." جوش یا جان پیدا هونے کی بات تو جانے دیجئے، اس "سمجهوتے" نے لوگوں کے اندر یہ ڈر تک نهیں پیدا کیا کہ کام پر لگ جائیں. اور پھر کہیں زیادہ دردناک بات یہ هے کہ اس کا کوئی اثر یا ڈر سرکاری حکام پر (نیچے سے اوپر تک) پر بھی نهیں پڑا کہ وہ ایمانداری، سادگی اور سیوا سے کام کریں. بلکہ حالت

हमारे समाजी और आर्थिक ढांचे व अर्थनीति में एक मुकम्मल और तबाहकुन तबदीली. लेकिन अगर हम यह मान भी लें कि यह विलायती खाद और लोहा वग़ैरा हानिकारक नहीं हैं तब भी यह कहना ग़लत है कि इन चीज़ों की बिक्री से जो पैसा आएगा वह सोलह आने हिन्दुस्तान का होगा, क्योंकि "समझौते" की तीसरी धारा में कहा गया है कि 'बिक्री की आमदनी सिर्फ़ उन्हीं कामों पर ख़र्च की जायगी जिन पर दोनों सरकारें राज़ी हों.' दूसरे शब्दों में, इस आमदनी को हिन्द सरकार जैसे चाहे ख़र्च नहीं कर सकती.

4. प्लानिंग मिनिस्टर ने कहा है कि अमरीका से ही सामान लेना लाज़मी नहीं है. पर हाथ कंगन को आरसी क्या है ? हम जानना चाहेंगे कि क्या सामान वग़ैरा के लिये सरकार ने दूसरे मुल्कों के बाज़ार देखे और क्या ना उम्मेद होने के बाद अमरीका की शरन ली ? फिर. कहने को कोई भले कह दे कि हिन्दुस्तान जहां से सुभीता हो माल ख़रीद सकता है, लेकिन असल में क्या यह बात मुमकिन है ? भला यह हो सकता है कि अमरीका हमें अपना पैसा इसलिये दे कि ग़ैर-अमरीकी दूकानदार हमारे यहां घुस आयें और हिन्दुस्तान के बाज़ारों पर हावी हो जायं ?

5. हिन्दुस्तान में जिस तेज़ी से अमरीकी माहिर बढ़ रहे हैं उससे पता चलता है कि हिन्द सरकार जितना ज़ियादा देश का विकास करना चाहती है उतने ही कम देशी जानकार उसे मिल पाते हैं. और क्या हम पूछ सकते हैं कि कौन ऐसा विदेशी माहर होगा जो हिन्दुस्तानी माहर के लिये "उपयोगी न हो" ? सच तो यह है कि बाहर से माहिर बुलाने के लिये यह दलीलें केवल बड़ी बड़ी बातें और लफ़्फ़ाज़ी ही हैं. कभी हम यह भी सोचते हैं कि जो अमरीकन हिन्दुस्तान आएगा वह पहले अमरीकी हितों को सुरक्षित करने की कोशिश करेगा या हिन्दुस्तानी हितों को.

6. हम यह मान भी लें कि हिन्दुस्तान में अमरीकी माहिरों का अलग से मिशन खड़ा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी, लेकिन ऐसी कौन ज़रूरत आ पड़ी जो सरकार ने सारे अमरीकी स्टाफ़ को राजदूती मिशन के जैसा दर्जा दे दिया ? शायद ही कोई देश ऐसा हो जो विदेशी लोगों को इतनी ज़बरदस्त छूट दे दे. बहरहाल उन लोगों को हिन्दुस्तानी अफ़सरों के नीचे काम करना चाहिये और उन्हें किसी जगह भी सर्वेसर्वा न होने दिया जाय. इसमें कोई शक नहीं कि अमरीकी डायरेक्टर और उनकी पार्टी वाले तभी काम कर सकते हैं जब हिन्द सरकार उन्हें मंज़ूर कर ले, लेकिन ऐसा एक आदमी भी नहीं रह सकता जो हिन्द सरकार को तो मंज़ूर हो पर अमरीकी सरकार को मंज़ूर न हो. इसलिये असली मरज़ी किस की रही ?

7. यूनियन मिनिस्टर ने कहा है कि प्लानिंग कमीशन या केन्द्री कमेटी जो फ़ैसला लेना चाहे पूरी आज़ादी से

ہمارے سماجی اور آرتھک ڈھانچے و ارتھ نیتی میں ایک مکمل اور تباہ کن تبدیلی . لیکن اگر ہم یہ مان بھی لیں کہ یہ ولایتی کھاد اور لوہا وغیرہ ہانی کارک نہیں ہیں تب بھی یہ کہنا غلط ہے کہ اِن چیزوں کی بکری سے جو پیسہ آئے گا' وہ سولہ آنے ہندستان کا ہوگا کیونکہ ''سمجھوتے'' کی تیسری دھارا میں کہا گیا ہے 'بکری کی آمدنی صرف انہیں کاموں پر خرچ کی جائے گی جن پر دونوں سرکاریں راضی ہوں .' دوسرے شبدوں میں' اس آمدنی کو ہند سرکار جیسے چاہے خرچ نہیں کر سکتی .

4. پلاننگ منسٹر نے کہا ہے کہ امریکہ سے ہی سامان لینا لازمی نہیں ہے . پر ہاتھ کنگن کو آرسی کیا ہے ؟ ہم جاننا چاہیں گے کہ کیا سامان وغیرہ کے لئے سرکار نے دوسرے ملکوں کے بازار دیکھے اور کیا نااُمید ہونے کے بعد امریکہ کی شرن لی ؟ پھر کہنے کو کوئی بھلے کہدے کہ ہندستان جہاں سے سبھیتا ہو مال خرید سکتا ہے' لیکن اصل میں کیا یہ بات ممکن ہے ؟ بھلا یہ ہو سکتا ہے کہ امریکہ ہمیں اپنا پیسہ اس لئے دے کہ غیر امریکی دوکاندار ہمارے یہاں گھس آئیں اور ہندستان کے بازاروں پر حاوی ہو جائیں ؟

5. ہندستان میں جس تیزی سے امریکی ماہر بڑھ رہے ہیں اس سے پتہ چلتا ہے کہ ہند سرکار جتنا زیادہ دیش کا وکاس کرنا چاہتی ہے اُتنے ہی کم دیشی جانکار اسے مل پاتے ہیں . اور کیا ہم پوچھ سکتے ہیں کہ کون ایسا ودیشی ماہر ہوگا جو ہندستانی ماہر کے لئے ''اپیوگی نہ ہو؟'' سچ تو یہ ہے کہ باہر سے ماہر بلانے کے لئے یہ دلیلیں کیول بڑی بڑی باتیں اور لفاظی ہی ہیں . کبھی ہم یہ بھی سوچتے ہیں کہ جو امریکن ہندستان آئے گا وہ پہلے امریکی ہتوں کو سرکشت کرنے کی کوشش کرے گا یا ہندستانی ہتوں کو .

6. ہم یہ مان بھی لیں کہ ہندستان میں امریکی ماہروں کا الگ سے مشن کھڑا کرنے کی کوئی ضرورت نہیں تھی' لیکن ایسی کون ضرورت آ پڑی جو سرکار نے سارے امریکی اسٹاف کو راجدوتی مشن کے جیسا درجہ دے دیا؟ شاید ہی کوئی دیش ایسا ہو جو ودیشی لوگوں کو اتنی زبردست چھوٹ دے دے. بہرحال ان لوگوں کو ہندستانی افسروں کے نیچے کام کرنا چاہئے اور انہیں کسی جگہ بھی سروے سروا ہونے دیا جائے. اس میں کوئی شک نہیں کہ امریکی ڈائرکٹر اور ان کی پارٹی والے تبھی کام کرسکتے ہیں جب ہند سرکار انہیں منظور کرلے لیکن ایسا ایک آدمی بھی نہیں رہ سکتا جو ہند سرکار کو تو منظور ہو پر امریکی سرکار کو منظور نہ ہو. اس لئے اصلی مرضی کس کی رہی ؟

7. یونین منسٹر نے کہا ہے کہ پلاننگ کمیشن یا کیندری کمیٹی جو فیصلہ لینا چاہتا ہے پوری آزادی سے

चुके हैं. मिनिस्टर साहब ने कहा है कि यह आलोचना "एकदम बे बुनियाद" है पर दुख की बात है कि मिनिस्टर साहब ने न जनता को अपने विश्वास में लिया और न यह बताने की ज़रा भी परवाह की कि हमारी कौन सी दलील ऐसी थी जिसकी वजह से उन्होंने यह एतराज़ किया. मगर उन्होंने कुछ मुद्दे ज़रूर पेश किये हैं जिनकी बिना पर "समझौते" से "पूरा पूरा सन्तोश" ज़ाहिर किया है. लेकिन जब हम ठंडे दिल से उन मुद्दों पर विचार करते हैं तो पता चलता है कि उनमें कोई तत्व ही नहीं है, जैसा कि नीचे के बयान से ज़ाहिर होगा :

1. मिनिस्टर साहब का यह कहना कि "हिन्द अमरीकी समझौता" पंच-साला योजना के ढांचे में ठीक बैठ जाता है विशय से हट कर फ़ालतू की बात करना है. इससे कौन इनकार करेगा कि पंच साला योजना की चीज़ें एक ग़ुलामी के पट्टे या उससे भी बदतर राज़ीनामे के के द्वारा पूरी की जा सकती हैं. असली सवाल तो यह है कि यह योजना—ज़रा देर के लिये यह मान भी लिया जाय कि यह योजना हिन्दुस्तान की असली योजना है जैसा न सिर्फ़ मैं बल्कि दूसरे बहुत से लोग भी नहीं मानते—किस तरह से अमल में लाई जा रही है. अगर सरकार इसके लिये वह साधन इस्तेमाल करती है जो "हिन्द-अमरीकी समझौते" में बताये गए हैं और जो मुझ जैसे को देश की आम जनता के हित में घातक लगते हैं—तब तो शिकायत की कोई गुंजायश ही नहीं है.

2. यह कहा गया है कि पंच साला योजना को इस "समझौते" की मदद से "कुछ दिशाओं" में मज़बूत बना लिया गया है. तो क्या इसके यह माने हैं कि सरकार के पास इसके अलावा कोई दूसरा चारा ही नहीं था. हम यह मानते हैं कि ऐसा करने के लिये इससे ज़ियादा बेहतरीन, सच्चे और पायदार तरीक़े निकल सकते थे और अब भी निकल सकते हैं. या मिनिस्टर साहब यह ज़ाहिर करना चाहते हैं कि बस "हिन्द-अमरीकी समझौता" ही एक सहारा था ? पता नहीं कि अगर इस तरह के इक्का दुक्का प्रोग्रामों की ख़ातिर सरकार राज़ीनामे यानी ग़ुलामी के पट्टे करती रही तो देश को न जाने किस तरफ़ ले जायगी.

3. यह बताया जाता है कि विलायती खाद और लोहे वग़ैरा की बिक्री से सरकार को काफ़ी आमदनी हो जायगी. इस सिलसिले में पहले तो हमें यह कहना है कि हिन्दुस्तान की खेती के लिये विलायती खाद और लोहा उतनी ज़रूरी चीज़ें नहीं हैं जितना हमारे विशेषज्ञ या माहिर लोग बताते हैं. दूसरे यह कि एक बार जहां उनकी लत हमें लगी तो उनके कारन न सिर्फ़ हमारा पैसा लगातार विदेश जाता रहेगा बल्कि हमारा किसान भी विदेशी पूंजीपति की मर्ज़ी का ख़ामख़ा मोहताज बन जायगा—जिसका मतलब है

چکے ہیں۔ منسٹر صاحب نے کہا ہے کہ یہ آلوچنا "ایک دم بے بنیاد" ہے۔ پر دکھ کی بات ہے کہ منسٹر صاحب نے نہ جنتا کو اپنے وشواس میں لیا اور نہ یہ بتانے کی ذرا بھی پرواہ کی کہ ہماری کون سی دلیل ایسی تھی جس کی وجہ سے انہوں نے یہ اعتراض کیا۔ مگر انہوں نے کچھ مدے ضرور پیش کئے ہیں جن کی بنا پر "سمجھوتے" سے "پورا پورا سنتوش" ظاہر کیا ہے۔ لیکن جب ہم ٹھنڈے دل سے ان مدوں پر وچار کرتے ہیں تو پتہ چلتا ہے کہ ان میں کوئی تتو ہی نہیں ہے، جیسا کہ نیچے کے بیان سے ظاہر ہوگا:

1. منسٹر صاحب کا یہ کہنا کہ "ہند امریکی سمجھوتا" پنچ سالا یوجنا کے ڈھانچے میں ٹھیک بیٹھ جاتا ہے وشے سے ہٹ کر فالتو کی بات کرنا ہے۔ اس سے کون انکار کرے گا کہ پنچ سالہ یوجنا کی چیزیں ایک غلامی کے پٹے یا اس سے بھی بدتر راضی نامے کے دوارا پوری کی جا سکتی ہیں۔ اصلی سوال تو یہ ہے کہ یہ یوجنا—ذرا دیر کے لئے یہ مان بھی لیا جائے کہ یہ یوجنا ہندستان کی اصلی یوجنا ہے جیسا نہ صرف میں بلکہ دوسرے بہت سے لوگ بھی نہیں مانتے—کس طرح سے عمل میں لائی جا رہی ہے۔ اگر سرکار اس کے لئے وہ سادھن استعمال کرتی ہے جو "ہند امریکی سمجھوتے" میں بتائے گئے ہیں اور جو مجھ جیسے کو دیش کی عام جنتا کے ہت میں گھاتک لگتے ہیں—تب تو شکایت کی کوئی گنجائش ہی نہیں ہے۔

2. یہ کہا گیا ہے کہ پنچ سالہ یوجنا کو اس "سمجھوتے" کی مدد سے "کچھ دشاؤں" میں مضبوط بنا لیا گیا ہے۔ تو کیا اس کے یہ معنی ہیں کہ سرکار کے پاس اس کے علاوہ کوئی دوسرا چارا ہی نہیں تھا۔ ہم یہ مانتے ہیں کہ ایسا کرنے کے لئے اس سے زیادہ بہترین، سچے اور پائدار طریقے نکل سکتے تھے اور اب بھی نکل سکتے ہیں۔ یا منسٹر صاحب یہ ظاہر کرنا چاہتے ہیں کہ بس "ہند امریکی سمجھوتہ" ہی ایک سہارا تھا؟ پتہ نہیں کہ اگر اس طرح کے اکا دکا پروگراموں کی خاطر سرکار راضی نامے یعنی غلامی کے پٹے کرتی رہی تو دیش کو نہ جانے کس طرف لے جائے گی۔

3. یہ بتایا جاتا ہے کہ ولایتی کھاد اور لوہے وغیرہ کی بکری سے سرکار کو کافی آمدنی ہو جائے گی۔ اس سلسلے میں پہلے تو ہمیں یہ کہنا ہے کہ ہندستان کی کھیتی کے لئے ولایتی کھاد اور لوہا اتنی ضروری چیزیں نہیں ہیں جتنا ہمارے وشیشگیہ یا ماہر لوگ بتاتے ہیں۔ دوسرے یہ کہ ایک بار جہاں ان کی لت ہمیں لگی تو ان کے کارن نہ صرف ہمارا پیسہ لگاتار ودیش جاتا رہے گا بلکہ ہمارا کسان بھی ودیشی پونجی پتی کی مرضی کا خواہ مخواہ محتاج بن جائے گا—جس کا مطلب ہے

के साथ किये जाने वाले सलाह मशवरे से इस बात की ख़ातिरी हो जाती है कि अमरीकी सरकार को जिन मुद्दों पर अपनी कांगरेस को जो रिपोर्ट देनी है, उन मुद्दों की पूरी जानकारी इसमें आ गई है या नहीं. मैं नहीं मानता कि इस बन्दोबस्त के ख़िलाफ़ कोई एतराज़ उठाया जा सकता है.

इस मसले के सियासी पहलू पर मुझे कुछ ख़ास बात कहने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि प्रधान मंत्री हिन्द सरकार की नीति को कई बार साफ़ साफ़ बता चुके हैं. हिन्द सरकार ने यह तो माना है कि हिन्द के आर्थिक विकास में विदेशी मदद के मुनासिब उपयोग करने के लिये जगह है. लेकिन उसने यह भी साफ़ कर दिया है कि हमारी विकास योजना विदेशी मदद पर निर्भर नहीं होगी, और अगर ज़रूरत हो जाय तो इस मदद के बिना भी वह आगे बढ़ने में कामयाब होगी.

उम्मीद है कि यह ख़त उन शकों को दूर करेगा जो इन लेखों में ज़ाहिर किये गए हैं और जिन से शायद आपकी राय भी मिलती हो.

नई दिल्ली —गुलज़ारीलाल नन्दा
7. 8. 1952.

× × ×

श्री नन्दा का यह लेख हमने पूरे ध्यान से पढ़ा. पर "समझौते" के बारे में हमारी राय जैसी थी वैसी ही बनी रही. इसलिये हमने ज़रूरी समझा कि इस सम्बन्ध में कुछ आगे कहें. 23 अगस्त को वर्धा में श्री किशोरलाल भाई से भेंट होने पर हमने अपनी यह राय ज़ाहिर की तो उन्होंने कहा—"ख़ुशी के साथ."

क़रीब एक हफ़्ते के बाद हमने 'सरकार और हिन्द अमरीकी "समझौता"' नाम का एक लेख श्री किशोरलाल भाई के पास भेज दिया. पर अपनी बीमारी के कारन वह शायद उसे देख ही न सके और फिर हमारे बीच से उठ भी गए. तब हमने अपने इस लेख की नक़ल 'हरिजन' के नये सम्पादक श्री मगन भाई देसाई के पास भेजी. उन्होंने उसे देखने के बाद 'हरिजन' में छापने के लिये मंज़ूर कर लिया. नीचे हम उसका आज़ाद तरजुमा दे रहे हैं.

सरकार और हिन्द अमरीकी "समझौता"

5 जनवरी 1952 को हमारे देश की सरकार और अमरीकी सरकार के बीच "हिन्द अमरीकी टैकनीकल सहयोग समझौते" नाम से एक "समझौता" हुआ था. उसको *ग़ुलामी का पट्टा या ग़ुलामीनामा बताते हुए जो आलोचना हमने की थी उसके जवाब में नई दिल्ली के प्लानिंग मिनिस्टर, श्री गुलज़ारीलाल नन्दा ने 23 अगस्त के 'हरिजन' में छपा एक लेख लिखा है जो हम ऊपर दे*

کے ساتھ کئے جانے والے صلاح مشورے سے اس بات کی خاطری ہو جاتی ہے کہ امریکی سرکار کو جن مدّوں پر اپنی کانگریس کو جو رپورٹ دینی ہے' ان مدّوں کی پوری جانکاری اس میں آگئی ہے یا نہیں۔ میں نہیں مانتا کہ اس بندوبست کے خلاف کوئی اعتراض اُٹھایا جا سکتا ہے ۔

اس مسئلے کے سیاسی پہلو پر مجھے کچھ خاص بات کہنے کی ضرورت نہیں ہے' کیونکہ پردھان منتری ہند سرکار کی نیتی کو کئی بار صاف صاف بتا چکے ہیں. ہند سرکار نے یہ تو مانا ہے کہ ہند کے آرتھک وکاس میں ودیشی مدد کے مناسب اُپیوگ کرنے کے لئے جگہ ہے. لیکن اس نے یہ بھی صاف کر دیا ہے کہ ہماری وکاس یوجنا ودیشی مدد پر نربھر نہیں ہوگی' اور اگر ضرورت ہو جائے تو اس مدد کے بنا بھی وہ آگے بڑھنے میں کامیاب ہوگی ۔

اُمید ہے کہ یہ خط ان شکوں کو دور کریگا جو ان لیکھوں میں ظاہر کئے گئے ہیں اور جن سے شاید آپ کی رائے بھی ملتی ہو ۔

نئی دلی —گلزاری لال نندا
7 . 8 . 1952

× × ×

شری نندا کا یہ لیکھ ہم نے پورے دھیان سے پڑھا. پر "سمجھوتے" کے بارے میں ہماری رائے جیسی تھی ویسی ہی بنی رہی. اس لئے ہم نے ضروری سمجھا کہ اس سمبندھ میں کچھ آگے کہیں . 23 اگست کو وردھا میں شری کشورلال بھائی سے بھینٹ ہونے پر ہم نے اپنی یہ رائے ظاہر کی تو انہوں نے کہا—"خوشی کے ساتھ ."

قریب ایک ہفتے کے بعد ہم نے 'سرکار اور ہند امریکی "سمجھوتہ"' نام کا ایک لیکھ شری کشورلال بھائی کے پاس بھیج دیا. پر اپنی بیماری کے کارن وہ شاید اسے دیکھ ہی نہ سکے اور پھر ہمارے بیچ سے اُٹھ بھی گئے. تب ہم نے اپنے اس لیکھ کی نقل 'ہریجن' کے نئے سمپادک شری مگن بھائی دیسائی کے پاس بھیجی . انہوں نے اسے دیکھنے کے بعد 'ہریجن' میں چھاپنے کے لئے منظور کر لیا . نیچے ہم اس کا آزاد ترجمہ دے رہے ہیں .

سرکار اور ہند امریکی "سمجھوتا"

5 جنوری 1952 کو ہمارے دیش کی سرکار اور امریکی سرکار کے بیچ "ہند امریکی ٹیکنیکل سہیوگ سمجھوتے" نام سے ایک "سمجھوتا" ہوا تھا. اس کو *غلامی کا پٹہ یا غلامی نامہ بتاتے ہوئے جو آلوچنا ہم نے کی تھی اس کے جواب میں نئی دلی کے پلاننگ منسٹر شری گلزاری لال نندا نے 23 اگست کے 'ہریجن' میں چھپا ایک لیکھ لکھا ہے جو ہم اوپر دے*

4. टैकनिकल सहयोग समझौते के मातहत योजनाओं के लिये ज़रूरी सामान की ख़रीदारी अमरीका से ही करने के लिये हिन्दुस्तान मजबूर नहीं है. हिन्दुस्तान यह सारा सामान अपनी एजन्सियों के ज़रिये क़ीमत और माल की डिलीवरी के सुभीते के मुताबिक़ चाहे जहां से ख़रीद सकता है.

5. अमरीकी माहर यहां तभी भेजे जाते हैं जब भारत सरकार उनकी मांग करती है, और तभी हम उन्हें रखते हैं वरना नहीं. माहरों की मांग तभी की जाती है जब उनकी सच्ची ज़रूरत महसूस होती है. भारत सरकार की यह नीति है कि अपने लोगों को ज़ियादा से ज़ियादा मौक़ा दिया जाय. विदेशी माहिरों की मांग तभी की जाती है जब कहीं किसी दायरे में ऐसा लगता है कि ज्ञान और अनुभव के लिहाज़ से हिन्दुस्तानी माहर के साथ साथ उसकी मदद के लिये विदेशी माहिर भी उपयोगी होगा. इन माहरों को हमें कुछ मुक़ामी ख़र्च ही देना पड़ता है उनकी तनख़ा और उनके लिये ज़रूरी साधनों का ख़र्च वग़ैरा टैकनिकल सहयोग एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा किया जाता है.

6. टैकनिकल सहयोग एडमिनिस्ट्रेशन का डाइरेक्टर और उसके कर्मचारी लोग अमरीकी सरकार के डिप्लोमैटिक मिशन के ही एक हिस्सा समझे जायं—समझौते की यह धारा भारत सरकार की फ़रमाइश से रखी गई है. योरप में जो टैकनिकल सहयोग एडमिनिस्ट्रेशन मिशन काम कर रहे हैं उनकी तरह हमारे यहां भी वह अलग संस्थाओं की तरह काम करें, यह बात ज़रूरी नहीं महसूस हुई. इसके अलावा समझौते के अन्दर अगरचे डाइरेक्टर और उसके माहिर कर्मचारियों का तक़ुर्रर अमरीकी सरकार करेगी, लेकिन यह ज़रूरी माना गया है कि इसमें भारत सरकार की सहमति होनी चाहिये.

7. समूचे टैकनिकल सहयोग प्रोग्राम को केन्द्री कमेटी यानी प्लानिंग कमीशन और उसके सदर, हमारे प्रधान मंत्री के संचालन में अमल में लाया जायगा. केन्द्री कमेटी अपने फ़ैसलों में पूरी आज़ाद है. भारत सरकार के प्रतिनिधियों और टैकनिकल सहयोग के संचालक के बीच अमरीकी ख़ज़ाने के इस्तेमाल के सवाल पर आपसी सलाह ज़रूर होती है लेकिन यह सलाह अपनी जगह महदूद रहती है.

8. अलग अलग सामूहिक योजना समझौतों के अन्दर केन्द्री कमेटी के द्वारा भारत सरकार की जानकारी के लिये जो तिमाही रिपोर्टें पेश की जायंगी उनके रूप और नक़शे के बारे में डाइरेक्टर की सलाह लेने की बात समझौते में दाख़िल की गई है. इस सलाह की ज़रूरत इसलिये मानी गई है कि अमरीकी सरकार को अमरीकी कांगरेस के सामने इस बात की रिपोर्ट देना होता है कि कांगरेस द्वारा मंज़ूर किये गए पैसे का ख़र्च किस तरह किया जा रहा है. डाइरेक्टर

4. ٹیکنیکل سہیوگ سمجھوتے کے ماتحت یوجناؤں کے لئے ضروری سامان کی خریداری امریکہ سے ہی کرنے کے لئے ہندستان مجبور نہیں ہے. ہندستان یہ سارا سامان اپنی ایجنسیوں کے ذریعے قیمت اور مال کی ڈلیوری کے سبھیتے کے مطابق چاہے جہاں سے خرید سکتا ہے ۔

5. امریکی ماہر یہاں تبھی بھیجے جاتے ہیں جب بھارت سرکار ان کی مانگ کرتی ہے، اور تبھی ہم انہیں رکھتے ہیں ورنہ نہیں ۔ ماہروں کی مانگ تبھی کی جاتی ہے جب اُن کی سچی ضرورت محسوس ہوتی ہے بھارت سرکار کی یہ نیتی ہے کہ اپنے لوگوں کو زیادہ سے زیادہ موقع دیا جائے ۔ ودیشی ماہروں کی مانگ تبھی کی جاتی ہے جب کہیں کسی دائرے میں ایسا لگتا ہے کہ گیان اور انوبھو کے لحاظ سے ہندستانی ماہر کے ساتھ ساتھ اُس کی مدد کے لئے ودیشی ماہر بھی اُپیوگی ہوگا ۔ ان ماہروں کو ہمیں کچھ مقامی خرچ ہی دینا پڑتا ہے ۔ اُن کی تنخواہ اور اُن کے لئے ضروری سادھنوں کا خرچ وغیرہ ٹیکنیکل سہیوگ ایڈمنسٹریشن دوارا کیا جاتا ہے ۔

6. ٹیکنیکل سہیوگ ایڈمنسٹریشن کا ڈائرکٹر اور اس کے کرمچاری لوگ امریکی سرکار کے ڈپلومیٹک مشن کے ہی ایک حصہ سمجھے جائیں—سمجھوتے کی یہ دھارا بھارت سرکار کی فرمائش سے رکھی گئی ہے ۔ یورپ میں جو ٹیکنیکل سہیوگ ایڈمنسٹریشن مشن کام کر رہے ہیں ان کی طرح ہمارے یہاں بھی وہ الگ سنستھاؤں کی طرح کام کریں، یہ بات ضروری نہیں محسوس ہوئی ۔ اس کے علاوہ سمجھوتے کے اندر اگرچہ ڈائرکٹر اور اس کے ماہر کرمچاریوں کا تقرر امریکی سرکار کریگی، لیکن یہ ضروری مانا گیا ہے کہ اس میں بھارت سرکار کی سہمتی ہونی چاہئے ۔

7. سموچے ٹیکنیکل سہیوگ پروگرام کو کیندری کمیٹی یعنی پلاننگ کمیشن اور اُس کے صدر، ہمارے پردھان منتری کے سنچالن میں عمل میں لایا جائیگا ۔ کیندری کمیٹی اپنے فیصلوں میں پوری آزاد ہے ۔ بھارت سرکار کے پرتی ندھیوں اور ٹیکنیکل سہیوگ کے سنچالک کے بیچ امریکی خزانے کے استعمال کے سوال پر آپسی صلاح ضرور ہوتی ہے لیکن یہ صلاح اپنی جگہ محدود رہتی ہے ۔

8. الگ الگ ساموہک یوجنا سمجھوتوں کے اندر کیندری کمیٹی کے دوارا بھارت سرکار کی جانکاری کے لئے جو تماہی رپورٹیں پیش کی جائینگی اُن کے روپ اور نقشے کے بارے میں ڈائرکٹر کی صلاح لینے کی بات سمجھوتے میں داخل کی گئی ہے. اس صلاح کی ضرورت اس لئے مانی گئی ہے کہ امریکی سرکار کو امریکی کانگریس کے سامنے اس بات کی رپورٹ دینی ہوتی ہے کہ کانگریس دوارا منظور کئے گئے پیسے کا خرچ کس طرح کیا جا رہا ہے ۔ ڈائرکٹر

सोसाइटी की तरफ़ से अंगरेज़ी का यह लेख एक छोटी-सी किताब की शकल में भी छापा किया गया. किताब में श्री किशोरलाल भाई मशरूवाला ने अपनी एक बड़ी भारी और महत्वपूर्ण प्रस्तावना दी थी जो 'नया हिन्द' के अगस्त नम्बर में निकल चुकी है.

अंगरेज़ी किताब के निकलने के बाद हिन्द-अमरीकी "समझौते" की हमारी टीका का जवाब देते हुए हिन्द सरकार के प्लानिंग मिनिस्टर श्री गुलज़ारी लाल नन्दा ने 7 अगस्त 1952 को एक ख़त श्री किशोरलाल भाई को भेजा जो एक लेख के रूप में 23 अगस्त के 'हरिजन' में छपा. श्री नन्दा का वह लेख हम नीचे दे रहे हैं.

× × ×

हिन्द-अमरीकी समझौता

हिन्द-अमरीकी टैकनिकल सहयोग समझौते पर 'हरिजन' के 3 और 10 मई के पर्चों में सुरेश रामभाई के "समझौता या गुलामी का पट्टा?" नाम के दो लेख छपे थे. लेखों को निकले हुए काफ़ी वक़्त बीत चुका है. फिर भी यह ख़त लिख कर मैं आपको बताना चाहता हूँ कि उनमें की गई टीका एकदम बे-बुनियाद है. लेखक के उठाए हुए मुद्दों का अलग अलग जवाब देने की कोशिश मैं नहीं करूंगा. मैं थोड़े में असली हालत को साफ़ साफ़ बयान कर दे रहा हूं. पिछले कुछ महीनों से इस समझौते पर जो अमल हो रहा है उसे मैंने देखा है और मुझे उससे पूरा पूरा सन्तोष है.

1. हिन्द अमरीकी टैकनिकल सहयोग प्रोग्राम के अन्दर हिन्द सरकार ने जो समझौता किया है वह सिर्फ़ ऐसे ही मक़सद के लिये जो हमारी पंचसाला योजना के लिये ज़रूरी हो और जिसका उसके साथ मेल बैठ जाय. इसके सिवा इसमें पंचसाला योजना को ही सबसे ऊंची जगह दी जायगी.

2. कुछ दिशाओं में पंच साला योजना को जितना बल टैकनिकल सहयोग प्रोग्राम से मिलेगा उतना किसी और तरीक़े से नहीं मिल सकता था. मिसाल के लिये : (i) ट्यूब वार कुएं खुदवाने का काम, (ii) समुद्री हिस्सों में मछली उद्योग के विकास का प्रोग्राम, (iii) नहरों और बिजली की स्कीमों की तैयारी में ज़रूरी सामान को पूरा करना.

3. खेती की कास्त में उपयोगी (खाद और इस्पात जैसी) चीज़ों का बाहर से आने, जिन्हें यहां बेच सकते हैं, के इन्तज़ाम में फ़ायदा यह है कि इससे हमें अपनी योजनाओं में ख़र्च होने वाली पूंजी के लिये काफ़ी रुपया मिल जायगा.

سوسائٹی کی طرف سے انگریزی کا یہ لیکھ ایک چھوٹی سی کتاب کی شکل میں بھی شایع کیا گیا . کتاب میں شری کشور لال بھائی مشروالا نے اپنی ایک بڑی بھاری اور مہتو پورن پرستاونا دی تھی جو 'نیا ہند' کے اگست نمبر میں نکل چکی ہے .

انگریزی کتاب کے نکلنے کے بعد ہند امریکی "سمجھوتے" کی ہماری ٹیکا کا جواب دیتے ہوئے ہند سرکار کے پلاننگ منسٹر شری گلزاری لال نندا نے 7 اگست 1952 کو ایک خط شری کشور لال بھائی کو بھیجا جو ایک لیکھ کے روپ میں 23 اگست کے ' ہریجن ' میں چھپا' شری نندا کا وہ لیکھ ہم نیچے دے رہے ہیں .

× × ×

ہند امریکی سمجھوتا

ہند امریکی ٹیکنیکل سہیوگ سمجھوتے پر 'ہریجن' کے 3 اور 10 مئی کے پرچوں میں سریش رام بھائی کے "سمجھوتہ یا غلامی کا پٹہ ؟" نام کے دو لیکھ چھپے تھے . لیکھوں کو نکلے ہوئے کافی وقت بیت چکا ہے . پھر بھی یہ خط لکھ کر میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ اُن میں کی گئی ٹیکا ایک دم بے بنیاد ہے . لیکھک کے اُٹھائے ہوئے مدوں کا الگ الگ جواب دینے کی کوشش میں نہیں کروں گا . میں تھوڑے میں اصلی حالت کو صاف صاف بیان کر دے رہا ہوں . پچھلے کچھ مہینوں سے اِس سمجھوتے پر جو عمل ہو رہا ہے اسے میں نے دیکھا ہے اور مجھے اُس سے پورا پورا سنتوش ہے .

1. ہند امریکی ٹیکنیکل سہیوگ پروگرام کے اندر ہند سرکار نے جو سمجھوتا کیا ہے وہ صرف ایسے ہی مقصد کے لئے جو ہماری پنچ سالا یوجنا کے لئے ضروری ہو اور جس کا اُس کے ساتھ میل بیٹھ جائے . اس کے سوا اس میں پنچ سالا یوجنا کو ہی سب سے اونچی جگہ دی جائے گی .

2. کچھ دشاؤں میں پنچ سالا یوجنا کو جتنا بل ٹیکنیکل سہیوگ پروگرام سے ملے گا اُتنا کسی اور طریقے سے نہیں مل سکتا تھا . مثال کے لیے: (i) ٹیوب دار کوئیں کھدوانے کا کام' (ii) سمندری حصوں میں مچھلی ادیوگ کے وکاس کا پروگرام' (iii) نہروں اور بجلی کی اسکیموں کی تیاری میں ضروری سامان کو پورا کرنا .

3. کھیتی کی کاشت میں اُپیوگی (کھاد اور اسپات جیسی) چیزوں کا باہر سے آنے' جنہیں یہاں بیچ سکتے ہیں' کے انتظام میں فائدہ یہ ہے کہ اس سے ہمیں اپنی یوجناؤں میں خرچ ہونے والی پونجی کے لئے کافی روپیہ مل جائے گا .

अपने रुजहानों के मुताबिक़ किसी न किसी दर्जे में गिन सकते हैं.

अमरीका की आज की नीति ऐसी है कि हर एक आदमी अपनी गरज़ सीधी करने की होड़ में लगा हुआ है ! इस होड़ में अगर कोई पीछे रह जाय और बरबाद हो जाय तो उसकी किसी को कोई परवाह नहीं. रूस चाहता है कि आम जनता को बराबर सुख मिले. ऐसी हालत में कौन सर्वोदय के ज़ियादा क़रीब है ?

किसी भी दर्जे वाला आदमी अपने नज़दीक के दर्जे वाले आदमी से आसानी से दोस्ती कर सकता है. यही वजह है कि नेहरू जी अपने दायें बायें वालों से यानी अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन से आसानी से दोस्ती कर सकते हैं. जो ब्राह्मन या सर्वोदय दल के हैं वह अपने को सोवियत रूस के ज़ियादा पास महसूस करते हैं क्योंकि रूस के अन्दर आम जनता की भलाई करने के जज़्बे को अमली शकल दी जाती है, फिर भले ही रूस अहिंसा पर ज़ोर न देता हो. केवल बाहरी चीज़ों से आदमियों की पहचान नहीं हो सकती. हैट और कोट पहना हुआ आदमी अच्छी कलचर का ही होता है ऐसा नहीं कह सकते. वह पोशाक पहनने वाला म्लेच्छ भी हो सकता है. इसी तरह खुले बदन रहने वाला और लंगोटी लगाने वाला आदमी हमेशा सर्वोदयी ख़याल वाला ही होगा ऐसा नहीं मान सकते.

इसलिये हमें चाहिये कि हम अपने पड़ोसियों को देख कर नाक भौं सिकोड़ना छोड़ दें, बल्कि उनकी अच्छाइयां ढूंढें और जो हमारे देश के लिये मौज़ूं हो उसे ग्रहन कर लें.

"हिन्द-अमरीकी समझौता" और हमारी सरकार

5 जनवरी 1952 को हिन्द सरकार और अमरीकी सरकार के बीच जो समझौता हुआ है उसकी चर्चा हम 'नया हिन्द' में अकसर कर चुके हैं. अपने फ़रवरी नम्बर में "हिन्द-अमरीकी समझौता या ग़ुलामी नामा ?" नाम के एक नोट में हम ने तफ़सील के साथ इस पर रोशनी डाली थी. कुछ मामूली तबदीली के बाद स्वर्गीय श्री किशोरलाल भाई ने वह लेख "Agreement or Slavery Bond ?" यानी "समझौता या ग़ुलामी का पट्टा ?" नाम से अंगरेज़ी 'हरिजन' में और उसके साथ के हिन्दी व गुजराती परचों में मई महीने में छापा था. इसके बाद जुलाई के आख़िर में

اپنے رجحانوں کے مطابق کسی نہ کسی درجے میں گن سکتے ہیں۔

امریکہ کی آج کی نیتی ایسی ہے کہ ہر ایک آدمی اپنی غرض سیدھی کرنے کی ہوڑ میں لگا ہوا ہے۔ اس ہوڑ میں اگر کوئی پیچھے رہ جائے اور برباد ہو جائے تو اس کی کسی کو کوئی پرواہ نہیں۔ روس چاہتا ہے کہ عام جنتا کو برابر سکھ ملے۔ ایسی حالت میں کون سروودے کے زیادہ قریب ہے؟

کسی بھی درجے والا آدمی اپنے نزدیک کے درجے والے آدمی سے آسانی سے دوستی کر سکتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ نہرو جی اپنے دائیں بائیں والوں سے یعنی امریکہ اور گریٹ برٹین سے آسانی سے دوستی کر سکتے ہیں۔ جو برہمن یا سروودے دل کے ہیں وہ اپنے کو سوویت روس کے زیادہ پاس محسوس کرتے ہیں کیونکہ روس کے اندر عام جنتا کی بھلائی کرنے کے جذبے کو عملی شکل دی جاتی ہے، پھر بھلے ہی روس اہنسا پر زور نہ دیتا ہو۔ کیول باہری چیزوں سے آدمیوں کی پہچان نہیں ہو سکتی۔ ہیٹ اور کوٹ پہنا ہوا آدمی اچھی کلچر کا ہی ہوتا ہے ایسا نہیں کہہ سکتے۔ وہ پوشاک پہننے والا ملیچھ بھی ہو سکتا ہے۔ اسی طرح کھلے بدن رہنے والا اور لنگوٹی لگانے والا آدمی ہمیشہ سروودی خیال والا ہی ہوگا ایسا نہیں مان سکتے۔

اس لئے ہمیں چاہئے کہ ہم اپنے پڑوسیوں کو دیکھ کر ناک بھوں سکوڑنا چھوڑ دیں، بلکہ اُن کی اچھائیاں ڈھونڈیں اور جو ہمارے دیش کے لئے موزوں ہو اُسے گرہن کر لیں۔

"ہند امریکی سمجھوتا" اور ہماری سرکار

5 جنوری 1952 کو ہند سرکار اور امریکی سرکار کے بیچ جو سمجھوتہ ہوا ہے اس کی چرچہ ہم 'نیا ہند' میں اکثر کر چکے ہیں۔ اپنے فروری نمبر میں "ہند امریکی سمجھوتا یا غلامی نامہ؟" نام کے ایک نوٹ میں ہم نے تفصیل کے ساتھ اس پر روشنی ڈالی تھی۔ کچھ معمولی تبدیلی کے بعد سورگیہ کشور لال بھائی نے وہ لیکھ "Agreement or Slavery Bond?" یعنی "سمجھوتا یا غلامی کا پٹہ؟" نام سے انگریزی 'ہریجن' میں اور اس کے ساتھ کے ہندی و گجراتی پرچوں میں مئی مہینے میں چھاپا تھا۔ اس کے بعد جولائی کے آخر میں

देखते हैं कि किसी भी व्योहार में दो फ़रीक़ों का आपस में समझौता होता है और वह इनसानी ताल्लुक़ों के क़ायम होने में यक़ीन रखते हैं. यानी अच्छे और बुरे को बराबर करने की कोशिश यहां रहती है एक सच्चा व्यापारी वाजिब क़ीमत के एवज़ में अपनी चीज़ बदलने को तैयार रहता है. हर नेक व्यापारी अपने व्योहारों में खरा रहने की इच्छा रखता है और वह जो कुछ पाता है उसका वाजिब मावज़ा लौटाने की कोशिश करता है. यह चीज़ अंगरेज़ी सभ्यता में साफ़ साफ़ पाई जाती है. वह एक हद तक ईमानदार और भरोसा करने के लायक़ हैं. यह वैश्य सभ्यता है और होड़ बाज़ी वाली आर्थिक बनावट की अलामत है.

क्षत्री नाप

निरी ख़ुदग़र्ज़ी या स्वार्थ के परे दूसरों की सेवा करने की इच्छा भी कभी कभी ज़ाहिर हुआ करती है. समाज की कुछ सेवा हो तो की जाय, ऐसी इच्छा पैदा होती है. यह इच्छा जड़ तक पहुंचने वाली या सब जगह फैली हुई नहीं हुआ करती, पर अपने अपने गुट की हद में रहती है. इसमें गुट भक्ति रहती है जो उसूली बातों का कोई लिहाज़ नहीं रखती.

सोवियत रूस की ऐसी ही हालत है. वहां आम आदमी के भले की कोशिश की जाती है पर ज़ियादा गिनत वालों के फ़ायदे के लिये कम गिनत वालों के फ़ायदों को ताक़ पर रख दिया जाता है. महाभारत के ज़माने में हिन्दुस्तान के लोगों की ज़िन्दगी इसी नैतिक दर्जे पर थी. उस वक़्त हालत के मुताबिक़ धर्म के मानी बदला करते थे. कभी कभी गांधीजी भी अपने सत्य अहिंसा के आम पैमाने से उतर कर इस दर्जे तक आ जाते थे. मिसाल के तौर पर, अगरचे उनकी शुद्ध बुद्धि उन्हें सलाह दे रही थी कि देश का बटवारा नहीं होना चाहिये फिर भी चूंकि उनके कुछ साथी बंटवारे पर तुले हुए थे, इसलिये उन्होंने अपनी बात में समझौता कर के पाकिस्तान के बनने के लिये राय दे दी. यही क्षत्री नीति थी और इसी की बदौलत आज हमें इतने दुख सहने पड़ रहे हैं.

ब्राह्मन नाप

इसमें सिर्फ़ असूली तौर से कुल इनसानी क़ौम या मानव समाज के भले के लिये—सर्वोदय के लिये—अपने असूल पर अटल बने रहना पड़ता है. इसी सभ्यता का वह दर्जा या राम राज है जिसे गांधीजी ने पेश किया.

इस तफ़सील से यह साफ़ हो जाता है कि ट्रूमन म्लेच्छ दल के हैं, नेहरू शूद्र दल के हैं, ग्रेट ब्रिटेन की वैश्य जैसी हालत है, स्टालिन क्षत्री है और कुल मिला कर देखें तो गांधीजी ब्राह्मन ठहरते हैं. इस तरह हम ख़ुद को अपने

دیکھتے ہیں کہ کسی بھی بیوہار میں دو فریقوں کا آپس میں سمجھوتہ ہوتا ہے اور وہ انسانی تعلقوں کے قائم ہونے میں یقین رکھتے ہیں. یعنی اچھے اور برے کو برابر کرنے کی کوشش یہاں رہتی ہے. ایک سچا بیوپاری واجب قیمت کے عوض میں اپنی چیز بدلنے کو تیار رہتا ہے . ہر نیک بیوپاری اپنے بیوہاروں میں کھرا رہنے کی اِچھا رکھتا ہے اور وہ جو کچھ پاتا ہے اس کا واجب معاوضہ لوٹانے کی کوشش کرتا ہے. یہ چیز انگریزی سبھیتا میں صاف صاف پائی جاتی ہے . وہ ایک حد تک ایماندار اور بھروسہ کرنے لائق ہیں. یہ ویشیہ سبھیتا ہے اور ہوڑ بازی والی آرتھک بناوٹ کی علامت ہے .

چھتری ناپ

نری خود غرضی یا سوارتھ کے پرے دوسروں کی سیوا کرنے کی اِچھا بھی کبھی کبھی ظاہر ہوا کرتی ہے . سماج کی کچھ سیوا ہو تو کی جائے' ایسی اِچھا پیدا ہوتی ہے . یہ اچھا جڑ تک پہنچنے والی یا سب جگہ پھیلی ہوئی نہیں ہوا کرتی' پر اپنے اپنے گٹ کی حد میں رہتی ہے . اس میں گٹ بھکتی رہتی ہے جو اصولی باتوں کا کوئی لحاظ نہیں رکھتی .

سوویت روس کی ایسی ہی حالت ہے . وہاں عام آدمی کے بھلے کی کوشش کی جاتی ہے پر زیادہ گنت والوں کے فائدے کے لئے کم گنت والوں کے فائدوں کو طاق پر رکھ دیا جاتا ہے . مہا بھارت کے زمانے میں ہندوستان کے لوگوں کی زندگی اسی نیتک درجے پر تھی . اس وقت حالت کے مطابق دھرم کے معنی بدلا کرتے تھے. کبھی کبھی گاندھی جی بھی اپنے ستیہ اہنسا کے عام پیمانے سے اتر کر اِس درجے تک آجاتے تھے . مثال کے طور پر' اگرچہ ان کی شدھ بدھی انہیں صلاح دے رہی تھی کہ دیش کا بٹوارا نہیں ہونا چاہئے پھر بھی چونکہ ان کے کچھ ساتھی بٹوارے پر تلے ہوئے تھے' اِس لئے انہوں نے اپنی بات میں سمجھوتہ کر کے پاکستان کے بننے کے لئے رائے دے دی . یہی چھتری نیت تھی اور اسی کی بدولت آج ہمیں اتنے دکھ سہنے پڑ رہے ہیں .

براہمن ناپ

اِس میں صرف اصولی طور سے کل انسانی قوم یا مانو سماج کے بھلے کے لئے—سروودیہ کے لئے—اپنے اصول پر اٹل بنے رہنا پڑتا ہے . یہی سبھیتا کا وہ درجہ یا رام راج ہے جسے گاندھی جی نے پیش کیا.

اِس تفصیل سے یہ صاف ہوجاتا ہے کہ ٹرومن ملیچھ دل کے ہیں' نہرو شودر دل کے ہیں' گریٹ برٹین کی ویشیہ جیسی حالت ہے' اسٹالن چھتری ہے اور کل ملا کر دیکھیں تو گاندھی جی براہمن ٹھہرتے ہیں . اس طرح ہم خود کو اپنے

ट्रूमन, स्टालिन और गांधी

(जे. सी. कुमारप्पा)

मेरे चीन और रूस की तारीफ़ करने से बहुत सी ग़ल्त फ़हमियां पैदा हो गई थीं. कुछ लोगों को तो इस बात का ताज्जुब हुआ कि एक गांधीवादी किस तरह रूस की तारीफ़ कर सकता है. यह सब ग़ल्त फ़हमियां अमरीका, रूस और सर्वोदय के नाप जोख की चालू बुनियादों को ध्यान के साथ न समझने देखने और मतलबी प्रचार में बह जाने के कारन पैदा हुई हैं.

म्लेच्छ नाप

पंजीवादी या साम्राजवादी लोगों के जीवन का आधार स्वार्थ के माद्दी पैमाने होते हैं. वहां की चीज़ों की क़ीमतें मौजूदा बाज़ार की हालत और अपनी लागत क़ीमत को सामने रख कर मुनाफ़े कमाने के ख़याल से तय की जाती हैं. इसलिये यह तरीक़ा एकदम खुद ग़र्ज़ी और हमीं-हम-पन से भरा है. यह तो शिकारी जानवरों के जैसी आदत है. उनको निजी ताक़त या जोखिम उठाने की बिसात पर ही सारा दारोमदार रहता है. यह जंगल का क़ानून हुआ. इन्सानों के बीच हम इसे म्लेच्छ सभ्यता कह सकते हैं. इसमें वही जीत सकता है जो सबसे तेज़ रफ़्तार वाला, सबसे ज़ियादा ताक़तवर या सबसे बढ़ कर हिंसक हो. हमें यह चीज़ सबसे ज़ियादा नुमाया तौर पर अमरीका में मिलती है. यह दूसरों पर ज़िन्दा रहने वाली आर्थिक बनावट की अलामत है.

शूद्र नाप

कभी कभी हम देखते हैं कि लोग बिना किसी ख़ास मतलब के ही कुछ पैमानों या नापों का सहारा लिया करते हैं. उनके सामने न कोई मक़सद रहता है, न कोई जीवन दर्शन या फ़लसफ़े ज़िन्दगी ही होता है और न दूर अंदेशी ही. वह मानो हवा के झोंके की दिशा में बहते रहते हैं. ऐन मौक़े पर जो सबसे नज़दीक होगा उसी के पीछे वह हो लेंगे. यह ग़ुलामी तबियत है. वह किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचाते. जब एक बन्दर झाड़ से आम तोड़ता है तब उसे अपने काम की नैतिकता का विचार छूता तक नहीं है. आज हिन्दुस्तान ऐसा ही बिना मक़सद वाला, बिना दूरंदेशी वाला और बिना किसी पतवार वाले जैसा हो रहा है. वह दूसरे किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकता. पर शायद वह खुद को ही नुक़सान पहुंचा रहा है. यह सभ्यता में शूद्र के दर्जे की हालत है और लुटेरू आर्थिक बनावट की अलामत है.

वैश्य नाप

सभ्यता के विकास में और थोड़ा आगे चल कर हम

ٹرومن، استالن اور گاندھی

(جے . سی . کمارپا)

میرے چین اور روس کی تعریف کرنے سے بہت سی غلط فہمیاں پیدا ہوگئی تھیں. کچھ لوگوں کو تو اس بات کا تعجب ہوا کہ ایک گاندھی وادی کس طرح روس کی تعریف کرسکتا ہے. یہ سب غلط فہمیاں امریکہ، روس اور سروودے کے ناپ جوکھ کی چالو بنیادوں کو دھیان کے ساتھ نہ سمجھنے دیکھنے اور مطلبی پرچار میں بہ جانے کے کارن پیدا ہوئی ہیں ۔

ملیچھ ناپ

پونجی وادی یا سامراجوادی لوگوں کے جیون کا آدھار سوارتھ کے مادی پیمانے ہوتے ہیں ۔ وہاں کی چیزوں کی قیمتیں موجودہ بازار کی حالت اور اپنی لاگت قیمت کو سامنے رکھ کر منافع کمانے کے خیال سے طے کی جاتی ہیں. اس لئے یہ طریقہ ایکدم خود غرضی اور ہمیں ہم پن سے بھرا ہے. یہ تو شکاری جانوروں کے جیسی عادت ہے. ان کو نجی طاقت یا جوکھم اٹھانے کی بساط پر ہی سارا دارومدار رہتا ہے . یہ جنگل کا قانون ہوا. انسانوں کے بیچ ہم اسے ملیچھ سبھیتا کہ سکتے ہیں. اس میں وہی جیت سکتا ہے جو سب سے تیز رفتار والا، سب سے زیادہ طاقتور یا سب سے بڑھ کر ہنسک ہو. ہمیں یہ چیز سب سے زیادہ نمایاں طور پر امریکہ میں ملتی ہے. یہ دوسروں پر زندہ رہنے والی آرتھک بناوٹ کی علامت ہے ۔

شودر ناپ

کبھی کبھی ہم دیکھتے ہیں کہ لوگ بنا کسی خاص مطلب کے ہی کچھ پیمانوں یا ناپوں کا سہارا لیا کرتے ہیں. ان کے سامنے نہ کوئی مقصد رہتا ہے، نہ کوئی جیون درشن یا فلسفہ زندگی ہی ہوتا ہے اور نہ دور اندیشی ہی. وہ مانو ہوا کے جھونکے کی دشا میں بہتے رہتے ہیں. عین موقعے پر جو سب سے نزدیک ہوگا اس کے پیچھے وہ ہو لیں گے. یہ غلامی طبیعت ہے . وہ کسی کو کوئی نقصان نہیں پہنچاتے. جب ایک بندر جھاڑ سے آم توڑتا ہے تب اسے اپنے کام کی نیتکتا کا وچار چھوتا تک نہیں ہے. آج ہندوستان ایسا ہی بنا مقصد والا، بنا دور اندیشی والا اور بنا کسی پتوار والے جیسا ہو رہا ہے وہ دوسرے کسی کو کوئی نقصان نہیں پہنچا سکتا . پر شاید وہ خود کو ہی نقصان پہنچا رہا ہے. یہ سبھیتا میں شودر کے درجے کی حالت ہے اور لٹیرو آرتھک بناوٹ کی علامت ہے ۔

ویشیہ ناپ

سبھیتا کے وکاس میں اور تھوڑا آگے چل کر ہم

"अगर हम मिल कर दुनिया के लोगों को शान्ति के इस नेक काम में नहीं लगा सकते, अगर हम जंग को हमेशा के लिये बन्द नहीं कर सकते तो कल इसी तरह का सवाल कोई अख़बार वाला मेरे बच्चे से या आपके बच्चे से पूछेगा, और उसे इसी तरह का जवाब मिलेगा.

"पाकिस्तान में या किसी भी देश में कोई मां एक ऐसे कोरियन बच्चे का ख़याल करके आंसू बहाए बिना नहीं रह सकती, जो अपनी उस मां की लाश से चिपट कर चिल्ला रहा हो, जो नेपाम बम से जल कर मर चुकी है! एशिया की औरतें अगर यह चाहती हैं कि वह भले आदमियों की सी और आबरू की ज़िन्दगी बसर सकें, अपने बच्चों को ठीक पाल पोस कर बड़ा कर सकें और यह देख सकें कि उनके बच्चे जंगी शिकारियों की संगीनों का शिकार न बनें, तो उन का फ़र्ज़ है कि वह विश्व शान्ति की इस तहरीक में शामिल हो कर अपनी पूरी ताक़त लगा दें."

ताहिरा मज़हर ने अपनी तक़रीर में तफ़सील के साथ बताया कि साम्राजी देशों में बच्चों और औरतों की आम तौर पर क्या हालत है, और रूस और चीन जैसे देशों में क्या हालत है. उन्होंने कहा कि :—

"कहा जाता है कि सोवियत रूस में एक ही जमात है जिसे सब से ज़ियादा रियायतें मिली हुई हैं. वह जमात सोवियत रूस के बच्चे हैं, उन्हें सब से ज़ियादा सहूलतें हैं, उनके लिये तालीम मुफ़्त, आम और लाज़मी है, और बिना किसी तरह के भेद भाव के सब बच्चों के लिये बढ़ने और तरक़्क़ी करने के लिये बराबर के मौक़े हैं.

"इस साल वियना में अप्रैल के महीने में बच्चों की हिफ़ाज़त के लिये एक अन्तर क़ौमी कानफ़रेन्स हुई थी. हमें उस कानफ़रेन्स की मांगों पर ज़ोर देना चाहिये. औरतों के अधिकारों की रक्षा करने के लिये और बच्चों की भलाई और बहबूदी के लिये सबसे पहली ज़रूरत यह है कि दुनिया से जंग हमेशा के लिये ख़त्म कर दी जावे. यहां हमारे अमरीकी भाई और बहनें भी मौजूद हैं. हम सब को मिल कर इस बात की कोशिश करनी चाहिये. हम सब एक कुटुम्ब हैं. कोई हमें फाड़ न सके. एशिया भर की औरतें इस नेक काम में पूरी तरह आपके साथ हैं, क्योंकि जंग होने की सूरत में सब से ज़ियादा दुख उन्हीं को भोगना पड़ेगा, और शान्ति की सबसे ज़ियादा उन्हें और उनके बच्चों को ज़रूरत है."

आख़ीर में ताहिरा मज़हर ने दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों की उन बहादुर औरतों के नाम लिये जिन्होंने जंग को दुनिया से मिटाने के लिये ख़ास कोशिशें और क़ुरबानियां की हैं. हर ऐसे नाम पर सारी कानफ़रेन्स ने खड़े हो कर अपने प्रेम और अक़ीदत का इज़हार किया.

(बाक़ी फिर)

—सुन्दरलाल

اگر ہم مل کر دنیا کے لوگوں کو شانتی کے اس نیک کام میں نہیں لگا سکتے، اگر ہم جنگ کو ہمیشہ کے لئے بند نہیں کر سکتے تو کل اسی طرح کا سوال کوئی اخبار والا میرے بچے سے یا آپ کے بچے سے پوچھے گا، اور اسے اسی طرح کا جواب ملے گا۔

" پاکستان میں یا کسی بھی دیش میں کوئی ماں ایک ایسے کورین بچے کا خیال کر کے آنسو بہائے بنا نہیں رہ سکتی، جو اپنی اس ماں کی لاش سے چپٹ کر چلا رہا ہو، جو نیپام بم سے جل کر مر چکی ہے! ایشیا کی عورتیں اگر یہ چاہتی ہیں کہ وہ بھلے آدمیوں کی سی اور آبرو کی زندگی بسر کر سکیں، اپنے بچوں کو ٹھیک پال پوس کر بڑا کر سکیں اور یہ دیکھ سکیں کہ ان کے بچے جنگی شکاریوں کی سنگینوں کا شکار نہ بنیں، تو ان کا فرض ہے کہ وہ وشو شانتی کی اس تحریک میں شامل ہو کر اپنی پوری طاقت لگا دیں۔"

طاہرہ مظہر نے اپنی تقریر میں تفصیل کے ساتھ بتایا کہ سامراجی دیشوں میں بچوں اور عورتوں کی عام طور پر کیا حالت ہے، اور روس اور چین جیسے دیشوں میں کیا حالت ہے۔ انہوں نے کہا کہ :—" کہا جاتا ہے کہ سوویت روس میں ایک ہی جماعت ہے جسے سب سے زیادہ رعایتیں ملی ہوئی ہیں، وہ جماعت سوویت روس کے بچے ہیں۔ انہیں سب سے زیادہ سہولتیں ہیں، ان کے لئے تعلیم مفت، عام اور لازمی ہے، اور بنا کسی طرح کے بھید بھاؤ کے سب بچوں کے لئے بڑھنے اور ترقی کرنے کے لئے برابر کے موقعے ہیں۔

" اس سال ویانا میں اپریل کے مہینے میں بچوں کی حفاظت کے لئے ایک انتر قومی کانفرنس ہوئی تھی۔ ہمیں اس کانفرنس کی مانگوں پر زور دینا چاہئے۔ عورتوں کے ادھیکاروں کی رکشا کرنے کے لئے اور بچوں کی بھلائی اور بہبودی کے لئے سب سے پہلی ضرورت یہ ہے کہ دنیا سے جنگ ہمیشہ کے لئے ختم کر دی جائے۔ یہاں ہمارے امریکی بھائی اور بہنیں بھی موجود ہیں۔ ہم سب کو مل کر اس بات کی کوشش کرنی چاہئے۔ ہم سب ایک کٹمب ہیں۔ کوئی ہمیں پھاڑ نہ سکے۔ ایشیا بھر کی عورتیں اس نیک کام میں پوری طرح آپ کے ساتھ ہیں، کیونکہ جنگ ہونے کی صورت میں سب سے زیادہ دکھ انہیں کو بھوگنا پڑے گا، اور شانتی کی سب سے زیادہ انہیں اور ان کے بچوں کو ضرورت ہے۔"

آخر میں طاہرہ مظہر نے دنیا کے مختلف ملکوں کی ان بہادر عورتوں کے نام لئے جنہوں نے جنگ کو دنیا سے مٹانے کے لئے خاص کوششیں اور قربانیاں کی ہیں۔ ہر ایسے نام پر ساری کانفرنس نے کھڑے ہو کر اپنے پریم اور عقیدت کا اظہار کیا۔

(باقی پھر)

—سندرلال

एक काश्मीरी लकड़ी का बक्स जिस पर बारीक काम हुआ हुआ था और पीकिंग नगर की याद में चीनी रेशम पर कढ़ा हुआ पीकिंग के 'समर महल' का एक चित्र पीर मनकी शरीफ़ की भेंट किया. पीर साहब ने सुनहरी काम की एक सरहदी टोपी डाक्टर किचलू के सर पर पहनाई, और एक लकड़ी का बक्स उनकी नज़र किया. सब ने एक दूसरे को गले लगाया. सारी कानफ़रेन्स पर इस घटना का बहुत गहरा असर हुआ. सब ने बहुत देर तक खड़े रह कर तरह तरह से अपनी ख़ुशी का इज़हार किया.

जंग से औरतों और बच्चों की तबाही

5 अक्तूबर की कानफ़रेन्स में ख़ास बहस इस बात पर हुई कि दुनिया की औरतों और बच्चों के ऊपर जंग का क्या असर पड़ता है. पाकिस्तान की एक नुमाइन्दा ताहिरा मज़हर ने उस दिन कानफ़रेन्स के सामने एक पुर असर तक़रीर की, जिसमें उन्होंने कहा कि :—

"औरतों और बच्चों की ज़िन्दगियों पर जंग का जो असर पड़ता है उसे शब्दों में बयान कर सकना कठिन है. जब कोई मां अपने उस जवान बेटे से ''ख़ुदा हाफ़िज़'' कह कर जुदा होती है जिससे फिर मिलने की उसे कोई उम्मीद नहीं है तो उस नज़ारे को देख कर किसकी अन्तर आत्मा को चोट न लगती होगी ? जंग की बेदर्द मशीन ने जिन हज़ारों औरतों का सुहाग छीन लिया है उनका ख़याल करके किसकी आत्मा दुखी न होती होगी ? कौन ऐसा पत्थर दिल इनसान होगा जो यह सुन कर कांप न उठता हो कि मासूम बच्चे अपने माओं की गोद से ज़बरदस्ती छीन कर संगीनों की मश्क़ के लिये निशाना बनाए जाते हैं ? यह जान कर भी कि कोरिया, मलाया और वीत नाम की लड़ाइयों में जो हज़ारों बच्चों की जानें जा रही हैं और हज़ारों के जिस्म उमर भर के लिये लुंज पुंज और निकम्मे हो रहे हैं, इस मसले की तरफ़ से कौन बे-परवाह बैठ सकता है ? और फिर इन सब लड़ाइयों से कहीं अधिक भयंकर युद्ध की आफ़त हमारी आंखों के सामने नाच रही है, वह युद्ध जो सारी दुनिया को अपनी लपटों में घेर लेगा. पिछले दिनों अमरीका के "टाइम" अख़बार का एक नामानिगार दक्खिन कोरिया के किसी शहर में गया था. वहां उसने एक कोरियन लड़के को एक रेलवे स्टेशन पर भाग कर सरदी से पनाह ढूंढते देखा. अमरीकी नामानिगार ने अपने अख़बार में लिखा है कि उसने उस लड़के से पूछा–'तुम क्या सोच रहे हो.' अनाथ लड़के ने जवाब दिया—'सोच कुछ नहीं रहा हूं, कहीं मरने जा रहा हूं. पिछली सरदी में मेरा बड़ा भाई मर गया था, इस सरदी में मैं मर जाऊंगा.' उस अमरीकी नामानिगार को इस तरह के हज़ारों बच्चे कोरिया में मिले. इसी तरह के हज़ारों बच्चे हमें मलाया और वीतनाम में मिल सकते हैं.

ایک کاشمیری لکڑی کا بکس جس پر باریک کام ہوا ہوا تھا اور پیکنگ نگر کی یاد میں چینی ریشم پر کڑھا ہوا پیکنگ کے 'سمر محل' کا ایک چتر پیر مانکی شریف کی بھینٹ کیا ۔ پیر صاحب نے سنہری کام کی ایک سرحدی ٹوپی ڈاکٹر کچلو کے سر پر پہنائی' اور ایک لکڑی کا بکس اُن کی نظر کیا ۔ سب نے ایک دوسرے کو گلے لگایا۔ ساری کانفرنس پر اس گھٹنا کا بہت گہرا اثر ہوا ۔ سب نے بہت دیر تک کھڑے رہ کر طرح طرح سے اپنی خوشی کا اظہار کیا ۔

جنگ سے عورتوں اور بچوں کی تباہی

5 اکتوبر کی کانفرنس میں خاص بحث اس بات پر ہوئی کہ دنیا کی عورتوں اور بچوں کے اوپر جنگ کا کیا اثر پڑتا ہے ۔ پاکستان کی ایک نمائندہ طاہرۂ مظہر نے اُس دن کانفرنس کے سامنے ایک پر اثر تقریر کی' جس میں اُنہوں کہا کہ :—

"عورتوں اور بچوں کی زندگیوں پر جنگ کا جو اثر پڑتا ہے اسے شبدوں میں بیان کر سکنا کٹھن ہے. جب کوئی ماں اپنے اس جوان بیٹے سے " خدا حافظ " کہکر جدا ہوتی ہے جس سے پھر ملنے کی اُسے کوئی اُمید نہیں ہے تو اس نظارے کو دیکھکر کس کی انتر آتما کو چوٹ نہ لگتی ہوگی؟ جنگ کی بے درد مشین نے جن ہزاروں عورتوں کا سہاگ چھین لیا ہے اُن کا خیال کر کے کس کی آتما دکھی نہ ہوتی ہوگی؟ کون ایسا پتھر دل انسان ہوگا جو سن کر کانپ نہ اُٹھتا ہو کہ معصوم بچے اپنے ماؤں کی گود میں سے زبردستی چھین کر سنگینوں کی مشق کے لئے نشانہ بنائے جاتے ہیں؟ یہ جان کر بھی کہ کوریا' ملایا اور ویت نام کی لڑائیوں میں جو ہزاروں بچوں کی جانیں جا رہی ہیں اور ہزاروں کے جسم عمر بھر کے لئے لنج پانج اور نکمے ہو رہے ہیں' اس مسئلے کی طرف سے کون بے پرواہ بیٹھ سکتا ہے ؟ اور پھر ان سب لڑائیوں سے کہیں ادھک بھینکر یدھ کی آفت ہماری آنکھوں کے سامنے ناچ رہی ہے' وہ یدھ جو ساری دنیا کو اپنی لپٹوں میں گھیر لیگا ۔ پچھلے دنوں امریکہ کے " ٹائم " اخبار کا ایک نامہ نگار دکھن کوریا کے کسی شہر میں گیا تھا ۔ وہاں اُس نے ایک کورین لڑکے کو ایک ریلوے اسٹیشن پر بھاگ کر سردی سے پناہ ڈھونڈھتے دیکھا ۔ امریکی نامہ نگار نے اپنے اخبار میں لکھا ہے کہ اس نے اس لڑکے سے پوچھا—' تم کیا سوچ رہے ہو' اناتھ لڑکے نے جواب دیا—' سوچ کچھ نہیں رہا ہوں' کہیں مرنے جا رہا ہوں پچھلی سردی میں میرا بڑا بھائی مر گیا تھا' اس سردی میں میں مر جاؤں گا.' اس امریکی نامہ نگار کو اس طرح کے ہزاروں بچے کوریا میں ملے ۔ اسی طرح کے ہزاروں بچے ہمیں ملایا اور ویت نام میں مل سکتے ہیں ۔

लेन देन, तिजारत और आर्थिक सहयोग को बढ़ाना भी शामिल होगा.

"हमारे दोनों देशों के नुमाइन्दों को यह देख कर बहुत चिन्ता होती है कि यूनाइटेड नेशन्स के मुक़र्रर किये हुए कमीशनों और नुमाइन्दों ने जितनी ऐसी कोशिशें की जिनकी बाबत यह समझा जाता है कि वह काश्मीर के सवाल को हल करने के लिये थीं, उन सब का नतीजा यही हुआ कि दोनों देशों के बीच की खाई और ज़ियादा गहरी और चौड़ी होती चली गई. इस बारे में कोई ग़लतफ़हमी नहीं हो सकती कि काश्मीर के झगड़े में अंगरेज़ अमरीकी ताक़तों का मक़सद यही है कि भारत और पाकिस्तान के बीच झगड़ा बढ़े ताकि अंगरेज़ अमरीकी ताक़तें दोनों देशों को अपनी इच्छा के अनुसार चला सकें.

"यह हालत हमारे दोनों देशों की ख़ुद मुख़्तारी के लिये ख़तरनाक है और दोनों देशों को साम्राजियों की फ़ौजी अड्डों और जंग में तोपों के गोलों से भुनवाने के लिये सिपाहियों की मांग का शिकार बना देती है.

"हम इस बात को मानते हैं कि केवल जम्मू और काश्मीर रियासत की सारी जनता को ही इस बात का हक़ है कि वह अपनी क़िसमत और अपने भविश्य का फ़ैसला करे. उन्हें इस बात की गारन्टी मिलनी चाहिये कि उन्हें अपने इस हक़ को आज़ादी के साथ काम में लाने का मौक़ा मिलेगा. हम भारत और पाकिस्तान दोनों की जनता से अपील करते हैं कि वह फ़ौरन इस तरह के अमली क़दम उठावें जिनसे यह बात पक्की हो जावे कि पूरी जम्मू और काश्मीर रियासत की जनता, बिना किसी रुकावट, डर या रिआयत के, बराबरी और इनसाफ़ के आधार पर, आज़ादी के साथ अपने भविश्य का फ़ैसला कर सकेगी.

"हम भारत और पाकिस्तान के नुमाइन्दों को विश्वास है कि दोनों देशों के सब अमन पसन्द लोग इस बात से इत्तफ़ाक़ करेंगे कि उन में और कुछ भी फ़रक़ क्यों न हों, काश्मीर के सवाल को हल करने का यही सबसे अच्छा तरीक़ा है.

"हम दोनों देशों के नुमाइन्दों का सुझाव है कि भारत और पाकिस्तान के शान्ति आन्दोलनों के नुमाइन्दे मिलें और इस बात पर सलाह मशवरा करें कि काश्मीर के मामले को और इसी तरह के आजकल के दूसरे मामलों को इनसाफ़ के साथ तय करने के लिये कैसे रास्ता तैयार किया जा सकता है."

यूनाइटेड स्टेट्स अमरीका के नुमाइन्दे लुई डबलू हीटन ने खड़े हो कर यह इन्डो-पाकिस्तान एलान सारी कानफ़रेन्स को पढ़ कर सुनाया.

भारत और पाकिस्तान के सब नुमाइन्दों ने इस पर दसख़त किये. डाक्टर किचलू ने इस घटना की यादगार में

لین دین، تجارت اور آرتھک سہیوگ کو بڑھانا بھی شامل ہوگا .

" ہمارے دونوں دیشوں کے نمائندوں کو یہ دیکھکر بہت چنتا ہوتی ہے کہ یونائیٹیڈ نیشنس کے مقرر کئے ہوئے کمیشنوں اور نمائندوں نے جتنی ایسی کوششیں کیں جن کی بابت یہ سمجھا جاتا ہے کہ وہ کاشمیر کے سوال کو حل کرنے کے لئے تھیں، اُن سب کا نتیجہ یہی ہوا کہ دونوں دیشوں کے بیچ کی کھائی اور زیادہ گہری اور چوڑی ہوتی چلی گئی . اس بارے میں کوئی غلط فہمی نہیں ہو سکتی کہ کاشمیر کے جھگڑے میں انگریز امریکی طاقتوں کا مقصد یہی ہے کہ بھارت اور پاکستان کے بیچ جھگڑا بڑھے تاکہ انگریز امریکی طاقتیں دونوں دیشوں کو اپنی اچھا کے انوسار چلا سکیں .

" یہ حالت ہمارے دونوں دیشوں کی خود مختاری کے لئے خطرناک ہے اور دونوں دیشوں کو سامراجیوں کی فوجی اڈوں اور جنگ میں توپوں کے گولوں سے بھنوانے کے لئے سپاہیوں کی مانگ کا شکار بنا دیتی ہے .

" ہم اس بات کو مانتے ہیں کہ کیول جموں اور کاشمیر ریاست کی ساری جنتا کو ہی اس بات کا حق ہے کہ وہ اپنی قسمت اور اپنے بھوشیہ کا فیصلہ کرے . انہیں اس بات کی گارنٹی ملنی چاہئے کہ انہیں اپنے اس حق کو آزادی کے ساتھ کام میں لانے کا موقع ملے گا . ہم بھارت اور پاکستان دونوں کی جنتا سے اپیل کرتے ہیں کہ وہ فوراً اس طرح کے عملی قدم اٹھاویں جن سے یہ بات پکی ہو جاوے کہ پوری جموں اور کاشمیر ریاست کی جنتا، بنا کسی رکاوٹ، ڈر یا رعایت کے برابری اور انصاف کے آدھار پر، آزادی کے ساتھ اپنے بھوشیہ کا فیصلہ کر سکےگی .

" ہم بھارت اور پاکستان کے نمائندوں کو وشواس ہے کہ دونوں دیشوں کے سب امن پسند لوگ اس بات سے اتفاق کریں گے کہ ان میں اور کچھ بھی فرق کیوں نہ ہوں، کاشمیر کے سوال کو حل کرنے کا یہی سب سے اچھا طریقہ ہے .

" ہم دونوں دیشوں کے نمائندوں کا سجھاؤ ہے کہ بھارت اور پاکستان کے شانتی اندولنوں کے نمائندے ملیں اور اس بات پر صلاح مشورہ کریں کہ کاشمیر کے معاملے کو اور اسی طرح کے آج کل کے دوسرے معاملوں کو انصاف کے ساتھ طے کرنے کے لئے کیسے راستہ تیار کیا جا سکتا ہے . "

یونائیٹیڈ اسٹیٹس امریکہ کے نمائندے لوئی ڈبلو ویٹن نے کھڑے ہو کر یہ انڈو پاکستان اعلان ساری کانفرنس کو پڑھ کر سنایا .

بھارت اور پاکستان کے سب نمائندوں نے اس پر دستخط کئے . ڈاکٹر کچلو نے اس گھٹنا کی یادگار میں

ज़रूरतें हैं, एक ही से हमारे दुखड़े हैं. इसलिये हम सब को मिल कर शान्ति के क़िले को इतना मज़बूत कर देना चाहिये कि युद्ध चाहने वालों की न चल सके."

भारत और पाकिस्तान के नुमाइन्दों का अहद

9 अक्तूबर के जलसे में एक ख़ास घटना हुई जिसका सम्बन्ध भारत और पाकिस्तान से है और जिसका सारे एशिया की शान्ति पर गहरा असर पड़ सकता है.

भारत के नुमाइन्दों की कुल तादाद 52 थी पाकिस्तान के नुमाइन्दे 30 थे. इन सब ने मिल कर कई दिन के सोच विचार के बाद आपस का एक अहदनामा तैयार किया और इसे अपनी सब की राय से कानफ़रेन्स के सामने पेश किया है. अहदनामा यह है :—

"हम लोग एशियाई और पैसिफ़िक इलाक़ों की इस अमन कानफ़रेन्स में पाकिस्तान और भारत के नुमाइन्दों की हैसियत से शामिल हुए हैं. हमने मिल कर अपने दोनों देशों की भलाई और दोस्ती के ख़याल से, और विश्व शान्ति क़ायम रखने की ज़बरदस्त लालसा से, उन सब सवालों पर बात चीत की है जो हमारे दोनों देशों के बीच इस वक़्त खड़े हो रहे हैं.

"हमें इस बात का पक्का विश्वास है और हम इस का एलान करते हैं कि भारत और पाकिस्तान के बीच जितने मामले इस समय अटक रहे हैं वह सब शान्ति के साथ तय किये जा सकते हैं और किये जाने चाहियें. इनमें कोई मामला ऐसा नहीं है जो शान्ति के साथ तय न हो सके.

"हम मानते हैं कि हमारे दोनों देशों के बीच के लगातार झगड़े एशिया की और सारी दुनिया की शान्ति के लिये एक गहरा ख़तरा हैं. इनसे साम्राजी शक्तियों को हमारे मामलों में दख़ल देने का मौक़ा मिलता है, जिस से दोनों देशों को नुक़सान है. इस वक़्त दोनों देशों में जो तनातनी चल रही है उसका नतीजा यह है कि दोनों को बहुत बड़ी बड़ी रक़में फ़ौजी तैयारियों में ख़र्च करनी पड़ती हैं. दोनों के क़ौमी बजट का आधे से ज़ियादा हिस्सा इसमें खप जाता है. दोनों में से किसी देश की जनता भी इतना रुपया इस तरह से नहीं खो सकती. अगर दोनों देशों के बीच लड़ाई का खटका बिल्कुल जाता रहे तो यही रक़में भारत और पाकिस्तान की बढ़ोती और तरक़्क़ी के कामों में लग सकती हैं जिससे दोनों तरफ़ की जनता का रहन सहन बहुत ऊंचा उठ सकता है.

'इसलिये हम लोग एलान करते हैं कि हमारी यह लगातार और हर तरह से कोशिश रहेगी कि हमारे दोनों देशों और उनकी जनता के बीच दोस्ती और एक दूसरे की भलाई का ख़याल बढ़े. इस में तरह तरह का आपसी कलचरी

ضرورتیں ہیں' ایک ہی سے ہمارے دکھڑے ہیں . اس لئے ہم سب کو مل کر شانتی کے قلعہ کو اتنا مضبوط کر دینا چاہئے کہ یدھ چاہنے والوں کی نہ چل سکے ."

بھارت اور پاکستان کے نمائندوں کا عہد

9 اکتوبر کے جلسے میں ایک خاص گھٹنا ہوئی جس کا سمبندھ بھارت اور پاکستان سے ہے اور جس کا سارے ایشیا کی شانتی پر گہرا اثر پڑ سکتا ہے .

بھارت کے نمائندوں کی کل تعداد 52 تھی . پاکستان کے نمائندے 30 تھے . ان سب نے مل کر کئی دن کے سوچ بچار کے بعد آپس کا ایک عہد نامہ تیار کیا اور اسے اپنی سب کی رائے سے کانفرنس کے سامنے پیش کیا . عہد نامہ یہ ہے:—

" ہم لوگ ایشیائی اور پیسفک علاقوں کی اس امن کانفرنس میں پاکستان اور بھارت کے نمائندوں کی حیثیت سے شامل ہوئے ہیں . ہم نے مل کر اپنے دونوں دیشوں کی بھلائی اور دوستی کے خیال سے' اور وشو شانتی قائم رکھنے کی زبردست لالسا سے' ان سب سوالوں پر بات چیت کی ہے جو ہمارے دونوں دیشوں کے بیچ اس وقت کھڑے ہو رہے ہیں .

" ہمیں اس بات کا پکا وشواس ہے اور ہم اس کا اعلان کرتے ہیں کہ بھارت اور پاکستان کے بیچ جتنے معاملے اس سمے اٹک رہے ہیں وہ سب شانتی کے ساتھ طے کئے جا سکتے ہیں اور کئے جانے چاہئیں . ان میں کوئی معاملہ ایسا نہیں ہے جو شانتی کے ساتھ طے نہ ہو سکے .

" ہم مانتے ہیں کہ ہمارے دونوں دیشوں کے بیچ کے لگاتار جھگڑے ایشیا کی اور ساری دنیا کی شانتی کے لئے ایک گہرا خطرہ ہیں . ان سے سامراجی شکتیوں کو ہمارے معاملوں میں دخل دینے کا موقع ملتا ہے' جس سے دونوں دیشوں کو نقصان ہے . اس وقت دونوں دیشوں میں جو تناتنی چل رہی ہے اس کا نتیجہ یہ ہے کہ دونوں کو بہت بڑی بڑی رقمیں فوجی تیاریوں میں خرچ کرنی پڑتی ہیں . دونوں کے قومی بجٹ کا آدھے سے زیادہ حصہ اس میں کھپ جاتا ہے . دونوں میں سے کسی دیش کی جنتا بھی اتنا روپیہ اس طرح سے نہیں کھو سکتی . اگر دونوں دیشوں کے بیچ لڑائی کا کھٹکا بالکل جاتا رہے تو یہی رقمیں بھارت اور پاکستان کی بڑھوتی اور ترقی کے کاموں میں لگ سکتی ہیں جس سے دونوں طرف کی جنتا کا رہن سہن بہت اونچا اٹھ سکتا ہے .

" اس لئے ہم لوگ اعلان کرتے ہیں کہ ہماری یہ لگاتار اور ہر طرح سے کوشش رہے گی کہ ہمارے دونوں دیشوں اور ان کی جنتا کے بیچ دوستی اور ایک دوسرے کی بھلائی کا خیال بڑھے . اس میں طرح طرح کا آپسی کلچری

तीसरा इजलास

4 अक्तूबर को कानफ़रेन्स का तीसरा इजलास हुआ, जिसमें डाक्टर सैफ़ुद्दीन किचलू ने चीन और भारत के बीच कलचरी सम्बन्ध के बढ़ाए जाने पर एक बयान दिया. उन्होंने सुझाव पेश किया कि दोनों देशों के बीच लेखकों, कलाकारों, उस्तादों, प्रोफ़ेसरों, समाज सेवकों, साइन्सदानों, इंजीनियरों, किसानों, दस्तकारों, खिलाड़ियों, विद्यार्थियों, वग़ैरा वग़ैरा के डेलीगेशन खूब आने जाने चाहिये, और दोनों देशों की अच्छी अच्छी चीजों की नुमाइशें होनी चाहियें, वग़ैरा वग़ैरा.

मैकसिको के डाक्टर इसमाईल कासियो विलेगा ने कहा :—

"हम मानते हैं कि दुनिया के सब लोगों के मिल कर शान्ति से रहने के लिये सब से अच्छी और ज़रूरी बात यह है कि सब देशों में खुला कलचरी लेन देन हो. जो लोग लड़ना चाहते हैं वह इस खुले कलचरी लेन देन के रास्ते में रुकावटें डालते हैं. हम इसे ज़बरदस्ती मानते हैं और बुरा कहते हैं. इस तरह की रुकावटें हमें एक दूसरे से अलग करती हैं और जंग के लिये मैदान तैयार करती हैं. हम लोग इन सब रुकावटों के ख़िलाफ़ हैं और हमें मिल कर इन्हें हटाना चाहिये."

इन्डोनीशिया के सुरोसो ने सब देशों के बीच आर्थिक और तिजारती सम्बन्धों के बढ़ाए जाने पर ज़ोर दिया, और बयान किया कि अमरीका की लगाई हुई रुकावटों से इन्डोनीशिया को कितना नुक़सान हो रहा है. चीन के ख़िलाफ़ अमरीकी आर्थिक ब्लाकेड यानी रुकावटों की उन्होंने कड़े शब्दों में निन्दा की, और सब एशियाई और पैसिफ़िक देशों के बीच तिजारती सम्बन्ध बढ़ाने के लिये कई तजवीज़ें पेश कीं.

कैनेडा के फ़िनले मैकेनज़ी ने बताया कि हथियारों के बढ़ाए जाने और दूसरे देशों के साथ तिजारती रुकावटों के कारन उत्तर और दक्खिन दोनों अमरीकाओं के आम लोगों और उनके धन्दों और रोज़गारों को कितना भारी नुक़सान पहुंच रहा है. उन्होंने यह भी कहा कि अगर हमारी सरकारें होश में न आवें तो सब देशों के लोगों को यह काम ख़ुद अपने हाथों में लेना चाहिये.

हिन्दुस्तान के डाक्टर ज्ञान चन्द ने कहा कि "एशिया के देश अपने यहां की ग़रीबी, बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को केवल शान्ति और अमन के रहते हुए ही दूर कर सकते हैं. जंग में हर तरह उनकी बरबादी है. हमारी आर्थिक कमज़ोरी से फ़ायदा उठा कर ही साम्राजी ताक़तें हमें अपने तरह तरह के जाल में फंसाती हैं. एशिया के हम सब देशों के सामने एक ही से सवाल हैं, एक ही सी हमारी

تیسرا اجلاس

4 اکتوبر کو کانفرنس کا تیسرا اجلاس ہوا، جس میں ڈاکٹر سیف الدین کچلو نے چین اور بھارت کے بیچ کلچری سمبندھ کے بڑھائے جانے پر ایک بیان دیا. انہوں نے سجھاو پیش کیا کہ دونوں دیشوں کے بیچ لیکھکوں، کلاکاروں، استادوں، پروفیسروں، سماج سیوکوں، سائنسدانوں، انجینیروں، کسانوں، دستکاروں، کھلاڑیوں، ودیارتھیوں، وغیرہ وغیرہ کے ڈیلیگیشن خوب آنے جانے چاہئیں، اور دونوں دیشوں کی اچھی اچھی چیزوں کی نمائشیں ہونی چاہئیں، وغیرہ وغیرہ.

میکسیکو کے ڈاکٹر اسمعیل کاسیو ویلیگا نے کہا :—

"ہم مانتے ہیں کہ دنیا کے سب لوگوں کے مل کر شانتی سے رہنے کے لئے سب سے اچھی اور ضروری بات یہ ہے کہ سب دیشوں میں کھلا کلچری لین دین ہو. جو لوگ لڑنا چاہتے ہیں وہ اس کھلے کلچری لین دین کے راستے میں رکاوٹیں ڈالتے ہیں. ہم اسے زبردستی مانتے ہیں اور برا کہتے ہیں. اس طرح کی رکاوٹیں ہمیں ایک دوسرے سے الگ کرتی ہیں اور جنگ کے لئے میدان تیار کرتی ہیں. ہم لوگ ان سب رکاوٹوں کے خلاف ہیں اور ہمیں ملکر انہیں ہٹانا چاہئے."

انڈونیشیا کے سروسو نے سب دیشوں کے بیچ آرتھک اور تجارتی سمبندھوں کے بڑھائے جانے پر زور دیا اور بیان کیا کہ امریکہ کی لگائی ہوئی رکاوٹوں سے انڈونیشیا کو کتنا نقصان ہو رہا ہے. چین کے خلاف امریکی آرتھک بلاکیڈ یعنی رکاوٹوں کی انہوں نے کڑے شبدوں میں نندا کی، اور سب ایشیائی اور پیسفک دیشوں کے بیچ تجارتی سمبندھ بڑھانے کے لئے کئی تجویزیں پیش کیں.

کناڈا کے فنلے میکنزی نے بتایا کہ ہتھیاروں کے بڑھائے جانے اور دوسرے دیشوں کے ساتھ تجارتی رکاوٹوں کے کارن اتر اور دکھن دونوں امریکاؤں کے عام لوگوں اور ان کے دھندوں اور روزگاروں کو کتنا بھاری نقصان پہنچ رہا ہے. انہوں نے یہ بھی کہا کہ اگر ہماری سرکاریں ہوش میں نہ آویں تو سب دیشوں کے لوگوں کو یہ کام خود اپنے ہاتھوں میں لینا چاہئے.

ہندستان کے ڈاکٹر گیان چند نے کہا کہ "ایشیا کے دیش اپنے یہاں کی غریبی، بیماری اور ہر طرح کی کمزوری کو کیول شانتی اور امن کے رہتے ہوئے ہی دور کر سکتے ہیں. جنگ میں ہر طرح ان کی بربادی ہے. ہماری آرتھک کمزوری سے فائدہ اٹھا کر ہی سامراجی طاقتیں ہمیں اپنے طرح طرح کے جال میں پھنساتی ہیں. ایشیا کے ہم سب دیشوں کے سامنے ایک ہی سے سوال ہیں، ایک ہی سی ہماری

को तैयार हैं. हम इनसाफ़ और बराबरी की बिना पर हर तरह की बात चीत को तैयार हैं. हमें विश्वास है कि हमारी आज़ादी की लड़ाई विश्व शान्ति के लिये एक बड़ी ज़रूरी चीज़ है. नहीं तो जो आज कोरिया वालों के साथ हो रहा है वही कल दूसरों के साथ होगा. हम केवल तीन बातें चाहते हैं. एक यह कि अब तक के समझौतों के अनुसार दोनों तरफ़ के सब क़ैदी वापिस किये जावें. दूसरा यह कि बीमारी बमों और निहत्थे लोगों पर बमों का फेंका जाना हमेशा के लिये बन्द किया जावे, और तीसरा यह कि सब विदेशी फ़ौजें, जिनमें चीनी फ़ौजें भी शामिल हैं, कोरिया से हटा ली जायं ताकि कोरिया के लोग अपने घरेलू झगड़ों का फ़ैसला खुद जिस तरह चाहें करें."

कोलम्बिया (अमरीका) के नुमाइन्दे डाइगो मोनटाना केलार ने कहा कि :—

"हमारे देश के जो अभागे लोग कोरिया की लड़ाई से घायल हो कर लौटे हैं उन्होंने आ कर बयान किया है कि उत्तर कोरिया वाले और चीनी कितनी बहादुरी के साथ अपनी आज़ादी के लिये लड़ते हैं और अमरीकी सरकार जो दुनिया की आज़ादी और लोकशाही के लिये लड़ने की बात करती है वह कितनी झूट और धोका है. अमरीका के अन्दर कोरिया से लौटे हुए सिपाहियों का एक संगठन है जिसकी यह मांग है कि कोरिया की लड़ाई फ़ौरन बन्द की जावे, और पांचों बड़ी ताक़तें मिल कर शान्ति क़ायम करने का अहद नामा करें. अमरीका के अन्दर आम जनता एक बहुत बड़ी तादाद में कोरिया की लड़ाई के ख़िलाफ़ है, और बीमारी बम और दवाई बम फेंकने और युद्ध के क़ैदियों पर ज़ुल्म करने को बड़ी नफ़रत की निगाह से देखती है."

भारत की तरफ़ से भेंट

3 अक्तूबर को कानफ़रेन्स ख़तम होने से कुछ पहले भारत के और कोरिया के नुमाइन्दे सब डायस पर पहुँचे. भारत के नुमाइन्दों में जो स्त्रियां थीं उन्होंने अपनी कोरियाई बहनों को सुन्दर चीज़ें भेंट की. इनमें एक चांदी का बत्तीदान था, जिस पर हिन्दी में लिखा था : 'भारत के लोगों की तरफ़ से कोरिया के बहादुर और शान्ति प्रेमी लोगों के लिये'. हिन्दुस्तानी बहनों ने कोरिया की मैडम पाक चंग-आई को एक सुनहरी रेशमी साड़ी भेंट की. साड़ी पर भी इसी तरह के शब्द कढ़े हुए थे. एक और कोरियाई बहन मुन यात बोंग को सुनहरी काम की काठयावाड़ी पोशाक और एक बटुआ भेंट किया गया. इसी तरह की और भेंट हिन्दुस्तानी बहनों की तरफ़ से कोरिया की बहनों को दी गई. हिन्दुस्तानी बहनों ने अपनी कोरियाई बहनों को चूड़ियां पहनाई और दोनों ख़ूब गले मिलीं. सारी कानफ़रेन्स के ऊपर इसका बड़ा गहरा असर पड़ा.

کو تیار رہے. ہم انصاف اور برابری کی بنا پر ہر طرح کی بات چیت کو تیار ہیں . ہمیں وشواس ہے کہ ہماری آزادی کی لڑائی وشو شانتی کے لئے ایک بڑی ضروری چیز ہے. نہیں تو جو آج کوریا والوں کے ساتھ ہو رہا ہے وہی کل دوسروں کے ساتھ ہوگا . ہم کیول تین باتیں چاہتے ہیں. ایک یہ کہ اب تک کے سمجھوتوں کے انوسار دونوں طرف کے سب قیدی واپس کئے جاویں . دوسرا یہ کہ بیماری بموں اور نہتھے لوگوں پر بموں کا پھینکا جانا ہمیشہ کے لئے بند کیا جاوے' اور تیسرا یہ کہ سب ودیشی فوجیں' جنمیں چینی فوجیں بھی شامل ہیں' کوریا سے ہٹا لی جائیں تاکہ کوریا کے لوگ اپنے گھریلو جھگڑوں کا فیصلہ خود جس طرح چاہیں کریں."

کولمبیا (امریکہ) کے نمائندے ڈایگو مونٹانہ کیلار نے کہا کہ :—

"ہمارے دیش کے جو ابھاگے لوگ کوریا کی لڑائی سے گھایل ہوکر لوٹے ہیں انہوں نے آکر بیان کیا ہے کہ اتر کوریا والے اور چینی کتنی بہادری کے ساتھ اپنی آزادی کے لئے لڑتے ہیں اور امریکی سرکار جو دنیا کی آزادی اور لوک شاہی کے لئے لڑنے کی بات کرتی ہے وہ کتنی جھوٹ اور دھوکا ہے . امریکہ کے اندر کوریا سے لوٹے ہوئے سپاہیوں کا ایک سنگھٹن ہے جس کی یہ مانگ ہے کہ کوریا کی لڑائی فورا بند کی جاوے' اور پانچوں بڑی طاقتیں مل کر شانتی قائم کرنے کا عہدنامہ کریں. امریکہ کے اندر عام جنتا ایک بڑی تعداد میں کوریا کی لڑائی کے خلاف ہے' اور بیماری بم اور دوائی بم پھینکنے اور یدھ کے قیدیوں پر ظلم کرنے کو بڑی نفرت کی نگاہ سے دیکھتی ہے."

بھارت کی طرف سے بھینٹ

3 اکتوبر کو کانفرنس ختم ہونے سے کچھ پہلے بھارت کے اور کوریا کے نمائندے سب ڈائس پر پہنچے. بھارت کے نمائندوں میں جو استریاں تھیں انہوں نے اپنی کوریائی بہنوں کو سندر چیزیں بھینٹ کی. انمیں ایک چاندی کا بتی دان تھا' جس پر ہندی میں لکھا تھا : 'بھارت کے لوگوں کی طرف سے کوریا کے بہادر اور شانتی پریمی لوگوں کے لئے.' ہندستانی بہنوں نے کوریا کی میڈم پاک چنگ آئی کو ایک سنہری ریشمی ساڑی بھینٹ کی . ساڑی پر بھی اسی طرح کے شبد کڑھے ہوئے تھے . ایک اور کوریائی بہن من یات بونگ کو سنہری کام کی کاٹھیاواڑی پوشاک اور ایک بٹوا بھینٹ کیا گیا. اس طرح کی اور بھینٹ ہندستانی بہنوں کی طرف سے کوریا کی بہنوں کو دی گئیں . ہندستانی بہنوں نے اپنی کوریائی بہنوں کو چوڑیاں پہنائیں اور دونوں خوب گلے ملیں. ساری کانفرنس کے اوپر اس کا بڑا گہرا اثر پڑا .

क़ायम होना, और जापान का विश्व शान्ति के हक़ में होना अमरीका की इस तजवीज़ के लिये सब से बड़ा धक्का होगा. आस्ट्रेलिया की जनता अमरीका और जापान की अलग संधि के ख़िलाफ़ है."

कोरिया की तीन मांगें

कोरिया के नुमाइन्दों के नेता हान सुलया ने कहा कि :—

'आज आप और हम एक सौ साठ करोड़ लोगों के नुमाइन्दे यहां यह बताने के लिये जमा हुए हैं कि हम सब जंग के ख़िलाफ़ हैं और अमन चाहते हैं. जो लड़ाई इस समय कोरिया में हो रही है वह इतनी दर्दनाक है कि मनुष्य जाति के इतिहास में उसकी मिसाल नहीं मिलती. अगर कोरिया की लड़ाई बन्द न हुई तो एशिया की या पैसिफ़िक इलाक़े की कोई क़ौम लड़ाई के ख़तरे से नहीं बच सकती.

"सुलह की बात चीत इस समय केवल एक बात पर अटक रही है, वह है—युद्ध के क़ैदियों का लौटाया जाना. सन 1949 के जिनेवा कनवैनशन की दफ़ा 108 में लिखा है कि 'जब लड़ाई बन्द हो जावे तो फ़ौरन लड़ाई के सब क़ैदी छोड़ दिये जायं और अपने अपने देश को वापिस कर दिये जायं' और इसमें किसी तरह की देर न की जाय. कैसांग के समझौते के मसौदे में, जिसे दोनों पारटियां मंज़ूर कर चुकी हैं, दफ़ा 51 में बहुत साफ़ लिखा है : 'जिस समय सुलह का समझौता अमल में आएगा फ़ौरन जितनी जल्दी हो सकेगा दोनों तरफ़ के लड़ाई के क़ैदी आज़ाद कर दिये जायंगे और अपने अपने देश लौटा दिये जायंगे. इस समझौते के दसख़त से पहले दोनों तरफ़ के क़ैदियों की जो फ़हरिस्तें दोनों पारटी एक दूसरे को दे चुकी हैं और जिनका मिलान किया जा चुका है उन्हीं फ़हरिस्तों के अनुसार क़ैदी रिहा किये जायंगे और वापिस किये जायंगे' इन दोनों समझौतों पर अमरीका के दसख़त हैं. फिर भी अमरीका बहुत से चीनी और कोरियाई क़ैदियों को ज़बरदस्ती रोकने की कोशिश कर रहा है. और उन्हें सिगमन री और च्यांग काई शेक के हवाले करना चाहता है ताकि उन्हें अपने हमलों की आग में झोंक सके. क़ैदियों से ज़बरदस्ती और धोखा दे कर अंगूठे के निशान लिये जा रहे हैं. इस तरह के जाली निशान भी बनाए गए हैं. क़ैदियों के जिस्मों पर अपमान जनक शब्द गोदे जा रहे हैं, वग़ैरा वग़ैरा एक तरफ़ यह किया जा रहा है, दूसरी तरफ़ कोजे टापू के अन्दर इन्हीं बेबस निहत्थे क़ैदियों के ऊपर गोले और आग बरसाई जा रही है. बेशुमार को क़त्ल कर दिया गया है. कोरिया और चीन में जो कुछ हुआ है वह आप सब जानते ही हैं. पर इन ज़ुल्म के तरीक़ों से अमरीका को फ़ायदा नहीं हो सकता. कोरिया की जनता इनसे और भी ज़ियादा डटकर अपनी आज़ादी के लिये लड़ने और मिटने

قائم ہونا، اور جاپان کا وشو شانتی کے حق میں ہونا امریکہ کی اس تجویز کے لئے سب سے بڑا دھکا ہوگا. آسٹریلیا کی جنتا امریکہ اور جاپان کی الگ سندھی کے خلاف ہے."

کوریا کی تین مانگیں

کوریا کے نمائندوں کے نیتا ہان سلیا نے کہا کہ :—

"آج آپ اور ہم ایک سو ساٹھ کروڑ لوگوں کے نمائندے یہاں یہ بتانے کے لئے جمع ہوئے ہیں کہ ہم سب جنگ کے خلاف ہیں اور امن چاہتے ہیں. جو لڑائی اس سمے کوریا میں ہو رہی ہے وہ اتنی دردناک ہے کہ منوشیہ جاتی کے اتہاس میں اس کی مثال نہیں ملتی. اگر کوریا کی لڑائی بند نہ ہوئی تو ایشیا کی یا پیسفک علاقے کی کوئی قوم لڑائی کے خطرے سے نہیں بچ سکتی.

"صلح کی بات چیت اس سمے کیول ایک بات پر اٹک رہی ہے، وہ ہے—یدھ کے قیدیوں کا لوٹایا جانا. سن 1949 کے جنیوا کنوینشن کی دفعہ 108 میں لکھا ہے کہ 'جب لڑائی بند ہو جاوے تو فوراً لڑائی کے سب قیدی چھوڑ دئے جائیں اور اپنے اپنے دیش کو واپس کر دئے جائیں' اور اس میں کسی طرح کی دیر نہ کی جائے. کئی سانگ کے سمجھوتے کے مسودہ میں، جسے دونوں پارٹیاں منظور کر چکی ہیں، دفعہ 51 میں بہت صاف لکھا ہے : 'جس سمے صلح کا سمجھوتہ عمل میں آئیگا فوراً جتنی جلدی ہو سکیگا دونوں طرف کے لڑائی کے قیدی آزاد کردئے جائینگے اور اپنے اپنے دیش لوٹا دئے جائینگے. اس سمجھوتے کے دستخط سے پہلے دونوں طرف کے قیدیوں کی جو فہرستیں دونوں پارٹی ایک دوسرے کو دے چکی ہیں اور جنکا ملان کیا جا چکا ہے انہیں فہرستوں کے انوسار قیدی رہا کئے جائینگے اور واپس کئے جائینگے' ان دونوں سمجھوتوں پر امریکہ کے دستخط ہیں، پھر بھی امریکہ بہت سے چینی اور کوریائی قیدیوں کو زبردستی روکنے کی کوشش کر رہا ہے، اور انہیں سنگ من ری اور چیانگ کائی شیک کے حوالے کرنا چاہتا ہے تاکہ انہیں اپنے حملوں کی آگ میں جھونک سکے. قیدیوں سے زبردستی اور دھوکا دیکر انگوٹھے کے نشان لئے جا رہے ہیں. اس طرح کے جالی نشان بھی بنائے گئے ہیں قیدیوں کے جسموں پر اپمانجنک شبد گودے جا رہے ہیں وغیرہ وغیرہ. ایک طرف یہ کیا جا رہا ہے، دوسری طرف کوجے ٹاپو کے اندر انہیں بے بس نہتھے قیدیوں کے اوپر گولے اور آگ برسائی جا رہی ہے. بےشمار کو قتل کردیا گیا ہے. کوریا اور چین میں جو کچھ ہوا ہے وہ آپ سب جانتے ہی ہیں. پر ان ظلم کے طریقوں سے امریکہ کو فائدہ نہیں ہوسکتا. کوریا کی جنتا ان سے اور بھی زیادہ ڈٹ کر اپنی آزادی کے لئے لڑنے اور مٹنے

अपने फ़ौजी अड्डे बनावे. हर देश के लोग अपने देश में जिस तरह की चाहें हकूमत रखें और जिस तरह से चाहें रहें सहें. सब देशों के बीच बराबरी और सब के भले के आधार पर तिजारत और कलचरी लेन देन हो. इसमें किसी के साथ ज़बरदस्ती न हो. तिजारत और लेन देन पर अन्तर क़ौमी रुकावटें और इजारे सब तोड़ दिये जावें.

(v) जंग के लिये प्रोपेगंडा और क़ौमों क़ौमों में नफ़रत भड़काने वाला प्रोपेगंडा बिलकुल बन्द किया जावे, काले, भूरे या पीले लोगों के ख़िलाफ़ भेद भाव बिलकुल बन्द कर दिया जावे. शान्ति आन्दोलन पर जहां जहां जो जो रुकावटें हैं सब हटा ली जावें.

"यह हमारी सब की मांगें हैं. दुनिया की जनता हमारे साथ है. सचाई और इनसाफ़ हमारे साथ है. एक बार हम एशिया में अमन क़ायम कर लें तो दुनिया में अमन क़ायम हो जावे. हम सबको अपने सारे भेद भाव भूल कर इस काम का बीड़ा उठाना चाहिये. दुनिया में,जंग चाहने वाले आख़िर मुट्ठी भर हैं. हम अगर धीरज और मज़बूत इरादे के साथ इस काम में जुट जावें तो विजय हमारी है."

जापानी जनता की आवाज़

को मो जो के बाद जापानी नुमाइन्दे तोगो कामेदा ने कहा कि:—

"जापानी जनता अपने देश के ऊपर अमरीकी फ़ौजी क़ब्ज़े और जापान के फिर से फ़ौजियाए जाने के बिलकुल ख़िलाफ़ है.

"हम चाहते हैं कि सैन फ़्रानसिसको का सुलहनामा रद्द कर दिया जावे और उसकी जगह अब तक के अन्तर क़ौमी समझौतों के अनुसार सब देशों को साथ ले कर एक सुलहनामा किया जावे जिस से सारे एशिया में और पैसिफ़िक इलाक़े में सच्ची और टिकाऊ शान्ति क़ायम हो.

"हमारी मांग है कि जापान की भूमि के ऊपर एक भी विदेशी सिपाही न रहे, किसी भी विदेशी ताक़त का एक भी फ़ौजी अड्डा न रहे और हमें अमन से, स्वाधीनता से, स्वतंत्रता से और देश की जनता की राय के अनुसार रहने दिया जाय. हमारी इन मांगों के पूरा होने में ही जापान का और एशिया और पैसिफ़िक के सब लोगों का भला है."

आस्ट्रेलिया के विद्वान ईसाई पादरी रेवरेन्ड विक्टर एम. के. जेम्स ने कहा कि :—

"अमरीका की सरकार नये चीन पर और एशिया के दूसरे देशों पर जो अपनी आज़ादी बनाए रखने के लिये चेष्टा कर रहे हैं, हमला करने की तजवीज़ें कर रही है. इसके लिये वह जापान को अपनी छावनी बना रही है. जापान की सच्ची आज़ादी, वहां सच्ची लोकशाही का

اپے فوجی اڈے بناوے. ہر دیش کے لوگ اپے دیش میں جس طرح کی چاہیں حکومت رکھیں اور جس طرح سے چاہیں رہیں سہیں. سب دیشوں کے بیچ برابری اور سب کے بھلے کے آدھار پر تجارت اور کلچری لین دین ہو. اس میں کسی کے ساتھ زبردستی نہ ہو ۔ تجارت اور لین دین پر انترقومی رکاوٹیں اور اجارے سب توڑ دئے جاویں ۔

(v) جنگ کے لئے پروپیگنڈا اور قوموں قوموں میں نفرت بھڑکانے والا پروپیگنڈا بالکل بند کیا جاوے' کالے' بھورے یا پیلے لوگوں کے خلاف بھید بھاو بالکل بند کر دیا جاوے. شانتی آندولن پر جہاں جہاں جو رکاوٹیں ہیں سب ہٹالی جاویں ۔

"یہ ہماری سب کی مانگیں ہیں ۔ دنیا کی جنتا ہمارے ساتھ ہے ۔ سچائی اور انصاف ہمارے ساتھ ہے. ایک بار ہم ایشیا میں امن قائم کرلیں تو دنیا میں امن قائم ہو جاوے ۔ ہم سب کو اپے سارے بھید بھاؤ بھول کر اس کام کا بیڑا اٹھانا چاہئیے ۔ دنیا میں جنگ چاہنے والے آخر مٹھی بھر ہیں ۔ ہم اگر دھیرج اور مضبوط ارادے کے ساتھ اِس کام میں جٹ جاویں تو وجے ہماری ہے ۔"

جاپانی جنتا کی آواز

کوموجو کے بعد جاپانی نمائندے توگو کا میدا نے کہا کہ:—

"جاپانی جنتا اپے دیش کے اوپر امریکی فوجی قبضے اور جاپان کے پھر سے فوجیائے جانے کے بالکل خلاف ہے.

"ہم چاہتے ہیں کہ سین فرانسسکو کا صلحنامہ رد کر دیا جاوے اور اس کی جگہ اب تک کے انترقومی سمجھوتوں کے انوسار سب دیشوں کو ساتھ لیکر ایک صلحنامہ کیا جاوے جس سے سارے ایشیا میں اور پیسفک علاقے میں سچی اور ٹکاؤ شانتی قائم ہو.

"ہماری مانگ ہے کہ جاپان کی بھومی کے اوپر ایک بھی ودیشی سپاہی نہ رہے' کسی بھی ودیشی طاقت کا ایک بھی فوجی اڈا نہ رہے اور ہمیں امن سے' سوادھینتا سے' سوتنترتا سے اور دیش کی جنتا کی رائے کے انوسار رہنے دیا جائے. ہماری ان مانگوں کے پورا ہونے میں ہی جاپان کا اور ایشیا اور پیسفک کے سب لوگوں کا بھلا ہے ۔"

آسٹریلیا کے ودوان عیسائی پادری ریورینڈ وکٹر ایم ۔ کے ۔ جیمس نے کہا کہ :—

"امریکہ کی سرکار نئے چین پر اور ایشیا کے دوسرے دیشوں پر جو اپنی آزادی بنائے رکھنے کے لئے چیشٹا کر رہے ہیں' حملہ کرنے کی تجویزیں کر رہی ہے ۔ اس کے لئے وہ جاپان کو اپنی چھاونی بنا رہی ہے ۔ جاپان کی سچی آزادی' وہاں سچی لوکشاہی کا

म होना, और जापान का विश्व शान्ति के हक़ में होना रीका की इस तजवीज़ के लिये सब से बड़ा धक्का . आस्ट्रेलिया की जनता अमरीका और जापान की ग संधि के खिलाफ़ है."

कोरिया की तीन मांगें

कोरिया के नुमाइन्दों के नेता हान सुलया ने कहा —

'आज आप और हम एक सौ साठ करोड़ लोगों के इन्दे यहां यह बताने के लिये जमा हुए हैं कि हम सब के खिलाफ़ हैं और अमन चाहते हैं. जो लड़ाई इस ा कोरिया में हो रही है वह इतनी दर्दनाक है कि मनुष्य के इतिहास में उसकी मिसाल नहीं मिलती. अगर या की लड़ाई बन्द न हुई तो एशिया की या पैसिफ़िक े की कोई क़ौम लड़ाई के खतरे से नहीं बच सकती.

"सुलह की बात चीत इस समय केवल एक बात पर अटक रही है, वह है—युद्ध के क़ैदियों का लौटाया जाना. सन 1949 के जिनेवा कनवैनशन की दफ़ा 108 में लिखा है कि 'जब लड़ाई बन्द हो जावे तो फ़ौरन लड़ाई के सब क़ैदी छोड़ दिये जायं और अपने अपने देश को वापिस कर दिये जायं' और इसमें किसी तरह की देर न की जाय. कैसांग के समझौते के मसौदे में, जिसे दोनों पार टयां मंजूर कर चुकी हैं, दफ़ा 51 में बहुत साफ़ लिखा है: 'जिस समय सुलह का समझौता अमल में आएगा फ़ौरन जितनी जल्दी हो सकेगा दोनों तरफ़ के लड़ाई के क़ैदी आज़ाद कर दिये जायंगे और अपने अपने देश लौटा दिये जायंगे. इस समझौते के दसखत से पहले दोनों तरफ़ के क़ैदियों की जो फ़हरिस्तें दोनों पारटी एक दूसरे को दे चुकी हैं और जिनका मिलान किया जा चुका है उन्हीं फ़हरिस्तों के अनुसार क़ैदी रिहा किये जायंगे और वापिस किये जायंगे' इन दोनों समझौतों पर अमरीका के दसखत हैं. फिर भी अमरीका बहुत से चीनी और कोरियाई क़ैदियों को ज़बरदस्ती रोकने की कोशिश कर रहा है. और उन्हें सिगमन री और च्यांग काई शेक के हवाले करना चाहता है ताकि उन्हें अपने हमलों की आग में झोंक सके. क़ैदियों से ज़बरदस्ती और धोका दे कर अंगूठे के निशान लिये जा रहे हैं. इस तरह के जाली निशान भी बनाए गए हैं. क़ैदियों के जिस्मों पर अपमान जनक शब्द गोदे जा रहे हैं. वग़ैरा वग़ैरा एक तरफ़ यह किया जा रहा है, दूसरी तरफ़ कोजे टापू के अन्दर इन्हीं बेबस निहत्थे क़ैदियों के ऊपर गोले और आग बरसाई जा रही है. बेशुमार को क़त्ल कर दिया गया है. कोरिया और चीन में जो कुछ हुआ है वह आप सब जानते ही हैं. पर इन जुल्म के तरीक़ों से अमरीका को फ़ायदा नहीं हो सकता. कोरिया की जनता इनसे और भी ज़ियादा डटकर अपनी आज़ादी के लिये लड़ने और मिटने

قائم ہوں' اور جاپان کا وشو شانتی کے حق میں ہونا امریکہ کی اس تجویز کےلئے سب سے بڑا دھکا ہوگا. آسٹریلیا کی جنتا امریکہ اورجاپان کی الگ سندھی کے خلاف ہے."

کوریا کی تین مانگیں

کوریا کے نمائندوں کے نیتا ہان سلیا نے کہا کہ :—

"آج آپ اور ہم ایک سو ساٹھ کروڑ لوگوں کے نمائندے یہاں یہ بتانے کے لئے جمع ہوئے ہیں کہ ہم سب جنگ کے خلاف ہیں اور امن چاہتے ہیں. جو لڑائی اس سمے کوریا میں ہو رہی ہے وہ اتنی دردناک ہے کہ منوشیہ جاتی کے اتہاس میں اس کی مثال نہیں ملتی. اگر کوریا کی لڑائی بند نہ ہوئی تو ایشیا کی یا پیسفک علاقے کی کوئی قوم لڑائی کے خطرے سے نہیں بچ سکتی.

"صلح کی بات چیت اس سمے کیول ایک بات پر اٹک رہی ہے' وہ ہے—یدھ کے قیدیوں کا لوٹایا جانا. سن 1949 کے جنیوا کنوینشن کی دفعہ 108 میں لکھا ہے کہ 'جب لڑائی بند ہو جاوے تو فوراً لڑائی کے سب قیدی چھوڑ دئے جائیں اور اپنے اپنے دیش کو واپس کر دئے جائیں' اور اس میں کسی طرح کی دیر نہ کی جائے. کئی سانگ کے سمجھوتے کے مسودہ میں' جسے دونوں پارٹیاں منظور کر چکی ہیں' دفعہ 51 میں بہت صاف لکھا ہے: جس سمے صلح کا سمجھوتہ عمل میں آئیگا فوراً جتنی جلدی ہوسکیگا دونوں طرف کے لڑائی کے قیدی آزاد کردئے جائینگے اور اپنے اپنے دیش لوٹا دئے جائینگے. اس سمجھوتے کے دستخط سے پہلے دونوں طرف کے قیدیوں کی جو فہرستیں دونوں پارٹی ایک دوسرے کو دے چکی ہیں اور جنکا ملان کیا جا چکا ہے انہیں فہرستوں کے انوسار قیدی رہا کئے جائینگے اور واپس کئے جائینگے' ان دونوں سمجھوتوں پر امریکہ کے دستخط ہیں' پھر بھی امریکہ بہت سے چینی اور کوریائی قیدیوں کو زبردستی روکنے کی کوشش کر رہا ہے' اور انہیں سنگمن ری اور چیانگ کائی شیک کے حوالے کرنا چاہتا ہے تاکہ انہیں اپنے حملوں کی آگ میں جھونک سکے. قیدیوں سے زبردستی اور دھوکا دیکر انگوٹھے کے نشان لئے جا رہے ہیں. اس طرح کے جالی نشان بھی بنائے گئے ہیں قیدیوں کے جسموں پر اپمانجنک شبد گودے جا رہے ہیں وغیرہ وغیرہ. ایک طرف یہ کیا جا رہا ہے' دوسری طرف کوجے ٹاپو کے اندر انہیں بے بس نہتے قیدیوں کے اوپر گولے اور آگ برسائی جا رہی ہے. بیشمار کو قتل کردیا گیا ہے. کوریا اور چین میں جو کچھ ہوا ہے وہ آپ سب جانتے ہی ہیں. پر ان ظلم کے طریقوں سے امریکہ کو فائدہ نہیں ہوسکتا. کوریا کی جنتا ان سے اور بھی زیادہ ڈٹ کر اپنی آزادی کے لئے لڑنے اور مٹنے

अपने फ़ौजी अड्डे बनावे. हर देश के लोग अपने देश में जिस तरह की चाहें हकूमत रखें और जिस तरह से चाहें रहें सहें. सब देशों के बीच बराबरी और सब के भले के आधार पर तिजारत और कलचरी लेन देन हो. इसमें किसी के साथ जबरदस्ती न हो. तिजारत और लेन देन पर अन्तर क़ौमी रुकावटें और इजारे सब तोड़ दिये जावें.

(v) जंग के लिये प्रोपेगंडा और क़ौमों क़ौमों में नफ़रत भड़काने वाला प्रोपेगंडा बिलकुल बन्द किया जावे, काले, भूरे या पीले लोगों के ख़िलाफ़ भेद भाव बिलकुल बन्द कर दिया जावे. शान्ति आन्दोलन पर जहां जहां जो जो रुकावटें हैं सब हटा ली जावें.

"यह हमारी सब की मांगें हैं. दुनिया की जनता हमारे साथ है. सचाई और इनसाफ़ हमारे साथ है. एक बार हम एशिया में अमन क़ायम कर लें तो दुनिया में अमन क़ायम हो जावे. हम सबको अपने सारे भेद भाव भूल कर इस काम का बीड़ा उठाना चाहिये. दुनिया में जंग चाहने वाले आख़िर मुट्ठी भर हैं. हम अगर धीरज और मज़बूत इरादे के साथ इस काम में जुट जावें तो विजय हमारी है."

जापानी जनता की आवाज़

कोमो जो के बाद जापानी नुमाइन्दे तोगो कामेदा ने कहा कि:—

"जापानी जनता अपने देश के ऊपर अमरीकी फ़ौजी क़ब्ज़े और जापान के फिर से फ़ौजियाए जाने के बिलकुल ख़िलाफ़ है.

"हम चाहते हैं कि सैन फ़्रानसिसको का सुलहनामा रद्द कर दिया जावे और उसकी जगह अब तक के अन्तर क़ौमी समझौतों के अनुसार सब देशों को साथ ले कर एक सुलहनामा किया जावे जिस से सारे एशिया में और पैसिफ़िक इलाक़े में सच्ची और टिकाऊ शान्ति क़ायम हो.

"हमारी मांग है कि जापान की भूमि के ऊपर एक भी विदेशी सिपाही न रहे, किसी भी विदेशी ताक़त का एक भी फ़ौजी अड्डा न रहे और हमें अमन से, स्वाधीनता से, स्वतंत्रता से और देश की जनता की राय के अनुसार रहने दिया जाय. हमारी इन मांगों के पूरा होने में ही जापान का और एशिया और पैसिफ़िक के सब लोगों का भला है."

आस्ट्रेलिया के विद्वान ईसाई पादरी रेवरेन्ड विकटर एम. के. जेम्स ने कहा कि :—

"अमरीका की सरकार नये चीन पर और एशिया के दूसरे देशों पर जो अपनी आज़ादी बनाए रखने के लिये चेश्टा कर रहे हैं, हमला करने की तजवीज़ें कर रही है. इसके लिये वह जापान को अपनी छावनी बना रही है. जापान की सच्ची आज़ादी, वहां सच्ची लोकशाही का

پر فوجی اڈے بناوے. ہر دیش کے لوگ اپنے دیش میں جس طرح کی چاہیں حکومت رکھیں اور جس طرح سے چاہیں رہیں سہیں. سب دیشوں کے بیچ برابری اور سب کے بھلے کے آدھار پر تجارت اور کلچری لین دین ہو. اس میں کسی کے ساتھ زبردستی نہ ہو. تجارت اور لین دین پر انترقومی رکاوٹیں اور اجارے سب توڑ دئے جاویں.

(v) جنگ کے لئے پروپیگنڈا اور قوموں قوموں میں نفرت بھڑکانے والا پروپیگنڈا بالکل بند کیا جاوے، کالے، بھورے یا پیلے لوگوں کے خلاف بھید بھاو بالکل بند کر دیا جاوے. شانتی آندولن پر جہاں جہاں جو رکاوٹیں ہیں سب ہٹالی جاویں.

"یہ ہماری سب کی مانگیں ہیں. دنیا کی جنتا ہمارے ساتھ ہے. سچائی اور انصاف ہمارے ساتھ ہے. ایک بار ہم ایشیا میں امن قائم کرلیں تو دنیا میں امن قائم ہو جاوے. ہم سب کو اپنے سارے بھید بھاؤ بھول کر اس کام کا بیڑا اٹھانا چاہئے. دنیا میں جنگ چاہنے والے آخر مٹھی بھر ہیں. ہم اگر دھیرج اور مضبوط ارادے کے ساتھ اس کام میں جٹ جاویں تو وجے ہماری ہے."

جاپانی جنتا کی آواز

کوموجو کے بعد جاپانی نمائندے توگو کا میدا نے کہا کہ:—

"جاپانی جنتا اپنے دیش کے اوپر امریکی فوجی قبضے اور جاپان کے پھر سے فوجیائے جانے کے بالکل خلاف ہے.

"ہم چاہتے ہیں کہ سین فرانسسکو کا صلحنامہ رد کر دیا جاوے اور اس کی جگہ اب تک کے انترقومی سمجھوتوں کے انوسار سب دیشوں کو ساتھ لیکر ایک صلحنامہ کیا جاوے جس سے سارے ایشیا میں اور پیسفک علاقے میں سچی اور ٹکاؤ شانتی قائم ہو.

"ہماری مانگ ہے کہ جاپان کی بھومی کے اوپر ایک بھی ودیشی سپاہی نہ رہے، کسی بھی ودیشی طاقت کا ایک بھی فوجی اڈا نہ رہے اور ہمیں امن سے، سوادھینتا سے، سوتنترتا سے اور دیش کی جنتا کی رائے کے انوسار رہنے دیا جائے. ہماری ان مانگوں کے پورا ہونے میں ہی جاپان کا اور ایشیا اور پیسفک کے سب لوگوں کا بھلا ہے."

آسٹریلیا کے ودوان عیسائی پادری ریورینڈ وکٹر ایم. کے. جیمس نے کہا کہ :—

"امریکہ کی سرکار نئے چین پر اور ایشیا کے دوسرے دیشوں پر جو اپنی آزادی بنائے رکھنے کے لئے چیشٹا کر رہے ہیں، حملہ کرنے کی تجویزیں کر رہی ہے. اس کے لئے وہ جاپان کو اپنی چھاونی بنا رہی ہے. جاپان کی سچی آزادی، وہاں سچی لوکشاہی کا

ज़मीन के चारों तरफ़ इक्वेटर के ऊपर से तैंतालीस चक्कर पूरे कर लेगा. चीन के खेतों और चीन के कारखानों की पैदावार जितनी आजकल बढ़ी हुई है उतनी चीन के इतिहास में पहले कभी नहीं हुई. हमारा क़ौमी बजट अब सालाना बचत का बजट है. देश भर में चीज़ों की क़ीमतें घट कर ठीक जगह टिक गई हैं. आम लोगों का रहन सहन बहुत ऊंचा हो गया है. बेकारी बुनियादन ख़तम है. सारा देश आगे को बढ़ रहा है. यह सब काम युद्ध में क़ायम नहीं रह सकते.

"रूस और चीन बार बार अन्तर क़ौमी कानफ़रेन्सों में यह तजवीज़ें रख चुके हैं कि सब देशों के हथियार और फ़ौजें कम की जावें, अन्तर क़ौमी शान्ति के अहदनामे किये जावें और अलग अलग तरह की हकूमतों और अलग तरह के रहन सहन होते हुए भी सब मुल्क मिल कर अमन से रहें.

को मो जो के पांच सुझाव

"हमारी इस कानफ़रेन्स की दुनिया के इतिहास में एक ख़ास जगह है, उसका एक ख़ास मोल है. मैं कानफ़रेन्स के विचार के लिये नीचे लिखे पांच सुझाव रखता हूँ :—

(i) यूनाइटेड नेशन्स चारटर और बाद के अहदनामों के मुताबिक़ जापान के साथ सब देशों को मिला कर एक नया सुलहनामा होना चाहिये, और जापान से दूसरे देशों की सब फ़ौजें हटा ली जानी चाहियें.

(ii) कोरिया की लड़ाई और इसी तरह की दूसरी सब लड़ाइयां बन्द की जावें. इसके लिये कोरिया में और जिनेवा वग़ैरा में जो आपसी समझौते और अहदनामे हो चुके हैं उनकी शरतों पर अमल किया जावे. चीनी और अमरीकी सब बाहर की फ़ौजों को कोरिया से हटा लिया जावे, दोनों तरफ़ के लड़ाई के क़ैदियों को बिला शर्त अपने अपने देश लौटा दिया जावे. कोरिया वालों को आज़ाद छोड़ा जावे कि वह अपने घरेलू मामलों का जिस तरह और जो चाहे फ़ैसला करें. इसी तरह वीत नाम, मलाया, बीच एशिया और पच्छिम एशिया के देशों के अन्दर के मामलों में कोई बाहर की ताक़त दख़ल न दे. वह जिस तरह चाहें अपने मुल्कों का फ़ैसला करें.

(iii) अमरीका, इंगलैन्ड, फ़्रांस, रूस और चीन मिल कर आपस में अहदनामा करें कि हम पांचों अमन क़ायम रखेंगे, सब देशों के हथियारों को कम करेंगे, ऐटम बम, बीमारी बम और दूसरे ज़हरीले बमों के इस्तेमाल को बन्द करेंगे.

(iv) सब देशों के लोगों की क़ौमी आज़ादी का मान किया जावे. कोई देश दूसरे देश की ज़मीन, पानी या हवा पर ज़बरदस्ती दख़ल न दे, और न किसी दूसरे देश में

زمین کے چاروں طرف ایکوئٹر کے اوپر سے تینتالیس چکر پورے کرلیگا . چین کے کھیتوں اور چین کے کارخانوں کی پیداوار جتنی آجکل بڑھی ہوئی ہے اتنی چین کے اتہاس میں پہلے کبھی نہیں ہوئی. ہمارا قومی بجٹ اب سالانہ بچت کا بجٹ ہے. دیش بھر میں چیزوں کی قیمتیں گھٹ کر ٹھیک جگہ ٹک گئی ہیں. عام لوگوں کا رہن سہن بہت اونچا ہوگیا ہے' بیکاری بنیادن ختم ہے . سارا دیش آگے کو بڑھ رہا ہے . یہ سب کام یدھ میں قائم نہیں رہ سکتے.

"روس اور چین بار بار انٹرقومی کانفرنسوں میں یہ تجویزیں رکھ چکے ہیں کہ سب دیشوں کے ہتھیار اور فوجیں کم کی جاویں' انٹرقومی شانتی کے عہدنامہ کئے جاویں اور الگ الگ طرح کی حکومتوں اور الگ الگ طرح کے رہن سہن ہوتے ہوئے بھی سب ملک مل کر امن سے رہیں .

کوموجو کے پانچ سجھاؤ

"ہماری اس کانفرنس کی دنیا کے اتہاس میں ایک خاص جگہ ہے' اس کا ایک خاص مول ہے. میں کانفرنس کے وچار کے لئے نیچے لکھے پانچ سجھاؤ رکھتا ہوں :—

(i) یونائیٹڈ نیشنس چارٹر اور بعد کے عہدناموں کے مطابق جاپان کے ساتھ سب دیشوں کو ملاکر ایک نیا صلح‌نامہ ہونا چاہئے' اور جاپان سے دوسرے دیشوں کی سب فوجیں ہٹا لی جانی چاہئیں .

(ii) کوریا کی لڑائی اور اس طرح کی دوسری سب لڑائیاں بند کی جاویں. اس کے لئے کوریا میں اور جنیوا وغیرہ جو آپسی سمجھوتے اور عہدنامے ہوچکے ہیں ان کی شرطوں پر عمل کیا جاوے . چینی اور امریکی سب باہر کی فوجوں کو کوریا سے ہٹا لیا جاوے' دونوں طرف کے لڑائی کے قیدیوں کو بلا شرط اپنے اپنے دیش لوٹا دیا جاوے . کوریا والوں کو آزاد چھوڑا جاوے کہ وہ اپنے گھریلو معاملوں کا جس طرح اور جو چاہیں فیصلہ کریں. اسی طرح ویت‌نام' ملایا' بیچ ایشیا اور پچھم ایشیا کے دیشوں کے اندر کے معاملوں میں کوئی باہر کی طاقت دخل نہ دے . وہ جس طرح چاہیں اپنے ملکوں کا فیصلہ کریں .

(iii) امریکہ' انگلینڈ' فرانس' روس اور چین مل کر آپس میں عہدنامہ کریں کہ ہم پانچوں امن قائم رکھیں گے' سب دیشوں کے ہتھیاروں کو کم کریں گے' ایٹم بم' بیماری بم اور دوسرے زہریلے بموں کے استعمال کو بند کریں گے .

(iv) سب دیشوں کے لوگوں کی قومی آزادی کا مان کیا جاوے. کوئی دیش دوسرے دیش کی زمین' پانی یا ہوا پر زبردستی دخل نہ دے' اور نہ کسی دوسرے دیش میں

लाख आदमियों ने हिस्सा लिया, गोलियां चलीं, जानें गईं. एशिया की और दुनिया की न्याय प्रेमी जनता बहादुर जापानियों की इन कोशिशों के साथ है.

"खुद अमरीका में मार्च सन 1949 से अमन की तहरीक बराबर ज़ोर पकड़ती जा रही है. जब से कोरिया में लड़ाई छिड़ी है, अमरीका की जनता ने बार बार और जगह जगह इस लड़ाई को बुरा कहा है. इनमें अमरीका के मशहूर साइन्सदां प्रोफ़ेसर फ़िलिप मोरीसन जैसे लोग भी शामिल हैं. जून सन 1951 में अमरीका के अन्दर एक नैशनल पीस कांगरेस हुई जिसमें अड़तालीस अमरीकी रियासतों ने हिस्सा लिया. इस कांगरेस ने यह मांग की कि कोरिया की लड़ाई फ़ौरन बन्द की जावे और सब बड़ी बड़ी ताक़तें मिल कर बात चीत से सारे आपसी सवालों का फ़ैसला करें.

"इन्डोनीशिया में पांच लाख से ऊपर आदमी स्टाकहाल्म पीस अपील पर और छै लाख से ऊपर फ़ाइव पावर पीस पैक्ट की अपील पर दसख़त कर चुके हैं. बरमा में सब बड़े बड़े शहरों में यहां तक कि क़सबों और गावों में भी पीस कमेटियां क़ायम हो चुकी हैं. पाकिस्तान में अकेले लाहौर के अन्दर पचास हज़ार से ऊपर आदमियों ने हाल की पीस कांगरेस में हिस्सा लिया. इसी तरह की ख़बरें थाईलैंड और सीलोन से आ रही हैं.

"बीच एशिया और पच्छिम एशिया के मुलकों में वहां की क़ौमी आज़ादी की तहरीकें ही विश्व शान्ति की तहरीकें हैं. आस्ट्रेलिया, न्यू ज़ीलैंड, दक्खिन अमरीका के देश और कैनेडा में भी शान्ति आन्दोलन जड़ पकड़ता और बढ़ता जा रहा है. मंगोलिया में हर बालिग़ मर्द और औरत ने चाहे वह किसी मज़हब का हो दोनों ने पीस अपीलों पर दसख़त किये हैं.

"सोवियत रूस में सरकार और जनता दोनों विश्व शान्ति को बनाए रखने के लिये दिल से कोशिश कर रहे हैं.

"चीनी लोग अपने तजरबे से युद्ध से होने वाली बरबादी और अमन के फ़ायदों को ख़ूब समझ गए हैं. चीन में चौंतीस करोड़ से ऊपर आदमियों ने फ़ाइव पावर पीस पैक्ट की अपील पर दसख़त किये, यानी इस अपील पर कि दुनिया की पांच बड़ी बड़ी ताक़तें यानी अमरीका, इंगलैन्ड, फ़्रांस रूस और चीन न लड़ने का अहद करें और मिल बैठ कर बात चीत से आपस के सब झगड़ों को तय कर लें. चीन में अपनी सिंचाई की नहरों के लिये इन तीन बरस में हमने जितनी मिट्टी खोद कर फेंक दी है वह पनामा की नहर के दस गुने से ज़ियादा और नहर स्वेज़ के तेईस गुने से ज़ियादा है. उस मिट्टी का अगर एक ऐसा बांध बनाया जावे जो एक मीटर चौड़ा और एक मीटर ऊंचा हो तो वह बांध

لاکھ آدمیوں نے حصہ لیا، گولیاں چلیں، جانیں گئیں۔ ایشیا کی اور دنیا کی نیائے پریمی جنتا بہادر جاپانیوں کی اِن کوششوں کے ساتھ ہے۔

"خود امریکہ میں مارچ سن 1949 سے امن کی تحریک برابر زور پکڑتی جا رہی ہے۔ جب سے کوریا میں لڑائی چھڑی ہے، امریکہ کی جنتا نے بار بار اور جگہ جگہ اِس لڑائی کو بُرا کہا ہے۔ ان میں امریکہ کے مشہور سائنس داں پروفیسر فلپ موریسن جیسے لوگ بھی شامل ہیں۔ جون سن 1951 میں امریکہ کے اندر ایک نیشنل پیس کانگریس ہوئی جس میں اڑتالیس امریکی ریاستوں نے حصہ لیا۔ اس کانگریس نے یہ مانگ کی کہ کوریا کی لڑائی فوراً بند کی جاوے اور سب بڑی بڑی طاقتیں مل کر بات چیت سے سارے آپسی سوالوں کا فیصلہ کریں۔

" انڈونیشیا میں پانچ لاکھ سے اوپر آدمی اسٹاک ہالم پیس اپیل پر اور چھ لاکھ سے اوپر فایو پاور پیس پیکٹ کی اپیل پر دستخط کر چکے ہیں۔ برما میں سب بڑے بڑے شہروں میں یہاں تک کہ قصبوں اور گاؤں میں بھی پیس کمیٹیاں قائم ہو چکی ہیں۔ پاکستان میں اکیلے لاہور کے اندر پچاس ہزار سے اوپر آدمیوں نے حال کی پیس کانگریس میں حصہ لیا۔ اسی طرح کی خبریں تھائی لینڈ اور سیلون سے آ رہی ہیں۔

"بیچ ایشیا اور پچھم ایشیا کے ملکوں میں وہاں کی قومی آزادی کی تحریکیں ہی وشوشانتی کی تحریکیں ہیں۔ آسٹریلیا، نیوزی لینڈ، دکھن امریکہ کے دیش اور کناڈا میں بھی شانتی آندولن جڑ پکڑتا اور بڑھتا جا رہا ہے۔ منگولیا میں ہر بالغ مرد اور عورت نے چاہے وہ کسی مذہب کا ہو دونوں نے پیس اپیلوں پر دستخط کئے ہیں۔

"سوویت روس میں سرکار اور جنتا دونوں وشوشانتی کو بنائے رکھنے کے لئے دل سے کوشش کر رہے ہیں۔

"چینی لوگ اپنے تجربہ سے یدھ سے ہونے والی بربادی اور امن کے فائدوں کو خوب سمجھ گئے ہیں۔ چین میں چونتیس کروڑ سے اوپر آدمیوں نے فایو پاور پیس پیکٹ کی اپیل پر دستخط کئے، یعنی اس اپیل پر کہ دنیا کی پانچ بڑی بڑی طاقتیں یعنی امریکہ، انگلینڈ، فرانس، روس اور چین نہ لڑنے کا عہد کریں اور مل بیٹھ کر بات چیت سے آپس کے سب جھگڑوں کو طے کر لیں۔ چین میں اپنی سنچائی کی نہروں کے لئے ان تین برس میں ہم نے جتنی مٹی کھود کر پھینک دی ہے وہ پناما کی نہر کے دس گنے سے زیادہ اور نہر سویز کے تیئس گنے سے زیادہ ہے۔ اس مٹی کا اگر ایک ایسا باندھ بنایا جاوے جو ایک میٹر چوڑا اور ایک میٹر اونچا ہو تو وہ باندھ

में केवल माली नुक़सान एक हज़ार आठ सौ करोड़ रुपए से ऊपर का हुआ. वीतनाम में उसी हमले के कारन बीस लाख से ऊपर आदमी भूक से मरे. उसी जंग में हिन्दुस्तान में माल के आने जाने के साधन ऐसे बिगड़े कि पैंतीस लाख से ऊपर आदमी अकाल का शिकार हुए. आस्ट्रेलिया पर भी बम फेंके गए, जिसके निशान आज तक मौजूद हैं. और जापान को इस सबसे क्या मिला ? अट्ठारह लाख तीस हज़ार बेवाएं और बीस लाख अनाथ बच्चे ! हीरो शीमा और नागा साकी पर दो बम ! और चार सौ सत्तानवे करोड़ अमरीकी डालर जो छै बरस के अन्दर अमरीकी फ़ौज के ख़र्च के लिये जापान को देने पड़े !

विश्व शान्ति को नये ख़तरे

"उस महायुद्ध के घाव अभी भर नहीं पाए हैं कि ठीक उसी काम के लिये जापान को ज़बरदस्ती और अधिक भयंकर रूप में तैयार किया जा रहा हैं. बीमारी बमों और दूसरे ज़हरीली बमों के कारख़ाने जापान में तेज़ी के साथ बढ़ रहे हैं, और लाखों की फ़ौजें खड़ी की जा रही हैं.

"एक नया 'पैसिफ़िक पैक्ट ब्लाक' तैयार किया जा रहा है जिसका मरकज़ जापान होगा. उत्तर में बैरिंग की खाड़ी से लेकर एलूशियन्स, जापान, ताइवान, फ़िलिप्पाइन और आस्ट्रेलिया होते हुए दक्खिन में न्यूज़ीलैन्ड तक बड़ी बड़ी फ़ौजों, फ़ौजी छावनियों और तरह तरह के हथियारों का एक लगातार सिलसिला खड़ा हो रहा है जिसकी सबसे आगे की छावनियां कोरिया में होंगी. एशिया और अफ़रीका के देशों की आज़ादी और दुनिया की शान्ति के लिये इससे बड़ा ख़तरा आज तक पैदा न हुआ था.

"जापान के पुराने हाकिमों में से बहुत से लोभ में आ कर अमरीकी फ़ौजी अफ़सरों के हाथों में खेल रहे हैं. जापान का फ़ौजी बजट बढ़ता जा रहा है. वहां के उद्योग धन्दे नश्ट हो रहे हैं. छै हज़ार सात सौ से ऊपर कारख़ानों का दिवाला निकल चुका है. बेकारी इतनी बढ़ गई है कि इस समय बेकारों की तादाद एक करोड़ अस्सी लाख तक पहुंच चुकी है. जापानी सरकार के अपने ऐलान के अनुसार सन 1951 के पिछले छै महीने में वहां के छै सौ अट्ठावन मज़दूरों और किसानों ने खुले तौर पर अपने बेटों और बेटियों को बेचने की कोशिश की. चोरी छिप्पे से बेचने वालों की गिनती कौन बता सकता है. जापानी अख़बार 'असाही शिमबुम' के अनुसार सन 1951 में बाइस हज़ार छै सौ बाइस जापानियों ने आत्म हत्या की. फिर भी अमरीका सारे जापान को फिर से नए युद्ध की आग में झोंक देने पर तुला हुआ है.

शान्ति के लिये नये क़दम

"पहली मई सन 1952 को जापान में इस अमरीकी पालिसी के ख़िलाफ़ बड़े बड़े प्रदर्शन हुए जिन में चालीस

میں کیول مالی نقصان ایک ہزار آٹھ سو کروڑ روپیہ سے اوپر کا ہوا ۔ ویت نام میں اسی حملے کے کارن بیس لاکھ سے اوپر آدمی بھوک سے مرے۔ اسی جنگ میں ہندستان میں مال کے آنے جانے کے سادھن ایسے بگڑے کہ پینتیس لاکھ سے اوپر آدمی اکال کا شکار ہوئے ۔ آسٹریلیا پر بھی بم پھینکے گئے' جس کے نشان آج تک موجود ہیں ۔ اور جاپان کو اس سب سے کیا ملا ؟ اٹھارہ لاکھ تیس ہزار بیوائیں اور بیس لاکھ اناتھ بچے ! ہیروشیما اور ناگا ساکی پر دو بم ! اور چار سو ستانوے کروڑ امریکی ڈالر جو چھ برس کے اندر امریکی فوج کے خرچ کے لئے جاپان کو دینے پڑے !

وشو شانتی کو نئے خطرے

" اس مہایدھ کے گھاؤ ابھی بھر نہیں پائے ہیں کہ ٹھیک اسی کام کے لئے جاپان کو زبردستی اور ادھک بھینکر روپ میں تیار کیا جا رہا ہے ۔ بیماری بموں اور دوسرے زہریلے بموں کے کارخانے جاپان میں تیزی کے ساتھ بڑھ رہے ہیں' اور لاکھوں کی فوجیں کھڑی کی جارہی ہیں ۔

" ایک نیا 'پیسفک پیکٹ بلاک' تیار کیا جا رہا ہے جس کا مرکز جاپان ہوگا ۔ اتر میں بیرنگ کی کھاڑی سے لے کر ایلوشینس' جاپان' طائی وان' فلپائن اور آسٹریلیا ہوتے ہوئے دکھن میں نیوزی لینڈ تک بڑی بڑی فوجوں' فوجی چھاؤنیوں اور طرح طرح کے ہتھیاروں کا ایک لگاتار سلسلہ کھڑا ہو رہا ہے جس کی سب سے آگے کی چھاؤنیاں کوریا میں ہونگی ۔ ایشیا اور افریقہ کے دیشوں کی آزادی اور دنیا کی شانتی کے لئے اس سے بڑا خطرہ آج تک پیدا نہ ہوا تھا ۔

" جاپان کے پرانے حاکموں میں سے بہت سے لوبھ میں آکر امریکی فوجی افسروں کے ہاتھوں میں کھیل رہے ہیں ۔ جاپان کا فوجی بجٹ بڑھتا جا رہا ہے ۔ وہاں کے ادیوگ دھندے نشٹ ہو رہے ہیں ۔ چھ ہزار سات سو سے اوپر کارخانوں کا دیوالہ نکل چکا ہے ۔ بیکاری اتنی بڑھ گئی ہے کہ اس سمے بیکاروں کی تعداد ایک کروڑ اسی لاکھ تک پہنچ چکی ہے ۔

جاپانی سرکار کو اپنے اعلان کے انوسار سن 1951 کے پچھلے چھ مہینے میں وہاں کے چھ سو اٹھاون مزدوروں اور کسانوں نے کھلے طور پر اپنے بیٹوں اور بیٹیوں کو بیچنے کی کوشش کی ۔ چوری چھپے سے بیچنے والوں کی گنتی کون بتا سکتا ہے ۔ جاپانی اخبار ' اساھی شم بم ' کے انوسار سن 1951 میں بائیس ہزار چھ سو بائیس جاپانیوں نے آتم ہتھیا کی ۔ پھر بھی امریکہ سارے جاپان کو پھر سے نئے یدھ کی آگ میں جھونک دینے پر تلا ہوا ہے ۔

شانتی کے لئے نئے قدم

" پہلی مئی سن 1952 کو جاپان میں اس امریکی پالیسی کے خلاف بڑے بڑے پردرشن ہوئے جلسمیں چالیس

में अमरीका के पूंजीपति अपने लिये बड़ी बड़ी सहूलतें और रिआयतें हासिल करते जा रहे हैं. इन सब देशों पर धीरे धीरे अमरीका का माली, राजकाजी और फ़ौजी पंजा कसता जा रहा है. वीत नाम और मलाया में अमरीका वहां के लोगों की राय के ख़िलाफ़ वहां के साम्राजियों को बढ़ावा और मदद दे रहा है. एक ही देश के लोगों में नसल और धर्म मज़हब के झगड़े खड़े कर के उन्हें एक दूसरे से लड़ाया जा रहा है. ईरान, तुरकी, इराक़, सीरिया, लैबनान वग़ैरा में सिक्कों की दर इस तरह घटाई बढ़ाई जा रही है कि इन देशों की खेती, दस्तकारी और तिजारत सब मटिया मेट हो रही है. इन सब देशों की माली हालत हद दरजे की ख़तरनाक है. पिछले युद्ध से पहले इराक़ में, तुरकी में और ईरान में एक सौ रुपए में एक आदमी जितनी अच्छी तरह रह सकता था ठीक उतनी अच्छी तरह रहने के लिये अब इराक़ में एक आदमी को चार सौ रुपए, तुरकी में पांच सौ रुपए और ईरान में साढ़े सात सौ रुपए की ज़रूरत है.

जंग के दर्दनाक नतीजे

"30 जून सन 1952 को ख़तम होने वाले साल में प्रेज़ीडेन्ट ट्रूमैन के बयान के मुताबिक़ अमरीकी सरकार का कुल ख़र्च आठ हज़ार पांच सौ चालीस करोड़ अमरीकी डालर था, जिस में से छै हज़ार पांच सौ करोड़ अमरीकी डालर, यानी कुल बजट का छिहत्तर फ़ी सदी से ज़ियादा कोरिया में लड़ने और हथियार और फ़ौजें बढ़ाने के लिये ख़र्च किया गया. इस रक़म में अगर हम उन रक़मों को भी मिला लें जो किसी न किसी रूप में लड़ाई से ही सम्बन्ध रखती थीं तो कुल बजट का साढ़े अठ्ठासी फ़ी सदी अमरीका ने लड़ाई पर ख़र्च किया. प्रेज़ीडेन्ट ट्रूमैन ने कांगरेस के सामने तक़रीर करते हुए स्वीकार किया है कि इस भारी फ़ौजी ख़र्च के कारन देश के कुछ 'छोटे छोटे उद्योग धन्दों को काफ़ी नुक़सान उठाना पड़ेगा' और देश की मामूली जनता को अपनी रोज़ की ज़िन्दगी में कुछ कश्ट भोगने होंगे.

"पूरब में जापान को और पच्छिम में जरमनी को फिर से तरह तरह के हथियारों से लैस किया जा रहा है.

"पिछले महायुद्ध से दुनिया की जो बरबादी हुई उस पर ज़रा नज़र डालिये. जापानी हमले के कारन केवल चीन के अन्दर एक करोड़ से ऊपर आदमी मारे गए और पांच हज़ार करोड़ अमरीकी डालर से ज़ियादा का माल बरबाद हुआ. इन्डोनीशिया में जापानी हमले के कारन बीस लाख से ऊपर मज़दूर बेगार करते हुए मरे और एक लाख से ऊपर इन्डोनीशियन देश भक्त जापानी फ़ौजी जेलख़ानों में काट डाले गए. फ़िलिप्पाइन टापुओं में उस हमले के कारन ग्यारह लाख से ऊपर आदमियों की जानें गईं और साढ़े पांच सौ करोड़ अमरीकी डालर का माल बरबाद हुआ. बरमा

میں امریکہ کے پونجی پتی اپنے لئے بڑی بڑی سہولتیں اور رعائتیں حاصل کرتے جا رہے ہیں۔ اِن سب دیشوں پر دھیرے دھیرے امریکہ کا مالی، راج کاجی اور فوجی پنجہ کستا جا رہا ہے۔ ویت نام اور ملایا میں امریکہ وہاں کے لوگوں کی رائے کے خلاف وہاں کے سامراجیوں کو بڑھاوا اور مدد دے رہا ہے۔ ایک ہی دیش کے لوگوں میں نسل اور دھرم مذہب کے جھگڑے کھڑے کر کے انہیں ایک دوسرے سے لڑایا جا رہا ہے۔ ایران، ترکی، عراق، سیریا، لبنان وغیرہ میں سکوں کی در اس طرح گھٹائی بڑھائی جا رہی ہے کہ اِن دیشوں کی کھیتی، دستکاری اور تجارت سب مٹیامیٹ ہو رہی ہے۔ ان سب دیشوں کی مالی حالت حد درجے کی خطرناک ہے۔ پچھلے یدھ سے پہلے عراق میں، ترکی میں اور ایران میں ایک سو روپیہ میں ایک آدمی جتنی اچھی طرح رہ سکتا تھا ٹھیک اتنی اچھی طرح رہنے کے لئے اب عراق میں ایک آدمی کو چار سو روپیہ، ترکی میں پانچ سو روپیہ اور ایران میں ساڑھے سات سو روپیہ کی ضرورت ہے۔

جنگ کے درد ناک نتیجے

"30 جون سن 1952 کو ختم ہونے والے سال میں پریزیڈنٹ ٹرومین کے بیان کے مطابق امریکی سرکار کا کل خرچ آٹھ ہزار پانچ سو چالیس کروڑ امریکی ڈالر تھا، جس میں سے چھ ہزار پانچ سو کروڑ امریکی ڈالر، یعنی کل بجٹ کا چھہتر فی صدی سے زیادہ کوریا میں لڑنے اور ہتھیار اور فوجیں بڑھانے کے لئے خرچ کیا گیا۔ اس رقم میں اگر ہم ان رقموں کو بھی ملا لیں جو کسی نہ کسی روپ میں لڑائی سے ہی سمبندھ رکھتی تھیں تو کل بجٹ کا ساڑھے اٹھاسی فی صدی امریکہ نے لڑائی پر خرچ کیا۔ پریزیڈنٹ ٹرومین نے کانگریس کے سامنے تقریر کرتے ہوئے سوئکار کیا ہے کہ اس بھاری فوجی خرچ کے کارن دیش کے کچھ 'چھوٹے چھوٹے ادیوگ دھندوں کو کافی نقصان اٹھانا پڑے گا' اور دیش کی معمولی جنتا کو اپنی روز کی زندگی میں کچھ کشٹ بھوگنے ہونگے۔

"پورب میں جاپان کو اور پچھم میں جرمنی کو پھر سے طرح طرح کے ہتھیاروں سے لیس کیا جا رہا ہے۔

"پچھلے مہا یدھ سے دنیا کی جو بربادی ہوئی اس پر ذرا نظر ڈالئے۔ جاپانی حملے کے کارن کیول چین کے اندر ایک کروڑ سے اوپر آدمی مارے گئے اور پانچ ہزار کروڑ امریکی ڈالر سے زیادہ کا مال برباد ہوا۔ انڈونیشیا میں جاپانی حملے کے کارن بیس لاکھ سے اوپر مزدور بیگار کرتے ہوئے مرے اور ایک لاکھ سے اوپر انڈونیشین دیش بھکت جاپانی فوجی جیل خانوں میں کاٹ ڈالے گئے۔ فلپائن ٹاپوؤں میں اس حملے کے کارن گیارہ لاکھ سے اوپر آدمیوں کی جانیں گئیں اور ساڑھے پانچ سو کروڑ امریکی ڈالر کا مال برباد ہوا۔ برما

आस्ट्रेलिया के ईसाई पादरी रेवरेन्ड कैनन मेनर्ड ने आस्ट्रेलिया की तरफ़ से कहा :—

"मैं राजकाजी आदमी नहीं हूँ, न किसी राजकाजी पार्टी का मेम्बर हूँ, लेकिन एक ईसाई की हैसियत से मुझे पूरा विश्वास है कि किसी भी आदमी के लिये अपने देश की सेवा करने का सब से अच्छा तरीक़ा यही है कि वह सचाई और इनसाफ़ से न डिगे. जब मैं आस्ट्रेलया वापिस जाऊंगा तो कोशिश करूंगा कि जो कुछ मैं ने यहां देखा और जाना है उसकी सच्ची सच्ची रिपोर्ट वहां के लोगों को सुनाऊं."

ब्रिटिश लेबर पार्टी के मेम्बर मशहूर मज़दूर नेता जान बर्नस ने कहा :—

"शान्ति से डर किसे है? आप और मैं या आम जनता शान्ति से नहीं डरती. शान्ति से सिर्फ़ वह डरते हैं जिन्हें यह डर है कि अगर सब देशों की जनता काले गोरे और धर्म मज़हब के भेद भावों से ऊपर उठ कर मिल गई तो उनकी अपनी निजी माली ताक़त को ख़तरा है."

दूसरा इजलास

3 अक्तूबर सन 1952 को उसी हाल में कानफ़रेन्स का दूसरा इजलास हुआ. उस इजलास में वर्ल्ड पीस कौंसिल के नायब चेयर मैन, चीन के मशहूर नेता को मो जो ने कानफ़रेन्स के सामने एक बहुत मारके की तक़रीर की, जिसकी कुछ बातें यह हैं :—

"एशिया और पैसिफ़िक इलाक़े के जिन देशों के नुमाइन्दे इस कानफ़रेन्स में जमा हुए हैं उन की कुल आबादी मिला कर एक सौ साठ करोड़ है यानी कुल दुनिया की आबादी को तीन चौथाई. ये सब लोग केवल एक ही चीज़ चाहते हैं और वह यह कि उन्हें जंग के डर से आज़ाद कर दिया जावे ताकि वह शान्ति के साथ ज़िन्दा रह सकें और फल फूल सकें.

"कोरिया में जंग शुरू हुए दो साल से ऊपर हो चुके. एक साल से ऊपर सुलह की बात चीत होते हुए हो गए. इस समय के अन्दर कोरिया की बरबादी की कहानी आज सारी दुनिया को मालूम है.

अमरीका की दख़लअन्दाज़ी

"सुलह की बात चीत को ख़ामख़ा लम्बा किया जा रहा है. डर है कि लड़ाई और बढ़ न जावे. 'उत्तर एटलान्टिक पैक्ट बन चुका. अब 'पैसिफ़िक पैक्ट' और 'मिडिल ईस्ट पैक्ट, बनाने की तरकीबें हैं. दक्खिन पूरबी एशिया, आस्ट्रेलेशिया, अमरीका के छोटे देशों, बीच एशिया और पच्छिम एशिया, ऐसे ही उत्तर अफ्रीका और पच्छिम योरप में दूसरे देशों के फ़ौजी अड्डे बन रहे हैं. बहुत से देशों की क़ौमी आज़ादी ख़तरे में है. दक्खिन पूरबी एशिया के देशों

آسٹریلیا کے عیسائی پادری ریورنڈ کینن مینرڈ نے آسٹریلیا کی طرف سے کہا :—

" میں راج کاجی آدمی نہیں ہوں، نہ کسی راج کاجی پارٹی کا ممبر ہوں، لیکن ایک عیسائی کی حیثیت سے مجھے پورا وشواس ہے کہ کسی بھی آدمی کے لئے اپنے دیش کی سیوا کرنے کا سب سے اچھا طریقہ یہی ہے کہ وہ سچائی اور انصاف سے نہ ڈگے. جب میں آسٹریلیا واپس جاؤں گا تو کوشش کرونگا کہ جو کچھ میں نے یہاں دیکھا اور جانا ہے اس کی سچی سچی رپورٹ وہاں کے لوگوں کو سناؤں ."

برٹش لیبر پارٹی کے ممبر اور مشہور مزدور نیتا جان برنس نے کہا :—

" شانتی سے ڈر کسے ہے؟ آپ اور میں یا عام جنتا شانتی سے نہیں ڈرتی . شانتی سے صرف وہ ڈرتے ہیں جنہیں یہ ڈر ہے کہ اگر سب دیشوں کی جنتا کالے گورے اور دھرم مذہب کے بھید بھاؤں سے اوپر اٹھکر مل گئی تو ان کی اپنی نجی مالی طاقت کو خطرہ ہے ."

دوسرا اجلاس .

3 اکتوبر سن 1952 کو اسی حال میں کانفرنس کا دوسرا اجلاس ہوا . اس اجلاس میں ورلڈ پیس کونسل کے نائب چیرمین، چین کے مشہور نیتا کوموجو نے کانفرنس کے سامنے ایک بہت معرکے کی تقریر کی، جس کی کچھ باتیں یہ ہیں :—

" ایشیا اور پیسفک علاقے کے جن دیشوں کے نمائندے اس کانفرنس میں جمع ہوئے ہیں ان کی کل آبادی ملا کر ایک سو ساٹھ کروڑ ہے یعنی کل دنیا کی آبادی کا تین چوتھائی . یہ سب لوگ کیول ایک ہی چیز چاہتے ہیں اور وہ یہ کہ انہیں جنگ کے ڈر سے آزاد کر دیا جاوے تاکہ وہ شانتی کے ساتھ زندہ رہ سکیں اور پھل پھول سکیں .

" کوریا میں جنگ شروع ہوئے دو سال سے اوپر ہو چکے . ایک سال سے اوپر صلح کی بات چیت ہوتے ہوئے ہوگئے . اس سمے کے اندر کوریا کی بربادی کی کہانی آج ساری دنیا کو معلوم ہے .

امریکہ کی دخل اندازی

" صلح کی بات چیت کو خواہ مخواہ لمبا کیا جا رہا ہے . ڈر ہے کہ لڑائی اور بڑھ نہ جاوے . ' اتر اٹلانٹک پیکٹ ' بن چکا اب ' پیسفک پیکٹ ' اور ' مڈل ایسٹ پیکٹ ' بنانے کی ترکیبیں ہیں . دکھن پوربی ایشیا، آسٹریلیشیا، امریکہ کے چھوٹے دیشوں، بیچ ایشیا اور پچھم ایشیا، ایسے ہی اتر افریقہ اور پچھم یورپ میں دوسرے دیشوں کے فوجی اڈے بن رہے ہیں . بہت سے دیشوں کی قومی آزادی خطرے میں ہے . دکھن پوربی ایشیا کے دیشوں

पैमाने पर हम अपने देश की माली रचना करने जा रहे हैं. क़ुदरती तौर पर हमें सब से ज़ियादा ज़रूरत अमन की है.

"हमें विश्वास है कि सब देश जिन में अलग अलग तरह की राजकाजी हकूमतें और अलग अलग रहन सहन के ढंग हैं मिल कर अमन के साथ रह सकते हैं. इसलिये हम यह चाहते हैं कि अन्तर क़ौमी झगड़ों को तय करने के लिये शान्ति के साथ बात चीत का साधन काम में लाया जाय, जंग का साधन न बरता जाय."

चेयर मैन माओ त्से-तुंग का कानफ़रेन्स के नाम सन्देसा पढ़ा गया.

अमरीकी जनता की आवाज़

इसके बाद अमरीका के एक मशहूर नेता पाल राबसन का सन्देसा पढ़ा गया जिस पर सारी कानफ़रेन्स ने खड़े हो कर ख़ुशी ज़ाहिर की. सन्देसे के आख़री शब्द यह थे :-

"अमरीका की जनता इन बरबादकुन जंगों से ऊब गई है. हम टिकाऊ शान्ति क़ायम कर सकते हैं, और हमें क़ायम करनी चाहिये—आपको और हमें मिल कर—पूरब और पच्छिम दोनों को मिल कर. हमारे हाथ एक दूसरे के हाथों में हों, हमारे दिल एक दूसरे के साथ मिले हुए हों. इसके लिये हम मिल कर काम करें, अमन क़ायम करें और गा गा कर इनसानी क़ौम के अनन्त भविश्य को रूप दें!'

"जापान की जनता भी दिल से अमन चाहती है और खुली तिजारत चाहती है. अगर उन्हें आज़ादी न दी गई तो न उन्हें अमन मिल सकता है और न खुली तिजारत. आज जापानी जनता की अमन की इच्छा और उनकी आज़ादी की इच्छा दोनों एक हैं. जापानी जनता सात साल तक युद्धों के नतीजे भुगत चुकी है और सात साल तक अपने देश पर दूसरों का क़बज़ा देख चुकी है. इसलिये वह पूरे दिल से अमन की प्यासी है. मेरी राय है कि सब को मिला कर शान्ति का एक नया सुलहनामा होना चाहिये जो सैन फ़्रानसिसको के सुलहनामे की जगह ले ले, और जिसकी बुनियाद इस बात पर हो कि दुनिया के सब सवाल शान्ति से तय किये जायं युद्ध से नहीं."

पाकिस्तान की तरफ़ से मशहूर मुसलिम नेता पीर मनकी शरीफ़ ने खड़े हो कर कहा :—

"हम अब यह पक्का इरादा कर चुके हैं कि अमन क़ायम रखेंगे, और अगर ज़रूरत होगी तो दूसरों को भी लड़ने से रोकेंगे. अमन केवल चाहने से नहीं मिल सकता. अपने मिशन की कामयाबी के लिये हमें मिल कर कारामद तरीक़े निकालने चाहियें. अगर दुनिया की जनता पूरी तरह जाग जाय और लोग लड़ाई में हिस्सा लेने से इनकार कर दें तो दुनिया की कोई भी ताक़त उन्हें किसी ऐसी लड़ाई में ज़बरदस्ती नहीं झोंक सकती जो साम्राजशाही के लिये मैदान साफ़ करने को लड़ी जा रही हो."

پیمانے پر ہم اپنے دیش کی مالی رچنا کرنے جا رہے ہیں. قدرتی طور پر ہمیں سب سے زیادہ ضرورت امن کی ہے .

"ہمیں وشواس ہے کہ سب دیش جنمیں الگ الگ طرح کی راجکاجی حکومتیں اور الگ الگ رہن سہن کے ڈھنگ ہیں مل کر امن کے ساتھ رہ سکتے ہیں . اس لئے ہم یہ چاہتے ہیں کہ انترقومی جھگڑوں کو طے کرنے کے لئے شانتی کے ساتھ بات چیت کا سادھن کام میں لایا جائے' جنگ کا سادھن نہ برتا جائے."

چیرمین ماؤتسے تنگ کا کانفرنس کے نام سندیسہ پڑھا گیا .

امریکی جنتا کی آواز

اس کے بعد امریکہ کے ایک مشہور نیتا پال رابسن کا سندیسہ پڑھا گیا جس پر ساری کانفرنس نے کھڑے ہو کر خوشی ظاہر کی . سندیسے کے آخری شبد یہ تھے:—

" امریکہ کی جنتا اِن برباد کن جنگوں سے اوب گئی ہے . ہم ٹکاؤ شانتی قائم کر سکتے ہیں' اور ہمیں قائم کرنی چاہئے—آپ کو اور ہمیں مل کر—پورب اور پچھم دونوں کو ملکر . ہمارے ہاتھ ایک دوسرے کے ہاتھوں میں ہوں' ہمارے دل ایک دوسرے کے ساتھ ملے ہوئے ہوں. اس کے لئے ہم ملکر کام کریں' امن قائم کریں اور گا گا کر انسانی قوم کے اننت بھوشیہ کو روپ دیں !

" جاپان کی جنتا بھی دل سے امن چاہتی ہے اور کھلی تجارت چاہتی ہے . اگر اِنھیں آزادی نہ دی گئی تو نہ انھیں امن مل سکتا ہے اور نہ کھلی تجارت . آج جاپانی جنتا کی امن کی اچھا اور ان کی آزادی کی اچھا دونوں ایک ہیں . جاپانی جنتا سات سال تک یدھوں کے نتیجے بھگت چکی ہے اور سات سال تک اپنے دیش پر دوسروں کا قبضہ دیکھ چکی ہے . اس لئے وہ پورے دل سے امن کی پیاسی ہے . میری رائے ہے کہ سب کو ملا کر شانتی کا ایک نیا صلح نامہ ہونا چاہئے جو سین فرانسسکو کے صلح نامے کی جگہ لے لے' اور جس کی بنیاد اس بات پر ہو کہ دنیا کے سب سوال شانتی سے طے کئے جائیں یدھ سے نہیں ."

پاکستان کی طرف سے مشہور مسلم نیتا پیر منکی شریف نے کھڑے ہو کر کہا:—

" ہم اب یہ پکا ارادہ کر چکے ہیں کہ امن قائم رکھیں گے' اور اگر ضرورت ہوگی تو دوسروں کو بھی لڑنے سے روکیں گے . امن کیول چاہنے سے نہیں مل سکتا . اپنے مشن کی کامیابی کے لئے ہمیں مل کر کارآمد طریقے نکالنے چاہئے. اگر دنیا کی جنتا پوری طرح جاگ جائے اور لوگ لڑائی میں حصہ لینے سے انکار کر دیں تو دنیا کی کوئی بھی طاقت انہیں کسی ایسی لڑائی میں زبردستی نہیں جھونک سکتی جو سامراج شاہی کے لئے میدان صاف کرنے کو لڑی جا رہی ہو ."

नहीं चल रहा है. वीतनाम और मलाया दोनों में हवाई जहाज़ों से दवाएं फेंक फेंक कर चावल की खड़ी खेतियों को जान बूझ कर जला डाला गया है. गांव के गांव नक़्शे से साफ़ मिटा डाले गए. लेकिन इन अत्याचारों से जनता की आज़ादी की प्यास और ज़ियादा भड़की.

"हर देश के अन्दर आम जनता की बहुत बड़ी तादाद युद्ध के खिलाफ़ है. जनता सब जगह अमन चाहती है. वह यह नहीं चाहती कि उसका खून और पसीना ऐसी चीज़ों के ढालने में काम आवे जो पहले जा कर दूसरों को बरबाद करें और फिर लौट कर खुद उसी को खतम करें. उसे चाहिये रहने के लिये मकान, पहरने के लिये कपड़े, खाने के लिये रोटी, और अपने बच्चों के लिये आज़ाद हवा.

वक़्त की पुकार

"दुनिया की जनता को पांच बातों के लिये आवाज़ उठानी चाहिये:—

(i) यह कि आज कल की सब लड़ाइयां कोरिया की लड़ाई, वीत नाम की लड़ाई, मलाया की लड़ाई वग़ैरा फ़ौरन बन्द की जावें. और यह सब सवाल शान्ति के साथ आपस में बातें कर के तय कर लिये जावें.

(ii) जिन जिन देशों ने लड़ाई में हिस्सा लिया है वह अन्तर क़ौमी समझौतों के अनुसार आइन्दा एक दूसरे के साथ दोस्ती और अमन से रहें.

(iii) बड़े पैमाने पर जन संहार के सब हथियार खिलाफ़ क़ानून क़रार दे दिये जावें और नष्ट कर दिये जावें, और जिन लोगों ने उन्हें इन लड़ाइयों में इस्तेमाल किया है उन पर अन्तर क़ौमी अदालत में मुक़दमे चलाए जावें.

(iv) तिजारत और कलचरी लेन देन के रास्ते में जितनी दीवारें खड़ी कर दी गई हैं वह सब तोड़ दी जावें और सब के भले के लिये देशों देशों के बीच तिजारत और कलचरी लेन देन को फलने फूलने का मौक़ा दिया जावे.

(v) इस तरह की हालतें पैदा करनी चाहियें जिनसे एक दूसरे से नफ़रत और लड़ाई बन्द हो, प्रेम और जानकारी बढ़े और सब मिल कर अमन से रह सकें."

इस के बाद चीन के एक नेता पेंग चेन ने कहा :—

"चीन की जनता हमलों और लड़ाइयों की मुसीबतों से काफ़ी ऊब चुकी है. वह अच्छी तरह जानती है कि केवल शान्ति की हवा में ही वह अपनी कलचरी और माली रचना फिर से कर सकती है और अपने यहां के लोगों को सुख और सुन्दरता की ज़िन्दगी बसर करने का मौक़ा दे सकती है. हमारा देश एक लम्बी जंग की बरबादी भुगत चुका है. चेयरमैन माओ त्से-तुंग की अगुवाई में अब हमने अपने घर को फिर से ठीक करने का महान काम पूरा कर लिया है और बड़े

نہیں چل رہا ہے . ویتنام اور ملایا دونوں میں ہوائی جہازوں سے دوائیں پھینک پھینک کر چاول کی کھڑی کھیتیوں کو جان بوجھکر جلا ڈالا گیا ہے . گاؤں کے گاؤں نقشے سے صاف مٹا ڈالے گئے . لیکن ان اتیاچاروں سے جنتا کی آزادی کی پیاس اور زیادہ بھڑکی .

"ہر دیش کے اندر عام جنتا کی بہت بڑی تعداد یدھ کے خلاف ہے . جنتا سب جگہ امن چاہتی ہے . وہ یہ نہیں چاہتی کہ اس کا خون اور پسینہ ایسی چیزوں کے ڈھالنے میں کام آوے جو پہلے جاکر دوسرے کو برباد کریں اور پھر لوٹ کر خود اسی کو ختم کریں . اسے چاہئے رہنے کے لئے مکان' پہننے کے لئے کپڑے' کھانے کے لئے روٹی اور اپنے بچوں کے لئے آزاد ہوا .

وقت کی پکار

"دنیا کی جنتا کو پانچ باتوں کے لئے آواز اٹھانی چاہئے:—

(i) یہ کہ آج کل کی سب لڑائیاں کوریا کی لڑائی' ویتنام کی لڑائی' ملایا کی لڑائی وغیرہ فوراً بند کی جاویں . اور یہ سب سوال شانتی کے ساتھ آپس میں باتیں کرکے طے کر لئے جاویں .

(ii) جن جن دیشوں نے لڑائی میں حصہ لیا ہے وہ انترقومی سمجھوتوں کے انوسار آئندہ ایک دوسرے کے ساتھ دوستی اور امن سے رہیں .

(iii) بڑے پیمانے پر جن سنہار کے سب ہتھیار خلاف قانون قرار دے دئے جاویں اور نشٹ کردئے جاویں' اور جن لوگوں نے انہیں ان لڑائیوں میں استعمال کیا ہے ان پر انترقومی عدالت میں مقدمے چلائے جاویں ؟

(iv) تجارت اور کلچری لین دین کے راستے میں جتنی دیواریں کھڑی کردی گئی ہیں وہ سب توڑ دی جاویں اور سب کے بھلے کے لئے دیشوں دیشوں کے بیچ تجارت اور کلچری لین دین کو پھلنے پھولنے کا موقع دیا جاوے .

(v) اس طرح کی حالتیں پیدا کرنی چاہئے جن سے ایک دوسرے سے نفرت اور لڑائی بند ہو' پریم اور جانکاری بڑھے اور سب مل کر امن سے رہ سکیں .

اس کے بعد چین کے ایک نیتا پینگ چین نے کہا:—

"چین کی جنتا حملوں اور لڑائیوں کی مصیبتوں سے کافی اوب چکی ہے . وہ اچھی طرح جانتی ہے کہ کیول شانتی کی ہوا میں ہی وہ اپنی کلچری اور مالی رچنا پھر سے کرسکتی ہے اور اپنے یہاں کے لوگوں کو سکھ اور سندرتا کی زندگی بسر کرنے کا موقع دے سکتی ہے . ہمارا دیش ایک لمبی جنگ کی بربادی بھگت چکا ہے . چیرمین ماؤتسے تنگ کی اگوائی میں اب ہم نے اپنے گھر کو پھر سے ٹھیک کرنے کا مہان کام پورا کرلیا ہے اور بڑے

उतरने तक न दिया. मैं (मैडम सुन यात सेन) खुद सरकारी हुकुम को तोड़ कर जहाज़ पर उनसे मिलने गई. किसी तरह उन्हें जहाज़ से नीचे लाया गया. फिर भी सरकार ने खुले जलसे की इजाज़त न दी. चुपके चुपके एक तंग गली के अन्दर रात के अंधेरे में एक बन्द कमरे में जलसा हुआ. हर नुमाइन्दे को हिदायत थी कि अकेला अकेला आवे. कमरे में केवल एक छोटी सी मेज़ थी जो सेक्रेटरी के काम आई. बाक़ी सब नंगे फ़र्श पर बैठे हुए थे. किसी तरह कार्रवाई शुरू हुई और चोरी छिप्पे ख़त्म की गई.

आज की नई सूरत

"इन इक्कीस बरस के अन्दर दुनिया की हालत, चीन की हालत और अमन तहरीक में कितना बड़ा फ़र्क़ पड़ा है. उस वक़्त की लीग अगेनस्ट इमपीरियलिज़्म में जो देश खुले तौर पर शामिल थे उनकी कुल आबादी तीन करोड़ थी. आज वर्ल्ड पीस कौंसिल की सिफ़ारिश पर दुनिया के साठ करोड़ से ऊपर आदमी युद्ध के ख़िलाफ़ शान्ति की मांग के ऐलान पर दस्तख़त कर चुके हैं. आज चीन में इकतालीस आज़ाद मुल्कों के आज़ाद नुमाइन्दों का सारे चीनी राष्ट्र और चीनी सरकार की तरफ़ से स्वागत किया जा रहा है.

"आज युद्ध कौन चाहता है? कौन फ़ौलाद, तेल, कपड़े और खाने की उन चीज़ों को नश्ट करना चाहता है जो दुनिया की जनता ने अपने पसीने से पैदा की हैं और जिनकी हमें अपनी ज़िन्दगी के लिये ज़रूरत है? कौन माताओं के आंसू उनके जवान लड़कों के लिये पानी की तरह बहते हुए देखना चाहता है? इन सब सवालों का एक ही जवाब है. यह सब वही लोग चाहते हैं जिन्होंने दूसरों के मुल्कों में अपनी फ़ौजें रख रखी हैं और फ़ौजी अड्डे बना रखे हैं और जो दूसरे देशों की दौलत और पैदावार से अपने लिये ऐश के सामान बनाए रखना चाहते हैं.

"दक्खिन अमरीका के कई देश अपने यहां की सरकारों को आगाह कर चुके हैं कि वह कोरिया की लड़ाई में किसी तरह की मदद न दें. नतीजा यह है कि वहां की कई सरकारों को यूनाइटेड स्टेट्स के साथ अपने ठेके रद करने पड़े हैं.

"ख़ुद यूनाइटेड स्टेट्स के अन्दर बहुत से अमरीकी हवाई उड़ाकों ने कोरिया जाने से इनकार कर दिया है. जो अमरीकी हवाई उड़ाके कोरिया पहुंच गए थे उनसे जब हमले के लिये कहा गया तो उनमें से बहुत सों ने ख़ुद अपने जिस्म पर ज़ख़्म लगा कर अपने को इस काम के लिये निकम्मा कर लिया. फ़्रांस की सरकार को जब वीत नाम की लड़ाई के लिये फ़्रांसीसी सिपाही न मिले तो उसे जरमनी से तरह तरह के निकम्मे लोगों को सिपाही भरती कर के भेजना पड़ा. मलाया में अंगरेज़ों का काम बिना गोरखों के

اُترنے تک نہ دیا۔ میں (میڈم سن یات سین) خود سرکاری حکم کو توڑ کر اُن سے جہاز پر ملنے گئی۔ کسی طرح انہیں جہاز سے نیچے لایا گیا۔ پھر بھی سرکار نے کھلے جلسے کی اِجازت نہ دی۔ چپکے چپکے ایک تنگ گلی کے اندر رات کے اندھیرے میں ایک بند کمرے میں جلسہ ہوا۔ ہر نمائندے کو ہدایت تھی کہ اکیلا اکیلا آوے۔ کمرے میں کیول ایک چھوٹی سی میز تھی جو سیکریٹری کے کام آئی۔ باقی سب ننگے فرش پر بیٹھے ہوئے تھے۔ کسی طرح کارروائی شروع ہوئی اور چوری چھپے ختم کی گئی۔

آج کی نئی صورت

"اِن اکیس برس کے اندر دنیا کی حالت، چین کی حالت اور امن تحریک میں کتنا بڑا فرق پڑا ہے۔ اس وقت کی لیگ اگینسٹ امپیریلزم میں جو دیش کھلے طور پر شامل تھے اُن کی کل آبادی تین کروڑ تھی۔ آج ورلڈ پیس کونسل کی سفارش پر دنیا کے ساٹھ کروڑ سے اوپر آدمی یدھ کے خلاف شانتی کی مانگ کے اعلان پر دستخط کرچکے ہیں۔ آج چین میں اکتالیس آزاد ملکوں کے آزاد نمائندوں کا سارے چینی راشٹر اور چینی سرکار کی طرف سے سواگت کیا جا رہا ہے۔

"آج یدھ کون چاہتا ہے؟ کون فولاد، تیل، کپڑے اور کھانے کی اُن چیزوں کو نشٹ کرنا چاہتا ہے جو دنیا کی جنتا نے اپنے پسینے سے پیدا کی ہیں اور جن کی ہمیں اپنی زندگی کے لئے ضرورت ہے؟ کون ماتاؤں کے آنسو اُن کے جوان لڑکوں کے لئے پانی کی طرح بہتے ہوئے دیکھنا چاہتا ہے؟ اِن سب سوالوں کا ایک ہی جواب ہے۔ یہ سب وہی لوگ چاہتے ہیں جنہوں نے دوسروں کے ملکوں میں اپنی فوجیں رکھ رکھی ہیں اور فوجی اڈے بنا رکھے ہیں اور جو دوسرے دیشوں کی دولت اور پیداوار اپنے لئے عیش کے سامان بنائے رکھنا چاہتے ہیں۔

"دکھن امریکہ کے کئی دیش اپنے یہاں کی سرکاروں کو آگاہ کرچکے ہیں کہ وہ کوریا کی لڑائی میں کسی طرح کی مدد نہ دیں۔ نتیجہ یہ ہے کہ وہاں کی کئی سرکاروں کو یونائیٹڈ اسٹیٹس کے ساتھ اپنے ٹھیکے رد کرنے پڑے ہیں۔

"خود یونائیٹڈ اسٹیٹس کے اندر بہت سے امریکی ہوائی اڑاکوں نے کوریا جانے سے انکار کردیا ہے۔ جو امریکی ہوائی اڑاکے کوریا پہنچ گئے تھے اُن سے جب حملے کے لئے کہا گیا تو اُن میں سے بہت سوں نے خود اپنے جسم پر زخم لگا کر اپنے کو اِس کام کے لئے نکما کر لیا۔ فرانس کی سرکار کو جب ویت نام کی لڑائی کے لئے فرانسیسی سپاہی نہ ملے تو اُسے جرمنی سے طرح طرح کے نکمے لوگوں کو سپاہی بھرتی کرکے بھیجنا پڑا۔ ملایا میں انگریزوں کا کام بنا گورکھوں کے

युद्ध के ख़िलाफ़ दुनिया की आवाज़

दुनिया के बहुत से देशों में युद्ध के ख़िलाफ़ और विश्व में शान्ति बनाए रखने के लिये आन्दोलन हो रहे हैं. इसी लिये अक्तूबर सन 1952 के शुरू में पीकिंग में एक 'एशियन पैसिफ़िक पीस कानफ़रेन्स' हुई जिसमें इकतालीस मुल्कों के चार सौ बारह नुमाइन्दों ने हिस्सा लिया. इन इकतालीस मुल्कों की आबादी दुनिया की आधी से ज़ियादा है. इन में आस्ट्रेलिया, बरमा, कैनेडा, सीलोन, दक्खिन अमरीका के देश, अमरीकी की यूनाइटेड स्टेट्स, भारत, इन्डोनीशिया, ईरान, इराक़, इसराइल, लैबनान, जापान, कोरिया, मलाया, मैकसिको, मंगोलिया, न्यू ज़ीलैंड, पाकिस्तान, फ़िलिप्पाइन, सीरिया, पनामा, थाईलैंड, तुरकी, रूस, वीत नाम, ब्रिटेन और फ़्रांस शामिल थे.

कान्फ़रेन्स का इजलास एक सुन्दर सजे हुए हाल में हुआ जिसमें डायस के चारों तरफ़ हिस्सा लेने वाले सब देशों के झंडे सजे हुए थे. सदर फाटक के ऊपर चीनी, रूसी, अंगरेज़ी और स्पेनी चार ज़बानों में लिखा हुआ था—"शान्ति ज़िन्दाबाद !" अधिकतर देशों के नुमाइन्दे अपने अपने देशों की पोशाकें पहने थे. हाल के अन्दर उनका एक दूसरे से मिलना और जानकारियां करना अन्तर क़ौमी दोस्ती और इनसानी भाई चारे की निगाह से एक ख़ास असर पैदा कर रहा था.

कानफ़रेन्स की पहली बैठक

कानफ़रेन्स की पहली बैठक 2 अक्तूबर सन 1952 को हुई. अलग अलग देशों के नुमाइन्दों के अलावा सब देशों की सरकारों के राजदूत भी जलसे में मौजूद थे. इस बैठक में मैडम सुनयात सेन ने, जिनका चीनी नाम सुंग चिंग-लिंग है, दूसरे देशों से आए हुए नुमाइन्दों का स्वागत करते हुए कहा :—

"चीन में यह दूसरी अन्तर क़ौमी अमन कानफ़रेन्स है. पहली कानफ़रेन्स सन 1933 में शंघाई में हुई थी. मनचूरिया पर जापान का क़ब्ज़ा था. चीन की सरकार डरी हुई और कमज़ोर थी. उन दिनों दुनिया में जो अमन की तहरीक थी वह 'लीग अगेनस्ट इमपीरियलिज़म' यानी 'साम्राजशाही के ख़िलाफ़ लीग' कहलाती थी. चीन में उसका जलसा होने की तजवीज़ हुई. दूसरे देशों के नुमाइन्दे चीन पहुंचे. चीन के सरकारी अधिकारियों ने जलसे को रोक दिया. जो चीनी जलसा करना चाहते थे उन्हें डराया धमकाया गया. जलसा करने के लिये उन्हें कोई जगह या हाल देने को तैयार न हुआ. जो नुमाइन्दे बाहर से आए थे सरकार ने उन्हें जहाज़ से

یدھ کے خلاف دنیا کی آواز

دنیا کے بہت سے دیشوں میں یدھ کے خلاف اور وشو میں شانتی بنائے رکھنے کے لئے آندولن ہو رہے ہیں۔ اسی لئے اکتوبر سن 1952 کے شروع میں پیکنگ میں ایک 'ایشین پیسفک پیس کانفرنس' ہوئی جس میں اکتالیس ملکوں کے چار سو بارہ نمائندوں نے حصہ لیا۔ ان اکتالیس ملکوں کی آبادی دنیا کی آدھی سے زیادہ ہے۔ ان میں آسٹریلیا، برما، کینیڈا، سیلون، دکھن امریکہ کے دیش، امریکہ کی یونائیٹڈ اسٹیٹس، بھارت، انڈونیشیا، ایران، عراق، اسرائیل، لیبنان، جاپان، کوریا، ملایا، میکسیکو، منگولیا، نیوزی لینڈ، پاکستان، فلپائن، سیریا، پناما، تھائی لینڈ، ترکی، روس، ویت نام، برٹین اور فرانس شامل تھے۔

کانفرنس کا اجلاس ایک سندر سجے ہوئے حال میں ہوا جس میں ڈائس کے چاروں طرف حصہ لینے والے سب دیشوں کے جھنڈے سجے ہوئے تھے۔ صدر پھاٹک کے اوپر چینی، روسی، انگریزی اور اسپینی چار زبانوں میں لکھا ہوا تھا—"شانتی زندہ باد!" ادھکتر دیشوں کے نمائندے اپنے اپنے دیشوں کی پوشاکیں پہنے تھے۔ حال کے اندر ان کا ایک دوسرے سے ملنا اور جانکاریاں کرنا انترقومی دوستی اور انسانی بھائی چارے کی نگاہ سے ایک خاص اثر پیدا کر رہا تھا۔

کانفرنس کی پہلی بیٹھک

کانفرنس کی پہلی بیٹھک 2 اکتوبر سن 1952 کو ہوئی۔ الگ الگ دیشوں کے نمائندوں کے علاوہ سب دیشوں کی سرکاروں کے راجدوت بھی جلسے میں موجود تھے۔ اس بیٹھک میں میڈم سن یات سین نے جن کا چینی نام سونگ چنگ لنگ ہے، دوسرے دیشوں سے آئے ہوئے نمائندوں کا سواگت کرتے ہوئے کہا :—

"چین میں یہ دوسری انترقومی امن کانفرنس ہے۔ پہلی کانفرنس سن 1933 میں شنگھائی میں ہوئی تھی۔ منچوریا پر جاپان کا قبضہ تھا۔ چین کی سرکار ڈری ہوئی اور کمزور تھی۔ ان دنوں دنیا میں جو امن کی تحریک تھی وہ 'لیگ اگینسٹ امپیریلزم' یعنی 'سامراج شاہی کے خلاف لیگ' کہلاتی تھی۔ چین میں اس کا اجلاس ہونے کی تجویز ہوئی۔ دوسرے دیشوں کے نمائندے چین پہنچے۔ چین کے سرکاری ادھیکاریوں نے جلسے کو روک دیا۔ جو چینی جلسہ کرنا چاہتے تھے انہیں ڈرایا دھمکایا گیا۔ جلسہ کرنے کے لئے انہیں کوئی جگہ یا ہال دینے کو تیار نہ ہوا۔ جو نمائندے باہر سے آئے تھے سرکار نے انہیں جہاز سے

सीखो जिस तरह मूंज का रेशा या गूदा मूंज से धीरे धीरे अलग किया जाता है."

इंजील में भी इस तरह के तजरबों, प्रयोगों और अनुभवों का कई जगह बड़ा सुन्दर बयान मिलता है. जैन ग्रन्थों में योगी अपने गुरु से प्रार्थना करता है कि "मुझे अपनी आत्मा को शरीर में से इस तरह खींच कर अलग करना सिखा दो जिस तरह तलवार मियान में से खींच कर अलग की जाती है." योग सूत्रों में सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर में से खेंच कर अलग कर लेने की इस शक्ति को "महा विदेहा" नाम दिया गया है. इस तरह इस माद्दी जिस्म से अलग हो कर सूक्ष्म शरीर को साथ लिये हुए आत्मा जहां चाहे विचरती है.

इस हालत तक पहुंचने के लिये बड़े बड़े उपवास करने पड़ते हैं, रतजगे रखने पड़ते हैं, भीतर और बाहर की बड़ी बड़ी साधनाएं करनी पड़ती हैं, और ध्यान और शग़ल की ज़रूरत होती है. इसके लिये किसी ऐसे गुरु, मुर्शिद या पीर की ज़रूरत होती है जिसे ख़ुद इन हालतों का तजरबा हो चुका हो. इस मुक़ाम पर पहुँच कर योगी या सालिक इस जिस्म को इसी तरह इस्तेमाल करता है जिस तरह आदमी पहरने के कपड़ों को इस्तेमाल करता है. जब चाहे उतार कर धर देता है और जब चाहे फिर पहर लेता है. इसी तरह धीरे धीरे तरक़्क़ी करता हुआ वह कर्मों के बन्धन से छूट जाता है. फिर उसे दोबारा पैदा होने और मरने की ज़रूरत नहीं होती. इस लोक में इसी का नाम निजात या मुक्ति है. फिर वह सबमें अपने को और अपने में सबको देखने लगता है. वह अमर हो जाता है.

سیکھو جس طرح مونج کا ریشہ یا گودا مونج سے دھیرے دھیرے الگ کیا جاتا ہے ."

انجیل میں بھی اس طرح کے تجربوں' پریوگوں اور انوبھوں کا کئی جگہ بڑا سندر بیان ملتا ہے. جین گرنتھوں میں یوگی اپنے گرو سے پرارتھنا کرتا ہے کہ " مجھے اپنی آتما کو شریر میں سے اِس طرح کھینچ کر الگ کرنا سکھا دو جس طرح تلوار میان میں سے کھینچ کر الگ کی جاتی ہے ." یوگ سوتروں میں سوکشم شریر کو اِستھول شریر میں سے کھینچ کر الگ کر لینے کی اِس شکتی کو "مہا ودیہا" نام دیا گیا ہے . اِس طرح اِس مادی جسم سے الگ ہو کر سوکشم شریر کو ساتھ لئے ہوئے آتما جہاں چاہے وچرتی ہے .

اِس حالت تک پہونچنے کے لئے بڑے بڑے اُپواس کرنے پڑتے ہیں' رتجگے رکھنے پڑتے ہیں' بھیتر اور باہر کی بڑی بڑی سادھنائیں کرنی پڑتی ہیں' اور دھیان اور شغل کی ضرورت ہوتی ہے . اس کے لئے کسی ایسے گرو' مرشد یا پیر کی ضرورت ہوتی ہے جسے خود اِن حالتوں کا تجربہ ہو چکا ہو اِس مقام پر پہونچ کر یوگی یا سالک اس جسم کو اسی طرح استعمال کرتا ہے جس طرح آدمی پہرنے کے کپڑوں کو استعمال کرتا ہے' جب چاہے اُتار کر دھر دیتا ہے اور جب چاہے پھر پہر لیتا ہے . اِسی طرح دھیرے دھیرے ترقی کرتا ہوا وہ کرموں کے بندھن سے چھوٹ جاتا ہے . پھر اُسے دوبارہ پیدا ہونے اور مرنے کی ضرورت نہیں ہوتی . اِس لوک میں اِسی کا نام نجات یا مکتی ہے . وہ سب میں اپنے کو اور اپنے میں سب کو دیکھنے لگتا ہے وہ امر ہو جاتا ہے .

❈❈❈

"ईश्वर की मरज़ी का कोई एक ख़ास दर्शन मुझे नहीं हुआ है. मेरा पक्का यक़ीन है कि वह तो रोज़ाना ही हर आदमी को अपना दर्शन देता है लेकिन 'उस नन्ही सी आवाज़, से हम कान बन्द कर लेते हैं. हमारे सामने जो आग का खम्बा है उससे हम आंखें मींचे रहते हैं. पर मुझे तो उसका हर जगह होना हर दम महसूस होता है."

—गांधीजी

"ایشور کی مرضی کا کوئی ایک خاص درشن مجھے نہیں ہوا ہے. میرا پکا یقین ہے کہ وہ تو روزانہ ہی ہر آدمی کو اپنا درشن دیتا ہے لیکن اس 'ننھی سی آواز' سے ہم کان بند کر لیتے ہیں . ہمارے سامنے جو آگ کا کھمبا ہے اس سے ہم آنکھیں میچے رہتے ہیں . پر مجھے تو اس کا ہر جگہ ہونا ہر دم محسوس ہوتا ہے."

—گاندھی جی

शरीर और आलमे कबीर ही को सुद्रविराट और महाविराट भी कहा जाता है. ऐसे ही इनके और और भी नाम हैं. आलमे कबीर को सूफ़ी लोग जिस्मे कुल, शकले कुल, रूहे कुल, नफ़्से कुल, और अक़्ले कुल भी कहते हैं. यह अलग अलग नाम उसी एक वजूद के अलग अलग रूप दरशाने के लिये इस्तेमाल किये जाते हैं.

हिन्दू साधना में जिन तीन हालतों का नाम जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति है उन्हीं को मुसलमान सूफ़ी आलमे नासूत, आलमे मलकूत और आलमे जबरूत कहते हैं. इन तीन हालतों से भी ऊपर पहुँच कर हिन्दू योगी तुरीया अवस्था और तुरीयातीत अवस्था में जाते हैं. सूफ़ी इन्हें आलमे लाहूत और आलमे हाहूत कह कर पुकारते हैं. यह आलमे जबरूत से ऊपर की हालतें हैं. मुसलमान सूफ़ी सात अर्द और सात अर्श गिनाते हैं. हिन्दू योगी इन्हीं को चौदह भुवन या चौदह लोक कहते हैं. इनमें सात अर्द यानी पाताल के लोक हैं और सात अर्श यानी ऊपर के लोक हैं जिन्हें भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यं भी कहा जाता है. हर मुक़ाम के बहुत से अलग अलग दरजे हैं. वेदान्ती पांच कोशों की चरचा करते हैं. बौद्ध उन्हें पांच स्कन्ध कहते हैं. सूफ़ी उन्हीं को पांच तरह का नफ़्स कहते हैं:—नफ़्से अम्मारा, नफ़्से लव्वामा, नफ़्से मुतमइन्ना, नफ़्से मुलहिमा और नफ़्से रहमानी. वेदान्ती इन दो तरह के जिसमों को अतिवाहिक और आधिभौतिक कहते हैं. सूफ़ी उन्हीं को नफ़्से जारी और नफ़्से मुक़ीम, या जिस्मे लतीफ़ और जिस्मे कसीफ़ कहते हैं.

मशहूर सूफ़ी सन्त जामी ने योगी यानी सालिक के इन हालतों में से गुज़रने को बड़े सुन्दर शब्दों में बयान किया है, और लिखा है कि—

"और लोग सब एक मरतबा मरते हैं और बेचारा जामी बार बार मरता है."

इस बार बार मरने में स्थूल शरीर यानी जिस्मे कसीफ़ के सूक्ष्म शरीर यानी जिस्मे लतीफ़ से जुदा होने ही की तरफ़ इशारा है. सूफ़ी जामी ने अपनी बानी में यह भी दिखाया है कि अलग अलग धर्मों के लोग इस रास्ते पर चलते हुए एक ही सी हालतों में से गुज़रते हैं, एक दूसरे से मिलते रहते हैं, और उनके अपने अपने पीर, पैग़म्बर, गुरु या अवतार उन्हें प्रेम के साथ मदद देते रहते हैं, और जितना जितना वह आगे बढ़ते जाते हैं उनके आपसी फ़रक़ मिलते जाते हैं.

मोहम्मद साहब अपने ख़ास चेलों को उपदेश दिया करते थे—"मूतू क़ब्लुन्स मूतू" यानी मरने से पहले मरना सीखो.

उपनिशदों में लिखा है:—"अपनी आत्मा को अपने शरीर से धीरज के साथ इस तरह खेंच कर अलग करना

شریر اور عالم کبیر ہی کو شدر وراٹ اور مہاوراٹ بھی کہا جاتا ہے . ایسے ہی اِن کے اور بھی نام ہیں . عالم کبیر کو صوفی لوگ جسم کل' شکل کل' روح کل' نفس کل اور عقل کل بھی کہتے ہیں . یہ الگ الگ نام اُسی ایک وجود کے الگ الگ روپ درشانے کے لئے اِستعمال کئے جاتے ہیں .

ہندو سادھنا میں جن تین حالتوں کا نام جاگرت' سوپن اور سوشپتی ہے اُنہیں کو مسلمان صوفی عالم ناسوت' عالم ملکوت اور عالم جبروت کہتے ہیں . اِن تین حالتوں سے بھی اوپر پہونچ کر ہندو یوگی تریہ اوستھا اور تریاتیت اوستھا میں جاتے ہیں . صوفی اِنہیں عالم لاہوت اور عالم ہاہوت کہہ کر پکارتے ہیں . یہ عالم جبروت سے اوپر کی حالتیں ہیں . مسلمان صوفی سات ارض اور سات عرش گناتے ہیں ہندو یوگی اِنہیں کو چودہ بھون یا چودہ لوک کہتے ہیں . اِن میں سات ارض یعنی پاتال کے لوک ہیں اور سات عرش یعنی اوپر کے لوک ہیں جنہیں بھوہ' بھواہ' سوہ' مہ' جنہ' تپہ اور سیتم بھی کہا جاتا ہے. ہر مقام کے بہت سے الگ الگ درجے ہیں . ویدانتی پانچ کوشوں کی چرچہ کرتے ہیں . بودھ اِنہیں پانچ اسکندھ کہتے ہیں . صوفی اُنہیں پانچ طرح کا نفس کہتے ہیں : نفس امارہ' نفس لوامہ' نفس مطمئنہ' نفس ملہمہ اور نفس رحمانی . ویدانتی ان دو طرح کے جسموں کو آتی واہک اور آدھی بھوتک کہتے ہیں . صوفی اُنہیں کو نفس جاری اور نفس مقیم' یا جسم لطیف اور جسم کثیف کہتے ہیں .

مشہور صوفی سنت جامی نے یوگی یعنی سالک کے اِن حالتوں میں سے گذرنے کو بڑے سندر شبدوں میں بیان کیا ہے' اور لکھا ہے کہ—

"اور لوگ سب ایک مرتبہ مرتے ہیں اور بیچارہ جامی بار بار مرتا ہے ."

اس بار بار مرنے میں اِستھول شریر یعنی جسم کثیف کے سوکشم شریر یعنی جسم لطیف سے جدا ہونے ہی کی طرف اشارہ ہے . صوفی جامی نے اپنی بانی میں یہ بھی دکھایا ہے کہ الگ الگ دھرموں کے لوگ اِس راستے پر چلتے ہوئے ایک ہی سی حالتوں میں سے گذرتے ہیں' ایک دوسرے سے ملتے رہتے ہیں' اور اُن کے اپنے اپنے پیر' پیغمبر' گرو یا اوتار اُنہیں پریم کے ساتھ مدد دیتے رہتے ہیں' اور جتنا جتنا وہ آگے بڑھتے جاتے ہیں اُن کے آپسی فرق ملتے جاتے ہیں .

محمد صاحب اپنے خاص چیلوں کو اُپدیش دیا کرتے تھے— "موتو قبل ان تموتو" یعنی مرنے سے پہلے مرنا سیکھو .

اُپنشدوں میں لکھا ہے—" اپنی آتما کو اپنے شریر سے دھیرج کے ساتھ اِس طرح کھینچ کر الگ کرنا

इनकी यह ख़ाहिशें ही इन्हें हमारी ज़मीन से बांधे रखती हैं, किसी को कम देर तक और किसी को ज़ियादा देर तक. उस मियाद के ख़तम हो जाने के बाद यह रूहें दूसरी दुनिया को चली जाती हैं. इन रूहों में जैसा जैसा इनका वहम, ख़ब्त या पागलपन होता है उसी के अनुसार कोई नेक और कमज़ोर होती हैं, और कोई ज़ोरदार और बदनियत होती हैं. हिन्दू धर्म में इन्हें प्रेत और पिशाच कहते हैं, और इनकी बहुत सी क़िस्में बताई गई हैं. इसलाम में इन्हीं को आसेब और ग़ूल कहा गया है. ईसाई धर्म में इनके और और नाम हैं.

इस तरह की रूहों से न इनकार करने की कोई वजह है और न इन्हें पूजने की कोई ज़रूरत है. इनमें जो अच्छी रूहें हैं जो आदमी का भला करना चाहती हैं उनसे आदमी अपनी साधना या रियाज़त में मदद ले सकता है. इसके ख़िलाफ़ अगर तान्त्रिक उपायों से या 'जादू' से जिसे संस्कृत में 'यातु' कहते हैं बुरी रूहों को सिद्ध किया जाता है तो उनसे आदमी की जिसमानी और अख़लाक़ी बरबादी ही होती है. हर मज़हब में आदमी का यह फ़र्ज़ बताया गया है कि इस तरह की रूहों के लिये यह दुआ प्रार्थना करता रहे कि जल्दी से जल्दी हमारी ज़मीन के साथ उनके बन्धन टूटें और वह अपने सफ़र में आगे बढ़ें. सच यह है कि यह दुआ तो हमें सब मनुश्यों और सब प्रानियों के लिये ही करनी चाहिये. इस काम के लिये सब धर्मों में कुछ तरीक़े भी बताए गए हैं जिनमें सब से बड़ी और ज़रूरी चीज़ है अपने दिल और दिमाग़ को पाक रखना, अपनी आत्मा को मज़बूत बनाना और अपने अन्दर सब के साथ प्रेम पैदा करना. दिल की पाकी, सचाई और प्रेम से हमारे अन्दर की रूहानी फ़िज़ा उसी तरह महक उठती है जिस तरह बाहर की हवा सुगन्ध और ख़ुशबू जलाने से. हमारे ऐसा करने से आस पास की बुरी रूहों की बुराई कम होती है और नेक रूहों की नेकी बढ़ती और फलती है.

हिन्दू धर्म में जिसे 'योग' कहा गया है इसलाम में उसी को 'सलूक' कहा गया है. योग की बहुत सी 'भूमियां' हैं. सलूक के बहुत से 'मुक़ामात' हैं. सब मज़हब रूह की इस तरक़्क़ी के लिये तीन तरह के जिस्म मानते हैं. हिन्दू धर्म में इन्हें स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर और कारन शरीर कहते हैं. जैन धर्म में इन्हीं को औदारिक, तैजस और कारमान शरीर कहते हैं. बौद्ध इन्हीं को निर्मानकाय, सम्भोगकाय और धर्मकाय कहते हैं. ईसाई इन्हें बाडी, सोल और स्पिरिट कहते हैं. पुराने ज़ूलू धर्म, मिस्री धर्म और यूनानी धर्म में भी इनके इसी तरह अलग अलग नाम हैं. यहूदी इन्हें 'नेफ़ेश', 'रुआह' और 'नूसमा' कहते हैं. मुसलमान सूफ़ी इन्हें नफ़्स, दिल और रूह के नाम से पुकारते हैं. यह तीनों जिस तरह पिन्ड यानी आलमे सग़ीर में हैं उसी तरह ब्रह्मान्ड यानी आलमे कबीर में हैं. आलमे

اِن کی یہ خواہشیں ہی اِنہیں ہماری زمین سے باندھے رکھتی ہیں، کسی کو کم دیر تک اور کسی کو زیادہ دیر تک. اُس میعاد کے ختم ہو جانے کے بعد یہ روحیں دوسری دنیا کو چلی جاتی ہیں ۔ اِن روحوں میں جیسا جیسا اِن کا وہم، خبط یا پاگل پن ہوتا ہے اُسی کے انوسار کوئی نیک اور کمزور ہوتی ہیں، اور کوئی زوردار اور بدنیت ہوتی ہیں ۔ ہندو دھرم میں اِنہیں پریت اور پشاچ کہتے ہیں، اور اِن کی بہت سی قسمیں بتائی گئی ہیں. اِسلام میں اِنہیں کو آسیب اور غول کہا گیا ہے. عیسائی دھرم میں اِن کے اور اور نام ہیں.

اِس طرح کی روحوں سے نہ اِنکار کرنے کی کوئی وجہ ہے اور نہ اِنہیں پوجنے کی کوئی ضرورت ہے. اِن میں جو اچھی روحیں ہیں جو آدمی کا بھلا کرنا چاہتی ہیں اُن سے آدمی اپنی سادھنا یا ریاضت میں مدد لے سکتا ہے. اِس کے خلاف اگر تانترک اُپایوں سے یا 'جادو' سے جسے سنسکرت میں 'یاتو' کہتے ہیں بری روحوں کو سدھ کیا جاتا ہے تو اُن سے آدمی کی جسمانی اور اخلاقی بربادی ہی ہوتی ہے. ہر مذہب میں آدمی کا یہ فرض بتایا گیا ہے کہ اِس طرح کی روحوں کے لئے یہ دعا پرارتھنا کرتا رہے کہ جلدی سے جلدی ہماری زمین کے ساتھ اُن کے بندھن ٹوٹیں اور وہ اپنے سفر میں آگے بڑھیں. سچ یہ ہے کہ یہ دعا تو ہمیں سب منشیوں اور سب پرانیوں کے لئے ہی کرنی چاہئے ۔ اِس کام کے لئے سب دھرموں میں کچھ طریقے بھی بتائے گئے ہیں جن میں سب سے بڑی اور ضروری چیز ہے اپنے دل اور دماغ کو پاک رکھنا، اپنی آتما کو مضبوط بنانا اور اپنے اندر سب کے ساتھ پریم پیدا کرنا ۔ دل کی پاکی، سچائی اور پریم سے ہمارے اندر کی روحانی فضا اُسی طرح مہک اُٹھتی ہے جس طرح باہر کی ہوا سگندھ اور خوشبو جلانے سے ۔ ہمارے ایسا کرنے سے آس پاس کی بری روحوں کی برائی کم ہوتی ہے اور نیک روحوں کی نیکی بڑھتی اور پھلتی ہے ۔

ہندو دھرم میں جسے 'یوگ' کہا گیا ہے اسلام میں اُسی کو 'سلوک' کہا گیا ہے. یوگ کی بہت سی بھومیاں ہیں. سلوک کے بہت سے 'مقامات' ہیں. سب مذہب روح کی اِس ترقی کے لئے تین طرح کے جسم مانتے ہیں ۔ ہندو دھرم میں اِنہیں اِستھول شریر، سوکشم شریر اور کارن شریر کہتے ہیں ۔ جین دھرم میں اِنہیں کو اَوداری، تیجس اور کارمان شریر کہتے ہیں ۔ بودھ اِنہیں کو نرمان کائے، سمبھوگ کائے اور دھرم کائے کہتے ہیں ۔ عیسائی اِنہیں باڈی، سول اور اسپرٹ کہتے ہیں ۔ پرانے زولو دھرم، مصری دھرم اور یونانی دھرم میں بھی اِن کے اسی طرح الگ الگ نام ہیں ۔ یہودی اِنہیں 'نفیش'، 'اَرواح' اور 'نوسما' کہتے ہیں. مسلمان صوفی اِنہیں نفس، دل اور روح کے نام سے پکارتے ہیں. یہ تینوں جس طرح پنڈ یعنی عالم صغیر میں ہیں اُسی طرح برہمانڈ یعنی عالم کبیر میں ہیں. عالم

स्वर्ग, नरक, लोक, भुवन, जन्नत, दोजख, अर्श, अर्द, लौह और तबक़ यह सब हमारे अन्दर की हालतें भी हैं और बाहर की चीज़ें भी हैं, ठीक जिस तरह सुख और दुख हमारे अन्दर हैं, और बाग़ और जेल हम से बाहर हैं.

देव, उपदेव, सिद्ध, विद्याधर, अप्सरा, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, फ़रिश्ते, परी, जिन्नात, फ़रशार, अमेश स्पेन्द, यज़्द, शैतान, दैत्य, असुर, इसी तरह ज़मीन, पानी, आग, हवा, जंगल और पहाड़ों की अच्छी और बुरी रूहें इस तरह की चीज़ें हैं जिन की चरचा सब धर्मों, सब देशों और सब बोलियों में पाई जाती है. जिस तरह आदमी का जिस्म ख़ास तरह के माद्दों से बना है उसी तरह इन सब के जिस्म दूसरी तरह के माद्दों से बने होते हैं. उनके जिस्म आम तौर पर हमारी मामूली आंखों से दिखाई नहीं देते. जिस तरह हवा का बवन्डर हो जाने पर हम हवा को कुछ कुछ देख पाते हैं क्योंकि उसमें पानी, रेत या ख़ाक का मेल आ जाता है, इसी तरह ख़ास सूरतों में हम उन्हें भी देख या छू पाते हैं. यह समझना कि सिवाय उन जिस्मों के जिन्हें हम देख या छू सकते हैं और कोई जिस्म दुनिया में हो ही नहीं सकते, न और किसी तरह के जानदार हो सकते हैं, छोटा मुंह बड़ी बात है जो हममें से किसी को शोभा नहीं देता. दुनिया की मज़हबी किताबों में जिस तरह सब्ज़ी ख़ोर और मांस ख़ोर जानवरों और सभ्य असभ्य इन्सानों का ज़िकर आता है वैसे ही इस तरह के भी बीसों छोटे बड़े नेक और बद वजूदों का बयान मिलता है.

यहूदी और ईसाई धर्म ग्रंथों में नौ तरह के फ़रिश्तों का ज़िकर आता है. इसलाम में पांच तरह के जिन्नात के अलावा चार और ख़ास फ़रिश्तों का ज़िकर है : जिबराईल, मिकाइल अज़राईल और इसराफ़ील. इसी तरह पुरानों में चार लोक पालों और आठ दिगपालों का ज़िकर है. यहूदी धर्म में रहमील दया का फ़रिश्ता है, तहरील पाकी का, फ़िदाईल निजात का, सदक़ील न्याय का और राज़ील अल्लाह के रहस्यों का फ़रिश्ता है. अरबी ज़बान में भी 'रहम' दया को कहते हैं, 'तहर' पाकी को, 'फ़िदा' निजात को, 'सिदक़' न्याय या सचाई को और 'राज़' रहस्य को. अरबी और यहूदी भाषायें दोनों एक दूसरे की चचेरी बहनें हैं. कहावत है कि अरबी और यहूदी हज़रत इबराहीम के दो लड़कों की अलग अलग औलाद हैं. बौद्ध धर्म और पारसी धर्म में भी इन सब वजूदों को इसी तरह माना गया है.

इन के अलावा आदमियों की वह रूहें हैं जो इस दुनिया के बीच में एक अनोखे ढंग से तैरती या फिरती रहती हैं, और जो लगभग वैसे ही हैं जैसे किसी क़ौम में मजज़ूब या पागल. यह वह लोग हैं जो मर चुके हैं और जिनकी कुछ बड़ी बड़ी ख़ाहिशें इस जिस्म में बिना पूरी हुए रह गईं.

سورگ، نرک، لوک، بھون، جنت، دوزخ، عرش، ارد، لوح اور طبق یہ سب ہمارے اندر کی حالتیں بھی ہیں اور باہر کی چیزیں بھی ہیں، ٹھیک جس طرح سکھ اور دکھ ہمارے اندر ہیں، اور باغ اور جیل ہم سے باہر ہیں ۔

دیو، اپ دیو، سدھ، ودیادھر، اپسرا، گندھرو، یکش، راکھشس، فرشتے، پری، جنات، فرشار، امیش اسپند، یزد، شیطان، دیتیہ، اسر، اسی طرح زمین، پانی، آگ، ہوا، جنگل اور پہاڑوں کی اچھی اور بری روحیں اس طرح کی چیزیں ہیں جن کی چرچا سب دھرموں، سب دیشوں اور سب بولیوں میں پائی جاتی ہے ۔ جس طرح آدمی کا جسم خاص طرح کے مادوں سے بنا ہے اسی طرح ان سب کے جسم دوسری طرح کے مادوں سے بنے ہوتے ہیں ۔ ان کے جسم عام طور پر ہماری معمولی آنکھوں سے دکھائی نہیں دیتے ۔ جس طرح ہوا کا بونڈر ہو جانے پر ہم ہوا کو کچھ کچھ دیکھ پاتے ہیں کیونکہ اس میں پانی، ریت یا خاک کا میل آ جاتا ہے، اسی طرح خاص صورتوں میں ہم انہیں بھی دیکھ یا چھو پاتے ہیں ۔ یہ سمجھنا کہ سوائے ان جسموں کے جنہیں ہم دیکھ یا چھو سکتے ہیں اور کوئی جسم دنیا میں ہو ہی نہیں سکتے، نہ اور کسی طرح کے جاندار ہو سکتے ہیں، چھوٹا منہ بڑی بات ہے جو ہم میں سے کسی کو شوبھا نہیں دیتا ۔ دنیا کی مذہبی کتابوں میں جس طرح سبزی خور اور ماس خور جانوروں اور سبھیہ اور اسبھیہ انسانوں کا ذکر آتا ہے ویسے ہی اس طرح کے بھی بیسوں چھوٹے بڑے نیک اور بد وجودوں کا بیان ملتا ہے.

یہودی اور عیسائی دھرم گرنتھوں میں نو طرح کے فرشتوں کا ذکر آتا ہے ۔ اسلام میں پانچ طرح کے جنات کے علاوہ چار اور خاص فرشتوں کا ذکر ہے ۔ جبرائیل، میکائیل اور اسرافیل ۔ اسی طرح پرانوں میں چار لوک پالوں اور آٹھ دگ پالوں کا ذکر ہے ۔ یہودی دھرم میں رحمیل دیا کا فرشتہ ہے، تحریل پاکی کا، فدائیل نجات کا، صدقیل نیائے کا اور رازیل اللہ کے رہسیوں کا فرشتہ ہے ۔ عربی زبان میں بھی 'رحم' دیا کو کہتے ہیں، 'تحر' پاکی کو، 'فدا' نجات کو، 'صدق' نیائے یا سچائی کو اور 'راز' رہسیہ کو ۔ عربی اور یہودی بھاشائیں دونوں ایک دوسرے کی چچیری بہنیں ہیں ۔ کہاوت ہے کہ عربی اور یہودی حضرت ابراہیم کے دو لڑکوں کی الگ الگ اولاد ہیں ۔ بودھ دھرم اور پارسی دھرم میں بھی ان سب وجودوں کو اسی طرح مانا گیا ہے ۔

ان کے علاوہ آدمیوں کی وہ روحیں ہیں جو اس دنیا کے بیچ میں ایک انوکھے ڈھنگ سے تیرتی یا پھرتی رہتی ہیں، اور جو لگ بھگ ویسے ہی ہیں جیسے کسی قوم میں مجذوب یا پاگل. یہ وہ لوگ ہیں جو مر چکے ہیں اور جن کی کچھ بڑی بڑی خواہشیں اس جسم میں بنا پوری ہوئے رہ گئیں.

आत्मा की तरक़्क़ी का रास्ता

(डाक्टर भगवानदास)

पहले के कुछ लेखों में हम तीन बड़े बड़े असूलों की चरचा कर चुके हैं जो सब धर्मों में पाए जाते हैं. इस लेख में हम इसी तरह के चौथे असूल की चरचा करना चाहते हैं. दुनिया के सब धर्म किसी न किसी रूप में यह मानते हैं कि जिस तरह यह बाहर की या माद्दी दुनिया है जिस का सम्बन्ध आदमी की पांच बाहरी इन्द्रियों यानी उसके हवास-ख़म्सा और उसकी जाग्रत अवस्था से है उसी तरह एक दूसरी दुनिया है जिस का सम्बन्ध आदमी की सूक्ष्म यानी ज़ियादा लतीफ़ इन्द्रियों से है और जिसका नाता आदमी की सपने की हालत, गहरी नीन्द की हालत और दूसरी अन्दरूनी हालतों से है. जिस तरह आदमी की रूह एक दिन और दूसरे दिन के बीच में रात को सपनों के अन्दर से निकलती है उसी तरह उसकी रूह मौत और पुनर्जन्म के बीच में इन अधिक सूक्ष्म या लतीफ़ दुनियाओं के अन्दर से निकलती है. आदमी से नीचे, उसके बराबर और उससे ऊपर बहुत सी दुनियाएं हैं जिनमें तरह तरह के वजूद या तरह तरह की हस्तियां रहती हैं. आदमी ख़ास कोशिशें करके और ख़ास तरह की साधना या रियाज़त करके अपने अन्दर उन सूक्ष्म इन्द्रियों को जगा सकता है और उन छिपी हुई ताक़तों को उभार सकता है जिनके ज़रिये यह सब नीचे ऊपर की दुनियाएं उसके लिये खुल जायं.

आज कल की साइन्स भी इस तरह की दुनियाओं, वजूदों और शक्तियों के इमकान को मानती है. साइन्स वाले इसे 'एक्सटेनशन आफ़ फ़ैकल्टी' यानी 'मानसिक शक्ति का फैलाव' कहते हैं. साइन्सदानों ने इस बारे में बड़ी बड़ी खोजें की हैं जिन्हें 'साइकिकल रिसर्च' कहा जाता है. इस तरह की खोज करने वालों ने आदमी के अन्दर छिपी हुई दो शक्तियों को सच्चा माना है. एक यह कि आदमी ठीक तरह से कोशिश करे तो किसी एक जगह से बैठे हुए हज़ारों मील दूर की चीज़ों और घटनाओं को देख सकता है दूसरी यह कि आदमी दूर से बैठे हुए भी दूसरों के विचारों को जान सकता है और दूसरों के दिमाग़ तक अपने विचार पहुंचा सकता है. इसी तरह की चीज़ों को योग सिद्धि, दिव्य शक्ति, कमाल, मोजज़ा, करामात, या रौशन ज़मीरी कहा जाता है सब देशों में और सब धर्मों के लोगों ने किसी न किसी रूप में इन बातों को माना है.

इस तरह की शक्तियों पर अचरज करने को कोई बात नहीं. यह सब शक्तियां केवल उन शक्तियों का विकास या फैलाव हैं जिन्हें हम रोज़मर्रा इस्तेमाल करते रहते हैं.

آتما کی ترقی کا راستہ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

پہلے کے کچھ لیکھوں میں ہم تین تین بڑے بڑے اصولوں کی چرچا کر چکے ہیں جو سب دھرموں میں پائے جاتے ہیں ۔ اس لیکھ میں ہم اسی طرح کے چوتھے اصول کی چرچا کرنا چاہتے ہیں ۔ دنیا کے سب دھرم کسی نہ کسی روپ میں یہ مانتے ہیں کہ جس طرح یہ باہر کی یا مادی دنیا ہے جس کا سمبندھ آدمی کی پانچ باہری اندریوں یعنی اس کے حواس خمسہ اور اس کی جاگرت اوستھا سے ہے اسی طرح ایک دوسری دنیا ہے جس کا سمبندھ آدمی کی سوکشم یعنی زیادہ لطیف اندریوں سے ہے اور جس کا ناتا آدمی کی سپنے کی حالت، گہری نیند کی حالت اور دوسری اندرونی حالتوں سے ہے. جس طرح آدمی کی روح ایک دن اور دوسرے دن کے بیچ میں رات کو سپنوں کے اندر سے نکلتی ہے اسی طرح اس کی روح موت اور پھر جنم کے بیچ میں ان ادھک سوکشم یا لطیف دنیاؤں کے اندر سے نکلتی ہے ۔ آدمی سے نیچے، اس کے برابر اور اس سے اوپر بہت سی دنیائیں ہیں جن میں طرح طرح کے وجود یا طرح طرح کی ہستیاں رہتی ہیں ۔ آدمی خاص کوششیں کرکے اور خاص طرح کی سادھنا یا ریاضت کرکے اپنے اندر ان سوکشم اندریوں کو جگا سکتا ہے اور ان چھپی ہوئی طاقتوں کو ابھار سکتا ہے جن کے ذریعے یہ سب نیچے اوپر کی دنیائیں اس کے لئے کھل جائیں ۔

آج کل کی سائنس بھی اس طرح کی دنیاؤں، وجودوں اور شکتیوں کے امکان کو مانتی ہے ۔ سائنس والے اسے 'ایکسٹنشن آف فیکلٹی' یعنی 'مانسک شکتی کا پھیلاؤ' کہتے ہیں ۔ سائنسدانوں نے اس بارے میں بڑی بڑی کھوجیں کی ہیں جنہیں 'سائیکیکل ریسرچ' کہا جاتا ہے ۔ اس طرح کی کھوج کرنے والوں نے آدمی کے اندر چھپی ہوئی دو شکتیوں کو سچا مانا ہے ۔ ایک یہ کہ آدمی ٹھیک طرح سے کوشش کرے تو کسی ایک جگہ سے بیٹھے ہوئے ہزاروں میل دور کی چیزوں اور گھٹناؤں کو دیکھ سکتا ہے ۔ دوسری یہ کہ آدمی دور سے بیٹھے ہوئے بھی دوسروں کے وچاروں کو جان سکتا ہے اور دوسروں کے دماغ تک اپنے وچار پہونچا سکتا ہے ۔ اسی طرح کی چیزوں کو یوگ سدھی، دویہ شکتی، کمال، معجزہ، کرامات یا روشن ضمیری کہا جاتا ہے ۔ سب دیشوں میں اور سب دھرموں کے لوگوں نے کسی نہ کسی روپ میں ان باتوں کو مانا ہے ۔

اس طرح کی شکتیوں پر اچرج کرنے کی کوئی بات نہیں ۔ یہ سب شکتیاں کیول ان شکتیوں کا وکاس یا پھیلاؤ ہیں جنہیں ہم روزمرہ استعمال کرتے رہتے ہیں ۔

30 NOV 1952

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द 13 नवम्बर, सन '52 नम्बर 5

جلد 13 نومبر، سن '52 نمبر 5

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

गीत

(हमीद अलमास)

आस के मारे यास के साथी जीवन से बेज़ार दीवाने
पूछ रहे हैं धनवानों से किसने लूटे गीत सुहाने

देस के हाकिम बोल रहे हैं सब को रोटी मान मिलेगा!
नाज़ुक हृदय चीख़ रहे हैं झूटे हैं यह सपने सुहाने

मानवता की जोत जली है भाग रहे हैं ज़ालिम साए
मेरे वतन के मुख़लिस नेता ढूंढ रहे हैं लाख बहाने

सारी धरती जाग पड़ेगी प्रजा ख़ुद ही राज करेगी
होंटों के मुसकान बनेंगे आहों से मामूर फ़साने

चांद की शीतल शीतल किरनें झूम रही हैं नाच रही हैं
पीत नगर में जोबन आया जागे हैं मधुमस्त तराने

सब को जीवन सुख प्यारा है ग़म का भूला कौन भुलाए
कौन किसी के आंसू पोंछे कौन किसी के रोग को जाने

मेरे ख़यालों की वसअत है परबत की चोटी से बढ़कर
मेरे गीतों में पलते हैं अमृत से भरपूर ख़ज़ाने

मुख़लिस = निःस्वार्थ, मामूर = भरे हुए, वसअत = विशालता.

گیت

(حمید الماس)

آس کے مارے یاس کے ساتھی جیون سے بیزار دیوانے
پوچھ رہے ہیں دھنوانوں سے کس نے لوٹے گیت سہانے

دیس کے حاکم بول رہے ہیں سب کو روٹی مان ملے گا!
نازک ہردے چیخ رہے ہیں جھوٹے ہیں یہ سپنے سہانے

مانوتا کی جوت جلی ہے بھاگ رہے ہیں ظالم سائے
میرے وطن کے مخلص نیتا ڈھونڈھ رہے ہیں لاکھ بہانے

ساری دھرتی جاگ پڑے گی پرجا خود ہی راج کریگی
ہونٹوں کے مسکان بنیں گے آہوں سے معمور فسانے

چاند کی شیتل شیتل کرنیں جھوم رہی ہیں ناچ رہی ہیں
پریت نگر میں جوبن آیا جاگے ہیں مدھو مست ترانے

سب کو جیون سکھ پیارا ہے غم کا بھولا کون بھلائے
کون کسی کے آنسو پونچھے کون کسی کے روگ کو جانے

میرے خیالوں کی وسعت ہے پربت کی چوٹی سے بڑھکر
میرے گیتوں میں پلتے ہیں امرت سے بھرپور خزانے

مخلص=نسوارتھ، معمور=بھرے ہوئے، وسعت=وشالتا

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

नवम्बर 1952

क्या किससे	सफ़ा
1. गीत (कविता)—हमीद अलमास	321
2. आत्मा की तरक़्क़ी का रास्ता—डाक्टर भगवानदास	322
3. युद्ध के ख़िलाफ़ दुनिया की आवाज़—सुन्दरलाल	327
4. ट्रूमन, स्टालिन और गांधी—जे. सी. कुमारप्पा	344
5. "हिन्द अमरीकी समझौता" और हमारी सरकार—गुलज़ारीलाल नन्दा और सुरेश रामभाई	348
6. साधू डिप्टी (कहानी)—भगवानदीन	356
7. कश्मीर का सवाल—आशाराम	360
8. राजकाजी बुज़ुर्गों और साथियों से—भगवानदास केला	364
9. आज़मगढ़ ज़िले के बुनकरों की दुर्दशा—सुरेश रामभाई	367
10. बिहार वासियों से अपील—विनोबा	376
11. फ़ाइनेन्स मिनिस्टरों की कानफ़रेन्स—सुरेश रामभाई	378
12. प्रवासी की डायरी	391
13. बच्चों की दुनिया	397
14. कुछ किताबें	399
15. हमारी राय स्वामी रामतीर्थ – सुन्दरलाल; अंगरेज़ी कब तक!—भगवानदीन.	401

" نیا ہند "

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

نومبر 1952

کیا کس سے	صفحہ
1. گیت (کویتا)—حمید الماس	321
2. آتما کی ترقی کا راستہ—ڈاکٹر بھگوان داس	322
3. یدھ کے خلاف دنیا کی آواز—سندر لال	327
4. ٹرومن، اسٹالن اور گاندھی—جے. سی. کمارپا	344
5. "ہند امریکی سمجھوتا" اور ہماری سرکار—گلزاری لال نندا اور سریش رام بھائی	348
6. سادھو ڈپٹی (کہانی)—بھگوان دین	356
7. کشمیر کا سوال—آشارام	360
8. راج کاجی بزرگوں اور ساتھیوں سے—بھگوان داس کیلا	364
9. اعظم گڑھ ضلع کے بنکروں کی دردشا—سریش رام بھائی	367
10. بہار واسیوں سے اپیل—ونوبا	376
11. فائننس منسٹروں کی کانفرنس—سریش رام بھائی	378
12. پرواسی کی ڈائری	391
13. بچوں کی دنیا	397
14. کچھ کتابیں	399
15. ہماری رائے— سوامی رام تیرتھ—سندر لال؛ انگریزی کب تک!—بھگوان دین۔	401

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर— ताराचंद, [illegible], मुज़फ़्फ़र हसन, [illegible]
ایڈیٹر— [illegible]
नायब एडीटर— सुरेश रामभाई, [illegible]
[illegible]

* * * * *

इस नम्बर के ख़ास लेख — اس نمبر کے خاص لیکھ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

नवम्बर 1952 نومبر

क़ीमत दस आना — قیمت دس آنہ

नई किताब

चाइना टू डे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे।

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से वेश्यागमन, भिकमंगी और बेरोज़गारी को ख़त्म किया गया, किस तरह वहां के बेज़मीन वाले करोड़ों किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे किसानों में अन्नदाता बन गया. किस तरह अमरीका की नाके बन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्दे और कल का ख़ाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया, किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत खोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी ख़त्म की. देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया. वग़ैरा वग़ैरा.

अगर आप विस्तार के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी बेहतरीन और दिलचस्प ढंग से दी गई है.

700 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, एक तिरंगी और तीस एकरंगी तसवीरें, दो रंगीन नक़्शों के साथ— दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 15 शिलिंग.

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये.

मिलने का पता -

मैनेजर, नया हिन्द, 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

چائنا ٹو ڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے۔

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہ کر کیا کیا دیکھا اور آج کا چین کیسا ہے، کس طرح وہاں سے ویشیاپن، بھکمنگی اور بیروزگاری کو ختم کیا گیا، کس طرح وہاں کے بےزمین والے کروڑوں کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی سدھار قانون سے چین کیسے بھکمنگے سے ان داتا بن گیا، کس طرح امریکہ کی ناکےبندی کے باوجود اس نے اپنے ادیوگ دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو سواولمبی بنا لیا، کس طرح اپنے تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پرانے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر انہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی، کس طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی، کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا کے تین اصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری، کام چوری اور سینہ زوری ختم کی، دیش کے آرتھک سنگٹھن کو ٹھیک کیا، وغیرہ وغیرہ۔

اگر آپ وستار کے ساتھ ان سوالوں کا جواب پانا چاہتے ہیں اور یہ جاننا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے کیا سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملیگی۔ ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری بہترین اور دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے

700 سے زیادہ صفحے، بڑھیا کاغذ، کپڑے کی جلد، ایک ترنگی اور تیس ایک رنگی تصویریں، دو رنگین نقشوں کے ساتھ—دام صرف ساڑھے سات روپئے یا 15 شلنگ۔

اپنے یہاں کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھئے۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر نیا ہند، 145، مٹھی گنج الہٰ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ra[illegible] L[illegible], at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अखबारों, रिसालों वगैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास; सेक्रेटरी --पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये-

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट- सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لیکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

--:०:-

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی. جی. کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار او شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے -

سندرلال

سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی'

145' مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी 1920 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायेगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इन्सान-इन्सान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा जी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

هندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں
ور بکسیلروں کو خاص رعایت دی جائیگی۔ پوری
اری کے لئے لکھئے۔
ے یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا۔
'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال
ا مول انگریزی سے انوادت۔
ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین
دھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی
ح سمجھے۔ بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا
ری ہے۔
آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز. لگ
ے چار سو پنّے۔ کپڑے کی سندر جلد۔ قیمت کیول
ھے سات روپئے۔

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے. سی. کمارپا.
انوادک—سریش رام بھائی.
اِس کتا میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا
سے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی
انی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص
لیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری'
ائی چارے' پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے۔
مہاتما جی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—
"ہر آستک سے' چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم
ماننے والا ہو' میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے......"
سندر جلد' بڑھیا کاغذ' قریب سوا سو صفحے کی
تاب کا دام صرف ایک روپیہ۔

ملنے کا پتہ—
مینیجر' 'نیا ہند' 145' مٹھی گنج' الہ آباد۔

मतभेद पैदा हो गया है. किशोरलाल भाई समझते थे कि गांधी जी के इस तरह के गहरे तजुरबों का दूसरे कमज़ोर भाई बहनों पर बुरा असर भी पड़ सकता है. डाक्टर महमूद भी उन दिनों आश्रम में थे. बात यहां तक पहुंची कि गांधी जी सदा के लिये आश्रम छोड़ देने तक को राज़ी हो गए. पर किशोरलाल भाई अपनी राय से न डिगे. विचारों के अलग अलग होते हुए भी दोनों के दिल में एक दूसरे के लिये और एक दूसरे के स्वतंत्र विचारों के लिये गहरा मान था. जब कभी किशोरलाल भाई अपनी ग़लती समझ लेते थे तो उतनी ही सफ़ाई के साथ मान भी लेते थे.

धर्म मज़हब के मामले में सच्चे आस्तिक होते हुए भी किशोरलाल भाई उदार, बड़े दिल के और पूरे आज़ाद ख़याल थे. मेरी छोटी छोटी किताबों 'गीता और क़ुरान' और 'हज़रत मोहम्मद और इसलाम' के गुजराती अनुवाद कराने का उन्होंने ही सबसे अधिक आग्रह किया. गीता के उपदेशों पर उनकी अपनी पुस्तक उनकी विद्वता और उदारता दोनों का जीता जागता सबूत है. साम्प्रदायिक मामलों में दिमाग़ी, असूली, अमली या किसी तरह की भी तंग नज़री उन्हें छू तक नहीं गई थी. इस वक़्त मिसालें देने की ज़रूरत नहीं है पर इस एक मामले में गांधी जी के आस पास के लोगों में वह अपनी एक अलग और सब से ऊंची जगह रखते थे.

किशोरलाल भाई की उमर 61 बरस की हो चुकी थी. कम से कम पन्द्रह बरस से उनकी तन्दुरुस्ती हद दरजे की ख़राब चली आ रही थी. इन हालतों में उनकी मौत कोई अचरज की चीज़ नहीं थी. कहीं अधिक अचरज की चीज़ यह थी कि उन्होंने मुश्किल से पचीस सेर के हलके फुलके शरीर को गहरी बीमारियों से घिरे रहते हुए भी पन्द्रह बरस के लम्बे अरसे तक कैसे संभाले रखा, और फिर आख़ीर वक़्त तक काम करते करते ही शरीर छोड़ा. हमारे पास उनका आख़िरी ख़त मरने से ठीक नौ दिन पहले का लिखा हुआ है जिससे उनकी ज़बरदस्त खोज और लगन दोनों का काफ़ी पता चलता है. यह सब किशोरलाल भाई की मज़बूत क़ुवतेइरादी और आत्मबल का नतीजा था.

कोई आदमी कितना भी अच्छा, बड़ा, नेक और काम का क्यों न हो उसे एक दिन पके पान की तरह डाल से गिर जाना ही पड़ता है. शायद दुनिया के बदलते हुए हालात में हमारी उपयोगिता या अनुपयोगिता को क़ुदरत हम से कहीं ज़ियादा अच्छा समझती है. कई बार हमें ऐसा लगता है कि गांधीजी जैसे महान आत्मा की सूरत में भी उनका आख़िरी बलिदान जो काम कर गया और करोड़ों देश-वासियों के दिलों पर जो असर छोड़ गया वह शायद उनका दस पांच बरस और जीना न कर पाता. जो हो, दुनिया तेज़ी के साथ बदल रही है. हमारी निगाहें बहुत थोड़ी दूर

مت بھید پیدا ہوگیا ہے . کشورلال بھائی سمجھتے تھے کہ گاندھی جی کے اس طرح کے گہرے تجربوں کا دوسرے کمزور بھائی بہنوں پر برا اثر بھی پڑ سکتا ہے . ڈاکٹر محمود بھی اُن دنوں آشرم میں تھے. بات یہاں تک پہونچی کہ گاندھی جی سدا کے لئے آشرم چھوڑ دینے تک کو راضی ہوگئے . پر کشورلال بھائی اپنی رائے سے نہ ڈگے . وچاروں کے الگ الگ ہوتے ہوئے بھی دونوں کے دل میں ایک دوسرے کے لئے اور ایک دوسرے کے سوتنتر وچاروں کے لئے گہرا مان تھا . جب کبھی کشورلال بھائی اپنی غلطی سمجھ لیتے تھے تو اُتنی ہی صفائی کے ساتھ مان بھی لیتے تھے.

دھرم مذہب کے معاملے میں سچے آستک ہوتے ہوئے بھی کشور لال بھائی اُدار، بڑے دل کے اور پورے آزاد خیال تھے . میری چھوٹی چھوٹی کتابوں ' گیتا اور قرآن' اور 'حضرت محمد اور اسلام' کے گجراتی انوواد کرانے کا اُنہوں نے ہی سب سے ادھک آگرہ کیا. گیتا کے اُپدیشوں پر اُن کی اپنی پستک اُن کی ودوتا اور اُدارتا دونوں کا جیتا جاگتا ثبوت ہے . سامپردایک معاملوں میں دماغی، اصولی، عملی یا کسی طرح کی بھی تنگ نظری اُنہیں چھو تک نہیں گئی تھی . اس وقت مثالیں دینے کی ضرورت نہیں ہے پر اِس ایک معاملے میں گاندھی جی کے آس پاس کے لوگوں میں وہ اپنی ایک الگ اور سب سے اونچی جگہ رکھتے تھے .

کشور لال بھائی کی عمر 61 برس کی ہو چکی تھی . کم سے کم پندرہ برس سے اُن کی تندرستی حد درجے کی خراب چلی آ رہی تھی . اِن حالتوں میں اُن کی موت کوئی اچرج کی چیز نہیں تھی . کہیں ادھک اچرج کی چیز یہ تھی کہ اُنہوں نے مشکل سے پچیس سیر کے ہلکے پھلکے شریر کو گہری بیماریوں سے گھرے رہتے ہوئے بھی پندرہ برس کے لمبے عرصے تک کیسے سنبھالے رکھا، اور پھر آخیر وقت تک کام کرتے کرتے ہی شریر چھوڑا . ہمارے پاس اُن کا آخری خط مرنے سے ٹھیک نو دن پہلے کا لکھا ہوا ہے جس سے اُن کی زبردست کھوج اور لگن دونوں کا کافی پتہ چلتا ہے . یہ سب کشور لال بھائی کی مضبوط قوت اِرادی اور آتم بل کا نتیجہ تھا .

کوئی آدمی کتنا بھی اچھا، بڑا، نیک اور کام کا کیوں نہ ہو اُسے ایک دن پکے پان کی طرح ڈال سے گر جانا ہی پڑتا ہے . شاید دنیا کے بدلتے ہوئے حالات میں ہماری اُپیوگتا یا اَن اُپیوگتا کو قدرت ہم سے کہیں زیادہ اچھا سمجھتی ہے . کئی بار ہمیں ایسا لگتا ہے کہ گاندھی جی جیسے مہان آتما کی صورت میں بھی اُن کا آخری بلیدان جو کام کر گیا اور کروڑوں دیش واسیوں کے دلوں پر جو اثر چھوڑ گیا وہ شاید اُن کا دس پانچ برس اور جینا نہ کرپاتا. جو ہو، دنیا تیزی کے ساتھ بدل رہی ہے . ہماری نگاہیں بہت تھوڑی دور

मुख्य मंत्री साहब कहते हैं कि भूक से कोई नहीं मरा. वह ऐसे ही सच है जैसे कोई भी दिक़, मलेरिया या दमा से कभी नहीं मरता. आम तरीक़े से लोग उस समय मरते हैं जब उनका दिल बहुत ही कमज़ोर हो जाता है और उस में धड़कते रहने की और ताक़त नहीं रह जाती. गहरे से गहरे जाने जैसी मज़े की चीज़ कोई और नहीं है!

मैंने अपनी जांच प्रताल के नतीजे जनता तक पहुंचा दिये हैं और मंत्रियों के बयान भी उसके पास हैं. इस जगह जो चर्चा मैंने की है इस के अलावा सच को किसी सफ़ाई की ज़रूरत नहीं है. मुझे इतमिनान है कि जनता इन बयानों की आत्मा की गवाही पर ख़ुद ही नतीजे निकाल लेगी.

(विजिल से) —जे. सी. कुमारप्पा

भाई किशोरलाल मशरूवाला

मंगलवार 9 सितम्बर की रात को लगभग दस बजे जब हम बिछौने पर जा चुके थे प्रेस ट्रस्ट आफ़ इंडिया के संवाद दाता ने आ कर जगाया. श्री किशोरलाल मशरूवाला नहीं रहे एक धक्का सा लगा.

गांधीजी के जीवन, उनके असूलों, उनके चरित्र और उनके प्रेम से खिंच कर जो लोग अपने सब धन्दे छोड़ कर उनके आस पास जमा हो गए थे उनमें किशोरलाल भाई इने गिने और चोटी के लोगों में से थे. वह बहुत बड़े विद्वान थे, ऊंचे दरजे के स्वतंत्र विचारक थे. सादगी, त्याग और निस्वार्थता की मूर्ति थे. जिन ऊंचे असूलों को वह दिमाग़ी तौर पर ठीक मानते थे उन्हें अपनी ज़िन्दगी में ढालने की भी पूरी और हद दरजे की कोशिश करते थे.

गांधीजी अपने प्रेम के कारन हमें अपने आश्रमवासियों में गिनते थे. कभी कभी जब हम आश्रम में न होते तो उनकी आज्ञा से हमारी कोठरी ख़ाली भी रखी जाती थी. एक आश्रमवासी की हैसियत से हमें अनेक बार किशोरलाल भाई के साथ बहुत निकट सम्पर्क में आने का मौक़ा मिला. किशोरलाल भाई गांधीजी के केवल भक्त ही नहीं थे. वह उनके ख़ास सलाहकारों में से भी थे. जब कभी किसी बात में उनकी राय गांधीजी की राय से मेल न खाती थी तो वह बिना संकोच और पूरी निडरता के साथ अपनी राय ज़ाहिर कर देते थे और जहां तक ठीक समझते थे उस पर डट भी जाते थे.

एक बार जब हम बाहर से घूम घाम कर सेवाग्राम आश्रम पहुँचे और पहले सीधे गांधीजी के दर्शनों के लिये गये तो हमें उनसे मालूम हुआ कि गांधीजी के कुछ ब्रह्मचर्य के तजुरबों के बारे में उनमें और किशोरलाल भाई में गहरा

مکھیہ منتری صاحب کہتے ہیں کہ بھوک سے کوئی نہیں مرا. یہ ایسے ہی سچ ہے جیسے کوئی بھی دق، ملیریا یا دمے سے کبھی نہیں مرتا. عام طریقے سے لوگ اُس سمے مرتے ہیں جب اُن کا دل بہت ہی کمزور ہو جاتا ہے اور اُس میں دھڑکتے رہنے کی اور طاقت نہیں رہ جاتی. گہرے سے گہرے جانے جیسی مزے کی چیز کوئی اور نہیں ہے!

میں نے اپنی جانچ پڑتال کے نتیجے جنتا تک پہونچا دیئے ہیں اور منتریوں کے بیان بھی اُس کے پاس ہیں. اِس جگہ جو چرچا میں نے کی ہے اِس کے علاوہ سچ کو کسی صفائی کی ضرورت نہیں ہے. مجھے اطمینان ہے کہ جنتا اِن بیانوں کی آتما کی گواہی پر خود ہی نتیجے نکال لے گی.

(وجل سے) —جے. سی. کماریپا

بھائی کشورلال مشروواﻻ

منگل وار 9 ستمبر کی رات کو لگ بھگ دس بجے جب ہم بچھونے پر جا چکے تھے پریس ٹرسٹ آف انڈیا کے سمواد داتا نے آ کر جگایا. شری کشورلال مشروواﻻ نہیں رہے ایک دھکا سا لگا.

گاندھی جی کے جیون، اُن کے اصولوں، اُن کے چرتر اور اُن کے پریم سے کھنچ کر جو لوگ اپنے سب دھندے چھوڑ کر اُن کے آس پاس جما ہو گئے تھے ان میں کشورلال بھائی اِنے گنے اور چوٹی کے لوگوں میں سے تھے. وہ بہت بڑے ودوان تھے، اونچے درجے کے سوتنتر وچارک تھے. سادگی، تیاگ اور نسوارتھتا کی مورتی تھے. جن اونچے اصولوں کو وہ دماغی طور پر ٹھیک مانتے تھے انہیں اپنی زندگی میں ڈھالنے کی بھی پوری اور حد درجے کی کوشش کرتے تھے.

گاندھی جی اپنے پریم کے کارن ہمیں اپنے آشرم واسیوں میں گنتے تھے. کبھی کبھی جب ہم آشرم میں نہ ہوتے تو اُن کی آگیا سے ہماری کوٹھری خالی بھی رکھی جاتی تھی. ایک آشرم واسی کی حیثیت سے ہمیں انیک بار کشورلال بھائی کے ساتھ بہت نکٹ سمپرک میں آنے کا موقع ملا. کشورلال بھائی گاندھی جی کے کیول بھگت ہی نہیں تھے. وہ اُن کے خاص صلاح کاروں میں سے بھی تھے. جب کبھی کسی بات میں اُن کی رائے گاندھی جی کی رائے سے میل نہ کھاتی تھی تو وہ بنا سنکوچ اور پوری نڈرتا کے ساتھ اپنی رائے ظاہر کر دیتے تھے اور جہاں تک ٹھیک سمجھتے تھے اُس پر ڈٹ بھی جاتے تھے.

ایک بار جب ہم باہر سے گھوم گھام کر سیواگرام آشرم پہونچے اور پہلے سیدھے گاندھی جی کے درشنوں کے لئے گئے تو ہمیں اُن سے معلوم ہوا کہ گاندھی جی کے کچھ برہمچریہ کے تجربوں کے بارے میں اُن میں اور کشورلال بھائی میں گہرا

मतभेद पैदा हो गया है. किशोरलाल भाई समझते थे कि गांधी जी के इस तरह के गहरे तजुरबों का दूसरे कमज़ोर भाई बहनों पर बुरा असर भी पड़ सकता है. डाक्टर महमूद भी उन दिनों आश्रम में थे. बात यहां तक पहुंची कि गांधी जी सदा के लिये आश्रम छोड़ देने तक को राज़ी हो गए. पर किशोरलाल भाई अपनी राय से न डिगे. विचारों के अलग अलग होते हुए भी दोनों के दिल में एक दूसरे के लिये और एक दूसरे के स्वतंत्र विचारों के लिये गहरा मान था. जब कभी किशोरलाल भाई अपनी ग़लती समझ लेते थे तो उतनी ही सफ़ाई के साथ मान भी लेते थे.

धर्म मज़हब के मामले में सच्चे आस्तिक होते हुए भी किशोरलाल भाई उदार, बड़े दिल के और पूरे आज़ाद ख़याल थे. मेरी छोटी छोटी किताबों 'गीता और क़ुरान' और 'हज़रत मोहम्मद और इसलाम' के गुजराती अनुवाद कराने का उन्होंने ही सबसे अधिक आग्रह किया. गीता के उपदेशों पर उनकी अपनी पुस्तक उनकी विद्वता और उदारता दोनों का जीता जागता सबूत है. साम्प्रदायिक मामलों में दिमाग़ी, असूली, अमली या किसी तरह की भी तंग नज़री उन्हें छू तक नहीं गई थी. इस वक़्त मिसालें देने की ज़रूरत नहीं है पर इस एक मामले में गांधी जी के आस पास के लोगों में वह अपनी एक अलग और सब से ऊंची जगह रखते थे.

किशोरलाल भाई की उमर 61 बरस की हो चुकी थी. कम से कम पन्द्रह बरस से उनकी तन्दुरुस्ती हद दरजे की ख़राब चली आ रही थी. इन हालतों में उनकी मौत कोई अचरज की चीज़ नहीं थी. कहीं अधिक अचरज की चीज़ यह थी कि उन्होंने मुश्किल से पचीस सेर के हलके फुलके शरीर को गहरी बीमारियों से घिरे रहते हुए भी पन्द्रह बरस के लम्बे अरसे तक कैसे संभाले रखा, और फिर आख़ीर वक़्त तक काम करते करते ही शरीर छोड़ा. हमारे पास उनका आख़िरी ख़त मरने से ठीक नौ दिन पहले का लिखा हुआ है जिससे उनकी ज़बरदस्त खोज और लगन दोनों का काफ़ी पता चलता है. यह सब किशोरलाल भाई की मज़बूत क़ूवतेइरादी और आत्मबल का नतीजा था.

कोई आदमी कितना भी अच्छा, बड़ा, नेक और काम का क्यों न हो उसे एक दिन पके पान की तरह डाल से गिर जाना ही पड़ता है. शायद दुनिया के बदलते हुए हालात में हमारी उपयोगिता या अनुपयोगिता को क़ुदरत हम से कहीं ज़ियादा अच्छा समझती है. कई बार हमें ऐसा लगता है कि गांधीजी जैसे महान आत्मा की सूरत में भी उनका आख़िरी बलिदान जो काम कर गया और करोड़ों देशवासियों के दिलों पर जो असर छोड़ गया वह शायद उनका दस पांच बरस और जीना न कर पाता. जो हो, दुनिया तेज़ी के साथ बदल रही है. हमारी निगाहें बहुत थोड़ी दूर

مت بھید پیدا ہوگیا ہے ۔ کشورلال بھائی سمجھتے تھے کہ گاندھی جی کے اس طرح کے گہرے تجربوں کا دوسرے کمزور بھائی بہنوں پر برا اثر بھی پڑ سکتا ہے ۔ ڈاکٹر محمود بھی اُن دنوں آشرم میں تھے۔ بات یہاں تک پہونچی کہ گاندھی جی سدا کے لئے آشرم چھوڑ دینے تک کو راضی ہوگئے ۔ پر کشورلال بھائی اپنی رائے سے نہ ڈگے ۔ وچاروں کے الگ الگ ہوتے ہوئے بھی دونوں کے دل میں ایک دوسرے کے لئے اور ایک دوسرے کے سوتنتر وچاروں کے لئے گہرا مان تھا ۔ جب کبھی کشورلال بھائی اپنی غلطی سمجھ لیتے تھے تو اُتنی ہی صفائی کے ساتھ مان بھی لیتے تھے.

دھرم مذہب کے معاملے میں سچے آستک ہوتے ہوئے بھی کشور لال بھائی اُدار، بڑے دل کے اور پورے آزاد خیال تھے ۔ میری چھوٹی چھوٹی کتابوں 'گیتا اور قرآن' اور 'حضرت محمد اور اسلام' کے گجراتی انوواد کرانے کا اُنہوں نے ہی سب سے ادھک آگرہ کیا. گیتا کے اُپدیشوں پر اُن کی اپنی پستک اُن کی ودوتا اور اُدارتا دونوں کا جیتا جاگتا ثبوت ہے ۔ سامپردایک معاملوں میں دماغی، اصولی، عملی یا کسی طرح کی بھی تنگ نظری اُنہیں چھو تک نہیں گئی تھی ۔ اس وقت مثالیں دینے کی ضرورت نہیں ہے پر اِس ایک معاملے میں گاندھی جی کے آس پاس کے لوگوں میں وہ اپنی ایک الگ اور سب سے اونچی جگہ رکھتے تھے ۔

کشور لال بھائی کی عمر 61 برس کی ہو چکی تھی ۔ کم سے کم پندرہ برس سے اُن کی تندرستی حد درجے کی خراب چلی آ رہی تھی ۔ اِن حالتوں میں اُن کی موت کوئی اچرج کی چیز نہیں تھی ۔ کہیں ادھک اچرج کی چیز یہ تھی کہ اُنہوں نے مشکل سے پچیس سیر کے ہلکے پھلکے شریر کو گہری بیماریوں سے گھرے رہتے ہوئے بھی پندرہ برس کے لمبے عرصہ تک کیسے سنبھالے رکھا اور پھر آخیر وقت تک کام کرتے کرتے ہی شریر چھوڑا ۔ ہمارے پاس اُن کا آخری خط مرنے سے ٹھیک نو دن پہلے کا لکھا ہوا ہے جس سے اُن کی زبردست کھوج اور لگن دونوں کا کافی پتہ چلتا ہے ۔ یہ سب کشور لال بھائی کی مضبوط قوت ارادی اور آتم بل کا نتیجہ تھا ۔

کوئی آدمی کتنا بھی اچھا، بڑا، نیک اور کام کا کیوں نہ ہو اُسے ایک دن پکے پان کی طرح ڈال سے گر جانا ہی پڑتا ہے ۔ شاید دنیا کے بدلتے ہوئے حالات میں ہماری اُپیوگتا یا اَن اُپیوگتا کو قدرت ہم سے کہیں زیادہ اچھا سمجھتی ہے ۔ کئی بار ہمیں ایسا لگتا ہے کہ گاندھی جی جیسے مہان آتما کی صورت میں بھی اُن کا آخری بلیدان جو کام کر گیا اور کروڑوں دیش واسیوں کے دلوں پر جو اثر چھوڑ گیا وہ شاید اُن کا دس پانچ برس اور جینا نہ کرپاتا ۔ جو ہو، دنیا تیزی کے ساتھ بدل رہی ہے ۔ ہماری نگاہیں بہت تھوڑی دور

मुख्य मंत्री साहब कहते हैं कि भूक से कोई नहीं मरा. वह ऐसे ही सच है जैसे कोई भी दिक़, मलेरिया या दमा से कभी नहीं मरता. आम तरीक़े से लोग उस समय मरते हैं जब उनका दिल बहुत ही कमज़ोर हो जाता है और उस में धड़कते रहने की और ताक़त नहीं रह जाती. गहरे से गहरे जाने जैसी मजे की चीज़ कोई और नहीं है !

मैंने अपनी जांच प्रताल के नतीजे जनता तक पहुंचा दिये हैं और मंत्रियों के बयान भी उसके पास हैं. इस जगह जो चर्चा मैंने की है इस के अलावा सच को किसी सफ़ाई की ज़रूरत नहीं है. मुझे इतमिनान है कि जनता इन बयानों की आत्मा की गवाही पर खुद ही नतीजे निकाल लेगी.

(विजिल से) —जे. सी. कुमारप्पा

भाई किशोरलाल मशरूवाला

मंगलवार 9 सितम्बर की रात को लगभग दस बजे जब हम बिछौने पर जा चुके थे प्रेस ट्रस्ट आफ़ इंडिया के संवाद दाता ने आ कर जगाया. श्री किशोरलाल मशरूवाला नहीं रहे एक धक्का सा लगा.

गांधीजी के जीवन, उनके असूलों, उनके चरित्र और उनके प्रेम से खिंच कर जो लोग अपने सब धन्दे छोड़ कर उनके आस पास जमा हो गए थे उनमें किशोरलाल भाई इने गिने और चोटी के लोगों में से थे. वह बहुत बड़े विद्वान थे, ऊंचे दरजे के स्वतंत्र विचारक थे. सादगी, त्याग और निस्वार्थता की मूर्ति थे. जिन ऊंचे असूलों को वह दिमाग़ी तौर पर ठीक मानते थे उन्हें अपनी ज़िन्दगी में ढालने की भी पूरी और हद दरजे की कोशिश करते थे.

गांधीजी अपने प्रेम के कारन हमें अपने आश्रमवासियों में गिनते थे. कभी कभी जब हम आश्रम में न होते तो उनकी आज्ञा से हमारी कोठरी ख़ाली भी रखी जाती थी. एक आश्रमवासी की हैसियत से हमें अनेक बार किशोरलाल भाई के साथ बहुत निकट सम्पर्क में आने का मौक़ा मिला. किशोरलाल भाई गांधीजी के केवल भक्त ही नहीं थे. वह उनके ख़ास सलाहकारों में से भी थे. जब कभी किसी बात में उनकी राय गांधीजी की राय से मेल न खाती थी तो वह बिना संकोच और पूरी निडरता के साथ अपनी राय ज़ाहिर कर देते थे और जहां तक ठीक समझते थे उस पर डट भी जाते थे.

एक बार जब हम बाहर से घूम घाम कर सेवाग्राम आश्रम पहुँचे और पहले सीधे गांधीजी के दर्शनों के लिये गये तो हमें उनसे मालूम हुआ कि गांधीजी के कुछ ब्रह्मचर्य के तजुरबों के बारे में उनमें और किशोरलाल भाई में गहरा

مکھیہ منتری صاحب کہتے ہیں کہ بھوک سے کوئی نہیں مرا. یہ ایسے ہی سچ ہے جیسے کوئی بھی دق، ملیریا یا دمہ سے کبھی نہیں مرتا. عام طریقے سے لوگ اس سمے مرتے ہیں جب ان کا دل بہت ہی کمزور ہو جاتا ہے اور اس میں دھڑکتے رہنے کی اور طاقت نہیں رہ جاتی. گہرے سے گہرے جانے جیسی مزے کی چیز کوئی اور نہیں ہے!

میں نے اپنی جانچ پرتال کے نتیجے جنتا تک پہونچا دیئے ہیں اور منتریوں کے بیان بھی اس کے پاس ہیں. اس جگہ جو چرچا میں نے کی ہے اس کے علاوہ سچ کو کسی صفائی کی ضرورت نہیں ہے. مجھے اطمینان ہے کہ جنتا ان بیانوں کی آتما کی گواہی پر خود ہی نتیجے نکال لے گی.

(وجل سے) —جے. سی. کماریپا

بھائی کشورلال مشرو والا

منگل وار 9 ستمبر کی رات کو لگ بھگ دس بجے جب ہم بچھونے پر جا چکے تھے پریس ٹرسٹ آف انڈیا کے سمواد داتا نے آ کر جگایا. شری کشورلال مشرو والا نہیں رہے ایک دھکا سا لگا.

گاندھی جی کے جیون، ان کے اصولوں، ان کے چرتر اور ان کے پریم سے کھنچ کر جو لوگ اپنے سب دھندے چھوڑ کر ان کے آس پاس جما ہوگئے تھے ان میں کشورلال بھائی اِنے گنے اور چوٹی کے لوگوں میں سے تھے. وہ بہت بڑے ودوان تھے، اونچے درجے کے سوتنتر وچارک تھے. سادگی، تیاگ اور نسوارتھتا کی مورتی تھے. جن اونچے اصولوں کو وہ دماغی طور پر ٹھیک مانتے تھے انہیں اپنی زندگی میں ڈھالنے کی بھی پوری اور حد درجے کی کوشش کرتے تھے.

گاندھی جی اپنے پریم کے کارن ہمیں اپنے آشرم واسیوں میں گنتے تھے. کبھی کبھی جب ہم آشرم میں نہ ہوتے تو ان کی آگیاں سے ہماری کوٹھری خالی بھی رکھی جاتی تھی. ایک آشرم واسی کی حیثیت سے ہمیں انیک بار کشورلال بھائی کے ساتھ بہت نکٹ سمپرک میں آنے کا موقع ملا. کشورلال بھائی گاندھی جی کے کیول بھکت ہی نہیں تھے. وہ ان کے خاص صلاحکاروں میں سے بھی تھے. جب کبھی کسی بات میں ان کی رائے گاندھی جی کی رائے سے میل نہ کھاتی تھی تو وہ بنا سنکوچ اور پوری نڈرتا کے ساتھ اپنی رائے ظاہر کر دیتے تھے اور جہاں تک ٹھیک سمجھتے تھے اس پر ڈٹ بھی جاتے تھے.

ایک بار جب ہم باہر سے گھوم گھام کر سیوا گرام آشرم پہونچے اور پہلے سیدھے گاندھی جی کے درشنوں کے لئے گئے تو ہمیں ان سے معلوم ہوا کہ گاندھی جی کے کچھ برہمچریہ کے تجربوں کے بارے میں ان میں اور کشورلال بھائی میں گہرا

(2) उनके पास कपड़े क्यों नहीं थे.

(मेरे सेक्रेटरी पानी पीना चाहते थे. उन्होंने एक झोंपड़े पर जा कर पानी मांगा. एक औरत ने अन्दर से चिल्ला कर कहा—"मैं आपको पानी देने बाहर नहीं आ सकती क्योंकि मेरे बदन पर कोई कपड़ा नहीं है.")

(3) उनके घरों में मुझे सिर्फ़ घास के बीज ही क्यों दिखाई पड़े ?

शायद मैंने ग़लत नतीजे निकाले हैं कि—

(1) खाना न होने के कारन वह भूके थे,

(2) वह इतने ग़रीब थे कि उन्हें कपड़े नहीं मुयस्सर हो सकते थे,

और (3) अपना पेट भरने के लिये घास के बीज उन्हों ने अपने घरों में इकट्ठा कर रखे थे.

शायद उपमन्त्री रावत ने मुक़ामी हिन्दी भाशा के ज़बरदस्त ज्ञान की मदद से जो जांच प्रताल की है उसमें उन्होंने इन सवालों के दूसरे नतीजे भी ढूंढ निकाले हों. वह नतीजे यह हो सकते हैं—

(1) "ख़ूबसूरती मैच में "मिस गोरखपुर" की संज्ञा जीतने के लिये इन गांवों के रहने वालों में अपने बदन को दुबला करने की एक होड़ लग गई है."

(2) "बहुत मुमकिन है कि यह मर्द और औरतें किसी "नांगा सभा" (Nudist Club) की मेम्बर हों."

(3) "शायद यह लोग घास के बीज इस लिये इकट्ठा कर रहे हैं ताकि उन्हें अपने झोपड़ों के सामने बो कर और सींचाई करके मंत्रियों की तरह शाम को ठंड का मज़ा लेने के लिये लान तैयार कर लें."

मुझे नहीं मालूम था कि इस तरह की जांच प्रताल में भाशा की बहुत ज़रूरत होती है. सिर्फ़ झूट को सच दिखाने के लिये अथक भाशन ज़रूरी हैं और यहां ज़रूर भाशा बहुत बड़ा काम करती है !

जहां तक सरकारी काग़ज़ों में मुजरिमाना अदल बदल का सम्बन्ध है अगर उपमन्त्री रावत अपने आस पास खोज करें तो उन्हें और ऐसी बहुत सी अदल बदल मिल जायेंगी. मैंने तो उनमें से कुछ नमूने के तौर पर ले लिये हैं और उन्हें प्रधान मंत्री के सुपुर्द कर दिये हैं. अधिकारियों में से वह ही एक आदमी हैं जिन पर भरोसा किया जा सकता है कि वह इस सवाल पर बेलाग रुख़ लेंगे.

(2) اُن کے پاس کپڑے کیوں نہیں تھے ۔

(میرے سکریٹری پانی پینا چاہتے تھے ۔ اُنہوں نے ایک جھونپڑے پر جا کر پانی مانگا ۔ ایک عورت نے اندر سے چلا کر کہا—" میں آپ کو پانی دینے باہر نہیں آسکتی کیونکہ میرے بدن پر کوئی کپڑا نہیں ہے ۔"

(3) اُن کے گھروں میں مجھے صرف گھاس کے بیج ہی کیوں دکھائی پڑے ؟

شاید میں نے غلط نتیجے نکالے ہیں کہ—

(1) کھانا نہ ہونے کے کارن وہ بھوکے تھے'

(2) وہ اتنے غریب تھے کہ اُنہیں کپڑے نہیں میسر ہو سکتے تھے'

اور (3) اپنا پیٹ بھرنے کے لئے گھاس کے بیج اُنہوں نے اپنے گھروں میں اکٹھا کر رکھے تھے ۔

شاید اُپ منتری راوت نے مقامی ہندی بھاشا کے زبردست گیان کی مدد سے جو جانچ پرتال کی ہے اُس میں اُنہوں نے اِن سوالوں کے دوسرے نتیجے بھی ڈھونڈھ نکالے ہوں ۔ وہ نتیجے یہ ہو سکتے ہیں—

(1) "خوبصورتی میچ میں "مس گورکھپور" کی سنگیا جیتنے کے لئے اِن گاؤں کے رہنے والوں میں اپنے بدن کو دبلا کرنے کی ایک ہوڑ لگ گئی ہے ۔"

(2) "بہت ممکن ہے کہ یہ مرد اور عورتیں کسی "ناںگا سبھا" (Nudist Club) کی ممبر ہوں ۔"

(3) "شاید یہ لوگ گھاس کے بیج اِس لئے اکٹھا کر رہے ہیں تاکہ اُنہیں اپنے جھونپڑوں کے سامنے بو کر اور سینچائی کرکے منتریوں کی طرح شام کو ٹھنڈک کا مزا لینے کے لئے لان تیار کرلیں ۔"

مجھے نہیں معلوم تھا کہ اس طرح کی جانچ پرتال میں بھاشا کی بہت ضرورت ہوتی ہے. صرف جھوٹ کو سچ دکھانے کے لئے انتھک بھاشن ضروری ہیں اور یہاں ضرور بھاشا بہت بڑا کام کرتی ہے !

جہاں تک سرکاری کاغذوں میں مجرمانہ ادل بدل کا سمبندھ ہے اگر اُپ منتری راوت اپنے آس پاس کھوج کریں تو اُنہیں اور ایسی بہت سی ادل بدل مل جائیں گی ۔ میں نے تو اُن میں سے کچھ نمونے کے طور پر لے لئے ہیں اور اُنہیں پردھان منتری کے سپرد کر دیئے ہیں. ادھیکاریوں میں سے وہ ہی ایک آدمی ہیں جن پر بھروسہ کیا جاسکتا ہے کہ وہ اِس سوال پر بے لاگ رخ لیں گے.

को यह बान पड़ गई है कि जहां कहीं उनका विरोध हुआ उन्होंने फ़ौरन उसे कम्युनिस्टों या कम्युनिज़्म के सर मढ़ा. यह भी एक अजीब चक्कर है. कोई कांगरेस वाला तो किसी कांगरेसी सरकार की कोई बुराई, ग़लती या कमज़ोरी इसलिये नहीं बताएगा क्योंकि ऐसा करने से उसे अपने ख़िलाफ़ डिसिपलिनरी एकशन लिये जाने का डर है. और अगर कोई ग़ैरकांगरेसी इनसान सरकार की कोई ग़लती बताए या जनता की कोई शिकायत उन तक पहुंचाए तो उसे फ़ौरन पार्टी बन्दी कह कर ख़त्म किया जा सकता है. और फिर कम्युनिज़्म या कम्युनिस्टों के सर पर तो हर टोपी चाहे वह उनके सर पर बैठे या न बैठे जबर्दस्ती चिपकाई ही जा सकती है. लेकिन हम फिर यह कहेंगे कि इस तरह की हलकी चालें न किसी सरकार के मान या उसकी उम्र को बढ़ा सकती हैं और न दुनिया की तारीख़ के धारे को पलट सकती हैं.

12. 9. '52 —सुन्दरलाल

गोरखपुर में मौज ही मौज !

अख़बार वाले पूछते हैं कि क्या मुझे मुख्य मंत्री गोविन्द बल्लभ पंत और उपमंत्री जगन प्रसाद रावत के उन बयानों के जवाब में कुछ नहीं कहना है जो उन्होंने मेरी गोरखपुर अकाल रिपोर्ट पर दिये हैं.

मुख्य मंत्री का कहना है कि मैंने पूरे इलाक़े की जांच नहीं की. इसमें कोई शक नहीं है कि मैंने इस ज़िले की पूरी जनगिन्ती करने की नहीं ठानी. मेरी ,जांच परताल तो सिर्फ़ इसलिये थी कि अकाल के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी हो जाए. मैंने लगभग 350 मील का चक्कर काटा और क़रीब क़रीब 75000 आदमियों में घूमा. मेरे लिये यह चक्कर ही बहुत काफ़ी था.

उपमंत्री रावत का कहना है कि उन्हें कोई ऐसा आदमी नहीं मिला जिसे 24 घंटे में कुछ न कुछ खाने को न मिला हो. रावत साहब का बयान ठीक होगा क्योंकि पीड़ितों में से ज़ियादातर ने घास की जड़ें तो खाई ही होंगी. मैं अपने भोले पन के कारन इन चीज़ों की गिनती इनसानों की ख़ोराक में नहीं करता.

रावत साहब ने मेरे ऊपर दूसरा इलज़ाम लगाया है कि मैंने दूसरे फ़रीक़ की बातें नहीं सुनीं. मैं अपनी बेवक़ूफ़ी को मानता हूँ कि जिन तीन बातों की जांच परताल मैं कर रहा था उनको वहां पा कर मैं एक नतीजे पर क्यों पहुँच गया. वह बातें यह थीं.

(1) लोग सिर्फ़ खाल और हड्डी के ढांचे क्यों बन गए थे.

کو یہ بان پڑ گئی ہے کہ جہاں کہیں اُن کا وِرودھ ہوا اُنہوں نے فوراً اُسے کمیونسٹوں یا کمیونزم کے سر مڈھا. یہ بھی ایک عجیب چکر ہے . کوئی کانگریس والا تو کسی کانگریسی سرکار کی کوئی بُرائی' غلطی یا کمزوری اِس لئے نہیں بتائیگا کیونکہ ایسا کرنے سے اُسے اپنے خلاف ڈسپلینری ایکشن لئے جانے کا ڈر ہے . اور اگر کوئی غیر کانگریسی اِنسان سرکار کی کوئی غلطی بتائے یا جنتا کی کوئی شکایت اُن تک پہونچائے تو اُسے فوراً پارٹی بندی کہ کر ختم کیا جاسکتا ہے . اور پھر کمیونزم یا کمیونسٹوں کے سر پر تو ہر ٹوپی چاہے وہ اُن کے سر پر بیٹھے یا نہ بیٹھے زبردستی چپکائی ہی جاسکتی ہے. لیکن ہم پھر یہ کہینگے کہ اِس طرح کی ہلکی چالیں نہ کسی سرکار کے مان یا اُس کی عمر کو بڑھا سکتی ہیں اور نہ دنیا کی تاریخ کے دھارے کو پلٹ سکتی ہیں .

—سندرلال 12 . 9 . '52

گورکھ پور میں موج ہی موج !

اخبار والے پوچھتے ہیں کہ کیا مجھے مکھیہ منتری گووند بلبھ پنت اور اُپ منتری جگن پرشاد راوت کے اُن بیانوں کے جواب میں کچھ نہیں کہنا ہے جو اُنہوں نے میری گورکھ پور اکال رپورٹ پر دیئے ہیں .

مکھیہ منتری کا کہنا ہے کہ میں نے پورے علاقے کی جانچ نہیں کی . اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ میں نے اِس ضلع کی پوری جن‌گنتی کرنے کی نہیں ٹھانی . میری جانچ پڑتال تو صرف اس لئے تھی کہ اکال کے بارے میں تھوڑی بہت جانکاری ہوجائے . میں نے لگ بھگ 350 میل کا چکر کاٹا اور قریب قریب 75000 آدمیوں میں گھوما . میرے لئے یہ چکر ہی بہت کافی تھا.

اُپ منتری راوت کا کہنا ہے کہ اُنہیں کوئی ایسا آدمی نہیں ملا جسے 24 گھنٹے میں کچھ نہ کچھ کھانے کو نہ ملا ہو. راوت صاحب کا بیان ٹھیک ہوگا کیونکہ پیڑتوں میں سے زیادہ تر نے گھاس کی جڑیں تو کھائی ہی ہونگی. میں اپنے بھولے پن کے کارن اِن چیزوں کی گنتی انسانوں کی خوراک میں نہیں کرتا .

راوت صاحب نے میرے اوپر دوسرا الزام لگایا ہے کہ میں نے دوسرے فریق کی باتیں نہیں سنیں . میں اپنی بیوقوفی کو مانتا ہوں کہ جن تین باتوں کی جانچ پڑتال میں کر رہا تھا اُن کو وہاں پا کر میں ایک نتیجے پر کیوں پہونچ گیا . وہ باتیں یہ تھیں .

(1) لوگ صرف کھال اور ہڈی کے ڈھانچے کیوں بن گئے تھے .

भाई शिब्बनलाल और भाई कुमारप्पा की नियत पर भी हमले किये गए हैं. देश के सेवक जो कल तक एक दूसरे के साथ काम करते रहे हैं अपनी बहसों में इतने नीचे क्यों उतर आवें! भाई कुमारप्पा की और अपनी बाबत हम यह नम्रता के साथ कह सकते हैं कि न हमारे पास सरकारी या ग़ैरसरकारी कोई इस तरह का पद है जिसे संभाले रखने की हमें चिन्ता हो और न आगे के लिये किसी ऐसे पद की लालसा है. भाई शिब्बनलाल की बाबत हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि इस नोट को लिखते समय हमें जल्दी से यह याद भी नहीं आ रहा कि भाई शिब्बनलाल आजकल किस पार्टी में हैं. हमें इस में भी कोई शक नहीं कि कम से कम गोरखपुर के मामले में जनता के दुखों को दूर करने की चिनता जितनी किसी सरकारी मिनिस्टर को हो सकती है उससे कम भाई शिब्बनलाल सकसेना को नहीं. मुमकिन है कुछ ज़ियादा ही हो.

हमें दुख है कि सूबे की सरकार जनता के दुखों को दूर करने की चिन्ता में जितनी दिखाई देती है उससे अधिक इस बात को साबित करने की कोशिश में नज़र आती है कि उसके राज के अन्दर कोई भूक से नहीं मरा. हम यह भी भूल जाते हैं कि सरकारी एलान या इनकार या हुकूमती या वकीली बहसें न असल घटनाओं को बदल सकती हैं, न जनता के दिलों को जीत सकती हैं और न सरकार या सरकारी लोगों के मान को बढ़ा सकती हैं. हमें यह देख कर भी दुख हुआ कि हुकूमत से बाहर जनता के आम सेवकों और पुराने काम करने वालों का ध्यान भी अब जनता के दुखों की तरफ़ कम और अपने अपने धन्दों और आगे के चुनाव में कामयाब होने की तरफ़ ज़ियादा है. इसमें शक नहीं कि राजकाजी आज़ादी मिल जाने ने हमारे सब के चरित्र को नीचे गिराया है ऊपर नहीं उठाया.

फिर भी गोरखपुर से चलते चलते हमें कुछ आशा की किरन दिखाई दी. सूबे की सरकार अपनी कोशिशों को बढ़ा रही है. हुकूमत से बाहर काम करने वालों में भी कुछ हलचल दिखाई दी. हमें गोरखपुर की जनता का भला इसी में दिखाई देता है कि वहां की जनता के दुखों को दूर करने के लिये सरकार, उसके मिनिस्टर और अफ़सर और हुकूमत से बाहर के सब देश सेवक पूरी तरह मिल कर काम करें और इस वक़्ती मुसीबत को दूर करने के बाद बल्कि इसके साथ साथ इस इलाक़े की ग़रीबी को हमेशा को दूर करने के लिये इन टिकाऊ तदबीरों की तरफ़ भी ध्यान दें जिनकी ऊपर के बयान में चर्चा की गई है.

हमने हाल में एक बयान में यह भी देखा कि गोरखपुर के मामले को कम्युनिस्टों के साथ जोड़ने की कोशिश की जा रही है. हमारे कुछ सरकारी और ग़ैरसरकारी भाइयों

بھائی شبھن لال اور بھائی کمارپپا کی نیت پر بھی حملے کئے گئے ھیں. دیش کے سیوک جو کل تک ایک دوسرے کے ساتھ کام کرتے رہے ھیں اپنی بحثوں میں اتنے نیچے کیوں اُتر آویں! بھائی کمارپپا کی اور اپنی بابت ہم یہ نمرتا کے ساتھ کہ سکتے ھیں کہ نہ ھمارے پاس سرکاری یا غیر سرکاری کوئی اِسطرح کا پد ہے جسے سنبھالے رکھنے کی ھمیں چنتا ہو اور نہ آگے کے لئے کسی ایسے پد کی لالسا ہے. بھائی شبھن لال کی بابت ہم کیول اتنا ہی کہ سکتے ھیں کہ اِس نوٹ کو لکھتے سمے ھمیں جلدی سے یہ یاد بھی نہیں آ رہا ہے کہ بھائی شبھن لال آج کل کس پارٹی میں ھیں. ھمیں اِس میں بھی کوئی شک نہیں کہ کم سےکم گورکھپور کے معاملے میں جنتا کے دکھوں کو دور کرنے کی چنتا جتنی کسی سرکاری منسٹر کو ہوسکتی ہے اُس سے کم بھائی شبھن لال سکسینا کو نہیں. ممکن ہے کچھ زیادہ ہی ہو.

ھمیں دکھ ہے کہ صوبے کی سرکار جنتا کے دکھوں کو دور کرنے کی چنتا میں جتنی دکھائی دیتی ہے اُس سے ادھک اس بات کو ثابت کرنے کی کوشش میں نظر آتی ہے کہ اُس کے راج کے اندر کوئی بھوک سے نہیں مرا. ہم یہ بھی بھول جاتے ھیں کہ سرکاری اعلان یا اِنکار یا حکومتی یا وکیلی بحثیں نہ اصل گھٹناؤں کو بدل سکتی ھیں، نہ جنتا کے دلوں کو جیت سکتی ھیں اور نہ سرکار یا سرکاری لوگوں کے مان کو بڑھا سکتی ھیں. ھمیں یہ دیکھ کر بھی دکھ ہوا کہ حکومت سے باہر جنتا کے عام سیوکوں اور پرانے کام کرنے والوں کا دھیان بھی اب جنتا کے دکھوں کی طرف کم اور اپنے اپنے دھندوں اور آگے کے چناؤ میں کامیاب ہونے کی طرف زیادہ ہے. اِس میں شک نہیں کہ راج کاجی آزادی مل جانے نے ھمارے سب کے چرتر کو نیچے گرایا ہے اوپر نہیں اُٹھایا.

پھر بھی گورکھپور سے چلتے چلتے ھمیں کچھ آشا کی کرن دکھائی دی. صوبے کی سرکار اپنی کوششوں کو بڑھا رہی ہے. حکومت سے باہر کام کرنے والوں میں بھی کچھ ہلچل دکھائی دی. ھمیں گورکھپور کی جنتا کا بھلا اِسی میں دکھائی دیتا ہے کہ وہاں کی جنتا کے دکھوں کو دور کرنے کے لئے سرکار، اُس کے منسٹر اور افسر اور حکومت سے باہر کے سب دیش سیوک پوری طرح مل کر کام کریں اور اس وقتی مصیبت کو دور کرنے کے بعد بلکہ اِس کے ساتھ ساتھ اُس علاقے کی غریبی کو ھمیشہ کو دور کرنے کے لئے اِن ٹکاؤ تدبیروں کی طرف بھی دھیان دیں جن کی اوپر کے بیان میں چرچا کی گئی ہے.

ہم نے حال میں ایک بیان میں یہ بھی دیکھا کہ گورکھپور کے معاملے کو کمیونسٹوں کے ساتھ جوڑنے کی کوشش کی جا رہی ہے. ھمارے کچھ سرکاری اور غیرسرکاری بھائیوں

किशोरलाल जी मशरूवाला या डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा तीनों में से कोई आ कर खुद तहक़ीक़ात करके इस बारे में अपना फ़ैसला दे दे और अगर वह फ़ैसला उनके ख़िलाफ़ हो तो वह अपनी ग़लती मान कर अनशन तोड़ देंगे और अगर फ़ैसला सरकार के ख़िलाफ़ और उन के हक़ में हो तो जब तक सरकार अपनी ग़लती न माने और लोगों के दुख को दूर करने के लिये मुनासिब क़दम न उठाए तब तक वह अनशन जारी रखेंगे और ज़रूरत होगी तो अपने प्रान भी दे देंगे.

इस पर किसी कांगरेसी भाई ने गोरखपुर से भाई कुमारप्पा को वर्धा तार दिया कि आप फ़ौरन गोरखपुर आकर हालत की जांच करें. भाई कुमारप्पा गोरखपुर जाने के इरादे से इलाहाबाद आए. उन्होंने मुझ से चाहा कि मैं भी इस काम के लिये उनके साथ गोरखपुर जाऊं. मेरे पास फिर वक़्त की कमी थी. मैंने सोचा कि मैं अपनी जगह किसी तजुर्बेकार वकील या बैरिस्टर को कुमारप्पा जी के साथ कर दूं. एक एक कर मैंने श्री के. के. भट्टाचार्य, श्री टी. एन. सप्रू, श्री सुरेन्द्र नाथ वर्मा और श्री मुहम्मद अहमद काज़मी से प्रार्थना की कि वह चन्द रोज़ के लिये कुमारप्पा जी के साथ चले जाएं. लेकिन वक़्त की कमी और अपने दूसरे ज़रूरी कामों की वजह से इन में से कोई भी जल्दी तैयार न हो सका. मजबूर हो कर मैंने कुमारप्पा जी का साथ देना तय किया. कुमारप्पा जी 26 अगस्त को गोरखपुर के लिये रवाना हो गए. 27 की शाम को इलाहाबाद से चल कर 28 की सुबह मैं भाई कुमारप्पा से जा मिला. इसके बाद जो कुछ हम दोनों ने अपनी आंखों से देखा और जिन नतीजों पर हम पहुंचे वह ऊपर के बयान में दर्ज हैं.

हमें अफ़सोस है कि इसके बाद भी सरकार और भाई शिब्बनलाल के बीच बहसा बहसी बराबर जारी है. यहां हम केवल इतना दुहरा देना ज़रूरी समझते हैं कि ऊपर के बयान की जिस पर भाई कुमारप्पा और हमारे दोनों के दस्तख़त हैं एक एक बात सोलह आने सच है. जब हम उन गावों में गए, हमने लोगों के बयान सुने, अपनी आंखों से उनकी हालत को देखा, दिल कड़ा कर के उन से जिरह की और घरों में घुस घुस कर उनके कोठी कोठलों और रसोई के बरतनों की तलाशी ली तो जो हालत ऊपर के बयान में दी गई है असल हालत उस से कुछ बदतर ही थी बेहतर नहीं.

देश के कुछ अख़बारों ने हमारे बयान के बाद इस सवाल पर ख़ासे अच्छे नोट लिखे हैं और सरकार और जनता दोनों को मुनासिब और नेक सलाह दी है. लेकिन हमें यह देख कर और भी दुख हुआ कि सरकारी बयानों में और सरकार की हां में हां मिलाने वाले कुछ अख़बारों में

کشورلال جی مشروالا یا ڈاکٹر جے. سی. کمارپپا تینوں میں کوئی سے آکر خود تحقیقات کر کے اس بارے میں اپنا فیصلہ دے دے اور اگر وہ فیصلہ اُن کے خلاف ہو تو وہ اپنی غلطی مان کر اَن شن توڑ دیں گے اور اگر فیصلہ سرکار کے خلاف اور اُن کے حق میں ہو تو جب تک سرکار اپنی غلطی نہ مانے اور لوگوں کے دکھ دور کرنے کے لئے مناسب قدم نہ اُٹھائے تب تک وہ اَن شن جاری رکھیں گے اور ضرورت ہوگی تو اپنے پران بھی دے دیں گے .

اس پر کسی کانگریسی بھائی نے گورکھ پور سے بھائی کمارپپا کو وردھا تار دیا کہ آپ فوراً گورکھ پور آکر حالت کی جانچ کریں . بھائی کمارپپا گورکھ پور جانے کے اِرادے سے الہ آباد آئے. اُنھوں نے مجھ سے چاہا کہ میں بھی اِس کام کے لئے ان کے ساتھ گورکھ پور جاؤں . میرے پاس پھر وقت کی کمی تھی . میں نے سوچا کہ میں اپنی جگہ کسی تجربہ کار وکیل یا بیرسٹر کو کمارپپا جی کے ساتھ کردوں. ایک ایک کر میں نے شری کے . کے . بھٹا چاریہ، شری ٹی . این . سپرو، شری سریندر ناتھ ورما اور شری محمد احمد کاظمی سے پراتھنا کی کہ وہ چلد روز کے لئے کمارپپا جی کے ساتھ چلے جائیں . لیکن وقت کی کمی اور اپنے دوسرے ضروری کاموں کی وجہ سے اِن میں سے کوئی بھی جلدی تیار نہ ہوسکا . مجبور ہو کر میں نے کمارپپا جی کا ساتھ دینا طے کیا . کمارپپا جی 26 اگست کو گورکھ پور کے لئے روانہ ہو گئے . 27 کی شام کو الہ آباد سے چل کر 28 کی صبح میں بھائی کمارپپا سے جا ملا . اِس کے بعد جو کچھ ہم دونوں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا اور جن نتیجوں پر ہم پہونچے وہ اوپر کے بیان میں درج ہیں .

ہمیں افسوس ہے کہ اس کے بعد بھی سرکار اور بھائی شببن لال کے بیچ بحثا بحثی برابر جاری ہے . یہاں ہم کیول اِتنا دہرا دینا ضروری سمجھتے ہیں کہ اوپر کے بیان کی جس پر بھائی کمارپپا اور ہمارے دونوں کے دستخط ہیں ایک ایک بات سولہ آنے سچ ہے . جب ہم اُن گاؤں میں گئے ہم نے لوگوں کے بیان سنے' اپنی آنکھوں سے اُن کی حالت کو دیکھا' دل کڑا کر کے اُن سے جرح کی اور گھروں میں گھس گھس کر اُن کے کوٹھی کٹھلوں اور رسوئی کے برتنوں کی تلاشی لی تو جو حالت اوپر کے بیان میں دی گئی ہے اصل حالت اُس سے کچھ بدتر ہی تھی بہتر نہیں .

دیش کے کچھ اخباروں نے ہمارے بیان کے بعد اِس سوال پر خاصے اچھے نوٹ لکھے ہیں اور سرکار اور جنتا دونوں کو مناسب اور نیک صلاح دی ہے . لیکن ہمیں یہ دیکھ کر اور بھی دکھ ہوا کہ سرکاری بیانوں میں اور سرکار کی ہاں میں ہاں ملانے والے کچھ اخباروں میں

गन्ना उगाना चाहिये जितना वह अपने कोल्हुओं में पेर कर गुड़ और खंडसारी बना सकें.

भूमि सुधार

गोरखपुर ज़िला भूमि के बिलकुल बेहिसाब बटवारे के लिये भी बदनाम है और लोगों की बेहद ग़रीबी की यह भी एक खास वजह है. लम्बे अरसे के प्रोग्राम में सही ढंग का भूमि सुधार और मुनासिब और बराबरी के आधार पर भूमि का फिर से बटवारा होना चाहिये, जिससे कोई भी खेत जोतने वाला बिना किसी ऐसी ज़मीन के न रह जाय जो उसकी अपनी पूरी मिलकियत न हो. मशीनों के ज़रिये मिली जुली खेती या जबर्दस्ती की सहकारी खेती से ग़रीब लोगों को कोई भी असली लाभ नहीं मिलेगा.

नतीजा

अगर हम सचमुच ग़रीब देहातियों का भला चाहते हैं तो हमें इस मामले में चीन, कश्मीर और बर्मा की राह को अपनाना चाहिये. उसमें हम अपनी ज़रूरत के मुताबिक हेर फेर कर सकते हैं. अगर हिन्दुस्तान को ज़िन्दा रखना है तो हमें अपने गांवों को ज़रूर खुशहाल बनाना चाहिये और उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के लायक़ कर देना चाहिये. गोरखपुर में इस ढंग पर सच्ची सेवा करने का सरकार, पब्लिक काम करने वालों और जनता सब को अच्छा मौक़ा है. हम आशा करते है कि हम सब इस संकट से फ़ायदा उठायंगे.

इलाहाबाद —सुन्दरलाल
6 सितम्बर 1952 —जे. सी. कुमारप्पा

گنا اُگانا چاھئے جتنا وہ اپنے کولھوؤں میں پیر کر گڑ اور کھانڈ ساری بناسکیں۔

بھومی سدھار

گورکھپور ضلع بھومی کے بالکل بے حساب بٹوارے کے لئے بھی بدنام ہے اور لوگوں کی بے حد غریبی کی یہ بھی ایک خاص وجہ ہے۔ لمبے عرصے کے پروگرام میں صحیح ڈھنگ کا بھومی سدھار اور مناسب اور برابری کے آدھار پر بھومی کا پھر سے بٹوارہ ہونا چاہئے، جس سے کوئی بھی کھیت جوتنے والا بنا کسی ایسی زمین کے نہ رہ جائے جو اُس کی اپنی پوری ملکیت نہ ہو۔ مشینوں کے ذریعے ملی جلی کھیتی یا زبردستی کی سہکاری کھیتی سے غریب لوگوں کو کوئی بھی اصلی لابھ نہیں ملے گا۔

نتیجہ

اگر ہم سچ مچ غریب دیہاتیوں کا بھلا چاہتے ہیں تو ہمیں اِس معاملے میں چین، کشمیر اور برما کی راہ کو اپنانا چاہئے۔ اُس میں ہم اپنی ضرورت کے مطابق ہیر پھیر کرسکتے ہیں۔ اگر ہندستان کو زندہ رکھنا ہے تو ہمیں اپنے گاؤں کو ضرور خوش حال بنانا چاہئے اور انہیں اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کے لائق کردینا چاہئے۔ گورکھپور میں اِس ڈھنگ پر سچی سیوا کرنے کا سرکار، پبلک کام کرنے والوں اور جنتا سب کو اچھا موقع ہے۔ ہم آشا کرتے ہیں کہ ہم سب اِس سنکٹ سے فائدہ اُٹھائیں گے۔

الہ آباد —سندر لال
6 ستمبر 1952 —جے۔ سی۔ کمارپپا

यू. पी. सरकार और गोरखपुर

गोरखपुर में अनाज की कमी और वहां जनता की मुसीबतों की खबरें बहुत दिनों से आ रही थीं. कई बार मुझ से भी यह कहा गया कि मैं जा कर वहां की हालत को देखूं. सेहत की खराबी और वक़्त की कमी के कारन मैं यह न कर सका. अखबारों के अन्दर श्री शिब्बनलाल सकसेना और यू. पी. सरका में बहस भी चल रही थी. शिब्बनलाल जी का कहना था कि गोरखपुर ज़िले में खाना न मिलने के कारन लोग सैकड़ों की तादाद में मर रहे हैं. सरकार नाज की कमी और लोगों की दिक़्क़त को तो मानती थी पर मौतों से साफ़ इनकार करती थी..लोगों की दिक़्क़त को दूर करने के लिये सरकार ने कुछ क़दम भी उठाए. शिब्बनलाल जी का कहना था कि वह क़दम नाकाफ़ी हैं. शिब्बनलाल जी ने इस बात पर कि भूक से लोगों के मरने के बारे में सरकार ने उनके बयान को ग़लत ठहराया था अनशन शुरू कर दिया और साथ ही यह एलान कर दिया कि अगर विनोबा जी,

یوپی سرکار اور گورکھ پور

گورکھ پور میں اناج کی کمی اور وہاں جنتا کی مصیبتوں کی خبریں بہت دنوں سے آرہی تھیں۔ کئی بار مجھ سے بھی یہ کہا گیا کہ میں جا کر وہاں کی حالت کو دیکھوں۔ صحت کی خرابی اور وقت کی کمی کے کارن میں یہ نہ کر سکا۔ اخباروں کے اندر شری شبن لال سکسینا اور یو۔ پی۔ سرکار میں بحث بھی چل رہی تھی۔ شبن لال جی کا کہنا تھا کہ گورکھ پور ضلعے میں کھانا نہ ملنے کے کارن لوگ سیکڑوں کی تعداد میں مر رہے ہیں۔ سرکار ناج کی کمی اور لوگوں کی دقت کو تو مانتی تھی پر موتوں سے صاف انکار کرتی تھی۔ لوگوں کی دقت کو دور کرنے کے لئے سرکار نے کچھ قدم بھی اُٹھائے۔ شبن لال جی کا کہنا تھا کہ وہ قدم ناکافی ہیں۔ شبن لال جی نے اِس بات پر کہ بھوک سے لوگوں کے مرنے کے بارے میں سرکار نے اُن کے بیان کو غلط ٹھہرایا تھا اَن شن شروع کر دیا اور ساتھ ہی یہ اعلان کر دیا کہ اگر ونوبا جی،

बम्बई, कलकत्ता और हिन्दुस्तान के बाहर भी हज़ारों की तादाद में मज़दूरी करने जाते हैं क्योंकि उनके ज़िले में खाने और काम की कमी है.

घरेलू धन्दे नाम की लगभग कोई चीज़ गोरखपुर ज़िले में नहीं है जो खेती की कमी को पूरी कर सके या जो गिरानी के वक़्त लोगों की अनाज ख़रीदने की ताक़त को बनाए रख कर उनकी मदद कर सके. हमने सुना कि गोरखपुर ज़िले के कुछ हिस्सों में, जिनमें फ़रेन्दा और महराजगंज भी शामिल हैं, गुड़ और खंडसारी के फलते फूलते धन्दे थे जो ज़िले में चीनी की मिलों के हो जाने से बरबाद हो गए हैं. इसलिये इलाज दो तरह का होना चाहिये. एक थोड़े अरसे का और दूसरा लम्बे अरसे का.

थोड़े अरसे का प्रोग्राम

थोड़े अरसे के प्रोग्राम में यह चीज़ें होनी चाहियें. गिरानी के हर इलाक़े में ग़ल्ले का तुरंत पहुंचाना और बांटना, रिलीफ़ के कामों को इस समय के मुक़ाबले में कई गुना बढ़ाना ताकि सब को मदद पहुंच सके और जिसे ज़रूरत हो और जो इस हालत में न हो कि रिलीफ़ कैम्पों में जा सके उसकी रुपए से मदद करना

लम्बे अरसे का प्रोग्राम

लम्बे अरसे के प्रोग्राम में जो और भी ज़ियादा ज़रूरी है यह बातें होनी चाहियें. रूई और ऊन की कताई, चमड़े का सिझाना और गुड़ और खंडसारी के उद्योग जैसे घरेलू उद्योगों का संगठन, उन अभागे इलाक़ों से ग़रीबी को हटाने के लिये यह छोटे छोटे धंदे बिलकुल ज़रूरी हैं. इनमें सरकार और वहां के कारकर्ताओं को तुरन्त हाथ लगा देना चाहिये.

बाढ़ की रोक थाम

लम्बे अरसे के प्रोग्राम में नहरों, कुओं और पानी के हौज़ बना कर नदियों की रोक थाम भी शामिल होनी चाहिये. इन्हें बड़ी स्कीमों के ढंग पर जिनमें बड़ी बड़ी मशीनों और बहुत पैसों की ज़रूरत है न कर के छोटे पैमाने पर करना चाहिये जैसे कि इस तरह की चीज़ें जापान और नये चीन में हो रही हैं. इसमें मशीनों और लम्बी रक़मों के बजाय आदमी की ताक़त और लोगों की इच्छा से बनी हुई सहकारी समितियों पर ज़ियादा भरोसा करना चाहिये.

ठीक फ़सल का उगाना

गांव वालों को व्यापारी फ़सलों की जगह अनाज की फ़सलों को बोने के लिये समझाना चाहिये. मिलों के लिये गन्ना उगाना उनका काम नहीं है. उससे जो कुछ थोड़ा सा पैसा उन्हें मिलता है वह सिर्फ़ धोखा है जिससे आख़िर में भुकमरी और मौत होती है. उन्हें सिर्फ़ उतना ही

بمبئی، کلکتہ اور ہندستان کے باہر بھی ہزاروں کی تعداد میں مزدوری کرنے جاتے ہیں کیونکہ اُن کے ضلعے میں کھانے اور کام کی کمی ہے ۔

گھریلو دھندے نام کی لگ بھگ کوئی چیز گورکھپور ضلعے میں نہیں ہے جو کھیتی کی کمی کو پوری کرسکے یا جو گرانی کے وقت لوگوں کی اناج خریدنے کی طاقت کو بنائے رکھ کر اُن کی مدد کرسکے ۔ ہم نے سنا کہ گورکھپور ضلعے کے کچھ حصوں میں، جن میں پھرندا اور مہراج گنج بھی شامل ہیں، گڑ اور کھنڈساری کے پھلتے پھولتے دھندے تھے جو ضلعے میں چینی کی ملوں کے ہو جانے سے برباد ہوگئے ہیں. اس لئے علاج دو طرح کا ہونا چاہئے. ایک تھوڑے عرصے کا اور دوسرا لمبے عرصے کا ۔

تھوڑے عرصے کا پروگرام

تھوڑے عرصے کے پروگرام میں یہ چیزیں ہونی چاہئیں. گرانی کے ہر علاقے میں غلے کا ترنت پہنچانا اور بانٹنا، رلیف کے کاموں کو اِس سمے کے مقابلے میں کئی گنا بڑھانا تاکہ سب کو مدد پہنچ سکے اور جسے ضرورت ہو اور جو اِس حالت میں نہ ہو کہ ریلیف کیمپوں میں جاسکے اُس کی روپئے سے مدد کرنا ۔

لمبے عرصے کا پروگرام

لمبے عرصے کے پروگرام میں جو اور بھی زیادہ ضروری ہے یہ باتیں ہونی چاہئیں ۔ روئی اور اُون کی کتائی، چمڑے کا سجھانا اور گڑ اور کھنڈ ساری کے اُدیوگ جیسے گھریلو اُدیوگوں کا سنگھٹن، اُن ابھاگے علاقوں سے غریبی کو ہٹانے کے لئے یہ چھوٹے چھوٹے دھندے بالکل ضروری ہیں. ان میں سرکار اور وہاں کے کارکرتاؤں کو ترنت ہاتھ لگا دینا چاہئے ۔

باڑھ کی روک تھام

لمبے عرصے کے پروگرام میں نہروں، کوؤں اور پانی کے حوض بناکر ندیوں کی روک تھام بھی شامل ہونی چاہئے ۔ اِنہیں بڑی اسکیموں کے ڈھنگ پر جن میں بڑی بڑی مشینوں اور بہت پیسوں کی ضرورت ہے نہ کرکے چھوٹے پیمانے پر کرنا چاہئے جیسے کہ اِس طرح کی چیزیں جاپان اور نئے چین میں ہو رہی ہیں ۔ اِس میں مشینوں اور لمبی رقموں کے بجائے آدمی کی طاقت اور لوگوں کی اچھا سے بنی ہوئی سہکاری سمتیوں پر زیادہ بھروسہ کرنا چاہئے ۔

ٹھیک فصل کا اُگانا

گاؤں والوں کو بیوپاری فصلوں کی جگہ اناج کی فصلوں کو بونے کے لئے سمجھانا چاہئے ۔ ملوں کے لئے گنا اُگانا اُن کا کام نہیں ہے ۔ اُس سے جو کچھ تھوڑا سا پیسہ اُنہیں ملتا ہے وہ صرف دھوکا ہے جس سے آخیر میں بھکمری اور موت ہوتی ہے ۔ اُنہیں صرف اتنا ہی

सहारा ले सकें. हजारों एकड़ बढ़िया ज़मीन गन्ने की खेती में इस्तेमाल हो रही है. उस ज़मीन से लोगों को चावल या दूसरे अनाज की फ़सलें मिल सकती थीं. ऐसी जगह जहां पर ग़ल्ले की कमी हो कुछ लोगों का गन्ना बोना अर्थशास्त्र में अक़्ल के खिलाफ़ है और घाटे की चीज़ है. चीनी की मिलों से पहले कुछ साल जो फ़ायदा होता है उसकी वजह से यह किसान ऐसे फंस गए हैं कि निकलने में बड़ी मुश्किल पड़ रही है.

"लोगों की मुसीबतों के लिये बहुत ज़ियादा सबूत की ज़रूरत नहीं है और उसके लिये हिसाब की केवल इतनी जानकारी की ज़रूरत है जिससे उनकी पसलियां और हड्डियां गिनी जा सकें. कुछ गावों में मेरा घुसना किसी मातम के घर में घुसने जैसा था. ज्यों ही औरतों ने किसी हमदर्द को देखा वह उसका स्वागत मातम और आंसुओं से करती थीं. ऐसी मुसीबत में फंसे जन समूह की मदद करने के लायक़ न होने पर बड़ा अफ़सोस होता था.

"मुझे यह देख कर भी बड़ा दर्द होता था कि आम जनता इस हालत को सुधारने के लिये लगभग कुछ भी कोशिश नहीं कर रही है. सब यह सोचते हैं कि ज़िम्मेदारी सरकार की है. पर मुश्किल से ही कोई ऐसा मिलेगा जिसमें इतना जोश हो कि रिलीफ़ का कोई काम ख़ुद शुरू करे. मुझे यह देख कर बड़ी तकलीफ़ हुई कि पहले के रचनात्मक काम करने वाले उदासीन थे और इस काम में बहुत कम दिलचस्पी लेते थे. लोगों में राजकाजी जागृति समाजिक हमदर्दी से कहीं ज़ियादा है. आज़ादी मिलने के बाद इसकी उम्मीद नहीं थी. मुझे ऐसा लगता है कि हमारे रचनात्मक कामों ने हम में यह क़ाबलियत पैदा नहीं की कि इस तरह के संकट के समय हम काम कर सकें. मुझे आशा है कि कम से कम अब इस ज़िम्मेदारी को संभालने के लिये प्राइवेट कमेटियां बनेंगी. यह एक ऐसा मौक़ा है जब कि नई पीढ़ी को आगे चल कर नेता बनने के लिये ट्रेनिंग दी जा सकती है अगर उन्हें कालिजों से निकाल कर अकाल पीड़ितों की मदद के प्रोग्राम में हिस्सा लेने दिया जाय. मुझे डर है कि इस मौक़े का उपयोग आने वाले समय के नेताओं को तैयार करने के लिये नहीं किया जा रहा है."

इलाज

अब हमें इस मुसीबत के इलाज पर कुछ विचार करना चाहिये. गोरखपुर के लोगों की ग़रीबी की समस्या कोई नई समस्या नहीं है. उत्तर प्रदेश के कई और पूर्वी ज़िलों में भी यह समस्या बहुत पुरानी है. गोरखपुर के ज़िले में बारी बारी सूखा और बाढ़ की वजह से बराबर अकाल पड़ा करते हैं. गावों में ज़ियादातर लोगों को बीस साल से ठीक तरह का खाना नहीं मिला है. गोरखपुर के लोग बराबर कानपुर,

سہارا لے سکیں. ھزاروں ایکڑ بڑھیا زمین گنے کی کھیتی میں استعمال ھو رھی ھے . اس زمین سے لوگوں کو چاول یا دوسرے اناج کی فصلیں مل سکتی تھیں . ایسی جگہ جہاں پر غلے کی کمی ھو کچھ لوگوں کا گنا بونا ارتھ شاستر میں عقل کے خلاف ہے اور گھاٹے کی چیز ھے . چینی کی ملوں سے پہلے کچھ سال جو فائدہ ھوتا ھے اس کی وجہ سے یہ کسان ایسے پھنس گئے ھیں کہ نکلنے میں بڑی مشکل پڑ رھی ھے .

"لوگوں کی مصیبتوں کے لئے بہت زیادہ ثبوت کی ضرورت نہیں ھے اور اس کے لئے حساب کی کیول اتنی جانکاری کی ضرورت ھے جس سے ان کی پسلیاں اور هڈیاں گنی جاسکیں . کچھ گاؤں میں میرا گھسنا کسی ماتم کے گھر میں گھسنے جیسا تھا . جیوں ھی عورتوں نے کسی همدرد کو دیکھا وہ اس کا سواگت ماتم اور آنسوؤں سے کرتی تھیں. ایسی مصیبت میں پھنسے جن سموہ کی مدد کرنے کے لائق نہ ھونے پر بڑا افسوس ھوتا تھا .

"مجھے یہ دیکھ کر بھی بڑا درد ھوتا تھا کہ عام جنتا اس حالت کو سدھارنے کے لئے لگ بھگ کچھ بھی کوشش نہیں کر رھی ھے . سب یہ سوچتے ھیں کہ ذمہ داری سرکار کی ھے. پر مشکل سے ھی کوئی ایسا ملے گا جس میں اتنا جوش ھو کہ ریلیف کا کوئی کام خود شروع کرے . مجھے یہ دیکھ کر بڑی تکلیف ھوئی کہ پہلے کے رچناتمک کام کرنے والے اداسین تھے اور اس کام میں بہت کم دلچسپی لیتے تھے. لوگوں میں راج کاجی جاگرتی سماجک همدردی سے کہیں زیادہ ھے . آزادی ملنے کے بعد اس کی امید نہیں تھی. مجھے ایسا لگتا ھے کہ ھمارے رچناتمک کاموں نے هم میں یہ قابلیت پیدا نہیں کی کہ اس طرح کے سنکٹ کے سمے هم کام کرسکیں . مجھے آشا ھے کہ کم سے کم اب اس ذمہ داری سنبھالنے کے لئے پرائیویٹ کمیٹیاں بنیں گی . یہ ایک ایسا موقع ھے جب کہ نئی پیڑھی کو آگے چل کر نیتا بننے کے لئے ٹریننگ دی جاسکتی ھے اگر انہیں کالجوں سے نکال کر اکال پیڑتوں کی مدد کے پروگرام میں حصہ لینے دیا جائے . مجھے ڈر ھے کہ اس موقعے کا اپیوگ آنے والے سمے کے نیتاؤں کو تیار کرنے کے لئے نہیں کیا جا رھا ھے ."

علاج

اب همیں اس مصیبت کے علاج پر کچھ وچار کرنا چاھئے . گورکھ پور کے لوگوں کی غریبی کی سمسیا کوئی نئی سمسیا نہیں ھے. اترپردیش کے کئی اور پوربی ضلعوں میں بھی یہ سمسیا بہت پرانی ھے . گورکھپور کے ضلعے میں باری باری سوکھا اور باڑھ کی وجہ سے برابر اکال پڑا کرتے ھیں. گاؤں میں زیادہ تر لوگوں کو بیس سال سے ٹھیک طرح کا کھانا نہیں ملا ھے . گورکھپور کے لوگ برابر کانپور،

गए इस तरह की मौतों की सैकड़ों कहानियां मरे हुओं के रिश्तेदारों ने इस तरह सुनाई कि उन पर विश्वास न करने की कोई वजह नहीं थी. हम इन मौतों की तफ़सील या अलग अलग मौतों पर कुछ नहीं कहेंगे. फिर भी हमें इसमें ज़रा भी शक नहीं है कि अकेले फरेन्दा और महाराज गंज की तहसीलों में पिछले क़रीब दो महीनों के भीतर कम से कम कई सौ आदमी खाने की इस कमी की वजह से मर चुके हैं. अगर हम यह ख़्याल रखें कि लगातार तीन तीन फ़सलें नहीं हुईं और लोगों की ख़रीदारी की ताक़त हमेशा बहुत ही कम रही है, तो इसमें क्या ताज्जुब की बात है. ऐसी हालत में और हो ही क्या सकता था. कोई भी सरकार इन मौतों की ज़िम्मेदारी से अपने को बरी नहीं समझ सकती.

सरकारी काग़ज़ों में अदल बदल

कई जगहों पर सरकारी अफ़सर ख़ास तौर पर पुलिस अफ़सर उन लोगों के पास गए जिन्होंने अपने आदमियों की मौतों को भूक की वजह से हुई लिखाया था, और उनसे धमकी दे कर उनकी रिपोर्टों को बदलने के लिये कहा. हमने कई ऐसे मामले देखे जिनमें इस बात का साफ़ सबूत है कि सरकारी काग़ज़ों में मुजरिमाना अदल बदल की गई है. हमने ऐसे रजिस्टर देखे हैं, जिनमें "भूक से मर गया" को बदल कर "बुख़ार से मर गया" कर दिया गया है. या मौत का कारन "भूकमरी" को बदल कर "बुख़ार" कर दिया गया है. हमारी यह राय है कि ऐसे मामलों की तुरन्त पूरी और ईमानदारी से जांच होनी चाहिये और ऐसी हरकत को सख़्ती से बन्द करना चाहिये. ऐसे मामलों में सरकार या सरकारी अफ़सरों को ऐसे आदमियों को बचाने की कोशिश नहीं करनी चाहिये.

सरवे

पंडित सुन्दरलाल को इलाहाबाद लौट आना था. डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा फरेन्दा और महराजगंज तहसील के और गांवों में अकेले गए. कुमारप्पा जी ने क़रीब साढ़े तीन सौ मील का सफ़र किया. वह क़रीब 75 हज़ार आदमियों से गांवों में जा कर मिले. ज़ियादातर गांव जिनमें वह गए, बड़ी सड़कों से क़रीब चार पांच मील के भीतर ही थे. इससे यह ज़ाहिर है कि जो कुछ उन्होंने देखा वह अकाल के ख़ित्ते का सब से ख़राब हिस्सा नहीं था. हम यह समझते हैं कि और अन्दर के गांवों की हालत कहीं ज़ियादा ख़राब होगी. अपनी आंखों देखी को बयान करते हुए डाक्टर कुमारप्पा लिखते हैं:

"इन जगहों में लोगों के पास ग़रीबी बचाव से का खेती से मेल खाते हुए रोज़गार या दस्तकारी जैसा कोई और ऐसा ज़रिया नहीं है जिसका मुसीबत के वक़्त किसान

گئے اِس طرح کی موتوں کی سیکڑوں کہانیاں مرے ہوؤں کے رشتے داروں نے اِسطرح سنائیں کہ اُن پر وشواس نہ کرنے کی کوئی وجہ نہیں تھی . ہم اِن موتوں کی تفصیل یا الگ الگ موتوں پر کچھ نہیں کہیں گے . پھر بھی ہمیں اِس میں ذرا بھی شک نہیں ہے کہ اکیلے پھرندا اور مہراج گنج کی تحصیلوں میں پچھلے قریب دو مہینوں کے بھیتر کم سے کم کئی آدمی کھانے کی اس کمی کی وجہ سے مر چکے ہیں . اگر ہم یہ خیال رکھیں کہ لگاتار تین تین فصلیں نہیں ہوئیں اور لوگوں کی خریداری کی طاقت ہمیشہ بہت ہی کم رہی ہے' تو اِس میں کیا تعجب کی بات ہے . ایسی حالت میں اور ہو ہی کیا سکتا تھا . کوئی بھی سرکار اِن موتوں کی ذمہ داری سے اپنے کو بری نہیں سمجھ سکتی .

سرکاری کاغذوں میں ادل بدل

کئی جگہوں پر سرکاری افسر خاص طور پر پولیس افسر اُن لوگوں کے پاس گئے جنہوں نے اپنے آدمیوں کی موتوں کو بھوک کی وجہ سے ہوئی لکھایا تھا' اور اُن سے دھمکی دے کر اُن کی رپورٹوں کو بدلنے کے لئے کہا . ہم نے کئی ایسے معاملے دیکھے جن میں اِس بات کا صاف ثبوت ہے کہ سرکاری کاغذوں میں مجرمانہ ادل بدل کی گئی ہے . ہم نے ایسے رجسٹر دیکھے ہیں' جن میں "بھوک سے مر گیا" کو بدل کر "بخار سے مر گیا" کر دیا گیا ہے . یا موت کا کارن "بھکمری" کو بدل کر "بخار" کر دیا گیا ہے . ہماری یہ رائے ہے کہ ایسے معاملوں کی ترنت پوری اور ایمانداری سے جانچ ہونی چاہئے اور ایسی حرکت کو سختی سے بند کرنا چاہئے . ایسے معاملوں میں سرکار یا سرکاری افسروں کو ایسے آدمیوں کو بچانے کی کوشش نہیں کرنی چاہئے .

سروے

پنڈت سندر لال کو الہ آباد لوٹ آنا تھا . ڈاکٹر جے . سی . کماریپا پھرندا اور مہراج گنج تحصیل کے اور گاؤں میں اکیلے گئے . کماریپا جی نے قریب ساڑھے تین سو میل کا سفر کیا . وہ قریب 75 ہزار آدمیوں سے گاؤں میں جا کر ملے . زیادہ تر گاؤں جن میں وہ گئے' بڑی سڑکوں سے قریب چار پانچ میل کے بھیتر ہی تھے . اس سے یہ ظاہر ہے کہ جو کچھ اُنہوں نے دیکھا وہ اکال کے خطے کا سب سے خراب حصہ نہیں تھا . ہم یہ سمجھتے ہیں کہ اور اندر کے گاؤں کی حالت کہیں زیادہ خراب ہوگی . اپنی آنکھوں دیکھی کو بیان کرتے ہوئے ڈاکٹر کماریپا لکھتے ہیں :

"اِن جگہوں میں لوگوں کے پاس غریبی سے بچاؤ کا کھیتی سے میل کھاتے ہوئے روزگار یا دستکاری جیسا کوئی اور ایسا ذریعہ نہیں ہے جس کا مصیبت کے وقت کسان

हुए एक कारकर्ता गिर पड़े और उनके पैरों में चोट आ गई.

जनता की हालत

हम तहसील फरेन्दा के कई गांवों में गए. शिवपुर गांव में कई सौ गांव वाले हमें अपनी कहानी सुनाने के लिये इकट्ठा हो गये. उनके मुंह से उनकी कहानी सुनने की कोई ज़रूरत तक नहीं थी. दरजनों बच्चों के सूखे बदन जिन की पसलियां दूर से गिनी जा सकती थीं, उनके निकले हुए पेट और पीले और भूके चेहरों को देख कर दुख होता था. बालिग़ मर्दों और औरतों की हालत भी किसी मानी में इनसे बेहतर न थी. यह सब देख कर अवध के गांवों के सन 1908 के अकाल के दिनों की याद हमें आ गई. एक के बाद एक लगातार तीन फ़सलें मारी गईं. ज़ियादातर लोगों में अनाज ख़रीदने की ताक़त बिल्कुल नहीं के बराबर है. इसकी वजह से बहुत से लोग बहुत दिनों से घास के बीजों और खाने और न खाने लायक़ दोनों तरह की घास फूस पर जी रहे थे. इनकी इन खाने की चीज़ों के हमने कई नमूने देखे. हम उनकी झोंपड़ियों में गए और देखा कि उन्होंने सवेरे क्या पकाया था और शाम को वह क्या खाने वाले थे. ऐसी दर्दनाक हालत में कोई अचरज नहीं. गांव की ज़ियादातर आबादी भिकारी हो गई है. हमने उनसे बातें कीं और उनके गालों पर गिरते हुए आंसुओं के साथ उनकी दर्दनाक कहानी सुना.

भूक से मौतें

अब हम गोरखपुर की भुकमरी के सवाल पर कुछ रोशनी डालेंगे. इस पर बहुत बहस हो चुकी है. यह कहना बहुत मुश्किल है कि भुकमरी के क्या मानी होते हैं. हमें यह नहीं मालूम कि अकाल के क़ानून में भुकमरी की क्या परिभाशा की गई है, और परिभाशा की भी गई है या नहीं. हमारा और ज़ियादातर लोगों का यह तजुरबा है कि बुरे से बुरे अकाल में भी बहुत कम लोग सिर्फ़ भूक से मरते हैं. एक मामूली आदमी बिना खाने के, बिना पानी के नहीं, छै से ले कर दस हफ़्ते तक या उससे भी ज़ियादा ज़िन्दा रह सकता है. पिछले बंगाल के अकाल में मरने वाले तीस लाख आदमियों में से बहुत बड़ी तादाद सिर्फ़ भूक ही से नहीं बल्कि दस्त, पेचिश और बुख़ार जैसी बीमारियों से मरी यह बीमारियां ऐसी चीज़ों के खाने से हुई थीं जो किसी तरह उन्हें मिल गई थीं, जो ख़राब और बे नाप तौल थीं और जो उन्होंने कई दिनों या एक हफ़्ते के लगातार भूके रहने के बाद खाई थीं. ऐसी मौतों को "भूक की मौतें", "अकाल की मौतें" या कोई भी और नाम दिया जा सकता है. पर ईमानदारी की बात यह है कि असल में यह मौतें जड़ में भूक ही की मौतें हैं. गोरखपुर ज़िले के जिन गांवों में हम

پر بیٹھے ہوئے ایک کارکرتا گر پڑے اور اُن کے پیروں میں چوٹ آ گئی ۔

جنتا کی حالت

ہم تحصیل پھرندا کے کئی گاؤں میں گئے ۔ شیو پور گاؤں میں کئی سو گاؤں والے ہمیں اپنی کہانی سنانے کے لئے اکٹھا ہو گئے ۔ اُن کے منھ سے اُن کی کہانی سن نے کی کوئی ضرورت تک نہیں تھی ۔ درجنوں بچوں کے سوکھے بدن جن کی پسلیاں دور سے گنی جا سکتی تھیں' اُن کے نکلے ہوئے پیٹ اور پیلے اور بھوکے چہروں کو دیکھ کر دکھ ہوتا تھا ۔ بالغ مردوں اور عورتوں کی حالت بھی کسی معنی میں ان سے بہتر نہ تھی ۔ یہ سب دیکھکر اودھ کے گاؤں کے سن 1908 کے اکال کے دنوں کی یاد ہمیں آ گئی ۔ ایک کے بعد ایک لگاتار تین فصلیں ماری گئیں ۔ زیادہ تر لوگوں میں اناج خریدنے کی طاقت بالکل نہیں کے برابر ہے ۔ اسکی وجہ سے بہت سے لوگ بہت دنوں سے گھاس کے بیجوں اور کھانے اور نہ کھانے لائق دونوں طرح کی گھاس پھوس پر جی رہے تھے ۔ اِنکی ان کھانے کی چیزوں کے ہم نے کئی نمونے دیکھے ۔ ہم اُنکی جھونپڑیوں میں گئے اور دیکھا کہ اُنھوں نے سویرے کیا پکایا تھا اور شام کو وہ کیا کھانے والے تھے ۔ ایسی درد ناک حالت میں کوئی اچرج نہیں ۔ گاؤں کی زیادہ تر آبادی بھکاری ہوگئی ہے ۔ ہم نے اُن سے باتیں کیں اور اُن کے گالوں پر گرتے ہوئے آنسوں کے ساتھ اُنکی درد ناک کہانی سنا ۔

بھوک سے موتیں ۔

اب ہم گورکھ پور کی بھکمری کے سوال پر کچھ روشنی ڈالیں گے ۔ اس پر بہت بحث ہو چکی ہے ۔ یہ کہنا بہت مشکل ہے کہ بھکمری کے کیا معنی ہوتے ہیں ۔ ہمیں یہ نہیں معلوم کہ اکال کے قانون میں بھکمری کی کیا پریبھاشا کی گئی ہے' اور پریبھاشا کی بھی گئی ہے یا نہیں ۔ ہمارا اور زیادہ تر لوگوں کا یہ تجربہ ہے کہ برے سے برے اکال میں بھی بہت کم لوگ صرف بھوک سے مرتے ہیں ۔ ایک معمولی آدمی بنا کھانے کے' بنا پانی کے نہیں' چھ سے لے کر دس ہفتے تک یا اُس سے بھی زیادہ زندہ رہ سکتا ہے ۔ پچھلے بنگال کے اکال میں مرنے والے تیس لاکھ آدمیوں میں سے بہت بڑی تعداد صرف بھوک ہی سے نہیں بلکہ دست' پیچش اور بخار جیسی بیماریوں سے مری ۔ یہ بیماریاں ایسی چیزوں کے کھانے سے ہوئی تھیں جو کسی طرح اُنھیں مل گئی تھیں' جو خراب اور بے ناپ تول تھیں اور جو اُنھوں نے کئی دنوں یا ایک ہفتے کے لگاتار بھوکے رہنے کے بعد کھائی تھیں ۔ ایسی موتوں کو "بھوک کی موتیں" "اکال کی موتیں" یا کوئی بھی اور نام دیا جاسکتا ہے ۔ پر ایمانداری کی بات یہ ہے کہ اصل میں یہ موتیں جڑ میں بھوک ہی کی موتیں ہیں ۔ گورکھ پور ضلع کے جن گاؤں میں ہم

तहसील फरेन्दा गए. हमसे कई ऐसे केन्द्रों पर गए जो सरकार ने अकाल पीड़ितों की मदद के लिये अभी हाल में खोले हैं. हमने वहां पर काम करने वाले कितने ही मजदूरों और उन केन्द्रों के इन्चार्ज सरकारी नौकरों से बात चीत की. हमें यह मालूम हुआ कि सरकार ने अकाल पीड़ितों की मदद के लिये अब तक तहसील फरेन्दा और महराज गंज में, जहां की हालत सबसे खराब थी, दोनों तहसीलों को मिला कर कुल ऐसे लगभग पचास केन्द्र खोल रखे थे. हमें यह भी मालूम हुआ कि इन केन्द्रों पर काम में लगे हुए मजदूरों की कुल गिनती क़रीब बीस हज़ार थी और क़रीब एक लाख ने वहां काम करने के लिये अर्जियां दी थीं. इन में से ज़ियादातर को इन रिलीफ़ केन्द्रों में दाखले के लिये "कार्ड" नहीं दिये गए थे. कुछ मज़दूर रोज़ अपने घर से 6 से 8 मील तक पैदल चल कर इन रिलीफ़ केन्द्रों में काम करने आते थे. अर्जियों देने वालों में से कुछ से कहा गया कि अपने घरों से चौदह मील दूर के केन्द्रों में जा कर काम करें. अधिकतर सड़कें बेहद खराब थीं जिसकी वजह से ज़ियादातर अर्जियां देने वाले इस सलाह से फ़ायदा नहीं उठा पाते थे. नामुमकिन था कि लोग, खास तौर पर भूक से मरते हुए लोग, रोज़ काम करने के लिये चौदह मील पैदल जायं और फिर चौदह मील चल कर अपने गावों को लौटें. इन कैम्पों में थोड़ी देर रह कर हम तीन नतीजों पर पहुंचे. पहला यह कि सरकार ने रिलीफ़ का काम शुरू कर के पब्लिक की तकलीफ़ को मान लिया है. यह तो ठीक ही है. इसे "रिलीफ़ का काम" (Relief Work) न कह कर "आज़माइश का काम" (Test Work) कहने से सिर्फ़ मालूम होता है कि सरकारी दिमाग़ कितने एहतियात से चलते हैं. दूसरा यह कि रिलीफ़ के यह काम पब्लिक की तकलीफ़ों को दूर करने के लिये अभी भी बहुत कम हैं. तीसरा यह कि इन केन्द्रों के इन्चार्जों में और ज़ियादा इनसानी हमदर्दी की ज़रूरत है.

इन रिलीफ़ केन्द्रों पर पूरे दिन काम करने की मज़दूरी हर बालिग़ मर्द को आठ आना, हर बालिग़ औरत को आठ आना और हर लड़के या लड़की को चार आना, मिलती थी. कहीं कहीं उसी वक़्त बालिग़ मर्द की मज़दूरी आठ आने से बढ़ा कर दस आने कर दी गई थी. अनाज वग़ैरा के चालू भाव देखते हुए और यह देखते हुए कि एक घर के सिर्फ़ एक ही आदमी को एक कैम्प में काम करने दिया जायगा, हमारा कहना है कि मज़दूरी बहुत कम है.

दोपहर के बाद हमने पास के कुछ गांवों में जाना तय किया. मोटर के लिये ख़ास तौर पर हाल की बारिश के बाद सड़कें बहुत खराब थीं. आने जाने के लिये सिर्फ़ हाथी ही की सवारी मिल सकती थी. सड़कों पर इतनी कीचड़ थी कि हमारे दो हाथियों में से एक फिसल गया, उस पर चढ़े

ے تحصیل پھرندا گئے . ہم کئی ایسے کیندروں پر گئے جو سرکار نے اکال پیڑتوں کی مدد کے لئے ابھی حال میں کھولے ہیں . ہم نے وہاں پر کام کرنے والے کتنے ہی مزدوروں اور اُن کیندروں کے انچارج سرکاری نوکروں سے بات چیت کی . ہمیں یہ معلوم ہوا کہ سرکار نے اکال پیڑتوں کی مدد کے لئے اب تک تحصیل پھرندا اور مہراج گنج میں' جہاں کی حالت سب سے خراب تھی' دونوں تحصیلوں کو ملا کر کل ایسے لگ بھگ پچاس کیندر کھول رکھے تھے . ہمیں یہ بھی معلوم ہوا کہ اِن کیندروں پر کام میں لگے ہوئے مزدوروں کی کل گنتی قریب بیس ہزار تھی اور قریب ایک لاکھ نے وہاں کام کرنے کے لئے عرضیاں دی تھیں . اِن میں سے زیادہ ترکو اِن ریلیف کیندروں میں داخلے کے لئے " کارڈ " نہیں دیئے گئے تھے . کچھ مزدور روز اپنے گھر سے 6 سے 8 میل تک پیدل چل کر اِن ریلیف کیندروں میں کرنے کام آتے تھے . عرضیاں دینے والوں میں سے کچھ سے کہا گیا کہ اپنے گھروں سے چودہ میل دور کے کیندروں میں جا کر کام کریں . ادھک، تر سڑکیں بے حد خراب تھیں جس کی وجہ سے زیادہ تر عرضیاں دینے والے اِس صلاح سے فائدہ نہیں اُٹھا پاتے تھے . ناممکن تھا کہ لوگ' خاص طور پر بھوک سے مرتے ہوئے لوگ' روز کام کرنے کے لئے چودہ میل پیدل جائیں اور پھر چودہ میل چلکر اپنے گاؤں کو لوٹیں . اِن کیمپوں میں تھوڑی دیر رہ کر ہم تین نتیجوں پر پہونچے . پہلا یہ کہ سرکار نے ریلیف کا کام شروع کر کے پبلک کی تکلیف کو مان لیا ہے. یہ تو ٹھیک ہی ہے. اِسے 'ریلیف کا کام' (Relief Work) نہ کہکر " آزمائش کا کام " (Test Work) کہنے سے صرف معلوم ہوتا ہے کہ سرکاری دماغ کتنے احتیاط سے چلتے ہیں. دوسرا یہ کہ ریلیف کے یہ کام پبلک کی تکلیفوں کو دور کرنے کے لئے ابھی بھی بہت کم ہیں . تیسرا یہ کہ اِن کیندروں کےانچارجوں میں اور زیادہ اِنسانی ہمدردی کی ضرورت ہے .

اِن ریلیف کیندروں پر پورے دن کام کرنے کی مزدوری ہر بالغ مرد کو آٹھ آنا' ہر بالغ عورت کو آٹھ آنا اور ہر لڑکے یا لڑکی کو چار آنا' ملتی تھی . کہیں کہیں اُسی وقت بالغ مرد کی مزدوری آٹھ آنے سے بڑھا کر دس آنے کر دی گئی تھی . اناج وغیرہ کے چالو بھاؤ کو دیکھتے ہوئے اور یہ دیکھتے ہوئے کہ ایک گھر کے صرف ایک ہی آدمی کو ایک کیمپ میں کام کرنے دیا جائے گا' ہمارا کہنا ہے کہ مزدوری بہت کم ہے .

دوپہر کے بعد ہم نے پاس کے کچھ گاؤں میں جانا طے کیا . موٹر کے لئے خاص طور پر حال کی بارش کے بعد سڑکیں بہت خراب تھیں . آنے جانے لئے صرف ہاتھی ہی کی سواری مل سکتی تھی . سڑکوں پر اتنی کیچڑ تھی کہ ہمارے دو ہاتھیوں میں سے ایک پھسل گیا' اُس پر چڑھے

हमारी राय

ہماری رائے

गोरखपुर के अकाल पर पंडित सुन्दरलाल और डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा का बयान

गोरखपुर के अकाल की हालत की जांच करने के लिये वहां से बुलावा आने पर मैं 26 अगस्त को सवेरे इलाहाबाद पहुँचा. मैंने पंडित सुन्दरलाल से साथ चलने को कहा. वह राज़ी हो गए.

पहले मैं अकेला गोरखपुर पहुंचा. मैंने 27 अगस्त को वहां की हालत पर उस वक़्त तक के सरकारी और ग़ैर सरकारी हर तरह के बयानों को पढ़ा. मैं श्री शिब्बनलाल सक्सेना के पास गया, श्री जगन प्रसाद रावत, डिप्टी मिनिस्टर, गोरखपुर रिलीफ़ के इनचार्ज, से मिला और मैंने वहां के ख़ास ख़ास आदमियों से वहां की गिरानी के बारे में सही बातें जानने की कोशिश की.

श्री शिब्बनलाल सक्सेना का उपवास

28 अगस्त को पंडित सुन्दरलाल भी वहां पहुँच गए. हमने सबसे पहले श्री शिब्बन लाल सक्सेना को इस बात के लिये राज़ी किया कि वह उपवास तोड़ कर श्री जगन प्रसाद रावत और दूसरे सरकारी अफ़सरों का पब्लिक की तकलीफ़ दूर करने में साथ दें. हम श्री जगन प्रसाद रावत से मिले. उन्होंने हमें इतमिनान दिलाया कि वह पब्लिक की तकलीफ़ दूर करने में श्री शिब्बन लाल सक्सेना और उनके दोस्तों के साथ मिल कर काम करेंगे और उनकी सलाह से पूरा फ़ायदा उठायेंगे. जब दोनों तरफ़ से इसका इतमिनान हो गया तो उसी दिन शाम को छै बजे श्री शिब्बन लाल सक्सेना ने उपवास तोड़ दिया. उस समय वहां पर श्री जगन प्रसाद रावत, गोरखपुर के कई कारकर्ता और शहर के ख़ास ख़ास लोग मौजूद थे.

तकलीफ़ और उसे दूर करना

29 अगस्त को सवेरे हम लोग श्री शिब्बन लाल सक्सेना और कई कारकर्ताओं को साथ ले कर गोरखपुर

گورکھ پور کے اکال پر پنڈت سندرلال اور ڈاکٹر جے. سی. کمارپا کا بیان

گورکھ پور کے اکال کی حالت کی جانچ کرنے کے لئے وہاں سے بلاوا آنے پر میں 26 اگست کو سویرے الہ آباد پہونچا. میں نے پنڈت سندر لال سے ساتھ چلنے کو کہا. وہ راضی ہوگئے.

پہلے میں اکیلا گورکھ پور پہونچا. میں نے 27 اگست کو وہاں کی حالت پر اس وقت تک کے سرکاری اور غیر سرکاری ہر طرح کے بیانوں کو پڑھا. میں شری شبن لال سکسینا کے پاس گیا' شری جگن پرساد راوت' ڈپٹی منسٹر' گورکھ پور ریلیف کے انچارج' سے ملا اور میں نے وہاں کے خاص خاص آدمیوں سے وہاں کی گرانی کے بارے میں صحیح باتیں جاننے کی کوشش کی.

شری شبن لال سکسینا کا اپواس.

28 اگست کو پنڈت سندر لال بھی وہاں پہونچ گئے. ہم نے سب سے پہلے شری شبن لال سکسینا کو اس بات کے لئے راضی کیا کہ وہ اپواس توڑ کر شری جگن پرساد راوت اور دوسرے سرکاری افسروں کا پبلک کی تکلیف دور کرنے میں ساتھ دیں. ہم شری جگن پرساد راوت سے ملے. انہوں نے ہمیں اطمینان دلایا کہ وہ پبلک کی تکلیف دور کرنے میں شری شبن لال سکسینا اور اُن کے دوستوں کے ساتھ ملکر کام کریں گے اور اُن کی صلاح سے پورا فائدہ اٹھائیں گے. جب دونوں طرف سے اس کا اطمینان ہوگیا تو اسی دن شام کو چھ بجے شری شبن لال سکسینا نے اپواس توڑ دیا. اس سمے وہاں پر شری جگن پرساد راوت' گورکھپور کے کئی کارکرتا اور شہر کے خاص خاص لوگ موجود تھے.

تکلیف اور اسے دور کرنا.

29 اگست کو سویرے ہم لوگ شری شبن لال سکسینا اور کئی کارکرتاؤں کو ساتھ لے کر گورکھپور

गिर सकता है इसका अनुमान नहीं किया जा सकता. भूक इस सवाल का असरदार जवाब है.

किसी भी अनुवाद की तारीफ़ यह है कि अनुवाद अनुवाद मालूम न हो. मख़मूर जालंधरी ने ऐसा अनुवाद किया है कि मालूम होता है 'भूक' ख़ुद उनकी ही लिखी किताब है.

मकतबा शाहराह ने भूक छाप कर उर्दू जगत को बहुत बड़ी भेंट दी है और हम उसको इस पर बधाई देते हैं.

—मुजीब रिज़वी

रजत रश्मि

लिखने वाले—डाक्टर राम कुमार वर्मा; निकालने-वाले—भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—174; दाम—ढ़ाई रुपया.

भारत की दूसरी भाशाओं के मुक़ाबले में हिन्दी नाटक बहुत पीछे है. हिन्दी उरदू दोनों में ही यह कमी बुरी तरह खटकती है. इने गिने लोगों के दम से ही हिन्दी नाटक का दीप जल रहा है और डाक्टर राम कुमार वर्मा इन में से एक हैं. राम कुमार ने हिन्दी एकांकी नाटक को एक नई शैली दी है. 'रजत रश्मि' में हिन्दी के इस मशहूर नाटककार के पांच एकांकी नाटक हैं—प्रतिशोध, तैमूर की हार, दुर्गावती, औरंगज़ेब की आख़िरी रात, कलंक रेखा. लग भग यह सारे नाटक इलाहाबाद रेडियो पर खेले जा चुके हैं. इन सब का आधार इतिहास है. इतिहास सभी पढ़ते हैं लेकिन साहित्यकार केवल चलती फिरती घटनाओं को ही नहीं पढ़ता बल्कि उन घटनाओं के स्रोत को भी जानने की कोशिश करता है, इतिहास की आत्मा को समझने की पूरी चेश्टा करता है. इन नाटकों में इतिहास है पर इन में इतिहास की आत्मा नहीं है. अंगरेज़ों का लिखा झूटा इतिहास हमें अन्धेरे की तरफ़ ले जाता है, हमें अब असली इतिहास की खोज होनी चाहिये और ग़लत घटनाओं पर ग़लत भाव पैदा कर के उन्हें साहित्य का जामा न पहनाना चाहिये—हम आशा करते हैं कि राम कुमार जी पुराने इतिहास को अपनी जगह पर छोड़ कर अब हमें उस इतिहास के नाटक देंगे जो इतिहास बन रहा है, जनता जिसे बना रही है, और जो सच्चा इतिहास है

—मुजीब रिज़वी

کر سکتا ہے اِس کا انومان نہیں کیا جا سکتا . ' بھوک ' اِس سوال کا اثردار جواب ہے .

کسی بھی انوواد کی تعریف یہ ہے کہ انوواد انوواد معلوم نہ ہو . مخمور جالندھری نے ایسا انوواد کیا ہے کہ معلوم ہوتا ہے ' بھوک ' خود اُن کی ہی لکھی کتاب ہے .

مکتبہ شاہراہ نے ' بھوک ' چھاپ کر اُردو جگت کو بہت بڑی بھینٹ دی ہے اور ہم اُس کو اِس پر بدھائی دیتے ہیں .

—مجیب رضوی

رجت رشمی

لکھنے والے—ڈاکٹر رام کمار ورما؛ نکالنے والے—بھارتیہ گیان پیٹھ' کاشی؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحہ—174؛ دام—ڈھائی روپیہ .

بھارت کی دوسری بھاشاؤں کے مقابلے میں ہندی ناٹک بہت پیچھے ہے . ہندی اُردو دونوں میں ہی یہ کمی بری طرح کھٹکتی ہے . اِنے گنے لوگوں کے دم سے ہی ہندی ناٹک کا دیپ جل رہا ہے اور ڈاکٹر رام کمار ورما اِن میں سے ایک ہیں . رام کمار نے ہندی ایکانکی ناٹک کو ایک نئی شیلی دی ہے . 'رجت رشمی' میں ہندی کے اِس مشہور ناٹک کار کے پانچ ایکانکی ناٹک ہیں—پرتی شودھ' تیمور کی ہار' درگا وتی' اورنگ زیب کی آخری رات' کلنک ریکھا . لگ بھگ یہ سارے ناٹک الہ آباد ریڈیو پر کھیلے جا چکے ہیں . اِن سب کا آدھار اتہاس ہے . اتہاس سبھی پڑھتے ہیں لیکن ساہتیہ کار کیول چلتی پھرتی گھٹناؤں کو ہی نہیں پڑھتا بلکہ اُن گھٹناؤں کے سروت کو بھی جاننے کی کوشش کرتا ہے' اتہاس کی آتما کو سمجھنے کی پوری چیشٹا کرتا ہے. اِن ناٹکوں میں اتہاس ہے پر اِن میں اتہاس کی آتما نہیں ہے . انگریزوں کا لکھا جھوٹا اتہاس ہمیں اندھیرے کی طرف لے جاتا ہے' ہمیں اب اصلی اتہاس کی کھوج ہونی چاہئے اور غلط گھٹناؤں پر غلط بھاؤ پیدا کرکے اُنھیں ساہتیہ کا جاما نہ پہنانا چاہئے—ہم آشا کرتے ہیں کہ رام کمار جی پرانے اتہاس کو اپنی جگہ پر چھوڑ کر اب ہمیں اُس اتہاس کے ناٹک دیں گے جو اتہاس بن رہا ہے' جنتا جسے بنا رہی ہے' اور جو سچا اتہاس ہے .

—مجیب رضوی

राजनीति समस्या

लिखने वाले—स्वामी सत्य भक्त; मिलने का पता—सत्याश्रम, वर्धा; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—92; दाम—चौदह आना.

इस किताब के लिखने वाले सत्य भक्त जी लिखने की राह में लीख लीख चलने वाले नहीं हैं. वह हमेशा नई राह बना कर चलते हैं. इस किताब में भी पढ़ने वालों को उनकी लेखनी की नई सूझ देखने को मिलेगी. रिश्वत ख़ोरी, चुनाव, हर बात में दूसरे मुल्कों की नक़ल और एक दम पुराने ढंग की दोहाई पीटना, इन सब पर ख़ूब प्रकाश डाला गया है. बुराइयों का रोना नहीं रोया गया. यह भी सुझाया गया है कि किस तरह क्या करना चाहिये. भाशा भी सीधी सादी है. मामूली पढ़े लिखे पढ़ सकते और समझ सकते हैं. राजनीति पर इस तरह की किताबें कम लिखी गई हैं. हमारी राय में इस छोटी सी किताब को उन्हें मंगाकर ज़रूर पढ़ना चाहिये जिन्हें राजनीति में कुछ रस आता है.

म. द.

راج نیت سمسیا

لکھنے والے—سوامی ستیہ بھگت؛ ملنے کا پتہ—ستیہ آشرم، وردھا؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحہ—92؛ دام چودہ آنا.

اِس کتاب کے لکھنے والے ستیہ بھگت جی لکھنے کی راہ میں لیکھ لیکھ چلنے والے نہیں ہیں. وہ ہمیشہ نئی راہ بنا کر چلتے ہیں. اس کتاب میں بھی پڑھنے والوں کو اُن کی لیکھنی کی نئی سوجھ دیکھنے کو ملے گی. رشوت خوری، چناؤ، ہر بات میں دوسرے ملکوں کی نقل اور ایک دم پرانے ڈھنگ کی دوہائی پیٹنا، اِن سب پر خوب پرکاش ڈالا گیا ہے. برائیوں کا رونا نہیں رویا گیا. یہ بھی سجھایا گیا ہے کہ کس طرح کیا کرنا چاہئے. بھاشا بھی سیدھی سادی ہے. معمولی پڑھے لکھے پڑھ سکتے اور سمجھ سکتے ہیں. راج نیت پر اِس طرح کی کتابیں کم لکھی گئی ہیں. ہماری رائے میں اِس چھوٹی سی کتاب کو اُنہیں منگا کر ضرور پڑھنا چاہئے جنہیں راج نیت میں کچھ رس آتا ہے.

—م. د.

भूक

लिखने वाले—नेट हेमसन; अनुवाद करने वाले—मख़मूर जालंधरी; निकालने वाले—मकतबा शाह राह, देहली; लिखावट—उरदू; सफ़ा—229; क़ीमत—तीन रुपया.

नेट हेमसन नार्वे के मशहूर लेखक थे. सन 1920 में इन के नावेल 'Hunger' को नोबिल प्राइज़ मिला था. नार्वे में इस नावेल ने हलचल मचा दी थी, लोगों के सामने साहित्य का एक नया मैदान खोल दिया था. 'भूक' उसी नावेल का उर्दू अनुवाद है. यह किताब एक भूके लेखक की जीवन कथा है. 'भूक' में लेखक क्या सोच सकता है, क्या कर सकता है, क्या क्या करने पर वह मजबूर हो सकता है, कहां कहां वह ठोकरें खा सकता है, इस सब की तसवीर 'भूक' में मिलती है. इस किताब में उसे शायद मज़ा न आए जिसने न कभी भूक की जलन महसूस की हो और न ही भूकों के मनोविज्ञान को जानता हो. बहुत से लोग कहते हैं कि रोटी ही सब कुछ नहीं है. यह ठीक है कि रोटी ही सब कुछ नहीं है लेकिन रोटी के बिना किन किन गढ़ों में आदमी

بھوک

لکھنے والے—نٹ ہیمسن؛ انوواد کرنے والے—مخمور جالندھری؛ نکالنے والے—مکتبہ شاہراہ، دہلی؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحہ—229؛ قیمت تین روپیہ.

نٹ ہیمسن ناروے کے مشہور لیکھک تھے. سن 1920 میں ان کے ناول 'Hunger' کو نوبل پرائز ملا تھا. ناروے میں اس ناول نے ہلچل مچادی تھی، لوگوں کے سامنے ساہتیہ کا ایک نیا میدان کھول دیا تھا. 'بھوک' اسی ناول کا اُردو انوواد ہے. یہ کتاب ایک بھوکے لیکھک کی جیون کتھا ہے. 'بھوک' میں ایک لیکھک کیا سوچ سکتا ہے، کیا کر سکتا ہے، کیا کیا کرنے پر وہ مجبور ہو سکتا ہے، کہاں کہاں وہ ٹھوکریں کھا سکتا ہے، اِس سب کی تصویر 'بھوک' میں ملتی ہے. اس کتاب میں اسے شاید مزا نہ آئے جس نے نہ کبھی بھوک کی جلن محسوس کی ہو اور نہ ہی بھوکوں کے منوگیان کو جانتا ہو. بہت سے لوگ کہتے ہیں کہ روٹی ہی سب کچھ نہیں ہے. یہ ٹھیک ہے کہ روٹی ہی سب کچھ نہیں ہے لیکن روٹی کے بنا کن کن گڑھوں میں آدمی

आदमी और सिक्के

लिखने वाले—महेन्द्र नाथ; निकालने वाले—मकतबा शाहराह, देहली; लिखावट—उर्दू, सफ़ा—192; क़ीमत—दो रुपया बारह आना.

कहानीकार की हैसियत से महेन्द्र नाथ उर्दू जगत में बहुत मशहूर हो चुके हैं लेकिन नावेल के मैदान में 'आदमी और सिक्के' इन का पहला तजुरबा है. इस नावेल में कोई प्लाट नहीं है और न इस का कोई हीरो है. सिक्का घटनाओं को जन्म देता है, कैरेक्टरों को जन्म देता है, उनकी परवरिश करता है. आदमी सिक्के के बहाव में बहते जाते हैं, कुछ बहते बहते उभर पड़ते हैं और साथियों की आत्मा को झकझोर कर कहते हैं—इस गन्द से निकल आओ, इस मुसीबत से बच निकलो. इसके बाहर ही जीवन है, मोक्ष है, सब कुछ है. लोग सुनते हैं, कभी कभी उनके कान खड़े भी होते हैं, वह तैयार भी होते हैं लेकिन सिक्का फिर उन्हें बहा ले जाता है. अन्त में या वह ख़ुदकुशी कर लेते हैं, या निराश हो कर बैठ रहते हैं, अन्तर आत्मा का गला घोंट देते हैं. इस नावेल में घटनाएं नहीं बोलतीं बल्कि महेन्द्र नाथ अपनी लोचदार रंगीन भाषा से पढ़ने वाले का ध्यान क़ाबू में रखते हैं और कहीं कहीं वह बात भी उसके दिमाग़ में उतार देते हैं जो कि वह इस नावेल के ज़रिये कहना चाहते हैं. नावेल में जिन्सी लज़्ज़त के चटख़ारे बहुत हैं और उन्होंने असली मक़सद को लगभग गुम सा कर दिया है. जीवन आज जैसा भी है उसे केवल उसी तरह काग़ज़ के सफ़्हों पर रंग देना आज के साहित्य की मांग नहीं है. आज के साहित्य कार का फ़र्ज़ है कि वह इस पर भी रौशनी डाले कि जीवन क्या होना चाहिये. हमेशा की तरह महेन्द्रनाथ समाज की गन्दगी की तसवीर खींचने में काफ़ी हद तक सफल हो गए हैं लेकिन किसी बेहतर समाज की असरदार तसवीर वह पढ़ने वाले के सामने नहीं रख सके.

किताब की छपाई और गेटअप बहुत ही अच्छा है, और बिना किसी दो राय के इसका सेहरा मकतबा शाहराह के सर है.

—मुजीब रिज़वी

آدمی اور سکے

لکھنے والے—مہیندر ناتھ؛ نکالنے والے—مکتبہ شاہراہ، دہلی؛ لکھاوٹ—اُردو، صفحہ—192؛ قیمت— دو روپیہ بارہ آنہ۔

کہانی‌کار کی حیثیت سے مہیندر ناتھ اُردو جگت میں بہت مشہور ہوچکے ہیں لیکن ناول کے میدان میں 'آدمی اور سکے' اِن کا پہلا تجربہ ہے۔ اِس ناول میں کوئی پلاٹ نہیں‌ہے اور نہ اِس کا کوئی ہیرو ہے۔ سکہ گھٹناؤں کو جنم دیتا ہے، کیریکٹروں کو جنم دیتا ہے، اُن کی پرورش‌کرتا ہے۔ آدمی سکے کے بہاؤ میں بہتے جاتے ہیں، کچھ بہتے بہتے اُبھر پڑتے ہیں اور ساتھیوں کی آتما کو جھنجھوڑ کر کہتے ہیں—اِس گند سے نکل آؤ، اِس مصیبت سے بچ نکلو۔ اِس‌کے باہر ہی‌جیون ہے، موکش‌ہے، سب کچھ ہے۔ لوگ سنتے ہیں، کبھی کبھی اُن کے کان کھڑے بھی ہوتے ہیں، وہ تیار بھی ہوتے ہیں لیکن سکہ پھر انہیں بہا لے جاتا ہے۔ انت میں یا وہ خود کشی کر لیتے ہیں، یا نراش ہوکر بیٹھ رہتے ہیں، انتر آتما کا گلا گھونٹ دیتے ہیں۔ اِس ناول میں گھٹنائیں نہیں بولتیں بلکہ مہیندر ناتھ اپنی لوچدار رنگین بھاشا سے پڑھنے والے کا دھیان قابو میں رکھتے ہیں اور کہیں کہیں وہ بات بھی اُس کے دماغ میں اُتار دیتے ہیں جو کہ وہ اِس ناول کے ذریعہ کہنا چاہتے ہیں۔ ناول میں جنسی لذت کے چٹخارے بہت ہیں اور اُنہوں نے اصلی مقصد کو لگ بھگ گم سا کر دیا ہے۔ جیون آج جیسا بھی ہے اُسے کیول اُسی طرح کاغذ کے صفحوں پر رنگ دینا آج کے ساہتیہ کی مانگ نہیں ہے۔ آج کے ساہتیہ کار کا فرض ہے کہ وہ اِس پر بھی روشنی ڈالے کہ جیون کیا ہونا چاہئے۔ ہمیشہ کی طرح مہیندر ناتھ سماج کی گندگی کی تصویر کھینچنے میں کافی حد تک سپھل ہوگئے ہیں لیکن کسی بہتر سماج کی اثردار تصویر وہ پڑھنے والے کے سامنے نہیں رکھ سکے۔

کتاب کی چھپائی اور گیٹ‌اپ بہت ہی اچھا ہے، اور بنا کسی‌دو رائے کے اِس‌کا سہرا مکتبہ شاہراہ کے سر ہے۔

—مجیب رضوی



सोवियत रूस में सदाचार

लिखने वाले—मुजीब रिज़वी; निकालने वाले—पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस लिमिटेड, बम्बई 4; लिखावट—हिन्दी; सफ़ा—26; क़ीमत—छै आने.

लेखक ने इस छोटी सी किताब में इस सवाल का जवाब कि रूस में सदाचार जैसी कोई चीज़ नहीं है इस खूबी से दिया है कि पढ़ने वाले को ज़रूर तसल्ली हो जायगी कि रूस पर यह इलज़ाम ग़लत लगाया जाता है. इतना ही नहीं, उसकी समझ में यह बात भी आजायगी कि रूस ने जिस तरीक़े से धीरे धीरे असदाचार को हटा कर सदाचार को जगह दी है उस तरीक़े से अगर कहीं भी अमल किया जाय तो असदाचार दूर हो सकता है. इस किताब को पढ़ कर तो ऐसा मालूम होता है कि सदाचार अगर कहीं है तो वह रूस में ही है. आम आदमियों के पढ़ने की यह चीज़ तो है ही पर अगर इसे वह भी पढ़ जायं जिन के हाथ में राज की बागडोर है तो और भी अच्छा.

—भ. द.

سوویت روس میں سداچار

لکھنے والے—مجیب رضوی؛ نکالنے والے—پیپلس پبلشنگ ہاؤس لمیٹڈ، بمبئی 4؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحہ—26؛ قیمت—چھ آنے .

لیکھک نے اس چھوٹی سی کتاب میں اس سوال کا جواب کہ روس میں سداچار جیسی کوئی چیز نہیں ہے اس خوبی سے دیا ہے کہ پڑھنے والے کو ضرور تسلی ہو جائے گی کہ روس پر یہ الزام غلط لگایا جاتا ہے . اتنا ہی نہیں، اس کی سمجھ میں یہ بات بھی آجائے گی کہ روس نے جس طریقے سے دھیرے دھیرے اسداچار کو ہٹا کر سداچار کو جگہ دی ہے اس طریقے سے اگر کہیں بھی عمل کیا جائے تو اسداچار دور ہو سکتا ہے . اِس کتاب کو پڑھکر تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ سداچار اگر کہیں ہے تو وہ روس میں ہی ہے . عام آدمیوں کے پڑھنے کی یہ چیز تو ہے ہی پر اگر اسے وہ بھی پڑھ جائیں جن کے ہاتھ میں راج کی باگ ڈور ہے تو اور بھی اچھا .

—بھ . د .

वर्धमान

लिखने वाले—महाकवि अनूप; निकालने वाले—ज्ञान पीठ काशी; लिखावट—हिन्दी.

वर्धमान पुस्तक अपने ढंग की अनोखी पुस्तक है. वर्धमान यानी जैनों के आख़िरी तीर्थंकर महावीर स्वामी को ले कर यह काव्य लिखा गया है. यह न इतिहास है न पुरान, जीवनी भी नहीं, कोरा काव्य है. और इस ढंग का काव्य है कि वर्धमान की जगह अगर किसी दूसरे का नाम लिख दिया जाय तो उस पर भी ठीक बैठ सकता है. इसमें वर्धमान कहीं ढूंढे नहीं मिलते. पुस्तक भर में काव्य के रूप में अनूप ही चमक रहे हैं. ज्ञान पीठ ने क्या समझ कर और किसके लिये यह पुस्तक अपने यहां से निकाली है यह समझ में नहीं आता.

—भ. द.

وردھمان

لکھنے والے—مہاکوی انوپ؛ نکالنے والے—گیان پیٹھ کاشی؛ لکھاوٹ—ہندی .

وردھمان پستک اپنے ڈھنگ کی انوکھی پستک ہے . وردھمان یعنی جینوں کے آخری تیرتھنکر مہاویر سوامی کو لے کر یہ کاویہ لکھا گیا ہے . یہ نہ اتہاس ہے نہ پران، جیونی بھی نہیں، کورا کاویہ ہے . اور اِس ڈھنگ کا کاویہ ہے کہ وردھمان کی جگہ اگر کسی دوسرے کا نام لکھ دیا جائے تو اُس پر بھی ٹھیک بیٹھ سکتا ہے . اِس میں وردھمان کہیں ڈھونڈے نہیں ملتے . پستک بھر میں کاویہ کے روپ میں انوپ ہی چمک رہے ہیں . گیان پیٹھ نے کیا سمجھکر اور کس کے لئے یہ پستک اپنے یہاں سے نکالی ہے یہ سمجھ میں نہیں آتا .

—بھ . د .

सरदार बोला—मैं दसियों साधुओं से मिला. दो-चार पहुंचे हुए कहे जाने वाले संतों के पांव छुए पर कोई मेरा दिल न धो सका. उल्टे चोरी की आदत में बढ़ती हुई. साधु संत निडर नहीं होते, न सच बोलते हैं, सच में रमे हुए नहीं होते. यह बच्चे सिर से पैर तक सच की मूरत हैं. चोर को वह ऐसा ही आदमी समझते हैं जैसा साधु और संत को. इनके एक एक शब्द से मेरा मन धुलता है, उमड़ता है और आंखों के रास्ते बरस पड़ता है. हां, अब आप आगे सुनाइये.

मौसी—हां, मैं कुछ न समझ पाई और आप से मिलने को जी मचल पड़ा. बच्चों ने आपस में आप को देखने की बात की, मेरा बच्चा भी आप को देखने के लिये ललचा गया. फिर भी मैं न समझ पाई. हां, यह मैं जानती हूँ मेरी बहन के दोनों बच्चे कभी झूट नहीं बोलते. पर यह न समझ पाई कि रात को इन दोनों ने चोर कहां से देख लिया ! न रात को मोहल्ले में कुछ हुआ न किसी ने कुछ कहा. बस चलते चलते मैंने इन बच्चों से कह दिया, जब आप आएं तब मुझे बुला लिया जाय. यह सब मुझे बुला लाए और मैंने आपके दर्शन कर लिये.

दर्शन की बात सुनकर सरदार से न रहा गया. बोला—हम.........कुछ रुका—हमारे और दर्शन !

मौसी—जब आपने आंसू बहा कर दिल धो लिया तब फिर दर्शन क्यों नहीं ? मौसी कुछ कहे कि हंसमुखी सरदार का हाथ पकड़ कर बोली, मामा चोरी कैसी होती है ? इस सवाल को सुन कर हंसमुखी और सचबहादुर दोनों सरदार की तरफ झुक कर जवाब सुनने के लिये बिलकुल चुप होकर खड़े हो गए.

सरदार ने हंसमुखी को गोदी में उठा कर और उसे पुचकार कर जैसे ही कहा 'चोरी ऐसी होती है' कि तीनों बच्चे खिलखिला कर हंस पड़े.

हंसमुखी—फिर रात क्यों नहीं की थी ?

सरदार—बिटिया, रात को भूल गया इसीलिये दिन में चोरी करने आना पड़ा.

हंसमुख हंसमुखी दोनों अम्मा से पूछ बैठे, अम्मा तुम हमें रोज़ पुचकारती हो, बताया क्यों नहीं पुचकारने को चोरी कहते हैं ?

सचबहादुर बोल पड़ा, मामा की चोरी बड़ी अच्छी है. मोहल्ले वाले चोरी को कुछ का कुछ बताते हैं, चोरों से डराते हैं. चोर, मामा बड़े अच्छे होते हैं. है न, हंसमुख भैया !

हंसमुख—हां अच्छे तो होते ही हैं.

तीनों बच्चे अपने मामाओं से लिपट लिपट कर खेलने कूदने लगे.   —भगवानदीन

سردار بولا—میں دسیوں سادھوؤں سے ملا. دو چار پہونچے ہوئے کہے جانے والے سنتوں کے پاؤں چھوئے پر کوئی میرا دل نہ دھو سکا. اُلٹے چوری کی عادت میں بڑھتی ہوئی. سادھو سنت نڈر نہیں ہوتے' نہ سچ بولتے ہیں' سچ میں رمے ہوئے نہیں ہوتے ۔ یہ بچے سر سے پیر تک سچ کی مورت ہیں ۔ چور کو وہ ایسا ہی آدمی سمجھتے ہیں جیسا سادھو اور سنت کو ۔ ان کے ایک ایک شبد سے میرا من دھلتا ہے' اُمڑتا ہے اور آنکھوں کے راستے برس پڑتا ہے ۔ ہاں' اب آپ آگے سنائیے ۔

موسی—ہاں' میں کچھ نہ سمجھ پائی اور آپ سے ملنے کو جی مچل پڑا ۔ بچوں نے آپس میں آپ کو دیکھنے کی بات کی' میرا بچہ بھی آپ کو دیکھنے کے لئے للچا گیا ۔ پھر بھی میں نہ سمجھ پائی ۔ ہاں' یہ میں جانتی ہوں میری بہن کے دونوں بچے کبھی جھوٹ نہیں بولتے ۔ پر یہ نہ سمجھ پائی کہ رات کو اِن دونوں نے چور کہاں سے دیکھ لیا ! نہ رات کو محلے میں کچھ ہوا نہ کسی نے کچھ کہا ۔ بس چلتے چلتے میں نے اِن بچوں سے کہہ دیا' جب آپ آئیں تب مجھے بلا لیا جائے. یہ سب مجھے بلا لائے اور میں نے آپ کے درشن کرلئے.

درشن کی بات سن کر سردار سے نہ رہا گیا ۔ بولا—ہم..........کچھ رکا—ہمارے اور درشن !

موسی—جب آپ نے آنسو بہاکر دل دھو لیا تب پھر درشن کیوں نہیں ؟ موسی کچھ کہے کہ ھنس مکھی سردار کا ہاتھ پکڑ کر بولی' ماما چوری کیسی ہوتی ہے ؟ اِس سوال کو سن کر ھنس مکھی اور سچ بہادر دونوں سردار کی طرف جھک کر جواب سننے کے لئے بالکل چپ ہوکر کھڑے ہوگئے ۔

سردار نے ھنس مکھی کو گودی میں اُٹھاکر اور اُسے پچکار کر جیسے ہی کہا 'چوری ایسی ہوتی ہے' کہ تینوں بچے کھلکھلا کر ھنس پڑے ۔

ھنس مکھی—پھر رات کیوں نہیں کی تھی ؟

سردار—بٹیا' رات کو بھول گیا اِسی لئے دن میں چوری کرنے آنا پڑا ۔

ھنس مکھ ھنس مکھی دونوں اماں سے پوچھ بیٹھے' اماں تم ہمیں روز پچکارتی ہو' بتایا کیوں نہیں پچکارنے کو چوری کہتے ہیں؟

سچ بہادر بول پڑا' ماما کی چوری بڑی اچھی ہے ۔ محلے والے چوری کو کچھ کا کچھ بتاتے ہیں' چوروں سے ڈراتے ہیں ۔ چور' ماما بڑے اچھے ہوتے ہیں ۔ ہے نہ' ھنس مکھ بھیا !

ھنس مکھ—ہاں اچھے تو ہوتے ہی ہیں ۔

تینوں بچے اپنے ماماؤں سے لپٹ لپٹ کر کھیلنے کودنے لگے ۔   —بھگوان دین

पानी गिरता रहा और वह कुछ बोल न पाये. इतने में हंसमुख बोला—

'ठहरिये, हम अपनी मौसी को ले आयें. वह आपसे मिलना चाहती हैं.' यह कह तीनों बच्चे मौसी को लेने दौड़ गये.

अब आये हुए तीनों मेहमानों को बच्चों के मां-बाप से बात करने का मौक़ा मिला.

सरदार—कहिये बच्चे क्या कहते थे ?

हंसमुखी की अम्मा—यह सब तो आप अभी जान लेंगे. पहले कुछ खा-पी लीजिये.

सरदार ने जवाब में कुछ नहीं कहा. ज़रा गर्दन झुका ली और दूध का गिलास ले लिया. उसके दोनों साथियों ने भी ऐसा ही किया.

दूध पी चुकने पर सरदार ने फिर वही बात पूछी. तब हंसमुख की अम्मा ने कहा—

बच्चों से उठते ही मैंने पूछा कि रात कोई आया था ? एक बोला—हां, तीन आदमी आए थे. मैंने पूछा, क्या कहते थे, बोला ताली मांगते थे. लड़की बोल उठी ताली मेरे पास थीं, मैंने जेब से निकाल कर उनको दे दीं. मैंने पूछा, फिर वह क्या बोले ? लड़का बोला, बोले कुछ नहीं, खाली खाट पर बैठ गए और हम दोनों सो गए. मैंने उनसे कहा, कि थोड़ी देर में वह तुमसे मिलने आयेंगे. लड़का बोला, अच्छी बात है. उसने कहा, वह कहते थे, हम चोर हैं, चोरी करेंगे. उसने आप से यह भी पूछा था कि चोरी कैसी, लड़की ने भी पूछा था. मैंने उनसे कह दिया, अभी वह आते होंगे, उन्हीं से पूछना, चोरी कैसी होती है. इसके बाद कुछ खा कर वह अपनी मौसी के यहां चले गए और भाई को साथ ले आए. वहां मौसी से इन्होंने क्या बात की, पता नहीं. कोई बात हुई ज़रूर है तभी तो बहन ने आप से मिलने को कहला भेजा है. बच्चे उन्हीं को लेने गए हैं.

जैसे बातें खत्म हुईं कि बच्चे मौसी के साथ आ पहुंचे.

हंसमुख की मां ने अपनी बहन की जान पहचान उन तीनों से करा दी और उन तीनों को अपने मेहमान बता कर उनकी पहचान बहन से करा दी.

आपस में नमस्ते होने के बाद सरदार ने बच्चों की मौसी से पूछा, 'यह बताइये आपको हम से मिलने की कैसे सूझी ?'

बच्चों की मौसी ने हंसमुख हंसमुखी से जो बात हुई थी और उन्होंने जो बताया था सब सुना दिया.

अभी बात पूरी न हो पाई थी कि सरदार की आंखें फिर बरस पड़ीं. बच्चों की मौसी पूछ बैठीं—

'आप अपना दिल इतना भारी क्यों करते हैं ?'

پانی گرتا رہا اور وہ کچھ بول نہ پائے . اتنے میں ھنس مکھ بولا—

' ٹھہریئے ' ہم اپنی موسی کو لے آئیں . وہ آپ سے ملنا چاہتی ہیں .' یہ کہ تینوں بچے موسی کو لینے دوڑ گئے .

اب آئے ہوئے تینوں مہمانوں کو بچوں کے ماں باپ سے بات کرنے کا موقع ملا .

سردار—کہئے بچے کیا کہتے تھے ؟

ھنس مکھی کی اماں—یہ سب تو آپ ابھی جان لیں گے . پہلے کچھ کھا پی لیجئے .

سردار نے جواب میں کچھ نہیں کہا . ذرا گردن جھکا لی اور دودھ کا گلاس لے لیا . اُس کے دونوں ساتھیوں نے بھی ایسا ہی کیا .

دودھ پی چکنے پر سردار نے پھر وہی بات پوچھی . تب ھنس مکھ کی اماں نے کہا —

بچوں سے اُٹھتے ہی میں نے پوچھا کہ رات کوئی آیا تھا ؟ ایک بولا—ہاں' تین آدمی آئے تھے. میں نے پوچھا' کیا کہتے تھے' بولا تالی مانگتے تھے . لڑکی بول اُٹھی تالی میرے پاس تھیں' میں نے جیب سے نکال کر اُن کو دے دیں . میں نے پوچھا' پھر وہ کیا بولے ؟ لڑکا بولا' بولے کچھ نہیں' خالی کھاٹ پر بیٹھ گئے اور ہم دونوں سو گئے . میں نے اُن سے کہا' کہ تھوڑی دیر میں وہ تم سے ملنے آئینگے . لڑکا بولا' اچھی بات ہے . اُس نے کہا' وہ کہتے تھے' ہم چور ہیں' چوری کریں گے . اُس نے آپ سے یہ بھی پوچھا تھا کہ چوری کیسی' لڑکی نے بھی پوچھا تھا . میں نے اُن سے کہہ دیا' ابھی وہ آتے ہونگے' اُنہیں سے پوچھنا' چوری کیسی ہوتی ہے . اس کے بعد کچھ کھا کر وہ اپنی موسی کے یہاں چلے گئے اور بھائی کو ساتھ لے آئے . وہاں موسی سے اِنہوں نے کیا بات کی' پتہ نہیں . کوئی بات ہوئی ضرور ہے تبھی تو بہن نے آپ سے ملنے کو کہلا بھیجا ہے . بچے اُنہیں کو لینے گئے ہیں .

جیسے باتیں ختم ہوئیں کہ بچے موسی کے ساتھ آ پہونچے .

ھنس مکھ کی ماں نے اپنی بہن کی جان پہچان اُن تینوں سے کرادی اور اُن تینوں کو اپنے مہمان بتاکر اُن کی پہچان بہن سے کرا دی .

آپس میں نمستے ہونے کے بعد سردار نے بچوں کی موسی سے پوچھا' 'یہ بتائیے آپ کو ہم سے ملنے کی کیسے سوجھی؟'

بچوں کی موسی نے ھنس مکھ ھنس مکھی سے جو بات ہوئی تھی اور اُنہوں نے جو بتایا تھا سب سنا دیا .

ابھی بات پوری نہ ہو پائی تھی کہ سردار کی آنکھیں پھر برس پڑیں . بچوں کی موسی پوچھ بیٹھیں—

'آپ اپنا دل اتنا بھاری کیوں کرتے ہیں ؟'

अम्मा—थोड़ी देर में वह तुम से मिलने आएंगे.

हंसमुख—अच्छी बात है. अम्मा, वह कहते थे, हम चोर हैं, चोरी करेंगे. मैंने पूछा, चोरी कैसी ?

हंसमुखी—हां अम्मा, चोरी कैसी ?

अम्मा—वह आते होंगे, वही बतायेंगे.

× × ×

हंसमुख हंसमुखी नहा-धो और कुछ खा पी सच बहादुर के यहां चल दिये. उसके घर पहुँच कर सचबहादुर की अम्मा से बोले, हमारे घर कोई आयेंगे. सचबहादुर को हमारे साथ कर दीजिये.

सचबहादुर की मां—तुम्हारे घर कौन आयेंगे ?

हंसमुख हंसमुखी दोनों एक साथ बोल उठे—मौसी, चोर आयेंगे !

सचबहादुर की मां एक दम हंस पड़ीं और पूछ बैठीं—चोर कैसे ?

हंसमुख हंसमुखी—मौसी, चोर आदमी होते हैं. बड़े अच्छे होते हैं. रात को आते हैं, आज दिन में आयेंगे.

यह सुनकर सचबहादुर बोला—भैया हंसमुख, हम तुम्हारे साथ चोर देखने चलेंगे. तुमने उनको देखा है ?

हंसमुख—हां, देखा है.

हंसमुखी—मैंने भी देखा है.

सचबहादुर—कब देखा ?

हंसमुख—कल रात.

हंसमुखी—हां, कल रात.

सचबहादुर की मां बच्चों की बात कुछ समझ न पाईं. यह वह अच्छी तरह जानती थीं, हंसमुख हंसमुखी कभी झूट नहीं बोलते, पर यह न समझ पाईं कि कल रात इन बच्चों ने चोर कहां से देख लिये ! मोहल्ले में न शोर हुआ न किसी ने कुछ कहा. उनका भी जी हुआ कि वह हंसमुख के घर जा कर देखें कि बात क्या है. उन्होंने सचबहादुर को उनके साथ भेज दिया और हंसमुख से बोलीं, जब तुम्हारे घर वह आयें तब मुझे बुला लेना.

हंसमुख मौसी को 'हां' कह कर सचबहादुर के साथ घर पहुंचा. अपनी अम्मा से बोला, सचबहादुर भी उनसे मिलेगा जो हमारे घर आयेंगे और मौसी भी उनसे मिलना चाहती हैं.

कुछ देर बाद वह तीनों आदमी आ पहुंचे. हंसमुख हंसमुखी उनसे ऐसे लिपट गये मानों बहुत दिनों की जान पहचान हो. सचबहादुर भी उनकी देखा देखी उन तीनों से जल्दी हिलमिल गया. थोड़ी देर तक उन तीनों की आंखों से

اماں—تھوڑی دیر میں وہ تم سے ملنے آئیں گے۔

ہنس مکھ—اچھی بات ہے۔ اماں' وہ کہتے تھے' ہم چور ہیں' چوری کریں گے۔ میں نے پوچھا' چوری کیسی؟

ہنس مکھی—ہاں اماں' چوری کیسی؟

اماں—وہ آتے ہونگے' وہی بتائینگے۔

× × × ×

ہنس مکھ ہنس مکھی نہادھو اور کچھ کھاپی سچ بہادر کے یہاں چل دیئے۔ اس کے گھر پہونچ کر سچ بہادر کی اماں سے بولے' ہمارے گھر کوئی آئیں گے۔ سچ بہادر کو ہمارے ساتھ کر دیجئے۔

سچ بہادر کی ماں—تمہارے گھر کون آئینگے؟

ہنس مکھ ہنس مکھی دونوں ایک ساتھ بول اٹھے—موسی' چور آئینگے!

سچ بہادر کی ماں ایک دم ہنس پڑیں اور پوچھ بیٹھیں—چور کیسے؟

ہنس مکھ ہنس مکھی—موسی' چور آدمی ہوتے ہیں۔ بڑے اچھے ہوتے ہیں۔ رات کو آتے ہیں' آج دن میں آئینگے۔

یہ سنکر سچ بہادر بولا—بھیا ہنس مکھ' ہم تمہارے ساتھ چور دیکھنے چلیں گے۔ تم نے ان کو دیکھا ہے؟

ہنس مکھ—ہاں' دیکھا ہے۔

ہنس مکھی—میں نے بھی دیکھا ہے۔

سچ بہادر—کب دیکھا؟

ہنس مکھ—کل رات۔

ہنس مکھی—ہاں' کل رات۔

سچ بہادر کی ماں بچوں کی بات کچھ سمجھ نہ پائیں۔ یہ وہ اچھی طرح جانتی تھیں' ہنس مکھ ہنس مکھی کبھی جھوٹ نہیں بولتے' پر یہ نہ سمجھ پائیں کہ کل رات ان بچوں نے چور کہاں سے دیکھ لئے! محلے میں نہ شور ہوا نہ کسی نے کچھ کہا۔ ان کا بھی جی ہوا کہ وہ ہنس مکھ کے گھر جا کر دیکھیں کہ بات کیا ہے۔ انہوں نے سچ بہادر کو ان کے ساتھ بھیج دیا اور ہنس مکھ سے بولیں' جب تمہارے گھر آئیں تب مجھے بلا لینا۔

ہنس مکھ موسی کو 'ہاں' کہکر سچ بہادر کے ساتھ گھر پہونچا۔ اپنی اماں سے بولا' سچ بہادر بھی ان سے ملے گا جو ہمارے گھر آئیں گے اور موسی بھی ان سے ملنا چاہتی ہیں۔

کچھ دیر بعد وہ تینوں آدمی آ پہونچے۔ ہنس مکھ ہنس مکھی ان سے ایسے لپٹ گئے مانو بہت دنوں کی جان پہچان ہو۔ سچ بہادر بھی ان کی دیکھا دیکھی ان تینوں سے جلدی ہل مل گیا۔ تھوڑی دیر تک ان تینوں کی آنکھوں سے

चिमट रहा पर दूर पकड़ से
लिपट रहा पर दूर रगड़ से

देन मिली ऐसी कुछ रब की
आंख लगी है इस पर सब की

जीने देगा जीते रहते
हां, यह झन्डा हम यह कहते

जब तक दम है इसके दम में
यह हो शामिल सब के ग़म में

कहे कोई कुछ यह क्यों भड़के
जगह न ली कुछ इसने लड़के

सच सच कहे वे खटके
हां, दो टूक कहे वे अटके

इसकी इसी अदा पर मरते
हम हिन्दी हम ज़रा न डरते

यह देता है दाना अभय का
यह झन्डा है सर्वोदय का

सबक़ दे रहा है यह कब का
सबके लिये जियो, सुख सबका

प्रीत और भी है कुछ इससे
मिला हमें यह है भी किस से

—भगवानदीन

چمٹ رھا پر دور پکڑ سے
لپٹ رھا پر دور رگڑ سے

دین ملی ایسی کچھ رب کی
آنکھ لگی ھے اس پر سب کی

جینے دے گا جیتے رھتے
ھاں، یہ جھنڈا ھم یہ کہتے

جب تک دم ھے اِس کے دم میں
یہ ھو شامل سب کے غم میں

کہے کوئی کچھ یہ کیوں بھڑکے
جگہ نہ خالی کچھ اس نے لڑکے

سچ سچ کہے یے کھٹکے
ھاں، دو ٹوک کہے یہ اٹکے

اِسکی اِسی ادا پر مرتے
ھم ھندی ھم ذرا نہ ڈرتے

یہ دیتا ھے دان ابھے کا
یہ جھنڈا ھے سرودے کا

سبق دے رھا ھے یہ کب کا
سب کے لئے جیو، سکھ سب کا

پریت اور بھی ھے کچھ اِس سے
ملا ھمیں یہ ھے بھی کس سے!

—بھگوان دین

●●●●

सच के बीज

(4)

हंसमुख हंसमुखी दोनों सुबह उठे. उठते ही उनकी अम्माने पूछा, रात कोई आया था ?

हंसमुख बोला, हां अम्मा तीन आदमी आये थे.

उनकी अम्मा ने पूछा, क्या कहते थे ?

हंसमुख बोला, ताली मांगते थे.

तुरंत हंसमुखी बोल उठी, अम्मा ताली मेरे पास थीं, मैंने जेब से निकाल कर उनको दे दीं.

अम्मा—फिर वह क्या बोले ?

हंसमुख—बोले कुछ नहीं. ख़ाली खाट पर बैठ गए. फिर हम सो गये.

سچ کے بیج

(4)

ھنس مکھ ھنس مکھی دونوں صبح اٹھے. اٹھتے ھی اُن کی اماں نے پوچھا، رات کوئی آیا تھا ؟

ھنس مکھ بولا، ھاں اماں تین آدمی آئے تھے .

اُن کی اماں نے پوچھا، کیا کہتے تھے ؟

ھنس مکھ بولا، تالی مانگتے تھے .

ترنت ھنس مکھی بول اُٹھی، اماں تالی میرے پاس تھیں، میں نے جیب سے نکال کر اُن کو دے دیں .

اماں—پھر وہ کیا بولے ؟

ھنس مکھ—بولے کچھ نہیں . خالی کھاٹ پر بیٹھ گئے . پھر ھم سو گئے .

बच्चों की दुनिया

अपना झन्डा

अपना झन्डा अपने ढब का
हम सब इसके यह हम सबका

हम इससे यह ऊंचा हमसे
फड़क रहा हम सब के दम से

इस के दर्शन करते करते
जी उठते हम मरते मरते

जब हम सब का जी है दुखता
इसका भी दुखता यह मुकता

जन गन मन जब लहर लहरता
इसका तन मन फहर फहरता

हम दुख में हों इसको दुख है
हम सुख में हों इसको सुख है

इसका एक निराला गुन है
इसकी एक अनोखी धुन है

दूर रहें सब बन्दे दुख से
देश रहें सब के सब सुख से

छाया हुआ अम्न हो हर जा
ऊंचा नीचा रहे न दरजा

एक सरीखा रब ने सिरजा
किस का राजा कैसी प्रजा

अपने झन्डे का यह कहना
अपने आप भरोसे रहना

सारे झन्डे भाई इसके
फिर वह हों चाहे भी जिसके

जगत विजय का गन्दा सपना
कभी न देखे झन्डा अपना

नहीं जैक को इस ने पटका
सीधा चला नहीं यह अटका

हट कर खड़ा अकड़ में कब है
मिल कर खड़ा जकड़ में कब है

بچوں کی دنیا

اپنا جھنڈا

اپنا جھنڈا اپنے ڈھب کا
ہم سب اس کے یہ ہم سب کا

ہم اِس سے یہ اُونچا ہم سے
پھڑک رہا ہم سب کے دم سے

اِس کے درشن کرتے کرتے
جی اُٹھتے ہم مرتے مرتے

جب ہم سب کا جی ہے دکھتا
اس کا بھی دکھتا یہ جھکتا

جن گن من جب لہر لہرتا
اِس کا تن من پھہر پھہرتا

ہم دکھ میں ہوں اِس کو دکھ ہے
ہم سکھ میں ہوں اِسکو سکھ ہے

اس کا ایک نرالا گن ہے
اس کی ایک انوکھی دھن ہے

دور رہیں سب بندے دکھ سے
دیش رہیں سب کے سب سکھ سے

چھایا ہوا امن ہو ہر جا
اُونچا نیچا رہے نہ درجا

ایک سریکھا رب نے سرجا
کس کا راجہ کیسی پرجا

اپنے جھنڈے کا یہ کہنا
اپنے آپ بھروسے رہنا

سارے جھنڈے بھائی اِسکے
پھر وہ ہوں چاہے بھی جسکے

جگت وجے کا گندا سپنا
کبھی نہ دیکھے جھنڈا اپنا

نہیں جیک کو اس نے پٹکا
سیدھا چلا نہیں یہ اٹکا

ہٹ کر کھڑا اکڑ میں کب ہے
مل کر کھڑا جکڑ میں کب ہے

रही थी और प्रान्ती शान्ति सम्मेलन के अधिकारी घंटों घंटों बाद पंडित जी को किसी सूरत गया ले जाने की मांग कर रहे थे. नेचर ने सब को मजबूर कर दिया था.—पंडित जी गया न जा सके. सम्मेलन कामयाब रहा. आल इण्डिया शान्ति कौन्सिल के सदर डाक्टर किचलू यहां आये थे.

18 अगस्त को डाक्टर किचलू पटना आ गये. गया सम्मेलन ख़त्म हो गया. उन्होंने एक प्रेस कानफ्रेन्स की. गांधी मैदान में आम सभा रखी गई थी और पंडित जी वहां बोलने वाले थे. एक दुविधा लोगों के दिल में था. पानी का—और सब से ज़ियादा इस बात का कि शायद पंडित जी कमज़ोरी के कारन बोलने की कौन कहे वहां तक जा भी न सकें. पानी बरस गया और सभा अंजुमन इस्लामिया हाल में करनी पड़ी. पंडित जी जी कड़ा करके हांपते कांपते हाल में पहुंच गये. पसीना छूट रहा था, डाक्टर साहब बग़ल में बैठे थे. लोगों की बेताबी की हद नहीं थी. हाल से लेकर बाहर दूर सड़क तक लोग घेरे हुए थे. पंडित जी के पहुंचते ही डाक्टर किचलू ने जल्दी तक़रीर ख़त्म कर दी.

पंडित जी ने कांपती हुई ज़बान से धीरे धीरे बोलना शुरू किया. वही सन्नाटा छा गया. पंडित जी की आवाज़ में एक नया पन था, पहले से असर ज़ियादा था. वह पंद्रह मिन्ट बोलने के लिये तैयार हुए थे लेकिन क़रीब एक घन्टा बोल गये. उन्होंने एक घन्टे में सब कुछ कह दिया. और आख़ीरी वाक्य उनका शायद हमेशा लोगों के कानों में गूंजता रहेगा—यह भारत की जनता का फ़ैसला है जिसका मुंह बन कर पंडित जी ने यह फ़ैसला दुहराया था—

"हमारा पहला फ़ैसला यह है कि हमारे देश का न तो एक दाना गेहूँ, न एक फूटी कौड़ी और न हमारे बच्चों का एक क़तरा ख़ून चीन या रूस के विरुद्ध स्तेमाल होगा."

पंडित जी ने आगे कहा—"मैं पूरी ज़िम्मेदारी के साथ कहता हूँ कि जो कुछ चीन के अन्दर हो रहा है, अगर वही कम्युनिज़्म है तो मैं चाहता हूँ कि सारी दुनियां कम्युनिस्ट हो जाए, सारी दुनियां चीन की तरह हो जाए. उतनी ही ज़िम्मेदारी के साथ मैं यह भी कहता हूँ कि चीन आज जो कुछ कर रहा है, अगर वही कम्युनिज़्म है तो कम्युनिज़्म और गांधीइज़्म में कोई फ़र्क़ नहीं है."

19 अगस्त को सुबह पंडित जी और डाक्टर किचलू पटने से रवाना हो गये. गाड़ी धीरे धीरे पलेट फ़ार्म छोड़ती रही और दूर तक कान में भनक आती रही—साम्राजियो एशिया छोड़ो—ईरान छोड़ो, मिस्र छोड़ो—चीन छोड़ो, कोरिया छोड़ो—हिन्द चीन छोड़ो, मलाया छोड़ो—हमें रोटी चाहिये बम नहीं—हमें शांती चाहिये जंग नहीं—शान्ती की आवाज़ ज़िन्दा बाद ! जनता की एकता ज़िन्दा बाद.

——प्रवासी

رہی تھی اور پرانتی شانتی سمیلن کے ادھیکاری گھنٹوں گھنٹوں بعد پنڈت جی کو کسی صورت گیا لے جانے کی مانگ کر رہے تھے ۔ نیچر نے سب کو مجبور کر دیا تھا—پنڈت جی گیا نہ جا سکے ۔ سمیلن کامیاب رہا ۔ آل انڈیا شانتی کونسل کے صدر ڈاکٹر کچلو یہاں آئے تھے ۔

18 اگست کو ڈاکٹر کچلو پٹنہ آگئے ۔ گیا سمیلن ختم ہوگیا ۔ انہوں نے ایک پریس کانفرنس کی ۔ گاندھی میدان میں عام سبھا رکھی گئی تھی اور پنڈت جی وہاں بولنے والے تھے ۔ ایک دودھا لوگوں کے دل میں تھا ۔ پانی کا—اور سب سے زیادہ اِس بات کا کہ شاید پنڈت جی کمزوری کے کارن بولنے کی کون کہے وہاں تک جا بھی نہ سکیں ۔ پانی برس گیا اور سبھا انجمن اسلامیہ ہال میں کرنی پڑی ۔ پنڈت جی جی کڑا کر کے ہانپتے کانپتے ہال میں پہونچ گئے ۔ پسینہ چھوٹ رہا تھا' ڈاکٹر صاحب بغل میں بیٹھے تھے ۔ لوگوں کی بےتابی کی حد نہیں تھی ۔ ہال سے لےکر باہر دور سڑک تک لوگ گھیرے ہوئے تھے ۔ پنڈت جی کے پہونچتے ہی ڈاکٹر کچلو نے جلدی تقریر ختم کردی ۔

پنڈت جی نے کانپتی ہوئی زبان سے دھیرے دھیرے بولنا شروع کیا ۔ وہی سناٹا چھا گیا ۔ پنڈت جی کی آواز میں ایک نیا پن تھا' پہلے سے اثر زیادہ تھا ۔ وہ پندرہ منٹ بولنے کے لئے تیار ہوئے تھے لیکن قریب ایک گھنٹہ بول گئے ۔ انہوں نے ایک گھنٹے میں سب کچھ کہہ دیا ۔ اور آخری واکیہ اُن کا شاید ہمیشہ لوگوں کے کانوں میں گونجتا رہے گا—یہ بھارت کی جنتا کا فیصلہ ہے جس کا منھ بنکر پنڈت جی نے یہ فیصلہ دھرایا تھا—

" ہمارا پہلا فیصلہ یہ ہے کہ ہمارے دیش کا نہ تو ایک دانہ گیہوں' نہ ایک پھوٹی کوڑی اور نہ ہمارے بچوں کا ایک قطرہ خون چین یا روس کے ورودھ استعمال ہوگا ۔"

پنڈت جی نے آگے کہا—" میں پوری ذمہ داری کے ساتھ کہتا ہوں کہ جو کچھ چین کے اندر ہو رہا ہے' اگر وہی کمیونزم ہے تو میں چاہتا ہوں کہ ساری دنیا کمیونسٹ ہوجائے' ساری دنیا چین کی طرح ہو جائے ۔ اُتنی ہی ذمہ داری کے ساتھ میں یہ بھی کہتا ہوں کہ چین آج جو کچھ کر رہا ہے' اگر وہی کمیونزم ہے تو کمیونزم اور گاندھی ازم میں کوئی فرق نہیں ۔"

19 اگست کو صبح پنڈت جی اور ڈاکٹر کچلو پٹنہ سے روانہ ہوگئے ۔ گاڑی دھیرے دھیرے پلیٹ فارم چھوڑتی رہی اور دور تک کان میں بھنک آتی رہی—سامراجیو ایشیا چھوڑو—ایران چھوڑو' مصر چھوڑو—چین چھوڑو' کوریا چھوڑو—ہند چین چھوڑو' ملایا چھوڑو—ہمیں روٹی چاہئے بم نہیں—ہمیں شانتی چاہئے جنگ نہیں—شانتی کی آواز زندہ باد ! جنتا کی ایکتا زندہ باد !

——پرواسی

जी चीन का आंखों देखा हाल सुना रहे थे तो दस हज़ार से ज़ियादा आदमी वहां मौजूद थे वही ख़ामोशी, उसी तरह सब के सब मौन—सब मन ही मन मुक़ाबला करते हुए—हिन्दुस्तान और चीन, चीन और हिन्दुस्तान, माओ और नेहरू, नेहरू और माओ—इस सभा में किसान दूर दूर से आए थे. उनकी पगड़ी, उनकी धजा, उनके चेहरे साफ़ कह रहे थे कि यह किसान हैं.

भागलपुर—बारह और तेरह अगस्त को भागलपुर में शान्ति सम्मेलन था. बिहार में कोई पुल ही नहीं है. नदी बीच में आ जाए तो जहाज़ से दूसरे किनारे पर पहुंचिये और वहां फिर छोटी लाइन के छकड़े पर क़दम रखिये. सारी मुसीबतों को पार करते हम भागलपुर पहुंच ही गए. च्योड़ा और दही हर दूकान पर दिखाई पड़ा. मन मसोस कर रह गया. बुख़ार चढ़ा था और मैं इन चीज़ों को छू न सकता था.

पंडित जी के मंज़िल पर पहुंचते ही सुना गया कि यहां भी पुलिस ने काफ़ी दौड़ धूप करके लोगों को धमकाया है कि वह शान्ति सम्मेलन में कोई सहयोग न दें—पुलिस अपना काम करती रही और जिन लोगों को वह धमकी देती थी वह एक एक कर के पंडित जी के पास आते गए. एक ही सवाल था—चीन क्या है और क्यों ऐसा है? खाने पीने, शादी ब्याह, रहन सहन, माली, राजकाजी सभी सम्बन्ध में सवाल किये जा रहे थे और पंडित जी सब का जवाब दे रहे थे. पंडित जी को आराम करना चाहिये था लेकिन वह इन भोले लोगों के शकों को दूर करना अपने आराम से ज़ियादा अच्छा काम समझते थे. पंडित जी ने एक दो नहीं कई सभाओं में भाशन दिया. एक एक दिन में पांच पांच और छै छै घन्टे उन्हें बोलना पड़ा, घर पर जो बात चीन होती थी वह इसके ऊपर थी—14 की शाम को आम सभा हुई. लगभग दस बारह हज़ार आदमी पंडित जी के संदेश को सुनने के लिये मौजूद थे.

मुकामा—मुकामा पटना ज़िले का एक क़स्बा है. अधिकतर दुकानदार यहां रहते हैं. यहां का शान्ति सम्मेलन भी काफ़ी अच्छा रहा. कांगरेस सदर ने सदारत की और पंडित जी ने अपना संदेश जनता तक पहुंचा दिया.

पटना—पंद्रह की सुबह पटना पहुंच कर पंडित जी आराम करने वाले थे. ख़ुद तो वह आराम क्या करते. नेचर ने आराम उनके सर थोप ही दिया. मजबूरन पंडित जी को चुप हो कर लेटना ही पड़ा. सख़्त बुख़ार चढ़ आया था. पंडित जी बिहार के प्रान्ती शान्ति सम्मेलन में गया जाने वाले थे. वहां से बराबर फ़ोन आ रहे थे. जनता चीन के बारे में सुनने के लिये बेचैन थी. लोगों की मांग बढ़ती जा

ی چین کا آنکھوں دیکھا حال سنا رہے تھے تو س ہزار سے زیادہ آدمی وہاں موجود تھے . وہی خاموشی، اسی طرح سب کے سب مون—سب من ہی ن مقابلہ کرتے ہوئے—ہندستان اور چین، چین اور ہندستان، ماؤ اور نہرو، نہرو اور ماؤ—اس سبھا میں سان دور دور سے آئے تھے . ان کی پگڑی، ان کی دھجا، ن کے چہرے صاف کہہ رہے تھے کہ یہ کسان ہیں .

بھاگلپور—بارہ اور تیرہ اگست کو بھاگلپور میں شانتی سمیلن تھا . بہار میں کوئی پل ہی نہیں ہے . دی بیچ میں آجائے تو جہاز سے دوسرے کنارے پر پہنچئے اور وہاں پھر چھوٹی لائن کے چھکڑے پر قدم رکھئے. اری مصیبتوں کو پار کرتے ہم بھاگلپور پہونچ ہی گئے . چیوڑا اور دہی ہر دوکان پر دکھائی پڑا . من مسوس کر ہ گیا . بخار چڑھا تھا اور میں ان چیزوں کو چھو نہ سکتا تھا .

پنڈت جی کے منزل پر پہونچتے ہی سنا گیا کہ یہاں بھی پولیس نے کافی دوڑ دھوپ کر کے لوگوں کو دھمکایا ہے کہ وہ شانتی سمیلن میں کوئی سہیوگ نہ دیں —پولیس اپنا کام کرتی رہی اور جن لوگوں کو وہ دھمکی دیتی تھی وہ ایک ایک کر کے پنڈت جی کے پاس آتے گئے . ایک ہی سوال تھا—چین کیا ہے اور کیوں ایسا ہے ؟ کھانے پینے، شادی بیاہ، رہن سہن، مالی، راجکاجی سبھی سمبندھ میں سوال کئے جا رہے تھے اور پنڈت جی سب جواب دے رہے تھے . پنڈت جی کو آرام کرنا چاہئے تھا لیکن وہ ان بھولے لوگوں کے شکوں کو دور کرنا اپنے آرام سے زیادہ اچھا کام سمجھتے تھے . پنڈت جی نے ایک دو نہیں کئی سبھاؤں میں بھاشن دیا . ایک ایک دن میں پانچ پانچ اور چھ چھ گھنٹے انہیں بولنا پڑا، گھر پر جو بات چیت ہوتی تھی وہ اس کے اوپر تھی—14 کی شام کو عام سبھا ہوئی . لگ بھگ دس بارہ ہزار آدمی پنڈت جی کے سندیش کو سننے کے لئے موجود تھے .

مکامہ—مکامہ پٹنہ ضلع کا ایک قصبہ ہے . ادھک تر دوکاندار یہاں رہتے ہیں . یہاں کا شانتی سمیلن بھی کافی اچھا رہا . کانگریس صدر نے صدارت کی اور پنڈت جی نے اپنا سندیش جنتا تک پہونچا دیا .

پٹنہ—پندرہ کی صبح پٹنہ پہونچ کر پنڈت جی آرام کرنے والے تھے . خود تو وہ آرام کیا کرتے . نیچر نے آرام ان کے سر تھوپ ہی دیا . مجبوراً پنڈت جی کو چپ ہو کر لیٹنا ہی پڑا . سخت بخار چڑھ آیا تھا . پنڈت جی بہار کے پرانتی شانتی سمیلن میں گیا جانے والے تھے . وہاں سے برابر فون آ رہے تھے . جنتا چین کے بارے میں سننے کے لئے بےچین تھی. لوگوں کی مانگ بڑھتی جا

हैं और पर्लियामेन्ट के मेम्बर चुने गये हैं. अभी तक उड़ती खबरें कान में आई थीं कि हमारी पार्लियामेन्ट के मेम्बरों को फुसलाने के लिये अमरीका करोड़ों रुपया खर्च कर रहा है लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं था. महेश्वर प्रसाद जी ने आम जनता के सामने भरी सभा में साफ़ साफ़ कहा—"अमरीका करोड़ों रुपया खर्च करके हमारी पार्लियामेन्ट के मेम्बरों को खरीद रहा है. मुझे खुद लालच दी गई है और आज तक दी जा रही है. मैं चाहूँ तो लाखों मिन्टों में कमा सकता हूँ." पता नहीं यह बात हमारे अधिकारियों तक भी पहुंचती है या नहीं. क्या इस आरोप का जवाब सरकार देगी, क्या इस खतरनाक पालीसी का नतीजा भी उसके दिमाग़ में है या डालर की पीलाहट ने आंखों में कमल का रोग कर दिया है.

सभा में लगभग सात हज़ार आदमी थे. पंडित जी तीन घंटे तक बोलते रहे और लोग बिना हिले डुले सुनते रहे. काश कोई उनके दिल की आवाज़ सुन सकता, कोई उसे समझ सकता. वह सब के सब कह रहे थे—हमें चीन चाहिये अमरीका नहीं—हमें रोटी चाहिये बम नहीं—हमें शान्ति चाहिये जंग नहीं !

बीगू सराए—सुबह सवेरे ही उठना पड़ा. पंडित जी थे या कोई मशीन. बटन दबाया और तैयार. मुज़फ़्फ़रपुर से बीगू सराय के लिये रवाना हो गये. बहुत से लोग स्टेशन पर आए थे. वह पंडित जी को छोड़ना नहीं चाहते थे. चीन की जो भी तस्वीर उनके दिमाग़ में बन पाई थी उसे वह पंडित जी के सामने खोल कर रख देना चाहते थे, उसे पंडित जी के ब्रुश से ठीक करवा लेना चाहते थे.

बीगू सराए मुंगेर ज़िले का एक बड़ा क़स्बा है, ग़ल्ले की मंडी है. यहां जिन लोगों की शकलें दिखाई पड़ीं वह कुछ दूसरी तरह के थे—दूसरों से ज़ियादा सीधे. पंडित जी के स्टेशन पर उतरते ही नारे गूंज उठे. एक नया नारा सुनाई पड़ा—साम्राजियो एशिया छोड़ो—ईरान छोड़ो, मिस्र छोड़ो—चीन छोड़ो, कोरिया छोड़ो —हिन्द चीन छोड़ो, मलाया छोड़ो—मोटर में सख़्त गरमी थी, पंडित जी काफ़ी थक गये थे लेकिन लोगों का जोश लहरें मार रहा था, वह पंडित जी का जुलूस निकालने पर तुले हुए थे. जुलूस निकाला—बहुत लम्बा चौड़ा—सड़कों को पार करना, मुहल्लों में शान्ती की गूंज उठाता एक जगह पर आख़ीर रुक ही गया. यह थी हमारी आज की मंज़िल !

यहां सुना गया कि पुलिस ने डुग्गी पीट रखी थी कि शान्ति की सभा में कोई न जाए. जो जाएगा उस पर मुक़द्दमे चलेंगे, वहां लाठी चार्ज होगा—लोगों को डराने की पूरी कोशिश की गई थी—लेकिन शाम को शान्ति का झन्डा जब पूरी मस्ती से हवा में झूम रहा था और पंडित

ہیں اور پارلیامنٹ کے ممبر چنے گئے ہیں . ابھی تک اُڑتی خبریں کان میں آئی تھیں کہ ہماری پارلیامنٹ کے ممبروں کو پھسلانے کے لئے امریکہ کروڑوں روپیہ خرچ کر رہا ہے لیکن اِس بات کا کوئی ثبوت نہیں تھا . مہیشور پرساد جی نے عام جنتا کے سامنے بھری سبھا میں صاف صاف کہا—"امریکہ کروڑوں روپیہ خرچ کرکے ہماری پارلیامنٹ کے ممبروں کو خرید رہا ہے . مجھے خود لالچ دی گئی ہے اور آج تک دی جا رہی ہے . میں چاہوں تو لاکھوں منٹوں میں کما سکتا ہوں ." پتہ نہیں یہ بات ہمارے ادھیکاریوں تک بھی پہونچتی ہے یا نہیں . کیا اِس آروپ کا جواب سرکار دے گی' کیا اِس خطرناک پالیسی کا نتیجہ بھی اُس کے دماغ میں ہے یا ڈالر کی پیلاہٹ نے آنکھوں میں کمل کا روگ کردیا ہے .

سبھا میں لگ بھگ سات ہزار آدمی تھے . پنڈت جی تین گھنٹے تک بولتے رہے اور لوگ بنا ہلے ڈلے سنتے رہے . کاش کوئی اُن کے دل کی آواز سن سکتا' کوئی اُسے سمجھ سکتا . وہ سب کے سب کہہ رہے تھے—ہمیں چین چاہئے امریکہ نہیں—ہمیں روٹی چاہئے بم نہیں—ہمیں شانتی چاہئے جنگ نہیں !

بیگو سرائے—صبح سویرے ہی اُٹھنا پڑا. پنڈت جی تھے یا کوئی مشین. بٹن دبایا اور تیار. مظفر پور سے بیگو سرائے کے لئے روانہ ہوگئے . بہت سے لوگ اسٹیشن پر آئے تھے . وہ پنڈت جی کو چھوڑنا نہیں چاہتے تھے . چین کی جو بھی تصویر اُن کے دماغ میں بن پائی تھی اُسے وہ پنڈت جی کے سامنے کھول کر رکھ دینا چاہتے تھے' اُسے پنڈت جی کے برش سے ٹھیک کروا لینا چاہتے تھے .

بیگو سرائے مونگیر ضلع کا ایک بڑا قصبہ ہے' غلے کی منڈی ہے . یہاں جن لوگوں کی شکلیں دکھائی پڑیں وہ کچھ دوسری طرح کے تھے—دوسروں سے زیادہ سیدھے . پنڈت جی کے اسٹیشن پر اُترتے ہی نعرے گونج اُٹھے . ایک نیا نعرہ سنائی پڑا—سامراجیو ایشیا چھوڑو—ایران چھوڑو' مصر چھوڑو—چین چھوڑو' کوریا چھوڑو—ہند چین چھوڑو' ملایا چھوڑو—موٹر میں سخت گرمی تھی' پنڈت جی کافی تھک گئے تھے لیکن لوگوں کا جوش لہریں مار رہا تھا' وہ پنڈت جی کا جلوس نکالنے پر تلے ہوئے تھے . جلوس نکلا—بہت لمبا چوڑا—سڑکوں کو پار کرتا' محلوں میں شانتی کی گونج اُٹھاتا ایک جگہ پر آخیر رک ہی گیا . یہ تھی ہماری آج کی منزل !

یہاں سنا گیا کہ پولیس نے ڈگی پیٹ رکھی تھی کہ شانتی کی سبھا میں کوئی نہ جائے . جو جائے گا اُس پر مقدمے چلیں گے' وہاں لاٹھی چارج ہوگا—لوگوں کو ڈرانے کی پوری کوشش کی گئی تھی—لیکن شام کو شانتی کا جھنڈا جب پوری مستی سے ہوا میں جھوم رہا تھا اور پنڈت

आपसी मुखालफ़त रखने वाले एक प्लेटफ़ार्म पर जमा हो गए थे, सबका एक ही ध्येय बन गया था—शान्ति—शान्ति से उनका जीवन है और लड़ाई से वह ही न रहेंगे तो कौन सोशलिस्ट होगा, कौन कम्युनिस्ट रहेगा, कौन कांगरेसी होगा, कौन किसान मज़दूर प्रजापारटी का झन्डा बुलन्द करेगा.

पंडित सुन्दर लाल ने अपना भाशन शुरू किया. चार पांच हज़ार आदमी उत्सुक बैठे थे. पंडित जी ढाई घंटे तक बोलते रहे. लोग जैसे गुम सुम हो गए थे, जैसे वह दुनिया की हर चीज़ से बे ख़बर हो रहे थे. जैसे वह जादू के तमाशे के बारे में सुन रहे हों. पंडितजी उन्हें चीन का हाल सुना रहे थे— चीन की कहानी, ज़िन्दा जादू का तमाशा—उम्मीद से कभी उनकी आंखों में चमक आ जाती थी और कभी भुकमरी, कन्ट्रोल, अफ़सरी धांधागर्दी, दुख मुसीबत की अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी पर उनका ध्यान जाता था और वह ग़ुस्से से कांप उठते थे—सब के मन से एक ही आवाज उठ रही थी, एक ही सवाल पैदा हो रहा था—यह क्योंकर हुआ, यह जादू क्यों कर किया जा सका, चीन ने यह स्वर्ग दो साल में कैसे बना लिया—और पंडित जी का जवाब था—जहां चाह होती है, वहां राह होती है. हम भी कर सकते थे, हम अब भी कर सकते हैं—लेकिन हमारी चाह बुझ गई, हमने राह गुम कर दी. चाह पैदा हो जाये तो राह निकल आएगी.

दिन भर लोगों का तांता बंधा रहता था. सब लोग चीन के बारे में जानना चाहते थे, शान्ती आन्दोलन का मतलब समझना चाहते थे. कुछ को शक थे, वह उसे दूर करना चाहते थे, कुछ डर गये थे और वह अपनी हिम्मत बंधाना चाहते थे.

मुज़फ़्फ़रपुर—10 अगस्त को क़रीब ग्यारह बजे पंडित जी मुज़फ़्फ़रपुर के लिये चल पड़े. चार बजे हम सब मुज़फ़्फ़रपुर पहुंचे. स्टेशन पर वही धूम, वही नारों की गूंज, वही झन्डे—सिर्फ़ फ़रक़ एक था, आदमी दूसरे थे, जगह दूसरी थी.

मुज़फ़्फ़रपुर में पंडित जी पहले भी आ चुके थे जब मुज़फ़्फ़रपुर लावे के नीचे दबा था. दोनों दफ़ा के आने का मक़सद एक ही था—उस दफ़ा भी दुखियों को ढारस देनी थी और इस दफ़ा भी. उसी दिन शाम को एक बड़े मैदान में शान्ती सम्मेलन हुआ. डाइस पर पार्लियामेन्ट के मेम्बर भी थे, डाक्टर भी थे, सौदागर भी थे, प्रोफ़ेसर भी थे, पंजाबी भी थे, बंगाली भी थे. श्री महेश्वर प्रसाद नरायन सिंह ने इस सभा की सदारत की. आप सोशलिस्ट पारटी के मेम्बर

آپسی مخالفت رکھنے والے ایک پلیٹ فارم پر جمع ہوگئے تھے' سب کا ایک ہی دھیہ بن گیا تھا—شانتی—شانتی سے اُن کا جیون ہے اور لڑائی سے وہ ہی نہ رہیں گے تو کون سوشلسٹ ہوگا' کون کمیونسٹ رہے گا' کون کانگریسی ہوگا' کون کسان مزدور پرجا پارٹی کا جھنڈا بلند کرے گا .

پنڈت سندر لال نے اپنا بھاشن شروع کیا . چار پانچ ہزار آدمی اُتسک بیٹھے تھے . پنڈت جی ڈھائی گھنٹے تک بولتے رہے . لوگ جیسے گم سم ہوگئے تھے' جیسے وہ دنیا کی ہر چیز سے بے خبر ہو رہے تھے. جیسے وہ جادو کے تماشے کے بارے میں سن رہے ہوں پنڈت جی اُنہیں چین کا حال سنا رہے تھے—چین کی کہانی' زندہ جادو کا تماشہ—اُمید سے کبھی اُن کی آنکھوں میں چمک آ جاتی تھی اور کبھی بھک مری' کنٹرول' افسری دھاندا گردی' دکھ مصیبت کی اپنی روزانہ کی زندگی پر اُن کا دھیان جاتا تھا اور وہ غصے سے کانپ اُٹھتے تھے—سب کے من سے ایک ہی آواز اُٹھ رہی تھی' ایک ہی سوال پیدا ہو رہا تھا—یہ کیوں کر ہوا' یہ جادو کیوں کر کیا جاسکا' چین نے یہ سورگ دو سال میں کیسے بنا لیا—اور پنڈت جی کا جواب تھا—جہاں چاہ ہوتی ہے' وہاں راہ ہوتی ہے . ہم بھی کرسکتے تھے' ہم اب بھی کرسکتے ہیں—لیکن ہماری چاہ بجھ گئی' ہم نے راہ گم کردی . چاہ پیدا ہو جائے تو راہ نکل آئے گی .

دن بھر لوگوں کا تانتا بندھا رہتا تھا . سب لوگ چین کے بارے میں جاننا چاہتے تھے' شانتی آندولن کا مطلب سمجھنا چاہتے تھے . کچھ کو شک تھے' وہ اُسے دور کرنا چاہتے تھے' کچھ ڈر گئے تھے اور وہ اپنی ہمت بندھانا چاہتے تھے .

مظفرپور—10 اگست کو قریب گیارہ بجے پنڈت جی مظفرپور کے لئے چل پڑے . چار بجے ہم سب مظفرپور پہونچے . اسٹیشن پر وہی دھوم' وہی نعروں کی گونج' وہی جھنڈے—صرف فرق ایک تھا' آدمی دوسرے تھے' جگہ دوسری تھی .

مظفرپور میں پنڈت جی پہلے بھی آ چکے تھے جب مظفرپور لاوے کے نیچے دبا تھا . دونوں دفعہ کے آنے کا مقصد ایک ہی تھا—اُس دفعہ بھی دکھیوں کو ڈھارس دینی تھی اور اِس دفعہ بھی . اُسی دن شام کو ایک بڑے میدان میں شانتی سمیلن ہوا. ڈائس پر پارلیامنٹ کے ممبر بھی تھے' ڈاکٹر بھی تھے' سوداگر بھی تھے' پروفیسر بھی تھے' پنجابی بھی تھے' بنگالی بھی تھے . شری مہیشور پرساد نرائن سنگھ نے اِس سبھا کی صدارت کی . آپ سوشلسٹ پارٹی کے ممبر

अच्छा होगा कि यह किसी सूरत मरते नहीं हैं—इन्हें अच्छा जन्म चाहिये, स्वर्ग चाहिये, आदर्श चाहिये. केवल इसी की इन्हें ज़रूरत है. जब तक इन की यह इच्छा इस जीती जागती दुनिया में ही पूरी नहीं होती यह इसी तरह घिसटते जाएंगे, मरते जाएंगे, नहाते जाएंगे, पूजते जाएंगे—और हम पढ़े लिखे अपने ज़ोम में इनका मज़ाक उड़ाते रहेंगे, इन्हें सीख देते रहेंगे, इनका सुधार करते रहेंगे, इन्हें धर्म समझाते रहेंगे, इन्हें स्वर्ग का रास्ता दिखाते रहेंगे.

एक आए, दो आए, तीन आए, एक तांता बंध गया. डिब्बा भर गया. डिब्बे में फिर सांस रुकने लगी. कन्धे से कन्धा छिलने लगा. अमीर गरीब, छोटे बड़े, मर्द औरत सबका भेद मिट गया—सब इनसान थे, सब मुसाफिर थे—कितना आनन्द था इस तकलीफ़ में!—एक दूसरे के लिये, अपने लिये, सब के लिये!

छपरा—छपरा के स्टेशन पर ट्रेन एक धचके के साथ रुकी और कान में गूंज सुनाई पड़ी—शान्ति ज़िन्दाबाद—शान्ति ज़िन्दाबाद. और फिर क़रीब से एक ज़ोर का नारा सुनाई दिया—रोटी चाहिये बम नहीं, शान्ति चाहिये जंग नहीं. ज़ोर की आवाज़ें गूंज रही थीं. पहले सारे नारे बिखरे बिखरे मालूम होते थे, जैसे अलग अलग, दूर दूर! फिर वह क़रीब होते गए, एक दूसरे में मिलते गए, एक हो गए, इकट्ठा हो गए, शान्ति की गूंज ऊंची हो गई, ज़ोर बढ़ गया. दिमाग़ों में एक थरथरी पैदा होने लगी, दिलों में जोश पैदा होने लगा, ढारस बंधने लगी.

नीले नीले झन्डों पर सुफ़ेद कबूतर फुदक रहे थे. कभी कबूतर पैग़ाम ले जाता था, उस के पर काटे जाते थे, वह कोठों की मुंडेर पर बैठ कर संदेश पहुँचाता था—आज वह आकाश में उड़ रहा है. हर एक उसे चाहता है, हर एक का सन्देश एक है—शान्ति—और वह उसे दुनिया के कोने कोने में पहुंचा रहा है.

छपरा ज़िला शान्ति सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिये पंडित सुन्दर लाल यहां आए थे. यह फरेरे उन्हीं के चारों तरफ़ उड़ रहे थे, यह नारे उन्हीं का स्वागत कर रहे थे. शान्ति शान्ति का स्वागत कर रही थी और थोड़ी देर के लिये ही सही लड़ाई, दंगे, फ़साद के भूत उस जगह से भाग गए थे—दूर बहुत दूर—इन शान्ति के नारों की पहुँच से बहुत दूर. लेकिन कब तक भागेंगे. उनकी आत्मा भी शान्ति शान्ति चिल्ला उठेगी और खुद उन्हें कहना पड़ेगा—

इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से

8 अगस्त को टाउन हाल छपरा में शान्ति सम्मेलन हुआ. सब साथ बैठे थे—फिर दीवार टूट गई थी. धर्म की नहीं, समाज की नहीं, केवल राजनीति की. कांगरेसी, सोशलिस्ट, प्रजा पार्टी के मेम्बर, कम्युनिस्ट और सब

اچھا ہوگا کہ یہ کسی صورت مرتے نہیں ہیں—انہیں اچھا جنم چاہئے، سورگ چاہئے، آدرش چاہئے. کیول اسی کی انہیں ضرورت ہے. جب تک اِن کی یہ اچھا اِس جیتی جاگتی دنیا میں ہی پوری نہیں ہوتی یہ اسی طرح گھسٹتے جائیں گے، مرتے جائیں گے، نہاتے جائیں گے، پوجتے جائیں گے—اور ہم پڑھے لکھے اپنے زعم میں ان کا مذاق اُڑاتے رہیں گے، اِنہیں سیکھ دیتے رہیں گے، اِن کا سدھار کرتے رہیں گے، انہیں دھرم سمجھاتے رہیں گے، انہیں سورگ کا راستہ دکھاتے رہیں گے.

ایک آئے، دو آئے، تین آئے، ایک تانتا بندھ گیا. ڈبہ بھر گیا. ڈبے میں پھر سانس رکنے لگی. کندھے سے کندھا چھلنے لگا. امیر غریب، چھوٹے بڑے، مرد عورت سب کا بھید مٹ گیا—سب انسان تھے، سب مسافر تھے—کتنا آنند تھا اِس تکلیف میں!—ایک دوسرے کے لئے، اپنے لئے، سب کے لئے!

چھپرا—چھپرا کے اسٹیشن پر ٹرین ایک دھچکے کے ساتھ رکی اور کان میں گونج سنائی پڑی—شانتی زندہ باد—شانتی زندہ باد. اور پھر قریب سے ایک زور کا نعرہ سنائی دیا—روٹی چاہئے بم نہیں، شانتی چاہئے جنگ نہیں. زور کی آوازیں گونج رہی تھیں. پہلے سارے نعرے بکھرے بکھرے معلوم ہوتے تھے، جیسے الگ الگ، دور دور! پھر وہ قریب ہوتے گئے، ایک دوسرے میں ملتے گئے، ایک ہوگئے، اکٹھا ہوگئے، شانتی کی گونج اونچی ہوگئی، زور بڑھ گیا. دماغوں میں ایک تھرتھری پیدا ہونے لگی، دلوں میں جوش پیدا ہونے لگا، ڈھارس بندھنے لگی.

نیلے نیلے جھنڈوں پر سفید کبوتر پھدک رہے تھے. کبھی کبوتر پیغام لے جاتا تھا، اُس کے پر کاٹے جاتے تھے، وہ کوٹھوں کی منڈیر پر بیٹھ کر سندیش پہونچاتا تھا.—آج وہ آکاش میں اُڑ رہا ہے. ہر ایک اُسے چاہتا ہے، ہر ایک کا سندیش ایک ہے—شانتی—اور وہ اُسے دنیا کے کونے کونے میں پہونچا رہا ہے.

چھپرا ضلع شانتی سمیلن کا اُدگھاٹن کرنے کے لئے پنڈت سندر لال یہاں آئے تھے. یہ پھریرے انہیں کے چاروں طرف اُڑ رہے تھے، یہ نعرے اُنہیں کا سواگت کر رہے تھے. شانتی شانتی کا سواگت کر رہی تھی اور تھوڑی دیر کے لئے ہی سہی لڑائی، دنگے، فساد کے بھوت اُس جگہ سے بھاگ گئے تھے—دور بہت دور—اِن شانتی کے نعروں کی پہونچ سے بہت دور. لیکن کب تک بھاگیں گے. اُن کی آتما بھی شانتی شانتی چلا اُٹھے گی اور خود اُنہیں کہنا پڑے گا—

اِس گھر کو آگ لگ گئی گھر کے چراغ سے

8 اگست کو ٹاؤن ہال چھپرا میں شانتی سمیلن ہوا. سب ساتھ بیٹھے تھے—پھر دیوار ٹوٹ گئی تھی. دھرم کی نہیں، سماج کی نہیں، کیول راج نیت کی. کانگریسی، سوشلسٹ، پرجا پارٹی کے ممبر، کمیونسٹ اور سب

प्रवासी की डायरी

डिब्बों में एक हलचल पैदा हुई. सब आपस में टकरा गये. डिब्बे के बाहर से आती हुई इंजिन की सीटियां कानों में गूंजी—फिर एक सन्नाटा छा गया. केवल क्षनों के लिये—और फिर वही सीं सीं—ज़ोर ज़ोर से, रुक रुक कर, धीमे धीमे से. कोई मोटा आदमी जैसे दूर से चल कर आया हो और सांस निकाल निकाल कर दम ले रहा हो.

7 अगस्त को सुबह राम बाग़ स्टेशन से गाड़ी चल दी. लेकिन ख़रामा ख़रामा टहलने की नीयत से, मस्ती में, न कोई तेज़ी, न कोई जल्दी. दिन अपना, रात अपनी, सफ़र अपना. एक फ़रलांग पर फिर एक धचका लगा और मालूम हुआ कि गाड़ी रुक गई है. मुसाफ़िर चिल्लाने लगे, कोई इंजिन को कोसने लगा, किसी ने गार्ड पर ग़ुस्सा उतारा. एक बूढ़े आदमी मेरे डिब्बे में बैठे थे उन्होंने शान्त भाव से, हंस कर, कहा—ओ़टी आर है, ओटी आर. अभी क्या देखा है—आगे आगे देखिये होता है क्या.

बनारस तक गाड़ी आराम से चली गई. कोई भीड़ नहीं थी, कोई धक्कम धक्का नहीं था. मुझे शक होने लगा कि हो न हो कोई वज़ीर इस ट्रेन से सफ़र कर रहा है और अधिकारियों ने उसकी सुविधा के लिये टिकट देना ही बन्द कर दिया है. गौतम बुद्ध के पिता ने गौतम के चित्त को ठीक रखने के लिये ऐसा प्रबन्ध कर रखा था कि भयानक सीन—जीवन में रोज़मर्रा के दृश्य—उन्हें न दिखाई पड़ें. हमारे रेलवे अधिकारियों को भी वज़ीरों का बहुत ख़्याल है. कहीं बेचारे वैरागी न हो जाएँ !

बनारस में सारे क़ानून टूट गये. कोई दरजा नहीं रह गया, कोई दीवार नहीं रह गई. ट्रेन ट्रेन थी और उससे सबको सफर करने का अधिकार था. सफ़ेद पोशों के कपड़े ख़राब हो रहे थे और वह चुप थे, किसानों के पसीने से बहुत से लोग नाक चढ़ा रहे थे लेकिन मजबूर थे. नीचे से एक सैलाब आया था और सारे भेद भाव मिटाता सारी गाड़ी पर छा गया था. गंगा अस्नान लोग करने आये थे—ज़िलों, सूबों की सीमाओं को पार करके—बरसों इसका उन्होंने इन्तज़ार किया था, लाखों सपने उन्होंने देखे थे. ज़िन्दगी में न वह सपने सच होने वाले हैं और न इन बेचारों को निराशा होने वाली है. आशा की एक मद्धिम किरन के सहारे यह जीये जा रहे हैं—यह कहना ज़ियादा

پرواسی کی ڈائری

ڈبوں میں ایک ہلچل پیدا ہوئی ۔ سب آپس میں ٹکرا گئے ۔ ڈبے کے باہر سے آتی ہوئی انجن کی سیٹیاں کانوں میں گونجیں—پھر ایک سناٹا چھا گیا ۔ کیول چھنوں کے لئے—اور پھر وہی سیں سیں—زور زور سے' رک رک کر' دھیمے دھیمے سے ۔ کوئی موٹا آدمی جیسے دور سے چل کر آیا ہو اور سانس نکال نکال کر دم لے رہا ہو.

7 اگست کو صبح رام باغ اسٹیشن سے گاڑی چل دی. لیکن خراما خراما ٹہلنے کی نیت سے' مستی میں' نہ کوئی تیزی' نہ کوئی جلدی ۔ دن اپنا' رات اپنی' سفر اپنا ۔ ایک فرلانگ پر پھر ایک دھچکا لگا اور معلوم ہوا کہ گاڑی رک گئی ہے ۔ مسافر چلانے لگے' کوئی انجن کو کوسنے لگا' کسی نے گارڈ پر غصہ اُتارا ۔ ایک بوڑھے آدمی میرے ڈبے میں بیٹھے تھے اُنہوں نے شانت بھاؤ سے' ہنس کر' کہا—او ٹی آر ہے' او ٹی آر ۔ ابھی کیا دیکھا ہے—آگے آگے دیکھئے ہوتا ہے کیا ۔

بنارس تک گاڑی آرام سے چلی گئی ۔ کوئی بھیڑ نہیں تھی' کوئی دھکم دھکا نہیں تھا. مجھے شک ہونے لگا کہ ہو نہ ہو کوئی وزیر اس ٹرین سے سفر کر رہا ہے اور ادھیکاریوں نے اُس کی سودھا کے لئے ٹکٹ دینا ہی بند کر دیا ہے ۔ گوتم بدھ کے پتا نے گوتم کے چت کو ٹھیک رکھنے کے لئے ایسا پربندھ کر رکھا تھا کہ بھیانک سین—جیون میں روز مرہ کے درشیہ—اُنہیں نہ دکھائی پڑیں ۔ ہمارے ریلوے ادھیکاریوں کو بھی وزیروں کا بہت خیال ہے ۔ کہیں بیچارے ویراگی نہ ہو جائیں !

بنارس میں سارے قانون ٹوٹ گئے ۔ کوئی درجہ نہیں رہ گیا' کوئی دیوار نہیں رہ گئی ۔ ٹرین ٹرین تھی اور اُس سے سب کو سفر کرنے کا ادھیکار تھا ۔ سفید پوشوں کے کپڑے خراب ہو رہے تھے اور وہ چپ تھے' کسانوں کے پسینے سے بہت سے لوگ ناک چڑھا رہے تھے لیکن مجبور تھے ۔ نیچے سے ایک سیلاب آیا تھا اور سارے بھید بھاؤ مٹاتا ساری گاڑی پر چھا گیا تھا ۔ گنگا اشنان لوگ کرنے آئے تھے—ضلعوں' صوبوں کی سیماؤں کو پار کرکے—برسوں اِس کا اُنہوں نے انتظار کیا تھا' لاکھوں سپنے اُنہوں نے دیکھے تھے ۔ زندگی میں نہ وہ سپنے سچ ہونے والے ہیں اور نہ ان بیچاروں کو نراشا ہونے والی ہے ۔ آشا کی ایک مدھم کرن کے سہارے یہ جئے جا رہے ہیں—یہ کہنا زیادہ

अमरीकी फ़ौजी हाकिम और इंजीनियरों का आना जाना ज़ोरों पर है. एटम बम से बचने के लिये ज़मीन के नीचे हवाई अड्डे और हथियार और दूसरे जंगी सामानों को जमा करने के लिये ख़ास तरह के तहख़ाने बनाने की स्कीम पर भी अमरीकन सोच विचार कर रहे हैं. अमरीकी जंगी माहिरों का विचार है कि लड़ाई छिड़ जाने की सूरत में योरप के हवाई अड्डों पर ज़ियादा भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि वह आसानी से रूसी हवाई जहाज़ों का निशाना बन सकते हैं. इसलिये रूसी एलाक़ों से दूर टियुनीशिया और मराको को अमरीका ने अपना फ़ौजी अड्डा बनाया है. लोकशाही का राग अलापने वाला यह मुल्क किसी भी क़ीमत पर टियुनीशिया को साम्राजी पंजे से छूटने की इजाज़त नहीं दे सकता.

जिस तरह एशिया के दूसरे मुल्क साम्राजी ताक़तों से तेज़ी से छुटकारा हासिल कर रहे हैं उसी तरह वह वक़्त भी जल्द आएगा जब साम्राज के क़िले अफ़्रीक़ा में भी गिरना शुरू हो जायेंगे और टियुनीशिया, मराको और अलजीरिया वग़ैरा के रहने वाले अपने मुल्क में आज़ादी से सांस ले सकेंगे.

امریکی فوجی حاکم اور انجینیروں کا آنا جانا زوروں پر ہے. ایٹم بم سے بچنے کے لئے زمین کے نیچے ہوائی اڈے اور ہتھیار اور دوسرے جنگی سامانوں کو جمع کرنے کے لئے خاص طرح کے تہ خانے بنانے کی اسکیم پر بھی امریکن سوچ بچار کر رہے ہیں. امریکی جنگی ماہروں کا وچار ہے کہ لڑائی چھڑ جانے کی صورت میں یورپ کے ہوائی اڈوں پر زیادہ بھروسہ نہیں کیا جا سکتا کیونکہ وہ آسانی سے روسی ہوائی جہازوں کا نشانہ بن سکتے ہیں. اس لئے روسی علاقوں سے دور ٹیونیشیا اور مراکو کو امریکہ نے اپنا فوجی اڈا بنایا ہے. لوک شاہی کا راگ الاپنے والا یہ ملک کسی بھی قیمت پر ٹیونیشیا کو سامراجی پنجے سے چھوٹنے کی اجازت نہیں دے سکتا.

جس طرح ایشیا کے دوسرے ملک سامراجی طاقتوں سے تیزی سے چھٹکارا حاصل کر رہے ہیں اسی طرح وہ وقت بھی جلد آئے گا جب سامراج کے قلعے افریقہ میں بھی گرنا شروع ہو جائیں گے اور ٹیونیشیا، مراکو اور الجیریا وغیرہ کے رہنے والے اپنے ملک میں آزادی سے سانس لے سکیں گے.

"…………मैं तो रामराज यानी दुनिया में ईश्वर के राज का सपना देखता हूँ. वही आज़ादी है. स्वर्ग में यह राज कैसा होगा, सो मैं नहीं जानता. बहुत दूर की चीज़ जानने की मुझे इच्छा भी नहीं है. अगर वर्तमान (हाल) दिल को काफ़ी अच्छा लगता हो, तो भविश्य (मुस्तक़बिल) उससे बहुत अलग नहीं हो सकता.

"इसलिये राज नैतिक, आर्थिक और नैतिक (अख़लाक़ी) तीनों तरह की आज़ादी ही सच्ची आज़ादी है……"

—महात्मागांधी

"…………میں تو رام راج یعنی دنیا میں ایشور کے راج کا سپنا دیکھتا ہوں. وہی آزادی ہے. سورگ میں یہ راج کیسا ہوگا، سو میں نہیں جانتا. بہت دور کی چیز جاننے کی مجھے اچھا بھی نہیں ہے. اگر ورتمان (حال) دل کو کافی اچھا لگتا ہو، تو بھوشیہ (مستقبل) اس سے بہت الگ نہیں ہو سکتا.

"اس لئے راج نیتک، آرتھک اور نیتک (اخلاقی) تینوں طرح کی آزادی ہی سچی آزادی ہے……"

—مہاتما گاندھی

यह लोग पूरी आज़ादी की मांग करते हैं. एक तरफ़ राष्ट्री नेताओं की गिरफ़्तारी शुरू हुई और दूसरी तरफ़ फ्रान्स ने दुनिया को धोका देने के लिये अपने कुछ देसी हमदर्दों को वज़ीर बना दिया और कुछ क़ानूनी अधिकार देने का एलान कर दिया. बहुत से एलानों की तरह यह एलान भी अभी तक पूरा नहीं हुआ.

टियुनीशिया की हालत दिन पर दिन ख़राब होती जा रही है. जनता अपना पैदायशी हक़ हासिल करने के लिये कोशिश कर रही है. मुल्क के कोने कोने में हड़तालें हो रही हैं. पुलिस उन्हें बेदर्दी से कुचलने की कोशिश करती है. औरतों और बच्चों तक पर कभी लाठी चार्ज किया जाता है और कभी गोलियां बरसाई जाती हैं.

टियुनीशिया के नाम के हाकिम बे को उनके महल में क़रीब क़रीब बिल्कुल नज़र बंद कर दिया गया है. इनके हर क़दम पर कड़ी निगरानी रखी जाती है. ताज़ा ख़बरें आई हैं कि उन्हें ज़हर देने की भी कोशिश की गई थी. इत्तफ़ाक़ से साज़िश का भेद खुल गया. बे का नाम सैयदुल अमीन है. इनकी उम्र इस वक़्त 70 साल है. टियुनिस से कुछ दूरी पर कारथेज नामी जगह पर इनका महल है. उस सड़क पर जो बीच अफ़्रीक़ा को स्वेज़ से मिलाती है एक ख़ूबसूरत बाग़ के अन्दर यह महल बना है. बे का ख़ास काम है अपने बड़े कमरे की अनगिनत घड़ियों की देख भाल करना और महल के प्रोजेक्टर से सनीमा देखना. इसके अलावा इन्हें दवाओं से भी काफ़ी दिलचस्पी है. कहने के लिये हाकिम बे हैं और इनके मातहत एक मंत्री मंडल भी काम करता है. इसमें आधे अरब वज़ीर भी होते हैं. लेकिन असलियत में फ्रान्स का रेज़ीडेन्ट जनरल ही जो चाहता है करता है, उसकी मर्ज़ी के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता. इन सब पाबन्दियों के होते हुए भी देश की आज़ादी के आन्दोलन में उनकी हमदर्दी सराहना के क़ाबिल है. वह छुप छुपा कर फ्रान्सीसियों से अपने मुल्क को आज़ाद कराने की कोशिश करते रहते हैं.

राष्ट्री आन्दोलन को भंग करने के लिये फ्रान्सीसियों ने बहुत से दांव चले हैं. कभी अन्दरूनी मामलों में ज़ियादा से ज़ियादा अधिकार देने का वादा किया, कभी आपस में लड़ाने की कोशिश की और कभी फ़ौजी ताक़त इस्तेमाल की. हिन्द चीन में मुंह की खाने पर भी फ्रान्स की साम्राजी पालीसी में कोई तबदीली नज़र नहीं आ रही. वह अपने चंगुल को और मज़बूत करने की कोशिश में है. अमरीका की मदद भी उसे इस काम में हासिल हो गई है.

तीसरी बड़ी जंग की तैयारी के सिलसिले में अमरीका ने टियुनीशिया और मराको में हवाई अड्डे क़ायम करने शुरू कर दिये हैं. सड़कें और रेलवे लाइनें बनाई जा रही हैं.

یہ لوگ پوری آزادی کی مانگ کرتے ہیں ۔ ایک طرف راشٹری نیتاؤں کی گرفتاری شروع ہوئی اور دوسری طرف فرانس نے دنیا کو دھوکا دینے کے لئے اپنے کچھ دیسی ہمدردوں کو وزیر بنا دیا اور کچھ قانونی ادھیکار دینے کا اعلان کر دیا ۔ بہت سے اعلانوں کی طرح یہ اعلان بھی ابھی تک پورا نہیں ہوا ۔

ٹیونیشیا کی حالت دن پر دن خراب ہوتی جا رہی ہے ۔ جنتا اپنا پیدائشی حق حاصل کرنے کے لئے کوشش کر رہی ہے ۔ ملک کے کونے کونے میں ہڑتالیں ہو رہی ہیں ۔ پولیس انہیں بےدردی سے کچلنے کی کوشش کرتی ہے ۔ عورتوں اور بچوں تک پر کبھی لاٹھی چارج کیا جاتا ہے اور کبھی گولیاں برسائی جاتی ہیں ۔

ٹیونیشیا کے نام کے حاکم بے کو اُن کے محل میں قریب قریب بالکل نظر بند کر دیا گیا ہے ۔ اِن کے ہر قدم پر کڑی نگرانی رکھی جاتی ہے ۔ تازہ خبریں آئی ہیں کہ انہیں زہر دینے کی بھی کوشش کی گئی تھی ۔ اتفاق سے سازش کا بھید کھل گیا ۔ بے کا نام سیدالامین ہے ۔ ان کی عمر اِسوقت 70 سال ہے ۔ ٹیونس سے کچھ دوری پر کارتھیج نامی جگہ پر اِن کا محل ہے ۔ اس سڑک پر جو بیچ افریقہ کو سوئز سے ملاتی ہے ایک خوبصورت باغ کے اندر یہ محل بنا ہے ۔ بے کا خاص کام ہے اپنے بڑے کمرے کی انگنت گھڑیوں کی دیکھ بھال کرنا اور محل کے پروجیکٹر سے سنیما دیکھنا ۔ اِسکے علاوہ اِنہیں دواؤں سے بھی کافی دلچسپی ہے ۔ کہنے کے لئے حاکم بے ہیں اور اِن کے ماتحت ایک منتری منڈل بھی کام کرتا ہے ۔ اِسمیں آدھے عرب وزیر بھی ہوتے ہیں ۔ لیکن اصلیت میں فرانس کا ریزیڈنٹ جنرل ہی جو چاہتا ہے کرتا ہے، اُس کی مرضی کے بنا پتا بھی نہیں ہل سکتا ۔ اِن سب پابندیوں کے ہوتے ہوئے بھی دیش کی آزادی کے آندولن میں اُن کی ہمدردی سراہنا کے قابل ہے ۔ وہ چھپ چھپا کر فرانسیسیوں سے اپنے ملک کو آزاد کرانے کی کوشش کرتے رہتے ہیں ۔

راشٹری آندولن کو بھنگ کرنے کے لئے فرانسیسیوں نے بہت سے داؤں چلے ہیں : کبھی اندرونی معاملوں میں زیادہ سے زیادہ ادھیکار دینے کا وعدہ کیا، کبھی آپس میں لڑانے کی کوشش کی اور کبھی فوجی طاقت استعمال کی ۔ ہند چین میں منھ کی کھانے پر بھی فرانس کی سامراجی پالیسی میں کوئی تبدیلی نظر نہیں آرہی ۔ وہ اپنے چنگل کو اور مضبوط کرنے کی کوشش میں ہے ۔ امریکہ کی مدد بھی اُسے اِس کام میں حاصل ہوگئی ہے ۔

تیسری بڑی جنگ کی تیاری کے سلسلے میں امریکہ نے ٹیونیشیا اور مراکو میں ہوائی اڈے قائم کرنے شروع کر دیئے ہیں ۔ سڑکیں اور ریلوے لائنیں بنائی جا رہی ہیں ۔

पाते कि अपने बाल बच्चों को ज़िन्दा रख सकें और ख़ुद की मामूली ज़रूरतें पूरा कर सकें. साल के बाक़ी महीनों में इनकी जो दुर्गत होती है उसका नक़्शा खींचना ताक़त से बाहर है. मामूली और छोटी मोटी नौकरियों के अलावा सारी नौकरियां फ़्रान्सीसियों को दी जाती हैं. ऊंची तालीम हासिल किये हुए अरबों पर कम पढ़े फ़्रानसीसियों को हर जगह और हर नौकरी में तरजीह मिलती है. देश के इन्तज़ाम से सम्बन्ध रखने वाली नौकरियों के दरवाज़े तो अरबों पर बिलकुल बन्द हैं. फ़्रान्सीसी माल की खपत के लिये देसी उद्योग धन्धों का गला घोंट दिया गया है. नतीजा यह है कि सैकड़ों देसी कारीगर भीक मांगने पर मजबूर हो गए हैं.

ग़रीबी के कारन हर साल हज़ारों लोग बीमारियों के शिकार हो जाते हैं. विदेसी हुकूमत इन बीमारियों की रोक थाम के लिये कोई असरदार क़दम नहीं उठाती. मुल्क भर के सरकारी अस्पताल उंगलियों पर गिने जा सकते हैं. सब के सब बड़े बड़े शहरों में हैं और वहां भी देसी लोगों के साथ लापरवाही बरती जाती है. देहातों में तो सिरे से कोई दवा इलाज का इन्तज़ाम है ही नहीं. मरने वालों की तादाद बराबर बढ़ती जा रही है. छोटे बच्चों की मौत ज़ियादा होती है.

टियुनीशिया के अरबों की आबादी में लगभग 15 फ़ीसदी लोग पढ़े लिखे हैं और बाक़ी लोग बिलकुल जाहिल हैं.

जनता समय समय पर जलसे और जलूसों की शकल में इन ज़ियादतियों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाती रही है. फ़्रान्स ने इन शान्ति पूर्न प्रदर्शनों को भी सख़्ती से दबाया है. प्रदर्शन करने वालों पर बेजा सख़्ती ने कभी कभी हथियार बंद बग़ावत की भी शकल ले ली है.

टियुनीशिया के आज़ादी आन्दोलन को चलाने वाली दो ख़ास पारटियां हैं. एक न्यू दस्तूर पारटी और दूसरी कम्यूनिस्ट पारटी. न्यू दस्तूर पारटी के सदर हबीब बूरगीबा हैं. उन्होंने फ़्रान्स में तालीम पाई है और एक फ़्रान्सीसी औरत से शादी की है. यह एक अच्छे वकील हैं. इस समय इनकी उम्र 50 साल है. हाल में इन्होंने बहुत से बाहरी मुल्कों का दौरा किया है. दूसरे मुल्कों और ख़ास कर मिस्र के राष्ट्री आन्दोलनों का इन पर बहुत असर पड़ा है. किसी तरह से इन्होंने टियुनीशिया के 'बे' की हमदर्दी भी हासिल कर ली है. न्यू दस्तूर पारटी सिर्फ़ अन्दरूनी मामलों में ही आज़ादी मांगती है. फिर भी साम्राजियों ने इस पारटी के सब नेताओं, बड़े वज़ीर और दूसरे देसी वज़ीरों को जेल में डाल दिया है. कम्यूनिस्ट पारटी के लीडरों को हाल का आन्दोलन चलते ही सन '51 में गिरफ़्तार कर लिया गया.

پاتے کہ اپنے بال بچوں کو زندہ رکھ سکیں اور خود کی معمولی ضرورتیں پورا کرسکیں . سال کے باقی مہینوں میں اِن کی جو درگت ہوتی ہے اُس کا نقشہ کھینچنا طاقت سے باہر ہے . معمولی اور چھوٹی موٹی نوکریوں کے علاوہ ساری نوکریاں فرانسیسیوں کو دی جاتی ہیں . اونچی تعلیم حاصل کئے ہوئے عربوں پر کم پڑھے فرانسیسیوں کو ہر جگہ اور ہر نوکری میں ترجیح ملتی ہے . دیش کے انتظام سے سمبندھ رکھنے والی نوکریوں کے دروازے تو عربوں پر بالکل بند ہیں . فرانسیسی مال کی کھپت کے لئے دیسی اُدیوگ دھندوں کا گلا گھونٹ دیا گیا ہے . نتیجہ یہ ہے کہ سیکڑوں دیسی کاریگر بھیک مانگنے پر مجبور ہوگئے ہیں .

غریبی کے کارن ہر سال ہزاروں لوگ بیماریوں کے شکار ہو جاتے ہیں . بدیسی حکومت اِن بیماریوں کی روک تھام کے لئے کوئی اثر دار قدم نہیں اُٹھاتی . ملک بھر کے سرکاری اسپتال انگلیوں پر گنے جا سکتے ہیں . سب کے سب بڑے بڑے شہروں میں ہیں اور وہاں بھی دیسی لوگوں کے ساتھ لاپرواہی برتی جاتی ہے . دیہاتوں میں تو سرے سے کوئی دوا علاج کا انتظام ہے ہی نہیں . مرنے والوں کی تعداد برابر بڑھتی جا رہی ہے . چھوٹے بچوں کی موت زیادہ ہوتی ہے .

ٹیونیشیا کے عربوں کی آبادی میں لگ بھگ 15 فیصدی لوگ پڑھے لکھے ہیں اور باقی لوگ بالکل جاہل ہیں .

جنتا سمے سمے پر جلسے اور جلوسوں کی شکل میں اِن زیادتیوں کے خلاف آواز اُٹھاتی رہی ہے . فرانس نے اِن شانتی پورن پردرشنوں کو بھی سختی سے دبایا ہے . پردرشن کرنےوالوں پر بےجا سختی نے کبھی کبھی ہتھیار بند بغاوت کی بھی شکل لے لی ہے .

ٹیونیشیا کے آزادی آندولن کو چلانے والی دو خاص پارٹیاں ہیں. ایک نیو دستور پارٹی اور دوسری کمیونسٹ پارٹی. نیو دستور پارٹی کے صدر حبیب بورگیبا ہیں . اُنہوں نے فرانس میں تعلیم پائی ہے اور ایک فرانسیسی عورت سے شادی کی ہے . یہ ایک اچھے وکیل ہیں . اِس سمے اِن کی عمر 50 سال ہے . حال میں اِنہوں نے بہت سے باہری ملکوں کا دورہ کیا ہے . دوسرے ملکوں اور خاصکر مصر کے راشٹری آندولنوں کا اِن پر بہت اثر پڑا ہے . کسی طرح سے اِنہوں نے ٹیونیشیا کے 'بے' کی ہمدردی بھی حاصل کر لی ہے . نیودستور پارٹی صرف اندرونی معاملوں میں ہی آزادی مانگتی ہے. پھر بھی سامراجیوں نے اِس پارٹی کے سب نیتاؤں، بڑے وزیر اور دوسرے دیسی وزیروں کو جیل میں ڈال دیا ہے. کمیونسٹ پارٹی کے لیڈروں کو حال کا آندولن چلتے ہی سن 51 میں گرفتار کر لیا گیا.

टियुनीशिया

!(ज़मीर हसन काज़मी)

जनता के जोशीले प्रदर्शनों, पिसे और मजबूर लोगों के उभार और फ़्रान्सीसी गोलियों की सनसनाहट से दुनिया की निगाहें यकायक अफ़्रीक़ा के एक छोटे से कोने पर जम गई हैं. यू. एन. ओ. का चार्टर वहां बिखर रहा है. कुछ साम्राजी ताक़तें एक देश को ग़ुलाम बनाये हुये हैं. उन्हें यह भी गवारा नहीं है कि बेबसी की जंजीर में जकड़े इन मज़लूमों की फ़रियाद भी कोई दुनिया की सब से बड़ी इन्सानी अदालत के सामने पेश कर सके.

इस खुली ना-इनसाफ़ी और अत्याचार का शिकार टियुनीशिया है. उन्नीसवीं सदी के बीच में काफ़ी कोशिशें करने के बाद टियुनीशिया को तुर्कों के चंगुल से छुटकारा मिला. पर 1881 में उसे दूसरी मुसीबत ने आ घेरा. मुल्क की माली बद हाली और आपसी फूट का फ़ायदा उठा कर फ़्रान्स ने हमला कर दिया. टियुनीशिया हार गया और उसके हाकिम 'बे' को एक राज़ीनामे पर दस्तख़त करना पड़ा. इस राज़ीनामे से टियुनीशिया के अन्दरूनी और बाहरी मामलों में फ़्रान्स को पूरा दख़ल देने का अधिकार मिल गया. तभी से इस छोटे से ग़रीब मुल्क की गुलामी का एक नया खंड शुरू होता है.

टियुनीशिया उत्तर अफ़्रीक़ा का एक छोटा सा हिस्सा है. इस के उत्तर में रूम सागर, दक्खिन पच्छिम में अलजीरिया और पूरब में लीबिया है. टियुनिस यहां की राजधानी है. यह शहर रूम सागर का एक ख़ास बंदरगाह भी है. दूसरा शहर और बंदरगाह बाईज़रता है जो फ़्रांस के समुन्द्री बेड़े का दूसरा बड़ा केन्द्र है. टियुनीशिया की कुल आबादी 35 लाख है जिनमें लगभग 31 लाख अरब और बाक़ी यूरोपियन हैं. लगभग कुल यूरोपियन आबादी फ़्रान्सीसी और इटालियन लोगों की है.

देश के व्योपार, कारख़ानों, फ़ैक्ट्रियों और सरकारी ओहदों पर फ़्रानसीसियों का क़रीब क़रीब पूरा क़ब्ज़ा है. कुल पछत्तर हज़ार एकड़ ज़मीन खेती के क़ाबिल है. इसका आधे से ज़ियादा हिस्सा फ़्रानसीसियों के क़ब्ज़े में है. यह ज़मीन जायेज़ और ना जायेज़ जिस तरह से भी मुमकिन हो सका असल मालिकों से छीनी गई है. अधाधुन्द बेदख़ली ने हज़ारों किसान ख़ान्दानों को भूकों मरने पर मजबूर कर दिया है. अरब मज़दूरों की हालत रहम के क़ाबिल है. साल भर में तीन या चार महीने से ज़ियादा काम उन्हें नहीं मिलता. इस बीच में भी वह इतनी मज़दूरी नहीं

تیونیشیا

(ضمیر حسن کاظمی)

جنتا کے جوشیلے پردرشنوں، پسے اور مجبور لوگوں کے ابھار اور فرانسیسی گولیوں کی سنسناہٹ سے دنیا کی نگاہیں یکایک افریقہ کے ایک چھوٹے سے کونے پر جم گئیں ہیں. یو. این. او. کا چارٹر وہاں بکھر رہا ہے. کچھ سامراجی طاقتیں ایک دیش کو غلام بنائے ہوئے ہیں. انہیں یہ بھی گوارا نہیں ہے کہ بےبسی کی زنجیر میں جکڑے اِن مظلوموں کی فریاد بھی کوئی دنیا کی سب سے بڑی انسانی عدالت کے سامنے پیش کرسکے.

اِس کھلی ناانصافی اور اتیاچار کا شکار تیونیشیا ہے. انیسویں صدی کے بیچ میں کافی کوششیں کرنے کے بعد تیونیشیا کو ترکوں کے چنگل سے چھٹکارا ملا. پر 1881 میں اُسے دوسری مصیبت نے آگھیرا. ملک کی مالی بدحالی اور آپسی پھوٹ کا فائدہ اٹھا کر فرانس نے حملہ کردیا. تیونیشیا ہار گیا اور اُس کے حاکم 'بے' کو ایک ...اضی نامے پر دستخط کرنا پڑا. اِس راضی نامے سے تیونیشیا اندرونی اور باہری معاملوں میں فرانس کو پورا دخل ...نے کا ادھیکار مل گیا. تبھی سے اِس چھوٹے سے غریب ...لک کی غلامی کا ایک نیا کھنڈ شروع ہوتا ہے.

تیونیشیا اُتر افریقہ کا ایک چھوٹا سا حصہ ہے. اِس ... اُتر میں روم ساگر، دکھن پچھم میں الجیریا اور پورب ...یں لیبیا ہے. تیونس یہاں کی راجدھانی ہے. یہ شہر ...م ساگر کا ایک خاص بندرگاہ بھی ہے. دوسرا شہر اور ...ندرگاہ بائیزرطہ ہے جو فرانس کے سمندری بیڑے کا ...وسرا بڑا کیندر ہے. تیونیشیا کی کل آبادی 35 لاکھ ہے ...ن میں لگ بھگ 31 لاکھ عرب اور باقی یورپین ہیں. ...ل بھگ کل یورپین آبادی فرانسیسی اور اٹالین ...گوں کی ہے.

دیش کے بیوپار، کارخانوں، فیکٹریوں اور سرکاری ...ہدوں پر فرانسیسیوں کا قریب قریب پورا قبضہ ہے. ... پچھتر ہزار ایکڑ زمین کھیتی کے قابل ہے. اِس کا ...دھے سے زیادہ حصہ فرانسیسیوں کے قبضے میں ہے. یہ ...مین جائز اور ناجائز جس طرح سے بھی ممکن ہوسکا ...صل مالکوں سے چھینی گئی ہے. اندھا دھند بے دخلی ... ہزاروں کسان خاندانوں کو بھوکوں مرنے پر مجبور کردیا ... عرب مزدوروں کی حالت رحم کے قابل ہے. ...ال بھر میں تین یا چار مہینے سے زیادہ کام انہیں ...یں ملتا. اِس بیچ میں بھی وہ اتنی مزدوری نہیں

इसमें काफ़ी डर है और सरकारी आमदनी के घट जाने का भी ख़तरा है. और हमेशा के लिये लगान मुक़र्रर करने में पैदावार बढ़ती है, किसान खेतों पर ख़ूब मेहनत करते हैं, क्योंकि किसान समझते हैं कि खेत उनका है और आगे जो भी पैदावार होगी उससे उनको ही फ़ायदा पहुंचेगा.

सरकारी ज़ाफ़रान के खेत उन किसानों को मिल जायंगे जिन्होंने सम्वत 2007 बिक्रमी की ख़रीफ़ में उन खेतों पर खेती की थी. शर्त सिर्फ़ यह है:—

(1) चालीस रुपया एकड़ लगान के अलावा किसान दूसरे टैक्स भी अदा करेंगे जो इस समय कुछ वक़्त के लिये लगाए गए हैं.

(2) किसी को भी 32 कनाल से ज़ियादा ज़ाफ़रानी खेत न मिलेगा.

(3) किसी भी किसान की ज़मीन सब मिला कर 160 कनाल या बीस एकड़ से ज़ियादा किसी सूरत में न होने पाएगी.

अगर किसी सूरत में यह शरतें पूरी न हो सकेंगी तो ज़ाफ़रान की सरकारी ज़मीन उन किसानों में भी बांटी जायगी जिन्होंने उस पर सम्वत 2007 में खेती नहीं की थी.

ज़ाफ़रान की बिक्री के लिये आसानियां पैदा की जायेंगी. इस से कई फ़ायदे होंगे. बाज़ार से नक़ली ज़ाफ़रान उड़ जायेगा. क़र्ज़ देने वाले महाजनों और इजारा दारों के चंगुल से ज़ाफ़रान का व्योपार निकल आयेगा और किसान को पूरा फ़ायदा पहुंच सकेगा.

क़र्ज़ के भूत से कुछ दिनों के लिये कश्मीरी किसान को छुटकारा मिल गया है. मौजूदा ज़ाफ़रानी खेती के ठेकेदारी प्रथा को ख़त्म करने से किसान अपनी मेहनत का फल ख़ुद भोगेगा और दूसरे उससे नाजायज़ फ़ायदा न उठा सकेंगे.

फल और मेवों के बाग़ों को छोड़ कर कश्मीर की सारी खेती के ज़मीन बिना किसी ज़मींदार को मोआवज़ा दिये या तो अब तक किसानों में बांट दी गई है और या बांटी जा रही है.

(नेशनल हैराल्ड से)

اس میں کافی ڈر ہے اور سرکاری آمدنی کے گھٹ جانے کا بھی خطرہ ہے . اور ہمیشہ کے لئے لگان مقرر کرنے میں پیداوار بڑھتی ہے' کسان کھیتوں پر خوب محنت کرتے ہیں' کیونکہ کسان سمجھتے ہیں کہ کھیت اُن کا ہے، اور آگے جو بھی پیداوار ہوگی اُس سے اُن کو ہی فائدہ پہونچے گا .

سرکاری زعفران کے کھیت اُن کسانوں کو مل جائیں گے جنہوں نے سمت 2007 بکرمی کی خریف میں اُن کھیتوں پر کھیتی کی تھی . شرط صرف یہ ہے :—

(1) چالیس روپیہ ایکڑ لگان کے علاوہ کسان دوسرے ٹیکس بھی ادا کریں گے جو اِس سمے کچھ وقت کے لئے لگائے گئے ہیں .

(2) کسی کو بھی 32 کنال سے زیادہ زعفرانی کھیت نہ ملے گا .

(3) کسی بھی کسان کی زمین سب ملاکر 160 کنال یا بیس ایکڑ سے زیادہ کسی صورت میں نہ ہونے پائے گی .

اگر کسی صورت میں یہ شرطیں پوری نہ ہو سکیں گی تو زعفران کی سرکاری زمین اُن کسانوں میں بھی بانٹی جائے گی جنہوں نے اُس پر سمت 2007 میں کھیتی نہیں کی تھی .

زعفران کی بکری کے لئے آسانیاں پیدا کی جائیں گی. اِس سے کئی فائدے ہونگے. بازار سے نقلی زعفران اُڑ جائے گا . قرض دینے والے مہاجنوں اور اجارہ داروں کے چنگل سے زعفران کا بیوپار نکل آئے گا اور کسان کو پورا فائدہ پہونچ سکے گا .

قرض کے بھوت سے کچھ دنوں کے لئے کشمیری کسان کو چھٹکارا مل گیا ہے. موجودہ زعفرانی کھیتی کے ٹھیکیداری پرتھا کو ختم کرنے سے کسان اپنی محنت کا پھل خود بھوگے گا اور دوسرے اُس سے ناجائز فائدہ نہ اُٹھا سکیںگے.

پھل اور میووں کے باغوں کو چھوڑ کر کشمیر کی ساری کھیتی کے زمین بنا کسی زمیندار کو معاوضہ دیئے یا تو اب تک کسانوں میں بانٹ دی گئی ہے اور یا بانٹی جا رہی ہے .

(نیشنل ہیرالڈ سے)

जंगल के नीलाम में इस बात ध्यान रखा जाता है कि जंगल में कितनी लकड़ी है और किस क़िस्म की लकड़ी है लेकिन ज़ाफ़रान के खेतों के नीलाम में पैदावार का कोई ख़्याल नहीं किया जाता. ठेकेदार दूसरों से इन खेतों पर ज़ाफ़रान की खेती कराते हैं. इन खेतों के नीलाम से पिछले 31 साल में सरकार को एकावन हज़ार पांच सौ रुपया सालाना की आमदनी हुई. सन'50 में यह आमदनी एकासी हज़ार हो गई और सन '51 में बढ़ कर दो लाख तक पहुँच गई.

पुलवामा तहसील के सोलह गांव और शहर खास तहसील के चार गांव में ही ज़ाफ़रान की खेती का रक़बा फैला हुआ है. कुल चार हज़ार तीन सौ तेईस एकड़ ज़मीन पर ज़ाफ़रान उगाया जाता है. इसमें से तीन हज़ार तीन सौ इकयासी एकड़ अलग अलग लोगों की निजी मिलकियत है और बाक़ी नौ सौ ब्यालीस एकड़ सरकार के क़ब्ज़े में है. पांच सौ छब्बीस एकड़ ज़मीन को छोड़ कर जिस पर मालिक लोग खुद काश्त करते हैं बाक़ी सारा सरकारी और निजी मिलकियत का ज़ाफ़रानी रक़बा ठेकेदारों को नीलाम किया जाता है. पटवारी के काग़ज़ों में सिर्फ़ तीन हज़ार सात सौ नवासी एकड़ ही 'ज़ाफ़रानी' दर्ज है और बाक़ी पांच सौ चौंतीस एकड़ पर ज़ाफ़रान की खेती तो होती है. लेकिन वह सरकारी क़ाग़ज़ों में दर्ज नहीं हैं.

सरकार ने "मोहाल ज़ाफ़रान" (ज़ाफ़रानी खेती की ज़मीन) के बारे में जानकारी हासिल करने के लिये एक कमेटी बनाई थी जिसने ज़ाफ़रान की खेती के मौजूदा तरीक़े में तीन खास बुराईयां बनाई हैं. इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि ठेकेदारी की प्रथा के कारन किसानों की मेहनत का पूरा पूरा फल उन्हें नहीं मिलता और उनकी ग़रीबी बढ़ती जाती है. किसान और ठेकेदारों के बीच एक ग़ुलाम और मालिक का नाता क़ायम होता है और दोनों में ज़बरदस्त तनाओ पैदा होता है. ठेकेदार बेरहमी से खेत के उपजाऊपन से फ़ायदा उठाने की कोशिश करते हैं और उसे जल्द ही कमज़ोर कर देते हैं.

कमेटी की रिपोर्ट ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि मौजूदा प्रथा को किसी तरह क़ायम न रखना चाहिये. माली दृष्टीकोन से यह तरीक़ा बिल्कुल निकम्मा और नुक़सान पहुँचाने वाला है. सरकार को चाहिये कि इन खेतों का भी 'खेत मालगुज़ारी ऐक्ट' के बन्धान के अनुसार लगान मुक़र्रर कर दे. यह लगान किसी खास आधार पर हमेशा के लिये मुक़र्रर कर दिया जाय क्योंकि हर साल लगान मुक़र्रर करने में दिक़्क़तें होती हैं. इसके लिये ईमानदार अफ़सरों की ज़रूरत है जो अच्छे ढंग से इन्तज़ाम कर सकें. किसानों पर अफ़सरों की ज़ुल्म ज़ियादती का

جنگل کے نیلام میں اِس بات کا دھیان رکھا جاتا ہے کہ جنگل میں کتنی لکڑی ہے اور کس قسم کی لکڑی ہے لیکن زعفران کے کھیتوں کے نیلام میں پیداوار کا کوئی خیال نہیں کیا جاتا۔ ٹھیکیدار دوسروں سے اِن کھیتوں پر زعفران کی کھیتی کراتے ہیں۔ ان کھیتوں کے نیلام سے پچھلے 31 سال میں سرکار کو اکیاون ہزار پانچسو روپیہ سالانہ کی آمدنی ہوئی۔ سن '50 میں یہ آمدنی اکیاسی ہزار ہوگئی اور سن '51 میں بڑھکر دو لاکھ تک پہونچ گئی۔

پل واما تحصیل کے سولہ گاؤں اور شہر خاص تحصیل کے چار گاؤں میں ہی زعفران کی کھیتی کا رقبہ پھیلا ہوا ہے۔ کل چار ہزار تین سو تیئیس ایکڑ زمین پر زعفران اُگایا جاتا ہے۔ اِس میں سے تین ہزار تین سو اکیاسی ایکڑ الگ الگ لوگوں کی نجی ملکیت ہے اور باقی نو سو بیالیس ایکڑ سرکار کے قبضے میں ہے۔ پانچسو چھبیس ایکڑ زمین چھوڑ کر جس پر مالک لوگ خود کاشت کرتے ہیں باقی سارا سرکاری اور نجی ملکیت کا زعفرانی رقبہ ٹھیکیداروں کو نیلام کیا جاتا ہے۔ پٹواری کے کاغذوں میں صرف تین ہزار سات سو نواسی ایکڑ ہی 'زعفرانی' درج ہے اور باقی پانچسو چونتیس ایکڑ زعفران کی کھیتی تو ہوتی ہے لیکن وہ سرکاری کاغذوں میں درج نہیں ہیں۔

سرکار نے "محال زعفران" (زعفرانی کھیتی کی زمین) کے بارے میں جانکاری حاصل کرنے کے لئے ایک کمیٹی بنائی تھی جس نے زعفران کی کھیتی کے موجودہ طریقے میں تین خاص برائیاں بتائی ہیں۔ اِس کمیٹی نے اپنی رپورٹ میں کہا ہے کہ ٹھیکیداری کی پرتھا کے کارن کسانوں کی محنت کا پورا پورا پھل انہیں نہیں ملتا اور اُن کی غریبی بڑھتی جاتی ہے۔ کسان اور ٹھیکیداروں کے بیچ ایک غلام اور مالک کا ناتا قائم ہوتا ہے اور دونوں میں زبردست تناؤ پیدا ہوتا ہے۔ ٹھیکیدار بے رحمی سے کھیت کے اُپجاؤ پن سے فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرتے ہیں اور اُسے جلد ہی کمزور کر دیتے ہیں۔

کمیٹی کی رپورٹ نے اِس بات پر زور دیا ہے کہ موجودہ پرتھا کو کسی طرح قائم نہ رکھنا چاہئے۔ مالی درشٹی کون سے یہ طریقہ بالکل نکما اور نقصان پہونچانے والا ہے۔ سرکار کو چاہئے کہ اِن کھیتوں کا بھی 'کھیت مالگذاری ایکٹ' کے بندھان کے انوسار لگان مقرر کر دے۔ یہ لگان کسی خاص آدھار پر ہمیشہ کے لئے مقرر کر دیا جائے کیونکہ ہر سال لگان مقرر کرنے میں دقتیں ہوتی ہیں۔ اِس کے لئے ایماندار افسروں کی ضرورت ہے جو اچھے ڈھنگ سے انتظام کر سکیں۔ کسانوں پر افسروں کی ظلم زیادتی کا

एक लाख साठ हजार एकड़ जागीरी ज़मीन किसानों में बांट दी गई और सरकारी कागज़ों में साठ हजार किसान परिवारों के नाम मिलकियत का हक़ दर्ज कर दिया गया. स्पेशल तहसीलदार मुक़र्रर किये गए जिन्होंने लाखों किसानों की मिलकियत को कागज़ों में दर्ज करने के काम को सोलह महीने में खत्म किया. ज़मीन सुधार अफ़सरों का कहना है कि अगर पुराने इलाक़ेवारी तहसीलदारों के सुपुर्द यह काम किया जाता तो अगर वह इसे किसी सूरत करते भी तो कम से कम दस साल लगा देते. आशा की जाती है कि इस सम्बन्ध का सारा काम अप्रैल सन '53 तक बिलकुल पूरा हो जायगा. इन अफ़सरों की मेहनत और लगन तारीफ़ के क़ाबिल है. कागज़ों में मिलकियत दर्ज होने से पहले ही किसानों को अपने अपने खेत पर पूरा हक़ मिल गया था. इस बीच में किसानों से लगान वसूल करने में माल विभाग के अफ़सरों ने बहुत अक़लमन्दी और प्रेम भाव से काम लिया. लगान का एक आना भी वसूल होने से बाक़ी न रहा. किसान सरकार के अहसान मन्द थे. उन्होंने खुशी खुशी सरकारी अधिकारियों को पूरा सहयोग दिया.

खेत पर किसान की मिलकियत को पूरी तरह सुरक्षित कर देने के बन्धान को ज़मीन सुधार अफ़सर जम्मू और कश्मीर के किसानों के लिये "आज़ादी का चार्टर" कहते हैं.

ज़मींदार किसी हालत और किसी बहाने से भी जल्दी से किसान से खेत नहीं छीन सकता. अगर उसका लगान बक़ाया है तो वह कचहरी में नालिश कर सकता है. डिग्री हो जाने पर किसान का घर, बैल, खेती के अवज़ार कुड़क नहीं किये जा सकते. अगर किसान की कोई चल जायदाद है तो वह कुड़क की जा सकती है. तीन साल के बाद बक़ाया लगान का दावा रद्द हो जाता है. इस सुधार से यह फ़ायदा हुआ कि इस साल 4·7 फ़ीसदी पैदावार बढ़ गई और भविष्य में पैदावार बढ़ने और जनता की आम हालत बहतर होने की ज़बरदस्त उम्मीद है.

तरह तरह के कोआपरेटिव संस्थाओं का संगठन किया गया है जो किसानों में 'अपनी मदद आप करो' के भाव को उभारती हैं. यह संस्थायें किसानों को मामूली सूद पर क़र्ज़ देती हैं और अच्छे बीज और अच्छे खेती के औज़ार मुहैया करती हैं.

ज़ाफ़रान की खेती

कश्मीर में ज़ाफ़रान की खेती का सारा ढांचा व्योपारी निगाह से खड़ा किया गया है. घाटी की सारी ज़मीन जिस पर ज़ाफ़रान की खेती होती है ठेकेदारों को एक साल के लिये या एक फ़सल के लिये नीलाम कर दी जाती है. इस तरह ज़ाफ़रान की खेती कुछ पूंजी पतियों की इजारादारी हो गई है.

ایک لاکھ ساٹھ ہزار ایکڑ جاگیری زمین کسانوں میں بانٹ دی گئی اور سرکاری کاغذوں میں ساٹھ ہزار کسان پریواروں کے نام ملکیت کا حق درج کر دیا گیا ۔ اسپیشل تحصیلدار مقرر کئے گئے جنہوں نے لاکھوں کسانوں کی ملکیت کو کاغذوں میں درج کرنے کے کام کو سولہ مہینے میں ختم کیا ۔ زمین سدھار افسروں کا کہنا ہے کہ اگر پرانے علاقے واری تحصیلداروں کے سپرد یہ کام کیا جاتا تو اگر وہ اسے کسی صورت کرتے بھی تو کم سے کم دس سال لگا دیتے ۔ آشا کی جاتی ہے کہ اس سمبندھ کا سارا کام اپریل سن '53 تک بالکل پورا ہو جائے گا ۔ ان افسروں کی محنت اور لگن تعریف کے قابل ہے ۔ کاغذوں میں ملکیت درج ہونے سے پہلے ہی کسانوں کو اپنے کھیت پر پورا حق مل گیا تھا ۔ اس بیچ میں کسانوں سے لگان وصول کرنے میں مال وبھاگ کے افسروں نے بہت عقلمندی اور پریم بھاؤ سے کام کیا ۔ لگان کا ایک آنہ بھی وصول ہونے سے باقی نہ رہا ۔ کسان سرکار کے احسان مند تھے ۔ انہوں نے خوشی خوشی سرکاری ادھیکاریوں کو پورا سہیوگ دیا ۔

کھیت پر کسان کی ملکیت کو پوری طرح سرکشت کر دینے کے بندھان کو زمین سدھار افسر جموں اور کشمیر کے کسانوں کے لئے ۔ " آزادی کا چارٹر " کہتے ہیں ۔

زمیندار کسی حالت اور کسی بہانے سے بھی جلدی سے کسان سے کھیت نہیں چھین سکتا ۔ اگر اس کا لگان بقایا ہے تو وہ کچہری میں نالش کر سکتا ہے ۔ ڈگری ہو جانے پر کسان کا گھر، بیل، کھیتی کے اوزار کرک نہیں کئے جا سکتے ۔ اگر کسان کی کوئی چل جائداد ہے تو وہ کرک کی جا سکتی ہے ۔ تین سال کے بعد بقایا لگان کا دعوی رد ہو جاتا ہے ۔ اس سدھار سے یہ فائدہ ہوا کہ اس سال 4·7 فیصدی پیداوار بڑھ گئی اور بھوشیہ میں پیداوار بڑھنے اور جنتا کی عام حالت بہتر ہونے کی زبردست امید ہے ۔

طرح طرح کے کوآپریٹو سنستھاؤں کا سنگھٹن کیا گیا ہے جو کسانوں میں 'اپنی مدد آپ کرو' کے بھاؤ کو ابھارتی ہیں ۔ یہ سنستھائیں کسانوں کو معمولی سود پر قرض دیتی ہیں اور اچھے بیج اور اچھے کھیتی کے اوزار مہیا کرتی ہیں ۔

زعفران کی کھیتی ۔

کشمیر میں زعفران کی کھیتی کا سارا ڈھانچہ بیوپاری نگاہ سے کھڑا کیا گیا ہے ۔ گھاٹی کی ساری زمین جس پر زعفران کی کھیتی ہوتی ہے ٹھیکیداروں کو ایک سال کے لئے یا ایک فصل کے لئے نیلام کر دی جاتی ہے ۔ اسطرح زعفران کی کھیتی کچھ پونجی پتیوں کی اجارہ داری ہو گئی ہے ۔

जियादा न होगा. अगर कोई खेत इक्कीस बरस तक गिरवी करने वाले के क़ब्ज़े में रह चुका हो तो गिरवीदार अपने आप इस खेत का मालिक बन जायगा. इस क़ानून में नाव को भी अचल जायदाद माना गया है.

इस क़ानून के अनुसार 14 कचहरियां क़ायम हुईं जिनमें 3270 मुक़दमे पेश हुए और उनमें से 1456 का फ़ैसला 15 अप्रैल सन '52 तक कर दिया गया. गिरवी के कारन गांव में निठल्ले ज़मींदारों की तादाद बढ़ गई थी. मेहनत करने वाले और ईमानदार किसान ज़मीन छिन जाने के कारन खेती नहीं कर पाते थे. इस क़ानून ने इस बात का बन्धान रखा है कि किसान अपने खेतों के मालिक बने रहें और अपनी पैदावार में से थोड़ा थोड़ा करके क़र्ज़ अदा कर दें.

ज़बरदस्त ज़मीन सुधार

कश्मीर में ज़मीन सुधार क़ानून बन जाने से साढ़े छै लाख एकड़ ज़मीन जो ज़मींदारों के क़ब्ज़े में थी दो लाख किसान परिवारों में बंट गई. इस सुधार से क़रीब दस लाख आदमियों को फ़ायदा पहुंचा. किसी तरह का भी मावज़ा नहीं दिया गया.

राजा पूंछ के क़ब्ज़े में चार पूरी पूरी तहसीलें थीं जिनमें दो लाख एकड़ खेती के लायक़ ज़मीन थी. राजा साहब की आमदनी चौदह लाख रुपया सालाना थी. छनानी के जागीरदार अकेले ही 47 गांव के मालिक बने बैठे थे. दीवान का लम्बा चौड़ा ताल्लुक़ा घाटी भर में फैला था. क़रीब पन्द्रह हज़ार एकड़ इनके क़ब्ज़े में था. ऐसे बड़े बड़े ज़मींदारों की ज़मीनें ले ली गई हैं. ज़मीन सुधार प्रोग्राम ने वक़्फ़ की और मंदिरों की ज़मीनों को भी नहीं छोड़ा. ज़मींदार ज़मींदार है चाहे उसे जागीरदार कहा जाय या राजा कहा जाय या उसका मज़हब से ताल्लुक़ बता कर मठ, वक़्फ़ या और कोई दूसरा नाम रख दिया जाय. इसमें कोई शक नहीं है कि कश्मीर का ज़मीन सुधार ठीक ढंग पर किया गया है.

जियादा से जियादा कुल बीस एकड़ ज़मीन पर ही एक आदमी क़ब्ज़ा रख सकता है. ज़मींदारों के साथ रिआयत की गई है और उन्हें अपने कुटुम्ब के पालन पोशन के लिये साढ़े बाइस एकड़ तक रखने की इजाज़त दे दी गई है. यह बन्धान इसलिये किया गया है ताकि छोटे छोटे ग़रीब ज़मींदारों को रोज़ी का साधन मुहैया किया जा सके. 25 या 50 एकड़ वाले ज़मींदार कोई बड़े ज़मींदार नहीं थे फिर भी वह ख़ुद खेती नहीं करते थे और लगान पर खेत उठाते थे. यह लोग दूसरे पेशों में लगे हुए थे और ज़मीन से भी फ़ायदा उठाते थे. इन लोगों के कारन किसान पर बोझ बहुत बढ़ जाता था.

زیادہ نہ ہوگا ۔ اگر کوئی کھیت اکیس برس تک گروی کرنے والے کے قبضے میں رہ چکا ہو تو گرویدار اپنے آپ اس کھیت کا مالک بن جائے گا ۔ اس قانون میں ناؤ کو بھی اچل جائداد مانا گیا ہے ۔

اس قانون کے انوسار 14 کچہریاں قائم ہوئیں جن میں 3270 مقدمے پیش ہوئے اور ان میں سے 1456 کا فیصلہ 15 اپریل سن '52 تک کردیا گیا ۔ گروی کے کارن گاؤں میں نکھٹے زمینداروں کی تعداد بڑھ گئی تھی ۔ محنت کرنے والے اور ایماندار کسان زمین چھن جانے کے کارن کھیتی نہیں کر پاتے تھے ۔ اس قانون نے اس بات کا بندھان رکھا ہے کہ کسان اپنے کھیتوں کے مالک بنے رہیں اور اپنی پیداوار میں سے تھوڑا تھوڑا کرکے قرض ادا کردیں ۔

زبردست زمین سدھار

کشمیر میں زمین سدھار قانون بن جانے سے ساڑھے چھ لاکھ ایکڑ زمین جو زمینداروں کے قبضے میں تھی دو لاکھ کسان پریواروں میں بٹ گئی ۔ اس سدھار سے قریب دس لاکھ آدمیوں کو فائدہ پہونچا ۔ کسی طرح کا بھی معاوضہ نہیں دیا گیا ۔

راجہ پونچھ کے قبضے میں چار پوری پوری تحصیلیں تھیں جن میں دو لاکھ ایکڑ کھیتی کے لائق زمین تھی ۔ راجہ صاحب کی آمدنی چودہ لاکھ روپیہ سالانہ تھی ۔ چھنانی کے جاگیردار اکیلے ہی 47 گاؤں کے مالک بنے بیٹھے تھے ۔ دیوان کا لمبا چوڑا تعلقہ گھاٹی بھر میں پھیلا تھا ۔ قریب پندرہ ہزار ایکڑ ان کے قبضے میں تھا ۔ ایسے بڑے بڑے زمینداروں کی زمینیں لے لی گئیں ہیں ۔ زمین سدھار پروگرام نے وقف کی اور مندروں کی زمینوں کو بھی نہیں چھوڑا ۔ زمیندار زمیندار ہے چاہے اسے جاگیردار کہا جائے یا راجہ کہا جائے یا اس کا مذہب سے تعلق بتاکر مٹھ، وقف یا اور کوئی دوسرا نام رکھ دیا جائے ۔ اس میں کوئی شک نہیں ہے کہ کشمیر کا زمین سدھار ٹھیک ڈھنگ پر کیا گیا ہے ۔

زیادہ سے زیادہ کل بیس ایکڑ زمین پر ہی ایک آدمی قبضہ رکھ سکتا ہے ۔ زمینداروں کے ساتھ رعایت کی گئی ہے اور انہیں اپنے کٹمب کے پالن پوشن کے لئے ساڑھے بائیس ایکڑ تک رکھنے کی اجازت دے دی گئی ہے ۔ یہ بندھان اس لئے کیا گیا ہے تاکہ چھوٹے چھوٹے غریب زمینداروں کو روزی کا سادھن مہیا کیا جا سکے ۔ 25 یا 50 ایکڑ والے زمیندار کوئی بڑے زمیندار نہیں تھے پھر بھی وہ خود کھیتی نہیں کرتے تھے اور لگان پر کھیت اٹھاتے تھے ۔ یہ لوگ دوسرے پیشوں میں لگے ہوئے تھے اور زمین سے بھی فائدہ اٹھاتے تھے ۔ ان لوگوں کے کارن کسان پر بوجھ بہت بڑھ جاتا تھا ۔

15 अप्रैल सन '52 तक इन बोर्डों के सामने इकतालीस हज़ार दो सौ पनचानवे दावे पेश हुए और जिनमें से चौंतीस हज़ार छै सौ चालीस का फ़ैसला कर दिया गया. छियानवे लाख उनसठ हज़ार पैंतीस रुपये के क़र्ज़ के दावे में से सिर्फ़ तेईस लाख तीन हज़ार आठ सौ छाछट रुपये की रक़म को बोर्ड ने जायज़ माना.

किसानों के क़र्ज़ में यह कमी क़रीब 77 फ़ीसदी है. इतनी कमी भारत के किसी और हिस्से में नहीं की गई.

क़र्ज़ के दावों में से 71 फ़ीसदी गांव के क़र्ज़दारों के ख़िलाफ़ हैं और बाक़ी शहर वालों के. इस सम्बन्ध में बयासी हज़ार नौ सौ पांच आदमी बोर्ड के सामने पेश हुए जिन में से चौंतीस हज़ार तीन सौ सत्तर क़र्ज़दार थे और पन्द्रह हज़ार पांच सौ पैंतीस क़र्ज़ देने वाले. क़र्ज़ देने वालों में से लगभग 48 फ़ीसदी पेशावर साहूकार थे और बाक़ी गांव के दुकानदार और सरकारी नौकरों जैसे ग़ैर पेशावर. क़र्ज़दारों में ज़ियादा तादाद किसान, मज़दूर और कारीगरों की थी. सूद पचास पचास फ़ीसदी तक था. बोर्ड ने अब जो क़र्ज़ की असली रक़म मुक़र्रर की है वह सुविधा के अनुसार क़िस्तों में अदा की जायगी. औसत क़िस्त दस रुपया मुक़र्रर की गई है जो हर फ़सल पर अदा की जाएगी. सबसे बड़ी क़िस्त दो सौ पच्चीस रुपए की है और सब से कम एक रुपये की. क़र्ज़ के अदायगी की मेयाद ज़ियादा से ज़ियादा पचास साल है और कम से कम एक साल.

मुक़दमे बाज़ी में किसानों को तरह तरह की मुसीबतें झेलनी पड़तीं और लाखों रुपए कचहरियों में ख़र्च होते लेकिन समझौता बोर्ड के क़ायम होने से किसान इन मुसीबतों और माली बोझ से बच गए. इसका सेहरा कश्मीर के माल मंत्री मिरज़ा अफ़ज़ल बेग के सिर है जो इस क़ानून के निर्माता हैं और जिन्होंने समझौता बोर्ड के रोज़ाना के कामों में बहुत दिलचस्पी ली है. कश्मीर के सरहदी ज़िले लदाख़ की हालत तो बहुत ही भयानक थी. 90 से लेकर 99 फ़ीसदी आबादी भारी क़र्ज़ के नीचे दबी थी. बौद्ध मठ इस इलाक़े के ज़मींदार भी थे और साहूकार भी. बोर्ड के क़ायम होते ही सूद का दर 25 फ़ीसदी से घटा कर 12 फ़ीसदी कर दिया गया.

गिरवी की वापसी

हर उस अचल जायदाद पर जो गिरवी की गई हो और उसकी क़ीमत दस हज़ार से अधिक न हो जम्मू और कश्मीर गिरवी जायदाद वापसी एक्ट लागू होता है. अगर किसी गिरवी रखने वाले को मूल रक़म का डेढ़ गुना और वह रक़म जो जायदाद को बढ़ाने में लगाई गई हो मिल जाय तो जायदाद मालिक को वापस मिल जायगी. सिर्फ़ मूल रक़म पर सूद मिलेगा और वह भी छै फ़ीसदी सालाना से

15 اپریل سن '52 تک اِن بورڈوں کے سامنے اکتالیس ہزار دو سو پنچانوے دعوے پیش ہوئے اور جن میں سے چونتیس ہزار چھ سو چالیس کا فیصلہ کردیا گیا . چھیانوے لاکھ انسٹھ ہزار پینتیس روپیہ کے قرض کے دعوے میں سے صرف تیئیس لاکھ تین ہزار آٹھ سو چھاچھٹھ روپئے کی رقم کو بورڈ نے جائز مانا .

کسانوں کے قرض میں یہ کمی قریب 77 فی صدی ہے. اتنی کمی بھارت کے کسی اور حصے میں نہیں کی گئی.

قرض کے دعووں میں سے 71 فی صدی گاؤں کے قرضداروں کے خلاف ہیں اور باقی شہر والوں کے . اس سمبندھ میں بیاسی ہزار نو سو پانچ آدمی بورڈ کے سامنے پیش ہوئے جن میں سے چونتیس ہزار تین سو ستتر قرضدار تھے اور پندرہ ہزار پانچسو پینتیس قرض دینے والے. قرض دینے والوں میں سے لگ بھگ 48 فیصدی پیشہ ور ساہوکار تھے اور باقی گاؤں کے دوکاندار اور سرکاری نوکروں جیسے غیر پیشہ ور . قرضداروں میں زیادہ تعداد کسان، مزدور اور کاریگروں کی تھی . سود پچاس پچاس فیصدی تک تھا . بورڈ نے اب جو قرض کی اصلی رقم مقرر کی ہے وہ سودھا کے انوسار قسطوں میں ادا کی جائے گی . اوسط قسط دس روپیہ مقرر کی گئی ہے جو ہر فصل پر ادا کی جائے گی . سب سے بڑی قسط دو سو پچیس روپیہ کی ہے اور سب سے کم ایک روپیہ کی. قرض کے ادائگی کی میعاد زیادہ سے زیادہ پچاس سال ہے اور کم سے کم ایک سال .

مقدمے بازی میں کسانوں کو طرح طرح کی مصیبتیں جھیلنی پڑتیں اور لاکھوں روپئے کچہریوں میں خرچ ہوتے لیکن سمجھوتہ بورڈ کے قائم ہونے سے کسان اِن مصیبتوں اور مالی بوجھ سے بچ گئے . اِس کا سہرا کشمیر کے مال منتری مرزا افضل بیگ کے سر ہے جو اِس قانون کے نرماتا ہیں اور جنہوں نے سمجھوتہ بورڈ کے روزانہ کے کاموں میں بہت دلچسپی لی ہے . کشمیر کے سرحدی ضلع لداخ کی حالت تو بہت ہی بھیانک تھی . 90 سے لے کر 99 فیصدی آبادی بھاری قرض کے نیچے دبی تھی . بودھ مٹھ اِس علاقے کے زمیندار بھی تھے اور ساہوکار بھی . بورڈ کے قائم ہوتے ہی سود کا در 25 فی صدی سے گھٹا کر 12 فیصدی کردیا گیا .

گروی کی واپسی .

ہر اُس اچل جائداد پر جو گروی کی گئی ہو اور اُس کی قیمت دس ہزار سے ادھک نہ ہو جمو اور کشمیر گروی جائداد واپسی ایکٹ لاگو ہوتا ہے . اگر کسی گروی رکھنے والے کو مول رقم کا ڈیوڑھ گنا اور وہ رقم جو جائداد کو بڑھانے میں لگائی گئی ہو مل جائے تو جائداد مالک کو واپس مل جائے گی . صرف مول رقم پر سود ملے گا اور وہ بھی چھ فیصدی سالانہ سے

कश्मीर के नये सुधार

(ताराचन्द गुप्ता)

अत्याचारी ज़मींदारों और साहूकारों के चंगुल से मुक्ति पाकर कश्मीरी किसान उम्मीद और विश्वास से अपने भविश्य के चमकते तारे को देख रहे हैं.

दो साल पहले कश्मीर की नई सरकार ने "जम्मू और कश्मीर दुखी क़र्ज़दार एक्ट" पास किया. इस क़ानून का मक़सद यह है कि सममौता बोर्ड बना कर उनके ज़रिये थोड़े से ही अरसे में क़र्ज़ की मुसीबत से किसानों को छुटकारा दिलाया जाय. इस क़ानून के चौथे भाग के बन्धानों के अनुसार क़र्ज़ देने वाले और क़र्ज़ लेने वाले दोनों को सममौते के लिये सममौता बोर्ड को अरज़ी देनी पड़ती है. जिस दिन से यह क़ानून लागू हुआ है उसके चार महीने के अन्दर ही क़र्ज़ देने वाले के लिये ज़रूरी था कि वह फ़ैसले के लिये अपना दावा बोर्ड के सामने पेश कर दे नहीं तो बाद में क़र्ज़ वापिस लेने का उसका अधिकार ख़त्म होजाएगा. सममौत बोर्ड को सिर्फ़ पांच हज़ार रुपया या उससे कम के क़र्ज़ के फ़ैसले का ही अधिकार है. व्योपार के लिये क़र्ज़ और बैंकिंग के रोज़ के मामूली कामों में दख़ल देने का बोर्ड को कोई अधिकार नहीं है.

इस क़ानून ने कम से कम ऐसी सात छूटें भी रखी हैं जिनके होते हुए पांच हज़ार के ऊपर के मुक़दमें में भी सममौता बोर्ड अपना फ़ैसला दे सकता है. सममौता बोर्ड को सिविल कचहरी के सारे अधिकार हासिल हैं. इस बोर्ड के फ़ैसले के ख़िलाफ़ सिर्फ़ एक ख़ास जज के यहां अपील हो सकती है. इसके अलावा इस बोर्ड का हुक्म तमाम अमली ग़रज़ों के लिये आख़िरी माना जाता है और न तो इसके फ़ैसले पर किसी दूसरी कचहरी में सुनवाई हो सकती है और न दोबारा कोई बाक़ायदा मुक़दमा ही चलाया जा सकता है. इस क़ानून का बन्धान है कि सममौता बोर्ड क़र्ज़ की असली रक़म तजवीज़ करे, उस क़र्ज़दार के ख़िलाफ़ दावे को रद्द कर दे जिसने मूल की डियोढ़ा रक़म अदा कर दी हो, और बोर्ड के बनने के बाद क़र्ज़ के भुगतान के लिये जितने भी आपसी सममौते हुए हों उन्हें ग़ैर क़ानूनी क़रार दे.

बोर्ड के बनाए जाने का मक़सद यह है कि वह "रियासत में रहने वालों के और ख़ास कर किसानों के क़र्ज़ के बोझ को हल्का करे." जम्मू, अनन्त नाग, श्री नगर ज़िलों में दो दो बोर्ड और उधमपुर, कठवा, बारमौला और लद्दाख़ के ज़िलों में एक एक बोर्ड क़ायम किये गए हैं.

کشمیر کے نئے سدھار

(تارا چند گپتا)

اتیاچاری زمینداروں اور ساہوکاروں کے چنگل سے مکتی پاکر کشمیری کسان امید اور وشواس سے اپنے بھوشیہ کے چمکتے تارے کو دیکھ رہے ہیں .

دو سال پہلے کشمیر کی نئی سرکار نے "جموں اور کشمیر دکھی قرضدار ایکٹ" پاس کیا ہے . اِس قانون کا مقصد یہ ہے کہ سمجھوتہ بورڈ بناکر اُن کے ذریعے تھوڑے سے ہی عرصے میں قرض کی مصیبت سے کسانوں کو چھٹکارا دلایا جائے . اِس قانون کے چوتھے بھاگ کے بندھانوں کے انوسار قرض دینے والے اور قرض لینے والے دونوں کو سمجھوتے کے لئے سمجھوتہ بورڈ کو عرضی دینی پڑتی ہے . جس دن سے یہ قانون لاگو ہوا ہے اُس کے چار مہینے کے اندر ہی قرض دینے والے کے لئے ضروری تھا کہ وہ فیصلے کے لئے اپنا دعویٰ بورڈ کے سامنے پیش کردے نہیں تو بعد میں قرض واپس لینے کا اُس کا ادھیکار ختم ہو جائیگا . سمجھوتہ بورڈ کو صرف پانچ ہزار روپیہ یا اُس سے کم کے قرض کے فیصلے کا ہی ادھیکار ہے . بیوپار کے لئے قرض اور بینکنگ کے روز کے معمولی کاموں میں دخل دینے کا بورڈ کو کوئی ادھیکار نہیں ہے .

اِس قانون نے کم سے کم ایسی سات چھوٹیں بھی رکھی ہیں جن کے ہوتے ہوئے پانچ ہزار کے اوپر کے مقدمے میں بھی سمجھوتہ بورڈ اپنا فیصلہ دے سکتا ہے. سمجھوتہ بورڈ کو سول کچہری کے سارے ادھیکار حاصل ہیں . اِس بورڈ کے فیصلے کے خلاف صرف ایک خاص جج کے یہاں اپیل ہوسکتی ہے . اِس کے علاوہ اِس بورڈ کا حکم تمام عملی غرضوں کے لئے آخری مانا جاتا ہے اور نہ تو اس کے فیصلے پر کسی دوسری کچہری میں سنوائی ہوسکتی ہے اور نہ دوبارہ کوئی باقاعدہ مقدمہ ہی چلایا جا سکتا ہے . اِس قانون کا بندھان ہے کہ سمجھوتہ بورڈ قرض کی اصلی رقم تجویز کرے، اُس قرضدار کے خلاف دعوے کو رد کر دے جس نے مول کی ڈیوڑھا رقم ادا کردی ہو، اور بورڈ کے بننے کے بعد قرض کے بھگتان کے لئے جتنے بھی آپسی سمجھوتے ہوئے ہوں اُنہیں غیر قانونی قرار دے .

بورڈ کے بنائے جانے کا مقصد یہ ہے کہ وہ "ریاست میں رہنے والوں کے اور خاص کر کسانوں کے قرض کے بوجھ کو ہلکا کرے." جموں، اننت ناگ، شری نگر ضلعوں میں دو دو بورڈ اور اُدھمپور، کٹھوا، بارمولا اور لداخ کے ضلعوں میں ایک ایک بورڈ قائم کئے گئے ہیں .

(6) हमारी गांव की ज़िन्दगी का बुनियादी सवाल है भूमि सुधार का सवाल. सरकार की यह योजना इधर ध्यान ही नहीं देती. इस लिये यह योजना बिल्कुल निकम्मी है.

(7) इस योजना में इस बात का बिल्कुल ख्याल नहीं किया गया कि कोई गांव या कोई इलाक़ा खाने की चीज़ों के मामले में किसी दूसरे का मोहताज न हो और सब को इस तरह का ठीक ठीक अच्छा खाना मिल सके जिससे सब की तन्दुरुस्ती क़ायम रह सके. इस लिये इस योजना से आये दिन के अकालों का ख़तरा दूर नहीं हो सकता.

(8) अमरीका कोरिया से लेकर पच्छिम जर्मनी तक रूस को बीच में घेर लेने के लिये एक जाल बिछा देने की कोशिश कर रहा है. यह योजना उसी जाल या उसी घेरे की एक कड़ी है. इसके लिये हिन्दुस्तान को उसी राह पर ले जाया जा रहा है जिस राह पर कोरिया को जाना पड़ा. इससे डर है कि हम अमरीकी गुट के जाल में फंस जावें. इसलिये हम में से वह लोग जो अहिन्सा के मानने वाले हैं इस योजना से कोई सम्बंध नहीं रख सकते.

अंगरेज़ों की राजकाजी साम्राज शाही के चले जाने पर हमारे यहां जो नाक़ाबिल हकूमत क़ायम हो गई उससे मुल्क में एक ख़ाली ख़ाली जगह दिखाई देने लगी. अमरीका की माली साम्राज शाही उस ख़ाली जगह को भरने की कोशिश कर रही है जिससे मालूम होता है कि अब अमरीकी माली साम्राज शाही का ज़माना आ रहा है. आम तौर पर मुझे यह डर है कि उंगली पकड़ते पहुँचा पकड़ने की कहावत की तरह यह योजना उसी चीज़ की शुरूआत है. इसीलिये मेरी राय है कि जो लोग इस योजना में साथ दे रहे हैं वह उन देश घातकों की तरह हैं जो अपने देश के दुश्मनों के साथ मिलकर काम करते हैं और अपने मुल्क पर बरबादी लाते हैं. हालत इतनी गम्भीर हो गई है कि मुझे मजबूर हो कर कड़वी पर साफ़ और खरी खरी बात कहनी पड़ती है.

प्रेम के साथ आपका

जे. सी. कुमारप्पा

नोट. चूंकि यह मामला हमारे मुल्क की इसी वक़्त की भलाई बुराई से सम्बन्ध रखता है, इस लिये मैं यह ख़त अख़बारों को भेज रहा हूँ.

(6) ہماری گاؤں کی زندگی کا بنیادی سوال ہے بھومی سدھار کا سوال. سرکار کی یہ یوجنا اِدھر دھیان ہی نہیں دیتی. اس لئے یہ یوجنا بالکل نکمی ہے .

(7) اِس یوجنا میں اِس بات کا بالکل خیال نہیں کیا گیا کوئی گاؤں یا کوئی علاقہ کھانے کی چیزوں کے معاملے میں کسی دوسرے کا محتاج نہ ہو اور سبکو اِسطرح کا ٹھیک ٹھیک اچھا کھانا مل سکے جس سے سب کی تندرستی قائم رہ سکے . اس لئے اِس یوجنا سے آئے دن کے اکالوں کا خطرہ دور نہیں ہو سکتا .

(8) امریکہ کوریا سے لے کر پچھم جرمنی تک روس کو بیچ میں گھیر لینے کے لئے ایک جال بچھا دینے کی کوشش کر رہا ہے . یہ یوجنا اُسی جال یا اُسی گھیرے کی ایک کڑی ہے . اِس کے لئے ہندستان کو اُسی راہ پر لے جایا جا رہا ہے جس راہ پر کوریا کو جانا پڑا . اس سے ڈر ہے کہ ہم امریکی گٹ کے جال میں پھنس جاویں . اس لئے ہم میں سے وہ لوگ جو اہنسا کے ماننے والے ہیں اِس یوجنا سے کوئی سمبندھ نہیں رکھ سکتے .

انگریزوں کی راجکاجی سامراج شاہی کے چلے جانے پر ہمارے یہاں جو ناقابل حکومت قائم ہوگئی اُس سے ملک میں ایک خالی خالی جگہ دکھائی دینے لگی . امریکہ کی مالی سامراج شاہی اُس خالی جگہ کو بھرنے کی کوشش کر رہی ہے . جس سے معلوم ہوتا ہے کہ اب امریکی مالی سامراج شاہی کا زمانہ آ رہا ہے . عام طور پر مجھے یہ ڈر ہے کہ اُنگلی پکڑتے پہونچا پکڑنے کی کہاوت کی طرح یہ یوجنا اُسی چیز کی شروعات ہے . اِسی لئے میری رائے ہے کہ جو لوگ اس یوجنا میں ساتھ دے رہے ہیں وہ اُن دیش گھاتکوں کی طرح ہیں جو اپنے دیش کے دشمنوں کے ساتھ مل کر کام کرتے ہیں اور اپنے ملک پر بربادی لاتے ہیں . حالت اتنی گمبھیر ہوگئی ہے کہ مجھے مجبور ہو کر کڑوی پر صاف اور کھری کھری بات کہنی پڑتی ہے .

پریم کے ساتھ آپکا

جے . سی. کماریپا

نوٹ . چونکہ یہ معاملہ ہمارے ملک کی اسی وقت کی بھلائی برائی سے سمبندھ رکھتا ہے، اس لئے میں یہ خط اخباروں کو بھیج رہا ہوں .

आपने ठीक कहा है कि सरकारी पैम्फलेट में इस बारे में जो बातें बताई गई हैं वह बहुत कम हैं जिन से इस मामले की पूरी जानकारी नहीं हो सकती. फिर भी चूंकि आपने अपने ख़त में आम तौर पर मेरे विचार जानना चाहा है इसलिये मेरे जो कुछ विचार हैं मैं नीचे दे रहा हूँ.

(1) हिन्दुस्तान और अमरीका के बीच जिस तकनीकी सहायता समझौते (इन्डो यू. एस. टैकनिकल कोआपरेशन एग्रीमेन्ट) पर हमारे प्रधान मंत्री और अमरीकी राजदूत ने मिल कर दस्तख़त किये हैं वह समझौता किसी भी आत्मसम्मान वाले आज़ाद मुल्क को शोभा नहीं देता. क्योंकि इस समझौते के मुताबिक़ हमारे देश के अन्दर काम करने वाले ग़ैर सरकारी विदेशी लोगों तक को मुल्क के क़ानून से बरीयत के वह अधिकार दे दिये गए हैं जो दूसरे देशों के केवल ख़ास राजदूतों को दिये जाते हैं. इसका नतीजा यह होगा कि हमारे मुल्क भर में बीच बीच में विदेशियों के एक तरह के अलग इलाक़े बन जाएंगे.

(2) अमरीका इस काम में रुपया में सिर्फ़ लग भग दो आने लगाएगा और इस दो आने के बदले में कम्युनिटी प्रोजेक्टस के सब मामलों में अमरीका की राय या आवाज़ सबसे ऊपर रहेगी. हर बात में अमरीका का फ़ैसला आख़री फ़ैसला होगा.

(3) इस सारी योजना से पता चलता है कि हमारे प्रधान मंत्री को अपने साथियों की क़ाबलियत में इतना ग़ज़ब का अविश्वास है कि वह हमारे देश के गांव की फिर से रचना करने के लिये विदेशियों को दावत दे रहे हैं और उस के लिये इतना झुकने को तैयार हैं.

(4) इस तरह की किसी भी अच्छी योजना में एक बड़ी ज़रूरी बात यह होनी चाहिये कि आदमी इन्सानी स्वभाव को अच्छी तरह और पूरी तरह समझता हो. यह काम इसी जानकारी के सहारे चल सकता है. हमारी सरकार की इस योजना में इस इतनी ज़रूरी बात का बिलकुल ख़्याल ही नहीं किया गया.

(5) हमारे गांव की ज़िन्दगी जिस तरह की सोशल फ़िलासफ़ी यानी जिस तरह के समाजी विचारों और जिस तरह के रहन सहन के ढंग पर क़ायम है उनका मक़सद यह है कि गांव वाले अपने पैरों पर ख़ुद खड़े रह सकें और अपने गांव का शासन ख़ुद चला सकें. जब तक हम इसी बुनियाद पर अपने गांव की रचना फिर से नहीं करेंगे तब तक हमारी सब कोशिशें न केवल बेकार ही जाएंगी बल्कि उनका नतीजा यह भी होगा कि हमारे देश का समाज टुकड़े टुकड़े हो जायेगा और हमारी कलचर का ख़ात्मा हो जायेगा.

آپ نے ٹھیک کہا ہے کہ سرکاری پمفلٹ میں اِس بارے میں جو باتیں بتائی گئی ہیں وہ بہت کم ہیں جن سے اِس معاملے کی پوری جانکاری نہیں ہوسکتی ۔ پھر بھی چونکہ آپ نے اپنے خط میں عام طور پر میرے وچار جاننا چاہا ہے اس لئے میرے جو کچھ وچار ہیں میں نیچے دے رہا ہوں ۔

(1) ہندستان اور امریکہ کے بیچ جس تکنیکی سہائتا سمجھوتے (اِنڈو یو . ایس . ٹکنیکل کوآپریشن اگریمنٹ) پر ہمارے پردھان منتری اور امریکی راجدوت نے مل کر دستخط کئے ہیں وہ سمجھوتہ کسی بھی آتم سمان والے آزاد ملک کو شوبھا نہیں دیتا ۔ کیونکہ اِس سمجھوتے کے مطابق ہمارے دیش کے اندر کام کرنے والے غیر سرکاری ودیشی لوگوں تک کو ملک کے قانون سے بریت کے وہ ادھیکار دے دیئے گئے ہیں جو دوسرے دیشوں کے کیول خاص راجدوتوں کو دیئے جاتے ہیں ۔ اِس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ ہمارے ملک بھر میں بیچ بیچ میں ودیشیوں کے ایک طرح کے الگ علاقے بن جائیں گے ۔

(2) امریکہ اِس کام میں روپیہ میں صرف لگ بھگ دو آنے لگائے گا اور اس دو آنے کے بدلے میں کمیونٹی پروجیکٹس کے سب معاملوں میں امریکہ کی رائے یا آواز سب سے اوپر رہے گی ۔ ہر بات میں امریکہ کا فیصلہ آخری فیصلہ ہوگا ۔

(3) اِس ساری یوجنا سے پتہ چلتا ہے کہ ہمارے پردھان منتری کو اپنے ساتھیوں کی قابلیت میں اتنا غضب کا اوشواس ہے کہ وہ ہمارے دیش کے گاؤں کی پھر سے رچنا کرنے کے لئے ودیشیوں کو دعوت دے رہے ہیں اور اسکے لئے اتنا جھکنے کو تیار ہیں ۔

(4) اِسطرح کی کسی بھی اچھی یوجنا میں ایک بڑی ضروری بات یہ ہونی چاہئے کہ آدمی انسانی سبھاؤ کو اچھی طرح اور پوری طرح سمجھتا ہو ۔ یہ کام اِسی جانکاری کے سہارے چل سکتا ہے ۔ ہماری سرکار کی اِس یوجنا میں اِس اتنی ضروری بات کا بالکل خیال ہی نہیں کیا گیا ۔

(5) ہمارے گاؤں کی زندگی جسطرح کی سوشل فلسفی یعنی جس طرح کے سماجی وچاروں اور جس طرح کے رہن سہن کے ڈھنگ پر قائم ہے اُن کا مقصد یہ ہے کہ گاؤں والے اپنے پیروں پر خود کھڑے رہ سکیں اور اپنے گاؤں کا شاسن خود چلا سکیں ۔ جب تک ہم اِسی بنیاد پر اپنے گاؤں کی رچنا پھر سے نہیں کرینگے تب تک ہماری سب کوششیں نہ کیول بیکار ہی جائیں گی بلکہ اُن کا نتیجہ یہ بھی ہوگا کہ ہمارے دیش کا سماج ٹکڑے ٹکڑے ہوجائے گا اور ہماری کلچر کا خاتمہ ہوجائے گا ۔

अमरीका और हमारे गांव

[भारत सरकार ने एक प्लानिंग कमीशन बनाया है. उसके मातहत एक कम्युनिटी प्रोजेक्टस एडमिनिस्ट्रेशन है. इन कम्युन्टिी प्रोजेक्टस का काम यह है कि भारत में जगह जगह यहां के गांव वालों को अमरीकी पैसे की मदद से, अमरीकी जानकारों की देख रेख और सरपरस्ती में, अमरीकी सामान और अमरीकी मशीनों के सहारे अच्छी तरह मिल कर रहना और अपने गांव को तरक़्क़ी देना सिखाया जाए. भारत सरकार को अपनी इस योजना पर फ़ख्र है. कुछ लोग इसे मुल्क के लिये और ख़ास कर हिन्दुस्तान के गांव वालों के लिये बरबादी और तबाही की चीज़ समझते हैं. इस ख़्याल के लोगों में से एक महात्मा गांधी के परम भक्त और अर्थशास्त्र के पंडित डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा भी हैं जो हाल में चीन, जापान, रूस, जर्मनी हो कर लौटे हैं. भारत सरकार ने अपनी इस कम्युनिटी प्रोजेक्टस पर एक छोटा सा पैम्फ़लेट भी निकाला है. हाल में यह पैम्फ़लेट सरकार ने कुमारप्पा जी के पास भेजा था और उनसे राय मांगी थी. इसके बाद 20 अगस्त को कम्युनिटी प्रोजेक्टस पर भारत सरकार के सब से बड़े अफ़सर श्री एस. के. दे कुमारप्पा जी से मिलने वर्धा गए थे. दोनों में इस बारे में काफ़ी बात चीत हुई. अगले दिन भारत सरकार के इस काम पर अपनी राय ज़ाहिर करते हुए कुमारप्पा जी ने एक ख़त अंगरेज़ी में श्री एस. के. दे को भेजा जिसकी एक नक़ल 'नया हिन्द' में छापने के लिये उन्होंने हमारे पास भेजी है. ख़त यह है—एडीटर]

मगन वाड़ी, वर्धा
21 अगस्त 1952

श्री एस. के. दे
कम्युनिटी प्रोजेक्टस एडमिनिस्ट्रेशन
प्लानिंग कमीशन,
नई दिल्ली.

डियर श्री दे,

मुझे अफ़सोस है कि आप के सात जुलाई के ख़त का जवाब देने में देर हुई. मैं बाहर चला गया था और जब से वापस आया हूं बहुत सा काम बक़ाया में पड़ा हुआ है. मैंने इस मामले पर सोचने के लिये भी वक़्त लिया है. आप कल मुझ से मिलने आए. इसलिये अब मैं इस बारे में अपनी राय लिखता हूं.

امریکہ اور ہمارے گاؤں

[بھارت سرکار نے ایک پلیننگ کمیشن بنایا ہے. اُس کے ماتحت ایک کمیونیٹی پروجیکٹس اڈمنسٹریشن ہے . اِن کمیونیٹی پروجیکٹس کا کام یہ ہے کہ بھارت میں جگہ جگہ یہاں کے گاؤں والوں کو امریکی پیسے کی مدد سے، امریکی جانکاروں کی دیکھ ریکھ اور سرپرستی میں، امریکی سامان اور امریکی مشینوں کے سہارے اچھی طرح مل کر رہنا اور اپنے گاؤں کو ترقی دینا سکھایا جائے . بھارت سرکار کو اپنی اِس یوجنا پر فخر ہے . کچھ لوگ اسے ملک کے لئے اور خاص کر ہندستان کے گاؤں والوں کے لئے بربادی اور تباہی کی چیز سمجھتے ہیں . اِس خیال کے لوگوں میں سے ایک مہاتما گاندھی کے پرم بھکت اور ارتھ شاستر کے پنڈت ڈاکٹر جے . سی . کماریپا بھی ہیں جو حال میں چین، جاپان، روس، جرمنی ہوکر لوٹے ہیں . بھارت سرکار نے اپنی اِس کمیونیٹی پروجیکٹس پر ایک چھوٹا سا پمفلٹ بھی نکالا ہے . حال میں یہ پمفلٹ سرکار نے کماریپا جی کے پاس بھیجا تھا اور اُن سے رائے مانگی تھی . اِس کے بعد 20 اگست کو کمیونیٹی پروجیکٹس پر بھارت سرکار کے سب سے بڑے افسر شری ایس . کے . دے کماریپا جی سے ملنے وردھا گئے تھے . دونوں میں اِس بارے میں کافی بات چیت ہوئی. اگلے دن بھارت سرکار کے اِس کام پر اپنی رائے ظاہر کرتے ہوئے کماریپا جی نے ایک خط انگریزی میں شری ایس . کے . دے کو بھیجا جس کی ایک نقل 'نیا ہند' میں چھاپنے کے لئے اُنہوں نے ہمارے پاس بھیجی ہے . خط یہ ہے—ایڈیٹر]

مگن واڑی، وردھا
21 اگست سن 1952

شری ایس . کے . دے
کمیونیٹی پروجیکٹس ایڈمنسٹریشن
پلیننگ کمیشن،
نئی دلی .

ڈیر شری دے،

مجھے افسوس ہے کہ آپ کے سات جولائی کے خط کا جواب دینے میں دیر ہوئی . میں باہر چلا گیا تھا اور جب سے واپس آیا ہوں بہت سا کام بقایا میں پڑا ہوا ہے . میں نے اِس معاملے پر سوچنے کے لئے بھی وقت لیا ہے . آپ کل مجھ سے ملنے آئے . اس لئے اب میں اِس بارے میں اپنی رائے لکھتا ہوں .

में इस्तेमाल करते थे और इसका नतीजा अच्छा निकलता था. अब सारे इलाक़े में इस तरकीब का प्रचार किया गया है और लोगों ने इसे अपना लिया है. फ़रवरी सन '52 में इस इलाक़े के सारे सूबों की सरकारों ने बर्फ़ इकट्ठा करने में अपनी ताक़त लगा दी. शान्सी सूबे के नौ लाख अट्ठारह हज़ार किसानों ने नौ करोड़ तीस लाख गट्ठर बर्फ़ के इकट्ठा किये, जिससे वक़्त पर बुआई के लिये दो लाख पचास हज़ार एकड़ ज़मीन में नमी पहुंचाई जा सकी. चहार सूबे में भी एक लाख सत्तर हज़ार एकड़ ज़मीन में इसी ढंग से नमी पहुँचाई गई. बारिश इस साल बहुत ही कम हुई फिर भी इस इलाक़े में अच्छी फ़सल पैदा की जा सकी.

सूखा के ख़िलाफ़ जेहाद की अहमियत माली फ़ायदे के अलावा भी बहुत है. किसानों को इससे भाईचारे का सबक़ मिला, उन्हें सूखा के ख़तरे से छुटकारा मिल गया, उनके सामने राजकाजी मसले साफ़ हो गए और साथ ही साथ उनमें देश भक्ति की भावना पैदा हो गई.

(चाइना रीकन्सट्रक्ट से)

میں استعمال کرتے تھے اور اس کا نتیجہ اچھا نکلتا تھا. اب سارے علاقے میں اس ترکیب کا پرچار کیا گیا ہے اور لوگوں نے اسے اپنا لیا ہے . فروری سن '52 میں اس علاقے کے سارے صوبوں کی سرکاروں نے برف اکٹھا کرنے میں اپنی طاقت لگا دی. شانسی صوبے کے نو لاکھ اٹھارہ ہزار کسانوں نے نوکروڑ تیس لاکھ گٹھر برف کے اکٹھا کئے، جس سے وقت پر بوائی کے لئے دو لاکھ پچاس ہزار ایکڑ زمین میں نمی پہونچائی جا سکی . چہار صوبے میں بھی ایک لاکھ ستر ہزار ایکڑ زمین میں اسی ڈھنگ سے نمی پہونچائی گئی. بارش اِس سال بہت ہی کم ہوئی پھر بھی اس علاقے میں اچھی فصل پیدا کی جا سکی .

سوکھا کے خلاف جہاد کی اہمیت مالی فائدے کے علاوہ بھی بہت ہے . کسانوں کو اس سے بھائی چارے کا سبق ملا، انہیں سوکھا کے خطرے سے چھٹکارا مل گیا، ان کے سامنے راج کاجی مسئلے صاف ہوگئے اور ساتھ ہی ساتھ ان میں دیش بھکتی کی بھاونا پیدا ہوگئی .

(چائنا رکنسٹرکٹ سے)

मन्त्र पढ़ना, भजन गाना और माला फेरना छोड़, मन्दिर के सारे दरवाज़े बन्द कर. इस अंधेरे एकान्त कोने में तू किस की पूजा करता है ? अपनी आंखें खोल कर देख तेरा देवता तेरे सामने नहीं है.

हल चलाने वाला जहां कठोर भूमि में हल चला रहा है और सड़क बनाने वाला जहां पत्थर तोड़ रहा है, भगवान वहां ही उनके साथ धूप में है और बारिश में है, उसका कपड़ा धूल में लतपत है.

—रविन्द्र नाथ ठाकुर

منتر پڑھنا، بھجن گانا اور مالا پھیرنا چھوڑ، مندر کے سارے دروازے بند کر . اِس اندھیرے اکانت کونے میں تو کس کی پوجا کرتا ہے؟ اپنی آنکھیں کھولکر دیکھ تیرا دیوتا تیرے سامنے نہیں ہے .

ہل چلانے والا جہاں کٹھور بھومی میں ہل چلا رہا ہے اور سڑک بنانے والا جہاں پتھر توڑ رہا ہے، بھگوان وہاں ہی اُن کے ساتھ دھوپ میں ہے اور بارش میں ہے، اُس کا کپڑا دھول میں لت پت ہے .

—رویندر ناتھ ٹھاکر

साधन जुटा कर और मिसालें क़ायम करके जनता का इस तरफ़ ध्यान दिलाने के अलावा सरकार आम जनता में प्रचार करती है ताकि वह खुद अपना संगठन कर सके और सूखा से छुटकारा पाने के लिये अपनी हालत के मुताबिक़ तरकीबें निकाल सके. बड़ी बड़ी कानफ्रेंन्सें की जाती हैं जिन में आदर्श मज़दूर और आपसी सहयोग ग्रुप के प्रतिनिध एक साथ बैठते हैं और काम को आगे बढ़ाने की तरकीबों पर सोच विचार करते हैं. इस विशय पर ड्रामे खेले जाते हैं, गीत गा गा कर प्रचार किया जाता है, लाउड स्पीकर पर एलान होता है, बोर्डों पर लिखे अख़बारों से भी यह बात किसानों तक पहुंचाई जाती है. किसान संगठन किसानों को नई सरकार की योजनाएं समझाते हैं.

अब गांव गांव में सिंचाई के साधन पैदा हो गए हैं. सन '52 में उत्तर चीन के इलाक़े में पचास फ़ीसदी सिंचाई के साधन बढ़ गए. पंगयूआन सूबे में सिंचाई के लिये तालाब खोदने की योजना मार्च के अन्त तक पूरी हो गई. होपी सूबे में अपना आधा काम पूरा कर लिया. चहार सूबे में तीन लाख पचास हज़ार एकड़ ज़मीन की सिंचाई होने लगी. सन '52 के शुरू के तीन महीनों में ही उत्तर चीन में अट्ठावन हज़ार पक्के और दो लाख कच्चे कुएं खोद डाले गए.

उत्तर पच्छिम चीन में ऐसी दस लाख एकड़ ज़मीन की सिंचाई होने लगी जिसमें पहले पानी कभी नहीं पहुँच पाता था. इस इलाक़े का सन '52 का प्रोग्राम वक़्त पर पूरा हो जायगा, इसमें कोई शक नहीं है. केवल शान-तुंग सूबे में दो लाख तीस हज़ार कुएं खोदे जा चुके हैं. बीच दक्खिन इलाक़े के होपे और क्यांगसी सूबों ने मार्च के आख़ीर तक अपनी इसी तरह की योजना का सत्तर फ़ीसदी हिस्सा पूरा कर लिया है. हुनान सूबे में छै लाख पचास हज़ार एकड़ ज़मीन की सिंचाई का प्रबन्ध हो गया है. दक्खिन पच्छिम चीन का इलाक़ा किसी तरह भी किसी इलाक़े से पीछे नहीं है. आज यह कहा जा सकता है कि चीन का सारा देश पिछले साल के मुक़ाबले में इस साल और भी अच्छी हालत में हो गया है और सूखा का ख़तरा बहुत हद तक ख़त्म कर दिया गया है.

हर इलाक़े की अलग अलग समस्यायें हैं और अलग अलग कठिनाइयां हैं. अपनी अपनी कठिनाइयों को सुलझाने की हर एक कोशिश करता है. उत्तर चीन में ज़रूरत के वक़्त बारिश नहीं होती और अगर होती भी है तो बूंदें पड़ कर रह जाती हैं. किसान को खेतों में ज़ियादा से ज़ियादा नमी क़ायम रखने और उनमें ज़ियादा से ज़ियादा नमी पैदा करने की भर पूर कोशिश करना पड़ती है..कहीं कहीं पर कोई कोई किसान जाड़े की बर्फ़ को जमा करके खेतों

سادھن جٹاکر اور مثالیں قائم کرکے جنتا کا اِس طرف دھیان دلانے کے علاوہ سرکار عام جنتا میں پرچار کرتی ہے تاکہ وہ خود اپنا سنگٹھن کر سکے اور سوکھا سے چھٹکارا پانے کے لئے اپنی حالت کے مطابق ترکیبیں نکال سکے. بڑی بڑی کانفرنسیں کی جاتی ہیں جن میں آدرش مزدور اور آپسی سہیوگ گروپ کے پرتیندھی ایک ساتھ بیٹھتے ہیں اور کام کو آگے بڑھانے کی ترکیبوں پر سوچ بچار کرتے ہیں. اِس وشے پر ڈرامے کھیلے جاتے ہیں' گیت گا گا کر پرچار کیا جاتا ہے' لاؤڈ اسپیکر پر اعلان ہوتا ہے' بورڈوں پر لکھے اخباروں سے بھی یہ بات کسانوں تک پہونچائی جاتی ہے. کسان سنگٹھن کسانوں کو نئی سرکار کی یوجنائیں سمجھاتے ہیں.

اب گاؤں گاؤں میں سینچائی کے سادھن پیدا ہو گئے ہیں. سن 52 میں اُتر چین کے علاقے میں پچاس فیصدی سینچائی کے سادھن بڑھ گئے. پنگ‌یوان صوبے میں سینچائی کے لئے تالاب کھودنے کی یوجنا مارچ کے انت تک پوری ہوگئی. ہوپی صوبے نے اپنا آدھا کام پورا کر لیا. چہار صوبے میں تین لاکھ پچاس ہزار ایکڑ زمین کی سینچائی ہونے لگی. سن 52 کے شروع کے تین مہینوں میں ہی اُتر چین میں اٹھاون ہزار پکے اور دو لاکھ کچے کنوئیں کھود ڈالے گئے.

اُتر پچھم چین میں ایسی دس لاکھ ایکڑ زمین کی سینچائی ہونے لگی جس میں پہلے پانی کبھی نہیں پہونچ پاتا تھا. اِس علاقے کا سن '52 کا پروگرام وقت پر پورا ہو جائے گا' اِس میں کوئی شک نہیں ہے. کیول شانتنگ صوبے میں دو لاکھ تیس ہزار کنوئیں کھودے جا چکے ہیں. بیچ دکھن علاقے کے ہوپے اور کیانگسی صوبوں نے مارچ کے آخیر تک اپنی اِسی طرح کی یوجنا کا ستر فیصدی حصہ پورا کر لیا ہے. ہونان صوبے میں چھ لاکھ پچاس ہزار ایکڑ زمین کی سینچائی کا پربندھ ہوگیا ہے. دکھن پچھم چین کا علاقہ کسی طرح بھی کسی علاقے سے پیچھے نہیں ہے. آج یہ کہا جا سکتا ہے کہ چین کا سارا دیش پچھلے سال کے مقابلے میں اِس سال اور بھی اچھی حالت میں ہوگیا ہے اور سوکھا کا خطرہ بہت حد تک ختم کر دیا گیا ہے.

ہر علاقے کی الگ الگ سمسیائیں ہیں اور الگ الگ کٹھنائیاں ہیں. اپنی اپنی کٹھنائیوں کو سلجھانے کی ہر ایک کوشش کرتا ہے. اُتر چین میں ضرورت کے وقت بارش نہیں ہوتی اور اگر ہوتی بھی ہے تو بوندیں پڑ کر رہ جاتی ہیں. کسان کو کھیتوں میں زیادہ سے زیادہ نمی قائم رکھنے اور اُن میں زیادہ سے زیادہ نمی پیدا کرنے کی بھرپور کوشش کرنا پڑتی ہے. کہیں کہیں پر کوئی کوئی کسان جاڑے کی برف کو جمع کر کے کھیتوں

और खेतों में पानी पहुंचाने के काम में लगा दिये गए. नतीजा यह हुआ कि पचास लाख किसान उनकी देखा देखी मैदान में कूद पड़े. एक ही बात हर किसान के मुंह पर थी—"ज़िले के बड़े बड़े नेता तक हमारे खेतों को सींचने आए हैं. हम अपना फ़र्ज़ कैसे भूल सकते हैं."

शहरों से इस काम के लिये जो आदमी आए थे उनके साथ मिल कर किसानों ने पूरी समझ और पक्के इरादे से काम किया. खेतों में पानी पहुंचाने, पानी निकालने, कुएं खोदने, तालाबों की मरम्मत करने, नए तालाब खोदने और ज़रूरत पड़ने पर बांध वग़ैरा तैयार करने के लिये आपसी सहयोग ग्रुपों का मज़बूत संगठन खड़ा हो गया. ऐसे ऐसे सूबों और ऐसे ऐसे इलाक़ों में सिंचाई होने लगी जहां पानी का सपने में भी विचार नहीं हो सकता था, और उन इलाक़ों के किसान जोश से कहने लगे—"चेयरमैन माओ का ही दम है जो यहां तक पानी पहुँच सका." कहीं कहीं भयानक संकटों का भी सामना करना पड़ा. एक गांव में पानी नहीं था और पच्चीस एकड़ ज़मीन की सिंचाई करनी थी. इस गांव से पांच मील की दूरी पर एक नदी थी. वहां से बालटियों में पानी भर भर कर लाया गया और सिंचाई की गई. बाद को इस गांव में सात कुएं खोदे गए और सत्तरह हज़ार पेड़ लगाए गए. पेड़ों के लगाने से भी आस पास की ज़मीन की नमी बहुत बढ़ जाती है. आज बूढ़े से बूढ़े किसान की भी समझ में आ गया है कि आपसी सहयोग बहुत अच्छी चीज़ है और वह कहता है कि "अगर हम सब अलग अलग काम करते तो इतना बड़ा काम कभी पूरा न कर पाते."

सूखा से एक साथ और मिल कर मोरचा लेने के कारन किसान एक दूसरे के नज़दीक आए और आपसी नफ़रत, दल बन्दी और भेद भाव को भूल कर हमेशा से ज़ियादा एकता के धागे में गुथ गए. एक दूसरे की मदद से ही हर किसान को फ़ायदा पहुँचा है. इसीलिए अब उनमें दूसरों की मदद करने का ज़बरदस्त जज़बा पैदा हो गया है. पहले जो किसान किसी को अपनी कोई चीज़ उधार देना पसन्द नहीं करते थे आज वह ख़ुशी ख़ुशी और बड़े उत्साह से खेती के अपने औज़ार और खाद वग़ैरा दूसरे ज़रूरत मन्द किसानों को देने को तैयार रहते हैं. तुंग शुआंग-हू नाम का एक अधेड़ उम्र का किसान है. उसके गांव में उन लोगों को खाद और कुछ धन की ज़रूरत थी जिन्हें अभी हाल में ज़िन्दगी में पहली बार अपने अपने खेत मिले हैं. इस किसान ने अपने सूअर बिना झिझक बेच दिये और उस रुपये से इन साथियों की मदद की. इस मिसाल का जनता में प्रचार किया गया और दूसरों ने भी इस लीक पर चलना शुरू कर दिया. यह पुरानी कहावत आज सच के सांचे में ढल गई है—"हम सब एक कुटुम्ब हैं."

اور کھیتوں میں پانی پہونچانے کے کام میں لگا دیئے گئے ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ پچاس لاکھ کسان اُن کی دیکھا دیکھی میدان میں کود پڑے ۔ ایک ہی بات ہر کسان کے منھ پر تھی—" ضلع کے بڑے بڑے نیتا تک ہمارے کھیتوں کو سینچنے آئے ہیں ، ہم اپنا فرض کیسے بھول سکتے ہیں ۔"

شہروں سے اِس کام کے لئے جو آدمی آئے تھے اُن کے ساتھ مل کر کسانوں نے پوری سمجھ اور پکے ارادے سے کام کیا ۔ کھیتوں میں پانی پہونچانے' پانی نکالنے' کنوئیں کھودنے' تالابوں کی مرمت کرنے' نئے تالاب کھودنے اور ضرورت پڑنے پر باندھ وغیرہ تیار کرنے کے لئے آپسی سہیوگ گروپس کا مضبوط سنگٹھن کھڑا ہوگیا ۔ ایسے ایسے صوبوں اور ایسے ایسے علاقوں میں سینچائی ہونے لگی جہاں پانی کا سپنے میں بھی وچار نہیں ہو سکتا تھا' اور اُن علاقوں کے کسان جوش سے کہنے لگے—" چیرمین ماؤ کا ہی دم ہے جو یہاں تک پانی پہونچ سکا ۔" کہیں کہیں بھیانک سنکٹوں کا بھی سامنا کرنا پڑا ۔ ایک گاؤں میں پانی نہیں تھا اور پچیس ایکڑ زمین کی سینچائی کرنی تھی ۔ اِس گاؤں سے پانچ میل کی دوری پر ایک ندی تھی ۔ وہاں سے بالٹیوں میں پانی بھر بھر کر لایا گیا اور سینچائی کی گئی ۔ بعد کو اس گاؤں میں سات کنوئیں کھودے گئے اور سترہ ہزار پیڑ لگائے گئے ۔ پیڑوں کے لگانے سے بھی آس پاس کی زمین کی نمی بہت بڑھ جاتی ہے ۔ آج بوڑھے سے بوڑھے کسان کی بھی سمجھ میں آ گیا ہے کہ آپسی سہیوگ بہت اچھی چیز ہے اور وہ کہتا ہے کہ " اگر ہم سب الگ الگ کام کرتے تو اِتنا بڑا کام کبھی پورا نہ کرپاتے ۔"

سوکھا سے ایک ساتھ اور مل کر مورچہ لینے کے کارن کسان ایک دوسرے کے نزدیک آئے اور آپسی نفرت' دل بندی اور بھید بھاؤ کو بھول کر ہمیشہ سے زیادہ ایکتا کے دھاگے میں گتھ گئے ۔ ایک دوسرے کی مدد سے ہی ہر کسان کو فائدہ پہونچا ہے ۔ اسی لئے اب اُن میں دوسروں کی مدد کرنے کا زبردست جذبہ پیدا ہوگیا ہے ۔ پہلے جو کسان کسی کو اپنی کوئی چیز اُدھار دینا پسند نہیں کرتے تھے آج وہ خوشی خوشی اور بڑے اُتساہ سے کھیتی کے اپنے اوزار اور کھاد وغیرہ دوسرے ضرورت مند کسانوں کو دینے کو تیار رہتے ہیں ۔ تنگ شوانگ ہو نام کا ایک ادھیڑ عمر کا کسان ہے ۔ اس کے گاؤں میں اُن لوگوں کو کھاد اور کچھ دھن کی ضرورت تھی جنہیں ابھی حال میں زندگی میں پہلی بار اپنے اپنے کھیت ملے ہیں ۔ اس کسان نے اپنے سور بنا جھجھک بیچ دیئے اور اُس روپیہ سے اِن ساتھیوں کی مدد کی ۔ اِس مثال کا جنتا میں پرچار کیا گیا اور دوسروں نے بھی اِس لیک پر چلنا شروع کر دیا ۔ یہ پرانی کہاوت آج سچ کے ڈھانچے میں ڈھل گئی ہے—" ہم سب ایک کٹمب ہیں ۔"

(1) जहां और जिस हालत में भी पानी मिले उसे सिंचाई के काम में लाया जाय. (2) नए नए कुएं खोदे जाएं. (3) सिंचाई के लिये नई नहरें खोदी जाएं. इस बात पर भी ज़ोर दिया गया कि हर जगह की मुक़ामी हालत को खूब समझा जाए और उस हालत में ही काम को पूरा किया जाय. किसी दूसरे का सहारा तकने के बजाए अपनी ही मेहनत से जनता 'आपसी सहयोग ग्रुप' बना कर सारा काम कर डाले.

पीकिंग सरकार की तरफ़ से सब मुक़ामी सरकारों को हुक्म दिया गया कि वह छोटे मोटे ग़ैर ज़रूरी कामों को छोड़ कर पूरी तरह से इधर लग जाएं और धन से, साइन्सी नाप जोड़ से, इमारती मसाले से और तकनीकी जानकारों से जनता को पूरी मदद दें. सरकारों के अलावा कम्यूनिस्ट पार्टी और जनवादी नौजवान सभा ने गांवों में रहने वाले अपने मेम्बरों से अपील की कि वह कमर बांध कर मुस्तैदी से सूखा के ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ने में लग जाएं और दूसरों के लिये एक मिसाल क़ायम कर दें.

सारे देश में ज़ोरदार कोशिश शुरू हो गई. हर इलाक़े के काम की रिपोर्टों से अख़बार भरे रहते थे. हर हर सूबे, हर हर ज़िले और हर हर गांव में पैदावार को बढ़ाने और सूखे की बला को ख़त्म करने के लिये कमेटियों का संगठन किया गया.

सिर्फ़ हूपे के सूबे में स्टेट बैंक ने चार करोड़ चार लाख अमरीकी डालर किसानों को इस काम के लिये उधार दिये. सरकार और दूसरी कोआपरेटिव संस्थाओं ने किसानों से उनकी बची पैदावार ख़रीद ली ताकि उनको नक़द रक़म मिल जाय. क्यांगसी सूबे में थोड़े ही अरसे में एक करोड़ इक्यासी लाख साठ हज़ार अमरीकी डालरों की क़ीमत की लकड़ी, अन्डे, तम्बाकू और दूसरी चीज़ें सरकार ने किसानों से ख़रीदीं. सिंचाई करने और सूखा को रोकने के लिये औज़ार सरकार ने मुहैया किये. इस तरह सारी चिन्ताओं से छुट्टी पा कर इत्मिनान से किसानों ने काम शुरू किया.

पहले किसान अपने अपने खेत पर ही अपनी अपनी शक्ति के मुताबिक़ अलग अलग काम करते थे. नई सरकार ने उन्हें मिल कर काम करने का उत्साह दिलाया. जिन इलाक़ों को हाल में आज़ादी मिली है उनमें सरकार को कुछ दिक़्क़त का भी सामना करना पड़ा. लोगों के दिमाग़ों में पुराने भ्रम और ख़ुद ग़रज़ी भरी हुई थी. वह मिल कर काम करने को अच्छा नहीं समझते थे. सरकार ने मिसाल क़ायम कर के किसानों का ध्यान इस तरफ़ दिलाया. पूरब सीमान्त में सरकारी दफ़्तरों के नौकर और फ़ौजी सिपाही कुल मिला कर पांच लाख आदमी तालाबों की मरम्मत करने

(1) جہاں اور جس حالت میں بھی پانی ملے اُسے سینچائی کے کام میں لایا جائے (2) نئے نئے کنوئیں کھودے جائیں اور (3) سینچائی کے لئے نئی نہریں کھودی جائیں۔ اس بات پر بھی زور دیا گیا کہ ہر جگہ کی مقامی حالت کو خوب سمجھا جائے اور اُس حالت میں ہی کام کو پورا کیا جائے۔ کسی دوسرے کا سہارا تکنے کے بجائے اپنی ہی محنت سے جنتا 'آپسی سہیوگ گروپ' بناکر سارا کام کر ڈالے۔

پیکنگ سرکار کی طرف سے سب مقامی سرکاروں کو حکم دیا گیا کہ وہ چھوٹے موٹے غیر ضروری کاموں کو چھوڑ کر پوری طرح سے ادھر لگ جائیں اور دھن سے، سائنسی ناپ جوڑ سے، عمارتی مسالے سے اور تکنیکی جانکاروں سے جنتا کو پوری مدد دیں۔ سرکاروں کے علاوہ کمیونسٹ پارٹی اور جن وادی نوجوان سبھا نے گاؤں میں رہنے والے اپنے ممبروں سے اپیل کی کہ وہ کمر باندھ کر مستعدی سے سوکھا کے خلاف لڑائی لڑنے میں لگ جائیں اور دوسروں کے لئے ایک مثال قائم کردیں۔

سارے دیش میں زوردار کوشش شروع ہو گئی۔ ہر علاقے کے کام کی رپورٹوں سے اخبار بھرے رہتے تھے۔ ہر ہر صوبے، ہر ہر ضلع اور ہر ہر گاؤں میں پیداوار کو بڑھانے اور سوکھے کی بلا کو ختم کرنے کے لئے کمیٹیوں کا سنگھٹن کیا گیا۔

صرف ہوپے کے صوبے میں اسٹیٹ بینک نے چار کروڑ چار لاکھ امریکی ڈالر کسانوں کو اس کام کے لئے ادھار دیئے۔ سرکار اور دوسری کوآپریٹو سنستھاؤں نے کسانوں سے اُن کی بچی پیداوار خریدلی تاکہ اُن کو نقد رقم مل جائے۔ کیانگسی صوبے میں تھوڑے ہی عرصے میں ایک کروڑ اکیاسی لاکھ ساٹھ ہزار امریکی ڈالروں کی قیمت کی لکڑی، انڈے، تمباکو اور دوسری چیزیں سرکار نے کسانوں سے خریدیں۔ سینچائی کرنے اور سوکھا کو روکنے کے لئے اوزار سرکار نے مہیا کئے۔ اس طرح ساری چنتاؤں سے چھٹی پاکر اطمینان سے کسانوں نے کام شروع کیا۔

پہلے کسان اپنے اپنے کھیت پر ہی اپنی اپنی شکتی کے مطابق الگ الگ کام کرتے تھے۔ نئی سرکار نے انہیں مل کر کام کرنے کا اُتساہ دلایا۔ جن علاقوں کو حال میں آزادی ملی ہے اُن میں سرکار کو کچھ دقت کا بھی سامنا کرنا پڑا۔ لوگوں کے دماغوں میں پرانے بھرم اور خود غرضی بھری ہوئی تھی۔ وہ مل کر کام کرنے کو اچھا نہیں سمجھتے تھے۔ سرکار نے مثال قائم کر کے کسانوں کا دھیان اس طرف دلایا۔ پورب سیمانت میں سرکاری دفتروں کے نوکر اور فوجی سپاہی کل ملا کر پانچ لاکھ آدمی تالابوں کی مرمت کرنے

चीनी किसानो को 'सूखा' से छुटकारा कैसे मिला ?

चीनी किसानों को ज़मींदारों के दबाव और लूट खसोट से छुटकारा मिल गया है, वह अब अपनी ज़मीन के ख़ुद मालिक बन गए हैं. उनके बचे खुचे सब से बड़े दुश्मन बाढ़, सूखा और कीड़े हैं. बड़ी बड़ी नदियों पर बांध बांध कर और दूसरे साधनों से चीनी सरकार ने बाढ़ को बहुत हद तक क़ाबू में कर लिया है. साथ ही साथ सूखा से छुटकारा दिलाने की कोशिशें की गई हैं और उनके नतीजे भी अच्छे निकले हैं. नई सरकार के आते ही चार हज़ार छै सौ वर्ग मील खेती के लायक़ बिना पानी की ज़मीन की सिंचाई का इन्तज़ाम हो चुका है. सरकार अब ऐसी स्कीमों को सफल बनाने की कोशिश कर रही है जिनसे सूखे का नाम निशान मिट जाएगा.

अब भी जगह जगह हर साल सूखा पड़ जाता है, लेकिन सरकार और किसान न तो बरखा की आस लगाए हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और न इस उम्मीद में वक़्त ख़राब करते हैं कि जब हमारी बड़ी बड़ी स्कीमें में कामयाब हो जाएंगी तो सूखा ख़त्म हो जाएगा. यह बात पूरी तरह से किसानों के दिमाग़ में बैठ गई है कि अगर वह आपसी सहयोग से मिल कर इन मुसीबतों का मुक़ाबला करें तो वह मौजूदा हालत में भी पैदावार बहुत बढ़ा सकते हैं. सन 1951 में बाईस सूबों में सूखा पर जेहाद बोला गया और प्रकृति की तरफ़ से पूरी मुख़ालफ़त होते हुए भी इन सूबों में सन '50 की पैदावार के ऊपर सात फ़ी सदी ग़ल्ला ज़ियादा पैदा किया गया. सन '52 में चीन के कुछ इलाक़ों ख़ासकर दक्खिन पच्छिम चीन में जाड़े में बर्फ़ ठीक से न पड़ा और वक़्त पर बारिश भी न हुई. एक फ़सल बिलकुल ख़तरे में थी. आम जनता ने एक साथ कोशिश की और उस फ़सल को ख़राब होने से बचा लिया.

इस कामयाबी की एक ही कुंजी थी और वह यह कि जनता और सरकार दोनों प्रकृति की लाई मुसीबतों से लड़ने और हर हालत में अपनी पैदावार बढ़ाने पर पूरी तरह डट गए. 8 फ़रवरी को सूखा के ख़िलाफ़ देश भर में लड़ाई छेड़ने का सरकार ने एलान कर दिया. पुराने तजुर्बों को सामने रख कर और लम्बी बहस के बाद इस लड़ाई की योजना तैयार की गई. इस योजना में बताया गया कि समय समय पर जैसी हालत पैदा हो उसका समय की मांग के मुताबिक़ ही मुक़ाबिला किया जाए और हर ख़तरे के लिये लोग तैयार रहें. इस योजना में बताया गया था कि

چینی کسانوں کو 'سوکھا' سے چھٹکارا کیسے ملا ؟

چینی کسانوں کو زمینداروں کے دباؤ اور لوٹ کھسوٹ سے چھٹکارا مل گیا ہے' وہ اب اپنی زمین کے خود مالک بن گئے ہیں . اُن کے بچے کھچے سب سے بڑے دشمن باڑھ' سوکھا اور کیڑے ہیں . بڑی بڑی ندیوں پر باندھ باندھ کر اور دوسرے سادھنوں سے چینی سرکار نے باڑھ کو بہت حد تک قابو میں کرلیا ہے . ساتھ ہی ساتھ سوکھا سے چھٹکارا دلانے کی کوششیں کی گئی ہیں اور اُن کے نتیجے بھی اچھے نکلے ہیں . نئی سرکار کے آتے ہی چار ہزار چھ سو ورگ میل کھیتی کے لائق بنا پانی کی زمین کی سینچائی کا انتظام ہوچکا ہے . سرکار اب ایسی اسکیموں کو سپھل بنانے کی کوشش کر رہی ہے جن سے سوکھے کا نام نشان مٹ جائے گا .

اب بھی جگہ جگہ ہر سال سوکھا پڑ جاتا ہے' لیکن سرکار اور کسان نہ تو برکھا کی آس لگائے ہاتھ پر ہاتھ دھرے بیٹھے رہتے ہیں اور نہ اِس اُمید میں وقت خراب کرتے ہیں کہ جب ہماری بڑی بڑی اسکیمیں کامیاب ہو جائیں گی تو سوکھا ختم ہو جائے گا . یہ بات پوری طرح سے کسانوں کے دماغ میں بیٹھ گئی ہے کہ اگر وہ آپسی سہیوگ سے مل کر اِن مصیبتوں کا مقابلہ کریں تو وہ موجودہ حالت میں بھی پیداوار بہت بڑھا سکتے ہیں . سن 1951 میں بائیس صوبوں میں سوکھا پر جہاد بولا گیا اور پرکرتی کی طرف سے پوری مخالفت ہوتے ہوئے بھی اِن صوبوں میں سن '50 کی پیداوار کے اوپر سات فیصدی غلہ زیادہ پیدا کیا گیا . سن '52 میں چین کے کچھ علاقوں خاص کر دکھن پچھم چین میں جاڑے میں برف ٹھیک سے نہ پڑا اور وقت پر بارش بھی نہ ہوئی . ایک فصل بالکل خطرے میں تھی . عام جنتا نے ایک ساتھ کوشش کی اور اُس فصل کو خراب ہونے سے بچا لیا .

اِس کامیابی کی ایک ہی کنجی تھی اور وہ یہ کہ جنتا اور سرکار دونوں پرکرتی کی لائی مصیبتوں سے لڑنے اور ہر حالت میں اپنی پیداوار بڑھانے پر پوری طرح ڈٹ گئے . 8 فروری کو سوکھا کے خلاف دیش بھر میں لڑائی چھیڑنے کا سرکار نے اعلان کر دیا . پرانے تجربوں کو سامنے رکھ کر اور لمبی بحث کے بعد اِس لڑائی کی یوجنا تیار کی گئی . اِس یوجنا میں بتایا گیا کہ سمے سمے پر جیسی حالت پیدا ہو اُس کا سمے کی مانگ کے مطابق ہی مقابلہ کیا جائے اور ہر خطرے کے لئے لوگ تیار رہیں . اِس یوجنا میں بتایا گیا تھا کہ

हर निकल आया. मेरे पिता जी खड़े थे. उनके सहारे
बीस बरस की की खड़ी थी और बड़बड़ाये चली जा
अजीब घजा थी इस औरत की. अंग अंग से बनावट
थी. किसीभी भले आदमी को उस से नफ़रत
स्वभाविक था. मैंने तेज़ आंखों से पिता जी की
ा और फिर उस स्त्री की ओर घूरा. पिता जी उससे
क गए. उन्हें मेरे आने से ताज्जुब सा हुआ, इस
में खुशी की जगह दुख की रेखायें झलक रही थीं.
रहे. मैं भी केवल घूरता रहा.

प ही के लड़के हैं बहू जी; बड़े अच्छे हैं. चार साल
घर,आए हैं. इनकी आपाजान ज़िन्दा होतीं……"
ते रामअधीन के आंसू निकल आए और उसकी
भर्रा गई.

न्नाटे में आ गया. मेरा सर चकराने लगा. क्या
न करूं मुझे कुछ सुझाई नहीं पड़ रहा था. मेरी
गई थी, मेरी आपाजान मुझे छोड़ कर चली गईं
मुंह से एक चीख निकली और फिर मैं नहीं जानता
. जब आंख खुली, देखा, रामअधीन पलंग पर
ा कर पंखा कर रहा है. पिता जी असमंजस में दूर
और मेरी नई माता जी उन्हें आदेश दे रही हैं—
को हटाओ यहां से. मैं सौत के जवान लड़के के
रह सकती. दुनिया आखिर क्या कहेगी. जल्दी
रो. या मैं इस घर में रहूँगी या यह……बोलो…
सी रखा है."

जी चुप थे. उनका धर्म संकट मुझसे नहीं देखा
आंसू बहाता चारपाई से उठा. रामअधीन को गले
लिया. दुखी सब भाई भाई हैं. यह भाई चारा तभी
ता है जब सचमुच दोनों दुखी हों. फिर मैंने झुक
ां को सलाम किया और पिता जी को सलाम
धीरे जिधर से आया था उधर ही चल दिया.
भी मुझे नहीं रोका, किसी ने मुझे नहीं बुलाया.
मुड़ कर देखा भी नहीं. चलते चलते मैंने वह ख़त
आपाजान को यह मेरी पहली और आख़िरी चिट्ठी
क्या मालूम था कि मेरी चिट्ठी पाते ही वह दुनिया
गी और मुझे ख़बर भी नहीं होगी. चिट्ठी के सारे
ना से भरी एक कहानी बन गए और मैं पढ़ता
रोता गया.

घर से मैं चार बरस पहले निकला था. उस समय
गुस्सा था, फुरती थी, लगन थी, इरादा था, बहुतों
ता छोड़ था, नीलम थी, कुंवर थी, आपा जान थीं
आज—चार बरस बाद—मेरी आंखों में आंसू
दर्द था, बहुतों की शिकायत थी, यादों की भरमार
लम थी, न कुंवर थी और न आपाजान.

میں باہر نکل آیا . میرے پتا جی کھڑے تھے . اُن کے
سہارے ایک پچیس برس کی اِستری کھڑی تھی اور
بڑبڑائے چلی جا رہی تھی . عجیب دھجا تھی اس عورت
کی . انگ انگ سے بناوٹ ٹپکتی تھی . کسی بھی بھلے
آدمی کو اس سے نفرت ہو جانا سوابھاوک تھا .
میں نے تیز آنکھوں سے پتاجی کی طرف دیکھا اور
پھر اس اِستری کی اور گھورا . پتا جی اُس سے پرے
کھسک گئے . انہیں میرے آنے سے تعجب سا ہوا' اس
آشچریہ میں خوشی کی جگہ دکھ کی ریکھائیں جھلک
رہی تھیں . وہ چپ رہے . میں بھی کیول گھورتا رہا .

" آپ ہی کے لڑکے ہیں بہو جی' بڑے اچھے ہیں .
چار سال کے بعد گھر آئے ہیں . ان کی آپا جان زندہ
ہوتیں......" کہتے کہتے رام ادھین کے آنسو نکل آئے
اور اُسکی آواز بھرا گئی .

میں سناٹے میں آگیا . میرا سر چکرانے لگا . کیا
کروں کیا نہ کروں مجھے کچھ سجھائی نہیں پڑ رہا
تھا . میری ماں مرگئی تھی' میری آپاجان مجھے چھوڑ کر
چلی گئی تھیں . میرے منہ سے ایک چیخ نکلی اور پھر میں
نہیں جانتا کیا ہوا . جب آنکھ کھلی' دیکھا' رام ادھین پلنگ پر
مجھے لٹا کر پنکھا کر رہا ہے . پتاجی اس اسمنجس میں دور
کھڑے ہیں اور میری نئی ماتاجی انہیں آدیش دے رہی ہیں—

" اس کو ہٹاؤ یہاں سے . میں سوت کے جوان لڑکے
کے ساتھ نہیں رہ سکتی . دنیا آخر کیا کہیگی . جلدی
فیصلہ کرو . یا میں اس گھر میں رہونگی یا یہ.......
بولو.......منہ کیوں سی رکھا ہے ."

پتا جی چپ تھے . اُن کا دھرم سنکٹ مجھ سے نہیں
دیکھا گیا . میں آنسو بہاتا چارپائی سے اٹھا . رام ادھین
کو گلے سے لگا لیا . دکھی سب بھائی بھائی ہیں . یہ
بھائی چارا تبھی جاگ اٹھتا ہے جب سچ مچ دونوں
دکھی ہوں . پھر میں نے جھک کر نئی ماں کو سلام کیا
اور پتا جی کو سلام کر دھیرے دھیرے جدھر سے آیا تھا
ادھر ہی چل دیا . کسی نے بھی مجھے نہیں روکا' کسی نے
مجھے نہیں بلایا . میں نے مڑ کر دیکھا بھی نہیں . چلتے
چلتے میں نے وہ خط نکالا . آپا جان کو یہ میری پہلی
اور آخری چٹھی تھی . مجھے کیا معلوم تھا کہ میری
چٹھی پاتے ہی وہ دنیا سے چل دیںگی اور مجھے خبر
بھی نہیں ہوگی . چٹھی کے سارے اکشر ویدنا سے بھری
ایک کہانی بن گئے اور میں پڑھتا گیا اور روتا گیا .

اسی گھر سے میں چار برس پہلے نکلا تھا . اُس سمے
جوش تھا' غصہ تھا' پھرتی تھی' لگن تھی' ارادہ تھا'
بہتوں کو میں نے رونا چھوڑا تھا' نیلم تھی' کنور تھی'
آپا جان تھیں....اور آج—چار برس بعد—میری آنکھوں میں
آنسو تھے' دل میں درد تھا' بہتوں کی شکایت تھی' یادوں کی
بھرمار تھی—نہ نیلم تھی' نہ کنور تھی اور نہ آپا جان .

सफाई थी. ऐसा लगा जैसे कोई इस में जरूर रहता है. मेरी मां के अलावा उनके कमरे में रहने की हिम्मत किसको हो सकती है. सारा सामान सजा रखा था. मालूम हुआ जैसे वह अभी अभी यहां से उठ कर कहीं बाहर गई हों. उनके गहने का बक्स अपनी जगह पर था, रेशमी कपड़े के बक्स कुछ हटे हुए थे. मुझे ऐसा अन्दाज़ा हुआ कि अभी अभी उन्होंने कपड़े बदले हैं. मैंने इतमिनान का सांस लिया. कमरे में इधर उधर चक्कर लगाया. बहुत सी यादें इस कमरे की मेरे मानस पटल पर अंकित हो गई. मैं सोच रहा था कि आपाजान मुझे यहां देख कर चौंक पड़ेंगी. उन्हें बड़ा आश्चर्य होगा..........फिर एक विचार आया कि रामअधीन रोया क्यों, मुझे जवाब दिये बिना चला क्यों गया ? मैंने शंका को दबाने की कोशिश की. हो सकता है कि उसका दिल नीलम और कुंवर की घटना बताते बताते भर आया हो और वह रो पड़ा हो. उद्‌गार के बहाव में हो सकता है उसने मुझे कुछ कहते सुना भी न हो. लेकिन वह चला क्यों गया ? सनकी भी तो है वह. कौन जाने क्या मन में आ गई. मैं सोचता रहा. और कमरे में टहलता रहा. यकायक एक चिट्ठी मैंने फ़र्श पर पड़ी देखी. किसी ने सफाई करते समय सैंत कर रखी यह चिट्ठी गिरा दी थी. लिखावट मेरी थी. मैंने उसे खोला और पढ़ने लगा. मैं पढ़ कर दुखी हो रहा था. मैंने यह चिट्ठी न जाने किस मुद्रा में लिखी थी. आपाजान को बहुत ताने सुनाये थे. इस चिट्ठी को पढ़ कर उन्हें जो दुख हुआ होगा उसका अनुमान मैं करने लगा. मैंने सोचा कि आपाजान इसे बचपना समझ कर टाल देंगी. मैं इसी उधेड़ बुन में खड़ा बार बार चिट्ठी पढ़ रहा था. आज न जाने क्यों इस चिट्ठी ने मुझे मोह लिया था. मैं आस पास की चीज़ों से बे ख़बर सा हो गया. पैरों की चाप ने यकायक मुझे चौंका दिया. मैंने अनुमाल किया कि आपाजान आ रही हैं. जल्दी से मैंने चिट्ठी जेब में छुपा ली. आपाजान को चौंकाने की कोशिश में दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा. अभी दरवाज़े के क़रीब भी न पहुंचा था कि एक आवाज़ सुनाई दी—

"यह तुम्हारा कमरा है. गहने तुम्हारे इसमें हैं, कपड़े भी इसी में बन्द हैं. सन्दूक़ों में देख लो. ज़रूरत होगी तो कपड़े और आ जायंगे." यह मेरे पिता जी की आवाज़ थी.

मैं इन वाक्यों को मिला कर पूरा अर्थ समझने की कोशिश करते हुए आगे बढ़ रहा था. और सब को विस्मित करने का विचार मेरे दिमाग़ में घूम रहा था. यकायक दरवाज़े पर एक चीख सुनाई दी. ऐसा लगा जैसे कोई अन्दर आ रहा हो और मुझे यहां देख कर चीख कर भागा हो. एक औरत तेज़ आवाज़ से हांप हांप कर कह रही थी—

"यह कौन चोर है मेरे कमरे में. पकड़ लो इसे, कमीना, घर अकेला देख कर घुस आया है.........."

صفائی تھی۔ ایسا لگا جیسے کوئی اس میں ضرور رہتا ہے۔ میری ماں کے علاوہ اُن کے کمرے میں رہنے کی ہمت کس کو ہو سکتی ہے۔ سارا سامان سجا رکھا تھا۔ معلوم ہوا جیسے وہ ابھی ابھی یہاں سے اُٹھ کر باہر گئی ہوں۔ اُن کے گہنے کا بکس اپنی جگہ پر تھا۔ ریشمی کپڑے کے بکس کچھ ہٹے ہوئے تھے۔ مجھے ایسا اندازہ ہوا کہ ابھی ابھی اُنہوں نے کپڑے بدلے ہیں۔ میں نے اطمینان کا سانس لیا۔ کمرے میں ادھر اُدھر چکر لگایا۔ بہت سی یادیں اس کمرے کی میرے مانس پٹل پر انکت ہو گئیں۔ میں سوچ رہا تھا کہ آپا جان مجھے یہاں دیکھ کر چونک پڑیں گی۔ اُنہیں بڑا آشچریہ ہوگا.........پھر ایک وچار آیا کہ رام ادھین رویا کیوں، مجھے جواب دئے بنا چلا کیوں گیا ؟ میں نے شنکا کو دبانے کی کوشش کی۔ ہو سکتا ہے کہ اُس کا دِل نیلم اور کنور کی گھٹنا بتاتے بتاتے بھر آیا ہو اور وہ رو پڑا ہو۔ اُدگار کے بہاؤ میں ہو سکتا ہے اُس نے مجھے کچھ کہتے سنا بھی نہ ہو۔ لیکن وہ چلا کیوں گیا ؟ سنکی بھی تو ہے وہ۔ کون جانے کیا من میں آ گئی۔ میں سوچتا رہا اور کمرے میں ٹہلتا رہا۔ یکایک ایک چٹھی میں نے فرش پر پڑی دیکھی۔ کسی نے صفائی کرتے سمے سینت کر رکھی یہ چٹھی گرا دی تھی۔ لکھاوٹ میری تھی۔ میں نے اُسے کھولا۔ اور پڑھنے لگا۔ میں پڑھ کر دکھی ہو رہا تھا۔ میں نے یہ چٹھی نہ جانے کس مدرا میں لکھی تھی۔ آپا جان کو بہت طعنے سنائے تھے۔ اِس چٹھی کو پڑھ کر اُنہیں جو دکھ ہوا ہوگا اُس کا انومان میں کرنے لگا۔ میں نے سوچا کہ آپا جان اِسے بچپنا سمجھ کر ٹال دیں گی۔ میں اسی اُدھیڑ بن میں کھڑا بار بار چٹھی پڑھ رہا تھا۔ آج نہ جانے کیوں اِس چٹھی نے مجھے موہ لیا تھا۔ میں آس پاس کی چیزوں سے بے خبر سا ہو گیا۔ پیروں کی چاپ نے یکایک مجھے چونکا دیا۔ میں نے انومان کیا کہ آپا جان آ رہی ہیں۔ جلدی سے میں نے چٹھی جیب میں چھپا لی۔ آپا جان کو چونکانے کی کوشش میں دروازے کی طرف بڑھا۔ ابھی دروازے کے قریب بھی نہ پہونچا تھا کہ ایک آواز سنائی دی—

"یہ تمہارا کمرہ ہے۔ گہنے تمہارے اس میں ہیں، کپڑے بھی اسی میں بند ہیں۔ صندوقوں میں دیکھ لو۔ ضرورت ہوگی تو کپڑے اور آ جائیں گے۔" یہ میرے پتا جی کی آواز تھی۔

میں اِن واکیوں کو ملا کر پورا ارتھ سمجھنے کی کوشش کرتے ہوئے آگے بڑھ رہا تھا۔ اور سب کو وسمت کرنے کا وچار میرے دماغ میں گھوم رہا تھا۔ یکایک دروازے پر ایک چیخ سنائی دی۔ ایسا لگا جیسے کوئی اندر آ رہا ہو اور مجھے یہاں دیکھ کر چیخ کر بھاگا ہو۔ ایک عورت تیز آواز سے ہانپ ہانپ کر کہہ رہی تھی—

"یہ کون چور ہے میرے کمرے میں۔ پکڑ لو اِسے، کمینہ، گھر اکیلا دیکھ کر گھس آیا ہے.........."

इसके साथ रोया हूँ और न कभी उसके साथ हंसा हूँ. वह हमारा अनन्नदाता है फिर भी हमसे छोटा है, नीच है. यही तो इस युग की रीति है. मैंने फिर भी उसका दुख नहीं पूछा. झट से बोला—"कुंवर का क्या हाल है ?"

"आपके जाते ही वह बे क़ाबू हो गई. सिरी आपने ही बनवा कर दी थी. जब आप चले गए मैं सिरी पिलाने गया. वह बमक उठी. सिरी को उसने मुंह नहीं लगाया. दाना भी उसने नहीं खाया. कई दिन तक भूकी और प्यासी बंधी रही. एक रोज़ रस्सी तुड़ा कर खुद ही भाग गई. बहुत कोशिश हुई पर किसी के क़ब्ज़े में नहीं आई. केवल शाम को घर आती थी, चारों तरफ़ चक्कर लगाती थी और ज़ोर ज़ोर से हिनहिनाती थी. बड़े भैया के कहने पर आप की आपा जान ने एक दिन खिड़की से उसे चुमकारा. वह पास आ गई. जो घोड़ी किसी के पकड़ में न आई, जिस पर हाथ रखते बड़े बड़े सवार कांपते थे, वह आपाजान के बग़ल में खड़ी हो गई. सचमुच कहता हूँ वह उस समय रो रही थी. आपाजान को भी आप की याद हो आई, कुंवर को पकड़ लिया गया. तीन चार रोज़ में वह बिक गई. जाते जाते हिन हिना रही थी और मुड़ मुड़ कर देखती जाती थी. आपाजान बाद में बहुत रोईं लेकिन जो कुछ होना था वह हो कर रहा."

"कुंवर बिक गई, मेरी हर चीज़ से नफ़रत है." मैंने ठंडी सांस भरते हुए कहा.

कुंवर एक ज़िन्दा चित्र बन कर मेरे सामने खड़ी हो गई. बीते दिनों की घटनायें एक के बाद दूसरी दिमाग़ में घूमने लगीं. कुंवर मेरे सामने नहीं थी. मुझे उसका पता मालूम नहीं था. मैं उसके पास नहीं जा सकता था, प्यार से उसके अयाल को सहला नहीं सकता था और स्नेह को ज़ाहिर करने के लिये वह आंखें झुका कर अपना सर मेरे कपड़ों से नहीं रगड़ सकती थी. फिर भी हम दोनों एक साथ थे. कुछ छनों के लिये उसकी वेदना से भरी हिनहिनाहट मुझे सुनाई देने लगी और मैं कुंवर को उसी दुनिया में तसल्ली देने लगा.

"नीलम मर गई, कुंवर बिक गई." मैंने एक लम्बी ठंडी सांस ली—"आपाजान कहां हैं ?"

रामअधीन रो पड़ा. आंसू के दो क़तरे उसकी आंखों से निकल कर गालों पर बह चले. मैं कुछ नहीं समझा. मैंने फिर पूछा—"आपाजान कहां हैं, क्या कहीं घूमने गई हैं ?"

रामअधीन सवाल करते करते वहां से चला गया.

मैं व्याकुल था ही दिल की धड़कन और तेज़ हो गई. हैरत से मैं उसे जाते हुए देखता रहा. शून्यता में मैं कुछ आंकने की कोशिश करने लगा. मैं कुछ देर वहीं खड़ा रहा. फिर व्याकुल हुआ अपनी माँ के कमरे में गया. वहां काफ़ी

اُس کے ساتھ رویا ہوں اور نہ کبھی اُس کے ساتھ ہنسا ہوں. وہ ہمارا ان داتا ہے پھر بھی ہم سے چھوٹا ہے' نیچ ہے. یہی تو اس یگ کی ریت ہے . میں نے پھر بھی اُس کا دکھ نہیں پوچھا جھٹ سے بولا—" کنور کا کیا حال ہے؟"

" آپکے جاتے ہی وہ بے قابو ہو گئی . سری آپ ہی بنوا کر دی تھی . جب آپ چلے گئے میں سری پلانے گیا . وہ بمک اُٹھی. سری کو اس نے منہ نہیں لگایا . دانا بھی اُس نے نہیں کھایا. کئی دن تک بھوکی اور پیاسی بندھی رہی . ایک روز رسی تڑا کر خود ہی بھاگ گئی . بہت کوشش ہوئی پر کسی کے قبضے میں نہیں آئی . کیول شام کو گھر آتی تھی' چاروں طرف چکر لگاتی تھی اور زور زور سے ہنہناتی تھی . بڑے بھیا کے کہنے پر آپکی آپا جان نے ایک دن کھڑکی سے اُسے چمکارا . وہ پاس آ گئی . جو گھوڑی کسی کے پکڑ میں نہ آئی' جس پر ہاتھ رکھتے بڑے بڑے سوار کانپتے تھے' وہ آپا جان کے بغل میں کھڑی ہوگئی . سچ سچ کہتا ہوں وہ اُس سمے رو رہی تھی . آپا جان کو بھی آپکی یاد ہو آئی' کنور کو پکڑ لیا گیا . تین چار روز میں وہ بک گئی. جاتے جاتے ہنہنا رہی تھی اور مڑ مڑ کر دیکھتی جاتی تھی. آپا جان بعد میں بہت روئیں لیکن جو کچھ ہونا تھا وہ ہو کر رہا ."

" کنور بک گئی' میری ہر چیز سے نفرت ہے ." میں نے ٹھنڈی سانس بھرتے ہوئے کہا .

کنور ایک زندہ چتر بن کر میرے سامنے کھڑی ہوگئی. بیتے دنوں کی گھٹنائیں ایک کے بعد دوسری دماغ میں گھومنے لگیں . کنور میرے سامنے نہیں تھی . مجھے اس کا پتہ معلوم نہیں تھا . میں اُس کے پاس نہیں جا سکتا تھا' پیار سے اس کے ایال کو سہلا نہیں سکتا تھا اور اسنیہہ کو ظاہر کرنے کے لئے وہ آنکھیں جھکا کر اپنا سر میرے کپڑوں سے نہیں رگڑ سکتی تھی . پھر بھی ہم دونوں ایک ساتھ تھے . کچھ چھنوں کے لئے اُس کی ویدنا سے بھری ہنہناہٹ مجھے سنائی دینے لگی اور میں کنور کو اُسی دنیا میں تسلی دینے لگا .

" نیلم مر گئی' کنور بک گئی." میں نے ایک لمبی ٹھنڈی سانس لی—" آپا جان کہاں ہیں ؟"

رام ادھین رو پڑا . آنسو کے دو قطرے اُسکی آنکھیں سے نکل کر گالوں پر بہ چلے . میں کچھ نہیں سمجھا . میں نے پھر پوچھا—" آپا جان کہاں ہیں' کیا کہیں گھومنے گئیں ہیں ؟"

رام ادھین سوال کرتے کرتے وہاں سے چلا گیا .

میں بیاکل تھا ہی دل کی دھڑکن اور تیز ہوگئی. حیرت سے میں اسے جاتے ہوئے دیکھتا رہا. شونیتا میں میں کچھ آنکنے کی کوشش کرنے لگا . میں کچھ دیر وہیں کھڑا رہا . پھر بیاکل ہوا اپنی ماں کے کمرے میں گیا . وہاں کافی

"नीलम को सांप ने डस लिया."

"आं, नीलम को सांप ने डस लिया!" मैंने इस वाक्य को इस तरह दोहराया जैसे मैं ढाड़ें मार कर रो पड़ूंगा. मैं रोया नहीं.

"किस तरह, कहां, किस सांप ने?" मैंने अपने को ठंडा करते हुए कहा.

"बड़े कमरे में एक सांप रहता था न. आप को याद तो होगा. आपने ही उसे दूध पिलाना शुरू किया था. मैंने तो कई बार मना किया. खतरनाक जनावर है. कौन भरोसा. लेकिन आप नहीं माने थे. काले को दूध पिलाने से कहीं उसका कालापन चला जाता है. आप के बाद आपाजान भी रोज़ उसको दूध भिजवाती थीं............उसी कमरे में नीलम ने बच्चा दिया था. बड़े सुन्दर छै बच्चे थे. मैंने भी एक पालने की इच्छा की थी. भला करे उस सांप का ...."

अगर मैं पूरी तरह आपे में न आ गया होता तो रामअधीन की बात को ठंडे दिल से नहीं सुन सकता था और उसे खरी खरी सुना भी देता. लेकिन मैंने पूछा—"सांप ने इस से पहले तो किसी को नहीं डसा. तुम्हारे पैर के नीचे भी कई बार पड़ गया था. वह तो घर का पालतू हो गया था. उसने नीलम को फिर कैसे डस लिया."

"उसे पछतावा तो बहुत हुआ. उसकी फुफकार कमरे में कई दिन तक सुनी गई. वह भैंसे के समान हांपता था. हम सब डर गए थे. तीन चार दिन तक ऐसा ही हुआ. मेरा विचार है कि वह रो रहा था. उसके बाद आज तक वह दिखाई नहीं पड़ा. जहां रोज़ दिखाई पड़ता था अब सालों से सूरत नहीं दिखाई.........जान बूझ कर तो उसने काटा नहीं होगा. कुछ न कुछ ग़लती हो गई है. उसका दूध भी तो बन्द हो गया था......"

रामअधीन अपनी कहे जा रहा था. और मैं कहीं और खो गया था. इनसानों की दुनिया से अलग जानवरों की दुनिया में—नीलम, सांप, कुंवर, सब मेरे सामने लाखों की तादाद में इकट्ठा हो गए. यह मानव के दुख के साथ हैं, उसके सुख के साथ हैं. यह ग़लती पर रोते हैं, सर पटकते हैं......पर इनसान!

रामअधीन मेरे सामने खड़ा था. उसकी कमाई से ही इस घर की रौनक़ है. पर उसका कोई घर हमने बनने नहीं दिया. वह बे खेत किसान है, इस घर का जन्म जन्म से हलवाह. उसकी कमाई खा कर हम सब जवान हुए हैं. पर-उसकी जवानी और बुढ़ापे में कोई फ़र्क़ नहीं हुआ. जैसा वह पैदा हुआ था वैसा ही आज भी है—हाड़ मांस का ठट्ठर. वही रामअधीन मेरे सामने खड़ा था. मैं न कभी

"نیلم کو سانپ نے ڈس لیا."

"آں' نیلم کو سانپ نے ڈس لیا!" میں نے اس واکیہ کو اس طرح دہرایا جیسے میں دھاڑیں مار کر رو پڑوں گا. میں رویا نہیں.

"کس طرح' کہاں' کس سانپ نے؟" میں نے اپنے کو ٹھنڈا کرتے ہوئے کہا.

"بڑے کمرے میں ایک سانپ رہتا تھا نہ. آپکو یاد تو ہوگا. آپ نے ہی اسے دودھ پلانا شروع کیا تھا. میں نے تو کئی بار منع کیا. خطرناک جانور ہے. کون بھروسہ. لیکن آپ نہیں مانے تھے. کالے کو دودھ پلانے سے کہیں اس کا کالا پن چلا جاتا ہے. آپکے بعد آپا جان بھی روز اس کو دودھ بھجواتی تھیں. .... اسی کمرے میں نیلم نے بچہ دیا تھا. بڑے سندر چھ بچے تھے. میں نے بھی ایک پالنے کی اچھا کی تھی. بھلا کرے اس سانپ کا........"

اگر میں پوری طرح آپے میں نہ آ گیا ہوتا تو رام ادھین کی بات کو ٹھنڈے دل سے نہیں سن سکتا تھا اور اسے کھری کھری سنا بھی دیتا. لیکن میں نے پوچھا— "سانپ نے اس سے پہلے تو کسی کو نہیں ڈسا. تمہارے پیر کے نیچے بھی کئی بار پڑ گیا تھا. وہ تو گھر کا پالتو ہوگیا تھا. اس نے نیلم کو پھر کیسے ڈس لیا."

"اسے پچھتاوا تو بہت ہوا. اسکی پھپھکار کمرے میں کئی دن تک سنی گئی. وہ بھینسے کے سمان ہانپتا تھا. ہم سب ڈر گئے تھے. تین چار دن تک ایسا ہی ہوا. میرا وچار ہے کہ وہ رو رہا تھا. اس کے بعد آج تک وہ دکھائی نہیں پڑا. جہاں روز دکھائی پڑتا تھا اب سالوں سے صورت نہیں دکھائی..................جان بوجھکر تو اس نے کاٹا نہیں ہوگا. کچھ نہ کچھ غلطی ہو گئی ہے. اس کا دودھ بھی تو بند ہو گیا تھا......"

رام ادھین اپنی کہے جا رہا تھا. اور میں کہیں اور کھو گیا تھا. انسانوں کی دنیا سے الگ جانوروں کی دنیا میں—نیلم' سانپ' کنور' سب میرے سامنے لاکھوں کی تعداد میں اکٹھا ہوگئے. یہ مانو کے دکھ کے ساتھی ہیں' اس کے سکھ کے ساتھ ہیں. یہ غلطی پر روتے ہیں' سر پٹکتے ہیں.........پر انسان!

رام ادھین میرے سامنے کھڑا تھا. اسکی کمائی سے ہی اس گھر کی رونق ہے پر اس کا کوئی گھر ہم نے بننے نہیں دیا. وہ بے کھیت کسان ہے' اس گھر کا جنم جنم سے ہلواہ. اسکی کمائی کھا کر ہم سب جوان ہوئے ہیں. پر اسکی جوانی اور بڑھاپے میں کوئی فرق نہیں ہوا. جیسا وہ پیدا ہوا تھا ویسا ہی آج بھی ہے—ہاڑ ماس کا ٹھٹھر. وہی رام ادھین میرے سامنے کھڑا تھا. میں نہ کبھی

रही होगी. वह ताज्जुब से खड़ी हो कर मुझे देखेंगी. फिर लपक कर सीने से चिमटा लेंगी. वह मेरा मुंह चूमेंगी—मुझे बड़ा बुरा लगता है. सारा मुंह खराब हो जाता है. पहले भी मेरी उनकी इस बारे में झड़प हो चुकी थी. मैंने कहा था—"अब मैं बच्चा नहीं हूं जो तुम इस तरह मुंह चूम लेती हो." और उन्होंने कहा था—"वह दिन तो आया कि मेरा लाल अपने को जवान समझने लगा. तू कितना ही बड़ा हो जाय. बूढ़ा भी हो जाय. तो भी मेरे लिये बच्चा ही रहेगा." इस हट धर्मी का कोई उत्तर नहीं है—बार बार छाती से लगायेंगी, मैं अब की बार मुंह चूमने पर एतराज़ नहीं करूंगा. मैं उनकी तरफ़ देखूंगा, उनकी आंखों में आंसू होंगे, मेरे देखते ही आंखों ही आंखों उन्हें वह पी जायेंगी. वह मुसकरा देंगी, फिर मुझे छाती से लगायेंगी और कहेंगी—"खाने को नहीं मिलता क्या, बहुत दुबला हुआ रहा है." और मैं कहूँगा—"यह तुम्हारी आदत है आपाजान मैं कितना ही मोटा हो जाऊं पर तुम्हारी नज़र में सदा दुबला ही रहूंगा." और फिर हम दोनों हंस देंगे. आपाजान सारे घर को सर पर उठा लेंगी. आज वह दुनिया की सारी चीजें मुझे खिला देना चाहेंगी.

हर क़दम पर एक नया चित्र सामने खिंचता चला जा रहा थो.

पर यह सारा सपना था. घर में सन्नाटा था. नीलम नहीं थी, कुंवर नहीं थी, आपाजान भी नहीं थीं.

मेरे दिमाग़ में हथौड़े चलने लगे, दिल की धड़कन तेज़ हो गई. चेहरे पर एक उदासी छाने लगी. मैंने आवाज़ें लगाईं. नीलम को पुकारा, कुंवर को पुकारा, हर छन की सहायक मां को पुकारा. कोई जवाब नहीं मिला. जैसे मैं शमशान में खड़ा था. पर यह शमशान नहीं था. यह मेरा घर था, मेरी मां का घर. यहां मैंने जीवन के क़ीमती दिन बिताये थे. मैं न जाने किस सोच में खो गया. दिल क़ाबू में आया तो देखा रामअधीन सामने खड़ा है. मैंने उलझन में पहला प्रश्न यही किया—

"नीलम कहां है, उसकी क्या हालत है?"

वह भौचक्का रह गया. मुझे अपनी मां के बारे में पूछना चाहिये था, घर वालों के बारे में पूछना चाहिये था, रामअधीन की ख़ैरियत पूछनी चाहिये थी, इस भयानक सन्नाटे के सम्बन्ध में पूछ ताछ करनी चाहिये थी. पर मैंने केवल नीलम के विषय में ही पूछा. रामअधीन को मेरे व्योहार से अचंभा हुआ. उस ने तेज़ निगाहों से मुझे घूरा और फिर आंखें नीची कर लीं. मैं उतावला हो रहा था. मुझे और बहुत से सवालों का उत्तर चाहिये था. मैंने फिर पूछा—

"नीलम कहां है, तुम क्या खड़े हो, बोलते क्यों नहीं."

رہی ہوگی' وہ تعجب سے کھڑی ہوکر مجھے دیکھیں گی ۔ پھر لپک کر سینے سے چمٹا لیں گی ۔ وہ میرا منھ چومیں گی—مجھے برا برا لگتا ہے ۔ سارا منھ خراب ہو جاتا ہے ۔ پہلے بھی میری اُن کی اِس بارے میں جھڑپ ہوچکی تھی۔ میں نے کہا تھا—"اب میں بچہ نہیں ہوں جو تم اِس طرح سے منھ چوم لیتی ہو۔" اور اُنہوں نے کہا تھا—"وہ دن تو آیا کہ میرا لال اپنے کو جوان سمجھنے لگا ۔ تو کتنا ہی بڑا ہو جائے' بوڑھا بھی ہو جائے' تو بھی میرے لئے بچہ ہی رہے گا۔" اِس ہٹ دھرمی کا کوئی اُتر نہیں ہے—بار بار چھاتی سے لگائیں گی ۔ میں اب کی بار منھ چومنے پر اعتراض نہیں کروں گا۔ میں اُن کی طرف دیکھوں گا۔ اُن کی آنکھوں میں آنسو ہونگے ۔ میرے دیکھتے ہی آنکھوں ہی آنکھوں اُنہیں وہ پی جائیں گی۔ وہ مسکرا دیں گی ۔ پھر مجھے چھاتی سے لگائیں گی اور کہیں گی—"کھانے کو نہیں ملتا کیا ۔ بہت دبلا ہوا جا رہا ہے۔" اور میں کہوں گا—"یہ تمہاری عادت ہے آپا جان' میں کتنا ہی موٹا ہو جاؤں پر تمہاری نظر میں سدا دبلا ہی رہوں گا۔" اور پھر ہم دونوں ہنس دیں گے ۔ آپا جان سارے گھر کو سر پر اُٹھالیں گی۔ آج وہ دنیا کی ساری چیزیں مجھے کھلا دینا چاہیں گی ۔

ہر قدم پر ایک نیا چتر سامنے کھنچتا چلاجا رہا تھا.

پر یہ سارا سپنا تھا ۔ گھر میں سناٹا تھا ۔ نیلم نہیں تھی' کنور نہیں تھی' آپا جان بھی نہیں تھیں ۔

میرے دماغ میں ہتھوڑے چلنے لگے' دل کی دھڑکن تیز ہوگئی' چہرے پر ایک اُداسی چھانے لگی ۔ میں نے آوازیں لگائیں ۔ نیلم کو پکارا' کنور کو پکارا' ہر چھن کی سہایک ماں کو پکارا ۔ کوئی جواب نہیں ملا ۔ جیسے میں شمشان میں کھڑا تھا ۔ پر یہ شمشان نہیں تھا' یہ میرا گھر تھا' میری ماں کا گھر ۔ یہاں میں نے جیون کے قیمتی دن بتائے تھے ۔ میں نہ جانے کس سوچ میں کھو گیا ۔ دل قابو میں آیا تو دیکھا رام ادھین سامنے کھڑا ہے ۔ میں نے اُلجھن میں پہلا پرشن یہی کیا—

"نیلم کہاں ہے' اُس کی کیا حالت ہے؟"

وہ بھوچکا رہ گیا ۔ مجھے اپنی ماں کے بارے میں پوچھنا چاہئے تھا' گھر والوں کے بارے میں پوچھنا چاہئے تھا' رام ادھین کی خیریت پوچھنی چاہئے تھی' اِس بھیانک سناٹے کے سمبندھ میں پوچھ تاچھ کرنی چاہئے تھی ۔ پر میں نے کیول نیلم کے وشے میں ہی پوچھا ۔ رام ادھین کو میرے بیوہار سے اچنبھا ہوا ۔ اُس نے تیز نگاہوں سے مجھے گھورا اور پھر آنکھیں نیچی کرلیں ۔ میں اُتاولا ہو رہا تھا ۔ مجھے اور بہت سے سوالوں کا اُتر چاہئے تھا ۔ میں نے پھر پوچھا—

"نیلم کہاں ہے' چپ کیا کھڑے ہو' بولتے کیوں نہیں ۔"

भी मैं था. कुंवर के सम्बन्ध में सोचते सोचते मुझे चार बरस पुरानी घटना याद पड़ गई—मैं धर्म द्रोही था, समाज द्रोही था. मैं नीच था क्योंकि मैं 'नीचों' को अपने बराबर का समझता था. मैं नापाक था क्योंकि मैंने अछूत के घर का पक्का खाना खाया था. मैं कुल का कलंक था क्योंकि मैं "नीचों" के बीच में रहता था. मेरे जन्म से मेरे पिता लज्जित थे क्योंकि मैं धर्म के ढोंगा पन्थियों की सख्त आलोचना करता था. मैं निकम्मा था क्योंकि मैं किसी पर अत्याचार नहीं कर सकता था क्योंकि मैं झूट बोल कर, घूस दे कर अफ़सरों की जूती चाट कर किसानों पर रौब नहीं जमा सकता था. और यही बातें मेरा साहस थीं, मेरा आदर्श थीं. लेकिन पिता जी ! एक ज़मींदार थे, केवल एक ज़मींदार, सैकड़ों "नीच असामियों" के स्वामी. मैं उनका बेटा था और वह मेरे पिता. पर हमारे विचार अलग अलग थे, राहें अलग अलग थीं, जीवन के आदर्श अलग अलग थे. जब भी विचार और नाते की टक्कर होती है, अगर वह सही अर्थों में टक्कर होती है तो सदा नाते की हार होती है. नाता भी एक विचार ही है. जब तक देव समझो तो देव नहीं तो पत्थर ! मेरे पिता ने मुझे घर से निकाल दिया. मैं घर छोड़ कर जा रहा था. कुंवर थान पर बंधी थी. भाषाएं चाहे अलग अलग हों पर भावना वह भाषा है जिसे हर मानव समझ लेता है, जानवर भी समझ लेते हैं, शायद मनुष्य से अधिक उन्हें भावना का आदर है. मुझे गुस्से में जाते देख कर कुंवर सब कुछ समझ गई थी वह ज़ोर ज़ोर से हिनहिनाने लगी थी, वह मुझे पुकार रही थी, गुस्से का कारन मालूम करना चाहती थी. मैंने ध्यान नहीं दिया. उसने टाप मारने शुरू कर दिये, यह इस बात की मांग थी कि मुझे सारी घटना उसे समझानी चाहिये. मैं आवेश में था, मुझे उस समय किसी बात का ख्याल नहीं था. कोमल भावनायें दब गईं थीं और क्रोध की जीत हो गई थी. मैं उसे हिनहिनाता, टाप मारता छोड़ कर चला आया था. उसने मुझे क्या समझा होगा ? आज वह मुझ से शिकायत करेगी.

नीलम की भौंक और कुंवर की हिनहिनाहट सुन कर आपाजान अपने कमरे से निकल आयेंगी. मां भी कितना प्यारा शब्द है. दुख में साथ, मुसीबत में सहारा देने वाला. पर इस सहायक को बहुत लोग भूल जाते हैं लेकिन मां ! कभी नहीं भूलती. मुझे विश्वास था कि मेरी मां मेरी याद में पहरों रोई होगी. मैं ही उसका एकलौता बेटा हूँ. जाते ही शिकायत का पिटारा खोल कर कर बैठ जायगी. ऐसा कोई मां नहीं करती. वह तो शिकायत को खून के घूंट पी जाने वाली होती हैं. मेरी मां ऐसा कैसे कर सकती है. नहीं, वह आवाज़ पाते ही बाहर आयेंगी. नीलम मेरे साथ खेल

بھی میں تھا ۔ کنور کے سمبندھ میں سوچتے سوچتے مجھے چار برس پرانی گھٹنا یاد پڑ گئی — میں دھرم دروہی تھا' سماج دروہی تھا. میں نیچ تھا کیونکہ میں 'نیچوں' کو اپنے برابر کا سمجھتا تھا ۔ میں ناپاک تھا کیونکہ میں نے اچھوت کے گھر کا پکا کھانا کھایا تھا ۔ میں کل کا کلنک تھا کیونکہ میں "نیچوں" کے بیچ میں رہتا تھا ۔ میرے جنم سے میرے پتا لججت تھے کیونکہ میں دھرم کے ڈھونگا پنتھیوں کی سخت آلوچنا کرتا تھا ۔ میں نکما تھا کیونکہ میں کسی پر اتیاچار نہیں کرسکتا تھا ۔ میں ناکارا تھا کیونکہ میں جھوٹ بول کر' گھوس دے کر افسروں کی جوتی چاٹ کر کسانوں پر رعب نہیں جما سکتا تھا ۔ اور یہی باتیں میرا ساہس تھیں' میرا آدرش تھیں ۔ لیکن پتا جی ! ایک زمیندار تھے' کیول ایک زمیندار' سیکڑوں "نیچ آسامیوں" کے سوامی ۔ میں اُن کا بیٹا تھا اور وہ میرے پتا. پر ہمارے وچار الگ الگ تھے' راہیں الگ الگ تھیں' جیون کے آدرش الگ الگ تھے. جب بھی وچار اور ناتے کی ٹکر ہوتی ہے' اگر وہ صحیح ارتھوں میں ٹکر ہوتی ہے تو سدا ناتے کی ہار ہوتی ہے. ناتا بھی ایک وچار ہی ہے ۔ جب تک دیو سمجھو تو دیو نہیں تو پتھر ! میرے پتا نے مجھے گھر سے نکال دیا. میں گھر چھوڑ کر جا رہا تھا ۔ کنور تھان پر بندھی تھی ۔ بھاشائیں چاہے الگ الگ ہوں پر بھاونا وہ بھاشا ہے جسے ہر مانو سمجھ لیتا ہے' جانور بھی سمجھ لیتے ہیں' شائد منش سے ادھک انہیں بھاونا کا آدر ہے. مجھے غصے میں جاتے دیکھ کر کنور سب کچھ سمجھ گئی تھی. وہ زور زور سے ہنہنانے لگی تھی' وہ مجھے پکار رہی تھی' غصے کا کارن معلوم کرنا چاہتی تھی ۔ میں نے دھیان نہیں دیا ۔ اُس نے ٹاپ مارنے شروع کردئے. یہ اِس بات کی مانگ تھی کہ مجھے ساری گھٹنا اُسے سمجھانی چاہئے. میں آویش میں تھا' مجھے اُس سمے کسی بات کا خیال نہیں تھا. کومل بھاونائیں دب گئیں تھیں اور کرودھ کی جیت ہوگئی تھی ۔ میں اُسے ہنہناتا' ٹاپ مارتا چھوڑ کر چلا آیا تھا ۔ اُس نے مجھے کیا سمجھا ہوگا ؟ آج وہ مجھ سے شکایت کرے گی ۔

نیلم کی بھونک اور کنور کی ہنہناہٹ سن کر آپا جان اپنے کمرے سے نکل آئیں گی ۔ ماں بھی کتنا پیارا شبد ہے ۔ دکھ میں ساتھ' مصیبت میں سہارا دینے والا ۔ پر اِس سہایک کو بہت لوگ بھول جاتے ہیں ۔ لیکن ماں ! کبھی نہیں بھولتی ۔ مجھے وشواس تھا کہ میری ماں میری یاد میں پہروں روئی ہوگی ۔ میں ہی اُس کا اکلوتا بیٹا ہوں. جاتے ہی شکایت کا پٹارہ کھول کر بیٹھ جائے گی. ایسا کوئی ماں نہیں کرتی. وہ شکایت کو خون کے گھونٹ پی جانے والی ہوتی ہیں. میری ماں ایسا کیسے کرسکتی ہے. نہیں' وہ آواز پاتے ہی باہر آئیں گی. نیلم میرے ساتھ کھیل

चार बरस बाद

(मुजीब रिज़वी)

मैं खिड़की की तरफ़ से घर में घुसा. भयानक सन्नाटा छाया हुआ था. कोई घर में नहीं था. नीलम नहीं थी, कुंवर नहीं थी, आपाजान भी नहीं थीं—बिलकुल सन्नाटा था. आदम न आदमज़ाद. मैं भौंचक्का सा रह गया. चार बरस बाद मैं घर गया था—जहां मैं पैदा हुआ था, बढ़ा था, खेला था. जहां की धूल मेरे रोएं रोएं में मली हुई थी. घर जाने से इनसान ख़ुश क्यों होता है मैं नहीं जानता. जहां आदमी रहने लगे वहीं घर है, वहीं सब कुछ है. परन्तु अपने जन्मस्थान को जाते समय जो ख़ुशी होती है वह दूसरी जगह जाते समय क्यों नहीं ? मेरा दिल गद गद था. मैं फूला नहीं समा रहा था. मैं अपने घर जा रहा था. अपनी मां से मिलने. नीलम से. कुंवर से भेंट करने. मुझे इन सब की यादें सदा आती रहती थीं लेकिन इस समय न जाने क्यों याद ने कौतूहलता पैदा कर के मेरे मन में बेचैनी पैदा कर दी थी. मैं चाहता था कि ज़मीन खिंच जाय और मैं तुरन्त घर पहुंच जाऊं. रास्ते भर मैं तरह तरह के सपने देखता जा रहा था. आशा और ताज्जुब के हज़ारों रंगीन महल मैंने बना डाले थे. मैं सोच रहा था—घर पहुंच कर चुपके से खिड़की के रास्ते अन्दर घुस जाऊंगा. अन्दर पहुंचते ही नीलम की भौंक शुरू हो जायगी. वह फटी फटी आंखों से मेरी तरफ़ देखेगी और रह रह कर भौंक पड़ेगी. ठहरेगी, चारों तरफ़ चक्कर लगायेगी और फिर भौंकेगी. मैं कहूँगा—"नीलम, नीलम, पहचाना नहीं तूने. मैं हूँ, अरे मैं हूँ." वह रुक कर जैसे मेरी बात सुनने और समझने की कोशिश करेगी, मैं मुसकाऊंगा. फिर वह मेरे पास आयगी, पर डरते डरते, सहमे सहमे और बीच बीच में भौंकते हुए. वह बहुत ही नज़दीक आ जायगी. पूंछ फटकने लगेगी. मेरा पैर चाटने लगेगी. वह मुझे पहचान जायगी. मैं उसकी तरफ़ देखूंगा. उसकी आंखों में आंसू होंगे, शिकायत के आंसू. मैं कहूँगा—"बिगड़ गई पगली, मैं अब तुझे अकेला नहीं छोड़ूंगा, साथ ले चलूंगा." वह उछल पड़ेगी. अपने दोनों पैर मेरे ऊपर रख कर मेरे हाथ चाटने की कोशिश करेगी—नीलम की भौंक सुनकर कुंवर ज़ोर ज़ोर से हिनहिनायगी. मैं आवाज़ दूँगा—"कुंवर, कुंवर." और कुंवर टाप मारना शुरू कर देगी. वह मेरी आवाज़ पहचान जायगी. वह मुझे कभी नहीं भूल सकती. मैंने बचपन से उसे पाला था. उसको रोटियां खिलाई थीं, उसे दाना खिलाया था. उसका मालिक भी मैं था, सवार भी मैं था और साईस

چار برس بعد

(مجیب رضوی)

میں کھڑکی کی طرف سے گھر میں گھسا . بھیانک سناٹا چھایا ہوا تھا . کوئی گھر میں نہیں تھا . نیلم نہیں تھی کنور نہیں تھی' آپا جان بھی نہیں تھیں— بالکل سناٹا تھا. آدم نہ آدمزاد . میں بھونچکا سا رہ گیا . چار برس بعد میں گھر گیا تھا—جہاں میں پیدا ہوا تھا' بڑھا تھا' کھیلا تھا . جہاں کی دھول میرے روئیں روئیں میں ملی ہوئی تھی. گھر جانے سے انسان خوش کیوں ہوتا ہے میں نہیں جانتا . جہاں آدمی رہنے لگے وہیں گھر ہے' وہیں سب کچھ ہے . پر اپنے جنم استھان کو جاتے سمے جو خوشی ہوتی ہے وہ دوسری جگہ جاتے سمے کیوں نہیں؟ میرا دل گد گد تھا' میں پھولا نہیں سما رہا تھا . میں اپنے گھر جا رہا تھا' اپنی ماں سے ملنے' نیلم سے' کنور سے بھینٹ کرنے . مجھے ان سب کی یادیں سدا آتی رہتی تھیں . لیکن اس سمے نہ جانے کیوں یاد نے کوتوہلتا پیدا کرکے میرے من میں بےچینی پیدا کردی تھی. میں چاہتا تھا کہ زمین کھنچ جائے اور میں ترنت گھر پہنچ جاؤں . راستے بھر میں طرح طرح کے سپنے دیکھتا جا رہا تھا . آشا اور تعجب کے ہزاروں رنگین محل میں نے بنا ڈالے تھے . میں سوچ رہا تھا—گھر پہنچ کر چپکے سے کھڑکی کے راستے اندر گھس جاؤں گا . اندر پہنچتے ہی نیلم کی بھونک شروع ہو جائے گی. وہ پھٹی پھٹی آنکھوں سے میری طرف دیکھے گی اور رہ رہ کر بھونک پڑے گی . ٹھہرے گی' چاروں طرف چکر لگائے گی اور پھر بھونکے گی . میں کہوں گا—"نیلم' نیلم' پہچانا نہیں تونے' میں ہوں' ارے میں ہوں." وہ رک کر جیسے میری بات سننے اور سمجھنے کی کوشش کرے گی. میں مسکاؤں گا . پھر وہ میرے پاس آئے گی' پر ڈرتے ڈرتے' سہمے سہمے اور بیچ بیچ میں بھونکتے ہوئے . وہ بہت ہی نزدیک آ جائے گی' پونچھ پھٹکنے لگے گی' میرا پیر چاٹنے لگے گی . وہ مجھے پہچان جائے گی . میں اس کی طرف دیکھوں گا. اس کی آنکھوں میں آنسو ہونگے' شکایت کے آنسو . میں کہونگا—"بگڑ گئی پگلی' میں اب تجھے اکیلا نہیں چھوڑوں گا' ساتھ لے چلوں گا." وہ اچھل پڑے گی. اپنے دونوں پیر میرے اوپر رکھ کر میرے ہاتھ چاٹنے کی کوشش کرے گی—نیلم کی بھونک سن کر کنور زور زور سے ہنہنائے گی. میں آواز دوں گا—"کنور' کنور." اور کنور ٹاپ مارنا شروع کر دے گی . وہ میری آواز پہچان جائے گی. وہ مجھے کبھی نہیں بھول سکتی . میں نے بچپن سے اسے پالا تھا . اس کو روٹیاں کھلائی تھیں' اسے دانا کھلایا تھا . اس کا مالک بھی میں تھا' سوار بھی میں تھا اور سائیس

Phrenology और Phrenological से खोपड़ियात और खोपड़ियाती

Semantics और Semantic से अर्थयात और अर्थयाती

Semasialogy और Semasiological से अर्थयात और अर्थयाती

Sexological और Sexology से जिन्सयात और जिन्सयाती

Technology और Technological से टैकनिकियात और टैकनिकियाती

Teratology और Teratological से मोजज़ियाता और मोजज़ियाता

Thermological और Thermology से गरमियात और गरमियाती

Tricology और Tricological से बालियात और बालियाती

Zoology और Zoological से जानवरयात और जानवरयाती

इन मिसालों ही से हम समझ सकते हैं कि इस लेख माला में भाषा का मसला और हिन्दुस्तानी शब्दियात के क्या मानी हैं ? शब्द यानी लफ़्ज़ के साथ 'यात' लगाने से शब्दयात बनता है जिस से मुराद इल्म है जिसमें शब्दों को बनाने, संवारने, ढालने, गढ़ने और समझने समझाने से बहस की जाती है.

जो लोग हिन्दुस्तानी से कपट रखते हों, हिन्दुस्तानी को ज़िन्दा रहने और पनपने का मौक़ा ही न देना चाहते हों, जो मन माने तौर पर हिन्दुस्तानी को हिन्दी या उरदू समझते हों या जो मुख़्तलिफ़ ज़बानों से ताल्लुक़ रखने वाले लफ़्ज़ों या लफ़्ज़ी जोड़ों से मिलवां और जुड़वां लफ़्ज़ों के ख़िलाफ़ हों वह शब्दियात का यह अर्थ समझ लें. वह इल्म जिस में लफ़्ज़ों को बिगाड़ने, उनके मानी मतलब को तोड़ कर भयानक इस्तलाहें बनाने, उनको उल्टा सीधा समझा कर विद्या की आड़ लेने से बहस की जाती है. अगर इस से हमारे मुख़ालिफ़ों का दिल ठंडा हो सकता है तो उन्हें ख़ुश हो लेने दीजिये. मैं जानता हूँ कि मेरे कारन बाज़ उरदू के हामियों और हिन्दी प्रेमियों को दुख पहुंचा है. मेरी बदौलत वह थोड़े बहुत ख़ुश हो लें तो मेरे मन का बोझ कुछ तो हलका होगा.

Phrenology اور Phrenological سے کھوپڑیات اور کھوپڑیاتی

Semantics اور Semantic سے ارتھیات اور ارتھیاتی

Semasiology اور Semasiological سے ارتھیات اور ارتھیاتی

Sexology اور Sexological سے جنسیات اور جنسیاتی

Technology اور Technological سے تیکنیکیات اور تیکنیکیاتی

Teratology اور Teratological سے موجزیات اور موجزیاتی

Thermology اور Thermological سے گرمیات اور گرمیاتی

Tricology اور Tricological سے بالیات اور بالیاتی

Zoology اور Zoological سے جانوریات اور جانوریاتی

ان مثالوں ہی سے ہم سمجھ سکتے ہیں کہ اس لیکھ مالا میں بھاشا کا مسئلہ اور ہندستانی شبدیات کے کیا مانی ہیں ؟ شبد یانی لفظ کے ساتھ 'یات' لگانے سے شبدیات بنتا ہے جس سے مراد وہ علم ہے جس میں شبدوں کو بنانے، سنوارنے، ڈھالنے، گڑھنے اور سمجھنے سمجھانے سے بحث کی جاتی ہے ۔

جو لوگ ہندستانی سے کپٹ رکھتے ہوں، ہندستانی کو زندہ رہنے اور پنپنے کا موقا ہی نہ دینا چاہتے ہوں، جو من مانے طور پر ہندستانی کو ہندی یا اردو سمجھتے ہوں یا جو دو مختلف زبانوں سے تعلق رکھنے والے لفظوں یا لفظی جوڑوں سے ملواں اور جڑواں لفظوں کے خلاف ہوں وہ شبدیات کا یہ ارتھ سمجھ لیں ۔ وہ علم جس میں لفظوں کو بگاڑنے، ان کے مانی مطلب کو توڑ کر بھیانک اصطلاحیں بنانے، ان کو الٹا سیدھا سمجھا کر ودیا کی آڑ لینے سے بحث کی جاتی ہے ۔ اگر اس سے ہمارے مخالفوں کا دل ٹھنڈا ہو سکتا ہے تو انہیں خوش ہو لینے دیجئے ۔ میں جانتا ہوں کہ میرے کارن باز اردو کے حامیوں اور ہندی پریمیوں کو دکھ پہنچا ہے ۔ میری بدولت وہ تھوڑے بہت خوش ہو لیں تو میرے من کا بوجھ کچھ تو ہلکا ہوگا ۔

Ichthyological के लिये मछलियाती
Linguistics " भाषियाती
Ornithological " पंछियाती
Orthographic " लिखाइयाती
Sociologial " समाजियाती
Statistical " गिनतियाती

इसी तरीक़े पर

Acousutic और Acosustics से आवाज़ियात और आवाज़ियाती

Aesthetic और Aesthetics से सुन्दरियात और सुन्दरियाती

Bacteriologoy और Bacteriological से जरासीमियात और जरासीमियाती

Biology और Biological से जीवनयात और जीवनयाती

Cosmalogy और Cosmologicol से संसारियात और संसारियाती

Genealogy और Genealogical से कुटुम्बियात और कुटुम्बियाती

Herpetology और Herpetological से रींगियात और रींगयाती

Mineralogy और Mineralogical से धातियात और धातियाती

Mythology और Mythological से देवताइयात और देवताइयाती.

Odontology और Odontological से दांन्तियात और दांतियाती

Ophiology और Ophiological से सांपियात और सांपियाती

Orology और Orological से पहाड़ियात और पहाड़ियाती

Orthopaedics और Orthopaedic से हड्डियात और हड्डियाती

Otorhinolaryngology और Otorhinolaryngological से कान नाक हलक़ियात और कान नाक हलक़ियाती

Pathology और Pathological से रोगयात और रोगयाती

Petrology और Petrological से पत्थरयात और पत्थरयाती

Ichthyological کے لئے مچھلیاتی
Linguistics " بھاشیاتی
Ornithological " پنچھیاتی
Orthographic " لکھائیاتی
Sociological " سماجیاتی
Satistical " گنتیاتی

اسی تریقے پر

Acoustics اور Acoustic سے آوازیات اور آوازیاتی

Aesthetics اور Aesthetic سے سندریات اور سندریاتی

Bacteriology اور Bacteriological سے جراثیمیات اور جراثیمیاتی

Biology اور Biological سے جیونیات اور جیونیاتی

Cosmology اور Cosmological سے سنساریات اور سنساریاتی

Genealogy اور Genealogical سے کٹمبیات اور کٹمبیاتی

Herpetology اور Herpetological سے رینگیات اور رینگیاتی

Mineralogy اور Mineralogical سے دھاتیات اور دھاتیاتی

Mythology اور *Mythological* سے دیوتائیات اور دیوتائیاتی

Odontology اور Odontological سے دانتیات اور دانتیاتی

Ophiology اور Ophiological سے سانپیات اور سانپیاتی

Orology اور Orological سے پہاڑیات اور پہاڑیاتی

Orthopaedics اور Orthopaedic سے ہڈیات اور ہڈیاتی

Otorhinolaryngology اور *Otorhinolaryngological* سے کان ناک حلقیات اور کان ناک حلقیاتی

Pathology اور Pathological سے روگیات اور روگیاتی

Petrology اور Petrological سے پتھریات اور پتھریاتی

के लिये इस्तलाहों के दो अलग अलग Set बन गये हैं. अगर आप इल्मी ज़बान की हैसियत से उरदू को हिन्दी से या हिन्दी को उरदू से अलग रखना चाहते हैं तो इस्तलाहों को संस्कृति हिन्दी या अरबियाना उरदू में तरजुमा करने का मौजूदा झुकाव ठीक है. मगर दोनों भाशाओं को एक करना या ज़ियादा क़रीब लाना है या इन दोनों ज़बानों के होते हुए हमें एक और मिलवां भाशा की ज़रूरत है जो विद्याई ज़बान की हैसियत से काम भी आ सके तो कोई न कोई तरकीब करनी पड़ेगी जिस की वजह से हिन्दी और उरदू दोनों में इस्तेमाल हो सकने वाली इस्तलाहों की तैदाद हज़ारों की हो सके और उसके लिये सब से सफल तरकीब यही है कि हिन्दुस्तानी के संजोगी शब्द बनाये जायें यानी ऐसे शब्द जो न तो सोल्हों आने संस्कृति हों और न सोल्हों आने अरबियाना और या फ़ारसियाना, जैसे—

Astronomy	को आकाश + ईयात के संजोग से		आकाशयात
Electrology	को बिजली + ईयात	,,	बिजलीयात
Ichthyology	को मछली + ईयात	,,	मछलीयात
Linguistics	को भाशा + ईयात	,,	भाशाईयात
Ornithology	को पंछी + ईयात	,,	पंछीयात
Orthography	को लिखाई + ईयात	,,	लिखाईयात
Sociology	को समाज + ईयात	,,	समाजीयात
Statistics	को गिनती + ईयात	,,	गिनतीयात

अगर उरदू में आम तौर पर इस्तेमाल होने वाले लफ़्ज़ों ही से इस्लाहें बनाई जायें तब भी आसानी रहती जैसे—

Astronomy	को आसमानियात कहा जाता न कि		फ़लकियात
Linguistics	को ज़बानियात	,,	लस्सानियात
Phonetics	को आवाज़ियात	,,	सौतियात

क्योंकि करोड़ों हिन्दी दां आसमान, ज़बान और आवाज़ जैसे शब्द समझते हैं. जो लोग कम समझे जाने वाले लफ़्ज़ों से इस्तलाहें बनाते हैं और फ़लकियात या समकियात जैसे लफ़्ज़ों के ज़रिये उरदू को "हिन्दुस्तान की वाहिद क़ौमी ज़बान" बनाने का अरमान रखते हैं, वह बड़ी भारी ग़ल्ती करते हैं.

हिन्दी और उरदू के झगड़े को जाने दीजिये, अगर हमें सचमुच हिन्दुस्तानी को विद्याई भाशा बनाना है तो हमें बहुत से संजोगी शब्द बनाने पड़ेंगे यह असूल इसलिये भी ठीक लगता है कि उसके आधार पर बनाये हुए लफ़्ज़ों की सिफ़ती शकलें या गुन रूप बहुत ही आसानी से बनते हैं जैसे—

Astronomical	के लिये	आसमानियाती
Electrological	,,	बिजलियाती

کے لئے اسطلاحوں کے دو الگ الگ set بن گئے ہیں. اگر آپ اِلمی زبان کی حیثیت سے اُردو کو ہندی یا ہندی کو اُردو سے الگ رکھنا چاہتے ہیں تو اسطلاحوں کو سنسکرتی ہندی یا اربیانہ اُردو میں ترجما کرنے کا موجودا جھکاؤ ٹھیک ہے. مگر دونوں بھاشاؤں کو ایک کرنا زیادا یا قریب لانا ہے یا ان دونوں زبانوں کے ہوتے ہوئے ہمیں ایک اور ملواں بھاشا کی ضرورت ہے جو ودیائی زبان کی حیثیت سے کام بھی آسکے تو کوئی نہ کوئی ترکیب کرنی پڑیگی جس کی وجہ سے ہندی اور اُردو دونوں میں استیمال ہو سکنے والی اسطلاحوں کی تعداد ہزاروں کی ہو سکے اور اس کے لئے سب سے سپھل ترکیب یہی ہے کہ ہندستانی کے سنجوگی شبد بنائے جائیں یانی ایسے شبد جو نہ تو سولہوں آنے سنسکرتی ہوں اور نہ سولہوں آنے اربیانہ اور یا فارسیانہ' جیسے—

Astronomy	کو آکاش + ئیات کے سنجوگ سے		آکاشیات
Electroloyg	کو بجلی + ئیات	,,	بجلیات
Ichthyology	کو مچھلی + ئیات	,,	مچھلیات
Linguistics	کو بھاشا + ئیات	,,	بھاشا ئیات
Ornithology	کو پنچھی + ئیات	,,	پنچھیات
Orthography	کو لکھائی + ئیات	,,	لکھا ئیات
Sociology	کو سماج + ئیات	,,	سماجیات
Statistics	کو گنتی + ئیات	,,	گنتیات

اگر اُردو میں آم طور پر استیمال ہونے والے لفظوں ہی سے اسطلاحیں بنائی جائیں تب بھی آسانی رہتی جیسے—

Astronomy	کو آسمانیات کہا جاتا نہ کہ		فلکیات
Linguistics	کو زبانیات	,,	لسانیات
Phonetics	کو آوازیات	,,	صوتیات

کیونکہ کروڑوں ہندی داں آسمان' زبان اور آواز جیسے شبد سمجھتے ہیں. جو لوگ کم سمجھے جانے والے لفظوں سے اسطلاحیں بناتے ہیں اور فلکیات یا سمکیات جیسے لفظوں کے ذریعے اُردو کو "ہندستان کی واحد قومی زبان" بنانے کا ارمان رکھتے ہیں' وہ بڑی بھاری غلطی کرتے ہیں.

ہندی اور اُردو کے جھگڑے کو جانے دیجئے' اگر ہمیں سچ مچ ہندستانی کو ودیائی بھاشا بنانا ہے تو ہمیں بہت سے سنجوگی شبد بنانے پڑینگے. یہ اصول اِس لئے بھی ٹھیک لگتا ہے کہ اس کے آدھار پر بنائے ہوئے لفظوں کی صفتی شکلیں یا گن روپ بہت ہی آسانی سے بنتے ہیں جیسے—

Astronomical	کے لئے	آسمانیاتی
Electrological	,,	بجلیاتی

(ii) दक्खिन पच्छिम एशिया की वह भाषायें जिन्हें आम तौर पर "इस्लामी ज़बानें"* कहा जाता है.

(iii) तीसरा सर चश्मा पुरानी और नई योरपी भाषायें ख़ास कर उनके अंगरेज़ी रूप, क्योंकि योरप की नई और पुरानी भाषाओं के लफ़्ज़ों से हमें अंगरेज़ी के ज़रिये ही जानकारी हुई है और हम भूल से हज़ारों लातीनी, यूनानी (और कम तैदाद में) फ़्रानसीसी और पुर्तगाली लफ़्ज़ों को अंगरेज़ी समझते हैं.

इन सर चश्मों को ध्यान में रखते हुए ऐसे लफ़्ज़ और इस्तलाहें बनानी चाहिये जिनका सम्बन्ध भांत भांत की भाषाओं से होः नई और पुरानी देसी और परदेसी ताकि भाषा में हर रंगीपन और हिन्दुस्तानियत मौजूद हो.

इसीलिये हिन्दुस्तानी परिभाषा या इस्तलाहयात का एक उसूल तो यह समझा जा सकता है कि अलग अलग भाषाओं से ताल्लुक़ रखने वाले लफ़्ज़ों या लफ़्ज़ी जोड़ों से नये नये शब्द बनाये जायें.

हिन्दुस्तानी शब्दयात का पहला उसूलः अलग अलग लफ़्ज़ी जोड़ों से नए शब्द

इसी उसूल के आधार पर मैंने इतने नये नये लफ़्ज़ बनाये हैं कि उनकी तैदाद बीसियों से ज़ियादा गुज़र चुकी है. मसलन उर्दू में "ईयात" योरपी ज़बानों के Logy या Tics के लिये चल पड़ा है. चुनांचे Statistics को शुमारयात, Geology को अर्ज़ियात, Sociology को उम्रानियात कहते हैं. इन इस्तलाहों के आख़ीरिये यानी Suffixes और असल लफ़्ज़ शुमार, अर्ज़, इम्रान वग़ैरा चूंकि ख़ालिस अरबियाना और उरदूआना हैं, इसीलिये यह इस्तलाहें सोलहों आने उर्दू हो गई हैं. इन्हीं को संस्कृती हिन्दी में गनित शास्त्र, भूमि शास्त्र, समाज शास्त्र कहा जाता है.

'गनितशास्त्र' का उरदू में चलना ऐसे ही नामुमकिन है जैसे 'अर्ज़ीयात' का हिन्दी में चलना. हिन्दी उरदू की फूट इसी वजह से बढ़ती जा रही है क्योंकि हिन्दी और उरदू

* विचाई नज़र कोने से यह नाम—इस्लामी ज़बानें—न तो अच्छा है और न ठीक है. जो भाषायें इस्लाम से सैकड़ों बरस पहले की हों और जिसमें इस्लाम के पहले का मेयारी साहित्य मौजूद हो, उसे "इस्लामी" क्यों कर कहा जा सकता है ? "शरा शरीफ़" इस्लामी है, "क़ुरान मजीद" इस्लामी है, फ़िक़ा और हदीस इस्लामी हैं. मगर "इस्लाम" से पहले की बनी हुई ज़बानें क्यों कर "इस्लामी" हो सकती हैं ? अरबी के अलावा जब फ़ारसी को इस्लामी ज़बान कहा जाने लगा तो कल पश्तो, सिन्धी और पंजाबी को भी इस्लामी ज़बानें कहा जायेगा.

(ii) دکھن پچھم ایشیا کی وہ بھاشائیں جنھیں آم تور پر "اسلامی زبانیں"* کہا جاتا ہے ۔

(iii) تیسرا سرچشمہ پرانی اور نئی یورپی بھاشائیں خاس کر اُن کے انگریزی روپ، کیوں کہ یورپ کی نئی اور پرانی بھاشاؤں کے لفزوں سے ہمیں انگریزی کے زریعے ہی جانکاری ہوتی ہے اور ہم بھول سے ہزاروں لاتینی، یونانی (اور کم تعداد میں) فرانسیسی اور پرتگالی لفزوں کو انگریزی سمجھتے ہیں ۔

اِن سرچشموں کو دھیان میں رکھتے ہوئے ایسے لفز اور اِستلاحیں بنانی چاہئیں جن کا سمبندھ بھانت بھانت کی بھاشاؤں سے ہو: نئی اور پرانی دیسی اور پردیسی تاکہ بھاشا میں ہر رنگی پن اور ہندستانیت موجود ہو ۔

اسی لئے ہندستانی پری بھاشا یا استلاحیات کا ایک اصول تو یہ سمجھا جا سکتا ہے کہ الگ الگ بھاشاؤں سے تعلق رکھنے والے لفزوں یا لفزی جوڑوں سے نئے نئے شبد بنائے جائیں ۔

ہندستانی شبدیات کا پہلا اصول : الگ الگ لفزی جوڑوں سے نئے شبد

اسی اصول کے آدھار پر میں نے اتنے نئے نئے لفز بنائے ہیں کہ اُن کی تعداد بیسیوں سے زیادہ گزر چکی ہے ۔ مثلاً اُردو میں "یات" یورپی زبانوں کے Logy یا Tics کے لئے چل پڑا ہے ۔ چنانچہ Statistics کو شماریات، Geology کو ارضیات، Sociology کو امرانیات کہتے ہیں ۔ اِن استلاحوں کے آخیرئے یانی Suffixes اور اصل لفز شمار، ارض، عمران وغیرہ چوں کہ خالص اربیانہ اور اُردوانہ ہیں اس لئے یہ استلاحیں سولہوں آنے اُردو ہوگئی ہیں ۔ اِن ہی کو سنسکرتی ہندی میں گنت شاستر، بھومی شاستر، سماج شاستر کہا جاتا ہے ۔

'گنت شاستر' کا اُردو میں چلنا ایسے ہی ناممکن ہے جیسے 'ارضیات' کا ہندی میں چلنا ۔ ہندی اُردو کی پھوٹ اِسی وجہ سے بڑھتی جا رہی ہے کیونکہ ہندی اور اُردو

* وچاری نزر کونے سے یہ نام—اسلامی زبانیں—نہ تو اچھا ہے اور نہ ٹھیک ہے ۔ جو بھاشائیں اسلام سے سیکڑوں برس پہلے کی ہیں اور جس میں اسلام سے پہلے کا معیاری ساہتیہ موجود ہو، اُسے "اسلامی" کیوں کر کہا جاسکتا ہے؟ "شرع شریف" اسلامی ہے، "قرآن مجید" اسلامی ہے، فقہ اور حدیث اسلامی ہیں مگر "اسلام" سے پہلے کی بنی ہوئی زبانیں کیوں کر "اسلامی" ہو سکتی ہیں ؟ عربی کے علاوہ جب فارسی کو اسلامی زبان کہا جانے لگا تو کل پشتو، سندھی اور پنجابی کو بھی اسلامی زبانیں کہا جائے گا ۔

हिन्दुस्तानी शब्दियात

(डाक्टर जाफ़र हसन)

हिन्दुस्तानी शब्दयात के असूल मुक़र्रर करने और उन्हें अच्छी तरह समझने के लिये यह जानना और ठीक ठीक महसूस करना ज़रूरी है कि हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी तीन अलग ज़बानें हैं.

"उर्दू यानी हिन्दुस्तानी" कहना और बहरे अहमर, अहदे सासानियां, उल्मा, जोहला, क़सस, मलल, काग़ज़ अबैज़, हेमये सोख़्तनी और अकाबिर सलासा जैसी इस्तलाहें, तरकीबें, लफ़्ज़ और नाम इस्तेमाल बल्कि गवारा करना और उसे हिन्दुस्तानी कहना मुश्रिक को मुसलमान या पोप को सूफ़ी (वेदान्ती) कहना है !

शनिवार, रविवार, सोमवार, चन्द्रवार, मंगलवार, बुधवार, ब्रहस्पतिवार, गुरुवार और शुक्रवार कहना और पहले, दूसरे, तीसरे पर प्रथम, द्वतीय, तृतिय को हमेशा तरजीह देते रहना फिर भी हिन्दी को हिन्दुस्तानी कहना काले और सफ़ेद या पीले और हरे को एक ठहराना है.

हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी तीन अलग अलग रास्ते हैं. जैसे किसी तिराहे से तीन सड़कें, तीन अलग अलग दिशाओं में जाती हैं, उसी तरह अदबी, साइन्सी और विधाई भाषा की हैसियत से हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी तीन अलग अलग रास्ते हैं और हमें तिराहे पर पहुंचते ही फ़ैसला करना होगा कि हम कौनसा रास्ता अख़्तियार करें. ख़ास कर इसलिये कि इन तीनों का फ़र्क़ बराबर बढ़ता जा रहा है.

दावों और असूलों को छोड़ कर हिन्दी प्रेमी सिर्फ़ संस्कृत से या क़रीब क़रीब सौ फ़ी सैकड़ा संस्कृत से इस्तलाहें ले रहे और हिन्दी अपने आप संस्कृतिया रही है. उर्दू के सरचश्मे क़रीब क़रीब सौ फ़ी सैकड़ा अरबी और फ़ारसी हैं. इसके बरअक्स (ख़िलाफ़) हिन्दुस्तानी के तीन बड़े बड़े सर चश्मे हैं.

हिन्दुस्तानी के सर चश्मे

(i) पुरानी और नई हिन्दुस्तानी भाषायें जैसे संस्कृत, प्राकृत, बंगला, पंजाबी, दकनी, गुजराती और सब से बढ़ कर उर्दू और उससे भी ज़ियादा हिन्दी.

هندستانی شبدیات

(ڈاکٹر جافر حسن)

هندستانی شبدیات کے اسول مقرر کرنے اور انہیں اچھی ترہ سمجھنے کے لئے یہ جاننا اور ٹھیک ٹھیک مہسوس کرنا زروری ہے کہ هندی، اُردو اور هندستانی تین الگ الگ زبانیں هیں ۔

"اُردو یانی هندستانی" کہنا اور بحراحمر، عہد ساسانیاں، علما، جہلا، قصص، ملل، کاغذابیض، هیمئہ سوختنی اور اکابرثلاثہ جیسی استلاحیں، ترکیبیں، لفز اور نام استعمال بلکہ گوارا کرنا اور اُسے هندستانی کہنا مشرک کو مسلمان یا پوپ کو سوفی (ویدانتی) کہنا ہے !

شنیوار، رویوار، سوموار، چندروار، منگلوار، بدھوار، برهسپتی وار، گروار اور شکروار کہنا اور پہلے، دوسرے، تیسرے پر پرتھم، دوتیہ، ترتیہ کو همیشا ترجیح دیتے رهنا پھر بھی هندی کو هندستانی کہنا کالے اور سفید یا پیلے اور هرے کو ایک ٹھہرانا ہے ۔

همیں اچھی ترہ سمجھ لینا چاهئے کہ هندی، اُردو اور هندستانی تین الگ الگ راستے هیں ۔ جیسے کسی تراهے سے تین سڑکیں، تین الگ الگ دشاؤں میں جاتی هیں، اُسی ترہ ادبی، سائنسی اور ودھائی بھاشا کی حیثیت سے هندی اُردو اور هندستانی تین الگ الگ راستے هیں اور همیں تراهے پر پہنچتے هی فیصلہ کرنا هوگا کہ هم کونسا راستہ اختیار کریں ۔ خاس کر اِس لئے کہ اِن تینوں کا فرق برابر بڑھتا جا رہا ہے ۔

داؤں اور اسولوں کو چھوڑ کر هندی پریمی سرف سنسکرت سے یا قریب قریب سو فی‌سیکڑہ سنسکرت سے استلاحیں لے رہے اور هندی اپنے آپ سنسکرتیا رهی ہے ۔ اُردو کے سرچشمے قریب قریب سو فی‌سیکڑہ عربی اور فارسی هیں ۔ اِس کے براکس (خلاف) هندستانی کے تین بڑے بڑے سرچشمے هیں ۔

هندستانی کے سرچشمے

(i) پرانی اور نئی هندستانی بھاشائیں جیسے سنسکرت، پراکرت، بنگلہ، پنجابی، دکنی، گجراتی اور سب سے بڑھ کر اُردو اور اُس سے بھی زیادہ هندی ۔

उपनिषद् का असर भी दिखाई पड़ता है. तमिल संत कवियों का प्रभाव कई पदों पर है., अंगरेज़ी के कवि शैली का प्रभाव भी भारती पर पड़ा. महा कवि रवीन्द्र की कुछ कविताओं का अनुवाद भारती ने तमिल में किया था. बंकिम बाबू के वंदे मातरम गीत का उन्होंने पद्य रूप में तमिल में अनुवाद किया है.

महरिशी अरविंद के साथ रहने के कारन उनका प्रभाव भारती पर अधिक पड़ा. एक आलोचक जो भारती के समय के ही थे और जिन्हें भारती और अरविंद के साथ रहने का सौभाग्य मिला था, लिखते हैं कि भारती या तो बोलते थे, या कविता बनाते थे. पर अरविंद मौन रहते थे और बहुत सोचते थे. भारती के वचन चमेली की महक के समान दिमाग़ में घुसने वाले थे, और अरविन्द के वचन कमल के समान खिले हुए और सुन्दर थे. दोनों उदार थे पर संकोची. दोनों में नये विचार फूट पड़ते थे. दोनों की भाषा कविता थी. दोनों खुल कर और ज़ोरों से हंसते थे.

दूसरे एक लेखक के शब्दों में—भारती वीर बनकर पांडचेरी गए और अरविंद के पास रह कर वेदान्ती बनकर बाहर आए.

भारती को पूरी तरह समझने के लिये उनकी रचनाओं को पूरा पढ़ना चाहिये. उनके कई पद्य ऐसे हैं जो धर्म, देश और काल के घेरे को लांघ कर विश्व साहित्य में जगह पाने के लायक़ हैं.

اُپنشد کا اثر بھی دکھائی پڑتا ہے ۔ تمل سنت کویوں کا پربھاؤ کئی پدوں پر ہے ۔ انگریزی کے کوی شیلی کا پربھاؤ بھی بھارتی پر پڑا ۔ مہاکوی رویندر کی کچھ کویتاؤں کا انوواد بھارتی نے تمل میں کیا تھا ۔ بنکم بابو کے بندے ماترم گیت کا اُنہوں نے پد روپ میں تمل میں انوواد کیا ہے ۔

مہا رشی اروند کے ساتھ رہنے کے کارن اُن کا پربھاؤ بھارتی پر ادھک پڑا ۔ ایک آلوچک جو بھارتی کے سمے کے ہی تھے اور جنہیں بھارتی اور اروند کے ساتھ رہنے کا سوبھاگ ملا تھا، لکھتے ہیں کہ بھارتی یا تو بولتے تھے' یا کویتا بناتے تھے ۔ پر اروند مون رہتے تھے اور بہت سوچتے تھے ۔ بھارتی کے وچن چمیلی کی مہک کے سمان دماغ میں گھسنے والے تھے' اروند کے وچن کمل کے سمان کھلے ہوئے اور سندر تھے ۔ دونوں اُدار تھے پر سنکوچی ۔ دونوں میں نئے وچار پھوٹ پڑتے تھے ۔ دونوں کی بھاشا کویتا تھی ۔ دونوں کھل کر اور زوروں سے ہنستے تھے ۔

دوسرے ایک لیکھک کے شبدوں میں—بھارتی ویر بن کر پانڈیچری گئے اور اروند کے پاس رہکر ویدانتی بنکر باہر آئے ۔

بھارتی کو پوری طرح سمجھنے کے لئے اُن کی رچناؤں کو پورا پڑھنا چاہئے ۔ اُن کے کئی پد ایسے ہیں جو دھرم' دیش اور کال کے گھیرے کو لانگھ کر وشو ساہتیہ میں جگہ پانے کے لائق ہیں ۔

"कलाकार जब कला को कल्यानकारी (सबके भले की) बनावेंगे और आम जनता के लिये सुलभ (मोहैया) कर देंगे तभी उस कला को जीवन में स्थान मिलेगा. जब कला सब लोगों की न रह कर थोड़े लोगों की रह जाती है तब मैं मानता हूं कि उसका महत्व (अहमियत) कम हो जाता है."

—महात्मा गांधी

"کلاکار جب کلا کو کلیان کاری (سب کے بھلے کی) بناویں گے اور عام جنتا کے لئے سلبھ (مہیا) کر دیں گے تبھی اُس کلا کو جیون میں استھان ملے گا. جب کلا سب لوگوں کی نہ رہ کر تھوڑے لوگوں کی رہ جاتی ہے تب میں مانتا ہوں کہ اُس کا مہتو (اہمیت) کم ہوجاتا ہے ."

—مہاتما گاندھی

"हम भारत वासी सब एक ही कुल के हैं, एक जाति के हैं. हम सब बराबर हैं. कोई बड़ा या छोटा नहीं हैं. हम सब इस देश के राजा है. हां हम सब इस देश के राजा हैं...... भारत की जय हो."

भारती की नज़र भारत तक ही सीमित नहीं रही. विदेशों में होने वाली घटनाओं पर भी उसका ध्यान जाता था. मेज़िनी की प्रतिज्ञा, बेलजियम का पतन, ज़ार का पतन जैसी घटनाओं पर भी उन्होंने कविता लिखी है.

समाज की बुराइयों का भी खंडन भारती ने किया था. ख़ुद ब्राह्मन होते हुए भी वह जात पात को नहीं मानते थे. इस वजह से उन्हें समाज में तकलीफ़ें सहनी पड़ीं. औरतों की तरक़्क़ी के बारे में भी उन्होंने कविता लिखी है.

अंगरेज़ी तालीम से जो नुक़सान हुए उसके बारे में अपने ख़ुद के अनुभव के आधार पर भारती कहते हैं—"मेरे पिता के हज़ारों रुपये ख़र्च हुए, हज़ारों बुराइयों ने मुझे घेर लिया. तिल भर भी मेरी भलाई नहीं हुई. इसकी शिकायत मैं किस भगवान से करूँ ?"

अपनी मां बोली के साहित्य में नई बातों की कमी देख कर कवि कहने लगा—"लोगो ! पच्छिम की तरफ़ देखो, वह लोग अपने साहित्य का विकास किस तरह कर रहे हैं. आप लोग भी तमाम ज़बानों के अच्छे अच्छे और नये नये विशयों से अपने साहित्य को माला माल कीजिये."

भारती ने इस तरह राजकाजी, समाजी और साहित्य के मैदान में तबदीली करके अमिट नाम पा लिया. भारती समय के रुख़ को मोड़ने वाले थे. गद्य (नसर) और पद्य (नज़म) में सरल और नई शैली को चला कर उन्होंने सबों की रहनुमाई की. उन्होंने बच्चों की ज़बान में बच्चों के लिये आसान से आसान कवितायें लिखीं. बोल चाल की भाशा में कवितायें लिख कर उन्होंने अपनी रचनाओं को लोकप्रिय बना दिया. "पांचाली शपथम", "कोयल पाट्टु" (कोयल गीत) सुर्ख़ी से खंड काव्य भी लिखे हैं जो अपनी शैली, नये पन, प्रकृति के वर्नन वग़ैरा के लिये मशहूर हैं. 'कोयल पाट्टु' में रहस्यवाद (मारफ़त) की भावना है. क़ुदरत की ऐसी कोई चीज़ नहीं है जिसका वर्नन भारती ने न किया हो. महावरे, लोकोक्तियां (लोगों की कहावतों) की भी उनकी कविताओं में कमी नहीं हैं. भारती के कई ऐसे पद्य भी मिलते हैं जिनमें ख़ूब राग रंग भी है. उन्होंने वेदान्त (सूफ़ीमत) सम्बन्धी कई कहानियां और लेख भी लिखे हैं. एक उपन्यास लिख रहे थे जो अधूरा रह गया.

भारती संस्कृत, तमिल और अंगरेज़ी तीनों भाशायें अच्छी तरह जानते थे. तीनों के पुराने और नये साहित्य का अच्छा अध्ययन भी उन्होंने किया था. उनके कई पदों में

" ہم بھارت واسی سب ایک ہی کل کے ہیں' ایک جات کے ہیں . ہم سب برابر ہیں . کوئی بڑا یا چھوٹا نہیں ہے . ہم سب اس دیش کے راجہ ہیں . ہاں ہم سب اس دیش کے راجہ ہیں......بھارت کی جے ہو ."

بھارتی کی نظر بھارت تک ہی سمہت نہیں رہی . ودیشوں میں ہونے والی گھٹناؤں پر بھی اس کا دھیان جاتا تھا . میزنی کی پرتگیا' بلجیم کا پتن' زار کا پتن جیسی گھٹناؤں پر بھی انہوں نے کویتا لکھی ہے .

سماج کی برائیوں کا بھی کھنڈن بھارتی نے کیا تھا . خود برہمن ہوتے ہوئے بھی وہ جات پات کو نہیں مانتے تھے. اس وجہ سے انہیں سماج میں تکلیفیں سہنی پڑیں . عورتوں کی ترقی کے بارے میں بھی انہوں نے کویتا لکھی ہے .

انگریزی تعلیم کے جو نقصان ہوئے اس کے بارے میں اپنے خود کے انوبھو کے آدھار پر بھارتی کہتے ہیں—'' میرے پتا کے ہزاروں روپے خرچ ہوئے' ہزاروں برائیوں نے مجھے گھیر لیا . تل بھر بھی میری بھلائی نہیں ہوئی . اسکی شکایت میں کسی بھگوان سے کروں ؟''

اپنی ماں بولی کے ساہتیہ میں نئی باتوں کی کمی دیکھکر کوی کہنے لگا—'' لوگو ! پچھم کی طرف دیکھو' وہ لوگ اپنے ساہتیہ کا وکاس کس طرح کر رہے ہیں . آپ لوگ بھی تمام زبانوں کے اچھے اچھے اور نئے نئے وشیوں سے اپنے ساہتیہ کو مالا مال کیجئے .''

بھارتی نے اس طرح راج کاجی' سماجی اور ساہتیہ کے میدان میں تبدیلی کر کے اَمٹ نام پا لیا . بھارتی سمے کے رخ کو موڑنے والے تھے . گد (نثر) پد (نظم) میں سرل اور نئی شیلی کو چلا کر انہوں نے سبھوں کی رہنمائی کی . انہوں نے بچوں کی زبان میں بچوں کے لئے آسان سے آسان کویتائیں لکھیں . بول چال کی بھاشا میں کویتائیں لکھکر انہوں نے اپنی رچناؤں کو لوک پریہ بنا دیا . " پانچالی شپتھم " ' " کوئل پاٹو " (کوئل گیت) سرخی سے کھنڈ کاویہ بھی لکھے ہیں جو اپنی شیلی' نئے پن' پرکرتی کے ورنن وغیرہ کے لئے مشہور ہیں . کوئل پاٹو میں رہسیہ واد (معرفت) کی بھاونا ہے . قدرت کی ایسی کوئی چیز نہیں ہے جس کا ورنن بھارتی نے نہ کیا ہو . محاورے' لوکوکتیاں (لوگوں کی کہاوتوں) کی بھی ان کی کویتاؤں میں کمی نہیں ہے . بھارتی کے کئی ایسے پد بھی ملتے ہیں جن میں خوب راگ رنگ بھی ہے . انہوں نے ویدانت سمبندھی کئی (صوفی مت) کہانیاں اور لیکھ بھی لکھے ہیں . ایک اپنیاس لکھ رہے تھے جو ادھورا رہ گیا .

بھارتی سنسکرت' تمل اور انگریزی تینوں بھاشائیں اچھی طرح جانتے تھے . تینوں کے پرانے اور نئے ساہتیہ کا اچھا ادھین بھی انہوں نے کیا تھا . ان کے کئی پدوں میں

सकते. हम आखिरी दम तक 'वन्दे मातरम' कहेंगे. क्या अपनी प्यारी माता की वन्दना करना क़ुसूर है. तुम दिन भर हमें लूटते रहो, हम चुप चाप देखा करें ! क्या तीस करोड़ लोग कुत्ते और सूअर हैं ? तुम्हीं लोग मनुश्य हो ? तुम चाहे हमारे बदन के टुकड़े कर दो, लेकिन हम ज़रा भी परेशान नहीं होंगे.'

भारती के गीतों ने सोई हुई जनता को जगा दिया. एक तरफ़ नेताओं ने लड़ाई के लिये सिपाही तैयार किये तो दूसरी तरफ़ भारती के गीतों ने उनमें उत्साह और जोश भर कर उन्हें लड़ाई के मैदान में डटे रहने की ताक़त दी.

कवि की मज़बूत धारना थी कि आज़ादी बहुत जल्दी मिलने वाली है. आज़ादी मिलने पर जो गाना गाना चाहिये उसकी रचना भारती पहले ही कर चुके थे. उस गीत का सार यह है—"आज हम नाचें और गावें, हमें आज़ादी मिल गई. ब्राह्मन को पंडित कहने का ज़माना चला गया. गोरों को बाबू कहने का ज़माना लद गया, किसी से मांगने का और धोके बाज़ों की ख़िदमत करने का ज़माना भी चला गया.

"अब सब जगह आज़ादी की ही धूम मची है. यह निश्चित हो गया है कि हम सब समान हैं. हम शंख बजा कर सारी दुनियां से यह कहेंगे—

"खेती बारी और उद्योग धंदों का हम मान करेंगे. निकम्मे और मेहनत न करने वालों की निंदा करेंगे.

"हम जिस देश में रहते हैं वह हमारा देश है. इस पर हमारा ही पूरा हक़ है. भगवान को छोड़ हम किसी और की ग़ुलामी नहीं करेंगे."

दूसरी जगह पर वह लिखते हैं—"भारतवर्श अमर हो, भारत की जय हो. यह आज़ाद हिन्दुस्तान तीस करोड़ लोगों का है. यह नया राश्ट्र दूसरों के लिये मिसाल बनेगा.

"आज से यह बात नहीं रहेगी कि कोई एक आदमी दूसरे आदमी का खाना छीन कर खावे, एक आदमी दुख भोगे और दूसरा देखा करे ? ऐसी ज़िन्दगी आगे नहीं हो सकती.

"हमारे देश में किस चीज़ की कमी है ? सुन्दर सुन्दर बाग़ बग़ीचों और लम्बे चौड़े खेतों से भरे इस देश में अनाज, कंद, मूल, फल बेहद मिलते हैं. ऐसे भारतवर्श की जय हो. भारतवर्श अमर हो.

"हम यह नियम बनायेंगे कि ऐसे समाज का निर्मान हो जहां हर आदमी को खाना मिले. किसी एक को भी खाना न मिलने पर सारी दुनिया को बरबाद कर देंगे. भारत की जय हो.

سکتے . ہم آخری دم تک بندے ماترم کہیں گے . کیا اپنی پیاری ماتا کی وندنا کرنا قصور ہے . تم دن بھر ہمیں لوٹتے رہو' ہم چپ چاپ دیکھا کریں ! کیا تیس کروڑ لوگ کتے اور سور ہیں؟ تمہیں لوگ منشیہ ہو ؟ تم چاہے ہمارے بدن کے ٹکڑے کر دو لیکن ہم ذرا بھی پریشان نہیں ہونگے .'

بھارتی کے گیتوں نے سوئی جنتا کو جگا دیا . ایک طرف نیتاؤں نے لڑائی کے لئے سپاہی تیار کئے تو دوسری طرف بھارتی کے گیتوں نے اُن میں اُتساہ اور جوش بھر کر اُنہیں لڑائی کے میدان میں ڈٹے رہنے کی طاقت دی.

کوی کی مضبوط دھارنا تھی کہ آزادی بہت جلدی ملنے والی ہے . آزادی ملنے پر جو گانا گانا چاہئے اس کی رچنا بھارتی پہلے ہی کر چکے تھے . اس گیت کا سار یہ ہے—" آج ہم ناچیں اور گاویں' ہمیں آزادی مل گئی . برہمن کو پنڈت کہنے کا زمانہ چلا گیا' گوروں کو بابو کہنے کا زمانہ لد گیا' کسی سے مانگنے کا اور دھوکے بازوں کی خدمت کرنے کا زمانہ بھی چلا گیا .

"اب سب جگہ آزادی کی ہی دھوم مچی ہے . یہ نشچت ہو گیا ہے کہ ہم سب سمان ہیں . ہم شنکھ بجا کر ساری دنیا سے یہ کہیں گے—

" کھیتی باری اور ادیوگ دھندوں کا ہم مان کریں گے . نکمے اور محنت نہ کرنے والوں کی نندا کریں گے .

"ہم جس دیش میں رہتے ہیں وہ ہمارا دیش ہے . اس پر ہمارا ہی پورا حق ہے . بھگوان کو چھوڑ کر ہم کسی اور کی غلامی نہیں کریں گے."

دوسری جگہ پر وہ لکھتے ہیں—" بھارت ورش امر ہو' بھارت کی جے ہو . یہ آزاد ہندستان تیس کروڑ لوگوں کا ہے. یہ نیا راشٹر دوسروں کے لئے مثال بنے گا .

"آج سے یہ بات نہیں رہے گی کہ کوئی ایک آدمی دوسرے آدمی کا کھانا چھین کر کھاوے' ایک آدمی دکھ بھوگے اور دوسرا دیکھا کرے ؟ ایسی زندگی آگے نہیں ہو سکتی.

" ہمارے دیش میں کس چیز کی کمی ہے ؟ سندر سندر باغ باغیچوں اور لمبے چوڑے کھیتوں سے بھرے اس دیش میں اناج قند' مول' پھل بے حد ملتے ہیں . ایسے بھارت ورش کی جے ہو . بھارت ورش امر ہو .

" ہم یہ نیم بنائیں گے کہ ایسے سماج کا نرمان ہو جہاں ہر آدمی کو کھانا ملے . کسی ایک کو بھی کھانا نہ ملنے پر ساری دنیا کو برباد کر دیں گے . بھارت کی جے ہو .

के मिलने पर उनकी बात चीत का ढंग, आपसी खेल वग़ैरा का वर्नन भी भारती ने सुन्दर ढंग से किया है.

भारती जब कमज़ोर और बुज़दिल लोगों को देखते थे तो उनका मन कह उठता था कि ऐसे लोग अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकते. वह प्रार्थना करते थे कि 'हे देवी, इनके जिस्म और दिमाग़ को बल दो जिससे यह इस समाज में अपना फ़र्ज़ ठीक तरह से अदा कर सकें. समाज का बोझ बन कर रहना ठीक नहीं है.' संसार के लोगों में जो वासनायें और तुच्छ इच्छायें भरी हैं उन्हें देख कर कवि का दिल रो पड़ता है. वह भगवान से कहता है—'या तो मुझे इन इच्छाओं से अलग कर दो, नहीं तो जीवन ही छीन लो.' कवि बेकार जीवन बिताना नहीं चाहता. वह पराशक्ति (देवी) से आरज़ू करता है कि 'मुझे एक "कनी" (क़रीब 7 एकड़) ज़मीन दो. उसी में एक मकान बना कर रहूँगा. चारों तरफ़ बग़ीचा लगाऊंगा, जिसमें एक कुआं भी रहेगा. बग़ीचे के चारों तरफ़ नारियल के पेड़ लगाऊंगा. इनके अलावा और भी पेड़ रहेंगे जहां कोयल आ कर बैठेंगी और अपने मीठे गानों से मुझे ख़ुश करेंगी. यहीं मैं अपना घरेलू जीवन बिताऊंगा.' साहित्य सेवा के साथ वह हाथ से मेहनत भी करना चाहता है.

समय समय पर देश की जो हालत रही उसका वर्नन असरदार ढंग से करके भारती ने लोगों में जोश और देश प्रेम पैदा किया. गोखले, लाजपतराय, नौरोजी, तिलक, महात्मा गांधी जैसे नेताओं के बारे में समय समय पर गीतों के रूप में बहुत कुछ उन्होंने लिखा है. भारत माता की वन्दना, झंडा गीत, स्वतंत्रता की अहमियत, भारत की उस समय की बुरी हालत और उससे छुटकारा पाने के तरीक़े वग़ैरा उनके गीतों के विशय थे. "बन्दे मातरम" वाले गीत में वह लिखते हैं—"हम जाति पाति का फ़रक नहीं मानेंगे. ब्राह्मन हो या हरिजन हो सब भारत माता की औलाद हैं. हम आपस में आज झगड़ा करते हैं तो कल मिल जायंगे. यहां तीसरे को आ कर बीच बचाव करने की ज़रूरत नहीं है." आगे अपने देश वासियों से कवि कहता है—"हमें याद रखना चाहिये एकता में ही ताक़त है. भला हो या बुरा सब में बराबर हिस्सा हम सब का है. हम कभी भी इस ग़ुलामी के जीवन को बरदाश्त नहीं करेंगे. हम तीस करोड़ लोग या तो जीयेंगे, नहीं तो देश के लिये लड़ते लड़ते मर जायंगे." कभी कवि देश वासियों में पुराना गौरव याद दिलाकर उत्साह भरता है, कभी भारत के दुखी जीवन पर रोता है. कभी अपने देश वासियों को उनकी कायरता और अज्ञानता पर उलहना देता है, कभी उनको आगे चलने के लिये उकसाता है. अंगरेज़ों ने देश के कई नेताओं को क़ैद किया. यह देखकर कवि चुप नहीं रह सका, वह कह उठा—'हम अपने ही देश में दूसरों के ग़ुलाम बनकर नहीं रह

کے ملنے پر اُن کی بات چیت کا ڈھنگ، آپسی کھیل وغیرہ کا ورنن بھی بھارتی نے سندر ڈھنگ سے کیا ہے ۔

بھارتی جب کمزور اور بزدل لوگوں کو دیکھتے تھے تو ان کا من کہ اُٹھتا تھا کہ ایسے لوگ اپنے جیون میں کچھ نہیں کر سکتے ۔ وہ پرارتھنا کرتے تھے کہ 'ہے دیوی ' اِن کے جسم اور دماغ کو بل دو جس سے یہ اس سماج میں اپنا فرض ٹھیک طرح سے ادا کر سکیں ۔ سماج کا بوجھ بن کر رہنا ٹھیک نہیں ہے'. سنسار کے لوگوں میں جو واسنائیں اور تچھ اچھائیں بھری ہیں اُنہیں دیکھکر کوی کا دل رو پڑتا ہے. وہ بھگوان سے کہتا ہے—'یا تو مجھے اِن اچھاؤں سے الگ کر دو. نہیں تو جیون ہی چھین لو.' کوی بیکار جیون بتانا نہیں چاہتا ۔ وہ پراشکتی (دیوی) سے آرزو کرتا ہے کہ 'مجھے ایک "کنی" (قریب 7 ایکڑ) زمین دو ۔ اُسی میں ایک مکان بنا کر رہونگا ۔ چاروں طرف باغیچہ لگاؤں گا' جس میں ایک کنواں بھی رہے گا. باغیچہ کے چاروں طرف ناریل کے پیڑ لگاؤنگا ۔ ان کے علاوہ اور بھی پیڑ رہیں گے جہاں کوئل آکر بیٹھیں گی اور اپنے میٹھے گانوں سے مجھے خوش کریں گی ۔ یہیں میں اپنا گھریلو جیون بتاؤں گا.' ساہتیہ سیوا کے ساتھ وہ ہاتھ سے محنت بھی کرنا چاہتا ہے۔

سمے سمے پر دیش کی جو حالت رہی اس کا ورنن اثر دار ڈھنگ سے کر کے بھارتی نے لوگوں میں جوش اور دیش پریم پیدا کیا ۔ گوکھلے' لاجپت رائے' نورو جی' تلک' مہاتما گاندھی جیسے نیتاؤں کے بارے میں سمے سمے پر گیتوں کے روپ میں بہت کچھ اُنہوں نے لکھا ہے ۔ بھارت ماتا کی وندنا' جھنڈا گیت' سوتنترتا کی اہمیت' بھارت کی اُس سمے کی بری حالت اور اس سے چھٹکارا پانے کے طریقے وغیرہ ان کے گیتوں کے وشے تھے ۔ " بندے ماترم " والے گیت میں وہ لکھتے ہیں—" ہم جات پات کا فرق نہیں مانیں گے ۔ برہمن ہو یا ہریجن ہو سب بھارت ماتا کی اولاد ہیں ۔ ہم آپس میں آج جھگڑا کرتے ہیں تو کل مل جائینگے. یہاں تیسرے کو آ کر بیچ بچاؤ کرنے کی ضرورت نہیں ہے ." آگے اپنے دیش واسیوں سے کوی کہتا ہے—"ہمیں یاد رکھنا چاہئے ایکتا میں ہی طاقت ہے ۔ بھلا ہو یا برا سب میں برابر حصہ ہم سب کا ہے ۔ ہم کبھی بھی اس غلامی کے جیون کو برداشت نہیں کریں گے. ہم تیس کروڑ لوگ یا تو جئیں گے' نہیں تو دیش کے لئے لڑتے لڑتے مر جائیں گے ." کبھی کوی دیش واسیوں میں پرانا گورو یاد دلا کر اُتساہ بھرتا ہے' کبھی بھارت کے دکھی جیون پر روتا ہے. کبھی اپنے دیش واسیوں کو اُنکی کائرتا اوراگیانتا پر الہنا دیتا ہے' کبھی اُن کو آگے چلنے کے لئے اُکساتا ہے ۔ انگریزوں نے دیش کے کئی نیتاؤں کو قید کیا ۔ یہ دیکھکر کوی چپ نہیں رہ سکا' وہ کہ اُٹھا— 'ہم اپنے ہی دیش میں دوسروں کے غلام بن کر نہیں رہ

भारत को छोड़ कर पांडेचरी चले गए. यहीं इनकी महरिशी अरविंद से भेंट हुई. उन्हीं के साथ यह रिगवेद जैसे ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे. अरविंद के "कर्मयोगी" का तमिल में अनुवाद भारती ही करते थे. अरविंद के प्रभाव के कारन वह वेदान्त की बातों से भरी कवितायें और भजन लिखने लगे. "कर्मयोगी" नाम की पत्रिका में पतंजली के योग सूत्र का अनुवाद भी निकलता था.

भारती को पैसे की तकलीफ़ बहुत सताती थी. उन्हें पांडेचरी का जीवन नागवार मालूम हुआ. वहां दस साल तक रहने के बाद वह फिर 1918 में मद्रास आए. सरकार ने पहले उन्हें क़ैद किया, पर बाद को छोड़ दिया. वह फिर से "स्वदेश मित्रन" दफ़्तर में काम करने लगे. बड़े अफ़सोस की बात है कि इसके तीन साल बाद ही उनकी मौत हो गई. 1921 में चालीस बरस की उमर में वह इस दुनिया से चल बसे.

भारती काग़ज़ और क़लम लेकर कविता लिखने नहीं बैठते थे. समुन्दर के किनारे टहलते वक़्त, दोस्तों से बात करते वक़्त, उनके मन में जो ख़्याल आते थे, वह कविता के रूप में फूट पड़ते थे. ऐसा कोई विशय नहीं है जिस के बारे में उन्होंने न लिखा हो. स्तुति (प्रार्थना) गीतों में गनेश स्तुति, महेश स्तुति, कार्तिकेय स्तुति, लक्ष्मी, सरस्वती वग़ैरा स्तुति गीत मशहूर हैं. उन्होंने ख़ास कर शक्ति की वन्दना ज़ियादा की है. कृश्न की उन्होंने कई रूप में वन्दना की है. तमिल देश के वैशनव संतों के ग्रन्थों की शैली और भावों का असर इन गीतों में है. श्री कृश्न को कवि ने मां, बाप, दोस्त, नौकर, राजा, गुरू, चेला, बालक, प्रियतम, प्रियतमा वग़ैरा रूपों में देखा है. बालक कृश्न की कथा पढ़ते समय हमारे सामने बाल कृश्न की लुभावनी और ख़ूबसूरत तस्वीर खिंच जाती है. लड़कपन में उनकी शरारत, खेल वग़ैरा पर भारती के गीत पढ़ते ही बनते हैं. उन्होंने प्रियतम और प्रियतमा के रूप में कई गीतों में कृश्न का वर्नन किया है. प्रियतम की जुदाई में कभी प्रियतमा कांटे में फंसे कीड़े की तरह तड़पती है, कभी पिंजड़े में बन्द तोते की तरह बेचैन है. चारपाई पर लेटती है तो उसे नींद नहीं आती. माता और प्यारी सखियों की बात चीत भी उसे बुरी लगती है. ख़ुशबूदार फूल उसे पसन्द नहीं आते. उसकी यह हालत देखकर लोग क्यों चुप रहते. वह इस प्रेम रोग को नहीं समझ सके. हकीम और ज्योतिशी बुलाये गए. वह कुछ का कुछ बता कर चले गए. इसी तरह कई दिन कट गये. एक दिन उसने सपने में देखा कोई सुन्दर रूप उसके सामने खड़ा है. वह उसके पास आता है और उसे छूता है. वह ख़ुशी से फूल उठती है. इतने में नींद टूट जाती है. उसे चारों तरफ़ वही रूप दिखाई देता है. सभी चीज़ें ख़ूबसूरत दिखाई देने लगती हैं. प्रियतम और प्रियतमा

بھارت کو چھوڑ کر پانڈیچری چلے گئے . یہیں ان کی مہارشی اروند سے بھینٹ ہوئی . انھیں کے ساتھ یہ رگ‌ویدجیسے گرنتھوں کا ادھیین کرنے لگے . اروند کے "کرم‌یوگی" کا تمل میں انوواد بھارتی ہی کرتے تھے . اروند کے پربھاؤ کے کارن وہ ویدانت کی باتوں سے بھری کویتائیں اور بھجن لکھنے لگے . "کرم‌یوگی" نام کی پتریکا میں پتنجلی کے یوگ سوتر کا انوواد بھی نکلتا تھا .

بھارتی کو پیسے کی تکلیف بہت ستاتی تھی . انھیں پانڈیچری کا جیون ناگوار معلوم ہوا . وہاں دس سال تک رہنے کے بعد وہ پھر 1918 میں مدراس آئے . سرکار نے پہلے انھیں قید کیا' پر بعد کو چھوڑ دیا . وہ پھر سے "سودیش متر ن" دفتر میں کام کرنے لگے . بڑے افسوس کی بات ہے کہ اس کے تین سال بعد ہی ان کی موت ہو گئی . 1921 میں چالیس برس کی عمر میں وہ اس دنیا سے چل بسے .

بھارتی کاغذ اور قلم لے کر کویتا لکھنے نہیں بیٹھتے تھے . سمندر کے کنارے ٹہلتے وقت' دوستوں سے بات کرتے وقت' ان کے من میں جو خیال آتے تھے' وہ کویتا کے روپ میں پھوٹ پڑتے تھے . ایسا کوئی وشے نہیں ہے جس کے بارے میں انھوں نے نہ لکھا ہو . استتی (پرارتھنا) گیتوں میں گنیش استتی مہیش استتی' کارتی کے استتی' لکشمی' سرسوتی وغیرہ کے استتی گیت مشہور ہیں . انھوں نے خاص کر شکتی کی وندنا زیادہ کی ہے . کرشن کی انھوں نے کئی روپ میں وندنا کی ہے . تمل دیش کے ویشنو سنتوں کے گرنتھوں کی شیلی اور بھاؤں کا اثر ان گیتوں میں ہے . شری کرشن کو کوی نے ماں' باپ' دوست' نوکر' راجہ' گرو' چیلا' بالک' پریتم' پریتما وغیرہ روپوں میں دیکھا ہے . بالک کرشن کی کتھا پڑھتے سمے ہمارے سامنے بال کرشن کی لبھاونی اور خوبصورت تصویر کھنچ جاتی ہے . لڑکپن میں ان کی شرارت' کھیل وغیرہ پر بھارتی کے گیت پڑھتے ہی بنتے ہیں . انھوں نے پریتم اور پریتما کے روپ میں کئی گیتوں میں کرشن کا ورنن کیا ہے . پریتم کی جدائی میں کبھی پریتما کانٹے میں پھنسے کیڑے کی طرح تڑپتی ہے . کبھی پنجڑے میں بند طوطے کی طرح بے چین ہے . چارپائی پر لیٹتی ہے تو اسے نیند نہیں آتی . ماتا اور پیاری سکھیوں کی بات چیت بھی اسے بری لگتی ہے . خوشبودار پھول اسے پسند نہیں آتے . اس کی یہ حالت دیکھ کر لوگ کیوں چپ رہتے . وہ اس پریم روگ کو نہیں سمجھ سکے . حکیم اور جوتشی بلائے گئے . وہ کچھ کا کچھ بتا کر چلے گئے . اسی طرح کئی دن کٹ گئے . ایک دن اس نے سپنے میں دیکھا کوئی سندر روپ اس کے سامنے کھڑا ہے . وہ اس کے پاس آتا ہے اور اسے چھوتا ہے . وہ خوشی سے پھول اٹھتی ہے . اتنے میں نیند ٹوٹ جاتی ہے . اسے چاروں طرف وہی روپ دکھائی دیتا ہے . سبھی چیزیں خوبصورت دکھائی دینے لگتی ہیں . پریتم اور پریتما

तमिल भाशा के महान कवि सुब्रह्मन्य भारती

(एम. सुब्रह्मन्यम)

श्री सुब्रह्मन्य भारती का जन्म तमिलनाद के तिरुनेल वेली ज़िले में सन 1882 में हुआ था. पिता एक छोटी रियासत में नौकरी करते थे. वह तमिल, संस्कृत और अंगरेज़ी के विद्वान थे. वह चाहते थे कि उनका पुत्र ऊंची शिक्षा पाकर अच्छी नौकरी करे. लेकिन उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई. एक तो 15 बरस की उम्र में ही भारती के पिता का स्वर्गवास हो गया और दूसरे भारती को अंगरेज़ी ढंग की शिक्षा पसन्द भी नहीं थी. पिताजी के स्वर्गवास के बाद वह अपनी बुआ के घर, बनारस आए. यहां उन्होंने संस्कृत, हिन्दी और अंगरेज़ी सीखी. इलाहाबाद बोर्ड का एन्ट्रन्स (Entrance) का इम्तहान उन्होंने पहली श्रेनी में पास किया. काफ़ी दिन उत्तर में रहने के कारन वह हिन्दी स्वाभाविक ढंग से और तेज़ी से बोल लेते थे.

भारती 1901 में फिर दक्खिन आए और एक स्कूल में अध्यापक रहे. कुछ ही महीनों में वहां से निकल कर मशहूर तमिल अख़बार "स्वदेश मित्रन" के सहायक सम्पादक बने. वह दफ़्तर के बंधन को पसन्द नहीं करते थे. जब चाहते दफ़्तर आते और जब चाहते लेख लिखते. पर जब लिखने बैठते तब सुन्दर अक्षर में चन्द मिनटों ही में पन्ने के पन्ने लिख डालते. यहां ढाई बरस ही रहे. इसके बाद ख़ुद "इन्डिया" नाम का हफ़्तेवारी अख़बार निकालने लगे. अब उनकी प्रतिभा (ज़हन) को लोग समझने लगे थे.

जैसे वह एक सफल कवि और लेखक थे वैसे ही भाशन देने में भी वह सफल थे. यह ज़माना ऐसा था जब सारे देश में आज़ादी का आन्दोलन ज़ोरों से चल रहा था. इसका असर भारती पर पड़े बिना कैसे रह सकता था. देश भक्ति के भावों से भरी कविताओं, जज़बे से भरे लेखों, व्यंगात्मक चित्रों के लिये उन दिनों उनका अख़बार मशहूर था. यह अख़बार पढ़ कर कई लोग जो शासकों के भक्त थे आज़ादी आन्दोलन में भाग लेने लगे. उन दिनों लोगों में जो जाग्रति पैदा हुई उसका सेहरा कवि भारती के सर है. बंगाल के बटवारे, लाला लाजपत राय के देश से निकाले जाने, बिपिन चन्द्रपाल के जेल जाने जैसी घटनाओं के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना इस अख़बार की नीति थी. ब्रिटिश सरकार इसे कैसे बरदाश्त कर सकती थी. पहले 'इन्डिया' के प्रकाशक को सरकार ने क़ैद किया. उसके बाद भारती का नम्बर था. लोगों के कहने सुनने पर वह ब्रिटिश

تمل بھاشا کے مہان کوی سبرہمنیہ 'بھارتی'

(ایم . سبرہ منیم)

شری سبرہمنیہ بھارتی کا جنم تمل ناڈ کے ترنیل ویلی ضلعے میں سن 1882 میں ہوا تھا. پتا ایک چھوٹی ریاست میں نوکری کرتے تھے. وہ تمل، سنسکرت اور انگریزی کے ودوان تھے. وہ چاہتے تھے کہ اُنکا پتر اونچی شکشا پاکر اچھی نوکری کرے. لیکن اُن کی اِچھا پوری نہیں ہوئی. ایک تو 15 برس کی عمر میں ہی بھارتی کے پتا کا سورگ‌واس ہو گیا اور دوسرے بھارتی کو انگریزی ڈھنگ کی شکشا پسند بھی نہیں تھی. پتا جی کے سورگ‌واس کے بعد وہ اپنی بوا کے گھر بنارس آئے. یہیں انہوں نے سنسکرت' ہندی اور انگریزی سیکھی. الہ‌آباد بورڈ کا انٹرنس (Entrance) کا اِمتحان اُنہوں نے پہلی شرینی میں پاس کیا. کافی دن اتر میں رہنے کے کارن وہ ہندی سوبھاوک ڈھنگ سے اور تیزی سے بول لیتے تھے.

بھارتی 1901 میں پھر دکھن آئے اور ایک اسکول میں ادھیاپک رہے. کچھ ہی مہینوں میں وہاں سے نکل کر مشہور تمل اخبار "سودیش مترن" کے سہایک سمپادک بنے. وہ دفتر کے بندھن کو پسند نہیں کرتے تھے. جب چاہتے دفتر آتے اور جب چاہتے لیکھ لکھتے. پر جب لکھنے بیٹھتے تب سندر اکشر میں چند منٹوں ہی میں پنے کے پنے لکھ ڈالتے. یہاں ڈھائی برس ہی رہے. اس کے بعد خود "اِنڈیا" نام کا ہفتےواری اخبار نکالنے لگے. اب اُن کی پرتبھا (ذہن) کو لوگ سمجھنے لگے تھے.

جیسے وہ ایک سپھل کوی اور لیکھک تھے ویسے ہی بھاشن دینے میں بھی وہ سپھل تھے. یہ زمانہ ایسا تھا جب سارے دیش میں آزادی کا آندولن زوروں سے چل رہا تھا. اِس کا اثر بھارتی پر پڑے بنا کیسے رہ سکتا تھا. دیش بھکتی کے بھاؤوں سے بھری کویتاؤں' جذبے سے بھرے لیکھوں' ویَنگ‌آتمک چتروں کے لئے اُن دنوں ان کا اخبار مشہور تھا. یہ اخبار پڑھ کر کئی لوگ جو شاسکوں کے بھکت تھے آزادی آندولن میں بھاگ لینے لگے. اُن دنوں لوگوں میں جو جاگرتی پیدا ہوئی اس کا سہرا کوی بھارتی کے سر ہے. بنگال کے بٹوارے' لالہ لاجپت رائے کے دیش سے نکالے جانے' بپن چندر پال کے جیل جانے جیسی گھٹناؤں کے خلاف آواز اُٹھانا اِس اخبار کی نیتی تھی. برٹش سرکار اسے کیسے برداشت کر سکتی تھی. پہلے 'انڈیا' کے پرکاشک کو سرکار نے قید کیا. اُس کے بعد بھارتی کا نمبر تھا. لوگوں کے کہنے سننے پر وہ برٹش

की शान दौड़ में कुछ लोगों की शान लेनी ही होगी. अगर जेलखानों में ऊंचे दर्जे के आदमी न पहुंच पाए तो जेलखाने की शान न घट जाय. यह छोटी छोटी बातें जाने वर्धा ग्रुप की क्यों समझ में नहीं आतीं.

बापू, आपके ज़माने में जेलों की जो शान थी आज कांगरेसी सरकार की कृपा से वह शान बढ़ी नहीं तो घटी भी नहीं है. बापू हम अन्दाज़े से कह रहे हैं. हो सकता है पहले से बढ़ गई हो.

बापू, आप जिस जगह हैं वहां तो नींद का सवाल नहीं. पर हमें तो आपको कहानी सुनाते सुनाते नींद आने लगी है, सारी बात हमने कह भी दी है. बस अन्त में हम यह कह कर अपनी कहानी ख़त्म करते हैं कि आप जहां भी हों बेफ़िकर रहिये. आपके चेली चेलों के हाथ में हिन्दुस्तान इतना सुरक्षित है और इतना जन धन वाला हो गया है कि चाहे अंगरेज़ आ कर हमारे यहां से आदमी बटोरें, चाहे और कोई दूसरा मुल्क हमारे यहां से धन बटोरे, हमारे जन धन के भंडार में कमी नहीं हो सकती ! जगह तो हमारे यहां इतनी पड़ी है कि कोई बाहर से आ कर पच्चीस बरस के पट्टे पर मुफ़्त ले ले !

बापू, अब बिदा लेते हैं.

—भगवानदीन

کی شان دوڑ میں کچھ لوگوں کی شان لینی ہوگی . اگر جیل خانوں میں اونچے درجے کے آدمی نہ پہنچ پائے تو جیل خانے کی شان نہ گھٹ جائے. یہ چھوٹی چھوٹی باتیں جانے وردھا گروپ کی کیوں سمجھ میں نہیں آتیں .

باپو' آپ کے زمانے میں جیلوں کی جو شان تھی آج کانگریسی سرکار کی کرپا سے وہ شان بڑھی نہیں تو گھٹی بھی نہیں ہے. باپو ہم اندازے سے کہ رہے ہیں . ہوسکتا ہے پہلے سے بڑھ گئی ہو .

باپو' آپ جس جگہ ہیں وہاں تو نیند کا سوال نہیں. پر ہمیں تو آپ کو کہانی سناتے سناتے نیند آنے لگی ہے' ساری بات ہم نے کہ بھی دی ہے . بس انت میں ہم یہ کہ کر اپنی کہانی ختم کرتے ہیں کہ آپ جہاں بھی ہوں بے فکر رہئے. آپ کے چیلی چیلوں کے ہاتھ میں ہندستان اتنا سرکشت ہے اور اتنا جن دھن والا ہوگیا ہے کہ چاہے انگریز آکر ہمارے یہاں سے آدمی بٹوریں' چاہے اور کوئی ملک ہمارے یہاں سے دھن بٹورے' ہمارے جن دھن کے بھنڈار میں کمی نہیں ہوسکتی ! جگہ تو ہمارے یہاں اتنی پڑی ہے کہ کوئی باہر سے آکر پچیس برس کے پٹے پر مفت لے لے !

باپو' اب بدا لیتے ہیں .

—بھگوان دین

"ग़रीबों पर ख़ुदा का यह बड़ा एहसान बाक़ी है
कि दुनिया में अभी तक उनका क़ब्रिस्तान बाक़ी है

चबा जाते हैं लेकर ख़ुदा का नाम इनसां को
धरम के ठेकेदारों का मगर ईमान बाक़ी है

बहा ले जाए जो ज़ुल्मो सितम को सारी दुनिया से
ज़माने में अभी आने को वह तूफ़ान बाक़ी है

जहां बिकती है रोटी के एवज़ इन्सानियत नाज़ुक
सितम है अन्नदाताओं की वह दूकान बाक़ी है

ग़रीबों से मिलेगा भोग क्या भगवान को नाज़ुक
जहां रोटी के बदले सिर्फ़ उनकी जान बाक़ी है"

—नाज़ुक इलाहाबादी

"غریبوں پر خدا کا یہ بڑا احسان باقی ہے
کہ دنیا میں ابھی تک اُن کا قبرستان باقی ہے

چبائے جاتے ہیں لے کر خدا کا نام انسان کو
دھرم کے ٹھیکیداروں کا مگر ایمان باقی ہے

بہالے جائے جو ظلم و ستم کو ساری دنیا سے
زمانے میں ابھی آنے کو وہ طوفان باقی ہے

جہاں بکتی ہے روٹی کے عوض انسانیت نازک
ستم ہے اُن داتاؤں کی وہ دوکان باقی ہے

غریبوں سے ملیگا بھوگ کیا بھگوان کو نازک
جہاں روٹی کے بدلے صرف اُن کی جان باقی ہے"

—نازک الہ آبادی

आपने कश्मीर रक्षा के लिये जाने वाली फ़ौज को आशीर्वाद भी दिया था. फिर हम खद्दर पहन कर या चर्खा कात कर या गाय के घी दूध की प्रतिज्ञा कर के या 'रघुपति राघव राजाराम' गा कर शिकार खेल लिया करें तो इसमें बुराई क्या है ?

बापू, हमने अपनी आंखों आपको देखा है. आपने ऐसे ऐसों को अपने साथ लिया जो आपका कोई भी धर्म न निभाते थे. पर जब उनमें से एक ने भी आपका कोई एक भी धर्म अपनाया तो आपने उसको नीचे से उठा कर इतना ऊंचा कर दिया कि अनेकों धर्म के धारी उसे ईर्शा की नज़र से देखने लगे. बापू जैसे आप लोगों की परवाह नहीं करते थे वैसी ही हम क्यों परवाह करने लगे. जब हम सुबह सुबह 'रघुपति राघव राजा राम' बोल चुके, तो और क्या चाहिये. फिर हम उन लोगों को कहां रोकते हैं जो कोई चार धर्म निभा रहा है, कोई पांच, कोई दस, कोई ग्यारह. हां, हम यह ज़रूर समझते हैं कि ईश्वर के दरबार में यह अनेकों धर्म अपनाने वाले भी वैसे ही अपराधी की तरह खड़े होंगे जैसे हम एक धर्म अपनाने वाले. उस वक़्त आप उन अनेक धर्म निभाने वालों की ईश्वर से ऐसी ही सिफ़ारिश करेंगे जैसे हम एक धर्म निभाने वाले की. फिर हम ज़ियादा दांत किट किट क्यों करें ! बापू, हमें आप पर पूरा भरोसा है. शायद इन अनेक धर्मों के भूकों को आपका भरोसा नहीं. अपने बल का भरोसा है.

बापू, आप तो हमें आगे लिये चले जा रहे थे. आपके सच्चे साथी, सच्चे चेले, यह कांगरेस वाले भी आज हमें दुनिया की दौड़ में आगे ले जाने की कोशिश में हैं. इसमें भी क्या बुरा है अगर वह अमरीका से पैसे की, औज़ारों की और समझदारी की भीक मांग लेते हैं. वह मांगते तो हमें आगे बढ़ाने के लिये ही हैं. आप भी तो बापू कभी कभी खद्दर का काम बढ़ाने के लिये लाट साहब से कह सुन कर अंगरेज़ी सरकार से किसी किसी को बाउन्टी दिलवा दिया करते थे. फिर न जाने क्यों यह वर्धा ग्रुप आए दिन जवाहरलाल और कांगरेसी सरकार के पीछे पड़ा रहता है और कहता है—हमको ट्रैक्टर नहीं चाहिये, हमको बिजली के कारख़ाने नहीं चाहियें, हमको अमरीका की मदद नहीं चाहिये, हमको बड़ी बड़ी तनख़ाहें नहीं चाहियें, हमको बड़े बड़े महल नहीं चाहियें. तब फिर क्या वीरान हिन्दुस्तान चाहिये !! रही दौड़ में आगे बढ़ने की बात. दौड़ में आगे पीछे का सिलसिला तो लगा ही रहता है. जो कमज़ोर होते हैं वह गिर कर मर भी जाते हैं. उन कमज़ोरों की परवाह की जाय तो जीत चुके दौड़ की बाज़ी. पैदावारी की दौड़ में कमज़ोर किसानों को मरना ही पड़ेगा. रोज़गार की दौड़ में निकम्मे आदमियों को बेकार रहना ही पड़ेगा. हुकूमत

آپ نے کشمیر رکشا کے لئے جانے والی فوج کو آشیرواد بھی دیا تھا. پھر ہم کھدر پہن کر یا چرخہ کات کر یا گئو کے گھی دودھ کی پرتگیا کرکے یا 'رگھوپتی راگھو راجا رام' گا کر شکار کھیل لیا کریں تو اس میں برائی کیا ہے ؟

باپو' ہم نے اپنی آنکھوں آپ کو دیکھا ہے . آپ نے ایسے ایسوں کو اپنے ساتھ لیا جو آپ کا کوئی بھی دھرم نہ نبھاتے تھے . پر جب ان میں سے ایک نے بھی آپ کا کوئی ایک بھی دھرم اپنایا تو آپ نے اس کو نیچے سے اٹھا کر اتنا اونچا کر دیا کہ انیکوں دھرم کے دھاری اسے ایرشا کی نظر سے دیکھنے لگے . باپو جیسے آپ لوگوں کی پرواہ نہیں کرتے تھے ویسی ہی ہم کیوں پرواہ کرنے لگے . جب ہم صبح صبح 'رگھوپتی راگھو راجا رام' بول چکے تو اور کیا چاہئے . پھر ہم ان لوگوں کو کہاں روکتے ہیں جو کوئی چار دھرم نبھا رہا ہے' کوئی پانچ کوئی دس' کوئی گیارہ. ہاں' ہم یہ ضرور سمجھتے ہیں کہ ایشور کے دربار میں یہ انیکوں دھرم اپنانے والے بھی ویسے ہی اپرادھی کی طرح کھڑے ہونگے جیسے ہم ایک دھرم اپنانے والے . اس وقت آپ ان انیک دھرم نبھانے والوں کی ایشور سے ایسی ہی سفارش کرینگے جیسے ہم ایک دھرم نبھانے والے کی . پھر ہم زیادہ دانت کٹ کٹ کیوں کریں ! باپو' ہمیں آپ پر پورا بھروسہ ہے . شاید ان انیک دھرموں کے بھوکوں کو آپ کا بھروسہ نہیں' اپنے بل کا بھروسہ ہے .

باپو' آپ تو ہمیں آگے لئے چلے جا رہے تھے. آپ کے سچے ساتھی' سچے چیلے' یہ کانگریس والے بھی آج ہمیں دنیا کی دوڑ میں آگے لے جانے کی کوشش میں ہیں. اس میں بھی کیا برا ہے اگر وہ امریکہ سے پیسے کی' اوزاروں کی اور سمجھداری کی بھیک مانگ لیتے ہیں. وہ مانگتے تو ہمیں آگے بڑھانے کے لئے ہی ہیں . آپ بھی تو باپو کبھی کبھی کھدر کا کام بڑھانے کے لئے لاٹ صاحب سے کہہ سن کر انگریزی سرکار سے کسی کسی کو باؤنٹی دلوا دیا کرتے تھے . پھر نہ جانے کیوں یہ وردھا گروپ آئے دن جواہر لال اور کانگریس سرکار کے پیچھے پڑا رہتا ہے اور کہتا ہے ''ہم کو ٹریکٹر نہیں چاہئیے' ہم کو بجلی کے کارخانے نہیں چاہئیے' ہم کو امریکہ کی مدد نہیں چاہئے' ہم کو بڑی بڑی تنخواہیں نہیں چاہئیں' ہم کو بڑے بڑے محل نہیں چاہئیے. تب پھر کیا ویران ہندستان چاہئے!! رہی دوڑ میں آگے بڑھنے کی بات . دوڑ میں آگے پیچھے کا سلسلہ تو لگا ہی رہتا ہے . جو کمزور ہوتے ہیں وہ گر کر مر بھی جاتے ہیں . ان کمزوروں کی پرواہ کی جائے تو جیت چکے دوڑ کی بازی . پیداواری کی دوڑ میں کمزور کسانوں کو مرنا ہی پڑے گا . روزگار کی دوڑ میں نکمے آدمیوں کو بیکار رہنا ہی پڑے گا . حکومت

लिया करें. चाहे वह किसी भी भाव ही क्यों न आवे. धर्म निभाने में दाम का सवाल कैसा ? चर्खा कातने का धर्म जब हमने अपने सिर पर ओढ़ लिया तब यह जरूरी नहीं कि हम अपने सिर पर खद्दर पहनने का धर्म भी लादें. यह दो दो बोझ तो बापू हमसे न निभेंगे.

बापू क्या हम एक धर्म से न तरेंगे ! सुना है हजरत मोहम्मद सिर्फ एक कलमा पढ़ने वाले को, फिर चाहे वह मुसलमान हो या हिन्दू, ईश्वर से कुछ कह सुन कर माफ़ करवा देते हैं. तो क्या आप हमें माफ़ न करवा देंगे !

ओ हो बापू ! आप तो नाराज़ हो कर यह बेकार ही कह रहे हैं—"हम तुम्हारी हरगिज़ सिफ़ारिश नहीं करेंगे, हम तुम्हारी हरगिज़ सिफ़ारिश नहीं करेंगे." हम आपकी आदत से वाक़िफ़ हैं. यह तो सब आप प्यार में बिगड़ कर कह रहे हैं. जब हम सचमुच आपके सामने होंगे तो आपको दया आ ही जायगी. इस दुनिया की किसी सज़ा से हम नहीं डरते. हम तो सिर्फ़ ईश्वर की सज़ा से डरते हैं. जब आपने अपने पर गोली चलाने वाले तक को माफ़ कर दिया तो हमारे लिये आप कुछ न करें यह हम मान ही नहीं सकते ! आप यह पूछेंगे कि यह हमें कैसे मालूम हुआ कि आपने अपने गोली मारने वाले को ईश्वर की सज़ा से बचा लिया. इसका जवाब सीधा सादा है. इस दुनिया में जब आपके बेटे ने उसे माफ़ कर दिया, यह दूसरी बात है कि आप के चेलों ने भले ही उसे माफ़ न किया हो, तो हम कैसे मान सकते हैं कि आपने उसको ईश्वर की सज़ा से न बचवा दिया हो.

बापू, आपके अनेकों धर्म हैं. आप के ग्यारह धर्मों को तो आपके जीते जी ही संस्कृत की श्लोक नामी सुन्दर थैली में शायद विनोबा जी ने बांध कर धर दिया था. कुछ इधर उधर बिखरे भी रह गए थे. हो सकता है उनको भी किसी ने थैली में बांधा हो. वह ग्यारह ही एक साथ उठाना हमारे क़ाबू से बाहर है. सब के उठाने की बात ही कौन करे ?

बापू, बस आपको तो इतने में ही हमसे खुश हो जाना चाहिये कि हम खद्दर पहन कर चाहे कुछ करें, रिश्वत लेना चाहें रिश्वत लें, बड़े बड़े महलों में रहना चाहें महलों में रहें, बड़े बड़े कारखाने खोलना चाहें कारखाने खोलें और अगर कभी मौज आ जाय तो शिकार भी खेल लिया करें. आखिर बापू यह भी तो सोचिये कि आप हमारे सुपुर्द हिन्दुस्तान की हिफ़ाज़त का काम कर गए हैं. क्या वह बग़ैर फ़ौजों की मदद के हो सकता है ? अब उसके लिये हमें फ़ौज में भरती होना ही पड़ेगा तो शिकार में उसकी अलिफ़ बे ते भी आ इ क्यों न सीख लें. बापू, काश्मीर की लड़ाई तो आपके जीते जी छिड़ गई थी. सरदार पटेल के शब्दों में

لیا کریں. چاہے وہ کسی بھی بھاؤ ہی کیوں نہ آوے . دھرم نبھانے میں دام کا سوال کیسا ؟ چرخہ کاتنے کا دھرم جب ہم نے اپنے سر پر اوڑھ لیا تب یہ ضروری نہیں کہ ہم اپنے سر پر کھدر پہننے کا دھرم بھی لادیں . یہ دو دو بوجھ تو باپو ہم سے نہ نبھیں گے .

باپو کیا ہم ایک دھرم سے نہ تریں گے ! سنا ہے حضرت محمد صرف ایک کلمہ پڑھنے والے کو' پھر چاہے وہ مسلمان ہو یا ہندو ایشور سے کچھ کہہ سن کر معاف کروا دیتے ہیں. تو کیا آپ ہمیں معاف نہ کروا دیں گے !

او ہو باپو ! آپ تو ناراض ہو کر یہ بیکار ہی کہہ رہے ہیں— " ہم تمہاری ہرگز سفارش نہیں کرینگے' ہم تمہاری ہرگز سفارش نہیں کرینگے ." ہم آپ کی عادت سے واقف ہیں . یہ تو سب آپ پیار میں بگڑ کر کہہ رہے ہیں. جب ہم سچ مچ آپ کے سامنے ہونگے تو آپکو دیا آ ہی جائے گی . اس دنیا کی کسی سزا سے ہم نہیں ڈرتے . ہم تو صرف ایشور کی سزا سے ڈرتے ہیں جب آپ نے اپنے پر گولی چلانے والے تک کو معاف کر دیا تو ہمارے لئے آپ کچھ نہ کریں یہ ہم مان ہی نہیں سکتے ! آپ یہ پوچھیں گے کہ یہ ہمیں کیسے معلوم ہوا کہ آپ نے اپنے گولی مارنے والے کو ایشور کی سزا سے بچا لیا . اِس کا جواب سیدھا سادا ہے . اس دنیا میں جب آپ کے بیٹے نے اسے معاف کر دیا' یہ دوسری بات ہے کہ آپکے چیلوں نے بھلے ہی اسے معاف نہ کیا ہو' تو ہم کیسے مان سکتے ہیں کہ آپ نے اس کو ایشور کی سزا سے نہ بچوا دیا ہو .

باپو' آپ کے انیکوں دھرم ہیں . آپ کے گیارہ دھرموں کو تو آپ کے جیتے جی ہی سنسکرت کی اشلوک نامی سندر تھیلی میں شاید ونوبا جی نے باندھ کر دھر دیا تھا . کچھ ادھر اُدھر بکھرے بھی رہ گئے تھے . ہوسکتا ہے ان کو بھی کسی نے تھیلی میں باندھا ہو . وہ گیارہ ہی ایک ساتھ اُٹھانا ہمارے قابو سے باہر ہے . سب کے اُٹھانے کی بات ہی کون کرے ؟

باپو' بس آپ کو تو اتنے میں ہی ہم سے خوش ہو جانا چاہئے کہ ہم کھدر پہن کر چاہے کچھ کریں' رشوت لینا چاہیں رشوت لیں' بڑے بڑے محلوں میں رہنا چاہیں محلوں میں رہیں' بڑے بڑے کارخانے کھولنا چاہیں کارخانے کھولیں اور اگر کبھی موج آ جائے تو شکار بھی کھیل لیا کریں . آخر باپو یہ بھی تو سوچئے کہ آپ ہمارے سپرد ہندستان کی حفاظت کا کام کر گئے ہیں . کیا وہ بغیر فوجوں کی مدد کے ہوسکتا ہے ؟ جب اسکے لئے ہمیں فوج میں بھرتی ہونا ہی پڑیگا تو شکار میں اس کی ا ب ت بھی آ اِئی کیوں نہ سیکھ لیں . باپو' کشمیر کی لڑائی تو آپ کے جیتے جی چھڑ گئی تھی . سردار پٹیل کے شبدوں میں

अगर अमरीका वाले अपने तरीक़े की खेती हमारे हिन्दुस्तान में फैला कर हमारे लिये गाय और गोवंश की बिल्कुल ज़रूरत न रहने दें और फिर कहीं चिड़िया घरों में ही देखने के लिये ही गाय बैल रह जायं तो भी हम अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने वाले नहीं. बापू गाय का और ख़ालिस गाय का दूध पिये बग़ैर भी हम रहने वाले नहीं, क्योंकि हमको मालूम है कि 'किम' नाम से आने वाले विदेशी डिब्बों में ख़ालिस गाय का दूध रहता है. कहिये बापू सूझ में हम आप से बढ़ गए या नहीं ? अब ज़रा ठोंक दीजिये हमारी पीठ.

हम ऐसी मूर्खता कभी नहीं करेंगे कि गाय पालें और रात भर अपनी नींद हराम करें. दस रुपये सेर क्या पच्चीस रुपये सेर गाय का घी क्यों न मिले हम वर्धा की डेरी से ही मंगा कर खाया करेंगे, क्योंकि वर्धा आप के चरन कमल से पवित्र हो चुका है. मुसलमान मक्का से मंगा कर ज़मज़म नामी कुयें का 'आबे ज़मज़म' यानी 'ज़मज़म जल' और मैसौर मद्रास में रहने वाले हिन्दू गंगोत्री, हरिद्वार, प्रयाग से मंगा कर गंगा जल पीते हैं. तो क्या हम गांधी वादी ऐसे गये बीते हैं कि परमधाम के पास वर्धा से हम घी मंगा कर भी न खा सकें. रही बापू खद्दर पहनने की बात. देखिये यह दो दो बोझ हमारे सिर पर न डालिये. एक ही के मारे चांद गंजी हुई जा रही है और थैली हल्की होती जा रही है. यह खद्दर पहनने का धर्म तो बापू आपके जीते जी जनरल अवारी ने अपने सिर ले लिया था. उन्हीं जनरल अवारी ने जिन्होंने आपके सिर 108 इल्ज़ाम लगाए थे, और जिन इल्ज़ामों की बाक़ायदा एक किताब भी छाप दी थी. वह जनरल अवारी हर तरह वैसा करने के योग्य थे, और आज भी आप पर इल्ज़ाम लगाना चाहें तो वह हर तरह समर्थ हैं. बापू जितने ज़ोर से उन्होंने खद्दर धर्म निभाया उतनी हिम्मत के साथ क्या कोई दूसरा निभा सकता है ? इस खद्दर धर्म के भारी बोझ से जनरल अवारी की खोपड़ी के बाल उड़ गए हो सकता है और भी कई धर्म उनके सिर पर हों. पर उनका खद्दर धर्म तो दुनिया में मशहूर है. खद्दर न पा सकने की वजह से वह महीनों जेल में नंगे रहे और खद्दर ही लेकर छोड़ा. खद्दर के मामले में बापू आप जनरल अवारी से बहुत पीछे रहे. आप ने तो अपनी अपेन्डी-साइटिस की बीमारी में पूना के ससून अस्पताल में मिल की नहीं बिलायती कपड़े की पट्टी बांध ली थी.

ओ हो बापू ! अब पता चला. आप कभी कभी अपना कोई कोई बोझ सिर पर से उतार कर सुस्ता लेते थे. पर हम आपकी इस चाल को मानने वाले नहीं. हम तो जिस धर्म को अपनायेंगे उसको पूरी तरह अपनायंगे देखिये बापू हम चर्खा कातते हैं, रूई धुनना हमको नहीं आता. तो क्यों न हम तीर्थ स्थान वर्धा से पारसल के ज़रिये पूनी मंगा

اگر امریکہ والے اپنے طریقے کی کھیتی ہمارے هندستان میں پھیلا کر ہمارے لئے گائے اور گوونش کی بالکل ضرورت نہ رہنے دیں اور پھر کہیں چڑیا گھروں میں ہی دیکھنے کے لئے ہی گائے بیل رہ جائیں تو بھی ہم اپنی پرتگیا توڑنے والے نہیں ۔ باپو گائے کا اور خالص گائے کا دودھ پیئے بغیر بھی ہم رہنے والے نہیں' کیونکہ ہم کو معلوم ہے کہ 'کم' نام سے آنے والے ودیشی ڈبوں میں خالص گائے کا دودھ رہتا ہے. کہئے باپو سوجھ میں ہم آپ سے بڑھ گئے یا نہیں؟ اب ذرا ٹھوک دیجئے ہماری پیٹھ !

ہم ایسی مورکھتا کبھی نہیں کرینگے کہ گائے پالیں اور رات بھر اپنی نیند حرام کریں ۔ دس روپے سیر کیا پچیس روپے سیر گائے کا گھی کیوں نہ ملے ہم وردھا کی ڈیری سے ہی منگا کر کھایا کریں گے ۔ کیونکہ وردھا آپ کے چرن کمل سے پوترھو چکا ہے. مسلمان مکہ سے منگا کر زم زم نامی کوئیں کا ' آب زم زم ' یعنی زم زم جل اور میسور مدراس میں رہنے والے هندو گنگوتری ' هردوار ' پریاگ سے منگا کر گنگا جل پیتے ہیں ۔ تو کیا ہم گاندھی وادی ایسے گئے بیتے ہیں کہ پرمدھام کے پاس وردھا سے ہم گھی منگا کر بھی نہ کھا سکیں رہی باپو کھدر پہننے کی بات ۔ دیکھئے یہ دو دو بوجھ ہمارے سر پر نہ ڈالئے ۔ ایک ہی کے مارے چاند گنجی ہوئی جا رہی ہے اور تھیلی ہلکی ہوتی جا رہی ہے ۔ یہ کھدر پہننے کا دھرم تو باپو آپ کے جیتے جی جنرل اواری نے اپنے سر لے لیا تھا ۔ انہیں جنرل اواری نے جنہوں نے آپ کے سر 108 الزام لگائے تھے اور جن الزاموں کی باقاعدہ ایک کتاب بھی چھاپ دی تھی وہ جنرل اواری ہر طرح ویسا کرنے کے یوگ تھے اور آج بھی آپ پر الزام لگانا چاہیں تو وہ ہر طرح سمرتھ ہیں ۔ باپو جتنے زور سے انہوں نے کھدر دھرم نبھایا اتنی ہمت کے ساتھ کیا کوئی دوسرا نبھا سکتا ہے؟ اس کھدر دھرم بھاری بوجھ سے جنرل اواری کی کھوپڑی کے بال اڑ گئے ۔ ہو سکتا ہے اور بھی کئی دھرم ان کے سر پر ہوں ۔ پر ان کا کھدر دھرم تو دنیا میں مشہور ہے ۔ کھدر نہ پا سکنے کی وجہ سے وہ مہینوں جیل میں ننگے رہے اور کھدر ہی لیکر چھوڑا ۔ کھدر کے معاملے میں باپو آپ جنرل اواری سے بہت پیچھے رہے ۔ آپ نے تو اپنی اپنڈیسائٹس کی بیماری میں پونا کے سسون اسپتال میں مل کی نہیں ولایتی کپڑے کی پٹی باندھ لی تھی۔

اوھو باپو! اب پتہ چلا. آپ کبھی کبھی اپنا کوئی کوئی بوجھ سر سے اتار کر سستا لیتے تھے ۔ پر ہم آپکی اس چال کو ماننے والے نہیں ۔ ہم تو جس دھرم کو اپنائینگے اس کو پوری طرح اپنائیں گے ۔ دیکھئے باپو ہم چرخہ کاتتے ہیں ۔ روئی دھننا ہم کو نہیں آتا ۔ تو کیوں نہ ہم تیرتھ ستھان وردھا سے پارسل کے ذریعے پونی منگا

बापू से

बापू जिस बोझ को आप अकेले संभाल लेते थे वह आज हम सब मिल कर भी ठीक ठीक संभाल नहीं पाते. क़दम क़दम पर ठोकर खाते हैं, पांव लड़खड़ाने लगते हैं. ज़रा ज़रा देर में कमर में लचक आने लगती है. गरदन तो ऐसी मालूम होती है मानो बोझ से पिच पिच कर रहने ही न पायगी और खोपड़ी के बाल चाहे अभी खत्म न हुए हों पर ज़रूर जल्दी खत्म हो जायंगे. ख़ैर बालों की तो कोई बात नहीं. इस दुनिया भर के बोझ से बाल तो आपके सिर के भी उड़ गए थे. पर यहां तो बाल उड़ने के साथ खोपड़ी ऐसी पिलपिली हुई जा रही है जैसे पाल का पका आम. इस पिलपिलेपन को भी भुगत लेते, पर बापू यह तो दुखती भी है और बुरी तरह पिराती है.

'वैश्नव जन तो तैने कहिये जे पीर पराई जाने रे.'

इस गीत में भी जो आपको बेहद प्यारा था, लिखने वाले को यह भी न सूझा जो इसमें अपनी पीर जानने की बात भी लिख देता पीर पराई जानने से तो लिखने वाले का यही मतलब था ना, कि दूसरे की तकलीफ़ देख कर उसकी तकलीफ़ दूर करने में लग जाना. और बापू, जो हमारी तकलीफ़ दूसरा जाने ही नहीं और हम भी अपनी न जानें तब तो हम मरे बुरी मौत.

यह तो है हमारी खोपड़ी की पीर का हाल. और यह जब है जब इस खोपड़ी पर सिर्फ़ एक ही बोझ है. कहीं हम आपकी देखा देखी अनगिनत बोझ सिर पर लाद बैठें तो न जाने हमारा क्या हाल हो. हम तो समझते हैं कि हमारा और भी अजब तरह का हाल हो. थोड़ी मुसीबत ज़ाहिर तो हो सकती है.

'मुसीबत हद से जब गुज़री तो ज़ाहिर हो नहीं सकती.'

यह जो पुराने लोग कह गए हैं तो क्या कोई झूट कह गए हैं? तजरबा करके ही तो बात कही होगी. इसलिये बापू हमारी हिम्मत नहीं होती कि हम बहुत सा बोझ अपने सिर पर लें. बापू, आप भी तो भूल कर गए कि इस दुनिया को छोड़ने से पहले हमें यह सफल पल्लेदारी की कला न सिखा गए

सुनिये हमारी मुसीबत. हमने क़सम खा ली है कि हम गाय का ही दूध पियेंगे, उसी का दही, मट्ठा और घी खायेंगे. बन पड़ा तो अपने बच्चे को उसकी मां के पेट से बाहर आने के बाद उसकी मां का दूध नहीं पीने देंगे. पैदा होने के दिन ही हम उसके सिर गाय के दूध पीने रूपी प्रतिज्ञा की पगड़ी बांध देंगे. हम दुनिया के सामने यह साबित कर देंगे कि बापू हम आपके बताए धर्म पर इतने पक्के टिके हुए हैं जितने शायद आप भी न रहे होंगे.

باپو سے

باپو جس بوجھ کو آپ اکیلے سنبھال لیتے تھے وہ آج ہم سب مل کر بھی ٹھیک ٹھیک سنبھال نہیں پاتے . قدم قدم پر ٹھوکر کھاتے ہیں' پاؤں لڑکھڑانے لگتے ہیں . ذرا ذرا دیر میں کمر میں لچک آنے لگتی ہے . گردن تو ایسی معلوم ہوتی ہے مانو بوجھ سے پچ پچ کر رہنے ہی نہ پائیگی اور کھوپڑی کے بال چاہے ابھی ختم نہ ہوئے ہوں پر ضرور جلدی ختم ہو جائینگے . خیر بالوں کی تو کوئی بات نہیں . اس دنیا بھر کے بوجھ سے بال تو آپ کے سر کے بھی اُڑ گئے تھے . پر یہاں تو بال اُڑنے کے ساتھ کھوپڑی ایسی پل پلی ہوتی جا رہی ہے جیسے پال کا پکا آم. اس پل پلے پن کو بھی بھگت لیتے' پر باپو یہ تو دکھتی بھی ہے اور بری طرح پراتی ہے .

'ویشنو جن تو تینے کہئے جے پیر پرائی جانے رے'

اس گیت میں بھی جو آپ کو بے حد پیارا تھا" لکھنے والے کو یہ بھی نہ سوجھا جو اس میں اپنی پیر جاننے کی بات بھی لکھ دیتا . پیر پرائی جاننے سے تو لکھنے والے کا یہی مطلب تھا نہ' کہ دوسرے کی تکلیف دیکھکر اس کی تکلیف دور کرنے میں لگ جانا . اور باپو' جو ہماری تکلیف دوسرا جانے ہی نہیں اور ہم بھی اپنی نہ جانیں تب تو ہم مرے بری موت .

یہ تو ہے ہماری کھوپڑی کی پیر کا حال . اور یہ جب ہے جب اس کھوپڑی پر صرف ایک ہی بوجھ ہے . کہیں ہم آپ کی دیکھا دیکھی انگنت بوجھ سر پر لاد بیٹھیں تو نہ جانے ہمارا کیا حال ہو . ہم تو سمجھتے ہیں کہ ہمارا اور بھی عجب طرح کا حال ہو . تھوڑی مصیبت ظاہر تو ہو سکتی ہے .

'مصیبت حد سے جب گزری تو ظاہر ہو نہیں سکتی'

یہ جو پرانے لوگ کہہ گئے ہیں تو کیا کوئی جھوٹ کہہ گئے ہیں؟ تجربہ کر کے ہی تو بات کہی ہوگی . اس لئے باپو ہماری ہمت نہیں ہوتی کہ ہم بہت سا بوجھ اپنے سر پر لیں . باپو' آپ بھی تو بھول کر گئے کہ اس دنیا کو چھوڑنے سے پہلے ہمیں یہ سپھل پلے داری کی کلا نہ سکھا گئے .

سنئے ہماری مصیبت. ہم نے قسم کھا لی ہے کہ ہم گائے کا ہی دودھ پئینگے' اسی کا دہی مٹھا اور گھی کھائینگے . بن پڑا تو اپنے بچے کو اس کی ماں کے پیٹ سے باہر آنے کے بعد اسکی ماں کا دودھ نہیں پینے دیں گے . پیدا ہونے کے دن ہی ہم اس کے سر گائے کے دودھ پینے روپی پرتگیاں کی پگڑی باندھ دیں گے . ہم دنیا کے سامنے یہ ثابت کر دیں گے کہ باپو ہم آپ کے بتائے دھرم پر اتنے پکے ٹکے ہوئے ہیں جتنے شاید آپ بھی نہ رہے ہوں گے .

स्कूलों में ऊपर की क्लास से नीचे की क्लास में लड़के बहुत कम गिराये जाते हैं. यही हाल तनासुख में है. आगे के क्लास में तरक़्क़ी कुछ ज़ियादा लड़कों की रोकी जाती है. तनासुख में भी ऐसा ही होता है. आम सिलसिला लड़कों के नीचे से ऊपर तक तरक़्क़ी मिलते रहने का ही है. बीज इन्सान में सब हालतों के मौजूद हैं क्योंकि सब हालतें भी सब जगह सब के अन्दर मौजूद हैं. अल्लाह हर जगह और हर हाल में है. इसीलिये हर हालत अल्लाह में है.

जिन सूफ़ी आलिमों ने तनासुख को माना है उनमें अहमदबिन साबित, अहमद बिन यबूस, अबु मुस्लिम खुरासानी और शैख़ुल अशराक़ के नाम ख़ास हैं. इन सबने क़ुरान की आयतों पर ही अपनी दलीलों को क़ायम किया है. ख़ास कर सूरतुलबक़र आयत 61 से 92 तक और सूरतुल-मायदा आयत 55 वग़ैरा.

ग़रज़ यह है पुनर्जन्म या तनासुख के मामले में भी किसी न किसी शकल में सब मज़हबों की तालीम मिलती जुलती है.

اسکولوں میں اوپر کی کلاس سے نیچے کی کلاس میں لڑکے بہت کم گرائے جاتے ہیں۔ یہی حال تناسخ میں ہے۔ آگے کے کلاس میں ترقی کچھ زیادہ لڑکوں کی روکی جاتی ہے۔ تناسخ میں بھی ایسا ہی ہوتا ہے۔ عام سلسلہ لڑکوں کے نیچے سے اوپر تک ترقی ملتے رہنے کا ہی ہے۔ بیج انسان میں سب حالتوں کے موجود ہیں کیونکہ سب حالتیں بھی سب جگہ سب کے اندر موجود ہیں۔ اللہ ہر جگہ اور ہر حال میں ہے۔ اسی لئے ہر حالت اللہ میں ہے۔

جن صوفی عالموں نے تناسخ کو مانا ہے اُن میں احمد بن ثابت، احمد بن یبوث، ابومسلم خراسانی اور شیخ الاشراق کے نام خاص ہیں۔ ان سب نے قرآن کی آیتوں پر ہی اپنی دلیلوں کو قائم کیا ہے۔ خاص کر سورۃ البقر آیت 61 سے 92 تک اور سورۃ المائدہ آیت 55 وغیرہ۔

غرض یہ ہے پنرجنم یا تناسخ کے معاملہ میں بھی کسی نہ کسی شکل میں سب مذہبوں کی تعلیم ملتی جلتی ہے۔

●●●●

"तरक़्क़ी—धोके की जड़, ख़ुद को भूल भुलैइयां में रखना. जीवन का कोई अर्थ नहीं है, इसके पीछे कोई तर्क नहीं है. बिना ग़ुलामी के तरक़्क़ी नहीं हो सकती. इने गिने कुछ लोगों के हाथ से जब समाज की बागडोर छूट जाती है, लोग उनके चंगुल से आज़ाद होने लगते हैं, तब समाज की तरक़्क़ी रुक जाती है. हम आराम की कोशिश करते हैं, कम से कम मेहनत करने की तरकीबें निकालते हैं. लेकिन अपनी कठिनाइयां और बढ़ा लेते हैं, हमें अधिक मेहनत करनी पड़ती है. हम कारख़ाने खोलते हैं, मशीनें बनाते हैं ताकि और मशीनें पैदा कर सकें और कारख़ाने खोल सकें—मूर्खता की हद है! दिन पर दिन कारख़ानों में काम करने वालों की तादाद बढ़ती जाती है जब कि दूसरी तरफ़ दुनिया को ज़रूरत है किसानों की, अनाज पैदा करने वालों की. रोटी—यही एक चीज़ है जिसे मनुष्य को अपनी मेहनत से प्रकृति के चंगुल से छीन कर अपने क़ब्ज़े में करना है. जिसकी ज़रूरतें जितनी कम हैं वह उतना ही ख़ुश है. ज़रूरतें जितनी बढ़ती जायंगी आज़ादी का घेरा उतना ही कम होता जायगा."—(मैकसिम गोर्की की किताब 'मेरी यूनीवर्सिटियां' से)

"ترقی—دھوکے کی جڑ، خود کو بھول بھلیاں میں رکھنا۔ جیون کا کوئی ارتھ نہیں ہے، اس کے پیچھے کوئی ترک نہیں ہے۔ بنا غلامی کے ترقی نہیں ہوسکتی۔ اِنے گنے کچھ لوگوں کے ہاتھ سے جب سماج کی باگڈور چھوٹ جاتی ہے، لوگ اُن کے چنگل سے آزاد ہونے لگتے ہیں، تب سماج کی ترقی رک جاتی ہے۔ ہم آرام کی کوشش کرتے ہیں، کم سے کم محنت کرنے کی ترکیبیں نکالتے ہیں۔ لیکن اپنی کٹھنائیاں اور بڑھا لیتے ہیں، ہمیں ادھک محنت کرنی پڑتی ہے۔ ہم کارخانے کھولتے ہیں، مشینیں بناتے ہیں تاکہ اور مشینیں پیدا کرسکیں اور کارخانے کھول سکیں—مورکھتا کی حد ہے! دن دن کارخانوں میں کام کرنے والوں کی تعداد بڑھتی جاتی ہے جب کہ دوسری طرف دنیا کو ضرورت ہے کسانوں کی، اناج پیدا کرنے والوں کی۔ روٹی—یہی ایک چیز ہے جسے منشیہ کو اپنی محنت سے پرکرتی کے چنگل سے چھین کر اپنے قبضے میں کرنا ہے۔ جس کی ضرورتیں جتنی کم ہیں وہ اتنا ہی خوش ہے۔ ضرورتیں جتنی بڑھتی جائیں گی آزادی کا گھیرا اتنا ہی کم ہوتا جائے گا۔"—
(میکسم گورکی کی کتاب 'میری یونیورسٹیاں' سے)

●●●●

मुहम्मद साहब की एक हदीस है—"रहमान यानी अल्लाह ने इन्सान को अपनी शकल पर पैदा किया."

ठीक यही बात इन्हीं शब्दों में इंजील में कही गई है.

यहूदियों की किताब "क़ेबाला" में लिखा है—"पत्थर पौदा हो जाता है, पौदा जानवर हो जाता है, जानवर आदमी हो जाता है, आदमी रूह और रूह ख़ुदा."

एक और यहूदी किताब 'ज़ुहर' में लिखा है—"सब रूहें फिर फिर जन्म लेने की मुसीबतों में से निकलती हैं. आदमी यह नहीं जानता कि कितनी अजीब अजीब मुसीबतों और नये नये जन्मों में से उसे निकलना है. सब रूहों को उसी अल्लाह में लौट कर मिल जाना है जिससे वह निकली हैं. लेकिन इस काम को पूरा करने के लिये सब रूहों को अपने अन्दर वह कमाल पैदा करने होंगे जिनके बीज उनके अन्दर मौजूद हैं. अगर यह बात एक ज़िन्दगी में नहीं होती तो उन्हें फिर दूसरी ज़िन्दगी शुरू करनी होगी और फिर तीसरी और इसी तरह सिलसिला चलता रहेगा. यहां तक कि वह इस क़ाबिल हो जायं कि फिर से अल्लाह में मिल सकें."

मज़हब और साइन्स दोनों कहते हैं कि एक ही असलियत हक़ीक़त या जान सब हालतों में से निकलती है. यही बात सब मज़हबों में कही गई है.

पारसी मज़हब की किताब 'गाथा' में एक जगह लिखा है—"जो आदमी नेक काम करके अल्लाह को ख़ुश करता है उसे अल्लाह हर नये जन्म में ज़ियादा ज़ियादा आत्म ज्ञान (मारफ़त) और अपने ऊपर ज़ियादा ज़ियादा क़ाबू अता करता है. पर जो आदमी नेकी की जगह बदी करता है उसे अल्लाह हर नये जन्म में ज़ियादा बुरी हालत में पैदा करता है. जो लोग ज़ुल्म करते हैं वह बुरी योनियों में जा कर बार बार जन्म लेते हैं जब तक कि वह फिर लौट कर नेकी की तरफ़ न मुड़ें."

आदमी को अरबी में 'अशरफ़ुल मख़लूक़ात' संस्कृत में 'श्रेष्ठतम्' और अंगरेज़ी में 'क्राउन आफ़ क्रियेशन' इसीलिये कहा गया है क्योंकि आदमी की शकल में आने पर ही रूह अपने असली रूप को यानी अपने अन्दर के ईश्वर अल्लाह को पहचानना शुरू करती है.

सूफ़ी लोग आम तौर पर तनासुख़ को मानते हैं. उसे वह 'इरतक़ा' या 'रजत' भी कहते हैं. किसी किसी बात में तो वह हिन्दुओं से भी कहीं ज़ियादा बारीकियां बयान करते हैं. मसलन रूह के इन्सान के जिस्म में फिर से पैदा होने को वह 'नुस्ख़' कहते हैं, जानवर के जिस्म में फिर से पैदा होने को 'मस्ख़' कहते हैं, सब्ज़ी या बनस्पती की सूरत में पैदा होने को 'फ़स्ख़' कहते हैं और मिट्टी पत्थर की सूरत में फिर से पैदा होने को 'रस्ख़' कहते हैं.

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے—" رحمان یعنی اللہ نے انسان کو اپنی شکل پر پیدا کیا ."

ٹھیک یہی بات اِنہیں شبدوں میں انجیل میں کہی گئی ہے .

یہودیوں کی کتاب "قبالہ" میں لکھا ہے—"پتھر پودا ہو جاتا ہے' پودا جانور ہو جاتا ہے' جانور آدمی ہو جاتا ہے' آدمی روح اور روح خدا."

ایک اور یہودی کتاب 'زہر' میں لکھا ہے—"سب روحیں پھر پھر جنم لینے کی مصیبتوں میں سے نکلتی ہیں . آدمی یہ نہیں جانتا کہ کتنی عجیب عجیب مصیبتوں اور نئے نئے جنموں میں سے اُسے نکلنا ہے. سب روحوں کو اُسی اللہ میں لوٹ کر مل جانا ہے جس سے وہ نکلی ہیں . لیکن اِس کام کو پورا کرنے کے لئے سب روحوں کو اپنے اندر وہ کمال پیدا کرنے ہونگے جن کے بیج اُن کے اندر موجود ہیں . اگر یہ بات ایک زندگی میں نہیں ہوتی تو اُنہیں پھر دوسری زندگی شروع کرنی ہوگی اور پھر تیسری اور اِسی طرح سلسلہ چلتا رہے گا . یہاں تک کہ وہ اِس قابل ہو جائیں کہ پھر سے اللہ میں مل سکیں."

مذہب اور سائنس دونوں کہتے ہیں کہ ایک ہی اصلیت حقیقت یا جان سب حالتوں میں سے نکلتی ہے . یہی بات سب مذہبوں میں کہی گئی ہے .

پارسی مذہب کی کتاب 'گاتھا' میں ایک جگہ لکھا ہے—"جو آدمی نیک کام کرکے اللہ کو خوش کرتا ہے اُسے اللہ ہر نئے جنم میں زیادہ زیادہ آتم گیان (معرفت) اور اپنے اوپر زیادہ زیادہ قابو عطا کرتا ہے . پر جو آدمی نیکی کی جگہ بدی کرتا ہے اُسے اللہ ہر نئے جنم میں زیادہ بری حالت میں پیدا کرتا ہے . جو لوگ ظلم کرتے ہیں وہ بری یونیوں میں جاکر بار بار جنم لیتے ہیں جب تک کہ وہ پھر لوٹ کر نیکی کی طرف نہ مڑیں ."

آدمی کو عربی میں 'اشرف المخلوقات' سنسکرت میں 'شریشٹتم' اور انگریزی میں 'کراؤن آف کری ایشن' اسی لئے کہا گیا ہے کیونکہ آدمی کی شکل میں آنے پر ہی روح اپنے اصلی روپ کو یعنی اپنے اندر کے ایشور اللہ کو پہچاننا شروع کرتی ہے

صوفی لوگ عام طور پر تناسخ کو مانتے ہیں . اُسے وہ 'ارتقا' یا 'رجعت' بھی کہتے ہیں . کسی کسی بات میں تو وہ ہندؤں سے بھی کہیں زیادہ باریکیاں بیان کرتے ہیں . مثلاً روح کے انسان کے جسم میں پھر سے پیدا ہونے کو وہ 'نسخ' کہتے ہیں' جانور کے جسم میں پھر سے پیدا ہونے کو 'مسخ' کہتے ہیں . سبزی یا بنسپتی کی صورت میں پیدا ہونے کو 'فسخ' کہتے ہیں اور مٹی پتھر کی صورت میں پھر سے پیدا ہونے کو 'رسخ' کہتے ہیں .

"तुम अपने अल्लाह से कैसे इनकार कर सकते हो. तुम मर चुके थे उसने तुम्हें फिर से जिन्दा किया वह तुम्हें फिर से मुर्दा कर देगा और फिर जिन्दा कर देगा. यहां तक कि आखीर में तुम फिर उसके पास लौट जाओगे."

जो आयतें हमने ऊपर नक़ल की हैं उन पर सब से अच्छी टीका मौलाना रूम के वह मशहूर शेर हैं जिनके लफ़्ज़ी माने हम नीचे देते हैं. मौलाना लिखते हैं:—

'घास की तरह मैं बार बार पैदा हो चुका हूं. मैं सात सौ सत्तर जिस्म देख चुका हूं. पहले मैं जमादात (पत्थर वग़ैरा) की शक्ल में था. वहां से मरा तो मैं नबातात (बनस्पति) बन गया. फिर मैं नबातात से मरा तो जानवर बन गया. जानवर से मैं मरा तो इन्सान बन गया. इसलिये मुझे मौत से क्या डर है, मैं मरने से कभी कम नहीं हुआ. अब अगली मरतबा मैं इन्सान से मरूँगा ताकि फ़रिश्तों के बाल व पर मुझ में निकल आवें. फिर फ़रिश्ते से भी मैं जल्दी से और ऊपर निकल जाऊँगा. सिवाए उस अल्लाह के वजूद के बाक़ी सब चीज़ें मिटती और फिर से बनती रहती हैं. फिर जब मैं फ़रिश्ते की हालत से उड़ कर बाहर निकलूँगा तो वह हो जाऊँगा जो वहम और गुमान में भी नहीं आ सकता."

मौलाना रूम की मसनवी में यह ख़याल बार बार आता है कि—"रूह जमादात (मिट्टी पत्थर) की हालत से निकल कर नबातात (बनस्पती) की हालत में जाती है और बरसों वहां गुज़ारती है जब कि वह अपनी पहली हालत को भूल जाती है. फिर नबातात से निकल कर वह जानवरों की शक्ल में जन्म लेती है. उस हालत में वह अपनी नबाताती हालत को भूले रहती है. इस तरह एक जिस्म से दूसरे जिस्म में गुज़रती हुई वह इन्सान की शक्ल में अक़्लमन्द और दाना बनती है. यहां भी उसे पहली हालतें याद नहीं आतीं. फिर इस हालत से निकल कर उसे ऊपर जाना है ताकि इस हिर्स और तलब (लोभ और लालच) से बाहर निकल कर असली अक़्ल हासिल करे जो इस वक़्त इसके गुमान से भी बाहर है. यूं वह एक दूसरे के बाद जैसे ख़्वाब से निकल कर जागी हुई हालत में आती है और फिर आख़ीर में वह अपनी सब पिछली हालतों को फिर से जान जाती है और अपने असल आपे को पा लेती है."

मसनवी के कुछ शेरों का यह क़रीब क़रीब लफ़्ज़ी तरजुमा है.

पुरानों में और भागवत में भी जगह जगह यही बात कही गई है कि "आत्मा मिट्टी पत्थर, बनस्पती, जानवर और इन्सान चारों हालतों में से एक दूसरे के बाद निकलती है और इस तरह ऊपर को जाती हुई ब्रह्म यानी अपने आपे को पाती है."

" تم اپنے اللہ سے کیسے انکار کر سکتے ہو ۔ تم مر چکے تھے اس نے تمہیں پھر سے زندہ کیا ۔ وہ تمہیں پھر سے مردہ کر دیگا ۔ اور پھر زندہ کر دیگا ۔ یہاں تک کہ آخیر میں تم پھر اس کے پاس لوٹ جاؤگے ۔"

جو آیتیں ہم نے اوپر نقل کی ہیں اُن پر سب سے اچھی ٹیکا مولانا روم کے وہ مشہور شعر ہیں جن کے لفظی معنے ہم نیچے دیتے ہیں۔ مولانا لکھتے ہیں :—

" گھاس کی طرح میں بار بار پیدا ہو چکا ہوں۔ میں سات سو ستر جسم دیکھ چکا ہوں ۔ پہلے میں جمادات (پتھر وغیرہ) کی شکل میں تھا ۔ وہاں سے مرا تو میں نباتات (بنسپتی) بن گیا ۔ پھر میں نباتات سے مرا تو جانور بن گیا ۔ جانور سے میں مرا تو انسان بن گیا ۔ اس لئے مجھے موت سے کیا ڈر ہے' میں مرنے سے کبھی کم نہیں ہوا ۔ اب اگلی مرتبہ میں انسان سے مرونگا تاکہ فرشتوں کے بال و پر مجھ میں نکل آویں ۔ پھر فرشتے سے بھی میں جلدی سے اور اوپر نکل جاؤنگا ۔ سوائے اس اللہ کے وجود کے باقی سب چیزیں مٹتی اور پھر سے بنتی رہتی ہیں ۔ پھر جب میں فرشتے کی حالت سے اڑ کر باہر نکلونگا تو وہ ہو جاؤنگا جو وہم اور گمان میں بھی نہیں آ سکتا ۔"

مولانا روم کی مثنوی میں یہ خیال بار بار آتا ہے کہ—" روح جمادات (مٹی پتھر) کی حالت سے نکل کر نباتات (بنسپتی) کی حالت میں جاتی ہے اور برسوں وہاں گذارتی ہے جبکہ وہ اپنی پہلی کو بھول جاتی ہے۔ پھر نباتات سے نکل کر وہ جانوروں کی شکل میں جنم لیتی ہے ۔ اس حالت میں وہ اپنی نباتاتی حالت کو بھولے رہتی ہے ۔ اس طرح ایک جسم سے دوسرے جسم میں گزرتی ہوئی وہ انسان کی شکل میں عقلمند اور دانا بنتی ہے ۔ یہاں بھی اسے پہلی حالتیں یاد نہیں آتیں ۔ پھر اس حالت سے نکلکر اسے اوپر جانا ہے تاکہ اس حرص اور طلب (لوبھ اور لالچ) سے باہر نکل کر اصلی عقل حاصل کرے جو اس وقت اس کے گمان سے بھی باہر ہے۔ یوں وہ ایک دوسرے کے بعد جیسے خواب سے نکل کر جاگتی ہوئی حالت میں آتی ہے اور پھر آخیر میں وہ اپنی سب پچھلی حالتوں کو پھر سے جان جاتی ہے اور اپنے اصل آپے کو پالیتی ہے۔"

مثنوی کے کچھ شعروں کا یہ قریب قریب لفظی ترجمہ ہے ۔

پرانوں میں اور بھاگوت میں بھی جگہ جگہ یہی بات کہی گئی ہے کہ " آتما مٹی پتھر' بنسپتی' جانور اور انسان چاروں حالتوں میں سے ایک دوسرے کے بعد نکلتی ہے اور اس طرح اوپر کو جاتی ہوئی برہم یعنی اپنے آپے کو پاتی ہے ۔"

को दूसरी तरह बयान करते हैं. संस्कृत में इसे पुनर्जन्म और अरबी में तनासुख कहते हैं. हिन्दू, जैन, बौद्ध और सिक्ख धर्मों के मुताबिक़ रूह बहुत से निचले जिस्मों में से गुज़रने के बाद इन्सान के जिस्म में आती है और फिर इन्सान की शक्ल में भी कई मरतबा पैदा होती है. इंजील और क़ुरान में तनासुख की बाबत कोई साफ़ साफ़ बात शायद नहीं मिलती. लेकिन इन पाक किताबों में कहीं तनासुख से इनकार भी नहीं है. हज़रत ईसा ने कई जगह यह कहा है कि इलयास यानी एलीजाह नबी ही जान दी बैपटिस्ट की शकल में आये थे. इंजील में यह बात कई जगह आती है.

क़ुरान में एक जगह लिखा है—"ऐ इन्सान ! तुझे फिर अपने रब की तरफ़ जाना है. वही तेरा अल्लाह है. तुझे मेहनत और तकलीफ़ के साथ दरजे बदरजे चढ़ कर उस तक पहुँचना है."

कृष्ण ने गीता में कहा है—"बहुत से जन्मों में से धीरे धीरे कमाल को पहुंचता हुआ इन्सान परम गति को प्राप्त करता है और बहुत से जन्मों के बाद ज्ञानी ईश्वर को पाता है."

महाभारत में लिखा है—"एक दूसरे के बाद बेशुमार दुनियायें बनती और बिगड़ती रहती हैं. वही एक परमेश्वर उन्हें बार बार बनाता और बिगाड़ता रहता है."

क़ुरान में बहुत सी आयतें हैं जिन से यह माने निकल सकते हैं कि इन्सान बार बार पैदा होता और बार बार मरता है उसी तरह जिस तरह यह दुनिया बार बार बनती और बार बार बिगड़ती है—इन मे से कुछ आयतें यह हैं:—

"अल्लाह मख़लूक़ को बनाता है और फिर दोबारा बनाता है ताकि वह इनसाफ़ के साथ उनको बदला दे सके जो अल्लाह के हुक्म को मानते हैं और बन्दों के साथ नेकी करते हैं. अल्लाह कहता है जिस तरह हमने पहले ख़िलक़त बनाई थी उसी तरह हम फिर बनाते हैं. अल्लाह ही तुम्हारी मां के पेट में तुम्हें गढ़ता है और फिर फिर गढ़ता है."

"हमने तुम्हें ज़मीन में से पैदा किया है और हम तुम्हें फिर उसी ज़मीन में भेज देंगे और फिर उसी में से तुम्हें पैदा करेंगे, फिर फिर, आख़ीर तक."

"तुम मर चुके थे और हमने फिर तुम्हें पैदा किया ताकि तुम हमें याद करो और हमारा शुक्र करो."

"अल्लाह ने तुम्हारे मरने के बाद फिर तुम्हें ज़िन्दा किया. उसने तुम्हें पहले ज़िन्दा किया था, वह तुम्हें फिर ज़िन्दा कर सकता है. वह ज़िन्दों को मुर्दा और मुर्दों को ज़िन्दा करता है."

کو دوسری طرح بیان کرتے ہیں . سنسکرت اسے پنر جنم اور عربی میں تناسخ کہتے ہیں . ہندو، جین، بودھ اور سکھ دھرموں کے مطابق روح بہت سے نچلے جسموں میں سے گذرنے کے بعد انسان کے جسم میں آتی ہے اور پھر انسان کی شکل میں بھی کئی مرتبہ پیدا ہوتی ہے . انجیل اور قرآن میں تناسخ کی بابت کوئی صاف صاف بات شاید نہیں ملتی. لیکن اِن پاک کتابوں میں کہیں تناسخ سے انکار بھی نہیں ہے . حضرت عیسیٰ نے کئی جگہ یہ کہا ہے کہ الیاس یعنی ایلیجاہ نبی ہی جان دی بیپٹسٹ کی شکل میں آئے تھے . انجیل میں یہ بات کئی جگہ آتی ہے .

قرآن میں ایک جگہ لکھا ہے—" اے انسان ! تجھے پھر اپنے رب کی طرف جانا ہے . وہی تیرا اللہ ہے . تجھے محنت اور تکلیف کے ساتھ درجے بدرجے چڑھکر اس تک پہونچنا ہے "

کرشن نے گیتا میں کہا ہے—" بہت سے جنموں میں سے دھیرے دھیرے کمال کو پہونچتا ہوا انسان پرم گتی کو پراپت کرتا ہے اور بہت سے جنموں کے بعد گیانی ایشور کو پاتا ہے ."

مہا بھارت میں لکھا ہے—" ایک دوسرے کے بعد بےشمار دنیائیں بنتی اور بگڑتی رہتی ہیں . وہی ایک پرمیشور انہیں بار بار بناتا اور بگاڑتا رہتا ہے ."

قرآن میں بہت سی آیتیں ہیں جن سے یہ معنے نکل سکتے ہیں کہ انسان بار بار پیدا ہوتا اور بار بار مرتا ہے اسی طرح جس طرح یہ دنیا بار بار بنتی اور بار بار بگڑتی ہے—اِن میں سے کچھ آیتیں یہ ہیں :—

" اللہ مخلوق کو بناتا ہے اور پھر دوبارا بناتا ہے تاکہ وہ انصاف کے ساتھ اُن کو بدلا دے سکے جو اللہ کے حکم کو مانتے ہیں اور بندوں کے ساتھ نیکی کرتے ہیں . اللہ کہتا ہے جس طرح ہم نے پہلے خلقت بنائی تھی اسی طرح ہم پھر بناتے ہیں . اللہ ہی تمہاری ماں کے پیٹ میں تمہیں گڑھتا ہے اور پھر پھر گڑھتا ہے ."

" ہم نے تمہیں زمین میں سے پیدا کیا ہے اور ہم تمہیں پھر اسی زمین میں بھیج دینگے اور پھر اسی میں سے تمہیں پیدا کرینگے، پھر پھر، آخیر تک ."

" تم مر چکے تھے اور ہم نے پھر تمہیں پیدا کیا تاکہ تم ہمیں یاد کرو اور ہمارا شکر کرو ."

" اللہ نے تمہارے مرنے کے بعد پھر تمہیں زندہ کیا . اُس نے تمہیں پہلے زندہ کیا تھا وہ تمہیں پھر زندہ کر سکتا ہے . وہ زندوں کو مردہ اور مردوں کو زندہ کرتا ہے ."

पुनर्जन्म या तनासुख़

(डाक्टर भगवानदास)

पिछले लेखों में हमने यह बताने की कोशिश की है कि इस सारी खिलक़त या सृष्टी के और इन सब जानदारों के पीछे एक ही हक़ीक़त और एक ही जान है जो सब जगह मौजूद और सब जगह रमी हुई है. उसी से सब जिन्दा हैं. उसी से सब चलते फिरते, सोचते और बोलते हैं, वही ख़ुदा ईश्वर है, वही इस दुनिया का बनाने वाला है, वही इसका क़ायम रखने वाला और वही इसे ख़त्म करने वाला है. वही सब आत्माओं की आत्मा और सब रूहों की रूहे कुल है. सब नाम उसके नाम हैं. सब सूरतें उसकी सूरतें हैं. यह जो हमारे सब के अन्दर 'मैं' बोलता है यह वह ही है. उसके नामों में 'मैं' सब से नज़दीकी नाम है. यह 'मैं' सब जानदारों में है लेकिन इन्सान में यह सब से ज़ियादा चमकता है. सब नाम उसके नाम होते हुए भी हर मज़हब और हर बोली में उसके कुछ ख़ास अलग अलग नाम भी हैं. संस्कृत में वह परमात्मा, आत्मा या ब्रह्म कहलाता है. अरबी में अल्लाह, रब, मालिक या मौला. फ़ारसी में ख़ुदा. अंगरेज़ी में 'गाड'. 'गाड' शब्द 'ख़ुदा' ही से बना है. पारसी धर्म में उसी को 'अहुरमज़्द,' यहूदियों में 'यहुआ' और सिक्खों में 'सत्यश्री अकाल' कहा जाता है. बौद्ध धर्म वाले उसे आत्मा, ब्रह्म, शून्य या अमिताभ कह कर पुकारते हैं. जैनी उसी को 'आत्मा' 'प्रतिभा' या 'निरंजन' कहते हैं. चीन के पुराने मज़हब में उसी का नाम 'ताओ' है. उसका वजूद ही दुनिया की सब से बड़ी सच्चाई है. दुनिया एक लगातार घूमता हुआ चक्कर है जो सुख दुख जैसे जोड़ों के सहारे चलता है जिसमें परमात्मा इन्सान के अन्दर अपने को लगातार भूलता रहता है और इन्सान परमात्मा के अन्दर अपने असली रूप को लगातार याद करता और पहचानता रहता है. यही इस दुनिया का उतार चढ़ाव है.

इस उतार चढ़ाव का नाम ही संसार चक्र है. इसी को चर्ख़े गर्दूं कहते हैं. सवाल होता है कि यह संसार चक्र क्या है. हर चक्र या पहिये के दो हिस्से होते हैं. एक उतार और एक चढ़ाव. रूह के इस उतार और चढ़ाव को संस्कृत किताबों में 'अवरोह' और 'आरोह' कहा गया है. सूफ़ी किताबों में इसे 'ज़वाल' और 'इरतक़ा' कहते हैं. साइन्स की बोली में इसे एवोल्युशन और फ़ाइलोजेनिसस (Phylogenesis) कहा जा सकता है कुछ मज़हब मानते हैं कि एक ही रूह या आत्मा एक दूसरे के बाद कई जिस्म अख़्तियार करती है. दूसरे मज़हब इसी सिलसिले

پنر جنم یا تناسخ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

پچھلے لیکھوں میں ہم نے یہ بتانے کی کوشش کی ہے کہ اس ساری خلقت یا سرشٹی کے اور اِن سب جانداروں کے پیچھے ایک ہی حقیقت اور ایک ہی جان ہے جو سب جگہ موجود اور سب جگہ رمی ہوئی ہے۔ اُسی سے سب زندہ ہیں۔ اُسی سے سب چلتے پھرتے، سوچتے اور بولتے ہیں، وہی خدا ایشور ہے، وہی اس دنیا کا بنانے والا ہے، وہی اس کا قائم رکھنے والا اور وہی اِسے ختم کرنے والا ہے۔ وہی سب آتماؤں کی آتما اور سب روحوں کی روح کل ہے۔ سب نام اُس کے نام ہیں۔ سب صورتیں اُسکی صورتیں ہیں۔ یہ جو ہمارے سب کے اندر 'میں' بولتا ہے یہ وہ ہی ہے۔ اُس کے ناموں میں 'میں' سب سے نزدیکی نام ہے۔ یہ 'میں' سب جانداروں میں ہے لیکن انسان میں یہ سب سے زیادہ چمکتا ہے۔ سب نام اُس کے نام ہوتے ہوئے بھی ہر مذہب اور ہر بولی میں اسکے کچھ خاص الگ الگ نام بھی ہیں۔ سنسکرت میں وہ پرماتما' آتما یا برہمہ کہلاتا ہے۔ عربی میں اللہ' رب' مالک یا مولا۔ فارسی میں خدا انگریزی میں 'گاڈ'۔ 'گاڈ' شبد 'خدا' ہی سے بنا ہے۔ پارسی دھرم میں اسی کو 'ہرمزد' یہودیوں میں 'یہووا' اور سکھوں میں 'ستیہ سری اکال' کہاجاتا ہے۔ بودھ دھرم والے اسے 'آتما' 'برہمہ' شونیہ یا امیتابھ کہکر پکارتے ہیں۔ جینی اُسی کو 'آتما' 'پرتبھا' یا 'نرنجن' کہتے ہیں۔ چین کے پرانے مذہب میں اسی کا نام 'تاؤ' ہے۔ اُس کا وجود ہی دنیا کی سب سے بڑی سچائی ہے۔ دنیا ایک لگاتار گھومتا ہوا چکر ہے جو سکھ دکھ جیسے جوڑوں کے سہارے چلتا ہے جس میں پرماتما انسان کے اندر اپنے کو لگاتار بھولتا رہتا ہے اور انسان پرماتما کے اندر اپنے اصلی روپ کو لگاتار یاد کرتا اور پہچانتا رہتا ہے یہی اِس دنیا کا اُتار چڑھاو ہے۔

اس اُتار چڑھاو کا نام ہی سنسار چکر ہے۔ اِسی کو چرخِ گردوں کہتے ہیں سوال ہوتا ہے کہ یہ سنسار چکر کیا ہے۔ ہر چکر یا پہئے کے دو حصے ہوتے ہیں۔ ایک اُتار اور ایک چڑھاو۔ روح کے اس اُتار اور چڑھاو کو سنسکرت کتابوں میں 'اوروہ' اور 'آروہ' کہا گیا ہے۔ صوفی کتابوں میں اسے 'زوال' اور 'ارتقا' کہتے ہیں۔ سائنس کی بولی میں اسے ایولیوشن اور فائلوجینیسس (Phylogenesis) کہا جا سکتا ہے۔ کچھ مذہب مانتے ہیں کہ ایک ہی روح یا آتما ایک دوسرے کے بعد کئی جسم اختیار کرتی ہے۔ دوسرے مذہب اسی سلسلے

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 13 सितम्बर, सन '52 नम्बर 3

نمبر 3 ستمبر، سن '52 جلد 13

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی ۔

लालच

क्या हुई शान्ति हम जिसे जीत कर लाए
वह विश्व मित्रता कहां ? कोई बतलाए
फिर लगी पनपने नफ़रत और लड़ाई
हथियार फ़रोशी करने लगी सिधाई
दुनिया पर छाकर कमा रहे धन भारी
भय दुख अकाल के जो पक्के व्यापारी

दावतें उड़ाओ, गिद्ध बने तुम खाओ
जूझ मरे लालों को खाओ खाओ !
खा मुरदारों को तुम मोटे हो जाओ
दाने दाने को लाखों को तरसाओ
काटो काटो वह उगी खड़ी है खेती
बेवा चीख़ों की और यतीम आंसू की

लालच कारन सब से पहला है होता
युद्धों का, यही जंग नदी का सोता
तोड़ो तलवारें तभी होगा ठंडा
ये सितम और ये सारा झगड़ा टंटा
पागलपन छाया तो फिर दुनिया सारी
दुख भुगते, तड़पे मानवता बेचारी

मिस्र की मशहूर कवित्री
बहन फ़िलिस तलअत के गीत से.

—भगवानदीन

لالچ

کیا ہوئی شانتی ہم جسے جیت کر لائے
وہ وشومترتا کہاں ؟ کوئی بتلائے
پھر لگی پنپنے نفرت اور لڑائی
ہتھیار فروشی کرنے لگی سیدھائی
دنیا پر چھاکر کما رہے دھن بھاری
بھے دکھ اکال کے جو پکے بیاپاری

دعوتیں اڑاؤ، گدھ بنے تم کھاؤ
جوجھ مرے لالوں کو کھاؤ کھاؤ !
کھا مرداروں کو تم موٹے ہو جاؤ
دانے دانے کو لاکھوں کو ترساؤ
کاٹو کاٹو وہ اگی کھڑی ہے کھیتی
بیوہ چیخوں کی اور یتیم آنسو کی

لالچ کارن سب سے پہلا ہے ہوتا
یدھوں کا، یہی جنگ ندی کا سوتا
توڑو تلواریں تبھی ہوگا ٹھنڈا
یہ ستم اور یہ سارا جھگڑا ٹنٹا
پاگل پن چھایا تو پھر دنیا ساری
دکھ بھگتے، تڑپے مانوتا بیچاری

مصر کی مشہور کوتری
بہن فلس طلعت کے گیت سے ۔

—بھگوان دین

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

सितम्बर 1952

"نیا هند"

هندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماهواری پرچا

ستمبر 1952

क्या किससे | सफा | صفحه | کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने .

قیمت—هندستان میں چھ روپیہ سال، باهر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا هند'
145' مٹھی گنج' الهآباد .



स नम्बर के ख़ास लेख

س نمبر کے خاص لیکھ

तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ستانی کلچر سوسائٹی الٰہ آباد

सितम्बर 1952

क़ीमत दस आना।

قیمت دس آنہ

Registered No. A—210

नई किताब

चाइना टू डे

लेखक — सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के [illegible] की दूसरी साल गिरह के मौके पर हिन्दुस्तान से एक [illegible] मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे.

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से [illegible], भिखमंगी और बेरोज़गारी को दूर किया गया, किस तरह वहां के [illegible] किसानों को [illegible] गई और नये [illegible] सुधार कानून से चीन में भिखमंगा भी अन्नदाता बन गया, किस तरह [illegible] के बावजूद चीन ने अपने उद्योग धन्धे और कल [illegible] संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया, किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान [illegible], किस तरह शादी के नये कानून से चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर दर्जे की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और [illegible] के तीन उसूलों पर चल कर देश को [illegible], काम चोरी [illegible] और [illegible] को दूर कर देश के [illegible] संगठन को ठीक किया [illegible].

अगर आप [illegible] सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी. साथ ही साथ यह किताब एक सफ़रनामा है जिस में चालीस रोज़ का [illegible] और दिलचस्प ढंग से दिया गया है.

[illegible]00 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया कागज़, [illegible], एक तिरंगी और तीस एकरंगी तसवीरें, दो रंगीन नक्शों के साथ — दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 1[illegible] शिलिंग.

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये.

मिलने का पता —

मैनेजर, नया हिन्द, 1[illegible], मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

چائنا ٹو ڈے

لکھک — سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے [illegible] سالگرہ کے موقع پر [illegible]

[illegible]

700 سے زیادہ صفحے، بڑھیا کاغذ [illegible] ایک رنگی اور تیس ایک رنگی تصویریں، دو رنگین نقشوں کے ساتھ — دام صرف ساڑھے سات روپے یا [illegible] شلنگ۔

اپنے یہاں کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھئے

ملنے کا پتہ —

مینیجر، نیا ہند، 145، مٹھی گنج، الٰہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्कों में आपस का मेल बढ़ाना

—:o:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट— मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा
वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़
गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास
सेक्रेटरी - पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री पी० डी० टंडन, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री श्याम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल
सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो ग्राहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ'
وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق
گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس'
سکریٹری — پنڈت سندرلال

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری پی. ڈی ٹنڈن' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری شیام پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ۔

سندرلال
سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی'
145' مٹھی گنج' الہ آباد .

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے . "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا . الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

(ii) राजीनामे में कहा गया है कि पहले तीन साल में सरकार कम से कम 100 आदमियों को स्विटज़रलैंड ट्रेनिंग के लिये भेजेगी. लेकिन राजीनामे के दो साल बाद सरकार ने सिर्फ़ तीन ड्राफ्टमैन भेजे. इसके माने हैं कि वह कुछ भी फ़ायदा न उठा पाई.

(iii) आर्डर के साथ आधे दाम दे देने की शर्त बहुत ग़ैर मामूली है. ऐसी पेशगियों के साथ कोई ज़मानत होनी चाहिये.

(iv) जब विदेशी कम्पनी ने पहले साल वाले डिब्बे नहीं पहुंचाये तो आगे आर्डर देना और उसका दाम पहुंचा देना ग़लत बात है.

(v) राज़ीनामे में लिखा है कि 25 डिब्बों की तैयारी में जो ख़र्च बैठेगा उस पर दस फ़ीसदी मुनाफ़ा जोड़ कर जो दाम पड़ेंगे उसी हिसाब से कुल डिब्बों की क़ीमत लगाई जायगी. इस तरह की शर्त करना एक नामुनासिब बात है और फिर जब कोई कारख़ाना अपने को एक्सपर्ट बताता है तो उसे तो माल का ठीक ठीक भाव पहले से बताना ही चाहिये.

हमारा ख़्याल है कि अगर रेलवे मिनिस्ट्री का बस चले और आडिट वाले बीच में टांग न अड़ायें तो उस कम्पनी को रेलवे वाले पैसा भेजते रहते, चाहे डिब्बा एक भी बनता या न बनता और नई दिल्ली के रेलवे मिनिस्टर इतमिनान दिलाते रहते कि हम जल्दी ही स्वावलम्बी बन कर तीसरे दर्जे की मुसीबत काफ़ूर कर देने वाले हैं. ईश्वर ही जानता है कि रेलवे जो लाखों और करोड़े रुपया बात की बात में ख़र्च कर देती है उसमें कितना वाजिब तौर पर और ईमानदारी से ख़र्च करती हैं. मद्रास के 'हिन्दू' जैसे ठंडे अख़बार ने यह लिखा है कि अगर रेलवे मिनिस्ट्री या सरकार अपनी नई स्कीमों में पैसा इस तरह बे एहतियाती, लापरवाही और ग़ैर समझदारी के साथ बहायेगी तो जल्दी ही वह वक़्त आने वाला है जब जनता यह आवाज़ उठायेगी कि बाबा इन विकास योजनाओं से हमें बख़्शो.

—सुरेश रामभाई

(ii) راضی نامے میں کہا گیا ہے کہ پہلے تین سال میں سرکار کم سے کم سو آدمیوں کو سوئٹزرلینڈ ٹریننگ کے لئے بھیجیگی. لیکن راضی نامے کے دو سال بعد سرکار نے صرف تین ڈرافٹ مین بھیجے . اس کے معنے ہیں کہ وہ کچھ بھی فائدہ نہ اُٹھا پائی .

(iii) آرڈر کے ساتھ آدھے دام دے دینے کی شرط بہت ہی غیر معمولی ہے . ایسی پیشگیوں کے ساتھ کوئی ضمانت ہونی چاہئے .

(vi) جب ودیشی کمپنی نے پہلے سال ڈبے نہیں پہونچائے تو آگے آرڈر دینا اور اس کا دام پہونچا دینا غلط بات ہے .

راضی نامے میں لکھا ہے کہ 25 ڈبوں کی تیاری میں جو خرچ بیٹھیگا اُس پر دس فیصدی منافع جوڑ کر جو دام پڑینگے اُسی حساب سے کل ڈبوں کی قیمت لگائی جائیگی . اسی طرح کی شرط کرنا ایک نا مناسب بات ہے اور پھر جب کوئی کارخانہ اپنے کو ایکسپرٹ بتاتا ہے تو اُسے تو مال کا ٹھیک ٹھیک بھاؤ پہلے سے بتانا ہی چاہئیے .

ہمارا خیال ہے کہ اگر ریلوے منسٹری کا بس چلے اور آڈیٹ والے بیچ میں ٹانگ نہ اڑائیں تو اُس کمپنی کو ریلوے والے پیسہ بھیجتے رہتے' چاہے ڈبہ ایک بھی بنتا یا نہ بنتا اور نئی دلی کے ریلوے منسٹر اطمینان دلاتے رہتے کہ ہم جلدی ہی سوآولمبی بن کر تیسرے درجے کی مصیبت کافور کر دینے والے ہیں . ایشور ہی جانتا ہے کہ ریلوے جو لاکھوں اور کروڑوں روپیہ بات کی بات میں خرچ کر دیتی ہے اُس میں کتنا واجب طور پر اور ایمانداری سے خرچ کرتی ہے . مدراس کے 'ہندو' جیسے ٹھنڈے اخبار نے یہ لکھا ہے کہ اگر ریلوے منسٹری یا سرکار اپنی نئی اسکیموں میں پیسہ اس طرح بے احتیاطی' لاپرواہی اور غیر سمجھداری کے ساتھ بہائیگی تو جلدی ہی وہ وقت آنے والا ہے جب جنتا یہ آواز اُٹھائیگی کہ بابا اِن وکاس یوجناؤں سے ہمیں بخشو .

—سریش رام بھائی

कम वाले को न दे कर दूसरों को दिये गये, पर इसकी कोई लिखित वजह नहीं दी गई.

(4) बिना पहले इजाज़त लिये माल ख़रीद लेना. हमने ऊपर आसाम रेल लिंक की चर्चा की है जिसमें 14 करोड़ ख़र्च हुए. आडिट रिपोर्ट में कहा गया है कि एक करोड़ का सामान चीफ़ इन्जिनियर की इजाज़त लिये बिना ही ख़रीद लिया गया. लोकल आडिट में एतराज़ किया गया पर कोई ध्यान नहीं दिया गया. इसके अलावा तरह एक करोड़ सत्तर लाख (170 लाख रुपये) का काम इस आसाम रेल लिंक में बिना टेन्डर के दिया गया इस तरह चौदह करोड़ में तीन पौने तीन करोड़ तो यों ही ख़र्च हो गये !

(5) विदेशी फ़र्मों से जो सौदे किये जाते हैं वह बिला सोचे समझे और उन पर भी बाद में कोई तवज्जेह नहीं दी जाती. इस बारे में आडिट रिपोर्ट ने जो लिखा है उससे तो हमें शक होने लगता है कि रेलवे बोर्ड या रेलवे मिनिस्टर शायद एक दम सोये हुए रहते हैं. 28 मई 1949 को रेलवे बोर्ड ने स्विटज़रलैन्ड की एक कम्पनी से 12 साल के लिये एक राज़ीनामा किया ताकि सिर्फ़ धातु के और हलके वज़न के रेल के डिब्बे तैयार करने का कारख़ाना लगाने में उससे तकनीकी मदद मिले. हिन्द सरकार ने तय किया था कि शुरू के दो साल तक तीन लाख फ्रैन्क (स्विटज़रलैन्ड का सिक्का) सालाना उस कम्पनी को दिये जायँगे और बाद में यह रकम कम होती जायगी. लेकिन रेलवे बोर्ड यह तय ही नहीं कर सका कि कारख़ाना किस जगह खोला जायगा. इसलिये इस राज़ीनामे से पूरा फ़ायदा न उठाया जा सका. मगर उस कम्पनी को पैसा लगातार दिया जाता रहा. इस तरह 8,80,000 फ्रैंक 1951 तक उस कम्पनी को मिले. मगर इसके बदले में कम्पनी ने सिर्फ़ यह काम किया कि डिब्बों के नमूने का नक़्शा भेज दिया और उस नक़्शे को बनाने के लिये छै 'एक्सपर्ट' भेजे. यह छै आदमी कोई 13 महीने तक हिन्द सरकार के ख़र्चे पर रहे जिनके ऊपर दो लाख रुपया और ख़र्च हो गया !

इसी राज़ीनामें में यह भी तय हुआ था कि सरकार इस कम्पनी से चार साल तक 50 डिब्बे हर साल ख़रीदेगी. 1950 और 1951 में हिन्द सरकार ने 100 डिब्बों का आर्डर दे भी दिया. लेकिन 1952 के शुरू तक एक भी डिब्बा बरामद नहीं हुआ. मगर हमारी सरकार ने आधे डिब्बों के दाम पेशगी के तौर पर 61·87 लाख रुपया कम्पनी को अदा भी कर दिया. आडिट रिपोर्ट ने इस राज़ीनामे और सरकारी ख़र्च पर जो एतराज़ उठाये हैं वह हम नीचे देते हैं :—

(i) बिना यह तय किये कि फ़ैक्ट्री कहां खड़ी की जायगी और उसमें कितना ख़र्च बैठेगा सरकार ने राज़ीनामा करके पैसा देने का वायदा कर लिया.

کم والے کو نہ دے کر دوسروں کو دئے گئے، پر اس کی کوئی لکھت وجہ نہیں دی گئی ۔

(4) بنا پہلے اجازت لئے مال خرید لینا ۔ ہم نے اوپر آسام ریل لنک کی چرچا کی ہے جس میں 14 کروڑ خرچ ہوئے ۔ آڈٹ رپورٹ میں کہا گیا ہے کہ ایک کروڑ کا سامان چیف انجینیر کی اجازت لئے بنا ہی خرید لیا گیا ۔ لوکل آڈٹ میں اعتراض کیا گیا پر کوئی دھیان نہیں دیا گیا ۔ اس کے علاوہ ایک کروڑ ستر لاکھ (170 لاکھ روپئے) کا کام اس آسام ریل لنک میں بنا ٹینڈر کے دے دیا گیا ۔ اس طرح چودہ کروڑ میں تین پونے تین کروڑ تو یوں ہی خرچ ہوگئے !

(5) ودیشی فرموں سے جو سودے کئے جاتے ہیں وہ بنا سوچے سمجھے اور ان پر بھی بعد میں کوئی توجہ نہیں دی جاتی ۔ اس بارے میں آڈٹ رپورٹ جو لکھا ہے اس سے تو ہمیں شک ہونے لگتا ہے کہ ریلوے بورڈ یا ریلوے منسٹر شاید ایک دم سوئے ہوئے رہتے ہیں ۔ 28 مئی 1949 کو ریلوے بورڈ نے سوئٹزرلینڈ کی ایک کمپنی سے 12 سال کے لئے ایک راضی نامہ کیا تاکہ صرف دھاتو کے اور ہلکے وزن کے ریل کے ڈبے تیار کرنے کا کارخانہ لگانے میں اس سے تکنیکی مدد ملے ۔ ہند سرکار نے طے کیا تھا کہ شروع کے دو سال تک تین لاکھ فرینک (سوئٹزرلینڈ کا سکہ) سالانہ اس کمپنی کو دئے جائینگے اور بعد میں یہ رقم کم ہوتی جائیگی ۔ لیکن ریلوے بورڈ یہ طے نہیں کر سکا کہ کارخانہ کس جگہ کھولا جائے گا اسلئے اس راضی نامے سے پورا فائدہ نہ اٹھایا جا سکا ۔ مگر اس کمپنی کو پیسہ لگاتار دیا جاتا رہا ۔ اس طرح 8,80,000 فرینک 1951 تک کمپنی کو ملے ۔ مگر اس کے بدلے میں کمپنی نے صرف یہ کام کیا کہ ڈبوں کے نمونے کا نقشہ بھیج دیا اور اس نقشے کو بنانے کے لئے چھ 'ایکسپرٹ' بھیجے ۔ یہ چھ آدمی کوئی 13 مہینے تک ہند سرکار کے خرچے پر رہے جنکے اوپر دو لاکھ روپیہ اور خرچ ہوگیا !

اسی راضی نامے میں یہ بھی طے ہوا تھا کہ سرکار اس کمپنی سے چار سال تک 50 ڈبے ہر سال خریدے گی 1950 اور 1951 میں ہند سرکار نے 50 ڈبوں کا آرڈر دے بھی دیا ۔ لیکن 1952 کے شروع تک ایک بھی ڈبہ برآمد نہیں ہوا ۔ مگر ہماری سرکار نے آدھے ڈبوں کے دام پیشگی کے طور پر 16.87 لاکھ روپیہ کمپنی کو ادا بھی کر دیا ۔ آڈٹ رپورٹ نے اس راضی نامے اور سرکاری خرچ پر جو اعتراض اٹھائے ہیں وہ ہم نیچے دیتے ہیں :—

(i) بنا یہ طے کئے کہ فیکٹری کہاں کھڑی کی جائے گی اور اسمیں کتنا خرچا بیٹھیگا' سرکار نے راضی نامہ کر کے پیسہ دینے کا وعدہ کر لیا ۔

पर हम ज़रा इसी साल की आडिट रिपोर्ट को देखें जो अभी निकली है. उसमें बताया गया है कि रेलवे के हिसाब किताब में जो गड़बड़ी है उसकी तह में पांच बातें हैं—

(1) जो नये काम किये जाते हैं उनके तख़मीने ठीक से नहीं बनाये जाते और बाद में उन कामों के लिये ज़ियादा से ज़ियादा पैसे की ग्रान्टें मांगी जाती हैं. यह ख़र्च ग्रान्टों से कहीं ज़ियादा कर दिया जाता है. मिसाल के तौर पर "काग़ज़ क़लम, फ़ार्म और टिकट" के लिये 70 लाख रुपये की ग्रान्ट थी. बाद में उसे बढ़ा कर 92 लाख की ग्रांट मांगी गई, मगर ख़र्च हुआ एक करोड़ चार लाख (104 लाख).

(2) माल जो ख़रीदा जाता है उस पर कोई निगरानी नहीं रहती—उस में चोरी होती है और वह ग़ायब किया जाता है. मिसाल के तौर पर "हरजाने" की मद में ग्रांट थी 130 लाख रुपये की—भला सोचिये सवा करोड़ हरजाने में दे दिया जाये—मगर ख़र्च हुआ 371 लाख यानी पौने चार करोड़ के क़रीब. रेलवे के गोदामों का दरवाज़ा खुला है जो चाहे खोल कर दे. रिपोर्ट में बताया गया है कि सिमेन्ट लोहा, फ़र्नीचर, टीन वग़ैरा के हिसाब ख़ास तौर से ठीक ठीक नहीं मिलते. क्या यह मुमकिन नहीं है कि यह चीज़ें रेलवे के गोदामों से ग़ायब कर दी गई हों और क्योंकि उन दिनों इनकी कमी थी ही इसलिये चोरबाज़ार में ठाठ से बेची गई हों ? रिपोर्ट में लिखा है कि सिमेन्ट के बोरे के बोरे अनजाने आदमियों को दे दिये गये. एक आदमी ने लोहा बुक कराया, रेलवे की किताबें कहती हैं कि उसे "डेलीवरी" दे दी गई पर उसे रत्ती भर भी लोहा न मिला और फिर रेलवे ने उसे हरजाना अदा किया. इसी को कहते हैं माले मुफ़्त दिले बेरहम.

हम लोग चित्तरंजन के इन्जिन बनाने के कारख़ाने का बड़ा नाम सुनते हैं. वहां के बारे में आडिट रिपोर्ट का कहना है कि खाते का हिसाब कहीं था कहीं नहीं था और क्योंकि उसके सिर पैर नहीं मिलते थे इसलिये उसे जांचा ही नहीं जा सका. मुबारक हो हमारी रेलवे मिनिस्ट्री को जो इस तरह कारख़ानों को खोल खोल कर रुपये बहा कर देश को स्वावलम्बी बनाने चली है !

(3) ठेके जिन नियम या शर्तों पर दिये जाते हैं उनकी कोई पाबन्दी नहीं की जाती. मिसाल के लिये सिलीगुरी नार्थ स्टेशन (आसाम) बनाया गया. इस काम के लिये रेट तब तय किये गये जब काम शुरू हो गया ! और क्या रेट तय हुए इसकी ख़बर चीफ़ इन्जीनियर को भी नहीं ! और न कोई टेन्डर ही लिये गये ! ! ज़ाहिर है कि तब तो रेलवे के ठेकेदारों ने जो चाहा होगा वही पाया होगा. ऐसी भी मिसालें मिलती हैं कि टेन्डर लिये गये लेकिन सबसे

پر ہم ذرا اسی سال کی آڈٹ رپورٹ کو دیکھیں جو ابھی نکلی ہے ۔ اس میں بتایا گیا ہے کہ ریلوے کے حساب کتاب میں جو گڑبڑی ہے اس کی تہہ میں پانچ باتیں ہیں—

(1) جو نئے کام کئے جاتے ہیں ان کے تخمینے ٹھیک سے نہیں بنائے جاتے اور بعد میں ان کاموں کے لئے زیادہ سے زیادہ پیسے کی گرانٹیں مانگی جاتی ہیں یا خرچ گرانٹوں سے کہیں زیادہ کر دیا جاتا ہے ۔ مثال کے طور پر "کاغذ—قلم' فارم اور ٹکٹ" کے لئے 70 لاکھ روپئے کی گرانٹ تھی ۔ بعد میں اسے بڑھا کر 92 لاکھ کی گرانٹ مانگی گئی' مگر خرچ ہوا ایک کروڑ چار لاکھ (104 لاکھ).

(2) مال جو خریدا جاتا ہے اس پر کوئی نگرانی نہیں رہتی—اس میں چوری ہوتی ہے اور وہ غائب کیا جاتا ہے ۔ مثال کے طور پر "ہرجانے" کی مد میں گرانٹ تھی 130 لاکھ روپئے کی—بھلا سوچئے سوا کروڑ ہرجانے میں دے دیا جائے—مگر خرچ ہوا 371 لاکھ یعنی پونے چار کروڑ کے قریب ۔ ریلوے کے گوداموں کا دروازہ کھلا ہے جو چاہے کھول کر دے ۔ رپورٹ میں بتایا گیا ہے کہ سیمنٹ' لوہا' فرنیچر' ٹین وغیرہ کے حساب خاص طور سے ٹھیک ٹھیک نہیں ملتے ۔ کیا یہ ممکن نہیں ہے کہ یہ چیزیں ریلوے کے گوداموں سے غائب کر دی گئیں ہوں اور کیونکہ ان دنوں انکی کمی تھی ہی اس لئے چور بازار میں ٹھاٹھ سے بیچی گئیں ہوں؟ رپورٹ میں لکھا ہے کہ سیمنٹ کے بورے کے بورے انجانے آدمیوں کو دے دئے گئے ۔ ایک آدمی نے لوہا بک کرایا' ریلوے کی کتابیں کہتی ہیں کہ اسے "ڈیلیوری" دے دی گئی پر اسے رتی بھر بھی لوہا نہ ملا اور پھر ریلوے نے اسے ہرجانہ ادا کیا ۔ اسی کو کہتے ہیں مالے مفت دلے بے رحم ۔

ہم لوگ چترنجن کے انجن بنانے کے کارخانے کا بڑا نام سنتے ہیں ۔ وہاں کے بارے میں آڈٹ رپورٹ کا کہنا ہے کہ کھاتے کا حساب کہیں تھا کہیں نہیں تھا اور کیونکہ اس کے سر پیر نہیں ملتے تھے اس لئے اسے جانچا ہی نہیں جاسکا ۔ مبارک ہو ہماری ریلوے منسٹری کو جو اس طرح کارخانوں کو کھول کھول کر روپئے بہا کر دیش کو سواولمبی بنانے چلی ہے ۔

(3) ٹھیکے جن نیم یا شرطوں پر دئے جاتے ہیں ان کی کوئی پابندی نہیں کی جاتی ۔ مثال کے لئے سلی گری نارتھ اسٹیشن (آسام) بنایا گیا ۔ اس کام کے لئے ریٹ تب طے کئے گئے جب کام شروع ہوگیا تھا ! اور کیا ریٹ طے ہوئے اس کی خبر چیف انجینیر کو بھی نہیں! اور نہ کوئی ٹینڈر ہی لئے گئے !! ظاہر ہے کہ تب تو ریلوے کے ٹھیکے داروں نے جو چاہا ہوگا وہی پایا ہوگا. ایسی بھی مثالیں ملتی ہیں کہ ٹینڈر لئے گئے لیکن سب سے

खर्च	करोड़ रुपये में	کروڑ روپئے میں	خرچ
वर्किंग खर्च	181·53	181·53	ورکنگ خرچ
डेपरिसियेशन	11·58	11·58	ڈیپری سی ایشن
दूसरी रेलों को दी गई आमदनी	1·80	1·80	دوسری ریلوں کو دی
	194·91	194·91	کل آمدنی
फुटकर खर्च	3·67	3·67	
कुल खर्च	198·58	198·58	کل خرچ
बचत			بچت
आमदनी में बचत	37·77	37.77	آمدنی میں بچت
सूद में खर्च	23·18	23·18	سود میں خرچ
ठोस बचत	14·59	14·59	ٹھوس بچت
जनरल रेवीन्यू	7·59	7·59	جنرل ریونو
डेपरिसियेशन फंड,	7·00	7·00	ڈیپری سی ایشن
	14·59	14·59	

इस तरह 37·77 करोड़ रुपये की आमदनी का हिसाब बराबर कर दिया गया.

यह आंकड़े फरवरी 1951 में जब रेलवे मिनिस्टर साहब ने पेश किये थे तो उन्होंने कहा था कि रेलवे में जो सुधार वगैरा हमें करना है उसके लिये या तो खर्च कम करें या आमदनी बढ़ायें. खर्च घटाने की कोशिश तो हमारी है मगर "खर्च में कितनी कमी हो सकेगी ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता. लेकिन जितनी भी हो आमदनी तो हमें बढ़ानी ही पड़ेगी और इसके लिये 1950–51 का बजट पेश करते वक्त उन्होंने किराये इस हिसाब से बढ़ाये थे—

पहले दर्जे में	12 1/2 फी सदी
दूसरे में	14 3/7 „
ड्योढ़े में	16 2/3 से 20 „
तीसरे में	20 से 25 „

जाहिर है कि सब में ज़ियादा चोट तीसरे दर्जे वाले को ही पहुंचाई गई जिसके बल पर रेलवे को करोड़ों की आमदनी होती है.

1949–50 वाले साल में ही चौदह करोड़ रुपये खर्च कर के आसाम को उत्तर बंगाल से रेल द्वारा जोड़ा गया. उस साल की रिपोर्ट में रेलवे मिनिस्ट्री ने अपने कारनामों के और बहुत से राग अलापे हैं.

اس طرح 37·77 کی آمدنی کا حساب برابر کر دیا گیا ۔

یہ آنکڑے فروری 1951 میں ریلوے منسٹر صاحب نے پیش کئے تھے تو انہوں نے کہا تھا کہ ریلوے میں جو سدھار وغیرہ ہمیں کرنا ہے اسکے لئے یا تو خرچ کم کریں یا آمدنی بڑھائیں ۔ خرچ گھٹانے کی کوشش تو ہماری ہے مگر " خرچ میں کتنی کمی ہو سکیگی ٹھیک ٹھیک نہیں کہا جا سکتا ۔ لیکن جتنی بھی ہو آمدنی تو ہمیں بڑھانی ہی پڑے گی اور اس کے لئے

پہلے درجے میں	12 1/2 فی صدی
دوسرے میں	„ 14 3/7
ڈیوڑھے میں	„ 16 2/3 سے 20
تیسرے میں	„ 20 سے 25

ظاہر ہے کہ سب میں زیادہ چوٹ تیسرے درجے والے کو ہی پہونچائی گئی جس کے بل پر ریلوے کو کروڑوں کی آمدنی ہوتی ہے ۔

1949-50 والے سال میں ہی چودہ کروڑ روپئے خرچ کرکے آسام کو اتر بنگال سے ریل دوارا جوڑا گیا ۔ اس سال کی رپورٹ میں ریلوے منسٹری نے اپنے کارناموں کے اور بہت سے راگ الاپے ہیں ۔

खाने पीने का सुभीता रहे. इसके अलावा स्लीपिंग कार होती है ताकि वह आराम से लेट सकें, आइस वेन्डर का डिब्बा होता है ताकि उन्हें जब चाहे ठंडा पानी मिल सके. अगर किसी को यह जानना हो कि किस तरह ज़ियादा आदमियों को चूस कर थोड़ों को खुश रखा जाता है तो हिन्दुस्तान की रेलवे सब से सीधी मिसाल है. यह देख कर हैरत और भी बढ़ जाती है कि जब रेलवे मिनिस्टर से बाला साहब खेर (जो आज कल इंगलैन्ड में हमारे हाई कमिश्नर हैं) जैसे भोले भाले आदमी ने कहा कि रेलों में से दर्जे ही उड़ा दीजिये तो शास्त्री जी ने फ़रमाया कि ख़याल तो अच्छा है मगर "नई दिशा में जल्द बाज़ी में मैं कोई क़दम नहीं उठा सकता!" इसके साफ़ माने हैं कि 31 मई को शास्त्री जी ने जो इतमिनान दिलाया था वह केवल दिखावे का था जिस पर अमल करने की वह कोई ज़रूरत नहीं महसूस करते.

हमने ऊपर कहा है कि कुछ जानकारी हासिल करने के बाद शास्त्री जी ने बताया कि पांच साल तक डिब्बों वग़ैरा की कमी के कारन तीसरे दर्जे वालों की मुसीबत बनी रहने वाली है. बड़े अदब के साथ हम शास्त्री जी से अपील करेंगे कि वह अपने महकमे की और ज़ियादा जानकारी हासिल करें. हमें उम्मीद है कि ऐसा करने पर उन्हें पता चलेगा कि अगर रेलवे इन्तज़ाम की हालत यही बनी रही तो जो सब्ज़ बाग़ शास्त्री जी पांच बरस बाद दिखाने का वादा करते हैं उसे वह पांच सौ बरस बाद भी नहीं बना सकेंगे. हमें यह दुख भरी बात रेलवे की आडिट रिपोर्ट जो हाल ही में छपी है, उसे देख कर कहना पड़ता है.

यह आडिट रिपोर्ट साल 1949–50 की बाबत है. इस रिपोर्ट को तो देख कर आंखें खुल जाती हैं और ऐसा महसूस होता है कि हमारे पुराने रेलवे मिनिस्टर साहब जो आजकल डिफ़ेन्स मिनिस्टर हैं महज़ किराया बढ़ा बढ़ा कर रेलवे की आमदनी में इज़ाफ़ा कर के यह डींगें मारना जानते थे कि रेलवे में कितनी तरक़्क़ी है. पर उनको इस की कोई परवाह नहीं थी—या वह इतने बे ख़बर रहते थे या उन्हें इन बातों की इत्तला ही नहीं थी—कि रेलवे महकमे में अन्दर ही अन्दर क्या मनमाना स्वांग चल रहा है.

साल 1949–50 में रेलवे की माली हालत की सूरत यह थी—

आमदनी	करोड़ रुपये में
मुसाफ़िरों से	86·35
मालगाड़ी से	122·62
पार्सल, लगेज वग़ैरा से	27·38
कुल आमदनी	236·35

کھانے پینے کا سبھیتا رہے ۔ اس کے علاوہ سلیپنگ کار ہوتی ہے تاکہ وہ آرام سے لیٹ سکیں' آئس وینڈر کا ڈبہ ہوتا ہے تاکہ انہیں جب چاہیں ٹھنڈا پانی مل سکے ۔ اگر کسی کو یہ جاننا ہو کہ کسطرح زیادہ آدمیوں کو چوس کر تھوڑوں کو خوش رکھا جاتا ہے تو ہندستان کی ریلوے سب سے سیدھی مثال ہے ۔ یہ دیکھکر حیرت اور بھی بڑھ جاتی ہے کہ جب ریلوے منسٹر سے بالا صاحب کھیر (جو آجکل انگلینڈ میں ہمارے ہائی کمشنر ہیں) جیسے بھولے بھالے آدمی نے کہا کہ ریلوں میں سے درجے ہی اڑا دیجئے تو شاستری جی نے فرمایا کہ خیال تو اچھا ہے مگر ' نئی دشا میں جلد بازی میں میں کوئی قدم نہیں اٹھا سکتا !" اس کے صاف معنی ہیں کہ 31 مئی کو شاستری جی نے جو اطمینان دلایا تھا وہ کیول دکھاوے کا تھا جس پر عمل کرنے کی وہ کوئی ضرورت نہیں محسوس کرتے ۔

ہم نے اوپر کہا ہے کہ کچھ جانکاری حاصل کرنے کے بعد شاستری جی نے بتایا کہ پانچ سال تک ڈبوں وغیرہ کی کمی کے کارن تیسرے درجے والوں کی مصیبت بنی رہنے والی ہے ۔ بڑے ادب کے ساتھ ہم شاستری جی سے اپیل کرینگے کہ وہ اپنے محکمے کی اور زیادہ جانکاری حاصل کریں ۔ ہمیں امید ہے کہ ایسا کرنے پر انہیں پتہ چلے گا کہ اگر ریلوے انتظام کی حالت یہی بنی رہی تو جو سبز باغ شاستری جی پانچ برس بعد دکھانے کا وعدہ کرتے ہیں اسے وہ پانچ سو برس بعد بھی نہیں بنا سکیں گے ۔ ہمیں یہ دکھ بھری بات ریلوے کی آڈٹ رپورٹ جو حال ہی میں چھپی ہے' اسے دیکھکر کہنا پڑتا ہے ۔

یہ آڈٹ رپورٹ سال 1949–50 کی بابت ہے ۔ اس رپورٹ کو تو دیکھکر آنکھیں کھل جاتی ہیں اور ایسا محسوس ہوتا ہے کہ ہمارے پرانے ریلوے منسٹر صاحب جو آجکل ڈفنس منسٹر ہیں محض کرایہ بڑھا بڑھا کر ریلوے کی آمدنی میں اضافہ کر کے یہ ڈینگیں مارنا جانتے تھے کہ ریلوے میں کتنی ترقی ہے ۔ پر ان کو اس کی کوئی پرواہ نہیں تھی—یا وہ اتنے بے خبر رہتے تھے یا انہیں ان باتوں کی اطلاع ہی نہیں تھی—کہ ریلوے محکمے میں اندر ہی اندر کیا من مانا سوانگ چل رہا ہے ۔

سال 1949–50 میں ریلوے کی مالی حالت کی صورت یہ تھی—

آمدنی	کروڑ روپے میں
مسافروں سے	86·35
مال گاڑی سے	122·62
پارسل لگیج وغیرہ سے	27·38
کل آمدنی	236·35

यह भी कहा कि हमारी रेलों के पास इस वक्त डिब्बों और इंजनों वगैरा की इतनी कमी है कि पांच साल तक जब तक हमारे देश में काफ़ी डिब्बे वगैरा बनने न लग जायं यह शिकायत दूर नहीं हो सकती.

इसके बाद जुलाई के दूसरे हफ्ते में दिल्ली की एक अदालत में रेलवे की तरफ़ से एक 'मुलज़िम' के खिलाफ़ मुक़दमा दायर किया गया क्योंकि उसने ज़ंजीर खींच कर गाड़ी रोक ली थी. अदालत ने मुक़दमे को खारिज कर दिया और यह फैसला दिया कि किसी डिब्बे में लिखी हुई तादाद से ज़ियादा सवारियां हों और अगर कोई मुसाफ़िर ज़ंजीर खींच कर डिब्बे से बेशी मुसाफ़िर हटवा देना चाहे तो वह कोई ग़ैर क़ानूनी या नामुनासिब बात न होगी क्योंकि रेलवे एक्ट की धारा नम्बर 63 के अनुसार डिब्बे में मुसाफ़िरों की तादाद दी हुई हद से ज़ियादा नहीं बढ़नी चाहिये.

जिस 'मुलज़िम' ने दिल्ली से मुरादाबाद जाने वाली गाड़ी पर ज़ंजीर खींची थी और जिसके खिलाफ़ रेलवे ने ने मुक़दमा दायर किया था उसको रिहा करते हुये मजिस्ट्रेट ने कहा—

"अगर मेले का दिन था और भीड़ इतनी ज़ियादा थी तो रेलवे को एक एक्सट्रा ट्रेन का इन्तज़ाम करना चाहिये था. अगर 16 सीटों के डिब्बे में 48 मुसाफ़िर बैठेंगे तो उनको तकलीफ़ होना लाज़मी है. इस मुसाफ़िर ने रेलवे वालों को जब यह इत्तला दे दी थी कि मेरी तबियत ख़राब है और मेरे डिब्बे में से मुसाफ़िर कम कर दीजिये, तो उसका ज़ंजीर खींच लेना ज़ंजीर का बेजा इस्तेमाल नहीं था."

हम जानना चाहेंगे कि ऐसी हालत में वह मुसाफ़िर क्या करे जिसे इलाहाबाद से चल कर प्रतापगढ़ पर पंजाब मेल पकड़ कर अमृतसर जाना हो या इटारसी पर ग्रांड ट्रंक पकड़ कर मद्रास जाना हो. यह रेलें भरी हुई तो रहती ही हैं. इनमें अगर सवार होना है तो फिर ज़ंजीर खिचवाइये या धक्के खाइये या इस इन्तज़ार में रहिये कि कब देश में काफ़ी डिब्बे होने लगेंगे और कब 16 सीटों के डिब्बे में 16 ही मुसाफ़िर बैठेंगे.

हर कोई जानता है कि आज कल हमारी रेलवे को आमदनी बहुत होती है. सवारी गाड़ी से आमदनी जो हर साल बढ़ रही है उसमें सबसे ज़ियादा हाथ तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों का ही है. लेकिन रेलवे का जो उस के साथ सौतेले पन का और दूसरों दर्जों के साथ सगेपन का जैसा व्यवहार था वैसा ही जारी है. आजकल हमारी रेलों की खास कर डाक गाड़ियों की हालत क्या है? उनमें तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों के वास्ते 4 या 6 डिब्बे रहते हैं तो पहले दूसरे और ड्योढ़े दर्जे वालों के लिये 12-14. फिर एक बड़ी लम्बी रेस्टोरेन्ट कार होती है जिससे ऊंचे दर्जे के मुसाफ़िरों को

یہ بھی کہا کہ ہماری ریلوں کے پاس اس وقت ڈبوں اور انجنوں وغیرہ کی اتنی کمی ہے کہ پانچ سال تک جب تک ہمارے دیش میں کافی ڈبے وغیرہ بننے نہ لگ جائیں یہ شکایت دور نہیں ہوسکتی۔

اسکے بعد جولائی کے دوسرے ہفتے میں دلی کی ایک عدالت میں ریلوے کی طرف سے ایک 'ملزم' کے خلاف مقدمہ دائر کیا گیا کیونکہ اس نے زنجیر کھینچ کر گاڑی روک لی تھی۔ عدالت نے مقدمے کو خارج کر دیا اور یہ فیصلہ دیا کہ کسی ڈبے میں لکھی ہوئی تعداد سے زیادہ سواریاں ہوں اور اگر کوئی مسافر زنجیر کھینچ کر ڈبے سے بیشی مسافر ہٹوا دینا چاہے تو وہ کوئی غیر قانونی یا نا مناسب بات نہ ہوگی کیونکہ ریلوے ایکٹ کی دھارا نمبر 63 کے انوسار ڈبے میں مسافروں کی تعداد دی ہوئی حد سے زیادہ نہیں بڑھنی چاہئے۔

جس 'ملزم' نے دلی سے مرادآباد جانے والی گاڑی پر زنجیر کھینچی تھی اور جس کے خلاف ریلوے نے مقدمہ دائر کیا تھا اس کو رہا کرتے ہوئے مجسٹریٹ نے کہا—

"اگر میلے کا دن تھا اور بھیڑ اتنی زیادہ تھی تو ریلوے کو ایک ایکسٹرا ٹرین کا انتظام کرنا چاہئے تھا۔ اگر 16 سیٹوں کے ڈبے میں 48 مسافر بیٹھیں گے تو ان کو تکلیف ہونا لازمی ہے۔ اس مسافر نے ریلوے والوں کو جب یہ اطلاع دے دی تھی کہ میری طبیعت خراب ہے اور میرے ڈبے میں سے مسافر کم کر دیجئے' تو اس کا زنجیر کھینچ لینا زنجیر کا بیجا استعمال نہیں تھا۔"

ہم جاننا چاہیں گے کہ ایسی حالت میں وہ مسافر کیا کرے جسے الہ آباد سے چل کر پرتاپ گڈھ پر پنجاب میل پکڑ کر امرتسر جانا ہو یا اٹارسی پر گرانڈ ٹرنک پکڑ کر مدراس جانا ہو۔ یہ ریلیں بھری ہوئی تو رہتی ہی ہیں۔ ان میں اگر سوار ہونا ہے تو پھر زنجیر کھنچوائیے یا دھکے کھائیے یا اس انتظار میں رہئے کہ کب دیش میں کافی ڈبے ہونے لگیں گے اور کب 16 سیٹوں کے ڈبے میں 16 ہی مسافر بیٹھیں گے۔

ہر کوئی جانتا ہے کہ آج کل ہماری ریلوے کو آمدنی بہت ہوتی ہے۔ سواری گاڑی سے آمدنی جو ہر سال بڑھ رہی ہے اس میں سب سے زیادہ ہاتھ تیسرے درجے کے مسافروں کا ہی ہے۔ لیکن ریلوے کا جو اس کے ساتھ سوتیلے پن کا اور دوسروں درجوں کے ساتھ سگے پن کا جیسا ویوہار تھا ویسا ہی جاری ہے۔ آجکل ہماری ریلوں کی خاص کر ڈاک گاڑیوں کی حالت کیا ہے؟ ان میں تیسرے درجے کے مسافروں کے واسطے 4 یا 6 ڈبے رہتے ہیں تو پہلے دوسرے اور ڈیوڑھے درجے والوں کے لئے 12-14۔ پھر ایک بڑی لمبی ریسٹورنٹ کار ہوتی ہے جس سے اونچے درجے کے مسافروں کو

नहीं कि हम अपनी सरकार के लिये एक सभापति चुन सकें क्योंकि यह तो हमारा अन्दरूनी मामला है. और फिर हम शेख़ साहब से यही कहेंगे कि इसमें तो कश्मीर की हार ही है.

यह बात हमने मिसाल के तौर पर कह दी. जो जो बातें कश्मीर और भारत सरकार के बीच तय हुई हैं, उन सब पर इसी तरह दो निगाहों से नज़र डाली जाय तो हमारा ख़्याल है हर आदमी इसी नतीजे पर पहुँचेगा कि कश्मीर में इस वक़्त जो हो रहा है वह ठीक हो रहा है और फिर यह बात भी साफ़ समझ में आ जायगी कि शेख़ साहब कोई चाल नहीं चल रहे हैं. वह वही कर रहे हैं और करना चाहते हैं जिसमें कश्मीर की अगर एक भलाई हो तो भारत की डेढ़ भलाई हो.

कश्मीर का सवाल नाज़ुक सवाल है. इसे इस नज़र से सोचना ही नहीं चाहिये कि वहां राजा हिन्दू है या मुसलमान. आज कल राजाओं कि कुछ न पूछिये, हमें तो मिस्र के फ़ारूक़ शाह की बात ही ठीक मालूम होती है कि बस दुनिया में पांच ही राजा रहेंगे—इंगलिस्तान का राजा, हुक्म का राजा, पान का राजा, ईंट का राजा और चिड़ी का राजा. और क्या कुछ दिन हुये नैपाल के राजा को दिल्ली भाग कर आते दुनिया नहीं देख चुकी है ? वह क्या हिन्दू राजा नहीं था ? जूनागढ़ का नवाब मुसलमान था, पर अब वह कहां है ? और कहां है भोपाल के नवाब ?

—भगवानदीन

हमारी रेलें किधर ?

मसल मशहूर है कि नया मुल्ला ज़ोर से अज़ान देता है. इसी तरह नई दिल्ली की नई हकूमत के नये रेलवे मिनिस्टर लाल बहादुर शास्त्री जी ने कौंसिल आफ़ स्टेट में बड़े ज़ोरों के साथ 31 मई को कहा कि "तीसरे दर्जे के मुसाफ़िरों की जो आज हालत है उसे अज़-सरे-नौ बदल ने के लिये मैं जितनी दूर तक जा सकूंगा जाऊँगा." और उन्होंने इतमिनान दिलाया कि इस चीज़ को सब में ज़ियादा अहमियत दी जायगी. यह ख़बर सुन कर देश को कुछ भरोसा हुआ था कि वाक़ई अब हालत कुछ बेहतर हो जायेगी. मगर एक पखवाड़ा भी नहीं बीता था कि इन्दौर में शास्त्री जी ने 12 जून को कहा कि हांलाकि रेलवे मिनिस्टर होने के पहले ही मैंने तय कर लिया था कि रेलवे के तीसरे दर्जे में जो जगह की शिकायत रहती है उसे रफ़ा कर दूँगा पर रेलवे महकमे की चीज़ों को देख कर मेरी उम्मीदों पर पानी फिर गया और मैं समझ गया कि तीसरे दर्जे की मुसीबत हल कर लेना कोई आसान काम नहीं है. उन्होंने

نہیں کہ ہم اپنی سرکار کے لئے ایک سبھا پتی چن سکیں کیوں کہ یہ تو ہمارا اندرونی معاملہ ہے اور پھر ہم شیخ صاحب سے یہی کہیں گے کہ اس میں تو کشمیر کی ہار رہی ہے ۔

یہ بات ہم نے مثال کے طور پر کہدی. جو جو باتیں کشمیر اور بھارت سرکار کے بیچ طے ہوئی ہیں' ان سب پر اسی طرح دو نگاہوں سے نظر ڈالی جائے تو ہمارا خیال ہے ہر آدمی اسی نتیجے پر پہنچے گا کہ کشمیر میں اسوقت جو ہو رہا ہے وہ ٹھیک ہو رہا ہے اور پھر یہ بات بھی صاف سمجھ میں آ جائیگی کہ شیخ صاحب کوئی چال نہیں چل رہے ہیں ۔ وہ وہی کر رہے ہیں اور کرنا چاہتے ہیں جس میں کشمیر کی اگر ایک بھلائی ہو تو بھارت کی ڈیڑھ بھلائی ہو ۔

کشمیر کا سوال نازک سوال ہے ۔ اسے اس نظر سے سوچنا ہی نہیں چاہئے کہ وہاں راجہ ہندو ہے یا مسلمان. آج کل راجاؤں کی کچھ نہ پوچھئے' ہمیں تو مصر کے فاروق شاہ کی بات ہی ٹھیک معلوم ہوتی ہے کہ بس دنیا میں پانچ ہی راجہ رہیں گے—انگلستان کا راجہ حکم کا راجہ' پان کا راجہ' اینٹ کا راجہ اور چڑی کا راجہ ۔ اور کیا کچھ دن ہوئے نیپال کے راجہ کو دلی بھاگ کر آتے دنیا نہیں دیکھ چکی ہے ؟ وہ کیا ہندو راجہ نہیں تھا ؟ جونا گڈھ کا نواب مسلمان تھا پر اب وہ کہاں ہے ؟ اور کہاں ہیں بھوپال کے نواب ؟

—بھگوان دین

ہماری ریلیں کدھر ؟

مثل مشہور ہے کہ نیا ملا زور سے اذان دیتا ہے ۔ اسی طرح نئی دلی کی نئی حکومت کے نئے ریلوے منسٹر لال بہادر شاستری جی نے کونسل آف اسٹیٹ میں بڑے زوروں کے ساتھ 31 مئی کو کہا کہ "تیسرے درجے کے مسافروں کی جو آج حالت ہے اسے از سرے نو بدلنے کے لئے میں جتنی دور تک جا سکوں گا جاؤنگا." اور انہوں اطمینان دلایا کہ اس چیز کو سب میں زیادہ اہمیت دی جائے گی ۔ یہ خبر سن کر دیش کو کچھ بھروسہ ہوا تھا کہ واقعی اب حالت کچھ بہتر ہو جائے گی ۔ مگر ایک پکھواڑا بھی نہیں بیتا تھا کہ اندور میں شاستری جی نے 12 جون کو کہا کہ حالانکہ ریلوے منسٹر ہونے کے پہلے ہی میں نے طے کر لیا تھا کہ ریلوے کے تیسرے درجے میں جو جگہ کی شکایت رہتی ہے اسے رفع کردوں گا پر ریلوے محکمے کی چیزوں کو دیکھ کر میری امیدوں پر پانی پھر گیا اور میں سمجھ گیا کہ تیسرے درجے کی مصیبت حل کر لینا کوئی آسان کام نہیں ہے ۔ انہوں نے

शेख़ अब्दुल्ला इस तरह की कोशिश करते रहते हैं कि पाकिस्तानी हिस्सा भड़क उठे और उन्हीं को अपना लीडर मानने लगें. यह पहेली भी ऐसा पहलू है जो कश्मीर के बारे में कोई राय बनाने में बड़ा मददगार साबित हो सकती है.

(4) भारत की सरकार अगर इस पोज़ीशन में होती कि जो इसने आज किया है इससे ज़ियादा कुछ कर सकती तो क्या वह उसे करने में कोई कसर उठा रखती. दूसरी तरफ़ अगर शेख़ अब्दुल्ला और कश्मीरी सरकार आज से ज़ियादा मज़बूत होती तो क्या वह इतने पर राज़ी होती जितने पर अब हो गई है ? यह पहलू ऐसा नहीं है जो किसी तरह छोड़ा जा सके.

कश्मीर के मामले में अगर हम बिल्कुल भारतीय नज़र से देखेंगे तो नतीजे पर न पहुंच सकेंगे और अगर कश्मीर सरकार की नज़र से देखेंगे तो भी ठीक नतीजे पर न पहुंच सकेंगे. आज के फ़ैसले की गहराई तो जब ही समझ में आ सकती है जब हम भारतीय सरकार और कश्मीरी सरकार दोनों की मिली हुई नज़र से इस मामले पर नज़र डालें.

भारतीय की हैसियत से हम भारतीय सरकार पर यह टीका कर सकते हैं कि उसने क्या किया जो अपने झंडे के साथ एक दूसरे झंडे लगने की और इजाज़त दे दी फिर हम यह थोड़े ही सोचेंगे कि वहां एक झंडा पहले से ही मौजूद था या यह कि दो झंडे भी एक रियासत में रह सकते हैं और कहीं कहीं रह रहे हैं.

रही दो झंडों की बात, वह तो जो चाहे दिल्ली में जा कर देख ले. प्रेसीडेन्ट का झंडा अलग है और सरकारी तिरंगा अलग है, और कभी कभी तो यूनियन जैक भी दर्शन दे जाता है. यह ठीक है कि यूनियन जैक को लेकर हाल ही में शोर मचा था और अब वह दर्शन देना बन्द कर देगा. पर जैक के पार्लियामेन्ट भवन पर खड़े हो जाने से न कोई बिजली गिरी न आसमान टूटा.

यह सब हम भले ही करें पर भारतीय की हैसियत से यह हम बर्दाश्त नहीं कर सकते कि कश्मीर के सरकारी भवन पर दो झंडे लगें.

यह तो रही हमारी भारतीय हैसियत. अब हम इसी बात को कश्मीरी हैसियत से सोचते हैं. कश्मीरी हैसियत भी हमारी दो हो सकती हैं—एक राज नेता की हैसियत और दूसरी मामूली आदमी की हैसियत. मामूली आदमी की हैसियत से तो हम कश्मीरी झंडा कश्मीर सरकारी भवन पर लगने को कश्मीरी की बड़ी जीत समझेंगे और शेख़ साहब के गले में हार डाल देंगे. पर राज नेता की हैसियत से तो हम शेख़ साहब से यही कहेंगे कि इस कश्मीरी झंडे को लेकर क्या हम [illegible]

شیخ عبداللہ اِس طرح کی کوشش کرتے رہتے ہیں کہ پاکستانی حصہ بھڑک اُٹھے اور اُنہیں کو اپنا لیڈر ماننے لگے۔ یہ پہیلی بھی ایسا پہلو ہے جو کشمیر کے بارے میں کوئی رائے بنانے میں بڑا مددگار ثابت ہو سکتی ہے۔

(4) بھارت کی سرکار اگر اس پوزیشن میں ہوتی کہ جو اِس نے آج کیا ہے اِس سے زیادہ کچھ کر سکتی تو کیا وہ اسے کرنے میں کوئی کسر اُٹھا رکھتی۔ دوسری طرف اگر شیخ عبداللہ اور کشمیری سرکار آج سے زیادہ مضبوط ہوتی تو کیا وہ اِتنے پر راضی ہوتی جتنے پر اب ہوگئی ہے ؟ یہ پہلو ایسا نہیں ہے جو کسی طرح چھوڑا جا سکے۔

کشمیر کے معاملے میں اگر ہم بالکل بھارتی نظر سے دیکھیں گے تو نتیجے پر نہ پہنچ سکیں گے اور اگر کشمیر سرکار کی نظر سے دیکھیں گے تو بھی ٹھیک نتیجے پر نہ پہنچ سکیں گے۔ آج کے فیصلہ کی گہرائی تو جب ہی سمجھ میں آ سکتی ہے جب ہم بھارتی سرکار اور کشمیری سرکار دونوں کی ملی ہوئی نظر سے اس معاملے پر نظر ڈالیں۔

بھارتیہ کی حیثیت سے ہم بھارتیہ سرکار پر یہ ٹیکہ کر سکتے ہیں کہ اُس نے کیا کیا جو اپنے جھنڈے کے ساتھ ایک دوسرے جھنڈے لگنے کی اور اجازت دے دی پھر ہم یہ تھوڑے ہی سوچیں گے کہ وہاں ایک جھنڈا پہلے سے ہی موجود تھا یا یہ کہ دو جھنڈے بھی ایک ریاست میں رہ سکتے ہیں اور کہیں کہیں رہ رہے ہیں۔

رہی دو جھنڈوں کی بات، وہ تو جو چاہے دلی میں جاکر دیکھ لے۔ پریسیڈنٹ کا جھنڈا الگ ہے اور سرکاری ترنگا الگ ہے، اور کبھی کبھی تو یونین جیک بھی درشن دے جاتا ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ یونین جیک کو لیکر حال ہی میں شور مچا تھا اور اب وہ درشن دینا بند کر دیگا۔ پر جیک کے پارلیامنٹ بھون پر کھڑے ہو جانے سے نہ کوئی بجلی گری نہ آسمان ٹوٹا۔

یہ سب ہم بھلے ہی کریں پر بھارتیہ کی حیثیت سے یہ ہم برداشت نہیں کر سکتے کہ کشمیر کے سرکاری بھون پر دو جھنڈے لگیں۔

یہ تو رہی ہماری بھارتیہ حیثیت۔ اب ہم اِسی بات کو کشمیری حیثیت سے سوچتے ہیں۔ کشمیری حیثیت بھی ہماری دو ہو سکتی ہیں—ایک راج نیتا کی حیثیت اور دوسری معمولی آدمی کی حیثیت۔ معمولی آدمی کی حیثیت سے تو ہم کشمیری جھنڈا کشمیری سرکاری بھون پر لگنے کو کشمیر کی بڑی جیت سمجھیں گے اور شیخ صاحب کے گلے میں ہار ڈال دیں گے۔ پر راج نیتا کی حیثیت سے تو ہم شیخ صاحب سے یہی کہیں گے کہ اِس کشمیری جھنڈے کو لیکر کیا ہم [illegible]

सारा हिन्दुस्तान यह चिल्ला उठा था कि पाकिस्तान भारत से बढ़ कर रहा कि उसने किसी अंगरेज को अपना गवर्नर जनरल नहीं माना और इण्डिया यानी भारत घटिया रहा कि उसे गवर्नर जनरली के लिये एक भारती नसीब न हुआ. पर कांगरेस इस बदनामी की घूंट को चुपचुप पी गई. यह कांगरेस की बेवक़ूफ़ी नहीं थी, गहरी राजीकाजी चाल थी. आज पाकिस्तान पर बरतानिया का जितना पंजा है उतना इन्डिया यानी भारत पर नहीं. कश्मीर हिन्दुस्तान के हाथ पड़ा इसमें माउन्ट बेटेन का कुछ भी हिस्सा नहीं है, यह मानने से इन्कार करना असलियत से दूर रहना होगा. कश्मीर के हिन्दुस्तान से मिलने के मौक़े पर माउन्ट बेटन की गवर्नर जनरली का हिन्दुस्तान ने पूरा पूरा फ़ायदा उठाया और जिन्ना साहब ही नहीं सैकड़ों पाकिस्तानी तड़प कर रह गये.

माउन्ट बेटेन मुफ्त में ही पंडित माउन्ट बेटेन नहीं बन गये और विदाई के वक़्त उन्हें कुछ यों ही जय जय के नारे नहीं मिल गये. कुछ बात तो थी. हो सकता है कि पंडित की पदवी माउन्टबेटेन को जवाहरलाल जी ने ऐसे ही दी हो जैसे पहले हिन्दुस्तान में पगड़ी पलट कर यार बना करते थे. तभी तो जवाहरलाल जी ने अपने नाम के पीछे से पंडित हटा दिया क्योंकि वह पंडिताई की पगड़ी तो उन्होंने उतार कर माउन्टबेटेन के सिर बांध दी.

कश्मीर के मामले को समझने के लिए कश्मीर को कई पहलू से देखना पड़ेगा.

(1) कश्मीर का मामला अभी सुरक्षा कौंसिल के सामने है यानी कश्मीर अभी खींचा तानी की हालत में है. पाकिस्तान कभी भड़क उठता है और कह उठता है कि सारा कश्मीर हमारा. ठीक इसी तरह हिन्दुस्तान आये दिन दावा कर बैठता है सारा कश्मीर हमारा. और हाल यह है कि अभी आधा कश्मीर पाकिस्तान के हाथ में है और आधा भारत के हाथ में. भारत और पाकिस्तान दोनों की फ़ौजें अपने अपने हिस्से में डटी पड़ी हैं. आये दिन छोटी मोटी मुठभेड़ भी हो जाती है. इस उलझन को सामने रख कर ही हम कश्मीर की राजनीति को ठीक ठीक समझ सकते हैं.

(2) एक से जियादा बार पत्रों में यह ख़बर उड़ चुकी है कि सुलह कराने वालों की तरफ़ से कश्मीर के बंटवारे का सवाल आया. इसके जवाब में भारत ने यह कहा 'पहले पाकिस्तान से पूछो' यह जवाब राज नेता गिरी और मानने लगे यह पहेली भी ऐसा पहलू है डिपलोमेसी से भरा हुआ है. मगर कश्मीर के मामले को समझने में बड़े मार्के का है.

(3) कश्मीर की जनता यानी दोनों हिस्सों के लीडर जी जान से यही चाहते हैं कि कुछ भी हो कश्मीर के टुकड़े न होने पायें. और इसके लिये श्री नगर के शेख़ साहब यानी

سارا ہندستان یہ چلا اٹھا تھا کہ پاکستان بھارت سے بڑھکر رہا کہ اس نے کسی انگریز کو اپنا گورنر جنرل نہیں مانا اور انڈیا یعنی بھارت گھٹیا رہا کہ اسے گورنر جنرلی کے لئے ایک بھارتی نصیب نہ ہوا . پر کانگریس اس بدنامی کی گھونٹ کو چپ چپ پی گئی . یہ کانگریس کی بیوقوفی نہیں تھی گہری راج کاجی چال تھی . آج پاکستان پر برطانیہ کا جتنا پنجہ ہے اتنا انڈیا یعنی بھارت پر نہیں . کشمیر ہندستان کے ہاتھ پڑا اس میں ماؤنٹ بیٹن کا کچھ بھی حصہ نہیں ہے . یہ ماننے سے انکار کرنا اصلیت سے دور رہنا ہوگا . کشمیر کے ہندستان سے ملنے کے موقعے پر ماؤنٹ بیٹن کی گورنر جنرلی کا ہندستان نے پورا پورا فائدہ اٹھایا . اور جناح صاحب ہی نہیں سینکڑوں پاکستانی تڑپ کر رہ گئے .

ماؤنٹ بیٹن مفت میں ہی پنڈت ماؤنٹ بیٹن نہیں بن گئے اور ودائی کے وقت انہیں کچھ یونہی جے جے کے نعرے نہیں مل گئے کچھ بات تو تھی . ہوسکتا ہے کہ پنڈت کی پدوی ماؤنٹ بیٹن کو جواہر لال جی نے ایسے ہی دی ہو جیسے پہلے ہندستان میں پگڑی پلٹکر یار بنا کرتے تھے . تبھی تو جواہر لال جی نے اپنے نام کے پیچھے سے پنڈت ہٹا دیا . کیونکہ وہ پنڈتائی کی پگڑی تو انہوں نے اتار کر ماؤنٹ بیٹن کے سر باندھ دی .

کشمیر کے معاملے کو سمجھنے کے لئے کشمیر کو کئی پہلو سے دیکھنا پڑیگا .

(1) کشمیر کا معاملہ ابھی سرکھشا کونسل کے سامنے ہے یعنی کشمیر ابھی کھینچا تانی کی حالت میں ہے . پاکستان کبھی بھڑک اٹھتا ہے اور کہہ اٹھتا ہے کہ سارا کشمیر ہمارا . ٹھیک اسی طرح ہندستان آئے دن دعوی کر بیٹھتا ہے سارا کشمیر ہمارا . اور حال یہ ہے کہ ابھی آدھا کشمیر پاکستان کے ہاتھ میں ہے اور آدھا بھارت کے ہاتھ میں . بھارت اور پاکستان دونوں کی فوجیں اپنے اپنے حصے میں ڈٹی پڑی ہیں . آئے دن چھوٹی موٹی مٹھ بھیڑ بھی ہو جاتی ہے . اس الجھن کو سامنے رکھکر ہی ہم کشمیر کی راج نیتی کو ٹھیک ٹھیک سمجھ سکتے ہیں .

(2) ایک سے زیادہ بار پتروں میں یہ خبر اڑ چکی ہے کہ صلح کرانے والوں کی طرف سے کشمیر کے بٹوارے کا سوال آیا . اس کے جواب میں بھارت نے یہی کہا 'پہلے پاکستان سے پوچھو' یہ جواب نیتاگری اور ڈپلومیسی سے بھرا ہوا ہے مگر کشمیر کے معاملے کو سمجھنے میں بڑے مارکے کا ہے .

(3) کشمیر کی جنتا یعنی دونوں حصوں کے لیڈر جی جان سے یہی چاہتے ہیں کہ کچھ بھی ہو کشمیر کے ٹکڑے نہ ہونے پائیں اور اس کے لئے سری نگر کے شیخ صاحب یعنی

सरकार के बीच यह झगड़ा भी एक तरह से वहीं का वहीं रह गया. ईरानी मजलिस के बारे में जो खबरें मिल रही हैं वह इतनी भली नहीं जिनसे यह नतीजा निकाला जा सके कि मुसादिक़ साहब की राह ख़तरों से ख़ाली है.

अमरीकी फ़ौजी सलाहकार हेग के फ़ैसले के बाद से ईरानियों की नज़रों में गिर गया है और अब उसके साथ कैसे बीतेगी इसे भी एक तरह की उलझन ही समझना चाहिये.

इसमें कोई शक नहीं कि डाक्टर मुसादिक़ ने बहुत सोच समझ कर ही ईरान की हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में ली है. और शायद अब उनके हाथ में इतनी ताक़त ज़रूर है जितनी उन्होंने शाह से मांगना चाही थी और न मिलने पर वह छोड़ कर चल दिये थे. अगर यही बात है तो ज़रूर ईरान में ज़ोर की काया पलट होगी. और जल्दी ही दुनिया को ईरान से नई नई खबरें सुनने को मिलेंगी.

इस वक़्त हर मुल्क को ज़िन्दा रहने के लिये यह ज़रूरी है कि वह दुनिया के सब मुल्कों का दोस्त रहे और सीधे ना सीधे किसी गुट में शामिल होने की कोशिश न करे. इसमें यह नीति ईरान अपनाने वाला है. इसमें शक नहीं कि वह बहुत ख़तरों से बच जायगा पर देखना यह है कि वह पैसे के सवाल को किस तरह हल करता है. जहां अमरीकन सलाहकार हों वहां कम खर्चे की बात किसी सरकार को सूझ ही नहीं सकती. और इस वक़्त ईरान की भलाई इसी में है कि वह खुशख़र्ची से कम ले. फ़िज़ूल ख़र्ची से बचे. और इसके लिये डाक्टर मुसादिक़ से अच्छा कोई आदमी नहीं हो सकता.

—भगवानदीन

कश्मीर

अंगरेज़ों के यहां रहते अगर रियासतों का बंटवारा हुआ होता तो हम ख़ुशी न ख़ुशी उस पर ज़रूर राज़ी हो गये होते. और फिर काश्मीर का सवाल हमारे सामने ही न होता हां फिर हैदराबाद में पुलिस कार्रवाई करने की ज़रूरत न पड़ती. पर अंगरेज़ी राज नेता और पक्के डिप्लोमेट माउन्ट बेटेन ने यह ठीक नहीं समझा और यह रियासतों पर ही छोड़ दिया गया कि वह जिसके साथ मिलना चाहें मिल जायं.

इंडिया यानी भारत ने यह बदनामी कुछ यों ही नहीं अपने सिर ओढ़ ली थी कि पाकिस्तान के सबसे पहले गवर्नर जनरल थे जिन्ना साहब और इंडिया यानी भारत के पहले गवर्नर जनरल थे श्रीमान माउन्ट बेटेन. उस वक़्त तो

سرکار کے بیچ ہے یہ جھگڑا بھی ایک طرح سے وہیں کا وہیں رہ گیا ۔ ایرانی مجلس کے بارے میں جو خبریں مل رہی ہیں وہ اتنی بھلی نہیں ہیں جن سے یہ نتیجہ نکالا جاسکے کہ مصادق صاحب کی راہ خطروں سے خالی ہے ۔

امریکی فوجی صلاح کار ہیگ کے فیصلے کے بعد سے ایرانیوں کی نظروں میں گر گیا ہے اور اب اس کے ساتھ کیسی بیتے گی اسے بھی ایک طرح کی الجھن ہی سمجھنا چاہئے ۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ ڈاکٹر مصادق نے بہت سوچ سمجھکر ہی ایران کی حکومت کی باگ ڈور اپنے ہاتھ میں لی ہے ۔ اور شائد اب اُن کے ہاتھ میں اتنی طاقت ضرور ہے جتنی اُنہوں نے شاہ سے مانگنا چاہی تھی اور نہ ملنے پر وہ چھوڑ کر چل دیے تھے ۔ اگر یہی بات ہے تو ضرور ایران میں زور کی کایا پلٹ ہوگی اور جلدی ہی دنیا کو ایران سے نئی نئی خبریں سننے کو ملینگی ۔

اس وقت ہر ملک کو زندہ رہنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ وہ دنیا کے سب ملکوں کا دوست رہے اور سیدھے نہ سیدھے کسی گٹ میں شامل ہونے کی کوشش نہ کرے ۔ شائد یہ نیتی ایران اپنانے والا ہے ۔ اسمیں شک نہیں کہ وہ بہت خطروں سے بچ جائیگا پر دیکھنا یہ ہے کہ وہ پیسے کے سوال کو کس طرح حل کرتا ہے ۔ جہاں امریکن صلاح کار ہو وہاں کم خرچ کی بات کسی سرکار کو سوجھ ہی نہیں سکتی ۔ اور اس وقت ایران کی بھلائی اسی میں ہے کہ وہ خوش خرچی سے کام لے فضول خرچی سے بچے ۔ اور اس کے لئے ڈاکٹر مصادق سے اچھا کوئی آدمی نہیں ہوسکتا ۔

—بھگوان دین

کشمیر

انگریزوں کے یہاں رہتے اگر ریاستوں کا بٹوارہ ہوا ہوتا تو ہم خوشی نہ خوشی اُس پر ضرور راضی ہو گئے ہوتے اور پھر کشمیر کا سوال ہمارے سامنے ہی نہ ہوتا ۔ ہاں پھر حیدرآباد میں پولیس کاروائی کرنے کی ضرورت نہ پڑتی ۔ پر انگریزی راج نیتا اور پکے ڈپلومیٹ ماؤنٹ بیٹن نے یہ ٹھیک نہیں سمجھا اور یہ ریاستوں پر ہی چھوڑ دیا گیا کہ وہ جسکے ساتھ ملنا چاہیں مل جائیں ۔

انڈیا یعنی بھارت نے یہ بدنامی کچھ یونہی نہیں اپنے سر اوڑھ لی تھی کہ پاکستان کے سب سے پہلے گورنر جنرل تھے جناح صاحب انڈیا بھارت کے پہلے گورنر جنرل تھے شریمان ماؤنٹ بیٹن اس وقت تو

मिस्र में यह सब हो तो गया पर हिनोज़ दिल्ली दूरस्त और जब तक माल्टा में और साईप्रस में और स्वेज़ में अंगरेज़ मौजूद हैं तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि मिस्र में कल क्या हो जाय.

इसमें कोई शक नहीं कि मिस्र के सिपहसालार को अपने दिल पर बेहद क़ाबू है और जिस को अपने दिल पर क़ाबू है वह सचमुच भारी से भारी दुश्मन पर क़ाबू पा सकता है. पर मुश्किल यही है कि यह क़ाबू पाने का काम सुपुर्द होगा उन कुछ आदमियों पर जिनके हाथ में हकूमत की बागडोर होगी और उनके बारे में यह कहना ज़रा मुश्किल है कि—उनको भी अपने दिलों पर उतना ही क़ाबू है जितना हकूमत करने के लिये ज़रूरी है.

मिस्रियों के लिये यह बड़ा अच्छा मौक़ा हाथ आया है. उन्हें चाहिये कि वह कम से कम बाहर के लिये हर मामले में एक राय हो जायँ और सूडान के मामले को ऐसे ही सुलझा लें जैसे हिन्दुस्तान कश्मीर के मामले को सुलझाये हुए है. इस काया पलट का असर सूडान पर न पड़ा हो यह नहीं हो सकता. यूं तो सूडान जी से हमेशा मिस्र का साथी रहा है. पर क्या वेल्स इंगलैंड का हिस्सा नहीं रहा और उसे किस ख़ूबी से इंगलैंड वालों ने अपना बनाये रक्खा. इस वक़्त वैसी ही राजकाजी होशियारी की मिस्रियों को ज़रूरत है और सब को यही उम्मीद है कि वह ऐसे मौक़े पर इतने होशियार ज़रूर साबित होंगे कि सूडानियों की भावनाओं का ख़्याल रख कर ऐसी कोई तरकीब ज़रूर निकाल लेंगे जिससे सूडान और मिस्र दो जिस्म रहते हुए एक जान बने रहें.

—भगवानदीन

مصر میں یہ سب ہو تو گیا پر ہنوز دلی دوراست اور جب تک مالٹا میں اور سائپرس میں اور سویز میں انگریز موجود ہیں تب تک یہ نہیں کہا جاسکتا کہ مصر میں کب کیا ہو جائے ۔

اس میں کوئی شک نہیں کہ مصر کے سپہ سالار کو اپنے دل پر بے حد قابو ہے اور جسکو اپنے دل پر قابو ہے وہ سچ مچ بھاری سے بھاری دشمن پر قابو پاسکتا ہے ۔ پر مشکل یہی ہے کہ یہ قابو پانے کا کام سپرد ہوگا اُن کچھ آدمیوں پر جن کے ہاتھ میں حکومت کی باگڈور ہوگی اور اُن کے بارے میں یہ کہنا ذرا مشکل ہے کہ انکو بھی اپنے دلوں پر اُتنا ہی قابو ہے جتنا حکومت کرنے کے لئے ضروری ہے ۔

مصریوں کے لئے یہ بڑا اچھا موقعہ ہاتھ آیا ہے. انہیں چاہئے کہ وہ کم سے کم باہر کے لئے ہر معاملے میں ایک رائے ہو جائیں اور سوڈان کے معاملے کو ایسے ہی سلجھا لیں جیسے ہندوستان کشمیر کے معاملے کو سلجھائے ہوئے ہے ۔ اس کایا پلٹ کا اثر سوڈان پر نہ پڑا ہو یہ نہیں ہوسکتا ۔ یوں تو سوڈان جی سے ہمیشہ مصر کا ساتھی رہا ہے پر کیا ویلس انگلینڈ کا حصہ نہیں رہا اور اُسے کس خوبی سے انگلینڈ والوں نے اپنا بنائے رکھا ۔ اس وقت ویسے ہی راجکاجی ہوشیاری کی مصریوں کو ضرورت ہے اور سب کو یہی اُمید ہے کہ وہ ایسے موقعے پر اتنے ہوشیار ضرور ثابت ہونگے کہ سوڈانیوں کی بھاوناؤں کا خیال رکھ کر ایسی کوئی ترکیب ضرور نکال لیں گے جس سے سوڈان اور مصر دو جسم رہتے ہوئے ایک جان بنے رہیں۔

—بھگوان دین

मुसादिक़ और ईरान

ईरान में मुसादिक़ साहब के हाथ में फिर से ताक़त आते हुए देख कर दाँतों तले उंगली दाब कर रह जाना पड़ता है. ईरानी जवानों का वही जोश और वलवला बना हुआ है. आर्थिक सवाल वहीं का वहीं है. जिस राष्ट्रीकरन पर इतना तूफ़ान उठा था, वह भी वहीं का वहीं है. ईरान की राष्ट्रीकरन नीति ने दुनिया को दो भागों में बांट दिया है, कुछ उसे बिल्कुल ठीक समझते हैं, दूसरे उसे ठीक तो समझते हैं पर कुछ शर्तों के साथ.

तेल का मामला हेग की अदालत के सामने पेश था. उस अदालत ने जो कुछ दिया उसे फ़ैसला नहीं कहा जा सकता. वह तो फ़ैसला देने से इन्कार है. पर वह इन्कारी फ़ैसला भी कुछ कम मार्के की चीज़ नहीं. उससे कम से कम यह तो साफ़ हो ही जाता है कि झगड़ा ईरान और बरतानिया के बीच. में नहीं है बल्कि एक स्वदेशी-विदेशी कम्पनी और

مصادق اور ایران

ایران میں مصادق صاحب کے ہاتھ میں پھر سے طاقت آتے ہوئے دیکھکر دانتوں تلے اُنگلی دبا کر رہ جانا پڑتا ہے ۔ ایرانی جوانوں کا وہی جوش اور ولولہ بنا ہوا ہے آرتھک سوال وہیں کا وہیں ہے ۔ جس راشٹریہ کرن پر اتنا طوفان اُٹھا تھا وہ بھی وہیں کا وہیں ہے ۔ ایران کی راشٹریہ کرن نیتی نے دنیا کو دوبھاگوں میں بانٹ دیا ہے. کچھ اُسے بالکل ٹھیک سمجھتے ہیں پر کچھ شرطوں کے ساتھ ۔

تیل کا معاملہ ہیگ کی عدالت کے سامنے پیش تھا ۔ اُس عدالت نے جو کچھ دیا اُسے فیصلہ نہیں کہا جا سکتا. وہ تو فیصلہ دینے سے انکار ہے پر وہ انکاری فیصلہ بھی کچھ کم مارکے کی چیز نہیں ۔ اُس سے کم سے کم یہ تو صاف ہو ہی جاتا ہے کہ جھگڑا ایران اور برطانیہ کے بیچ میں نہیں ہے بلکہ ایک سودیشی ودیشی کمپنی اور

भागा जाय और उसकी पकड़ से बाहर हो जाय और कहीं उसका बरस डेढ़ बरस का भाई वहीं मौजूद हो तो थप्पड़ खाने वाली लड़की थप्पड़ मारने वाली लड़की के भाई को पीट कर अपनी यह तसल्ली कर लेती है कि उसने लड़की को ही मारा. दलील यह देती है कि वह भी तो इसका भाई है. कुछ ऐसी ही बात और कुछ ऐसी ही दलीलें अमरीकी बहादुर से सुन कर हंसी भी आती है और दुख भी होता है.

यह अमरीकी गये थे कोरिया, कोरिया को आज़ाद करने और लगे हुए हैं उसे बरबाद करने.

अमरीकन रिपोर्टर में ऐसी पोच दलीलें पढ़ कर यही अन्दाज़ा होता है कि अमरीकी कोरिया के मैदान में तंग आ कर बिखर पड़े हैं और अब आगा पीछा सोचे बिना सब कुछ करने पर उतारू हो गये हैं.

बीमारी बम के बारे में अमरीकियों की नज़र में दुनिया भर के वह सब आदमी भूठे फिर चाहे वह दीन जितने धर्ममात्मा ही क्यों न हों जो यह कहें कि अमरीकियों ने कोरिया में बीमारी बम फेंके. हां अमरीकियों की नज़र में वह सब सच्चे और क़ाबिल क़द्र हैं. फिर चाहे वह कितने ही पापी क्यों न हों जो यह कहें कि कोरिया पर कोई बीमारी बम नहीं फेंके गये.

देखते हैं कोरिया आज़ाद होता है या उसका नाम ही एशिया के नक़शे से मिट जाता है.

—भगवानदीन

بھاگ جائے اور اُس کی پکڑ سے باہر ہو جائے اور کہیں اُسکا برس ڈیڑھ برس کا بھائی وہیں موجود ہو تو تھپڑ کھانیوالی لڑکی تھپڑ مار نیوالی لڑکی کے بھائی کو پیٹ کر اپنی یہ تسلی کرلیتی ہے کہ اُس نے لڑکی کو ہی مارا۔ دلیل یہ دیتی ہے کہ وہ بھی تو اِسکا بھائی ہے۔ کچھ ایسی ہی بات اور کچھ ایسی ہی دلیلیں امریکی بہادر سے سنکر ہنسی بھی آتی ہے اور دکھ بھی ہوتا ہے۔

یہ امریکی گئے تھے کوریا، کوریا کو آزاد کرنے اور لگے ہوئے ہیں اُسے برباد کرنے۔ امریکن رپورٹر میں ایسی پوچ دلیلیں پڑھ کر یہی اندازہ ہوتا ہے کہ امریکی کوریا کے میدان میں تنگ آکر بکھر پڑے ہیں اور اب آگا پیچھا سوچے بنا سب کچھ کرنے پر اُتارو ہوگئے ہیں۔

بیماری بم کے بارے میں امریکیوں کی نظر میں دنیا بھر کے وہ سب آدمی جھوٹ پھر چاہیں وہ دین جتنے دھرماتما ہی کیوں نہ ہوں جو یہ کہیں کہ امریکیوں نے کوریا میں بیماری بم پھینکے۔ ہاں امریکیوں کی نظر میں وہ سب سچے اور قابل قدر ہیں پھر چاہے وہ کتنے ہی پاپی کیوں نہ ہوں جو یہ کہیں کہ کوریا پر کوئی بیماری بم نہیں پھینکے گئے۔

دیکھتے ہیں کوریا آزاد ہوتا ہے یا اُس کا نام ہی ایشیا کے نقشے سے مٹ جاتا ہے۔

— بھگوان دین

मिस्र की क्रांति

जुलाई ख़त्म होते होते मिस्र में एक दम काया पलट हो गई. दुनिया अचरज में पड़ गई क्योंकि न एक बन्दूक़ चली न कोई आदमी मरा. तलवारें कमर से बांध कर सिक्खों ने नानकाना में अपनी जानें दी थीं और तलवार की मूठ पर हाथ नहीं जाने दिया था. यह काम मार्के का था. गुरू के बाग़ के सत्याग्रह में छै छै फ़िट लम्बे सिक्ख जवानों ने उन गोरों के बूट की ठोकरें खाईं थीं जिन्हें अगर वह चाहते तो बग़ल में दबा कर ले जा सकते थे. पर न कभी बदले में हाथ उठाया न कभी उंगली दिखाई. यह काम भी कुछ कम मार्के का न था. इन कामों ने हिन्दुस्तानियों को अचरज में डाला था. पर मिस्र में तो मिस्र के सिपह-सालार ने मिस्र की हकूमत का तख़्ता ही पलट दिया और एक बूंद ख़ून न गिरने दिया. यह बीसवीं सदी का कमाल नहीं तो क्या है? और फिर उस सिपहसालार की नम्रता को देखिये, हर सवाल का जवाब यही कि यह राजकाजी लोग जानें. आज गांधी जी जीते होते तो न जाने इस बदलाव के बारे में क्या कहते.

مصر کی کرانتی

جولائی ختم ہوتے ہوتے مصر میں ایک دم کایا پلٹ ہوگئی۔ دنیا اچرج میں پڑ گئی کیونکہ نہ ایک بندوق چلی نہ کوئی آدمی مرا۔ تلواریں کمر سے باندھ کر سکھوں نے ننکانا میں اپنی جانیں دے دی تھیں اور تلوار کی موٹھ پر ہاتھ نہیں جانے دیا تھا۔ یہ کام مارکے کا تھا۔ گرو کے باغ کے ستیہ گرہ میں چھ چھ فٹ سکھ جوانوں نے اُن گوروں کے بوٹ کی ٹھوکریں کھائیں تھیں جنہیں اگروہ چاہتے تو بغل میں دبا کر لے جاسکتے تھے پر نہ کبھی بدلے میں ہاتھ اُٹھایا نہ کبھی انگلی دکھائی۔ یہ کام بھی کچھ کم مارکے کا نہ تھا۔ اِن کاموں نے ہندستانیوں کو اچرج میں ڈالا تھا۔ پر مصر میں تو مصر کے سپہسالار نے مصر کی حکومت کا تختہ ہی پلٹ دیا اور ایک بوند خون نہ گرنے دیا۔ یہ بیسویں صدی کا کمال نہیں تو کیا ہے؟ اور پھر اُس سپہسالار کی نمرتا کو دیکھئے ہر سوال کا جواب یہی کہ یہ راج کاجی لوگ جانیں آج گاندھی جی جیتے ہوتے تو نہ جانے اس بدلاؤ کے بارے میں کیا کہتے۔

अमरीकियों की सूझ बड़ी दूर की है. और अब वह दिन दूर नहीं है जब वह पीकिंग पर बमबारी कर देंगे और दलील उनकी यह होगी कि यह पीकिंग की सरकार ही तो है जो उत्तर कोरिया के लोगों की पीठ ठोकती रहती है और जिसकी वजह से अनगिनत अमरीकियों की जान जा रही है. और फिर चर्चिल साहब कह देंगे कि हां यह बात कुछ ठीक तो मालूम होती है.

अमरीका को यह नहीं मालूम कि यह तोपें नहीं हैं जो अमरीकी जवानों को धराशाई कर रही हैं. यह तो वह उत्तर कोरिया के जवान हैं जो उन तोपों को चलाते हैं. और यह उत्तरी कोरिया के जवान नहीं हैं यह तो वह गेहूँ की रोटियां हैं जो उनके अन्दर काम कर रही हैं. इसलिये जो मुल्क उत्तर कोरिया को अनाज भेजता है उनमें से हर एक इस क़ाबिल है कि उस पर जब चाहे अमरीका बमबारी कर दे. चर्चिल साहब पीठ ठोकने के लिये तैयार ही हैं. वह भेड़िया क्या लड़ाई के क़ायदों के अन्दर काम नहीं कर रहा था जिसने छै महीने से कम उम्र वाले मेमने को यह कह कर खा लिया था कि अगर छै महीने पहले वह नहीं रहा होगा तो उस का बाप रहा होगा ? और क्या इसी न्याय के मुताबिक़ अमरीका यह कहकर मास्को पर बमबारी नहीं कर सकता कि यह रूस ही था कि जिसने उत्तर कोरिया के लोगों को इस तरह क़ौमी तालीम दी कि आज वह बे-धड़क अमरीका के जवानों को ऐसे काटरहे हैं जैसे किसान खेत में गेहूँ के पौधों को काट रहा हो. और क्या यह दलील चर्चिल साहब को कमज़ोर मालूम होगी ?

अगर कहीं चीन और रूस छोटे छोटे और कमज़ोर मुल्क होते तो क्या वह कोरिया की लड़ाई की ज़द में आने से बचे होते ? इस लड़ाई में भी क्या कभी चीन और रूस की सरहद में अमरीका के बम से आदमी नहीं मरे ?

अमरीकन रिपोर्टर ऐसी नई नई दलीलें दे कर यह समझता है कि वह हिन्दुस्तानी जनता को भुलावा दे सकेगा. यह वह भूल है, हिन्दुस्तानी जनता इस तरह भुलावे में नहीं आ सकती. अमरीकन रिपोर्टर का कहना है कि सुलह की बात चीत में यालू बमबारी से ही क्यों धक्का पहुंचा ? इस बात से क्यों नहीं धक्का पहुंचा कि कम्युनिस्टों ने बड़े तोप ख़ाने लेकर पैदल फ़ौजों के ज़रिये यूनो की फ़ौजों पर धावा बोल दिया. यह भी तो कोरिया में हुआ.

बड़ी अच्छी दलील है. यालू बमबारी से बहुत ख़ूब मेल बिठाया है. फ़ौजों का लड़ना और औरतों बच्चों को मार डालना, अगर यह एक बात हो सकती है तो बेशक अमरीका की दलील दमदार समझी जा सकती है. हमने बच्चों में तो यह देखा है कि जब दो बारह बारह बरस की लड़कियां लड़ रही हों और एक लड़की दूसरी को चपत जमा कर

امریکنوں کی سوجھ بڑی دور کی ہے ۔ اور اب وہ دن دور نہیں ہے جب وہ پیکنگ پر بمباری کر دیں گے اور دلیل ان کی یہ ہوگی کہ یہ پیکنگ کی سرکار ہی تو ہے جو اتر کوریا کے لوگوں کی پیٹھ ٹھونکتی رہتی ہے اور جس کی وجہ سے اَنگنت امریکنوں کی جان جا رہی ہے اور پھر چرچل صاحب کہہ دیں گے کہ ہاں یہ بات کچھ ٹھیک تو معلوم ہوتی ہے ۔

امریکہ کو یہ نہیں معلوم کہ یہ توپیں نہیں ہیں جو امریکی جوانوں کو دھراشائی کر رہی ہیں۔ یہ تو وہ اتر کوریا کے جوان ہیں جو ان توپوں کو چلاتے ہیں ۔ اور یہ اتر کوریا کے جوان نہیں ہیں یہ تو وہ گیہوں کی روٹیاں ہیں جو ان کے اندر کام کر رہی ہیں۔ اس لئے جو ملک اتر کوریا کو اناج بھیجتا ہے ان میں سے ہر ایک اس قابل ہے کہ اس پر جب چاہے امریکہ بمباری کر دے ۔ چرچل صاحب پیٹھ ٹھونکنے کے لئے تیار ہی ہیں ۔ وہ بھیڑیا کیا لڑائی کے قاعدوں کے اندر کام نہیں کر رہا تھا جس نے چھ مہینے سے کم عمر والے میمنے کو یہ کہہ کر کھا لیا تھا کہ اگر چھ مہینے پہلے وہ نہیں رہا ہوگا تو اس کا باپ رہا ہوگا؟ اور کیا اسی نیائے کے مطابق امریکہ یہ کہہ کر ماسکو پر بمباری نہیں کر سکتا کہ یہ روس ہی تھا کہ جس نے اتر کوریا کے لوگوں کو اس طرح قومی تعلیم دی کہ آج وہ بےدھڑک امریکہ کے جوانوں کو ایسے کاٹ رہے ہیں جیسے کسان کھیت میں گیہوں کے پودوں کو کاٹ رہا ہو ۔ اور کیا یہ دلیل چرچل صاحب کو کمزور معلوم ہوگی ؟

اگر کہیں چین اور روس چھوٹے چھوٹے اور کمزور ملک ہوتے تو کیا وہ کوریا کی لڑائی کی زد میں آنے سے بچے ہوتے ؟ اس لڑائی میں بھی کیا کبھی چین اور روس کی سرحد میں امریکہ کے بم سے آدمی نہیں مرے ؟

امریکن رپورٹر ایسی نئی نئی دلیلیں دے کر یہ سمجھتا ہے کہ وہ ہندستانی جنتا کو بھلاوا دے سکے گا ۔ یہ وہ بھول ہے ہندستانی جنتا اس طرح بھلاوے میں نہیں آ سکتی ۔ امریکن رپورٹر کا کہنا ہے کہ صلح کی بات چیت میں یالو بمباری سے ہی کیوں دھکا پہنچا ؟ اس بات سے کیوں نہیں دھکا پہنچا کہ کمیونسٹوں نے بڑے توپ خانے لیکر پیدل فوجوں کے ذریعے یونو کی فوجوں پر دھاوا بول دیا ۔ یہ بھی تو کوریا میں ہوا ۔

بڑی اچھی دلیل ہے ۔ یالو بمباری سے بہت خوب میل بٹھایا ہے فوجوں کا لڑنا اور عورتوں بچوں کو مار ڈالنا' اگر یہ ایک بات ہوسکتی ہے تو بیشک امریکہ کی دلیل دمدار سمجھی جاسکتی ہے ۔ ہم نے بچوں میں تو یہ دیکھا ہے کہ جب دو بارہ بارہ برس کی لڑکیاں لڑ رہی ہوں اور ایک لڑکی دوسری کو چپت جماکر

हमारी राय — ہماری رائے

अमरीका और यालू

सारी दुनिया ऊक रही है कि अमरीका ने यालू नदी के कारखाने पर बमबारी कर के ऐसा काम किया है जो लड़ाई के क़ायदे के खिलाफ़ है और अमरीका है कि अपने ऐटम बम और हाइड्रोजन बम के ज़ोम में किसी की परवाह नहीं करता. सुरक्षा कौंसिल में उसने अपनी ऐसी गुट बना रक्खी है कि वह कोरिया में कुछ भी करे उसके खिलाफ़ कोई ठहराव नहीं आ सकता. उधर चर्चिल साहब ने यह कहकर तो कमाल ही कर दिया कि यालू नदी की बमबारी में लड़ाई के क़ायदों के खिलाफ़ कुछ नहीं किया गया है.

हाल ही में कलकत्ता हाई कोर्ट का एक फ़ैसला हुआ है कि अगर चाय में चाय के डंठल या चाय की कलियां मिली हुई हों तो इससे बेजा मिलावट का क़ानून नहीं टूटता. और इस दलील पर उन्होंने मिलावट करने वाले को अपने यहां से रिहाई दे दी. क्या अब इसका नतीजा यह नहीं होगा कि चाय में अब डंठल ज़ियादा रहा करेंगे और पत्तियां कम ? ठीक इसी तरह से चर्चिल साहब के फ़ैसले के मुताबिक़ नेशनल हेराल्ड का दफ़्तर और बहुत से उन अख़बारों के दफ़्तर जो यालू बमबारी के खिलाफ़ लिखते हैं बमबारी के क़ाबिल हो जाते हैं, क्योंकि उनके लेखों से उत्तरी कोरिया के लोगों को अख़लाक़ी मदद पहुंचती है और उनमें लड़ने के लिये दम आता है.

अमरीकियों की यही तो दलील है कि उन्होंने उन कारखानों पर इसलिये बमबारी की कि उन कारखानों की मदद से हवा मार तोपें तैयार होती थीं और उन तोपों से अमरीकी जहाज़ गिराये जाते थे और अमरीकी और वह लोग मार डाले जाते थे जो उन हवाई जहाज़ों को चलाते थे. और उन्हीं कारखानों की मदद से रूसी साख़्त के जेट जहाज़ उड़ कर यूनो की फ़ौजों पर धावा बोल देते थे. उन्हीं कारखानों से वह तोपें बनती थीं जो यूनो के जहाज़ों पर गोलाबारी कर के उन्हें समुन्दर में डुबा देती थीं और उन्हीं कारखानों की मदद से वह गोला बारूद तैयार होता था जिसकी मदद से आयोवा और ग्लासेस्टर शायर के जवान धराशाई कर दिये जाते थे.

امریکہ اور یالو

ساری دنیا اوک رہی ہے کہ امریکہ نے یالو ندی کے کارخانے پر بمباری کرکے ایسا کام کیا ہے جو لڑائی کے قاعدے کے خلاف ہے اور امریکہ ہے کہ اپنے ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم کے زعم میں کسی کی پرواہ نہیں کرتا ۔ سرکھشا کونسل میں اس نے اپنی ایسی گٹ بنا رکھی ہے کہ وہ کوریا میں کچھ بھی کرے اس کے خلاف کوئی ٹھہراؤ نہیں آ سکتا ۔ ادھر چرچل صاحب نے یہ کہ کر تو کمال ہی کر دیا کہ یالو ندی کی بمباری میں لڑائی کے قاعدوں کے خلاف کچھ نہیں کیا گیا ہے ۔

حال ہی میں کلکتہ ہائی کورٹ کا ایک فیصلہ ہوا ہے کہ اگر چائے میں چائے کے ڈنٹھل یا چائے کی کلیاں ملی ہوئی ہوں تو اس سے بیجا ملاوٹ کا قانون نہیں ٹوٹتا ۔ اور اس دلیل پر انہوں نے ملاوٹ کرنے والے کو اپنے یہاں سے رہائی دے دی ۔ کیا اب اس کا نتیجہ یہ نہیں ہوگا کہ چائے میں اب ڈنٹھل زیادہ رہا کریں گے اور پتیاں کم ؟ ٹھیک اسی طرح سے چرچل صاحب کے فیصلے کے مطابق نیشنل ہیرلڈ کا دفتر اور بہت سے ان اخباروں کے دفتر جو یالو بمباری کے خلاف لکھتے ہیں بمباری کے قابل ہو جاتے ہیں، کیونکہ ان کے لیکھوں سے اتری کوریا کے لوگوں کو اخلاقی مدد پہنچتی ہے اور ان میں لڑنے کے لئے دم آتا ہے ۔

امریکیوں کی یہی تو دلیل ہے کہ انہوں نے ان کارخانوں پر اس لئے بمباری کی کہ ان کارخانوں کی مدد سے ہوا مار توپیں تیار ہوتی تھیں اور ان توپوں سے امریکی جہاز گرائے جاتے تھے اور امریکی اور وہ لوگ مار ڈالے جاتے تھے جو ان ہوائی جہازوں کو چلاتے تھے ۔ اور انہیں کارخانوں کی مدد سے روسی ساخت کے جیٹ جہاز اڑ کر یونو کی فوجوں پر دھاوا بول دیتے تھے ۔ انہیں کارخانوں سے وہ توپیں بنتی تھیں جو یونو کے جہازوں پر گولہ باری کرکے انہیں سمندر میں ڈبا دیتی تھیں اور انہیں کارخانوں کی مدد سے وہ گولہ بارود تیار ہوتا تھا جس کی مدد سے آئیوا اور گلوسسٹر شائر کے جوان دھراشائی کر دئے جاتے تھے ۔

5. ईरान में डाक्टर मुसादिक़ की सरकार ने स्तीफ़ा दे दिया. हिन्द सरकार नये नये कारख़ाने शुरू करेगी—मिनिस्टर रेड्डी का बयान.

6. यालू बमबारी से दुनिया का अमन ख़तरे में पड़ गया है—पंडित नेहरू का एलान.

7. पार्लियामेन्ट में भाशा वार सूबों पर बहस. हिन्दुस्तान की फ़िल्मों का स्तर बहुत नीचे है—केसकर का बयान.

8. कीड़ा बीमारी बम फेंके जाने के सबूत मेरे पास हैं—डाक्टर जानसन का बयान. सारे देश में एक सा सेल्स टैक्स लगाने की कोशिश की जायेगी— देशमुख का बयान.

9. त्युनीशिया में हज़ारों आदमी जेल में बन्द हैं—एक अंगरेज़ी अख़बार नवीस का बयान. बीमारी बम के इल्ज़ाम को झूटा बताने वाले अमरीकी ठहराव को सुरक्षा कौन्सिल में रूस ने नहीं पास होने दिया. हिन्द सरकार खादी और बुनकर काम के लिये अलग अलग बोर्ड बनाने की सोच रही है.

10. अंगरेज़ी सिपाहियों को कोरिया से हटाने को मैं तैयार नहीं हूँ—चर्चिल. पेप्सू में किसान और ज़मींदारों में बलवा—368 किसान और 45 ज़मींदार गिरफ़्तार.

11. उत्तर कोरिया में ज़बरदस्त हमला. पार्लियामेन्ट में क्रिमिनल प्रोसीजर कोड बिल पास हो गया.

12. अमरीकी चुनाव में हिस्सा लेने की वजह से जनरल आईज़न होवर ने फ़ौज से स्तीफ़ा दिया.

13. मिल मालिकों को चीनी पर से दाम कम कर देना चाहिये—क़िदवाई की अपील.

14. एशिया और दूर पूरब का अमन ख़तरे में है—यू. एन लाई का एलान. श्री जय प्रकाश नरायन ने अपना अनशन ख़त्म किया. जालपाईगिरी में पानी की बाढ़ ने रास्ता रोक दिया.

15. शेख़ अब्दुल्ला और पंडित नेहरू में कशमीर के मसले पर बात चीत हुई. पार्लियामेन्ट ने क्रिमनल ला एमेन्ड बिल पास किया.

5. ایران میں ڈاکٹر مصادق کی سرکار نے استعفیٰ دے دیا. ہند سرکار نئے نئے کارخانے شروع کریگی—منسٹر ریڈی کا بیان.

6. یالو بمباری سے دنیا کا امن خطرے میں پڑ گیا ہے. پنڈت نہرو کا اعلان.

7. پارلیامنٹ میں بھاشا وار صوبوں پر بحث. ہندستان کے فلموں کا استر بہت نیچا ہے—کیسکر کا بیان.

8. کیڑا بیماری بم پھینکے جانے کے ثبوت میرے پاس ہیں—ڈاکٹر جانسن کا بیان. سارے دیش میں ایک سا سیلس ٹیکس لگانے کی کوشش کی جائے گی—دیش مکھ کا بیان.

9. تیونیشیا میں ہزاروں آدمی جیل میں بند ہیں—ایک انگریزی اخبار نویس کا بیان. بیماری بم کے الزام کو جھوٹا بتانے والے امریکی ٹھہراؤ کو سرکشا کونسل میں روس نے نہیں پاس ہونے دیا. ہند سرکار کھادی اور بنکر کام کے لئے الگ الگ بورڈ بنانے کی سوچ رہی ہے.

10. انگریزی سپاہیوں کو کوریا سے ہٹانے کو میں تیار نہیں ہوں—چرچل. پیپسو میں کسان اور زمینداروں میں بلوا—368 کسان اور 45 زمیندار گرفتار.

11. اتر کوریا میں زبردست حملہ. پارلیامنٹ میں کرمنل پروسیجر کوڈ بل پاس ہوگیا.

12. امریکی چناؤ میں حصہ لینے کی وجہ سے جنرل آئزن ہوور نے فوج سے استعفیٰ دیا.

13. مل مالکوں کو چینی پر سے دام کم کر دینا چاہئے—قدوائی کی اپیل.

14. ایشیا اور دور پورب کا امن خطرے میں ہے—چو. این لائی کا اعلان. شری جے پرکاش نرائن نے اپنا انشن ختم کیا. جالپائیگری میں پانی کی باڑھ نے راستہ روک دیا.

15. شیخ عبداللہ اور پنڈت نہرو میں کشمیر کے مسلے پر بات چیت ہوئی. پارلیامنٹ نے کرمنل لا امینڈمنٹ بل پاس کیا.

24.* शेख अब्दुल्ला ने ईद के दिन कश्मीर सरकार का नया फ़ैसला लोगों को बताया.

25. कोरिया की लड़ाई जारी रहने से दुनिया का अमन ख़तरे में है—सेक्रेट्री ट्रिगवेली का बयान. अमरीका ने यालू बमबारी के मामले में इंगलिस्तान से सलाह नहीं ली—ईडन का एलान. विनोबा पैदल यात्रा करते हुए इलाहाबाद पहुंचे.

26. पच्छिमी अफ्रीक़ा में सत्याग्रह शुरू. फ़ौजी कमान्डर कोरिया में लड़ाई को क़रीब ला रहे हैं—बेवन का बयान. पच्छिमी बंगाल में अनाज की भारी कमी है—क़िदवाई का बयान.

27. हिन्दुस्तान रेल के इंजिनों के बारे में पांच साल में स्वावलम्बी हो जायेगा—रेल मिनिस्टर का बयान.

28. पहली जुलाई से उत्तर प्रदेश में राशनिंग ख़त्म. बनारस में रेशम का काम करने वाले तीस हज़ार से ज़ियादा लोग बेकार.

29. हिलाल पाशा की सरकार ने स्तीफ़ा दे दिया. सिरे पाशा ने दूसरी सरकार बनाई. बम्बई में समाजवादी पार्टी ने नये टेक्सों के ख़िलाफ़ प्रदर्शन किया.

30. मद्रास असेम्बली ने राजा जी के अन्दर अपना विश्वास जाहिर किया. कांगरेस पार्लियामेन्टरी पार्टी की स्टेन्डिंग कमेटी ने कोआपरेटिव तरीक़े पर ज़मीन बंटवारे का फ़ैसला किया.

जुलाई

1. यालू बमबारी का जनरल क्लार्क को कुछ पता नहीं—चर्चिल का बयान. उत्तर प्रदेश में ज़मींदारी प्रथा का अन्त. आजकल कन्ट्रोल का सिस्टम ठीक नहीं है—क़िदवाई का पार्लियामेन्ट में एलान. ज़मींदारी अन्त ही सिर्फ़ लोगों को ख़ुश नहीं बना सकता—विनोबा का भाशन.

2. यालू बमबारी की तैयारियां महीनों पहले कर ली गई थीं—अंगरेज़ सरकार को जानबूझ कर ख़बर नहीं दी गई—एक अमरीकी अख़बार का बयान. पच्छिमी अफ़रीक़ा में सत्याग्रह ज़ोरों पर जारी.

3. अमरीका को यूनो की मदद करते रहना चाहिये—ट्रूमैन का बयान. आसाम में अनाज की भारी कमी.

4. क़ाहिरा और अलेगज़ेन्ड्रिया में हालत ख़तरनाक. हिन्दुस्तान और नैपाल के सम्बन्ध मित्रता पूर्ण हैं—नैपाल के राजा का एलान. ज़मींदारी अन्त से मुझे कोई ख़ुशी नहीं—बेज़मीन वाले की हालत वैसी की वैसी है—विनोबा का एलान.

24. شیخ عبداللہ نے عید کے دن کشمیر سرکار کا نیا فیصلہ لوگوں کو بتایا ۔

25. کوریا کی لڑائی جاری رہنے سے دنیا کا امن خطرے میں ہے—سکریٹری ٹرگوےلی کا بیان ۔ امریکہ نے یالو بمباری کے معاملے میں انگلستان سے صلاح نہیں لی—ایڈن کا اعلان ۔ ونوبا پیدل یاترا کرتے ہوئے الہ آباد پہونچے ۔

26. پچھمی افریقہ میں ستیاگرہ شروع ۔ فوجی کمانڈر کوریا میں لڑائی کو قریب لا رہے ہیں—بیون کا بیان ۔ پچھمی بنگال میں اناج کی بھاری کمی ہے—قدوائی کا بیان ۔

27. ہندستان ریل کے انجنوں کے بارے میں پانچ سال میں سواولمبی ہوجائے گا—ریل منسٹر کا بیان ۔

28. پہلی جولائی سے اتر پردیش میں راشننگ ختم ۔ بنارس میں ریشم کا کام کرنے والے تیس ہزار سے زیادہ لوگ بیکار ۔

29. حلال پاشا کی سرکار نے استعفیٰ دے دیا ۔ سرے پاشا نے دوسری سرکار بنائی ۔ بمبئی میں سماج وادی پارٹی نے نئے ٹکسوں کے خلاف پر درشن کیا ۔

30. مدراس اسمبلی نے اند اپنا وشواس ظاہر کیا۔ کانگریس پارلیامنٹری پارٹی کی اسٹینڈنگ کمیٹی نے کوآپریٹو طریقے پر زمین بٹوارے کا فیصلہ کیا ۔

جولائی ۔

1. یالو بمباری کا جنرل کلارک کو کچھ پتہ نہیں—چرچل کا بیان۔ اترپردیش میں زمینداری پرتھا کا انت آجکل کنٹرول کا سسٹم ٹھیک نہیں ہے—قدوائی کا پارلیامنٹ میں اعلان ۔ زمینداری انت ہی صرف لوگوں کو خوش نہیں بنا سکتا—ونوبا کا بھاشن ۔

2. یالو بمباری کی تیاریاں مہینوں پہلے کر لی گئی تھیں—انگریز سرکار کو جان بوجھ کر خبر نہیں دی گئی—ایک امریکی اخبار کا بیان ۔ پچھمی افریقہ میں ستیاگرہ زوروں پر جاری ۔

3. امریکہ کو یونو کی مدد کرتے رہنا چاہئے—ٹرومین کا بیان ۔ آسام میں اناج کی بھاری کمی ۔

4. قاہرہ اور الگزینڈریہ میں حالت خطرناک ۔ ہندستان اور نیپال کے سمبندھ مترتا پورن ہیں—نیپال کے راجہ کا اعلان ۔ زمینداری انت سے مجھے کوئی خوشی نہیں—بے زمین والے کی حالت ویسی کی ویسی ہے—ونوبا کا اعلان ۔

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

जून

16. अमरीका की जर्मनी और जापान वाली पालिसी इंगलिस्तान के लिये खतरनाक है—बेवन का बयान. वर्लड बैंक स्टील मिशन के नेता नई दिल्ली पहुंचे. तालीम मिनिस्ट्री का काम पैसा न होने की वजह से ठप हो रहा है—मौलाना आज़ाद का बयान.

17. आठ लाख काम करने वालों ने जापान में अपनी सरकार के खिलाफ़ हड़ताल कर दी. 31 मार्च 1952 तक अमरीका ने कोरिया में 900 मिलयन डालर खर्च किये. हिन्दुस्तान विदेशी इन्डस्ट्रीज़ पर रोक नहीं लगायेगा—कृश्नामचारी का एलान.

18. बिहार सरकार ने अनाज पर से कन्ट्रोल हटा लिया.

19. हिन्दुस्तान को अमरीका हर तरह की मदद देने के लिये तैयार है—हिन्दुस्तान के अमरीकी राजदूत का अमरीका में बयान. हमें विदेशी मदद से चिढ़ नहीं है—श्री के. सी. रेडी का बयान. देश में अनाज की कमी साल भर के लिये न होगी—क़िदवाई का नैनीताल में एलान.

20. अरब-एशिया के मुल्कों ने ट्युनिशिया के मसले पर यूनो के बड़े वज़ीर के नाम चिट्ठी भेजी जिसमें एक सम्मेलन करने पर ज़ोर दिया. करोड़ों रुपया पन बिजली की स्कीमों पर बरबाद किया गया है—मुख़ालिफ़ पार्टी के मेम्बरों का पार्लियामेन्ट में बयान.

21. हिन्दुस्तान ने कनाडा से गेहूँ की मांग की. कोई आम ख्याल कन्ट्रोल तोड़ने का नहीं है—नेहरू का बयान. मौरूसी हकूमत का कश्मीर में ख़ात्मा - कश्मीर कन्सेम्बली का फ़ैसला—नेहरू का बयान.

22. अरब-इसराईल में शान्ति की कोई उम्मीद नहीं है—आज़म पाशा. मध्य भारत में पुलिस की ज़ियादतियां. भारत सरकार ने भारत सेवक समाज पैम्फ़लेट जारी किया.

23. अमरीकियों ने यालू में पन बिजली के कल कारख़ानों पर हमला किया. कलकत्ता पुलिस ने भूक मार्च करने वाले जलूस पर लाठी चार्ज किया.

جون

16. امریکہ کی جرمنی اور جاپان والی پالیسی انگلستان کے لئے خطرناک ہے—بیون کا بیان. ورلڈ بینک اسٹیل مشن کے نیتا نئی دلی پہونچے. تعلیم منسٹری کا کام پیسہ نہ ہونے کی وجہ سے ٹھپ ہو رہا ہے—مولانا آزاد کا بیان.

17. آٹھ لاکھ کام کرنے والوں نے جاپان میں اپنی سرکار کے خلاف ہڑتال کر دی. 31 مارچ 1952 تک امریکہ نے کوریا میں 900 ملین ڈالر خرچ کئے. ہندستان ودیشی انڈسٹریز پر روک نہیں لگائے گا—کرشناماچاری کا اعلان.

18. بہار سرکار نے اناج پر سے کنٹرول ہٹا لیا.

19. ہندستان کو امریکہ ہر طرح کی مدد دینے کے لئے تیار ہے—ہندستان کے امریکی راجدوت کا امریکہ میں بیان. ہمیں ودیشی مدد سے چڑھ نہیں ہے—شری کے. سی. ریڈی کا بیان. دیش میں اناج کی کمی سال بھر کے لئے نہ ہوگی—قدوائی کا نینی تال میں اعلان.

20. عرب ایشیا کے ملکوں نے تیونیشیا کے مسئلے پر یونو کے بڑے وزیر کے نام چٹھی بھیجی جس میں ایک سمیلن کرنے پر زور دیا. کروڑوں روپیہ پن بجلی کی اسکیموں پر برباد کیا گیا ہے—مخالف پارٹی کے ممبروں کا پارلیامنٹ میں بیان.

21. ہندستان نے کناڈا سے گیہوں کی مانگ کی. کوئی عام خیال کنٹرول توڑنے کا نہیں ہے—نہرو کا بیان. موروثی حکومت کا کشمیر میں خاتمہ—کشمیر کنسیمبلی کا فیصلہ—نہرو کا بیان.

22. عرب اسرائیل میں شانتی کی کوئی امید نہیں ہے—اعظم پاشا. مدھیہ بھارت میں پولیس کی زیادتیاں. بھارت سرکار نے بھارت سیوک سماج پمفلیٹ جاری کیا.

23. امریکیوں نے یالو میں پن بجلی کے کل کارخانوں پر حملہ کیا. کلکتہ پولیس نے بھوک مارچ کرنے والے جلوس پر لاٹھی چارج کیا.

काका साहब की गिनती गुजराती और मराठी के बड़े से बड़े लेखकों में की जाती है. और अक्सर लोग उन्हें गांधी जी के आश्रमी हल्क़े वालों में सब से ज़ियादा तहज़ीब या सभ्यता के सबसे ऊंचे विद्यार्थियों में मानते हैं. घूमने का उन्हें बहुत काफ़ी शौक़ है और घूमने का हाल बयान करने की कला में वह कहीं ज़ियादा माहिर हैं. इसलिये उनकी यह किताब भी अपने ढंग की अनोखी और ला जवाब है.

पूरबी अफ़्रीक़ा को अब तक जंगलियों और वहशियों की बस्ती की निगाह से देखा गया है जिसके लिये बहुत कुछ ज़िम्मेदार अंगरेज़ हैं. लेकिन काका साहब ने अफ़्रीक़ा को अपने पड़ोस के मोहल्ले वालों की निगाह से देखा जिसकी वजह से पूरबी अफ़्रीक़ा में बहुत प्रेम के साथ उनका स्वागत किया गया. और पड़ोसी के नाते देखना ही सच्चा देखना है.

हमें उम्मीद है कि इस किताब की मदद से हमारे देश वालों को अफ़्रीक़ा में रहने वाले हमारे पड़ोसी भाई बहनों को समझने में ज़ियादा मदद मिलेगी और हम एक दूसरे के ज़ियादा नज़दीक आयेंगे.

यह किताब काका साहब की लिखी मराठी किताब का हिन्दी तरजुमा है. जिस पर हम भाई राम नरायन चौधरी को मुबारक बाद देते हैं.

—सुरेश रामभाई

کاکا صاحب کی گنتی گجراتی اور مراٹھی کے بڑے سے بڑے لیکھکوں میں کی جاتی ہے . اور اکثر لوگ اُنہیں گاندھی جی کے آشرمی حلقے والوں میں سب میں زیادہ تہذیب یا سبھیتا کے سب سے اُونچے ودیارتھیوں میں مانتے ہیں . گھومنے کا اُنہیں بہت کافی شوق ہے اور گھومنے کا حال بیان کرنے کی کلا میں وہ کہیں زیادہ ماہر ہیں . اِسلئے اُن کی یہ کتاب بھی اپنے ڈھنگ کی انوکھی اور لاجواب ہے .

پوربی افریقہ کو اب تک جنگلیوں اور وحشیوں کی بستی کی نگاہ سے دیکھا گیا ہے جس کے لئے بہت کچھ ذمےدار انگریز ہیں . لیکن کاکا صاحب نے افریقہ کو اپنے پڑوس کے محلے والوں کی نگاہ سے دیکھا جس کی وجہ سے پوربی افریقہ میں بہت پریم کے ساتھ اُن کا سواگت کیا گیا . اور پڑوسی کے ناتے دیکھنا ہی سچا دیکھنا ہے .

ہمیں اُمید ہے کہ اِس کتاب کی مدد سے ہمارے دیش والوں کو افریقہ میں رہنے والے ہمارے پڑوسی بھائی بہنوں کو سمجھنے میں زیادہ مدد ملے گی اور ہم ایک دوسرے کے زیادہ نزدیک آئیں گے .

یہ کتاب کاکا صاحب کی لکھی مراٹھی کتاب کا ہندی ترجمہ ہے . جس پر ہم بھائی رام نرائن چودھری کو مبارکباد دیتے ہیں .

—سریش رام‌بھائی

सोने की कला

लेखक—डाक्टर हीरालाल; निकालने वाले-निरोगी ग्रंथ माला, मगरवारा, ज़िला उन्नाव, यू. पी; लिखावट हिन्दी; सफ़े 56; दाम बारह आने.

नींद एक नियामत है. जिसके पास सब सुख हों लेकिन नींद नहीं आती हो तो उसकी ज़िन्दगी एक बला हो जाती है. इसलिये नींद की इन्सान की ज़िन्दगी में बहुत ज़ियादा अहमियत है और हर किसी पढ़े लिखे को जानना चाहिये कि अच्छी नींद कैसे हासिल की जाय. इस काम के लिये डाक्टर हीरालाल की यह किताब अकसीर है जो उनके ज़ाती और दूसरों पर आज़माये हुए तजरबों से भरी है. रोगियों के तो यह ख़ास काम की चीज़ है.

—सुरेश रामभाई

سونے کی کلا

لیکھک—ڈاکٹر ہیرا لال؛ نکالنے والے—نروگی گرنتھ مالا، مگروارا، ضلع اُناؤ، یو . پی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 56؛ دام بارہ آنے .

نیند ایک نیامت ہے. جس کے پاس سب سکھ ہوں لیکن نیند نہیں آتی ہو تو اُس کی زندگی ایک بلا ہو جاتی ہے. اِس لئے نیند کی اِنسان کی زندگی میں بہت زیادہ اہمیت ہے اور ہر کسی پڑھے لکھے کو جاننا چاہئے کہ اچھی نیند کیسے حاصل کی جائے. اِس کام کے لئے ڈاکٹر ہیرا لال کی یہ کتاب اکسیر ہے جو اُن کے ذاتی اور دوسروں پر آزمائے ہوئے تجربوں سے بھری ہے . روگیوں کے تو یہ خاص کام کی چیز ہے .

—سریش رام‌بھائی

इससे जाहिर है कि पथिक जी के दिल के अन्दर कैसी आग जल रही है. हमें उम्मीद है कि उनका अखबार नेताओं को राह पर लायेगा, सच्ची नागिरकता की हिफ़ाज़त करेगा और एक नगर में एक ही नगरी बसवायेगा.

हम इतना और कहेंगे कि अखबार का दाम ज़रूरत से ज़ियादा है और इसका वक़्त से निकलना बहुत ज़रूरी है.

—सुरेश रामभाई

ड्रिंक, ड्रग्ज़ एन्ड गेम्बलिंग

(महात्मा गांधी के लेखों का अंगरेज़ी संग्रह.)

सम्पादक—भारतन कुमारप्पा; निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशक मंदिर, अहमदाबाद; सफ़े 175; दाम ढ़ाई रुपये, पहली बार 1952.

कहते हैं कि आदमी तजुरबे के बाद सीखता है. इसी तरह हुकूमतें या सरकारें भी तजुरबे के बाद सीखती हैं. हमारे देश के ज़ियादा तर अखबार ख़ासकर अंगरेज़ी और चमकदार अखबार यह बताते हैं कि कांगरेस की सरकारों ने तजुरबे के बाद यह सीखा कि न तो शराब बन्दी में फ़ायदा है, न अंगरेज़ी अफ़ीमची दवाइयां बन्द करने में कोई तुक है और न जुआ, सट्टेबाज़ी या घुड़ दौड़ बन्द कर देना अक़्लमन्दी है. हमारी नई दिल्ली की सरकार के ज़ियादातर मिनिस्टर और सूबों के हाकिम भी अकसर निजी तौर पर इसी ख़्याल के हैं. ऐसी सूरत में कुछ कहने की गुंजायश नहीं रह जाती. लेकिन हमारा जी नहीं मानता यह कहे बिना कि ऊपर की तीनों बातें सोलह आना बारह माशे और छियानवे रत्ती ग़लत हैं और हिन्दुस्तान के लिहाज़ से तो हमेशा ही ग़लत रहेगा. बड़े अदब के साथ हम यह सिफ़ारिश करते हैं कि अपने को तहज़ीब याफ़्ता, शरीफ़ और नई रोशनी के समझने वाले भाई बहन इस किताब को इधर से उधर को पलट जायें. हमें उम्मीद है कि इससे उनके ख़्यालात में कुछ सफ़ाई पैदा होगी और दिल को कुछ शान्ति नसीब होगी.

रचनात्मक काम करने वालों और दूसरे मामूली पढ़े लिखे भाई बहनों के लिए यह किताब बहुत ही फ़ायदे मन्द साबित होगी.

—सुरेश रामभाई

उस पार के पड़ोसी

लेखक—काका कालेलकर; अनुवादक—राम नरायन चौधरी; निकालने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; लिखावट हिन्दी; दाम साढ़े तीन रुपये; सफ़े 311; पहली बार दिसम्बर 1951.

1950 के मई, जून और जुलाई के महीने काका साहब कालेलकर ने पूरबी अफ़रीक़ा में बिताये. उनके साथ में यह किताब उस सफ़र की एक बहुत ही मनोहर और दिल चस्प कहानी है.

اِس سے ظاہر ہے کہ پتھک جی کے دل کے اندر کیسی آگ جل رہی ہے . ہمیں اُمید ہے کہ اُن کا اخبار نیتاؤں کو راہ پر لائے گا' سچی ناگرکتا کی حفاظت کرے گا اور ایک نگر میں ایک ہی نگری بسوائے گا.

ہم اتنا اور کہیں گے کہ اخبار کا دام ضرورت سے زیادہ ہے اور اِسکا وقت سے نکلنا بہت ضروری ہے .

—سریش رام بھائی

ڈرنک' ڈرگز اینڈ گیمبلنگ

(مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا انگریزی سنگرہ)

سمپادک—بھارتن کماریپا؛ نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر' احمدآباد؛ صفحے 175؛ دام ڈھائی روپیہ؛ پہلی بار 1952.

کہتے ہیں کہ آدمی تجربے کے بعد سیکھتا ہے . اِسی طرح حکومتیں یا سرکاریں بھی تجربے کے بعد سیکھتی ہیں . ہمارے دیش کے زیادہ تر اخبار خاص کر انگریزی اور چمکدار اخبار یہ بتاتے ہیں کہ کانگریس کی سرکاروں نے تجربے کے بعد یہ سیکھا کہ نہ تو شراب بندی میں فائدہ ہے' نہ انگریزی افیمچی دوائیاں بند کرنے میں کوئی تک ہے اور نہ جوا' سٹہ بازی یا گھوڑدوڑ بند کر دینا عقل مندی ہے. ہماری نئی دلی کی سرکار کے زیادہ تر منسٹر اور صوبوں کے حاکم بھی اکثر نجی طور پر اِسی خیال کے ہیں. ایسی صورت میں کچھ کہنے کی گنجائش نہیں رہ جاتی . لیکن ہمارا جی نہیں مانتا یہ کہے بنا کہ اُوپر کی تینوں باتیں سولہ آنہ بارہ ماشے اور چھیانوے رتی غلط ہیں اور ہندستان کے لحاظ سے تو ہمیشہ ہی غلط رہے گا. بڑے ادب کے ساتھ ہم یہ سفارش کرتے ہیں کہ اپنے کو تہذیب یافتہ' شریف اور نئی روشنی کے سمجھنے والے بھائی بہن اِس کتاب کو اِدھر سے اُدھر کو پلٹ جائیں. ہمیں اُمید ہے کہ اِس سے اُن کے خیالات میں کچھ صفائی پیدا ہوگی اور دل کو کچھ شانتی نصیب ہوگی .

رچناتمک کام کرنے والوں اور دوسرے معمولی پڑھے لکھے بھائی بہنوں کے لئے یہ کتاب بہت ہی فائدے مند ثابت ہوگی .

—سریش رام بھائی

اُس پار کے پڑوسی

لیکھک—کاکا کالیلکر؛ انوادک—رام نرائن چودھری؛ نکالنے والے—نوجیون پرکاشن مندر' احمدآباد؛ لکھاوٹ ہندی؛ دام ساڑھے تین روپئے؛ صفحے 311؛ پہلی بار دسمبر 1951 .

1950 کے مئی' جون اور جولائی کے مہینے کاکا صاحب کالیلکر نے پوربی افریقہ میں بتائے. اُن کے ساتھ میں یہ کتاب اُس سفر کی ایک بہت ہی منوہر اور دلچسپ کہانی ہے.

एक बात हमें जरूर कहनी है. वह यह कि नई तालीम का काम करना देश के अन्दर सच्चे, ठोस और शान्ति इन्क़लाब का काम करना है और जब हम यह देखते हैं कि हिन्द सरकार अमरीका से तालीमी एक्सपर्ट मंगाती है, तो हम समझ जाते हैं कि वह नई तालीम की कितनी बड़ी और गहरी दुश्मन है. इसलिये हम आशा दी और मार्जरी बहन से अपील करते हैं कि उन्हें हमेशा निडर रह कर 'नई तालीम' चलानी होगी और हर संकट का सामना करने के लिये हमेशा तैयार रहना होगा.

—सुरेश रामभाई

ایک بات ہمیں ضرور کہنی ہے ۔ وہ یہ کہ نئی تعلیم کا کام کرنا دیش کے اندر سچے' ٹھوس اور شانتی انقلاب کا کام کرنا ہے اور جب ہم یہ دیکھتے ہیں کہ ہند سرکار امریکہ سے تعلیمی ایکسپرٹ مانگتی ہے تو ہم سمجھ جاتے ہیں کہ وہ نئی تعلیم کی کتنی بڑی اور گہری دشمن ہے ۔ اِس لئے ہم آشا دی اور مارجری بہن سے اپیل کرتے ہیں کہ اُنہیں ہمیشہ نڈر رہکر ' نئی تعلیم ' چلانی ہوگی اور ہر سنکٹ کا سامنا کرنے کے لئے ہمیشہ تیار رہنا ہوگا ۔

—سریش رام بھائی

शिक्षा बदले—समाज बदले (माहवारी पर्चा)

सम्पादक—शालिग्राम 'पथिक'; लिखावट हिन्दी; निकालने वाले—श्री शालिग्राम 'पथिक'; 11 मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद; सालाना चन्दा दो रुपये, एक पर्चा तीन आने.

प्रौढ़ शिक्षा या तालीम बालेग़ान के नामी माहिर भाई सालिगराम जी 'पथिक' लोगों के दिल में घर कर जाने वाले नारे खोजने में अपना सानी नहीं रखते. 'शिक्षा बदले समाज बदले' उनकी इस खूबी का एक लाजवाब नमूना है. बिना शिक्षा या तालीम के बदले समाज नहीं बदला जा सकता. इसलिये पथिक जी की आवाज़ है कि शिक्षा बदले, समाज बदले.

पथिक जी स्वभाव से ही खरी और दो टूक सुनाने वालों में से हैं. हम उनके इस अखबार के ऊपर वाले सफ़ों की सुर्खियां देते हैं. एक नगर में दो नगरी (एक रईसों की एक ग़रीबों की); सरासर धोका भयंकर भूल (आज की हमारी तालीम सरासर धोखा है और एक भयंकर भूल है जिसको अगर जल्दी ठीक नहीं किया गया तो हिन्दुस्तान उजड़ जायगा); 'नागरिकता' का सत्यानाश (रईसों वाली नागरिकता का जो ग़रीबों को चूस चूस कर ज़िन्दा रहती है उसका नाश हो); शर्म नहीं आती है (छोटे बड़े चौराहों पर सिनेमा की नंगी भद्दी तस्वीरें टांगे जाने पर, आल इन्डिया रेडियो के गन्दे गन्दे गानों पर, नेताओं के झूट और धोका धड़ी पर, अखबारों का पूंजीपतियों के हाथ का खिलौना बन जाने पर, वग़ैरा वग़ैरा); अपने पैर कुल्हाड़ी न मारे सरकार —यही हमारी सलाह है; आप नेता हैं या गुमराह करने वाले (आपने इस चुनाव का नाजायज़ फ़ायदा उठाया है और यह मौक़ा हमें गुमराह करने और लोक तन्त्र के खिलाफ़ इस्तेमाल किया है.)

شکشا بدلے—سماج بدلے (ماہواری پرچہ)

سمپادک- شالگ رام ' پتھک '؛ لکھاوٹ ہندی ؛ نکالنے والے—شالگ رام 'پتھک '؛ 11 موتی لال نہرو روڈ' الہ آباد ؛ سالانہ چندہ دو روپئے' ایک پرچہ تین آنے ۔

پرورھ شکشا یا تعلیم بالغان کے نامی ماہر بھائی سالگ رام جی ' پتھک ' لوگوں کے دل میں گھر کر جانے والے نارے کھوجنے میں اپنا ثانی نہیں رکھتے. ' شکشا بدلے سماج بدلے' اُن کی اِس خوبی کا ایک لاجواب نمونہ ہے ۔ بنا شکشا یا تعلیم کے بدلے سماج نہیں بدلا جا سکتا. اِس لئے پتھک جی کی آواز ہے کہ شکشا بدلے' سماج بدلے ۔

پتھک جی سوبھاؤ سے ہی کھری اور دو ٹوک سنانے والوں میں سے ہیں ۔ ہم اُن کے اِس اخبار کے اوپر والے صفحوں کی سرخیاں دیتے ہیں ۔ ایک نگر میں دو نگری (ایک رئیسوں کی ایک غریبوں کی) ؛ سراسر دھوکا بھینکر بھول (آج کی ہماری تعلیم سراسر دھوکا ہے اور ایک بھینکر بھول ہے جسکو اگر جلدی ٹھیک نہیں کیا گیا تو ہندستان اُجڑ جائے گا) ؛ ' ناگرکتا ' کا ستیا ناش (رئیسوں والی ناگرکتا کا جو غریبوں کو چوس چوس کر زندہ رہتی ہے اُسکا ناش ہو) ؛ شرم نہیں آتی ہے (چھوٹے بڑے چوراہوں پر سنیما کی ننگی بھدی تصویریں ٹانگیں جانے پر' آل انڈیا ریڈیو کے گندے گندے گانوں پر' نیتاؤں کے جھوٹ اور دھوکا دھڑی پر' اخباروں کا پونجی پتیوں کے ہاتھ کا کھلونا بن جانے پر' وغیرہ وغیرہ) ؛ اپنے پیر کلہاڑی نہ مارے سرکار—یہی ہماری صلاح ہے؛ آپ نیتا ہیں یا گمراہ کرنے والے (آپ اِس چناؤ کا ناجائز فائدہ اُٹھایا ہے اور یہ موقع ہمیں گمراہ کرنے اور لوک تنتر کے خلاف اِستعمال کیا ہے ۔)



नई तालीम (माहवारी परचा)

सम्पादक—आशादेवी और मार्जरी साइक्स; लिखावट हिन्दी; निकालने वाले—हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, वर्धा; सलाना चन्दा—तीन रुपये; एक परचा चार आना.

जिस तरीक़े से बैरोमीटर नाम के आले से हवा की हालत मालूम हो जाती है उसी तरह किसी देश की तालीम और तालीमी ढंग से वहां की असली हालत का पता चल जाता है. हिन्दुस्तान आज आज़ाद है लेकिन कुछ ही मानों में देखने के लिये आज़ाद है क्योंकि यहां की तालीम का ढंग वैसा ही दक़ियानूसी, क्लर्क या गुलाम पैदा करने वाला, जनता को चूसने वाला और हाथ के काम से नफ़रत सिखाने वाला है जैसा कि अंगरेज़ों ने अपने मतलब के लिये बनाया था. और जब तक तालीम का यह ढंग बना रहता है तब तक हिन्दुस्तान में जनता स्वराज नहीं क़ायम हो सकता. देश की नाव के अचूक खेवनहार बापू यह चीज़ जानते थे इसीलिये उन्होंने नई 'तालीम नाम' से तालीम का एक नया ढंग देश को सिखाया और हिन्दुस्तानी तालीमी संघ नाम की एक नई संस्था सन 1938 में क़ायम की.

यह अख़बार हिन्दुस्तानी तालीमी संघ का माहवारी परचा है जो पिछले जुलाई के महीने से निकलना शुरू हुआ है. शिक्षा सम्बन्धी और अख़बार एक तरफ़, यह 'नई तालीम' दूसरी तरफ़ क्योंकि इसके अन्दर पढ़े लिखे 'विद्वानों' के ख़्याली लेख नहीं हैं जो अपनी विदेशी तालीम और ऊंची तनख़ा वाली नौकरी के बल पर उन लाखों करोड़ों बच्चों की तरफ़ कभी निगाह ही नहीं डाल सकते जिन्हें भर पेट रोटी भी नसीब नहीं होती. इसके अन्दर तो मैदान में काम करने वालों के निजी तजुरबे रहते हैं जिनको देख कर हर कोई काम करने वाला कुछ सबक़ सीख सकता है. इसलिये इस 'नई तालीम' का महत्व बहुत ही बढ़ जाता है. हमें उम्मीद है कि तालीम में दिलचस्पी रखने वाले—चाहे वह पुरानी तालीम ही क्यों न हो—सेवाग्राम से निकलने वाले इस परचे से पूरा फ़ायदा उठायेंगे. देश के हाई स्कूलों, कालेजों या युनिवर्सिटियों की लायब्रेरियों को इसे मंगाना चाहिये.

نئی تعلیم (ماہواری پرچہ)

سمپادک—آشا دیوی اور مارجری سائکس؛ لکھاوٹ ہندی؛ نکالنے والے—ہندستانی تعلیمی سنگھ' سیوا گرام' وردھا؛ سالانہ چندہ تین روپیہ؛ ایک پرچہ چار آنہ .

جس طریقے سے بیرومیٹر نام کے آلے سے ہوا کی حالت معلوم ہو جاتی ہے اُسی طرح کسی دیش کی تعلیم اور تعلیمی ڈھنگ سے وہاں کی اصلی حالت کا پتہ چل جاتا ہے . ہندستان آج آزاد ہے لیکن کچھ ہی معنوں میں دیکھنے کے لئے آزاد ہے کیونکہ یہاں کی تعلیم کا ڈھنگ ویسا ہی دقیانوسی' کلرک یا غلام پیدا کرنے والا' جنتا کو چوسنے والا اور ہاتھ کے کام سے نفرت سکھانے والا ہے جیسا کہ انگریزوں نے اپنے مطلب کے لئے بنایا تھا . اور جب تک تعلیم کا یہ ڈھنگ بنا رہتا ہے تب تک ہندستان میں جنتا سوراج نہیں قائم ہوسکتا . دیش کی ناؤ کے اچوک کھیون ہار باپو یہ چیز جانتے تھے اسی لئے اُنہوں نے 'نئی تعلیم' نام سے تعلیم کا ایک نیا ڈھنگ دیش کو سکھایا اور ہندستانی تعلیم سنگھ نام کی ایک نئی سنستھا سن 1938 میں قائم کی .

یہ اخبار ہندستانی تعلیمی سنگھ کا ماہواری پرچہ ہے جو پچھلے جولائی کے مہینے سے نکلنا شروع ہوا ہے . شکشا سمبندھی اور اخبار ایک طرف' یہ 'نئی تعلیم' دوسری طرف کیونکہ اِس کے اندر پڑھے لکھے 'ودوانوں' کے خیالی لیکھ نہیں ہیں جو اپنی ودیشی تعلیم اور اونچی تنخواہ والی نوکری کے بل پر اُن لاکھوں کروڑوں بچوں کی طرف کبھی نگاہ ہی نہیں ڈال سکتے جنہیں بھر پیٹ روٹی بھی نصیب نہیں ہوتی . اِس کے اندر تو میدان میں کام کرنے والوں کے نجی تجربے رہتے ہیں جن کو دیکھ کر ہر کوئی کام کرنے والا کچھ سبق سیکھ سکتا ہے . اِس لئے اِس 'نئی تعلیم' کا مہتو بہت ہی بڑھ جاتا ہے . ہمیں اُمید ہے کہ تعلیم میں دلچسپی رکھنے والے—چاہے وہ پرانی تعلیم ہی کیوں نہ ہو—سیوا گرام سے نکلنے والے اِس پرچے سے پورا فائدہ اُٹھائیں گے . دیش کے ہائی اسکولوں کالجوں یا یونیورسٹیوں کی لائبریریوں کو اسے منگانا چاہئے .

का ठिकाना न रहा. वह तीनों के तीनों चोरी करना भूल गये. पास पड़ी खाली चारपाई पर बैठ गये. तालियों का गुच्छा उनके हाथ में था. थोड़ी देर में दोनों बच्चे सो गये. चोर बच्चों के मां बाप के आने की राह ताकने लगे! घंटे, डेढ़ घंटे बाद हंसमुख हंसमुखी की मां आ पहुँची! आते ही उसने बरे झिझके बिना चोरों से पूछा, आप किस लिये बैठे हैं, क्या बच्चों के बाप से मिलने आये हैं?

चोरों का सरदार बोला, हां, उनसे मिलना है. आप से भी मिलना था, बच्चों के बाप आ जायें तब बात होगी, यह बात हो ही रही थी कि बच्चों का बाप आ पहुंचा, आते ही उसने हंसमुख की मां से पूछा, क्या यह लोग तुम्हारे घर से आये हैं?

हंसमुखी की मां के जवाब देने से पहले चोरों का सरदार बोल उठा, भाई साहब, हम किसी के रिश्तेदार नहीं, हम चोर हैं, चोरी करने आये थे, यह आपके घर की तालियां हैं, आपकी बच्ची ने जिस शान के साथ हमें चाबियां थमाईं और जिस प्यार भरे निर्भीक ढंग से उसने हमसे पूछा, चोर किसे कहते हैं? हम चोरी करना भूल गये, और ऐसे निर्भीक और सच्चे बच्चों के मां बाप को देखने की चाह हम में पैदा हो गई, आपकी इस बच्ची ने हमारी आंखें खोल दीं, हमारा डर भगा दिया, हम इसके अहसानमन्द हैं और आपके भी, यह लीजिये अपनी तालियां, हम आपके बच्चों के हाथ चूम कर जाते हैं अपने घर. अब हमें डर नहीं, कल आयेंगे और आपके दोनों बच्चों को जागते और खेलते देखेंगे, जुहार!

चुटकुले

एक लाला जी ने अपने किसी नातेदार के यहां अपने मित्र के हाथ एक टोकरी आम भेजे. मित्र ला परवाह से थे. रास्ते में आमों की टोकरी गुम हो गई, यह देख उन्होंने लाला जी को लिखा—"मुझे बड़ा खेद है कि आपकी दी हुई आमों की टोकरी खो गई. मैं माफ़ी चाहता हूँ."

लाला जी ने खत का जवाब देते हुए लिखा—"टोकरी खो जाने का खेद मत करो क्योंकि आम तो पहुंच ही गये होंगे."

× × ×

एक कुम्हार ने अपना गधा खो जाने पर दावत दी. दावत में एक मित्र ने पूछा—"भाई, आज यह दावत क्यों दी जा रही है?"

कुम्हार—"आज मेरा गधा खो गया है. कहीं उस पर मैं बैठा होता तो मैं भी खो जाता."

کا ٹھکانہ نہ رہا . وہ تینوں کے تینوں چوری کرنا بھول گئے . پاس پڑی خالی چارپائی پر بیٹھ گئے . تالیوں کا گچھا اُن کے ہاتھ میں تھا . تھوڑی دیر میں دنوں بچے سو گئے . چور بچوں کے ماں باپ کے آنے کی راہ تاکنے لگے! گھنٹے ڈیڑھ گھنٹے بعد ھنس مکھ ھنس مکھی کی ماں آ پہونچی ! آتے ہی اُس نے ڈرے جھجکے بنا چوروں سے پوچھا' آپ کس لئے بیٹھے ھیں . کیا بچوں کے باپ سے ملنے آئے ھیں ؟

چوروں کا سردار بولا' ھاں اُن سے ملنا ھے . آپ سے بھی ملنا تھا . بچوں کے باپ آ جائیں تب بات ھوگی . یہ بات ھو ھی رھی تھی کہ بچوں کا باپ آپہونچا . آتے ھی اُس نے ھنس مکھ کی ماں سے پوچھا' کیا یہ لوگ تمہارے گھرے آئے ھیں ؟

ھنس مکھی کی ماں کے جواب دینے سے پہلے چوروں کا سردار بول اُٹھا' بھائی صاحب' ھم کسی کے رشتے دار نہیں' ھم چور ھیں' چوری کرنے آئے تھے. یہ آپ کے گھر کی تالیاں ھیں . آپ کی بچی نے جس شان کے ساتھ ھمیں چابیاں تھمائیں اور جس پیار بھرے نربھیک ڈھنگ سے اُس نے ھم سے پوچھا' چور کسے کہتے ھیں ؟ ھم چوری کرنا بھول گئے . اور ایسے نربھیک اور سچے بچوں کے ماں باپ کو دیکھنے کی چاہ ھم میں پیدا ھوگئی . آپ کی اس بچی نے ھماری آنکھیں کھول دیں' ھمارا ڈر بھگا دیا . ھم اُس کے احسان مند ھیں اور آپ کے بھی . یہ لیجئے اپنی تالیاں' ھم آپ کے بچوں کے ھاتھ چوم کر جاتے ھیں اپنے گھر. اب ھمیں ڈر نہیں' کل آئینگے اور آپ کے دونوں بچوں کو جاگتے اور کھیلتے دیکھیں گے . جہار !

چٹکلے

ایک لالہ جی نے اپنے کسی ناتےدار کے یہاں اپنے متر کے ہاتھ ایک ٹوکری آم بھیجے . متر لاپرواہ سے تھے . راستے میں آموں کی ٹوکری گم ھوگئی' یہ دیکھ اُنھوں نے لالہ جی کو لکھا—"مجھے بڑا کھید ھے کہ آپ کی دی ھوئی آموں کی ٹوکری کھو گئی . میں معافی چاھتا ھوں."

لالہ جی نے خط کا جواب دیتے ھوئے لکھا—"ٹوکری کھو جانے کا کھید مت کرو کیونکہ آم تو پہنچ ھی گئے ھونگے."

× × ×

ایک کمہار نے گدھا کھو جانے پر دعوت دی . دعوت میں ایک متر نے پوچھا—"بھائی' آج یہ دعوت کیوں دی جا رہی ھے!"

کمہار—"آج میرا گدھا کھو گیا ھے . کہیں اُس پر میں بیٹھا ھوتا تو میں بھی کھو جاتا .

साथी की अम्मा ने साथी से पूछा, तुमको सच बोलना आ गया ?

साथी बोला, हां अम्मा, आ गया.

यह सुनते ही साथी की अम्मा ने साथी को गले लगा लिया.

साथी का सब डर भाग गया. कुछ दिनों बाद उसका नाम सचबहादुर पड़ गया.

(3)

हंसमुख और सचबहादुर अब दोनों दोस्त हो गये. सचबहादुर की अम्मा और हंसमुख की अम्मा आपस में ऐसी सखी बन गईं मानो मां जाई बहनें हों.

इन्हीं दिनों हंसमुख के घर में हंसमुख की बहन ने जन्म लिया. पैदा होते सबने हंसमुख के नाम पर उसका नाम हंसमुखी रख लिया.

हंसमुख और सचबहादुर दोनों हंसमुखी पर खूब प्यार उड़ेलने लगे. हंसमुखी ने तीन साल की होते होते हंसमुख की सारी आदतें अपना लीं और अपने दोनों भाइयों के साथ खेलने लगी.

एक रात हंसमुख हंसमुखी घर के आंगन में अकेले सोये हुए थे. अकेले सोने की उन्हें आदत थी. पड़ोस में कोई ब्याह था, हंसमुख की मां वहां गई हुई थी. हंसमुख के पिता पास के गांव में किसी बीमार को देखने गये थे. घर एकदम खाली था.

रात को उसी घर में तीन चोर आ धमके. दो बच्चों को अकेले सोते देख उन्हें थोड़ा अचरज हुआ. चोरी की धुन में अचरज दब गया. मकान के दरवाज़े का ताला लगा था. कुछ देर इधर उधर ताले की ताली खोजी, पर ताली न न मिली. बड़े बच्चे को जगाया. वह जाग गया. उसके जागने से पास सोई बच्ची भी जाग गई. चोरों ने देखा, दोनों बच्चे जागे, पर दोनों में से डरा कोई नहीं. चोरों को अचरज हुआ. चोरी की धुन में अचरज दब गया. चोरों ने बच्चों से पूछा, ताले की ताली कहां है ? हंसमुख बोला, मुझे नहीं मालूम. चट हंसमुखी बोल पड़ी, अम्मा मुझे दे गई थी. जेब में हाथ डाल कर बोली, यह रही मेरी जेब में, चाबी निकाल कर हंसमुखी ने चोरों को ऐसे थमा दी मानो चोर उसके जाने पहचाने रिश्तेदार हों. चोरों का अचरज और बढ़ा, पर दब न पाया. चोर बोल पड़े, हम चोर हैं. बच्चे न डरे. हंसमुख बोला, किसलिये आये हो ?

चोर बोले, माल चुराने.

हंसमुख बोला, चुराना क्या होता है ? साथ में हंसमुखी उठ बोली हां, चुराना क्या होता है ? अब चोरों के अचरज

ساتھی کی اماں نے ساتھی سے پوچھا' تم کو سچ بولنا آ گیا ؟

ساتھی بولا' ہاں اماں' آ گیا .

یہ سنتے ہی ساتھی کی اماں نے ساتھی کو گلے لگا لیا.

ساتھی کا سب ڈر بھاگ گیا . کچھ دنوں بعد اُسکا نام سچ بہادر پڑ گیا .

(3)

ھنس مکھ اور سچ بہادر اب دونوں دوست ہوگئے. سچ بہادر کی اماں اور ھنس مکھ کی اماں آپس میں ایسی سکھی بن گئیں مانو ماں جائی بہنیں ہوں .

اِنہیں دنوں ھنس مکھ کے گھر میں ھنس مکھ کی بہن نے جنم لیا . پیدا ہوتے سب نے ھنس مکھ کے نام پر اُسکا نام ھنس مکھی رکھ لیا .

ھنس مکھ اور سچ بہادر دونوں ھنس مکھی پر خوب پیار اُنڈیلنے لگے. ھنس مکھی نے تین سال کی ہوتے ہوتے ھنس مکھ کی ساری عادتیں اپنا لیں اور اپنے دونوں بھائیوں کے ساتھ کھیلنے لگی .

ایک رات ھنس مکھ ھنس مکھی گھر کے آنگن میں اکیلے سوئے ہوئے تھے . اکیلے سونے کی اُنہیں عادت تھی. پڑوس میں کوئی بیاہ تھا' ھنس مکھ کی ماں وہاں گئی ہوئی تھی . ھنس مکھ کے پتا پاس کے گاؤں میں کسی بیمار کو دیکھنے گئے تھے . گھر ایک دم خالی تھا .

رات کو اُسی گھر میں تین چور آدھمکے . دو بچوں کو اکیلے سوتے دیکھ اُنہیں تھوڑا اچرج ہوا . چوری کی دھن میں اچرج دب گیا . مکان کے دروازے کا تالا لگا تھا . کچھ دیر اِدھر اُدھر تالے کی تالی کھوجی' پر تالی نہ ملی. بڑے بچے کو جگایا . وہ جاگ گیا . اُس کے جاگنے سے پاس سوئی بچی بھی جاگ گئی . چوروں نے دیکھا' دونوں بچے جاگے' پر دونوں میں سے ڈرا کوئی نہیں . چوروں کو اچرج ہوا . چوری کی دھن میں اچرج دب گیا . چوروں نے بچوں سے پوچھا' تالے کی تالی کہاں ہے ؟ ھنس مکھ بولا' مجھے نہیں معلوم. چٹ ھنس مکھی بول پڑی' اماں مجھے دے گئی تھی . جیب میں ہاتھ ڈالکر بولی' یہ رہی میری جیب میں' چابی نکال کر ھنس مکھی نے چوروں کو ایسے تھمادی مانو چور اُس کے جانے پہچانے رشتے دار ہوں . چوروں کا اچرج اور بڑھا' پر دب نہ پایا . چور بول پڑے' ہم چور ہیں . بچے نہ ڈرے . ھنس مکھ بولا' کس لئے آئے ہو ؟

چور بولے' مال چرانے .

ھنس مکھ بولا' چرانا کیا ہوتا ہے؟ ساتھ میں ھنس مکھی اُٹھ بولی ہاں' چرانا کیا ہوتا ہے؟ اب چوروں کے اچرج

हंसमुख बोला, सच से डरते हैं?

साथी बोला, सच बोलें तो पिटें नहीं?

हंसमुख बोला, मैं रोज सच बोलता हूँ. कभी नहीं पिटता, कल भी नहीं पिटा. कभी नहीं पिटा. सच बोलने से कौन डरता है? अम्मा से कौन डरता है? काका से कौन डरता है?

साथी बोला, तुम अकेले में नहीं डरते? अन्धेरे में नहीं डरते?

हंसमुख बोला, अकेले में किसका डर? अंधेरे में किसका डर? तुम हमारी अम्मा के पास चलो, वह तुम्हारा सब डर दूर कर देंगी. हमारी अम्मा बड़ी अच्छी अम्मा हैं.

हंसमुख, सचमुच तुम्हारी अम्मा बड़ी अच्छी अम्मा है. कल मैं जब डर कर भागा, उन्होंने कुछ नहीं कहा, अब मुझे उनसे डर नहीं, चलो, तुम्हारे साथ चलता हूँ.

हंसमुख और उसका साथी जैसे ही हंसमुख की अम्मा के पास पहुँचे उन्होंने दोनों को बड़े प्यार से थपथपाया, और हंसमुख के साथी से बोलीं—

तुम मुझसे डरते हो?

हंसमुख का साथी बोला, नहीं जी. कल डरता था, आज नहीं. तुम तो हंसमुख की बड़ी अच्छी अम्मा हो, मेरी अम्मा इतनी अच्छी नहीं.

हंसमुख की अम्मा बोली, तुम्हारी अम्मा को अच्छी कर दें?

साथी बोला, मेरी अम्मा अच्छी अम्मा बन जायगी? बना दीजिये?

हंसमुख की अम्मा बोली, मैं नहीं बनाऊंगी, तुम बनाओगे.

साथी बोला, मैं कैसे बनाऊंगा?

हंसमुख की अम्मा बोली, सच बोलकर.

साथी बोला, सच बोलूंगा तो वह पीटेंगी नहीं?

हंसमुख की अम्मा बोली, एक दिन कुछ पीटेंगी, फिर नहीं पीटेंगी.

साथी बोला, हां मैं सच सच बोला तो तुमने भी मुझे कुछ नहीं कहा, मैं अब सच बोला करूंगा. सच बोलने से मेरा डर भाग जायगा?

हंसमुख की अम्मा बोली, हां, डर भाग जायगा.

अब हंसमुख बोल पड़ा, मुझको डर नहीं लगता. अब तुमको भी डर नहीं लगा करेगा.

हंसमुख अपने साथी को लेकर उसके घर गया. और उसकी अम्मा से बोला, हमारी अम्मा ने इसको सच बोलना सिखा दिया है, इसको सच बोलना आ गया.

هنس مکھ بولا، سچ سے ڈرتے ھیں ؟

ساتھی بولا، سچ بولیں تو پٹیں نہیں ؟

هنس مکھ بولا، میں روز سچ بولتا ھوں . کبھی نہیں پٹتا، کل بھی نہیں پٹا. کبھی نہیں پٹا. سچ بولنے سے کون ڈرتا ھے ؟ اماں سے کون ڈرتا ھے ؟ کاکا سے کون ڈرتا ھے ؟

ساتھی بولا، تم اکیلے میں نہیں ڈرتے ؟ اندھیرے میں نہیں ڈرتے ؟

هنس مکھ بولا، اکیلے میں کسکا ڈر ؟ اندھیرے میں کسکا ڈر ؟ تم ھماری اماں کے پاس چلو، وہ تمہارا سب ڈر دور کردینگی. ھماری اماں بڑی اچھی اماں ھیں .

هنس مکھ، سچ مچ تمہاری اماں بڑی اچھی اماں ھوں. کل میں جب ڈر کر بھاگا، انہوں نے کچھ نہیں کہا، اب مجھے اُن سے ڈر نہیں، چلو، تمہارے ساتھ چلتا ھوں .

هنس مکھ اور اُس کا ساتھی جیسے ھی هنس مکھ کی اماں کے پاس پہونچے اُنہوں نے دونوں کو بڑے پیار سے تھپتھپایا، اور هنس مکھ کے ساتھی سے بولیں—

تم مجھ سے ڈرتے ھو ؟

هنس مکھ کا ساتھی بولا، نہیں جی . کل ڈرتا تھا، آج نہیں . تم تو هنس مکھ کی بڑی اچھی اماں ھو، میری اماں اِتنی اچھی نہیں .

هنس مکھ کی اماں بولی، تمہاری اماں کو اچھی کر دیں ؟

ساتھی بولا، میری اماں اچھی اماں بن جائے گی ؟ بنا دیجئے ؟

هنس مکھ کی اماں بولی، میں نہیں بناؤں گی، تم بناؤ گے .

ساتھی بولا، میں کیسے بناؤنگا ؟

هنس مکھ کی اماں بولی، سچ بول کر .

ساتھی بولا، سچ بولوں گا تو وہ پیٹینگی نہیں ؟

هنس مکھ کی اماں بولی، ایک دن کچھ پیٹینگی، پھر نہیں پیٹینگی.

ساتھی بولا، ھاں میں سچ سچ بولا تو تم نے بھی مجھے کچھ نہیں کہا، میں اب سچ بولا کروں گا. سچ بولنے سے میرا ڈر بھاگ جائے گا ؟

هنس مکھ کی اماں بولی، ھاں، ڈر بھاگ جائیگا .

اب هنس مکھ بول پڑا، مجھکو ڈر نہیں لگتا . اب تجھکو ڈر نہیں لگا کریگا .

هنس مکھ اپنے ساتھی کو لیکر اُس کے گھر گیا . اور اسکی اماں سے بولا، ھماری اماں نے اِسکو سچ بولنا سکھا دیا ھے، اِسکو سچ بولنا آ گیا .

हंसमुख बोला, अम्मा मैं खाने का बर्तन उतारता था, वह भारी निकला, हाथ से गिर गया और उसका सब सामान यह बिखरा पड़ा है.

मां ने बड़े प्यार से कहा, बेटा कुछ नहीं ! लाओ बिखरे सामान को उठा लें ! कहो, तुमने बर्तन को इस वक्त क्यों निकाला था ? यह खाने का समय नहीं.

अम्मा ! साथी भूका था, उसके लिए निकाला था, वह भाग गया. अम्मा वह बहुत डर रहा था, क्यों डर रहा था ? डर की क्या बात थी ?

बेटा डर की बात से कोई नहीं डरता, मन की बात से सब डरते हैं. तुम्हारा साथी अपनी अम्मा से डरता है.

अम्मा से डरता है ? अम्मा तो प्यारी होती है ! अम्मा से क्यों डरता है ?

तुम्हारा साथी सच नहीं बोलता, सच बोलने से डरता है. जो सच बोलने से डरता है वह सब से डरता है.

यहां वह किस से डरा ?

मुझ से.

तुम से ? प्यारी अम्मा से ?

हां मुझ से. हां, वह अपनी अम्मा से डरता है. वह अपनी अम्मा को अपना जैसा समझता है. मुझको अपना जैसा समझता है; अपने आप डरता है अपनी अम्मा से डरता है. मुझसे डरता है. तुमसे डरता होगा.

सच से डरना छोड़ दे तो उसका डर छूट जायगा ?

हां जरूर छूट जायगा. फिर उसके चेहरे पर ऐसी हंसी छाई रहा करेगी जैसी तुम्हारे चेहरे पर.

अम्मा कल मैं उसको तुम्हारे पास लाऊँगा.

(2)

दूसरे दिन हंसमुख अपने साथी के घर गया और उसको अपने साथ ले आया. रास्ते में उसने पूछा, तुम कल भूके थे खाना खाया नहीं, भाग आये.

साथी बोला, हंसमुख मैं तुम्हारी अम्मा की आहट सुनकर डर गया इसलिये भाग आया. तुम्हें तुम्हारी अम्मा ने खूब पीटा होगा ?

हंसमुख बोला, मेरी अम्मा मुझे क्यों पीटती ? अम्मा प्यारी होती है, चलो अम्मा याद करती है.

साथी अचरज से बोला, तुम्हारी अम्मा ने तुम्हें नहीं पीटा ? मैं बखेर देता तो मेरी अम्मा मुझको बहुत पीटती.

हंसमुख बोला, अम्मा नहीं पीटती, तुम डरते होगे.

साथी बोला, हां डरता हूं, सब बालक डरते हैं. अम्मा से डरते हैं, काका से डरते हैं.

ھنس مکھ بولا' اماں میں کھانے کا برتن اُتارتا تھا' وہ بھاری نکلا' هاتھ سے گر گیا اور اُس کا سب سامان یہ بکھرا پڑا ہے .

ماں نے بڑے پیار سے کہا' بیٹا کچھ نہیں! لو بکھرے سامان کو اُٹھالیں ! کہو' تم نے برتن کو اِس وقت کیوں نکالا تھا ؟ یہ کھانے کا سمے نہیں .

اماں ! ساتھی بھوکا تھا' اُس کے لئے نکالا تھا' وہ بھاگ گیا . اماں وہ بہت ڈر رہا تھا' کیوں ڈر رہا تھا ؟ ڈر کی کیا بات تھی ؟

بیٹا ڈر کی بات سے کوئی نہیں ڈرتا' من کی بات سے سب ڈرتے ھیں . تمہارا ساتھی اپنی اماں سے ڈرتا ہے .

اماں سے ڈرتا ہے ؟ اماں تو پیاری ہوتی ہے ! اماں سے کیوں ڈرتا ہے ؟

تمہارا ساتھی سچ نہیں بولتا' سچ بولنے سے ڈرتا ہے . جو سچ بولنے سے ڈرتا ہے وہ سب سے ڈرتا ہے .

یہاں وہ کس سے ڈرا ؟

مجھ سے .

تم سے؟ پیاری اماں سے ؟

ھاں مجھ سے. ھاں' وہ اپنی اماں سے ڈرتا ہے. وہ اپنی اماں کو اپنا جیسا سمجھتا ہے . مجھ کو اپنا جیسا سمجھتا ہے؛ اپنے آپ ڈرتا ہے. اپنی اماں سے ڈرتا ہے مجھ سے ڈرتا ہے. تم سے ڈرتا ہے. تم سے ڈرتا ہوگا .

سچ سے ڈرنا چھوڑ دے تو اُس کا ڈر چھوٹ جائیگا ؟

ھاں ضرور چھوٹ جائیگا . پھر اُس کے چہرے پر ایسی ھنسی چھائی رہا کریگی جیسی تمہارے چہرے پر .

اماں کل میں اُسکو تمہارے پاس لاؤنگا .

(2)

دوسرے دن ھنس مکھ اپنے ساتھی کے گھر گیا اور اُسکو اپنے ساتھ لے آیا . راستے میں اس نے پوچھا' تم کل بھوکے تھے کھانا کھایا نہیں' بھاگ آئے .

ساتھی بولا' ھنس مکھ میں تمہاری اماں کی آھٹ سنکر ڈر گیا اس لئے بھاگ آیا . تمہیں تمہاری اماں نے خوب پیٹا ہوگا ؟

ھنس مکھ بولا' میری اماں مجھے کیوں پیٹتی ؟ اماں پیاری ہوتی ہے' چلو اماں یاد کرتی ہے .

ساتھی اچرج سے بولا' تمہاری اماں نے تمہیں نہیں پیٹا؟ میں بکھیر دیتا تو میری اماں مجھکو بہت پیٹتی .

ھنس مکھ بولا' اماں نہیں پیٹتی' تم ڈرتے ہوگے .

ساتھی بولا' ھاں ڈرتا ھوں' سب بالک ڈرتے ھیں . اماں سے ڈرتے ھیں کاکا سے ڈرتے ھیں .

बच्चों की दुनिया

सच के बीज

(1)

एक था लड़का, उसका नाम था कबीर. उसके मां बाप ने उसको बड़े जतन से पाला पोसा था. 'कैसे पाला पोसा' यह बात तुमको दूसरी किताब में पढ़ने को मिलेगी.

कबीर को सब कबीर कहकर नहीं बोलते थे. उसके मुखड़े पर हमेशा हंसी खेलती रहती थी. इसलिए उसका नाम हंसमुख पड़ गया था.

हंसमुख सदा सच बोलता था. उसके मां बाप भी सच बोलते थे. सच बोलना हंसमुख की आदत थी. सच बोलने से वह खुश रहता था. खुशी हरदम उस पर खेलती रहती, इसी से हंसमुख उसका नाम था.

घर में किसी चीज़ को छूने, देखने, खोलने, निकालने, खाने पीने में उसके मां बाप उसको कभी न रोकते. ऐसी भूल वह कम करता जिससे उसके मां बाप को उसे समझाने की ज़रूरत पड़े. हंसमुख के सच बोलने से मां बाप को उसकी बहुत कम देख भाल करनी पड़ती. कोई नुक़सान हो जाता तो वह दौड़ा दौड़ा जाता और अपनी मां को बता देता.

एक दिन वह अपने एक साथी के साथ घर में खेल रहा था. मां बाप घर पर न थे. साथी को भूक लगी. हंसमुख चौके में गया. साथी उसके साथ गया, जहां खाना रखा था. हंसमुख का हाथ वहां नहीं पहुँच सकता था. उसने चौके में रखी चौकी ली और उसको उस जगह रखा जहां खाना रखा था. चौकी पर खड़े होकर उसने वह बर्तन उतारा जिसमें खाना था. बर्तन भारी था, ठीक ठीक न संभल सका, गिर गया, और खाने का सब सामान बिखर गया.

इतने में उसकी मां आ गई. मां के पांव की आहट सुनकर उसका साथी बुरी तरह घबराया. हंसमुख अपने साथी की घबराहट को न समझ पाया. हंसमुख अपने साथी से कुछ पूछे कि साथी भाग गया. इतने में मां चौके में आ पहुंची, हंसमुख से पूछा—

बेटा क्या बात है ?

بچوں کی دنیا

سچ کے بیج

(1)

ایک تھا لڑکا، اس کا نام تھا کبیر. اس کے ماں باپ نے اس کو بڑے جتن سے پالا پوسا تھا. 'کیسے پالا پوسا' یہ بات تم کو دوسری کتاب میں پڑھنے کو ملے گی.

کبیر کو سب کبیر کہکر نہیں بولتے تھے. اس کے مکھڑے پر ہمیشہ ہنسی کھیلتی رہتی تھی. اس لئے اس کا نام ہنسمکھ پڑ گیا تھا.

ہنس مکھ سدا سچ بولتا تھا. اس کے ماں باپ بھی سچ بولتے تھے. سچ بولنا ہنس مکھ کی عادت تھی. سچ بولنے سے وہ خوش رہتا تھا. خوشی ہر دم اس پر کھیلتی رہتی، اسی سے ہنس مکھ اس کا نام تھا.

گھر میں کسی چیز کو چھونے، دیکھنے، کھولنے، نکالنے، کھانے پینے میں اس کے ماں باپ اس کو کبھی نہ روکتے. ایسی بھول وہ کم کرتا جس سے اس کے ماں باپ کو اسے سمجھانے کی ضرورت پڑے. ہنس مکھ کے سچ بولنے سے ماں باپ کو اس کی بہت کم دیکھ بھال کرنی پڑتی. کوئی نقصان ہو جاتا تو وہ دوڑا دوڑا جاتا اور اپنی ماں کو بتا دیتا.

ایک دن وہ اپنے ایک ساتھی کے ساتھ گھر میں کھیل رہا تھا. ماں باپ گھر پر نہ تھے. ساتھی کو بھوک لگی. ہنس مکھ چوکے میں گیا. ساتھی اس کے ساتھ گیا، جہاں کھانا رکھا تھا. ہنس مکھ کا ہاتھ وہاں نہیں پہنچ سکتا تھا. اس نے چوکے میں رکھی چوکی لی اور اس کو اس جگہ رکھا جہاں کھانا رکھا تھا. چوکی پر کھڑے ہوکر اس نے وہ برتن اتارا جس میں کھانا تھا. برتن بھاری تھا، ٹھیک ٹھیک نہ سنبھل سکا، گر گیا، اور کھانے کا سب سامان بکھر گیا.

اتنے میں اس کی ماں آ گئی. ماں کے پاؤں کی آہٹ سنکر اس کا ساتھی بری طرح گھبرایا. ہنس مکھ اپنے ساتھی کی گھبراہٹ کو نہ سمجھ پایا. ہنس مکھ اپنے ساتھی سے کچھ پوچھے کہ ساتھی بھاگ گیا. اتنے میں ماں چوکے میں آ پہنچی، ہنس مکھ سے پوچھا—

بیٹا کیا بات ہے ؟

सरदार शिव मंगल सिंह कपूर, श्री हयातुल्ला अन्सारी, श्री पद्म नाथ सिंह, श्री यशपाल और श्री अक्षय ब्रह्मचारी ने मिलकर इस सम्मेलन का बन्दोबस्त किया था और राष्ट्र सिरमौर पंडित जवाहर लाल नेहरू, आचार्य किशोर लाल मश्रूवाला, आन्ध्र देश के बड़े बड़े नेताओं ने सम्मेलन की ताईद करते हुए कामयाबी की शुभ कामनायें भेजी थीं. इस सम्मेलन में क़ौमी एकता सम्बन्धी मसलों पर गंभीर चर्चा के बाद कुछ उसूल-सिद्धान्त और कार्य क्रम तय हुए और इनकी बिना पर देश में काम करने के लिये "भारतीय क़ौमी एकता मंडल" क़ायम किया गया. हमें अफ़सोस है कि अनेक अड़चनों की वजह से 'मंडल' का काम अभी ज्यादा आगे नहीं बढ़ सका है.

देश के भाइयों और बहनों से अपील है "भारतीय क़ौमी एकता मंडल" का मेम्बर बन कर और उसे मदद देकर देश के सब से बड़े और पहले रचनात्मक काम "क़ौमी एकता" को मज़बूत, पक्का और मुस्तक़िल बनाने में मदद करें.

अक्षय ब्रह्मचारी
संयोजक, भारतीय क़ौमी एकता मंडल

سردار شیو منگل سنگھ کپور' شری حیات اللہ انصاری' شری پدم ناتھ سنگھ' شری یش پال اور شری اکشے برہمچاری نے ملکر اس سمیلن کا بندوبست کیا تھا اور راشٹر سرمور پنڈت جواہر لال نہرو' آچاریہ کشور لال مشروالا' آندھر دیش کے بڑے بڑے نیتاؤں نے سمیلن کی تائید کرتے ہوئے کامیابی کی شبھ کامنائیں بھیجی تھیں ۔ اس سمیلن میں قومی ایکتا سمبندھی مسئلوں پر گمبھیر چرچا کے بعد کچھ اصول سدھانت اور کاریہ کرم طے ہوئے اور ان کی بنا پر دیش میں کام کرنے کے لئے " بھارتیہ قومی ایکتا منڈل " قائم کیا گیا ۔ ہمیں افسوس ہے کہ انیک اڑچنوں کی وجہ سے ' منڈل ' کا کام ابھی زیادہ آگے نہیں بڑھ سکا ہے ۔

دیش کے بھائیوں اور بہنوں سے اپیل ہے " بھارتیہ قومی ایکتا منڈل " کا ممبر بنکر اور اسے مدد دیکر دیش کے سب سے بڑے اور پہلے رچنا تمک کام " قومی ایکتا " کو مضبوط پکا اور مستقل بنانے میں مدد کریں ۔

اکشے برہمچاری
سنیوجک' بھارتیہ قومی ایکتا منڈل

"......अगर भारत तलवार के उसूल को अपनाता है तो उसे आरज़ी विजय हासिल हो सकती है. पर तब भारत मेरे दिल का गौरव न रह जायगा. भारत के लिये मेरी इतनी भक्ति इसलिए है कि मेरे पास जो कुछ है वह सब मैंने उसी से पाया है. मेरा पक्का विश्वास है कि उसे दुनिया को एक सन्देश देना है. उसे अन्धा बनकर योरप की नक़ल नहीं करनी है. जिस दिन भारत तलवार का उसूल अपनायेगा वह मेरी परीक्षा का दिन होगा और मुझे यक़ीन है कि मैं अपने काम में हलका न उतरूंगा. मेरा धर्म भूगोल की सीमाओं में बंधा हुआ नहीं है. अगर मुझे इसमें जानदार श्रद्धा होगी तो वह मेरे भारत प्रेम को भी पार कर जायेगी. मैं अहिंसा के ज़रिये, जिसे मैं हिन्दू धर्म का मूल समझता हूं, भारत सेवा के लिये अपनी ज़िन्दगी अर्पित कर चुका हूं."

—महात्मा गांधी

"........اگر بھارت تلوار کے اصول کو اپناتا ہے تو اسے عارضی وجے حاصل ہو سکتی ہے ۔ پر تب بھارت میرے دل کا گورو نہ رہ جائیگا ۔ بھارت کے لئے میری اتنی بھکتی اس لئے ہے کہ میرے پاس جو کچھ ہے وہ سب میں نے اسی سے پایا ہے ۔ میرا پکا وشواس ہے کہ اسے دنیا کو ایک سندیش دینا ہے ۔ اسے اندھا بن کر یورپ کی نقل نہیں کرنی ہے ۔ جس دن بھارت تلوار کا اصول اپنائیگا وہ میری پریکشا کا دن ہوگا اور مجھے یقین ہے کہ میں اپنے کام میں ہلکا نہ اتروںگا ۔ میرا دھرم بھوگول کی سیماؤں سے بندھا ہوا نہیں ہے ۔ اگر مجھے اس میں جاندار شردھا ہوگی تو وہ میرے بھارت پریم کو بھی پار کر جائیگی ۔ میں اہنسا کے ذریعے' جسے میں ہندو دھرم کا مول سمجھتا ہوں' بھارت سیوا کے لئے اپنی زندگی ارپت کر چکا ہوں۔"

—مہاتما گاندھی

और सोचने के दोनों के दो अलग नज़रिये हो गये हैं, और दोनों के दिल में बदले की आग भड़क रही है. जगह, वक़्त वग़ैरा के मेल व बेमेल से ऊपरी शान्ति दीख पड़ रही है लेकिन आज दोनों फ़िरक़ों के लोगों में फ़िरक़ेवाराना झुकाव के खिलाफ़ चेतना पैदा कर क़ौमी एकता की भावना को मज़बूत बनाने की सख़्त ज़रूरत है.

छूत की बीमारी

फ़िरक़ेवाराना भावना का ख़तरनाक रोग हिन्दू-मुसलमानों के अलावा दूसरे हिस्सों में भी फैलता जा रहा है. देश में क़रीब क़रीब सभी जगह तमाम हिन्दुओं और हरिजनों का सम्बन्ध बिगड़ता जा रहा है और कटुता की बहुत मिसालें सामने आ रही हैं. पंजाब में हिन्दुओं और सिक्खों का सम्बन्ध ख़राब हो रहा है. सिक्ख नेता मास्टर तारासिंह ने अलग राज की मांग को फिर से दुहराया है. इनके अलावा द्राविड़ों, अदिवासियों वग़ैरा में भी असंतोश और अलहदगी की भावना दीख पड़ने लगी है. भाशा, कलचर, जाति, धर्म वग़ैरा के नाम पर इनके अन्दर ज़हरीली हवा घर करती जा रही है. इस तरह हर नज़रिये से हम देखते हैं कि देश में फ़िरक़ेवाराना पागलपन और उसकी ज़हरीली हवा फैली हुई है और क़ौमी एकता का रास्ता धुंदला हो रहा है.

हमारा फ़र्ज़

आज़ादी के लिए क़ौमी एकता की जितनी ज़रूरत थी क़ौम के फिर बनाव और तरक़्क़ी के लिए वह ज़रूरत सौगुनी ज़ियादा हो गई है. बदक़िस्मती की बात है कि राष्ट्र पिता के बलिदान के बाद जहां हमने क़ौमी एकता की ख़ातिर काम करने के लिए एकसूपन की ज़रूरत थी वहां हम इस सवाल की तरफ़ से बग़लें झांकने लगे हैं. हम फ़िरक़ेवाराना पागलपन के बरबाद कर देने वाले नतीजों को देख चुके हैं. इसलिये आज ज़िन्दगी के हर दायरे से तंग नज़री और साम्प्रदायिकता के भावों को उखाड़ कर क़ौमी एकता को मज़बूत बनाने के लिए ज़बरदस्त जनमत और जन आन्दोलन की ज़रूरत है जिससे लोगों के सोचने और काम करने का नज़रिया एकता के मुताबिक़ हो. आज यही हमारा पाक पवित्र फ़र्ज़ है.

भारतीय क़ौमी एकता मंडल

साम्प्रदायिकता या फ़िरक़ापरस्ती को उखाड़ कर क़ौमी एकता को मज़बूत बनाने के मक़सद से जुदा जुदा विचार धारा के विद्वानों, नेताओं और काम करने वालों का एक सम्मेलन पिछले साल लखनऊ में पंडित सुन्दरलाल जी की सदारत में हुआ था. आचार्य नरेन्द्र देव, आचार्य जुगुल किशोर, श्री श्रीकृष्ण दत्त पालीवाल, श्री गोविंद सहाय, श्री गंगा सहाय चौबे, श्री ई० एम० फिलिप्स,

اور سوچنے کے ڈھنگوں کے دو الگ نظریئے ہو گئے ہیں، اور دونوں کے دل میں بدلے کی آگ بھڑک رہی ہے۔ جگہ، وقت وغیرہ کے میل یا بے میل سے اوپری شانتی دیکھ پڑ رہی ہے لیکن آج دونوں فرقوں کے لوگوں میں فرقے وارانہ جھکاؤ کے خلاف چیتنا پیدا کر قومی ایکتا کی بھاونا کو مضبوط بنانے کی سخت ضرورت ہے۔

چھوت کی بیماری

فرقےوارانہ بھاونا کا خطرناک روگ ہندو مسلمانوں کے علاوہ دوسرے حصوں میں بھی پھیلتا جا رہا ہے۔ دیش میں قریب قریب سبھی جگہ تمام ہندوؤں اور ہریجنوں کا سمبندھ بگڑتا جا رہا ہے اور کٹوتا کی بہت مثالیں سامنے آ رہی ہیں۔ پنجاب میں ہندوؤں اور سکھوں کا سمبندھ خراب ہو رہا ہے۔ سکھ نیتا ماسٹر تارا سنگھ نے الگ راج کی مانگ کو پھر سے دہرایا ہے۔ ان کے علاوہ دراوڑوں، آدیواسیوں وغیرہ میں بھی اسنتوش اور علیحدگی کی بھاونا دیکھ پڑنے لگی ہے۔ بھاشا، کلچر، جاتی، دھرم وغیرہ کے نام پر ان کے اندر زہریلی ہوا گھر کرتی جا رہی ہے۔ اسطرح ہر نظریئے سے ہم دیکھتے ہیں کہ دیش میں فرقے وارانہ پاگل پن اور اسکی زہریلی ہوا پھیلی ہوئی ہے اور قومی ایکتا کا راستہ دھندلا ہو رہا ہے۔

ہمارا فرض

آزادی کے لئے قومی ایکتا کی جتنی ضرورت تھی قوم کے پھر بناؤ اور ترقی کے لئے وہ ضرورت سو گنی زیادہ ہو گئی ہے۔ بدقسمتی کی بات ہے کہ راشٹر پتا کے بلیدان کے بعد جہاں ہم میں قومی ایکتا کی خاطر کام کرنے کے لئے ایکسوپن کی ضرورت تھی وہاں ہم اس سوال کی طرف سے بغلیں جھانکنے لگے ہیں۔ ہم فرقے وارانہ پاگل پن کے برباد کر دینے والے نتیجوں کو دیکھ چکے ہیں۔ اس لئے آج زندگی کے ہر دائرے سے تنگ نظری اور سامپردائکتا کے بھاؤں کو اکھاڑ کر قومی ایکتا کو مضبوط بنانے کے لئے زبردست جن مت اور جن آندولن کی ضرورت ہے جس سے لوگوں کے سوچنے اور کام کا نظریہ ایکتا کے مطابق ہو۔ آج یہی ہمارا پاک پوتر فرض ہے۔

بھارتیہ قومی ایکتا منڈل

سامپردایکتا یا فرقہ پرستی کو اکھاڑ کر قومی ایکتا کو مضبوط بنانے کے مقصد سے جدا جدا وچار دھارا کے ودوانوں، نیتاؤں اور کام کرنے والوں کا ایک سمیلن پچھلے سال لکھنؤ میں پنڈت سندر لال جی کی صدارت میں ہوا تھا۔ آچاریہ نریندر دیو، آچاریہ جگل کشور، شری کرشن دت پالیوال، شری گووند سہائے، شری گنگا سہائے چوبے، شری ای۔ ایم۔ فلپس،

शक दूर कर सकने की लायक़ी अपने में नहीं महसूस करते हैं. नतीजा यह है कि इन सवालों और इन से पैदा होने वाले झगड़े के लिए हम पाकिस्तान के दोशों और इतिहास के गन्दे सफ़ों की तरफ़ देखने लगते हैं. हमारी समझ के फेर या दिमाग़ के रोगी होने की यही साफ़ पहचान है.

पिछले चुनाव

पिछले चुनाव के मौक़े पर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने देश में साम्प्रदायिक या फ़िरके बन्दी की भावना के फैलाव और उसके नुक़सानदे नतीजों को साफ़ साफ़ कह दिया था और उसे जड़ से उखाड़ डालने की अपील की थी. चुनाव ख़तम हुए. कुल हिन्द कांगरेस कमेटी की कलकत्ते वाली बैठक में फ़िरके बन्दी के ख़िलाफ़ कांगरेस की शानदार जीत पर ख़ुशी ज़ाहिर की. लेकिन इससे क्या यह पहचाना जा सकता है कि देश से फ़िरक़े वारियत उठ गई या उसका ज़ोर कम हो रहा है ?

दो नज़रिये

पंडित नेहरू के पुराने व लायक़ दोस्त डाक्टर सम्पूर्नानन्द ने अभी अभी कहा है कि देश के मुसलमानों में साम्प्रदायिक तंगनज़री के भाव मौजूद हैं और इस चुनाव में उन्होंने इस को ज़ाहिर किया है. श्री सम्पूर्नानन्द पर चुनाव का गहरा असर दीख पड़ता है. दूसरी तरफ़ शेरे काश्मीर शेख़ अब्दुल्ला के लफ़्ज़ों में, हिन्दुस्तान में फ़िरक़े वारियत का ज़ोर कम नहीं है और अगर पंडित नेहरू नहीं रहे तो कम गिनती वालों को काफ़ी ख़तरा व डर है. यहां इन नेताओं के ख़्यालों की गहरी छानबीन करने की ज़रूरत नहीं है. इनसे देश की आम हवा और सोचने ग़ौर करने वग़ैरा के नज़रिये की झलक मिलती है. अगर सम्पूर्नानन्द जी आम हिन्दू भाइयों के विचारों को ज़ाहिर करते हों तो उनकी बातों से पता चलता है कि हिन्दुओं में मुसलमानों के अविश्वास की भावना अभी मौजूद है और उसी तरह अगर शेख़ साहब आम मुसलमान भाइयों के विचारों के अलमबरदार हों तो मानना होगा कि मुसलमानों में भी हिन्दुओं के लिये कहीं कहीं विश्वास के भाव चले आते हैं. इन नेताओं की बातों का भेद जो कुछ भी हो लेकिन आज इन दोनों फ़िरक़ों के आपसी अविश्वास की भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है. अगर पिछले चुनावों की छान बीन की जाय तो यह ज़ियादा साफ़ दिखाई पड़ेगा और मालूम होगा कि इस चुनाव के ज़रिये दोनों फ़िरक़ों (हिन्दू-मुसलमान) में साम्प्रदायिक तंग नज़री को ज़ियादा बल मिला है. आपस के शक-शुबे और अविश्वास की वजह से आज दोनों की एक दूसर में नहीं पटती और न दिमाग़ मिलते हैं. सवालों को समझने

شک دور کر سکنے کی لائقی اپنے میں نہیں محسوس کرتے ہیں۔ نتیجہ یہ ہے کہ اِن سوالوں اور اِن سے پیدا ہونے والے جھگڑے کے لئے ہم پاکستان کے دوشوں اور اتہاس کے گندے صفحوں کی طرف دیکھنے لگتے ہیں۔ ہماری سمجھ کے پھیر یا دماغ کے روگی ہونے کی یہی صاف پہچان ہے۔

پچھلے چناؤ

پچھلے چناؤ کے موقعے پر پنڈت جواہر لال نہرو نے دیش میں سامپردائک یا فرقے بندی کی بھاونا کے پھیلاؤ اور اُس نقصان دہ نتیجوں کو صاف صاف کہدیا تھا اور اُسے جڑ سے اُکھاڑ ڈالنے کی اپیل کی تھی۔ چناؤ ختم ہوئے۔ کل ہند کانگریس کمیٹی کی کلکتے والی بیٹھک میں فرقے بندی کے خلاف کانگریس کی شاندار جیت پر خوشی ظاہر کی۔ لیکن اس سے کیا یہ پہچانا جا سکتا ہے دہ دیش سے فرقے وارایت اٹھ گئی یا اُس کا زور کم ہو رہا ہے؟

دو نظریئے

پنڈت نہرو کے پرانے و لائق دوست ڈاکٹر سمپورنا نند نے ابھی ابھی کہا ہے کہ دیش کے مسلمانوں میں سامپردائک تنگ نظری کے بھاؤ موجود ہیں اور اِس چناؤ میں انہوں نے اس کو ظاہر کیا ہے۔ شری سمپورنا نند پر چناؤ کا گہرا اثر دیکھ پڑتا ہے۔ دوسری طرف شیر کاشمیر شیخ عبداللہ لفظوں میں' ہندستان میں فرقےواریت کا زور کم نہیں ہے اور اگر پنڈت نہرو نہیں رہے تو کم گنتی والوں کو کافی خطرہ و ڈر ہے۔ یہاں ان نیتاؤں کے خیالوں کی گہری چھان بین کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ اِن سے دیش کی عام ہوا اور سوچنے غور کرنے وغیرہ کے نظریئے کی جھلک ملتی ہے۔ اگر سمپورنانند جی عام ہندو بھائیوں کے وچاروں کو ظاہر کرتے ہوں تو اُن کی باتوں سے پتہ چلتا ہے کہ ہندوؤں میں مسلمانوں کے اوشواس کی بھاونا ابھی موجود ہے اور اُسی طرح اگر شیخ صاحب عام مسلمان بھائیوں کے وچاروں کے علمبردار ہوں تو ماننا ہوگا کہ مسلمانوں میں بھی ہندوؤں کے لئے کہیں کہیں اوشواس کے بھاؤ چلے آتے ہیں۔ اِن نیتاؤں کی باتوں کا بھید جو کچھ بھی ہو لیکن آج اِن دونوں فرقوں کے آپسی اوشواس کی بھاونا سے انکار نہیں کیا جا سکتا ہے۔ اگر پچھلے چناؤوں کی چھان بین کی جائے تو یہ زیادہ صاف دکھائی پڑیگا اور معلوم ہوگا کہ اِس چناؤ کے ذریعے دونوں فرقوں (ہندو مسلمان) میں سامپردائک تنگ نظری کو زیادہ بل ملا ہے۔ آپس کے شک شبہ اور اوشواس کی وجہ سے آج دونوں کی ایک دوسرے میں نہیں پٹتی اور نہ دماغ ملتے ہیں۔ سوالوں کو سمجھنے

ा के नाम पर जिस तरह काम हुए हैं उससे साम्प्रदायिक फ़िरक़े वाराना भेद-भाव फैलाने वाली ताक़तों को मदद ो है. नतीजा यह है कि आज हिन्दी और उरदू के नाम तंग नज़र वाले भाशा मुल्लों के फिर से दो अलग अलग ाड़े क़ायम होते दीख पड़ रहे हैं. उनका झगड़ा सामने ग्राने लगा है और आगे ख़तरे का पूरा डर है.

़िहन्दुस्तानी कलचर

हमारा देश बहुत पुराना और बड़ा है. इसमें बहुत से ़ फ़िरक़े और जात के लोग बरसों से साथ साथ रहा ़ हैं और सदियों के मेल से इनमें एक सी कलचर का ास हुआ है. अनेकता में एकता हिन्दुस्तानी कलचर की ादी चीज़ है. पर आज कलचर के नाम पर जो ोलन चलाये जा रहे हैं उसमें आपसी अविश्वास, जलन, त बदले वग़ैरा के भाव ज़ियादा ज़ोर मार रहे हैं. चर के सवाल ने लोगों को बेचैन कर दिया है और ज विरोधी पिछ घसीटू ताक़तें इससे बेजा फ़ायदा उठा हैं. अफ़सोस की बात है कि कलचर के सवाल को रक़ेवारियत के तंग अखाड़े में घसीटा जा रहा है जिससे के अच्छे वातावरन और क़ौमी एकता की भावना पर ़ी चोट पड़ रही है.

़ुरानी या तारीख़ी जगहों में तबदीली

भाशा और कलचर के अलावा कुछ और भी सवाल कर देश की हवा को ज़हरीला किया जा रहा है. ऐसे लों में पुरानी घटनाओं की बिना पर तारीख़ी जगहों का ़दायिक या फ़िरक़े वाराना शक्ल बदलने का सवाल है जिससे लोगों के जज़्बे बहुत उभर आते हैं. देखा है कि इस सवाल ने समझदार लोगों के ऊपर भी ़ जमा रखा है और इस जान लेवा और पिछ घसीटू ़ोलन को उन्होंने मदद पहुँचाई है. तारीख़ी जगहों को तरह से ज़बरदस्ती बदल देने का बहुत ही गहरा सवाल मके ज़रिये हज़ारों बरसों के गड़े मुर्दे उखाड़े जायेंगे की बदबू से सारे समाज की हवा गंदी हो जायेगी. सवाल हिन्दुओं और मुसलमानों तक सीमित नहीं लेकिन इसके ज़रिये हिन्दू, मुसलमान, आर्य, अनार्य, जैन, वेशनव, शैव, सिक्ख, अवर्न, सवर्न, आदिवासी ा के बहुत से झगड़े पैदा होंगे और यदुवंशियों की तरह फ़ालतू के जोश में लड़ने मरने को मजबूर होंगे.

़मझ का फेर

़ाज इस तरह के बहुत से सवाल हमारे सामने ़ हैं. जिनसे क़ौमी एकता के रास्ते की पेचीदगी जाती है. लोगों का दिमाग़ी ताल बिगड़ता जा रहा ़र कोशिश कर के भी इन सवालों को सुलझा कर

بھاشا کے نام پر جس طرح کام ہوئے ہیں اُس سے سامپردایک یا فرقہ وارانہ بھید بھاؤ پھیلانے والی طاقتوں کو مدد ملی ہے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ آج ہندی اور اُردو کے نام پر تنگ نظر والے بھاشا ملاؤں کے پھر سے دو الگ الگ اکھاڑے قائم ہوتے دیکھ پڑ رہے ہیں ۔ اُنکا جھگڑا سامنے بھی آنے لگا ہے اور آگے خطرے کا پورا ڈر ہے ۔

ہندستانی کلچر

ہمارا دیش بہت پرانا اور بڑا ہے ۔ اسمیں بہت سے دھرم، فرقے اور جات کے لوگ برسوں سے ساتھ ساتھ رہا کرتے ہیں اور صدیوں کے میل سے اِنمیں ایک سی کلچر کا وکاس ہوا ہے ۔ انیکتا میں ایکتا ہندستانی کلچر کی بنیادی چیز ہے۔ پر آج کلچر کے نام پر جو آندولن چلائے جا رہے ہیں اسمیں آپسی اوشواس، جلن، نفرت بدلے وغیرہ کے بھاؤ زیادہ زور مار رہے ہیں ۔ کلچر کے سوال نے لوگوں کو بےچین کر دیا ہے اور سماج ورودھی پچھ گھسیٹو طاقتیں اِس سے بیجا فائدہ اُٹھا رہی ہیں ۔ افسوس کی بات ہے کہ کلچر کے سوال کو فرقہ واریت کے تنگ اکھاڑے میں گھسیٹا جا رہا ہے جس سے دیش کے اچھے واتاورن اور قومی ایکتا کی بھاؤنا پر گہری چوٹ پڑ رہی ہے ۔

پرانی یا تاریخی جگہوں میں تبدیلی

بھاشا اور کلچر کے علاوہ کچھ اور بھی سوال اُٹھا کر دیش کی ہوا کو زہریلا کیا جا رہا ہے ۔ ایسے سوالوں میں پرانی گھٹناؤں کی بنا پر تاریخی جگہوں کا سامپردایک یا فرقہ وارانہ شکل بدلنے کا سوال ہوتا ہے جس سے لوگوں کے جذبے بہت اُبھر آتے ہیں دیکھا گیا ہے کہ اِس سوال نے سمجھدار لوگوں کے اوپر بھی اثر جما رکھا ہے اور اِس جان لیوا اور پچھ گھسیٹو آندولن کو اُنہوں نے مدد پہنچائی ہے ۔ تاریخی جگہوں کو اِس طرح سے زبردستی بدل دینے کا بہت ہی گہرا سوال ہے ۔ اِس کے ذریعے ہزاروں برسوں کے گڑے مردے اُکھاڑے جائینگے جن کی بدبو سے سارے سماج کی ہوا گندی ہو جائیگی ۔ یہ سوال ہندوؤں اور مسلمانوں تک سیمت نہیں رہیگا لیکن اِسکے ذریعے ہندو، مسلمان، آریہ، اناریہ، بودھ، جین، ویشنو، شیو، سکھ، اورن، سورن، آدیواسی وغیرہ بہت سے جھگڑے پیدا ہونگے اور یدونشیوں کی طرح لوگ فالتو کے جوش میں لڑنے مرنے کو مجبور ہونگے ۔

سمجھ کا پھیر

آج اِسطرح کے بہت سے سوال ہمارے سامنے موجود ہیں جن سے قومی ایکتا کے راستے کی پیچیدگی بڑھتی جاتی ہے ۔ لوگوں کا دماغی تال بگڑتا جا رہا ہے اور کوشش کر کے بھی اِن سوالوں کو سلجھا کر

आज की दर्दनाक हालत

30 जनवरी सन 1948 को एक पागल ने महात्मा गांधी के ऊपर गोली चलाकर उनकी जान ली. महात्मा जी हिन्दू भाइयों को फ़िरक़ेवाराना पागलपन के ख़िलाफ़ समझा रहे थे. उन दिनों क़रीब क़रीब सभी हिन्दू भाइयों में फ़िरक़ेवाराना ज़हर घर कर गया था और बड़े दंगे-झगड़े चल रहे थे. ज़्यादातर जनता का दिमाग़ बहक सा गया था, और मेल की बात उसे नागवार थी. देश के बड़े लोग भी इस रोग के शिकार हो गये थे. इससे गांधीजी को बेहद तकलीफ़ होती थी और उन्होंने उसे कई बार ज़ाहिर भी किया.

क़ब्रिस्तान के जैसी शान्ति

गांधी जी के बलिदान से देश को एक चोट पहुँची. उसकी नींद में ख़लल पड़ गया. मार-काट का सिलसिला टूटा. नेताओं ने अपनी ज़िम्मेदारी का एलान किया और देश की तंग नज़री और साम्प्रदायिक या फ़िरक़ेवाराना भावनाओं को जड़ से उखाड़ देने की बातें सुनाई पड़ने लगीं. राष्ट्र में समझ और अमन के आसार दिखाई पड़े. पर बदक़िस्मती से यह समझ और शान्ति के निशान क़ब्रिस्तान के जैसे साबित हुए और थोड़े ही दिनों बाद फिर वही बवंडर और तूफ़ान देश में फैल गया. फ़िरक़ेवाराना झगड़ों का तांता जारी हो गया. पाकिस्तान के झगड़ों और बेजा कामों को सामने रख कर इन झगड़ों को किसी तरह भी ठीक नहीं ठहराया जा सकता है.

आज़ादी की लड़ाई के वक़्त बिरादराना और लोकराजी समाज का एक आदर्श और मक़सद हमारे सामने था. उसके लिये ग़ैर फ़िरक़ेवाराना लोकराजी निज़ाम और क़ौमी एकता का होना बहुत लाज़मी है. हमें अपने आदर्शों में पूरा पूरा यक़ीन रखने की ज़रूरत है. बाहरी चोटों से अपने रास्ते से भटक जाना बेजा और ग़लत चीज़ है. हमारा भविष्य हमारे ही कामों और भरोसे पर खड़ा किया जा सकता है.

भाशा का सवाल

भाशा का सवाल क़ौमी एकता के साथ काफ़ी अहम रहा है. महात्मा जी ने इस पर अपना इन्साफ़-भरा सुझाव राष्ट्र के सामने पेश किया था. वह देश की आम जनता की समझ में आने वाली सीधी सरल हिन्दुस्तानी भाशा के मानने वाले थे और इस तरह भाशा के ज़रिये देश की एकता को मज़बूत और मुस्तक़िल बनाना चाहते थे.

कहने की ज़रूरत नहीं है कि महात्मा जी के बाद हमने उनके भाशा वाले सुझाव को एकदम ठुकरा दिया और इस भाशा के सवाल ने हमें मीलों पीछे ढकेल दिया है. राष्ट्र

آج کی دردناک حالت

30 جنوری سن 1948 کو ایک پاگل نے مہاتما گاندھی کے اوپر گولی چلا کر اُن کی جان لی. مہاتما جی ہندو بھائیوں کو فرقےوارانہ پاگل پن کے خلاف سمجھا رہے تھے. اُن دنوں قریب قریب سبھی ہندو بھائیوں میں فرقےوارانہ زہر گھر کر گیا تھا اور بڑے دنگے جھگڑے چل رہے تھے. زیادہ تر جنتا کا دماغ بہک سا گیا تھا، اور میل کی بات اُسے ناگوار تھی. دیش کے بڑے لوگ بھی اِس روگ کے شکار ہوگئے تھے. اِس سے گاندھی جی کو بےحد تکلیف ہوتی تھی اور اُنھوں نے اُسے کئی بار ظاہر بھی کیا.

قبرستان کے جیسی شانتی

گاندھی جی کے بلیدان سے دیش کو ایک چوٹ پہونچی. اُسکی نیند میں خلل پڑ گیا. مار کاٹ کا سلسلہ ٹوٹا. نیتاؤں نے اپنی ذمہ‌داری کا اعلان کیا اور دیش کی تنگ نظری اور سامپردایک یا فرقےوارانہ بھاوناؤں کو جڑ سے اُکھاڑ دینے کی باتیں سنائی پڑنے لگیں. راشٹر میں سمجھ اور امن کے آثار دکھائی پڑے. پر بدقسمتی سے یہ سمجھ اور شانت کے نشان قبرستان کے جیسے ثابت ہوئے اور تھوڑے ہی دنوں بعد پھر وہی بونڈر اور طوفان دیش میں پھیل گیا. فرقےوارانہ جھگڑوں کا تانتا جاری ہو گیا. پاکستان کے جھگڑوں اور بیجا کاموں کو سامنے رکھ کر اِن جھگڑوں کو کسی طرح بھی ٹھیک نہیں ٹھہرایا جا سکتا ہے.

آزادی کی لڑائی کے وقت برادرانہ اور لوک راجی سماج کا ایک آدرش اور مقصد ہمارے سامنے تھا. اُسکے لئے غیر فرقےوارانہ لوک‌راجی نظام اور قومی ایکتا کا ہونا بہت لازمی ہے. ہمیں اپنے آدرشوں میں پورا پورا یقین رکھنے کی ضرورت ہے. باہری چوٹوں سے اپنے راستے سے بھٹک جانا بیجا اور غلط چیز ہے. ہمارا بھوشیہ ہمارے ہی کاموں اور بھروسے پر کھڑا کیا جا سکتا ہے.

بھاشا کا سوال

بھاشا کا سوال قومی ایکتا کے ساتھ کافی اہم رہا ہے. مہاتما جی نے اِس پر اپنا اِنصاف بھرا سجھاؤ راشٹر کے سامنے پیش کیا تھا. وہ دیش کی عام جنتا کی سمجھ میں آنے والی سیدھی سرل ہندستانی بھاشا کے ماننے والے تھے اور اِس طرح بھاشا کے ذریعے دیش کی ایکتا کو مضبوط اور مستقل بنانا چاہتے تھے.

کہنے کی ضرورت نہیں ہے کہ مہاتما جی کے بعد ہم نے اُنکے بھاشا والے سجھاؤ کو ایک دم ٹھکرا دیا اور اِس بھاشا کے سوال نے ہمیں میلوں پیچھے ڈھکیل دیا ہے. راشٹر

सारा देश एका एक धधक उठा. बापू ने अपना दर्द सबके सामने रख दिया. सहयोग के लिये चारों तरफ़ देखा और वह जिस काम को सबसे बड़ा और पहला रचनात्मक काम समझते थे उस क़ौमी एकता के लिये अकेले ही निकल पड़े.

क़ौमी एकता में रुकावट

तंग नज़री और उसके कारन साम्प्रदायिकता की भावना क़ौमी एकता के रास्ते में ज़बरदस्त रुकावट है. छूत छात और ऊंच नीच का भाव, अन्ध विश्वास, धर्म व इतिहास सम्बन्धी अज्ञान, असलियत की सुई से फावड़ा और कुछ से कुछ बना कर कहना, फ़ालतू और लालच से भरा जोश, बदले का जज़बा, दिमाग़ की चूल का ढीला होना, वग़ैरा बातों के कारन नज़रिये में तंगी और भावना में साम्प्रदायिकता या फ़िरक़ा बन्दी पैदा होती है. साथ ही साथ जात, ख़ानदान, रीतिरिवाज कलचर, और संस्कृति वग़ैरा की ओट में इसे बढ़ावा मिलता है. इस गन्दी भावना को जड़ से उखाड़े बिना क़ौमी एकता और बिरादराना लोक शाही समाज का क़ायम करना नामुमकिन है. देश की हर पहलू तरक़्क़ी के लिए महात्मा जी ने चौदह काम वाला रचनात्मक प्रोग्राम सामने रखा था और उसमें क़ौमी एकता के सवाल को सबसे महत्व की व ख़ास जगह दी थी.

महात्मा जी शरीर रूप से आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन वह सवाल हमारे सामने साफ़ साफ़ मौजूद है जिसके लिए उन्होंने ज़िन्दगी भर काम किया और आख़ीर दम उसी को करते करते 'हे राम'! कह कर आंख मीच ली और इस तरह हमेशा के वास्ते देश को सबक़ दे गये. सवाल की गम्भीरता हमें देखनी होगी और फ़ैसला करना होगा कि बापू के बलिदान के बाद भी क्या हमारे दिल के अन्दर वह मैल मौजूद है जिसे धोने के लिए उन्होंने अपनी क़ुर्बानी कर दी और अगर है तो इस बारे में हमारा कर्त्तव्य क्या है हमारा फ़र्ज़ क्या है.

हिन्दू मुस्लिम सवाल

क़ौमी एकता के रास्ते में देश में बहुत से छोटे बड़े साम्प्रदायिक या फ़िरक़ेवाराना सवाल खड़े होते रहे हैं. लेकिन उनमें हिन्दुओं और मुसलमानों के साम्प्रदायिक या फ़िरक़ेवाराना झगड़े ख़ास हैं. क्या राष्ट्र पिता के बलिदान के बाद यह झगड़े ख़तम हुए ? क्या हम में से आपसी अविश्वास, शक, डर और बदले की भावनायें निकल गईं और आगे की ज़िन्दगी में साथ साथ एक दिल से काम करने के लिए समाजी, कलचरी वग़ैरा दायरों में वह सरज़मीन तैयार हुई जो क़ौमी एकता का बुनियाद है. इस पर हम थोड़े में हम यहां विचार करेंगे.

سارا دیش ایکا ایک دھدھک اُٹھا. باپو نے اپنادرد سب کے سامنے رکھ دیا ۔ سہیوگ کے لئے چاروں طرف دیکھا اور وہ جس کام کو سب سے بڑا اور پہلا رچناتمک کام سمجھتے تھے اس قومی ایکتا کے لئے اکیلے ہی نکل پڑے ۔

قومی ایکتا میں رکاوٹ

تنگ نظری اور اُس کے کارن سامپردایکتا کی بھاونا قومی ایکتا کے راستے میں زبردست رکاوٹ ہے ۔ چھوت چھات اور اُونچ نیچ کا بھاؤ' اندھ وشواس' دھرم و اتہاس سمبندھی اگیان' اصلیت کو سوئی سے پھاوڑا اور کچھ سے کچھ بناکر کہنا' فالتو اور لالچ سے بھرا جوش' بدلے کا جزبہ' دماغ کی چول کا ڈھیلا ہونا' وغیرہ باتوں کے کارن نظریئے میں تنگی اور بھاونا میں سامپردایکتا یا فرقہ بندی پیدا ہوتی ہے ۔ ساتھ ہی ساتھ جات' خاندان' ریت رواج کلچر' اور سنسکرت وغیرہ کی اوٹ میں اِسے بڑھاوا ملتا ہے ۔ اِس گندی بھاونا کو جڑ سے اُکھاڑے بنا قومی ایکتا اور برادرانہ لوک شاہی سماج کا قائم کرنا ناممکن ہے. دیش کی ہر پہلو ترقی کے لئے مہاتما جی نے چودہ کام والا رچناتمک پروگرام سامنے رکھا تھا اور اُسمیں قومی ایکتا کے سوال کو سب سے مہتو کی و خاص جگہ دی تھی ۔

مہاتما جی شریر روپ سے آج ہمارے بیچ نہیں ہیں لیکن وہ سوال ہمارے سامنے صاف صاف موجود ہے جسکیلئے اُنہوں نے زندگی بھر کام کیا اور آخیر دم اُسی کو کرتے کرتے 'ہے رام'! کہکر آنکھ میچ لی اور اِس طرح ہمیشہ کے واسطے دیش کو سبق دے گئے ۔ سوال کی گمبھیرتا ہمیں دیکھنی ہوگی اور فیصلہ کرنا ہوگا کہ باپو کے بلیدان کے بعد بھی کیا ہمارے دل کے اندر وہ میل موجود ہے جسے دھونے کے لئے اُنہوں نے اپنی قربانی کر دی اور اگر ہے تو اِس بارے میں ہمارا کرتویہ کیا ہے ہمارا فرض کیا ہے ۔

ہندو مسلم سوال

قومی ایکتا کے راستے میں دیش میں بہت سے چھوٹے بڑے سامپردایک یا فرقہ وارانہ سوال کھڑے ہوتے رہے ہیں ۔ لیکن اُن میں ہندوؤں اور مسلمانوں کے سامپردایک یا فرقہ وارانہ جھگڑے خاص ہیں ۔ کیا راشٹر پتا کے بلیدان کے بعد یہ جھگڑے ختم ہوئے؟ کیا ہم میں سے آپسی اوشواس' شک' ڈر اور بدلے کی بھاونائیں نکل گئیں اور آگے کی زندگی میں ساتھ ساتھ ایک دل سے کام کرنے کے لئے سماجی' کلچری وغیرہ دائروں میں وہ سرزمین تیار ہوئی جو قومی ایکتا کا بنیاد ہے. اِس پر ہم تھوڑے میں یہاں وچار کرینگے ۔

हर तरह सोचने विचारने के बाद हमें यही महसूस होता है कि "भारत सेवक समाज" हिन्द सरकार की एक नई फुलझड़ी है जिसका तमाशा सरकार हमें दिखाना चाहती है. ऐसी फुलझड़ियां छुड़वा कर पंडित जवाहरलाल जी यह चाहें कि जनता उनका साथ दे तो कैसे मुमकिन हो सकता है ? हमारी अपनी राय है कि "भारत सेवक समाज" वग़ैरा खोलने की ज़रा भी ज़रूरत नहीं है, यही हुकूमत भारत सेवक समाज की शक्ल ले सकती है बशर्ते कि उसके छोटे बड़े-ख़ास कर बड़े बड़े नई दिल्ली वाले—अहलकार इन्सान बन जायें और ऊंची ऊंची तनख़ाहें लेना बन्द करके, नवाबों राजों जैसे ठाठ से न रह कर सादगी, ईमान और सच्चाई के साथ जनता की सेवा करें.

—सुरेश रामभाई

ہر طرح سوچنے وچارنے کے بعد ہمیں یہی محسوس ہوتا ہے کہ "بھارت سیوک سماج" ہند سرکار کی ایک نئی پھلجھڑی ہے جس کا تماشہ سرکار ہمیں دکھانا چاہتی ہے. ایسی پھلجھڑیاں چھڑوا کر پنڈت جواہر لال جی یہ چاہیں کہ جنتا اُن کا ساتھ دے تو کیسے ممکن ہوسکتا ہے؟ ہماری اپنی رائے یہ ہے کہ "بھارت سیوک سماج" وغیرہ کھولنے کی ذرا بھی ضرورت نہیں ہے' یہی حکومت بھارت سیوک سماج کی شکل لے سکتی ہے بشرطیکہ اُس کے چھوٹے بڑے—خاص کر بڑے بڑے نئی دلی والے—اہلکار اِنسان بن جائیں اور اونچی اونچی تنخواہیں لینا بند کرکے' نوابوں راجوں جیسے ٹاٹھ سے نہ رہ کر سادگی' ایمان اور سچائی کے ساتھ جنتا کی سیوا کریں .

—سریش رام بھائی

क़ौमी एकता का सवाल

"आज देश में सब से बड़ा और सब से पहला रचनात्मक काम है, दोनों जातियों की एकता"—इन लफ़्ज़ों के साथ राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'क़ौमी एकता' के महान व शानदार रचनात्मक काम को पूरा करने के लिए क़दम बढ़ाया और इस एकता की पाक-पवित्र वेदी पर अपनी क़ुर्बानी दे कर उन्होंने हमारे लिये हमेशा को रास्ता खोल दिया.

बापू के दिल की आग

क़ौमी एकता का सवाल नया नहीं है. इस पर बर्सों सोच विचार हुआ है और इसे हल करने के लिये कोशिश की गई है. अंगरेज़ी ज़माने में कहा जाता था कि अंगरेज़ी शासन के हटने पर इसका हल आप से आप हो जायगा. अंगरेज़ी शासन ख़त्म हो गया. साथ ही साथ दुनिया में जो न देखा था न सुना वह हुआ और साम्प्रदायिक या फ़िरक़े वाराना बहुमत के आधार पर देश का बटवारा हुआ. उसके बाद जो मुल्क भर में दिल को दहलाने वाली घटनायें हुईं उन्हें यहां याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है.

राष्ट्र की आज़ादी की ख़ुशी में 15 अगस्त को बड़े बड़े जलसे किये गये लेकिन राष्ट्र पिता की फ़िकर और उनके दिल का दर्द बढ़ता गया. उन्होंने साफ़ देखा कि इस आज़ादी के बाद भी एकता का सवाल हल नहीं हो सका बल्कि वह और भी गम्भीर बन गया. भाई का दिल भाई से दूर होता गया और विरोध की आग तेज़ होती गई.

قومی ایکتا کا سوال

"آج دیش میں سب سے بڑا اور سب سے پہلا رچناتمک کام ہے' دونوں جاتیوں کی ایکتا"—اِن لفظوں کے ساتھ راشٹر پتا مہاتما گاندھی نے 'قومی ایکتا' کے مہان و شاندار رچناتمک کام کو پورا کرنے کے لئے قدم بڑھایا اور اِس ایکتا کی پاک پوتر ویدی پر اپنی قربانی دے کر اُنہوں نے ہمارے لئے ہمیشہ کو راستہ کھول دیا .

باپو کے دل کی آگ

قومی ایکتا کا سوال نیا نہیں ہے . اِس پر برسوں سوچ وچار ہوا ہے اور اِسے حل کرنے کے لئے کوشش کی گئی ہے . انگریزی زمانے میں کہا جاتا تھا کہ انگریزی شاسن کے ہٹنے پر اِسکا حل آپ سے آپ ہو جائیگا . انگریزی شاسن ختم ہوگیا . ساتھ ہی ساتھ دنیا میں جو نہ دیکھا تھا نہ سنا وہ ہوا اور سامپردایک یا فرقہ‌وارانہ بہومت کے آدھار پر دیش کا بٹوارا ہوا . اُسکے بعد جو ملک بھر میں دل کو دہلانے والی گھٹنائیں ہوئیں اُنہیں یہاں یاد دلانے کی ضرورت نہیں ہے .

راشٹر کی آزادی کی خوشی میں 15 اگست کو بڑے بڑے جلسے کئے گئے لیکن راشٹر پتا کی فکر اور اُنکے دل کا درد بڑھتا گیا . اُنہوں نے صاف دیکھا کہ اِس آزادی کے بعد بھی ایکتا کا سوال حل نہیں ہوسکا بلکہ وہ اور بھی گمبھیر بن گیا . بھائی کا دل بھائی سے دور ہوتا گیا اور ورودھ کی آگ تیز ہوتی گئی .

पाकिस्तान पर चढ़ाई कर उसे मुंह की खिलाने में विश्वास करें वग़ैरा वग़ैरा—यह साम्प्रदायिक या फ़िरक़ेवाराना दोस्ती के अलमबरदार समझे जायेंगे या दुश्मनी के. ज़ाहिर ऐसा होता है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस और उसी का "भारत सेवक समाज".

(8) "सियासी या निजी मुनाफ़ा" "उठाने के भी तरीक़े होते हैं. कौन कह सकता है कि हिन्दुस्तान को आर्थिक मदद करने के बहाने अमरीका "सियासी या निजी मुनाफ़ा" नहीं उठा रहा है? सवाल मुनाफ़े का नहीं है, वह तो हर कोई उठा ही लेगा. सवाल इस बात का है कि 'समाज" जनता को कहां तक आज़ाद और ख़ुद मुख़्तार बनाती है. पर यह "समाज" तो सरकार की जड़ें मज़बूत करती है—यानी इससे सरकार को, और ज़ाहिर है कांगरेस सरकार को "सियासी या निजी मुनाफ़ा" होगा. इस शर्त के लिहाज़ से "समाज" कहां तक सच्ची साबित होगी उसके कर्ता धर्ता ही जानें.

(9) ज़ाहिर है कि जिस "समाज" की सरपरस्त प्लानिंग कमीशन हो उसमें सरकारी अफ़सर मदद देंगे ही. और ग़ैर सरकारी लोगों में भी वही मदद देंगे जो नन्दा जी की भाशा में न तो आलसी काहिली हैं और न बरबाद कुन रुख़ सरकार की तरफ़ रहते हैं. यानी 'जी हुज़ूर' लोग हुज़ूर लोगों का साथ देंगे. सो क़ुदरती बात है. पर ज़रूरत तो उनका साथ लेने की है जो साथ इस वक़्त नहीं दे रहे हैं, इसकी कोई परवाह "भारत सेवक समाज" को नहीं मालूम पड़ती.

(10) हमने ऊपर बताया है कि "समाज" कम्यूनिटी सेन्टर खुलवाने में ज़रूर काम आ सकती है. इन कम्यूनिटी सेन्टर का सूरज—इटावा सेन्टर—हम देख चुके हैं, उसके ऊपर पूरी रोशनी इन सफ़ों में डाल चुके हैं. थोड़े में कहें तो यह कम्यूनिटी सेन्टर वह अड्डे हैं जिनके ज़रये अमरीकी या अंगरेज़ी लोग अपना पैसा, अपना असर और अपनी जगह हिन्दुस्तान में बना कर हिन्दुस्तान को अपने मतलब के लिये इस्तेमाल करना चाहते हैं. इन घर फूंक तमाशों से देश का कुछ भला होगा सो छदाम का भी नहीं. कम्यूनिटी सेन्टरों को "भारत शोशक समाज" सेन्टर कहना सोलह आने सही है. फिर इस चीज़ में "भारत सेवक समाज" से मदद न मिलना ही ताज्जुब होगा. रही सहयोग के उसूल को अमल में लाने की बात करना सो जले पर नमक छिड़कने का काम करना है, क्योंकि हुकूमत में जब आज अपन-योग का बोल बाला हो और लाखों करोड़ों रुपये पानी की तरह बहा दिये जाते हों, तो उस हुकूमत के नौकर सहयोग का पाठ किस तरह पढ़ा सकते हैं. भला बबूल के पेड़ से नन्दा जी को आम का फल मिल सकता है?

پاکستان پر چڑھائی کر اُسے منھ کی کھلانے میں وشواس کرے وغیرہ وغیرہ— یہ سامپرائک یا فرقےوارانہ دوستی کے علمبردار سمجھے جائیں گے یا دشمنی کے. ظاہر ایسا ہوتا ہے کہ جس کی لاٹھی اُس کی بھینس اور اُسی کا "بھارت سیوک سماج."

(8) "سیاسی یا نجی منافع" اُٹھانے کے بھی طریقے ہوتے ہیں. کون کہہ سکتا ہے کہ ہندستان کو آرتھک مدد کرنے کے بہانے امریکہ "سیاسی یا نجی منافع" نہیں اُٹھا رہا ہے؟ سوال منافعے کا نہیں ہے، وہ تو ہر کوئی اُٹھا ہی لے گا. سوال اِس بات کا ہے کہ "سماج" جنتا کو کہاں تک آزاد اور خود مختار بناتی ہے. پر یہ "سماج" تو سرکار کی جڑیں مضبوط کرتی ہے—یعنی اِس سے سرکار کو، اور ظاہر ہے کانگریس سرکار کو "سیاسی یا نجی منافع" ہوگا. اِس شرط کے لحاظ سے "سماج" کہاں تک سچی ثابت ہوگی اُسکے کرتا دھرتا ہی جانیں.

(9) ظاہر ہے کہ جس "سماج" کی سرپرست پلاننگ کمیشن ہو اُس میں سرکاری افسر مدد دیں گے ہی. اور غیر سرکاری لوگوں میں بھی وہی مدد دیں گے جو نندا جی کی بھاشا میں نہ تو آلسی کاہلی ہیں اور نہ بربادکن رخ سرکار کی طرف رہتے ہیں، یعنی 'جی حضور' لوگ حضور لوگوں کا ساتھ دیں گے. سو قدرتی بات ہے. پر ضرورت تو اُن کا ساتھ لینے کی ہے جو ساتھ اِس وقت نہیں دے رہے ہیں، اِس کی کوئی پرواہ "بھارت سیوک سماج" کو نہیں معلوم پڑتی.

(10) ہم نے اوپر کہا ہے کہ "سماج" کمیونٹی سینٹر کھلوانے میں ضرور کام آسکتی ہے. اِن کمیونٹی سینٹر کا سورج—اٹاوہ سینٹر—ہم دیکھ چکے ہیں، اُس کے اوپر پوری روشنی اِن صفحوں میں ڈال چکے ہیں. تھوڑے میں کہیں تو یہ کمیونٹی سینٹر وہ اڈے ہیں جن کے ذریعے امریکی یا انگریزی لوگ اپنا پیسہ، اپنا اثر اور اپنی جگہ ہندستان میں بناکر ہندستان کو اپنے مطلب کے لئے اِستعمال کرنا چاہتے ہیں. اِن گھر پھونک تماشوں سے دیش کا کچھ بھلا ہوگا سو چھدام کا بھی نہیں. کمیونٹی سینٹروں کو "بھارت شوشک سماج" سینٹر کہنا سولہ آنا صحیح ہے. پھر اِس چیز میں "بھارت سیوک سماج" سے مدد نہ ملنا ہی تعجب ہوگا. رہی سہیوگ کے اُصول کو عمل میں لانے کی بات کرنا سو جلے پر نمک چھڑکنے کا کام کرنا ہے، کیونکہ حکومت میں جب آج اپن یوگ کا بول بالا ہو اور لاکھوں کروڑوں روپئے پانی کی طرح بہا دیئے جاتے ہیں، تو اُس حکومت کے نوکر سہیوگ کا پاٹھ کس طرح پڑھا سکتے ہیں. بھلا ببول کے پیڑ سے نندا جی کو آم کا پھل مل سکتا ہے؟

हल नहीं कर सकते. हां, कम्यूनिटी सेन्टर बनवाने का काम यह "समाज" ज़रूर कर सकता है क्योंकि यह सेन्टर भी देश को चूसने के लिये ही बनाये जा रहे हैं. इस पर हम तफ़सील के साथ आगे चल कर चर्चा करेंगे.

(5) 'विकेन्द्री करन' लफ़्ज़ बड़ा सुन्दर है. लेकिन गांव में "भारत सेवक समाज" की शाख़ा खोल देने से विकेन्द्रीकरन नहीं हो जाता. वरना तो कांगरेस में भी विकेन्द्रीकरन है, सरकार में भी है, हर जगह है. हम विकेन्द्रीकरन का मतलब आर्थिक मानों में लेते हैं. जब तक देहात की ज़रूरत की सब चीज़ें देहात में ही, देहात के सामान से ही, देहात के लोग ही न बनायें तब तक विकेन्द्री करन का लफ़्ज़ कोई माने नहीं रखता.

(6) "समाज" मेम्बरों से सेवा मुफ़्त लेगी. उसे शायद कुछ हद तक मिल भी जाय. पर अगर न मिले तो हमें ताज्जुब न होगा क्योंकि सरकार की निगाह में वह आदमी बेवक़ूफ़ या निकम्मा है जो ठाठ-बाठ से रहना न जानता हो, या पार्टियों या जलसों में ढंग से धुंआ उड़ाना न जानता हो, विदेश में शराफ़त से नाचना न जानता हो, वग़ैरा वग़ैरा. हमारे हुक्काम और ऊंचे से ऊंचे अफ़सर जब यह आदर्श पेश करते हैं तो "भारत सेवक समाज" कहां तक मुफ़्त सेवा लेने की हिम्मत करेगा या इसमें आबरू समझेगा हम नहीं कह सकते. फिर, जब तनख़्वा देने का सिलसिला चला—तो पैसा पूंजीपति देगा तो उसे किसी न किसी तरह वसूल कर लेगा, सरकार देगी तो अपना मतलब हल करा लेगी—उसका बोझ देहात के करोड़ों नंगों भूकों पर ही पड़ने वाला है, और फ़ायदा किसका होगा—सरकार का, क्योंकि यह "समाज" उसकी जड़ें मज़बूत करने के लिये है.

(7) "भारत सेवक समाज" की मेम्बरी हर किसी के लिये खुली है, पर हमें नहीं मालूम कि जो डिफ़ेन्स मिनिस्टर देश की आमदनी का आधे से ज़ियादा हिस्सा फ़ौज काम में ख़र्च कर दे वह हिंसा का पैरोकार समझा जायेगा या अहिंसा का, जो फ़ाइनैन्स मिनिस्टर देश में विदेशी पूंजी आने दे कर देश में बे रोज़गारी बढ़वाये वह समाजी इन्साफ़ का पैरोकार समझा जायेगा या नहीं, जो क़ानून मिनिस्टर क़ानून बना बना कर वकीलों को मौक़ा दे कि झूट को सच और सच को झूट साबित कर दें वह समाजी वैलफ़ेयर का पैरोकार समझा जायेगा या नहीं, वग़ैरा वग़ैरा. और यह सब "भारत सेवक समाज" में आ सकते हैं या नहीं. न हमें यही मालूम कि जो ग़ैर फ़िरक़ेवाराना-पन या असाम्प्रदायिकता परखने की इनकी कसौटी क्या है, पार्लियामेन्ट का मेम्बर जो जबड़ा तोड़ फ़ारसी या संस्कृत मय उरदू या हिन्दी बोलने की ज़िद करे, वह नेता जो

ل نہیں کر سکتے ۔ ہاں' کمیونٹی سینٹر بنوانے کا کام "سماج" ضرور کر سکتا ہے کیونکہ یہ سینٹر بھی یش کو چوسنے کے لئے ہی بنائے جا رہے ہیں. اس پر ہم صیل کے ساتھ آگے چل کر چرچا کریں گے ۔

(5) 'وکیندری کرن' لفظ بڑا سندر ہے ۔ لیکن گاؤں یں "بھارت سیوک سماج" کی شاخا کھول دینے سے یندری کرن نہیں ہو جاتا ۔ ورنہ تو کانگریس میں بھی یندری کرن ہے' سرکار میں بھی ہے' ہر جگہ ہے ۔ ہم یندری کرن کا مطلب آرتھک معنوں میں لیتے ہیں ۔ ب تک دیہات کی ضرورت کی سب چیزیں دیہات میں ' دیہات کے سامان سے ہی' دیہات کے لوگ ہی نہ ائیں تب تک وکیندری کرن کا لفظ کوئی معنی نہیں رکھتا ۔

(6) "سماج" ممبروں سے سیوا مفت لیگی ۔ اسے شاید کچھ حد تک مل بھی جائے ۔ پر اگر نہ ملے تو ہمیں تعجب نہ ہوگا کیونکہ سرکار کی نگاہ میں وہ آدمی بیوقوف یا نکما ہے جو ٹھاٹھ باٹھ سے رہنا نہ جانتا ہو' یا جائے پارٹیوں یا جلسوں میں ڈھنگ سے دھواں اڑانا نہ جانتا ہو' ودیش میں شرافت سے ناچنا نہ جانتا ہو' وغیرہ وغیرہ ۔ ہمارے حکام اور اونچے سے اونچے افسر جب یہ آدرش پیش کرتے ہیں تو "بھارت سیوک سماج" کہاں تک مفت سیوا لینے کی ہمت کرے گا یا اس میں آبرو سمجھے گا ہم نہیں کہہ سکتے ۔ پھر' جب تنخواہ دینے کا سلسلہ چلا—تو پیسہ پونجی پتی دے گا تو اسے کسی نہ کسی طرح وصول کرلے گا' سرکار دے گی تو اپنا مطلب حل کرا لے گی—اس کا بوجھ دیہات کے کروڑوں ننگوں بھوکوں پر ہی پڑنے والا ہے' اور فائدہ کس کا ہوگا—سرکار کا' کیونکہ یہ "سماج" اس کی جڑیں مضبوط کرنے کے لئے ہے۔

(7) "بھارت سیوک سماج" کی ممبری ہر کسی کے لئے کھلی ہے' پر ہمیں نہیں معلوم کہ جو ڈفنس منسٹر دیش کی آمدنی کا آدھے سے زیادہ حصہ فوج کام میں خرچ کر دے وہ ہنسا کا پیروکار سمجھا جائے گا یا اہنسا کا' جو فائننس منسٹر دیش میں ودیشی پونجی آنے دے کر دیش میں بیروزگاری بڑھوائے وہ سماجی انصاف کا پیروکار سمجھا جائے گا یا نہیں' قانون منسٹر قانون بنا بنا کر وکیلوں کو موقع دے کہ جھوٹ کو سچ اور سچ کو جھوٹ ثابت کردیں وہ سماجی ویلفیر کا پیروکار سمجھا جائے گا یا نہیں' وغیرہ وغیرہ ۔ اور یہ سب "بھارت سیوک سماج" میں آسکتے ہیں یا نہیں. نہ ہمیں یہی معلوم کہ جو غیر فرقہ وارانہ پن یا اسامپردایکتا پرکھنے کی انکی کسوٹی کیا ہے' پارلیامنٹ کا ممبر جو جبڑا توڑ فارسی یا سنسکرت مے اردو یا ہندی بولنے کی ضد کرے' وہ نیتا جو

कि आज आज़ाद हिन्दुस्तान में जितनी विदेशी पूंजी और माल है उतनी पहले कभी नहीं थी? तो क्या इस सरमायेदारी, कारखानेदारी और फ़ौजियाना को बढ़ाने के लिये सरकार जनता का सहयोग चाहती है? आज केरल में चटाई काम, बिहार व तामिल नाद में बुनकर काम, राजस्थान में पत्थर काम, बनारस में रेशमी काम, वग़ैरा वग़ैरा देश के देहाती धन्दे मिटते जा रहे हैं और सरकार मिटवा रही है. आज असली घी, दूध और तेल ना पैद होते जा रहे हैं और सरकार ना पैद करा रही है. क्या हम इसमें मदद कर अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारने की अक़्लमन्दी करें? क्या वह चाहती है कि बेरोज़गारी बढ़ाने और देहात तबाही के कारोबार में जनता उसकी मदद करे?

जनता को आलसी कहने का हक़ वही सरकार रखती है जो जनता को कोई काम दे और फिर भी जनता उसे न करे. वह सरकार जो जनता के धन्दे उल्टे छीन कर उनको रोटी दाने के लिये तरसाती है वह अगर यह दोश लगाये तो उल्टा चोर कोतवाल को डांटने जैसी बात हुई. प्लानिंग कमीशन अगर ईमान का सच्चा है तो जनता को—हर मर्द औरत को काम दे करने के वास्ते. जब तक काम नहीं देता तब तक प्लानिंग मिनिस्टर सेक्रेट्रियेट में बैठ कर उसे आलसी कह अपनी बुलन्दी का रोब भले जमाते रहें पर दिलों में कड़वाहट पैदा करने के अलावा और कुछ न कर सकेंगे.

(3) "भारत सेवक समाज" सरकार की जड़ें मज़बूत करने के लिये है यानी सरकार को हमेशा क़ायम रखने के लिये है. पर जैसा विनोबा जी ने सेवापुरी में कहा था सर्वोदय समाज का मक़सद है कि धीरे धीरे सरकार की जड़ें कमज़ोर कर के और जनता की जड़ें मज़बूत कर के शासन हीन समाज बनाना. इसलिये "भारत सेवक समाज" सरकार के आढ़ती का ही काम कर सकती है जिसकी बेहतरी सेठ-सरकार के बने रहने में है. ऐसी हालत में वह सरकार और जनता के बीच पुल का काम किस तरह दे सकेगी हम नहीं समझ पाते हैं. जिस तरह यूनो धीरे धीरे साम्राजशाहों का अड्डा बन गई है उसी तरह "भारत सेवक समाज" भी सरकारी अफ़सरों और पैसे वालों का अड्डा बन कर "भारत शोषक समाज" बन जायेगी.

(4) 'नया हिन्द' के पाठक जानते हैं कि आज जो देश में अनाज की कमी है उसकी ज़िम्मेदार सरकारी मशीनरी है, उसके अफ़सर, उसका निज़ाम और हमारे पूंजीपति व ब्योपारी. हम यहां तक कहने को तैयार हैं कि इनकी दिलचस्पी ही यह है कि अनाज के भूत से डरा डरा कर जनता के साथ मनमाना ब्योहार करते रहें या क़ानून बनाते जायें. जब तक यह निज़ाम बदस्तूर है और ब्योपारियों का रंग बना रहता है एक भारत सेवक समाज नहीं एक हज़ार मिल कर भी देश के अनाज के सवाल को रत्ती भर

کہ آج آزاد ہندستان میں جتنی ودیشی پونجی اور مال ہے اُتنی پہلے کبھی نہیں تھی؟ تو کیا اس سرمایہ داری، کارخانے داری اور فوجیانہ کو بڑھانے کے لئے سرکار جنتا کا سہیوگ چاہتی ہے؟ آج کیرل میں چٹائی کام، بہار و تامل ناد میں بنکر کام، راجستھان میں پتھر کام، بنارس میں ریشمی کام، وغیرہ وغیرہ دیش کے دیہاتی دھندے مٹتے جا رہے ہیں اور سرکار مٹوا رہی ہے. آج اصلی گھی، دودھ اور تیل ناپید ہوتے جا رہے ہیں اور سرکار ناپید کرا رہی ہے. کیا ہم اِس میں مدد کر اپنے پیروں میں کلہاڑی مارنے کی عقلمندی کریں؟ کیا وہ چاہتی ہے کہ بے روزگاری بڑھانے اور دیہات تباہی کے کاروبار میں جنتا اُسکی مدد کرے؟

جنتا کو آلسی کہنے کا حق وہی سرکار رکھتی ہے جو جنتا کو کوئی کام دے اور پھر بھی جنتا اُسے نہ کرے. وہ سرکار جو جنتا کے دھندے اُلٹے چھین کر اُن کو روٹی دانے کے لئے ترساتی ہے وہ اگر یہ دوش لگائے تو اُلٹا چور کوتوال کو ڈانٹنے جیسی بات ہوئی. پلاننگ کمیشن اگر ایمان کا سچا ہے تو جنتا کو—ہر مرد عورت کو کام دے کرنے کے واسطے. جب تک کام نہیں دیتا تب تک پلاننگ منسٹر سکریٹریٹ میں بیٹھکر اُسے آلسی کہکر اپنی بلندی کا رعب بھلے جماتے رہیں پر دلوں میں کڑواہٹ پیدا کرنے کے علاوہ اور کچھ نہ کرسکینگے.

(3) "بھارت سیوک سماج" سرکار کی جڑیں مضبوط کرنے کے لئے ہے. پر جیسا ونوبا جی نے سیواپوری میں کہا تھا—سروودے سماج کا مقصد ہے کہ دھیرے دھیرے سرکار کی جڑیں کمزور کر کے اور جنتا کی جڑیں مضبوط کر کے شاسن ہین سماج بنانا. اِس لئے "بھارت سیوک سماج" سرکار کے آڑھتی کا ہی کام کر سکتی ہے جس کی بہتری سیٹھ سرکار کے بنے رہنے میں ہے. ایسی حالت میں وہ سرکار اور جنتا کے بیچ پل کا کام کسطرح دے سکیگی ہم نہیں سمجھ پاتے ہیں. جسطرح یونو دھیرے دھیرے سامراج شاہوں کا اڈا بن گئی ہے اُسی طرح "بھارت سیوک سماج" بھی سرکاری افسروں اور پیسے والوں کا اڈا بنکر "بھارت شوشک سماج" بن جائیگی.

(4) 'نیا ہند' کے پاٹھک جانتے ہیں کہ آج جو دیش میں اناج کی کمی ہے اُسکی ذمے دار سرکاری مشینری ہے، اُس کے افسر، اُس کا نظام اور ہمارے پونجی پتی و بیوپاری. ہم یہاں تک کہنے کو تیار ہیں کہ ان کی دلچسپی ہی یہ ہے کہ اناج کے بھوت سے ڈرا ڈرا کر جنتا کے ساتھ من مانا بیوہار کرتے رہیں یا قانون بناتے جائیں. جب تک یہ نظام بدستور ہے اور بیوپاریوں کا رنگ بنا رہتا ہے ایک سیوک سماج نہیں ایک ہزار ملکر بھی دیش کے اناج کے سوال کو رتی بھر

करने वाले संगठनों से उसका कोई ताल्लुक़ हो. वह संस्थायें भी जो समाज सेवा का रचनात्मक काम कर रही हैं इसमें शामिल हो सकती हैं.

(viii) अगर कोई भी "समाज" से सियासी या निजी मुनाफ़ा उठाना चाहेगा उसे निकाल बाहर कर दिया जायेगा.

(ix) जिस इलाक़े में "समाज" काम करती होगी वहां की सभी सरकारी और ग़ैर सरकारी एजन्सियों से वह पूरी मदद लेने की कोशिश करेगी.

(x) "समाज" अपने काम में सहयोग के उसूल पर जहां तक होगा अमल करेगी इसलिये जहां जहां मुमकिन होगा कम्यूनिटी सेन्टर खुलवायेगी और पैदाकारों व ख़र्चकारों की जमायतें भी इस उसूल के प्रचार के लिये बनवायेगी.

इन दसों बातों से हम जिन नतीजों पर पहुंचते हैं वह हम सिलसिलेवार नीचे देते हैं :—

(1) रहन सहन का दर्जा अंगरेज़ी चाल का लफ़्ज़ है. इसको ऊंचा उठाने के माने हैं कि हमारे देश में फ़ी कस साबुन का, बिजली का, मिट्टी के तेल का, चिकने कपड़े का, मोटर जहाज़ का, सिनेमा का, वग़ैरा वग़ैरा ख़र्च बढ़े और इनमें से ज़ियादातर चीज़ों को या तो विदेश से मंगाइये या अपने यहां बड़े बड़े कारख़ाने खोलकर बनाइये. इसलिये रहन सहन का दर्जा जितना ऊंचा उठेगा उतना ही विदेशी माल की खपत बढ़ेगी या देश के चन्द पूंजीपतियों की आमदनी में इज़ाफ़ा होगा. पर रहन सहन ऊंचा उठाने का यह मतलब कि आदमी अपनी ज़रूरतें अपने हाथ पैर की मेहनत से, अपने ओस पड़ोस के कच्चे माल की मदद से, ख़ुद पूरी कर ले और स्वावलम्बी हो जाय, इसका इशारा हमें नहीं नहीं मिलता. लिहाज़ा "भारत सेवक समाज" की कोशिश यह मालूम होती है कि देश की जनता जो अब तक पूरे मानों में परावलम्बी या मिल अवलम्बी नहीं है उसे रहन सहन या तहज़ीब के नाम पर सोलह आने दूसरों का मोहताज बनाया जाय.

(2) नन्दा जी ने जनता के जो दो हिस्से बता कर उसको नीचा दिखाने की कोशिश की है, वह कोई शोभा का काम नहीं मालूम पड़ता है. क्या उन्होंने कभी यह जानने की कोशिश की कि जनता सरकार को सहयोग क्यों नहीं देती और क्यों इनकार किया करती है और क्यों बरबादी का रुख़ रखती है ? क्या नन्दा जी को यह नहीं मालूम कि आज आज़ाद हिन्दुस्तान में जितने अंगरेज़ हैं उतने पहले कभी नहीं थे, जितने अमरीकन हैं उसके दसवां हिस्सा भी ग़ुलाम हिन्दुस्तान में नहीं थे ? क्या नन्दा जी को यह नहीं मालूम

کرنے والے سنگٹھنوں سے اُسکا کوئی تعلق ہو. وہ سنستھائیں بھی جو سماج سیوا کا رچناتمک کام کر رہی ہیں اِسمیں شامل ہو سکتی ہیں.

(viii) اگر کوئی بھی "سماج" سے سیاسی یا نجی منافع اُٹھانا چاہیگا اُسے نکال باہر کر دیا جائیگا.

(ix) جس علاقے میں " سماج " کام کرتی ہوگی وہاں کی سبھی سرکاری اور غیر سرکاری ایجنسیوں سے وہ پوری مدد لینے کی کوشش کریگی.

(x) " سماج " اپنے کام میں سہیوگ کے اُصول پر جہاں تک ہوگا عمل کریگی اس لئے جہاں جہاں ممکن ہوگا کمیونٹی سینٹر کھلوائیگی اور پیدا کاروں و خرچ کاروں کی جماعتیں بھی اِس اُصول کے پرچار کے لئے بنوائیگی.

اِن دسوں باتوں سے ہم جن نتیجوں پر پہونچتے ہیں وہ ہم سلسلے وار نیچے دیتے ہیں:—

(1) رہن سہن کا درجہ انگریزی چال کا لفظ ہے. اِسکو اُونچا اُٹھانے کے معنے ہیں کہ ہمارے دیش میں فی کس صابن کا، بجلی کا، مٹی کے تیل کا، چکنے کپڑے کا، موٹر جہاز کا، سنیما کا، وغیرہ وغیرہ خرچ بڑھے اور اِن میں سے زیادہ تر چیزوں کو یا تو بدیش سے منگائیے یا اپنے یہاں بڑے بڑے کارخانے کھول کر بنائیے. اِس لئے رہن سہن کا درجہ جتنا اُونچا اُٹھیگا اتنا ہی ودیشی مال کی کھپت بڑھے گی یا دیش کے چند پونجی پتیوں کی آمدنی میں اضافہ ہوگا. پر رہن سہن اونچا اُٹھانے کا یہ مطلب کہ آدمی اپنی ضرورتیں اپنے ہاتھ پیر کی محنت سے اپنے اوس پڑوس کے کچے مال کی مدد سے، خود پوری کر لے اور سواولمبی ہوجائے، اِسکا اشارا ہمیں کہیں نہیں ملتا. لہذا " بھارت سیوک سماج " کی کوشش یہ معلوم ہوتی ہے کہ دیش کی جنتا جو اب تک پورے معنوں میں پراولمبی یا مل اولمبی نہیں ہے اُسے رہن سہن یا تہذیب کے نام سولہ آنے دوسروں کا محتاج بنایا جائے.

(۲) نندا جی نے جنتا کے جو دو حصے بتا کر اُسکو نیچا دکھانے کی کوشش کی ہے، وہ کوئی شوبھا کا کام نہیں معلوم پڑتا ہے. کیا اُنہوں نے کبھی یہ جاننے کی کوشش کی کہ جنتا سرکار کو سہیوگ کیوں نہیں دیتی اور کیوں انکار کیا کرتی ہے اور کیوں بربادی کا رخ رکھتی ہے؟ کیا نندا جی کو یہ نہیں معلوم کہ آج آزاد ہندستان میں جتنے انگریز ہیں اتنے پہلے کبھی نہیں تھے، جتنے امریکن ہیں اُس کے دسواں حصہ بھی غلام ہندستان میں نہیں تھے؟ کیا نندا جی کو یہ نہیں معلوم

गुनी होनी चाहिये पर सरकार के पास साधन इतने कम हैं कि बरसों तक यह मुमकिन नहीं है. इसलिये जनता का दरवाज़ा खट खटा कर उसकी ही मुश्तरका कोशिश से कुछ करने की ज़रूरत है.

(ii) जनता के अन्दर दो हिस्से हैं—फुर्तीला हिस्सा जो ज़ियादातर इनकार में बात करता है, सरकार के साथ सहयोग नहीं देता और हमेशा बरबादी का रुख़ बनाये रखता है. दूसरा हिस्सा है जिस पर ग़ैर जानकारी या जिहालत और काहिली छाये हुए हैं. इस वजह से बधिया बैठ गई है. पर अगर जनता के छोटे बड़े काम और उसकी मेहनत को और देश में जो संस्थायें मौजूद हैं उनके काम और मेहनत को एक क़ौमी रुझान देकर क़ौमी फिर-बनाव की सुन्दर तस्वीर का हिस्सा बना दिया जाय तो इन छोटे बड़े कामों और मेहनत का नतीजा कुछ से कुछ दिखाई पड़ेगा

(iii) "भारत सेवक समाज" ग़ैर सियासी जमायत होगी, पर क्योंकि यह जो कुछ करेगी उससे सरकार की जड़ें ही मज़बूत पड़ेंगी इसलिये देश की सरकारें इसको पूरी अहमियत और सहारा देंगी. हो सकता है कि आगे चल कर यह जनता और सरकार के बीच एक पुल बांधने का काम करे, पर इस संस्था को सरकार के आसरे नहीं रहना चाहिये और जनता के ही बूते पर खड़े रहने को तैयार रहना चाहिये.

(iv) "समाज" का काम होगा जीवन की बेहतरी के सभी पहलुओं पर ध्यान देना पर सब तरफ़ अपनी ताक़त न खो कर यह ज़ियादा ज़ोर देगी अनाज उपजाने पर. इसके अलावा इसका काम होगा देहातों में विकास के केन्द्र या कम्युनिटी सेन्टर बनवाना, जनता और सरकार का सम्बन्ध अच्छा बनाना, बीमारियां रोकना वग़ैरा वग़ैरा.

(v) "समाज" के काम का ख़ास पहलू होगा ज़ियादा से ज़ियादा विकेन्द्रीकरन. बुनियादी इकाई गांव होगा और ऊपर की कड़ियां हकूमत की जो कड़ियां हैं उनकी तरह ही होंगी.

(vi) "समाज" अपना काम मेम्बरों की मुफ़्त सेवाओं के ज़रिये करेगी. पर क़ायम इन्तज़ाम के लिहाज़ से कुछ कार्यकर्ताओं को तनख़ा पर भी रखा जायगा जिसके लिये—पैसा निजी या पबलिक साधनों से—जमा करना होगा.

(vii) अट्ठारह साल से ऊपर उमर का हर मर्द-औरत "समाज" में आ सकता है बशर्ते कि वह हिंसात्मक तोड़ फोड़, फ़िरक़ेवाराना या साम्प्रदायिक नफ़रत के कामों में शिरकत या विश्वास न करता हो और न इस तरह के काम

گنی ہونی چاہئے پر سرکار کے پاس سادھن اِتنے کم ہیں کہ برسوں تک یہ ممکن نہیں ہے۔ اس لئے جنتا کا دروازہ کھٹکھٹا کر اُسکی ہی مشترکہ کوشش سے کچھ کرنے کی ضرورت ہے۔

(ii) جنتا کے اندر دو حصے ہیں—پھرتیلا حصہ جو زیادہ تر انکار میں بات کرتا ہے' سرکار کے ساتھ سہیوگ نہیں دیتا اور ہمیشہ بربادی کا رخ بنائے رکھتا ہے ۔ دوسرا حصہ ہے جس پر غیر جان کاری یا جہالت اور کاہلی چھائے ہوئے ہیں ۔ اس وجہ سے بدھیا بیٹھ گئی ہے ۔ پر اگر جنتا کے چھوٹے بڑے کام اور اُسکی محنت کو اور دیش میں جو سنستھائیں موجود ہیں اُن کے کام اور محنت کو ایک قومی رجحان دے کر قومی پھر بناؤ کی سندر تصویر کا حصہ بنا دیا جائے تو ان چھوٹے بڑے کاموں اور محنت کا نتیجہ کچھ سے کچھ دکھائی پڑیگا ۔

(iii) "بھارت سیوک سماج" غیر سیاسی جماعت ہوگی' کیونکہ یہ جو کچھ کریگی اُس سے سرکار کی جڑیں ہی مضبوط پڑینگی اس لئے دیش کی سرکاریں اِس کو پوری اہمیت اور سہارا دینگی ۔ ہوسکتا ہے کہ آگے چلکر یہ جنتا اور سرکار کے بیچ ایک پل باندھنے کا کام کرے ' پر اس سنستھا کو سرکار کے آسرے نہیں رہنا چاہئے اور جنتا کے ہی بوتے پر کھڑے رہنے کو تیار رہنا چاہئے ۔

(iv) "سماج" کا کام ہوگا جیون کی بہتری کے سبھی پہلوؤں پر دھیان دینا پر سب طرف اپنی طاقت نہ کھو کر یہ زیادہ زور دیگی اناج اُپجانے پر ۔ اِس کے علاوہ اِسکا کام ہوگا دیہاتوں میں وکاس کے کیندر یا کمیونٹی سینٹر بنوانا' جنتا اور سرکار کا سمبندھ اچھا بنانا' بیماریاں روکنا وغیرہ وغیرہ ۔

(v) "سماج" کے کام کا خاص پہلو ہوگا زیادہ سے زیادہ وکیندری کرن۔ بنیادی اِکائی گاؤں ہوگا اور اوپر کی کڑیاں حکومت کی جو کڑیاں ہیں اُن کی طرح ہی ہونگی ۔

(vi) "سماج" اپنا کام ممبروں کی مفت سیواؤں کے ذریعے کریگی ۔ پر قائم انتظام کے لحاظ سے کچھ کاریہ کرتاؤں کو تنخواہ پر بھی رکھا جائیگا جس کے لئے پیسہ —نجی یا پبلک سادھنوں سے—جمع کرنا ہوگا ۔

(vii) اٹھارہ سال سے اوپر عمر کا ہر مرد عورت "سماج" میں آ سکتا ہے بشرطیکہ وہ ہنساتمک توڑ پھوڑ' فرقہ وارانہ یا سامپردائک نفرت کے کاموں میں شرکت یا وشواس نہ کرتا ہو اور نہ اِسطرح کے کام

ख्वाहिश है—इसमें ऊंचे अरमान वाले भाई बहन शरीक हों, अरमान निजी और छोटी छोटी बातों के लिए नहीं बल्कि खुद को भूल कर बड़े बड़े कामों को अन्जाम देने के लिये और ऊंची ऊंची मंजिलों पर पहुंचने के लिये.

पंडित जवाहरलाल की इस दिल भरी अपील पर किसे शिकायत हो सकती है. पर हिन्दुस्तान की कल कुछ इस तरह बिगड़ी है जो यह अपील अखबारों में छप कर रह जाती है और दिल पर कोई असर नहीं कर पाती. क्यों—इस पर हम अभी आयेंगे. पर इसके पहले "भारत सेवक समाज" की असलियत समझ लेना ज़ियादा ज़रूरी है.

प्लानिंग कमीशन का कहना है कि कोई योजना तभी सफल हो सकती है जब उसके पीछे 'मिला जुला समाजी नज़रिया' हो जो देश की तरक़्क़ी को समाजी इन्साफ़ और जनता की आर्थिक और समाजी बेहतरी के रूप में पेश कर सके. ज़रूरत इस बात की है कि इस 'मिले जुले समाजी नज़रिये' को एक 'जानदार बल' की शकल दी जाय ताकि इसे रचनात्मक कामों में इस्तेमाल किया जा सके. प्लानिंग कमीशन का ख्याल है कि यह 'जानदार बल' तभी कारगर होगा जब इसको छितरने न देकर बांध दिया जाय और इस मक़सद के लिये एक संगठन की ज़रूरत है जो स्वयं सेवक ढंग का संगठन हो. इसी ख्याल को अमली जामा पहनाने के लिये यह "भारत सेवक समाज" बनाया गया है.

प्लानिंग कमीशन की इस खूबसूरत दलील को हम लचर और वकीली मानते हैं. 'मिला जुला नज़रिया', 'जानदार बल', 'स्वयं सेवक संगठन' वग़ैरा ऐसे लफ़्ज़ हैं जिन को गढ़ने की कला हमारे हुक्कामों ने अंगरेज़ी सरकार से सीखी है. ऐसे लफ़्ज़ों की खुसूसियत यह होती है कि सब कुछ कह कर भी कुछ नहीं कहते, और जो जैसा चाहे उससे मतलब निकाल ले. अगर सरकार को सचमुच जनता का सहयोग चाहिये तो सीधा-सा रास्ता वह अपना सकती है—जनता की सेवक या सरपरस्त बन जाय, जो उससे कराना चाहे वह खुद करे और देश को अपना घर समझ कर उसके दुख दर्द में शिरकत करे. पर अगर यह न करके वह 'संगठन' बनाने लग जायेगी तो केवल काग़ज़ वालों, छापे घरों, डाकख़ाने की आमदनी बढ़ाने और कुछ क्लर्कों व चपरासियों को हैरान करने के अलावा कुछ नहीं कर सकती. "भारत सेवक समाज" की जो तफ़सील प्लानिंग मिनिस्टर ने दी है उससे हमारा यह ख्याल और भी पक्का हो जाता है.

"भारत सेवक समाज" की ख़ास बातें हमें यह बताई गई हैं :

(i) अगर देश के रहन सहन का दर्जा मामूली तह तक उठाना है तो हमारी क़ौमी आमदनी आज से तीन

خواهش هے—اِس میں اُونچے ارمان والے بھائی بہن شریک هوں' ارمان نجی اور چھوٹی چھوٹی باتوں کے لئے نہیں بلکہ خود کو بھول کر بڑے بڑے کاموں کو انجام دینے کے لئے اور اُونچی اُونچی منزلوں پر پہونچنے کے لئے .

پنڈت جواهر لال کی اِس دل بھری اپیل پر کسے شکایت هو سکتی هے . پر هندستان کی کل کچھ اِسطرح بگڑی هے جو یہ اپیل اخباروں میں چھپ کر رہ جاتی هے اور دل پر کوئی اثر نہیں کر پاتی . کیوں—اس پر هم ابھی آئیں گے . پر اس کے پہلے " بھارت سیوک سماج " کی اصلیت سمجھ لینا زیادہ ضروری هے .

پلاننگ کمیشن کا کہنا هے کہ کوئی یوجنا تبھی سپھل هو سکتی هے جب اُس کے پیچھے ' ملا جلا سماجی نظریہ ' هو جو دیش کی ترقی کو سماجی اِنصاف اور جنتا کی آرتھک اور سماجی بہتری کے روپ میں پیش کر سکے . ضرورت اس بات کی هے کہ اس ' ملے جلے سماجی نظریئے' کو ایک ' جاندار بل ' کی شکل دی جائے تاکہ اِسے رچناتمک کاموں میں اِستعمال کیا جا سکے . پلاننگ کمیشن کا خیال هے کہ یہ 'جان دار بل' تبھی کارگر هوگا جب اس کو چھترنے نہ دے کر باندھ دیا جائے اور اِس مقصد کے لئے ایک سنگٹھن کی ضرورت هے جو سوئم سیوک ڈھنگ کا سنگٹھن هو . اسی خیال کو عملی جامہ پہنانے کے لئے یہ " بھارت سیوک سماج " بنایا گیا هے .

پلاننگ کمیشن کی اِس خوبصورت دلیل کو هم لچر اور وکیلی مانتے هیں . ' ملا جلا نظریہ ' ' جاندار بل ' ' سوئم سیوک سنگٹھن ' وغیرہ ایسے لفظ هیں جنکو گڑھنے کی کلا همارے حکاموں نے انگریزی سرکار سے سیکھی هے . ایسے لفظوں کی خصوصیت یہ هوتی هے کہ سب کچھ کہہ کر بھی کچھ نہیں کہتے' اور جو جیسا چاهے اُس سے مطلب نکال لے . اگر سرکار کو سچ مچ جنتا کا سہیوگ چاهئے تو سیدھا سا راستہ وہ اپنا سکتی هے—جنتا کی سیوک یا سرپرست بن 'جائے' جو اس سے کرانا چاهے وہ خود کرے اور دیش کو اپنا گھر سمجھکر اس کے دکھ درد میں شرکت کرے . پر اگر یہ نہ کر کے وہ ' سنگٹھن ' بنانے لگ جائیگی تو کیول کاغذ والوں' چھاپے گھروں' ڈاک خانے کی آمدنی بڑھانے اور کچھ کلرکوں و چپراسیوں کو حیران کرنے کے علاوہ کچھ نہیں کر سکتی . " بھارت سیوک سماج " کی جو تفصیل پلاننگ منسٹر نے دی هے اُس سے همارا یہ خیال اور بھی پکا هو جاتا هے .

" بھارت سیوک سماج " کی خاص باتیں همیں یہ بتائی گئی هیں :

(i) اگر دیش کے رهن سہن کا درجہ معمولی تہہ تک اُٹھانا هے تو هماری قومی آمدنی آج سے تین

मैं बोला—ठीक. दूसरी शर्त यह कि अब तुम में से कोई कमी नीचे न आये.

सब बोल पड़े—हम में से कोई अब क्यों आयेगा ?

मैं बोला—तीसरी शर्त यह है कि पन्द्रह से तुम्हारी गिनती बढ़ने न पाये और नीचे से कोई चीज़ हमारी जाने न पाये.

अब उनमें से एक बोला—बिल्कुल मंज़ूर. और हमारे रहते चीज़ कोई कैसे जायगी ?

यह तय कर के मैं नीचे चला आया. और यह है उन पन्द्रह भूतों के साथ हमारा सुलहनामा.

—भगवानदीन

میں بولا—ٹھیک. دوسری شرط یہ کہ اب تم میں سے کوئی کبھی نیچے نہ آئے .

سب بول پڑے—ہم میں سے کوئی اب کیوں آئیگا ؟

میں بولا—تیسری شرط یہ ہے کہ پندرہ سے تمہاری گنتی بڑھنے نہ پائے اور نیچے سے کوئی چیز ہماری جانے نہ پائے .

اب اُن میں سے ایک بولا—بالکل منظور . اور ہمارے رہتے چیز کوئی کیسے جائیگی ؟

یہ طے کرکے میں نیچے چلا آیا . اور یہ ہے اُن پندرہ بھوتوں کے ساتھ ہمارا صلحنامہ .

—بھگوان دین

भारत सेवक समाज—क्या और किधर ?

जून के चौथे हफ़्ते में नई दिल्ली के प्लानिंग कमीशन ने एक छोटी-सी किताब निकाली जिसका नाम है "भारत सेवक समाज". इस किताब में प्लानिंग कमीशन की पंच-साला रिपोर्ट का कुछ हिस्सा उतार कर "भारत सेवक समाज" की ज़रूरत समझाई गई है. साथ में प्लानिंग मिनिस्टर गुलज़ारीलाल नन्दा जी के कई नोट हैं जिनमें "भारत सेवक समाज" की तफ़सील दी गई है और किताब का वज़न बढ़ाने के लिये उसके शुरू में हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का फ़ोरवर्ड या दो लफ़्ज़ हैं.

पंडित जवाहरलाल ने अपने फ़ोरवर्ड में कहा है कि आज के ज़माने में प्लानिंग या योजना बन्दी की ज़रूरत हर कोई महसूस करता है ताकि अपने साधनों का हम उपयोग कर सकें. लेकिन देश में आदमी नाम का साधन जो हमारे पास है उसकी ताक़त को आंकना आसान नहीं है. जब तक हम इसका ठीक ठीक इस्तेमाल न करें और लोगों के अन्दर ऐसी तबियत न पैदा कर दें जो मुसीबतों को हंसते हुए झेल कर, वाक़यात और घटनाओं के बावजूद, अपना काम कर ले जायें, तब तक हम कोई बड़ी चीज़ नहीं हासिल कर सकते. आगे चल कर पंडित जी ने कहा है कि लोगों के पास हम जो जायें तो अक़्ल के ग़रूर में चूर हो कर न जायें बल्कि नम्रता के साथ जायें ताकि मिल कर काहिली के पहाड़ को फोड़ सकें. "भारत सेवक समाज" नाम की नई संस्था चलाने का यही मक़सद है और प्रधान मंत्री की

بھارت سیوک سماج—کیا اور کدھر ؟

جون کے چوتھے ہفتے میں نئی دلی کے پلاننگ کمیشن نے ایک چھوٹی سی کتاب نکالی جس کا نام ہے." بھارت سیوک سماج ." اِس کتاب میں پلاننگ کمیشن کی پنچ سالا رپورٹ کا کچھ حصہ اُتار کر "بھارت سیوک سماج" کی ضرورت سمجھائی گئی ہے . ساتھ میں پلاننگ منسٹر گلزاری لال نندا جی کے کئی نوٹ ہیں جن میں "بھارت سیوک سماج" کی تفصیل دی گئی ہے اور کتاب کا وزن بڑھانے کے لئے اُس کے شروع میں ہمارے پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو کا فورورڈ یا دو لفظ ہیں .

پنڈت جواہر لال نے اپنے فورورڈ میں کہا ہے کہ آج کے زمانے میں پلاننگ یا یوجنا بندی کی ضرورت ہر کوئی محسوس کرتا ہے تاکہ اپنے سادھنوں کا ہم اُپیوگ کرسکیں. لیکن دیش میں آدمی نام کا جو سادھن ہمارے پاس ہے اس کی طاقت کو آنکنا آسان نہیں ہے . جب تک ہم اِس کا ٹھیک ٹھیک استعمال نہ کریں اور لوگوں کے اندر ایسی طبیعت نہ پیدا کر دیں جو مصیبتوں کو ہنستے ہوئے جھیل کر، واقعات اور گھٹناؤں کے باوجود، اپنا کام کرلے جائیں، تب تک ہم کوئی بڑی چیز نہیں حاصل کر سکتے. آگے چل کر پنڈت جی نے کہا ہے کہ لوگوں کے پاس ہم جو جائیں تو عقل کے غرور میں چور ہو کر نہ جائیں بلکہ نمرتا کے ساتھ جائیں تاکہ مل کر کاہلی کے پہاڑ کو پھوڑ سکیں . " بھارت سیوک سماج " نام کی نئی سنستھا چلانے کا یہی مقصد ہے اور پردھان منتری کی

और तुम्हारे भूतों का क्या हाल है ?

भई उनके साथ तो सुलहनामा हो गया.

यह सुलहनामा कैसा ?

भाई रनबीर, हुआ यह एक रात भूत रात भर नाचते गाते रहे मैं तो सो गया पर मेरे चारों साथियों में से किसी को नींद न आई. वह दिन टल गया और इसी वास्ते टल गया. कि छत पर गाते बजाते हैं, हमारा क्या लेते हैं. जब वह नीचे दख़लअंदाज़ी करेंगे तब देखा जायगा.

दूसरे दिन भूत आगे बढ़े और सफ़ेद कपड़े में लिपटी हुई आदमी जितनी लम्बी कोई चीज़ हम चारों की चारपाई का चक्कर काट कर चार ज़ीनों में से एक के रास्ते ऊपर चली गई. उस रात दो घंटे मुझे भी नींद नहीं आई. इसलिये नहीं कि मैं डर गया पर इसलिये कि इस दस्तदराज़ी का अब इलाज क्या किया जाय ?

दूसरे दिन इलाज सूझ गया.

दूसरे दिन हमारी चारपाइयों पर हम न थे. हमारी जगह कोई चीज़ें ओढ़े लेटी थीं और जैसे ही वह सफ़ेद चीज़ एक ज़ीने से उतरी कि हमारे साथी हमीद ने उसको खोंपी में भर लिया और ज़ोर की चीख़ मारी. हम चारों आ मौजूद हुए उस सफ़ेद चीज़ की चादर खोली. उसके अन्दर से एक जवान लड़का निकला. हम उसे पकड़ कर बैठ गये और मैंने उससे पूछा—बताओ, तुम कौन हो और क्या चाहते हो और क्यों हमको बेकार दिक़ करते हो ?

वह बोला—देखिये जी, हम पन्द्रह आदमी हैं. मज़दूरी का काम करते हैं. हमारे रहने के लिये कोई जगह नहीं. आपका यह मकान पीछे की तरफ़ छाती छाती ऊंचा है हम सब आसानी से उसके ऊपर चढ़ जाते हैं. आपकी तीसरी मंज़िल पर एक टीन का छप्पर पड़ा है. उसी के नीचे हम सो बैठ लेते हैं. अब यह मकान अगर किराये पर उठ जाये तो वहां हमें कौन रहने देगा. यही सब बात है कि हम हर किरायेदार को इस तरह डराते हैं और मकान को किराये पर नहीं उठने देते.

मैं उस लड़के को लेकर तीसरी मंज़िल पर पहुंचा. और सचमुच वहां चौदह आदमी और मिले. पर सब बुरी तरह घबराये हुए थे. मैंने उनकी घबराहट दूर की और उन्हें समझाया—

देखो भाई, जब तक हम यहां किरायेदार हैं तुम ख़ुशी से ऊपर रहो. पर हमारी कुछ शर्तें हैं. एक यह कि तुम लोगों का गाना बजाना एक घंटे से ज़ियादा न चले.

वह बीच में बात काट कर बोल उठे—अजी हम काहे को गाते बजाते हैं. कभी घड़ी दो घड़ी भले ही गा बजा लें. नहीं तो नींद के मारे कहां गाना बजाना सूझता है.

اور تمہارے بھوتوں کا کیا حال ہے !

بھئی اُن کے ساتھ تو صلح‌نامہ ہوگیا .

یہ صلح‌نامہ کیسا ؟

بھائی رنبیر' ہوا یہ ایک رات بھوت رات بھر ناچتے گاتے رہے . میں تو سو گیا پر میرے چاروں ساتھیوں میں سے کسی کو نیند نہ آئی . وہ دن ٹل گیا اور اِسی واسطے ٹل گیا کہ چھت پر گاتے بجاتے ہیں' ہمارا کیا لیتے ہیں. جب وہ نیچے دخل‌اندازی کرینگے تب دیکھا جائیگا .

دوسرے دن بھوت آگے بڑھے اور سفید کپڑے میں لپٹی ہوئی آدمی‌جتنی لمبی کوئی چیز ہم چاروں کی چارپائی کا چکر کاٹ کر چار زینوں میں سے ایک کے راستے اوپر چلی گئی . اُس رات دو گھنٹے مجھے بھی نیند نہیں آئی. اِس لئے نہیں کہ میں ڈر گیا. پر اِس لئے کہ اِس دست‌درازی کا اب علاج کیا کیا جائے؟

دوسرے دن علاج سوجھ گیا .

دوسرے دن ہماری چارپائیوں پر ہم نہ تھے . ہماری جگہ کوئی چیزیں اوڑھے لیٹی تھیں اور جیسے ہی وہ سفید چیز ایک زینے سے اُتری کہ ہمارے ساتھی حمید نے اُسکو کھونپی میں بھر لیا اور زور کی چیخ ماری . ہم چاروں آ موجود ہوئے . اُس سفید چیز کی چادر کھولی . اُس کے اندر سے ایک جوان لڑکا نکلا . ہم اُسے پکڑ کر بیٹھ گئے اور میں نے اُس سے پوچھا—بتاؤ' تم کون ہو اور کیا چاہتے ہو اور کیوں ہم کو بیکار دق کرتے ہو؟

وہ بولا—دیکھئے جی' ہم پندرہ آدمی ہیں . مزدوری کا کام کرتے ہیں . ہمارے رہنے کے لئے کوئی جگہ نہیں . آپ کا یہ مکان پیچھے کی طرف چھاتی چھاتی اُونچا ہے. ہم سب آسانی سے اُس کے اوپر چڑھ جاتے ہیں . آپ کی تیسری‌منزل پر ایک ٹین کا چھپر پڑا ہے . اُسی کے نیچے ہم سو بیٹھ لیتے ہیں . اب یہ مکان اگر کرائے پر اُٹھ جائے تو وہاں ہمیں کون رہنے دیگا . یہی سب بات ہے کہ ہم ہر کرائے‌دار کو اس طرح ڈراتے ہیں اور مکان کو کرائے پر نہیں اُٹھنے دیتے .

میں اُس لڑکے کو لےکر تیسری منزل پر پہونچا . اور سچ مچ وہاں چودہ آدمی اور ملے . پر سب بری طرح گھبرائے ہوئے تھے . میں نے اُن کی گھبراہٹ دور کی اور اُنہیں سمجھایا—

دیکھو بھائی' جب تک ہم یہاں کرائے‌دار ہیں تم خوشی سے اوپر رہو . پر ہماری کچھ شرط ہیں. ایک یہ کہ تم لوگوں کا گانا بجانا ایک گھنٹے سے زیادہ نہ چلے .

وہ بیچ میں بات کاٹ کر بول اُٹھے—اجی ہم کاہے کو گاتے بجاتے ہیں . کبھی گھڑی‌دو‌گھڑی بھلے ہی گا بجالیں . نہیں تو نیند کے مارے کہاں گانا بجانا سوجھتا ہے .

कोई नहीं रह पाया. अब मैं यह नहीं चाहता कि ख़ुद तंग होऊं और दूसरों को दिक़ करूं. अब खुली बात है. मेरा मकान भुतहा मकान है. जो कोई इसमें रहे साल भर का किराया माफ़. शुरू में चाहे तो मकान की सफ़ाई के लिये दो चार रुपये मुझ से और ले ले, बताओ और क्या रियायत चाहिये ?

मैं आगे बढ़ कर बोला—सेठ जी, कोई रियायत नहीं चाहिये. चाभी दीजिये. हम पांच आदमी हैं और पांचों छड़ीदे. हम आपके मकान का भूत भगा कर रहेंगे.

जितने आये सबने यही कहा. पर मैंने भी अब तय कर लिया है किसी को चाभी देने से इन्कार न करूंगा.

× × ×

कहो सदीक़ी, भूतों का क्या हाल है ?

यार रनवीर, दो तीन दिन तो कोई भूत आये नहीं. कल रात तीसरी मंज़िल पर दस बजे के बाद से दो घंटे तक घुंघरुओं के बजने की आवाज़ आती रही. हम सब ने यह तय किया कि भूत जब दो घंटे तीसरी मंज़िल पर घुंघरू बजा कर चले जाते हैं तो उन्हें क्यों छेड़ा जाय. वह हमें नहीं छेड़ते. छत पर रहते हैं, रहें. आज देखें क्या होता है ?

तुम लोगों को डर बिल्कुल नहीं लगा ?

घुंघरू की आवाज़ से कौन डरता है ?

तो आज रात मैं भी यहीं रह जाऊं ?

बख़ुशी !

× × ×

देखिये, शुरू हो गया न बाजा बजना. आज पन्द्रह मिनट लेट हैं और आज तो चिकारे की आवाज़ भी सुनाई देती है.

सदीक़ आधे घंटे के बाद सो गया. रनवीर और दूसरे चार विद्यार्थी बारह बजे तक जागते रहे और बाजा बन्द होने पर ही सोये.

× × ×

सदीक़ उठो. तुम जल्दी सोते हो और देर से उठते हो.

रनवीर, मुझे जवानी की नींद आती है और बेख़ौफ़ी की भी. कहो रात फिर भूत तो नहीं आये थे ?

हम सब बारह बजे बाद सो गये और अब आंख खुली है. अच्छा, तुम उठो या न उठो, मैं चला.

× × ×

कहो सदीक़ मियां, क्या ख़रीद फ़रोख़्त हो रही है ?

कुछ नहीं, एक डिक्शनरी ख़रीदना थी.

کوئی نہیں رہ پایا. اب میں یہ نہیں چاہتا کہ خود تنگ ہوؤں اور دوسروں کو دق کروں. اب کھلی بات ہے. میرا مکان بھتہا مکان ہے . جو کوئی اِس میں رہے سال بھر کا کرایہ معاف. شروع میں چاہے تو مکان کی صفائی کے لئے دو چار روپئے مجھ سے اور لے لے' بتاؤ اور کیا رعایت چاہتے ؟

میں آگے بڑھکر بولا—سیٹھ جی' کوئی رعایت نہیں چاہئے چابی دیجئے . ہم پانچ آدمی ہیں اور پانچوں چھڑیدے . ہم آپ کے مکان کا بھوت بھگا کر رہیں گے .

جتنے آئے سب نے یہی کہا . پر میں نے بھی اب طے کر لیا ہے کہ کسی کو چابی دینے سے انکار نہ کرونگا .

× × ×

کہو صدیقی' بھوتوں کا کیا حال ہے !

یار رنویر' دو تین دن تو کوئی بھوت آئے نہیں . کل رات تیسری منزل پر دس بجے کے بعد سے دو گھنٹے تک گھنگھروؤں کے بجنے کی آواز آتی رہی. ہم سب نے یہ طے کیا کہ بھوت جب دو گھنٹے تیسری منزل پر گھنگھرو بجا کر چلے جاتے ہیں تو انہیں کیوں چھیڑا جائے . وہ ہمیں نہیں چھیڑتے . چھت پر رہتے ہیں' رہیں . آج دیکھیں کیا ہوتا ہے ؟

تو تم لوگوں کو ڈر بالکل نہیں لگا ؟

گھنگھرو کی آواز سے کون ڈرتا ہے ؟

تو آج رات میں بھی یہیں رہ جاؤں ؟

بہ خوشی !

× × ×

دیکھئے' شروع ہوگیا نہ باجا بجنا . آج پندرہ منٹ لیٹ ہیں اور آج تو چکارے کی آواز بھی سنائی دیتی ہے .

صدیق آدھے گھنٹے کے بعد سو گیا . رنویر اور دوسرے چار ودیارتھی بارہ بجے تک جاگتے رہے اور باجا بند ہونے پر ہی سوئے .

× × × ×

صدیق اٹھو. تم جلدی سوتے ہو اور دیر سے اٹھتے ہو .

رنویر' مجھے جوانی کی نیند آتی ہے اور بے خوفی کی بھی . کہو رات پھر بھوت تو نہیں آئے تھے ؟

ہم سب بارہ بجے بعد سو گئے اور اب آنکھ کھلی ہے . اچھا' تم اٹھو یا نہ اٹھو' میں چلا .

× × × ×

کہو صدیق میاں' کیا خرید فروخت ہو رہی ہے؟

کچھ نہیں' ایک ڈکشنری خریدنا تھی .

भूतों से सुलहनामा

भाई रनवीर, बताओ, होटल में कितने दिन रहें, और इतना ख़र्चा कैसे बर्दाश्त करें ! कालेज की फ़ीस तो यहां नाम के लिए है. यहां जो दिक़्क़त है वह मकान के किराये की और मकान किसी किराये पर नहीं मिल रहा. पांच विद्यार्थी और मेरे साथ हैं, होटल में दिवाला निकला जा रहा है. जल्दी कोई मकान बताओ, नहीं तो हम सब को पढ़ाई छोड़ अपने अपने घर भागना पड़ेगा. ख़ाली मकान मिलते नहीं, जिन मकानों में जगह है उनमें मुसलमान होने की वजह से जगह नहीं मिल रही. अब तुम ही बताओ क्या किया जाय ?

भाई सद्दीक़ी, आजकल जयपुर में मकानों का बेहद तोड़ा है. किसी दर्जे तक यह ठीक है कि अगर तुम लोग हिन्दू होते तो एक-एक दो-दो इधर उधर खप जाते पर हिन्दू विद्यार्थियों का कम बुरा हाल नहीं. हिन्दू होने से ही जगह नहीं मिल जाती. हिन्दुओं में भी फिर कहीं वैशनव होना जरूरी है, कहीं कायस्थ और कहीं जैनी, और न जाने क्या क्या.

भाई रनवीर, बात न बढ़ाओ, दलीलें न दो, मकान ढूंढ़ कर दो, मकान ! नहीं तो हम सब तुम्हारे घर में घुस पड़ेंगे.

अच्छा तो कल इसी वक़्त आना.

मैं चल पड़ा. थोड़ी दूर ही गया होऊंगा कि मेरे कान में रनवीर की आवाज़ पड़ी, सद्दीक़, सद्दीक़.

मैं लौट कर उसके पास पहुंचा और पूछा—कहो, क्या कहते हो ?

कहता क्या हूं यार, यहां से एक फ़र्लांग पर ही एक ख़ासा बड़ा मकान बिल्कुल ख़ाली है, और कई बरस से ख़ाली है.

किसका है ? उसे जानते हो ? फिर दिलवाओ न.

मिल तो फ़ौरन जायगा, पर सद्दीक़, है वह भुतहा मकान !

हम पांच जवान भुगत लेंगे उस भूत को. तुम मकान दिलवाओ हम रहने को तैयार हैं.

चलो फिर अभी.

× × ×

देखिये सेठजी, आपके मकान के लिये मैं एक किरायेदार लाया हूं.

बेटे रनवीर, किरायेदार लाये यह तो अच्छा किया. पर मैं तो दसियों किरायेदारों को भुगत चुका. कोई दो दिन रहकर चल देता है कोई चार छै दिन से ज़ियादा अभी तक

بھوتوں سے صلحنامہ

بھائی رنبیر' بتاؤ' ہوٹل میں کتنے دن رہیں' اور اتنا خرچہ کیسے برداشت کریں ! کالج کی فیس تو یہاں نام کے لئے ہے. یہاں جو دقت ہے وہ مکان کے کرائے کی اور مکان کسی کرائے پر نہیں مل رہا . پانچ ودیارتھی اور میرے ساتھ ہیں' ہوٹل میں دیوالہ نکلا جا رہا ہے. جلدی کوئی مکان بتاؤ' نہیں تو ہم سب کو پڑھائی چھوڑ اپنے اپنے گھر بھاگنا پڑے گا . خالی مکان ملتے نہیں' جن مکانوں میں جگہ ہے اُن میں مسلمان ہونے کی وجہ سے جگہ نہیں مل رہی . اب تم ہی بتاؤ کیا کیا جائے ؟

بھائی صدیقی' آجکل جے پور میں مکانوں کا بے حد توڑا ہے . کسی درجے تک یہ ٹھیک ہے کہ اگر تم لوگ ہندو ہوتےتو ایک ایک دو دو اِدھر اُدھر کھپ‌جاتے پر ہندو ودیارتھیوں کا کم برا حال نہیں . ہندو ہونے سے ہی جگہ نہیں مل جاتی . ہندوؤں میں بھی پھر کہیں ویشنو ہونا ضروری ہے' کہیں کائستھ اور کہیں جینی' اور نہ جانے کیا کیا .

بھائی رنبیر' بات نہ بڑھاؤ' دلیلیں نہ دو' مکان ڈھونڈ کر دو' مکان! نہیں تو ہم سب تمہارے گھر میں گھس پڑیں گے .

اچھا تو کل اِسی وقت آنا .

میں چل پڑا. تھوڑی دور ہی گیا ہوؤں گا کہ میرے کان میں رنبیر کی آواز پڑی'صدیق' صدیق .

میں لوٹ کر اُس کے پاس پہونچا اور پوچھا—کہو' کیا کہتے ہو ؟

کہتا کیا ہوں یار' یہاں سے ایک فرلانگ پر ہی ایک خاصہ بڑا مکان بالکل خالی ہے' اور کئی برس سے خالی ہے .

کس کا ہے ؟ اُسے جانتے ہو ؟ پھر دلواؤ نہ .

مل تو فوراً جائے گا' پر صدیق ہے وہ بھتہا مکان !

ہم پانچ جوان بھگت لیں گے اُس بھوت کو . تم مکان دلواؤ ہم رہنے کو تیار ہیں .

چلو پھر ابھی .

× × ×

دیکھئے سیٹھ جی' آپ کے مکان کے لئے میں ایک کرائے دار لایا ہوں .

بیٹے رنبیر' کرائے دار لائے یہ تو اچھا کیا . پر میں تو دسیوں کرائے داروں کو بھگت چکا . کوئی دو دن رہکر چل دیتا ہے کوئی چار چھ دن سے زیادہ ابھی تک

सवेरे सूरज निकलने के पहले ही हम लोग उठ बैठे. नाश्ता करते वक़्त आपने कहा कि मुझे अपने ज़िले में ज़रूरी काम है इसलिये मैं अब जाऊंगा.

मैं कहने लगी—"मेरे प्यारे भाई, जाओ, ज़रूर जाओ! अपने बंगलों और महलों में जाओ! मोटरों में जाओ, हवाई जहाज़ों में जाओ, हवा कन्ट्रोल रेल के डिब्बों में जाओ, जाओ ज़रूर जाओ! लेकिन यह चौबीस घंटे जो आपने मेरे साथ बिताये हैं उन्हें मत भूलियेगा क्योंकि इन घन्टों में आपका असलियत या सच्चाई से सीधा सीधा वास्ता पड़ा है वैसे आपका ज़ियादातर जीवन माया के जाल में फंसा रहता है. ज़रा आज की संगीन हालत को तो देखिये. चोटी पर बैठे बैठे आप लोग समझते हैं आप जनता की मर्ज़ी के अनुकूल चल रहे हैं. और लोकशाही नेता होने के नाते आप कुछ दूसरी चीज़ कर भी नहीं सकते. लेकिन क्या आपको यह नहीं महसूस होता कि जिसे आप "जनता की मर्ज़ी" कहते हैं वह शहर में रहने वाले उन चन्द लोगों की आवाज़ है जो शोर करना जानते हैं और जिनका कुछ असर है—बल्कि मैं तो यह कहूँगी कि उन गिने चुने लोगों की आवाज़ है जिन्होंने इन्सानी समाज को चूसना अपना पेशा बना लिया है? देहात की लाखों करोड़ों जनता की—जो हमारी बुनियादी ज़रूरत की हर चीज़ पैदा करती है और पिछले चौबीस घंटे जिसका दर्शन आपको मिला—न कहीं सुनवाई है और न उनका कोई पुरसाने हाल है. अब आप मुझसे यह मत कहियेगा कि आप और आपकी सरकार जनता की मर्ज़ी के नुमाइन्दे हैं—आप जनता की मर्ज़ी के नुमाइन्दे नहीं हैं, मेरे प्यारे भाई, नहीं हैं!"

थोड़ी देर ठहर कर मैं फिर कहने लगी—

"अगर देहात की जनता एक हो कर बापू राज की पुकार करती है तो क्या कांगरेस में इतनी हिम्मत होगी कि उनकी पुकार को मन्ज़ूर करे? बस सारे सवाल का निचोड़ यही है. क्या आप चन्द चूसने वाले आदमख़ोरों की बात सुनेंगे या उन करोड़ों की जो हर चीज़ ख़ुद पैदा करते हैं? मेरी आपसे विनती है, पुरानी दोस्ती की वह सब मोहब्बत जो मेरे दिल में है उस सब के साथ मेरी आप से विनती है कि मेरे इस ख़्याल को अपने अन्दर जगह दीजिये और इसे अपने भीतर की आख़री तह तक जाने दीजिये. यह वही तह है जिस से इन्सान को वक़्त वक़्त पर इलहाम या अनुभूति होती है और वही इन्सान की सबसे सच्ची, ऊंची और आला रहबर या पथ प्रदर्शक है." —मीरा बहन

गोपाल आश्रम, P. O पिलखी, ज़िला टेहरी-गढ़वाल.

('हिन्दुस्तान टाइम्स' से)

سویرے سورج نکلنے کے پہلے ہی ہم لوگ اُٹھ بیٹھے. ناشتہ کرتے وقت آپ نے کہا کہ مجھے اپنے ضلعے میں ضروری کام ہے اس لئے میں اب جاؤنگا.

میں کہنے لگی—"میرے پیارے بھائی، جاؤ، ضرور جاؤ! اپنے بنگلوں اور محلوں میں جاؤ! موٹروں میں جاؤ، ہوائی جہازوں میں جاؤ، ہوا کنٹرول ریل کے ڈبوں میں جاؤ، جاؤ ضرور جاؤ! لیکن یہ چوبیس گھنٹے جو آپ نے میرے ساتھ بتائے ہیں انہیں مت بھولئیے گا کیونکہ ان گھنٹوں میں آپ کا اصلیت یا سچائی سے سیدھا سادھا واسطہ پڑا ہے. ویسے آپ کا زیادہ تر جیون مایا کے جال میں پھنسا رہتا ہے. ذرا آج کی سنگین حالت کو تو دیکھئے. چوٹی پر بیٹھے بیٹھے آپ لوگ سمجھتے ہیں آپ جنتا کی مرضی کے انوکول چل رہے ہیں. اور لوک شاہی نیتا ہونے کے ناتے آپ کچھ دوسری چیز کر بھی نہیں سکتے. لیکن کیا آپ کو یہ نہیں محسوس ہوتا کہ جسے آپ "جنتا کی مرضی" کہتے ہیں وہ شہر میں رہنے والے اُن چند لوگوں کی آواز ہے جو شور کرنا جانتے ہیں اور جنکا کچھ اثر ہے—بلکہ میں تو یہ کہونگی کہ اُن گنے چنے لوگوں کی آواز ہے جنہوں نے انسانی سماج کو چوسنا اپنا پیشہ بنا لیا ہے؟ دیہات کی لاکھوں کروڑوں جنتا کی—جو ہماری بنیادی ضرورت کی ہر چیز پیدا کرتی ہے اور پچھلے چوبیس گھنٹے جس کا درشن آپ کو ملا—نہ کہیں سنوائی ہے اور نہ ان کا کوئی پرسان حال ہے. اب آپ مجھ سے یہ مت کہئیے گا کہ آپ اور آپ کی سرکار جنتا کی مرضی کے نمائندے ہیں—آپ جنتا کی مرضی کے نمائندے نہیں ہیں، میرے پیارے بھائی، نہیں ہیں!"

تھوڑی دیر ٹھہر کر میں پھر کہنے لگی—

"اگر دیہات کی جنتا ایک ہو کر باپو راج کی پکار کرتی ہے تو کیا کانگریس میں اِتنی ہمت ہوگی کہ اُنکی پکار کو منظور کرے؟ بس سارے سوال کا نچوڑ یہی ہے. کیا آپ چند چوسنے والے آدم خوروں کی بات سنیں گے یا اُن کروڑوں کی جو ہر چیز خود پیدا کرتے ہیں؟ میری آپ سے بنتی ہے، پرانی دوستی کی وہ سب محبت جو میرے دل میں ہے اُس سب کے ساتھ میری آپ سے بنتی ہے کہ میرے اِس خیال کو اپنے اندر جگہ دیجئیے اور اِسے اپنے بھیتر کی آخری تہ تک جانے دیجئیے. یہ وہی تہ ہے جس سے اِنسان کو وقت وقت پر الہام یا انوبھوتی ہوتی ہے اور وہی اِنسان کی سب سے سچی، اونچی اور اعلیٰ رہبر یا پتھ پردرشک ہے." —میرا بہن

گوپال آشرم، P. O. پلکھی ضلع ٹیہری گڑھوال

('ہندستان ٹائمس' سے)

मैंने कहा—"अगर यही हालत रही तो फिर तुम बैल कैसे पालोगे ? और इसके बाद फिर क्या सोचा है ?"

ठंडी सांस ले कर किसान ने कहा—"भगवान जाने क्या होगा ! और हालत तो यह हो रही है कि गंगा खादर वाला इलाक़ा भी जोत दिया गया है. हर साल वहां पर सैकड़ों हज़ारों जानवर पंजाब से आते थे और हमें उनसे अपने मतलब के लिए अच्छे अच्छे ढोर मिल जाते थे, लेकिन अब यह सब बन्द हो गया और हम लोगों की तबाही आ गई है."

मैं आपकी तरफ़ देखने लगी यह जानने के लिए कि आप किसानों की इस मुसीबत को कुछ समझ रहे हैं या नहीं.

एक नौजवान ने हमारे मेज़मान के कान में धीरे से कहा—"गन्ने की मिल वाली बात इन्हें बताओ, शायद यह कुछ कर सकें."

मैंने पूछा—"कहो, वह क्या बात है ?"

"पिछले दो महीने से हमें अपनी ईख का कोई पैसा नहीं मिला. हालांकि तरीक़ा यह है कि मिल वालों को चाहिये कि ईख पाने के चौबीस घंटे के अन्दर उसका दाम चुका दें."

"आप लोगों ने उसके लिये कुछ कहा सुना ?"

"कहा तो, मगर माता जी ! हम ग़रीबों की बात सुनता कौन है ? पैसे वाले लोग जो हैं वह अपने गन्ने का दाम मज़े में वसूल कर लेते हैं लेकिन हमें और हमारे बच्चों को फ़ाक़ा करना पड़ता है "

मैंने उनसे एक अर्ज़ी लिख कर देने को कहा और आपकी तरफ़ मुख़ातिब हो कर कहने लगी—

"इस सफ़र में मुझे गांव वालों से शिकायतें आये दिन मिल रही हैं और वह इतनी दर्दनाक हैं कि कुछ कहा नहीं जा सकता. पानी की तकलीफ़, सड़क की तकलीफ़, चरागाह ख़त्म हो गये सो अलग मुसीबत, और तरह तरह की मुसीबतें अलग. यह ऐसी बातें हैं जिनका हर गांव और गांव वाले के जीवन से बड़ा गहरा सम्बन्ध है. लेकिन आप की सरकार तो बड़ी बड़ी योजनाओं और मशीनों द्वारा खेती के चक्कर में इतनी ज़ियादा फंसी हुई है कि किसानों की शिकायतों और उनकी अर्ज़ियों की सुनने की उसे फ़ुरसत नहीं. यह अर्ज़ियां दफ़्तरों की फ़ायलों के जाल में अटक जाती हैं और उन्हें सिर्फ़ वही लोग निकाल पाते हैं जिनका कुछ असर है या जो हाथ गर्म करना जानते हों. आपके सरकारी अफ़सर हों या कांगरेस के कार्यकर्ता हों, पार्लियामेन्ट के मेम्बर हों या असेम्बली के, आप चीज़ों को किसान की निगाह से देखते ही नहीं. मेरे दिल की जो आग है उसे मैं बहुत ही ठंडे शब्दों में आपको बता रही हूँ."

फिर हमने अपने घोड़े-बैलों को ज़रा देखा और चार-पाई पर आ कर पड़ गये क्योंकि यह तय हुआ था कि मीटिंग सवेरे भोर में ही होगी.

میں نے کہا—"اگر یہی حالت رہی تو پھر تم بیل کیسے پالو گے؟ اور اس کے بعد پھر کیا سوچا ہے؟"

ٹھنڈی سانس لے کر کسان نے کہا—"بھگوان جانے کیا ہوگا! اور حالت تو یہ ہو رہی ہے کہ گنگا کھادر والا علاقہ بھی جوت دیا گیا ہے۔ ہر سال وہاں پر سیکڑوں ہزاروں جانور پنجاب سے آتے تھے اور ہمیں اُن سے اپنے مطلب کے لئے اچھے اچھے ڈھور مل جاتے تھے، لیکن اب یہ سب بند ہوگیا اور ہم لوگوں کی تباہی آ گئی ہے۔"

میں آپ کی طرف دیکھنے لگی یہ جاننے کے لئے کہ آپ کسانوں کی اِس مصیبت کو کچھ سمجھ رہے ہیں یا نہیں

ایک نوجوان نے ہمارے میزبان کے کان میں دھیرے سے کہا—"گنے کی مل والی بات انہیں بتاؤ، شاید یہ کچھ کرسکیں۔"

میں نے پوچھا—"کہو، وہ کیا بات ہے؟"

"پچھلے دو مہینے سے ہمیں اپنی ایکھ کا کوئی پیسہ نہیں ملا۔ حالانکہ طریقہ یہ ہے کہ مل والوں کو چاہئے کہ ایکھ پانے کے چوبیس گھنٹے کے اندر اسکا دام چکائیں۔"

"آپ لوگوں نے اس کے لئے کچھ کہا سنا؟"

"کہا تو، مگر ماتا جی! ہم غریبوں کی بات سنتا کون ہے؟ پیسے والے لوگ جو ہیں وہ اپنے گنے کا دام مزے میں وصول کرلیتے ہیں لیکن ہمیں اور ہمارے بچوں کو فاقہ کرنا پڑتا ہے۔"

میں نے اُن سے ایک عرضی لکھ کر دینے کو کہا اور آپ کی طرف مخاطب ہوکر کہنے لگی—"اس سفر میں مجھے گاؤں والوں سے شکایتیں آئے دن مل رہی ہیں اور وہ اتنی دردناک ہیں کہ کچھ کہا نہیں جاسکتا۔ پانی کی تکلیف، سڑک کی تکلیف، چراگاہ ختم ہوگئے سو الگ مصیبت، اور طرح طرح کی مصیبتیں الگ۔ یہ ایسی باتیں ہیں جنکا ہر گاؤں اور گاؤں والے کے جیون سے بڑا گہرا سمبندھ ہے۔ لیکن آپ کی سرکار تو بڑی بڑی یوجناؤں اور مشینوں دوارا کھیتی کے چکر میں اتنی زیادہ پھنسی ہوئی ہے کہ کسانوں کی شکایتوں اور ان کی عرضیوں کی سننے کی اُسے فرصت نہیں۔ یہ عرضیاں دفتروں کی فائلوں کے جال میں اٹک جاتی ہیں اور انہیں صرف وہی لوگ نکال پاتے ہیں جن کا کچھ اثر ہے یا جو ہاتھ گرم کرنا جانتے ہوں۔ آپ کے سرکاری افسر ہوں یا کانگریس کے کاریہ کرتا ہوں، پارلیمنٹ کے ممبر ہوں یا اسمبلی کے، آپ چیزوں کو کسان کی نگاہ سے دیکھتے ہی نہیں۔ میرے دل کی جو آگ ہے اُسے میں بہت ہی ٹھنڈے شبدوں میں آپ کو بتا رہی ہوں۔"

پھر ہم نے اپنے گھوڑے بیلوں کو ذرا دیکھا اور چارپائی پر آکر پڑ گئے کیونکہ یہ طے ہوا تھا کہ میٹنگ سویرے بھور میں ہی ہوگی۔

कुछ मिनट के लिये ज़रा लेट गई. देखती क्या हूँ कि ड़ी ही देर में दो बूढ़े बूढ़े किसान चले आ रहे हैं. उनके रे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं और सर पर खद्दर के बड़े फ़े ढके हुये थे. वह ज़मीन पर बैठ गये और हाथ जोड़ते ! बोले—

"माताजी, हम बापू राज चाहते हैं और बहुत जल्दी हते हैं. हमारे पास न इलम है न पैसा. बड़े बड़े लोगों की तें हमारी समझ में तनिक नहीं आतीं. वह लोग तो अपनी जनाओं में ही पड़े रहते हैं. लेकिन आप बापू जी की त लेकर आई हैं और हमारा आपमें पूरा विश्वास है. ाइये हम कैसे मदद करें, क्या हम मेम्बर बन सकते हैं ?"

मैंने जवाब दिया—"इसमें मेम्बरी का कोई सवाल ीं है. यह तो इतनी बड़ी चीज़ है कि इसमें अलग अलग म्बर नहीं बनाये जाते. ज़रूरत सिर्फ़ आपके विश्वास और पकी हिम्मत की है. और जब वक़्त आयेगा तों मैं आपको ताऊंगी कि हम क्या करें."

"हम ग़रीबों को मत भूल जाइयेगा. बापू राज ! बापू ज !! बस यही बापू राज हमें चाहिये."

हमारी बैलगाड़ी चल चुकी है और अब हम भी रवाना पड़े. इस इलाक़े में एक बड़े ज़मींदार का बोलबाला है मने 'ख़ुद काश्त' के नाम पर चरागाह के लिए बित्ता भर मीन भी नहीं छोड़ी है और सारी ज़मीन पर ट्रैक्टर चलवा खा है. जैसे हम चलते जाते हैं ट्रैक्टर की ऊपरी जुताई फ़ साफ़ पता चलती है.

मैं यह सब आपको दिखाती जाती हूँ और कहती हूँ—यह देखिये, यह देखिये." इस उम्मीद में कि शायद इस रे तमाशे की बदमाशी भरी नाइन्साफ़ी का कुछ बोध पको हो जाय.

अब हम अपने रात वाले मुक़ाम पर पहुंच गये. यह एक त ही छोटा गांव है जहाँ हम एक प्यारे बूढ़े किसान के ां ठहर गये. घोड़ों की ज़ीन खोल कर और उनके दाना नी का ठीक ठाक कर के बरामदे में पड़ी हुई चारपाइयों पड़ गये. उस किसान के मोटे तगड़े बैल जुगाली कर थे. धीरे धीरे किसान लोग आना शुरू हो गये और ारे चारों तरफ़ बैठ गये.

मैंने पूछा—"तुम्हारी बैल जोड़ी तो बड़ी सुन्दर है केन यह ढोर जो चरने जाते हैं वह क्यों दुबले मालूम ने हैं."

बूढ़े किसान ने दुखी हो कर जवाब दिया—"हमारे ागाह सब चले गये. जहां पहले दो सौ गायें थीं अब ास ही रह गईं और यह लगातार कम होती जा रही ,

میں کچھ منٹ کے لئے ذرا لیٹ گئی. دیکھتی کیا ہوں کہ تھوڑی دیر میں دو بوڑھے بوڑھے کسان چلے آ رہے ہیں. اُن کے چہرے پر جھریاں پڑی ہوئی تھیں اور سر پر کھدر کے بڑے صافے ڈھکے ہوئے تھے وہ زمین پر بیٹھ گئے اور ہاتھ جوڑتے ہوئے بولے—

"ماتا جی، ہم باپو راج چاہتے ہیں اور بہت جلدی چاہتے ہیں. ہمارے پاس نہ علم ہے نہ پیسہ. بڑے بڑے لوگوں کی باتیں ہماری سمجھ میں تنک، نہیں آتیں. وہ لوگ تو اپنی یوجناؤں میں ہی پڑے رہتے ہیں. لیکن آپ باپو جی کی بات لےکر آئی ہیں اور ہمارا آپ میں پورا وشواس ہے. بتائیے ہم کیسے مدد کریں، کیا ہم ممبر بن سکتے ہیں؟"

میں نے جواب دیا—"اس میں ممبری کا کوئی سوال نہیں ہے. یہ تو اِتنی بڑی چیز ہے کہ اس میں الگ الگ ممبر نہیں بنائے جاتے. ضرورت صرف آپ کے وشواس اور آپ کی ہمت کی ہے. اور جب وقت آئیگا تو میں آپ کو بتاؤں گی کہ ہم کیا کریں."

"ہم غریبوں کو مت بھول جائیگا. باپو راج ! باپو راج!! بس یہی باپو راج ہمیں چاہئیے."

ہماری بیل گاڑی چل چکی ہے اور اب ہم بھی روانہ ہو پڑے. اس علاقے میں ایک بڑے زمیندار کا بول بالا ہے جس نے 'خود کاشت' کے نام پر چراگاہ کے لئے بتا بھر زمین بھی نہیں چھوڑی ہے اور ساری زمین پر ٹریکٹر چلوا رکھا ہے. جیسے ہم چلتے جاتے ہیں ٹریکٹر کی اوپری جتائی صاف صاف پتہ چلتی ہے.

میں یہ سب آپ کو دکھاتی جاتی ہوں اور کہتی ہوں—"یہ دیکھئے، یہ دیکھئے." اس اُمید میں کہ شائد اِس سارے تماشے کی بدمعاشی بھری ناانصافی کا کچھ بودھ آپ کو ہوجائے.

اب ہم اپنے رات والے مقام پر پہنچ گئے. یہ ایک بہت ہی چھوٹا گاؤں ہے جہاں ہم ایک پیارے بوڑھے کسان کے یہاں ٹھہر گئے. گھوڑوں کی زین کھول کر اور اُن کے دانا پانی کا ٹھیک ٹھاک کرکے برآمدے میں پڑی ہوئی چارپائیوں پر پڑ گئے. اُس کسان کے موٹے تگڑے بیل جگالی کر رہے تھے. دھیرے دھیرے کسان لوگ آنا شروع ہوگئے اور ہمارے چاروں طرف بیٹھ گئے.

میں نے پوچھا—"تمہاری بیل جوڑی تو بڑی سندر ہے لیکن یہ ڈھور جو چرنے جاتے ہیں وہ کیوں دبلے معلوم پڑتے ہیں."

بوڑھے کسان نے دکھی ہوکر جواب دیا—"ہمارے چراگاہ سب چلے گئے. جہاں پہلے دو سو گائیں تھیں اب پچاس ہی رہ گئیں اور یہ لگاتار کم ہوتی جارہی ہیں."

गांव वालों ने बहुत प्रेम से हमें बैठाया और आदर सत्कार किया. पानी पड़ने लगा जिसके कारन ठंड बहुत बढ़ गई. गांव वाले भी काफ़ी जमा हो गये. उनमें से एक जना हमारे लिये गरमा गरम चाय ले आया. अब गप शुरू हुई. जिसे देखिये उसी बुड्ढे महन्त की बात करता था कि वह किस बे-रहमी से गांव वालों के साथ व्योहार करता है और उसकी यही कोशिश रहती है कि ज़ियादा से ज़ियादा ज़मीन हड़प करके उसमें ट्रैक्टर चलवा दे.

मैंने आपसे कहा—"यह बूढ़ा उन्हीं ज़मींदारों जैसा है जो इन गावों में अक्सर मिला करते हैं. बड़ा अच्छा हुआ कि उसने हमें अपनी आसामियों के बीच पहुंचा दिया."

आप कुछ परेशान से नज़र आने लगे इसलिये मैं चुप हो गई.

मैंने गांव वालों से कहा—"अब तो बादल साफ़ हो गया, हम लोगों को चलना चाहिये." घोड़े पर सवार हो कर जैसे हम चले, गांव वालों ने हम से दर्द भरी आवाज़ में कहा—"हमें भूलना मत."

दस बजते बजते हम लोग अपने ठिकाने पहुँच गये.

यहां पर हमारे पहुंचने की ख़बर लोगों को थोड़ी देर पहले हमारी बैलगाड़ी के आने से ही लगी थी. हमारे इस दौरे में रोज़ ऐसा ही होता है क्योंकि कोई ख़ास कारिन्दे या प्रचार के साधन हमारे पास नहीं हैं. आम के एक बग़ीचे में हमारा डेरा डाला गया है. गांव वाले हमारी रसोई के लिये ईंधन, घोड़े और बैलों के लिए घास प्रेम के साथ दे गये. दो तीन चारपाइयां भी पहुंच गईं.

हमारी मीटिंग दो बजे होने वाली है क्योंकि रात वाले पड़ाव तक पहुँचने के लिए हमें चार मील और चलना है. थोड़ी देर बाद पता चला कि मीटिंग शायद न हो सकेगी क्योंकि ठीक से सबको ख़बर नहीं भेजी जा सकी और न किसी मुनासिब जगह कहीं इन्तज़ाम ही हो सका. जल्दी ही यह मालूम हो गया कि यह सारी मुसीबत एक बड़े ज़मींदार साहब और उनके जी हुज़ूरों ने कर रक्खी है जो यहां रहते हैं. लेकिन हमारे आने की ख़बर किसी तरह फैल ही गई और किसान भाई जमा होना शुरू हो गये. पर उनके चेहरों पर घबराहट और परेशानी नज़र आती थी.

उन्होंने कुछ अचरज के साथ पूछा—"हमने सुना है कि कोई मीटिंग होने जा रही है? कहां किस जगह होगी?"

मैंने कहा—"यहां इन्हीं पेड़ों के नीचे और अभी अभी कर ली जाय."

छोटी सी मीटिंग हुई जिसमें क़रीब सौ आदमी थे. लेकिन उन्होंने सब बातें बड़े ध्यान से सुनीं. मीटिंग के बाद

گاؤں والوں نے بہت پریم سے ہمیں بیٹھایا اور آدر ستکار کیا. پانی پڑنے لگا جس کے کارن ٹھنڈ بہت بڑھ گئی. گاؤں والے بھی کافی جمع ہوگئے. اُن میں سے ایک جنا ہمارے لئے گرماگرم چائے لے آیا. اب گپ شروع ہوئی. جسے دیکھئے اسی بڈھے مہنت کی بات کرتا تھا کہ وہ کس بے رحمی سے گاؤں والوں کے ساتھ ویوہار کرتا ہے اور اسکی یہی کوشش رہتی ہے کہ زیادہ سے زیادہ زمین ہڑپ کر کے اُس میں ٹریکٹر چلوا دے.

میں نے آپ سے کہا—"یہ بوڑھا اُنہیں زمینداروں جیسا ہے جو اِن گاؤں میں اکثر ملا کرتے ہیں. بڑا اچھا ہوا کہ اس نے ہمیں اپنی آسامیوں کے بیچ پہنچا دیا."

آپ کچھ پریشان سے نظر آنے لگے اسلئے میں چپ ہوگئی.

میں نے گاؤں والوں سے کہا—"اب تو بادل صاف ہوگیا، ہم لوگوں کو چلنا چاہئے." گھوڑے پر سوار ہوکر جیسے ہم چلے، گاؤں والوں نے ہم سے درد بھری آواز میں کہا—"ہمیں بھولنا مت."

دس بجتے بجتے ہملوگ اپنے ٹھکانے پہنچ گئے.

یہاں پر ہمارے پہنچنے کی خبر لوگوں کو تھوڑی دیر پہلے ہماری بیل گاڑی کے آنے سے ہی لگی تھی. ہمارے اس دورے میں روز ایسا ہی ہوتا ہے کیونکہ کوئی خاص کارندے یا پرچار کے سادھن ہمارے پاس نہیں ہیں. آم کے ایک باغیچے میں ہمارا ڈیرہ ڈالا گیا ہے. گاؤں والے ہماری رسوئی کے لئے ایندھن، گھوڑے اور بیلوں کے لئے گھاس پریم کے ساتھ دے گئے. دو تین چارپائیاں بھی پہنچ گئیں.

ہماری میٹنگ دو بجے ہونے والی ہے کیونکہ رات والے پڑاؤ تک پہنچنے کے لئے ہمیں چار میل اور چلنا ہے. تھوڑی دیر بعد پتہ چلا کہ میٹنگ شاید نہ ہوسکے گی کیونکہ ٹھیک سے سب کو خبر نہیں بھیجی جاسکی اور نہ کسی مناسب جگہ کہیں انتظام ہی ہوسکا. جلدی ہی یہ معلوم ہوگیا کہ یہ ساری مصیبت ایک بڑے زمیندار صاحب اور اُن کے جی حضوروں نے کر رکھی ہے جو یہاں رہتے ہیں. لیکن ہمارے آنے کی خبر کسی طرح پھیل ہی گئی اور کسان بھائی جمع ہونا شروع ہوگئے. پر اُن کے چہروں پر گھبراہٹ اور پریشانی نظر آتی تھی.

اُنہوں نے کچھ اچرج کے ساتھ پوچھا—"ہم نے سنا ہے کہ کوئی میٹنگ ہونے جارہی ہے؟ کہاں کس جگہ ہوگی؟"

میں نے کہا—"یہاں اِنہیں پیڑوں کے نیچے اور ابھی ابھی کرلی جائے."

چھوٹی سی میٹنگ ہوئی جس میں قریب سو آدمی تھے. لیکن اُنہوں نے سب باتیں بڑے دھیان سے سنیں. میٹنگ کے بعد

चाहिये क्योंकि हम इस तरह की चीज़ें ज़ियादा देर तक नहीं बरदाश्त कर सकते."

अब हम अपने घोड़े पर सवार हुए और गांव वालों से प्रेम के साथ विदा ले कर चल पड़े. चारों तरफ़ खेत ही खेत नज़र आते हैं, कहीं कहीं इक्का दुक्का पेड़ हैं. हमारे घोड़े "पर्रर्रर........" करते हुए चले जा रहे हैं. कैसी प्यारी भीनी भीनी हवा चल रही है. ऊपर से कोयल कूक रही है और आम के पड़ोस वाले बग़ीचे में बत्तखें बोल रही हैं. बहुत ही सुहावना मौसम है और बड़ा आनन्द आ रहा है.

चलते चलते हम एक ऐसी जगह पहुंच गये जहां से दो रास्ते कटते थे. हम कोई अन्दाज़ नहीं लगा सकते थे कि हमारा गांव किधर पड़ेगा. लेकिन ओह हो! एक बैलगाड़ी चली आ रही है और गाड़ी वाले से हमने अपना रास्ता मालूम कर लिया. पता चला कि हमारा गांव यहां से आठ मील पर है.

यह लीजिये हम एक नदी किनारे पहुंच गये जो कि पहाड़ियों में घूमती फिरती चली जा रही है. अच्छा ही हुआ क्योंकि हमारे घोड़े भी प्यासे हो रहे हैं. इस नदी के आस पास भी वही हाल था जो मैंने अपने सफ़र में इस इलाक़े में कई जगह देखा. किनारे के आस पास की ज़मीन पर जहां ढोर चरा करते थे वहां हल चलवा दिये गये हैं. ज़रा यहां के गाय बैल तो देखिये, मानो उन्हें कब से खाना न मिला हो. बेचारे बालू पर नदी किनारे खड़े हुए हैं. और इस बे मौज़ूं ज़मीन पर जो काश्त की गई है ज़रा उसे देखिये—एक दम छोटी, ठुन्ठ और बेकार. क्या अनाज उपजाने का यही तरीक़ा है? घोड़ों ने पानी पिया और इस बीच मैंने आपको दिल की लगी बात कही कि सरकार के खेती और पशुपालन के महकमे कितने निकम्मे हैं. और फिर हम चल पड़े.

आसमान पर काली घटायें छाने लग गईं और यह देखिये बिजली भी चमकने लगी. रास्ते में जो एक गांव पड़ा तो हमने सहारा ढूंढा.

दूर से किसी ने आवाज़ दी—"बढ़िये तेज़ी से बढ़िये."

हमने देखा कि क़िले जैसा कोई पुराना मकान है जिसके दरवाज़े पर लम्बी दाढ़ी वाला एक महन्त बैठा हुआ है.

मैंने अपील करते हुए चीख़ कर कहा—"जो यह तूफ़ान आ रहा है उससे बचने के लिए हमें ठिकाना चाहिये. इत्मीनान रखिये कि हम आपकी किसी चीज़ को नुक़सान नहीं पहुंचायेंगे."

शान के साथ अपने हाथ से इशारा देते हुए उसने जवाब दिया—"बढ़िये बढ़िये."

तब मैंने आप से कहा—"चलिये, इस गांव में चलें और हमें इस बूढ़े की बाबत कुछ बातें पता चलेंगी."

چاہئیے کیوں کہ ہم اس طرح کی چیزیں زیادہ دیر تک نہیں برداشت کر سکتے."

اب ہم اپنے گھوڑے پر سوار ہوئے اور گاؤں والوں سے پریم کے ساتھ ودا لیکر چل پڑے. چاروں طرف کھیت ہی کھیت نظر آتے ہیں؛ کہیں کہیں اکا دکا پیڑ ہیں. ہمارے گھوڑے "پر........" کرتے ہوئے چلے جا رہے ہیں. کیسی پیاری بھینی بھینی ہوا چل رہی ہے. اوپر سے کوئل کوک رہی ہے اور آم کے پڑوس والے باغیچے میں بطخیں بول رہی ہیں. بہت ہی سہانا موسم ہے اور بڑا آنند آ رہا ہے.

چلتے چلتے ہم ایک ایسی جگہ پہنچ گئے جہاں سے دو راستے کٹتے تھے. ہم کوئی انداز نہیں لگا سکتے تھے کہ ہمارا گاؤں کدھر پڑیگا. لیکن اوہ او! ایک بیل گاڑی چلی آرہی ہے اور گاڑی والے سے ہم نے اپنا راستہ معلوم کر لیا. پتہ چلا کہ ہمارا گاؤں یہاں سے آٹھ میل پر ہے.

یہ لیجئے ہم ایک ندی کنارے پہنچ گئے جو کہ پہاڑیوں میں گھومتی پھرتی چلی جا رہی ہے. اچھا ہی ہوا کیونکہ ہمارے گھوڑے بھی پیاسے ہو رہے ہیں. اس ندی کے آس پاس بھی وہی حال تھا جو میں نے اپنے سفر میں اس علاقے میں کئی جگہ دیکھا. کنارے کے آس پاس کی زمین پر جہاں ڈھور چرا کرتے تھے وہاں ہل چلوا دیئے گئے ہیں. ذرا یہاں کے گائے بیل تو دیکھئے، مانو انہیں کب سے کھانا نہ ملا ہو. بیچارے بالو پر ندی کنارے کھڑے ہوئے ہیں. اور اس بے موضوں زمین پر جو کاشت کی گئی ہے ذرا اسے دیکھئے—ایک دم چھوٹی، ٹھنٹھ اور بیکار. کیا اناج اپجانے کا یہی طریقہ ہے؟ گھوڑوں نے پانی پیا اور اس بیچ میں نے آپ کو دل کی لگی بات کہی کہ سرکار کے کھیتی اور پشو پالن کے محکمے کتنے نکمے ہیں. اور پھر ہم چل پڑے.

آسمان پر کالی گھٹائیں چھانے لگ گئیں اور یہ دیکھئے بجلی بھی چمکنے لگی. راستے میں جو ایک گاؤں پڑا تو ہم نے سہارا ڈھونڈھا.

دور سے کسی نے آواز دی—"بڑھئے تیزی سے بڑھئے."

ہم نے دیکھا کہ قلعے جیسا کوئی پرانا مکان ہے جس کے دروازے پر لمبی داڑھی والا ایک مہنت بیٹھا ہوا ہے.

میں نے اپیل کرتے ہوئے چیخ کر کہا—"جو یہ طوفان آ رہا ہے اس سے بچنے کے لئے ہمیں ٹھکانا چاہئیے. اطمینان رکھئے کہ ہم آپ کی کسی چیز کو نقصان نہیں پہنچائیں گے."

شان کے ساتھ اپنے ہاتھ سے اشارہ دیتے ہوئے اس نے جواب دیا—"بڑھئے بڑھئے."

تب میں نے آپ سے کہا—"چلئے، اس گاؤں میں چلیں اور ہمیں اس بوڑھے کی بابت کچھ باتیں پتہ چلیں گی."

सब चीजें पैदा करते हैं—सरकार से अपना हाथ खींच लेंगे तो वह क्या कर सकती है ? उसे आपकी बात माननी ही पड़ेगी."

"हां मानेगी, ज़रूर मानेगी." एक उम्मीद भरे ने कहा.

"ठीक यही बात है, बहन जी सच कहती हैं. मैं आपसे कहता हूँ कि हमें उनके साथ दिल्ली जाना है और इस काम में कोई कोताही नहीं करनी है," दूसरे ने कहा.

इतनी देर में गांव का मुखिया आ पहुँचा. वह पढ़ा लिखा आदमी है और राजकाज भी थोड़ा बहुत समझता है. वह हम से अलग में बात करना चाहता है.

हम उसको साथ ले कर ज़रा दूसरी तरफ़ चले गये और फिर पूछा—"कहो क्या बात है ?"

उसने कहा—"एक ज़माना था मैं बड़ा पक्का कांग्रेसी था. लेकिन एक साल से ज़ियादा हुआ कि मैंने कांग्रेस छोड़ दी और अब इसी उधेड़बुन में हूँ कि कौन सी पार्टी में शरीक होऊं. कांग्रेस से तो मेरी तबियत एकदम ऊब गई है. जहां देखिये बेईमानी और रिश्वत. हमारा क्या हशर होने जा रहा है ? बिना रिश्वत के ज़रा सा भी काम नहीं होता. अगर चुंगी पर से बैलगाड़ी ले जानी हो तो चुंगी वालों को कुछ झुकाइये, चीनी मिल में अपना गन्ना देना हो या उसका पैसा लेना हो तो कुछ झुकाइये, सरकारी दफ़्तरों में जब तक कुछ हाथ न गरम कीजिये वह आपकी कुछ सुनते ही नहीं. और तोबा तोबा, अदालतों तक में रिश्वत चलती है ! ओफ़ ओ ! रिश्वत ही रिश्वत ! रिश्वत का ही बोल बाला है और यह कमबख़्त कन्ट्रोल तो बेईमान अफ़सरों और ब्योपारियों के हाथ की कठपुतली है. क्या इसी का नाम आज़ादी है ?" यह कह कर वह ठंडी सांस लेने लगा और फिर कहने लगा—"मैंने कम्युनिस्ट पार्टी को चिट्ठी भेजी है देखूं वहां से क्या जवाब आता है."

मैंने जवाब दिया—"तुम्हारे मन की हालत मैं समझ रही हूँ. लेकिन तुम इस पार्टी या उस पार्टी के फेर में मत पड़ो. सब पार्टियां गुनाबी बातें कहतीं हैं. मगर तुम्हारे मन का किसान राज इनमें से कोई नहीं देने वाला है. यह तो तुम्हें अपनी ताक़त से हासिल ही करना होगा."

इसके बाद वह कुछ सोचने लगा और फिर थोड़ी देर में ही कांग्रेस सरकार को गाली देने लगता है.

"यही वजह है जो मैं बापू राज के साथ आपके पास आई हूं. लेकिन अब हमें चलना चाहिये क्योंकि देर काफ़ी हो गई है."

मुखिया ने कहा—"अगर आप इस सरकार को सुधार सकती हैं तो मैं आपके साथ हूँ. लेकिन आपको जल्दी करनी

سب چیزیں پیدا کرتے ہیں—سرکار سے اپنا ہاتھ کھینچ لینگے تو وہ کیا کر سکتی ہے ؟ اسے آپ کی بات ماننی ہی پڑیگی ."

" ہاں مانے گی، ضرور مانے گی ." ایک اُمید بھرے نے کہا .

" ٹھیک یہی بات ہے، بہن جی سچ کہتی ہیں . میں آپ سے کہتا ہوں کہ ہمیں ان کے ساتھ دلی جانا ہے اور اس کام میں کوئی کوتاہی نہیں کرنی ہے ،" دوسرے نے کہا .

اتنی دیر میں گاؤں کا مکھیا آپہنچا . وہ پڑھا لکھا آدمی ہے اور راج کاج بھی تھوڑا بہت سمجھتا ہے . وہ ہم سے الگ میں بات کرنا چاہتا ہے .

ہم اسکو ساتھ لے کر ذرا دوسری طرف چلے گئے اور پھر پوچھا—" کہو کیا بات ہے؟"

اس نے کہا—" ایک زمانہ تھا میں بڑا پکا کانگریسی تھا . لیکن ایک سال سے زیادہ ہوا کہ میں نے کانگریس چھوڑ دی اور اب اسی ادھیڑ بن میں ہوں کہ کون سی پارٹی میں شریک ہوؤں . کانگریس سے تو میری طبیعت ایک دم اوب گئی ہے . جہاں دیکھئے بے ایمانی اور رشوت . ہمارا کیا حشر ہونے جا رہا ہے ؟ بنا رشوت کے ذرا سا بھی کام نہیں ہوتا . اگر چنگی پر سے بیل گاڑی لے جانی ہو تو چنگی والوں کو کچھ جھکائیے، چینی مل میں اپنا گنا دینا ہو یا اس کا پیسہ لینا ہو تو کچھ جھکائیے، سرکاری دفتروں میں جب تک کچھ ہاتھ نہ گرم کیجئے وہ آپ کی کچھ سنتے ہی نہیں، اور توبہ توبہ، عدالتوں تک میں رشوت چلتی ہے ! اوف او ! رشوت ہی رشوت ! رشوت کا ہی بول بالا ہے اور یہ کمبخت کنٹرول تو بے ایمان افسروں اور بیوپاریوں کے ہاتھ کی کٹھ پتلی ہے . کیا اسی کا نام آزادی ہے ؟" یہ کہکر وہ ٹھنڈی سانس لینے لگا اور پھر کہنے لگا—" میں نے کمیونسٹ پارٹی کو چٹھی بھیجی ہے دیکھوں وہاں سے کیا جواب آتا ہے ."

میں نے جواب دیا—" تمہارے من کی حالت میں سمجھ رہی ہوں . لیکن تم اس پارٹی یا اس پارٹی کے پھیر میں مت پڑو . سب پارٹیاں گلابی باتیں کرتی ہیں . مگر تمہارے من کا کسان راج ان میں سے کوئی نہیں دینے والا ہے . یہ تو تمہیں اپنی طاقت سے حاصل ہی کرنا ہوگا ."

اس کے بعد وہ کچھ سوچنے لگا اور پھر تھوڑی دیر میں ہی کانگریس سرکار کو گالی دینے لگتا ہے .

" یہی وجہ ہے جو میں باپو راج کے ساتھ آپ کے پاس آئی ہوں . لیکن اب ہمیں چلنا چاہئے کیونکہ دیر کافی ہوگئی ہے ."

مکھیا نے کہا—" اگر آپ اس سرکار کو سدھار سکتی ہیں تو میں آپ کے ساتھ ہوں . لیکن آپ کو جلدی کرنی

(नीचे जो मैं कहानी कहने जा रही हूँ उसकी सब घटनायें और चीजें सच्ची हैं और ऐसी हैं जिन्हें मैंने अपने हाल के दौरे में अनुभव किया था. अलबत्ता मैंने इतना ज़रूर किया है कि सारी घटनाओं को चौबीस घंटे के अन्दर रख देने के लिए उनका सिलसिला कुछ इधर उधर कर दिया है या उन्हें कम करके उनका निचोड़ रख दिया है. जो कोई इस चिट्ठी को पढ़े वही अपने को घोड़े पर सवार मेरा साथी समझ ले.)

बसन्त का मौसम है, सुबह का वक़्त, उत्तर भारत का एक गांव और ठंडी हवा चल रही है. हम लोग तड़के ही उठे, घोड़ों को खिलाया और उनका खुर हरा किया. हमने भी कुछ नाश्ता किया और फिर अपने सफ़र का सब सामान जैसे बिस्तर बर्तन वग़ैरा एक बैलगाड़ी में लाद दिया और अपनी टोली के दो तीन आदमियों को उसके साथ कर दिया और गाड़ी हमारे अगले मुक़ाम के लिए रवाना हो गई. हम लोग ज़रा ठहर जायें क्योंकि हमारा घोड़ा हमें बहुत जल्दी पहुंचा सकता है. आइये हम ज़रा इस गांव के स्कूल में चलें, जहां हम रात को ठहरे थे. इससे हमें गांव वालों से बात करने का मौक़ा मिलेगा और कल रात जो हमने मीटिंग की थी उसका उन पर क्या असर पड़ा यह भी मालूम हो जायगा. हमारी कल रात की मीटिंग में कोई पांच सौ लोग आये थे जिसमें हमने बापू राज की ख़ास ख़ास बातें बताई थीं. और जब हमने उनसे यह कहा कि यह चीज़ें हमने परचे पर छपवा ली हैं तो उस पर्चे की इतनी मांग हुई कि हम पूरी भी न कर सके.

हां तो हम स्कूल में आ गये. एक दो चारपाई पड़ी हैं, एक दो तख़्त. धीरे धीरे किसान भाई आने लगे.

उनमें से एक कहता है—"कल रात की सभा तो बड़ी अच्छी रही."

दूसरे ने कहा—"हां, बहन जी सच तो कहती हैं. हम सब को मिल जाना चाहिये और तभी हम इस सरकार को बदल सकते हैं. दिल्ली को कूच करने की बात मुझे बहुत पसन्द है. अगर हम हज़ारों की तादाद में जायेंगे तो सरकार को हमारी बात सुननी पड़ेगी."

इस बीच एक बूढ़ा किसान बोल उठा—"इतना कैसे मान लिया? बिना सत्याग्रह के वह नहीं सुनने वाली है."

"नहीं नहीं, सुनेगी कैसे नहीं."

"मैं तुमसे कहता हूँ कि हमें सत्याग्रह करना पड़ेगा." बूढ़े किसान ने ज़ोर देकर कहा.

"हमें यही उम्मीद रखनी चाहिये कि वह सुनेगी." मैं बोली—"लेकिन आप सबको इस पक्के इरादे के साथ आना चाहिये कि अगर उन्होंने बात नहीं सुनी तो हम सत्याग्रह करेंगे. जब आप लोग—जो जीवन की बुनियादी ज़रूरत की

(نیچے جو میں کہانی کہنے جا رہی ہوں اسکی سب گھٹنائیں اور چیزیں سچی ہیں اور ایسی ہیں جنہیں میں نے اپنے حال کے دورے میں انوبھو کیا تھا. البتہ میں نے اتنا ضرور کیا ہے کہ ساری گھٹناؤں کو چوبیس گھنٹے کے اندر رکھ دینے کے لئے اُنکا سلسلہ کچھ ادھر ادھر کر دیا ہے یا اُنہیں کم کر کے اُن کا نچوڑ رکھ دیا ہے. جو کوئی اس چھٹی کو پڑھے وہی اپنے کو گھوڑے پر سوار میرا ساتھی سمجھ لے.)

بسنت کا موسم ہے، صبح کا وقت، اتر بھارت کا ایک گاؤں اور ٹھنڈی ہوا چل رہی ہے. ہم لوگ تڑکے ہی اُٹھے، گھوڑوں کو کھلایا اور انکا کھر ہرا کیا. ہم نے بھی کچھ ناشتہ کیا اور پھر اپنے سفر کا سب سامان جیسے بستر برتن وغیرہ ایک بیل گاڑی میں لاد دیا اور اپنی ٹولی کے دو تین آدمیوں کو اُس کے ساتھ کر دیا اور گاڑی ہمارے اگلے مقام کے لئے روانہ ہوگئی. ہم لوگ ذرا ٹھہر جائیں کیونکہ ہمارا گھوڑا ہمیں بہت جلدی پہنچا سکتا ہے. آیئے ہم ذرا اس گاؤں کے اسکول میں چلیں، جہاں ہم رات کو ٹھہرے تھے. اِس سے ہمیں گاؤں والوں سے بات کرنے کا موقعہ ملیگا اور کل رات جو ہم نے میٹنگ کی تھی اسکا ان پر کیا اثر ہوا یہ بھی معلوم ہو جائیگا. ہماری کل رات کی میٹنگ میں کوئی پانچ سو لوگ آئے تھے جس میں ہم نے باپو راج کی خاص خاص باتیں بتائی تھیں اور جب ہم نے ان سے یہ کہا کہ یہ چیزیں ہم نے پرچے پر چھپوا لی ہیں تو اس پرچے کی اتنی مانگ ہوئی کہ ہم پوری بھی نہ کر سکے.

ہاں تو ہم اسکول میں آگئے. ایک دو چار پائی پڑی ہیں، ایک دو تخت. دھیرے دھیرے کسان بھائی آنے لگے.

انمیں سے ایک کہتا ہے—"کل رات کی سبھا تو بڑی اچھی رہی."

دوسرے نے کہا—"ہاں، بہن جی سچ تو کہتی ہیں. ہم سب کو مل جانا چاہئے اور تبھی ہم اس سرکار کو بدل سکتے ہیں. دلی کو کوچ کرنے کی بات مجھے بہت پسند ہے. اگر ہم ہزاروں کی تعداد میں جائینگے تو سرکار کو ہماری بات سننی پڑے گی."

اس بیچ ایک بوڑھا کسان بول اُٹھا—"اتنا کیسے مان لیا؟ بنا ستیا گرہ کے وہ نہیں سننے والی ہے."

"نہیں نہیں، سنے گی کیسے نہیں."

"میں تم سے کہتا ہوں کہ ہمیں ستیاگرہ کرنا پڑیگا." بوڑھے کسان نے زور دیکر کہا.

"ہمیں یہی امید رکھنی چاہئے کہ وہ سنے گی." میں بولی—"لیکن آپ سب کو اِس پکے ارادے کے ساتھ آنا چاہئے کہ اگر اُنہوں نے بات نہیں سنی تو ہم ستیاگرہ کرینگے. جب آپ لوگ—جو جیون کی بنیادی ضرورت کی

कांगरेस नेताओं के नाम खुली चिट्ठी

मेरे प्यारे भाइयो !

हाथ जोड़ कर मेरी आपसे बिनती है कि अपना पूरा ध्यान मेरी तरफ़ दीजिये. और सुनिये इस कहानी को जो मैं कहना चाहती हूं. एक ज़माना था कि हम सब साथ साथ, कंधे से कंधा मिलाकर, एक ही मक़सद के लिए लड़ते थे. इसलिये मेरी तरफ़ टेढ़ी निगाह से न देख कर मुझे अपनी साथिन समझिये जिसकी यह कोशिश है कि देहात की जो असली हालत है उसको आप कुछ महसूस कर सकें और उससे वाक़िफ़ होकर आपके अन्दर—आप जो चोटी पर हैं और कुल काम धाम की बागडोर जिनके हाथ में है—यह चेतना पैदा हो जाय कि आप अपनी नीति और अमल में एक बेलाग और इन्क़लाबी तब्दीली कर सकें. बिना इसके कांगरेस ज़रूर ही ख़त्म हो जायगी क्योंकि देहात की आम जनता में—जो इसके हज़ारों लाखों की तदाद में वोटर हैं—इसका जो एक ज़माने में असर था वह ख़त्म सा हो गया है.

मैं कोई हल्की बात नहीं कह रही हूं, न आप इसे ऐसी चीज़ ही समझें जैसी कि राजनीति वाले विरोधी पार्टियों से कहा करते हैं. सच यह है अगर कांगरेस को अपना पिछला नाम रोशन रखना है तो उसे किसी मामूली राज काजी या सियासी पार्टी की तरह नहीं होना चाहिये बल्कि उसे जनता का निडर रहबर और सेवक होना चाहिये. इसी भावना से मैं आपको यह चिट्ठी लिख रही हूँ क्योंकि उम्मीद न हो कर भी मुझे यह उम्मीद है कि आप बापू के बताये रास्ते पर ख़ुद ब ख़ुद चलेंगे और चल सकते हैं.

मेरा यक़ीन है कि हिन्दुस्तान के किसानी समाज को आज की हालत से बहुत गहरा और ख़तरनाक असन्तोष है. मैं यह इस आधार पर कह रही हूँ कि यहां के देहाती जीवन और उसके नज़रिये से मेरा बहुत पुराना परिचय है. हाल ही में पच्छिम यू पी. के गांव में जो मैं घोड़े पर घूमी तो उससे मेरा यह विश्वास सोलह आने और भी पक्का हो गया. मैं इस चिट्ठी में यही कोशिश करूंगी कि आपकी आंखों के सामने वह तस्वीर पेश करूं जो मैंने ख़ुद देखी है और आपके कानों में उस आवाज़ की गूंज पहुँचा दूँ जो मैंने सुनी है.

आइये, मेरे साथ आइये, हम दोनों घोड़े पर सवार हो लें और फिर देहात की हालत देखें. आप में से जो लोग घोड़े की सवारी सचमुच नहीं जानते हैं वह दिमाग़ी तौर से मेरे साथ बैठ सकते हैं और इत्मिनान रखिये कि आपको काफ़ी मज़ा आएगा'

کانگریس نیتاؤں کے نام کھلی چٹھی

میرے پیارے بھائیو !

ہاتھ جوڑ کر میری آپ سے بنتی ہے کہ اپنا پورا دھیان میری طرف دیجئے ۔ اور سنیئے اس کہانی کو جو میں کہنا چاہتی ہوں ۔ ایک زمانہ تھا کہ ہم سب ساتھ ساتھ کندھے سے کندھا ملا کر ایک ہی مقصد کے لئے لڑتے تھے ۔ اس لئے میری طرف ٹیڑھی نگاہ سے نہ دیکھکر مجھے اپنی ساتھن سمجھئے جس کی یہ کوشش ہے کہ دیہات کی جو اصلی حالت ہے اسکو آپ کچھ محسوس کر سکیں اور اس سے واقف ہوکر آپ کے اندر—آپ جو چوٹی پر ہیں اور کل کام دھام کی باگڈور جن کے ہاتھ میں ہے—یہ چیتنا پیدا ہوجائے کہ آپ اپنی نیتی اور عمل میں ایک بے لاگ اور انقلابی تبدیلی کر سکیں. بنا اس کے کانگریس ضرور ہی ختم ہو جائیگی کیونکہ دیہات کی عام جنتا میں—جو اس کے ہزاروں لاکھوں کی تعداد میں ووٹر ہیں—اس کا جو ایک زمانے میں اثر تھا وہ ختم سا ہو گیا ہے ۔

میں کوئی ہلکی بات نہیں کہ رہی ہوں' نہ آپ اسے ایسی چیز ہی سمجھیں جیسی کہ راج نیت والے ورودھی پارٹیوں سے کہا کرتے ہیں ۔ سچ یہ ہے اگر کانگریس کو اپنا پچھلا نام روشن رکھنا ہے تو اسے کسی معمولی راجکاجی یا سیاسی پارٹی کی طرح نہیں ہونا چاہئیے بلکہ اسے جنتا کا نڈر رہبر اور سیوک ہونا چاہئیے ۔ اسی بھاونا سے میں آپ کو یہ چٹھی لکھ رہی ہوں کیونکہ امید نہ ہو کر بھی مجھے یہ امید ہے کہ آپ باپو کے بتائے راستے پر خود بخود چلیں گے اور چل سکتے ہیں ۔

میرا یقین ہے کہ ہندستان کے کسانی سماج کو آجکی حالت سے بہت گہرا اور خطرناک اسنتوش ہے۔ میں یہ اس آدھار پر کہ رہی ہوں کہ یہاں کے دیہاتی جیون اور اس کے نظریئے سے میرا بہت پرانا پریچے ہے ۔ حال ہی میں پچھم یو ۔ پی کے گاؤں میں جو میں گھوڑے پر گھومی تو اس سے میرا یہ وشواس سولہ آنے اور بھی پکا ہوگیا۔ میں اس چٹھی میں یہی کوشش کرونگی کہ آپ کی آنکھوں کے سامنے وہ تصویر پیش کروں جو میں نے خود دیکھی ہے اور آپ کے کانوں میں اس آواز کی گونج پہنچا دوں جو میں نے سنی ہے ۔

آئیے' میرے ساتھ آئیے' ہم دونوں گھوڑے پر سوار ہو لیں اور پھر دیہات کی حالت دیکھیں ۔ آپ میں سے جو لوگ گھوڑے کی سواری سچ مچ نہیں جانتے ہیں وہ دماغی طور سے میرے ساتھ بیٹھ سکتے ہیں اور اطمینان رکھئے کہ آپ کو کافی مزہ آئیگا ۔

अहमियत को समझेंगे. इतना मैं ज़रूर जानता हूँ कि सारे भारत की भाषा न उर्दू हो सकती थी न हिन्दी हो सकेगी, क्योंकि इनमें वह मैलान या झुकाव नहीं है जो उन्हें सारे मुल्क की भाषा बना सके. सारे मुल्क की भाषा सिर्फ़ हिन्दुस्तानी हो सकती है जिस को तरक़्क़ी देने या फैलाने के लिए मुख्तलिफ़ लोग कोशिश कर रहे हैं. ज़रूरत इस बात की है कि इन कोशिशों को यकजा किया जाय, खाम किया जाय और विद्याई सांचे में ढाल कर इस क़ाबिल बनाया जाय कि वह अपने बल बूते पर सफल हों.

अगर हम हिन्दी और उर्दू के मुक़ाबले में हिन्दुस्तानी को बढ़ाना चाहते हैं और हिन्दुस्तानी को भी बड़े कारोबार, ऊंचे समाज की ज़बान बनाना चाहते हैं तो हमारे लिए हज़ारों की तैदाद में नये लफ़्ज़ों और इस्तलाहों का बनाना, ढालना और गढ़ना लाज़मी है. इसके लिए ऐसे शब्द बनाना पड़ेंगे जिन का रंग व रूप और आत्मा या भीतरी सांचा हिन्दुस्तानी हो.

इन ही विचारों से मुतास्सिर हो कर मैं भी हिन्दुस्तानी के सेवा दल में शरीक हो गया हूँ और अपनी हैसियत के मुआफ़िक़ हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी देने के लिए भांत भांत के उपायों पर ग़ौर करता रहता हूँ. इस बारे में कोई तजवीज़ें सुनने और हिन्दी और उर्दू रिसालों के लेख पढ़ने के अलावा मैंने ख़ुद भी ग़ौर किया है. मुझे बार बार यह एहसास हुआ कि हिन्दी और उर्दू में यकसां तौर पर चल सकने वाले लफ़्ज़ बनाने के असूल साफ़ और सही तौर पर नहीं मुक़र्रर किये गये, और इन असूलों पर बहुत कम लफ़्ज़ बनाये गये हैं. इसलिये हिन्दुस्तानी को तरक़्क़ी देने या हिन्दी और उर्दू में यकसां तौर पर चल सकने वाले लफ़्ज़ों की तैदाद बढ़ाने के लिए हिन्दुस्तानी शब्दयात के असूल साफ़ लफ़्ज़ों में मुक़र्रर करने चाहियें और निडर हो कर उन असूलों के मुताबिक़ सैकड़ों लफ़्ज़ और कई हज़ार इस्तलाहें बनानी चाहियें ताकि हिन्दुस्तानी में नये नये लफ़्ज़ और इस्तलाहें बनाने की बुनियाद क़ायम हो जाय और धीरे धीरे हिन्दुस्तानी में हर क़िस्म के लफ़्ज़ चलना पा कर हिन्दुस्तानी को कारोबारी, समाजी, राजकाजी और विद्याई भाषा बना सकें.

इन ही बातों को जिन में से कुछ अपनी हैं, कुछ पराई हैं, कुछ अपनाई हैं, मैं आगे पेश कर रहा हूँ. हर असूल को समझाने के लिए जो मिसालें दी गई हैं उनमें भी कई दूसरों की और बाज़ अपनी हैं. दूसरों के और अपने बनाये हुए शब्दों को ज़ाहिर करना बेकार था. भाषा के जौहरी उनको ख़ुद ही अलग कर सकेंगे और असल में यह देखना चाहिये कि लफ़्ज़ कैसे हैं न यह कि किसके बनाये हैं.

(बाक़ी फिर)

اهمیت کو سمجھینگے ۔ اتنا میں ضرور جانتا ہوں کہ سارے بھارت کی بھاشا نہ اردو ہوسکتی تھی نہ ہندی ہوسکیگی، کیوں کہ ان میں وہ میلان یا جھکاؤ نہیں ہے جو انہیں سارے ملک کی بھاشا بنا سکے ۔ سارے ملک کی بھاشا صرف ہندستانی ہوسکتی ہے جس کو ترقی دینے یا پھیلانے کے لئے مختلف لوگ کوشش کر رہے ہیں۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ان کوششوں کو یکجا کیا جائے، خام کیا جائے اور ودیائی سانچے میں ڈھال کر اس قابل بنایا جائے کہ وہ اپنے بل بوتے پر سپھل ہوں ۔

اگر ہم ہندی اور اردو کے مقابلے میں ہندستانی کو بڑھانا چاہتے ہیں اور ہندستانی کو بھی بڑے کاروبار، اونچے سماج کی زبان بنانا چاہتے ہیں تو ہمارے لئے ہزاروں کی تعداد میں نئے لفظوں اور اصطلاحوں کا بنانا، ڈھالنا اور گڑھنا لازمی ہے ۔ اس کے لئے ایسے شبد بنانا پڑینگے جن کا رنگ و روپ اور آتما یا بھیتری سانچا ہندستانی ہو ۔

ان ہی وچاروں سے متاثر ہوکر میں بھی ہندستانی کے سیوا دل میں شریک ہوگیا ہوں اور اپنی حیثیت کے موافق ہندستانی کو ترقی دینے کے لئے بھانت بھانت کے اپایوں پر غور کرتا رہتا ہوں ۔ اس بارے میں کئی تجویزیں سننے اور ہندی اور اردو رسالوں کے لیکھ پڑھنے کے علاوہ میں نے خد بھی غور کیا ہے ۔ مجھے بار بار یہ احساس ہوا کہ ہندی اور اردو میں یکساں طور پر چل سکنے والے لفظ بنانے کے اصول صاف اور صحی طور پر نہیں مقرر کئے گئے، اور ان اصولوں پر بہت کم لفظ بنائے گئے ہیں۔ اس لئے ہندستانی کو ترقی دینے یا ہندی اور اردو میں یکساں طور پر چل سکنے والے لفظوں کی تعداد بڑھانے کے لئے ہندستانی شبدیات کے اصول صاف لفظوں میں مقرر کرنے چاہئیں اور نڈر ہوکر ان اصولوں کے مطابق سیکڑوں لفظ اور کئی ہزار اصطلاحیں بنانی چاہئیں تاکہ ہندستانی میں نئے نئے لفظ اور اصطلاحیں بنانے کی بنیاد قائم ہو جائے اور دھیرے دھیرے ہندستانی میں ہر قسم کے لفظ چلن پاکر ہندستانی کو کاروباری، سماجی، راج کاجی اور ودیائی بھاشا بنا سکیں ۔

ان ہی باتوں کو جن میں سے کچھ اپنی ہیں، کچھ پرائی ہیں، کچھ اپنائی ہیں، میں آگے پیش کر رہا ہوں۔ ہر اصول کو سمجھانے کے لئے جو مثالیں دی گئی ہیں ان میں بھی کئی دوسروں کی اور باز اپنی ہیں ۔ دوسروں کے اور اپنے بنائے ہوئے شبدوں کو ظاہر کرنا بیکار تھا۔ بھاشا کے جوہری ان کو خد ہی الگ الگ کرسکینگے اور اصل میں یہ دیکھنا چاہئے کہ لفظ کیسے ہیں نہ یہ کہ کس کے بنائے ہیں ۔

(باقی پھر)

मुल्कों के तजुरबों और बड़े बड़े माहिरों का पक्का फ़सला है कि तालीम का ज़रिया वह भाशा होनी चाहिये जो लोगों की मादरी ज़बान यानी क़ुदरती तौर पर सीखी हुई भाशा हो. क़ुदरती तौर पर सीखी और समझी जा सकने वाली भाशा हम लोगों की हद तक न तो कड़ियल उर्दू है और न कठिन हिन्दी, बल्कि आसान और सबके समझ में आने वाली हिन्दुस्तानी है. इसलिये तालीम का ज़रिया हमारे लिए हिन्दुस्तानी मुनासिब है.

सभ्याताई क़द्रों के बदलने से लोगों के ख्याल भी बदल रहे हैं. हर आदमी ज़ियादा से ज़ियादा आराम से, सुख चैन की ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता है और सुख चैन के लिए धन दौलत का हासिल करना ज़रूरी समझता है. आज कल खुशी और ठाठ चैन और मौज की क़द्रें बढ़ रही हैं. इनको हासिल करने के लिए तालीम ज़रूरी है और तालीम के लिये भाशा लाज़मी है. ग़रज़ नये ज़माने की सभ्यता में ज़बान असल चीज़ नहीं रही बल्कि असल चीज़ तक पहुँचने का ज़रिया हो गई है. धन दौलत की क़द्र बढ़ गई. निजी हैसियत से भाशा की क़द्र कम हो गई है.

जब तक तालीम से कम लोगों को सरोकार था यह ज़ियादा हरज की बात न थी कि भाशा मुश्किल होती. जब से तालीम सबके सरोकार की चीज़ हो गई है यह सवाल बहुत अहम हो गया है कि ज़बान को आसान किया जाय और मजबूरन मुश्किल ज़बान इस्तेमाल करना पड़े तो मुश्किल ज़बान कम से कम मुश्किल हो. मौजूदा ज़माने में लोगों पर धन दौलत तालीम और कलचर का इतना बार है कि वह इनके अलावा भाशा के बार को उठाना नहीं चाहते. ख़ास कर जब कि उन्हें मालूम होता है कि भाशा के बार को हल्का किया जा सकता है.

दुर्भाग्य से हिन्दी वाले और उर्दू प्रेमी दोनों अपने अपने भाशाई बार को बढ़ा रहे हैं. इसलिये मजबूर हो कर हिन्दुस्तानी के पक्षपाति सब के फ़ायदे और सहूलत के लिए इस मिलवां भाशा को तरक़्क़ी देना चाहते हैं, जिसे और कुछ नहीं तो सिर्फ़ इसलिये पनपाना और बचाना हमारा फ़र्ज़ है कि वह महात्मा गांधी के रचनात्मक कामों यानी क़ौमी तामीरी प्रोग्राम का जुज़ थी. अगर आप मानते हैं कि हिन्दी और उर्दू की फूट को कम करना चाहिये और हिन्दी उर्दू में यकसां तौर पर चल सकने वाले शब्दों की तैदाद बढ़ानी चाहिये तो सिवाय हिन्दुस्तानी अख़्तियार करने के और कोई चारा नहीं !

मैं नहीं जानता कि हिन्दुस्तानी को इस क़दर तरक़्क़ी होगी कि वह हिन्दी और उर्दू से ज़ियादा बलवान हो जायेगी; मैं नहीं जानता कि हमारे देस के हज़ारों लाखों लोग सच्चे दिल से हिन्दुस्तानी को अपनायेंगे और राज काजी बंटवारे के होते हुए सारे भारत के लिए एक भाशा की ज़रूरत और

ملکوں کے تجربوں اور بڑے بڑے ماهروں کا پکا فیصلہ ہے کہ تالیم کا زریعا وہ بھاشا ہونی چاہئے جو لوگوں کی مادری زبان یانی قدرتی تور پر سیکھی ہوئی بھاشا ہو. قدرتی تور پر سیکھی اور سمجھی جا سکنے والی بھاشا ہم لوگوں کی حد تک نہ تو کڑیل اُردو ہے اور نہ کٹھن ہندی، بلکہ آسان اور سب کے سمجھ میں آنے والی ہندستانی ہے۔ اس لئے تالیم کا زریعا ہمارے لئے ہندستانی مناسب ہے .

سبھیتائی قدروں کے بدلنے سے لوگوں کے خیال بھی بدل رہے ہیں۔ ہر آدمی زیادا سے زیادا آرام سے، سکھ چین کی زندگی گزارنا چاہتا ہے اور سکھ چین کے لئے دھن دولت کا حاصل کرنا ضروری سمجھتا ہے. آج کل خشی اور ٹھاٹھ چین اور موج کی قدریں بڑھ رہی ہیں . اِن کو حاصل کرنے کے لئے تالیم ضروری ہے اور تالیم کے لئے بھاشا لازمی ہے . غرض نئے زمانے کی سبھیتا میں زبان اصل چیز نہیں رہی بلکہ اصل چیز تک پہنچنے کا ذریعا ہوگئی ہے . دھن دولت کی قدر بڑھ گئی . نجی حیثیت سے بھاشا کی قدر کم ہوگئی ہے .

جب تک تالیم سے کم لوگوں کو سروکار تھا یہ زیادہ حرج کی بات نہ تھی کہ بھاشا مشکل ہوتی . جب سے تالیم سب کے سروکار کی چیز ہوگئی ہے یہ سوال بہت اہم ہوگیا ہے کہ زبان کو آسان کیا جائے اور مجبوراً مشکل زبان استعمال کرنا پڑے تو مشکل زبان کم سے کم مشکل ہو۔ موجودہ زمانے میں لوگوں پر دھن، دولت تالیم اور کلچر کا اتنا بار ہے کہ وہ اِن کے علاوا بھاشا کے بار کو اُٹھانا نہیں چاہتے . خاص کر جب کہ انہیں معلوم ہوتا ہے کہ بھاشا کے بار کو ہلکا کیا جاسکتا ہے .

دربھاگیہ سے ہندی والے اور اُردو پریمی دونوں اپنے اپنے بھاشائی بار کو بڑھا رہے ہیں . اس لئے مجبور ہوکر ہندستانی کے پکش پاتی سب کے فائدے اور سہولت کے لئے اِس ملواں بھاشا کو ترقی دینا چاہتے ہیں، جسے اور کچھ نہیں تو صرف اس لئے پنپانا اور بچانا ہمارا فرض ہے کہ وہ مہاتما گاندھی کے رچناتمک کاموں یانی قومی تامیری پروگرام کا جز تھی . اگر آپ مانتے ہیں کہ ہندی اور اُردو کی پھوٹ کو کم کرنا چاہئے اور ہندی اُردو میں یکساں تور پر چل سکنے والے شبدوں کی تعداد بڑھانی چاہئے تو سوائے ہندستانی اختیار کرنے کے اور کوئی چارا نہیں !

میں نہیں جانتا کہ ہندستانی کو اِس قدر ترقی ہوگی کہ وہ ہندی اور اُردو سے زیادہ بلوان ہو جائیگی؛ میں نہیں جانتا کہ ہمارے دیش کے ہزاروں لاکھوں لوگ سچے دل سے ہندستانی کو اپنائینگے اور راجکاجی بٹوارے کے ہوتے ہوئے سارے بھارت کے لئے ایک بھاشا کی ضرورت اور

झमेले में पड़ जाता. जहां जहां उर्दू बोलने वाले हैं वह सदियों से हिन्दी का प्रचार कर रहे हैं और आज भी यही पराने ग़ैर हिन्दी इलाक़ों में हिन्दी के मुस्तक़िल अड्डे या मोहरे हैं. इस बात को मुकरना हक़ीक़त को झुटलाना है. आधी उर्दू और तीन चौथाई हिन्दुस्तानी हिन्दी है. इसलिये उर्दू की तरक़्क़ी और हिन्दुस्तानी के पनपने से लाज़मी तौर पर हिन्दी भी फैलती है. तमाम ग़ैर हिन्दी इलाक़ों में उर्दू और हिन्दुस्तानी बोलने वालों की वजह से हिन्दुस्तानी का आदर बढ़ा. चाहे हिन्दी वाले इस बात से इनकार करें और हिन्दुस्तानी के एहसान को न मानें मगर सिर्फ़ इनकार करने से हक़ीक़त नहीं बदलती.

जब हिन्दुस्तानी से हिन्दी को अहमियत बढ़ी तो आज हिन्दी की मुख़ालफ़त क्यों की जा रही है और हिन्दुस्तानी का प्रचार क्यों किया जा रहा है ? इसका जवाब यह है कि हिन्दी की मुख़ालफ़त नहीं हो रही बल्कि शुद्ध हिन्दी को ग़लत समझ कर और शुद्ध हिन्दी को आख़ीर में ना काम होने वाली तहरीक समझ कर आसान हिन्दी यानी हिन्दुस्तानी का प्रचार किया जा रहा है, जो जनता की भाशा और आम तौर पर बोली जाने वाली हिन्दी ही है. अलबत्ता हिन्दुस्तानी अब तक बोल चाली भाशा थी और आम कामों और मामलों के निबटाने में बोली जाती थी. जैसे जैसे जीवन मेयार बढ़ता जा रहा है, कारोबार फैलते जा रहे हैं, कारख़ाने क़ायम हो रहे हैं, तालीम फैल रही है. विद्या से सभ्यताई मसले हल करने में मदद ली जा रही है, यह ज़रूरत बढ़ रही है और ज़ियादा गहराई से महसूस हो रही है कि देसी भाशाओं को विद्याई, सनअती, कारबारी, समाजी, ब्योपारी और साइन्सी कामों में काम आ सकने के क़ाबिल बनाया जाय. इसी सिलसिले में हिन्दुस्तानी को भी काम काजी बनाने की ज़रूरत आ पड़ी है. ख़ास कर इसलिये कि जिन असूलों पर हिन्दी और उरदू को तरक़्क़ी दी जा रही है वह हिन्दुस्तानी प्रेमियों के नज़दीक ठीक नहीं हैं.

क्यों ठीक नहीं हैं ? इसलिये कि जीवन मेयार के साथ सभ्यता भी बदल रही है और नई पुरानी चीज़ों की क़दरें घट बढ़ रही हैं. तालीम आम हो रही है. पहले तालीम सिर्फ़ चन्द लोगों के काम आती थी, आज कल बहुत सों के काम आती है. दो चार देहाइयों बाद वह सबके लिए ज़रूरी हो जायगी. जब तक तालीम चन्द आदमियों का दिल बहलावा या काम काजी ज़रिया थी यह सवाल कम अहम था कि तालीम की ज़बान कैसी होनी चाहिये और क्या होनी चाहिये ? जब से तालीम बहुत सों के लिए ज़रूरी हो गई है और उसको सौ फ़ीसदी आबादी के लिए लाज़मी करना समाज और राजकाज का मक़सद ठहरा है तालीम की अहमियत के साथ साथ इस सवाल की अहमियत बढ़ गई कि तालीम की ज़बान क्या और कैसी होनी चाहिये. कई

جھمیلے میں پڑجاتا. جہاں جہاں اُردو بولنے والے ہیں وہ سدیوں سے ہندی کا پرچار کر رہے ہیں اور آج بھی یہی پرانے غیر ہندی الاقوں میں ہندی کے مستقل اڈے یا مہرے ہیں . اس بات کو مکرنا حقیقت کو جھٹلانا ہے . آدھی اُردو اور تین چوتھائی ہندستانی ہندی ہے . اس لئے اُردو کی ترقی اور ہندستانی کے پلپنے سے لازمی تور پر ہندی بھی پھیلتی ہے . تمام غیر ہندی الاقوں میں اُردو اور ہندستانی بولنے والوں کی وجہ سے ہندستانی کا آدر بڑھا . چاہے ہندی والے اِس بات سے اِنکار کریں اور ہندستانی کے احسان کو نہ مانیں مگر سرف انکار کرنے سے حقیقت نہیں بدلتی.

جب ہندستانی سے ہندی کی اہمیت بڑھی تو آج ہندی کی مخالفت کیوں کی جا رہی ہے اور ہندستانی کا پرچار کیوں کیا جا رہا ہے؟ اس کا جواب یہ ہے کہ ہندی کی مخالفت نہیں ہو رہی بلکہ شدھ ہندی کو غلط سمجھکر اور شدھ ہندی کو آخر میں ناکام ہونے والی تحریک سمجھکر آسان ہندی یانی ہندستانی کا پرچار کیا جا رہا ہے، جو جنتا کی بھاشا اور آم تور پر بولی جانے والی ہندی ہی ہے . البتہ ہندستانی اب تک بول چالی بھاشا تھی اور آم کاموں اور ماملوں کے نپٹانے میں بولی جاتی تھی . جیسے جیسے جیون میار بڑھتا جا رہا ہے، کاروبار پھیلتے جا رہے ہیں، کارخانے قائم ہو رہے ہیں . تالیم پھیل رہی ہے . ودیا سے سبھیتائی مسئلے حل کرنے میں مدد لی جا رہی ہے، یہ ضرورت بڑھ رہی ہے اور زیادا گہرائی سے محسوس ہو رہی ہے کہ دیسی بھاشاؤں کو ودیائی، سنعتی، کاروباری، سماجی، بیوپاری اور سائنسی کاموں میں کام آ سکنے کے قابل بنایا جائے . اسی سلسلے میں ہندستانی کو ترقی دینے اور ہندستانی کو بھی کام کاجی بنانے کی ضرورت آ پڑی ہے . خاص کر اِس لئے کہ جن اصولوں پر ہندی اور اُردو کو ترقی دی جا رہی ہے وہ ہندستانی پریمیوں کے نزدیک ٹھیک نہیں ہیں .

کیوں ٹھیک نہیں ہیں؟ اس لئے کہ جیون میار کے ساتھ سبھیتا بھی بدل رہی ہے اور نئی پرانی چیزوں کی قدریں گھٹ بڑھ رہی ہیں . تالیم آم ہو رہی ہے . پہلے تالیم سرف چند لوگوں کے کام آتی تھی، آجکل بہت سوں کے کام آتی ہے . دو چار دیہائیوں باد وہ سب کے لئے ضروری ہو جائیگی . جب تک تالیم چند آدمیوں کا دل بہلاوا یا کام کاجی ذریعہ تھی یہ سوال کم اہم تھا کہ تالیم کی زبان کیسی ہونی چاہئے اور کیا ہونی چاہئے ؟ جب سے تالیم بہت سوں کے لئے ضروری ہوگئی ہے اور اُس کو سوفی صدی آبادی کے لئے لازمی کرنا سماج اور راج کاج کا مقصد ٹھہرا ہے تالیم کی اہمیت کے ساتھ ساتھ اِس سوال کی اہمیت بڑھ گئی کہ تالیم کی زبان کیا اور کیسی ہونی چاہئے. کئی

न हमेशा हमेशा के लिये टूट सकते हैं. बंटवारे के बावजूद कारोबारी, व्योपारी, समाजी, विद्याई, साइन्सी सम्बंध क़ायम रहेंगे और बढ़ेंगे. हिन्दुस्तान के तीन टुकड़े कर दिये गये मगर इन टुकड़ों को जोड़ सकने वाली ताक़त मिलवां और आम समझ भाषा के रूप में क़ायम रहे तो फिर से अखंड हिन्दुस्तान पैदा हो सकता है. अखंड हिन्दुस्तान न भी पैदा हो तब भी भारत के मुख़्तलिफ़ प्रान्तों में राजकाजी, व्योपारी, समाजी, विद्याई, साइन्सी, कारोबारी और सनअती (उद्योगी) बन्धनों को क़ायम रखने वाली और सब को हर तरह का फ़ायदा और सहूलत पहुँचाने वाली वह भाषा होगी जिसे हम हिन्दुस्तानी कहते हैं. जिससे मुराद वह सरल हिन्दी या आसान उर्दू है जो पिछले जमानों की तरह मुख़्तलिफ़ भाषाओं के शब्द लेती, अपनाती, टकसालती और सारे देस में चलाती है.

इसमें शक नहीं कि शुद्ध हिन्दी के तीन बड़े इलाक़े हैं: उत्तर प्रदेश (अगरा और अवध), बिहार और मध्य भारत जिसमें वह हिस्सा भी शामिल कर लिया जाय जो अब मध्य प्रदेश का हिन्दी इलाक़ा है. इसके बरअक्स हिन्दुस्तानी का हक़ीक़ी और या काम में आ सकने वाला इलाक़ा बक़िया सब मुल्क है. ख़ालिस हिन्दी इलाक़ों की भी आम जनता और जनता पसन्द विद्वान हिन्दुस्तानी के पक्षपाति हैं, और रहेंगे. महाराष्ट्र, बंगाल, आसाम, उड़ीसा और तेलंगाना के लोग शुद्ध हिन्दी से जियादा हिन्दुस्तानी से वाबस्ता हैं. ख़ास कर बोल चाल और काम काज में हिन्दुस्तानी का चलन होगा. विद्या, बासू, बिनोद, राबीन्द्र नाथ कहने वाले बंगालियों को कहां तक डंडे मार मार कर सिखाया जा सकेगा कि विद्या, वसु, विनोद और रवीन्द्र नाथ शुद्ध हैं.

हिन्दुस्तानी का भविश्य सब से जियादा इन करोड़ों हिन्दू मुसलमानों की वजह से रौशन है जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों में रहते बसते हैं और मादरी ज़बान की हैसियत से हिन्दुस्तानी बोलते हैं. मैसूर और मदरास, महाराष्ट्र और तेलंगाना, सिन्ध और बंगाल, सरहद और आसाम में करोड़ों लोग हैं जो न तो अदबी उर्दू बोलते हैं और न अदबी हिन्दी, इनकी ज़बान एक क़िस्म की मिलवां भाषा है जिसे अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तानी कहा है और यह नाम सही मालूम होता है.

हिन्दुस्तानी का भविश्य इन लोगों की वजह से भी अच्छा मालूम देता है जो उर्दू से वाबस्ता हैं. उर्दू का यह अहसान हिन्दी पर हमेशा रहेगा कि उर्दू की तरक़्क़ी से लाज़मी तौर पर हिन्दी के फैलने, बढ़ने और क़ौमी अहमियत हासिल करने में मदद मिली. अगर भारत में करोड़ों उर्दू बोलने वाले न हो तो हिन्दी के राज भाषा बनने का सवाल

نہ ہمیشہ ہمیشہ کے لئے ٹوٹ سکتے ہیں ۔ بٹوارے کے باوجود کاروباری، بیوپاری، سماجی، ودیائی، سائنسی سمبندھ قائم رہیں گے اور بڑھیں گے ۔ ہندستان کے تین ٹکڑے کر دیئے گئے مگر اِن ٹکڑوں کو جوڑ سکنے والی طاقت ملواں اور آم سمجھ بھاشا کے روپ میں قائم رہے تو پھر سے اکھنڈ ہندستان پیدا ہو سکتا ہے ۔ اکھنڈ ہندستان نہ بھی پیدا ہو تب بھی بھارت کے مختلف پرانتوں میں راجکاجی، بیوپاری، سماجی، ودیائی، سائنسی، کاروباری اور صنعتی (اُدیوگی) بندھنوں کو قائم رکھنے والی اور سب کو ہر طرح کا فائدہ اور سہولت پہنچانے والی وہ بھاشا ہوگی جسے ہم ہندستانی کہتے ہیں ۔ جس سے مراد وہ سرل ہندی یا آسان اُردو ہے جو پچھلے زمانوں کی طرح مختلف بھاشاؤں کے شبد لیتی، اپناتی، ٹکسالتی اور سارے دیس میں چلاتی ہے ۔

اِس میں شک نہیں کہ شدھ ہندی کے تین بڑے علاقے ہیں : اُتر پردیش (آگرا اور اودھ)، بہار اور مدھیہ بھارت جس میں وہ حصہ بھی شامل کرلیا جائے جو اب مدھیہ پردیش کا ہندی علاقہ ہے ۔ اِس کے برعکس ہندستانی کا حقیقی اور یا کام میں آ سکنے والا علاقہ بقیہ سب ملک ہے ۔ خالص ہندی علاقوں کی بھی آم جنتا اور جنتا پسند ودوان ہندستانی کے پکش پاتی ہیں، اور رہیں گے ۔ مہاراشٹر، بنگال، آسام، اُڑیسا اور تلنگانہ کے لوگ شدھ ہندی سے زیادہ ہندستانی سے وابستہ ہیں ۔ خاص کر بول چال اور کام کاج میں ہندستانی کا چلن ہوگا ۔ بدیا، باسو، بنود، رابیندر ناتھ کہنے والے بنگالیوں کو کہاں تک ڈنڈے مار مار کر سکھایا جا سکے گا کہ ودیا، وسو، ونود اور رویندر ناتھ شدھ ہیں ۔

ہندستانی کا بھوشیہ سب سے زیادہ اِن کروڑوں ہندو مسلمانوں کی وجہ سے روشن ہے جو ہندستان اور پاکستان کے مختلف علاقوں میں رہتے بستے ہیں اور مادری زبان کی حیثیت سے ہندستانی بولتے ہیں ۔ میسور اور مدراس، مہاراشٹر اور تلنگانا، سندھ اور بنگال، سرحد اور آسام میں کروڑوں لوگ ہیں جو نہ تو ادبی اُردو بولتے ہیں اور نہ ادبی ہندی، اِن کی زبان ایک قسم کی ملواں بھاشا ہے جسے انگریزوں نے ہندستانی کہا ہے اور یہ نام صحیح معلوم ہوتا ہے ۔

ہندستانی کا بھوشیہ اِن لوگوں کی وجہ سے بھی اچھا معلوم دیتا ہے جو اُردو سے وابستہ ہیں ۔ اِردو کا یہ احسان ہندی پر ہمیشہ رہیگا کہ اُردو کی ترقی سے لازمی طور پر ہندی کے پھیلنے، بڑھنے اور قومی اہمیت حاصل کرنے میں مدد ملی ۔ اگر بھارت میں کروڑوں اردو بولنے والے نہ ہوتے تو ہندی کے راج بھاشا بننے کا سوال

इस क़िस्म की ज़हनियत रखने वाले महा कट्टर हिन्दू परस्त, मुसलमानों और उरदू दोनों को देस निकाला देना चाहते हैं. वह सोचते हैं कि करोड़ों को देस निकाला नहीं दिया जा सकता तो कम से कम उरदू को देस निकाला ज़रूर मिलना चाहिये. यही लोग हिन्दुस्तानी को जान बूझ कर उरदू कहते हैं और उरदू के साथ हिन्दुस्तानी के भी विरोधी हो गये हैं. पाकिस्तान में उरदू को तरक़्क़ी देने की जो कोशिशें हो रही हैं उनमें फ़ारसियत, अरबियत और धर्मियत का बड़ा दख़ल है. इसके तोड़ पर और इसकी ज़िद में यहां भी संस्कृतयावने को बड़ी अहमियत हासिल हो गई है. भाशा और लिखावट के मसले राजकाज से मिला दिये गये हैं. राजकाजी बंटवारे की वजह से आपसी इख़्तलाफ़ बहुत उभर आये हैं और उन में सब से ज़ियादा नुक़सान हिन्दुस्तानी को पहुँचा और पहुंच रहा है. खुल्लम खुल्ला पाक बाज़ी की तहरीक पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में चलाई जा रही है और बड़े ज़ोरों पर है. इस तहरीक से राजकाजी ओहदेदारों, क़ौमी नेताओं और भाशाई विद्वानों की बहुत बड़ी तैदाद हमदर्दी रखती और इत्तफ़ाक़ करती है. इन तीनों से ज़ियादा नुक़सान पहुँचाने वाला वह अध पढ़ा लिखा तबक़ा (वर्ग) है जिस के लोक राज और समाज के मुख़्तलिफ़ दरजों पर क़ायम (नियुक्त) हैं. यही लोग मौक़ा बे मौक़ा अपनी जाहिलाना वाक़फ़ियत का प्रचार कर के आम उच्चारन और जनताई ज़बान की तरक़्क़ी और फैलाव में रोड़े अटकाते हैं. यही लोग कोशिश करते हैं कि सरकारी रविदादें, रेडियाई ब्राडकास्ट, दरसी किताबें, विद्याई भाशन, अध इलमी रिसाले और नाम की इलमी बहसें इसी ज़बान में हों. इस कोशिश के बावजूद यही लोग बार बार आम उच्चारन के मुताबिक़ बोलते हैं और जनता के चलन दिये हुये लफ़्ज़ लिखते बोलते हैं. इन ही मौक़ों पर हिन्दुस्तानी की जीत होती है और इन ही बातों से सबूत मिलता है कि हिन्दुस्तानी ज़िन्दा है और ज़िन्दा रहेगी. ख़ुद पाक बाज़ों की तहरीर और बोल चाल में, इससे ज़ियादा घरेलू बात चीत और बे तकल्लुफ़ाना तहरीर में, भाशा और अदब के काले आसमान पर अंधियारा है. गरजने वाले बादलों की कड़क आ आ कर लोगों को सहमा रही है, बार बार बिजली की चमक से दिल दहल रहे हैं—साथ ही जा बजा बादल के छटने के आसार दिखाई देते हैं, और रह रह कर उम्मीद की किरनें भी दिखाई देती हैं जिन से ढारस बंधता और दिल दिमाग़ को ताज़गी बख़्शने वाली याद आती है कि तूफ़ान संसार का मामूल नहीं है वह थोड़ी देर की बात है, चन्द दिनों के बाद सकून का होना अटल है.

इसमें शक नहीं कि बंटवारे से हिन्दुस्तानी की राज काजी हैसियत गिर जाने से उसको बड़ा नुक़सान पहुंचा मगर सिर्फ़ बंटवारे की वजह से आपसी सम्बन्ध तो ख़त्म हुए और

اِس قسم کی ذہنیت رکھنے والے مہا کٹر ہندو پرست‘ مسلمانوں اور اُردو دونوں کو دیس نکالا دینا چاہتے ہیں۔ وہ سونچتے ہیں کہ کروڑوں کو دیس نکالا نہیں دیا جا سکتا تو کم سے کم اُردو کو دیس نکالا ضرور ملنا چاہئے۔ یہی لوگ ہندستانی کو جان بوجھکر اُردو کہتے ہیں اور اُردو کے ساتھ ہندستانی کے بھی ورودھی ہوگئے ہیں۔ پاکستان میں اُردو کو ترقی دینے کی جو کوششیں ہو رہی ہیں اُن میں فارسیت‘ عربیت اور دھرمیت کا بڑا دخل ہے۔ اِس کے توڑ پر اور اِس کی ضد میں یہاں بھی سنسکرتیاونے کو بڑی اہمیت حاصل ہو گئی ہے۔ بھاشا اور لکھاوٹ کے مسئلے راج کاج سے ملا دیئے گئے ہیں۔ راج کاجی بٹوارے کی وجہ سے آپسی اختلاف بہت اُبھر آئے ہیں اور اُن میں سب سے زیادہ نقصان ہندستانی کو پہنچا اور پہنچ رہا ہے۔ کھلم کھلا پاک بازی کی تحریک پاکستان اور ہندستان میں چلائی جا رہی ہے اور بڑے زوروں پر ہے۔ اس تحریک سے راجکاجی عہدے داروں‘ قومی نیتاؤں اور بھاشائی ودوانوں کی بہت بڑی تعداد ہمدردی رکھتی اور اتفاق کرتی ہے۔ ان تینوں سے زیادہ نقصان پہنچانے والا وہ ادھ پڑھا لکھا طبقا (ورگ) ہے جس کے لوک راج اور سماج کے مختلف درجوں پر قائم (نیُکت) ہیں۔ یہی لوگ موقا بے موقا اپنی جاہلانہ واقفیت کا پرچار کر کے آم اُچارن اور جنتائی زبان کی ترقی اور پھیلاؤ میں روڑے اَٹکاتے ہیں۔ یہی لوگ کوشش کرتے ہیں کہ سرکاری رویدادیں‘ ریڈیائی براڈکاسٹ‘ درسی کتابیں‘ ودیائی بھاشن‘ ادھ علمی رسالے اور نام کی علمی بحثیں اسی زبان میں ہوں۔ اِس کوشش کے باوجود یہی لوگ بار بار آم اُچارن کے مطابق بولتے ہیں اور جنتا کے چلن دیئے ہوئے لفظ لکھتے بولتے ہیں۔ ان ہی موقوں پر ہندستانی کی جیت ہوتی ہے اور ان ہی باتوں سے ثبوت ملتا ہے کہ ہندستانی زندا ہے اور زندا رہیگی۔ خد پاک بازوں کی تحریر اور بول چال میں‘ اس سے زیادہ گھریلو بات چیت اور بے تکلفانہ تحریر میں‘ بھاشا اور ادب کے کالے آسمان پر اندھیارا ہے۔ گرجنے والے بادلوں کی کڑک آ آکر لوگوں کو سہما رہی ہے‘ بار بار بجلی کی چمک سے دل دہل رہے ہیں——ساتھ ہی جابجا بادل کے چھٹنے کے آثار دکھائی دیتے ہیں‘ اور رہ رہ کر اُمید کی کرنیں بھی دکھائی دیتی ہیں جن سے ڈھارس بندھتا اور دل دماغ کو تازگی بخشنے والی یاد آتی ہے کہ طوفان سنسار کا معمول نہیں ہے وہ تھوڑی دیر کی بات ہے‘ چند دنوں کے باد سکون کا ہونا اٹل ہے۔

اِس میں شک نہیں کہ بٹوارے سے ہندستانی کی راجکاجی حیثیت گر جانے سے اُس کو بڑا نقصان پہنچا مگر صرف بٹوارے کی وجہ سے آپسی سمبندھ نہ تو ختم ہوئے اور

बंटवारे के बावजूद हिन्दुस्तानी की ज़रूरत

(जारी)

(डाक्टर जाफ़र हसन)

यह एक हक़ीक़त है कि हिन्दी और उरदू एक दूसरे के बरअक्स (उलटे) रास्तों पर बढ़ती और एक दूसरे से दूर होती जा रही हैं. क्या यह झुकाव ख़ुद हिन्दी और उरदू के हक़ में नुक़सान पहुँचाने वाला नहीं ? क्या इस फूट को दूर या कम नहीं किया जा सकता ? क्या हम इतना भी नहीं कर सकते कि हिन्दी और उरदू की दो धाराओं को अलग अलग बहने दें मगर बड़ी बड़ी नहरें इस तरह बनायें कि बड़े बड़े इलाक़े दोनों के पानी से सेराब हों (सींचे जावें) ? क्या हम हिन्दी को कठिन और उरदू को मुश्किल बनता हुआ देखते रहें और इतनी भी कोशिश न करें कि कठिन हिन्दी की जगह सरल हिन्दी और मुश्किल उरदू की जगह आसान उरदू तरक़्क़ी करे ? कठिन हिन्दी और मुश्किल उरदू की जगह न सही दोनों के साथ साथ क्या हिन्दुस्तानी को ज़िन्दा रहने का हक़ नहीं ? हमारे बाप दादा जो मिलवां ज़बान हमें तरके में मिली है, क्या उसको मिलवां रखनेकी कोशिश करना हमारा हक़ और फ़र्ज़ नहीं है ?

मैं उन लोगों में हूँ जिनका यह पूरा, पक्का और सच्चा विश्वास है कि हिन्दुस्तानी को ज़िन्दा सलामत रखने में चाहे हम जीतें चाहे हारें, हर हाल में हमें पूरी पूरी कोशिश करनी चाहिये कि हिन्दी और उरदू को क़रीब लाया जाय. दोनों में चलने और चल सकने वाले लफ़्ज़ों की तैदाद बढ़ाई जाय. दोनों को आम बोल चाल के मुताबिक़ ढलने में मदद दी जाय. मैं जानता हूँ कि यह काम बहुत मुश्किल और निरासी है. विधान ने हिन्दी को राज भाषा का दरजा दे दिया है. सन 1964 तक हिन्दी को अंगरेज़ी की जगह लाने का फ़ैसला भी हो चुका है. हिन्दी की तरक़्क़ी और फैलाव उन लोगों के हाथ में है जो जनताई हिन्दी के सख़्त विरोधी हैं, और विद्वानी हिन्दी चलाने में सरकार का रुपया और अपने साथियों की जान्दारी सर्फ़ कर रहे हैं. बंटवारे की वजह से उरदू को पहले से ज़ियादा सिर्फ़ मुसलमानों की ज़बान कहा जाता है, और बहुत से लोग सोचते और बाज़ कहते भी हैं कि:—

"अब पाकिस्तान बन गया और उरदू वहां की क़ौमी ज़बान ठहराई जा चुकी तो फिर भारत में उरदू का क्या ठिकाना है."

بٹوارے کے باوجود ہندستانی کی ضرورت

(جاری)

(ڈاکٹر جافر ہسن)

یہ ایک حقیقت ہے کہ ہندی اور اردو ایک دوسرے کے براکس (الٹے) راستوں پر بڑھتی اور ایک دوسرے سے دور ہوتی جا رہی ہیں . کیا یہ جھکاؤ خد ہندی اور اُردو کے حق میں نقصان پہنچانے والا نہیں ؟ کیا اِس پھوٹ کو دور یا کم نہیں کیا جا سکتا؟ کیا ہم اِتنا بھی نہیں کر سکتے کہ ہندی اور اُردو کی دو دھاراؤں کو الگ الگ بہنے دیں مگر بڑی بڑی نہریں اس طرح بنائیں کہ بڑے بڑے الاقے دونوں کے پانی سے سیراب ہوں (سینچے جاویں) ؟ کیا ہم ہندی کو کٹھن اور اُردو کو مشکل بنتا ہوا دیکھتے رہیں اور اتنی بھی کوشش نہ کریں کہ کٹھن ہندی کی جگہ سرل ہندی اور مشکل اُردو کی جگہ آسان اُردو ترقی کرے ؟ کٹھن ہندی اور مشکل اُردو کی جگہ نہ سہی دونوں کے ساتھ ساتھ کیا ہندستانی کو زندہ رہنے کا حق نہیں ؟ ہمارے باپ دادا سے جو ملواں زبان ہمیں ترکے میں ملی ہے' کیا اُس کو ملواں رکھنے کی کوشش کرنا ہمارا حق اور فرض نہیں ہے ؟

میں اُن لوگوں میں ہوں جن کا یہ پورا' پکا اور سچا وشواس ہے کہ ہندستانی کو زندا سلامت رکھنے میں چاہے ہم جیتیں چاہے ہاریں' ہر حال میں ہمیں پوری پوری کوشش کرنی چاہئے کہ ہندی اور اُردو کو قریب لیا جائے. دونوں میں چلنے اور چل سکنے والے لفظوں کی تعداد بڑھائی جائے . دونوں کو آم بول چال کے مطابق ڈھلنے میں مدد دی جائے . میں جانتا ہوں کہ یہ کام بہت مشکل اور نراسی ہے . ودھان نے ہندی کو راج بھاشا کا درجا دے دیا ہے . سن 1964 تک ہندی کو انگریزی کی جگہ لانے کا فیصلہ بھی ہو چکا ہے . ہندی کی ترقی اور پھیلاؤ اُن لوگوں کے ہاتھ میں ہے جو جنتائی ہندی کے سخت وِرودھی ہیں' اور ودوانی ہندی چلانے میں سرکار کا روپیا اور اپنی اور اپنے ساتھیوں کی جانداری صرف کر رہے ہیں . بٹوارے کی وجہ سے اُردو کو پہلے سے زیادہ صرف مسلمانوں کی زبان کہا جاتا ہے' اور بہت سے لوگ سوچتے اور باز کہتے بھی ہیں کہ :—

"جب پاکستان بن گیا اور اُردو وہاں کی قومی زبان ٹھہرائی جا چکی تو پھر بھارت میں اُردو کا کیا ٹھکانا ہے ."

जिनका कोई क़ायम असर नहीं रहने वाला है. मगर यह हिन्द-अमरीकी समझौता तो एक क़ायम रहने वाला सिलसिला है. यह असल में अमरीका के वास्ते एक पट्टा है जिससे वह अपने को हिन्दुस्तान में जमा सके, पहले एक व्योपारी के भेस में और बाद में हिन्दुस्तान के राज-नीतिक या सियासी आक़ा के भेस में. हिन्द सरकार ने अपनी सारी इन्तज़ामी मशीनरी अमरीका के सुपुर्द करने और उसकी इश्तहार बाज़ी या प्रोपेगन्डा करने के लिए रज़ामन्दी दे दी है. अमरीका के अफ़सरों हाकिमों वग़ैरा को हिन्दुस्तान में रहने घूमने, फिरने और यहां के लोगों से मिलने जुलने की पूरी इजाज़त बख़्शी गई है लेकिन हिन्दुस्तान का रत्ती भर क़ानून भी उन पर लागू नहीं हो सकता. फिर कौन है जो उन्हें मन चाहे राजकाजी या समाजी विचारों का प्रचार करने और हिन्दुस्तान में झगड़े टंटे या गुट्ट खड़े करने से रोक सके? बहुत मुमकिन है कि अगले चुनाव में कुछ लोग अमरीका की तरफ़ से खड़े हों, कुछ लोग रूस की तरफ़ से और कुछ ख़ालिस हिन्दुस्तानी पार्टियों की तरफ़ से, और फिर इनमें ख़ूब गुत्थमगुत्था हो.

मैं इस उसूल से पूरी तरह सहमत हूं कि सारी दुनिया एक है, और न इसमें ही कोई हर्ज है, बल्कि यह इन्सानियत और क़ुदरत के मुताबिक़ है कि ज़रूरत के वक़्त एक जगह के लोग दूसरी जगह वालों के काम आयें. मैं यह भी ठीक समझता हूं कि जिसके पास ज़रूरत से ज़ियादा चीज़ है वह उसमें उन को भी शरीक करे जिनके पास कम है. और क्या देनदार क्या लेनदार दोनों की ही इसमें बरक्कत है. बड़े बड़े कारनामे और विज्ञान की तरक़्क़ी इस तरह नहीं अंजाम देनी चाहिये कि उनसे अमन शान्ति ख़तरे में पड़ जाय. लेकिन यह साफ़ ज़ाहिर है कि योरप और एशिया की मदद देने में अमरीका के इरादे उतने परोपकार के नहीं हैं जितना कि ऐसी चीज़ के लिये होना चाहिये. उसका खुले आम मक़सद कम्युनिस्ट विरोधी मोर्चा खड़ा करना है और कम्युनिस्टों का रुख़ भी उतना ही रोशन है. इन दोनों में कुत्ते बिल्ली का सा बैर है और दोनों इसी फ़िराक़ में रहते हैं कि किस तरह अपने स्वार्थ के लिए दूसरे लोगों को अपने पंजे में फांस लें. उन्हें दूसरों से कोई भाई चारा या प्रेम नहीं है. जब तक इन दोनों लालची देशों या उनके हमजोलियों का यह रुख़ रहता है तब तक तो हमें अपने देश को अपनी ही कोशिश से खड़ा करना या बनाना चाहिये. बेहतर तो यह है कि हमारी उन्नति धीरे धीरे हो न कि यह कि हम उसका कोई स्वांग रचें. और स्वांग भी कैसा कि जिसके पीछे सिर्फ़ दीवालिये पन का दौर दौरा हो और जिससे घरेलू लड़ाई या अन्तर क़ौमी जंग कभी भी हो सकती हो.

वर्धा, 9 जून 1952

جی کا کوئی قائم اثر نہیں رہنے والا ہے۔ مگر یہ ہند امریکی سمجھوتہ تو ایک قائم رہنے والا سلسلہ ہے۔ یہ اصل میں امریکہ کے واسطے ایک پٹہ ہے جس سے وہ اپنے کو ہندستان میں جما سکے، پہلے ایک بیوپاری کے بھیس میں اور بعد میں ہندستان کے راج نیتک یا سیاسی آقا کے بھیس میں۔ ہند سرکار نے اپنی ساری انتظامی مشینری امریکہ کے سپرد کرنے اور اس کی اشتہار بازی یا پروپیگنڈا کرنے کے لئے رضامندی دے دی ہے۔ امریکہ کے افسروں حاکموں وغیرہ کو ہندستان میں رہنے، گھومنے پھرنے اور یہاں کے لوگوں سے ملنے جلنے کی اجازت بخشی گئی ہے لیکن ہندستان کا رتی بھر قانون بھی اُن پر لاگو نہیں ہو سکتا۔ پھر کون ہے جو انہیں من چاہے راج کاجی یا سماجی وچاروں کا پرچار کرنے اور ہندستان میں جھگڑے ٹنٹے یا گٹ کھڑے کرنے سے روک سکے؟ بہت ممکن ہے کہ اگلے چناؤ میں کچھ لوگ امریکہ کی طرف سے کھڑے ہوں، کچھ لوگ روس کی طرف سے اور کچھ خالص ہندستانی پارٹیوں کی طرف سے، اور پھر ان میں گتھم گتھا ہو۔

میں اس اصول سے پوری طرح سہمت ہوں کہ ساری دنیا ایک ہے، اور نہ اس میں ہی کوئی حرج ہے بلکہ یہ انسانیت اور قدرت کے مطابق ہے کہ ضرورت کے وقت ایک جگہ کے لوگ دوسرے جگہ والوں کے کام آئیں۔ میں یہ بھی ٹھیک سمجھتا ہوں کہ جس کے پاس ضرورت سے زیادہ چیز ہے وہ اس میں اُن کو بھی شریک کرے جن کے پاس کم ہے۔ اور کیا دینیدار کیا لینیدار دونوں کی ہی اس میں برکت ہے۔ بڑے بڑے کارنامے اور وگیان کی ترقی اسطرح نہیں انجام دینی چاہئے کہ اُن سے امن شانتی خطرے میں پڑ جائے۔ لیکن یہ صاف ظاہر ہے کہ یورپ اور ایشیا کی مدد دینے میں امریکہ کے ارادے اُتنے پرو پکار کے نہیں ہیں جتنا کہ ایسی چیز کے لئے ہونا چاہئے۔ اُس کا کھلے عام مقصد کمیونسٹ ورودھی مورچہ کھڑا کرنا ہے اور کمیونسٹوں کا رخ بھی اُتنا ہی روشن ہے۔ ان دونوں میں کتے بلی کا سا بیر ہے اور دونوں اسی فراق میں رہتے ہیں کہ کس طرح اپنے سوارتھ کے لئے دوسرے لوگوں کو اپنے پنجے میں پھانس لیں۔ انہیں دوسروں سے کوئی بھائی چارا یا پریم نہیں ہے۔ جب تک ان دونوں لالچی دیشوں یا اُن کے ہمجولیوں کا یہ رخ رہتا ہے تب تک تو ہمیں اپنے دیش کو اپنی ہی کوشش سے کھڑا کرنا یا بنانا چاہئے۔ بہتر تو یہ ہے کہ ہماری اُنّتی دھیرے دھیرے ہو نہ کہ یہ کہ ہم اُس کا کوئی سوانگ رچیں۔ اور سوانگ بھی کیسا کہ جس کے پیچھے صرف دیوالئے پن کا دور دورا ہو اور جس سے گھریلو لڑائی یا انترقومی جنگ کبھی بھی ہو سکتی ہو۔

وردھا، 9 جون 1952

मुंह ही मोड़ा जा सकता है. इसके यह माने नहीं होते कि वह इस बात का इक़रार करते हैं कि जंगी सामान को ज़ियादा बरबाद कारी बनाने और उसका ढेर जमा करने से शान्ति की हिफ़ाज़त हो सकती है. लेकिन इस वजह से कि उन्हें अपने उसूलों में ढिलाई करनी पड़ती है या जो उनका अपना विश्वास है उसके सब पहलुओं को वह पूरी तरह नहीं निभा पाते हैं, वह यह भी नहीं चाहते कि जो अपना फ़र्ज़ है उससे बच कर भागा जाय.

सच पूछा जाय तो मेरा ख़्याल यह है कि आर्थिक प्रोग्राम के बारे में पंडित जी के सोचने का ढंग साफ़ साफ़ समझ में नहीं आता. उन्हें केन्द्रीकरन और जमाबन्दी से कोई मोहब्बत नहीं है, लेकिन मुझे यह महसूस होता है कि मशीन की ताक़त में, साइन्सी साधनों की ताक़त में और बड़े पैमाने वाली पैदावार की अर्थनीति की ताक़त में उन्हें गहरा अन्ध विश्वास है. शायद उनको यह भी महसूस होता है कि चर्ख़े, ग्रामोद्योग और हल बैल के तरीक़े से जो पैदावार की जाती है वह इतने अदना पाये की है कि 36 करोड़ की आबादी वाली बड़े प्रजातन्त्र की सरकार उस पर विचार करके अपना वक़्त नहीं ख़राब कर सकती. इसलिये वह दिल से चाहते हैं कि देश में कारख़ाने फैलाये जायें और देश का उद्योगीकरन किया जाय. यह भी मालूम होता है कि पंडित जवाहरलाल की राय उन लोगों से मेल नहीं खाती जो यह सोचते हैं कि जंग और बड़े पैमाने के उद्योगीकरन का चोली दामन का जैसा साथ है.

अपने इस रुख़ की वजह से जवाहरलाल जी का बड़ी बड़ी योजनाओं की तरफ़ रुझान दिन दुगना रात चौगुना बढ़ता जाता है और उन्होंने बहुत सी योजनायें चला भी रक्खी हैं. उनमें से कुछ तो बुरी तरह निकम्मी साबित हुई हैं और उनका काफ़ी ख़मयाज़ा देश को भुगतना पड़ा है. कुछ योजनाओं में सरकार को उसके ही अफ़सरों, सलाहकारों, तकनीकियों और दूसरों ने ख़ूब धोका दिया है. इन ही स्कीमों का एक सब से बड़ा और सब से मंहगा सबक़ यही रहा कि नैतिक चाल चलन में हम लोग बहुत ही गिरे हुए साबित हुए और हमारे अन्दर देश का दर्द रत्ती भर भी नहीं है. दूसरी बातों को जाने दीजिये हमारा क़ौमी पुनर्उद्धार केवल भारी भारी फिर बनाव के कामों से नहीं किया जा सकता. आर्थिक फिर-बनाव के मुक़ाबले कहीं ज़ियादा महत्व की और बुनियाद की चीज़ है नैतिक फिर-बनाव और जिसकी जड़ें बहुत ही ठोस होनी चाहियें. अगर नैतिक फिर-बनाव ठीक ठीक चले तो आर्थिक फिर-बनाव धीरे धीरे होता ही जायगा.

माना कि इन योजनाओं की नाकामयाबी और उनमें बेईमानी का बोल बाला होने से मुल्क को बहुत नुक़सान हुआ लेकिन इनमें से ज़ियादातर सिर्फ़ छुट्टा मामले हैं

منہ ہی موڑا جا سکتا ہے۔ اس کے یہ معنے نہیں ہوتے کہ وہ اس بات کا اقرار کرتے ہیں کہ جنگی سامان کو زیادہ بربادکاری بنانے اور اس کا ڈھیر جمع کرنے سے شانتی کی حفاظت ہوسکتی ہے۔ لیکن اس وجہ سے کہ انہیں اپنے اصولوں میں ڈھیلائی کرنی پڑتی ہے یا جو ان کا اپنا وشواس ہے اُن کے سب پہلوؤں کو وہ پوری طرح نہیں نبھا پاتے ہیں، وہ یہ بھی نہیں چاہتے کہ جو اپنا فرض ہے اس سے بچ کر بھاگا جائے۔

سچ پوچھا جائے تو میرا خیال یہ ہے کہ آرتھک پروگرام کے بارے میں پنڈت جی کے سوچنے کا ڈھنگ صاف صاف سمجھ میں نہیں آتا۔ انہیں کیندری کرن اور جمع بندی سے کوئی محبت نہیں ہے، لیکن مجھے یہ محسوس ہوتا ہے کہ مشین کی طاقت میں، سائنسی سادھنوں کی طاقت میں اور بڑے پیمانے والی پیداوار کی ارتھ نیتی کی طاقت میں انہیں گہرا اندھ وشواس ہے۔ شاید اُن کو یہ بھی محسوس ہوتا ہے کہ چرخے، گرام ادیوگ اور ہل بیل کے طریقے سے جو پیداوار کی جاتی ہے وہ اتنے ادنیٰ پائے کی ہے کہ 36 کروڑ کی آبادی والی بڑے پرجاتنتر کی سرکار اس پر وچار کرکے اپنا وقت نہیں خراب کرسکتی۔ اس لئے وہ دل سے چاہتے ہیں کہ دیش میں کارخانے پھیلائے جائیں اور دیش کا ادیوگی کرن کیا جائے۔ یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ پنڈت جواہر لال کی رائے اُن لوگوں سے میل نہیں کھاتی جو یہ سوچتے ہیں کہ جنگ اور بڑے پیمانے کے ادیوگی کرن کا چولی دامن کا جیسا ساتھ ہے۔

اپنے اس رخ کی وجہ سے جواہر لال جی کا بڑی بڑی یوجناؤں کی طرف رجحان دن دوگنا رات چوگنا بڑھتا جاتا ہے اور انہوں نے بہت سی یوجنائیں چلا بھی رکھی ہیں۔ ان میں سے کچھ تو بری طرح نکمی ثابت ہوئی ہیں اور ان کا کافی خمیازہ دیش کو بھگتنا پڑا ہے۔ کچھ یوجناؤں میں سرکار کو اس کے ہی افسروں، صلاح کاروں، تکنیکیوں اور دوسروں نے خوب دھوکا دیا ہے۔ ان ہی اسکیموں کا ایک سب سے بڑا اور سب سے مہنگا سبق یہی رہا کہ نیتک چال چلن میں ہم لوگ بہت ہی گرے ہوئے ثابت ہوئے اور ہمارے اندر دیش کا درد رتی بھر بھی نہیں ہے۔ دوسری باتوں کو جانے دیجئے ہمارا قومی پنر ادھار کیول بھاری بھاری پھر بناؤ کے کاموں سے نہیں کیا جا سکتا۔ آرتھک پھر بناؤ کے مقابلے کہیں زیادہ مہتو کی اور بنیاد کی چیز ہے نیتک پھر بناؤ اور جس کی جڑیں بہت ہی ٹھوس ہونی چاہئیں۔ اگر نیتک پھر بناؤ ٹھیک ٹھیک چلے تو آرتھک پھر بناؤ دھیرے دھیرے ہوتا ہی جائے گا۔

مانا کہ ان یوجناؤں کی ناکامیابی اور ان میں بے ایمانی کا بول بالا ہونے سے ملک کو بہت نقصان ہوا لیکن ان میں سے زیادہ تر صرف چھٹا معاملے ہیں

उनके बाद आनेवाली कोई दूसरी हुकूमत भी उतनी आज़ादी के साथ काम नहीं करेगी? ज़रूर इसमें थोड़ी जोखिम है लेकिन बिना जोखिम के तो दुनिया में कोई कुछ नहीं कर सकता.

उसूली तौर पर यह एक सही बहस है लेकिन लोगों की निजी ज़िन्दगी में या क़ौमों के राजकाजी इतिहास में जो असली अनुभव आते हैं उनसे मेल नहीं खाती. बल्कि सच तो यह है कि आम तौर से यह देखा जाता है कि लेने वाला देने वाले का हर तरह से मोहताज बन जाता है. अपना काम न फ़िर वह आज़ादी से कर पाता है और न अपनी समझ बूझ ही इस्तेमाल कर पाता है. देने वाले या उपकार करने वाले की मरज़ी के खिलाफ़ जाने के नतीजे इतने भयानक होते हैं कि लेने वाले में यह जोखिम उठाने की हिम्मत नहीं होती.

अगर 5 जनवरी 1952 वाले समझौते को और उसी के कारन होने वाले बाद के छोटे समझौतों को ध्यान से देखा जाय तो पता चलता है कि हिन्दुस्तान इनके ज़रिये जिन जोखिमों में फंस गया है वह इतनी ज़बरदस्त और दर्दनाक हैं कि यह समझौता ग़ुलामी का एक पक्का पट्टा साबित हो सकता है. मुझे इन जोखिमों को दोहराने की ज़रूरत नहीं है. क्योंकि श्री सुरेश रामभाई ने अपनी इस किताब में उन्हें बहुत अच्छी तरह से बयान किया है. यह जोखिम केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि राजकाज और मन से भी इनका वास्ता है. मन से सम्बन्ध रखने वाली जोखिम जिसकी तरफ़ मैं ध्यान खींचना चाहता हूँ वह यह है कि कम से कम दो विरोधी तरह के ख्याल लोगों के दिल में घर कर जायेंगे—पहला यह कि अमरीका की दोस्ती और मदद के बिना हम जी नहीं सकते और दूसरा यह (जो पहले ख्याल का करारा जवाब है) कि अमरीका के चंगुल से निकलने के लिये हमको कम्युनिस्टों की शरन लेनी चाहिये इस तरह के समझौते का यह नतीजा हो सकता है कि वही चीज़ ज़ोर शोर से हो जाय जो अमरीका बचाना चाहता है. चीन और कोरिया का नाटक हिन्दुस्तान में भी सामने आ सकता है.

पंडित जवाहरलाल जी की सच्चाई और नेकी में किसी को रत्ती भर भी शक नहीं हो सकता. उन्हें अपने अन्दर विश्वास है और हमारी जनता की बुनियादी लायक़ी में विश्वास है. और उन्हें इस बात का भी पूरा भरोसा है कि हिन्दुस्तान आगे चल कर दुनिया की एक बड़ी क़ौम बन कर रहेगा. वह दुनिया के एक होने में भरोसा रखते हैं. जंग के ख़ात्मे में और अमन शान्ति में भी उनका भरोसा है और वह मानते हैं कि यह चीज़ हथियारों वग़ैरा से नहीं बल्कि अहिंसा से ही मुमकिन है. लेकिन वह यह भी जानते हैं कि दुनिया की इस वक़्त जो हालत है इसमें उसूल की लकीर के फ़क़ीर नहीं हुआ जा सकता और न जंग के सरंजाम वग़ैरा से

اُن کے بعد آنے والی کوئی دوسری حکومت بھی اُتنی آزادی کے ساتھ کام نہیں کریگی؟ ضرور اس میں تھوڑی جوکھم ہے لیکن بنا جوکھم کے تو دنیا میں کوئی کچھ نہیں کرسکتا۔

اُصولی طور پر یہ ایک صحیح بحث ہے لیکن لوگوں کی نجی زندگی میں یا قوموں کے راجکاجی اتہاس میں جو اصلی انوبھو آتے ہیں اُن سے میل نہیں کھاتی۔ بلکہ سچ تو یہ ہے کہ عام طور سے یہ دیکھا جاتا ہے کہ لینے والا دینے والے کا ہر طرح سے محتاج بن جاتا ہے۔ اپنا کام نہ پھر وہ آزادی سے کر پاتا ہے اور نہ اپنی سوجھ بوجھ ہی استعمال کر پاتا ہے۔ دینے والے یا اپکار کرنے والے کی مرضی کے خلاف جانے کے نتیجے اتنے بھیانک ہوتے ہیں کہ لینے والے میں یہ جوکھم اُٹھانے کی ہمت نہیں ہوتی۔

اگر 5 جنوری 1952 والے سمجھوتے کو اور اُسی کے کارن ہونے والے بعد کے چھوٹے سمجھوتوں کو دھیان سے دیکھا جائے تو پتہ چلتا ہے کہ ہندستان اِن کے ذریعے جن جوکھموں میں پھنس گیا ہے وہ اتنی زبردست اور دردناک ہیں کہ یہ سمجھوتہ غلامی کا ایک پکا پٹہ ثابت ہوسکتا ہے۔ مجھے اُن جوکھموں کو دہرانے کی ضرورت نہیں ہے۔ کیونکہ شری سریش رام بھائی نے اپنی اس کتاب میں اُنہیں بہت اچھی طرح سے بیان کیا ہے۔ یہ جوکھم کیول آرتھک ہی نہیں بلکہ راجکاج اور من سے بھی اِن کا واسطہ ہے۔ من سے سمبندھ رکھنے والی جوکھم جس کی طرف میں دھیان کھینچنا چاہتا ہوں وہ یہ ہے کہ کم سے کم دو وِرودھی طرح کے خیال لوگوں کے دل میں گھر کر جائیں گے—پہلا یہ کہ امریکہ کی دوستی اور مدد کے بنا ہم جی نہیں سکتے اور دوسرا یہ (جو پہلے خیال کا کرارا جواب ہے) کہ امریکہ کے چنگل سے نکلنے کے لئے ہمکو کمیونسٹوں کی شرن لینی چاہئے۔ اس طرح کے سمجھوتے کا یہ نتیجہ ہوسکتا ہے کہ وہی چیز زور شور سے ہو جائے جو امریکہ بچانا چاہتا ہے۔ چین اور کوریا کا ناٹک ہندستان میں بھی سامنے آ سکتا ہے۔

پنڈت جواہر لال جی کی سچائی اور نیکی میں کسی کو رتی بھر بھی شک نہیں ہوسکتا۔ اُنہیں اپنے اندر وشواس ہے اور ہماری جنتا کی بنیادی لائقی میں وشواس ہے۔ اور اُنہیں اس بات کا بھی پورا بھروسہ ہے کہ ہندستان آگے چل کر دنیا کی ایک بڑی قوم بن کر رہے گا۔ وہ دنیا کے ایک ہونے میں بھروسہ رکھتے ہیں۔ جنگ کے خاتمے میں اور امن شانتی میں بھی اُن کا بھروسہ ہے اور وہ مانتے ہیں کہ یہ چیز ہتھیاروں وغیرہ سے نہیں بلکہ اہنسا سے ہی ممکن ہے۔ لیکن وہ یہ بھی جانتے ہیں کہ دنیا کی اس وقت جو حالت ہے اس میں اصول کی لکیر کے فقیر نہیں ہوا جاسکتا اور نہ جنگ کے سرانجام وغیرہ سے

फिर-बनाव का काम जल्दी से जल्दी अंजाम दिया जाय. उन्हें उन काहिलों या सुस्त लोगों से बहुत घबराहट होती है जो तरक़्क़ी के छोटे मोटे कामों पर सहज में सन्तोश कर लेते हैं. पंडित जी को आजकल के तकनीकी विज्ञान में बहुत गहरा विश्वास है और वह चाहते हैं कि हिन्दुस्तान की आर्थिक बेहतरी के लिए इससे पूरा पूरा फ़ायदा उठाया जाय. वह चाहते हैं कि हिन्दुस्तान में इतनी बड़ी बड़ी योजनायें चलाई जायें जितनी कि दुनिया के किसी हिस्से में भी न चली हों. इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान यह सब कर दिखाने की लायक़ी रखता है. उसके पिछले कारनामे कौन नहीं जानता ? क्या सदियों तक जीवन के हर किसी भी दायरे में वह संसार का अगुआ नहीं था ? हम उन्हीं लोगों की औलाद हैं, हमारा दिमाग़ भी काफ़ी अच्छी तरह काम करता है और अगर हमें मुनासिब मौक़ा रहबरी और साधन मिलें तो कोई वजह नहीं कि हम फिर पहले की जैसी तरक़्क़ी न कर लें.

पिछली दो सदियों से ज़ियादा अरसा बीता हिन्दुस्तान की बेइन्तहा दौलत विदेशों ने हड़प ली है और चूस चूस कर उसका मानो खून ही निकाल लिया गया है पंडित जवाहर लाल और दूसरे बहुत से लोगों का शायद यह ख्याल है कि अपने ही साधनों के ज़रिये हिन्दुस्तान को अपने को फिर से खुशहाल बना लेना मुमकिन नहीं है. और अगर है भी तो बहुत ही धीमी चींटी जैसी रफ़्तार के साथ. वह यह सोचते हैं कि अगर अपने देश के विकास की ख़ातिर हमें कहीं से पैसा या सामान उधार या दान की शक्ल में मिल सकता है—बशर्ते कि हमारी क़ौमी आज़ादी और शान बदस्तूर बनी रहे—तो उसे मांगने, उसके लिये बात चीत करने या उसे मंजूर करने में किसी डर या घबराहट या घमंड की वजह से हमें बिदकना नहीं चाहि. येऐसी मदद लेने में दुनियावी तौर पर न कोई ग़लती है न उसमें अनैतिकता ही है. अपनी निजी ज़िन्दगी में लोग रोज़ाना शिरकत और लेन देन के समझौते करते हैं और फिर भी उनकी अपनी शख़्सियत और दर्जे या पदवी में बाल बराबर भी फ़र्क़ नहीं आता. पर यह बात कि कोई समझौता करके उसके बाहर के दायरे के मामलों में कोई आदमी दूसरी पार्टी से दबेगा या नहीं इस बात पर मुनहसिर है कि उसके अन्दर आत्म विश्वास किस पाये या बुलन्दी का है. पंडित जवाहरलाल नेहरू शायद यह महसूस करते हैं कि हिन्दुस्तान की यह बुज़दिली होगी कि वह अपने लिए ज़रूरी और बाहर से मिलने वाली मदद को सिर्फ़ इस डर से इन्कार कर दे कि इसके क़बूल करने से क़ौमी या अन्तर क़ौमी मामलों में वह अपनी आज़ादी क़ायम नहीं रख सकेगा. पंडित जवाहरलाल कई बार यह दिखला चुके हैं कि हम आज़ाद हैं और किसी दूसरे के असर में नहीं फंसते. इसलिये पंडित जवाहरलाल यह कैसे मान लें कि

پھر بناؤ کا کام جلدی سے جلدی انجام دیا جائے. انہیں اُن کاہلوں یا سست لوگوں سے بہت گھبراہٹ ہوتی ہے جو ترقی کے چھوٹے موٹے کاموں پر سہج میں سنتوش کرلیتے ہیں . پنڈت جی کو آجکل کے تکنیکی وگیان میں بہت گہرا وشواس ہے اور وہ چاہتے ہیں کہ ہندستان کی آرتھک بہتری کے لئے اِس سے پورا پورا فائدہ اٹھایا جائے . وہ چاہتے ہیں کہ ہندستان میں اتنی بڑی بڑی یوجنائیں چلائی جائیں جتنی کہ دنیا کے کسی حصے میں بھی نہ چلی ہوں . اس میں کوئی شک نہیں کہ ہندستان یہ سب کر دکھانے کی لائقی رکھتا ہے . اسکے پچھلے کارنامے کون نہیں جانتا؟ کیا صدیوں تک جیون کے ہر کسی بھی دائرے میں وہ سنسار کا اگوا نہیں تھا ؟ ہم اُنہیں لوگوں کی اولاد ہیں' ہمارا دماغ بھی کافی اچھی طرح کام کرتا ہے اور اگر ہمیں مناسب موقع رہبری اور سادھن ملیں تو کوئی وجہ نہیں کہ ہم پھر پہلے کی جیسی ترقی نہ کرلیں .

پچھلی دو صدیوں سے زیادہ عرصہ بیتا ہندستان کی بے انتہا دولت ودیشوں نے ہڑپ لی ہے اور چوس چوس کر اُسکا مانو خون ہی نکال لیا گیا ہے . پنڈت جواہر لال اور دوسرے بہت سے لوگوں کا شاید یہ خیال ہے کہ اپنے ہی سادھنوں کے ذریعے ہندستان کو اپنے کو پھر سے خوشحال بنا لینا ممکن نہیں ہے. اور اگر ہے بھی تو بہت ہی دھیمی چینٹی جیسی رفتار کے ساتھ. وہ یہ سوچتے ہیں کہ اگر اپنے دیش کے وکاس کی خاطر ہمیں کہیں سے پیسہ یا سامان اُدھار یا دان کی شکل میں مل سکتا ہے—بشرطیکہ ہماری قومی آزادی اور شان بدستور بنی رہے—تو اُسے مانگنے' اُس کے لئے بات چیت کرنے یا اُسے منظور کرنے میں کسی ڈر یا گھبراہٹ یا گھمنڈ کی وجہ سے ہمیں بدکنا نہیں چاہئے. ایسی مدد لینے میں دنیاوی طور پر نہ کوئی غلطی ہے نہ اُس میں انیتکتا ہی ہے . اپنی نجی زندگی میں لوگ روزآنہ شرکت اور لین دین کے سمجھوتے کرتے ہیں اور پھر بھی اُن کی اپنی شخصیت اور درجے یا پدوی میں بال برابر بھی فرق نہیں آتا . پر یہ بات کہ کوئی سمجھوتہ کرکے اُس کے باہر کے دائرے کے معاملوں میں کوئی آدمی دوسری پارٹی سے دبیگا یا نہیں اس بات پر منحصر ہے کہ اس کے اندر آتم وشواس کس پائے یا بلندی کا ہے . پنڈت جواہر لال نہرو شاید یہ محسوس کرتے ہیں کہ ہندستان کی یہ بزدلی ہوگی کہ وہ اپنے لئے ضروری اور باہر سے ملنےوالی مدد کو صرف اس ڈر سے انکار کردے کہ اس کے قبول کرنے سے قومی یا انترقومی معاملوں میں وہ اپنی آزادی قائم نہیں رکھ سکیگا . پنڈت جواہر لال کئی بار یہ دکھلا چکے ہیں کہ ہم آزاد ہیں اور کسی دوسرے کے اثر میں نہیں پھنستے . اس لئے پنڈت جواہر لال یہ کیسے مان لیں کہ

हिन्दुस्तान को अमरीकी मदद

(किशोरलाल मशरूवाला)

[5 जनवरी 1952 को हिन्द सरकार और अमरीकी सरकार में जो "समझौता" हुआ है उस पर हम अपनी राय फ़रवरी के परचे में दे चुके हैं. कुछ और इज़ाफ़े के साथ श्री सुरेश रामभाई का वह लेख 3 और 10 मई के 'हरिजन' में भी छप चुका है. उसी को अब हमने एक छोटी सी किताब की शकल में जिस का नाम "एग्रीमेन्ट आर सेलेवरी बान्ड ?" (Agreement or Slavery Bond ?) है, निकाला है. इस किताब में श्री किशोर लाल भाई मशरूवाला की एक बहुत ही गम्भीर और विचार पूर्ण भूमिका है. हम उसी का अनुवाद इस लेख में दे रहे हैं—एडीटर]

राष्ट्रों के इतिहास में अकसर ऐसी घटनायें मिलती हैं या सौदे होते दिखाई देते हैं जिनका न कोई फ़ौरी असर मालूम पड़ता है न उनसे जनता में कोई बड़ी सनसनी ही फैलती है, और क्या राज काजी नेता क्या अर्थशास्त्री लोग सभी उनकी तरफ़ से लापरवाह रहते हैं. लेकिन वह घटनायें या सौदे ऐसे होते हैं जिनका राष्ट्र की काया पलटने में आगे चलकर काफ़ी बड़ा हाथ होना साबित होता है. यह घटनायें या सौदे एक तरह का बीज बोने का काम करते हैं जो कुछ अर्से बाद बड़े ज़ोर शोर से बढ़कर चारों तरफ़ फैल जाता है और धरती के भी अन्दर बहुत दूर जाकर अपने आस पास की हर चीज़ को झुलसा देता है. शुरू शुरू में तो यह देखने में भोला भाला ही नहीं बल्कि ख़ुशनुमा भी मालूम होता है. लेकिन बाद में जब यह अपना असर दिखलाना शुरू कर देता है तब ऐसा महसूस होता है कि—'का बरसा जब कृशी सुखानी' और तब उसके जाल से भी निकलना नामुमकिन मालूम होता है.

5 जनवरी 1952 को अमरीका और हिन्दुस्तान के बीच जो समझौता हुआ है वह श्री सुरेश रामभाई और हममें से बहुतों को इस तरह की चीज़ महसूस होती है.

हिन्द सरकार ने यह समझौता बहुत सोच समझने के बाद और अपने एक्सपर्टों या जानकारों की सलाह के बाद किया है. और इसलिये उसे अपने इस कारनामे पर पूरा पूरा सन्तोश है. एक नहीं बल्कि देश के बहुत से नामी अख़बारों ने और ब्योपारी कारख़ानेदारों के आर्थिक आवाज़ पत्रों ने भी इस समझौते की दुहाई दी है.

हम सब जानते हैं कि पंडित जवाहरलाल नेहरू को इस बात की कितनी ज़ियादा फ़िकर है कि देश के आर्थिक

هندستان کو امریکی مدد

(کشور لال مشروالا)

[5 جنوری 1952 کو هند سرکار اور امریکی سرکار میں جو "سمجھوتہ" ہوا ہے اس پر ہم اپنی رائے فروری کے پرچے میں دے چکے ہیں . کچھ اور اضافے کے ساتھ شری سریش رام بھائی کا وہ لیکھ 3 اور 10 مئی کے "ہریجن" میں بھی چھپ چکا ہے. اسی کو اب ہم نے ایک چھوٹی سی کتاب کی شکل میں جسکا نام 'ایگریمینٹ آر سلیوری بانڈ؟' (Agreement or Slavery Bond ?) ہے' نکالا ہے . اس کتاب میں شری کشور لال بھائی مشروالا کی ایک بہت ہی گمبھیر اور وچار پورن بھومکا ہے . ہم اسی کا انوواد اِس لیکھ میں دے رہے ہیں—ایڈیٹر]

راشٹروں کے اتہاس میں اکثر ایسی گھٹنائیں ملتی ہیں یا سودے ہوتے دکھائی دیتے ہیں جنکا نہ کوئی فوری اثر معلوم پڑتا ہے نہ انسے جنتا میں کوئی بڑی سنسنی ہی پھیلتی ہے' اور کیا راجکاجی نیتا کیا ارتھ شاستری لوگ سبھی انکی طرف سے لاپرواہ رہتے ہیں . لیکن وہ گھٹنائیں یا سودے ایسے ہوتے ہیں جنکا راشٹر کی کایا پلٹنے میں آگے چلکر کافی بڑا ہاتھ ہونا ثابت ہوتا ہے. یہ گھٹنائیں یا سودے ایک طرح کا بیج بونے کا کام کرتے ہیں جو کچھ عرصے بعد بڑے زور شور سے بڑھکر چاروں طرف پھیل جاتا ہے اور دھرتی کے بھی اندر بہت دور جاکر اپنے آس پاس کی ہر چیز کو جھلسا دیتا ہے . شروع شروع میں تو یہ دیکھنے میں بھولا بھالا ہی نہیں بلکہ خوشنما بھی معلوم ہوتا ہے . لیکن بعد میں جب یہ اپنا اثر دکھلانا شروع کر دیتا ہے تب ایسا محسوس ہوتا ہے کہ—'کا برسا جب کرشی سکھانی' اور تب اسکے جال سے بھی نکلنا ناممکن معلوم ہوتا ہے .

5 جنوری 1952 کو امریکہ اور هندستان کے بیچ جو سمجھوتا ہوا ہے وہ شری سریش رام بھائی اور ہم میں سے بہتوں کو اس طرح کی چیز محسوس ہوتی ہے .

هند سرکار نے یہ سمجھوتا بہت سوچ سمجھنے کے بعد اور اپنے ایکسپرٹوں یا جانکاروں کی صلح کے بعد کیا ہے اور اس لئے اسے اپنے اس کارنامے پر پورا پورا سنتوش ہے . ایک نہیں بلکہ دیش کے بہت سے نامی اخباروں نے اور بیوپاری کارخانے داروں کے آرتھک آواز پتروں نے بھی اس سمجھوتے کی دہائی دی ہے .

ہم سب جانتے ہیں کہ پنڈت جواہر لال نہرو کو اس بات کی کتنی زیادہ فکر ہے کہ دیش کے آرتھک

"हां हां, जरूर." उन्होंने मिल कर जवाब दिया और फिर बड़े शौक़ से मलंग साहब क्या फ़रमायेंगे उसकी इन्तज़ार करने लगे.

फिर मलंग साहब ने फ़रमाया—"ख़ुशबू लफ़्ज़ दो लफ़्ज़ों का बना हुआ है—ख़ुश और बू. तो ख़ुशबू का मतलब हुआ उसकी बू जो हमेशा ख़ुश रहता है और हमेशा ख़ुश तो ख़ुदा ही रहता है. उपनिशदों में क्या एक जगह ऐसा नहीं लिखा हुआ है कि ईश्वर आनन्द है ?"

फिर कुछ देर के लिए वह ख़ामोश रहे. उनके मित्र उनकी तरफ़ अचरज से देखने लगे. मगर उनमें से एक से रहा ही न गया. वह बोल उठा—"ख़ूब कही मलंग मियां, मगर कुछ और भी तो कहो."

मलंग मियां ने अपनी विचार तरंग जारी रखी. "हर एक में ईश्वर बसता है. और वह आनन्द मय है. मगर ईश्वर का एक और भी तो नाम है. वह है प्रेम. और जहां लोग आपस में प्रेम से मिलते हैं वहां ख़ुशी की ख़ुशबू ख़ुद बख़ुद लोगों के दिलों से एक अगरबत्ती की सुगन्ध की तरह ऊपर निकल उठती है."

मलंग साहब फिर कुछ ख़ामोश रहे. उनके मित्रों ने क्योंकि अब उनका मकान नज़दीक ही आ पहुंचा था उन्हें नमस्कार की और कहा—"आज तो मलंग साहब आपने अपनी पंडिताई का जौहर ख़ूब दिखाया."

जवाब में मलंग साहब ज़रा हंस दिये और कहने लगे—"भाई, पंडिताई से तो मैं हज़ारों कोस दूर रहने की हमेशा कोशिश करता आया हूँ. फिर मेरे में पंडिताई कहां ? हां, इतना ज़रूर कहूँगा कि मैं ख़ुशबूदार बनने की ख़्वाहिश बरसों से रखता आया हूँ."

मेरे मत से कम्युनिज़्म कोई बुरी चीज़ हो ऐसी बात नहीं है बुरी चीज़ यह है कि वह हिंसा से लादा जाता है. मुझे कम्युनिज़्म से डर बिलकुल नहीं लगता, क्योंकि हिन्दुस्तान की हज़ारों बरसों की कलचर हिंसा विरोधी है. और गांधीजी ने हमारे देश को अहिंसा की ताक़त दी है. मुझे यक़ीन है कि हिन्दुस्तान उसी की बदौलत बचने वाला है. मुझे यह भी विश्वास है कि अमरीका जैसा देश डर को छोड़ कर अगर अहिंसा की ताक़त को आज़मा कर देखेगा, तो वह सारी दुनिया को निडर करेगा और ख़ुद भी निडर बनेगा.

—विनोबा

" ہاں ہاں، ضرور ." اُنھوں نے مل کر جواب دیا اور پھر بڑے شوق سے ملنگ صاحب کیا فرمائینگے اُس کی انتظار کرنے لگے .

پھر ملنگ صاحب نے فرمایا—" خوشبو لفظ دو لفظوں کا بنا ہوا ہے—خوش اور بو تو خوشبو کا مطلب ہوا اُس کی بو جو ہمیشہ خوش رہتا ہے اور ہمیشہ خوش تو خدا ہی رہتا ہے . اُپنشدوں میں کیا ایک جگہ ایسا نہیں لکھا ہوا ہے کہ ایشور آنند ہے ؟"

پھر کچھ دیر کے لئے وہ خاموش رہے . اُن کے متر اُن کی طرف اچرج سے دیکھنے لگے . مگر اُن میں سے ایک سے رہا ہی نہ گیا . وہ بول اُٹھا—"خوب کہی ملنگ میاں، مگر کچھ اور بھی تو کہو ."

ملنگ میاں نے اپنی وچار ترنگ جاری رکھی. " ہر ایک میں ایشور بستا ہے . اور وہ آنند مے ہے مگر ایشور کا ایک اور بھی تو نام ہے . وہ ہے پریم . اور جہاں لوگ آپس میں پریم سے ملتے ہیں وہاں خوشی کی خوشبو خود بہ خود لوگوں کے دلوں سے ایک اگر بتی کی سوگندھ کی طرح اوپر نکل اُٹھتی ہے ."

ملنگ صاحب پھر کچھ خاموش رہے. اُن کے متروں نے کیونکہ اب اُن کا مکان نزدیک ہی آ پہونچا تھا اُنھیں نمسکار کی اور کہا—" آج تو ملنگ صاحب آپ نے اپنی پنڈتائی کا جوہر خوب دکھایا ."

جواب میں ملنگ صاحب ذرا ہنس دیئے اور کہنے لگے—" بھائی، پنڈتائی سے تو میں ہزاروں کوس دور رہنے کی ہمیشہ کوشش کرتا آیا ہوں . پھر میرے میں پنڈتائی کہاں ؟ ہاں، اتنا ضرور کہونگا کہ میں خوشبودار بننے کی خواہش برسوں سے رکھتا آتا ہوں ."

میرے مت سے کمیونزم کوئی بری چیز ہو ایسی بات نہیں ہے . بری چیز یہ ہے کہ وہ ہنسا سے لادا جاتا ہے . مجھے کمیونزم سے ڈر بالکل نہیں لگتا' کیونکہ ہندستان کی ہزاروں برسوں کی کلچر ہنسا وِرودھی ہے اور گاندھی نے ہمارے دیش کو اہنسا کی طاقت دی ہے . مجھے یقین ہے کہ ہندستان اُسی کی بدولت بچنے والا ہے. مجھے یہ بھی وشواس ہے کہ امریکہ جیسا دیش ڈر کو چھوڑ کر اگر اہنسا کی طاقت کو آزما کر دیکھیگا' تو وہ ساری دنیا کو نڈر کریگا اور خود بھی نڈر بنیگا .

—ونوبا

दुनिया को बचाता है. उसी तरह आज भी दुनिया में विचारों से, वचन से, व्योपार से, शास्त्रार्थों से, ऐटम बम से हर तरह से भरसक कोशिशें हो रही हैं. उस प्रलय की सारी कोशिश पर जो देश मारकन्डे की तरह अकेला तैरेगा, उसके हाथ में दुनिया की लीडरशिप आने वाली है. मैं यह घमंड से नहीं बोल रहा हूँ, बल्कि नम्रता के साथ बोल रहा हूँ. हम विनम्र बनें, तभी ऊंचे उठ सकेंगे. मनु महाराज ने भविष्य लिख रखा है :

इस देश में जो महान पुरूश पैदा होंगे, उनमें
ऐसी शक्ति होगी कि उसके ज़रिये सारी दुनिया
के लोग अपने जीवन के लिए आदर्श सीखेंगे.

मैं कहता हूँ कि वह ताक़त, वह सत्ता आपके हाथों में है. आपको एक नेता मिला था, जिसकी लीडरशिप में आपका देश अहिंसा के तरीक़े से आज़ाद हो सका. आज भी इस देश में ऐसे लोग हैं जिनके दिल में सदभाव मौजूद हैं. आप थोड़ी हिम्मत रक्खो और थोड़ी कल्पना शक्ति रक्खो तो आप देखेंगे कि आपके हाथ में वह ताक़त है, जिससे आप दुनिया को आकार दे सकते हैं. यह हमला नहीं है बल्कि दुनिया को बचाना है. यह एक ऐसी दिली तमन्ना है जो रखने लायक़ है.

(लखनऊ में बुद्ध जयन्ती के दिन एक स्पीच से)

دنیا کو بچانا ہے . اُسی طرح آج بھی دنیا میں وچاروں سے' وچن سے' بیوپار سے' شاستراتھوں سے' ایٹم بم سے ہر طرح سے بھرسک کوششیں ہو رہی ہیں . اُس پرلے کی ساری کوشش پر جو دیش مارکنڈے کی طرح اکیلا تیریگا' اُسکے ہاتھ میں دنیا کی لیڈرشپ آنے والی ہے . میں یہ گھمنڈ سے نہیں بول رہا ہوں' بلکہ نمرتا کے ساتھ بول رہا ہوں . ہم ونمر بنیں' تبھی اونچے اُٹھ سکینگے . منومہاراج نے بھوشیہ لکھ رکھا ہے :

اِس دیش میں جو مہان پرش پیدا ہونگے' اُن میں ایسی شکتی ہوگی کہ اُس کے ذریعے ساری دنیا کے لوگ اپنے جیون کے لئے آدرش سیکھینگے .

میں کہتا ہوں کہ وہ طاقت' وہ ستا آپکے ہاتھوں میں ہے . آپ کو ایک نیتا ملا تھا' جسکی لیڈرشپ میں آپ کا دیش اہنسا کے طریقے سے آزاد ہوسکا. آج بھی اِس دیش میں ایسے لوگ ہیں جنکے دل میں سدبھاؤ موجود ہیں . آپ تھوڑی ہمت رکھو اور تھوڑی کلپنا شکتی رکھو تو آپ دیکھینگے کہ آپ کے ہاتھ میں وہ طاقت ہے' جس سے آپ دنیا کو آکار دے سکتے ہیں . یہ حملہ نہیں ہے بلکہ دنیا کو بچانا ہے . یہ ایک ایسی دلی تمنا ہے' جو رکھنے لائق ہے .

(لکھنؤ میں بدھ جینتی کے دن ایک اسپیچ سے)

ख़ुशबू

(गु० म०)

एक दिन वर्धा में काका कालेलकर जी से कुछ दोस्त मिलने गये. जब सब उन्हें प्रेम पूर्वक "राम रहीम" नमस्कार कर चुके तो उन्होंने उनमें से एक से जो ज़रा मुहब्बत मस्त और ज़िन्दा दिल थे हंसते हंसते पूछा—"मगर यह ख़ुशबू कहां से ?"

काका जी के यह शब्द सुनकर पहले तो सब लोग कुछ हैरान हुए. और इसका एक कारन भी था. उस वक़्त उस प्रेम मंडली में किसी ने भी अपने जिस्म पर या कपड़ों पर किसी ख़ुशबूदार तेल या इतर का इस्तेमाल नहीं किया हुआ था. तो फिर यह ख़ुशबू कहां से ?

जब बातचीत ख़त्म हो चुकी और मित्र मंडल घर वापिस लौटा तो रास्ते में एक मित्र ने जो कुछ मलंग तबियत का था अपने मित्रों को कहा—"मैं तुम्हें बताऊं वह ख़ुशबू कहां से आ रही थी ?"

خوشبو

(گ . م .)

ایک دن وردھا میں کاکا کالیلکر جی سے کچھ دوست ملنے گئے . جب سب اُنہیں پریم پوروک " رام رحیم " نمسکار کر چکے تو اُنہوں نے اُن میں سے ایک جو ذرا محبت مست اور زندہ دل تھے ہنستے ہنستے پوچھا—"مگر یہ خوشبو کہاں سے ؟"

کاکا جی کے یہ شبد سن کر پہلے تو سب لوگ کچھ حیران ہوئے اور اس کا ایک کارن بھی تھا . اُس وقت اس پریم منڈلی میں کسی نے بھی اپنے جسم پر یا کپڑوں پر کسی خوشبو دار تیل یا عطر کا استعمال نہیں کیا ہوا تھا . تو پھر یہ خوشبو کہاں سے ؟

جب بات چیت ختم ہو چکی اور متر منڈل گھر واپس لوٹا تو راستے میں ایک متر نے جو کچھ ملنگ طبیعت کا تھا اپنے متروں کو کہا—" میں تمہیں بتاؤں وہ خوشبو کہاں سے آ رہی تھی ؟"

दीवारें ख़्यालात के आवागमन को रोक नहीं सकतीं

और मैं जनता हूँ कि यह काम धर्म चक्र परिवर्तन का काम है. यह मेरी सिंह गर्जना है. ज़मीन तो मेरे पास कब पहुँच चुकी है. आप जिस तरीक़े से चाहो उस तरीक़े से यह समस्या हल कर सकते हो. आपको तय करना है कि घी के डिब्बे को आग लगानी है; या वेद मंत्रों के साथ यज्ञ में उसकी आहुति देनी है. आप यह मत समझिये कि बाहर से हमारे इस देश में सिर्फ़ मानसून ही आते हैं. क्रान्तिकारी विचार भी बाहर से आते हैं और जिस तरह से हवा बे रोक टोक आती है उसी तरह क्रान्तिकारी विचार भी बिना रोक टोक, बिना किसी तरह के पास पोर्ट के आते रहते हैं. लोगों ने, जहां दीवारें नहीं थीं, वह बनाई. चीन की वह बड़ी दीवार देख लीजिये. भगवान ने जरमनी और फ्रान्स के बीच कोई दीवार नहीं खड़ी की थी, लेकिन उन्होंने सिगफ़्रीद और मेज़िनो लाइनें बना कर क्षेत्र छोटा कर दिया. मगर यह दीवारें लोगों को सिर्फ़ इधर से उधर जाने आने से ही रोक सकती हैं, लेकिन वह विचारों के आवा गमन को नहीं रोक सकतीं. उसी तरह यहां भी दुनिया के हर एक देश से विचार आयेंगे और यहाँ से बाहर भी जायेंगे. इसलिये हमें तय करना चाहिये कि भूमि की समस्या हमें शान्ति से हल करनी है या हिंसा से ? मेरे मन में इस बारे में सन्देह नहीं है कि यह समस्या शान्ति से हल हो सकती है. इस बारे में इतना साफ़ दर्शन मेरे मन में है, इसीलिये मैं बे ख़ौफ़ हो कर बोल रहा हूँ और कहता हूँ कि भाइयो, बन में पन्छी बोल रहे हैं, इसलिये अब जाग जाओ. आप इसे सुनते हैं या नहीं ? आप जागते हैं या नहीं ? हे मेरे अन्तर यामी भगवान ! सुबह का समय हो गया है, तुम जाग जाओ और दीनन को दान दो ! जिस तरह तुलसी दास जी भगवान को समझा रहे थे, उसी तरह मैं अपने भगवान को यानी आपको कहता हूँ कि जाग जाओ. अगर आप सब दान दोगे तो आपकी इज़्ज़त होगी.

आज की ज़रूरत

ज़रूरत इस बात की है कि भू-दान यज्ञ का सन्देश दूर दूर फैलाने के लिए हम उसी निश्ठा से काम करें, जिस निश्ठा से भगवान बुद्ध के चेलों ने किया. वह बाहर के देशों में गये और वहां प्रेम से प्रचार किया. उसी निश्ठा से हमें इस नये धर्म चक्र परिवर्तन में लग जाना चाहिये. ऐसा होगा, तब आप भी दुनिया को एक नया रूप दे सकेंगे. मैंने कहा कि जब प्रलय के समय सारी दुनिया जलमय हो जाती है तो अकेला मारकन्डे रिशी तैरता रहता है और फिर वही

دیواریں خیالات کے آواگمن کو روک نہیں سکتیں

اور میں جانتا ہوں کہ یہ کام دھرم چکر پریورتن کا کام ہے . یہ میری سنگھ گرجنا ہے . زمین تو میرے اس کب کی پہونچ چکی ہے . آپ جس طریقے سے چاہو' اس طریقے سے یہ سمسیا حل کرسکتے ہو . آپ کو طے کرنا ہے کہ گھی کے ڈبے کو آگ لگانی ہے' یا وید منتروں کے ساتھ یگیہ میں اس کی آہوتی دینی ہے. آپ یہ مت سمجھئے کہ باہر سے ہمارے اِس دیش میں صرف مانسون ہی آتے ہیں . کرانتکاری وچار بھی باہر سے آتے ہیں اور جس طرح سے ہوا بے روک ٹوک آتی ہے' اسی طرح کرانتی کاری وچار بھی بنا روک ٹوک' بنا کسی طرح کے پاس پورٹ کے آتے رہتے ہیں . لوگوں نے' جہاں دیواریں نہیں تھیں' وہ بنائیں. چین کی وہ بڑی دیوار دیکھ لیجئے . بھگوان نے جرمنی اور فرانس کے بیچ کوئی دیوار نہیں کھڑی کی تھی' لیکن انہوں نے زگ‌فرید اور میزنو لائنیں بناکر چھیتر چھوٹا کردیا . مگر یہ دیواریں لوگوں کو صرف اِدھر سے اُدھر جانے آنے سے ہی روک سکتی ہیں' لیکن وہ وچاروں کے آواگمن کو نہیں روک سکتیں. اسی طرح یہاں بھی دنیا کے ہر ایک دیش سے وچار آئینگے اور یہاں سے باہر بھی جائینگے . اس لئے ہمیں طے کرنا چاہئے کہ بھومی کی سمسیا ہمیں شانتی سے حل کرنی ہے یا ہنسا سے؟ میرے من میں اس بارے میں سندیہہ نہیں ہے کہ یہ سمسیا شانتی سے حل ہوسکتی ہے. اِس بارے میں اِتنا صاف درشن میرے من میں ہے' اِسی لئے میں بےخوف ہوکر بول رہا ہوں اور کہتا ہوں کہ بھائیو' بن میں پنچھی بول رہے ہیں' اس لئے اب جاگ جاؤ. آپ اسے سنتے ہیں یا نہیں ؟ آپ جاگتے ہیں یا نہیں ؟ ہے میرے انترجامی بھگوان ! صبح کا سمے ہوگیا ہے' تم جاگ جاؤ اور دینن کو دان دو ! جس طرح تلسی داس جی بھگوان کو سمجھا رہے تھے' اسی طرح میں اپنے بھگوان کو یعنی آپ کو کہتا ہوں کہ جاگ جاؤ . اگر آپ سب دان دوگے تو آپ کی عزت ہوگی.

آج کی ضرورت

ضرورت اس بات کی ہے کہ بھودان یگیہ کا سندیش دور دور پھیلانے کے لئے ہم اُسی نشٹھا سے کام کریں' جس نشٹھا سے بھگوان بدھ کے چیلوں نے کیا. وہ باہر کے دیشوں میں گئے اور وہاں پریم سے پرچار کیا. اُسی نشٹھا سے ہمیں اِس نئے دھرم چکر پریورتن میں لگ جانا چاہئے . ایسا ہوگا' تب آپ بھی دنیا کو ایک نیا روپ دے سکینگے . میں نے کہا کہ جب پرلے کے سمے ساری دنیا جل مے ہو جاتی ہے تو اکیلا مارکنڈے رشی تیرتا رہتا ہے اور پھر وہی

ग़ुलामी मंजूर करनी चाहिये, क्योंकि हिन्दुस्तान खुद एक पंच रंगी दुनिया है. इसमें कई धर्म, कई भाषायें, कई सूबे और उनके बहुत से रस्म व रिवाज हैं. इसका एक एक सूबा यौरप के बड़े बड़े देश की बराबरी का है. क्या ऐसी बहुत सी दूसरी जमाअतों को हम हिंसक तरीक़े से एक रस रख सकते हैं ? एक एक मसला रोज़ हमारे सामने मौजूद होता जा रहा है. आन्ध्र वाले चाहते हैं कि हमें एक आज़ाद प्रदेश मिले. वह भारत भूमि से अलग नहीं रहना चाहते हैं, लेकिन उनकी अलग प्रदेश की मांग ग़ैर वाजिब नहीं है. तो क्या उनकी यह मांग हिंसक तरीक़े से पूरी हो सकती है ? अगर हिंसात्मक तरीक़े को हम ठीक मानते हैं तो हमें यह मानना होगा कि गांधी का हत्यारा पुन्यवान था. उसके विचार भले ही ग़लत हों, पर वह पक्का था. अगर हम अच्छे और सच्चे विचार के वास्ते हिंसात्मक तरीक़े अख़्तयार कर सकते हैं, तो मैं आप से कहना चाहता हूँ कि फिर हिन्दुस्तान के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे, वह मज़बूत नहीं रह सकेगा. हिंसा से एक मसला तय होता दिखाई देगा, लेकिन दूसरा मसला पैदा होगा. मसले कम होने के बजाय नये नये मसले पैदा होते ही रहेंगे. आज भी हरिजनों को मंदिरों में आने जाने को नहीं मिलता छूआ छूत का यह भेद नहीं मिट पाया तो क्या हरिजन अपने हाथ में हथियार लें ? अगर अच्छे काम के लिए हिंसा जायज़ है तो हरिजन भाई हथियार उठायें, यह भी जायज़ मानना होगा. यह दूसरी बात है कि वह हथियार न उठायें.

बुद्ध का काम इन कमज़ोर कन्धों पर !

इसलिये आज यह सब बातें ध्यान में रख कर तय करना होगा कि जो महत्व के मसले हमारे सामने आज हैं, उनको हल करने के लिए कौन से तरीक़े जायज़ हैं और कौन से नाजायज़? अगर हम अच्छे मक़सद के वास्ते ख़राब साधन इस्तेमाल करते हैं, तो हिन्दुस्तान के सामने मसले पैदा ही होते रहने वाले हैं लेकिन अगर हम अहिंसक तरीक़े से अपने मसले तय करेंगे तो दुनिया में मसले रहेंगे ही नहीं. यही वजह है कि मैं भूमि की समस्या शान्ति के साथ हल करना चाहता हूँ. भूमि की समस्या छोटी समस्या नहीं है. मैं लोगों से दान में भूमि मांग रहा हूँ, भीक नहीं मांग रहा हूँ. एक ब्राह्मन के नाते मैं भीक मांगने का अधिकारी तो हूँ, लेकिन यह भीक मैं निजी तौर पर ही मांग सकता हूँ. पर जहां दरिद्र नारायन के प्रतिनिधि के तौर पर मांगता हूँ, वहां मुझे भीक नहीं मांगनी है, दीक्षा देनी है. इसलिये मैं इस नतीजे पर पहुँच चुका हूँ कि भगवान जो काम बुद्ध के ज़रिये कराना चाहते थे, वह काम उन्होंने मेरे इन कमज़ोर कन्धों पर डाला है.

غلامی منظور کرنی چاہئے' کیونکہ ہندستان خود ایک پنچ رنگی دنیا ہے . اِس میں کئی دھرم' کئی بھاشائیں' کئی صوبے اور اُن کے بہت سے رسم و رواج ہیں . اِس کا ایک ایک صوبہ یورپ کے بڑے بڑے دیش کی برابری کا ہے . کیا ایسی بہت سی دوسری جماعتوں کو ہم ہنسک طریقے سے ایک رس رکھ سکتے ہیں؟ ایک ایک مسئلہ روز ہمارے سامنے موجود ہوتا جا رہا ہے. آندھر والے چاہتے ہیں کہ ہمیں ایک آزاد پردیش ملے . وہ بھارت بھومی سے الگ نہیں رہنا چاہتے ہیں' لیکن اُن کی الگ پردیش کی مانگ غیر واجب نہیں ہے. تو کیا اُن کی یہ مانگ ہنسک طریقے سے پوری ہوسکتی ہے؟ اگر ہنساتمک طریقے کو ہم ٹھیک مانتے ہیں تو ہمیں یہ ماننا ہوگا کہ گاندھی کا ہتھیارا پنیہ‌وان تھا. اُس کے وچار بھلے ہی غلط ہوں پر وہ پکا تھا . اگر ہم اچھے اور سچے وچار کے واسطے ہنساتمک طریقے اختیار کرسکتے ہیں' تو میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ پھر ہندستان کے ٹکڑے ٹکڑے ہوجائینگے' وہ مضبوط نہیں رہ سکیگا. ہنسا سے ایک مسئلہ طے ہوتا دکھائی دیگا' لیکن دوسرا مسئلہ پیدا ہوگا . مسئلے کم ہونے کے بجائے نئے نئے مسئلے پیدا ہوتے ہی رہینگے . آج بھی ہریجنوں کو مندروں میں آنے جانے کو نہیں ملتا . چھوا چھوت کا یہ بھید نہیں مٹ پایا تو کیا ہریجن اپنے ہاتھ میں ہتھیار لیں ؟ اگر اچھے کام کے لئے ہنسا جائز ہے تو ہریجن بھائی ہتھیار اُٹھائیں' یہ بھی جائز ماننا ہوگا . یہ دوسری بات ہے کہ وہ ہتھیار نہ اُٹھائیں .

بدھ کا کام اِن کمزور کندھوں پر !

اِس لئے آج یہ سب باتیں دھیان میں رکھ کر طے کرنا ہوگا کہ جو مہتو کے مسئلے ہمارے سامنے آج ہیں' اُن کو حل کرنے کے لئے کون سے طریقے جائز ہیں اور کون سے ناجائز ؟ اگر ہم اچھے مقصد کے واسطے خراب سادھن اِستعمال کرتے ہیں' تو ہندستان کے سامنے مسئلے پیدا ہی ہوتے رہنے والے ہیں. لیکن اگر ہم اہنسک طریقے سے اپنے مسئلے طے کرینگے تو دنیا میں مسئلے رہینگے ہی نہیں. یہی وجہ ہے کہ میں بھومی کی سمسیا شانتی کے ساتھ حل کرنا چاہتا ہوں . بھومی کی سمسیا چھوٹی سمسیا نہیں ہے. میں لوگوں سے دان میں بھومی مانگ رہا ہوں' بھیک نہیں مانگ رہا ہوں. ایک براہمن کے ناتے میں بھیک مانگنے کا ادھیکاری تو ہوں' لیکن یہ بھیک میں نجی طور پر ہی مانگ سکتا ہوں. پر جہاں دردرناراین کے پرتی ندھی کے طور پر مانگتا ہوں' وہاں مجھے بھیک نہیں مانگنی ہے' دیکشا دینی ہے . اِس لئے میں اس نتیجے پر پہونچ چکا ہوں کہ بھگوان جو کام بدھ کے ذریعے کرانا چاہتے تھے' وہ کام اُنہوں نے میرے اِن کمزور کندھوں پر ڈالا ہے .

हिंसा का तरीक़ा चुन सकते हैं, चाहें तो अहिंसा का चुन सकते हैं. चाहें तो फ़ौज में आदमी बढ़ा सकते हैं, नौका दल और हवाई दल भी बढ़ा सकते हैं और देश को खाना कपड़ा चाहे न मिले, लेकिन देश वासियों को इस सेना के लिए त्याग करने को कह सकते हैं. और चाहें तो अहिंसा के रास्ते भी जा सकते हैं. चुनाव करने की यह ताक़त आज हमारे हाथ में है. पहले लाचारी थी, आज ऐसी लाचारी नहीं है.

ग़ुलाम बनिये या ख़तरा मोल लीजिये

और फिर आज, जब कि गांधी जी चले गये हैं, हम लोग मुक्त मन से और खुले दिल से बिना किसी दबाव के फ़ैसला कर सकते हैं. मानो इसीलिये गांधी जी को भगवान हमारे बीच से उठा ले गया है ! अब उनका दबाव हम पर नहीं है. अगर हम हिंसा के तरीक़े को मानते हैं तो हमें रूस या अमरीका को गुरु मानना होगा. किसी एक गुरु को मान कर उसके शागिर्द बन कर आज़ादी के साथ उनमें से किसी का ग़ुलाम बनना होगा. सवाल यह है कि क्या आज़ाद इच्छा से हम उनके शागिर्द बनना चाहते हैं ? क्या उनके "कैम्प फ़ालोअर" बन कर उनके पीछे पीछे जाकर हमारी ताक़त बढ़ने वाली है ? उनकी ताक़त से ताक़त लेने में हमें पचासों साल लग जायेंगे और मुमकिन है फिर भी हम उनसे ज़ियादा ताक़तवर न हो सकें. नतीजा यह होगा कि हिन्दुस्तान को फिर से ग़ुलाम हो कर रहना पड़ेगा. और अगर हम अमरीका और रूस दोनों से भी ताक़तवर बन जायें तो दुनिया के लिए एक ख़तरा साबित होंगे. अब सवाल हमारे सामने यह है कि आज़ादी के नाम पर क्या हम ग़ुलाम बनना चाहते हैं या दुनिया के लिये ख़तरा बनना चाहते हैं ? हमें गहराई से इस पर सोचना होगा.

हिंसा से नई मुसीबतें

आज हिन्दुस्तान आज़ाद है, फिर भी कपड़ा बाहर से मंगाना पड़ता है. आज हिन्दुस्तान आज़ाद है, तब भी हमें "एक्सपर्ट" लोग बाहर से मंगाने पड़ते हैं. आज हिन्दुस्तान आज़ाद है लेकिन हमें हथियार और फ़ौजी बाहर से ही मंगाने पड़ते हैं. आज हिन्दुस्तान आज़ाद है, लेकिन तालीम के लिए भी हमें बाहर के मुल्कों पर निर्भर रहना पड़ता है. तो क्या आज़ादी के साथ साथ हम आज़ादी के साथ ग़ुलाम बने रहना चाहते हैं ? आज यह सवाल हम लोगों के सामने मौजूद है. भगवान ने हिन्दुस्तान का नसीब ऐसा बनाया है कि या तो उसे अहिंसा के रास्ते से श्रद्धा के साथ चलना चाहिये, या जो लोग हिंसा में पंडित हैं उनकी

ہنسا کا طریقہ چن سکتے ہیں' چاہیں تو اہنسا کا چن سکتے ہیں. چاہیں تو فوج میں آدمی بڑھا سکتے ہیں' نوکا دل اور ہوائی دل بھی بڑھا سکتے ہیں اور دیش کو کھانا کپڑا چاہے نہ ملے' لیکن دیش واسیوں کو اس سینا کے لئے تیاگ کرنے کو کہہ سکتے ہیں. اور چاہیں تو اہنسا کے راستے بھی جا سکتے ہیں. چناؤ کرنے کی یہ طاقت آج ہمارے ہاتھ میں ہے. پہلے لاچاری تھی' آج ایسی لاچاری نہیں ہے.

غلام بنئے یا خطرہ مول لیجئے

اور پھر آج' جبکہ گاندھی جی چلے گئے ہیں' ہم لوگ مکت من سے اور کھلے دل سے بنا کسی دباؤ کے فیصلہ کر سکتے ہیں. مانو اسی لئے گاندھی جی کو بھگوان ہمارے بیچ سے اٹھا لے گیا ہے ! اب ان کا دباؤ ہم پر نہیں ہے. اگر ہم ہنسا کے طریقے کو مانتے ہیں تو ہمیں روس یا امریکہ کو گرو ماننا ہوگا. کسی ایک گرو کو مان کر اس کے شاگرد بن کر آزادی کے ساتھ ان میں سے کسی کا غلام بننا ہوگا. سوال یہ ہے کہ کیا آزاد اچھا سے ہم ان کے شاگرد بننا چاہتے ہیں ؟ کیا ان کے "کیمپ فالوئر" بنکر ان کے پیچھے پیچھے جا کر ہماری طاقت بڑھنے والی ہے ؟ ان کی طاقت سے طاقت لینے میں ہمیں پچاسوں سال لگ جائیں گے اور ممکن ہے پھر بھی ہم ان سے زیادہ طاقتور نہ ہو سکیں. نتیجہ یہ ہوگا کہ ہندستان کو پھر سے غلام ہو کر رہنا پڑیگا. اور اگر ہم امریکہ اور روس دونوں سے بھی طاقتور بن جائیں تو دنیا کے لئے ایک خطرہ ثابت ہونگے. اب سوال ہمارے سامنے یہ ہے کہ آزادی کے نام پر کیا ہم غلام بننا چاہتے ہیں یا دنیا کے لئے خطرہ بننا چاہتے ہیں ؟ ہمیں گہرائی سے اس پر سوچنا ہوگا.

ہنسا سے نئی مصیبتیں

آج ہندستان آزاد ہے' پھر بھی کپڑا باہر سے منگانا پڑتا ہے. آج ہندستان آزاد ہے' تب بھی ہمیں "ایکسپرٹ" لوگ باہر سے منگانے پڑتے ہیں. آج ہندستان آزاد ہے لیکن ہمیں ہتھیار اور فوجی باہر سے ہی منگانے پڑتے ہیں آج ہندستان آزاد ہے' لیکن تعلیم کے لئے بھی ہمیں باہر کے ملکوں پر نربھر رہنا پڑتا ہے. تو کیا آزادی کے ساتھ ساتھ ہم آزادی کے غلام بنے رہنا چاہتے ہیں ؟ آج یہ سوال ہم لوگوں کے سامنے موجود ہے. بھگوان نے ہندستان کا نصیب ایسا بنایا ہے کہ یا تو اسے اہنسا کے راستے سے شردھا کے ساتھ چلنا چاہئے' یا جو لوگ ہنسا میں پنڈت ہیں ان کی

, उतनी ही महिमा इस बात की भी है कि अंगरेज़ों
ैय्यत तारीख़ को यहां से हुकूमत उठा ली. इतिहास
वाले मानेंगे कि यह भी नैतिकता की अजीब जीत
और चमत्कार जो ऊपर के चमत्कारों से भी
ज़ोर का है वह हुआ कि जहां माउन्टबेटन ने
. का कारोबार हिन्दुस्तान के लोगों को सौंप दिया,
रे लोगों ने उसे ही गवरनर जनरल के तौर पर
. नैतिक जीत की इससे बड़ी मिसाल कोई हो
ती थी. नैतिक तरीक़े की ख़ूबी यह होती है कि
जीतते हैं वह जीतते ही हैं, लेकिन जो नहीं जीतते,
ीतते हैं, एक की हार के आधार पर दूसरे की जीत
ी. और आप देखते हैं कि बावजूद इस बात के
इंगलैंड से कई तरह का दुख पहुँचा और मुसीबतें
ीं, हम लोगों के मन में आज इंगलैंड के बारे में
ß भाव नहीं हैं. दूसरी जगह किसी भी लड़ाई के
सद्भाव प्रगट नहीं हुआ है.

सा या अहिंसा में चुनाव

जब कि एक राज जा कर दूसरा राज आया है,
सोचने का समय है कि हमें किस तरह अपनी
चना करनी है. यानी यह शाम का समय है, ध्यान
है. हमारे सामने आज पच्चीसों रास्ते खुले हैं.
ास्ता लें, यह हमें तय करना है. यह तय करने में हमें
े को नहीं भूलना चाहिये जिसका हमने आदर के
ो ज़िक्र किया. आज हम एक बड़ी भारी सल्तनत
उठा रहे हैं. इसलिये हम सब के सामने यह बड़ा
ल है कि हमारी आर्थिक और समाजी रचना करने
तरीक़ा मंज़ूर करें. गांधी जी के ज़माने में हमने
का तरीक़ा आज़माया था, लेकिन उसमें हमारी
ियत नहीं थी, क्योंकि तब हम लाचार थे. अगर
.स्ते नहीं जाते तो मार खाते. दूसरा कोई अहिंसक
ारे लिए खुला नहीं था. इसलिये जो रास्ता हम ने
किया, वह अशरन का शरन था, अनाज का
.. इसीलिये हमने अहिंसा का रास्ता अपनाया
ो जी की लीडरशिप हमें मिली. हमने सोचा कि
हम आज़मायें. हिंसा में हम जितने ताक़तवर थे,
ियादा ताक़तवर हमारे दुश्मन थे. लेकिन अहिंसा
से ज़ियादा ताक़तवर थे. इसलिये हमारे सामने
ास्ता था—या तो आज़ादी हासिल करने की
. कर चुप चाप ग़ुलामी को मान लें या अहिंसक
िए तैयार हो जायें. उस समय हमारे सामने
ा चुनाव का सवाल नहीं था. लेकिन अब बात
अब हम चुनाव कर सकते हैं. अगर हम चाहें तो

مہیما ہے' اُتنی ہی مہیما اِس بات کی بھی ہے کہ انگریزوں
نے ایک نشچت تاریخ کو یہاں سے حکومت اُٹھالی. اتہاس
لکھنے والے مانینگے کہ یہ بھی نیتکتا کی عجیب جیت
ہوئی . ایک اور چمتکار جو اوپر سے چمتکاروں سے بھی زیادہ
زور کا ہے وہ یہ ہوا کہ جہاں ماونٹ بیٹن نے ہندستان
کا کاروبار ہندستان کے لوگوں کو سونپ دیا' وہاں ہمارے'
لوگوں نے اُسے ہی گورنر جنرل کے طور پر رکھ لیا . نیتک
جیت کی اِس سے بڑی مثال کوئی ہو نہیں سکتی تھی.
نیتک طریقے کی خوبی یہ ہوتی ہے کہ اُس میں جو
جیتتے ہیں وہ جیتتے ہی ہیں' لیکن جو نہیں جیتتے'
وہ بھی جیتتے ہیں' ایک کی ہار کے آدھار پر دوسرے کی
جیت نہیں ہوتی . اور آپ دیکھتے ہیں کہ باوجود اِس
بات کے کہ ہمیں انگلینڈ سے کئی طرح کا دکھ پہونچا اور
مصیبتیں سہنی پڑیں' ہم لوگوں کے من میں آج انگلینڈ
کے بارے میں دشمنی کے بھاؤ نہیں ہیں . دوسری جگہ
کسی بھی لڑائی کے بعد ایسا سدبھاؤ پرکٹ نہیں ہوا ہے .

ہنسا یا اہنسا میں چناؤ

اب جبکہ ایک راج جاکر دوسرا راج آیا ہے' تو یہ سوچنے
کا سمے ہے کہ ہمیں کس طرح اپنی سماج رچنا کرنی ہے .
یعنی یہ شام کا سمے ہے' دھیان کا سمے ہے . ہمارے سامنے
آج پچیسوں راستے کھلے ہیں . کون سا راستہ لیں' یہ
ہمیں طے کرنا ہے. یہ طے کرنے میں ہمیں اُس واقعے کو نہیں
بھولنا چاہئے جس کا ہم نے آدر کے ساتھ ابھی ذکر کیا. آج ہم
ایک بڑی بھاری سلطنت کا بوجھ اُٹھا رہے ہیں . اِس
لئے ہم سب کے سامنے یہ بڑا بھاری سوال ہے کہ ہماری
آرتھک اور اور سماجی رچنا کرنے میں کون سا طریقہ
منظور کریں . گاندھی جی کے زمانے میں ہم نے اہنسا کا
طریقہ آزمایا تھا' لیکن اُس میں ہماری کوئی خاصیت
نہیں تھی' کیونکہ تب ہم لاچار تھے . اگر ہم اُس راستے
نہیں جاتے تو مار کھاتے . دوسرا کوئی اہنسک راستہ
ہمارے لئے کھلا نہیں تھا . اِس لئے جو راستہ ہم نے اختیار
کیا' وہ اشرن کا شرن تھا' اناج کا لنگرے تھا . اِسی لئے ہم
نے اہنسا کا راستہ اپنایا اور گاندھی جی کی لیڈرشپ
ہمیں ملی . ہم نے سوچا کہ یہ طریقہ ہم آزمائیں .
ہنسا میں ہم جتنے طاقتور تھے' اُس سے زیادہ طاقتور
ہمارے دشمن تھے. لیکن اہنسا میں ہم اس سے زیادہ طاقتور
تھے. اس لئے ہمارے سامنے ایک ہی راستہ تھا . یا تو آزادی
حاصل کرنے کی تمنا چھوڑ کر چپ چاپ غلامی کو مان
لیں یا اہنسک بدلے کے لئے تیار ہوجائیں . اُس سمے
ہمارے سامنے ہنسا یا اہنسا کا سوال نہیں تھا—لیکن اب
بات دوسری ہے. اب ہم چناؤ کرسکتے ہیں. اگر ہم چاہیں تو

में सिद्ध होता है तब उसके व्यापक अमल के बारे में सोचा जाता है इन्सान का निजी जीवन भी एक प्रयोग शाला ही है. निर्वैरता का उसूल सब को जीतने वाला है और संतों ने यह उसूल निजी जीवन में साबित कर दिया है.

अहिंसा के मुश्तरका अमल की कामयाबी

इस बीच दुनिया में विज्ञान आगे बढ़ा. उस विज्ञान की ताक़त से लोगों ने बहुत से मुल्कों पर क़ब्ज़ा किया, अंगरेज़ यहां आए और वह यहां के मालिक बने. उन्होंने एक चमत्कार यहां किया. उन्होंने हिन्दुस्तान के सब लोगों के हाथ से हथियार छीन लिये. यह एक ऐसी घटना थी कि अगर इसे ऐसे ही बरदाश्त किया जाता तो देश को हमेशा के लिए गुलामी माननी पड़ती. लेकिन जिस देश के पीछे हजारों सालों का अनुभव हो, वह क़ायम के लिए गुलाम नहीं रह सकता था. तो बावजूद निहत्थे होने के, हम उठ सकें और गुलामी को तोड़ सकें ऐसा कोई हथियार हमारे लिये जरूरी था. इसलिये जो उसूल संतों ने अपने निजी जीवन में कामयाब किया, उसका अमल समाजी जीवन में किया गया. नतीजा यह हुआ कि हमें आज़ादी मिली.

हमारी आज़ादी की लड़ाई का अनोखापन

मैं यह दावा नहीं करता कि हमें जो आज़ादी मिली वह अहिंसा के सबब से ही मिली. क्योंकि यह दावा ठीक नहीं होगा. गीता ने बताया है, कोई भी काम पांच कारनों से बनता है. इसलिये सिर्फ़ हमारे अहिंसक प्रयोग से ही आज़ादी मिली, यह कहना अहंकार होगा. लेकिन अहिंसात्मक लड़ाई एक बड़ा कारन है, ऐसा हम कह सकते हैं. दुनिया का इतिहास लिखने वालों को लिखना पड़ेगा कि हिन्दुस्तान का राजकाजी मसला नैतिक तरीक़े से हल हुआ था और हिन्दुस्तान में क़ौमी आज़ादी की कोशिश करने वालों को जो लड़ाई या यश मिला वह इतना अनोखा और ऐसा अजीब है कि उसने दुनिया का ध्यान अपनी तरफ़ खींच लिया है.

इस तरह हमने देखा कि हम ने एक बहुत मज़बूत क़ौम से आज़ादी हासिल की है.

नैतिकता में एक की जीत से दूसरे की हार नहीं

दूसरा एक चमत्कार इस देश में यह हुआ कि इतनी बड़ी सल्तनत, जिसके बारे में यह कहा जाता था कि उस पर सूरज कभी नहीं डूबता, यहां से अपना सारा कारोबार ख़त्म कर के चली गई. उसने एक तारीख़ मुक़र्रर की और ठीक उस तारीख़ के पहले वह यहां से कूच कर गई. इसलिये मेरा मानना है कि हमने जो अहिंसक तरीक़ा अपनी आज़ादी हासिल करने के लिए अख़्तियार किया था, उसकी जितनी

میں سدھ ہوتا ہے تب اُسکے ویاپک عمل کے بارے میں سوچا جاتا ہے. اِنسان کا نجی جیون بھی ایک پریوگ شالا ہی ہے. نرویرتا کا اصول سب کو جیتنے والا ہے اور سنتوں نے یہ اُصول نجی جیون میں ثابت کر دیا ہے.

اہنسا کے مشترکہ عمل کی کامیابی

اس بیچ دنیا میں وگیان آگے بڑھا. اس وگیان کی طاقت سے لوگوں نے بہت سے ملکوں پر قبضہ کیا. انگریز یہاں آئے اور وہ یہاں کے مالک بنے. انہوں نے ایک چمتکار یہاں کیا. انہوں نے ہندستان کے سب لوگوں کے ہاتھ سے ہتھیار چھین لئے. یہ ایک ایسی گھٹنا تھی کہ اگر ایسے ہی برداشت کیا جاتا تو دیش کو ہمیشہ کے لئے غلامی ماننی پڑتی. لیکن جس دیش کے پیچھے ہزاروں سالوں کا انوبھو ہو' وہ قائم کے لئے غلام نہیں رہ سکتا تھا. تو باوجود نہتے ہونے کے' ہم اُٹھ سکیں اور غلامی کو توڑ سکیں ایسا کوئی ہتھیار ہمارے لئے ضروری تھا. اس لئے جو اصول سنتوں نے اپنے نجی جیون میں کامیاب کیا' اس کا عمل سماجی جیون میں کیا گیا. نتیجہ یہ ہوا کہ ہمیں آزادی ملی.

ہماری آزادی کی لڑائی کا انوکھاپن

میں یہ دعویٰ نہیں کرتا کہ ہمیں جو آزادی ملی وہ ہماری اہنسا کے سبب سے ہی ملی. کیونکہ یہ دعویٰ ٹھیک نہیں ہوگا. گیتا نے بتایا ہے' کوئی بھی کام پانچ کارنوں سے بنتا ہے. اِس لئے صرف ہمارے اہنسک پریوگ سے ہی آزادی ملی' یہ کہنا اہنکار ہوگا. لیکن اہنساتمک لڑائی ایک بڑا کارن ہے' ایسا ہم کہ سکتے ہیں. دنیا کا اتہاس لکھنے والوں کو لکھنا پڑیگا کہ ہندستان کا راج کاجی مسئلہ نیتک طریقے سے حل ہوا تھا اور ہندستان میں قومی آزادی کی کوشش کرنے والوں کو جو لڑائی یا یش ملا وہ اتنا انوکھا اور ایسا عجیب ہے کہ اُس نے دنیا کا دھیان اپنی طرف کھینچ لیا ہے.

اس طرح ہم نے دیکھا کہ ہم نے ایک بہت مضبوط قوم سے آزادی حاصل کی ہے.

نیتکتا میں ایک کی جیت سے دوسرے کی ہار نہیں

دوسرا ایک چمتکار اِس دیش میں یہ ہوا کہ اتنی بڑی سلطنت' جس کے بارے میں یہ کہا جاتا تھا کہ اس پر سورج کبھی نہیں ڈوبتا' یہاں سے اپنا سارا کاروبار ختم کر کے چلی گئی. اُس نے ایک تاریخ مقرر کی اور ٹھیک اُس تاریخ کے پہلے وہ یہاں سے کوچ کر گئی. اس لئے میرا ماننا ہے کہ ہم نے جو اہنسک طریقہ اپنی آزادی حاصل کرنے کے لئے اختیار کیا تھا' اُس کی جتنی

रुक जाता है और फिर उसमें से वह अंकुराता है, उसी तरह बीच के ज़माने में बुद्ध की शिक्षा का बीज कुछ ढका सा रहा और अब वह अंकुराता दिखाई दे रहा है. बुद्ध भगवान ने साफ़ शब्दों में कहा था कि भाईयो ! 'नहि वयीरैन वैरानि शमंतीह कदाचन'—वैर से वैर कभी दबता नहीं. कितनी भी कोशिश करो, आग के दमन के लिए घी नहीं पानी ही चाहिये, अदावत से अदावत मिट नहीं सकती. वैर से वैर शान्त नहीं हो सकता, दुश्मनी से दुश्मनी बढ़ती ही है. यह उनकी तालीम का निचोड़ है. उनके शब्दों में जो ताक़त थी, उसका भान आज लोगों को हो रहा है. सारी दुनिया के जीवन में आज कश मकश और असंतोश का अनुभव हो रहा है. बहुत से कठिन सवाल हमारे सामने मौजूद हैं. समाज के नेता उन सवालों के हल करने का जब सोचते हैं तब उन्हें बुद्ध भगवान के तरीक़े का ख्याल आता है और वह सोचते हैं कि अगर मुमकिन हुआ तो वही तरीक़ा आज चलाना चाहिये. एटम बम और हाईड्रोजन बम से दुनिया की शक्ति का ख़ातमा होगा. वह तो शक्ति नाश का ही कार्य क्रम होगा. इसका कुछ भान इस समय दुनिया को हो रहा है. दुनिया महसूस कर रही है कि हम इस तरह आगे नहीं बढ़ सकेंगे, जहां के तहां ही रह जायेंगे. गांधी जी ने तो यही साबित कर दिया है. लेकिन अम्बेद्कर जी और नास्तिक वादी लोग भी बुद्ध में विश्वास रखते हैं तब इससे बुद्ध की शिक्शा का इससे ज़ियादा और क्या सबूत चाहिये ? हमको उन्होंने जो तालीम दी, उसकी अहमियत इन्सानी समाज को महसूस हो रही है. बीच में पच्चीस सौ साल बुद्ध भगवान गर्भ अवस्था में थे. लेकिन आज उनका जन्म हो रहा है. आज बुद्ध भगवान के विचारों का अंकुर आ रहे हैं

समाज के सवाल

विचार के तौर पर बुद्ध भगवान की बात सब तरफ़ फैल ही गई, लेकिन सारे समाज में जो सवाल मौजूद हैं वह सब कैसे हल हों ? सवाल कई हैं. तालीम का सवाल, अनाज का सवाल, कपड़े का सवाल वग़ैरा कई सवाल हैं इन सभी समाजी सवालों को हल करने के लिए अक्रोध और निर्वैरी पन का तत्व कैसे लागू हो सकता है, इस बारे में इन्सानी समाज को शंका बनी रही. लेकिन बीच के ज़माने में लोगों ने साबित कर दिया कि हम अक्रोध से क्रोध, निडरता से डर और प्रेम से द्वेश को जीत सकते हैं. लेकिन यह सब प्रयोग निजी जीवन में हुए. उनका समाजी अमल अभी बाक़ी था.

निजी जीवन की प्रयोग शालायें

साइन्स के जितने प्रयोग होते हैं वह पहले छोटे पैमाने पर प्रयोग शाला में होते हैं. जब कोई उसूल प्रयोग शाला

ڈھک جاتا ہے اور پھر اُس میں سے وہ انکوراتا ہے، اُسی طرح بیچ کے زمانے میں بدھ کی شکشا کا بیج کچھ ڈھکا سا رہا اور اب وہ انکوراتا دکھائی دے رہا ہے۔ بدھ بھگوان نے صاف شبدوں میں کہا تھا کہ بھائیوں ! 'نہ ہی ویرین ویرانی شمن تیہ کداچن'—ویر سے ویر کبھی دبتا نہیں۔ کتنی بھی کوشش کرو، آگ کے دمن کے لئے گھی نہیں پانی ہی چاہئے، عداوت سے عداوت مٹ نہیں سکتی۔ ویر سے ویر شانت نہیں ہو سکتا، دشمنی سے دشمنی بڑھتی ہی ہے۔ یہ اُن کی تعلیم کا نچوڑ ہے۔ اُن کے شبدوں میں جو طاقت تھی، اُس کا بھان آج لوگوں کو ہو رہا ہے۔ ساری دنیا کے جیون میں آج کشمکش اور اسنتوش کا انوبھو ہو رہا ہے۔ بہت سے کٹھن سوال ہمارے سامنے موجود ہیں۔ سماج کے نیتا اُن سوالوں کے حل کرنے کا جب سوچتے ہیں تب اُنہیں بدھ بھگوان کے طریقے کا خیال آتا ہے اور وہ سوچتے ہیں کہ اگر ممکن ہوا تو وہی طریقہ آج چلانا چاہئے۔ ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم سے دنیا کی شکتی کا خاتمہ ہوگا۔ وہ تو شکتی ناش کا ہی کاریہ کرم ہوگا۔ اس کا کچھ بھان اِس سمے دنیا کو ہو رہا ہے۔ دنیا محسوس کر رہی ہے کہ ہم اسطرح آگے نہیں بڑھ سکیں گے، جہاں کے تہاں ہی رہ جائیں گے۔ گاندھی جی نے تو یہی ثابت کر دیا ہے لیکن امبیدکر جی اور ناستک وادی لوگ بھی بدھ میں وشواس رکھتے ہیں تب اس سے بدھ کی شکشا کا اس سے زیادہ اور کیا ثبوت چاہئے؟ ہمکو اُنہوں نے جو تعلیم دی، اسکی اہمیت انسانی سماج کو محسوس ہو رہی ہے۔ بیچ میں پچیس سو سال بدھ بھگوان گربھ اوستھا میں تھے۔ لیکن آج اُن کا جنم ہو رہا ہے۔ آج بدھ بھگوان کے وچاروں کو انکر آ رہے ہیں۔

سماج کے سوال

وچار کے طور پر بدھ بھگوان کی بات سب طرف پھیل ہی گئی، لیکن سارے سماج میں جو سوال موجود ہیں وہ سب کیسے حل ہوں؟ سوال کئی ہیں۔ تعلیم کا سوال، اناج کا سوال، کپڑے کا سوال وغیرہ کئی سوال ہیں۔ اِن سبھی سماجی سوالوں کو حل کرنے کے لئے اکرودھ اور نرویری پن کا تتو کیسے لاگو ہو سکتا ہے، اس بارے میں انسانی سماج کو شنکا بنی رہی۔ لیکن بیچ کے زمانے میں لوگوں نے ثابت کر دیا کہ ہم اکرودھ سے کرودھ، نڈرتا سے ڈر اور پریم سے دویش کو جیت سکتے ہیں۔ لیکن یہ سب پریوگ نجی جیون میں ہوئے۔ اُن کا سماجی عمل ابھی باقی تھا۔

نجی جیون کی پریوگ شالائیں

سائنس کے جتنے پریوگ ہوتے ہیں وہ پہلے چھوٹے پیمانے پر پریوگ شالا میں ہوتے ہیں۔ جب کوئی اصول پریوگ شالا

भगवान बुद्ध और नया ज़माना

(विनोबा)

महापुरुशों की पुन्य भूमि

किसी दूध की जब जांच की जाती है तब साइन्स वाले उसमें मक्खन की तादाद देख लेते हैं. उस पर से दूध का कस नापा जाता है. किसी समाज की लायक़ी का जहां नाप लिया जाता है वहां उस समाज में कितने ऊँचे महापुरुश पैदा हुए, यह देखा जाता है. समाज के महापुरुश दूध के मक्खन की तरह होते हैं. भारत का जो ज़माना तरक़्क़ी का और गिरावट का माना गया है दोनों समय महापुरुश दर्शन देते ही गये हैं. इतना ही नहीं, यह सौ डेढ़ सौ साल जब कि हम ग़ुलामी में थे और जब एक विदेशी ताक़त हमें दबाये हुए थी और हमारी हालत बहुत ही कमज़ोर थी, ऐसी गिरावट के ज़माने में भी यहां राम मोहन राय, दयानन्द, राम कृश्न परमहंस, लोकमान्य तिलक, रवि ठाकुर और महात्मा गांधी जैसे पचासों पुरुशों के नाम, जो ऊंचाई में दुनिया के दूसरे महापुरुशों से कम नहीं हैं, गिनाये जा सकते हैं. यानी भारत भूमि ने साबित कर दिया कि उसकी पुरुशार्थ शक्ति अब भी क़ायम है और पुराने ज़माने से यहां ऐसी एक अन्तर यामी शक्ति काम कर रही थी जिसकी वजह से ख़िलाफ़ हालत के होते हुए भी यहां महापुरुश होते रहे हैं.

बुद्ध के विचार अब अंकुरा रहे हैं

कल हमने जिस महापुरुश की याद की उसे अब ढाई हज़ार बरस होते हैं. आज वैशाख की पूरन मासी है, लेकिन जहां बुद्ध धर्म चलता है वहां यह उत्सव एक रोज़ पहले ही मनाया जाता है. आज बुद्ध भगवान की शोहरत दुनिया में फैल गई है. और दुनिया के बहुत से लोगों का उनके जीवन और उपदेशों की तरफ़ खिंचाव हो गया है. ख़ास कर जिस तरीक़े से उन्होंने काम किया, उस तरीक़े की तरफ़ लोग खिंचे हैं. लेकिन हम देखते हैं कि जिस ज़माने में बुद्ध थे उस ज़माने में लोग उनका नाम भी नहीं लेते थे, मगर आज उन्हीं की सालगिरह या जन्म दिन मनाया जाता है. जिस शख़्स की सालगिरह उसके जन्म के ढाई हज़ार बरस के बाद मनाई जाती है उसकी उम्र कितनी बड़ी होनी चाहिये. आज हिन्दू लोग किसी धर्म कार्य का शुरू करते समय "बुद्धावतारे वैवस्वते मनवंतरे, कलयुगे" वग़ैरा मंत्र पढ़ा करते हैं. यानी आज भी हम बुद्ध के ज़माने में ही काम कर रहे हैं. बुद्ध युग माना अब शुरू हो रहा है. मिट्टी से जैसे बीज

بھگوان بدھ اور نیا زمانہ

(ونوبا)

مہاپرشوں کی پنیہ بھومی

کسی دودھ کی جب جانچ کی جاتی ہے تب سائنس والے اُس میں مکھن کی تعداد دیکھ لیتے ہیں ۔ اُس پر سے دودھ کا کس ناپا جاتا ہے ۔ کسی سماج کی لائقی کا جہاں ناپ لیا جاتا ہے وہاں اُس سماج میں کتنے اونچے مہا پرش پیدا ہوئے' یہ دیکھا جاتا ہے ۔ سماج کے مہاپرش دودھ کے مکھن کی طرح ہوتے ہیں ۔ بھارت کا جو زمانہ ترقی کا اور گراوٹ کا مانا گیا ہے دونوں سمے مہاپرش درشن دیتے ہی گئے ہیں ۔ اتنا ہی نہیں' یہ سو ڈیڑھ سو سال جبکہ ہم غلامی میں تھے اور جب ایک ودیشی طاقت ہمیں دبائے ہوئے تھی اور ہماری حالت بہت ہی کمزور تھی' ایسی گراوٹ کے زمانے میں بھی یہاں رام موہن رائے' دیانند' رام کرشن پرم ہنس' لوک مانیہ تلک' روی ٹھاکر اور مہاتما گاندھی جیسے پچاسوں پرشوں کے نام' جو اونچائی میں دنیا کے دوسرے مہاپرشوں سے کم نہیں ہیں' گنائے جا سکتے ہیں ۔ یعنی بھارت بھومی نے ثابت کر دیا کہ اُسکی پروشارتھ شکتی اب بھی قائم ہے اور پرانے زمانے سے یہاں ایسی ایک انتریامی شکتی کام کر رہی تھی جسکی وجہ سے خلاف حالت کے ہوتے ہوئے بھی یہاں مہاپرش ہوتے رہے ہیں ۔

بدھ کے وچار اب انکرا رہے ہیں

کل ہم نے جس مہاپرش کی یاد کی اُسے اب ڈھائی ہزار برس ہوتے ہیں ۔ آج بیساکھ کی پورن ماسی ہے' لیکن جہاں بودھ دھرم چلتا ہے وہاں یہ اُتسو ایک روز پہلے ہی منایا جاتا ہے ۔ آج بدھ بھگوان کی شہرت دنیا میں پھیل گئی ہے اور دنیا کے بہت سے لوگوں کو اُن کے جیون اور اپدیشوں کی طرف کھنچاؤ ہوگیا ہے ۔ خاصکر جس طریقے سے اُنہوں نے کام کیا' اُس طریقے کی طرف لوگ کھنچے ہیں ۔ لیکن ہم دیکھتے ہیں کہ جس زمانے میں بدھ تھے اُس زمانے میں لوگ اُن کا نام بھی نہیں لیتے تھے' مگر آج اُنہیں کی سالگرہ یا جنم دن منایا جاتا ہے ۔ جس شخص کی سالگرہ اُس کے جنم کے ڈھائی ہزار برس کے بعد منائی جاتی ہے اُسکی عمر کتنی بڑی ہونی چاہئے. آج ہندو لوگ کسی دھرم کاریہ کو شروع کرتے سمے "بدھا وتارے ویوسوتے منونترے' کلیگے" وغیرہ منتر پڑھا کرتے ہیں ۔ یعنی آج بھی ہم بدھ کے زمانے میں ہی کام کر رہے ہیں. بدھ یگ مانو اب شروع ہو رہا ہے. مٹی سے جیسے بیج

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 13 अगस्त, सन '52 नम्बर 2

نمبر 2 اگست، سن '52 جلد 13

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

लोकशाही फ़ौजी कूच

है हमें याद वह जंग लड़ी जो हमने
वह वीर जिन्होंने प्रान दिये थे रन में
वह लाल ख़ून ऊदा होता जो छन में
वह अटल दोस्ती जो थी सबके मन में
जिन जिन को उसका ध्यान
उन्होंने ठानी है यह ठान
करेंगे कोशिश जब तक जान
फले फूले वह अमनो अमान
कि हिलमिल रहने लगे जहान
न्याय हो सबका धर्म ईमान
करें यह अहद जवान तमाम
उठाया है जो हमने काम
रहेगी उससे पूरी भक्ति
लगेगी उसको पूरी शक्ति
हमी ने छांटा उसको आम
हमें उसका पूरा अभिमान
आदमियत का वह क़ानून
उसी पर बहे पसीना ख़ून
करे जो बदी अगर कुछ ढेट
करेंगे उसको मटियामेट
बिना मतलब के कोई एक
न मरने देंगे यह है टेक
जियेंगे जीने देंगे ख़ूब
बनेगी सब दुनिया महबूब
हम सब के
सब हमारे
हमें सब प्यारे
हम सबों के प्यारे, हम सबों के प्यारे, हम सबों के प्यारे.

(चीनी गीत से) —भगवानदीन

لوک شاہی فوجی کوچ

ہے ہمیں یاد وہ جنگ لڑی جو ہم نے
وہ ویر جنہوں نے پران دئے تھے رن میں
وہ لال خون اودا ہوتا جو چھن میں
وہ اٹل دوستی جو تھی سب کے من میں
جن جن کو اس کا دھیان
انہوں نے ٹھانی ہے یہ ٹھان
کریں گے کوشش جب تک جان
پھلے پھولے وہ امن و امان
کہ ہل مل رہنے لگے جہان
نیائے ہو سب کا دھرم ایمان
کریں یہ عہد جوان تمام
اٹھایا ہے جو ہم نے کام
رہے گی اس سے پوری بھکتی
لگے گی اس کو پوری شکتی
ہمیں نے چھانٹا اس کو جان
ہمیں اس کا پورا ابھیمان
آدمیت کا وہ قانون
اسی پر بہے پسینہ خون
کرے جو بدی اگر کچھ ڈھیٹ
کریں گے اس کو مٹیا میٹ
بنا مطلب کے کوئی ایک
نہ مرنے دیں گے یہ ہے ٹیک
جئیں گے جینے دیں گے خوب
بنے گی سب دنیا محبوب
ہم سب کے
سب ہمارے
ہمیں سب پیارے
ہم سبوں کے پیارے، ہم سبوں کے پیارے، ہم سبوں کے پیارے

(چینی گیت سے) —بھگوان دین

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

अगस्त 1952

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

اگست 1952

क्या किससे — सफ़ा صفحہ — کیا کس سے

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद

अगस्त 1952 اگست

नई किताब

चाइना टू डे

लेखक—सुन्दरलाल

पहली अक्तूबर 1951 को नये चीन के लोकराज की दूसरी साल गिरह के मौक़े पर हिन्दुस्तान से एक गुडविल मिशन चीन गया था जिस के नेता पंडित सुन्दरलाल थे।

इस किताब से आपको मालूम होगा कि इस मिशन ने चालीस रोज़ नये चीन में रह कर क्या क्या देखा और, आज का चीन कैसा है, किस तरह वहां से रंडी-बाज़ी, भिकमंगी और बेरोज़गारी का ख़ात्मा किया गया, किस तरह वहां के करोड़ों बे-ज़मीन वाले किसानों को ज़मीन दी गई और नये खेती सुधार क़ानून से चीन कैसे भिकमंगे से अन्नदाता बन गया, किस तरह अमरीका की नाके बन्दी के बावजूद उसने अपने उद्योग धन्धे और कल कारख़ाने संभाल कर अपने को स्वावलम्बी बना लिया, किस तरह अपने तालीम के नये ढंग से पुराने पढ़े लिखों के दिमाग़ फेर कर उन्हें दुरुस्त किया और देश में नई जान फूंक दी, किस तरह शादी के नये क़ानून ने चीनी औरत को समाज के अन्दर मर्द के बराबर इज़्ज़त की जगह दी, किस तरह वहां के नेताओं ने ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा के तीन उसूलों पर चल कर देश के अन्दर से रिश्वत ख़ोरी, काम चोरी और सीना ज़ोरी ख़तम की, देश के आर्थिक संगठन को ठीक किया, वग़ैरा वग़ैरा।

अगर आप तफ़सील के साथ इन सवालों का जवाब पाना चाहते हैं और यह जानना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान नये चीन से क्या सबक़ ले सकता है तो इस किताब से आपको काफ़ी मदद मिलेगी। साथ ही साथ यह किताब एक सफ़र नामा है जिस में चालीस रोज़ की डायरी [illegible] और दिलचस्प ढंग से दी गई है

700 से ज़ियादा सफ़े, बढ़िया काग़ज़, कपड़े की जिल्द, एक तिरंगी और तीस इकरंगी तस्वीरें, दो रंगीन नक़्शों के साथ दाम सिर्फ़ साढ़े सात रुपये या 15 शिलिंग।

अपने यहां के बुकसेलरों से मंगाइये या हमें लिखिये

मिलने का पता

मैनेजर, नया हिन्द, 115 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद।

نئی کتاب

چائنا ٹو ڈے

لیکھک—سندر لال

پہلی اکتوبر 1951 کو نئے چین کے لوک راج کی دوسری سالگرہ کے موقعے پر ہندستان سے ایک گڈول مشن چین گیا تھا جس کے نیتا پنڈت سندر لال تھے۔

اس کتاب سے آپکو معلوم ہوگا کہ اس مشن نے چالیس روز نئے چین میں رہ کر کیا کیا دیکھا اور آج کا چین کیسا ہے، کس طرح وہاں سے رنڈی بازی، بھکمنگی اور بیروزگاری کا خاتمہ کیا گیا، کس طرح وہاں کے کروڑوں بے زمین کسانوں کو زمین دی گئی اور نئے کھیتی سدھار قانون سے چین بھکمنگے سے ان داتا بن گیا، کس طرح امریکہ کی ناکہ بندی کے باوجود اس نے اپنے ادیوگ دھندے اور کل کارخانے سنبھال کر اپنے کو سوا[illegible] بنا لیا، کس طرح اپنی تعلیم کے نئے ڈھنگ سے پرانے پڑھے لکھوں کے دماغ پھیر کر انہیں درست کیا اور دیش میں نئی جان پھونک دی، کس طرح شادی کے نئے قانون نے چینی عورت کو سماج کے اندر مرد کے برابر عزت کی جگہ دی، کس طرح وہاں کے نیتاؤں نے ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا کے تین اصولوں پر چل کر دیش کے اندر سے رشوت خوری، کام چوری اور سینہ زوری ختم کی، دیش کے آرتھک سنگٹھن کو ٹھیک کیا، وغیرہ وغیرہ۔

اگر آپ تفصیل کے ساتھ ان سوالوں کا جواب پانا چاہتے ہیں اور یہ جاننا چاہتے ہیں کہ ہندستان نئے چین سے کیا سبق لے سکتا ہے تو اس کتاب سے آپ کو کافی مدد ملیگی۔ ساتھ ہی ساتھ یہ کتاب ایک سفرنامہ بھی ہے جس میں چالیس روز کی ڈائری [illegible] دلچسپ ڈھنگ سے دی گئی ہے۔

700 سے زیادہ صفحے، بڑھیا کاغذ، کپڑے کی جلد، ایک ترنگی اور تیس اکرنگی تصویریں، دو رنگین نقشوں کے ساتھ—دام صرف ساڑھے سات روپئے یا 15 شلنگ۔

اپنے یہاں کے بکسیلروں سے منگائیے یا ہمیں لکھئے۔

ملنے کا پتہ—

منیجر، نیا ہند، 115 مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों सभाओं, कानफ़रेंसों, जलसों में सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा. वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास. सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये –

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

115, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नये क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो ग्राहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम दे सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، جلسوں میں سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ، وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق، گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس، سکریٹری — پنڈت سندرلال

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تاراچند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

115 مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کر سکیں گے

सरकार भले ही किसी वजह से अमरीका से कुछ दबी हुई हो और वह यालू बमबारी को लेकर चुपचाप बैठे रहना पसन्द करती हो, तो क्या हिन्दुस्तान की पैंतीस करोड़ जनता नैतिक बल और आत्म बल का सबूत नहीं दे सकती. जब चीन की सरकार की परवाह किये बिना चीनी जवान अपने रिश्तेदारों को कोरिया में पिटते हुए देख कर न रुक सके थे और दौड़ कर उनकी मदद के लिये पहुंच गये थे तो क्या आज हिन्दुस्तान की जनता अमरीकी माल का बायकाट करके अपनी नाराज़गी को नहीं बता सकती.

यालू बमबारी देखने में कितनी ही छोटी बात क्यों न हो पर इसके अन्दर अन्याय और एशिया की ग़ुलामी के बीज छिपे हुये हैं. इसलिए इसे यों ही नहीं उड़ा देना चाहिये. इसको लेकर सारे हिन्दुस्तान में इसका एक ख़ास दिन मनाकर गांव गांव को यह समझा देना चाहिये कि कोरिया और चीन से हमारा क्या रिश्ता है और समुद्र पार का अमरीका किस तरह फ़ारमूसा, जापान और कोरिया में उत्तरी कोरिया के अग्रेशन के बहाने अपने अड्डे बनाना चाहता है.

—भगवानदीन

سرکار بھلے ھی کسی وجہ سے امریکہ سے کچھ دبی ھوئی ھو اور وہ یالو بمباری کو لے کر چپ چاپ بیٹھے رھنا پسند کرتی ھو؛ تو کیا ھندستان کی پینتیس کروڑ جنتا نیتک اور آتم بل کا ثبوت نہیں دے سکتی ۔ جب چین کی سرکار کی پرواہ کئے بنا چینی جوان اپنے رشتہ داروں کو کوریا میں پٹتے ھوئے دیکھکر نہ رک سکے تھے اور دوڑ کر اُن کی مدد کے لئے پہنچ گئے تھے تو کیا آج ھندستان کی جنتا امریکی مال کا بائی کاٹ کر کے اپنی ناراضگی کو نہیں بتا سکتی ۔

یالو بمباری دیکھنے میں کتنی ھی چھوٹی بات کیوں نہ ھو پر اس کے اندر انیائے اور ایشیا کی غلامی کے بیج چھپے ھوئے ھیں ۔ اس لئے اِسے یونہی نہیں اُڑا دینا چاھئے ۔ اس کو لے کر سارے ھندستان میں اِسکا ایک خاص دن منا کر گاؤں گاؤں کو یہ سمجھا دینا چاھئے کہ کوریا اور چین سے ھمارا کیا رشتہ ہے اور سمندر پار کا امریکہ کس طرح فارموسا، جاپان اور کوریا میں اُتری کوریا کے اگریشن کے بہانے اپنے اڈے بنانا چاھتا ہے ۔

— بھگوان دین

ारे नये नये हथियारों की कोरिया ही जांच भूमि बनेगी? या यह बरतानिया, अमरीका और यूनो में शामिल बड़े ड़े देशों के लिए शर्म की बात नहीं है कि जिस कोरिया ो कल ही जापानियों के हाथों से आज़ाद किया था उसको गज आग बरसा कर राख में तबदील किया जा रहा है.

यालू बमबारी को अगर मामूली बात समझ कर उड़ा ़्या जाय तो फिर कोरिया पर ऐटम बम गिरा ही समझिये. ौर अगर यालू बमबारी का अमरीका का सोचा हुआ यह ीजा ठीक निकला कि पान मुन जौन में दब दबा कर एक र्टी ने सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिये तो चीन को ारमूसा की तरफ़ से हमले के लिए तैयार रहना पड़ेगा.

समुन्दर पार कर अमरीका कोरिया का मोरचा छोड़ने ़ लिए कभी भी तैयार नहीं हो सकता. जापान और कोरिया के अड्डे अगर उसके हाथ से निकल जाते हैं तो अमरीका कमज़ोर पड़ जाता है. पिछली लड़ाई का तजुरबा उसे यह बता रहा है कि जापान और कोरिया के बग़ैर फ़िलीपाइन उसका मज़बूत अड्डा नहीं हो सकता. वह कोरिया के अड्डे को किन्हीं दामों पर कभी भी छोड़ने को तैयार नहीं होगा.

यालू बमबारी को लेकर यूनो में शामिल मुल्कों को यह साफ़ साफ़ कह देना चाहिये कि अमरीका उनके क़ाबू से बाहर है. कोरिया के मैदान में अमरीका के जनरल मनमानी करते हैं या अपने साथी जनरलों से मिल कर काम नहीं करते और न पूरी तरह से यूनो के मातहत रहते हैं. उन्हीं मुल्कों को अब यह भी साफ़ साफ़ कह देना चाहिये कि अब उनकी फ़ौजें कोरिया में नहीं रहेंगी और अमरीका जिस तरह चाहे कोरिया में लड़े. शुरू से आज तक का तजुरबा साफ़ बता रहा है कि यह लड़ाई कोरिया और यूनो के बीच इतनी नहीं है, कोरिया और अमरीकियों के बीच है. चीन कोरिया की तरफ़ से लड़ाई में तब शामिल हुआ जब अमरीका, न कि यूनो, चीन पर ही चढ़ने को तैयार हो गया. अमरीका एक से ज़ियादा बार ऐसे काम कर चुका है जिसे साथी मुल्कों ने अच्छा नहीं समझा पर क्या उसने कोई सबक़ लिया. वह तो हमेशा वही करता रहा जो उसके जी में आता रहा. ऐसी हालत में और देशों का उसका साथ दिये जाना उन मुल्कों को कमज़ोरी का सबूत ही हो सकता है. प्रकृति किसी को कमज़ोर नहीं बनाती. आंख से न दिखाई देने वाले छोटे छोटे कीड़े अपनी गिनती की वजह से इतने ताक़तवर होते हैं कि आदमी जितना उनसे डरता है उतना ऐटम बम से नहीं, वह कीड़े तो एटम बम से भी नहीं मरते. जो मुल्क अमरीका से हथियारों में कमज़ोर हैं वह नैतिक बल और आत्म बल में और कहीं कहीं गिनती में इतने बड़े बड़े हैं कि उसको अच्छी सीख दे सकते हैं. आज हिन्दुस्तानी

سارے نئےنئے ھتھیاروں کی کوریا ھی جانچ بھومی بنے گی؟ کیا یہ برطانیہ' امریکہ اور یونو میں شامل بڑے بڑے دیشوں کے لئے شرم کی بات نہیں ھے کہ جس کوریا کو کل ھی جاپانیوں کے ھاتھوں سے آزاد کیا تھا اسکو آج آگ برساکر راکھ میں تبدیل کیا جا رھا ھے .

یالو بمباری کو اگر معمولی بات سمجھکر اڑا دیا جائے تو پھر کوریا پر ایٹم بم گرا ھی سمجھئے. اور اگر یالو بمباری کا امریکہ کا سوچا ھوا یہ نتیجہ ٹھیک نکلا کہ پان من جون میں دب دبا کر ایک پارٹی نے صلح نامے پر دستخط کر دیئے تو چین کو فارموسا کی طرف سے حملے کے لئے تیار رھنا پڑے گا .

سمندر پار کر امریکہ کوریا کا مورچہ چھوڑنے کے لئے کبھی بھی تیار نہیں ھو سکتا . جاپان اور کوریا کے اڈے اگر اس کے ھاتھ سے نکل جاتے ھیں تو امریکہ کمزور پڑ جاتا ھے . پچھلی لڑائی کا تجربہ اسے یہ بتا رھا ھے کہ جاپان اور کوریا کے بغیر فلپائن اس کا مضبوط اڈا نہیں ھوسکتا . وہ کوریا کے اڈے کو کنہیں داموں پر کبھی بھی چھوڑنے کو تیار نہیں ھوگا .

یالو بمباری کو لے کر یونو میں شامل ملکوں یہ صاف صاف کہدینا چاھئے کہ امریکہ ان کے قابو سے باھر ھے . کوریا کے میدان میں امریکہ کے جنرل من مانی کرتے ھیں یا اپنے ساتھی جنرلوں سے ملکر کام نہیں کرتے اور نہ پورے طرح سے یونو کے ماتحت رھتے ھیں. انھیں ملکوں کو اب یہ بھی صاف صاف کہدینا چاھئے کہ اب ان کی فوجیں کوریا میں نہیں رھیں گی اور امریکہ جس طرح چاھے کوریا میں لڑے . شروع سے آج تک کا تجربہ صاف بتا رھا ھے کہ یہ لڑائی کوریا اور یونو کے بیچ نہیں ھے' کوریا اور امریکیوں کے بیچ ھے . چین کوریا کی طرف سے لڑائی میں تب شامل ھوا جب امریکہ' نہ کہ یونو چین پر ھی چڑھنے کو تیار ھو گیا. امریکہ ایک سے زیادہ بار ایسے کام کر چکا ھے جسے ساتھی ملکوں نے اچھا نہیں سمجھا پر کیا اس سے اس نے کوئی سبق لیا . وہ تو ھمیشہ وھی کرتا رھا جو اس کے جی میں آتا رھا . ایسی حالت میں اور دیشوں کا اس کا ساتھ دیئے جانا ان ملکوں کی کمزوری کا ثبوت ھی ھو سکتا ھے. پرکرتی کسی کو کمزور نہیں بناتی. آنکھ سے دکھائی دینے والے چھوٹے چھوٹے کیڑے اپنی گنتی کی وجہ سے اتنے طاقت ور ھوتے ھیں کہ آدمی جتنا ان سے ڈر ھے اتنا ایٹم بم سے نہیں' وہ کیڑے تو ایٹم بم سے بھی نہیں مرتے . جو ملک امریکہ سے ھتھیاروں میں کمزور ھیں وہ نیتک بل اور آتم بل میں اور کہیں کہیں گنتی میں اتنے بڑے چڑھے ھیں کہ اسکو اچھی سیکھ دے سکتے ھیں . آج ھندستانی

अब जब बरतानिया को पता न था तब फ्रांस को भी पता न होना चाहिये और नक़ली गुड्डे चीन को तो पता ही कैसे हो सकता था ? इस मामले में यूनो में रूस तो न होने के बराबर है. जब इन चार बड़े मुल्कों में से किसी को पता नहीं तब यह कैसे कहा जा सकता है कि यालू बमबारी यूनो की बमबारी थी. कम से कम बरतानिया के लिए यह शर्म की बात होनी चाहिये कि कोरिया के मैदान में इतनी बड़ी बात हो जाय और उसके जनरलों को खबर भी न हो.

क्या बरतानिया अब इतना बेदम हो गया है कि इस तरह की बेइज़्ज़ती बर्दाश्त कर लेता है और चूं नहीं करता. इतना ही नहीं चर्चिल साहब अब भी अमरीका के काम को ग़लत समझते हुए दोस्ती के नाते समर्थन कर रहे हैं.

यालू बमबारी बरतानिया की अनचाही नहीं हुई. बरतानिया को जो इस बात से इनकार है कि उसे कोई खबर न थी वह ऐसा ही टेकनिकल इनकार है यानी राजकाजी और चालाकी से भरा इनकार है जैसा हाल में हिन्दुस्तानी पार्लियामेन्ट में स्पीकर ने यालू बमबारी की बहस को इस बिना पर रोका कि उसे पार्लियामेन्ट हन्सर्ड नहीं मिला.

दुनिया का कोई मुल्क अब इतना बेवक़ूफ़ नहीं रहा जो बरतानिया की इस चाल में आ जाय कि अगर बरतानिया को खबर होती तो वह यालू बमबारी न होने देता. कोरिया पर एक न एक दिन एटम बम गिरेगा और तब बरतानिया यह कह कर न बच सकेगा कि उससे इस काम में सलाह नहीं ली गई.

अगर हम भूलते नहीं हैं तो रूस यह खुले आम कह चुका है कि कोरिया के मैदान में जो पहले एटम बम गिरायेगा वह लड़ाई का मुजरिम समझा जायगा. रूस की इस बात को क मैकआर्थर की तरह ऐसे ही खिलवाड़ समझना जैसे मैक आर्थर ने चीन की धमकी को खिलवाड़ समझा था, बहुत बड़ी भूल होगी. अगर कोरिया पर एटम बम गिरा तो दुनिया की नज़रों में जितना अमरीका मुजरिम होगा उतना ही बरतानिया. फ्रांस को हम यों शामिल नहीं करते कि कहा जाता है फ्रांस के पास एटम बम नहीं हैं. हम नहीं मान सकते कि बरतानिया की सलाह के बग़ैर अमरीका कभी भी कोरिया पर एटम बम गिराये.

बरतानिया की इस बात का मतलब हमारी समझ में बिल्कुल नहीं आता कि वह लड़ाई को सिर्फ़ कोरिया के अन्दर महदूद रखना चाहता है. क्या वह कोरिया को उसी तरह लड़ाई की कला सिखाने का मदरसा बनाना चाहता है, जिस तरह उसने हिन्दुस्तान में वज़ीरिस्तान को बना रखा था ? क्या

، جب برطانیہ کو پتہ نہ تھا تب فرانس کو بھی پتہ نہ ہونا چاہئے اور نقلی گڈے چین کو تو پتہ ہی کیسے ہو سکتا تھا ؟ اِس معاملے میں یونو میں روس تو نہ ہونے کے برابر ہے ۔ جب اِن چار بڑے ملکوں میں سے کسی کو پتہ نہیں تب یہ کیسے کہا جاسکتا ہے کہ یالو بمباری یونو کی بمباری تھی ۔ کم سے کم برطانیہ کے لئے یہ شرم کی بات ہونی چاہئے کہ کوریا کے میدان میں اِتنی بڑی بات ہو جائے اور اُس کے جنرلوں کو خبر بھی نہ ہو ۔

کیا برطانیہ اب اتنا بیدم ہوگیا ہے کہ اِس طرح کی بے عزتی برداشت کر لیتا ہے اور چوں نہیں کرتا ۔ اتنا ہی نہیں چرچل صاحب اب بھی امریکہ کے کام کو غلط سمجھتے ہوئے دوستی کے ناتے سمرتھن کر رہے ہیں ۔

یالو بمباری برطانیہ کی اَن چاہی نہیں ہوئی ۔ برطانیہ کو جو اس بات سے انکار ہے کہ اُسے کوئی خبر نہ تھی وہ ایسا ہی ٹیکنیکل انکار ہے یعنی راج کاجی اور چالاکی سے بھرا انکار ہے جیسا حال میں ہندستانی پارلیامنٹ میں اسپیکر نے یالو بمباری کی بحث کو اس بنا پر روکا کہ اُسے پارلیامنٹ ہنسرڈ نہیں ملا ۔

دنیا کا کوئی ملک اب اتنا بیوقوف نہیں رہا جو برطانیہ کی اس چال میں آ جائے کہ اگر برطانیہ کو خبر ہوتی تو وہ یالو بمباری نہ ہونے دیتا ۔ کوریا پر ایک نہ ایک دن ایٹم بم گرے گا اور تب برطانیہ یہ کہکر نہ بچ سکے گا کہ اُس سے اِس کام میں صلاح نہیں لی گئی ۔

اگر ہم بھولتےنہیں ہیں تو روس یہ کھلے عام کہہ چکا ہے کہ کوریا کے میدان میں جو پہلے ایٹم بم گرائے گا وہ لڑائی کا مجرم سمجھا جائے گا ۔ روس کی اس بات کو میکارتھر کی طرح ایسے ہی کھلواڑ سمجھنا اور میکارتھر نے چین کی دھمکی کو کھلواڑ سمجھا تھا بہت بڑی بھول ہوگی ۔ اگر کوریا پر ایٹم بم گرا تو دنیا کی نظروں میں جتنا امریکہ مجرم ہوگا اتنا ہی برطانیہ ۔ فرانس کو ہم یوں شامل نہیں کرتے کہ کہا جاتا ہے فرانس کے پاس ایٹم بم نہیں ہیں ۔ ہم نہیں مان سکتے کہ برطانیہ کی صلاح کے بغیر امریکہ کبھی بھی کوریا پر ایٹم بم گرائے ۔

برطانیہ کی اِس بات کا مطلب ہماری سمجھ میں بالکل نہیں آتا کہ وہ لڑائی کو صرف کوریا کے اندر محدود رکھنا چاہتا ہے ۔ کیا وہ کوریا کو اُسی طرح لڑائی کی کلا کا مدرسہ بنانا چاہتا ہے، جسطرح اُس نے ہندستان میں وزیرستان کو بنانا رکھا تھا ؟ کیا

बम, नेपम बम यानी आग बरसाने वाले बम जैसी नई नई चीज़ें उसके सिवा और किसी मुल्क के पास नहीं. एटम ताक़त से चलने वाली पनडुब्बी भी, उसका ख़्याल है, सिर्फ़ उसी के पास है. और भी कुछ ऐसे हथियार हो सकते हैं जो उसे आये दिन तीसरी लड़ाई के लिए उकसाते रहते हों.

उसके रास्ते में दो रुकावट हैं. एक यह कि गिनती के लिहाज़ से दुनिया के ज़ियादा आदमी उसकी "जिसकी लाठी उसकी भैंस" नीति के तरफ़दार नहीं. दूसरी यह कि न एशिया न सारा योरप, न सारा अमरीका न यूनाइटेड स्टेटस की सारी आबादी उसकी इस ढींगा ढींगी में साथ है.

अमरीका जितनी कोशिश दुनिया को अपनी तरफ़ करने की करता है उतनी ही नाकामयाबी उसके हाथ पड़ती है. इसे वक़्त की देन ही मानना चाहिये. पहली लड़ाई सन 1918 में ख़त्म हुई. दूसरी लड़ाई इक्कीस बरस बाद सन 1939 में छिड़ी, 1945 में ख़त्म हुई. तीसरी के लिए शायद अभी देर लगे. और फिर उसको ख़त्म हुए अभी सात बरस बीते हैं. अमरीका की बेवाओं और उसके अनाथों को अभी तक उसकी याद है. और कोरिया की लड़ाई नई बेवाएं और नये अनाथ पैदा कर के उस याद को अमरीका में ज्यों त्यों हरी बनाये हुए हैं. यही वजह है कि अमरीका को तीसरी लड़ाई छेड़ देने के लिए इतनी आवाज़ें नहीं मिलतीं जितनी आवाज़ों की ज़रूरत है. यालू नदी की बमबारी हमें यह कहने के लिए मजबूर करती है कि अब अमरीका न अपने घर की आवाज़ की परवा करेगा और न दुनिया की आवाज़ की तरफ़ ध्यान देगा वह जिस तरह मैकआर्थर के हाथों चीन को मैदान में लाकर रहा वैसे ही किसी दूसरे जनरल के हाथों रूस को मैदान में लाकर रहेगा. और फिर यही कहलाने लगेगी तीसरी लड़ाई.

है तो यह अख़बारी ख़बर कि कोरिया के मैदान में ऐटम बम पहुंच चुके पर विश्वास के क़ाबिल है यालू बमबारी इस सच्चाई पर दस्तख़त करती मालूम होती है. वह इस बात की भी पूरी तसदीक़ करती हुई मालूम होती है कि कोरिया में अमरीकियों ने बीमारी बम गिराये. बीमारी बमों का कोरिया की जनता पर क्या असर हुआ, इस बात को जानने के लिए अमरीका तड़प तड़प कर रह गया पर न जान पाया. उसकी असफलता ने ही यालू बमबारी का रूप लिया.

अमरीकी अख़बारों ने यह साफ़ कर दिया है कि यालू बमबारी की बात महीनों पहले सोची गई और सोच समझ कर पूरी तैयारी के साथ की गई. जो बात कभी भेद थी आज अमरीका में उसके खुले खुले गीत गाये जा रहे हैं.

यालू बमबारी के बारे में बरतानिया का कहना है कि उसको इस बमबारी से पहले इस बमबारी का पता न था.

بم، نیپم بم یعنی آگ برسانے والے بم جیسی نئی نئی چیزیں اُس کے سوا اور کسی ملک کے پاس نہیں۔ ایٹم طاقت سے چلنے والی پنڈبّی بھی، اُس کا خیال ہے، صرف اُسی کے پاس ہے۔ اور بھی کچھ ایسے ہتھیار ہوسکتے ہیں جو اُسے آئے دن تیسری لڑائی کے لئے اُکساتے رہتے ہیں۔

اُس کے راستے میں دو رکاوٹ ہیں: ایک یہ کہ گنتی کے لحاظ سے دنیا کے زیادہ آدمی اُس کی "جس کی لاٹھی اُس کی بھینس" نیتی کے طرف‌دار نہیں۔ دوسری یہ کہ نہ ایشیا نہ سارا یورپ، نہ سارا امریکہ، نہ یونائیٹیڈ اسٹیٹس کی ساری آبادی اُس کی اِس ڈھینگا ڈھینگی میں ساتھ ہے۔

امریکہ جتنی کوشش دنیا کو اپنی طرف کرنے کی کرتا ہے اُتنی ناکامیابی اُس کے ہاتھ پڑتی ہے۔ اِسے وقت کی دین ہی ماننا چاہئے۔ پہلی لڑائی سن 1918 میں ختم ہوئی۔ دوسری لڑائی اکیس برس بعد سن 1939 میں چھڑی، 1945 میں ختم ہوئی۔ تیسری کے لئے شاید ابھی دیر لگے۔ اور پھر اُس کو ختم ہوئے ابھی سات برس بیتے ہیں۔ امریکہ کی بیواؤں اور اُس کے اناتھوں کو ابھی تک اُس کی یاد ہے۔ اور کوریا کی لڑائی کی نئی بیوائیں اور نئے اناتھ پیدا کرکے اس یاد کو امریکہ میں جوں توں ہری بنائے ہوئے ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ امریکہ کو تیسری لڑائی چھیڑ دینے کے لئے اِتنی آوازیں نہیں ملتیں جتنی آوازوں کی ضرورت ہے۔ یالو ندی کی بمباری ہمیں یہ کہنے کے لئے مجبور کرتی ہے کہ اب امریکہ نہ اپنے گھر کی آواز کی پرواہ کرے گا اور نہ دنیا کی آواز کی طرف دھیان دیگا۔ وہ جس طرح میک آرتھر کے ہاتھوں چین کو میدان میں لاکر رہا ویسے ہی کسی دوسرے جنرل کے ہاتھوں روس کو میدان میں لاکر رہے گا۔ اور پھر یہی کہلانے لگیگی تیسری لڑائی۔

ہے تو یہ اخباری خبر کہ کوریا کے میدان میں ایٹم بم پہونچ چکے پر وشواس کے قابل ہے۔ یالو بمباری اِس سچائی پر دستخط کرتی معلوم ہوتی ہے۔ وہ اِس بات کی بھی پوری تصدیق کرتی ہوئی معلوم ہوتی ہے کہ کوریا میں امریکیوں نے بیماری بم گرائے۔ بیماری بموں کا کوریا کی جنتا پر کیا اثر ہوا، اِس بات کو جاننے کے لئے امریکہ تڑپ تڑپ کر رہ گیا پر نہ جان پایا۔ اس کی ناکامیابی نے ہی یالو بمباری کا روپ لیا۔

امریکی اخباروں نے یہ صاف کردیا ہے کہ یالو بمباری کی بات مہینوں پہلے سوچی گئی اور سوچ سمجھ کر پوری تیاری کے ساتھ کی گئی۔ جو بات کبھی بھید تھی آج امریکہ میں اُس کے کھلے کھلے گیت گائے جا رہے ہیں۔

یالو بمباری کے بارے میں برطانیہ کا کہنا ہے کہ اس کو اِس بمباری سے پہلے اِس بمباری کا پتہ نہ تھا۔

के कारनों और कीड़ों को खत्म करें उल्टा इस तरह के कीड़ों को पैदा करने, उनकी नसलें बढ़ाने और इन्सानी क़ौम के ऊपर उन्हें इस्तेमाल करने में लग जायें तो इस धरती के ऊपर कहीं किसी भी आदमी की जान सुरक्षित नहीं है. हर देश के मर्दों और औरतों का यह फ़र्ज़ है कि मानव सदाचार और अन्तर क़ौमी ब्योहार के खिलाफ़ इस जुर्म पर अपनी आवाज़ ऊंची करें ताकि उनके बच्चे इस तबाही से बच सकें."

हमें विश्वास है कि दुनिया के सब सच्चे और इन्साफ़ पसन्द आदमी चीन की सब से बड़ी महिला मैडम सुनयात सेन की इस अपील का दिल से साथ देंगे.

19. 7. 52. —सुन्दरलाल

यालू बमबारी

कोरिया में यालू नदी बने बिजली घरों पर अमरीकियों ने पांच सौ हवाई जहाज़ ले कर नब्वे मिनट तक 24 जून को बहुत ज़ोर की बमबारी की अमरीकियों का कहना है कि उन्होंने इतने बम गिराये कि पांच कारखानों में से चार एक दम बरबाद हो गये.

इस बमबारी को लेकर बरतानिया की पार्लियामेन्ट में एक हलका सा तूफ़ान उठ खड़ा हुआ. विरोधी दल, जिसके नेता को पार्लियामेन्ट में कभी कभी तूफ़ान उठाने की ही तनख्वा मिलती है इतना भी न करता तो क्या करता.

बरतानिया की पार्लियामेन्ट की देखा देखी हिन्दुस्तान पार्लियामेन्ट में भी विरोधी दल की तरफ़ से इस बमबारी के बारे में कुछ सवाल पूछे गये. पर स्पीकर ने यह कह कर उनको रोक दिया कि उनको अभी तक कोई पार्लियामेन्ट हल्सद यानी बरतानिया पार्लियामेन्ट की तरफ़ से कोई रिपोर्ट नहीं मिली. लाल फ़ीताशाही का किसी बात के टालने का यह पुराना रवैया है कि वह इसी तरह के जवाब सोच निकालती है. हो सकता है स्पीकर साहब किसी ख़ास मौक़े पर किसी जगह अपनी आंखों ख़ुद आग लगते हुए देखकर भी इस बिना पर आग लगने से इन्कार कर दें कि वहां के अफ़सर से उनको अभी कोई रिपोर्ट नहीं मिली.

यालू बमबारी को लेकर आख़िर यह बरतानिया और हिन्दुस्तान की पार्लियामेन्ट में सवाल उठे क्यों? इसका जवाब सीधा सादा है. अमरीका इस बात पर तुला हुआ है कि तीसरी लड़ाई जल्द से जल्द छेड़ी जाय. और बरतानिया चाहता वह जब तक रुकी रहे अच्छा. ग़लत या सही अमरीका समझे हुए है कि इस वक़्त उसका पल्ला रूस चीन ही नहीं, एशिया के सारे मिले देशों से भी भारी है. वह समझता है उसके पास सबसे ज़ियादा ऐटम बम का ज़ख़ीरा है. बीमारी

کے کارنوں اور کیڑوں کو ختم کریں اُلٹا اسطرح کے کیڑوں کو پیدا کرنے، اُن کی نسلیں بڑھانے اور اِنسانی قوم کے اوپر اُنہیں استعمال کرنے میں لگ جائیں تو اس دھرتی کے اوپر کہیں کسی بھی آدمی کی جان سرکشت نہیں ہے۔ ہر دیش کے مردوں اور عورتوں کا یہ فرض ہے کہ مانو سداچار اور انترقومی بیوہار کے خلاف اِس جرم پر اپنی آواز اونچی کریں تاکہ اُنکے بچے اس تباہی سے بچ سکیں۔"

ہمیں وشواس ہے کہ دنیا کے سب سچے اور انصاف پسند آدمی چین کی سب سے بڑی مہیلا میڈم سن یات سین کی اِس اپیل کا دل سے ساتھ دینگے۔

- سندرلال 19-7-52

یالو بمباری

کوریا میں یالو ندی پر بنے بجلی گھروں پر امریکیوں نے پانچ سو ہوائی جہاز لے کر نوے منٹ تک 24 جون کو بہت زور کی بمباری کی۔ امریکیوں کا کہنا ہے کہ انہوں نے اِتنے بم گرائے کہ پانچ کارخانوں میں سے چار ایک دم برباد ہوگئے۔

اِس بمباری کو لے کر برطانیہ کی پارلیامنٹ میں ایک ہلکا سا طوفان اُٹھ کھڑا ہوا۔ ورودھی دل جس کے نیتا کو پارلیامنٹ میں کبھی کبھی طوفان اُٹھانے کی ہی تنخواہ ملتی ہے اتنا بھی نہ کرتا تو کیا کرتا۔

برطانیہ کی پارلیامنٹ کی دیکھا دیکھی ہندستان پارلیامنٹ میں بھی ورودھی دل کی طرف سے اِس بمباری کے بارے میں کچھ سوال پوچھے گئے۔ پر اسپیکر نے یہ کہکر اُن کو روک دیا کہ ان کو ابھی تک کوئی پارلیامنٹ ہلسرڈ یعنی برطانیہ پارلیامنٹ کی طرف سے کوئی رپورٹ نہیں ملی۔ لال فیتا شاہی کا کسی بات کے ٹالنے کا یہ پرانا رویہ ہے کہ وہ اِسی طرح کے جواب سوچ نکالتی ہے۔ ہوسکتا ہے اسپیکر صاحب کسی خاص موقعہ پر کسی جگہ اپنی آنکھوں خود آگ لگتے ہوئے دیکھکر بھی اِس بنا پر آگ لگنے سے انکار کر دیں کہ وہاں کے افسر سے اُن کو ابھی کوئی رپورٹ نہیں ملی۔

یالو بمباری کو لیکر آخر یہ برطانیہ اور ہندستان کی پارلیامنٹ میں سوال اُٹھے کیوں؟ اِس کا جواب سیدھا سادہ ہے۔ امریکہ اِس بات پر تلا ہوا ہے کہ تیسری لڑائی جلد سے جلد چھیڑی جائے اور برطانیہ چاہتا وہ جب تک رکی رہے اچھا۔ غلط یا صحیح امریکہ سمجھے ہوئے ہیں کہ اِس وقت اُس کا پلہ روس چین ہی نہیں، ایشیا کے سارے دیشوں سے بھی بھاری ہے۔ وہ سمجھتا ہے اُس کے پاس سب سے زیادہ ایٹم بم کا ذخیرہ ہے۔ بیماری

मैडम सुनयात सेन ने यह भी सवाल किया है कि "दूसरी बड़ी जंग में जिन लोगों को नाज़ियों के हाथों इतना नुक़सान पहुँचा उन्हें यह पता लगाना चाहिये कि जरमनी और जापान के वह फ़ौजी अफ़सर जो बीमारी के कीड़ों के ज़रिये जंग करने की खोज में लगे हुए थे अब अमरीका की साइन्सी प्रयोग शाला में बैठे क्या कर रहे हैं. उन्हें यह भी पता लगाना चाहिये कि 13 अप्रैल सन 1951 के 'न्यूयार्क टाईम्स' में जापान और पच्छिम जरमनी की जिन बम प्रयोग शालाओं का ज़िक्र है उन में क्या काम हो रहा है ?"

आख़ीर में मैडम सुनयात सेन ने लिखा है :—

"चीनी जनता इन हमलों से नहीं डरती. नये चीन ने जिस तरह क़ुदरती भूक और बीमारियों को अपने यहां से निकाल दिया उसी तरह वह आदमी की फैलाई हुई बीमारियों को भी बढ़ने से रोक देगा. हमारे किनारों की नाका बन्दी की गई. हमारा माली और तिजारती बायकाट किया गया. हमने उससे फ़ायदा उठाया और अपनी खेती और दस्तकारियों को इतना बढ़ाया कि हम अपने पैरों पर खड़े हो गए और जो हमारे साथ दोस्ती और बराबरी की शर्तों पर तिजारत करने को तैयार हैं उनके साथ हम तिजारत कर रहे हैं जिससे दोनों को फ़ायदा है. अब इन बीमारी बमों के ज़हरीले असर को मिटाने में चीनी जनता सफ़ाई और तन्दुरुस्ती की नई ऊंचाईयों को पहुँच रही है. 17 जून 1925 को जनेवा में एक अहद नामा लिखा गया था कि लड़ाई में बीमारी बमों और ज़हरीली गैसों को न बर्ता जाय. सब बड़े बड़े मुल्कों की सरकारों ने उसे मान लिया. केवल अमरीका और जापान की सरकारों ने दस्तख़त करने से इनकार कर दिया था. अब भी अमरीका की सरकार इस तरह के अहद नामे पर दस्तख़त करने से इनकार कर रही है. दुनिया की शान्ति कौन्सिल ने सारी दुनिया के लोगों से यह मांग की है कि वह अपनी अपनी सरकारों पर यह ज़ोर डालें कि वह आपस में इस तरह का अहद नामा कर लें और सब उस पर अमल करें. नागासाकी और हीरोशीमा के बाद अगर अब तक ऐटम बम इस्तेमाल नहीं हुआ तो उसकी एक वजह यह भी है कि दुनिया भर ने इस बात की आवाज़ उठाई कि ऐटम बम के इस्तेमाल को अन्तर क़ौमी जुर्म ठहराया जाय. बीमारी बमों के इस्तेमाल से दुनिया भर के मर्दों, औरतों और बच्चों को जो ख़तरा है उसे हम इसी तरह की आवाज़ उठा कर रोक सकते हैं. किसी देश में हुकूमत का ढंग चाहे कुछ भी हो और वहां की सरकार या वहां के लोग चाहे किसी भी माली ढांचे को ठीक मानते हों हम सब को मिल कर इस मामले में अपने इनसानी फ़र्ज़ को पूरा करना चाहिये. जब साइन्स के बड़े बड़े विद्वान जिन का काम यह होना चाहिये था कि दुनिया से बीमारियों

مہڈم سن یات سین نے یہ بھی سوال کیا ہے کہ "دوسری بڑی جنگ میں جن لوگوں کو نازیوں کے ہاتھوں اتنا نقصان پہونچا انہیں یہ پتہ لگانا چاہئے کہ جرمنی اور جاپان کے وہ فوجی افسر جو بیماری کے کیڑوں کے ذریعے جنگ کرنے کی کھوج میں لگے ہوئے تھے اب امریکہ کی سائنسی پریوگ شالا میں بیٹھے کیا کر رہے ہیں. انہیں یہ بھی پتہ لگانا چاہئے کہ 13 اپریل سن 1951 کے 'نیویارک ٹائمس' میں جاپان اور پچھم جرمنی کی جن بیماری بم پریوگ شالاؤں کا ذکر ہے اُن میں کیا کام ہو رہا ہے؟"

آخیر میں میڈم سن یات سین نے لکھا ہے کہ :—

"چینی جنتا ان حملوں سے نہیں ڈرتی. نئے چین نے جس طرح قدرتی بھوک اور بیماریوں کو اپنے یہاں سے نکالدیا اُسی طرح وہ آدمی کی پھیلائی ہوئی بیماریوں کو بھی بڑھنے سے روک دیگا. ہمارے کناروں کی ناکہ بندی کی گئی. ہمارا مالی اور تجارتی بائیکاٹ کیا گیا. ہم نے اُس سے فائدہ اُٹھایا اور اپنی کھیتی اور دستکاریوں کو اتنا بڑھایا کہ ہم اپنے پیروں پر کھڑے ہوگئے اور جو ہمارے ساتھ دوستی اور برابری کی شرطوں پر تجارت کرنے کو تیار ہیں اُن کے ساتھ ہم تجارت کر رہے ہیں جس سے دونوں کو فائدہ ہے. اب اِن بیماری بموں کے زہریلے اثر کو مٹانے میں چینی جنتا صفائی اور تندرستی کی نئی اونچائیوں کو پہونچ رہی ہے. 17 جون 1925 کو جنیوا میں ایک عہدنامہ لکھا گیا تھا کہ لڑائی میں بیماری بموں اور زہریلی گیسوں کو نہ برتا جائے. سب بڑے بڑے ملکوں کی سرکاروں نے اُسے مان لیا. کیول امریکہ اور جاپان کی سرکاروں نے دستخط کرنے سے انکار کر دیا تھا. اب بھی امریکہ کی سرکار اِس طرح کے عہدنامے پر دستخط کرنے سے انکار کر رہی ہے. دنیا کی شانتی کونسل نے ساری دنیا کے لوگوں سے یہ مانگ کی ہے کہ وہ اپنی اپنی سرکاروں پر یہ زور ڈالیں کہ وہ آپس میں ایک اسطرح کا عہدنامہ کرلیں اور سب اُس پر عمل کریں. ناگا ساکی اور ہیروشیما کے بعد اگر اب تک ایٹم بم استعمال نہیں ہوا تو اُس کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ دنیا بھر نے اس بات کی آواز اُٹھائی کہ ایٹم بم کے اِستعمال کو انترقومی جرم ٹھہرایا جائے. بیماری بموں کے اِستعمال سے دنیا بھر کے مردوں، عورتوں اور بچوں کو جو خطرہ ہے اُسے ہم اسی طرح کی آواز اُٹھاکر روک سکتے ہیں. کسی دیش میں حکومت کا ڈھنگ چاہے کچھ بھی ہو اور وہاں کی سرکار یا وہاں کے لوگ چاہے کسی بھی مالی ڈھانچے کو ٹھیک مانتے ہوں ہم سب کو مل کر اِس معاملے میں اپنے انسانی فرض کو پورا کرنا چاہئے. جب سائنس کے بڑے بڑے ودوان جن کا کام یہ ہونا چاہئے تھا کہ دنیا سے بیماریوں

बीमारियों के कीड़ों को पैदा करके अपने पास तैयार रखना चाहिये. जहां तक हो सके कोई आदमी जो कीड़ों के असर में आ जाय बच न सके.' इसके क्या मानी हैं ?

"8 जुलाई सन 1950 को अमरीकी अखबार 'साइन्स न्यूज़ लेटर' ने साफ़ साफ़ लिखा था—'अगर कोरिया में लड़ाई जारी रही तो हमें बहुत जल्दी बीमारी के कीड़ों के ज़रिये जंग करके नतीजा देखना होगा.' इस का क्या मतलब होता है ?

"जब कोरिया और चीन पर बीमारी बमों के फेंके जाने की खबर दुनिया में फैली तो अमरीका के कुछ ज़िम्मेदार नेताओं ने इस खबर को झूट ठहराते हुए एक बड़ी दलील यह दी कि 'इन बीमारी बमों के जो फ़ोटो छपे हैं वह ऐसे बमों के फ़ोटो हैं जो प्रोपेगन्डा पेम्फ़लेट बरसाने के काम में लाये जाते हैं और जिन्हें बीमारी के कीड़ों को फैलाने के काम में लाया ही नहीं जा सकता'. यह बात 3 अप्रैल सन '52 के 'न्यूयार्क टाइम्स' में छपी है. इसके दो दिन बाद 5 अप्रैल को एसोसियेटेड प्रेस ने अमरीका से खबर दी कि अमरीकी आरमी केमिकल कोर के जनरल बोलीन ने कहा है कि 'दुश्मन के इलाक़े पर बीमारी बम फेंकने में उसी तरह के बम काम में आते हैं जो आजकल प्रोपेगन्डा पम्फ़लेट गिराने में काम में लाये जाते हैं.' फिर दुनिया की आंखों में धूल डालने की कोशिश क्यों है ?"

मैडम सुनयात सेन ने अपने लेख में बताया है कि अमरीका के अलावा दूसरे देशों में भी इस तरह की तैयारियां जारी हैं. उनका कहना है कि :—

"जनवरी सन 51 को 'रीडर्स डायजेस्ट' में छप चुका है कि—'कनेडा के मुक़ाम दक्खिन अलबर्टा में लगभग एक हज़ार मुरब्बा मील के एक बहुत बड़े ज़मीन के टुकड़े पर नये तजुरबे हो रहे हैं जिन की वजह से यह जगह दुनिया भर में मशहूर हो गई हैं. इस जगह को शेफ़ील्ड एक्सपेरीमेन्टल स्टेशन कहते हैं. यहां दवाओं और बीमारी के कीड़ों के ज़रिये जंग करने के अमली तजुरबे किये जा रहे हैं.' हमें याद रखना चाहिये कि इस तरह के अमली तजुरबे किसी हथियार के बन जाने के बाद और उसके असल इस्तेमाल से पहले किये जाते हैं.

"दिसम्बर सन 1950 के इंगलैन्ड के एक अखबार 'डिसकवरी' में चैपमैन पिंचर ने एक लेख लिखा है जिस में उसने बताया है कि इंगलैन्ड के 'सेल्सबरी प्लेन' में पोर्टन नामी मुक़ाम पर बीमारी के कीड़ों का एक रिसर्च महकमा काम कर रहा है जिस में यह खोज की जा रही है कि गिल्टी वाली प्लेग किस तरह पैदा की जा सकती है और किस तरह फैलाई जा सकती है. यह खोज उस खोज के साथ पूरी तरह मिल कर की जा रही है जो इसी काम के लिए अमरीका में हो रही है."

بیماریوں کے کیڑوں کو پیدا کر کے اپنے پاس تیار رکھنا چاہئیے . جہاں تک ہو سکے کوئی آدمی جو کیڑوں کے اثر میں آ جائے . بچ نہ سکے.' اس کے کیا معنی ہیں ؟

"8 جولائی سن 1950 کو امریکی اخبار 'سائنس نیوز لیٹر' نے صاف صاف لکھا تھا—' اگر کوریا میں لڑائی جاری رہی تو ہمیں بہت جلدی بیماری کے کیڑوں کے ذریعے جنگ کر کے نتیجہ دیکھنا ہوگا .' اس کا کیا مطلب ہوتا ہے ؟

" جب کوریا اور چین پر بیماری بموں کے پھینکے جانے کی خبر دنیا میں پھیلی تو امریکہ کے کچھ ذمہ دار نیتاؤں نے اس خبر کو جھوٹ ٹھہراتے ہوئے ایک بڑی دلیل یہ دی کہ 'ان بیماری بموں کے جو فوٹو چھپے ہیں وہ ایسے بموں کے فوٹو ہیں جو پروپیگنڈا پمفلٹ برسانے کے کام میں لائے جاتے ہیں اور جنہیں بیماری کے کیڑوں کو پھیلانے کے کام میں لایا ہی نہیں جا سکتا .' یہ بات 13 اپریل سن 1952 کے 'نیویارک ٹائمس' میں چھپی ہے . اس کے دو دن بعد 5 اپریل کو ایسوسی ایٹڈ پریس نے امریکہ سے خبر دی کہ امریکی آرمی کیمیکل کور کے جنرل بولین نے کہا ہے کہ دشمن کے علاقے پر بیماری بم پھینکنے میں اسی طرح کے بم کام میں آتے ہیں جو آجکل پروپیگنڈا پمفلٹ گرانے میں کام میں لائے جاتے ہیں .' پھر دنیا کی آنکھوں میں دھول ڈالنے کی کوشش کیوں ہے ؟"

میڈم سن یات سین نے اپنے لیکھ میں بتایا ہے کہ امریکہ کے علاوہ دوسرے دیشوں میں بھی اس طرح کی تیاریاں جاری ہیں . ان کا کہنا ہے کہ :—

" جنوری سن 1951 کے 'ریڈرس ڈائجسٹ' میں چھپ چکا ہے کہ—'کینیڈا کے مقام دکھن البرٹا میں لگ بھگ ایک ہزار مربع میل کے ایک بہت بڑے زمین کے ٹکڑے پر نئے تجربے ہو رہے ہیں جن کی وجہ سے یہ جگہ دنیا بھر میں مشہور ہوگئی ہے . اس جگہ کو شفیلڈ اکسپیریمنٹل اسٹیشن کہتے ہیں . یہاں دواؤں اور بیماری کیڑوں کے ذریعے جنگ کرنے کے عملی تجربے کئے جا رہے ہیں .' ہمیں یاد رکھنا چاہئیے کہ اس طرح کے عملی تجربے کسی ہتھیار کے بن جانے کے بعد اور اس کے اصل استعمال سے پہلے کئے جاتے ہیں .

"دسمبر سن 1950 کے انگلینڈ کے ایک اخبار 'ڈسکوری' میں چیپ مین پنچر نے ایک لیکھ لکھا ہے جس میں اس نے بتایا ہے کہ 'انگلینڈ کے 'سالسبری پلین' میں پورٹن نامی مقام پر بیماری کے کیڑوں کا ایک ریسرچ محکمہ کام کر رہا ہے جس میں یہ کھوج کی جا رہی ہے کہ گلٹی والی پلیگ کس طرح پیدا کی جاسکتی ہے اور کس طرح پھیلائی جاسکتی ہے . یہ کھوج اس کھوج کے ساتھ پوری طرح مل کر کی جا رہی ہے جو اسی کام کے لئے امریکہ میں ہو رہی ہے ."

चीन और कोरिया की लाखों जनता को भूक और बीमारी से ख़त्म कर देने की कोशिश में लगी हुई हैं. चीन और कोरिया की बस्तियों पर इस तरह की ज़हरीली चीज़ें भी फेंकी गई हैं जिनसे बस्ती के सब जानवर मर जायें और खड़ी फ़सलें जल कर ख़त्म हो जायें.

जो लोग अभी तक आंखों देखी शहादतों और खुले सबूतों के बावजूद बीमारी बमों के फेंके जाने से इनकार करते हैं या इनकार करने वालों पर एतबार करते हैं उन का ध्यान मैडम सुनयात सेन ने नीचे लिखी बातों की तरफ़ दिलाया है :—

"पहले भी अमरीकी फ़ौजें कोरिया के गांव और शहरों पर इस तरह के बम बरसाती रही हैं जिनसे गांव के गांव जल जायें औह खड़ी फ़सलें और पूरी आबादियां ख़त्म हो जायें और अमरीकी जनरल फ़ख़्र के साथ यह कहते रहे हैं कि हमने इतनी आबादियों को मिटा दिया. फिर उनके लिए बीमारी बमों का फेंकना कौन अजीब बात है ?

"अमरीका के राज काजी नेता मानते हैं कि वह बरसों से अमरीका में चार जगह यानी कैम्प डेट्रिक में, पैस्केगोला में, वीगो में और डिगवे में बहुत बड़े पैमाने पर जंग के लिए बीमारी के कीड़ों (Biological Warfare Agents) को पैदा करने और बढ़ाने के काम में लगे हुये हैं. अगर इन बीमारी बमों को कहीं काम में नहीं लाना था तो यह तैयार क्यों किये जा रहे थे और अब भी क्यों किये जा रहे हैं ?

"सन 1946 में अमरीका की बायलाजिकल वारफ़ेयर कमेटी के मुखिया जी. डब्लू. मर्ग ने अमरीकी सरकार को एक रिपोर्ट दी थी जिसमें 'बहुत बड़े पैमाने पर बीमारी के कीड़ों और उनकी पैदावारों को पैदा करने और बढ़ाने के तरीक़ों और आसानियों' की चर्चा की गई थी और यह भी कहा गया था कि 'इस तरह के कीड़ों के ज़हरीले असर को बढ़ाने के तरीक़ों पर तजुरबे किये जा रहे हैं और बीमारी के कीड़ों और कीड़ों की पैदावारों को फैलाने के लिए जानवरों के इस्तेमाल पर भी तजुरबे किये जा रहे हैं.' यह तजुरबे काहे के लिए हो रहे हैं ?

"इसके तीन साल बाद 13 मार्च 1949 के 'न्युयार्क टाइम्स' में छपा कि अमरीकी आरमी केमिकलवार फ़ेयर सर्विस के मुखिया जनरल इल्डन ऐचवेट ने बड़े फ़ख़्र के साथ कहा कि—'मैं समझता हूँ कि दुनिया के अच्छे से अच्छे साइन्सदां हमारे यहां बीमारी के कीड़ों के ज़रिये जंग करने के इस मसले पर काम कर रहे हैं.' यह क्या बात थी ?

"अमरीका के सरकार अख़बारी 'मिलिट्री रेव्यू' में अप्रैल 1950 में निकला था कि—'हमें बहुत बड़ी बड़ी तादादों में

چین اور کوریا کی لاکھوں جنتا کو بھوک اور بیماری سے ختم کر دینے کی کوشش میں لگی ہوئی ہیں ۔ چین اور کوریا کی بستیوں پر اس طرح کی زہریلی چیزیں بھی پھینکی گئی ہیں جن سے بستی کے سب جانور مرجائیں اور کھڑی فصلیں جلکر ختم ہوجائیں ۔

جو لوگ ابھی تک آنکھوں دیکھی شہادتوں اور کھلے ثبوتوں کے باوجود بیماری بموں کے پھینکے جانے سے انکار کرتے ہیں یا انکار کرنے والوں پر اعتبار کرتے ہیں اُن کا دھیان میڈم سن یات سین نے نیچے لکھی باتوں کی طرف دلایا ہے :—

" پہلے بھی امریکی فوجیں کوریا کے گاؤں اور شہروں پر اس طرح کے بم برساتی رہی ہیں جن سے گاؤں کے گاؤں جل جائیں اور کھڑی فصلیں اور پوری آبادیاں ختم ہوجائیں اور امریکی جرنیل فخر کے ساتھ یہ کہتے رہے ہیں کہ ہم نے اتنی آبادیوں کو مٹا دیا ۔ پھر اُن کے لئے بیماری بموں کا پھینکنا کون عجیب بات ہے ؟

" امریکہ کے راج کاجی نیتا مانتے ہیں کہ وہ برسوں سے امریکہ میں چار جگہ یعنی کیمپ ڈیٹرک میں، پسکے گولا میں، ویگو میں اور ڈگوے میں بہت بڑے پیمانے پر جنگ کے لئے بیماری کے کیڑوں (Biolgical Warfare Agents) کو پیدا کرنے اور بڑھانے کے کام میں لگے ہوئے ہیں ۔ اگر ان بیماری بموں کو کہیں کام میں نہیں لانا تھا تو یہ تیار کیوں کئے جا رہے تھے اور اب بھی کیوں کئے جا رہے ہیں ؟

" سن 1946 میں امریکہ کی بایولاجیکل وارفیر کمیٹی کے مکھیا جی. ڈبلو. مرگ نے امریکی سرکار کو ایک رپورٹ دی تھی جس میں 'بہت بڑے پیمانے پر بیماری کے کیڑوں اور اُن کی پیداواروں کو پیدا کرنے اور بڑھانے کے طریقوں اور آسانیوں' کی چرچا کی گئی تھی اور یہ بھی کہا گیا تھا کہ 'اس طرح کے کیڑوں کے زہریلے اثر کو بڑھانے کے طریقوں پر تجربے کئے جارہے ہیں اور بیماری کے کیڑوں اور کیڑوں کی پیداواروں کو پھیلانے کے لئے جانوروں کے استعمال پر بھی تجربے کئے جارہے ہیں'. یہ تجربے کاہے کے لئے ہو رہے ہیں ؟

" اس کے تین سال بعد 13 مارچ سن 1949 کے 'نیویارک ٹائمس' میں چھپا کہ امریکی آرمی کیمیکل وار فیئر سروس کے مکھیا جنرل ایلڈن ایچ ویٹ نے بڑے فخر کے ساتھ کہا کہ—'میں سمجھتا ہوں کہ دنیا کے اچھے سے اچھے سائنسداں ہمارے یہاں بیماری کے کیڑوں کے ذریعے جنگ کرنے کے اس مسئلے پر کام کر رہے ہیں.' یہ کیا بات تھی ؟

"امریکہ کے سرکاری اخبار 'ملٹری ریویو' میں اپریل 1950 میں نکلا تھا کہ—"ہمیں بہت بڑی بڑی تعدادوں میں

बढ़ावेंगी और उस दिन के लाने में मदद देंगी जिस दिन हम सारी इन्सानी क़ौम को एक कुनबे का रूप दे सकें और अलग अलग धर्म मज़हबों की जगह एक मानव धर्म या एक मज़हबे इन्सानियत को फलता फूलता देख सकें. इसमें किसी के साथ ज़बरदस्ती नहीं. जिन लोगों के विचार इस बारे में हमारे साथ नहीं मिलते उनसे हम केवल इतनी भीक मांगते हैं कि वह ज़िन्दा रहें और दूसरों को भी ज़िन्दा रहने दें. उनका दीन धर्म उनके साथ हमारा दीन धर्म हमारे साथ. दीन धर्म के मामले में ज़बरदस्ती कोई किसी के साथ न करे.

हम इस बात को भी नहीं मानते कि इस तरह की शादी करने वालों को कोई ख़ास जलसा नहीं करना चाहिये था, चुपचाप शादी कर लेनी चाहिये थी. यह बात भी ग़लत है जिसके यहां शादी हो वह ख़ुशी क्यों न मनाये और जो किसी उसूल को ठीक मानते हों वह उस पर जलसा क्यों न करें. इसमें दूसरे क्यों नाराज़ हों.

यह बहाना भी बे मानी है कि किसी शादी में लड़का नेक चलन है या बद चलन या लड़की कैसी है. लड़का और लड़की या ज़ियादा से ज़ियादा दोनों के घर वालों या ख़ास दोस्तों को छोड़ कर किसी और को उन मामलों में दख़्ल देने का हक़ नहीं है. फिर इस बात को बहाना बना कर किसी मज़हब के लोगों पर हमले कर बैठना तो वह महान पाप है जिसे कोई क़ानून माफ़ नहीं कर सकता और न जिससे किसी देश या धर्म का मान बढ़ सकता है. इस तरह की शादियां और अंतर क़ौमी और अंतर राष्ट्री शादियां तो बढ़ेंगी ही. फिर घड़ी की सुईयों को उलटा चलाने की बेकार कोशिश में हम आपस में कड़ुवा पन क्यों पैदा करें.

जो लोग हम से सहमत हैं और इस तरह की शादियों के हक़ में हैं उन से हम कहेंगे कि वह बिना अपने विरोधियों पर ग़ुस्सा किये या बदले की भावना मन में लाये धीरज और हिम्मत के साथ अपने असूलों पर डटे रहें. देश हमारे असूलों की सच्चाई की परख, हमारे धीरज, हमारे कष्टों और हमारी क़ुरबानियों से ही कर सकता है.

12-7-'52 —सुन्दरलाल

मैडम सुनयात सेन की अपील

1911 की चीनी क्रान्ति और चीनी जनराज के जन्म दाता डाक्टर सुनयात सेन की पत्नी मैडम सुनयात सेन जिन का चीनी नाम सुगं चिंग लिंग है, एक लेख चीन के पखवारी अंगरेज़ी अख़बार "चायना रीकन्सट्रक्टस" में निकला है. इस लेख में मैडम सुनयात सेन ने बड़े दर्द के साथ बताया है कि अमरीका और यूनो की फ़ौजें किस तरह

بڑھاینگی اور اس دن کے لانے میں مدد دینگی جس دن ہم ساری انسانی قوم کو ایک کنبے کا روپ دے سکیں اور الگ الگ دھرم مذہبوں کی جگہ ایک مانو دھرم یا ایک مذہب انسانیت کو پھلتا پھولتا دیکھ سکیں . اس میں کسی کے ساتھ زبردستی نہیں . جن لوگوں کے وچار اس بارے میں ہمارے ساتھ نہیں ملتے اُن سے ہم کیول اِتنی بھیک مانگتے ہیں کہ وہ زندہ رہیں اور دوسروں کو بھی زندہ رہنے دیں . اُن کا دین دھرم اُن کے ساتھ ہمارا دین دھرم ہمارے ساتھ . دین دھرم کے معاملے میں زبردستی کوئی کسی کے ساتھ نہ کرے .

ہم اس بات کو بھی نہیں مانتے کہ اس طرح کی شادی کرنے والوں کو کوئی خاص جلسہ نہیں کرنا چاہئیے تھا، چپ چاپ شادی کر لینی چاہئیے تھی . یہ بات بھی غلط ہے . جس کے یہاں شادی ہو وہ خوشی کیوں نہ منائے اور جو کسی اصول کو ٹھیک مانتے ہوں وہ اس پر جلسہ کیوں نہ کریں . اس میں دوسرے کیوں ناراض ہوں .

یہ بہانہ بھی بے معنی ہے کہ کسی شادی میں لڑکا نیک چلن ہے یا بد چلن یا لڑکی کیسی ہے . لڑکا اور لڑکی یا زیادہ سے زیادہ دونوں کے گھر والوں یا خاص دوستوں کو چھوڑ کر کسی اور کو اِن معاملوں میں دخل دینے کا حق نہیں ہے . پھر اس بات کو بہانا بنا کر کسی مذہب کے لوگوں پر حملے کر بیٹھنا تو وہ مہان پاپ ہے جسے کوئی قانون معاف نہیں کر سکتا اور نہ جس سے کسی دیش یا دھرم کا مان بڑھ سکتا ہے . اس طرح کی شادیاں اور انتر قومی اور انتر راشٹری شادیاں تو بڑھینگی ہی . پھر گھڑی کی سوئیوں کو اُلٹا چلانے کی بیکار کوشش میں ہم کڑواپن کیوں پیدا کریں .

جو لوگ ہم سے سہمت ہیں اور اس طرح کی شادیوں کے حق میں ہیں اُن سے ہم کہینگے کہ وہ بنا اپنے ورودھیوں پر غصہ کئے یا بدلے کی بھاونا من میں لائے دھیرج اور ہمت کے ساتھ اپنے اصولوں پر ڈٹے رہیں . دیش ہمارے اصولوں کی سچائی کی پرکھ ہمارے دھیرج، ہمارے کشٹوں اور ہماری قربانیوں سے ہی کر سکتا ہے .

—سندرلال 12-7-52'

میڈم سن یات سین کی اپیل

سن 1911 کی چینی کرانتی اور چینی جن راج کے جنم داتا ڈاکٹر سن یات سین کی پتنی میڈم سن یات سین، جن کا چینی نام سونگ چنگ لنگ ہے، ایک لیکھ چین کے پکھواری انگریزی اخبار "چائنا ریکنسٹرکٹس" میں نکلا ہے . اس لیکھ میں میڈم سن یات سین نے بڑے درد کے ساتھ بتایا ہے کہ امریکہ اور یونو کی فوجیں کس طرح

सीधे ना सीधे एक पैसा रिश्वत लेनाह राम समझें और नौकर की तरह मेहनत करें. आज किसे इस चीज़ के ठीक ठीक पता लगाने की चिन्ता है कि रिश्वत का रिवाज मुल्क में उतना ही है जितना पांच साल पहले था या उससे कई गुना और रावन के मुक़द्दमे एक एक सूबे में कितने चल रहे हैं. ज़रूरत है हकूमत के तमाम खर्चों को बेहद कम करने की, ज़रूरत है पूरी पूरी ईमानदारी, सादगी और जनता की सेवा की. जब तक यह नहीं होता यानी जब तक हकूमत का पूरा ढांचा और उसके बुनियादी उसूल नहीं बदलते तब तक कोई योजना अच्छी या बुरी इस देश को नहीं फल सकती.

जवाहरलाल जी ने यह भी कहा कि पिछले चार साल में भारत ने जो "आर्थिक उन्नति" की है उसे देख कर कुछ विदेशों ने खूब सराहा है. हमारी और जनता की नज़रों में न वह उन्नति उन्नति है और न सरकारी गवाहों की कोई खास क़द्र.

हिन्दू मुस्लिम शादी और दिल्ली के दंगे.

आख़ीर में जवाहरलाल जी ने उन दंगों की चर्चा की जो हाल में एक मुसलमान नौ जवान की एक हिन्दू लड़की के साथ शादी की तजवीज़ के सिलसिले में दिल्ली में हुए थे. जवाहरलाल जी ने इन दंगों पर दुख प्रगट करते हुए कहा कि इस तरह की मनमानी और हुल्लड़ बाज़ी बर्दाश्त नहीं की जा सकती. इस मामले में भी हम पूरी तरह जवाहर लाल जी से सहमत हैं. इस सिलसिले में जो कुछ दिल्ली में हुआ और जिस तरह बे गुनाह मुसलमानों पर जिनका इस शादी से कोई सम्बन्ध तक नहीं था हमले हुए वह किसी भी देश, या किसी भी धर्म के लिए बड़ी शर्म की बात है. हमें खुद उसका गहरा दुख है. मालूम नहीं फ़िरक़ेवाराना तंग नज़री का यह भूत कब हमारे देश का पीछा छोड़ेगा. अचरज यह है कि जो लोग कश्मीर को भारत में मिलाये रखने के लिए अपने को बेचैन ज़ाहिर करते हैं वही अपने पड़ोसियों और शहर वालों के साथ इस तरह की बेइन्साफ़ी की और लज्जा जनक हरकतें करते हैं.

हम खुद हिन्दू मुस्लिम शादियों के पूरी तरह हक़ में हैं. जो हिन्दू इसे अपने धर्म के विरुद्ध समझते हैं या जो मुसलमान इसे शरह के ख़िलाफ़ समझते हैं उन से इत्तफ़ाक़ न रखते हुए भी हमें कोई झगड़ा नहीं. हम दूसरों को भी उनके विचारों के अनुसार अमल करने की पूरी आज़ादी देना चाहते हैं और यही आज़ादी उनसे अपने या उन हिन्दू मुसलमानों के लिए चाहते हैं जो इस तरह की शादियों को धर्म या शरह के ख़िलाफ़ नहीं मानते और चाहे लड़का मुसलमान और लड़की हिन्दू हो हमारी निगाह में कोई फ़र्क़ नहीं. इस तरह की शादियां यानी सब जातों, सब धर्मों और सब प्रान्तों के बीच शादियां देश में प्रेम और एकता को

سیدھے نا سیدھے ایک پیسہ رشوت لینا حرام سمجھیں اور نوکر کی طرح محنت کریں . آج کسے اس چیز کے ٹھیک ٹھیک پتہ لگانے کی چنتا ہے کہ رشوت کا رواج ملک میں اتنا ہی ہے جتنا پانچ سال پہلے تھا یا اس سے کئی گنا اور راون کے مقدمے ایک ایک صوبے میں کتنے چل رہے ہیں . ضرورت ہے حکومت کے تمام خرچوں کو بےحد کم کرنے کی، ضرورت ہے پوری پوری ایمانداری، سادگی اور جنتا کی سیوا کی. جب تک یہ نہیں ہوتا یعنی جب تک حکومت کا پورا ڈھانچا اور اسکے بنیادی اصول نہیں بدلتے تب تک کوئی یوجنا اچھی یا بری اس دیش کو نہیں پھل سکتی .

جواہر لال جی نے یہ بھی کہا کہ پچھلے چار سال میں بھارت نے جو "آرتھک انّتی" کی ہے اسے دیکھکر کچھ ودیشوں نے خوب سراہا ہے . ہماری اور جنتا کی نظروں میں نہ وہ انّتی انّتی ہے اور نہ سرکاری گواہوں کی کوئی خاص قدر .

ہندو مسلم شادی اور دلی کے دنگے .

آخیر میں جواہر لال جی نے ان دنگوں کی چرچا کی جو حال میں ایک مسلمان نوجوان کی ایک ہندو لڑکی کے ساتھ شادی کی تجویز کے سلسلہ میں دلی میں ہوئے تھے . جواہر لال جی نے ان دنگوں پر دکھ پرگٹ کرتے ہوئے کہا کہ اس طرح کی من مانی اور ہلڑ بازی برداشت نہیں کی جا سکتی . اس معاملے میں بھی ہم پوری طرح جواہر لال جی سے سہمت ہیں . اس سلسلے میں جو کچھ دلی میں ہوا اور جس طرح بے گناہ مسلمانوں پر جن کا اس شادی سے کوئی سمبندھ تک نہیں تھا حملے ہوئے وہ کسی بھی دیش یا کسی بھی دھرم کے لئے بڑی شرم کی بات ہے . ہمیں خود اس کا گہرا دکھ ہے . معلوم نہیں فرقہ وارانہ تنگ نظری کا یہ بھوت کب ہمارے دیش کا پیچھا چھوڑیگا . اچرج یہ ہے کہ جو لوگ کشمیر کو بھارت میں ملائے رکھنے کے لئے اپنے کو بے چین ظاہر کرتے ہیں وہی اپنے پڑوسیوں اور شہر والوں کے ساتھ اس طرح کی بے انصافی کی اور لجا جنک حرکتیں کرتے ہیں.

ہم خود ہندو مسلم شادیوں کے پوری طرح حق میں ہیں . جو ہندو اسے اپنے دھرم کے ورودھ سمجھتے ہیں یا جو مسلمان اسے شرح کے خلاف سمجھتے ہیں ان سے اتفاق نہ رکھتے ہوئے بھی ہمیں کوئی جھگڑا نہیں . ہم دوسروں کو بھی ان کے وچاروں کے انوسار عمل کرنے کی پوری آزادی دینا چاہتے ہیں اور یہی آزادی ان سے اپنے یا ان ہندو مسلمانوں کے لئے چاہتے ہیں جو اس کی طرح شادیوں کو دھرم یا شرح کے خلاف نہیں مانتے . اس میں چاہے لڑکا ہندو اور لڑکی مسلمان ہو اور لڑکا مسلمان اور لڑکی ہندو ہو ہماری نگاہ میں کوئی فرق نہیں . اس طرح کی شادیاں یعنی سب جاتوں، سب دھرموں اور سب پرانتوں کے بیچ شادیاں دیش میں پریم اور ایکتا کو

सरकार से हमारी विनम्र प्रार्थना है कि वह ऐसे जत्थों के जाने में हर तरह की मदद दे और उनके लिए आसानियां पैदा कर दे.

सरकार की योजनायें.

जवाहरलाल जी ने उस भाशन में अपनी 'पांच साला योजना' और 'भारत सेवक समाज' की भी चर्चा की. यह सवाल भी लम्बे सवाल हैं. यहां हम फिर इतना कह देना चाहते हैं कि जब तक हमारी योजनाओं में हमारे सामने आदर्श अमरीकी नमूना रहेगा, महात्मा गांधी का बताया हुआ हिन्दुस्तानी ढांचा नहीं या पड़ोसी चीन का भी नमूना नहीं और जब तक हमारे काम करने वालों को ठोस सेवा की जगह ढिंडोरों और फुलझड़ियों की आदत रहेगी तब तक इस तरह की चीजों से देश के ग़रीबों को कोई लाभ नहीं हो सकता. योजनाओं से कहीं बढ़ कर और इनसे कहीं पहला सवाल नीचे से ऊपर तक हकूमत के सारे ढांचे को बदलने का है. हमारे आज कल के हाकिमों को नये चीन का तरीक़ा बहुत पसन्द नहीं आता. आवे भी क्यों? नये चीन के तीन सब से बड़े उसूल जो उनके 'कामन प्रोग्राम' यानी विधान में दर्ज हैं – ईमानदारी (Honesty), सादगी (Simplicity) और जनता की सेवा (Service of the People) हैं. इन ही के जरिये उन्होंने अपनी मुसीबतों को हल किया है और मुल्क को ऊपर उठाया है. इनके खिलाफ़ हमारी आज कल की सरकारों के तीन सब से बड़े उसूल मालूम होते हैं– क़ाबिलियत (Efficiency), शान (Dignity) और रहन सहन को बढ़ाना (Raising of the Standard). यानें तीनों अच्छी हैं. पर जब क़ाबिल आदमी की ईमानदारी में थोड़ी सी कमी दिखाई देती है तो हम उसकी क़ाबिलियत की क़द्र करते हुए ईमानदारी की तरफ़ से आखें फेर लेने पर मजबूर हो जाते हैं. शान का ख़्याल हम को तन्ख़ाहें कम नहीं करने देता और हकूमत के ख़र्चों को बेतहाशा बढ़ाए रखता है. रहन सहन को ऊंचा ले जाने की फ़िकर में हम गांव में विदेशी रेडियो और विदेशी टार्च तो फैला देना चाहते हैं और जब उससे बेकारी बढ़ती है तो यह सोच कर सन्तोश मान लेते हैं कि अगर हम सारी जनता के रहन सहन को ऊंचा न ले जा सके तो कम से कम हमने कुछ लोगों के रहन सहन को तो ऊंचा कर ही लिया! देश को जरूरत है ऐसे हाकिमों और मिनिस्टरों की जो जनता के रहन सहन को ऊंचा करने के लिए पहले अपने रहन सहन को नीचा करने को तैयार हों, जो मामूली मकानों में रह सकें, कम तन्ख़ाहों में गुज़र कर सकें और जनता के मेम्बर जनता की तरह रहते सहते चलते फिरते दिखाई दें. ऐसे अफ़सरों और सरकारी नौकरों की जो सचमुच अपने को जनता का नौकर समझें, जनता के साथ उसे मालिक मान कर बरताव करें.

سرکار سے ہماری ونمر پرارتھنا ہے کہ وہ ایسے جتھوں کے جانے میں ہر طرح کی مدد دے اور اُن کے لئے آسانیاں پیدا کر دے۔

سرکار کی یوجنائیں۔

جواہر لال جی نے اُس بھاشن میں اپنی 'پانچ سالہ یوجنا' اور 'بھارت سیوک سماج' کی بھی چرچا کی۔ یہ سوال بھی لمبے سوال ہیں۔ یہاں ہم پھر اتنا کہہ دینا چاہتے ہیں کہ جب تک ہماری یوجناؤں میں ہمارے سامنے آدرش امریکی نمونہ رہیگا' مہاتما گاندھی کا بتایا ہوا ہندستانی ڈھانچہ نہیں یا پڑوسی چین کا بھی نمونہ نہیں اور جب تک ہمارے کام کرنے والوں کو ٹھوس سیوا کی جگہ ڈھنڈوروں اور پھلجھڑیوں کی عادت رہیگی تب تک اس طرح کی چیزوں سے دیش کے غریبوں کو کوئی لابھ نہیں ہوسکتا۔ یوجناؤں سے کہیں بڑھکر اور اِن سے کہیں پہلا سوال نیچے سے اوپر تک حکومت کے سارے ڈھانچے کو بدلنے کا ہے۔ ہمارے آجکل کے حاکموں کو نئے چین کا طریقہ بہت پسند نہیں آتا۔ آوے بھی کیوں؟ نئے چین کے تین سب سے بڑے اُصول جو اُن کے 'کامن پروگرام' یعنی ودھان میں درج ہیں—ایمانداری (Honesty)' سادگی (Simplicity) اور جنتا کی سیوا (Service of the People) ہیں۔ اِن ہی کے ذریعے اُنھوں نے اپنی مصیبتوں کو حل کیا ہے اور ملک کو اوپر اُٹھایا ہے۔ اِن کے خلاف ہماری آجکل کی سرکاروں کے تین سب سے بڑے اُصول معلوم ہوتے ہیں—قابلیت (Efficiency)' شان (Dignity) اور رہن سہن کو بڑھانا (Raising of the Standard) باتیں تینوں اچھی ہیں۔ پر جب قابل آدمی کی ایمانداری میں تھوڑی سی کمی دکھائی دیتی ہے تو ہم اُس کی قابلیت کی قدر کرتے ہوئے ایمانداری کی طرف سے آنکھیں پھیر لینے پر مجبور ہو جاتے ہیں۔ شان کا خیال ہم کو تنخواہیں کم نہیں کرنے دیتا اور حکومت کے خرچوں کو بےتحاشا بڑھائے رکھتا ہے۔ رہن سہن کو اونچا لے جانے کی فکر میں ہم گاؤں گاؤں میں ودیشی ریڈیو اور ودیشی ٹارچ تو پھیلا دینا چاہتے ہیں اور جب اس سے بیکاری بڑھتی ہے تو یہ سوچ کر سنتوش مان لیتے ہیں کہ اگر ہم ساری جنتا کے رہن سہن کو اونچا نہ لے جاسکے تو کم سے کم ہم نے کچھ لوگوں کے رہن سہن کو تو اونچا کر ہی لیا! دیش کو ضرورت ہے ایسے حاکموں اور منسٹروں کی جو جنتا کے رہن سہن کو اونچا کرنے کے لئے پہلے اپنے رہن سہن کو نیچا کرنے کو تیار ہوں، جو معمولی مکانوں میں رہ سکیں' کم تنخواہوں میں گذر کر سکیں اور جنتا کے ممبر جنتا کی طرح رہتے سہتے چلتے پھرتے دکھائی دیں۔ ایسے افسروں اور سرکاری نوکروں کی جو سچمچ اپنے کو جنتا کا نوکر سمجھیں' جنتا کے ساتھ اُسے مالک مان کر برتاؤ کریں'

एक हद के अन्दर अच्छी चीज़ है पर चीन में कोआपरेटिव फ़ारमिंग अभी रुपए में एक पाई भी नहीं. वहां के समझदार हाकिमों ने इसे बिल्कुल किसानों की मरज़ी पर छोड़ दिया है. हम ज़बरदस्ती और जल्द बाज़ी के साथ अपने विचारों और वहमों को मुल्क पर थोपना चाहते हैं. मालूम नहीं जवाहरलाल जी को झांसी के कोआपरेटिव के तजुरबे का और किसानों के उसकी बाबत ख़्याल का कितना पता है.

सच यह है कि यू. पी. का किसान मिटता जा रहा है, उसकी ग़रीबी तेज़ी से बढ़ रही है, उसकी चरागाहें कम हो रही हैं. उसे ढंगरों को थान पर बांध कर खिलाने का ग़ल्त उपदेश दिया जा रहा है और उसके ढंगर मर रहे हैं. सरकारी नौकरों का दबदबा और उनके बढ़े हुए अधिकार जिन्हें नये क़ानून ने और बढ़ा दिया है उसे शेर के सामने बंधी बकरी की तरह सुखा रहे हैं. इलाज था सरकारी ज़मींदारी के वहम को छोड़ कर हर खेती करने वाले को उसके टुकड़े का मालिक बना देना और लगान को असल पैदावार के मुनासिब हिस्से यानी ज़ियादा से ज़ियादा बीस फ़ी सदी पर पैदावार की शक्ल में बांध देना. बाक़ी तफ़सीलें सब तय हो सकती हैं और जो करना चाहे उसके लिए तय हुई पड़ी हैं. ज़मींदारी अन्त क़ानून से न किसानों की हालत बेहतर हुई है न हो सकती है और न गांव वालों की ग़रीबी दूर हो सकती है.

चीन और भारत.

हाल में जो इंडियन कलचरल डेलीगेशन चीन से लौटा है उसकी चर्चा करते हुए जवाहरलाल जी ने एक बहुत अच्छा सुझाव रक्खा है. वह यह कि कुछ होशियार आदमियों के जत्थे भारत से चीन जायें और कुछ चीन से भारत आयें. उन्होंने यह भी कहा कि अगर हिन्दुस्तान के कुछ इन्जीनियर थोड़े दिनों जा कर चीन रहें और चीन के कुछ इंजीनियर थोड़े दिनों आ कर यहां रहें तो इससे दोनों का फ़ायदा हो सकता है क्योंकि "हमारी और चीन की समस्यायें बहुत सी मिलती जुलती हैं. दोनों मुल्कों की आबादी बहुत बड़ी है और दोनों में मशीनों की कमी है." हम जवाहरलाल जी के इस सुझाव का दिल से स्वागत करते हैं. अगर इस पर अमल हुआ तो मुमकिन है कि करोड़ों बल्कि अरबों रुपया जो हम अमरीका की ग़ल्त नक़ल में ख़र्च कर रहे हैं और करने वाले हैं बच जाय. हम चाहते हैं कि जिस तरह इंजीनियरों की उसी तरह विद्यार्थियों की, प्रोफ़ेसरों की, स्कूल मास्टरों की, मज़दूरों की, किसानों की और कारख़ाने-दारों की भी छोटी छोटी पार्टियां दो दो चार चार महीने के लिए यहां से चीन और रूस जायें और वहां के सच्चे हालात को ख़ुद देखें और समझें, और ऐसे ही वहां से यहां आयें.

ایک حد کے اندر اچھی چیز ہے . پر چین میں کوآپریٹو فارمنگ ابھی روپئے میں ایک پائی بھی نہیں . وہاں کے سمجھدار حاکموں نے اِسے بالکل کسانوں کی مرضی پر چھوڑ دیا ہے. ہم زبردستی اور جلد بازی کے ساتھ اپنے وچاروں اور وہموں کو ملک پر تھوپنا چاہتے ہیں. معلوم نہیں جواہرلال جی کو جھانسی کے کوآپریٹو کے تجربے کا اور کسانوں کے اُس کی بابت خیال کا کتنا پتہ ہے .

سچ یہ ہے کہ یو . پی. کا کسان مٹتا جا رہا ہے' اُسکی غریبی تیزی سے بڑھ رہی ہے' اُسکی چراگاہیں کم ہو رہی ہیں. اُسے ڈنگروں کو تھان پر باندھ کر کھلانے کا غلط اُپدیش دیا جا رہا ہے اور اُس کے ڈنگر مر رہے ہیں . سرکاری نوکروں کا دبدبہ اور اُن کے بڑھے ہوئے ادھیکار جنہیں نئے قانون نے اور بڑھا دیا ہے اُسے شیر کے سامنے بندھی بکری کی طرح سکھا رہے ہیں . علاج تھا سرکاری زمینداری کے وہم کو چھوڑ کر ہر کھیتی کرنے والے کو اُس کے ٹکڑے کا مالک بنا دینا اور لگان کو اصل پیداوار کے مناسب حصے یعنی زیادہ سے زیادہ بیس فیصدی پر پیداوار کی شکل میں باندھ دینا باقی تفصیلیں سب طے ہوسکتی ہیں اور جو کرنا چاہے اُس کے لئے طے ہوئی پڑی ہیں. زمینداری انت قانون سے نہ کسانوں کی حالت بہتر ہوئی ہے نہ ہوسکتی ہے اور نہ گاؤں والوں کی غریبی دور ہوسکتی ہے.

چین اور بھارت .

حال میں جو انڈین کلچرل ڈیلی گیشن چین سے لوٹا ہے اُس کی چرچا کرتے ہوئے جواہر لال جی نے ایک بہت اچھا سمجھاؤ رکھا ہے. وہ یہ کہ کچھ ہوشیار آدمیوں کے جتھے بھارت سے چین جائیں اور کچھ چین سے بھارت آئیں . انہوں نے یہ بھی کہا کہ اگر ہندستان کے کچھ انجینیر تھوڑے دنوں جاکر چین رہیں اور چین کے کچھ انجینیر تھوڑے دنوں آکر یہاں رہیں تو اِس سے دونوں کو فائدہ ہوسکتا ہے کیونکہ ''ہماری اور چین کی سمسیائیں بہت سی ملتی جلتی ہیں . دونوں ملکوں کی آبادی بہت بڑی ہے اور دونوں میں مشینوں کی کمی ہے.'' ہم جواہر لال جی کے اِس سمجھاؤ کا دل سے سواگت کرتے ہیں . اگر اِس پر عمل ہوا تو ممکن ہے کہ کروڑوں بلکہ اربوں روپیہ جو ہم امریکہ کی غلط نقل میں خرچ کر رہے ہیں اور کرنے والے ہیں بچ جائے . ہم چاہتے ہیں کہ جس طرح انجینیروں کی اُسی طرح ودیارتھیوں کی' پروفیسروں کی' اِسکول ماسٹروں کی' مزدوروں کی' کسانوں کی اور کارخانے داروں کی بھی چھوٹی چھوٹی پارٹیاں دو دو چار چار مہینے کے لئے یہاں سے چین اور روس جائیں اور وہاں کے سچے حالات کو خود دیکھیں اور سمجھیں' اور ایسے ہی وہاں سے یہاں آئیں .

नये ज़मींदार के लाखों हाकिम, अफ़सर और नौकर इस गिरोह के हक़ में पुराने ज़मीदार के कारिन्दों और सिपाहियों से बदतर हैं बेहतर नहीं. रहा तीसरा गिरोह जो सबसे जियादा ग़रीब है और जिसकी गिनती हर गांव में सबसे ज़ियादा है और कुल प्रान्त में शायद दो करोड़ से कम नहीं, नये क़ानून का उसकी क़ीमत पर ज़रा भी असर नहीं हुआ. वह सब वैसे ही नादार और बे-ज़मीन हैं जैसे पहले थे, सिवाय इसके कि पिछले चार पांच बरस में इन अभागों की गिनती और बढ़ गई है और बढ़ती जा रही है. अकसर ज़मींदारों ने यह देख कर कि ज़मीदारियां जा रही हैं हज़ारों नहीं लाखों बेबस किसानों को किसी तरह बे दख्ल करा कर अपनी 'सीर' को बढ़ाया है. नये क़ानून से एक एक गांव के अन्दर मुक़दमे बाज़ी, वकील बाज़ी, गुन्डागर्दी और जातों और बिरादरियों के नाम पर दल बन्दी इन सब बुराइयों को बढ़ने फूलने और फलने का बेहद मौक़ा मिल गया है और यह सब बुराइयां बढ़ी हैं. जवाहरलाल जी की यह बात भी केवल एक कहने की बात है कि—"ज़मीन सुधार केवल जादू की लकड़ी फेरने से नहीं हो सकता. इसके लिए सख्त मेहनत, लगातार कोशिशों और समय की ज़रूरत है. मुझे अफ़सोस है कि आज हमारे गांव में ग़रीबी इतनी ज़ोरों के साथ फैली हुई है." जवाहरलाल जी के भेजे हुए लोग चीन से लौट चुके हैं. इसी मज़मून पर उनमें से कुछ के लेख भी अख़बारों में निकल रहे हैं. चीन ने दो साल के अन्दर लगभग पैंतीस करोड़ खेती पेशा लोगों को अपने टुकड़े का मालिक बना दिया. और इस सुधार के ज़रिये उनकी और देश की खुशहाली को चौगुना कर दिया. कशमीरने चन्द महीने के अन्दर अपने यहां के लाखों बे-ज़मीन खेती पेशा लोगों को अपनी अपनी ज़मीन का मालिक बना दिया. हम आज़ादी के पांच बरस बीत जाने के बाद अपने गांवों की ग़रीबी पर रो रहे हैं, बाहर से नाज मंगा मंगा कर मुल्क को खिला रहे हैं और ढिंडोरे पिटवा कर और फुलझड़ियां छोड़ कर लोगों के पेट की आग को तेल चुपड़ कर छिपाने की कोशिश करने हैं.

हम फिर कहते हैं कि हमें जवाहरलाल जी या उनके साथियों या उन लोगों की जिनके हाथों में फिलहाल इस प्रान्त की क़िस्मत है नेकनियति में शक नहीं. लेकिन जब तक ज़मीन के छोटे टुकड़ों की अलग अलग काश्त से ग़लत डर और ट्रेक्टरों और बड़ी मशीनों के ज़रिये हज़ारों एकड़ की एक साथ काश्त पर ग़लत और बरबाद कुन विश्वास और बे-वक़्त का शौक़ हमारे दिलों से नहीं निकलेगा तब तक हम इस देश के ज़मीन के सवाल को हल नहीं कर सकते और न करोड़ों गांव वालों की ग़रीबी को दूर कर सकते हैं.

जवाहरलाल जी ने अपने भाशन में कोआपरेटिव फ़ारमिंग का भी राग अलापा है. कोआपरेटिव फ़ारमिंग

نئے زمیندار کے لاکھوں حاکم، افسر اور نوکر اس گروہ کے حق میں پرانے زمیندار کے کارندوں اور سپاہیوں سے بدتر نہیں رہا تیسرا گروہ جو سب سے زیادہ غریب ہے اور جس کی گنتی ہر گاؤں میں سب سے زیادہ ہے اور کل پرانت میں شاید دو کروڑ سے کم نہیں نئے قانون کا اُس کی قسمت پر ذرا بھی اثر نہیں ہوا۔ وہ سب ویسے ہی نادار اور بےزمین ہیں جیسے پہلے تھے، سوائے اس کے کہ پچھلے چار پانچ برس میں ان ابھاگوں کی گنتی بڑھ گئی ہے اور بڑھتی جا رہی ہے۔ اکثر زمینداروں نے یہ دیکھ کر کہ زمینداریاں جا رہی ہیں ہزاروں نہیں لاکھوں بے بس کسانوں کو کسی طرح بے دخل کراکر اپنی 'سیر' کو بڑھایا ہے۔ نئے قانون سے ایک ایک گاؤں کے اندر مقدمے بازی، وکیل بازی، غنڈا گردی اور جاتوں اور برادریوں کے نام پر دل بندی ان سب برائیوں کو بڑھنے پھولنے اور پھلنے کا بے حد موقع مل گیا ہے اور یہ سب برائیاں بڑھی ہیں۔ جواہر لال جی کی یہ بات بھی کیول ایک کہنے کی بات ہے کہ—"زمین سدھار کیول جادو کی لکڑی پھیرنے سے نہیں ہوسکتا۔ اس کے لئے سخت محنت، لگاتار کوششوں اور سمے کی ضرورت ہے۔ مجھے افسوس ہے کہ آج ہمارے گاؤں میں غریبی اتنی زوروں کے ساتھ پھیلی ہوئی ہے۔" جواہر لال جی کے بھیجے ہوئے لوگ چین سے لوٹ چکے ہیں۔ اسی مضمون پر اُن میں سے کچھ کے لیکھ بھی اخباروں میں نکل رہے ہیں۔ چین نے دو سال کے اندر لگ بھگ پینتیس کروڑ بےزمین کھیتی پیشہ لوگوں کو اپنے اپنے ٹکڑے کا مالک بنا دیا اور اس سدھار کے ذریعے اُن کی اور دیش کی خوشحالی کو چوگنا کر دیا۔ کشمیر نے چند مہینے کے اندر اپنے یہاں کے لاکھوں بےزمین کھیتی پیشہ لوگوں کو اپنی اپنی زمین کا مالک بنا دیا۔ ہم آزادی کے پانچ برس بیت جانے کے بعد بھی اپنے گاؤں کی غریبی پر رو رہے ہیں، باہر سے ناج منگا منگاکر ملک کو کھلا رہے ہیں اور ڈھنڈورے پٹوا کر اور پھلجھڑیاں چھوڑ کر لوگوں کے پیٹ کی آگ کو تیل چپڑ کر چھپانے کی کوشش کرتے ہیں۔

ہم پھر کہتے ہیں کہ ہمیں جواہر لال جی یا اُن کے ساتھیوں کی یا اُن لوگوں کی جن کے ہاتھوں میں فی الحال اس پرانت کی قسمت ہے نیک نیتی میں شک نہیں۔ لیکن جب تک زمین کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں کی الگ الگ کاشت سے غلط ڈر اور ٹریکٹروں اور بڑی مشینوں کے ذریعے ہزاروں ایکڑ کی ایک ساتھ کاشت پر غلط اور برباد کن وشواس اور بے وقت کا شوق ہمارے دلوں سے نہیں نکلیگا تب تک ہم اس دیش کے زمین کے سوال کو حل نہیں کرسکتے اور نہ کروڑوں گاؤں والوں کی غریبی کو دور کرسکتے ہیں۔

جواہر لال جی نے اپنے بھاشن میں کوآپریٹو فارمنگ کا بھی راگ الاپا ہے۔ کوآپریٹو فارمنگ

मुसीबत और असन्तोश में डूबे हुए हैं." लेकिन हमें अफ़सोस है कि इस मामले में भी हमारी और जवाहरलाल जी की निगाह में फ़र्क़ है. ज़मींदार प्रथा का अंत होने का शायद सिवाय थोड़े से ज़मींदारों के मुल्क भर में किसी को भी अफ़सोस न होगा. वह एक ग़लत और बे-वक़्त की चीज़ थी जिसका ख़ातमा ज़रूरी था. हम यह भी मानते हैं कि केवल इस हवा बंध जाने से कि ज़मींदारी का अन्त हो गया प्रान्त की और ख़ास कर गांव वालों की दिमाग़ी हालत को फ़ायदा पहुंचा है. आम तौर से किसान पर ज़मींदार और उसका दबदबा, उसकी झूटी शान और ग़लत हरक़तें एक बोझ था जो गांव वालों के दिलों और दिमाग़ों को दबाये रखता था. वह एक दर्जे तक हमेशा के लिए हट गया. यहां तक जो हुआ अच्छा हुआ. लेकिन इसके बाद जवाहरलाल जी का यह कहना कि, "इस ज़मींदारी प्रथा के अन्त से किसानों का हक़ मिल जायगा और ख़ुशहाली का एक नया दौर शुरू हो जायगा" केवल एक सुन्दर लेकिन झूटा सपना है.

जवाहरलाल जी इसी प्रान्त के रहने वाले हैं. शायद उन्हें यह मालूम न हो कि पहली जुलाई को प्रान्त भर में विरला ही कोई किसान ऐसा होगा जिसके चेहरे पर किसी तरह के ख़ुशी, जोश या उम्मीद के आसार दिखाई दिये हों. हमने ख़ुद गांव के बहुत से लोगों से बात की. सब की एक ही आवाज़ हमने बहत्तर बरस के एक किसान लीडर से जो कांगरेस के ख़ास और पुराने काम करने वाले हैं और जिन्हें जवाहरलाल जी अच्छी तरह जानते और उनकी इज़्ज़त करते हैं नये क़ानून के बारे में आम गांव वालों की राय पूछी तो उन्होंने जवाब दिया—"ज़मींदार गालियां देते हैं और किसान सौ फ़ी सदी इस सारी चीज़ को तमाशा और ढोंग समझते हैं, कोई ख़ुश नहीं, किसानों की मुसीबतें इससे बेहद बढ़ गई हैं." हमने उनसे और तफ़सील से समझने की कोशिश की जिसका ज़िकर हम फिर किसी जगह करेंगे. यह बिल्कुल सच है कि नये क़ानून से किसानों की मुसीबतें बढ़ी ही नहीं हैं "बेहद बढ़ गई हैं."

मुट्ठी भर भूमिधरों को छोड़ कर जो ख़ुद काफ़ी परेशान हैं और ज़ियादातर ठोक पीट कर वैद्य राज बनाये गये हैं. प्रान्त भर के खेती पेशा लोगों को हम तीन हिस्सों में बांट सकते हैं. एक ज़मींदार, दूसरे वह किसान जो अपनी ज़मीन के टुकड़े पर किसी तरह का मौरूसी या मिल्कियत या नीम मिल्कियत का हक़ रखते थे, और तीसरे वह बिला ज़मीन के मज़दूर जो या तो सिर्फ़ दूसरों की ज़मीन पर मज़दूरी करते थे या थोड़ी बहुत ज़मीन लगान या अधियाई पर दूसरों से लेकर जोतते थे लेकिन जिनका उस ज़मीन में कोई टिकाऊ हक़ नहीं था. इनमें पहला गिरोह ख़त्म हो गया. दूसरे गिरोह के लिए शख़्सी ज़मींदारों की जगह सरकार ज़मींदार आ गई और अब तक का तजुर्बा उन्हें बता रहा है कि इस

مصیبت اور اسنتوش میں ڈوبے ہوئے ہیں." لیکن ہمیں افسوس ہے کہ اِس معاملے میں بھی ہمارے اور جواہر لال جی کی نگاہ میں فرق ہے۔ زمیںداری پرتھا کا انت ہونے کا شائد سوائے تھوڑے سے زمیںداروں کے ملک بھر میں کسی کو بھی افسوس نہ ہوگا۔ وہ ایک غلط اور بے وقت کی چیز تھی جس کا خاتمہ ضروری تھا۔ ہم یہ بھی مانتے ہیں کہ کیول اس ہوا بندھ جانے سے کہ زمیںداری کا انت ہوگیا پرانت کی اور خاص کر گاؤں والوں کی دماغی حالت کو فائدہ پہونچا ہے۔ عام طور پر زمیںدار اور اُس کا دبدبہ، اُسکی جھوٹی شان اور غلط حرکتیں ایک بوجھ تھا جو گاؤں والوں کے دلوں اور دماغوں کو دبائے رکھتا تھا وہ ایک درجے تک ہمیشہ کے لئے ہٹ گیا۔ یہاں تک جو ہوا اچھا ہوا۔ لیکن اِس کے بعد جواہر لال جی کا یہ کہنا کہ "اِس زمیںداری پرتھا کے انت سے کسانوں کو اُن کا حق مل جائیگا اور خوش حالی کا ایک نیا دور شروع ہو جائیگا" کیول ایک سندر لیکن جھوٹا سپنا ہے۔

جواہر لال جی اِسی پرانت کے رہنے والے ہیں۔ شائد اُنہیں یہ معلوم نہ ہو کہ پہلی جولائی کو پرانت بھر میں برلا ہی کوئی کسان ایسا ہوگا جس کے چہرے پر کسی طرح کی خوشی جوش یا اُمید کے آثار دکھائی دیئے ہوں۔ ہم نے خود گاؤں کے بہت سے لوگوں سے بات کی۔ سب کی ایک ہی آواز۔ ہم نے بہتّر برس کے ایک کسان لیڈر سے جو کانگریس کے خاص اور پرانے کام کرنے والے ہیں اور جنہیں جواہر لال جی اچھی طرح جانتے اور اُن کی عزت کرتے ہیں نئے قانون کے بارے میں عام گاؤں والوں کی رائے پوچھی تو اُنہوں نے جواب دیا—"زمیںدار گالیاں دیتے ہیں اور کسان سو فیصدی اس ساری چیز کو تماشا اور ڈھونگ سمجھتے ہیں، کوئی خوش نہیں، کسانوں کی مصیبتیں اِس سے بے حد بڑھ گئی ہیں." ہم نے اُن سے اور تفصیل سے سمجھنے کی کوشش کی جسکا ذکر ہم پھر کسی اور جگہ کرینگے. یہ بالکل سچ ہے کہ نئے قانون سے کسانوں کی مصیبتیں بڑھی ہی نہیں ہیں "بے حد بڑھ گئیں ہیں."

مٹھی بھر بھومی دھروں کو چھوڑ کر جو خود کافی پریشان ہیں اور زیادہ تر ٹھوک پیٹ کر ویدراج بنائے گئے ہیں پرانت بھر کے کھیتی پیشہ لوگوں کو ہم تین حصوں میں بانٹ سکتے ہیں۔ ایک زمیںدار، دوسرے وہ کسان جو اپنی زمین کے ٹکڑے پر کسی طرح کا موروثی یا ملکیت یا نیم ملکیت کا حق رکھتے تھے، اور تیسرے وہ بلا زمین کے مزدور جو یا تو صرف دوسروں کی زمین پر مزدوری کرتے تھے یا تھوڑی بہت زمین لگان یا ادھیائی پر دوسروں سے لیکر جوتتے تھے لیکن جن کا اُس زمین میں کوئی ٹکاؤ حق نہیں تھا۔ اِن میں پہلا گروہ ختم ہوگیا۔ دوسرے گروہ کے لئے شخصی زمیںداروں کی جگہ سرکار زمیںدار آ گئی اور اب تک کا تجربہ اُنہیں بتا رہا ہے کہ اِس

लोग हिन्दू पूंजीपति और मुसलमान पूंजीपति में फ़र्क़ करते हैं या जिनके दिलों में किसी हिन्दू राजा के गद्दी से उतारे जाने और किसी मुसलमान नवाब के उतारे जाने में दो तरह के भाव पैदा होते हैं वह इस बीसवीं सदी में न इस तरह के सवालों को समझ सकते हैं और न उनके हल करने में मदद दे सकते हैं. हम शेख़ अब्दुल्ला और उनके कुछ साथियों से अच्छी तरह परिचित हैं. कश्मीर के चारों तरफ़ की अन्तरक़ौमी हालत को निगाह में रखते हुए हमें इसमें ज़रा भी शक़ नहीं कि मुल्क का भला चाहने वाला, फ़िरक़ा परस्ती के ज़हर से पाक, भारत और भारतवासियों का दोस्त और अपने चारों तरफ़ के पड़ोसियों के साथ अमन से रहने का ख़्वाहिशमन्द शेख़ अब्दुल्ला से बढ़ कर नहीं मिल सकता. हम अगर साम्प्रदायिकता और पार्टीबन्दी की ऐनक को अपनी आंखों से उतार सकें और दुनियां की अन्तर क़ौमी हालत को थोड़ा बहुत भी समझ सकें तो शेख़ अब्दुल्ला हमें देश और विदेश के करोड़ों आदमियों में एक सच्चा और काम का इन्सान दिखाई देगा. इतिहास की बहुत सी बातें समय बीत जाने के बाद समझ में आती हैं. इसमें शक नहीं कि हिन्दू महासभा, जनसंघ या किसी भी पार्टी की तरफ़ से जितनी भी आवाज़ें कश्मीर के मामले में भारत सरकार की नीति या शेख़ अब्दुल्ला के ख़िलाफ़ उठाई जाती हैं उनसे इस देश की अन्तरक़ौमी उलझनें बढ़ने के साथ साथ एक तरफ़ तो देशी और विदेशी स्वार्थी पूंजीपतियों रईसों और ज़मींदारों को ग़रीब जनता के ख़िलाफ़ बल मिलता है और दूसरी तरफ़ कश्मीरवासियों के दिल हम से और फटते हैं जिस से भारत और कश्मीर के मेल की जड़ें कमज़ोर होती हैं. ऐसे नाज़ुक मामलों में हमें बहुत संभल कर क़दम उठाना चाहिये. जनता को राजकाजी पार्टियों और उनके लीडरों की आवाज़ पर बहक नहीं जाना चाहिये और हम सब को अपने दिल फ़िरक़ापरस्ती और दलबन्दी के ज़हर से पाक रखने चाहिये. नहीं तो हमारी हरकतों का नतीजा ठीक उसका उल्टा होता है जो हम दिल से चाहते हैं.

यू. पी. ज़मींदारी अन्त.

अपने उसी भाषन में जवाहरलाल जी ने यू. पी. के ज़मींदारी अन्त क़ानून की भी काफ़ी सराहना की जिसका इसी पहली जुलाई को इस प्रान्त भर में ख़ूब ढिंढोरा पीटा गया है. हम जवाहरलाल जी के साथ इस बात में सहमत हैं कि "ज़मींदारी प्रथा पुराने ज़माने की एक ऐसी यादगार है जिसे हमें सारे देश के अन्दर से ख़तम करना होगा." हम उनकी इस राय से भी इत्तफ़ाक़ करते हैं कि "ज़मीन सुधार का सवाल देश के सामने सबसे बड़ा सवाल है और सरकार का यह सबसे पहला फ़र्ज़ है कि इन किसानों की हालत को बेहतर करे जो कई सदी से ज़बरदस्त ग़रीबी,

لوگ ہندو پونجی پتی اور مسلمان پونجی پتی میں فرق کرتے ہیں یا جن کے دلوں میں کسی ہندو راجا کے گدی سے اتارے جانے اور کسی مسلمان نواب کے اتارے جانے میں دو طرح کے بھاؤ پیدا ہوتے ہیں وہ اس بیسویں صدی میں نہ اس طرح کے سوالوں کو ٹھیک سمجھ سکتے ہیں اور نہ ان کے حل کرنے میں مدد دے سکتے ہیں. ہم شیخ عبداللہ اور ان کے کچھ ساتھیوں سے اچھی طرح پریچت ہیں. کشمیر کے چاروں طرف کی انترقومی حالت کو نگاہ میں رکھتے ہوئے ہمیں اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ اس ملک کی جنتا کا بھلا چاہنے والا، فرقہ پرستی کے زہر سے پاک، بھارت اور بھارت واسیوں کا دوست اور اپنے چاروں طرف کے پڑوسیوں کے ساتھ امن سے رہنے کا خواہشمند شیخ عبداللہ سے بڑھ کر نہیں مل سکتا. ہم سامپردائکتا اور پارٹی بندی کی عینک کو اپنی آنکھوں سے اتار سکیں اور دنیا کی انترقومی حالت کو تھوڑا بہت بھی سمجھ سکیں تو شیخ عبداللہ ہمیں دیش اور بدیش کے کروڑوں آدمیوں میں ایک سچا اور کام کا انسان دکھائی دیگا. اتہاس کی بہت سی باتیں سمے بہت جانے کے بعد ہی سمجھ میں آتی ہیں. اس میں بھی شک نہیں کہ ہندو مہاسبھا، جن سنگھ یا کسی بھی پارٹی کی طرف سے جتنی آوازیں کشمیر کے معاملے میں بھارت سرکار کی نیتی یا شیخ عبداللہ کے خلاف اٹھائی جاتی ہیں ان سے اس دیش کی انترقومی الجھنیں بڑھنے کے ساتھ ساتھ ایک طرف تو دیشی اور بدیشی سوارتھی پونجی پتیوں، رئیسوں اور زمینداروں کو غریب جنتا کے خلاف بل ملتا ہے اور دوسری طرف کشمیر واسیوں کے دل ہم سے اور پھٹتے ہیں جس سے بھارت اور کشمیر کے میل کی جڑیں کمزور ہوتی ہیں. ایسے نازک معاملوں میں ہمیں بہت سنبھل کر قدم اٹھانے چاہئیں. جنتا کو راج کاجی پارٹیوں اور ان کے لیڈروں کی آواز پر بہک نہیں جانا چاہئے اور ہم سب کو اپنے دل فرقہ پرستی اور دل بندی کے زہر سے پاک رکھنے چاہئیں. نہیں تو ہماری حرکتوں کا نتیجہ ٹھیک اسکا الٹا ہوتا ہے جو ہم دل سے چاہتے ہیں.

یو. پی. زمینداری انت.

اپنے اسی بھاشن میں جواہر لال جی نے یو. پی. کے اس زمینداری انت قانون کی بھی کافی سراہنا کی جس کا اسی پہلی جولائی کو اس پرانت بھر میں خوب ڈھنڈورا پیٹا گیا ہے. ہم جواہر لال جی کے ساتھ اس بات میں سہمت ہیں کہ "زمینداری پرتھا پرانے زمانے کی ایک ایسی یادگار ہے جسے ہمیں سارے دیش کے اندر سے ختم کرنا ہوگا." ہم ان کی اس رائے سے بھی اتفاق کرتے ہیں کہ "زمین سدھار کا سوال دیش کے سامنے سب سے بڑا سوال ہے اور سرکار کا یہ سب سے پہلا فرض ہے کہ ان کسانوں کی حالت کو بہتر کرے جو کئی صدی سے زبردست

ख़बर दुनिया को दे कर उन पर गोलियां बरसाना भी इतनी गंदी और ओछी हरकत है कि उस पर हमारी सरकार की आवाज़ साफ़ साफ़ सुनाई न देना मुल्क के मान को नहीं बढ़ाता. रही यालू नदी के कारख़ानों की बमबारी उसे तो इंगलैंड और ख़ुद अमरीका के बहुत से लोगों ने भी बुरा कहा है. इंगलैंड और हिन्दुस्तान दोनों के इतिहास में हमें यह तमाशा ख़ूब देखने को मिलता है कि जो आदमी एक हाकिम के किसी काम को सख़्त बुरा कहता है जब वह उसी जगह पर आजाता है तो ख़ुद वही करता है.

कश्मीर का सवाल.

कश्मीर की चर्चा करते हुए जवाहर लाल जी ने कहा कि—"कश्मीर का सवाल अब एक मुक़ामी सवाल नहीं है. वह अब दुनिया भर का सवाल है. अगर हमने ज़ोर-ज़बर्दस्ती से दबाव या डर दिखा कर इस सवाल को हल करने की ज़रा सी भी कोशिश की, तो हम गहरी अन्तरक़ौमी उलझनों में फँस जायेंगे. मुझे कश्मीर से ख़ास दिलचस्पी है. कश्मीर मेरे बाप दादा का देश है. कश्मीर की आज़ादी की तहरीक में बीस बरस से मैंने पूरी दिलचस्पी ली है. स्टेट पीपुल्स कान्फ़रेन्स के सदर की हैसियत से मेरी शेख़ अब्दुल्ला और उनके साथियों से जानकारी हुई. उन सबने आज़ादी की लड़ाई में ख़ूब हिस्सा लिया सन 1945 में जब मैंने कश्मीर जाना चाहा तो महाराजा की फ़ौज ने मुझे रोक दिया. मैं जानता हूँ कि अगर कश्मीर हिन्दुस्तान के साथ रह सकता है तो प्रेम और भाई चारे ही से रह सकता है. इसके लिए हमें वह हवा पैदा करनी चाहिए जिससे कश्मीर की जनता यह समझे कि उसे किसी दूसरे देश के साथ मिलने में इतना लाभ नहीं है जितना भारत के साथ मिलने में. लेकिन जम्मू प्रजा परिशद के साम्प्रदायिक कामों से हमारे इस सम्बन्ध को बहुत नुक़सान पहुँच रहा है और हमारे ख़िलाफ़ पाकिस्तान के प्रोपेगेन्डा को मदद मिल रही है. जम्मू प्रजा परिशद की सारी कार्रवाइयां पाकिस्तान के अख़बारों में बड़ी बड़ी सुर्ख़ियां दे कर तफ़सील के साथ छापी जाती हैं. इसी तरह हिन्दुस्तान के अन्दर जन संघ और हिन्दू महासभा की तरफ़ से जो बातें कश्मीर के बारे में कही जा रही हैं, उनसे कश्मीर के लोगों को यह शक होने लगा है कि हिन्दुस्तान के साथ मिलने से उन्हें लाभ होगा या हानि. इन हरकतों से कश्मीर और हिन्दुस्तान दोनों को नुक़सान पहुँच रहा है. आख़ीर में कश्मीर के लोगों का जो भी ख़ुद अपना फ़ैसला होगा चाहे वह हमारे हक़ में हो या ख़िलाफ़ हो हमें उसे ख़ुशी से मानना चाहिए और हम उसे मानेंगे."

कश्मीर का सवाल भी इस वक़्त हमारे देश के नाज़ुक से नाज़ुक सवालों में से है. जवाहरलाल जी की राय से हम इस मामले में पूरी तरह से सहमत हैं. हम मानते हैं कि

خبر دنیا کو دے کر اُن پر گولیاں برسانا بھی اتنی گندی اور اوچھی حرکت ہے کہ ہماری سرکار کی آواز کا صاف صاف سنائی نہ دینا ملک کے مان کو نہیں بڑھاتا۔ رہی یالو ندی کے کارخانوں کی بمباری اُسے تو انگلینڈ اور خود امریکہ کے بہت سے لوگوں نے بھی برا کہا ہے۔ انگلینڈ اور ہندستان دونوں کے اتہاس میں ہمیں یہ تماشہ خوب دیکھنے کو ملتا ہے کہ جو آدمی ایک حاکم کے کسی کام کو سخت برا کہتا ہے جب وہ اُسی جگہ پر آ جاتا ہے تو خود وہی کرتا ہے۔

کشمیر کا سوال۔

کشمیر کی چرچا کرتے ہوئے جواہر لال جی نے کہا کہ— "کشمیر کا سوال اب صرف ایک مقامی سوال نہیں ہے۔ وہ اب دنیا بھر کا سوال ہے۔ اگر ہم نے زور زبردستی سے، دباؤ یا ڈر دکھا کر اس سوال کو حل کرنے کی ذرا سی بھی کوشش کی تو ہم گہری، بین الاقوامی الجھنوں میں پھنس جائیں گے۔ مجھے کشمیر سے خاص دلچسپی ہے۔ کشمیر میرے باپ دادا کا دیش ہے۔ میں نے کشمیر کی آزادی کی تحریک میں بیس برس سے پوری دلچسپی لی ہے۔ اسٹیٹ پیپلس کانفرنس کے صدر کی حیثیت سے میری شیخ عبداللہ اور اُن کے ساتھیوں سے جانکاری ہوئی۔ اُن سب نے آزادی کی لڑائی میں خوب حصہ لیا۔ سن 1945 میں جب میں نے کشمیر جانا چاہا تو مہاراجا کی فوج نے مجھے روک دیا۔ میں جانتا ہوں اگر کشمیر ہندستان کے ساتھ رہ سکتا ہے تو پریم اور بھائی چارے سے ہی رہ سکتا ہے۔ اس کے لئے ہمیں وہ ہوا پیدا کرنی چاہئے جس سے کشمیر کی جنتا یہ سمجھے کہ اسے کسی دوسرے دیش کے ساتھ ملنے میں اتنا لابھ نہیں جتنا بھارت کے ساتھ ملنے میں۔ لیکن جموں پرجا پریشد کے سامپردائک کاموں سے ہمارے اس سمبندھ کو نقصان پہونچ رہا ہے اور ہمارے خلاف پاکستان کے پروپیگنڈے کو مدد مل رہی ہے۔ جموں پرجا پریشد کی ساری کاروائیاں پاکستان کے اخباروں میں بڑی بڑی سرخیاں دے کر تفصیل کے ساتھ چھاپی جاتی ہیں۔ اسی طرح ہندستان میں جن سنگھ اور ہندو مہا سبھا کی طرف سے جو جو کشمیر کے بارے میں کہی جا رہی ہیں، اُن سے کشمیر کے لوگوں کو یہ شک ہونے لگا ہے کہ ہندستان کے ساتھ ملنے سے انہیں لابھ ہوگا یا ہانی۔ ان حرکتوں سے کشمیر اور ہندستان دونوں کو نقصان پہونچ رہا ہے۔ آخیر کشمیر کے لوگوں کا جو بھی خود اپنا فیصلہ ہوگا چاہے ہمارے حق میں ہو یا خلاف ہو ہمیں اُسے خوشی سے ماننا چاہئے اور ہم اُسے مانیں گے۔"

کشمیر کا سوال بھی اس وقت ہمارے دیش کے نازک سے نازک سوالوں میں سے ہے۔ جواہر لال جی کی رائے سے اس معاملے میں ہم پوری طرح سہمت ہیں۔ ہم مانتے ہیں کہ جو

तरह की चीज़ों की मांग, हिन्दुस्तान में लगी हुई इंगलैंड और अमरीका की अरबों की पूंजी, हमारी अरबों की योजनाएं जो अमरीका को त्योरी बदलने के साथ मटयामेट हो सकती हैं, और आख़ीर में हमारा कामनवेल्थ से रिश्ता और भारत की ज़मीन पर से अंगरेज़ी फ़ौज के लिये गोरखों की भरती कर के ले जाने की इजाज़त, यह सब और इसी तरह की चीज़ें किसी भी नाज़ुक समय में हमारी सरकार को कहां तक ग़ैर जानिबदार रहने देंगी. हमें हिन्द सरकार की नेकनियती में ज़रा सा भी शक नहीं. हम सिर्फ़ यह कह रहे हैं कि जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं वह वहां नहीं जाता जहां हम जाना चाहते हैं. अभी तो हम अपनी ज़िन्दगी की बहुत सी ज़रूरी चीज़ों तक के लिये अमरीका और इंगलैंड के दस्तनगर बने हुए हैं. यह राह ग़ैर जानिबदारी की राह नहीं है. ग़ैर जानिबदारी की राह थी और अब भी है करोड़ों जनता की सोई हुई ताक़त को जगाना, उस पर भरोसा करना और उससे काम लेना, दान या क़र्ज़ा किसी रूप में भी बाहर से एक पैसा लेने का हराम समझना और इन तरीक़ों से मुल्क को अपने पैरों पर खड़ा करना जो गांधी जी हमें इतनी तफ़सील के साथ बता गये हैं. गांधी जी की तालीम को बिना जाने उनके बताए हुए तरीक़ों से मिलते जुलते तरीक़ों पर चल कर ही माओ और उनके साथियों ने चीन के अन्दर अमरीकी ब्लाकेड (तिजारती बाइकाट) को निकम्मा कर दिया और चन्द साल के अन्दर उस मुल्क को अपने पैरों पर खड़ा करके धन धान्य से लहलहा दिया. पर हमारी सरकार को गांधी जी की उस तरह की बातों में विश्वास कहां ! रहा चीन सो हमारी सरकार तो अब भी यह समझती है कि उसके साइन्सदां और इंजीनियर चीन के साइंसदानों और इंजीनियरों से ज़ियादा होशियार हैं ! हम मानते हैं हमारे शब्दों में ताना आ गया पर हम यह शब्द बड़े दर्द भरे दिल और दुख के साथ लिख रहे हैं. भारत सरकार में हमारे पुराने कई साथी हैं जिन से हमें सच्चा प्रेम है. लेकिन काश कि हमारे रुख़ दूर पच्छिम की तरफ़ न हो कर पास पूरब और उत्तर की तरफ़ होते ! काश कि हमें अपने लोगों, अपनी चीज़ों और अपने उसूलों पर भरोसा होता !

इस सब के अलावा भारत के प्रधान मंत्री की ज़िम्मेदार पोज़ीशन को समझते हुए भी हम कोरिया के ऊपर बार बार बीमारी बमों के फेंके जाने जैसी मुजरिमाना हरकत के ऊपर भारत सरकार की चुप्पी को न अपनी सरकार के लिए शान की चीज़ समझते हैं और न इस मुल्क के लिए. कोरिया की लड़ाई के क़ैदियों को पहले यह कह कर भेजने से इनकार करना कि वह अपने अमरीकी जेलरों से इतने ख़ुश हैं कि अपने घर वापिस जाना नहीं चाहते और फिर क़ैद की हालत में ही उनकी बग़ावत की

طرح کی چیزوں کی مانگ، ہندستان میں لگی ہوئی انگلینڈ اور امریکہ کی اربوں کی پونجی، ہماری اربوں کی یوجنائیں جو امریکہ کی تیوری بدلنے کے ساتھ ساتھ ملیا میٹ ہو سکتی ہیں، اور آخیر میں ہمارا کامن ویلتھ سے رشتہ اور بھارت کی زمین پر سے انگریزی فوج کے لئے گورکھوں کے بھرتی کر کے لے جانے کی اجازت، یہ سب اور اسی طرح کی چیزیں کسی بھی نازک سمے میں ہماری سرکار کو کہاں تک غیر جانب دار رہنے دینگی۔ ہمیں ہند سرکار کی نیک نیتی میں ذرا سا بھی شک نہیں۔ ہم صرف یہ کہہ رہے ہیں کہ جس راستے پر ہم چل رہے ہیں وہ وہاں نہیں جاتا ہم جانا چاہتے ہیں۔ ابھی تو ہم اپنی زندگی کی بہت سی ضروری چیزوں تک کے لئے امریکہ اور انگلینڈ کے دست نگر بنے ہوئے ہیں۔ یہ راہ غیر جانب داری کی راہ نہیں ہے۔ غیر جانب داری کی راہ تھی اور اب بھی ہے۔ کروڑوں جنتا کی سوئی ہوئی طاقت کو جگانا اس پر بھروسہ کرنا اور اس سے کام لینا، دان یا قرضہ کسی روپ میں بھی باہر سے ایک پیسہ لینے کو حرام سمجھنا اور ان طریقوں سے ملک کو اپنے پیروں پر کھڑا کرنا جو گاندھی جی ہمیں اتنی تفصیل کے ساتھ بتا گئے ہیں۔ گاندھی جی کی تعلیم کو بنا جانے ان کے بتائے ہوئے طریقوں سے ملتے جلتے طریقوں پر چلکر ہی ماؤ اور ان کے ساتھیوں نے چین کے اندر امریکی بلاکیڈ (تجارتی بائیکاٹ) کو نکما کر دیا اور چند سال کے اندر اس ملک کو اپنے پیروں پر کھڑا کر کے دھن دھانیہ سے لہلہا دیا۔ پر ہماری سرکار کو گاندھی جی کی اس طرح کی باتوں میں وشواس کہاں! رہا چین سو ہماری سرکار تو اب بھی یہ سمجھتی ہے کہ اس کے سائنسداں اور انجینیر چین کے سائنسدانوں اور انجینیروں سے زیادہ ہوشیار ہیں! ہم مانتے ہیں کہ ہمارے شبدوں میں طعنہ آ گیا۔ پر ہم یہ شبد بڑے درد بھرے دل اور دکھ کے ساتھ لکھ رہے ہیں۔ بھارت سرکار میں ہمارے پرانے کئی ساتھی ہیں جن سے ہمیں سچا پریم ہے۔ لیکن کاش کہ ہمارے رخ دور پچھم کی طرف نہ ہو کر پاس پورب اور اتر کی طرف ہوتے کاش کہ ہمیں اپنے لوگوں، اپنی چیزوں اور اپنے اصولوں پر بھروسہ ہوتا!

اس سب کے علاوہ بھارت کے پردھان منتری کی ذمہ دار پوزیشن کو سمجھتے ہوئے بھی ہم کوریا کے اوپر بار بار بیماری بموں کے پھینکے جانے جیسی مجرمانہ حرکت کے اوپر بھارت سرکار کی چپی کو نہ اپنی سرکار کے لئے شان کی چیز سمجھتے ہیں اور نہ اس ملک کے لئے۔ کوریا کی لڑائی کے قیدیوں کو پہلے یہ کہکر بھیجنے سے انکار کرنا کہ وہ اپنے امریکی جیلروں سے اتنے خوش ہیں کہ اپنے گھر واپس جانا نہیں چاہتے اور پھر قید کی حالت میں ہی ان کی بغاوت کی

सरकार से हुक्म प्राप्त कर सकते थे. इसकी साफ़ साफ़ तस्दीक़ भी अख़बारों में आ चुकी है. कोरिया के ज़िम्मेवार अमरीकी फ़ौजी अफ़सर ख़ुद यह कह चुके हैं कि उन्हें बमबारी से डेढ़ महीना पहले अपने वाशिंगटन के मालिकों से बमबारी का हुक्म मिल चुका था. फिर भी मुमकिन है जवाहर लाल जी जिस जगह से खड़े होकर बात कर रहे हैं वहां उन्हें यह कहना ही शोभा देता हो. यह भी मुमकिन है कि ऐसा कहने से उन्हें अपनी सुलह समझौते की कोशिशों में मदद मिले, फिर चाहे उन कोशिशों का कोई नतीजा निकल सके या न निकल सके और दोनों में से कोई पारटी दिल से उन कोशिशों की क़दर करे या न करे.

जहां तक हिन्दुस्तान का सवाल है जवाहर लाल जी ने कहा कि—"हम यह एलान कर चुके हैं कि अगर दुनिया की जंग शुरू हो गई तो भी हिन्दुस्तान इस से बाहर रहेगा. लेकिन अगर दुनिया भर में आग लगी तो कोई भी देश उसकी लपटों से बच नहीं सकता. फिर भी चूंकि हिन्दुस्तान का सब दलों के साथ अच्छा सम्बन्ध है इसलिये अपनी ख़ास स्थिति से फ़ायदा उठाते हुए हिन्दुस्तान सुलह और अमन की कोशिशों को बराबर जारी रखेगा. हमारी किसी दल में शामिल न होने और ग़ैर जानिबदारी की पालिसी ने हमें दूसरे देशों के साथ दोस्ती और अच्छे सम्बन्ध क़ायम करने में बहुत मदद दी है. जो देश आज एक दूसरे के दुश्मन हैं हिन्दुस्तान उन सब का दोस्त है. कभी कभी हमें ग़लत भी समझा गया. लेकिन आख़ीर में हमारी बात की क़द्र की गई. इस पालिसी की वजह से क़ौमों की बिरादरी में हिन्दुस्तान का रुतबा और बढ़ा है. आज हम देखते हैं कि हमारी बात का वज़न है."

हम जवाहर लाल जी के इन शब्दों पर दिल से 'आमीन'! कहते हैं. अगर जंग की आग फैल जावे तो जहां तक जंग में इधर या उधर हिस्सा न लेने का सवाल है वहां तक सारा हिन्दुस्तान जवाहर लाल जी के साथ है. हिन्दुस्तान की जनता या सरकार दोनों में से कोई भी किसी दल की तरफ़ हो कर जंग में हिस्सा लेना नहीं चाहता.

पर भारत सरकार के हाल के कुछ कामों ने बहुत से लोगों के दिलों में यह खटका पैदा कर दिया है कि दिल से चाहते हुए भी ऐन संकट के समय भारत सरकार इस ग़ैरजानिबदारी को कहां तक और कब तक निबाह सकेगी. जवाहर लाल जी के हज़ार तसल्ली देने पर भी हम यह नहीं समझ सकते कि अमरीका के साथ तरह तरह के माली, उद्योगी और ब्योपारी समझौते, मुल्क में बड़े बड़े अमरीकी माहिरों और उनके स्टाफ़ की जगह जगह मौजूदगी, ट्रैक्टरों, ग्रटीलाबजरों और बड़ी बड़ी मशीनों की हमारी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती हुई भूक, अमरीका और इंगलैंड से इस

سرکار سے حکم پالے کر سکتے تھے. اسکی صاف صاف تردید بھی اخباروں میں آ چکی ہے . کوریا کے ذمہ وار امریکی فوجی افسر خود کہہ چکے ہیں کہ انہیں بمباری سے ڈیڑھ مہینہ پہلے اپنے واشنگٹن کے مالکوں سے بمباری کا حکم مل چکا تھا. پھر بھی ممکن ہے جواہر لال جی جس جگہ سے کھڑے ہو کر بات کر رہے ہیں وہاں انہیں یہ کہنا ہی شوبھا دیتا ہو . یہ بھی ممکن ہے کہ ایسا کہنے سے انہیں اپنی صلح سمجھوتے کی کوششوں میں مدد ملے' پھر چاہے ان کوششوں کا کوئی نتیجہ نکل سکے یا نہ نکل سکے اور دونوں میں سے کوئی پارٹی دل سے ان کوششوں کی قدر کرے یا نہ کرے.

جہاں تک ہندستان کا سوال ہے جواہر لال جی نے کہا ہے—" ہم یہ اعلان کر چکے ہیں کہ اگر دنیا کی جنگ شروع ہوگئی تو بھی ہندستان اس سے باہر رہے گا . لیکن اگر دنیا بھر میں آگ لگی تو کوئی بھی دیش اس کی لپٹوں سے بچ نہیں سکتا. پھر بھی چونکہ ہندستان کا سب دلوں کے ساتھ اچھا سمبندھ ہے اس لئے اپنی خاص استھتی سے فائدہ اٹھاتے ہوئے ہندستان صلح اور امن کی کوششوں کو برابر جاری رکھےگا. ہماری کسی دل میں شامل نہ ہونے اور غیر جانب داری کی پالیسی نے ہمیں دوسرے دیشوں کے ساتھ دوستی اور اچھے سمبندھ قائم کرنے میں بہت مدد دی ہے . جو دیش آج ایک دوسرے کے دشمن ہیں ہندستان ان سب کا دوست ہے . کبھی کبھی ہمیں غلط بھی سمجھا گیا . لیکن آخیر میں ہماری بات کی قدر کی گئی . اس پالیسی کی وجہ سے قوموں کی برادری میں ہندستان کا رتبہ اور بڑھا ہے. آج ہم دیکھتے ہیں کہ ہماری بات کا وزن ہے ."

ہم جواہر لال جی کے ان شبدوں پر دل سے 'آمین'! کہتے ہیں . اگر جنگ کی آگ پھیل جاوے تو جہاں تک جنگ میں ادھر یا ادھر حصہ نہ لینے کا سوال ہے وہاں تک سارا ہندستان جواہر لال جی کے ساتھ ہے . ہندستان کی جنتا یا سرکار دونوں میں سے کوئی بھی کسی دل کی طرف ہو کر جنگ میں حصہ لینا نہیں چاہتا .

پر بھارت سرکار کے حال کے کچھ کاموں نے بہت سے لوگوں کے دلوں میں یہ کھٹکا پیدا کر دیا ہے کہ دل چاہتے ہوئے بھی عین سنکٹ کے سمے بھارت سرکار اس غیرجانب داری کو کہاں تک اور کب تک نباہ سکیگی. جواہرلال جی کے ہزار تسلی دینے پر بھی ہم یہ نہیں سمجھ سکتے کہ امریکہ کے ساتھ کے طرح طرح کے مالی' ادیوگی اور بیوپاری سمجھوتے' ملک میں بڑے بڑے امریکی ماہروں اور ان کے اسٹاف کی جگہ جگہ موجودگی' ٹریکٹروں' فرٹیلائزروں اور بڑی بڑی مشینوں کی ہماری دن دونی رات چوگنی بڑھتی ہوئی بھوک' امریکہ اور انگلینڈ سے اس

और बरबादी हुई है वह बयान से बाहर है. सारा कोरिया जमीन से मिला दिया गया है और फिर भी लड़ाई अभी जारी है. हिन्दुस्तान ज़ोरों के साथ इस बात की कोशिश कर रहा था कि कोरिया की लड़ाई बन्द हो और शान्ति के साथ कोरिया के सवाल का फ़ैसला हो जाय. पर ठीक इस समय जब सुलह की बातचीत कामयाब होती मालूम होती थी यालू नदी के कारखानों की बम बारियों की खबर पढ़कर मुझे बड़ा धक्का लगा. मैं हैरान रह गया. मुझे दुख हुआ इसलिए कि इन बम बारियों से सुलह की बात चीत को नुक़सान पहुंचा. अगर यूनो इसी तरह के क़दम उठाती रही तो मुमकिन है लड़ाई और दूर तक यानी चीन तक फैल जाय. ऐसी सूरत में यह भी डर है कि सीधे या ना सीधे रूस भी लड़ाई में शामिल हो जाय और फिर दुनिया भर में एक आग लग जावे. इस तरह इन बमबारियों ने दुनिया के अमन को खतरे में डाल दिया है. तीसरी जंग का भूत अन्तर क़ौमी आसमान पर हमारी आंखों के सामने नाच रहा है."

हमने यह शब्द जवाहर लाल जी के भाशन की अंगरेज़ी रिपोर्ट से तरजुमा कर के दिये हैं. इस सारे मामले में दुनिया के हर अमन पसन्द और इन्साफ़ पसन्द आदमी को कोरिया और चीन से दिली हमदर्दी है, अमरीका और यूनो की ग़लतकारियों से तीसरी जंग का डर सबकी आंखों के सामने नाच रहा है. यह भी साफ़ है कि अगर यह आग फैली और इसने तीसरी जंग का रूप ले लिया तो इसकी पूरी ज़िम्मेवारी अमरीका और यूनो पर होगी.

यालो नदी की बमबारी से जवाहर लाल जी को धक्का लगने की एक वजह यह भी है जो जवाहर लाल जी के ही शब्दों से मालूम होती है और जिसकी चर्चा अखबारों में भी आ चुकी है कि कोरिया में सुलह समझौते के लिये जवाहर लाल जी खुद कोशिश कर रहे थे, उन कोशिशों को धक्का कोरिया और चीन से नहीं पहुंचा बल्कि अमरीका और यूनो से पहुंचा है.

इसी भाशन में जवाहर लाल जी ने यह भी कहा कि—
"इस तरह के बड़े बड़े फ़ैसले जैसे यालू नदी पर बम बरसाने का फ़ैसला जिनसे दुनिया का अमन खतरे में पड़ सकता है फ़ौजी कमान्डरों के हाथों में नहीं छोड़ने चाहिये, क्योंकि फ़ौजी कमान्डरों जैसा उनका पेशा है सबसे जियादा इसी फ़िक्र में रहते हैं कि जहां भी हो सके किसी लड़ाई में विजय प्राप्त कर लें."

इसमें यह इशारा है कि शायद यालू नदी की बमबारी की ज़िम्मेवारी मुक़ामी फ़ौजी अफ़सरों पर है अमरीकी सरकार या यूनो पर नहीं. कोई आदमी जो इस तरह की चीज़ों को थोड़ा बहुत भी समझता है यह नहीं मान सकता कि इतना बड़ा काम मुक़ामी अमरीकी अफ़सर बिना अपनी

اور بربادی ہوئی ہے وہ بیان سے باہر ہے ۔ سارا کوریا زمین سے ملا دیا گیا ہے اور پھر بھی لڑائی ابھی جاری ہے ۔ ہندستان زوروں کے ساتھ اس بات کی کوشش کر رہا تھا کہ کوریا کی لڑائی بند ہو اور شانتی کے ساتھ کوریا کے سوال کا فیصلہ ہو جائے ۔ پر ٹھیک اس سمے جب صلح کی بات چیت کامیاب معلوم ہوتی تھی یالو ندی کے کارخانوں کی بمباریوں کی خبر پڑھکر مجھے بڑا دھکا لگا ۔ میں حیران رہ گیا ۔ مجھے دکھ ہوا اس لئے کہ ان بمباریوں سے صلح کی بات چیت کو نقصان پہونچا ۔ اگر یونو اسی طرح کے قدم اٹھاتی رہی تو ممکن ہے کہ لڑائی اور دور تک یعنی چین تک پھیل جائے ۔ ایسی صورت میں یہ بھی ڈر ہے کہ سیدھے یا نا سیدھے روس بھی لڑائی میں شامل ہوجائے اور پھر دنیا بھر میں ایک آگ لگ جاوے ۔ اس طرح ان بمباریوں نے دنیا کے امن کو خطرے میں ڈال دیا ہے تیسری جنگ کا بھوت انتر قومی آسمان پر ہماری آنکھوں کے سامنے ناچ رہا ہے ۔"

ہم نے یہ شبد جواہر لال جی کے بھاشن کی انگریزی رپورٹ سے ترجمہ کر کے دیئے ہیں ۔ اس سارے معاملے میں دنیا کے ہر امن پسند اور انصاف پسند آدمی کو کوریا اور چین سے دلی ہمدردی ہے' امریکہ اور یونو کی غلط کاریوں سے تیسری جنگ کا ڈر سب کے آنکھوں کے سامنے ناچ رہا ہے ۔ یہ بھی صاف ہے کہ اگر یہ آگ پھیلی اور اس نے تیسری جنگ کا روپ لے لیا تو اسکی پوری ذمہ واری امریکہ اور یونو پر ہوگی ۔

یالو ندی کی بمباریوں سے جواہر لال جی کو دھکا لگنے کی ایک وجہ یہ بھی ہے جو جواہر لال جی کے ہی شبدوں سے معلوم ہوتی ہے اور جسکی چرچا اخباروں میں بھی آ چکی ہے کہ کوریا میں صلح سمجھوتے کے لئے جواہر لال جی خود کوششیں کر رہے تھے' ان کوششوں کو دھکا کوریا اور چین سے نہیں پہونچا بلکہ کسی امریکہ اور یونو سے پہونچا ہے ۔

اسی بھاشن میں جواہر لال جی نے یہ بھی کہا کہ —" اس طرح کے بڑے بڑے فیصلے جیسے یالو ندی پر بم برسانے کا فیصلہ جن سے دنیا کا امن خطرے میں پڑ سکتا ہے فوجی کمانڈروں کے ہاتھوں میں نہیں چھوڑنے چاہئیں' کیونکہ فوجی کمانڈر جیسا ان کا پیشہ ہے سب سے زیادہ اسی فکر میں رہتے ہیں کہ جہاں بھی ہوسکے کسی لڑائی میں وجے پراپت کر لیں ۔"

اس میں یہ اشارہ ہے کہ شاید یالو ندی کی بمباری کی ذمہ داری مقامی فوجی افسروں پر ہے امریکی سرکار یا یونو پر نہیں ۔ کوئی آدمی جو اسطرح کی چیزوں کو تھوڑا بہت بھی سمجھتا ہے یہ نہیں مان سکتا کہ اتنا بڑا کام مقامی امریکی افسر بنا اپنی

हमारी राय / ہماری رائے

जवाहर लाल जी का एक भाशन

लगभग सब मुल्कों की सरकारें आज जनता की सरकारें होने का दावा करती हैं. पचास या सौ बरस पहले की दुन्निया की सरकारों के मुक़ाबले में उनका यह दावा एक दर्जे तक ठीक भी है. राजकाज के मामले में जितनी जन जाग्रति दुनिया में इस समय है उतनी पहले शायद कभी नहीं थी. फिर भी लगभग हर देश के अन्दर वहां की हकूमत किसी न किसी एक आदमी या एक छोटे से गिरोह के ही हाथ में है. कारन यह है कि जाग्रति के होते हुए भी अधिकतर देशों की जनता में अभी संघटन और चरित्र की कमी है. इसी कमी के कारन जनता अभी अपनी ज़बरदस्त शक्ति को नहीं पहचान पाई.

भारत की हकूमत की बाग इस समय प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के हाथों में है. बहुत सी बातों में हम उनके विचारों से सहमत हैं, कई बातों में हमारा उनसे गहरा मतभेद है. जवाहर लाल जी की देश भक्ति, उनके त्याग, उनकी ज़बरदस्त लगन, उनकी बहादुरी और उनके दिल की सच्चाई में किसी को शक नहीं हो सकता. इसमें भी शक नहीं कि पांच बरस के इस नाज़ुक अरसे में अपने विचारों और आदर्शों के अनुसार जिस सुन्दरता और सफलता के साथ उन्होंने देश की नाव को खेया है और देश के मान को बढ़ाया है यह उन्हीं का हिस्सा था.

छै जुलाई को दिल्ली में जवाहरलाल जी ने देश के अन्दर और बाहर की हालत पर एक आम जलसे में भाशन दिया. अपनी आदत के अनुसार उन्होंने आजकल के लगभग सब सवालों पर अपने विचार प्रकट किये. उनमें से कुछ ख़ास बातें यह हैं :—

कोरिया की लड़ाई और यालू नदी की बमबारी.

कोरिया की बरबादी की और हाल में अमरीका और यूनो ने यालू नदी के पन बिजली के कारख़ानों पर जो बम बरसाये हैं उनकी चर्चा करते हुए जवाहर लाल जी ने कहा कि—"पिछले डेढ़ साल के अन्दर कोरिया में जो तबाही

جواھر لال جی کا ایک بھاشن

لگ بھگ سب ملکوں کی سرکاریں آج جنتا کی سرکاریں ھونے کا دعویٰ کرتی ھیں۔ پچاس یا سو برس پہلے کی دنیا کی سرکاروں کے مقابلے میں اُن کا یہ دعویٰ ایک درجے تک ٹھیک بھی ھے۔ راج کاج کے معاملے میں جتنی جن جاگرتی دنیا میں اِس سمے ھے اُتنی پہلے شاید کبھی نہیں تھی۔ پھر بھی لگ بھگ ھر دیش کے اندر وھاں کی حکومت کسی نہ کسی ایک آدمی یا ایک چھوٹے سے گروہ کے ھی ھاتھ میں ھے۔ کارن یہ ھے کہ جاگرتی کے ھوتے ھوئے بھی ادھک تر دیشوں کی جنتا میں ابھی سنگھٹن اور چرتر کی کمی ھے۔ اِسی کمی کے کارن جنتا ابھی اپنی زبردست شکتی کو نہیں پہچان پائی۔

بھارت کی حکومت کی باگ اِس سمے پردھان منتری پنڈت جواھر لال نہرو کے ھاتھوں میں ھے۔ بہت سی باتوں میں ھم اُن کے وچاروں سے سہمت ھیں۔ کئی باتوں میں ھمارا اُن سے گہرا بھید ھے۔ جواھر لال جی کی دیش بھکتی، اُن کے تیاگ، اُن کی زبردست لگن، اُن کی بہادری اور اُن کے دل کی سچائی میں کسی کو شک نہیں ھو سکتا۔ اِس میں بھی شک نہیں کہ پانچ برس کے اس نازک عرصہ میں اپنے وچاروں اور آدرشوں کے انوسار جس سندرتا اور سپھلتا کے ساتھ اُنہوں نے دیش کی ناؤ کو کھیا ھے اور دیش کے مان کو بڑھایا ھے یہ اُنہیں کا حصہ تھا۔

چھ جولائی کو دلی میں جواھر لال جی نے دیش کے اندر اور باھر کی حالت پر ایک عام جلسے میں بھاشن دیا۔ اپنی عادت کے انوسار اُنہوں آجکل کے لگ بھگ سب سوالوں پر اپنے وچار پرکٹ کئے۔ اُن میں سے کچھ خاص باتیں یہ ھیں :-

کوریا کی لڑائی اور یالو ندی کی بمباری۔

کوریا کی بربادی کی اور حال میں امریکہ اور یونو نے یالو ندی کے پن بجلی کے کارخانوں پر جو بم برسائے ھیں اُن کی چرچا کرتے ھوئے جواھر لال جی نے کہا کہ—"پچھلے ڈیڑھ سال کے اندر کوریا میں جو تباھی

4. हिन्द सरकार विदेसी नौआबादियों को शान्ति के तरीक़े से अपनाने का बन्दोबस्त करेगी—पंडित नेहरू का बयान.

5. 6000 लोगों ने डाक्टर मलान के नये काले क़ानून के ख़िलाफ़ इज़हार किया. हिन्दुस्तान की रेलों से पहले दरजे को ख़त्म कर दिया जायेगा. 'पख़्तूनिस्तान छोड़ो'—एक बड़े असरदार पख़्तून की पाकिस्तान को चुनौती.

6. मद्रास में राशनिंग ख़त्म. अनाज की क़ीमत बढ़ जाने पर बम्बई में 30,000 काम करने वालों ने हड़ताल कर दी. बद्रीनाथ में गेहूँ 70 रुपये मन, चावल 60 रुपये और दूध 5 रुपये सेर.

7. जापान में सात लाख लोग अपने काम पर नहीं गये; कई लाख ने सरकार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन किया. चीन गया हुआ हिन्दुस्तान का कलचरी मिशन वापस. कांगरेस सरकार कम्युनिस्टों को बढ़ावा दे रही है—आचार्य कृपालानी का बयान.

8. इंगलिस्तान के डिफ़ेन्स मिनिस्टर एलेकज़ान्डर नई दिल्ली में पंडित जवाहरलाल से मिले.

9. डाक्टर मुसादिक़ ने हेग अदालत में अपना बयान दिया. हिन्दुस्तान और जापान ने एक सुलहनामे पर दस्तख़त किये.

10. कोजे जेल में ख़ून ख़राबी—32 क़ैदी कूच कर गये, 136 ज़ख़्मी हुए. रूस ने पच्छिमी ताक़तों के सुझाव को रद्द कर दिया. चीन में 'फिर बनाओ' आन्दोलन ज़ोरों पर है—श्रीमती पंडित का बयान.

11. जोरडन के बादशाह को गद्दी नहीं मिलेगी. पच्छिमी बंगाल की नई केबिनेट बनी—14 मिनिस्टर और 16 सहायक मिनिस्टर बने.

12. जापान को फिर से 'हथियार बन्द' करने की कोशिश ज़ोरों पर जारी है. यूनो साम्राजशाहों का गुट बनती जा रही है—पंडित नेहरू का बयान.

13. चीन को यूनो में जगह मिलनी चाहिये, मलाया आज़ाद होना चाहिये—अंगरेज़ी लेबर पार्टी का बयान. हिन्दुस्तान में कम्युनिस्ट ज़ोर पकड़ रहे हैं—अमरीकी राजदूत का अमरीका में बयान.

14. हिन्द अमरीकी आख़िरी अमली राज़ीनामे पर नई दिल्ली में दस्तख़त हुए. मुख़तलिफ़ पार्टी के 62 लोगों ने हैदराबाद एसेम्बली में 'वाक आउट' कर दिया. वर्ल्ड बैंक स्टील मिशन नई दिल्ली पहुंचा. अगर कंट्रोल फिर से जारी किया जायेगा तो मैं स्तीफ़ा दे दूँगा—राजाजी का एलान.

15. पाकिस्तान ने मिस्र के बादशाह फ़ारूक़ को सूडान का भी बादशाह मान लिया.

---

4. ہند سرکار بدیسی نوآبادیوں کو شانتی کے طریقے سے اپنانے کا بندوبست کریگی—پنڈت نہرو کا بیان.

5. 6000 لوگوں نے ڈاکٹر ملان کے نئے کالے قانون کے خلاف اظہار کیا. ہندستانی ریلوں سے پہلے درجے کو ختم کر دیا جائیگا. انگلستان سے ایک جانچ پڑتال کرنے والا مشن کوریا جائیگا. 'پختونستان چھوڑو'—ایک بڑے اثردار پختون کی پاکستان کو چنوتی.

6. مدراس میں راشننگ ختم. اناج کی قیمت بڑھ جانے پر بمبئی میں 30,000 کام کرنے والوں نے ھڑتال کر دی. بدری ناتھ میں گیہوں 70 روپئے من' چاول 60 روپئے اور دودھ 5 روپئے سیر.

7. جاپان میں سات لاکھ لوگ اپنے کاموں پر نہیں گئے؛ کئی لاکھ نے سرکار کے خلاف پردرشن کیا. چین گیا ہوا ہندستان کا کلچری مشن واپس. کانگریس سرکار کمیونسٹوں کو بڑھاوا دے رہی ہے—آچاریہ کرپلانی کا بیان.

8. انگلستان کے ڈفینس منسٹر الیکزینڈر نئی دلی میں پنڈت جواہر لال سے ملے.

9. ڈاکٹر مصادق نے ھیگ عدالت میں اپنا بیان دیا. ہندستان اور جاپان نے ایک صلحنامے پر دستخط کئے.

10. کوجے جیل میں خون خرابی—32 قیدی مار لئے' 136 زخمی ہوئے. روس نے پچھمی طاقتوں کے سجھاؤ کو رد کر دیا. چین میں 'پھر بناؤ' آندولن زوروں پر ہے—شریمتی پنڈت کا بیان.

11. جورڈن کے بادشاہ کو گدی نہیں ملیگی. پچھمی بنگال کی نئی کیبنٹ بنی—14 منسٹر اور 16 سہائک منسٹر بنے.

12. جاپان کو پھر سے 'ھتھیار بند' کرنے کی کوشش زوروں پر جا رہی ہے. یونو سامراج شاہوں کا گٹ بنتی جا رہی ہے—پنڈت نہرو کا بیان.

13. چین کو یونو میں جگہ ملنی چاہئے' ملایا آزاد ہونا چاہئے—انگریزی لیبر پارٹی کا بیان. ہندستان میں کمیونسٹ زور پکڑ رہے ہیں—امریکی راجدوت کا امریکہ میں بیان.

14. ہند امریکی آخری عملی راضی نامے پر نئی دلی میں دستخط ہوئے. مخالف پارٹی کے 62 لوگوں نے حیدرآباد اسمبلی میں 'واک آوٹ' کر دیا. ورلڈ بینک اسٹیل مشن نئی دلی پہونچا. اگر کنٹرول پھر سے جاری کیا جائیگا تو میں استعفی دے دونگا—راجہ جی کا اعلان.

15. پاکستان نے مصر کے بادشاہ فاروق کو سوڈان کا بھی بادشاہ مان لیا.

लड़ाई में शामिल हो जायेगा—जनरल रिजवे का एलान. हिन्दुस्तान की समाजवादी पार्टी और किसान मजदूर प्रजा पार्टी पार्लियामेन्ट में मिल कर काम करेंगी. कांगरेसी लोग सरकार की पालिसी पर शान्ति मय तरीक़ों से टीका कर सकते हैं—बम्बई के कांगरेस सदर पाटिल का बयान.

26. पच्छिम जरमनी में अंग-अमरीकी फ़्रांसीसी राज अमल ख़त्म—शान्ति राज़ीनामे पर दस्तख़त. नई दिल्ली में एक हिन्दू लड़की और एक मुसलमान लड़के की शादी के मौक़े पर दंगा और मार पीट.

27. 'योरपियन बचाव' के लिए छै ताक़तों ने एक राज़ी नामे पर दस्तख़त किये. चीन हिन्दुस्तान को एक लाख टन चावल देगा. कम्युनिटी प्रोजेक्ट का का काम अक्तूबर महीने से शुरू होगा—प्लानिंग मिनिस्टर नन्दा का एलान.

28. अमरीका, इंगलैंड और फ़्रान्स के विदेश मिनिस्ट्रों की एक बैठक पैरिस में हुई. डाक्टर मुसादिक़ हेग के लिए रवाना

29 रेलवे के निचले दर्जों में ख़ास सहूलियतें दी जायेंगी—रेलवे मिनिस्टर शास्त्री का बयान. समाजवादी पार्टी और किसान मजदूर प्रजा पार्टी में समझौता हो गया.

30. योरप कमान का चार्ज जनरल आयज़न होवर ने जनरल रिजवे को दिया. 25,000 कम्युनिस्टों ने टोकियो में सरकार के ख़िलाफ़ प्रदर्शन किया. चीनी पर से कन्ट्रोल ख़त्म. पेप्सू के गांवों में अनाज की भारी कमी—बड़े वज़ीर का एलान.

31. कांगरेस का अगला इजलास हैदराबाद में होगा—कांगरेस वरकिंग कमेटी की दिल्ली में बैठक. हिन्द अमरीकी समझौते' के मातहत पांच अमली राज़ी नामों पर नई दिल्ली में दस्तख़त. पटामाटा (ज़िला-बैजवाड़ा) में डाक्टर कुमारप्पा की सदारत में देश के रचनात्मक कार्यकर्ताओं की एक कानफ़्रेन्स हुई.

जून

1. दक्खिन कोरिया की सरकार ने यूनो को उसके घरेलू मामलों में दख़ल न देने के लिए आगाह किया. डाक महकमे में साढ़े छै लाख रुपये का ग़बन.

2. पच्छिमी जरमनी से कोई छिपी सुलह नहीं की गई है—अमरिकी सेक्रेटरी आफ़ स्टेट एचेसन का बयान. श्री कन्हैया लाल मुंशी ने यू. पी. के नये गवर्नर होने की शपथ ली. पाकिस्तान की विदेसी नीति में कोई बदलाव नहीं किया जायेगा—पाकिस्तान के विदेस मिनिस्टर का बयान.

3. अगर हिन्दुस्तान कम्युनिस्ट बन गया तो एशिया से अमरीका को हाथ धो बैठना पड़ेगा—हिन्द के अमरीकी राजदूत का अमरीका में एलान.

لڑائی میں شامل ہو جائے گا—جنرل رجوے کا اعلان ہندستان کی سماج وادی پارٹی اور کسان مزدور پرجا پارٹی مل کر کام کرینگی کانگریسی لوگ سرکار کی پالیسی پر شانتی مئے طریقو سے ٹیکہ کر سکتے ہیں۔ بمبئی کے کانگریس صدر پاٹل کا بیان۔

26 پچھم جرمنی میں انگریزی امریکی فرانسیسی راج عمل ختم—شانتی راضی نامے پر دستخط۔ نئی دلی میں ایک ہندو لڑکی اور ایک مسلمان لڑکے کی شادی کے موقعے پر دنگا اور مار پیٹ۔

27. یوروپین بچاؤ کے لئے چھ طاقتوں نے ایک راضی نامے پر دستخط کئے۔ چین ہندستان کو ایک لاکھ ٹن چاول دے گا۔ کمیونٹی پروجکٹ کا کام اکتوبر مہینے سے شروع ہوگا—پلاننگ منسٹر نندا کا اعلان۔

28. امریکہ، انگلینڈ اور فرانس کے ودیش منسٹروں کی ایک بیٹھک پیرس میں ہوئی۔ ڈاکٹر مصادق ہیگ کے لئے روانہ۔

29. ریلوے کے نیچلے درجوں میں خاص سہولتیں دی جائینگی—ریلوے منسٹر شاستری کا بیان۔ سماج وادی پارٹی اور کسان مزدور پرجا پارٹی میں سمجھوتہ ہو گیا۔

30. یورپ کمان کا چارج آئزن ہور نے جنرل رجوے کو دیا۔ 25,000 کمیونسٹوں نے ٹوکیو میں سرکار کے خلاف پردرشن کیا۔ چینی پر سے کنٹرول ختم۔ پیپسو کے گاؤں میں اناج کی بھاری کمی—بڑے وزیر کا اعلان۔

31. کانگریس کا اگلا اجلاس حیدرآباد میں ہوگا۔ کانگریس ورکنگ کمیٹی کی دلی میں بیٹھک۔ ہند امریکی 'سمجھوتے' کے ماتحت عملی راضی ناموں پر نئی دلی میں دستخط۔ پٹا ماٹا (ضلع بیجواڑا) میں ڈاکٹر کماریپا کی صدارت میں دیش کے رچناتمک کاریہ کرتاؤں کی ایک کانفرنس ہوئی۔

جون۔

1. دکھن کوریا کی سرکار نے یونو کو اسکے گھریلو معاملوں میں دخل نہ دینے کے لئے آگاہ کیا۔ ڈاک تار محکمے میں ساڑھے چھ لاکھ روپیہ کا غبن۔

2. پچھمی جرمنی سے کوئی چھپی صلح نہیں کی گئی ہے—ایچی سن کا بیان۔ شری کنھیا لال منشی نے یو۔ پی۔ کے نئے گورنر ہونے کی شپتھ لی۔ پاکستان کی بدیسی نیتی میں کوئی بدلاؤ نہیں کیا جائیگا—پاکستان کے بدیس منسٹر کا بیان۔

3. اگر ہندستان کمیونسٹ بن گیا تو ایشیا سے امریکہ کو ہاتھ دھو بیٹھنا پڑیگا—ہند کے امریکی راجدوت کا امریکہ میں اعلان۔

दुनिया का हाल



دنیا کا حال

मई

16. राजपति ने नई दिल्ली में नई पार्लियामेन्ट के सामने भाशन दिया. यू. पी. सरकार रिहन्द डाम बनाने में क़रीब 33 करोड़ रुपया खर्च करेगी.

17. जापान को कोरिया के ख़िलाफ़ एक पड़ाव की तरह काम में लाया जायेगा–जापान और यूनो कमान्ड में समझौता हिन्दुस्तान आई हुई अमरीकी रुई की दो लाख गाठें ख़राब पाई गई. मौलाना आज़ाद ने मिस्र के मुफ़्ती के विचारों पर कि औरतें पार्लियामेन्ट वग़ैरा की मेम्बर नहीं बन सकतीं 'अचरज' ज़ाहिर किया.

18. सुन्दरबन के इलाक़े में अनाज की भारी कमी–डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी का एलान.

19. बीकानेर के क़रीब रेल दुर्घटना–45 आदमी कूच कर गये.

20. यू. पी. में नई सरकार बनी. नौ रियासतों में अनाज की हालत ठीक करने की कोशिश जारी है—अनाज मिनिस्टर क़िदवाई का पार्लियामेन्ट में एलान.

21. यू. पी. के गवर्नर ने एसेम्बली के सामने भाशन दिया. हिन्दुस्तान की समाजवादी पार्टी की कानफ़्रेन्स पंचमढ़ी में शुरू हुई. यू. पी. में 1000 के क़रीब ट्यूबवेल बनेंगे.

22. पार्लियामेन्ट में रेलवे बजट पेश–22 47 करोड़ की बचत. हिन्दुस्तान को साढ़े बारह करोड़ डालर की मदद अमरीका और देगा—अमरीकी राजदूत का बयान.

23. गोरखपुर गोली-कान्ड की सरकारी जांच की कोई ज़रूरत नहीं है—होम मिनिस्टर सम्पूर्णानन्द का बयान.

24. हिन्दुस्तान की पालिसी दुनिया में शान्ति बनाये रखना है—मिस्टर बेह्रिन का बयान. मध्य प्रदेश में कोयले की खानें मौजूद हैं—सर्वे करने वालों का एलान. सुन्दरबन में लोग जंगली फूल पत्ती पर गुज़र कर रहे हैं.

25. दोनों जरमनियों के मिलाने के लिए रूस ने नये सुझाव रखे. अगर यूनो के बम मंचूरिया में पड़े तो रूस

مئی ۔

16. راج پتی نے نئی دلی میں پارلیامنٹ کے سامنے بھاشن دیا ۔ یوپی سرکار رہند ڈام بنانے میں قریب 33 کروڑ روپیہ خرچ کرے گی ۔

17. جاپان کو کوریا کے خلاف ایک پڑاؤ کی طرح کام میں لیا جائے گا—جاپان اور یونو کمانڈ میں سمجھوتا ۔ ہندستان آئی ہوئی امریکی روئی کی دو لاکھ گانٹھیں خراب پائی گئیں ۔ مولانا آزاد نے مصر کے مفتی کے وچاروں پر کہ عورتیں پالیامنٹ وغیرہ کی ممبر نہیں بن سکتیں—'اچرج' ظاہر کیا ۔

18. سندر بن کے علاقے میں اناج کی بھاری کمی—ڈاکٹر شیاما پرشاد مکرجی کا اعلان ۔

19. بیکانیر کے قریب ریل درگھٹنا—45 آدمی کوچ کر گئے ۔

20. یوپی میں نئی سرکار بنی نو ریاستوں میں اناج کی حالت ٹھیک کرنے کی کوشش جاری ہے—اناج منسٹر قدوائی کا پارلیامنٹ میں اعلان ۔

21. یوپی کے گورنر نے اسمبلی کے سامنے بھاشن دیا ۔ ہندستان کی سماج وادی پارٹی کی کانفرنس پنچ مڑھی میں شروع ہوئی ۔ یو پی میں 1000 کے قریب ٹیوب ویل بنیں گے ۔

22. پارلیامنٹ میں ریلوے بجٹ پیش—22 کروڑ اوپر کی بچت ۔ ہندستان کو ساڑھے بارہ کروڑ ڈالر کی مدد امریکہ اور دے گا—امریکی راج دوت کا بیان ۔

23. گورکھپور گولی کانڈ کی سرکاری جانچ کی کوئی ضرورت نہیں ہے—ہوم منسٹر سمپورنانند کا بیان ۔

24. ہندستان کی پالیسی دنیا میں شانتی بنائے رکھنا ہے—مسٹر بیون کا بیان ۔ مدھیہ پردیش میں کوئلے کی کانیں موجود ہیں—سروے کرنے والوں کا اعلان ۔ سندر بن میں لوگ جنگلی پھول پتی پر گزر کر رہے ہیں ۔

25. دونوں جرمنیوں کے ملانے کے لئے روس نے نئے سجھاؤ رکھے ۔ اگر یونو کے بم منچوریا میں پڑے تو روس

ताड़े तगड़े और पहुंचे क़लम नवीसों और समाज सेवकों की बेमिसाल ज़िन्दगी की लाजवाब झलक दी गई है. एक बार पढ़ना शुरू कीजिये तो बिना ख़त्म किये तबियत मानेगी ही नहीं. क्या ही अच्छा होता कि बनारसी दास जी एक के बाद एक इस तरह की किताबें लिखकर संसार के लेखकों देश भक्तों, राष्ट्र निर्माताओं और जन सेवकों की झांकियां बना बना कर रखकर हिन्दी पढ़ने वालों पर हमेशा के लिए एहसान करते. इसके लिए यह ज़रूरी है कि इस किताब का ख़ूब प्रचार हो.

—सुरेश रामभाई

गीत और अंगारे

लिखने वाले—देवेन्द्र इस्सर; निकालने वाले—आज़ाद किताब घर,. देहली; लिखावट—उरदू; सफ़ा 156; दाम दो रुपये.

'गीत और अंगारे' नौजवान कहानी कार देवेन्द्र इस्सर की कहानियों का पहला संग्रह है. मुमताज़ हुसैन और सैयद एहतशाम हुसैन जैसे उरदू साहित्य के धुरन्धर आलोचकों की तारीफ़ और आजकल के महान कहानी कार कृश्नचन्द्र की सराहना किसी किताब की बहुत ही अच्छी आलोचना और उस किताब के लेखक को पाठकों की नज़र में ऊंचा उठाने की मज़बूत सीढ़ी है. इस संग्रह की तीनों ने एक ज़बान होकर तारीफ़ की है.

'गीत और अंगारे' में देवेन्द्र की आठ कहानियां शामिल हैं—ज़िन्दगी, कला और मौत; पलाज़्म के जरासीम; मुक्ति; नंगी तस्वीर; चांदनी रात का दर्द; इन्सान और इन्सान; हुस्न और आईने; गीत और अंगारे. इन में से हर कहानी का रूप अलग अलग और सजावट अलग अलग है. फिर भी विशय सब का एक है—ज़िन्दगी की चिंगारी का बढ़ना, दिन बदिन रौशन तर होते जाना, तूफ़ानों से टक्कर लेना, जीत की ख़ुशी में झूम उठना और अंधियारे के परदे को फाड़ कर एक नया सूरज बनकर दुनिया के आसमान पर चमकना. संघर्ष की कहानियां होनें पर भी इनमें एक नर्माहट है, एक कोमलता है. स्त्री पुरुश की चालू बासना भरी दास्तान से कोसों दूर होते हुए भी इन कहानियों में एक रोमांस है एक रंगीनियत है जो धीरे धीरे दिल में मज़लूम पात्रों के लिये जगह पैदा कर देती है. लेकिन यह असर देर तक नहीं रहता. अगर देवेन्द्र यह बात भी अपनी कला में पैदा कर सकें तो जनता के लेखक बनने और ज़िन्दगी के संघर्ष में अपनी क़लम से ताक़त पैदा करने में वह कामयाब हो सकेंगे.

—बेनीमाधव प्रसाद

ٹکڑے ٹکڑے اور پہنچے ہوئے قلم نویسوں اور سماج سیوکوں کی بے مثال زندگی کی لا جواب جھلک دی گئی ہے۔ ایک بار پڑھنا شروع کیجئے تو بنا ختم کئے طبیعت مانے گی ہی نہیں۔ کیا ہی اچھا ہوتا کہ بنارسی داس جی ایک کے بعد ایک اِس طرح کی کتابیں لکھکر سنسار کے لیکھکوں' دیش بھکتوں' راشٹر نرماتاؤں اور جن سیواؤں کی جھانکیاں بنا کر ہندی پڑھنے والوں پر ہمیشہ کے لئے احسان کرتے۔ اِس کے لئے یہ ضروری ہے کہ اِس کتاب کا پرچار ہو۔

---سریش رام بھائی

گیت اور انگارے

لکھنے والے—دیویندر اسر؛ نکالنے والے—آزاد کتاب گھر' دہلی؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحہ 156؛ دام دو روپیہ۔

'گیت اور انگارے' نوجوان کہانی کار دیویندر اِسر کی کہانیوں کا پہلا سنگرہ ہے۔ ممتاز حسین اور سید احتشام حسین جیسے اردو ساہتیہ کے دھرندر آلوچکوں کی تعریف اور آجکل کے مہان کہانی کار کرشن چندر کی سراہنا کسی کتاب کی بہت ہی اچھی آلوچنا اور اُس کتاب کے لیکھک کو پاٹھکوں کی نظر میں اُونچا اُٹھانے کی مضبوط سیڑھی ہے۔ اِس سنگرہ کی تینوں نے ایک زبان ہوکر تعریف کی ہے۔

'گیت اور انگارے' میں دیویندر کی آٹھ کہانیاں شامل ہیں—زندگی' کلا اور موت؛ پلازم کے جراثیم؛ مکتی؛ ننگی تصویر؛ چاندنی رات کا درد؛ انسان اور انسان؛ حسن اور آئینے؛ گیت اور انگارے۔ اِن میں سے ہر کہانی کا روپ الگ الگ اور سجاوٹ الگ الگ ہے۔ پھر بھی وشے سب کا ایک ہے—زندگی کی چنگاری کا بڑھنا' دن بدن روشن تر ہوتے جانا' طوفان سے ٹکر لینا' جیت کی خوشی میں جھوم اُٹھنا اور اندھیارے کے پردے کو پھاڑ کر ایک نیا سورج بن کر دنیا کے آسمان پر چمکنا۔ سنگھرش کی کہانیاں ہونے پر بھی اِن میں ایک نرماہٹ ہے' ایک کوملتا ہے' استری پرش کی چالو واسنا بھری داستان سے کوسوں دور ہوتے ہوئے بھی اِن کہانیوں میں ایک رومانس ہے' ایک رنگینیت ہے جو دھیرے دھیرے دل میں مظلوم پاتروں کے لئے جگہ پیدا کر دیتی ہے۔ لیکن یہ اثر دیر تک نہیں رہتا۔ اگر دیویندر یہ بات بھی اپنی کلا میں پیدا کر سکیں تو جنتا کے لیکھک بننے اور زندگی کے سنگھرش میں اپنی قلم سے طاقت پیدا کرنے میں وہ کامیاب ہوسکیں گے۔

—بینی مادھو پرساد

इन सभी सेवकों-नेताओं के काम पर तफ़सील के साथ और अच्छी तरह रोशनी डालते हुए एक या कई किताबों से रचनात्मक कार्यक्रम के काम को मदद पहुंचायें.

कपास

लेखक—सत्यन्; निकालने वाले—सर्वोदय साहित्य संघ, काशी; लिखावट हिन्दी; सफ़े 55; दाम आठ आना.

खादी शास्त्री सत्यन् जी ने इस छोटी सी किताब में कपास, उसकी जातियां, उसके रेशों की बनावट, उसकी खेती, उसकी चुनाई वग़ैरा बातें पेश करके मानो कपास की क़लई ही खोल दी है. कपास के बारे में इतनी जानकारी हर पढ़े लिखे आदमियों को होना चाहिये क्योंकि बिना कपास की जानकारी के कताई का काम अच्छा नहीं होगा और बिना अच्छी कताई के हम अपना तन बदन अच्छी तरह नहीं ढक सकते. जैसा कि विनोबा जी ने इस किताब की प्रस्तावना में कहा है—

"हिन्दुस्तान की देहाती जनता का खेती एक फेफड़ा और कपड़े का काम दूसरा फेफड़ा है. इस दूसरे फेफड़े को तपेदिक़ का रोग लग चुका है. सिर्फ़ एक फेफड़े के आधार पर जीवन अच्छी तरह नहीं चल सकता. इसलिये ज़रूरी है कि दूसरे फेफड़े के रोग को हटाया जाय. गांधीजी ने उसके लिए कारगर तरीक़ा सुझाया—नई तालीम और कताई यज्ञ..."

और कताई यज्ञ तभी कामयाब होगा जब कपास से पूरी पूरी वाक़फ़ियत हो. हमें भरोसा है कि रचनात्मक तालीम में दिलचस्पी रखने वाली संस्थाओं और स्कूलों में यह किताब खूब चलेगी.

हमारे आराध्य

लेखक—बनारसीदास चतुर्वेदी; निकालने वाले—भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; लिखावट हिन्दी; सफ़े 260; दाम तीन रुपये; पहली बार 1952.

कहा जाता है कि मैडम क्यूरी ने कई मन धातु में से छान बीन करके कुछ रत्ती रेडियम निकाला था और यह विज्ञान का इतना बड़ा कारनामा समझा गया कि उन्हें नोबिल इनाम दिया गया. ठीक इसी तरह के कारनामे हिन्दी भाषा और साहित्य की दुनिया में पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी किया करते हैं. विशाल भारत के ज़रिये से हिन्दुस्तान के काफ़ी घरों और हिन्दुस्तानियों के काफ़ी दिलों में उन्होंने अपनी मुस्तक़िल जगह बना ली है. फिर कमाल यह है कि वह जितने बूढ़े होते जाते हैं इनकी क़लम उतनी ही जवान होती जाती है.

'हमारे आराध्य' नाम की किताब हिन्दी में अपने ढंग की अनोखी किताब है जिसमें हिन्दुस्तान के बाहर के सोलह

ان سبھی سیوکوں' نیتاؤں کے کام پر تفصیل کے ساتھ اور اچھی طرح روشنی ڈالتے ہوئے ایک یا کئی کتابوں سے رچناتمک کاریہ کرم کے کام کو مدد پہنچائیں ۔

کپاس

لیکھک ستین؛ نکالنے والے—سروودے ساہتیہ سنگھ، کاشی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 55؛ دام آٹھ آنہ ۔

کھادی شاستری ستین جی نے اس چھوٹی سی کتاب میں کپاس، اسکی جاتیاں، اس کے ریشوں کی بناوٹ، اسکی چنائی وغیرہ باتیں پیش کر کے مانو کپاس کی قلعی ہی کھول دی ہے ۔ کپاس کے بارے میں اتنی جانکاری ہر پڑھے لکھے آدمیوں کو ہونا چاہئے بنا کپاس کی جانکاری کے کتائی کا کام اچھا نہیں ہوگا اور بنا اچھی کتائی کے ہم اپنا تن بدن اچھی طرح نہیں ڈھک سکتے جیسا کہ ونوبا جی نے اس کتاب کی پرستاونا میں کہا ہے—

" ہندستان کی دیہاتی جنتا کا کھیتی ایک پھیپھڑا اور کپڑے کا کام دوسرا پھیپھڑا ہے ۔ اس دوسرے پھیپھڑے کو تپدق کا روگ لگ چکا ہے ۔ صرف ایک پھیپھڑے کے آدھار پر جیون اچھی طرح نہیں چل سکتا اس لئے ضروری ہے کہ دوسرے پھیپھڑے کے روگ کو ہٹایا جائے ۔ گاندھی جی نے اس کے لئے کارگر طریقہ سجھایا—نئی تعلیم اور کتائی یگیہ........."

اور کتائی یگیہ بھی کامیاب ہوگا جب کپاس سے پوری پوری واقفیت ہو ۔ ہمیں بھروسہ ہے کہ رچناتمک تعلیم میں دلچسپی رکھنے والی سنستھاؤں اور اسکولوں میں یہ کتاب خوب چلے گی ۔

ہمارے آرادھیہ

لیکھک—بنارسی داس چترویدی نکالنے والے—بھارتیہ گیان پیٹھ کاشی؛ لکھاوٹ ہندی؛ صفحے 260؛ دام تین روپئے؛ پہلی بار 1952 ۔

کہا جاتا ہے کہ میڈم کیوری نے کئی من دھاتوں میں سے چھان بین کر کے کچھ رتی ریڈیم نکالا تھا اور یہ وگیان کا اتنا بڑا کارخانہ سمجھا گیا کہ انہیں نوبل انعام دیا گیا ٹھیک اسی طرح کے کارنامے ہندی بھاشا اور ساہتیہ کی دنیا میں پنڈت بنارسی داس چترویدی کیا کرتے ہیں ۔ وشال بھارت کے ذریعے سے ہندستان کے کافی گھروں اور دلوں میں انہوں نے اپنی مستقل جگہ بنالی ہے ۔ پھر کمال یہ ہے کہ جتنے بوڑھے ہوتے جاتے ہیں ان کی قلم اتنی ہی جوان ہوتی جاتی ہے ۔

' ہمارے آرادھیہ ' نام کی کتاب ہندی میں اپنے ڈھنگ کی انوکھی کتاب ہے جسمیں ہندستان کے باہر کے سولہ

हिन्दुस्तान के इतिहास का एक एक सफ़ा था जिसकी सच्ची तस्वीर पेश करना देश की सच्ची सेवा करना है.

उन इन्क़लाबी दिनों में महात्मा जी ने पूरब में आसाम से लेकर पच्छिम में गुजरात तक का दौरा किया था. सात महीने तक अगस्त 1921 से मार्च 1922 तक भाई क्रश्न दास जी महात्मा जी के साथ रहे थे. यह किताब जो क्रश्न दास भाई की डायरी का निचोड़ है सन 1929 में पहली बार छपी थी और जिसके बारे में ख़ुद महात्मा जी ने कहा था कि अगर इन सात महीनें का हाल कहीं मिलता है तो इन सफ़ों में.

भाई क्रश्न दास जी की यह किताब बहुत ही दिलचस्प और मनमोहक है. इसे हम उपन्यास, इतिहास, राजनीति और जीवनी से मिलकर बना एक बहुत ही मीठा लड्डू कह सकते हैं जिसको खाते खाते तबियत अघाती ही नहीं. मशहूर हिन्दुस्तान भक्त और ग्रामोद्योगी अर्थशास्त्र रिचर्ड ग्रेग को इसका पसन्द आना क़ुदरती बात है. इसलिये उन्होंने क्रश्न दास भाई की दो किताबों का सत निकाल कर एक किताब में खींच कर दुनिया के आगे रख दिया है. उनकी इस कामयाबी पर रिचर्ड भाई को हम मुबारक बाद देते हैं और उम्मीद करते हैं कि उनकी इस किताब से अंगरेज़ी भाशा जानने वाले भाई बहन अपना मन बहलाने के साथ साथ पूरा फ़ायदा उठायेंगे.

ھندستان کے اِتہاس کا ایک صفحہ تھا جسکی سچی تصویر پیش کرنا دیش کی سچی سیوا کرنا ہے .

اِن انقلابی دنوں میں مہاتما جی نے پورب میں آسام سے لیکر پچھم میں گجرات تک کا دورا کیا تھا . سات مہینے تک اگست 1921 سے مارچ 1922 تک بھائی کرشن داس مہاتما جی کے ساتھ رہے تھے . یہ کتاب جو کرشن داس بھائی کی ڈائری کا نچوڑ ہے سن 1929 میں پہلی بار چھپی تھی اور جسکے بارے میں خود مہاتما جی نے کہا تھا کہ اگر اِن سات مہینوں کا حال کہیں ملتا ہے تو اِن صفحوں میں .

بھائی کرشن داس جی کی یہ کتاب بہت ہی دلچسپ اور من موہک ہے . اِسے ہم اُپنیاس، اتہاس، راج نیتی اور جیونی سے مل کر بنا ایک بہت ہی میٹھا لڈو کہ سکتے ہیں جسکو کھاتے کھاتے طبیعت اگھاتی ہی نہیں . مشہور ھندستان بھکت اور گرام اُدیوگی ارتھ شاستری بھائی رچرڈ گریگ کو اِسکا پسند آنا قدرتی بات ہے . اِس لئے اُنہوں نے کرشن داس بھائی کی دو کتابوں کا ست نکالکر ایک کتاب میں کھینچکر دنیا کے آگے رکھدیا ہے . ان کی اِس کامیابی پر رچرڈ بھائی کو ہم مبارکباد دیتے ہیں اور اُمید کرتے ہیں کہ اُنکی اِس کتاب سے انگریزی بھاشا جاننے والے بھائی بہن اپنا من بہلانے کے ساتھ پورا فائدہ اُٹھائیں گے .

गाधी जी के प्रमुख अनुयायी

लेखक—सत्यन्; निकालने वाले—सर्वोदय साहित्य संघ, काशी; लिखावट हिन्दी; सफ़े 62; दाम बारह आने.

उत्तरी ट्रावनकोर के एक गांव के हरिजन, सत्यन जी जो चौदह पन्द्रह बरस की उमर में ही अपना घर छोड़ कर 1930-31 में वर्धा आ कर विनोबा जी के चरनों में बैठ गये थे, आज के हमारे रचनात्मक कार्यकर्ताओं में काफ़ी मशहूर और इज़्ज़तदार समझे जाते हैं. आपने वर्धा में रह कर कड़ी तपस्या की और खादी शास्त्र के ज्ञान में तो बहुत ही कमाल पर पहुंच गये.

वर्धा में बरसों तक रहने के कारन गांधी जी के वर्धा वाले अनुयाइयों से, यानी रचनात्मक जमात की ऊंची ऊंची हस्तियों से उनका काफ़ी नज़दीकी सम्बन्ध रहा. इस किताब में उन्होंने उनके—विनोबा जी, किशोरलाल भाई, कुमारप्पा जी, जाजू जी, काका साहब कालेलकर, धीरेन्द्र भाई, भंसाली भाई, आर्यनायकम जी, मनोहर भाई दीवान और वल्लभ स्वामी भाई—जीवन की झलक थोड़े थोड़े में दी है. 62 सफ़ों में इससे ज़ियादा कोई क्या सामग्री दे सकता है. सत्यन जी से हमारी सिफ़ारिश है कि समय निकाल कर वह

گاندھی جی کے پرمکھ انویائی

لیکھک—ستین؛ نکالنے والے—سروودے ساہتیہ سنگھ، کاشی؛ لکھاوٹ ھندی، صفحے 62؛ دام بارہ آنے .

اُتری ٹراونکور کے ایک گاؤں کے ہریجن، ستین جی جو چودہ پندرہ برس کی عمر میں ہی اپنا گھر چھوڑ کر 1930-31 میں وردھا آکر ونوبا جی کے چرنوں میں بیٹھ گئے، آج کے ھمارے رچناتمک کاریہ کرتاؤں میں کافی مشہور اور عزتدار سمجھے جاتے ھیں . آپ وردھا میں رھکر کڑی تپسیا کی اور کھادی شاستر کے گیان میں تو بہت ہی کمال پر پہنچ گئے . وردھا میں برسوں تک رہنے کے کارن گاندھی جی کے وردھا والے انویائیوں سے، یعنی رچناتمک جماعت کی اونچی اونچی ھستیوں سے اُن کا کافی نزدیکی سمبندھ رہا . اِس کتاب میں اُنہوں نے اُن کے—ونوبا جی، کشور لال بھائی، کمارپا جی، جاجو جی، کاکا صاحب کالیلکر، دھیریندر بھائی، بھنسالی بھائی، آریہ نائکم جی، منوہر بھائی دیوان اور ولبھ سوامی بھائی—جیون کی جھلک تھوڑے تھوڑے میں دی ہے . 62 صفحوں میں اِس سے زیادہ کوئی کیا سامگری دے سکتا ہے .

होती हैं जिनके खुशी खुशी और बड़प्पन के साथ काम लेने वालों की तादाद बढ़ती ही जाती है. उस तरह कुछ किताबें ऐसी होती हैं जो दिन दिन ज़ियादा फैलती जाती हैं और जिनके गाहक बढ़ते जाते हैं. महात्मा गांधी की "सत्यना प्रयोग" नाम की आत्मकथा ऐसी ही अमर किताबों में है. इसको जितनी बार पढ़िये ऐसा लगता है कि पहली बार पढ़ रहे हैं और जब भी पढ़िये तो मालूम होगा कि हमारे दिल का चोर कोई पकड़ कर दिखलाता जा रहा है.

महात्मा जी की पूरी किताब बहुत काफ़ी बड़ी है. मामूली आदमी उसको आसानी से नहीं ख़रीद सकता. लिहाज़ा उसके एक मुख़्तसर नमूने की ज़रूरत थी. इसलिये हम नव-जीवन को इस किताब के निकालने पर बधाई देते हैं. दो रुपए में क़रीब तीन सौ सफ़े की, बढ़िया काग़ज़ पर छपी, एक तस्वीर दार किताब मिलना आजकल के ज़माने में एक अनहोनी बात है. फिरभी हम चाहते हैं कि इसका साइज़ चाहेकुछ और छोटा ही क्यों न हो पर एक रुपया का एडीशन निकल आए ताकि यह किताब हर एक की जेब में जा सके.

ए गांधी एन्थालोजी (अंगरेज़ी)

पहला हिस्सा, सम्पादक—वाल जी गोविन्द जी देसाई सफ़े 59; दाम आठ आने; पहलीबार 1952.

ज़िन्दगी का शायद ही कोई ऐसा पहलू हो जिस पर गांधी जी ने कुछ न कुछ रोशनी न डाली हो. इसलिये उनकी लिखी या कही हुई चीज़ों के ढेर में से मोती मोती चुन कर निकाल देना एक बड़ा मुश्किल काम है. अंगरेज़ी में इस तरह की कोशिश गांधी जी के सामने और काफ़ी अच्छी कोशिश प्रोफ़ेसर निर्मल कुमार बसू ने की थी. फिर, आज कल तो बहुत से भाई बहन ऐसे संग्रह निकाल रहे हैं. नव जीवन की यह छोटी सी किताब भी उसी तरह का संग्रह मालूम पड़ता है. यह पहला हिस्सा है और हमें नहीं मालूम कि इसके कितने हिस्से और निकलेंगे. सम्पादक ने जो चीज़ें चुन कर रक्खी हैं उनमें बहुतों के बारे में यह पता ही नहीं चलता कि वह कहां से ली गई हैं और बहुतों के बारे में कुछ किताबों की तरफ़ इशारा है जो ख़ुद ही एक तरह का संग्रह हैं.

सेविन मन्थ्स विद महात्मा गांधी (अंगरेज़ी)

लेखक—कृश्न दास; सम्पादक—रिचर्ड ग्रेग; सफ़े 272; दाम चार रुपये; पहली बार 1951.

1921-22 के असहयोग की याद अब एक कहानी रह गई है. इसके जानने वालों की तादाद धीरे धीरे छनती जा रही है. उस ज़माने की बापू की ज़िन्दगी का एक एक पल

ولی ھیں جن کے خوشی خوشی اور بڑائی کے ساتھ نام
لے والوں کی تعداد بڑھتی ہی جاتی ھے اسی طرح کچھ
تابیں ایسی ہوتی ھیں جو دن دن زیادہ پھیلتی جاتی
ن اور جن کے گاہک بڑھتے جاتے ھیں. مہاتما گاندھی
ی "ستیہ نا پریوگ" نام کی آتم کتھا ایسی ہی امر
تابوں میں ھے. اس کو جتنی بار پڑھئے ایسا لگتا ھے کہ
ہلی بار پڑھ رھے ھیں اور جب بھی پڑھئے تو معلوم ہوگا
، ہمارے دل کا چور کوئی پکڑ کر دکھلاتا جا رہا ھے.

مہاتماجی کی پوری کتاب بہت کافی بڑی ھے معمولی
ہیہ آدمی مختصر آسانی سے نہیں خرید سکتا. لہذا اس کے
یک مختصر نمونے کی ضرورت تھی. اس لئے ہم نوجیون کو اس
تاب پر بدھائی دیتے ھیں. دو روپئے میں قریب 300
فحے کی، بڑھیا کاغذ پر چھپی، ایک تصویر دار کتاب ملنا
ج کل کے زمانے میں ایک انہونی بات ھے. پھر بھی ہم
چاہتے ھیں کہ اس کا سائز چاہے کچھ اور چھوٹا ہی کیوں نہ
و پر ایک روپیہ کا ایڈیشن نکل آئے تاکہ یہ کتاب ہر ایک
جیب میں جاسکے.

اے گاندھی اینتھو لوجی (انگریزی)

پہلا حصہ، سمپادک—بال جی گوند جی دیسائی؛
صفحے 59 دام آٹھ آنے؛ پہلی بار 1952.

زندگی کا شاید ہی کوئی ایسا پہلو ہو جس پر گاندھی
جی نے کچھ نہ کچھ روشنی نہ ڈالی ہو. اس لئے ان کی
لکھی یا کہی ہوئی یا چیزوں کے ڈھیر میں سے موتی
موتی چن کر نکال دینا ایک بڑا مشکل کام ھے. انگریزی
میں اسطرح کے کوشش گاندھی جی سامنے اور کافی اچھی
کوشش پروفیسر نرمل کمار بسو نے کی تھی. پھر آجکل
تو بہت سے بھائی بہن ایسے سنگرہ نکال رہے ھیں. نوجیون
کی یہ چھوٹی سی کتاب بھی اسی طرح کا سنگرہ معلوم
ہوتا ھے. یہ پہلا حصہ ھے اور ہمیں نہیں معلوم کہ اس کے
کتنے حصے اور نکلینگے. سمپادک نے جو چیزیں چن کر
رکھی ھیں ان سے بہتوں کے بارے میں یہ پتہ ہی نہیں
چلتا کہ وہ کہاں سے لی گئی ھیں اور بہتوں کے بارے میں
کچھ کتابوں کی طرف اشارہ ھے جو خود ہی ایک طرح
سنگرہ ھیں.

سیون منتھس ود مہاتما گاندھی (انگریزی)

لیکھک—کرشن داس سمپادک—رچرڈ گریگ، صفحے
272؛ دام چار روپئے؛ پہلی بار 1951.

1921-22 کے اسہیوگ کی یاد اب تک ایک کہانی
رہ گئی ھے. اسکے جاننے والوں کی تعداد دھیرے دھیرے
چھنتی جارہی ھے. اس زمانے کی باپو کی زندگی کا ایک ایک پل

'बापू राज पत्रिका' को सोलह आने हिन्दुस्तान के देहातों में बसने वाली 80 फ़ी सदी जनता के दिल की आवाज़ मानते हैं. यह अपने ढंग का हिन्दुस्तान में पहला और बे मिसाल पर्चा है. ज़रूरत इस बात की है कि यह देहातों में पढ़ा जाय, सुना जाय और ग़ौर किया जाय. हमें उम्मीद है कि 'बापू राज पत्रिका' का प्रचार दिन दिन बढ़ेगा और इसके ज़रिये मीरा बहन जी हिन्दुस्तान की जो इस वक़्त विदेशी पूंजीपतियों और तख़्त शाहों के लिए एक शिकार घर बना जा रहा है, दिन दुगनी रात चौगनी चौकीदारी करेंगी और बहन जी की आवाज़ की भनक नई दिल्ली के कानों में भी पड़ेगी.

—सुरेश रामभाई

नवजीवन (अहमदाबाद) की किताबें.

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी—

(महात्मा गांधी के लेखों का संग्रह.)

अनुवादक—काशीनाथ त्रिवेदी; सफ़े 280; दाम डेढ़ लिखावट नागरी रुपया; दूसरी बार, 1952.

अंगरेज़ों की ख़ुशक़िस्मती कहिये या हम हिन्दुस्तानियों की बदक़िस्मती कि हमें एक राष्ट्र या क़ौम का तो शौक़ है लेकिन राष्ट्रीय या क़ौमी बोली के बारे में उससे आधी दिलचस्पी भी नहीं है. आज जब आज़ादी के पांच साल पूरे होने आ रहे हैं तब भी अंगरेज़ी, हिन्दुस्तानी या हिन्दी के झगड़ों में पड़ कर हम फ़िज़ूल में अपना मग़ज़ पिच्ची करते हैं और एक दूसरे पर नये घाव करते हैं सो अलग.

अपने देश के पढ़े लिखे भाई बहिनों से, ख़ास कर पार्लियामेन्ट और एसेम्बलियों के मेम्बरों से हमारी सिफ़ारिश है कि ज़रा दिल खोल कर इस मसले पर ग़ौर करें और अपना क़ीमती वक़्त निकाल कर नवजीवन की इस अनमोल किताब "राष्ट्र भाषा हिन्दुस्तानी" को एक बार इधर से उधर तक ज़रूर पढ़ जायें. विद्यार्थी समाज का भी फ़र्ज़ है कि देश के फिर बनाओ के लिए अमली क़दम उठाने के पहले इस किताब को ध्यान से देख जाये. भाई काशी नाथ जी को उनके अनुवाद पर बधाई.

गांधीजीज़ आटोबायग्राफ़ी (अंगरेज़ी)

सम्पादक—भारतन कुमारप्पा; 294; दाम दो रुपया; सफ़े पहली बार 1952.

समय गुज़रने के साथ साथ जिस तरह आदमी बूढ़ा हो जाता है और लोग उससे भागने लगते हैं इसी तरह किताबें भी पुरानी होती जाती हैं उसके गाहक कम होते जाते हैं. लेकिन जिस तरह दुनिया में कुछ हस्तियां ऐसी

باپو راج پتریکا' کو سوا سولہ آنے ھندستان کے دیہاتوں میں بسنے والی 80 فیصدی جنتا کے دل کی آواز مانتے ھیں. یہ اپنے ڈھنگ کا ھندستان میں پہلا اور بے مثال پرچہ ھے. ضرورت اس بات کی ھے کہ یہ دیہاتوں میں پڑھا، سنا جائے اور غور کیا جائے. ھمیں امید ھے کہ باپو راج پتریکا' کا پرچار دن دن بڑھے گا اور اس کے ذریعے میرا بہن جی ھندستان کی جو اس وقت ودیشی پونجی پتیوں اور تخت شاھوں کے لئے ایک شکار گھر بنا جا رہا ھے' دن دوگنی رات چوگنی چوکی داری کریں گی اور بہن جی کی آواز کی بھنک نئی دلی کے کانوں میں بھی پڑیگی.

—سریش رام بھائی

نوجیون (احمدآباد) کی کتابیں.

راشٹر بھاشا ھندستانی

(مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا سنگرہ)

انوادک—کاشی ناتھ ترویدی؛ صفحے 280؛ دام ڈیڑ روپیہ؛ لکھاوٹ ناگری دوسری بار' 1952.

انگریزوں کی خوش قسمتی کہئے یا ھم ھندستانیوں کی بدقسمتی کہ ھمیں ایک راشٹر یا قوم کا تو شوق ھے لیکن راشٹریہ یا قومی بول کے بارے میں اس سے آدھی دلچسپی بھی نہیں ھے. آج جب آزادی کے پانچ سال پورے ھونے آ رھے ھیں تب بھی انگریزی' ھندستانی یا ھندی کے جھگڑوں میں پڑ کر ھم فضول میں اپنا مغزپچی کرتے ھیں اور ایک دوسرے پر نئے گھاؤ کرتے ھیں سو الگ.

اپنے دیش کے پڑھے لکھے بھائی بہنوں سے' خاص کر پارلیامنٹ اور اسمبلیوں کے ممبروں سے ھماری سفارش ھے کہ ذرا دل کھول کر اس مسئلے پر غور کریں اور اپنا قیمتی وقت نکال کر نوجیون کی اس انمول کتاب "راشٹر بھاشا ھندستانی" کو ایک بار ادھر سے ادھر تک ضرور پڑھ جائیں. ودیارتھی سماج کا بھی فرض ھے کہ دیش کے پھر بناؤ کے لئے عملی قدم اٹھانے کے پہلے اس کتاب کو دھیان سے دیکھ جائے. بھائی کاشی ناتھ جی کو انکے انوواد پر بدھائی.

گاندھی جیز آتو بائگرافی— (انگریزی)

سمپادک—بھارتن کمارپا؛ صفحے 294؛ دام دو روپیہ؛ لکھاوٹ انگریزی پہلی بار 1952.

سمے گذرنے کے ساتھ ساتھ جس طرح آدمی بوڑھا ھوتا جاتا ھے اور لوگ اس سے بھاگنے لگتے ھیں اسی طرح کتابیں بھی پرانی ھوتی جاتی ھیں اور ان کے گاھک کم ھوتے جاتے ھیں. لیکن جس طرح دنیا میں کچھ ھستیاں ایسی

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

बापू राज पत्रिका (अंगरेज़ी और हिन्दी.)

सम्पादक—मीरा बहन; माहवारी परचा,

मिलने का पता—पशुलोक, रिशीकेश, ज़िला देहरादून; दाम फ़ी कापी तीन आने; छमाही चन्दा केवल एक रुपया.

मीरा बहन जी दुनिया की उन चन्द हस्तियों में से हैं जिन्होंने अपने ईश्वर को देखा तो बापू (महात्मा गाँधी) के रूप में देखा और जिनकी निगाह में बापू के जाने के माने हैं छोटे से छोटे ज़र्रे से लेकर बड़ी से बड़ी सूरत में बापू का वजूद में आ जाना. बापू के साथ इस भक्ति के नाते मीरा बहन उस मीरा के दरजे को पहुंच जाती हैं जिसका गिरधर गोपाल के अलावा कोई दूसरा नहीं था. लेकिन मीरा बहन की भक्ती महज़ ख़्याली या दिमाग़ी नहीं हैं बल्कि इसने एक ज़बरदस्त अमली शकल भी ले ली है. यही वजह है कि इंगलिस्तान के एक फ़ौजी अफ़सर की यह लड़की, ऐश व आराम में पली हुई और परियों जैसी सोहबत पसंद करने वाली बेटी, आज गेरुआ कपड़ा पहने सर मुंडा कर टट्टू पर सवार हो कर टीहरी गढ़वाल के जैसे वीरान ज़िले में गांव गांव घूमती है और वहां के लाचार और दुखी रहने वालों की तकलीफ़ में रत्ती भर भी अगर हाथ बटा सके तो उसे अपनी ख़ुशनसीबी समझती है. इसी का यह नतीजा है कि मीरा बहन का दिल अपना दिल न रहकर हिन्दुस्तान की ग़रीब से ग़रीब और सब में ज़ियादा कुसी हुई जनता का दिल बन गया है, जिसको अगर ज़रा भी हाथ लगाइये तो सारे देश का दर्द उससे मानो फूट उठता है.

पिछले मई के महीने से 'बापू राज पत्रिका' नाम का एक अठ पेजी परचा बहन जी ने निकालना शुरू किया है. उसे परचा कहना ज़ियादती है बल्कि वह एक डाक्टर का बुलेटीन है जो मरीज़ों की नब्ज़ और सूरत को देख कर उसकी सच्ची तस्वीर दुनिया के आगे रख देता है और डाक्टर भी वैसा नहीं जिसके दांत खाने के और दिखाने के और बल्कि जो ख़ुद ही मरीज़ों के जैसा मरीज़ है और उसी तरह की दवा देने की कोशिश में है जो उन्हें क़बूल हो और उनके अंग चंग को लग जाय. इसलिये हम बहन जी की

باپو راج پتریکا (انگریزی هندی)

سمپادک—میرا بہن؛ ماهواری پرچه؛

ملنے کا پته— پشو لوک، رشی کیش، ضلع دهرا دون، دام فی کاپی: تین آنے، چھ ماهی چنده کیول ایک روپیه.

میرا بہن جی دنیا کی اُن چند هستیوں میں سے هیں جنهوں نے اپنے ایشور کو دیکھا تو باپو (مهاتما گاندهی) کے روپ میں دیکھا اور جن کی نگاه میں باپو کے جانے کے معنے هیں چھوٹے سے چھوٹے ذرے سے لیکر بڑی سے بڑی صورت میں باپو کا وجود میں آجانا. باپو کے ساتھ اِس بھکتی کے ناتے میرا بہن اس میرا کے درجے کو پہنچ جاتی هیں جس کا گردهر گوپال کے علاوه کوئی دوسرا نهیں تها. لیکن میرا بہن کی یه بھکتی محض خیالی یا دماغی نهیں هے بلکه اِسنے ایک زبردست عملی شکل بھی لے لی هے. یہی وجه هے که انگلستان کے ایک فوجی افسر کی یه لڑکی، عیش و آرام میں پلی هوئی اور پریوں جیسی صحبت پسند کرنے والی بیٹی، آج گیروا کپڑے پہنے سر مُنڈا کر ٹٹو پر سوار هو کر ٹیهری گڑهوال کے جیسے ویران ضلع میں گاؤں گاؤں گهومتی هے اور وهاں کے لاچار اور دکهی رهنے والوں کی تکلیف رتی بهر میں بهر اگر هاته بٹا تو اُسے اپنی خوش نصیبی سمجهتی هے. اِسی کا یه نتیجه هے که میرا بہن کا دل اپنا دل نه رهکر هندستان کی غریب سے غریب اور سب میں زیاده چسی هوئی جنتا کا دل بن گیا هے جس کو اگر ذرا بهی هاته لگایئے تو سارے دیش کا درد اُس سے مانو پهوٹ اُٹهتا هے.

پچهلے مئی کے مہینے سے باپو راج پتریکا نام کا ایک اٹھ پیجی پرچه بہن جی نے نکالنا شروع کیا هے. اُسے پرچه کہنا زیادتی هے بلکه وه ایک ڈاکٹر کا بلیٹن هے جو مریضوں کی نبض اور صورت کو دیکهکر اُس کی سچی تصویر دنیا کے آگے رکھ دیتا هے اور ڈاکٹر بهی ویسا نهیں جس کے دانت کهانے کے اور دکهانے کے اور بلکه جو خود هی مریضوں کے جیسا مریض هے اور اُسی طرح کی دوا دینے کی کوشش میں [illegible] هے جو اُنهیں قبول هو اور اُن کے انگ چنگ کو لگ جائے. اِسلئے هم بہن جی کی

सबब है कि अगरचे दुनिया सूरज से नौ करोड़ तीस लाख मील के फ़ासले पर है फिर भी सूरज की इस क़दर गर्मी और रोशनी धूप के ज़रिये यहां पहुंच जाती है. सूरज जो ऐसा छोटा मालूम होता है इस का भी यह सबब है कि वह बहुत ही दूर है. सूरज में तो इतनी गर्मी और आग है मगर चांद और ही तरह की दुनिया है. चांद सूरज की निस्बत दुनिया से बहुत ज़ियादा पास है. क्योंकि चांद का फ़ासला दुनिया से सिर्फ़ दो लाख चालीस हज़ार मील है. यानी सूरज चांद की निस्बत 386 गुना ज़ियादा दूर है. मगर देखने में चांद और सूरज क़रीब क़रीब बराबर मालूम होते हैं. इस का यह सबब है कि चांद बहुत छोटा है, यानी इस हमारी ज़मीन से भी छोटा. और सूरज में तो सब जगह आग ही आग और गर्मी ही गर्मी है. मगर चांद में ज़मीन ऐसी ही है जैसी यहां दुनिया में है. मगर चांद में जहां तक अब तक मालूम हुआ है पानी और हवा बिलकुल नहीं है.

फ़िक़्री बंगला
25-6-06

राधे,

कल की चिट्ठी में मैंने लिखा था कि खेल किस तरह के होते हैं और हमेशा हंसते रहने या हंसने की शक्ल बनाये रखने से भी दिल ख़ुश रखा जा सकता है. असल में इस तरह करना चाहिये कि जब कभी कोई ऐसी बात हो या ख़याल आये कि जिस से दिल में रंज या उदासी या फ़िक्र या सुस्ती पैदा होती हो तो पहले यह कोशिश करनी चाहिये कि मुंह ज़रा न बिगड़ने पाये बल्कि हंसने की कोशिश पूरी पूरी करनी चाहिये और फिर अक़्ल के मुताबिक़ सोचना चाहिये कि फ़िक्र करना और रंज करना और सुस्त और उदास रहना तो बिलकुल ही फ़िज़ूल है. हां अगर कोई बात ऐसी हो कि जिस के वास्ते कुछ काम करना ज़रूरी हो तब उस काम को बेशक फ़ौरन करना चाहिये या उस काम के करने के लिये पूरी पूरी कोशिश करनी चाहिये. जो आदमी इस तरह करे और साथ ही यह भी अच्छी तरह याद रखे कि असल काम जो हम सब को करना है वह यह है कि सब कुछ परमेश्वर की मरज़ी के मुताबिक़ करें तो फिर उस का दिल हमेशा ख़ुश रहेगा.

سبب ہے کہ اگر چہ دنیا سورج سے نو کروڑ تیس لاکھ میل کے فاصلے پر ہے پھر بھی سورج کی اس قدر گرمی اور روشنی دھوپ کے ذریعے یہاں پہونچ جاتی ہے۔ سورج جو ایسا چھوٹا معلوم ہوتا ہے اس کا بھی سبب ہے کہ وہ بہت ہی دور ہے۔ سورج میں تو اتنی گرمی اور آگ ہے مگر چاند اور ہی طرح کی دنیا ہے۔ چاند سورج کی نسبت دنیا سے بہت زیادہ پاس ہے۔ کیونکہ چاند کا فاصلہ دنیا سے صرف 2 لاکھ چالیس ہزار میل ہے۔ یعنی سورج چاند کی نسبت 386 گنا زیادہ دور ہے۔ مگر دیکھنے میں چاند اور سورج قریب قریب برابر معلوم ہوتے ہیں۔ اس کا یہ سبب ہے کہ چاند بہت چھوٹا ہے، یعنی اس ہماری زمین سے بھی چھوٹا۔ اور سورج میں تو سب جگہ آگ ہی آگ اور گرمی ہی گرمی ہے۔ مگر چاند میں زمین ایسی ہی ہے جیسی یہاں دنیا میں ہے، مگر چاند میں جہاں تک اب تک معلوم ہوا ہے پانی اور ہوا بالکل نہیں ہے۔

فکری بنگلہ
25-6-06

رادھے،

کل کی چٹھی میں میں نے لکھا تھا کہ کھیل کس طرح کے ہوتے ہیں اور ہمیشہ ہنستے رہنے یا ہنسنے کی شکل بنائے رکھنے سے بھی دل خوش رکھا جا سکتا ہے۔ اصل میں اس طرح کرنا چاہئے کہ جب کبھی کوئی ایسی بات ہو یا خیال آئے کہ جس سے دل میں رنج یا اداسی یا فکر یا سستی پیدا ہوتی ہو تو پہلے یہ کوشش کرنی چاہئے کہ منہ ذرا نہ بگڑنے پائے بلکہ ہنسنے کی کوشش پوری پوری کرنی چاہئے اور پھر عقل کے مطابق سوچنا چاہئے کہ فکر کرنا اور رنج کرنا اور سست اور اداس رہنا تو بالکل ہی فضول ہے۔ ہاں اگر کوئی بات ایسی ہو کہ جس کے واسطے کچھ کام کرنا ضروری ہو تب اس کام کو بے شک فوراً کرنا چاہئے یا اس کام کے کرنے کے لئے پوری کوشش کرنی چاہئے۔ جو آدمی اس طرح کرے اور ساتھ ہی یہ بھی اچھی طرح یاد رکھے کہ اصل کام جو ہم سب کو کرنا ہے وہ یہ ہے کہ سب کچھ پرمیشور کی مرضی کے مطابق کریں تو پھر اس کا دل ہمیشہ خوش رہیگا۔

बल्कि हर वक़्त हंसते रहें या हंसने की शकल बनाये रखें. राधे! एक बड़े भारी विद्वान ने लिखा है कि असल में रंज और ग़ुस्सा और उदासी पीछे आती है पहिले वह अपना मुँह बिगाड़ना शुरू करती है, इस लिये अगर कोई आदमी हमेशा हंसता रहे और कभी मुँह बुरा न बनाये तो वह कभी सुस्त या उदास भी नहीं होगा.

कहोड़

26-6-06

राधे,

आज मैं तुम्हें भगवान और दुनिया की बाबत कुछ बताता हूँ. यह तो पहली चिट्ठियों में लिखा जा चुका है कि भगवान ने ही सब जगत को बनाया है और उसी ने आदमी और जानवरों को पैदा किया है. अब यह बताना बाक़ी रहा कि दुनिया और आदमी और जानवर कब और किस तरह पैदा हुये. लेकिन पहिले यह देखना ज़रूरी मालूम होता है कि इस जगत में क्या क्या शामिल है. एक तो इस जगत में यह दुनिया है जिसके एक हिस्से में हम रहते हैं और जिस का नक़शा जो ग्लोब तुम्हारे पास है उस पर बना हुआ है. इस दुनिया का हाल तो हम जानते हैं और जितना चाहें और मालूम कर सकते हैं, क्यों कि हर जगह जा सकते हैं, देख सकते हैं और मालूम कर सकते हैं. मगर इस दुनिया के सिवाये इस जगत में और भी बहुत सी अनगिनत दुनियायें हैं. कुछ तो इन में उसी तरह की हैं जैसी हमारी दुनिया है कुछ और तरह की. यह जो चांद सूरज और तारे तुम्हें दिखाई देते हैं असल में यह सब के सब बड़ी बड़ी दुनियायें हैं. बहुत सी तो इन में से हमारी दुनिया से बड़ी हैं और कुछ छोटी भी हैं. सूरज जो हमें ऐसा चमकदार दिखाई देता है यह असल में दुनिया से बहुत ही जियादा बड़ा है. और दुनिया के ऊपर तो ठोस ज़मीन पानी और हवा है मगर सूरज के ऊपर हर एक चीज़ पिघली हुई या भाप की शकल में है. जिस तरह लोहे को गर्म करने से पहले सुर्ख़ अंगारे की शकल हो जाती है और फिर बिल्कुल सफ़ेद हो कर पिघलने लगती है उसी तरह सूरज में हर एक चीज़ लोहा, पत्थर, कोयला, तांबा सब कुछ इस क़दर तपा हुआ है या पिघला हुआ है या भाप बन जाता है या गरमी के सबब बिल्कुल सफ़ेद हो जाता है. सारे सूरज के अन्दर बाहर ऊपर नीचे बड़े ज़ोर शोर की आग जल रही है. सब चीज़ जिस क़दर है पिघली जाती है. मारे गर्मी के, और जिस तरह हमारी दुनिया के चारों तरफ़ हवा ही हवा है उसी तरह सूरज के चारों तरफ़ हज़ारों मील तक लोहा, तांबा, पत्थर भाप की शकल में फैले हुये हैं. यही

بلکہ ہر وقت ہنستے رہیں یا ہنسنے کی شکل بنائے رکھیں۔ رادھے! ایک بڑے بھاری ودوان نے لکھا ہے کہ اصل میں رنج اور غصہ اور اداسی پیچھے آتی ہے پہلے وہ اپنا منہ بگاڑنا شروع کرتی ہے، اس لئے اگر کوئی آدمی ہمیشہ ہنستا رہے اور کبھی منہ برا نہ بنائے تو وہ کبھی سست یا اداس بھی نہیں ہوگا۔

کہوڑ

26-6-06

رادھے،

آج میں تمہیں بھگوان اور دنیا کی بابت کچھ بتاتا ہوں۔ یہ تو پہلی چٹھیوں میں لکھا جا چکا ہے کہ بھگوان نے ہی سب جگت کو بنایا ہے اور اسی نے آدمی اور جانوروں کو پیدا کیا ہے۔ اب یہ بتانا باقی رہا کہ دنیا اور آدمی اور جانور کب اور کس طرح پیدا ہوئے۔ لیکن پہلے یہ دیکھنا ضروری معلوم ہوتا ہے کہ اس جگت میں کیا کیا شامل ہے۔ ایک تو اس جگت میں یہ دنیا ہے جس کے ایک حصے میں ہم رہتے ہیں اور جس کا نقشہ جو گلوب تمہارے پاس ہے اس پر بنا ہوا ہے۔ اس دنیا کا حال تو ہم جانتے ہیں اور جتنا چاہیں اور معلوم کر سکتے ہیں، کیونکہ ہر جگہ جا سکتے ہیں، دیکھ سکتے ہیں اور معلوم کر سکتے ہیں۔ مگر اس دنیا کے سوائے اس جگت میں اور بھی بہت سی انگنت دنیائیں ہیں۔ کچھ تو ان میں سے اسی طرح کی ہیں جیسی ہماری دنیا ہے کچھ اور طرح کی۔ یہ جو چاند سورج اور تارے تمہیں دکھائی دیتے ہیں اصل میں یہ سب کے سب بڑی بڑی دنیائیں ہیں۔ بہت سی تو ان میں سے ہماری دنیا سے بڑی ہیں اور کچھ چھوٹی بھی ہیں۔ سورج جو ہمیں ایسا چمکدار دکھائی دیتا ہے یہ اصل میں دنیا سے بہت ہی زیادہ بڑا ہے۔ اور دنیا کے اوپر تو ٹھوس زمین پانی اور ہوا ہے مگر سورج کے اوپر ہر ایک چیز پگھلی ہوئی یا بھاپ کی شکل میں ہے۔ جس طرح لوہے کو گرم کرنے سے پہلے سرخ انگارے کی شکل ہو جاتی ہے اور پھر بالکل سفید ہو کر پگھلنے لگتی ہے اسی طرح سورج میں ہر ایک چیز لوہا، پتھر، کوئلہ، تانبہ سب کچھ اس قدر تپا ہوا ہے یا پگھلا ہوا ہے یا بھاپ بن جاتا ہے یا گرمی کے سبب بالکل سفید ہو جاتا ہے۔ سارے سورج کے اندر باہر اوپر نیچے بڑے زور شور کی آگ جل رہی ہے۔ سب چیز جس قدر ہے پگھلی جاتی ہے۔ مارے گرمی کے اور جس طرح ہماری دنیا کے چاروں طرف ہوا ہی ہوا ہے اسی طرح سورج کے چاروں طرف ہزاروں میل تک لوہا، تانبا، پتھر بھاپ کی شکل میں پھیلے ہوئے ہیں۔ یہی

बच्चों की दुनिया

किम्री

24-6-09

राधे,

कल की चिट्ठी में खेलने की बाबत लिखा गया था. और खेलों का फ़ायदा यह बताया था कि पहले उन से दिल ख़ुश रहे, दूसरे कुछ न कुछ फ़ायदा भी हो. कुछ खेल तो ऐसे होते हैं कि उनसे ख़ून में हरकत बढ़ती है, रग पट्ठे मज़बूत होते हैं और बदन में ताक़त आती है. ऐसे खेल वह होते हैं जिन में भागना दौड़ना, चलना फिरना पड़े. यह उछलना कूदना या छलांगे मारना, वग़ैरा इस तरह के खेल तुम्हारी उस किताब में भी हैं जिसमें तस्वीरें वर्ज़िश और खेलों की बनी हुई हैं और जिस में से तुम्हारी वर्ज़िश की कापी में नक़ल थी. इसी क़िस्म के खेल ऐसे होते हैं कि उन में हाथ से कुछ बनाना पड़े जैसे काठ की छोटी छोटी ईंटों और लकड़ी के टुकड़ों से कभी कुर्सी, कभी मेज़, कभी गिर्जा, कभी पुल, कभी स्टेशन, कभी दुकान और ऐसी ही चीज़ें बन सकती हैं. इन खेलों को किंडरगारटन के खेल कहते हैं. और यह बहुत तरह के होते हैं. और इन में बच्चों का बड़ा मन लगता है और साथ ही अक़्ल भी बढ़ती है. अब तुम झटपट अंगरेज़ी पढ़ लो तो तुम्हें ऐसे खेलों की बहुत सी किताबें मंगा दें और फिर तुम उन के मुताबिक़ तरह तरह के खेल निकाल सकोगी. तीसरी क़िस्म के एक और खेल होते हैं जिन में नये नये तमाशे किये जाते हैं. जैसे एक चाक़ू को दरवाज़े की चौखट में इस तरह लटकाया कि जब गिरे तो उसके ठीक नीचे जो अख़रोट रखा हो वह ज़रूर फूट जावे, या किसी सेब या नाशपाती के इस तरह दो टुकड़े किये जावें कि ऊपर का छिलका साबित का साबित रहे. इस तरह के खेलों में भी बड़ा मन लगता है और अक़्ल भी आती है. ऐसे खेलों को साइन्स या हिकमत के खेल कहते हैं. इन के सिवाये और भी कई क़िस्म के खेल होते हैं, जिन की बाबत फिर कभी लिखा जायेगा. अब तुम्हें यह बात भी याद रखनी चाहिये कि सबसे आसान तरीक़ा ख़ुश रहने का यह है कि हमेशा हंस मुख रहें यानी बुरा मुँह या सूरत और उदास शक्ल अपने चेहरे की कभी भी न होने दें, न कभी त्योरी में बल डालें

بچوں کی دنیا

ککری

24-6-09

رادھے،

کل کی چٹھی میں کھیلنے کی بابت لکھا گیا تھا. اور کھیلوں کا فائدہ یہ بتایا تھا کہ پہلے اُن سے دل خوش رہے، دوسرے کچھ نہ کچھ فائدہ بھی ہو. کچھ کھیل تو ایسے ہوتے ہیں کہ اُن سے خون میں حرکت بڑھتی ہے، رگ پٹھے مضبوط ہوتے ہیں اور بدن میں طاقت آتی ہے. ایسے کھیل وہ ہوتے ہیں جن میں بھاگنا دوڑنا، چلنا پھرنا پڑے. یہ اُچھلنا کودنا یا چھلانگیں مارنا، وغیرہ اِس طرح کے کھیل تمہاری اُس کتاب میں بھی ہیں جس میں تصویریں ورزش اور کھیلوں کی بنی ہوئی ہیں اور جس میں تمہاری ورزش کی کاپی میں نقل تھی. اِسی قسم کے کھیل ایسے ہوتے ہیں کہ اُن میں ہاتھ سے کچھ بنانا پڑے جیسے کاٹھ کی چھوٹی چھوٹی اینٹوں اور لکڑی کے ٹکڑوں سے کبھی کرسی، کبھی میز، کبھی گرجا، کبھی پل، کبھی اسٹیشن، کبھی دوکان اور ایسی ہی چیزیں بن سکتی ہیں. اِن کھیلوں کو کنڈر گارٹن کے کھیل کہتے ہیں. اور یہ بہت طرح کے ہوتے ہیں. اور اِن میں بچوں کا بڑا من لگتا ہے اور ساتھ ہی عقل بھی بڑھتی ہے. اب تم جھٹ پٹ انگریزی پڑھ لو تو تمہیں ایسے کھیلوں کی بہت سی کتابیں منگادیں اور پھر تم اُن کے مطابق طرح طرح کے کھیل نکال سکوگی. تیسری قسم کے ایک اور کھیل ہوتے ہیں جن میں نئے نئے تماشے کئے جاتے ہیں. جیسے ایک چاقو کو دروازے کے چوکھٹ میں اس طرح لٹکایا کہ جب گرے تو اُس کے ٹھیک نیچے جو اخروٹ رکھا ہو وہ ضرور پھوٹ جاوے، یا کسی سیب یا ناشپاتی کے اِس طرح دو ٹکڑے کئے جاویں کہ اوپر کا چھلکا ثابت کا ثابت رہے. اِس طرح کے کھیلوں میں بھی بڑا من لگتا ہے اور عقل بھی آتی ہے. ایسے کھیلوں کو سائنس یا حکمت کے کھیل کہتے ہیں. اِن کے سوائے اور بھی کئی قسم کے کھیل ہوتے ہیں، جن کی بابت پھر کبھی لکھا جائیگا. اب تمہیں یہ بات بھی یاد رکھنی چاہئے کہ سب سے آسان طریقہ خوش رہنے کا یہ ہے کہ ہمیشہ ہنس مکھ رہیں یعنی برا منہ یا صورت اور اداس شکل اپنے چہرے کی کبھی بھی نہ ہونے دیں، نہ کبھی تیوری میں بل ڈالیں

पैसिफ़िक की एक शान्ति कान्फ्रेंस सितम्बर के महीने में चीन की राजधानी पेकिंग में की जाय. यह बहुत ही मुनासिब और ज़रूरी काम है. जैसा कि दावत नामे में बतलाया गया है—"हम शान्ति के लिए हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ सकते. अमन पसन्द लोगों को मुश्तरका ज़ोर लगा कर शान्ति हासिल करना होगी. एशिया और पैसिफ़िक में शान्ति उसी वक़्त क़ायम हो सकती है जब एशिया और पैसिफ़िक के लोग इसके लिए कमर कस कर तैयार हो जायें."

यह दावतनामा 21 मार्च को भेजा गया था. इसका जगह जगह स्वागत किया गया. बहुत से देशों ने इस कान्फ्रेंस में शिरकत करने के लिए तैयारी कमेटियां बना ली हैं जिन पर शान्ति के पहुँचे हुए सिपाही और नामी कार्यकर्ता रक्खे गये हैं. साथ ही साथ इन कमेटियों ने कान्फ्रेंस के लिये कार्रवाई शुरू भी कर दी है.

हमें पूरा यक़ीन है कि एशिया और पैसिफ़िक के सब देशों के लोग इस शान्ति सम्मेलन का वही लिहाज़ करेंगे जैसा कि चीन कर रहा है—वही चीन जिसने चेयरमैन माओ-त्से-तुंग की रहनुमाई में दुनिया को एलान कर दिया है (और यह बात चीन के "कामन प्रोग्राम" में भी शामिल है) कि चीन हर देश की जनता के साथ स्थाई अन्तर क़ौमी शान्ति और दोस्ताना सहयोग के सम्बन्ध रखना चाहता है, और जिसके लिए चीन ने पिछले तीन साल की अपनी आज़ाद ज़िन्दगी में हर मुमकिन क़दम उठाया है. हम उम्मीद करते हैं कि शान्ति के दुश्मन हमारे काम में कोई रुकावट लगाने से बाक़ी न रक्खेंगे. लेकिन हमें इतमिनान है कि दुनिया की बहादुर और अमन-पसन्द जनता उनकी हर कोशिश पर पानी फेर देगी और शान्ति क़ायम करने की बड़ी लड़ाई में हमें शानदार जीत हासिल होगी.

[पीकिंग के 'पीपुल्स डेली' अख़बार से]

ملک کی ایک شانتی کانفرنس ستمبر کے مہینے میں چین کی راجدھانی پیکنگ میں کی جائے . یہ بہت ہی مناسب اور ضروری کام ہے . جیسا کہ دعوت نامے میں بتلایا گیا ہے—"ہم شانتی کے لئے ہاتھ پر ہاتھ رکھکر نہیں بیٹھ سکتے . امن پسند لوگوں کو مشترکہ زور لگا کر شانتی حاصل کرنا ہوگی . ایشیا اور پیسفک میں شانتی اُسی وقت قائم ہوسکتی ہے جب ایشیا اور پیسفک کے لوگ اِس کے لئے کمر کس کر تیار ہوجائیں ."

یہ دعوت نامہ 21 مارچ کو بھیجا گیا تھا . اِس کا جگہ جگہ سواگت کیا گیا. بہت سے دیشوں نے اِس کانفرنس میں شرکت کرنے کے لئے تیاری کمیٹیاں بنالی ہیں جن پر شانتی کے پہونچے ہوئے سپاہی اور نامی کاریہ کرتا رکھے گئے ہیں . ساتھ ہی ساتھ ان کمیٹیوں نے کانفرنس کے لئے کاروائی شروع بھی کر دی ہے .

ہمیں پورا یقین ہے کہ ایشیا اور پیسفک کے سب دیشوں کے لوگ اِس شانتی سمیلن کا وہی لحاظ کرینگے جیسا کہ چین کر رہا ہے—وہی چین جس نے چیرمین ماؤزے تنگ کی رہنمائی میں دنیا کو اعلان کر دیا ہے (اور یہ بات چین کے "کامن پروگرام" میں بھی شامل ہے) کہ چین ہر دیش کی جنتا کے ساتھ استھائی انترقومی شانتی اور دوستانہ سہیوگ کے سمبندھ رکھنا چاہتا ہے، اور جس کے لئے چین نے پچھلے تین سال کی اپنی آزاد زندگی میں ہر ممکن قدم اُٹھایا ہے . ہم اُمید کرتے ہیں کہ شانتی کے دشمن ہمارے کام میں کوئی رکاوٹ لگانے سے باقی نہ رکھینگے . لیکن ہمیں اطمینان ہے کہ دنیا کی بہادر اور امن پسند جنتا اُن کی ہر کوشش پر پانی پھیر دیگی اور شانتی قائم کرنے کی بڑی لڑائی میں ہمیں شاندار جیت حاصل ہوگی .

[پیکنگ کے 'پیپلس ڈیلی' اخبار سے]

चीन, कोरिया और जापान के अलावा वीतनाम का जो मुल्क है उसे फ़्रांसीसी साम्राजशाही पूरी ताक़त के साथ अपने पैरों तले कुचल रही है. एशिया और पैसिफ़िक के जो बाक़ी देश हैं उनमें भी अमरीकी, अंगरेज़ी या फ़्रांसीसी साम्राज्यशाह अपनी उधेड़ बुन में लगे हुए हैं और अपनी जंगी तैयारियों के लिए कोई मौक़ा धोके से भी हाथ आ जाता है तो उसे नहीं जाने देते. डराकर, धमका कर या ललचा कर वह एशिया के देशों को अपने शिकन्जे में कस लेना चाहते हैं. नाके बन्दी वग़ैरा नाम की चालों से उन्होंने उन देशों की आर्थिक हालत में काफ़ी संकट खड़े कर दिये हैं. वहां बे रोज़गारी बढ़ गई है, जनता के रहन सहन का दर्जा गिर गया है और भुकमरी व बीमारी का बोलबाला है. इस सब से पता चलता है कि जंग की तैयारी वाली साम्राजशाही और तानाशाही में इन देशों के सच्चे मानों में आज़ाद होने और अपने संगठन करने में दिन दुगनी रात चौगुनी आफ़तें पेश कर दी हैं और लोगों का चैन से रहना दूभर हो गया है.

लेकिन एशिया और पैसिफ़िक का हर मर्द या औरत, बच्चा बच्चा दिल से शान्ति चाहता है. पिछली लड़ाई में जापानी लुटेरों ने उनके अन्दर जो घाव कर दिये थे वह अभी नहीं भरे हैं और न उनका नुक़सान ही चुकाया गया है. शान्ति के लिए वह इतना ही ज़ियादा व्याकुल हैं जितना योरप के वह लोग जिन पर नाज़ियों ने अपना रेला चलाया था. शान्ति और आज़ादी के लिए यह मांग एशिया ही नहीं सारी दुनिया कर रही है और यह सोलह आने सच्ची और इन्साफ़ की मांग है. अमरीकी शिकन्जों के बावजूद जापानी लोग अपनी आज़ादी, लोकशाही और शान्ति के लिए लगातार कोशिश कर रहे हैं, दिन दिन उनकी ताक़त बढ़ रही है. दक्खिन पूरबी एशिया के सभी देशों में शान्ति का यह आन्दोलन तरक़्क़ी कर रहा है. साम्राजशाही जंग चहेतों के अलावा जो शान्ति आन्दोलन से घबराते हैं और जो इसे दबाने की घात में रहते हैं, सारी दुनिया के लोग शान्ति आन्दोलन को एक पवित्र काम समझते हैं और इसमें पूरी तरह शरीक होना चाहते हैं. शान्ति और इन्साफ़ के सभी चाहने वालों का फ़र्ज़ है इस आन्दोलन में अपनी पूरी ताक़त लगायें और जोश के साथ इसमें मदद दें.

चीन में इस शान्ति आन्दोलन के अगुआ मादाम सुंग चिंग लिंग (श्रीमती सुनयात सेन) और को मो-जो हैं. इनकी रहनुमाई में चीन की ग्यारह नामी हस्तियों ने हिन्दुस्तान और दूसरे देशों के दोस्तों, साथियों को मंज़ूर किया है. इसकी बिना पर उन्होंने एशिया, आस्ट्रेलिया और उत्तर दक्खिन अमरीकाओं के शान्ति और इन्साफ़ प्रेमी लोगों को यह दावत नामा भेजा है कि एशिया और

چین، کوریا اور جاپان کے علاوہ ویت نام کا جو ملک ہے اُسے فرانسیسی سامراج شاہی پوری طاقت کے ساتھ اپنے پیروں تلے کچل رہی ہے۔ ایشیا اور پیسفک کے جو باقی دیش ہیں اُن میں بھی امریکی، انگریزی یا فرانسیسی سامراج شاہ اپنی اُدھیڑبُن میں لگے ہوئے ہیں اور اپنی جنگی تیاریوں کے لئے کوئی موقع دھوکے سے بھی ہاتھ آجاتا ہے تو اُسے نہیں جانے دیتے۔ ڈرا کر، دھمکا کر یا للچا کر وہ ایشیا کے دیشوں کو اپنے شکنجے میں کس لینا چاہتے ہیں۔ ناکے بندی وغیرہ نام کی چالوں سے اُنہوں نے اُن دیشوں کی آرتھک حالت میں کافی سنکٹ کھڑے کر دئیے ہیں۔ وہاں بے روزگاری بڑھ گئی ہے، جنتا کے رہن سہن کا درجہ گر گیا ہے اور بھکمری و بیماری کا بول بالا ہے۔ اِس سب سے پتہ چلتا ہے کہ جنگ کی تیاری والی سامراج شاہی اور تانا شاہی میں اِن دیشوں کے سچے معنوں میں آزاد ہونے اور اپنے سنگھٹن کرنے میں دن دوگنی رات چوگنی آفتیں پیش کر دی ہیں اور لوگوں کا چین سے رہنا دوبھر ہوگیا ہے۔

لیکن ایشیا اور پیسفک کا ہر مرد یا عورت، بچہ بچہ دل سے شانتی چاہتا ہے۔ پچھلی لڑائی میں جاپانی لٹیروں نے اُن کے اندر جو گھاؤ کر دئے تھے وہ ابھی نہیں بھرے ہیں اور نہ اُن کا نقصان ہی چکایا گیا ہے۔ شانتی کے لئے وہ اِتنا ہی زیادہ ویاکل ہیں جتنا یورپ کے وہ لوگ جن پر نازیوں نے اپنا ریلا چلایا تھا۔ شانتی اور آزادی کے لئے یہ مانگ ایشیا ہی نہیں ساری دنیا کر رہی ہے اور یہ سولہ آنے سچی اور انصاف کی مانگ ہے۔ امریکی شکنجوں کے باوجود جاپانی لوگ اپنی آزادی، لوک شاہی اور شانتی کے لئے لگاتار کوشش کر رہے ہیں، دن دن اُن کی طاقت بڑھ رہی ہے۔ دکھن پوربی ایشیا کے سبھی دیشوں میں شانتی کا یہ آندولن ترقی کر رہا ہے۔ سامراج شاہی جنگ چہیتوں کے علاوہ جو شانتی آندولن سے گھبراتے ہیں اور جو اِسے دبانے کی گھات میں رہتے ہیں، ساری دنیا کے لوگ شانتی آندولن کو ایک پوتر کام سمجھتے ہیں اور اِس میں پوری طرح شریک ہونا چاہتے ہیں۔ شانتی اور اِنصاف کے سبھی چاہنے والوں کا فرض ہے اس آندولن میں اپنی پوری طاقت لگائیں اور جوش کے ساتھ اِس میں مدد دیں۔

چین میں اِس شانتی آندولن کے اگوا مادام سنگ چنگ لنگ (شریمتی سن یات سین) اور کو موجو ہیں۔ اِن کی رہنمائی میں چین کی گیارہ نامی ہستیوں نے ہندستان اور دوسرے دیشوں کے دوستوں، ساتھیوں کو منظور کیا ہے۔ اِس کی بنا پر اُنہوں نے ایشیا، آسٹریلیا اور اُتر دکھن امریکاؤں کے شانتی اور اِنصاف پریمی لوگوں کو یہ دعوت نامہ بھیجا ہے کہ ایشیا اور

कर रक्खा है. इस तरह उन्होंने पोत्सदाम राज़ी नामे और इसी तरह के दूसरे अन्तर क़ौमी राज़ीनामों को सिर्फ़ कागज़ी टुकड़ा समझ कर फाड़ ही नहीं दिया है बल्कि जापानी जनता की ख़ुद मुख़्तारी, आज़ादी और लोकशाही की मांग को ठुकरा दिया है. यह सुलह नामा सचमुच एक जंग एलान नामा है जिसका मक़सद जापानियों को ग़ुलाम बना कर जापान को हमेशा के लिए अमरीकी मनचलों का एक अड्डा बना लेना है. ज़ाहिर है कि इससे एशिया और और पैसिफ़िक को ज़बरदस्त ख़तरा है.

कोरिया में अमरीकियों को काफ़ी मुंह की खानी पड़ी है फिर भी वह अपनी हरकतों से ज़रा भी बाज़ नहीं आते दीखते. दस महीने से कोरिया की लड़ाई बन्दी की बातचीत घिसटती चली आ रही है और फिर भी उसके कामयाब होने के कोई आसार दिखलाई नहीं पड़ते. जिनेवा कनवेन्शन पर अमरीकी सरकार के दस्तख़त हैं फिर भी इस कनवेन्शन की वह रत्ती भर परवा नहीं करते और लड़ाई के क़ैदियों को छोड़ने को तैयार नहीं हैं. 'अपनी मर्ज़ी से जो वापिस जाय वह जायें'—वाले बेतुके उसूल पर ज़िद करके उन्होंने सैकड़ों-हज़ारों चीनी और कोरियाई क़ैदियों को अपने चंगुल में फांस रक्खा है. यही वजह है कि बातचीत अटक अटक कर रह जाती है और कोरिया वालों की तबाही ख़त्म होती नज़र नहीं आती. इस सब के लिये अमरीकी हमलावर पूरी तरह ज़िम्मेदार है.

इन अमरीकी जंग चहेतों को अपनी करनी पर सब्र न हुआ और तब वह ऐसे ग़ैर इन्सानी और बे उसूली कारनामों पर उतर आये जो कि अन्तर क़ौमी रस्म रिवाज और तौर तरीक़े के सरासर ख़िलाफ़ है. कोरिया और उत्तर पूरब चीन में वह बीमारी बम बे-धड़क गिरा रहे हैं. लड़ाई बन्दी के सिलसिले में बे-सिर पैर की शर्तें मनवाने के लिये उन्होंने क़ैदियों और कोरिया की जनता का क़त्ले आम भी शुरू कर दिया लेकिन उनकी इन ज़ियादतियों का कोरिया की फ़ौज हो या चीन के स्वयं सेवक, कोरिया की जनता हो या चीन की, किसी पर रत्ती भर असर नहीं पड़ने वाला है. हममें इतनी ताक़त मौजूद है कि उनके बीमारी बमों से पैदा होने वाली ख़राबियों का मुक़ाबला करें और उन्हें नेस्तनाबूत करें. फिर भी अमरीकी मनचलों की यह ज़ियादतियां बर्दाश्त के बाहर की चीज़ें हैं. एशिया क्या, सारी दुनिया की जनता के ख़िलाफ़ यह मुजरिमाना हरकतें हैं जिनको तो बन्द ही होना चाहिये. जैसा कि चीनी विदेश मिनिस्टर चू-आं-लेई ने 24 फ़रवरी को कहा था—"अगर दुनिया के लोग ज़ोर शोर के साथ इस जुर्म को नहीं रोकते हैं तो जो ग़ज़ब आज कोरिया के अमन पसन्द लोगों पर ढाये जा रहे हैं वह कल दुनिया के अमन पसन्द लोगों पर ढाये जायेंगे."

کر رکھا ہے۔ اس طرح انہوں نے پوٹسدام راضی نامے اور اسی طرح کے دوسرے انٹر قومی راضی ناموں کو صرف کاغذی ٹکڑا سمجھکر پھاڑ ہی نہیں دیا ہے بلکہ جاپانی جنتا کی خود مختاری' آزادی اور لوک شاہی کی مانگ کو ٹھکرا دیا ہے ۔ یہ صلح نامہ سچ مچ ایک جنگ اعلان نامہ ہے جس کا مقصد جاپانیوں کو غلام بناکر جاپان کو ہمیشہ کے لئے امریکی من چلوں کا ایک اڈا بنا لینا ہے ۔ ظاہر ہے کہ اس سے ایشیا اور پیسفک ساگر کو زبردست خطرہ ہے ۔

کوریا میں امریکیوں کو کافی منہ کی کھانی پڑی ہے پھر بھی وہ اپنی حرکتوں سے ذرا بھی باز نہیں آتے دیکھتے. دس مہینے سے کوریا کی لڑائی بندی کی بات چیت گھسٹتی چلی آ رہی ہے اور پھر بھی اس کے کامیاب ہونے کے کوئی آثار دکھلائی نہیں پڑتے. جنیوا کنوینشن پر امریکی سرکار کے دستخط ہیں پھر بھی اس کنوینشن کی وہ رتی بھر پرواہ نہیں کرتے اور لڑائی کے قیدیوں کو چھوڑنے کو تیار نہیں ہیں ۔ 'اپنی مرضی سے جو واپس جائے وہ جائیں'—والے بے تکے اصول پر ضد کرکے انہوں نے سیکڑوں ہزاروں چینی اور کوریائی قیدیوں کو اپنے چنگل میں پھانس رکھا ہے ۔ یہی وجہ ہے کہ بات چیت اٹک اٹک کر رہ جاتی ہے اور کوریا والوں کی تباہی ختم ہوتی نظر نہیں آتی ۔ اس سب کے لئے امریکی حملہ آور پوری طرح ذمےدار ہیں ۔

ان امریکی جنگ چہیتوں کو اپنی کرنی پر صبر نہ ہوا اور تب وہ ایسے غیر انسانی اور بے اصولی کارناموں پر اتر آئے جو کہ انٹرقومی رسم رواج اور طور طریقے کے سراسر خلاف ہے ۔ کوریا اور اتر پورب چین میں وہ بیماری بم بے دھڑک گرا رہے ہیں ۔ لڑائی بندی کے سلسلے میں بے سر پیر کی شرطیں منوانے کے لئے انہوں نے قیدیوں اور کوریا کی جنتا کا قتلِ عام بھی شروع کر دیا لیکن ان کی ان زیادتیوں کا کوریا کی فوج ہو یا چین کے سویم سیوک' کوریا کی جنتا ہو یا چین کی' کسی پر رتی بھر اثر نہیں پڑنے والا ہے ۔ ہم میں اتنی طاقت موجود ہے کہ ان کے بیماری بموں سے پیدا ہونے والی خرابیوں کا مقابلہ کریں اور انہیں نیست و نابود کریں. پھر بھی امریکی من چلوں کی یہ زیادتیاں برداشت کے باہر کی چیزیں ہیں. ایشیا کیا' ساری دنیا کی جنتا کے خلاف یہ مجرمانہ حرکتیں ہیں جن کو تو بند ہی ہونا چاہئے ۔ جیسا کہ چینی دیش منسٹر چو آن لیکی نے 24 فروری کو کہا تھا—''اگر دنیا کے لوگ زور شور کے ساتھ اس جرم کو نہیں روکتے ہیں تو جو غضب آج کوریا کے امن پسند لوگوں پر ڈھائے جا رہے ہیں وہ کل دنیا کے امن پسند لوگوں پر ڈھائے جائیں گے ۔''

बहुत बड़े बलिदान के बाद जो विदेशी हुन्डी हमने इकट्ठी की थी वह पहले ही ऐसी चीज़ों की खरीदारी में बरबाद कर दी गई है जो या तो इस देश में पैदा की जा रही हैं या की जा सकती थीं और न बहुत ज़रूरी ही हैं .

गांधीजी ने स्वदेशी का एक नया मतलब हमें बताया. स्वदेशी का मतलब पहले तो गांव में बनी हुई चीज़ें हैं और केवल उसके बाद ही हिन्दुस्तान में बनी हुई चीज़ें होना चाहिए. यह सम्मेलन बड़े आग्रह के साथ जनता से अपील करता है कि वह गांव की बनी हुई चीज़ें खरीदे और जब गांव की बनी हुई चीज़ें न मिलें तब ही हिन्दुस्तान की बनी हुई चीज़ें खरीदे; लेकिन विदेशी चीज़ें तो जब तक उनका खरीदना बिल्कुल लाज़मी न हो और हिन्दुस्तान की बनी हुई उसके जोड़ की चीज़ें मिलती ही न हों, तब तक कभी नहीं खरीदे. आगे यह सम्मेलन हिन्द सरकार से अपील करता है कि वह विदेशी ब्योपार पर पाबन्दी लगाए और स्वदेशी माल की हिफ़ाज़त करने के लिए जहां तक ज़रूरी हो रोज़ के खर्च की चीज़ों का बाहर से आना बन्द कर दे.

بہت بڑے بلیدان کے بعد جو ودیشی ہنڈی ہم نے اکٹھی کی تھی وہ پہلے ہی ایسی چیزوں کی خریداری میں برباد کر دی گئی ہے جو یا تو اس دیش میں پیدا کی جا رہی ہیں یا کی جا سکتی تھیں اور نہ جو بہت ضروری ہی ہیں .

گاندھی جی نے سودیشی کا ایک نیا مطلب ہمیں بتایا . سودیشی کا مطلب پہلے تو گاؤں میں بنی ہوئی چیزیں ہیں اور کیول اُسکے بعد ہی ہندستان میں بنی چیزیں ہونا چاہئیے . یہ سمیلن بڑے آگرہ کے ساتھ جنتا سے اپیل کرتا ہے کہ وہ گاؤں کی بنی ہوئی چیزیں خریدے اور جب گاؤں کی بنی ہوئی چیزیں نہ ملیں تب ہی ہندستان کی بنی ہوئی چیزیں خریدے؛ لیکن ودیشی چیزیں تو جب تک اُن کا خریدنا بالکل لازمی نہ ہو اور ہندستان کی بنی ہوئی اسکے جوڑ کی چیزیں ملتی ہی نہ ہوں تب تک کبھی نہیں خریدیں. آگے یہ سمیلن ہند سرکار سے اپیل کرتا ہے کہ وہ ودیشی بیوپار پر پابندی لگائے اور سودیشی مال کی حفاظت کرنے کے لئے جہاں تک ضروری ہو روز کے خرچ کی چیزوں کا باہر سے آنا بند کر دے.

शान्ति कान्फ्रेंस के लिए अपील

अमरीका के साम्राज शाहों के दिल में सारी दुनिया के ऊपर छा जाने का बड़ा भारी पागल पन सवार है. रोज़ रोज़ वह जहां मुमकिन हो सकता है अपने फ़ौजी अड्डे बनाते चले जा रहे हैं. योरप में पच्छिम जरमनी को हथियार बन्द कर रहे हैं और एशिया में जापान को. उनकी यह मराज़ पिथी सिर्फ़ इसलिए है कि दुनिया को शान्ति से हटा कर दूसरी जंग की भट्टी में झोंक दें.

एशिया में हम देखते हैं कि अमरीकन पूंजीपतियों और लड़ाई के प्यासों ने अपने पंजे जापान में बड़ी मज़बूती से जमा लिए हैं; चीन का वह इलाक़ा जिसे तईवान या फ़ारमूसा कहते हैं, घेर रक्खा है और कोरिया में तो उनकी चढ़ाई चल ही रही है. जापान को और भी ज़ियादा हथियार बन्द कर अपने मनसूबे पूरे करने के लिए उन्होंने दुनिया के लोगों की राय खिलाफ़ होनेके बावजूद, दुनिया के ऊपर जापानी सुलहनामा नाम की एक चीज़ थोप दी जो ग़ैर क़ानूनी है और एक तरफ़ा है. इस सुलहनामे की चर्चा में चीन, रूस, हिन्दुस्तान, बर्मा जैसे बड़े बड़े मुल्क शरीक भी नहीं हुए. यही नहीं बल्कि इन अमरीकी जंग पसन्दों ने 28 अप्रैल 1952 से इस ग़ैर क़ानूनी सुलहनामे को चालू भी

شانتی کانفرنس کے لئے اپیل

امریکہ کے سامراج شاہوں کے دل میں ساری دنیا کے اوپر چھا جانے کا بڑا بھاری پاگل پن سوار ہے . روز روز وہ جہاں ممکن ہوسکتا ہے اپنے فوجی اڈے بناتے چلے جا رہے ہیں . یورپ میں پچھم جرمنی کو . ہتھیار بند کر رہے ہیں اور ایشیا میں جاپان کو اُن کی یہ مغز پچی صرف اِس لئے ہے کہ دنیا کو شانتی سے ہٹاکر دوسری جنگ کی بھٹی میں جھونک دیں .

ایشیا میں ہم دیکھتے ہیں کہ امریکن پونجی پتیوں اور لڑائی کے پیاسوں نے اپنے پنجے جاپان میں بڑی مضبوطی سے جما لئے ہیں . چین کا وہ علاقہ جسے تئی وان یا فارموسا کہتے ہیں گھیر رکھا ہے اور کوریا میں تو اب بھی اُن کی چڑھائی چل ہی رہی ہے . جاپان کو اور بھی زیادہ ہتھیار بند کر اپنے منصوبے پورے کرنے کے لئے اُنہوں نے دنیا کے لوگوں کی رائے خلاف ہونے کے باوجود، دنیا کے اوپر جاپانی صلحنامہ نام کی ایک چیز تھوپ دی جو غیر قانونی ہے اور ایک طرفہ ہے . اِس صلح نامے کی چرچا میں چین، روس، ہندستان، برما جیسے بڑے بڑے ملک شریک بھی نہیں ہوئے. یہی نہیں بلکہ اِن امریکی جنگ پسندوں نے 28 اپریل 1952 سے اِس غیر قانونی صلحنامے کو چالو بھی

2. आमदनी ठहराव

"कम से कम आमदनी इतनी होनी चाहिए कि उससे खाना, कपड़ा और रहने की जरूरतें मुनासिब ढंग से पूरी हो जायँ. आज की बाज़ार की दरों को देखते हुए एक औसत परिवार के लिए यह तादाद सौ रुपये माहवारी रखी जा सकती है. ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि इस कम से कम निशान पर हम जल्द से जल्द पहुँच जायँ. माली जीवन के सभी पहलुओं में आमदनी की ऊँच-नीच को बराबर कर देना चाहिए. इस तरह की समाज व्यवस्था में कम से कम और ज़ियादा से ज़ियादा आमदनियों का अन्तर इतना नहीं होना चाहिए कि वह जनता जी आंखों में चुभता रहे."

"आमदनी की तैशुद ज़ियादा से ज़ियादा हद का पालन सभी माली तवक़ों से मज़बूती के साथ कराया जाना चाहिए और किसी के भी पास इतनी दौलत नहीं रहने देनी चाहिए कि उसे तय की हुई ऊपरी हद से भी ज़ियादा आमदनी हो. इस समय सब आमदनियों की ज़ियादा से ज़ियादा तादाद मौजूदा कम से कम का बीस गुना तय करके, मुनासिब मियाद के भीतर उसे कम से कम के दस गुना पर ले आना चाहिए."

दो बरस से ऊपर हुआ जब सर्वोदय योजना में इन ठहरावों को शामिल किया गया था लेकिन इन पर अमल करने के लिए अभी तक कुछ नहीं किया गया. देश में आमदनी के जो फ़र्क़ आज हैं उसे और ज़ियादा वक़्त तक जारी रहने देना गवारा नहीं किया जा सकता. यह सम्मेलन इसलिए बड़े ज़ोर के साथ सर्व सेवा संघ से इसरार करता है कि वह हिन्दुस्तान के लोगों को पुकार दे कर वह 31 मार्च 1953 तक बिना देर किए सर्वोदय योजना की ऊपर की बातों पर अमल करने के लिए अहिंसात्मक साधनों से काम ले और उसके मुताबिक़ एक आन्दोलन शुरू कर दे.

3. स्वदेशी आन्दोलन

आज़ादी के बाद जिस तादाद में रोज़ के ख़र्च की चीज़ें देश में बाहर से आ रही हैं उसे देखकर यह सम्मेलन बहुत परेशान है. रोज़ रोज़ हालत बिगड़ती ही जाती है और छोटे बड़े सभी उद्योगों पर इसका बुरा असर पड़ रहा है. सन 1905 से जो लोग स्वदेशी के लिए ख़ूब लड़े थे उनकी स्वदेशी भावना भी तेज़ी से ख़त्म होती जा रही है. इतने लम्बे समय की ग़ुलामी के कारन हिन्दुस्तान का माली ढांचा उखड़ गया है और फिर इसे बराबर करने के लिए कोई कोशिश नहीं हो रही है. आज दुनिया के देश अपने अपने देश के लिए ज़रूरत का सामान बनाने वाले राष्ट्रीय उद्योगों को विदेशों से आने वाली चीज़ों के ख़िलाफ़ बचाने में और स्वदेशी धर्म को ज़िन्दा रखने में लगे हुए हैं, पर हमारी सरकार इस दिशा में कोई ख़ास कोशिश नहीं कर रही है.

2. آمدنی ٹھہراؤ

" کم سے کم آمدنی اتنی ہونی چاہئے کہ اس سے کھانا، کپڑا اور رہنے کی ضرورتیں مناسب ڈھنگ سے پوری ہو جائیں۔ آج کی بازار کی دروں کو دیکھتے ہوئے ایک اوسط پریوار کے لئے یہ تعداد سو روپئے ماہواری رکھی جا سکتی ہے۔ ایسی کوشش کرنی چاہئے کہ اِس کم سے کم نشان پر ہم جلد سے جلد پہنچ جائیں۔ مالی جیون کے سبھی پہلوؤں میں آمدنی کی اونچ نیچ کو برابر کر دینا چاہئے۔ اِس طرح کی سماج ویوستھا میں کم سے کم اور زیادہ سے زیادہ آمدنیوں کا انتر اتنا نہیں ہونا چاہئے کہ وہ جنتا کی آنکھوں میں چبھتا رہے۔"

"آمدنی کی طے شدہ زیادہ سے زیادہ حد کا پالن سبھی مالی طبقوں سے مضبوطی کے ساتھ کرایا جانا چاہئے اور کسی کے بھی پاس اتنی دولت نہیں رہنے دینی چاہئے کہ اسے طے کی ہوئی اوپری حد سے بھی زیادہ آمدنی ہو۔ اِس سمے سب آمدنیوں کی زیادہ سے زیادہ تعداد موجودہ کم سے کم کا بیس گنا طے کر کے، مناسب میعاد کے بھیتر اسے کم سے کم کے دس گنا پر لے آنا چاہئے۔"

دو برس سے اوپر ہوا جب سروودے یوجنا میں ان ٹھہراؤں کو شامل کیا گیا تھا لیکن اِن پر عمل کرنے کے لئے ابھی تک کچھ نہیں کیا گیا۔ دیش میں آمدنی کے جو فرق آج ہیں اسے اور زیادہ وقت تک جاری رہنے دینا گوارہ نہیں کیا جا سکتا۔ یہ سمیلن اِس لئے بڑے زور کے ساتھ سرو سیوا سنگھ سے اصرار کرتا ہے کہ وہ ہندستان کے لوگوں کو پکار دے کر وہ 31 مارچ 1953 تک بنا دیر کئے سروودے یوجنا کی اوپر کی باتوں پر عمل کرنے کے لئے اہنسات‌مک سادھنوں سے کام لے اور اسکے مطابق ایک آندولن شروع کر دے۔

3. سودیشی آندولن

آزادی کے بعد دیش میں جس تعداد میں روز کے خرچ کی چیزیں دیش میں باہر سے آ رہی ہیں اسے دیکھکر یہ سمیلن بہت پریشان ہے۔ روز روز حالت بگڑتی ہی جاتی ہے اور چھوٹے بڑے سبھی ادیوگوں پر اس کا برا اثر پڑ رہا ہے۔ سن 1905 سے جو لوگ سودیشی کے لئے خوب لڑے تھے اُن کی سودیشی بھاؤنا بھی تیزی سے ختم ہوتی جا رہی ہے۔ اتنے لمبے سمے کی غلامی کے کارن ہندستان کا مالی ڈھانچہ اُکھڑ گیا ہے اور پھر اِسے برابر کرنے کے لئے کوئی کوشش نہیں ہو رہی ہے۔ آج دنیا کے دیش اپنے اپنے دیش کے لئے ضرورت کا سامان بنانے والے راشٹری ادیوگوں کو ودیشوں سے آنے والی چیزوں کے خلاف بچانے میں اور سودیشی دھرم کو زندہ رکھنے میں لگے ہوئے ہیں، پر ہماری سرکار اِس دشا میں کوئی خاص کوشش نہیں کر رہی ہے۔

नते ही मौजूदा समाजी व माली ढांचे के कारन समाज में जो मोटी मोटी दीवारें खड़ी हुई हैं उन्हें दूर करने के लिए क़दम उठाया जायेगा. यह उम्मीदें निरी उम्मीदें ही रह गईं.

आज दुनिया में सब जगह माली बराबरी की मांग हो रही है. लेकिन यह बराबरी उसी समय मुमकिन है जब पैदावार के साधनों पर असली पैदाकार की, जो ख़ास कर किसान, मज़दूर और कारीगर हैं, साफ़ साफ़ मालिकी होगी. हिन्दुस्तान ख़ास तौर से एक खेती प्रधान देश है और इसलिये ज़मीन ही पैदावार का सब से बड़ा अकेला साधन है. हिन्दुस्तान आज अनाज के लिहाज़ से स्वावलम्बी नहीं है. पिछले चार बरस से हमारे यहां अनाज संकट चल रहा है लेकिन फिर भी भूकमरी के बढ़ते हुए सवाल को हल करने के वास्ते ज़ियादा अनाज उपजाने के लिए किसानों का उत्साह बढ़ाने में सरकार नाकामयाब रही है.

इस बदक़िस्मती का एक ख़ास कारन यह भी रहा है कि जो असल में ज़मीन पर काम करता है उसे ज़ियादा पैदावार उपजाने के लिए कोई रुजहान नहीं है. ज़मीन आम तौर से और ज़ियादातर उन लोगों के हाथ में होती है जो ख़ुद उसे जोतते हैं न बोते हैं. इसलिये यह बहुत ज़रूरी हो गया है कि जागीरदारी की तरह के जितने भी ज़मीन की मालिकी के हक़ हैं उन सब को बिना मुआवज़े के रद्द कर दिया जाय और ज़मीन जो लोग ख़ुद जोतते हैं उन में ठीक ठीक बांट दी जाय. माली बराबरी क़ायम करने के लिए ज़मीनों की फिर बंटाई पहला बड़ा क़दम होना चाहिये. इस से देश में एक ऐसी हवा तैयार होगी जिस के कारन लोग माली तरक़्क़ी के इस ज़ाहिर मैदान में देश की बेहतरी के लिए ज़ोर शोर से आगे आयेंगे.

इस भारी अनाज संकट और आम माली मुसीबतों और दुविधाओं को ध्यान में रखते हुए यह सम्मेलन सर्व सेवा संघ से अपील करता है कि वह सरकार से कहे कि 31 मार्च सन 1953 के पहले विधान में ऐसे मुमकिन बदलाव करने के लिए क़दम उठाये जायें जिस से जुदा जुदा सूबों की सरकारें ज़मीन पर हर तरह की छिपी मालिकी को बिना मुआवज़े के ख़त्म कर सकें और ज़मीन जोतने बोने वाले किसानों में उसकी फिर बंटाई कर सकें.

अगर सरकार समय पर इस मांग को पूरा करने में नाकाम रहती है तो यह सम्मेलन सर्व सेवा संघ से बड़े जोश के साथ अपील करता है कि वह इस मक़सद को पाने के लिए सरकार और ज़मींदार के ख़िलाफ़ सारे अहिंसात्मक साधनों का उपयोग करने के लिए जनता का संगठन करे.

بنتےهی موجودہ سماجی و مالی ڈهانچے کے کارن سماج میں جو موٹی موٹی دیواریں کهڑی هوئی هیں انهیں دور کرنے کے لئے قدم اُٹهایا جائے گا ۔ یہ اُمیدیں نری اُمیدیں هی رہ گئیں ۔

آج دنیا میں سب جگہ مالی برابری کی مانگ هو رهی هے ۔ لیکن یہ برابری اُسی سمے ممکن هے جب پیداوار کے سادهنوں پر اصلی پیداکار کی' جو خاصکر کسان' مزدور اور کاریگر هیں' صاف صاف مالکی هوگی ۔ هندستان خاص طور سے ایک کهیتی پردهان دیش هے اور اس لئے زمین هی پیداوار کا سب سے بڑا اکیلا سادهن هے ۔ هندستان آج اناج کے لحاظ سے سواولمبی نهیں هے ۔ پچهلے چار برس سے همارے یہاں اناج سنکٹ چل رها هے لیکن پهر بهی بهکمری کے بڑهتے هوئے سوال کو حل کرنے کے واسطے زیادہ اناج اُپجانے کے لئے کسانوں کا اُتساہ بڑهانے میں سرکار نا کامیاب رهی هے۔

اِس بدقسمتی کا ایک خاص کارن یہ بهی رها هے کہ جو اصل میں زمین پر کام کرتا هے اُسے زیادہ پیداوار اُپجانے کے لئے کوئی رجحان نهیں هے ۔ زمین عام طور سے اور زیادہ تر اُن لوگوں کے هاته میں هوتی هے جو خود اُسے جوتتے هیں نہ بوتے هیں ۔ اِس لئے یہ بہت ضروری هوگیا هے کہ جاگیرداری کی طرح کے جتنے بهی زمین کی مالکی کے حق هیں اُن سب کو بنا معاوضے کے رد کر دیا جائے اور زمین جو لوگ خود جوتتے هیں اُن میں ٹهیک ٹهیک بانٹ دی جائے ۔ مالی برابری قائم کرنے کے لئے زمینوں کی پهر بنٹائی پہلا بڑا قدم هونا چاهئے ۔ اس سے دیش میں ایک ایسی هوا تیار هوگی جس کے کارن لوگ مالی ترقی کے اس ظاهر میدان میں دیش کی بهتری کے لئے زور شور سے آگے آئیں گے ۔

اِس بهاری اناج سنکٹ اور عام مصیبتوں اور اسودهاؤں کو دهیان میں رکهتے هوئے یہ سمیلن سرو سیوا سنگه سے اپیل کرتا هے کہ وہ سرکار سے کہے کہ 31 مارچ سن 1953 کے پہلے ودهان میں ایسے ممکن بدلاؤ کرنے کے لئے قدم اُٹهائے جائیں جس سے جدا جدا صوبوں کی سرکاریں زمین پر هر طرح کی چهپی مالکی کو بنا معاوضے کے ختم کر سکیں اور زمین جوتنے بونے والے کسانوں میں اُسکی پهر بنٹائی کر سکیں ۔

اگر سرکار سمے پر اس مانگ کو پورا کرنے میں ناکام رهتی هے تو یہ سمیلن سرو سیوا سنگه سے بڑے جوش کے ساته اپیل کرتا هے کہ وہ اِس مقصد کو پانے کے لئے سرکار اور زمیندار کے خلاف سارے اهنساتمک سادهنوں کا اُپیوگ کرنے کے لئے جنتا کا سنگهٹن کرے ۔

मैं बोली—फिर.

बोले—फिर क्या, वहां निरंजन शराब पीता मिला.

मैं बोली—फिर आपने क्या किया ?

बोले—मैं क्या करता. मुझे देखते ही उसने आंख बन्द कर ली और सिर झुका लिया. मैं चला आया और अब खाना खा रहा हूँ.

मैं बोली—तो आपने उससे कुछ नहीं कहा.

बोले—तो क्या दस दोस्तों में उसकी इज्ज़त लेता और फिर उस निरंजन की जिसकी शराब न अभी शरम मिटा पाई है न लिहाज़ पर हमला कर पाई है.

मैं आगे कुछ न पूछ पाई और चुप रह गई.

निरंजन बोला—यह बात है ! यह हैं मेरे पिता ! मेरी आबरू का इतना ख्याल ! तो मां, निरंजन भी ऐसे बाप का ऐसा ही बेटा साबित होगा. पिताजी को निरंजन की आबरू का इतना ख्याल है तो निरंजन को पिताजी की आबरू का ख्याल है. अब जीते जी शराब इस हलक़ के नीचे नहीं उतरेगी और निरंजन की सारी भक्ति पिता जी के क़दमों पर निछावर होगी.

मां ने आवेश में आ कर निरंजन को ऐसे गले लगा लिया मानो वह तीन बरस का बच्चा हो और वह एकदम बे होश हो गई.

—भगवानदीन

میں بولی—پھر .

بولے—پھر' وہاں نرنجن شراب پیتا ملا .

میں بولی— پھر آپ نے کیا کیا ؟

بولے—میں کیا کرتا . مجھے دیکھتے ہی اس نے آنکھ بند کر لی اور سر جھکا لیا . میں چلا آیا اور اب کھانا کھا رہا ہوں .

میں بولی—تو آپ نے اس سے کچھ نہیں کہا .

بولے—تو کیا دس دوستوں میں اسکی عزت لیتا اور پھر اس نرنجن کی جسکی شراب نہ ابھی شرم مٹا پائی ہے اور نہ لحاظ' پر حملہ کر پائی ہے .

میں آگے کچھ نہ پوچھ پائی اور چپ رہ گئی .

نرنجن بولا—یہ بات ہے ! یہ ہیں میرے پتا ! میری آبرو کا اتنا خیال ! تو ماں' نرنجن بھی ایسے باپ کا ایسا ہی بیٹا ثابت ہوگا . پتا جی کو نرنجن کی آبرو کا اتنا خیال ہے تو نرنجن کو بھی پتاجی کی آبرو کا خیال ہے . اب جیتے جی شراب اس حلق کے نیچے نہیں اترے گی اور نرنجن کی ساری بھگتی پتاجی کے قدموں پر نچھاور ہوگی .

ماں نے آویش میں آکر نرنجن کو ایسے گلے لگا لیا مانو وہ تین برس کا بچہ ہو اور وہ ایک دم بیہوش ہو گئی.

— بھگوان دین

आर्थिक समता मंडल के ठहराव

[आंध्र के मशहूर शहर बैजवाड़ा से दो मील के फ़ासले पर पटामाटा नाम का एक गांव है जहां भाई जी. रामचन्द्र राव (गोरा) रचनात्मक काम का एक केन्द्र चला रहे हैं. वहां पर 30-31 मई को डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा की सदारत में रचनात्मक कारकुनों का एक बड़ा सम्मेलन हुआ और आर्थिक समता मंडल नाम की एक संस्था बनाई गई. उसमें जो ठहराव पास हुए वह हम नीचे देते हैं—एडीटर]

जमींदारी अन्त और जमीन की फिर—बंटाई.

हिन्दुस्तान को आज़ाद हुए लगभग पांच साल हो गए. आज़ादी में दूसरी चीज़ों के साथ कड़ा श्रम करने वाले मज़दूर तबक़े की माली आज़ादी भी शामिल है. इसलिये यह उम्मीद की जाती थी कि आज़ाद भारत की सरकार

آرتھک سمتا منڈل کے ٹھہراؤ

[آندھر کے مشہور شہر بیجواڑا سے دو میل کے فاصلے پر پٹا ماٹا نام کا ایک گاؤں ہے جہاں بھائی جی. رام چندر راؤ (گورا) رچناتمک کام کا ایک کیندر چلا رہے ہیں . وہاں پر 30-31 مئی کو ڈاکٹر جے . سی . کمارپا کی صدارت میں رچناتمک کارکنوں کا ایک بڑا سمیلن ہوا اور آرتھک سمتا منڈل نام کی ایک سنستھا بنائی گئی . اس میں جو ٹھہراؤ پاس ہوئے وہ نیچے دیتے ہیں—ایڈیٹر]

زمینداری انت اور زمین کی پھر—بٹائی .

ہندستان کو آزاد ہوئے لگ بھگ پانچ سال ہوگئے . آزادی میں دوسری چیزوں کے ساتھ کڑا شرم کرنے والے مزدور طبقے کی مالی آزادی بھی شامل ہے . اس لئے یہ امید کی جاتی تھی کہ آزاد بھارت کی سرکار

आया कि अब वह जीत न सब पायेगा और फिर उसे अपना ख्याल आया कि इतने दिनों इस बात को छिपाये रक्खा इसके बदले में न जाने मुझे क्या सज़ा दी जायगी ? घर निकाला या इससे भी बढ़कर कोई बात !

× × ×

सेठ जी घर पहुँचे. थोड़ी देर ठहरे और फिर दफ़्तर चले गये.

× × ×

निरंजन ने क्लब छोड़ कर कहीं अकेले में बैठ, मुंह में उंगली डाल कर क़ै की. ख़ूब पानी पिया और फिर क़ै की. घंटे भर इधर उधर घूमता रहा. घर के दरवाज़े पर पहुँच कर नौकर से पूछा—

पिताजी घर आये थे ?

हां, अभी आये तो थे !

अभी अन्दर हैं ?

नहीं, वह तो फ़ौरन ही दफ़्तर चले गये.

निरंजन अब घर के अन्दर गया. छिपकर मां के चेहरे को झांका, मालूम हुआ उसके चेहरे पर कोई उदासी नहीं है. वह आगे बढ़ा, मां ने उसे फ़ौरन देख लिया, बोली—आज तो तुम बड़ी जल्दी आ गये, बेटा !

हां, अम्मा जल्दी आ गया.

आज तो तुम्हारे पिताजी ने तुम्हें देख लिया.

हां, देख तो लिया, क्या कहते थे ?

कुछ नहीं कहते थे.

नहीं अम्मां, एक एक बात बताओ.

अच्छा ले सुन.

मुझे तो जैसे ही मालूम हुआ कि तेरे पिताजी तुझे देखने गये हैं मेरा बुरा हाल हो गया. और जैसे ही तेरे पिता तुझे देख कर आये, मुझसे तेरे बारे में बात किये बग़ैर बोले—लाओ कुछ खाने को दो. मैंने कांपते कांपते हाथों से उन्हें तश्तरी में मिठाई और कुछ नमकीन दिया. उन्होंने रोज़ की तरह हंसते हंसते और इधर उधर की बातें करते खाना शुरू कर दिया. तेरा कोई ज़िक्र ही नहीं किया. आख़िर मैंने ही पूछा—तुम दफ़्तर से आ रहे हो. बोले—दफ़्तर से नहीं, क्लब से. मैंने पूछा—क्लब किसलिये, उस गन्दे क्लब घर ! बोले—हां, उसी गन्दे क्लब घर.

मैंने पूछा—आख़िर किसलिये ?

बोले—वह तुम्हारा एक उपदेशक आया हुआ है न, वह मुझे वहां ले गया यह दिखाने के लिए कि निरंजन शराब पीता है.

یا کہ اب وہ جیتنا نہ بچ پائے گا . پھر اسے اپنا خیال آیا کہ اتنے دنوں اس بات کو چھپائے رکھا اِسکے بدلے میں نہ جانے مجھے کیا سزا دی جائے گی ؟ گھر نکلا یا اِس سے بھی بڑھکر کوئی بات !

× × ×

سیٹھ جی گھر پہنچے . تھوڑی دیر ٹھہرے اور پھر دفتر چلے گئے .

× × ×

نرنجن نے کلب چھوڑ کر کہیں اکیلے میں' بیٹھ منہ میں انگلی ڈالکر قے کی . خوب پانی پیا اور پھر قے کی . گھنٹے بھر اِدھر اُدھر گھومتا رہا . گھر کے دروازے پر پہنچکر نوکر سے پوچھا—

پتا جی' گھر آئے تھے ؟

ہاں ابھی آئے تو تھے !

ابھی اندر ہیں ؟

نہیں' وہ تو فوراً ہی دفتر چلے گئے .

نرنجن اب گھر کے اندر گیا . چھپ کر ماں کے چہرے کو جھانکا' معلوم ہوا اس کے چہرے پر کوئی اداسی نہیں . وہ آگے بڑھا' ماں نے اسے فوراً دیکھ لیا' بولی—آج تو تم بڑی جلدی آگئے' بیٹا !

ہاں' اماں جلدی آگیا .

آج تو تمہارے پتاجی نے تمہیں دیکھ لیا .

ہاں' دیکھ تو لیا . کیا کہتے تھے ؟

کچھ نہیں کہتے تھے .

نہیں اماں' ایک ایک بات بتاؤ .

اچھا لے سن .

مجھے تو جیسے ہی معلوم ہوا کہ تیرے پتاجی تجھے دیکھنے گئے ہیں میرا برا حال ہوگیا . اور جیسے ہی تیرے پتا تجھے دیکھکر آئے' مجھ سے تیرے بارے میں بات کئے بغیر بولے—لاؤ کچھ کھانے کو دو . میں نے کانپتے کانپتے ہاتھوں سے انہیں تشتری میں مٹھائی اور کچھ نمکین دیا . انہوں نے روز کی طرح ہنستے ہنستے اور اِدھر اُدھر کی باتیں کرتے کھانا شروع کر دیا . تیرا کوئی ذکر ہی نہیں کیا . آخر میں نے ہی پوچھا—تم دفتر سے آ رہے ہو . بولے—دفتر سے نہیں' کلب سے . میں نے پوچھا—کلب کس لئے' اُس گندے کلب گھر ! بولے—ہاں' اُسی گندے کلب گھر .

میں نے پوچھا—آخر کس لئے ؟

بولے—وہ تمہارا ایک اُپدیشک آیا ہوا ہے نہ' وہ مجھے وہاں لے گیا یہ دکھانے کے لئے کہ نرنجن شراب پیتا ہے .

तीन बरस से लड़का शराब पीता है. उसका कहना है कि अगर उसे शराब न मिले तो वह मर जाय. यह सब तो है मगर न मिल का कोई नौकर न शहर का कोई आदमी सेठ जी के कान तक यह बात पहुँचा सकता है कि आपका लड़का शराब पीता है. हर एक को यह अन्देशा है कि सेठ जी तक खबर पहुँची नहीं कि लड़का खत्म और फिर वह घर से बच कर ही अपनी जान छुड़ा सकता है.

(2)

सेठ जी आपका लड़का और शराब पीये—एक नये धर्मोपदेशक ने बिना सोचे समझे एकदम यह बात सेठ जी से कह डाली.

मेरा लड़का और शराब—बहुत धीरे ज़रा भी आवेश में आये बगैर सेठ जी ने जवाब दिया.

जी हां, चलिये मैं आपको अभी आपकी आंखों दिखा दूं.

सेठ जी फ़ौरन उठ लिये और उस क्लब में जा पहुँचे जहां उपदेशक जी उन्हें ले गये. सेठ जी जैसे ही अन्दर दाखिल हुए सामने ही अपने लड़के पर नज़र पड़ी. वह शराब का पेग मुंह से लगाये पी रहा था. सेठ जी वहीं खड़े हो गये. लड़के की आंख जैसे ही सेठ जी यानी अपने पिता पर पड़ी उसने आंखें बन्द कर लीं और सिर नीचे कर लिया.

सेठ जी उलटे पांव लौट गये. उपदेशक से उन्होंने इतना ही कहा—हां, मेरा लड़का शराब पीता है, बहुतों के लड़के पीते हैं.

उपदेशक ने आगे कुछ उपदेश बघारना चाहा पर सेठ जी का रुख देखकर चुप रहने ही में उसने अपना भला समझा.

× × ×

निरंजन, हमने तो सुना था कि तुम्हारे बाप बड़े गुस्सैल हैं, पर आज तो उन्होंने तुमसे कुछ नहीं कहा और उनके साथ जो एक आदमी था, बहरे का यह कहना है, उसको ऐसी तरह फटकारा मानो वह यह कह रहे हों कि मेरा बेटा शराब पीता है तो तुम्हें क्या ?

निरंजन बोला—मैं इसका कुछ जवाब नहीं दे सकता. आप जो चाहें समझें. मैं अब आप से इजाज़त लेता हूँ और मेरा ख्याल है कि यह आखिरी इजाज़त है.

× × ×

निरंजन की मां को जैसे ही यह मालूम हुआ कि निरंजन पिता को निरंजन के शराब पीने का पता चल गया है वैसे ही उसका तो दम निकल गया. पहले तो उसे बेटे का ख्याल

تین برس سے لڑکا شراب پیتا ہے . اُسکا کہنا ہے کہ اگر اُسے شراب نہ ملے تو وہ مر جائے. یہ سب تو ہے مگر نہ مل کا کوئی نوکر نہ شہر کا کوئی آدمی سیٹھ جی کے کان تک یہ بات پہنچا سکتا ہے کہ آپ کا لڑکا شراب پیتا ہے . ہر ایک کو یہ اندیشہ ہے کہ سیٹھ جی تک خبر پہنچی نہیں کہ لڑکا ختم اور پھر وہ گھر سے بچکر ہی اپنی جان چھڑا سکتا ہے .

(2)

سیٹھ جی آپ کا لڑکا اور شراب پیئے—ایک نئے دھرمو اپدیشک نے بنا سوچے سمجھے ایک دم یہ بات سیٹھ جی سے کہ ڈالی .

میرا لڑکا اور شراب—بہت دھیرے ذرا بھی آویش میں آئے بغیر سیٹھ جی نے جواب دیا .

جی ہاں، چلئے میں آپکو ابھی آپکی آنکھوں دکھا دوں .

سیٹھ جی فوراً اُٹھ لیئے اور اُس کلب میں جا پہنچے جہاں اُپدیشک جی اُنھیں لے گئے . سیٹھ جی جیسے ہی اندر داخل ہوئے سامنے ہی اپنے لڑکے پر نظر پڑی . وہ شراب کا پیگ منہ سے لگائے تھا . سیٹھ جی وہیں کھڑے ہوگئے . لڑکے کی آنکھ جیسے ہی سیٹھ جی یعنی اپنے پتا پر پڑی اُس نے آنکھیں بند کر لیں اور سر نیچے کر لیا .

سیٹھ جی اُلٹے پاؤں لوٹ گئے . اُپدیشک سے اُنھوں نے اتنا ہی کہا—ہاں، میرا لڑکا شراب پیتا ہے، بہتوں کے لڑکے پیتے ہیں .

اُپدیشک نے آگے کچھ اُپدیش بگھارنا چاہا پر سیٹھ جی کا رخ دیکھکر چپ رہنے ہی میں اس نے اپنا بھلا سمجھا .

× × ×

نرنجن، ہم نے تو سنا تھا کہ تمہارے باپ بڑے غصیل ہیں، پر آج تو انھوں نے تم سے کچھ نہیں کہا اور ان کے ساتھ جو ایک آدمی تھا، بہرے کا یہ کہنا ہے، اُسکو ایسی طرح پھٹکارا مانو وہ یہ کہ رہے ہوں کہ میرا بیٹا شراب پیتا ہے تو تمہیں کیا ؟

نرنجن بولا—میں اِسکا کچھ جواب نہیں دے سکتا . آپ جو چاہیں سمجھیں . میں اب آپ سے اجازت لیتا ہوں اور میرا خیال ہے کہ یہ آخری اجازت ہے .

× × ×

نرنجن کی ماں کو جیسے ہی یہ معلوم ہوا کہ نرنجن کے پتا کو نرنجن کے شراب پینے کا پتہ چل گیا ہے ویسے ہی اس کا تو دم نکل گیا . پہلے تو اُسے بیٹے کا خیال

की शराब से बहुत चिढ़ है. सुना गया है कि सच्चा मुसलमान उस कपड़े को जला देगा जिस पर शराब की बूंद पड़ जाय पर हमारे सेठ दीपचन्द जी का यह हाल है कि अगर शराब उनके घर में घुस आये तोशायद वह मकान को आग लगा दें. उनके घरमें अगर मरता हुआ आदमी शहद देनेसे बच सके तो वह उस आदमी को मरने देंगे पर शहद की एक बूंद वह अपने घर नहीं आने देंगे क्योंकि उनका जैन धर्म शहद खाने की इजाज़त नहीं देता.

मिल के नौकरों में सेठ जी सच्चे समझे जाते हैं और सच बोलते भी हैं. हिंसा को जो कुछ उन्होंने समझ रक्खा है उससे पूरी तरह बचते हैं. इसी तरह चोरी से भी दूर रहते हैं. ब्रह्मचर्य के लिहाज़ से लंगोटी के बड़े पक्के हैं और परिग्रह का भी व्रत ले रक्खा है. पर उसमें उन्होंने इतनी ऊँची उड़ान ली है कि शायद ही उनकी ज़िन्दगी में कभी ऐसा मौक़ा आये कि उस हद तक पहुँच सके यानी पच्चीस लाख रुपया. दो सौ रुपया तनख़ा पाने वाले के लिए पच्चीस लाख की रक़म ऐसी है कि जब तक छप्पर फाड़ कर कोई उनके घर न डाल जाय तब तक नहीं मिल सकती.

एक सिफ़त उनमें और जिस के लिए वह मिल के नौकरों में नहीं सारे शहर में मशहूर हैं. और वह यह कि वह दूसरों की आबरू का उतना ध्यान रखते हैं जितना अपनी आबरू का. इस एक गुन की वजह से वह सबके बेहद प्यारे हो गये हैं.

न जाने किस तरह उनमें एक ऐब भी जगह पाये हुए है और वह है गुस्सा. और गुस्सा भी अपने ढंग का अनोखा जो सवार हो जाय तो किसी की जान लेकर ही छोड़े. गुस्से पर उनको क़ाबू पूरा है पर क़ाबू अपने क़िस्म का अनोखा है. जिस वक़्त उनको गुस्सा आता है उस वक़्त वह उस गुस्से के क़ाबू में नहीं आते. उस गुस्से को दबा कर कहीं रख लेते हैं और वही गुस्सा फिर कभी निकलता है जो ज्वालामुखी का लावा ही बन कर.

उनकी पत्नी भी उनसे मिलती जुलती हैं. उन्हीं जैसी नेक और उदार हैं.

ऐसे बाप के घर और ऐसी मां के पेट से पैदा लड़का जब बड़ा हो कर बुरी सोहबत में फंस जाय और शराब पीने लगे तो किसे दुख नहीं होगा ?

सेठ जी के लड़के निरंजन का यही हाल है. वह अगर अब तक बाप के गुस्से का शिकार नहीं बना तो इसमें लड़के की होशियारी कोई नहीं है, उसकी मां की होशियारी का हाथ है.

کی شراب سے بہت چڑھ ہے ۔ سنا گیا ہے کہ سچا مسلمان اُس کپڑے کو جلا دے گا جس پر شراب کی بوند پڑ جائے پر ہمارے سیٹھ دیپ چند جی کا یہ حال ہے کہ اگر شراب اُن کے گھر میں گھس آئے تو شاید وہ مکان کو آگ لگا دیں ۔ اُن کے گھر میں اگر مرتا ہوا آدمی شہد دینے سے بچ سکے تو وہ اُس آدمی کو مرنے دیں گے پر شہد کی ایک بوند وہ اپنے گھر نہیں آنے دینگے کیونکہ اُن کا جین دھرم شہد کھانے کی اجازت نہیں دیتا ۔

مل کے نوکروں میں سیٹھ جی سچے سمجھے جاتے ہیں اور سچ بولتے بھی ہیں ۔ ہنسا کو جو کچھ انہوں نے سمجھ رکھا ہے اُس سے پوری طرح بچتے ہیں ۔ اسی طرح چوری سے بھی دور رہتے ہیں ۔ برہمچریہ کے لحاظ سے لنگوٹی کے بڑے پکے ہیں اور پری گرہ کا بھی ورت لے رکھا ہے ۔ پر اسمیں انہوں نے اتنی اونچی اُڑان لی ہے کہ شاید ہی اُنکی زندگی میں کبھی ایسا موقع آئے کہ اُس حد تک پہنچ سکے یعنی پچیس لاکھ روپیہ ۔ دو سو روپیہ تنخواہ پانے والے کے لئے پچیس لاکھ کی رقم ایسی ہے کہ جب تک چھپر پھاڑ کر کوئی ان کے گھر میں نہ ڈال جائے تب تک نہیں مل سکتی ۔

ایک صفت اُن میں اور ہے جسکے لئے وہ مل کے نوکروں میں نہیں سارے شہر میں مشہور ہیں ۔ اور وہ یہ کہ وہ دوسروں کی آبرو کا اُتنا دھیان رکھتے ہیں جتنا اپنی آبرو کا ۔ اِس ایک گن کی وجہ سے وہ سب کے بے حد پیارے ہوگئے ہیں ۔

نہ جانے کسطرح اُن میں ایک عیب بھی جگہ پائے ہوئے ہے اور وہ ہے غصہ ۔ اور غصہ بھی اپنے ڈھنگ کا انوکھا جو سوار ہو جائے تو کسی کی جان لے کر ہی چھوڑے ۔ غصے پر اُن کو قابو پورا ہے پر قابو اپنے قسم کا انوکھا ہے ۔ جس وقت اُن کو غصہ آتا ہے اُس وقت وہ اُس غصے کے قابو میں نہیں آتے ۔ اُس غصے کو دبا کر کہیں رکھ لیتے ہیں اور وہی غصہ پھر کبھی نکلتا ہے جو جوالا مکھی کا لاوا ہی بن کر ۔

اُنکی پتنی بھی اُن سے ملتی جلتی ہیں ۔ انہیں جیسی نیک اور اُدار ہیں ۔

ایسے باپ کے گھر اور ایسی ماں کے پیٹ سے پیدا لڑکا جب بڑا ہو کر بری صحبت میں پھنس جائے اور شراب پینے لگے تو کسے دکھ نہیں ہوگا ؟

سیٹھ جی کے لڑکے نرنجن کا یہی حال ہے ۔ وہ اگر اب تک باپ کے غصے کا شکار نہیں بنا تو اِسمیں لڑکے کی ہوشیاری کا کوئی ہاتھ نہیں ہے اُسکی ماں کی ہوشیاری کا ہاتھ ہے ۔

पर इस बात पर हर एक को भरोसा था और अब भी है कि इस में विनोबा जी मश्रूवाला जी, काका कालेलकर और आप जैसे लोग हैं. पर अब दिन पर दिन इस बात की ज़रूरत महसूस होती जा रही है कि इस तहरीक से दिलचस्पी लेने वाले लोग इस तहरीक को किसी ख़ास मज़हब और जाति के लोगों तक महदूद होने से बचावें.

क्योंकि अगर सर्वोदय तहरीक थोड़े से लोगों तक महदूद हो कर रह गई तो उससे जो देश की भलाई होने वाली है वह न हो सकेगी.

हो सकता है कि आप सर्वोदय सम्मेलनों के ज़रूरत से ज़ियादा हिन्दू रंग के बारे में कहें कि अगर मुसलमान या दूसरे ग़ैर-हिन्दू इन सम्मेलनों में हिस्सा लेने लगें तो हिन्दू रंग आप से आप कम हो जाय. मगर जब तक मुसलमान ऐसे सम्मेलनों में सर्व समाजीपन की फ़िज़ा न पायेंगे वह कैसे शामिल हो सकते हैं. इसलिये तहरीक के अगुवा और दूसरे लोग जो ठीक मानी में उसमें सर्व समाजीपन की फ़िज़ा पैदा करना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि वह ख़ुद एक पल के लिये न ऐसा तरीक़ा अख़्तियार करें और न दूसरों को करने दें जिससे ग़ैर हिन्दुओं को यह महसूस करने का मौक़ा मिले कि सर्वोदय सम्मेलन किसी ख़ास जाति या मज़हब के लोगों का ही जलसा है.

आख़िर में मैं आप से उम्मीद करता हूँ कि आप मेरे इस ख़त पर ध्यान देंगे और मेरी इस अपील को 'नया हिन्द' के ज़रिये दूसरों तक भी पहुँचा देंगे.

आपका—

रसूल अहमद 'अबोध'
वर्धा, 2. 6. 52

پر اِس بات پر ہر ایک کو بھروسہ تھا اور اب بھی ہے کہ اِس میں ونوبا جی' مشروالا جی' کاکا کالیلکر اور آپ جیسے لوگ ہیں. پر اب دن پر دن اِس بات کی ضرورت محسوس ہوتی جا رہی ہے کہ اِس تحریک سے دلچسپی لینے والے لوگ اِس تحریک کو کسی خاص مذہب اور جاتی کے لوگوں تک محدود ہونے سے بچاویں.

کیونکہ اگر سرودے تحریک تھوڑے سے لوگوں تک محدود ہوکر رہ گئی تو اُس سے جو دیش کی بھلائی ہونے والی ہے وہ نہ ہوسکیگی.

ہوسکتا ہے کہ آپ سرودے سمیلنوں کے ضرورت سے زیادہ ہندو رنگ کے بارے میں کہیں کہ اگر مسلمان یا دوسرے غیر ہندو اِن سمیلنوں میں حصہ لینے لگیں تو ہندو رنگ آپ سے آپ کم ہو جائے. مگر جب تک مسلمان ایسے سمیلنوں میں سرو سماجی پن کی فضا نہ پائینگے وہ کیسے شامل ہوسکتے ہیں. اِس لئے تحریک کے اگوا اور دوسرے لوگ جو ٹھیک معنی میں اُس میں سرو سماجی پن کی فضا پیدا کرنا چاہتے ہیں اُنہیں چاہئے کہ وہ خود ایک پل کے لئے نہ ایسا طریقہ اختیار کریں اور نہ دوسروں کو کرنے دیں جس سے غیر ہندوؤں کو یہ محسوس کرنے کا موقع ملے کہ سرودے سمیلن کسی خاص جات یا مذہب کے لوگوں کا ہی جلسہ ہے.

آخر میں میں آپ سے اُمید کرتا ہوں کہ آپ میرے اِس خط پر دھیان دینگے اور میری اِس اپیل کو 'نیا ہند' کے ذریعے دوسروں تک بھی پہنچا دینگے.

آپ کا—

رسول احمد 'ابودھ'
وردھا، 2 . 6 . 52

पिताजी के क़दमों पर

दीपचन्द कहलाते तो सेठ हैं पर हैं मिल के मैनेजर. बी. ए. पास हैं. क़ानून की डिगरी हासिल कर रखी है. जैन धर्म को मानते हैं. जैन धर्म के उसूलों की जानकारी उनको नहीं के बराबर है. वह छान कर पानी पीते हैं. मांस से उनको इतनी नफ़रत है कि कभी चिड़िया का बच्चा घोंसले से गिर कर उनके कमरे में आ जाय तो जब तक सारा कमरा न धुले तब तक वह उसमें अन्दर नहीं जा सकते. इस्लाम धर्म

پتاجی کے قدموں پر

دیپ چند کہلاتے تو سیٹھ ہیں پر ہیں مِل کے منیجر. بی. اے. پاس ہیں. قانون کی ڈگری حاصل کر رکھی ہے. جین دھرم کو مانتے ہیں. جین دھرم کے اُصولوں کی جانکاری اُن کو نہیں کے برابر ہے. وہ چھان کر پانی پیتے ہیں. ماس سے اُن کو اتنی نفرت ہے کہ کبھی چڑیا کا بچہ گھونسلے سے گرکر اُن کے کمرے میں آجائے تو جب تک سارا کمرہ نہ دھلے تب تک وہ اُس میں اندر نہیں جاسکتے. اسلام دھرم

है जिसका सम्बन्ध उनके अपने समाज से है. कांग्रेस तहरीक के दिनों में जब मुसलमान जमाअती तौर पर कांग्रेस से अलग मिस्टर जिनाह के चारों तरफ़ जमा हो गए तो हमारे नेताओं ने समझा कि इसकी वजह मज़हब है पर इसकी असल वजह कांग्रेस की वह फ़िज़ा (हवा) थी जिसमें मुसलमान अपने आपको ग़ैर या बेगाना महसूस करता था. उसी का नतीजा था कि मुसलमान पर एक ऐसा असर हुआ कि वह लीग के झंडे के नीचे जमा होकर उलटी तरफ़ मुड़ गया.

मैं आप से साफ़ साफ़ कह देना चाहता हूँ कि सवाल का सम्बन्ध इससे ज़रा भी नहीं है कि मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी से और क़ुरान से हवाले पेश किये जायें, बल्कि सवाल का सम्बन्ध फ़िज़ा से है. अगर किसी समाज की फ़िज़ा ऐसी है कि किसी मज़हब का आदमी अपने मज़हब और समाज के साथ रहते हुये उसमें अपने को बेगाना नहीं महसूस करता, तो इतना ही बस है. और अगर फ़िज़ा ऐसी नहीं है तो हरगिज़ दूसरों से कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिये.

आप को मालूम है कि मुल्क में कम्युनिस्टों की भी एक तहरीक है. इस तहरीक के बारे में हर एक को यह पता है कि यह तहरीक ग़ैर मज़हबी है, बल्कि उसमें अकसर लोग मज़हब का मज़ाक़ उड़ाने वाले हैं, फिर भी उसमें मुसलमान ईसाई और दूसरे मज़हब के लोग हिन्दुओं के साथ और हिन्दू दूसरे मज़हब वालों के साथ इस तरह रहते हैं कि किसी को ज़रा भी परायापन महसूस नहीं होता.

पंडित जी, आप के यह कहने से कि विनोबा जी हिन्दू परम्परा में पले हैं, उनकी तालीम और तरबियत हिन्दू शास्त्रों, पुरानों और हिन्दू परम्परा पर हुई है—सवाल की अहमियत कम नहीं हो जाती. मौलाना मदनी की तहरीक में अगर इसलामी रंग ज़रूरत से ज़ियादा हो तो उस में भी हिन्दू नज़र न आयेंगे, फिर मौलाना मदनी गीता के कितने ही श्लोक क्यों न पढ़ के सुनायें.

इसलिये अगर किसी तहरीक में सर्व समाजीपन लाना है तो चाहे किसी भी परम्परा में तालीम और तरबियत हुई हो, ज़रूरत इसकी है कि उस तहरीक में सर्व समाजीपन की फ़िज़ा हो, और यह चीज़ तभी हो सकती है जब उस तहरीक से दिलचस्पी रखने वाले ईमानदारी और गम्भीरता से इसे महसूस करें.

देश की आज़ादी और बंटवारे के बाद देश के संजीदा लोगों को अगर किसी तहरीक से कोई उम्मीद थी तो वह सर्वोदय की तहरीक से थी. सर्वोदय की तहरीक अपने पूरे मानी में क्या है और क्या नहीं इसे तो कम लोग सोचते हैं,

ہے جس کا سمبندھ اُن کے اپنے سماج سے ہے ۔ کانگریس تحریک کے دنوں میں جب مسلمان جماعتی طور پر کانگریس سے الگ مسٹر جناح کے چاروں طرف جمع ہوگئے تو ہمارے نیتاؤں نے سمجھا کہ اس کی وجہ مذہب ہے پر اس کی اصل وجہ کانگریس کی وہ فضا (ہوا) تھی جس میں مسلمان اپنے آپ کو غیر یا بے گانا محسوس کرتا تھا ۔ اُسی کا نتیجہ تھا کہ مسلمان پر ایک ایسا اثر ہوا کہ وہ لیگ کے جھنڈے کے نیچے جمع ہو کر اُلٹی طرف مڑ گیا ۔

میں آپ سے صاف صاف کہہ دینا چاہتا ہوں کہ سوال کا سمبندھ اِس سے ذرا بھی نہیں ہے کہ محمد صاحب کی زندگی سے اور قرآن سے حوالے پیش کئے جائیں، بلکہ سوال کا سمبندھ فضا سے ہے ۔ اگر کسی سماج کی فضا ایسی ہے کہ کسی مذہب کا آدمی اپنے مذہب اور سماج کے ساتھ رہتے ہوئے اُس میں اپنے کو بیگانا نہیں محسوس کرتا، تو اتنا ہی بس ہے ۔ اور اگر فضا ایسی نہیں ہے تو ہرگز دوسروں سے کوئی اُمید نہیں رکھنی چاہئے ۔

آپ کو معلوم ہے کہ ملک میں کمیونسٹوں کی بھی ایک تحریک ہے ۔ اس تحریک کے بارے میں ہر ایک کو یہ پتہ ہے کہ یہ تحریک غیر مذہبی ہے، بلکہ اُس میں اکثر لوگ مذہب کا مذاق اُڑانے والے ہیں، پھر بھی اُس میں مسلمان عیسائی اور دوسرے مذہب کے لوگ ہندوؤں کے ساتھ اور ہندو دوسرے مذہب والوں کے ساتھ اِس طرح رہتے ہیں کہ کسی کو ذرا بھی پرایاپن محسوس نہیں ہوتا ۔

پنڈت جی، آپ کے یہ کہنے سے کہ ونوبا جی ہندو پرمپرا میں پلے ہیں، اُن کی تعلیم اور تربیت ہندو شاستروں، پرانوں اور ہندو پرمپرا پر ہوئی ہے—سوال کی اہمیت کم نہیں ہو جاتی ۔ مولانا مدنی کی تحریک میں اگر اسلامی رنگ ضرورت سے زیادہ ہو تو اُس میں بھی ہندو نظر نہ آئیں گے، پھر مولانا مدنی گیتا کے کتنے ہی شلوک کیوں نہ پڑھ کے سنائیں ۔

اِس لئے اگر کسی تحریک میں سرو سماجی پن لانا ہے تو چاہے کسی بھی پرمپرا میں تعلیم اور تربیت ہوئی ہو، ضرورت اِسکی ہے کہ اُس تحریک میں سرو سماجی پن کی فضا ہو، اور یہ چیز تبھی ہو سکتی ہے جب اُس تحریک سے دلچسپی رکھنے والے ایمانداری اور گمبھیرتا سے اِسے محسوس کریں ۔

دیش کی آزادی اور بٹوارے کے بعد دیش کے سنجیدہ لوگوں کو اگر کسی تحریک سے کوئی اُمید تھی تو وہ سروودے کی تحریک سے تھی ۔ سروودے کی تحریک اپنے پورے معنی میں کیا ہے اور کیا نہیں اِسے تو کم لوگ سوچتے ہیں،

एक ख़त

[नीचे हम एक सच्चे और परखे हुए देश भक्त, वर्धा की हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के भाई रसूल अहमद 'अबोध' का एक ख़त दे रहे हैं. इस ख़त में उन्होंने जो 'अपील' की है उस से हम पूरी तरह सहमत हैं. हमें आशा है कि 'नया हिन्द' के पढ़ने वाले सर्वोदय प्रेमी इसे पढ़ कर उस पर गम्भीरता से विचार करेंगे और आइन्दा के सर्वोदय सम्मेलनों वग़ैरा में इससे पूरा फ़ायदा उठाने की कोशिश करेंगे—सुन्दरलाल]

मुकर्रमी पंडित सुन्दरलाल जी, बहुत बहुत सलाम.

मई के 'नया हिन्द' के सम्पादकीय नोट को जो सेवापुरी सर्वोदय सम्मेलन के सम्बन्ध में है, और ख़ास कर नोट के उस नवें नुक़्ते को पढ़ कर, जो सर्वोदय सम्मेलन और मुसलमानों से सम्बन्ध रखता है, बार बार जी में आया कि चन्द सतरें आप की सेवा में लिख भेजूं. इसलिये यह चन्द सतरें भेज रहा हूँ.

नोट के नवें नुक़्ते को पढ़ कर कई बातें सामने आईं, यानी आपने और एक भाई ने यह महसूस किया कि 'वहां का रंग ढंग और हवा ज़रूरत से ज़ियादा हिन्दू रंग लिए हुए थे. और कांगरेस की गिरी हुई हालत में भी जितने मुसलमान और ग़ैर हिन्दू उसके जलसों में दिखाई देते हैं सर्वोदय सम्मेलन में उतने भी नहीं दिखाई देते. मगर आप इसके साथ ही यह भी कहते हैं कि 'विनोबा जी का अपना दिल इस बारे में बिल्कुल साफ़ है, वह आपने भाशनों में मुहम्मद साहब की ज़िन्दगी और .कुरान और दूसरे धर्मों की किताबों से हवाले भी देते रहते हैं. उन्होंने .कुरान को अच्छी तरह पढ़ा है, उसका उनके दिल में आदर है.'

इन सतरों को पढ़ कर मुझे लगा कि हमने हिन्दू मुसलिम सवाल को पिछले दिनों जिस ढंग से देखा और जिस तरह हमने उसे हल करने की कोशिश की, जिसकी वजह से कांगरेस जैसी क़ौमी जमाअत पर भी हिन्दू रंग चढ़ गया, वही निगाह और ढंग हमारा आज भी है.

यह निगाह और ढंग जिसे मैं ग़लत मानता हूँ सवाल को मज़हबी रंग में देखना है. पर सवाल की असल हैसियत मज़हबी नहीं बल्कि समाजी है, यानी रहन सहन, तौर तरीक़ा और तहज़ीब जो एक हद तक हिन्दू और मुसलमान में फ़रक़ पैदा करती है. आज कितने ही हिन्दू और मुसलमान ऐसे हैं जिन्हें सब जानते हैं कि मज़हब और ईश्वर पर उन्हें ज़रा भी विश्वास नहीं है, लेकिन फिर भी उनका रहन सहन तौर तरीक़ा एक ख़ास ढंग का है, और वह ढंग वही

ایک خط

[نیچے ہم ایک سچے اور پرکھے ہوئے دیش بھکت، وردھا کی ہندستانی پرچار سبھا کے بھائی رسول احمد 'ابودھ' کا ایک خط دے رہے ہیں. اِس خط میں اُنہوں نے جو 'اپیل' کی ہے اُس سے ہم پوری طرح سہمت ہیں. ہمیں آشا ہے کہ 'نیا ہند' کے پڑھنے والے سروودے پریمی اِسے پڑھکر اِس پر گمبھیرتا سے وچار کرینگے اور آئندہ کے سروودے سمیلنوں وغیرہ میں اِس سے پورا فائدہ اُٹھانے کی کوشش کرینگے—سندرلال]

مکرمی پنڈت سندر لال جی، بہت بہت سلام.

مئی کے 'نیا ہند' کے سمپادکیہ نوٹ کو جو سیوا پوری سروودے سمیلن کے سمبندھ میں ہے، اور خاص کر نوٹ کے اُس نویں نقطے کو پڑھکر، جو سروودے سمیلن اور مسلمانوں سے سمبندھ رکھتا ہے، بار بار جی میں آیا کہ چند سطریں آپ کی سیوا میں لکھ بھیجوں. اِس لئے یہ چند سطریں بھیج رہا ہوں.

نوٹ کے نویں نقطے کو پڑھکر کئی باتیں سامنے آئیں، یعنی آپ نے اور ایک بھائی نے یہ محسوس کیا کہ 'وہاں کا رنگ ڈھنگ اور ہوا ضرورت سے زیادہ ہندو رنگ لئے ہوئے تھے. اور کانگریس کی گری ہوئی حالت میں بھی جتنے مسلمان اور غیر ہندو اُس کے جلسوں میں دکھائی دیتے ہیں سروودے سمیلن میں اُتنے بھی نہیں دکھائی دیتے. مگر آپ اس کے ساتھ ہی یہ بھی کہتے ہیں کہ 'ونوبا جی کا اپنا دل اس بارے میں بالکل صاف ہے، وہ اپنے بھاشنوں میں محمد صاحب کی زندگی اور قرآن اور دوسرے دھرموں کی کتابوں سے حوالے بھی دیتے رہتے ہیں. اُنہوں نے قرآن کو اچھی طرح پڑھا ہے، اُس کا اُن کے دل میں آدر ہے.'

اِن سطروں کو پڑھکر مجھے لگا کہ ہم نے ہندو مسلم سوال کو پچھلے دنوں جس ڈھنگ سے دیکھا اور جس طرح ہم نے اُسے حل کرنے کی کوشش کی، جس کی وجہ سے کانگریس جیسی قومی جماعت پر بھی ہندو رنگ چڑھ گیا، وہی نگاہ اور ڈھنگ ہمارا آج بھی ہے.

یہ نگاہ اور ڈھنگ جسے میں غلط مانتا ہوں سوال کو مذہبی رنگ میں دیکھنا ہے. پر سوال کی اصل حیثیت مذہبی نہیں بلکہ سماجی ہے، یعنی رہن سہن، طور طریقہ اور تہذیب جو ایک حد تک ہندو اور مسلمان میں فرق پیدا کرتی ہے. آج کتنے ہی ہندو اور مسلمان ایسے ہیں جنہیں سب جانتے ہیں کہ مذہب اور ایشور پر اُنہیں ذرا بھی وشواس نہیں ہے، لیکن پھر بھی اُن کا رہن سہن طور طریقہ ایک خاص ڈھنگ کا ہے، اور وہ ڈھنگ وہی

मैंने बार बार कहा है कि न तो चीन की और न रूस की ही अर्थव्यवस्था हिन्दुस्तान के लिए फायदेमंद होगी और जब तक वहां भी आज के समान राज को ज़ियादा से ज़ियादा से ताक़तवर बनाने का रुझान रहेगा तब तक सच्चा कम्यूनिज़्म कभी क़ायम नहीं हो सकेगा.

जब तक यह देश अपनी ज़रूरत की चीज़ें बड़े बड़े कारख़ानों में पैदा कराते रहेंगे तब तक उन्हें हिंसा का सहारा लेना ही पड़ेगा और लोहे का परदा भी डाले रखना पड़ेगा. अगर अहिंसा की बुनियाद पर इन्सानी भाई चारा क़ायम करना हो तो विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था की ही शरन लेनी पड़ेगी. इसलिए हथियारों वग़ैरा से लैस रहने से कभी शांति क़ायम न हो सकेगी.

इन साफ़ ज़ाहिर बातों को दुहराने की मुझे इसलिए ज़रूरत पड़ी क्योंकि गांधीवाद में पगे हुए श्री किशोर लालभाई मशरूवाला और आचार्य कृपलानी जैसे प्रकांड पंडितों ने मेरी बातों पर एतराज़ उठाये हैं. ऐसा करते हुए उन्होंने यह नहीं देखा कि मैं न तो रूस के तरीक़ों का और न उसके हिंसात्मक उपायों का ही समर्थन कर रहा हूँ. मैंने सिर्फ़ उन लोगों की लगन, स्वार्थ-त्याग, आम जनता की भलाई करने की इच्छा, किसी भी काम को उठा लेने पर उसमें आख़िर तक अड़े रहने की आदत और हर एक मसले को जी तोड़कर हल करने की तबियत वग़ैरा गुनों की तारीफ़ की है. हमारे देश में इन गुनों की भारी कमी है. हिंसा के बारे में अगर हम देखें तो हम एटम बम, नेपम बम इस्तेमाल करने वालों से और बीमारी छोड़ने वालों से सहयोग कर रहे हैं. क्या हम अपनी आवाज़ उठाकर उनसे असहयोग ज़ाहिर करते हैं ? फिर रूसी लोग ही हमें अछूत क्यों मालूम होने चाहिये ? क्या वह भी ईश्वर की रैयत नहीं हैं ? आज हिन्दुस्तान में जिस हद तक गांधीवाद चालू है, या अमरीका में अहिंसा चालू है, उसी हद तक रूस या चीन में साम्यवाद चालू है. फिर हम एक दूसरे से ज़ियादा पाक होने की डींग क्यों मारें ? हमें तो नम्रता और खुले दिलकी उदारता इख़्तयार करनी चाहिये.

میں نے بار بار کہا ہے کہ نہ تو چین کی اور نہ روس کی ہی ارتھ ویوستھا ہندستان کے لئے فائدےمند ہوگی اور جب تک وہاں بھی آج کے سمان راج کو زیادہ سے زیادہ طاقتور بنانے کا رجحان رہے گا تب تک سچا کمیونزم کبھی قائم نہیں ہو سکے گا.

جب تک یہ دیش اپنی ضرورت کی چیزیں بڑے بڑے کارخانوں میں پیدا کراتے رہیں گے تب تک انہیں ہنسا کا سہارا لینا ہی پڑے گا اور لوہے کا پردہ بھی ڈالے رکھنا پڑے گا. اگر اہنسا کی بنیاد پر انسانی بھائی چارہ قائم کرنا ہو تو وکیندرت ارتھ ویوستھا کی ہی شرن لینی پڑے گی . اس لئے ہتھیاروں وغیرہ سے لیس رہنے سے کبھی شانتی قائم نہ ہوسکے گی .

ان صاف ظاہر باتوں کو دہرانے کی مجھے اس لئے ضرورت پڑی کیونکہ گاندھی واد میں پگے ہوئے شری کشور لال بھائی مشرو والا اور آچاریہ کرپلانی جیسے پرکانڈ پنڈتوں نے میری باتوں پر اعتراض اٹھائے ہیں . ایسا کرتے ہوئے انہوں نے یہ نہیں دیکھا کہ میں نہ تو روس کے طریقوں کا اور نہ اس کے ہنساتمک اپایوں کا ہی سمرتھن کر رہا ہوں. میں نے صرف ان لوگوں کی لگن' سوارتھ تیاگ' عام جنتا کی بھلائی کرنے کی اچھا' کسی بھی کام کو اٹھا لینے پر اس میں آخر تک اڑے رہنے کی عادت اور ہر ایک مسئلے کو جی توڑ کر حل کرنے کی طبیعت وغیرہ گنوں کی تعریف کی ہے . ہمارے دیش میں ان گنوں کی بھاری کمی ہے . ہنسا کے بارے میں اگر ہم دیکھیں تو ہم ایٹم بم' نیپم بم استعمال کرنے والوں سے اور بیماری چھوڑنے والوں سے سہیوگ کر رہے ہیں . کیا ہم اپنی آواز اٹھاکر ان سے اسہیوگ ظاہر کرتے ہیں؟ پھر روسی لوگ ہی ہمیں اچھوت کیوں معلوم ہونے چاہئیے ؟ کیا وہ بھی ایشور کی رعیت نہیں ہیں ؟ آج ہندستان میں جس حد تک گاندھی واد چالو ہے یا امریکہ میں ہنسا چالو ہے' اسی حدتک روس یا چین میں سامیہ واد چالو ہے . پھر ہم ایک دوسرے سے زیادہ پاک ہونے کی ڈینگ کیوں ماریں؟ ہمیں تو نمرتا اور کھلے دل کی اُدارتا اختیار کرنی چاہئے .

"सच्चे सुधार का, सच्ची सभ्यता का लक्षन परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि उसका विचार और इच्छा पूर्वक घटाना है. ज्यों ज्यों परिग्रह घटाइये त्यों त्यों सच्चा सुख और सच्चा संतोष बढ़ता है, सेवा शक्ति बढ़ती है."

—बापू

"سچے سدھار کا' سچی سبھیتا کا لکشن پری گرہ بڑھانا نہیں ہے' بلکہ اس کا وچار اور اچھا پوروک گھٹانا ہے . جیوں جیوں پری گرہ گھٹائیے تیوں تیوں سچا سکھ اور سچا سنتوش بڑھتا ہے' سیوا شکتی بڑھتی ہے."

—باپو

इतनी दिल वाली नहीं है कि वह योगी राज कृष्ण की तरह एकदम कूद कर इस साड़ी खींचने का अन्त कर दे, और उन खेतों को फिर लहलहाने दे जो घरेलू छीना झपटी में बरबाद हो गये.

4. 7. 52. —भगवानदीन

रूस और चीन

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

मेरे रूस और जापान सम्बन्धी अनुभवों का मेरे पुराने और सच्चे साथी भी जिस तरह जिक्र करते हैं उस से साफ़ दिखाई देता है कि उन देशों की अर्थ व्यवस्था के बारे में मेरा असली रुख वह नहीं समझ पाये हैं.

इन्सान अपनी ज़रूरतें किस तरीक़े से पूरी करते हैं उसे देख कर उन को पांच दर्जों में किस तरह बांटा जा सकता है इसका मैंने अपनी 'ग्राम आन्दोलन क्यों ?' 'अस्थाई अर्थ व्यवस्था' वग़ैरा किताबों में जिक्र किया है. अपना मतलब सब से ऊपर रखने और हिंसा का इस्तेमाल करने की कम या जियादा ज़रूरत के मुताबिक़ उनके पांच दरजे इस तरह किये जा सकते हैं: (1) आदमखोर, (2) लुटेरे, (3) कारोबारी, (4) गिरोह बन्द और (5) सेवा भावी. मैंने वहां यह भी दिखाया है कि पहले दो की मिसाल पूंजी वाद और साम्राज वाद हैं जो फ़ौज, नौदल और हवाई दल के बूते पर अपनी धाक जमाये रहते हैं, तीसरे की मिसाल व्योपार और खेती हैं, चौथे की मिसाल समाज वाद है और सेवा प्रधान गांधीवाद यह सब से ऊंचे पांचवें दर्जे की मिसाल है. यह किताबें क़रीब बीस बरस पहले लिखी गई थीं और गांधी जी ने उन की प्रस्तावना भी लिखी थी. मेरी चीन और रूस की यात्राओं ने मेरी यह धारनायें और पक्की कर दी हैं. अगर रूसी अर्थ व्यवस्था को हम सरकारी पूंजी वाद भी कहें तो भी वह सच्चे कम्यूनिज़्म से बहुत दूर है, क्योंकि सच्चे कम्यूनिज़्म में सरकार ऐसी कोई चीज़ ही नहीं रह सकती. फिर भी चूंकि वहां की हकूमतों की सरे आम कोशिश ही जनता की भलाई करना है इसलिए वह हकूमतें साम्राजवादी हकूमतों से कहीं बढ़ी चढ़ी हैं और गांधीवाद के लिए जियादा नज़दीक हैं.

اتنی دل والی نہیں ہے کہ وہ یوگی راج کرشن کی طرح ایک دم کود کر اس ساڑی کھینچنے کا انت کر دے، اور اُن کھیتوں کو پھر لہلہانے دے جو گھریلو چھینا جھپٹی میں برباد ہوگئے ۔

4 . 7 . '52 —بھگوان دین

روس اور چین

(ڈاکٹر جے . سی . کماریپا)

میرے روس اور جاپان سمبندھی انوبھووں کا میرے پرانے اور سچے ساتھی بھی جس طرح ذکر کرتے ہیں اس سے صاف دکھائی دیتا ہے کہ اُن دیشوں کی ارتھ ویوستھا کے بارے میں میرا اصلی رخ وہ نہیں سمجھ پائے ہیں ۔

اِنسان اپنی ضرورتیں کس طریقے سے پوری کرتے ہیں اسے دیکھ کر اُن کو پانچ درجوں میں کس طرح بانٹا جا سکتا ہے اِس کا میں نے اپنی 'گرام آندولن کیوں؟' 'استھائی ارتھ ویوستھا' وغیرہ کتابوں میں ذکر کیا ہے . اپنا مطلب سب سے اوپر رکھنے اور ہنسا کا استعمال کرنے کی کم یا زیادہ ضرورت کے مطابق اُن کے پانچ درجے اس طرح کئے جا سکتے ہیں: (1) آدم خور، (2) لٹیرے، (3) کاروباری، (4) گروہ بند اور (5) سیوا بھاوی. میں نے وہاں یہ بھی دکھایا ہے کہ پہلے دو کی مثال پونجی واد اور سامراج واد ہیں جو فوج، نو دل اور ہوائی دل کے بوتے پر اپنی دھاک جمائے رہتے ہیں، تیسرے کی مثال بیوپار اور کھیتی ہیں، چوتھے کی مثال سماج واد ہے اور سیوا پردھان گاندھی واد یہ سب سے اونچے پانچویں درجے کی مثال ہے . یہ کتابیں قریب بیس برس پہلے لکھی گئی تھیں اور گاندھی جی نے اُن کی پرستاونا بھی لکھی تھی. میری چین اور روس کی یاتراؤں نے میری یہ دھارنائیں اور پکی کر دی ہیں . اگر روسی ارتھ ویوستھا کو ہم سرکاری پونجی واد بھی کہیں تو بھی وہ سچے کمیونزم سے بہت دور ہے، کیونکہ سچے کمیونزم میں سرکار ایسی کوئی چیز ہی نہیں رہ سکتی . پھر بھی چونکہ وہاں کی حکومتوں کی سارے عام کوشش ہی جنتا کی بھلائی کرنا ہے اس لئے وہ حکومتیں سامراجوادی حکومتوں سے کہیں بڑھی چڑھی ہیں اور گاندھی واد کے لئے زیادہ نزدیک ہیں ۔

की बू नहीं आ पाई, पर इससे क्या वह मालिक तो बन गई है. उसे मालिक मानना पड़ेगा. अगर किसी पुलिस वाले के यहां रोज़ साफ करने आने वाला मेहतर पार्लियामेन्ट का मेम्बर हो जाय और वह बेमतलब ही उस पुलिस वाले को दो गाली दे बैठे तो क्या पुलिस वाला उसे गोली से मार देगा. वह तो गोली के बदले गाली भी न दे सकेगा, शिकायत भी न कर सकेगा, मुक़दमा अदालत में दायर करने पर भी उसे आसानी से अदालत में आने के लिए मजबूर भी न कर सकेगा. अगर पार्लियामेन्ट के मेम्बरों ने अपनी हिफ़ाज़त इस हद तक कर ली है तो क्या यह उनके लिए ठीक है कि वह जिनके प्रतिनिधि हैं उन्हें इस तरह पुलिस के रहम पर छोड़ दें. अगर चुनाव मंडलों को अपने प्रतिनिधियों को वापस बुला लेने का अधिकार होता तो क्या आज हमको 'यू. पी. में तेलंगाना' लेख पढ़ने को मिलता?

बलिया की घटना कितनी ही छोटी क्यों न हो और उसकी रिपोर्ट कितनी ही बढ़ा कर क्यों न लिखी गई हो ऐसी ज़रूर है जिसे बड़े से बड़े अन्याय का बीज कहा जा सकता है.

हिंसा को कम करने और अहिंसा की राह में आगे बढ़ने के लिए यह बिल्कुल ज़रूरी है कि सरकारी अफ़सर जनता को इज़्ज़त की नज़र से देखना शुरू करें और यह कुछ मुश्किल पाठ नहीं है. किसने अपनी आंखों यह नहीं देखा कि जब किसी के मां बाप या गुरू पागल हो जाते हैं तो उनके बेटे और चेले उनको पकड़ कर बन्द करने और ज़ंजीर से बांधने में भी उनकी इज़्ज़त को धक्का नहीं पहुंचने देते. मार खा कर भी हंसते जाते हैं और बांधने का काम करते जाते हैं. जब सरकारी अफ़सरों और पुलिस में जनता के लिए सच्ची इज़्ज़त जाग जायगी तब भी गोली चलाने का मौक़ा आ सकता है और गोली चलानी पड़ सकती है. पर बाक़ी जनता का दिल नहीं दुखेगा. पुलिस के ख़िलाफ़ ग़ुस्सा नहीं आवेगा. इज़्ज़त का सबक़ न पुलिस और अफ़सरों को टोटे में रक्खेगा न सरकार को.

यह लिखने की हमें ज़रूरत नहीं कि जनता को चाहिये कि वह पुलिस सरकारी अफ़सरों और सरकार को प्यार की नज़र से देखे क्योंकि यह काम तो जनता अपने आप करने लगेगी. जिस दिन पुलिस और सरकारी अफ़सर जनता को यह महसूस करा देंगे कि जनता मालिक है और यह कि वह पुलिस की हैसियत से जो कुछ करते हैं वह भी एक तरह से उन्हीं का यानी जनता का हुक्म होता है.

दो बरस बीत चुके बलिया के जवान जेलों में हैं. क्या इतनी तकलीफ़ काफ़ी नहीं है ? और क्या यू. पी. की सरकार

کی بو نہیں کھو پائی، پر اس سے کیا وہ مالک تو بن گئی ہے ۔ اسے مالک ماننا پڑیگا ۔ اگر کسی پولیس والے کے یہاں روز صاف کرنے آنے والا مہتر پارلیامینٹ کا ممبر ہو جائے اور وہ بے مطلب ہی اس پولیس والے کو دو گالی دے بیٹھے تو کیا پولیس والا اسے گولی سے مار دیگا۔ وہ تو گولی کے بدلے گالی بھی نہ دے سکیگا، شکایت بھی نہ کر سکیگا، مقدمہ عدالت میں دائر کرنے پر بھی اسے آسانی سے عدالت میں آنے کے لئے مجبور بھی نہ کر سکیگا ۔ اگر پارلیامنٹ کے ممبروں نے اپنی حفاظت اس حد تک کر لی ہے تو کیا یہ ان کے لئے ٹھیک ہے کہ وہ جنکے پرتی ندھی ہیں انہیں اس طرح پولیس کے رحم پر چھوڑ دیں ۔ اگر چناؤ منڈلوں کو اپنے پرتی ندھیوں کو واپس بلا لینے کا ادھیکار ہوتا تو کیا آج ہم کو 'یو پی میں تیلنگانا' لیکھ پڑھنے کو ملتا ؟

بلیا کی گھٹنا کتنی ہی چھوٹی کیوں نہ ہو اور اس کی رپورٹ کتنی ہی بڑھا کر کیوں نہ لکھی گئی ہو ایسی ضرور ہے جسے بڑے سے بڑے انیائے کا بیج کہا جا سکتا ہے ۔

ہنسا کو کم کرنے اور اہنسا کی راہ میں آگے بڑھنے کے لئے یہ بالکل ضروری ہے کہ سرکاری افسر جنتا کو عزت کی نظر سے دیکھنا شروع کریں ۔ اور یہ کچھ مشکل پاٹھ نہیں ہے ۔ کسنے اپنی آنکھوں یہ نہیں دیکھا کہ جب کسی کے ماں باپ یا گرو پاگل ہو جاتے ہیں تو ان کے بیٹے اور چیلے ان کو پکڑ کر بند کرنے اور زنجیر سے باندھنے میں بھی ان کی عزت کو دھکا نہیں پہونچنے دیتے ۔ مار کھاکر بھی ہنستے جاتے ہیں اور باندھنے کا کام کرتے جاتے ہیں ۔ جب سرکاری افسروں اور پولیس میں جنتا کے لئے سچی عزت جاگ جائے گی تب بھی گولی چلانے کا موقع آسکتا ہے اور گولی چلانی پڑ سکتی ہے پر باقی جنتا کا دل نہیں دکھیگا۔ پولیس کے خلاف غصہ نہیں آوے گا ۔ عزت کا سبق نہ پولیس اور افسروں کو ٹوٹے میں رکھیگا نہ سرکار کو ۔

یہ لکھنے کی ہمیں ضرورت نہیں کہ جنتا کو چاہئے کہ وہ پولیس سرکاری افسروں اور سرکار کو پیار کی نظر سے دیکھے کیونکہ یہ کام تو جنتا اپنے آپ کرنے لگیگی۔ جس دن پولیس اور سرکاری افسر جنتا کو یہ محسوس کرا دینگے کہ جنتا مالک ہے اور یہ کہ وہ پولیس کی حیثیت سے جو کچھ کرتے ہیں وہ بھی ایک طرح سے انہیں کا یعنی جنتا کا حکم ہوتا ہے ۔

دو برس بیت چکے بلیا کے جوان جیلوں میں ہیں ۔ کیا اتنی تکلیف کافی نہیں ہے ؟ اور کیا یو ۔ پی ۔ کی سرکار

ठीक इसी तरह बलिया कानफ्रेंस को रोकने के लिए हथियार बन्द पुलिस भेजना गोली चलाने से कम नहीं. पर सरकारें आदी हैं कहीं भी हथियार बन्द पुलिस भेज देने की और हिन्दुस्तान की जनता आदी है उसे बर्दाश्त कर लेने की. यही हाल है उन पत्रकारों का जो अपने आपको जनता का वकील समझते हैं और यही हाल है पार्लियामेन्ट के मेम्बरों का जो अपने आपको जनता का प्रतिनिधि मानते हैं.

निहत्थी जनता के खिलाफ़ हथियार बन्द पुलिस या फ़ौज को खड़ी देख कर जनता के दिल में इतनी नफ़रत पैदा होनी लगनी चाहिये कि सब एक साथ छी छी करने लगें. तब हमारा ख्याल है छी छी मन्त्र बन उठेगा हथियार बन्द पुलिस को लौटना पड़ेगा और जनता का बिगड़ा हुआ गिरोह अपने आप अपनी हद के अन्दर आ जायगा और सरकार की बेजा चिन्ता दूर हो जाया करेगी. निहत्थे का मुक़ाबला हथियार से करना न बहादुरी है न बराबरी, वह तो बुज़दिली है, कायरता है और फिर ओछापन तो है ही.

जब यूनो नाम की दुनिया भर की बड़ी पंचायत बीसियों मुल्कों को कोरिया पर चढ़ा कर अपने ओछेपन को नहीं समझ पा रही तो एक ज़िले की पुलिस ओछेपन को कैसे समझ सकती है.

हिन्दुस्तान अंगरेज़ी ज़माने को छोड़ कर कभी इतना गिरा हुआ नहीं रहा कि निहत्थों पर हाथ उठाये. हिन्दू मुसलमान सब सरकारें अंगरेज़ों से पहले इस बात का बहुत ध्यान रखती थीं. हो सकता है इतिहास जिसे हम झूटी किताब कहते हैं हमारी इस बात के खिलाफ़ दसियों मिसालें पेश कर दे तब हमें यह कहते हुए हिचक नहीं होगी कि अगर वैसा हुआ तो वह ओछापन ही था. फिर चाहे वह अशोक का हो, विक्रमादित्य का हो, अकबर का हो, शिवाजी का हो या औरंगज़ेब का हो.

बलिया में सन 1942 में अंगरेज़ी सरकार ने बलिया वालों से बदला ले कर ओछेपन का सबूत दिया. उस ओछेपन को सारे हिन्दुस्तान ने ओछापन कहा. कांग्रेस ने वकील बन कर कहा. अंगरेज़ी सरकार देखने को तो नहीं शरमाई पर जी में शरमाई. ऐसे ही ओछपन से अंगरेज़ों को हिन्दुस्तान छोड़ कर जाना पड़ा. पर बलिया से गये तो अंगरेज़ ही हैं, अंगरेज़ियत कहां गई है. अंगरेज़ी ढंग की अफ़सरियत कहां गई है ? अंगरेज़ी ढंग की बदला लेने की स्पिरट कहां गई है ? अभी तक सब जगह की तरह बलिया में भी अंगरेज़ों की अगरेज़ी ढंग की तालीम पाये हुए अफ़सर हैं और तालीम पाई हुई पुलिस. यह ठीक है बलिया की जनता मालिक बन कर भी अभी तक ग़ुलामी

ٹھیک اسی طرح بلیا کانفرنس کو روکنے کے لئے ہتھیار بند پولیس بھیجنا گولی چلانے سے کم نہیں ۔ پر سرکاریں عادی ہیں کہیں بھی ہتھیار بند پولیس بھیج دینے کی اور ہندستان کی جنتا عادی ہے اسے برداشت کر لینے کی ۔ یہی حال ہے ان پترکاروں کا جو اپنے آپ کو جنتا کا وکیل سمجھتے ہیں اور یہی حال ہے پارلیامنٹ کے ممبروں کا جو اپنے آپ کو جنتا کا پرتی ندھی مانتے ہیں ۔

نہتھی جنتا کے خلاف ہتھیار بند پولیس یا فوج کو کھڑی دیکھ کر جنتا کے دل میں اتنی نفرت پیدا ہونی لگنی چاہئے کہ سب ایک ساتھ چھی چھی کرنے لگیں۔ تب ہمارا خیال ہے وہ چھی چھی منتر بن اٹھیگا اور ہتھیار بند پولیس کو لوٹنا پڑیگا اور جنتا کا بگڑا ہوا گروہ اپنے آپ اپنی حد کے اندر آ جائیگا اور سرکار کی بیجا چنتا دور ہو جایا کریگی۔ نہتھے کا مقابلہ ہتھیار سے کرنا نہ بہادری ہے نہ برابری، وہ تو بزدلی ہے، کایرتا ہے اور پھر اوچھاپن تو ہے ہی ۔

جب یونو نام کی دنیا بھر کی بڑی پنچایت بیسیوں ملکوں کو کوریا پر چڑھا کر اپنے اوچھے پن کو نہیں سمجھ پا رہی تو ایک ضلع کی پولیس اوچھے پن کو کیسے سمجھ سکتی ہے ۔

ہندستان انگریزی زمانے کو چھوڑ کر کبھی اتنا گرا ہوا نہیں رہا کہ نہتھوں پر ہاتھ اٹھائے۔ ہندو مسلمان سب سرکاریں انگریزوں سے پہلے اس بات کا بہت دھیان رکھتی تھیں ۔ ہوسکتا ہے اتہاس جسے ہم جھوٹی کتاب کہتے ہیں ہماری اس بات کے خلاف دسیوں مثالیں پیش کردے تب ہمیں یہ کہتے ہوئے ہچک نہیں ہوگی کہ اگر ویسا ہوا تو وہ اوچھا پن ہی تھا ۔ پھر چاہے وہ اشوک کا ہو، وکرمادتیہ کا ہو، اکبر کا ہو، شیواجی کا ہو یا اورنگزیب کا ہو ۔

بلیا میں سن 1942 میں انگریزی سرکار نے بلیا والوں سے بدلہ لے کر اوچھے پن کا ثبوت دیا ۔ اس اوچھے پن کو سارے ہندستان نے اوچھاپن کہا ۔ کانگریس نے وکیل بن کر کہا۔ انگریزی سرکار دیکھنے کو تو نہیں شرمائی پر جی میں شرمائی۔ ایسے ہی اوچھے پن سے انگریزوں کو ہندستان چھوڑ کر جانا پڑا ۔ پر بلیا سے گئے تو انگریز ہی ہیں، انگریزیت کہاں گئی ہے ۔ انگریزی ڈھنگ کی افسریت کہاں گئی ؟ انگریزی ڈھنگ کی بدلہ لینے کی اسپرٹ کہاں گئی ہے ؟ ابھی تک سب جگہ کی طرح بلیا میں بھی انگریزوں کی انگریزی ڈھنگ کی تعلیم پائے ہوئے افسر ہیں اور تعلیم پائی ہوئی پولیس ۔ یہ ٹھیک ہے بلیا کی جنتا مالک بن کر بھی ابھی تک غلامی

यह है हमारा बलिया. जी में आता है इसे बलिया न लिख कर 'बला लिया' लिखा जाय क्योंकि बलिया की क़िस्मत हमेशा उस पर कोई न कोई बला लाये रखती है. आज़ादी के दीवाने बला से बच भी कब पाये हैं? फिर वह कितने ही भले क्यों न हों. बरनार्ड शा के लफ़्ज़ों में— बहुत भला होना भी गुनाह है.

हमारी निगाह में बलिया के इतिहास ने बलिया को इतना ऊंचा उठा दिया है कि अगर हम पुलिस की सब सख़्तियों को एकदम बनावटी बात मान लें और सिर्फ़ इतने पर ही एतबार करें कि उसने कानफ़्रेंस को ज़बरदस्ती भंग किया तब भी हमें उतना ही बुरा मालूम होगा जितना किसी को यह सारे ज़ुल्म सुन कर बुरा मालूम होता है.

हम इस बात में न जा सकते हैं न जाना चाहते हैं कि जिन ज़ुल्मों का होना कमेटी को लोगों ने बताया वह बिलकुल ठीक हैं, या कुछ घटा बढ़ा कर कहे गए हैं.

सन 1947 के बाद से हिन्दुस्तान की जनता अपने आपको भले ही रैयत मानती हो पर अब वह किसी की 'रैयत' रही नहीं. अब तो विधान की रू से हिन्दुस्तान जनता की मिलकियत है. हिन्दुस्तान की सरकार के लिए विधान बना कर "जनता ने दिया है." किसने जनता को अपनी आंखों उन मेम्बरों को चुनते नहीं देखा जिनसे आज की सरकार बनी है, जिन मेम्बरों ने जवाहरलाल नेहरू को अपना बड़ा वज़ीर बनाया है और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद को राजपति की गद्दी पर बिठाया.

जनता अपने मालिकपने को जाने या न जाने पर सरकार और सरकारी नौकरों को जनता को ऐसे ही अपना मालिक समझना ज़रूरी है जैसे राजा वाले मुल्क अपने तीन बरस के राजा को भी राजा मानते हैं और उसके साथ राजा का सा बर्ताव करते हैं. यह ठीक है राजा भी गद्दी से उतारे जाते हैं, देश बाहर किये जाते हैं, मौत की सज़ा पाते हैं पर एक तरीक़े के अन्दर, वैसे ही हिन्दुस्तान की मालिक जनता का अगर एक हिस्सा किसी वजह से ऐसे काम कर बैठे जो मालिक को शोभा नहीं देते तो उसके साथ सख़्ती का बरताव किया जा सकता है पर एक तरीक़े के साथ और कम से कम ऐसा कोई तरीक़ा बलिया के मामले में बरता गया मालूम नहीं होता.

डाकुओं को पकड़ने के लिए हथियार बन्द पुलिस भेजी जाती है पर किसी शराबी को गिरफ़्तार करने के लिए हथियार बन्द पुलिस भेजना बेवक़ूफ़ी ही नहीं ज़ुल्म भी है. बेमतलब डराना ज़ुल्म है क्योंकि डर से मौत हो जाती है. किसी अफ़सर की बाज़ार में टोपी उतार लेना उसका सिर काट लेना जैसा है. हो सकता है वही अफ़सर ऐसी बेइज़्ज़ती बर्दाश्त न कर सके और आत्म हत्या कर बैठे.

یہ ہے ھمارا بلیا . جی میں آتا ھے اسے بلیا نہ لکھکر 'بلا لیا' لکھا جائے کیونکہ بلیا کی قسمت ھمیشہ اُس پر کوئی نہ کوئی بلا لئے رکھتی ھے . آزادی کے دیوانے بلا سے بچ بھی کب پائے ھیں ؟ پھر وہ کتنے ھی بھلے کیوں نہ ھوں . برناڈشا کے لفظوں میں—بہت بھلا ھونا بھی گناہ ھے .

ھماری نگاہ میں بلیا کے اتہاس نے بلیا کو اتنا اونچا اٹھا دیا ھے کہ اگر ھم پولیس کی سب سختیوں کو ایک دم بناوٹی بات مان لیں اور صرف اتنے پر ھی اعتبار کریں کہ اس نے کانفرنس کو زبردستی بھنگ کیا تب بھی ھمیں اتنا ھی برا معلوم ھوگا جتنا کسی کو یہ سارے ظلم سن کر برا معلوم ھوتا ھے .

ھم اس بات میں نہ جاسکتے ھیں اور نہ جانا چاھتے ھیں کہ جن ظلموں کا ھونا کمیٹی کو لوگوں نے بتایا وہ بالکل ٹھیک ھیں' یا کچھ گھٹا بڑھا کر کہے گئے ھیں .

سن 1947 کے بعد سے ھندستان کی جنتا اپنے آپ کو بھلے ھی رعیت مانتی ھو پر اب وہ کسی کی 'رعیت' رھی نہیں . اب تو ودھان کی رو سے ھندستان جنتا کی ملکیت ھے . ھندستان کی سرکار کے لئے ودھان بنا کر "جنتا نے دیا ھے ." کس نے جنتا کو اپنی آنکھوں اُن ممبروں کو چنتے نہیں دیکھا جن سے آجکی سرکار بنی ھے' جن ممبروں نے جواھر لال نہرو کو اپنا بڑا وزیر بنایا ھے اور ڈاکٹر راجیندر پرساد کو راج پتی کی گدی پر بٹھایا .

جنتا اپنے مالک پنے کو جانے یا نہ جانے پر سرکار اور سرکاری نوکروں کو جنتا کو ایسے ھی اپنا مالک سمجھنا ضروری ھے جیسے راجہ والے ملک اپنے تین برس کے راجہ کو بھی راجہ مانتے ھیں اور اس کے ساتھ راجہ کا سا برتاؤ کرتے ھیں . یہ ٹھیک ھے راجا بھی گدی سے اتارے جاتے ھیں' دیش باھر کئے جاتے ھیں' موت کی سزا پاتے ھیں پر ایک طریقے کے اندر' ویسے ھی ھندستان کی مالک جنتا کا اگر ایک حصہ کسی وجہ سے ایسے کام کر بیٹھے جو مالک کو شوبھا نہیں دیتے تو اُس کے ساتھ سختی کا برتاؤ کیا جا سکتا ھے پر ایک طریقے کے ساتھ . اور کم سے کم ایسا کوئی طریقہ بلیا کے معاملے میں برتا گیا معلوم نہیں ھوتا .

ڈاکوؤں کو پکڑنے کے لئے ھتھیار بند پولیس بھیجی جاتی ھے پر کسی شرابی کو گرفتار کرنے کے لئے ھتھیار بند پولیس بھیجنا بیوقوفی ھی نہیں ظلم بھی ھے . بے مطلب ڈرانا ظلم ھے کیونکہ ڈر سے موت ھو جاتی ھے . کسی افسر کی بازار میں ٹوپی اتار لینا اُس کا سر کاٹ لینا جیسا ھے . ھو سکتا ھے وھی افسر ایسی بے عزتی برداشت نہ کر سکے اور آتم ھتیا کر بیٹھے .

इससे पहले कोई ग़ैर सरकारी पूछ ताछ कमेटी वहां गई ऐसा पता नहीं चलता.

बलिया जिले का इतिहास अपने ढंग का निराला है. वहां के लोग कुछ ऐसी मिट्टी के बने हुए हैं कि बड़ी जल्दी उनमें आज़ादी की लहर उठ खड़ी होती है और आज़ादी की ख़ातिर बड़ी से बड़ी कुर्बानी कर बैठना उनके लिए मामूली बात है. सन 1857 में अंगरेज़ों को बाहर निकालने में उन्होंने जी जान से कोशिश की और असफल रहने के बाद वह मुसीबतें सहीं जिनको सुनकर फ़ौजी जवान भी कांप उठ सकते हैं.

उन्नीसवीं सदी के ख़त्म होते होते एक से ज़ियादा बार उनमें आज़ादी की लहर आई जिसे अंगरेज़ी सरकार ने दबा दिया.

बलिया की ज़िन्दगी में मुश्किल से कोई दस बरस ऐसे मिलेंगे जब उनमें आज़ादी की लहर नहीं दौड़ जाती. और यह एक ऐसी चीज़ है जिसका हर देश को अभिमान होना चाहिये. बलिया के नाते हर हिन्दुस्तानी को अभिमान होना चाहिये और हिन्दुस्तानी सरकार का यह काम होना चाहिये कि यह उनके इस जज़बे की क़दर करे और देश की भलाई के लिए उसका अच्छे से अच्छा उपयोग करे.

सन 1942 में दिल्ली में बैठे बैठे अंगरेज़ी सरकार के खिलाफ़ जब बलिया वालों के कारनामों की ख़बरें हम तक पहुँचती थीं तो हमारी बाछें खिल उठती थीं. फिर सिफ़त यह कि अहिन्सा के उसूलों पर वह इतने कारबन्द रहे कि गांधीवादी भी दांतों तले उंगली दबा गए. और क़ाबलियत यह दिखाई कि बलिया ने चीतू पांडे नामी एक सरदार दिया जिसने एक हफ़्ते से ज़ियादा बलिया पर ऐसा राज किया कि ज़िले भर में डकैती तो क्या छोटी से छोटी चोरी भी नहीं हुई. सरकारी अफ़सर जो एक तरह से उनके दुश्मन थे वह भी इतने आराम में रहे और इतने बेफ़िक्री की नींद सो सके जितनी उस राज में उन्हें सोने को न मिली थी जिसके वह नौकर थे.

इसी बलिया पर फिर अंगरेज़ी सरकार के ज़ुल्मों की कहानी हमें दिल्ली बैठे बैठे ही सुनने को मिली. और वह ज़ुल्म भी इतने ज़ोर के थे जिनको सुनकर हमारे रोंगटे खड़े हो जाते थे. उन दिनों कांगरेस नामी एक दिलदार संस्था मौजूद थी जिसके किसी मेम्बर ने उन ज़ुल्मों के फ़ोटो भी लिए थे. वह फ़ोटो जनता और एसेम्बली तक पहुँचे.

यह सब ज़ुल्म बलिया ने सन 1942 में बर्दाश्त किये और कहा जाता है आठ बरस बाद सन 1950 में वही बलिया उन ज़ुल्मों का शिकार हुआ जिनका ऊपर ज़िक्र है.

اس سے پہلے کوئی غیر سرکاری پوچھ تاچھ کمیٹی وہاں گئی ایسا پتا نہیں چلتا .

بلیا ضلعے کا اِتہاس اپنے ڈھنگ کا نرالا ہے . وہاں کے لوگ کچھ ایسی مٹی سے بنے ہوئے ہیں کہ بڑی جلدی اُن میں آزادی کی لہر اٹھ کھڑی ہوتی ہے اور آزادی کی خاطر بڑی سے بڑی قربانی کر بیٹھنا اُن کے لئے معمولی بات ہے . سن 1857 میں انگریزوں کو باہر نکالنے میں انہوں نے جی جان سے کوشش کی اور اسپھل رہنے کے بعد وہ مصیبتیں سہیں جن کو سن کر فوجی جوان بھی کانپ اُٹھ سکتے ہیں .

انیسویں صدی کے ختم ہوتے ہوتے ایک سے زیادہ بار اُن میں آزادی کی لہر آئی جسے انگریزی سرکار نے دبا دیا.

بلیا کی زندگی میں مشکل سے کوئی دس برس ایسے ملینگے جب اُن میں آزادی کی لہر نہیں دوڑ جاتی . اور یہ ایک ایسی چیز ہے جس کا ہر دیش کو ابھیمان ہونا چاہئے . بلیا کے ناتے ہر ہندستانی کو ابھیمان ہونا چاہئےاور ہندستانی سرکار کا یہ کام ہونا چاہئے کہ وہ اُن کے اس جذبے کی قدر کرے اور دیش کی بھلائی کے لئے اسکا اچھے سے اچھا اپیوگ کرے .

سن 1942 میں دلی میں بیٹھے بیٹھے انگریزی سرکار کے خلاف جب بلیا والوں کے کارناموں کی خبریں ہم تک پہنچتی تھیں تو ہماری باچھیں کھل اُٹھتی تھیں . پھر صفت یہ کہ اہنسا کے اُصولوں پر وہ اتنے کاربند رہے کہ گاندھی‌وادی بھی دانتوں تلے انگلی دبا گئے . اور قابلیت یہ دکھائی کہ بلیا نے چیتو پانڈے نامی ایک سردار دیا جسنے ایک ہفتے سے زیادہ بلیا پر ایسا راج کیا کہ ضلعے بھر میں ڈکیتی تو کیا چھوٹی سے چھوٹی چوری بھی نہیں ہوئی . سرکاری افسر جو ایک طرح سے اُن کے دشمن تھے وہ بھی اتنے آرام میں رہے اور اتنے بے فکری کی نیند سو سکے جتنی اُس راج میں انہیں سونے کو نہ ملی تھی جس کے وہ نوکر تھے .

اسی بلیا پر پھر انگریزی سرکار کے ظلموں کی کہانی ہمیں دلی بیٹھے بیٹھے ہی سننے کو ملی . اور وہ ظلم بھی اتنے زور کے تھے جن کو سن کر ہمارے رونگٹے کھڑے ہو جاتے تھے . ان دنوں کانگریس نامی ایک دلدار سنستھا موجود تھی جسکے کسی ممبر نے اُن ظلموں کے فوٹو بھی لئے تھے . وہ فوٹو جنتا اور اسمبلی تک پہونچے .

یہ سب ظلم بلیا نے سن 1942 میں برداشت کئے اور کہا جاتا ہے آٹھ برس بعد سن 1950 میں وہی بلیا اُن ظلموں کا شکار ہوا جن کا اوپر ذکر ہے.

बलिया की तक़दीर

'यू. पी. का तेलंगाना' सिरबन्द से एक लेख हमें देखने को मिला है जो यू. पी. के बलिया ज़िले से सम्बन्ध रखता है. वह लेख कई अख़बारों में निकल चुका है. हमारा ख़्याल है जिनके ग़ौर करने के लिए वह लेख लिखा गया है उनकी नज़रों से ज़रूर गुज़र गया होगा.

पढ़ने वालों के लिए हम कुछ इशारे नीचे देते हैं जिससे हमारे नोट को समझने में आसानी हो.

वह यह हैं:—

1. सुर्ख़ी है—यू. पी. का ते .
2. बलिया के गांव वालों की दुख भरी ज़िन्दगी.
3. किसी कान्फ़्रेन्स का होना.
4. पुलिस की नाराज़गी और गोली चलने तक की नौबत आ जाना.
5. एक पूछताछ कमेटी का इलाहाबाद से जाना. उस पूछताछ के नतीजे की ख़ास बातें यह हैं.

(क) मकानों का पुलिस के हाथों लुटना, और आग से जलना.

(ख) पुलिस के हाथों औरतों, मर्दों की मार पीट और बे इज़्ज़ती.

(ग) पुलिस के बूटों से एक तीन दिन के बच्चे का कुचला जाना, पुलिस का एक तीन चार बरस की लड़की को ढ़केलना और उसका बायां हाथ जल कर हमेशा के लिये बेकार हो जाना. पुलिस की मार से एक दस बरस के बच्चे हाथ और पांव बेकार हो जाना.

(घ) एक आदमी का पुलिस की गोली से वहीं पर मर जाना, और दसियों का घायल हो जाना.

6. सरकार का इस तरफ़ ध्यान दिलाना और कहना कि लोग इस वक़्त कम से कम यह चाहते हैं कि जिनके ख़िलाफ़ मुक़दमे चल रहे हैं और जो जेल में हैं उनको राजकाजी क़ैदी माना जाय और उनके बचाव के लिए अच्छे वकील का सुभीता हो और मौक़ा मिले.

इन सब बातों पर कुछ लिखने से पहले हम अपने पढ़ने वालों को यह बता देना चाहते हैं कि यह मार्के की घटना बलिया ज़िले की है और दो बरस से ज़ियादा पुरानी है.

पूछताछ कमेटी इसी गये जून के महीने में वहां पहुँची और उसी के एक मेम्बर मुजीब रिज़वी साहब की क़लम से लिखा हुआ यह लेख है जिसका ख़ुलासा हमने ऊपर दिया है.

بلیا کی تقدیر

'یو پی کا تیلنگانا' سر بند سے ایک لیکھ ہمیں دیکھنے کو ملا ہے جو یو. پی کے بلیا ضلع سے سمبندھ رکھتا ہے . وہ لیکھ کئی اخباروں میں نکل چکا ہے . ہمارا خیال ہے جن کے غور کرنے کے لئے وہ لیکھ لکھا گیا ہے اُن کی نظروں سے ضرور گذر گیا ہوگا .

پڑھنے والوں کے لئے ہم کچھ اِشارے دیتے ہیں جس سے ہمارے نوٹ کو سمجھنے میں آسانی ہو .

وہ یہ ہیں :—

1. سرخی—ہے یو. پی کا تیلنگانا .
2. بلیا کے گاؤں والوں کی دکھ بھری زندگی .
3. کسی کانفرنس کا ہونا .
4. پولیس کی ناراضگی اور گولی چلنے تک کی نوبت آ جانا .
5. ایک پوچھ تاچھ کمیٹی کا الہ آباد سے جانا . اس پوچھ تاچھ کے نتیجے کی خاص باتیں یہ ہیں .

(ک) مکانوں کا پولیس کے ہاتھوں لٹنا' اور آگ سے جلنا .

(کھ) پولیس کے ہاتھوں عورتوں مردوں کی مار پیٹ اور بے عزتی .

(گ) پولیس کے بوٹوں سے ایک تین دن کے بچے کا کچلا جانا' پولیس کا ایک تین چار برس کی لڑکی کو ڈھکیلنا اور اس کا بایاں ہاتھ جل کر ہمیشہ کے لئے بیکار ہو جانا . پولیس کی مار سے ایک دس برس کے بچے کے ہاتھ اور پاؤں بےکار ہو جانا .

(گھ) ایک آدمی کا پولیس کی گولی سے وہیں پر مرجانا' اور دسیوں کا گھایل ہو جانا .

6. سرکار کا اس طرف دھیان دلانا اور کہنا کہ لوگ اس وقت کم سے کم یہ چاہتے ہیں کہ جن کے خلاف مقدمے چل رہے ہیں اور جو جیل میں ہیں اِن کو راج کاجی قیدی مانا جائے اور ان کے بچاؤ کے لئے اچھے وکیل کا سبھیتا ہو اور موقع ملے .

اِن سب باتوں پر کچھ لکھنے سے پہلے ہم اپنے پڑھنے والوں کو یہ بتا دینا چاہتے ہیں کہ یہ مارکے کی گھٹنا بلیا ضلع کی ہے اور دو برس سے زیادہ پرانی ہے .

پوچھ تاچھ کمیٹی اِسی گئے جون کے مہینے میں وہاں پہنچی اور اُسی کے ایک ممبر مجیب رضوی صاحب کی قلم سے لکھا ہوا ہے یہ لیکھ ہے جس کا خلاصہ ہم نے اوپر دیا ہے .

कताई मंडल के मेम्बरों को अगर केन्द्रीय संचालन वादी समाज व्यवस्था के बदले में विकेन्द्रित स्वावलंबी समाज व्यवस्था के आधार पर ग्राम राज क़ायम करना है तो इस काम की सबसे ज़ियादा ज़िम्मेवारी उन्हीं पर आती है. इसलिए उन्हें बालिग़ तालीम के इस हिस्से को अपने हाथ में लेना होगा और गांव के नौजवानों का कैम्प, स्वाध्याय मंडल और ग्राम सभाओं का संगठन करना होगा. उनकी हफ़्तेवारी बैठक में ज़ियादा से ज़ियादा तादाद में ग़ैर मेम्बरों को भी बुला कर इस काम में तेज़ी लानी होगी. जिस क्रांतिकारी प्रोग्राम के फैलाने के लिए कताई मंडल बनाये गए हैं उसे आगे बढ़ाने के लिए इसी तरह के प्रोग्रामों की ख़ास अहमियत है.

चुनाव के कारन जनता में कुछ बुरा और भला दोनों असर हुए हैं. चुनाव के सिलसिले में जहां जुदा जुदा दलों और उम्मीदवारों ने अज्ञान जनता को गुमराह करने की कोशिश की वहां आपस की बहस और चर्चा से उनकी आंखें भी काफ़ी खुल गईं. उनमें अपने आप ही काफ़ी राजकाजी चेतना फैली और जानकारी भी मिली. इतना गन्दा वातावरण होते हुए भी चुनाव का यह एक अच्छा नतीजा हुआ.

उम्मीदवारों और दलों के ज़हरीले प्रचार के कारन जो घातक असर हुआ उसमें जात पातवाद का विकास ख़ास कर हुआ. ब्राह्मन अब्राह्मन, जाट बनिया कायस्थ, भूमिहर, कुर्मी अहीर, वग़ैरा भेद भाव ही नहीं फैला बल्कि गौड़ कान्यकुब्ज वग़ैरा जात दरजात का भी बाज़ार काफ़ी गर्म रहा. प्रांत बार ईर्शा-द्वेश का सिर भी काफ़ी ऊंचा रहा. ऐसी भावनाओं का विकास मुल्क को कहां ले जायगा इसका ख़याल आते ही कपकपी होती है. इस पर हरएक दल के मेम्बर और रचनात्मक कार्यकर्ता को गम्भीरता से विचार करना होगा.

इसके अलावा चुनाव के कारन जनता के दिल में नेताओं के लिए आस्था भी घटी है. आज गांव गांव और बाज़ार बाज़ार में अच्छे से अच्छे नेताओं के बारे में जिस हलकेपन से चर्चा होती है वह किसी भी मुल्क के नेताओं के लिए शोभा नहीं देता. ऐसी हालत में आज जनता बे-लगाम जैसी हो जाय तो उसमें अचरज ही क्या है?

कताई मंडलों और रचनात्मक कार्यकर्ताओं को इन मसलों पर भी ध्यान देना होगा. उन्हें अपनी जान देकर भी सूबाई और जात पात के ज़हर को मिटाना होगा और इस कशमकश के बाहर अपने त्याग और तपस्या से देश में आस्थादार रहनुमाई क़ायम करनी होगी.

کتائی منڈل کے ممبروں کو اگر کیندریہ سنچالن وادی سماج ویوستھا کے بدلے میں وکیندرت سوولمبی سماج ویوستھا کے آدھار پر گرام راج قائم کرنا ہے تو اس کام کی سب سے زیادہ ذمےواری انہیں پر آتی ہے. اس لئے انہیں بالغ تعلیم کے اس حصے کو اپنے ہاتھ میں لینا ہوگا اور گاؤں کے نوجوانوں کا کیمپ، سوادھیائے منڈل اور گرام سبھاؤں کا سنگھٹن کرنا ہوگا. اُن کی ہفتےواری بیٹھک میں زیادہ سے زیادہ تعداد میں غیر ممبروں کو بھی بلاکر اس کام میں تیزی لانی ہوگی. جس کرانتکاری پروگرام کے پھیلانے کے لئے کتائی منڈل بنائے گئے ہیں اسے آگے بڑھانے کے لئے اسی طرح کے پروگراموں کی خاص اہمیت ہے.

چناؤ کے کارن جنتا میں کچھ برا اور بھلا دونوں اثر ہوئے ہیں. چناؤ کے سلسلے میں جہاں جدا جدا دلوں اور امیدواروں نے اگیان جنتا کو گمراہ کرنے کی کوشش کی وہاں آپس کی بحث اور چرچا سے اُن کی آنکھیں بھی کافی کھل گئیں. اُن میں اپنے آپ ہی کافی راج کاجی چیتنا پھیلی اور جانکاری بھی ملی. اتنا گندا واتاورن ہوتے ہوئے بھی چناؤ کا یہ ایک اچھا نتیجہ ہوا.

امیدواروں اور دلوں کے زہریلے پرچار کے کارن جو گھاتک اثر ہوا اس میں جات پات واد کا وکاس خاص کر ہوا. براہمن ابراہمن، جاٹ بنیا، کائستھ بھومی ہر، کرمی اہیر وغیرہ بھید بھاؤ ہی نہیں پھیلا بلکہ گوڑ کانیہ کبج وغیرہ جات درجات کا بھی بازار کافی گرم رہا. پرانت بار ایرشا دویش کا سر بھی کافی اونچا رہا. ایسی بھاوناؤں کا وکاس ملک کو کہاں لے جائیگا اس کا خیال آتے ہی کپکپی ہوتی ہے. اس پر ایک دل کے ممبر اور رچناتمک کاریہ کرتا کو گمبھیرتا سے وچار کرنا ہوگا.

اس کے علاوہ چناؤ کے کارن جنتا کے دل میں نیتاؤں کے لئے آستھا بھی گھٹی ہے. آج گاؤں گاؤں اور بازار بازار میں اچھے سے اچھے نیتاؤں کے بارے میں جس ہلکےپن سے چرچا ہوتی ہے وہ کسی بھی ملک کے نیتاؤں کے لئے شوبھا نہیں دیتا. ایسی حالت میں آج جنتا بےلگام جیسی ہو جائے تو اس میں اچرج ہی کیا ہے؟

کتائی منڈلوں اور رچناتمک کاریہ کرتاؤں کو ان مسئلوں پر بھی دھیان دینا ہوگا. انہیں اپنی جان دے کر بھی صوبائی اور جات پات کے زہر کو مٹانا ہوگا اور اس کشمکش کے باہر رہ کر اپنے تیاگ اور تپسیا سے دیش میں آستھادار رہنمائی قائم کرنی ہوگی.



وسیع تر کراچی کی تجویز آبرسانی

آج سے سو سال پہلے کراچی ۱۴،۰۰۰ ماہی گیروں کی ایک چھوٹی سی بنجر بستی تھی۔ وہی کراچی آج جمہوریہ پاکستان کا دارالخلافہ ہے جسکی کشادہ سڑکوں کے دو رویہ عالیشان عمارتوں میں ۲۰،۰۰،۰۰۰ انسان رہتے ہیں۔ کراچی کی آبادی کو ہر زمانہ میں پانی کی قلت کا سامنا کرنا پڑا ہے۔ اس سلسلہ میں حکومت پاکستان کی تجویز آبرسانی ایک مستحسن اقدام ہے کیونکہ اس کی تکمیل پر کراچی کو روزانہ ۱۲ کروڑ گیلن پانی دستیاب ہو سکے گا۔ پانی کی یہ مقدار نہ صرف گھریلو ضروریات کیلئے کافی ہوگی بلکہ اس سے خوبصورت سبزہ زاروں اور سڑکوں کی دونوں جانب سایہ دار درختوں کو پانی دینے میں بھی مدد ملے گی۔ پاکستان کی ترقی کے ساتھ ساتھ برماشیل کی کامیابی، محنت اور ہم جوئی کی تاریخ میں بھی ملک اور اہل ملک کی خدمت کے ابواب کا برابر اضافہ ہو رہا ہے۔

برماشیل ترقی پاکستان کا حصہ ہے

आम चुनाव और रचनात्मक कार्यकर्ता

(धीरेन्द्र मजूमदार)

आज़ाद भारत का आम चुनाव पूरा हुआ. जुदा जुदा सूबों में मंत्री मंडल भी बन गए हैं. संसार के इतिहास में इतनी बड़ी संख्या में मतदान से सरकार बनाने की कोई भी मिसाल नहीं मिलती है. सारा संसार चाव के साथ इस बड़े भारी प्रयोग को देख रहा था. लोग कुछ डरते भी थे. वह समझते थे कि इस काम को भारत संभाल नहीं सकेगा. बहुत बड़ी तादाद में मारपीट और क़िस्म क़िस्म की हिंसा की भरमार हो जायगी. लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ. सभी क्षेत्रों के चुनाव की व्यवस्था ठीक-ठीक हो गई. जनता ने भी शांति पूर्वक मतदान दिया. इससे भारत के अन्दरूनी आत्मा की सेहत ही ज़ाहिर होती है.

लेकिन जहाँ चुनाव की इस विराट सफलता से हमें ख़ुशी मनाना है वहाँ देश के अलग अलग दलों की असली पोल जिस प्रकार खुली उस पर भी हमें गंभीरता पूर्वक विचार करना है. क्योंकि जब जनतंत्र के आधार पर ही मुल्क को संगठित करना है तो यह ज़रूरी होगा कि उसकी ज़िम्मेवारी किसी न किसी दल पर हो.

पहला और कामयाब दल काँगरेस है. काँगरेस की ऐसी जगह होना क़ुदरती ही था. काँगरेस नाम के पुराने इतिहास को देखते हुए अगर ऐसा न होता तो ताज्जुब की बात होती. लेकिन इस दल को भी चुनाव के नतीजों पर विशेष ध्यान देना होगा. जिस नाम से पिछले 65 बरस तक देश भर में केवल एक ही क़ौमी दल रहा है, जिसके नाम पर लगातार देश के सभी देश भक्त अपने जीवन की आहुति देते रहे हैं. आज़ादी के बाद पहले चुनाव के मौक़े पर जितने फ़ी सदी वोट मिले वह काँगरेस के पिछले इतिहास के लिए शोभा की बात नहीं हैं. उन्हें तो सौ फ़ी सदी वोट मिलने चाहिये थे. लेकिन ऐसा न होकर कुल मिला कर बहुमत भी नहीं मिला. इसलिए उन्हें सोचना होगा कि आख़िर बात क्या है कि इतने दिनों से जमा किया हुआ समाज सेवा का "बैंक बैलेन्स" होते हुए भी उन्हें इतना कम वोट मिला. क्या इतने थोड़े दिनों में ही साठ साल से जमा किया हुआ "बैलेन्स" भुना डाला या और कोई बात है? आज जब पाँच साल के लिए मुल्क की बागडोर इस दल के हाथ में आई है तो उन्हें समझना होगा कि यह मौक़ा उनके लिए अग्नि परीक्षा का है. उन्हें अपनी कमज़ोरियों की जाँच करके उन्हें दूर करना होगा. साथ-साथ यह बात भी सोचनी होगी कि जिस युग पुरुष महात्मा गाँधी के मार्ग दर्शन में उन्हें आज़ादी मिली उन्हीं के

عام چناؤ اور رچناتمک کاریہ کرتا

(دھیریندر مزومدار)

آزاد بھارت کا عام چناؤ پورا ہوا ۔ جدا جدا صوبوں میں منتری منڈل بھی بن گئے ہیں۔ سنسار کے اتہاس میں اتنی بڑی سنکھیا میں متدان سے سرکار بنانے کی کوئی بھی مثال نہیں ملتی ہے ۔ سارا سنسار چاؤ کے ساتھ اس بڑے بھاری پریوگ کو دیکھ رہا تھا ۔ لوگ کچھ ڈرتے بھی تھے۔ وہ سمجھتے تھے کہ اس کام کو بھارت سنبھال نہیں سکے گا ۔ بہت بڑی تعداد میں مارپیٹ اور قسم قسم کی ہنسا کی بھر مار ہو جائے گی ۔ لیکن ایسا کچھ نہیں ہوا ۔ سبھی چھیتروں کے چناؤ کی ویوستھا ٹھیک ٹھیک ہوگئی۔ جنتا نے بھی شانتی پوروک متدان دیا۔ اس سے بھارت کے اندرونی آتما کی صحت ہی ظاہر ہوتی ہے ۔

لیکن جہاں چناؤ کی اس وراٹ سپھلتا سے ہمیں خوشی منانا ہے وہاں دیش کے الگ الگ دلوں کی اصلی پول جس پرکار کھلی اس پر بھی ہمیں گمبھیرتا پوروک وچار کرنا ہے ۔ کیونکہ جب جن‌تنتر کے آدھار پر ہی ملک کو سنگھٹت کرنا ہے تو یہ ضروری ہوگا کہ اس کی ذمہ‌داری کسی نہ کسی دل پر ہو ۔

پہلا اور کامیاب دل کانگریس ہے ۔ کانگریس کی ایسی جگہ ہونا قدرتی ہی تھا ۔ کانگریس نام کے پرانے اتہاس کو دیکھتے ہوئے اگر ایسا نہ ہوتا تو تعجب کی بات ہوتی ۔ لیکن اس دل کو بھی چناؤ کے نتیجوں پر وشیش دھیان دینا ہوگا ۔ جس نام سے پچھلے 65 برس تک دیش بھر میں کیول ایک ہی قومی دل رہا ہے، جس کے نام پر لگاتار دیش کے سبھی دیش بھکت اپنے جیون کی آہوتی دیتے رہے ہیں ۔ آزادی کے بعد پہلے چناؤ کے موقعے پر جتنے فیصدی ووٹ ملے وہ کانگریس کے پچھلے اتہاس کے لئے شوبھا کی بات نہیں ہے ۔ انہیں تو سو فیصدی ووٹ ملنے چاہئے تھے ۔ لیکن ایسا نہ ہوکر کل ملاکر بہومت بھی نہیں ملا ۔ اس لئے انہیں سوچنا ہوگا کہ آخر بات کیا ہے کہ اتنے دنوں سے جمع کیا ہوا سماج سیوا کا "بینک بیلنس" ہوتے ہوئے بھی انہیں اتنا کم ووٹ ملا ۔ کیا اتنے تھوڑے دنوں میں ہی ساٹھ سال سے جمع کیا ہوا "بیلنس" بھنا ڈالا یا اور کوئی بات ہے ؟ آج جب پانچ سال کے لئے ملک کی باگ‌ڈور اس دل کے ہاتھ میں آئی ہے تو انہیں سمجھنا ہوگا کہ یہ موقع ان کے لئے اگنی پریکشا کا ہے ۔ انہیں اپنی کمزوریوں کی جانچ کرکے انہیں دور کرنا ہوگا ۔ ساتھ ساتھ یہ بات بھی سوچنی ہوگی کہ جس یگ پرش مہاتما گاندھی کے مارگ درشن میں انہیں آزادی ملی انہیں کے

की तरह मेरा भी पक्का ख़्याल है कि विधान ने जिस भाषा को सरकारी भाषा क़रार दिया है वह वही भाषा है जिसे महात्मा गांधी हिन्दुस्तानी कहा करते थे और जिसे एक मुद्दत तक कांगरेस क़ौमी ज़बान या राष्ट्र भाषा कहा करती थी. यह सही है कि दो लिखावटों के बजाय अब सिर्फ़ एक ही लिखावट रहेगी और भाषा का नाम भी हिन्दी होगा मगर असल भाषा की तारीफ़ और इसको फैलाने, बढ़ाने, तरक़्क़ी देने और परवान चढ़ाने के लिए जो ख़ास निदेश (Directive) दिये गये हैं वह वही हैं जो हम चाहते थे और चाहते हैं. हम जानते और मानते हैं कि भाषा और लिखावट में गहरा सम्बन्ध है ज़रूर मगर वह अलग अलग चीज़ें हैं. एक अनपढ़ मुल्क में तो लिखावट की अहमियत और भी कम होती है. नाम से भी असलियत पर कोई असर नहीं पड़ सकता बशर्ते कि नाम बदलने वाले असलियत के बदलने पर न तुले हों. ग़रज़ हिन्दी नाम और नागरी लिखावट से लाज़मी तौर पर हिन्दुस्तानी की असलियत में फ़र्क़ आना साबित नहीं हो सकता.

हां, यह और बात है कि विधान में राज भाषा का नाम बदलने वालों की यह चाल हो कि नाम की टीका तो हिन्दुस्तानी की तरह होगी मगर सचमुच जो भाषा इस्तेमाल होगी वह पंडिताना, संस्कृताना और बनारसीयाना हिन्दी होगी. इस क़िस्म की हिन्दी के हामी विधान बनाते वक़्त शायद महसूस कर रहे थे कि महात्मा जी के उसूलों की सोलहों आने मुख़ालफ़त कामयाब नहीं होगी और कांगरेस के बड़े बड़े नेता अपनी ज़िन्दगी में अपने ही हाथों महात्मा जी के तमाम असूलों को नहीं छोड़ेंगे. इसलिये वह हिन्दी की हिन्दुस्तानी टीका पर राज़ी हो गये मगर शुरू से वह न तो इस भाषाई निदेश के मुआफ़िक़ थे, इसे न उन्होंने चलाया और न चला रहे हैं, न आयन्दा चलाना चाहते हैं.

ऐसी सूरत में हिन्दुस्तानी पक्ष के पातियों का यह और भी फ़र्ज़ है कि वह विधानी हिन्दी को चलाने की कोशिश करें ताकि हिन्दी के नाम से ऐसी भाषा तरक़्क़ी करे जो सच मुच हिन्दुस्तानी हो. इन को पूरा विश्वास है कि हिन्दी और उरदू के होते हुए भी एक और ज़बान की ज़रूरत है.

(बाक़ी फिर)

کی ترہ میرا بھی پکا خیال ہے کہ ودھان نے جس بھاشا کو سرکاری بھاشا قرار دیا ہے وہ وہی بھاشا ہے جسے مہاتما گاندھی ہندستانی کہا کرتے تھے اور جسے ایک مدت تک کانگریس قومی زبان یا راشٹر بھاشا کہا کرتی تھی ۔ یہ سہی ہے کہ دو لکھاوٹوں کے بجائے اب سرف ایک ہی لکھاوٹ رہیگی اور بھاشا کا نام بھی ہندی ہوگا مگر اسل بھاشا کی تاریف اور اس کو پھیلانے' بڑھانے' ترقی دینے اور پروان چڑھانے کے لئے جو خاص ندیش (Directive) دیئے گئے ہیں وہ وہی ہیں جو ہم چاہتے تھے اور چاہتے ہیں ہم جانتے اور مانتے ہیں کہ بھاشا اور لکھاوٹ میں گہرا سمبندھ ہے ضرور مگر وہ الگ الگ چیزیں ہیں ۔ ایک انپڑھ ملک میں تو لکھاوٹ کی اہمیت اور بھی کم ہوتی ہے ۔ نام سے بھی اسلیت پر کوئی اثر نہیں پڑ سکتا بشرطیکہ نام بدلنے والے اسلیت کے بدلنے پر نہ تلے ہوں ۔ غرز ہندی نام اور ناگری لکھاوٹ سے لازمی تور پر ہندستانی کی اسلیت میں فرق آنا ثابت نہیں ہوسکتا ۔

ہاں' یہ اور بات ہے کہ ودھان میں راج بھاشا کا نام بدلنے والوں کی یہ چال ہو کہ نام کی ٹیکا تو ہندستانی کی ترہ ہوگی مگر سچ مچ جو بھاشا استعمال ہوگی وہ پنڈتانہ' سنسکرتانہ اور بنارسیانہ ہندی ہوگی ۔ اس قسم کی ہندی کے حامی ودھان بناتے وقت شاید محسوس کر رہے تھے کہ مہاتما جی کے اصولوں کی سولہوں آنے مخالفت کامیاب نہیں ہوگی اور کانگریس کے بڑے بڑے نیتا اپنی زندگی میں اپنے ہی ہاتھوں مہاتما جی کے تمام اسولوں کو نہیں چھوڑیں گے ۔ اس لئے وہ ہندی کی ہندستانی ٹیکا پر راضی ہوگئے مگر شرو سے وہ نہ تو اس بھاشائی ندیش کے موافق تھے' اسے نہ انہوں نے چلایا اور نہ چلا رہے ہیں' نہ آیندہ چلانا چاہتے ہیں ۔

ایسی سورت میں ہندستانی پکش کے پاتیوں کا یہ اور بھی فرز ہے کہ وہ ودھانی ہندی کو چلانے کی کوشش کریں تاکہ ہندی کے نام سے ایسی بھاشا ترقی کرے جو سچ مچ ہندستانی ہو ۔ ان کو پورا وشواس ہے کہ ہندی اور اردو کے ہوتے ہوئے بھی ایک اور زبان کی ضرورت ہے ۔

(باقی پھر)

हिन्दुस्तानी पर बंटवारे का असर.

बाज़ लोगों का विचार है कि बंटवारे के बाद राष्ट्र भाशा की हैसियत से उरदू या हिन्दुस्तानी का कोई सवाल बाक़ी ही नहीं रहा. अगर भारत के मुसलमान उरदू को अपनी घरेलू भाशा की हैसियत से रखना चाहें तो और बात है मगर इसकी उम्मीद ही नहीं कि करोड़ों हिन्दू इसको अपनाये रहेंगे. ख़ास कर जब से विधान ने हिन्दी को क़ौमी ज़बान क़रार दे दिया है, उरदू या हिन्दुस्तानी का सवाल उठाना राजद्रोह या बग़ावत है.

इस एतराज़ का यह जवाब है कि पहले तो विधान ने हिन्दी को क़ौमी भाशा नहीं राज भाशा क़रार दिया है. विधान या सरकार के ज़रिये, ख़ास कर इसके हुक्म से, भाशा का मसला हल नहीं हो सकता. क़ौमी भाशा बनाना न बनाना तमामतर जनता की मर्ज़ी है. जनता चाहेगी तो हिन्दी को राष्ट्र भाशा बनाएगी और इसको सरकारी हिन्दी पसन्द न आए, या वह इसके लिए बहुत कठिन या अजनबियाना निकले तो वह भाशा सिर्फ़ दफ़्तरों, रिपोर्टों, विद्याई संस्थाओं में दाख़ला पायेगी. मगर बाज़ारों, मेलों, जात्राओं, उरसों, स्टेशनों, दुकानों, सड़कों, बंकों, गीतों और फ़िल्मों में कोई और ज़बान या सरकारी भाशा से अलग ज़बान बोली जायगी.

भारत की पार्लियामेन्ट ने हिन्दी को राज भाशा का दरजा दिया है और इस हैसियत से भारत के तमाम रहने वाले इसको अपने फ़ायदे के लिये क़बूल करेंगे और जो नहीं क़बूल करेंगे वह ख़ुद ही भुगतेंगे और नुक़सान उठायेंगे. रहा, हिन्दी के तोड़ पर उरदू को खड़ा करने का सवाल, वह भी बंटवारे के साथ फ़ना हो गया. उरदू के हामी उरदू को भारत में सरकारी ज़बान बनाने का ख़ाब भी नहीं देखते, वह सिर्फ़ यह चाहते हैं कि विधान में दिये हुए अधिकारों के मुताबिक़ उरदू के हामी अपनी ज़बान को तरक़्क़ी देने, संभालने और फैलाने में माक़ूल मदद और सहूलियतें हासिल कर सकें. वह ज़ियादा से ज़ियादा यह आशा करते हैं कि इसका एक जुज़ हिन्दुस्तानी में बाक़ी रहे. जिस तरह मां बाप अपने बच्चों में अपना जुज़ महसूस करके ख़ुश होते हैं उसी तरह उरदू भी हिन्दुस्तानी की तरक़्क़ी में अपनी तरक़्क़ी महसूस कर के ख़ुश हो सकेगी. हर हालत में उरदू वालों के ख़्यालों और पालीसी से हिन्दुस्तानी के पक्श पातियों को कुछ सरोकार नहीं.

हिन्दुस्तानी के पक्श पाती तो भारती विधान में दी हुई टीका को सोलहों आने पसन्द करते हैं, अगर इस पर अमल हो तो वह ख़ुशी से हिन्दुस्तानी शब्द के बजाय हिन्दी शब्द भी क़बूल कर लेंगे. हिन्दुस्तानी के सैकड़ों पक्श पातियों

هندستانی پر بٹوارے کا اسر.

باز لوگوں کا وچار هے که بٹوارے کےبعد راشٹر بهاشا کی هیسیت سے اُردو یا هندستانی کا کوی سوال باقی نهیں رها . اگر بهارت کے مسلمان اُردو کو اپنی گهریلو بهاشا کی هیسیت سے رکهنا چاهیں تو اور بات هے مگر اِس کی اُمید هی نهیں که کروڑوں هندو اِس کو اپنائے رهیں گے . خاس کر جب سے ودهان نے هندی کو قومی زبان قرار دے دیا هے' اُردو یا هندستانی کا سوال اُٹهانا راج دروه یا بغاوت هے .

اِس ایتراز کا یه جواب هے که پهلے تو ودهان نے هندی کو قومی بهاشا نهیں راج بهاشا قرار دیا هے . ودهان یا سرکار کے ذریعے' خاس کر اِس کے هکم سے' بهاسا کا مسئلہ هل نهیں هوسکتا. قومی بهاشا بنانا نه بنانا تمامتر جنتا کی مرزی هے . جنتا چاهے گی تو هندی کو راشٹر بهاشا بنائیگی اور اِس کو سرکاری هندی پسند نه آئے' یا وه اِس کے لئے بهت کٹهن یا اجنبیانه نکلے تو وه بهاشا سرف دفتروں' رپورٹوں' ودیای سنستهاؤں میں داخلہ پائیگی . مگر بازاروں' میلوں' جاتراؤں' اُرسوں' اسٹیشنوں دوکانوں' سڑکوں' بنکوں' گیتوں اور فلموں میں کوی اور زبان یا سرکاری' بهاشا سے الگ زبان بولی جائیگی .

بهارت کی پارلیمنٹ نے هندی کو راج بهاشا کا درجه دیا هے اور اس هیسیت سے بهارت کے تمام رهنے والے اِس کو اپنے فایدے کے لئے قبول کرینگے اور جو نهیں قبول کرینگے وه خودهی بهگتینگے اور نقصان اُٹهائینگے. رها' هندی کے توڑ پر اُردو کو کهڑا کرنے کا سوال' وه بهی بٹوارے کے ساته فنا هوگیا . اُردو کے هامی اُردو کو بهارت میں سرکاری زبان بنانے کا خاب بهی نهیں دیکهتے' وه سرف یه چاهتے هیں که ودهان میں دیئے هوئے ادهکاروں کے مطابق اُردو کے هامی اپنی زبان کو ترقی دینے' سنبهالنے اور پهیلانے میں ماقول مدد اور سهولتیں هاسل کرسکیں. وه زیادا سے زیادا یه آشا کرتے هیں که اِس کا ایک جز هندستانی میں باقی رهے . جس تره ماں باپ اپنے بچوں میں اپنا جز مهسوس کر کے خش هوتے هیں . اِسی تره اُردو بهی هندستانی کی ترقی میں اپنی ترقی مهسوس کر کے خش هو سکیگی . هر هالت میں اُردو والوں کے خیالوں اور پالیسی سے هندستانی کے پکش پاتیوں کو کچه سروکار نهیں .

هندستانی کے پکش پاتی تو بهارتی ودهان میں دی هوی ٹیکا کو سولهوں آنے پسند کرتے هیں' اگر اِس پر امل هو تو وه خشی سے هندستانی شبد کے بجائے هندی شبد بهی قبول کرینگے . هندستانی کے سیکڑوں پکش پاتیوں

विद्याई संस्थाओं में और सरकारी भाषणों या रिपोर्टों में इन सुनहरे उसूलों के ठीक उल्टे कसूलों पर अमल होता है. भारत के विधान में राज भाशा के बारे में लिखा है :—

"यूनियन का फ़र्ज़ होगा कि हिन्दी भाशा के फैलाव में मदद दे, उसका विकास इस तरह करे कि वह भारत के मिलवां कलचर के सब तत्त्वों (Elements) के ज़ाहिर करने का माध्यम हो सके और इसकी जीनियस में दख़ल दिये बिना, हिन्दुस्तानी, आसामी, उरदू, ओरिया, बंगाली, पंजाबी, तामिल, तेलगू, संस्कृत, कश्मीरी, कन्नड़ी, गुजराती, मराठी, मलयालम और हिन्दी के रूप, स्टायल, और अज़हारी ढब अपनाने से इसको माला माल करवाये और जहां ज़रूरी और पसंददीदा हो, इसके शब्द सागर को बढ़ाने के लिए पहले संस्कृत से फिर दूसरी भाशाओं से सहायता ले."

मगर ख़ुद इस विधान का जो सरकारी हिन्दी तरजुमा छपा है, वह इतना कढ़ियल और बोझल है कि अच्छे ख़ासे हिन्दी जानने वाले भी इसे नहीं समझ सकेंगे.

हिन्दुस्तानी और उरदू से मदद लेना तो अलग रहा, विधान का सरकारी हिन्दी तरजुमा करने वाले सज्जनों ने आसामी, तामिल या बंगाली से भी कुछ मदद नहीं ली. इन्हें इन ज़बानों से न तो दिलचस्पी थी और न जानकारी. इन्तहा यह है कि हिन्दी तरजुमे में ख़ुद हिन्दी शब्दों का विरोध किया गया है. मिसाल के तौर पर अछूत पन के बजाय स्पर्शियता और पहले, दूसरे, तीसरे, आठवें के लिए प्रथम, द्वतीय, त्रितीय, अश्टम इस्तेमाल किये गये हैं.

इन्हीं वजहों से हिन्दुस्तानी का मसला बहुत उलझ गया है. महा इन्क़लाबी सुधार करने वाले, राजकाजी ग़रज़ से अनजान बनने वाले, धर्म और भाशा को एक मसला बनाने वाले, भाशाई मसले की अहमियत न जानने वाले, भूल भुलैयों में लतपत होने वाले, या सच दिली से महरूम कपट या छुट वहम में मुबतिला होने वाले भारत के भाशाई मसले को कठिन से कठिनतर बना रहे हैं.

इन बातों से ज़ाहिर है कि भारत का भाशाई मसला न तो बिच्छू की तरह है, जिसके सिर्फ़ एक डंक होती है और न सांप की तरह है जिसके सिर्फ़ बिस की थैली होती है बल्कि भारत का भाशाई मसला कमल के कीड़े की तरह है, जिसका पूरा बदन ज़हरीले बालों से भरा होता है या रावन राक्षस की तरह है जिसके कई सिर और कई हाथ थे. मतलब यह कि भारत के भाशाई मसले को हल करना है तो एक नहीं कई मसलों को हल करना होगा. इन में सब से ज़ियादा अहम मसला यह है कि बंटवारे से हिन्दुस्तानी की ज़रूरत रही या नहीं ?

ودیائی سنگھاؤں میں اور سرکاری بھاشنوں یا رپورٹوں میں ان سنہرے اُصولوں کے ٹھیک اُلٹے کسولوں پر امل ہوتا ہے ۔ بھارت کے ودھان میں راج بھشا کے بارے میں لکھا ہے :—

"یونین کا فرض ہوگا کہ ہندی بھاشا کے پھیلاؤ میں مدد دے، اُس کا وکاس اِس ترہ کرے کہ وہ بھارت کے ملواں کلچر کے سب تتووں (Elements) کے زاہر کرنے کا مادھیم ہو سکے اور اِس کی جینیس میں دخل دیئے بنا، ہندستانی، آسامی، اُردو، اوریا، بنگالی، پنجابی، تامل، تلیگو، سنسکرت، کشمیری، کنڑی، گجراتی، مراٹھی، ملیالم اور ہندی کے روپ، اسٹائل اور ازہاری ڈھب اپنانے سے اِس کو مالا مال کروائے اور جہاں زروری اور پسندیدہ ہو، اِس کے شبد ساگر کو بڑھانے کے لئے پہلے سنسکرت سے پھر دوسری بھاشاؤں سے سہائتا لے ۔"

مگر خد اِس ودھان کا جو سرکاری ہندی ترجما چھپا ہے، وہ اتنا کڑھیل اور بوجھل ہے کہ اچھے خاصے ہندی جاننے والے بھی اِسے نہیں سمجھ سکینگے ۔

ہندستانی اور اُردو سے مدد لینا تو الگ رہا، ودھان کا سرکاری ہندی ترجما کرنے والے سجنوں نے آسامی، تامل یا بنگالی سے بھی کچھ مدد نہیں لی۔ انہیں اِن زبانوں سے نہ تو دلچسپی تھی اور نا جانکاری ۔ انتہا یہ ہے کہ ہندی ترجمے میں خد ہندی شبدوں کا ورودھ کیا گیا ہے ۔ مسال کے تور پر اچھوت پن کی بجائے اس پر شیتا اور پہلے، دوسرے، تیسرے، آٹھویں کے لئے پرتھم، دوتیہ، ترتیہ، اشٹم استعمال کئے گئے ہیں ۔

اِن ہی وجہوں سے ہندستانی کا مسئلہ بہت اُلجھ گیا ہے ۔ مہا انقلابی سدھار کرنے والے، راجکاجی غرز سے انجان بننے والے، دھرم اور بھاشا کو ایک مسئلہ بنانے والے، بھاشائی مسئلے کی اہمیت جاننے والے، بھول بھلیوں میں لت پت ہونے والے، یا سچ دلی سے محروم کپٹ یا چھٹ وہم میں مبتلا ہونے والے بھارت کے بھاشائی مسئلے کو کٹھن سے کٹھن تر بنا رہے ہیں ۔

اِن باتوں سے زاہر ہے کہ بھارت کا بھاشائی مسئلہ نا تو بچھو کی ترہ ہے، جس کے سرف ایک ڈنک ہوتی ہے اور نا سانپ کی ترہ ہے جس کے سرف بس کی تھیلی ہوتی ہے بلکہ بھارت کا بھاشائی مسئلہ کمل کے کیڑے کی ترہ ہے، جس کا پورا بدن زہریلے بالوں سے بھرا ہوتا ہے یا راون راکھس کی ترہ ہے جس کے کئی سر اور کئی ہاتھ تھے۔ مطلب یہ کہ بھارت کے بھاشائی مسئلے کو حل کرنا ہے تو ایک نہیں کئی مسئلوں کو حل کرنا ہوگا ۔ اِن میں سب سے زیادہ اہم مسئلہ یہ ہے کہ بٹوارے سے ہندستانی کی زرورت رہی یا نہیں ؟

हुए हैं और जो खालिस उरदू की तरक़्क़ी चाहते हैं वह सब मुष फ़ारसी और अरबी से मुरादिफ़ हैं. यही लोग हिन्दुस्तान के भाशाई मसले कोउलझा रहे हैं. और यही लोग न सिर्फ़ हिन्दुस्तानी के दुश्मन बल्कि ख़ुद उस ज़बान के भी शत्रू हैं, जिसको तरक़्क़ी देने का वह दम भरते हैं.

हिन्दुस्तानी के सबसे बड़े दुश्मन वह लोग हैं जो आसान उरदू का दम भरते हुए कड़ियल से कड़ियल अरबी लफ़्ज़ों और फ़ारसियाना तरकीबों का इस्तेमाल करते हैं. जनता के सामने लेक्चर देते हुए या मिली जुली सभाओं की बैठकों में तक़रीर करते हुए यह लोग आसान भाशा बोलते हैं मगर विद्याई लेखों, अदबी रिसालों और साइन्सी किताबों में न सिर्फ़ मुश्किल भाशा लिखते हैं बल्कि अरबी फ़ारसी का कई पन अरबी फ़ारसी के तरीक़े पर बनाते हैं या संस्कृत व्याकरन और संस्कृत उच्चारन लागू करते हैं.

हिन्दुस्तानी के मसले को उलझाने वालों में वह लोग भी हैं जो आज भी सच्चे दिल से आसान भाशा के मानने वाले नहीं हैं. मुस्लिम लीगी और रज़ाकारी ज़माने में वह ऐसी उरदू लिखते थे जो हज़ारों अच्छे अच्छे पढ़े लिखों की समझ में नहीं आती थी. ख़ुद उरदू में कम इस्तेमाल होने वाले हिन्दी के सुन्दर सुन्दर लफ़्ज़ों को यह लोग पसन्द नहीं करते थे. बटवारे के बाद इन का उरदू प्रेम अरबी का रूप धारन करने लगा. इनका यह यक़ीन "ईमान" बन गया कि हैदराबाद आज़ाद बन चुका. पुलिस कारवाई के बाद यह लोग रातों रात हिन्दुस्तानी के भक्त हो गये और कहना शुरू किया कि भाशा का धर्म से क्या सम्बन्ध है ? राज भाशा सीखना राष्ट्र की सब प्रजा का फ़र्ज़ है. इन में से चन्द पाकिस्तान भाग गए. वहां पहुँचते ही यह हिन्दी शत्रू और हिन्दुस्तानी विरोधी न सिर्फ़ फ़ारसी-याना उरदू के पक्के हामी बन गए बल्कि बैनइस्लामी क़ौमियत का संगठन करने के लिए और सारी दुनिया के मुसलमानों को एक दूसरे से क़रीब लाने के लिए अरबी तमाम विद्यार्थियों के लिए लाज़मी करने के माफ़िक़ हो गये. इन सज्जनों के ख़लूस पर फ़ख़्र करना चाहिये कि एक इन्तहा से दूसरे इन्तहा तक जाने में न झिझकते हैं, न शरमाते हैं. जहां जो पालीसी अपनी ग़रज़ के लिए मुनासिब समझते हैं, उसी को अख़्तियार करते हैं. इनकी वजह से भी हिन्दुस्तानी का मसला बहुत उलझ गया है.

ख़लूस या सच्चे दिल की कमी उरदू वालों की तरह हिन्दी प्रेमियों में पाई जाती है. कहने को वह भी कहते हैं कि भाशा सरल होनी चाहिये, अच्छे अच्छे शब्द सब भाशाओं से ले लेना चाहिये, चलन पाये हुए लफ़्ज़ों का विरोध हरगिज़ नहीं करना चाहिये, मगर अदबी सम्मेलनों में,

ہوئے ہیں اور جو خالص اُردو کی ترقی چاہتے ہیں وہ سب مع فارسی اور عربی سے مرادف ہیں ۔ یہی لوگ ہندستان کے بھاشائی مسئلے کو اُلجھا رہے ہیں، اور یہی لوگ نا صرف ہندستانی کے دشمن بلکہ خد اُس زبان کے بھی شترو ہیں' جس کو ترقی دینے کا وہ دم بھرتے ہیں ۔

ہندستانی کے سب سے بڑے دشمن وہ لوگ ہیں جو آسان اُردو کا دم بھرتے ہوئے کڑیل سے کڑیل اربی لفزوں اور فارسیانہ ترکیبوں کا استیمال کرتے ہیں ۔ جنتا کے سامنے لکچر دیتے ہوئے' یا ملی جلی سبھاؤں کی بیٹھکوں میں تقریر کرتے ہوئے یہ لوگ آسان بھاشا بولتے ہیں مگر ودیائی لیکھوں' ادبی رسالوں اور سائنسی کتابوں میں نا صرف مشکل بھاشا لکھتے ہیں بلکہ اربی فارسی کا کئی پن اربی فارسی کے طریقے پر بناتے ہیں یا سنسکرت ویاکرن اور سنسکرت اُچارن لاگو کرتے ہیں ۔

ہندستانی کے مسئلے کو اُلجھانے والوں میں وہ لوگ بھی ہیں جو آج بھی سچے دل سے آسان بھاشا کے ماننے والے نہیں ہیں ۔ مسلم لیگی اور رزاکاری زمانے میں وہ ایسی اُردو لکھتے تھے جو ہزاروں اچھے اچھے پڑھے لکھوں کی سمجھ میں نہیں آتی تھی ۔ خد اُردو میں کم استیمال ہونے والے ہندی کے سندر سندر لفزوں کو یہ لوگ پسند نہیں کرتے تھے ۔ بٹوارے کے باد اِن کا اُردو پریم اربی کا روپ دھارن کرنے لگا ۔ اِن کا یہ یقین "ایمان" بن گیا کہ حیدرآباد آزاد بن چکا ۔ پولیس کاروائی کے باد یہ لوگ راتوں رات ہندستانی کے بھکت ہوگئے اور کہنا شرو کیا کہ بھاشا کا دھرم سے کیا سمبندھ ہے ؟ راج بھاشا سیکھنا راشٹر کی سب پرجا کا فرز ہے ۔ اِن میں سے چند پاکستان بھاگ گئے ۔ وہاں پہونچتے ہی یہ ہندی شترو اور ہندستانی ورودھی نہ صرف فارسیانہ اُردو کے پکے حامی بن گئے بلکہ بین اِسلامی قومیت کا سنگھٹن کرنے کے لئے اور ساری دنیا کے مسلمانوں کو ایک دوسرے سے قریب لانے کے لئے اربی تمام ودیارتھیوں کے لئے لازمی کرنے کے موافق ہوگئے ۔ اِن سجنوں کے خلوص پر فخر کرنا چاہئے کہ ایک انتہا سے دوسرے انتہا تک جانے میں نا جھجھکتے ہیں' نا شرماتے ہیں ۔ جہاں جو پالیسی اپنی غرز کے لئے مناسب سمجھتے ہیں' اُسی کو اختیار کرتے ہیں ۔ اِن کی وجہ سے بھی ہندستانی کا مسئلہ بہت اُلجھ گیا ہے ۔

خلوص یا سچے دل کی کمی اُردو والوں کی طرح ہندی پریمیوں میں پائی جاتی ہے ۔ کہنے کو وہ بھی کہتے ہیں کہ بھاشا سرل ہونی چاہئے' اچھے اچھے شبد سب بھاشاؤں سے لے لینا چاہئے' چلن پائے ہوئے لفزوں کا ورودھ ہرگز نہیں کرنا چاہئے' مگر ادبی سمیلنوں میں'

अवनति) उरदू " हो गई थी. * जब अंजुमनी भाषा का हाल हुआ तो आप खुद ख्याल कर सकते हैं कि स्मानिया युनिवर्सिटी में कैसी उरदू चलाने की कोशिश जा रही थी, और इससे उरदू की तरक़्क़ी में क्या मदद ल रही थी. वहां की उरदू, उरदू नहीं थी, कुरदू हो गई . वहां की किताबें खुद वहां के विद्यार्थी नहीं पढ़ते थे र वहां के तरजुमा घर में सैकड़ों ही नहीं, हजारों तलाहें मरे हुए बच्चे जिस तरह पैदा होते हैं, उसी तरह दों की हालत व कैफ़ियत में ढ़ाली गई थीं. हिन्दी जानने ले इस्तलाही कमेटियों में आम तौर पर होते ही ीं थे.

आप इस बात को जरूर मानेंगे कि हर शख़्स को यह धिकार हासिल है और होना चाहिये कि वह सब जायेज़ क़ों से अपने अपने धर्म, भाशा और राजकाजी ूल या कलचर का प्रचार करे. अगर कोई उरदू या हिन्दी रबी या संस्कृत की तरक़्क़ी या प्रचार की कोशिश करता तो उसको पूरा हक़ हासिल है.

हैदराबाद में अरसे से "दायरतुल मुआरिफ़" क़ायम वहां पुलिस कारवाई से दो ढ़ाई बरस पहले अरबी भाशा प्रचार के लिए एक सभा क़ायम की गई थी जिसकी क हर हफ़्ते होती थी. उसूली एतबार से बैठक के ान में हर मेम्बर के लिए लाज़मी था कि सिर्फ़ अरबी ले. यह भी सुना था कि अंजुमन की शाखें सब ज़िलों में ाई गई थीं.

बड़ोदा रियासत संस्कृत किताबों की खोज, तरतीब र छपाई पर लाखों रुपया खर्च कर चुकी है. हिन्दुस्तान कई युनिवर्सिटियों और विद्याई संस्थाओं ने संस्कृत, रबी और फ़ारसी पर लाखों रुपया खर्च किया है. अगर स्कृत, अरबी और फ़ारसी पर इतना रुपया और मेहनत फ़ करने की बजाये सरल हिन्दी, आसान उरदू या चलती न्दुस्तानी के फैलाने की कोशिश की गई होती तो भारत ढ़े लिखों की तैदाद तिगुनी होती और भारत का भाशाई सला इतना उलझा हुआ न होता.

फिर भी मैं कहता हूँ कि खुल्लम खुल्ला संस्कृत का प्रचार ना या अरबी, फ़ारसी की तरक़्क़ी के लिए बेखटके धन लत सर्फ़ करना अच्छा है न यह कि संस्कृत का प्रचार दी की आड़ में किया जाय और उरदू के सहारे फ़ारसी रबी फैलाने की कोशिश की जाय. जो लोग शुद्ध हिन्दी प्रचार करना चाहते हैं वह दरअसल संस्कृत से सहमे

---

* इस क़िस्म की किताबों में "फ़रहंग इस्तलाहात मया" "अनासात पर अबहास" और कई किताबों के नाम "ईरान ब अहदसा-सानेयान" और इनमें इस्तेमाल की तरकीबें हैं.

(اونتی) اُردو" ہوگئی تھی۔ * جب انجمنی بھاشا کا یہ حال ہوا تو آپ خد خیال کرسکتے ہیں کہ اُسمانیا یونیورسٹی میں کیسی اُردو چلانے کی کوشش کی جا رہی تھی' اور اِس سے اُردو کی ترقی میں کیا مدد مل رہی تھی . وہاں کی اُردو' اُردو نہیں تھی' کردو ہوگئی تھی . وہاں کی کتابیں خد وہاں کے ودیارتھی نہیں پڑھتے تھے اور وہاں کے ترجما گھر میں سیکڑوں ہی نہیں' ہزاروں اِستلاہیں مرے ہوئے بچے جس ترہ پیدا ہوتے ہیں' اُسی ترہ مردوں کی حالت و کیفیت میں ڈھالی گئی تھیں . ہندی جاننے والے اِستلاحی کمیٹیوں میں آم تور پر ہوتے ہی نہیں تھے .

آپ اِس بات کو ضرور مانینگے کہ ہر شخص کو یہ ادھیکار حاسل ہے اور ہونا چاہئے کہ وہ سب جائز طریقوں سے اپنے اپنے دھرم' بھاشا اور راج کاجی اُصول یا کلچر کا پرچار کرے . اگر کوئی اُردو یا ہندی' اربی یا سنسکرت کی ترقی یا پرچار کی کوشش کرتا ہے تو اُس کو پورا حق حاسل ہے .

حیدرآباد میں ارصے سے " دایرۃالمعارف " قایم ہے وہاں پولیس کاروائی سے دو ڈھائی برس پہلے اربی بھاشا کے پرچار کے لئے ایک سبھا قایم کی گئی تھی جس کی بیٹھک ہر ہفتے ہوتی تھی. اُصولی ایتبار سے بیٹھک کے دوران میں ہر ممبر کے لئے لازمی تھا کہ سرف اربی بولے . یہ بھی سنا تھا کہ انجمن کی شاخیں سب ضلعوں میں پھیلائی گئی تھیں.

بڑودا ریاست سنسکرت کتابوں کی کھوج' ترتیب اور چھپائی پر لاکھوں روپیا خرچ کر چکی ہے . ہندستان کی کئی یونیورسٹیوں اور ودیای سنستھاؤں نے سنسکرت' اربی اور فارسی پر لاکھوں روپیا خرچ کیا ہے . اگر سنسکرت اربی اور فارسی پر اتنا روپیا اور محنت سرف کرنے کی بجائے سرل ہندی' آسان اُردو یا چلتی ہندستانی کے پھیلانے کی کوشش کی گئی ہوتی تو بھارت میں پڑھے لکھوں کی تعداد تگنی ہوتی اور بھارت کا بھاشائی مسئلہ اتنا اُلجھا ہوا نہ ہوتا .

پھر بھی میں کہتا ہوں کہ کھلم کھلا سنسکرت کا پرچار کرنا یا اربی' فارسی کی ترقی کے لئے بے کھٹکے دھن دولت سرف کرنا اچھا ہے نہ یہ کہ سنسکرت کا پرچار ہندی کی آڑ میں کیا جائے اور اُردو کے سہارے فارسی اربی پھیلانے کی کوشش کی جائے . جو لوگ شدھ ہندی کا پرچار کرنا چاہتے ہیں وہ دراصل سنسکرت سے سہمے

---

* اِس قسم کی کتابوں میں "فرہنگ اصطلاحات علمیہ" "جمادات پر جائداد" اور کئی کتابوں کے نام جیسے "ایران بہ عہد ساسانیان" اور اِن میں اِستعمال کی ہوئی ترکیبیں ہیں .

ज़ियादा नहीं थी और इनकी निस्बत हिन्दी घट रही थी क्योंकि उरदू से बन्धन रखने वाले बहुत से खानदान उरदू छोड़ते जा रहे थे.

हिन्दुस्तान के भाशाई मसले पर अपने विचार ज़ाहिर करने वालों में ऐसे भी कई लोग थे जो कहते कुछ थे और करते कुछ और थे. इनकी दो अमली की वजह से भी हिन्दु-स्तान का भाशाई मसला बहुत उलझ रहा था. मिसाल के तौर पर वह कहते तो यह थे कि हर उरदू जानने वाले को हिन्दी सीखनी चाहिये और हर हिन्दी जानने वाले को उरदू. कई आलिमों का कहना था कि हिन्दी जाने बिना उरदू नहीं आ सकती या हिन्दी अच्छी तरह जानने के लिए उरदू का जानना मुनासिब ही नहीं, लाज़मी है; फिर भी मदरसों में सिर्फ़ एक तरह की भाशा और एक ही लिखावट सिखाई जाती रही.

औरों को जाने दीजिये, ख़ुद वह लोग जो यह कहते थे कि उरदू दानों के लिए हिन्दी सीखना लाज़मी है, मामूली हिन्दी भी नहीं जानते थे. अफ़सोस की बात है कि हमारी यूनिवर्सिटियों में उरदू के ऐसे लेक्चरार, रीडर और प्रोफ़ेसर थे और हैं जो मिडिल क्लास के विद्यार्थियों के बराबर भी हिन्दी नहीं जानते. थोड़ी बहुत हिन्दी जो उन्होंने सिर्फ़ बी. ए. या एम. ए. पास करने के लिए भुग्तवान के तौर पर सीखी थी, वह कभी के भूल भाल गए थे. ख़ास कर हैदराबाद और पंजाब में तो उरदू के पढ़ाने वालों और उरदू में "रिसर्च" करने वालों को कभी इतनी हिन्दी नहीं आती थी जो बनारस के मैट्रिक पास को आती हो.

ग़रज़ लोगों का दावा कुछ होता है, और असल कुछ इनके सच्चे ख़्याल कुछ होते हैं और करते कुछ हैं. इन लोगों की वजह से भाशाई मसला बहुत पेंचदार होने पर और भी उलझता जा रहा है. कोई हिन्दुस्तानी के नाम से उरदू की तरक़्क़ी चाहता है और कोई हिन्दुस्तानी का नाम निहाद भक्त होते हुए संस्कृताई हिन्दी का प्रचार करता है.

अंजुमन तरक़्क़ी उरदू के नाम से जो काम पिछली देहाइयों में हुआ, उससे बहुत कम फ़ायदा हुआ. कई किताबों से उरदू की तरक़्क़ी होने के बजाये उरदू को नुक़सान पहुँचा. क्योंकि अंजुमन ने जिस भाशा को ख़ास कर जिन इस्तलाहों (परिभाशाओं) को चलाना चाहा, वह बहुत कड़ियल, भारू और परदेसियाना थीं, इनमें कई इतनी कड़ियल होती थीं कि उरदू के हामी इन्हें नहीं समझ सकते थे. इसी वजह से अंजुमन तरक़्क़ी उरदू "अंजुमन तहदीद

پادہ نہیں تھی اور ان کی نسبت ہندی گھٹ رہی تھی کیونکہ اُردو سے بندھن رکھنے والے بہت سے خاندان اُردو چھوڑتے جا رہے تھے ۔

ہندستان کے بھاشای مسئلے پر اپنے وچار ظاہر کرنے والوں میں ایسے بھی کئی لوگ تھے جو کہتے کچھ تھے اور کرتے کچھ اور تھے ۔ ان کی دوعملی کی وجہ سے بھی ہندستان کا بھاشای مسئلہ بہت اُلجھ رہا تھا ۔ مثال کے تور پر وہ کہتے تو یہ تھے کہ ہر اُردو جاننے والے کو ہندی سیکھنی چاہئے اور ہر ہندی جاننے والے کو اُردو. کئی عالموں کا کہنا تھا کہ ہندی جانے بنا اُردو نہیں آسکتی یا ہندی اچھی ترہ جاننے کے لئے اُردو کا جاننا مناسب ہی نہیں، لازمی ہے؛ پھر بھی مدرسوں میں سرف ایک ترہ کی بھاشا اور ایک ہی لکھاوٹ سکھای جاتی رہی ۔

اوروں کو جانے دیجئے، خد وہ لوگ جو یہ کہتے تھے کہ اُردو دانوں کے لئے ہندی سیکھنا لازمی ہے، معمولی ہندی بھی نہیں جانتے تھے ۔ افسوس کی بات ہے کہ ہماری یونیورسٹیوں میں اُردو کے ایسے لکچرار، ریڈر اور پروفیسر تھے اور ہیں جو مڈل کلاس کے ودیارتھیوں کے برابر بھی ہندی نہیں جانتے ۔ تھوڑی بہت ہندی جو انہوں نے سرف بی ۔ اے ۔ یا ایم ۔ اے ۔ پاس کرنے کے لئے بھگتوان کے تور پر سیکھی تھی، وہ کبھی کے بھول بھال گئے تھے ۔ خاس کر حیدرآباد اور پنجاب میں تو اُردو کے پڑھانے والوں اور اُردو میں "رسرچ" کرنے والوں کو کبھی اتنی ہندی نہیں آتی تھی جو بنارس کے میٹرک پاس کو آتی ہو ۔

غرض لوگوں کا داوا کچھ ہوتا ہے، اور اصل کچھ ان کے سچے خیال کچھ ہوتے ہیں اور کرتے کچھ ہیں۔ ان لوگوں کی وجہ سے بھاشای مسئلہ بہت پیچدار ہونے پر اور بھی اُلجھتا جا رہا ہے ۔ کوی ہندستانی کے نام سے اُردو کی ترقی چاہتا ہے اور کوئی ہندستانی کا نام نہاد بھگت ہوتے ہوئے سنسکرتای ہندی کا پرچار کرتا ہے ۔

انجمن ترقی اُردو کے نام سے جو کام پچھلی دہائیوں میں ہوا، اس سے بہت کم فایدہ ہوا. کئی کتابوں سے اُردو کی ترقی ہونے کے بجائے اُردو کو نقصان پہونچا ۔ کیوں کہ انجمن نے جس بھاشا کو خاس کر جن اصطلاحوں (پری بھاشاؤں) کو چلانا چاہا، وہ بہت کڑیل، بھارو اور پردیسیانا تھیں، ان میں کئی اتنی کڑیل ہوتی تھیں کہ اُردو کے حامی انہیں نہیں سمجھ سکتے تھے ۔ اسی وجہ سے انجمن ترقی اُردو "انجمن تحدید

लता है. उरदू और हिन्दी की धर्मी बाहमियत जो कुछ
। है वह ईसाईयों की बदौलत है, जो इन भाषाओं में
खी हुई इन्जील पढ़ते हैं, बाज जगहों और गिरजाओं में
साई इबादत इन ही भाषाओं में होती है, इन ही भाषाओं
भजन गाये जाते हैं और दुखी दिलों को दिलासा देने के
ाए भी यही भाषायें काम आती हैं. इसके बरअक्स उरदू
ार हिन्दी हैं जो न तो हमारी सुख की साथी हैं और न
ख की !

बहर हाल, समाज और राजकाज, धर्म और धन
ज से भाषा को कितना ही लगाव सही, सबके सब न तो
; हैं और न यकसां हैं. इस फ़र्क़ के होते हुए राजकाज
र धर्म को एक समझना भूल है या अंधेर, नादानी है या
ग़लत. दो सगे भाई ख़ून के नाते से कितने ही मिलते जुलते
, फिर भी वह अलग अलग होते हैं. उनकी फ़ितरत (प्रकृति)
ातलिफ़ होती है, सीरत (चरित्र) जुदागाना होती है,
ल व दिमाग़ के गुन अलग अलग होते हैं. धर्म और
ज काज या भाषा और धर्म में गहरा लगाव है ज़रूर
ार उनमें फ़र्क़ भी है. सगे भाई बहन होने पर भी वह
तो एक हैं न यकसां हैं.

भाशाई मसले को उलझाने वालों में वह भी हैं जो
पने देश और वक़्त की सस्ती शोहरत हासिल करने के
ये अनसच बोलते हैं और अनसच बातें बोलते बोलते या
चते सोचते वह इतने भोले आदमी हो जाते हैं कि वह
ट को सच मानने लगते हैं और एक भोले भाले दोस्त की
ह अपने आप धोका खा कर दूसरों को धोका देते हैं.

मिसाल के लिए, हिन्दी प्रेमी और उरदू के हामी दोनों
सां दावा करते थे और अब भी कभी कभार करते हैं कि
न्दी और उरदू बोलने वालों की तैदाद 22 करोड़ है. जहां
दू बोलने वालों या समझ सकने वालों की गिनती का
ाल होता था, उरदू के माने को इतना फैला दिया जाता
कि उरदू में शुद्ध हिन्दी, बंगारू, मारवाड़ी, राजस्थानी,
। भाषा, बुन्देल खन्डी, कन्नौजी, पूरबी, भोजपुरी,
खनी सब बोलियां बोलने वालों को "उरदू दां" मान लिया
ता था; और जब हिन्दी बोलने वालों की तैदाद ज़ाहिर
नी होती थी, तो हिन्दी में अदबी उरदू रेख़्ता देहलवी या
नवी उरदू, लाहौरी और हैदराबादी कुरदू बल्कि "उरदू
ल्ला" को (जो ख़ालिस उरदू की क़िस्में हैं) हिन्दी में
ता कर हिन्दी बोलने वालों की तैदाद 22 करोड़ बताई
ी थी.

दोनों को यकसां दावा एक दिल बहलाव सपना था कि
दी ढाके से कोयटा तक और उरदू कशमीर से रास
ारी तक समझी जाती है. सच बात तो यह थी की उरदू
ने वालों की तैदाद किसी तरह तीन चार करोड़ से

ملتا ہے. اُردو اور ہندی کی دھرمی اہمیت جو کچھ بھی ہے وہ ایسائیوں کی بدولت ہے' جو اِن بھاشاؤں میں لکھی ہوئی انجیل پڑھتے ہیں' باز جگہوں اور گرجاؤں میں ایسائی ابادت اِن ہی بھاشاؤں میں ہوتی ہے' اِن ہی بھاشاؤں کے بھجن گئے جاتے ہیں اور دکھی دلوں کو دلاسا دینے کیلئے بھی یہی بھاشائیں کام آتی ہیں. اِسکے براکس اُردو اور ہندی ہیں جو نہ تو ہماری سکھ کی ساتھی ہیں اور نہ دکھ کی!

بہر حال' سماج اور راج کاج' دھرم اور دھن کاج سے بھاشا کو کتنا ہی لگاؤ سہی' سب کے سب نہ تو ایک ہیں اور نہ یکساں ہیں. اِس فرق کے ہوتے ہوئے راج کاج اور دھرم کو ایک سمجھنا بھول ہے یا اندھیر' نادانی ہے یا جہالت. دو سگے بھائی خون کے ناتے سے کتنے ہی ملتے جلتے ہیں' پھر بھی وہ الگ الگ ہوتے ہیں. اُن کی فطرت (پرکرتی) مختلف ہوتی ہے' سیرت (چرتر) جدا گانا ہوتی ہے' دل و دماغ کے گن الگ الگ ہوتے ہیں. دھرم اور راج کاج یا بھاشا اور دھرم میں گہرا لگاؤ ہے ضرور مگر اُن میں فرق بھی ہے. سگے بھائی بہن ہونے پر بھی وہ نہ تو ایک ہیں نہ یکساں ہیں.

بھاشائی مسئلے کو اُلجھانے والوں میں وہ بھی ہیں جو اپنے دیش اور وقت کی سستی شہرت حاصل کرنے کے لئے اَن سچ بولتے ہیں اور اَن سچ باتیں بولتے بولتے یا سوچتے سوچتے وہ اتنے بھولے آدمی ہو جاتے ہیں کہ وہ جھوٹ کو سچ ماننے لگتے ہیں اور ایک بھولے بھالے دوست کی طرح اپنے آپ دھوکا کھاکر دوسروں کو دھوکا دیتے ہیں.

مثال کے لئے' ہندی پریمی اور اُردو کے حامی دونوں یکساں داوا کرتے تھے اور اب بھی کبھی کبھار کرتے ہیں کہ ہندی اور اُردو بولنے والوں کی تعداد 22 کروڑ ہے. جہاں اُردو بولنے والوں یا سمجھ سکنے والوں کی گنتی کا سوال ہوتا تھا' اُردو کے مانے کو اتنا پھیلا دیا جاتا تھا کہ اُردو میں شدھ ہندی' بنگارو' مارواڑی' راجستھانی' برج بھاشا' بندیل کھنڈی' کنوجی' پوربی' بھوجپوری' دکھنی سب بولیاں بولنے والوں کو "اُردو داں" مان لیا جاتا تھا؛ اور جب ہندی بولنے والوں کی تعداد ظاہر کرنی ہوتی تھی' تو ہندی میں ادبی اُردو' ریختا' دہلوی یا لکھنوی اُردو' لاہوری اور حیدرآبادی کردو بلکہ "اُردو معلیٰ" کو (جو خالص اُردو کی قسمیں ہیں) ہندی میں ملا کر ہندی بولنے والوں کی تعداد 22 کروڑ بتائی جاتی تھی.

دونوں کا یکساں داوا ایک دل بہلاؤ سپنا تھا کہ ہندی ڈھاکے سے کوئٹا تک اور اُردو کشمیر سے راس کماری تک سمجھی جاتی ہے. سچ بات تو یہ تھی کہ اُردو جاننے والوں کی تعداد کسی طرح تین چار کروڑ سے

ठीक नहीं क्योंकि धर्म का बदलना फिर भी आसान है, भाशा का बदलना आम तौर पर नामुमकिन और हर सूरत में बेहद मुश्किल है. हज़रत ईसा का धर्म सारे संसार में फैलता जा रहा है, मगर 'नव ईसाईयों' की असली भाशायें कहां बदलती हैं और क्यों कर बदल सकती हैं ? इन पर जो कुछ भी असर पड़ता है वह ज़ियादातर पच्छिमयावे के कारन होता है न कि धर्म बदलावे से.

यह भी एक बड़ी भूल है कि बाज़ लोग धर्म और भाशा के मसले को एक समझते हैं. धर्म और भाशा के बन्धनों को बढ़ा चढ़ाकर इस तरह सामने लाते हैं कि भाशाई मसला धर्मी ज़ाहिर होने लगता है. मिसाल के तौर पर उरदू के हामी उरदू से फ़ारसी और अरबी के नातों को बढ़ाने के लिये फ़ारसी और अरबी को "इस्लामी" ज़बानें कहते हैं. हिन्दी प्रेमी संस्कृत के भक्त भी होते हैं और हिन्दी पर संस्कृत को छाया हुआ रखने के लिए हर तरह संस्कृत की अहमियत बढ़ाते हैं. संस्कृत के बड़े शब्द सागर, इसके व्याकरन और विद्याई अहमियत जताने के अलावा इसे "देव बानी" याने देवताओं की भाशा ठहराते हैं ताकि इसका आदर बढ़े और संस्कृत की धाक क़ायम हो जाय. फ़ारसी अरबी परस्तों और संस्कृत के पुजारियों की यह चालाकी है कि वह अपनी अपनी पसन्द की भाशा को धर्म के सहारे क़ायम रखना चाहते हैं. हालांकि धर्म की कोई भाशा नहीं होती. दुनिया भर में सबसे ज़ियादा फैला हुआ धर्म ईसाई धर्म है. हर मुल्क के ईसाई अपनी अपनी भाशा में इन्जील पढ़ते हैं, भजन गाते हैं, धर्मी व्याख्यान सुनते हैं. जो लोग लैटिन भाशा को ईसाईयों की धर्मी भाशा समझते हैं वह उनकी भूल है क्योंकि हज़रत ईसा की भाशा लैटिन नहीं थी. करोड़ों ईसाईयों को मालूम ही नहीं कि पहले पहल ईसाई धर्मी पुस्तक, इन्जील, किस भाशा में लिखी गई थी. इसलिए अकसर ईसाई ख़ुद अपनी ज़बान में ईसाई धर्म की किताबें पढ़ते, सुनते और समझते हैं. शादी और मोता (एक तरह का ब्याह) के मौक़ों पर अकसर मुक़ामी भाशा और आम भाशा का चलन होता है. इसके बरअक्स (ख़िलाफ़) उरदू के हामी और हिन्दी प्रेमी ख़ानदानी रस्मी और समाजी तक़रीबों में संस्कृत या अरबी का इस्तेमाल करते हैं जिसे कोई नहीं समझता. मेरे नज़दीक हिन्दी का सबसे बड़ा अपमान हिन्दी प्रेमियों के हाथों हो रहा है कि इनकी सबसे ज़ियादा चहेती भाशा ज़िन्दगी भर के सबसे अहम नाते को जोड़ते वक़्त बेदख़ल कर दी जाती है और मौत मिट्टी के मौक़े पर भी इससे कुछ फ़ायदा नहीं होता ! ठीक इसी तरह उरदू की सबसे बड़ी बेइज़्ज़ती ख़ुद उरदू के हामियों की वजह से हो रही है क्योंकि समाज और ख़ानदान की सबसे ज़ियादा अहम तक़रीबों के वक़्त याने शादी और मोता की रस्मों के वक़्त इसे घर निकाला

ٹھیک نہیں کیونکہ دھرم کا بدلنا پھر بھی آسان ہے' بھاشا کا بدلنا آم تور پر ناممکن اور ہر صورت میں بے حد مشکل ہے ۔ ہزرت ایسا کا دھرم سارے سنسار میں پھیلتا جا رہا ہے' مگر "نوایسائیوں" کی اصلی بھاشائیں کہاں بدلتی ہیں اور کیونکر بدل سکتی ہیں؟ اِن پر جو کچھ بھی اسر پڑتا ہے وہ زیادا تر پچھمیاوے کے کارن ہوتا ہے نہ کہ دھرم بدلاوے سے ۔

یہ بھی ایک بڑی بھول ہے کہ باز لوگ دھرم اور بھاشا کے مسئلے کو ایک سمجھتے ہیں ۔ دھرم اور بھاشا کے بندھنوں کو بڑھا چڑھا کر اِس ترہ سامنے لاتے ہیں کہ بھاشائی مسئلہ دھرمی زاہر ہونے لگتا ہے ۔ مسال کے تور پر اُردو کے حامی اُردو سے فارسی اور اربی کے ناتوں کو بڑھانے کیلئے فارسی اور اربی کو "اسلامی" زبانیں کہتے ہیں ۔ ہندی پریمی سنسکرت کے بھکت بھی ہوتے ہیں اور ہندی پر سنسکرت کو چھایا ہوا رکھنے کیلئے ہر ترہ سنسکرت کی اہمیت بڑھاتے ہیں ۔ سنسکرت کے بڑے شبد ساگر' اِسکے ویاکرن اور ودیائی اہمیت جتانے کے الوا اِسے "دیو بانی" یانے دیوتاؤں کی بھاشا ٹھہراتے ہیں تاکہ اِسکا آدر بڑھے اور سنسکرت کی دھاک قائم ہوجائے ۔ فارسی اربی پرستوں اور سنسکرت کے پجاریوں کی یہ چالاکی ہے کہ وہ اپنی اپنی پسند کی بھاشا کو دھرم کے سہارے قائم رکھنا چاہتے ہیں۔ حالانکہ دھرم کی کوئی بھاشا نہیں ہوتی ۔ دنیا بھر میں سب سے زیادہ پھیلا ہوا دھرم ایسائی دھرم ہے ۔ ہر ملک کے ایسائی اپنی اپنی بھاشا میں انجیل پڑھتے ہیں' بھجن گاتے ہیں' دھرمی ویکھیان سنتے ہیں ۔ جو لوگ لیٹن بھاشا کو ایسائیوں کی دھرمی بھاشا سمجھتے ہیں وہ اُن کی بھول ہے کیوں کہ ہزرت ایسا کی بھاشا لیٹن نہیں تھی۔ کروڑوں ایسائیوں کو معلوم ہی نہیں کہ پہلے پہل ایسائی دھرمی پستک' انجیل' کس بھاشا میں لکھی گئی تھی ۔ اِسلئے اکسر ایسائی خد اپنی زبان میں ایسائی دھرم کی کتابیں پڑھتے' سنتے اور سمجھتے ہیں ۔ شادی اور موتا (ایک طرح کا بیاہ) کے موقوں پر اکسر مقامی بھاشا اور آم بھاشا کا چلن ہوتا ہے ۔ اِسکے براکس (خلاف) اُردو کے حامی اور ہندی پریمی خاندانی رسموں اور سماجی تقریبوں میں سنسکرت یا اربی کا استعمال کرتے ہیں جسے کوئی نہیں سمجھتا ۔ میرے نزدیک ہندی کا سب سے بڑا اپمان ہندی پریمیوں کے ہاتھوں ہو رہا ہے کہ اِن کی سب سے زیادا چہیتی بھاشا زندگی بھر کے سب سے اہم ناتے کو جوڑتے وقت بیدخل کر دی جاتی ہے اور موت مٹی کے موقعے پر بھی اِس سے کچھ فایدا نہیں ہوتا ! ٹھیک اسی ترہ اُردو کی سب سے بڑی بےازتی خد اُردو کے حامیوں کی وجہ سے ہورہی ہے کیوں کہ سماج اور خاندان کی سب سے زیادہ اہم تقریبوں کے وقت یانے شادی اور موتا کی رسموں کے وقت اِسے گھر نکالا

जिस तरह हिन्दी के पक्ष पातियों को बिना कारन उरदू प्रेमियों पर शक है, उसी तरह बाज़ उरदू के हामियों को हिन्दी प्रेमियों से बदगुमानी है. जब "विदा" (وداع) से विदा (وداً) और विदाई और बिदा और बिदायगी बना, तो उरदू के हामियों ने शोर मचाया कि हिन्दी वाले उरदू को बरबाद करने के लिए बिदागी, गरम और इसी तरह दूसरे लफ़्ज़ जान बूझ कर बिगाड़ रहे हैं. गोया सिर्फ़ हिन्दी प्रेमी ही यह लफ़्ज़ इस तरह बोलते हैं.

यही उरदू के हामियों की बड़ी भारी भूल है, जो वह भाशाई बदलाव को बिगाड़ से ताबीर करते (का नाम लेते) हैं. भाशा का बदलाव, जो जनता के आम झुकाव के मुताबिक़ हो रहा है, सोलहों आने फ़ितरी (प्राकृतिक) है. इस भाशाई फ़ितरत का विरोधी होना, भाशाई हक़ीक़त से नावाक़िफ़ होना है.

बहुतेरे लोग भाशा के मसले को धर्म और जात का मसला समझते हैं और भाशा पर धर्म या जात के निगाही नुक़्ते से बहस करते हैं. यह भी इनकी बड़ी भूल है. इन के बारे में ग़ुलाम सयैदैन ने ठीक लिखा है:

"भाशा का कोई धर्म नहीं होता. मिस्र में लाखों ईसाई अरबी बोलते हैं, मगर उसे मुसलमानों की नहीं, अपनी भाशा समझते हैं. अल्बानिया और चीन में लाखों मुसलमान उन देशों की भाशा बोलते हैं."

बहुतेरे लोग अपने राजकाजी लगाव के नाते इस सवाल से अनजान बनते हैं, जैसे बाज़ कांगरेसी, सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट नेता अकसर गम्भीर पन से भाशा के मसले पर सोच बिचार नहीं करते या उसको तोड़ मरोड़ कर पेश करते हैं. वह सचमुच राजकाजी और सभ्यताई मसलों के मुख़्तलिफ़ पहलुओं को भुलाना चाहते हैं या भाशा की अहमियत को जानते ही नहीं. भाशा और धर्म में चाहे कितना ही लगाव रहे, फिर भी भाशा और चीज़ है और धर्म कुछ और धन काज की चाहे कितनी ही अहमियत हो, भाशा और धर्म, समाज और राजकाज भी अपनी अपनी जगह बहुत अहम हैं. सोशलिस्ट और कम्युनिस्ट जिस तरह भाशा के मसले को ग़ैर अहम समझते हैं और उसे बुर्जुआओं की चालाकी ठहराते हैं कि उन्होंने जनता को अपनी असल मांग से भटकाने और बहकाने के लिए धर्म, भाशा और सभ्यता के मसले खड़े कर दिये हैं, वह सिर्फ़ एक हद तक ठीक है. उन्हें बिल्कुल मन गढ़त समझना, सौ फ़ी सैकड़ा "बुर्जुआ की चालाकी" बताना भाशाई मसले की नावाक़िफ़यत है. इन राज काजी नेताओं का यह ख़्याल भी ठीक नहीं कि धन दौलत के आगे धर्म की तरह भाशा का मसला भी ग़ैर अहम है. इससे यह ग़लत ख़्याल फैलता है कि धर्म और भाशा यकसां अहम हैं. यह ख़्याल इसलिये

جس ترہ ھندی کے پکش پاتیوں کو بنا کارن اُردو پریمیوں پر شک ھے' اُسی طرح باز اُردو کے حامیوں کو ھندی پریمیوں سے بدگمانی ھے . جب " وداع " سے ودا اور وداعی اور بدا اور بدائگی بنا' تو اُردو کے حامیوں نے شور مچایا کہ ھندی والے اُردو کو برباد کرنے کے لئے بدائگی' گرم اور اسی ترہ دوسرے لفظ جان بوجھ کر بگاڑ رھے ھیں . گویا صرف ھندی پریمی ھی یہ لفظ اس طرح بولتے ھیں .

یہی اُردو کے حامیوں کی بڑی بھاری بھول ھے' جو وہ بھاشائی بدلاو کو بگاڑ سے تابیر کرتے (کا نام لیتے) ھیں بھاشا کا بدلاو' جو جنتا کے آم جھکاؤ کے مطابق ھو رھا ھے' سولھوں آنے فطری (پراکرتک) ھے . اس بھاشائی فطرت کا ورودھی ھونا' بھاشائی حقیقت سے نا واقف ھونا ھے .

بہتیرے لوگ بھاشا کے مسئلے کو دھرم اور جات کا مسئلہ سمجھتے ھیں اور بھاشا پر دھرم یا جات کے نگاھی نکتے سے بحث کرتے ھیں . یہ بھی ان کی بڑی بھول ھے . ان کے بارے میں غلام سیدین نے ٹھیک لکھا ھے :

" بھاشا کا کوئی دھرم نہیں ھوتا . مصر میں لاکھوں عیسائی عربی بولتے ھیں' مگر اُسے مسلمانوں کی نہیں' اپنی بھاشا سمجھتے ھیں . البانیہ اور چین میں لاکھوں مسلمان اُن دیشوں کی بھاشا بولتے ھیں ."

بہتیرے لوگ اپنے راج کاجی لگاؤ کے ناتے اِس سوال سے انجان بنتے ھیں' جیسے باز کانگریسی' سوشلسٹ اور کمیونسٹ نیتا اکسر گمبھیر پن سے بھاشا کے مسئلے پر سوچ بچار نہیں کرتے یا اُس کو توڑ مروڑ کر پیش کرتے ھیں . وہ سچ مچ راج کاجی اور سبھیتائی مسئلوں کے مختلف پہلوؤں کو بھلانا چاھتے ھیں یا بھاشا کی اھمیت کو جانتے ھی نہیں . بھاشا اور دھرم میں چاھے کتنا ھی لگاؤ رھے' پھر بھی بھاشا اور چیز ھے اور دھرم کچھ اور دھن کاج کی چاھے کتنی ھی اھمیت ھو' بھاشا اور دھرم' سماج اور راج کاج بھی اپنی اپنی جگہ بہت اہم ھیں . سوشلسٹ اور کمیونسٹ جس ترہ بھاشا کے مسئلے کو غیر اہم سمجھتے ھیں اور اسے بُرژواؤں کی چالاکی ٹھہراتے ھیں کہ اُنھوں نے جنتا کو اپنی اصل مانگ سے بھٹکانے اور بہکانے کے لئے دھرم' بھاشا اور سبھیتا کے مسئلے کھڑے کر دیئے ھیں' وہ صرف ایک حد تک ٹھیک ھے . انھیں بلکل من گھڑت سمجھنا' سو فی سیکڑہ " بُرژوازی کی چالاکی " بتانا بھاشائی مسئلے کی ناواقفیت ھے . اِن راج کاجی نیتاؤں کا یہ خیال بھی ٹھیک نہیں کہ دھن دولت کے آگے دھرم کی ترہ بھاشا کا مسئلہ بھی غیر اہم ھے . اِس سے یہ غلط خیال پھیلتا ھے کہ دھرم اور بھاشا یکساں اہم ھیں . یہ خیال اس لئے

हिन्दुस्तान का भाशाई मसला और हिन्दुस्तानी शब्द विद्या के उसूल

(डाक्टर जाफ़र हसन)

[डाक्टर जाफ़र हसन उस्मानिया यूनिवर्सिटी में एक प्रोफ़ेसर और भाशा विद्या के बहुत बड़े जानकार हैं. हिन्दुस्तानी भाशा के भी वह प्रेमी हैं और हिन्दुस्तानी को रूप देने के बारे में अपने ख़ास विचार रखते हैं. उरदू हरफ़ों को कम करके उरदू हिज्जे आसान करने के वह पुराने हामी हैं. इस नोट और इस लेख में उरदू हिज्जे उन्हीं के उसूल पर किये गये हैं. गांधी जी उनके विचारों की बड़ी क़द्र करते थे. वर्धा की हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के वह एक ख़ास मेम्बर हैं. हम चाहते हैं 'नया हिन्द' के प्रेमी इस लेख माला को जिसका यह पहला लेख है ध्यान से पढ़ें—सुन्दरलाल]

हिन्दुस्तान के भाशाई मसले पर जो लेख, रिसाले, किताबें और अख़बारी बयान मेरी नज़र से गुज़रे हैं उनके देखने से मुझे कई बार ख़्याल हुआ कि बहुतेरे लोग जो हिन्दुस्तान के भाशाई मसले को सुलझाने बैठते हैं इस मसले को उल्टा और उलझा देते हैं. मिसाल के तौर पर डाक्टर सुनीत कुमार चटरजी ने जिस बाज़ारू और गंवारू हिन्दुस्तानी का सुझाव किया है, वह सुधार नहीं इन्क़िलाब है, वह भी महा इन्क़िलाब ! ऐसे लोगों के सामने जो मामूली से सुधार के लिए तैयार न हों, महा इन्क़िलाबी सुझाव पेश करना, हमारे भाशाई मसले को उलझाना नहीं, तो और क्या है ?

बाज़ारू और गंवारू हिन्दी को राष्ट्र भाशा बनाने का सुझाव पेश करना, ऐसी ही बात है, जैसे कोई कट्टर हिन्दुओं और ईसाईयों के सामने जो अपने धर्म ही के लोगों में बैन जात वारी या बैन जुज़ फ़िरक़ाई ब्याह के मुआफ़िक़ न हों अन्तर धर्मी ब्याह का सुझाव पेश करे. यह मसले को सुलझाना है या उलझाना ?

बहुतेरे लोग भाशाई मसले की हक़ीक़त ही से वाक़िफ़ नहीं. इन्हीं के बारे में डाक्टर तारा चन्द ने बिल्कुल ठीक लिखा है:

"कुछ लोगों का विचार है कि उरदू वाले देश को देस और प्रसाद को प्रशाद हिन्दी को बिगाड़ने के लिए लिखते हैं. ऐसा नहीं है. देश का देस और प्रसाद का प्रशाद उरदू से पहले ही बन चुके थे." ('नया हिन्द' अगस्त 1949)

هندستان کا بھاشائی مسئلا اور هندستانی شبد ودیا کے اُسول

(ڈاکٹر جافر حسن)

[ڈاکٹر جافر حسن اُسمانیا یونیورسٹی میں ایک پروفیسر اور بھاشا ودیا کے بہت بڑے جانکار ہیں . هندستانی بھاشا کے بھی وہ پریمی ہیں اور هندستانی کو روپ دینے کے بارے میں اپنے خاص وچار رکھتے ہیں . اُردو حرفوں کو کم کر کے اُردو ہجے آسان کرنے کے وہ پرانے حامی ہیں . اِس نوٹ اور اِس لیکھ میں اُردو ہجے اُنہیں کے اُسول پر کئے گئے ہیں . گاندھی جی اِن کے وچاروں کی بڑی قدر کرتے تھے . وردھا کی هندستانی پرچار سبھا کے وہ ایک خاص ممبر ہیں . ہم چاہتے ہیں 'نیا هند' کے پریمی اِس لیکھ مالا کو جس کا یہ پہلا لیکھ ہے کو دھیان سے پڑھیں—سندرلال]

هندستان کے بھاشائی مسئلے پر جو لیکھ' رسالے' کتابیں اور اخباری بیان میری نظر سے گذرے ہیں اُن کے دیکھنے سے مجھے کئی بار خیال ہوا کہ بہتیرے لوگ جو هندستان کے بھاشائی مسئلے کو سلجھانے بیٹھتے ہیں اِس مسئلے کو اُلٹا اور اُلجھا دیتے ہیں . مثال کے طور پر ڈاکٹر سنیت کمار چٹر جی نے جس بازارو اور گنوارو هندستانی کا سجھاؤ کیا ہے' وہ سدھار نہیں انقلاب ہے' وہ بھی مہا اِنقلاب ! ایسے لوگوں کے سامنے جو معمولی سے سدھار کے لئے تیار نہ ہوں' مہا اِنقلابی سجھاؤ پیش کرنا' ہمارے بھاشائی مسئلے کو اُلجھانا نہیں' تو اور کیا ہے ؟

بازارو اور گنوارو هندی کو راشٹر بھاشا بنانے کا سجھاؤ پیش کرنا' ایسی ہی بات ہے' جیسے کوئی کٹر هندوؤں اور عیسائیوں کے سامنے جو اپنے دھرم ہی کے لوگوں میں بین جات واری یا بین جزفرقائی بیاہ کے موافق نہ ہوں' انتر دھرمی بیاہ کا سجھاؤ پیش کرے . یہ مسئلے کو سلجھانا ہے یا اُلجھانا ؟

بہتیرے لوگ بھاشائی مسئلے کی حقیقت ہی سے واقف نہیں . اِن ہی کے بارے میں ڈاکٹر تارا چند نے بلکل ٹھیک لکھا ہے :

" کچھ لوگوں کا وچار ہے کہ اُردو والے دیش کو دیس اور پرساد کو پرشاد هندی کو بگاڑنے کے لئے لکھتے ہیں . ایسا نہیں ہے . دیش کا دیس اور پرساد کا پرشاد اُردو سے پہلے ہی بن چکے تھے ." ('نیا هند' اگست 1949)

है. और इस तरह हमें में हमारे बाप दादा और नाना दादा सब ज़िन्दा रहते हैं. इसी को 'नया जन्म' कहते हैं. नये जन्म में जहां बहुत सी बातें क़ुदरती तौर पर रिवायती और पुरानी होती हैं वहां अनगिनत नई बातें आ जाती हैं और यह नई और पुरानी मिलकर निश्चय ही उन पुरानी पुरानी बातों से बहुत कुछ अलग होती हैं जो हमारी पुरानी तहज़ीब और हमारे पुराने फ़लसफ़े ज़िन्दगी में मिलती हैं. इस क़ुदरती फ़र्क़ को दूर करना क़ुदरत से लड़ना है. अपनी क़ौम को हलाकत की तरफ़ ले जाना है और उल्टी गंगा के बहने का ख़्वाब देखना है. जीवन की इस गुत्थी को सुलझाने के लिये जब बीच पूरब के बासियों से सीधी सादी बात कही जाती है तो वह हुज्जते बंगाला से काम लेने लग जाते हैं. कुछ लोग हिक्मते चीन के फ़लसफ़े पर भी अमल करते हैं मगर उनकी आवाज़ नक़्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ होती है. दिल व दिमाग़ की यह हालत, यह विचार धारा बीच पूरब, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और पूरे पूरब में एक सी है.

धूर पूरब की राजकाजी, माली, रोज़गारी, तालीमी, कल्चरी, तिजारती, सनअती और सोशल हालत के बारे में भी बहुत कुछ लिखने को जी चाहता है, इस ख़्याल से कि हमारे भारत के लोग उससे फ़ायदा उठायें. मज़हबी बातों में भी बहुत सी बातें मिलती जुलती हैं क्योंकि सब मज़हबी ख़्यालों की बुनियादें एक ही जड़ से निकली हैं और सारी दुनिया में एक सी हैं.

बीच पूरब का मेरा दौरा अभी अधूरा है. इस वक़्त मैं मक्के में ठहरा हुआ हूं. मक्के के पन्डों को जिन्हें 'मोअल्लिम' कहते हैं हालात बहुत दिलचस्प हैं. काशी के पंडे तो यात्रियों की सौ पचास मील आगे बढ़ कर रेलों में अगुवाई करते हैं लेकिन मक्का मुअज़्ज़मा के पंडे सात समुन्दर पार हज़ारों कोस दूर जा जा कर अपने अपने जजमानों यानी हाजियों को हज करने का उपदेश देते हैं. धर्म के यह व्योपारी बड़े पक्के होते हैं, और बड़े जानकार भी. दुनिया के दूसरे व्योपारी किसी फ़र्म के एजेन्ट बनकर दुनिया का सैरो-सफ़र करते हैं मगर यहां के 'मोअल्लिम' अल्लाह मियां के एजेन्ट बनकर हर साल दुनिया को नापते रहते हैं. यह दौलत भी हासिल करते हैं और धर्म भी. काशी वालों से यह ज़ियादा लम्बे हाथ मारते हैं और दौड़ धूप भी इनकी ज़ियादा लम्बी होती है. बाक़ी फिर.

आपका भाई

अब्दुल्ला मिस्री

ہے ۔ اور اس طرح ہم میں ہمارے باپ دادا اور نکو دادا سب زندہ رہتے ہیں ۔ اسی کو 'نیا جنم' کہتے ہیں ۔ نئے جنم میں جہاں بہت سی باتیں قدرتی طور پر روایتی اور پرانی ہوتی ہیں وہاں ان‌گنت نئی باتیں آجاتی ہیں اور یہ نئی اور پرانی مل کر نشچے ہی ان پرانی دھرانی باتوں سے بہت کچھ الگ ہوتی ہیں جو ہماری پرانی تہذیب اور ہمارے پرانے فلسفے زندگی میں ملتی ہیں ۔ اس قدرتی فرق کو دور کرنا قدرت سے لڑنا ہے ۔ اپنی قوم کو ہلاکت کی طرف لے جانا ہے اور الٹی گنگا کے بہنے کا خواب دیکھنا ہے ۔ جیون کی اس گتھی کو سلجھانے کے لئے جب بیچ پورب کے باسیوں سے سیدھی سادی بات کہی جاتی ہے تو وہ حجت بنگالہ سے کام لینے لگ جاتے ہیں ۔ کچھ لوگ حکمت چین کے فلسفے پر بھی عمل کرتے ہیں مگر ان کی آواز نقارخانے میں طوطی کی آواز ہوتی ہے ۔ دل و دماغ کی یہ حالت' یہ وچاردھارا بیچ پورب' ہندستان' پاکستان اور پورے پورب میں ایک سی ہے ۔

دھور پورب کی راج کاجی' مالی' روزگاری' تعلیمی' کلچری' تجارتی' صنعتی اور سوشل حالت کے بارے میں بھی بہت کچھ لکھنے کو جی چاہتا ہے' اس خیال سے کہ ہمارے بھارت کے لوگ اس سے فائدہ اٹھائیں۔ مذہبی باتوں میں بھی بہت سی باتیں ملتی جلتی ہیں کیونکہ سب مذہبی خیالوں کی بنیادیں ایک ہی جڑ سے نکلی ہیں اور ساری دنیا میں ایک سی ہیں ۔

بیچ پورب کا میرا دورا ابھی ادھورا ہے ۔ اس وقت میں مکے میں ٹھہرا ہوا ہوں ۔ مکے کے پنڈوں کو جنہیں 'معلم' کہتے ہیں حالات بہت دلچسپ ہیں ۔ کاشی کے پنڈے تو یاتریوں کی سو پچاس میل آگے بڑھ کر ریلوں میں اگوائی کرتے ہیں لیکن مکۂ‌معظمہ کے پنڈے سات سمندر پار ہزاروں کوس دور جاجا کر اپنے اپنے ججمانوں یعنی حاجیوں کو حج کرنے کا اپدیش دیتے ہیں ۔ دھرم کے یہ بیوپاری بڑے پکے ہوتے ہیں' اور بڑے جانکار بھی ۔ دنیا کے دوسرے بیوپاری کسی فرم کے ایجنٹ بن کر دنیا کا سیر و سفر کرتے ہیں مگر یہاں کے 'معلم' اللہ میاں کے ایجنٹ بن کر ہر سال دنیا کو ناپتے رہتے ہیں ۔ یہ دولت بھی حاصل کرتے ہیں اور دھرم بھی ۔ کاشی والوں سے یہ زیادہ لمبے ہاتھ مارتے ہیں اور دوڑ دھوپ بھی ان کی زیادہ لمبی ہوتی ہے ۔ باقی پھر ۔

آپ کا بھائی

عبداللہ مصری

है और अब चीन का आपको तजुर्बा हो गया. दोनों तजुर्बों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं. तीसरा तजुर्बा अब मुझे बीच पूरब (मिडिल ईस्ट) का हो रहा है, अगरचे इसका थोड़ा बहुत तजुर्बा मुझे पहले भी हो चुका है.

मैं देखता हूँ कि दिलों और दिमाग़ों की बनावट के ख़्याल से बीच पूरब, पूरब और धूर पूरब में बहुत सी बातें एक सी पाई जाती हैं. पिछली तारीख़, ज़िन्दगी के फ़लसफ़ा, और क़ौमी ख़ासियतों में भी अचरज भरी यकसानियत है. अगरचे रीत-रिवाज, रहन-सहन, सोचने के ढंग और भांति-भांति की बोलियों की वजह से ज़ाहिर में फ़र्क़ भी बहुत मालूम होते हैं. लेकिन हक़ीक़त में फ़र्क़ बहुत कम हैं. दिमाग़ी एतबार से तुर्कों और गिनती के और लोगों को छोड़ कर बीच पूरब के सब बासी गाड़ी के पीछे बैल जोतने पर तुले हुए हैं. भारत में उल्टी गंगा बहाने की कहावत कितनी मशहूर है लेकिन क्या सच-मुच उल्टी गंगा बहती है इस पर ध्यान देने वाले लोग कम हैं. लोग चाहते हैं कि जो ज़माना हज़ारों साल हुआ गुज़र चुका उसको धरती के पेट से निकाल कर फिर ले आयें. यानी एक बूढ़ा अपनी जवानी और बचपन को फिर से देखना चाहता है और एक नौजवान हू बहू अपने बाप दादा और नगड़ दादा के रूप में अपने को देखने के लिए बेचैन है.

बीच पूरब वालों का अक़ीदा (विश्वास) है कि अगर वह ठीक-ठीक इस्लाम के "सुनहरे उसूलों" पर कार-बन्द हो जायें तो उनका तेरह सौ साल का बड़प्पन फिर से लौट आएगा. इस्लाम के ठीक-ठीक सुनहरे उसूल क़ुरान शरीफ़ और हदीसों में भरे पड़े हैं और फ़िक़ा (मुस्लिम धर्म शास्त्र) में भी और उल्माए कराम (मौलवियों) की लच्छेदार बातों और उनके कारनामों में भी काफ़ी हैं. इस पर भी लाखों करोड़ों सीधे सादे अनपढ़ और पढ़े लिखे मुसलमान इस्लाम के ठीक ठीक "सुनहरे उसूलों" के समझने के नाक़ाबिल हैं, उसी तरह जैसे भारत के करोड़ों हिन्दू वेदों और पुरानों के ठीक-ठीक सुनहरे उसूलों के समझने के नाक़ाबिल हैं. मगर कुछ लोग हैं कि डंडा लेकर पीछे पड़े हुये हैं कि तुम्हें समझना ही पड़ेगा. तुम जान लो कि गंगा उल्टी बहती है, नहीं बहती तो ज़रूर बहेगी.

इन लोगों से कोई कहे कि भाई संसार में हर जानदार की एक उम्र तय होती है, एक कली एक ही बार खिलती है, दूसरे मौसम में दूसरी कलियां खिलती हैं. इन्सान का बचपन और जवानी एक ही मर्तबा रंग लाते हैं. फिर बुढ़ापा आता है और फिर मौत. क़ौमों की ज़िन्दगी का भी एक बचपन होता है, एक जवानी, फिर बुढ़ापा और मौत भी. इस मौत के साथ ही साथ दूसरी ज़िन्दगी भी शुरू होती रहती है, यानी बाप की जगह बेटा और बेटे की जगह पोता लेता रहता

ہے اور اب چین کا آپ کو تجربہ ہوگیا. دونوں تجربوں سے ہم بہت کچھ سیکھ سکتے ہیں. تیسرا تجربہ اب مجھے بیچ پورب (مڈل ایسٹ) کا ہو رہا ہے، اگرچہ اِس کا تھوڑا بہت تجربہ مجھے پہلے بھی ہوچکا ہے ۔

میں دیکھتا ہوں کہ دلوں اور دماغوں کی بناوٹ کے خیال سے بیچ پورب، پورب اور دھور پورب میں بہت سی باتیں ایک سی پائی جاتی ہیں. پچھلی تاریخ، زندگی کے فلسفہ، اور قومی خاصیتوں میں بھی اچرج بھری یکسانیت ہے ۔ اگرچہ ریت رواج، رہن سہن، سوچنے کے ڈھنگ اور بھانت بھانت کی بولیوں کی وجہ سے ظاہر میں فرق بھی بہت معلوم ہوتے ہیں ۔ لیکن حقیقت میں فرق بہت کم ہیں ۔ دماغی اعتبار سے ترکوں اور گنتی کے اور لوگوں کو چھوڑ کر بیچ پورب کے سب باسی گاڑی کے پیچھے بیل جوتنے پر تلے ہوئے ہیں. بھارت میں اُلٹی گنگا بہانے کی کہاوت کتنی مشہور ہے ۔ لیکن کیا سچ مچ اُلٹی گنگا بہتی ہے اس پر دھیان دینے والے لوگ کم ہیں ۔ لوگ چاہتے ہیں کہ جو زمانہ ہزاروں سال ہوا گذر چکا اُس کو دھرتی کے پیٹ سے نکال کر پھر لے آئیں ۔ یعنی ایک بوڑھا اپنی جوانی اور بچپن کو پھر سے دیکھنا چاہتا ہے اور ایک نوجوان ہوبہو اپنے باپ دادا اور نگڑ دادا کے روپ میں اپنے کو دیکھنے کے لئے بےچین ہے.

بیچ پورب والوں کا عقیدہ (وشواس) ہے کہ اگر وہ ٹھیک ٹھیک اسلام کے "سنہرے اُصولوں" پر کاربند ہوجائیں تو اُن کا تیرہ سو سال کا بڑپپن پھر سے لوٹ آئے گا ۔ اسلام کے ٹھیک ٹھیک سنہرے اُصول قرآن شریف اور حدیثوں میں بھرے پڑے ہیں اور فقہ (مسلم دھرم شاستر) میں بھی اور علماء کرام (مولویوں) کی لچھےدار باتوں اور اُن کے کارناموں میں بھی کافی ہیں ۔ اِس پر بھی لاکھوں کروڑوں سیدھے سادے اَن پڑھ اور پڑھے لکھے مسلمان اسلام کے ٹھیک ٹھیک "سنہرے اُصولوں" کے سمجھنے کے ناقابل ہیں، اُسی طرح جیسے بھارت کے کروڑوں ہندو ویدوں اور پرانوں کے ٹھیک ٹھیک سنہرے اُصولوں کے سمجھنے کے ناقابل ہیں. مگر کچھ لوگ ہیں کہ ڈنڈا لے کر پیچھے پڑے ہوئے ہیں کہ تمہیں سمجھنا ہی پڑے گا ۔ تم جان لو کہ گنگا اُلٹی بہتی ہے، نہیں بہتی تو ضرور بہے گی ۔

اِن لوگوں سے کوئی کہے کہ بھئی سنسار میں ہرجاندار کی ایک عمر طے ہوتی ہے، ایک کلی ایک ہی بار کھلتی ہے، دوسرے موسم میں دوسری کلیاں کھلتی ہیں. انسان کا بچپن اور جوانی ایک ہی مرتبہ رنگ لاتے ہیں ۔ پھر بڑھاپا آتا ہے اور پھر موت ۔ قوموں کی زندگی کا بھی ایک بچپن ہوتا ہے، ایک جوانی، پھر بڑھاپا اور موت بھی ۔ اِس موت کے ساتھ ہی ساتھ دوسری زندگی بھی شروع ہوتی رہتی ہے، یعنی باپ کی جگہ بیٹا اور بیٹے کی جگہ پوتا لیتا رہتا

दुख होता है जो ग़लत समझ या ग़लत समझौते के असर में इस देश को भी उसी माली और राज काजी ढांचे में डालना चाहते हैं जिसने अमरीकी हुकूमत को इस हालत तक पहुँचा दिया. हम अपने मुल्क को किसी दल बन्दी में डालना नहीं चाहते. हम दल बन्दी ही को दुनिया से ख़त्म करना चाहते हैं. हम शान्ति के उपासक हैं और जंग को धरती से मिटाना चाहते हैं. हमें यह भी पूरा यक़ीन है कि जो रास्ता महात्मा गांधी ने दुनिया को बताया है दुनिया में सच्चा अमन और सुख क़ायम करने का वही एक तरीक़ा है. पर हम दुनिया की चाल को भी ध्यान से देख रहे हैं. कोरिया और चीन के लोगों पर जो ज़ुल्म हो चुके हैं और जिन ज़ुल्मों की तैयारी है उन में मज़लूमों के साथ साथ हमदर्दी तो सबका इन्सानी फ़र्ज़ और धर्म है ही, हमें यह भी साफ़ दिखाई दे रहा है कि न केवल एशिया के सब देशों बल्कि सारी दुनिया की दो अरब जनता की क़िस्मत कोरिया और चीन की क़िस्मत के साथ बंधी हुई है. बीमारी बम और ऐटम बम की जीत दुनिया भर की अख़लाक़ी और रूहानी मौत होगी. हमें अगर ज़िन्दा रहना है और दुनिया में सच्ची आज़ादी, सच्ची लोकशाही, सच्ची इन्सानियत, सच्ची कलचर और सच्चे दीन धर्म को ज़िन्दा रखना है तो सच समझने, सच कहने और सच के लिये मर मिटने को हमें अपने को तैयार करना होगा. यही अपने और दूसरों के अन्दर उस आत्मबल को जगाने का तरीक़ा है जिसके सामने कोई भी बे इन्साफ़ी हथियारों के बल देर तक नहीं टिक सकती.

5. 7. '52 —सुन्दरलाल

ڈھونگ ہے جو غلط یا غلط سمجھوتے کے اثر میں اس دیش کو بھی اسی مالی اور راج کاجی ڈھانچے میں ڈالنا چاہتے ہیں جس نے امریکی حکومت کو اس حالت تک پہونچا دیا. ہم اپنے ملک کو کسی دل بندی میں ڈالنا نہیں چاہتے. ہم دل بندی ہی کو دنیا سے ختم کرنا چاہتے ہیں . ہم شانتی کے اپاسک ہیں اور جنگ کو دھرتی سے مٹانا چاہتے ہیں. ہمیں یہ بھی پورا یقین ہے کہ جو راستہ مہاتما گاندھی نے دنیا کو بتایا ہے دنیا میں سچا امن اور سکھ قائم کرنے کا وہی ایک طریقہ ہے . پر ہم دنیا کی چال کو بھی دھیان سے دیکھ رہے ہیں . کوریا اور چین کے لوگوں پر جو ظلم ہو چکے ہیں اور جن ظلموں کی تیاری ہے ان میں مظلوموں کے ساتھ ساتھ ہمدردی تو سب کا انسانی فرض اور دھرم ہے ہی' ہمیں یہ بھی صاف دکھائی دے رہا ہے کہ نہ کیول ایشیا کے سب دیشوں بلکہ ساری دنیا کی دو ارب جنتا کی قسمت کوریا اور چین کی قسمت کے ساتھ بندھی ہوئی ہے . بیماری بم اور ایٹم بم کی جیت کی دنیا بھر اخلاقی اور روحانی موت ہوگی . ہمیں اگر زندہ رہنا ہے اور دنیا میں سچی آزادی' سچی لوک شاہی' سچی انسانیت' سچی کلچر اور سچے دین دھرم کو زندہ رکھنا ہے تو سچ سمجھنے' سچ کہنے اور سچ کے لئے مر مٹنے کو ہمیں اپنے کو تیار کرنا ہوگا . یہی اپنے اور دوسروں کے اندر اس آتم بل کو جگانے کا طریقہ ہے جس کے سامنے کوئی بھی بے انصافی ہتھیاروں کے بل دیر تک نہیں ٹک سکتی .

—سندر لال 5-7-'52

मक्का से मौलाना अब्दुल्ला मिस्री का एक ख़त

प्यारे पंडित सुन्दरलाल ! सलाम, दुआ व जय हिन्द,

बहुत दिनों के बाद बहुत दूर समुन्दर पार से यह ख़त भेज रहा हूँ. मालूम हुआ कि आप भी समुन्दर पार गये हुये थे. चीन में आपने क्या कुछ देखा इसका पूरा नक़्शा तो अभी तक आपने भारतियों के सामने नहीं रखा लेकिन जो कुछ अख़बारों में आया है उससे भी धूर पूरब (फ़ार ईस्ट) के बासियों के बारे में बहुत कुछ मालूम हो जाता है. भारत की पुरानी कहावतों में 'हिकमते चीन और हुज्जते बंगाला' की कहावत तो आपने सुनी होगी. बंगाल का मुझे काफ़ी तजुर्बा

مکہ سے مولانا عبداللہ مصری کا ایک خط

پیارے پنڈت سندرلال ! سلام' دعا و جے ہند '

بہت دنوں کے بعد بہت دور سمندر پار سے یہ خط بھیج رہا ہوں . معلوم ہوا کہ آپ بھی سمندر پار گئے ہوئے تھے . چین میں آپ نے کیا کچھ دیکھا اس کا پورا نقشہ تو ابھی تک آپ نے بھارتیوں کے سامنے نہیں رکھا لیکن جو کچھ اخباروں میں آیا ہے اس سے بھی دھور پورب (فار ایسٹ) کے باسیوں کے بارے میں بہت کچھ معلوم ہو جاتا ہے . بھارت کی پرانی کہاوتوں میں 'حکمت چین اور حجت بنگالہ' کی کہاوت تو آپ نے سنی ہوگی . بنگال کا مجھے کافی تجربہ

अपनी हिकमते अमली के कारन जब जो चाहे करें जनता और उसके सेवकों को अपने आगे पीछे देखना होगा, अपने सच्चे हितों को समझना होगा और साफ़ साफ़ बात करनी होगी. दुनिया के अख़बारों में ख़बर छप चुकी है कि ऐटम बम कोरिया के मैदान में पहुँच चुके. अमरीका की सरकार ने इसकी तरदीद नहीं की और करे भी तो उसकी क्या क़ीमत. एशिया के देशों के बहुत से राज काजी लोग इस लिये इन ग़लत कामों के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठाने में झिझकते हैं क्योंकि सच बोलने की सज़ा में ऐटम बम का डर उनके सर पर नाचता रहता है. पर कब तक ! आख़िर दुनिया की दबी हुई जनता को इस ख़तरे का सामना करने के लिये तैयार होना ही होगा. बड़े बड़े साइन्सदां पेशीन गोई कर रहे हैं कि अगर ऐटम बम की लड़ाई सच मुच छिड़ गई तो दुनिया की आधी आबादी ख़त्म हो जायेगी और कई बड़े बड़े महाद्वीपों का निशान तक बाक़ी न रहेगा. मिटने का किसी को कोई डर नहीं होना चाहिये. आख़िर हमारी इस छोटी सी धरती को भी एक दिन मिटना ही है. लेकिन ज़ुल्म और शैतानियत के सामने सर झुका देना और अपनी आत्मा की आवाज़ को दबाना मिटने से बदतर है. हमें इन्सानी क़ौम की अख़लाक़ी और रूहानी थाती को बचाना है और लोगों के दिलों को इस सारे ख़तरे का सामना करने के लिये मज़बूत करना है. जिस अमरीकी सरकार के मातहत उसके घर के अन्दर आज तक—सिर्फ़ दक्खिन के हिस्सों में ही नहीं जहां की कठिनाईयां दुनिया को गिनाई जाती हैं बल्कि उत्तर की "उदार" रियासतों में भी—काले हब्शियों के साथ मामूली इन्सानों का सा बर्ताव भी नहीं किया जा सकता. उस से हम दूर के महाद्वीपों में इन्सानी बराबरी और इन्सानी भाई चारे की उम्मीद कैसे कर सकते हैं.

अमरीकी क़ौम के बहुत से गुनों की हमारे दिल में क़द्र है. अमरीकी जनता के साथ हमें उतना ही प्रेम है जितना अपने या किसी भी दूसरे देश की जनता के साथ. हम सारी मनुष्य जाति को एक कुनबा मानते हैं और वह दिन देखने के लिये बेचैन हैं जब सारी दुनिया के इन्सान एक कुनबे की तरह रहने लगें. हमें इस बात का भी पक्का यक़ीन है कि आज कल के यह डरावने बादल छटेंगे और बहुत जल्दी इन बादलों के अन्दर ही से इन्सानी बराबरी और इन्सानी भाई चारे का सूरज अपने पूरे तेज के साथ चमकता हुआ दिखाई पड़ेगा. लेकिन आज कल की हालत में जब अमरीकी राज काजी नेता और उस यूनो के मुखिया जिसके नाम पर कोरिया की लड़ाई लड़ी जा रही है 'इन्सानी भाई चारे' 'लोक शाही' और 'जमहूरियत' की बात करते हैं तो हमें "बग़ल में छुरी और मुंह में राम" की पुरानी कहावत याद आ जाती है. हमें अपने मुल्क के उन भाईयों पर भी दया आ जाती है और

اپنی حکمت عملی کے کارن جب جو چاہیں کریں جنتا اور اسکے سیوکوں کو اپنے آگے پیچھے دیکھنا ہوگا اپنے سچے ہتوں کو سمجھنا ہوگا اور صاف صاف بات کرنی ہوگی. دنیا کے اخباروں میں خبر چھپ چکی ہے کہ ایٹم بم کوریا کے میدان میں پہنچ چکے. امریکہ کی سرکار نے اسکی تردید نہیں کی اور کرے بھی تو اسکی کیا قیمت. ایشیا کے دیشوں کے بہت سے راج کاجی لوگ اس لئے ان غلط کاموں کے خلاف اپنی آواز اٹھانے میں جھجھکتے ہیں کیونکہ سچ بولنے کی سزا میں ایٹم بم کا ڈر ان کے سر پر ناچتا رہتا ہے. پر کب تک! آخر دنیا کی دبی ہوئی جنتا کو اس خطرے کا سامنا کرنے کے لئے تیار ہونا ہی ہوگا. بڑے بڑے سائنسداں پیشین گوئی کر رہے ہیں کہ اگر ایٹم بموں کی لڑائی سچ مچ چھڑ گئی تو دنیا کی آدھی آبادی ختم ہوجائیگی اور کئی بڑے بڑے مہادیپوں کا نشان تک باقی نہ رہے گا. مٹنے کا کسی کو کوئی ڈر نہیں ہونا چاہئے. آخر ہماری اس چھوٹی سی دھرتی کو بھی ایک دن مٹنا ہی ہے. لیکن ظلم اور شیطانیت کے سامنے سر جھکا دینا اور اپنی آتما کی آواز کو دبانا مٹنے سے بدتر ہے. ہمیں انسانی قوم کی اخلاقی اور روحانی تھاتی کو بچانا ہے اور لوگوں کے دلوں کو اس سارے خطرے کا سامنا کرنے کے لئے مضبوط کرنا ہے. جس امریکی سرکار کے ماتحت اسکے گھر کے اندر آج تک— صرف دکھن کے حصوں میں ہی نہیں جہاں کی کٹھنائیاں دنیا کو گنائی جاتی ہیں بلکہ اتر کی " ادار " ریاستوں میں بھی—کالے حبشیوں کے ساتھ معمولی انسانوں کا سا برتاؤ بھی نہیں کیا جا سکتا. اس سے ہم دور کے مہادیپوں میں انسانی برابری اور انسانی بھائی چارے کی امید کیسے کر سکتے ہیں.

امریکی قوم کے بہت سے گنوں کی ہمارے دل میں قدر ہے. امریکی جنتا کے ساتھ ہمیں اتنا ہی پریم ہے جتنا اپنے یا کسی بھی دوسرے دیش کی جنتا کے ساتھ. ہم ساری منشیہ جاتی کو ایک کنبہ مانتے ہیں اور وہ دن دیکھنے کے لئے بے چین ہیں جب ساری دنیا کے انسان ایک کنبے کی طرح رہنے لگیں. ہمیں اس بات کا بھی پکا یقین ہے کہ آجکل کے یہ ڈراونے بادل چھٹیں گے اور بہت جلدی ان بادلوں کے اندر ہی سے انسانی برابری اور انسانی بھائی چارے کا سورج اپنے پورے تیج کے ساتھ چمکتا ہوا دکھائی پڑے گا. لیکن آجکل کی حالت میں جب امریکی راج کاجی نیتا اور اس یونو کے مکھیا جسکے نام پر کوریا کی لڑائی لڑی جا رہی ہے 'انسانی بھائی چارے' 'لوک شاہی' اور 'جمہوریت' کی بات کرتے ہیں تو ہمیں " بغل میں چھری اور منہ میں رام " کی پرانی کہاوت یاد آجاتی ہے. ہمیں اپنے ملک کے ان بھائیوں پر بھی دیا آجاتی ہے اور

को बरबादी से बचाने के लिये इस तरह के उसूलों पर अमल जरूरी है. यह भी सब जानते हैं कि सब देशों की करोड़ों जनता जो दो बड़ी जंगों की बरबादी देख चुकी है और जंगों से उकता चुकी है कम से कम इस तरह की रोक थाम के [illegible] में है.

ऐसी सूरत में यह मानना पड़ेगा कि इन्सानी क़ौम और उसकी आगे की तरक़्क़ी और भलाई के सबसे बड़े दुश्मन वह लोग हैं जो लड़ाई जीतने के लिये खुले इन उसूलों को ठुकरा देते हैं. ऐसे मौक़ों पर धर्म के पेशवा या कलचर के प्रचारक अगर चुप रहें तो वह धर्म और कलचर को नुक़सान ही पहुँचा सकते हैं. जापानी क़ौम का चाहे कोई गुनाह रहा हो या न रहा हो जिस हकूमत ने आठ करोड़ की उस क़ौम से घुटने टिकवाने के लिये हिरोशिमा और नागासाकी की कई लाख निहत्थी बे गुनाह जनता पर जिनमें औरतें, बूढ़े, बच्चे, और बे ज़बान जानवर तक शामिल थे ऐटम बम फेंके और लाखों की ज़िन्दा खालें जला डाले उसे धर्म और कलचर के भक्त या सेवक ऊपर के उसूलों की रोशनी में इन्सानियत से गिरा हुआ और इन्सान और इन्सानी कलचर का दुश्मन न कहें तो कौन कहेगा. सवाल अमरीका या रूस का नहीं और न पूंजीवाद और कम्युनिज़्म का है. गुनाह गुनाह है चाहे करने वाला किसी भी पारटी या देश का हो. जापान की उस दुर्घटना को कई बरस बीत चुके. पर आज भी जो हकूमत अपने पैसे और ताक़त के घमंड में कोरिया की निहत्थी बे गुनाह जनता के ऊपर गन्दी बीमारियों के बम फेंक सकती है, लाखों बे गुनाह मर्द, औरत और बच्चों के तड़प तड़प कर मरने का नज़्ज़ारा देख सकती है, कभी उस दिलेर चोर की तरह जो हाथ पर चिराग़ लेकर चलता है सब को झूटा ठहरा कर दुनिया की आंखों में धूल डालना चाहती है, कभी यह पता लगाने की कोशिश करती है कि उसके बीमारी बमों से जितने वह चाहती थी उतने आदमी क्यों नहीं मरे, और फिर कभी यह कह कर अपने गुनाह को हलका करना चाहती है कि बीमारी बमों से आज कल उतना नुक़सान नहीं होता, जितना लोग समझते हैं, जो हकूमत दुश्मन के मन बिजली के कारखानों को ख़त्म कर के लाखों नहीं करोड़ों ग़रीब जनता के लिये पानी, रोशनी, कपड़े, और खाने के इन्तज़ाम को ख़त्म कर सकती है उसे अगर हम मानव धर्म, इन्सानी तहज़ीब और कलचर के उसूलों के तोड़ने का गुनहगार न कहें तो क्या कहें.

हम ऊपर कह चुके हैं कि जीवन को इस तरह टुकड़े टुकड़े करके नहीं देखा जा सकता. न इस तरह इन्सानी क़ौम या इन्सानी कलचर को बचाया जा सकता है. जीवन एक और अटूट है. दुनिया के राज काजी लोग और हाकिम

کو بربادی سے بچانے کے لئے اِسطرح کے اصولوں پر عمل ضروری ہے . یہ بھی سب جانتے ہیں کہ سب دیشوں کی کروڑوں جنتا جو دو بڑی جنگوں کی بربادی دیکھ چکی ہے اور جنگوں سے اُکتا چکی ہے' کم سے کم اِسطرح کی روک تھام کے زوروں کے ساتھ حق میں ہے .

ایسی صورت میں یہ ماننا پڑے گا کہ انسانی قوم اور اُسکی آگے کی ترقی اور بھلائی کے سب سے بڑے دشمن وہ لوگ ہیں جو لڑائی جیتنے کے لئے کھلے اِن اصولوں کو ٹھکرا دیتے ہیں . ایسے موقعوں پر دھرم کے پیشوا یا کلچر کے پرچارک اگر چپ رہیں تو وہ دھرم اور کلچر کو نقصان ہی پہنچا سکتے ہیں . جاپانی قوم کا چاہے کچھ بھی گناہ رہا ہو یا نہ رہا ہو جس حکومت نے آٹھ کرور کی اُس قوم سے گھٹنے ٹکوانے کے لئے ھیرو شیما اور ناگا ساکی کی کئی لاکھ نہتھی بے گناہ جنتا پر جن میں 'عورتیں' بوڑھے بچے اور بے زبان جانور تک شامل تھے . ایٹم بم پھینکے اور لاکھوں کی زندہ کھالوں جلا ڈالے اسے دھرم اور کلچر کے بھگت یا سیوک اُوپر کے اصولوں کی روشنی میں انسانیت سے گرا ہوا اور اِنسان اور اِنسانی کلچر کا دشمن نہ کہیں تو کون کہیگا . سوال امریکہ یا روس کا نہیں اور نہ پونجی واد اور کمیونزم کا ہے . گناہ گناہ ہے چاہے کرنے والا کسی بھی پارٹی یا دیش کا ہو . جاپان کی اُس درگھٹنا کو کئی برس بیت چکے . پر آج بھی جو حکومت اپنے پیسے اور طاقت کے گھمنڈ میں کوریا کی نہتھی بے گناہ جنتا کے اوپر گندی بیماریوں کے بم پھینک سکتی ہے' لاکھوں بے گناہ مرد' عورت اور بچوں کے تڑپ تڑپ کر مرنے کا نظارہ دیکھ سکتی ہے' کبھی اُس دلیر چور کی طرح جو ہاتھ پر چراغ لے کر چلتا ہے سب کو جھوٹا ٹھہرا کر دنیا کی آنکھوں میں دھول ڈالنا چاہتی ہے' کبھی یہ پتہ لگانے کی کوشش کرتی ہے کہ اُس کے بیماری بموں سے جتنے وہ چاہتی تھی اُتنے آدمی کیوں نہیں مرے' اور پھر کبھی یہ کہکر اپنے گناہ کو ہلکا کرنا چاہتی ہے کہ بیماری بموں سے آج کل اُتنا نقصان نہیں ہوتا' جتنا لوگ سمجھتے ہیں' جو حکومت دشمن کے بن بجلی کے کارخانوں کو ختم کر کے لاکھوں نہیں کروڑوں غریب جنتا کے لئے پانی 'روشنی' کپڑے اور کھانے کے انتظام کو ختم کر سکتی ہے اسے اگر ہم مانو دھرم' اِنسانی تہذیب اور کلچر کے اُصولوں کے توڑنے کا گنہگار نہ کہیں تو کیا کہیں .

ہم اوپر کہ چکے ہیں کہ جیون کو اِسطرح ٹکڑے ٹکڑے کر کے نہیں دیکھا جا سکتا . نہ اِسطرح انسانی قوم یا اِنسانی کلچر کو بچایا جا سکتا ہے . جیون ایک اور اٹوٹ ہے . دنیا کے راج کاجی لوگ اور حاکم

हैदर अली ने जितनी लड़ाईयां लड़ीं उन सब में लड़ाई खत्म होने के बाद वह जब तक मैदान में पड़ी हुई दुश्मन की लाशों की आखरी रसम मरने वाले के मजहबी रिवाज के मुताबिक़ पूरी न कर लेता था तब तक आगे न बढ़ता था. इस आदत के कारन हैदर अली को कई बार नुक़सान उठाना पड़ा. पर उसने अपना उसूल न छोड़ा.

सिराजुद्दौला अंगरेज़ों के साथ अपनी लड़ाईयों में सूरज छुपते ही हमेशा लड़ाई बन्द कर देता था और अंधेरे में अपनी तरफ़ से हमले की कभी इजाज़त न देता था. सिराजुद्दौला ने अपने इस उसूल को आखिर तक निबाहा.

राजपूतों के इतिहास में तो इस तरह की मिसालें इतनी ज़ियादा और इतनी मशहूर हैं कि इतिहास के पन्ने उनसे रंगे पड़े हैं. राजपूत घरानों की पांच "आन" मशहूर हैं. जो दुश्मन मैदान से भाग जावे उस पर फिर वार नहीं करना, जिसके हाथों से हथियार गिर पड़ें उस पर वार नहीं करना जब तक वह फिर हथियार न संभाल ले, जो अपनी शरन में आ जावे उस पर हथियार नहीं चलाना, किसी औरत पर हथियार नहीं चलाना, और किसी बच्चे पर हथियार नहीं चलाना. हज़ारों राजपूतों ने अपनी जानें खतरे में डाल कर भी बड़े से बड़े दुश्मनों के साथ इन 'आनों' को निबाहा है.

इन उसूलों पर अमल करने की वजह से किसी लड़ने वाले को कभी फ़ायदा हुआ हो या नुक़सान इसमें शक नहीं कि इस तरह के उसूल लड़ाई की भयानकता, बर्बरता और बुराई को बहुत कुछ हल्का कर देते हैं और इन्सानी क़ौम को अपनी आखिरी मक़सद तक पहुँचने में मदद देते हैं. इसलिये इस तरह के उसूल इन्सानी कलचर का एक क़ीमती हिस्सा हैं.

आजकल जब कि लड़ाई के नये नये हथियारों की वजह से लड़ाई की भयानकता और उसी से इन्सानी समाज की बरबादी हज़ारों गुना बढ़ गई है इस तरह के उसूलों की क़ीमत और ज़रूरत और भी ज़ियादा है. इसीलिये पहली जंग के बाद की लीग आफ़ नेशन्स और दूसरी जंग के बाद की यूनो दोनों ने इस तरह की तजवीज़ें पास की हैं कि जंग के अन्दर गांवों या शहरों की निहत्थी जनता पर हमला न किया जावे और गैस बम, बीमारी बम जैसे जन घातक हथियारों से काम न लिया जावे. यूनो की सिक्युरिटी कौंसिल के मातहत एक कमीशन काम करता है जिसका मक़सद बताया जाता है ऐटम शक्ति को अमन के रचनात्मक कामों में लाना और "ऐटम बम और दूसरे ऐसे हथियारों की जिनसे आम जनता की हत्या होती हो खत्म करना और यह देखना कि कोई इस नियम को न तोड़े." दुनिया की कोई हुकूमत और खुद यूनो के मेम्बर इस नियम पर ईमानदारी से चलें या न चलें इस बात में दो रायें नहीं हो सकतीं कि आज कल की माली और राजकाजी आपा धापी के दिनों मे दुनिया

حیدر علی نے جتنی لڑائیاں لڑیں ان سب میں لڑائی ختم ہونے کے بعد وہ جب تک میدان میں پڑی ہوئی دشمن کی لاشوں کی آخری رسم مرنے والے کے مذہبی رواج کے مطابق پوری نہ کرلیتا تھا تب تک آگے نہ بڑھتا تھا ۔ اس عادت کے کارن حیدر علی کو کئی بار نقصان اٹھانا پڑا پر اس نے اپنا اصول نہ چھوڑا ۔

سراج الدولہ انگریزوں کے ساتھ اپنی لڑائیوں میں سورج چھپتے ہی ہمیشہ لڑائی بند کردیتا تھا اور اندھیرے میں اپنی طرف سے حملے کی کبھی اجازت نہ دیتا تھا ۔ سراج الدولہ نے اپنے اس اصول کو آخر تک نباہا ۔

راجپوتوں کے اتہاس میں تو اس طرح کی مثالیں اتنی زیادہ اور اتنی مشہور ہیں کہ اتہاس کے پنے ان سے رنگے پڑے ہیں ۔ راجپوت گھرانوں کی پانچ "آن" مشہور ہیں ۔ جو دشمن میدان سے بھاگ جائے اس پر پھر وار نہیں کرنا، جسکے ہاتھوں سے ہتھیار گر پڑیں اس پر وار نہیں کرنا جب تک وہ پھر ہتھیار نہ سنبھال لے، جو اپنی شرن میں آجائے اس پر ہتھیار نہیں چلانا، کسی عورت پر ہتھیار نہیں چلانا اور کسی بچے پر ہتھیار نہیں چلانا ۔ ہزاروں راجپوتوں نے اپنی جانیں خطرے میں ڈالکر بھی بڑے سے بڑے دشمنوں کے ساتھ ان 'آنوں' کو نباہا ہے ۔

ان اصولوں پر عمل کرنے کی وجہ سے کسی لڑنے والے کو کبھی فائدہ ہوا ہو یا نقصان اس میں شک نہیں کہ اسطرح کے اصول لڑائی کی بھیانکتا، بربرتا اور برائی کو بہت کچھ ہلکا کر دیتے ہیں اور انسانی قوم کو اپنے آخری مقصد تک پہونچنے میں مدد دیتے ہیں ۔ اسی لئے اسطرح کے اصول انسانی کلچر کا ایک قیمتی حصہ ہیں ۔

آجکل جب کہ لڑائی کے نئے نئے ہتھیاروں کی وجہ سے لڑائی کی بھیانکتا اور اسی سے انسانی سماج کی بربادی ہزاروں گنا بڑھ گئی ہے اس طرح کے اصولوں کی قیمت اور ضرورت اور بھی زیادہ ہے ۔ اسی لئے پہلی جنگ کے بعد کی لیگ آف نیشنس اور دوسری جنگ کے بعد کی یونو دونوں نے اسطرح کی تجویزیں پاس کی ہیں کہ جنگ کے اندر گاؤں یا شہروں کی نہتھی جنتا پر حملہ نہ کیا جائے اور گیس بم، بیماری بم جیسے جن گھاتک ہتھیاروں سے کام نہ لیا جاوے ۔ یونو کی سیکیورٹی کونسل کے ماتحت ایک کمیشن کام کرتا ہے جسکا مقصد بتایا جاتا ہے ایٹم شکتی کو امن کے رچناتمک کاموں میں لانا اور "ایٹم بم اور دوسرے ایسے ہتھیاروں کو جن سے عام جنتا کی ہتیا ہوتی ہو ختم کرنا اور یہ دیکھنا کہ کوئی اس نیم کو نہ توڑے ۔" دنیا کی کوئی حکومت اور خود یونو کے ممبر اس نیم پر ایمانداری سے چلیں یا نہ چلیں اس بات میں دو رائیں نہیں ہو سکتیں کہ آجکل کی مالی اور راجکاجی آپا دھاپی کے دنوں میں دنیا

लड़ाई के कुछ ऐसे उसूल सभ्य इन्सानी समाज क़ायम कर चुका है जिन से इसके बुरे नतीजे कम से कम दिखाई दें और आदमी की आत्मा पर इसका मैल कम से कम चढ़े और जल्दी से जल्दी उतर सके. यह उसूल बहुत सीधे सादे उसूल हैं. हम केवल चन्द मिसालें यहां देंगे.

महाभारत के ज़माने में अगर लड़ते लड़ते दुश्मन के हाथ से हथियार गिर जाते थे तो सामने का लड़ने वाला अपने बढ़े हुए हाथ को फ़ौरन रोक लेता था. बे हथियार आदमी पर हथियार चलाना सिपाही की शान के खिलाफ़ समझा जाता था. मिसालें हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास में भरी पड़ी हैं.

मुहम्मद [redacted] के बादशाह की हैसियत से कई लड़ाईयों में हिस्सा लेना पड़ा. वह जब किसी जत्थे को लड़ने के लिये भेजते तो हमेशा उसे इन लफ़्ज़ों में हिदायत करते—"जो हथियार बांध कर तुम्हारे सामने नहीं खड़ा हुआ है उस पर कभी हमला न करना. औरतों और बच्चों पर कभी हमला न करना. कभी किसी फलदार दरख़्त को न काटना, किसी की खड़ी खेती बरबाद न करना, किसी की इबादत गाह या मज़हबी बुज़ुर्गों पर हमला न करना, दुश्मन अगर लड़ते लड़ते भी सुलह करना चाहे तो फ़ौरन अपना हाथ रोक देना. सचमुच अल्लाह दूसरों के साथ नेकी करने वालों को प्यार करता है."

हज़रत अली की ज़िन्दगी की एक घटना मशहूर है. एक लड़ाई में वह अपने किसी दुश्मन को जंगल में पकड़ पाए. दोनों लड़े. आख़िर हज़रत अली उसे गिरा कर उसकी छाती पर चढ़ बैठे और क़रीब था कि अपने ख़ंजर से उसका काम तमाम कर दें उसने नीचे से पड़े पड़े हज़रत अली के मुंह पर थूक दिया. हज़रत अली का हाथ एक दम रुक गया. वह कुछ सोचने लगे. उन्होंने ख़ंजर हाथ से फेंक दिया और उस आदमी से अलग हट कर खड़े हो गये. दुश्मन भी उठ खड़ा हुआ. उसने हैरान हो कर हज़रत अली से पूछा—"आपने यह क्या किया, मेरी जान आपके हाथ में थी, आपने मुझे कैसे छोड़ दिया." हज़रत अली ने जवाब दिया—"जब मैं तुझ पर वार करने वाला था उस वक़्त मैं तुझे दीन का दुश्मन जान कर अल्लाह की राह में वार कर रहा था. लेकिन जब तू ने मेरे मुंह पर थूका तो मुझे गुस्सा आ गया और अन्दर बदले की आग भड़की. यह दोनों हराम हैं. गुस्से में जो भी काम किया जाये वह अल्लाह की राह में नहीं हो सकता. इसलिये मैंने ख़ंजर फेंक दिया. अगर अब तू चाहे तो मुझे मार सकता है. मैं ऐसी हालत में तुझ पर वार न करूंगा." कहा जाता है कि दुश्मन पर इसका इतना गहरा असर हुआ कि वह फ़ौरन हज़रत अली के क़दमों पर गिर पड़ा.

لڑائی کے کچھ ایسے اصول سبھیہ انسانی سماج قائم کرچکا ہے جن سے اس کے برے نتیجے کم سے کم دکھائی دیں اور آدمی کی آتما پر اس کا میل کم سے کم چڑھے اور جلدی سے جلدی اتر سکے ۔ یہ اصول بہت سیدھے سادے اصول ہیں ۔ ہم کیول چند مثالیں یہاں دیں گے ۔

مہابھارت کے زمانے میں اگر لڑتے لڑتے دشمن کے ہاتھ سے ہتھیار گر جاتے تھے تو سامنے کا لڑنے والا اپنے بڑھے ہوئے ہاتھ کو فوراً روک لیتا تھا ۔ بےہتھیار آدمی پر ہتھیار چلانا سپاہی کی آن کے خلاف سمجھا جاتا تھا ۔ مثالیں ہندستان کے پرانے اتہاس میں بھری پڑی ہیں ۔

محمد صاحب کو عرب کے بادشاہ کی حیثیت سے کئی لڑائیوں میں حصہ لینا پڑا ۔ وہ جب کسی جتھے کو لڑنے کے لئے بھیجتے تو ہمیشہ اسے ان لفظوں میں ہدایت کرتے—"جو ہتھیار باندھ کر تمہارے سامنے نہیں کھڑا ہوا ہے اس پر کبھی حملہ نہ کرنا ۔ عورتوں اور بچوں پر کبھی حملہ نہ کرنا ۔ کبھی کسی پھلدار درخت کو نہ کاٹنا، کسی کی کھڑی کھیتی برباد نہ کرنا، کسی کی عبادت گاہ یا مذہبی بزرگوں پر حملہ نہ کرنا، دشمن اگر لڑتے لڑتے بھی صلح کرنا چاہے تو فوراً اپنا ہاتھ روک دینا ۔ سچ مچ اللہ دوسروں کے ساتھ نیکی کرنے والوں کو پیار کرتا ہے ۔"

حضرت علی کی زندگی کی ایک گھٹنا مشہور ہے ۔ ایک لڑائی میں وہ اپنے کسی دشمن کو جنگل میں پکڑ پائے ۔ دونوں لڑے ۔ آخر حضرت علی اسے گرا کر اس کی چھاتی پر چڑھ بیٹھے اور قریب تھا کہ اپنے خنجر سے اس کا کام تمام کردیں اس نے نیچے سے پڑے پڑے حضرت علی کے منہ پر تھوک دیا ۔ حضرت علی کا ہاتھ ایک دم رک گیا ۔ وہ کچھ سوچنے لگے ۔ انہوں نے خنجر ہاتھ سے پھینک دیا اور اس آدمی سے الگ ہٹ کر کھڑے ہوگئے ۔ دشمن بھی اٹھ کھڑا ہوا ۔ اس نے حیران ہوکر حضرت علی سے پوچھا—"آپ نے یہ کیا کیا، میری جان آپ کے ہاتھ میں تھی، آپ نے مجھے کیسے چھوڑ دیا ۔" حضرت علی نے جواب دیا—"جب میں تجھ پر وار کرنے والا تھا اس وقت میں تجھے دین کا دشمن جان کر اللہ کی راہ میں وار کر رہا تھا ۔ لیکن جب تو نے میرے منہ پر تھوکا تو مجھے غصہ آگیا اور اندر بدلے کی آگ بھڑکی ۔ یہ دونوں حرام ہیں ۔ غصے میں جو بھی کام کیا جائے وہ اللہ کی راہ میں نہیں ہوسکتا ۔ اس لئے میں نے خنجر پھینک دیا ۔ اگر اب تو چاہے تو مجھے مارسکتا ہے ۔ میں ایسی حالت میں تجھ پر وار نہ کرونگا ۔" کہا جاتا ہے کہ دشمن پر اس کا اتنا گہرا اثر ہوا کہ وہ فوراً حضرت علی کے قدموں پر گر پڑا ۔

'नया हिन्द' के पिछले अंकों में इस पर लिखा भी जा चुका है, खास कर डाक्टर भगवान दास ने अपने लेखों में इस पर काफ़ी रोशनी डाली है. कलचर या संस्कृति एक बड़ी और फैली हुई चीज़ है जो इन्सानी ज़िन्दगी के सब पहलुओं को ढक लेती है. कलचर इन्सानी ज़िन्दगी और सभ्यता का बाहर का रूप भी है और उसके अन्दर की जान भी जब हम हिन्दुस्तानी कलचर या किसी मुल्क की कलचर की बात करते हैं तो हमारा मतलब यह होता है कि हम उस मुल्क के अलग अलग गिरोहों और अलग अलग हिस्सों के रहन सहन और सोच विचार के तरीक़ों, उनकी कला, उनकी कारीगरी और उनके आदर्शों में कुछ फ़र्क़ों के रहते हुए भी एकता और एक स्वरूपता लाना चाहते हैं और उसे चमकाना चाहते हैं ताकि एक दूसरे से फ़र्क़ की बातें घटती जायें और मेल की बातें बढ़ती जायें, और जो फ़र्क़ रहें भी वह हम में एक दूसरे से ग़ैरियत पैदा करने के बजाय हमारी मिली जुली मुल्की ज़िन्दगी की शोभा को इस तरह बढ़ाते हुए दिखाई दें जिस तरह बाग़ के अन्दर रंग बिरंगे फूलों की अलग अलग क्यारियां बाग़ की शोभा को बढ़ाती हैं. इसी तरह जब हम मानव संस्कृति, इन्सानी कलचर या एक विश्व कलचर की बात करते हैं तो हमारा मतलब यह होता है कि हम अलग अलग मुल्कों के लोगों में फ़र्क़ों को धीरे धीरे कम होने और मेल और एकता की बातों को बढ़ने का मौक़ा दें और उसमें मदद दें. यही मानस जीवन का सबसे बड़ा मक़सद है. यही सब धर्मों का सार है. इसी रास्ते चल कर हम इन्सानी एकता को सामने ला सकते हैं और सारे इन्सानी समाज को एक कुनबे का रूप दे सकते हैं. यही वह आदर्श है जिसकी तरफ़ हम बढ़ना चाहते हैं और लड़खड़ाते ठोकरें खाते धीरे धीरे बढ़ रहे हैं.

इस आदर्श तक पहुँचने के लिये आदमी ने हज़ारों बरस के तजुरबे के बाद कुछ मोटे मोटे उसूल तय किये हैं. यह उसूल दुनिया के सब मज़हबों, सब मुल्कों और सब सभ्यताओं में पाये जाते हैं. आजकल के भी लगभग सब विचारवान लोग इन उसूलों की सच्चाई को मानते हैं. यह उसूल इन्साफ़, इन्सानी हमदर्दी, नेकी और सदाचार के उसूल हैं.

जब तक आदमी आदमी है तब तक बुराई और भलाई दोनों उसमें रहेंगे ही. पर बुराई के बुरे असर को जहां तक हो कम करना इन उसूलों का एक ख़ास पहलू है. लड़ाई ख़ास कर मुल्कों मुल्कों के बीच की लड़ाई इन्सानी समाज की इसी तरह की एक बुराई है. इस बुराई को ख़त्म करने की कोशिश भी हमेशा होती रही और अब भी हो रही है लेकिन इस के ख़त्म होने के दिन अभी कुछ दूर दिखाई देते हैं. पर

'نیا ہند' کے پچھلے انکوں میں اس پر لکھا بھی جا چکا ہے۔ خاص کر ڈاکٹر بھگوانداس نے اپنے لیکھوں میں اس پر کافی روشنی ڈالی ہے۔ کلچر یا سنسکرتی ایک بڑی اور پھیلی ہوئی چیز ہے جو انسانی زندگی کے سب پہلوؤں کو ڈھک لیتی ہے۔ کلچر انسانی زندگی اور سبھیتا کا باہر کا روپ بھی ہے اور اس کے اندر کی جان بھی۔ جب ہم ہندوستانی کلچر یا کسی ملک کی کلچر کی بات کرتے ہیں تو ہمارا مطلب یہ ہوتا ہے کہ ہم اس ملک کے الگ الگ گروہوں اور الگ الگ حصوں کے رہن سہن اور سوچ وچار کے طریقوں، ان کی کلا، ان کی کاریگری اور ان کے آدرشوں میں کچھ فرقوں کے رہتے ہوئے بھی ایکتا اور ایکسروپتا لانا چاہتے ہیں اور اسے چمکانا چاہتے ہیں تاکہ ایک دوسرے سے فرق کی باتیں گھٹتی جائیں اور میل کی باتیں بڑھتی جائیں، اور جو فرق رہیں بھی وہ ہم میں ایک دوسرے سے غیریت پیدا کرنے کے بجائے ہماری ملی جلی ملکی زندگی کی شوبھا کو اس طرح بڑھاتے ہوئے دکھائی دیں جس طرح باغ کے اندر رنگ برنگے پھولوں کی الگ الگ کیاریاں باغ کی شوبھا کو بڑھاتی ہیں۔ اسی طرح جب ہم مانو سنسکرتی، انسانی کلچر یا ایک وشو کلچر کی بات کرتے ہیں تو ہمارا مطلب یہ ہوتا ہے کہ ہم الگ الگ ملکوں کے لوگوں میں فرقوں کو دھیرے دھیرے کم ہونے اور میل اور ایکتا کی باتوں کو بڑھنے کا موقع دیں اور اس میں مدد دیں۔ یہی مانس جیون کا سب سے بڑا مقصد ہے۔ یہی سب دھرموں کا سار ہے۔ اسی راستے چل کر ہم انسانی ایکتا کو سامنے لا سکتے ہیں اور سارے انسانی سماج کو ایک کنبہ کا روپ دے سکتے ہیں۔ یہی وہ آدرش ہے جس کی طرف ہم بڑھنا چاہتے ہیں اور لڑکھڑاتے ٹھوکریں کھاتے دھیرے دھیرے بڑھ رہے ہیں۔

اس آدرش تک پہونچنے کے لئے آدمی نے ہزاروں برس کے تجربے کے بعد کچھ موٹے موٹے اصول طے کئے ہیں۔ یہ اصول دنیا کے سب مذہبوں، سب ملکوں اور سب سبھیتاؤں میں پائے جاتے ہیں۔ آجکل کے بھی لگ بھگ سب وچاروان لوگ ان اصولوں کی سچائی کو مانتے ہیں۔ یہ اصول انصاف، انسانی ہمدردی، نیکی اور سداچار کے اصول ہیں۔

جب تک آدمی آدمی ہے تب تک برائی اور بھلائی دونوں اس میں رہیں گے ہی۔ پر برائی کے برے اثر کو جہاں تک ہو کم کرنا ان اصولوں کا ایک خاص پہلو ہے۔ لڑائی خاص کر ملکوں ملکوں کے بیچ کی لڑائی انسانی سماج کی اسی طرح کی ایک برائی ہے۔ اس برائی کو ختم کرنے کی کوشش بھی ہمیشہ ہوتی رہی اور اب بھی ہو رہی ہے لیکن اس کے ختم ہونے کے دن ابھی کچھ دور دکھائی دیتے ہیں۔ پر



ادارہ مطبوعات پاکستان پوسٹ بکس نمبر ۱۸۳ کراچی نے شائع کیا - مطبوعہ ناظر پرنٹنگ پریس میکلوڈ روڈ - کراچی
مدیر : رفیق خاور

एक सूफ़ी ने कहा है—"वह मेरे दिल के अन्दर है और मेरा दिल उसके हाथ में है, जिस तरह आईना मेरे हाथ में होता है और मैं आईने में होता हूँ."

यहूदियों की किताबों में भी यही बात जगह जगह और बार बार और तरह तरह से कही गई है.

उपनिषद में साफ़ कहा गया है—"यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यते सर्वभूतेषु चात्मानं तत्व न विजुगुप्सते, तत्व न विचिकित्सते." यानी जो सब जानदारों को अपने अन्दर देखता है और सब के अन्दर अपने को देखता है, वह फिर धोका नहीं खा सकता और न किसी से द्वेश या दुश्मनी रख सकता है.

हम किसी और जगह कह आए हैं कि जो आदमी किसी ख़ास मज़हब को अपने ऊपर से उतार कर किसी भी दूसरे मज़हब को उसकी जगह ओढ़ सकता है उसकी आत्मा सब अलग अलग मज़हबों से ऊपर उठ सकती है. वह सबको समझ सकता है.

एक सूफ़ी ने बहुत साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में कहा है—

"चूँ हक़ीक़त रा मुहक़्क़िक़ ख़ुद तुई
ऐन हक़ ईनस्त ऐनुलहक़ तुई
हस्तिये रब रा मुजव्विज़ चूँ तुई
बिल यक़ीं अल्लाह अकबर ख़ुद तुई"

यानी—चूँकि हक़ीक़त को पहचानने वाला तू ही है इसलिये असल हक़ यही है कि हक़ की असलियत भी तू ही है. रब के होने को तय करने वाला चूँकि तू ही है इसलिये इस में कोई शक नहीं कि अल्लाह अकबर भी तू ही है.

धर्म, कलचर और राजकाज

इन्सानी जीवन को ठीक-ठीक समझने और संवारने के लिये यह ज़रूरी हो जाता है कि हम उसके अलग अलग पहलुओं को अलग अलग करके देख सकें. न सब पहलुओं को एक साथ आसानी से समझा जा सकता है और न हर आदमी हर पहलू को समझने की क़ाबलियत रखता है. यही बात दुनिया की और चीज़ों के बारे में कही जा सकती है. हम अलग-अलग क़ौमें देखते हैं, अलग अलग पार्टियां और गिरोह बनाते हैं, मर्दों, औरतों, बच्चों, अमीरों और ग़रीबों की अलग अलग बातें करते हैं. यह सब फ़र्क़ हमारी आसानी, सुभीते और काम चलाने के लिये हैं. इस हद तक यह ज़रूरी और मुफ़ीद भी हैं. लेकिन अगर हक़ीक़त की गहरी निगाह

ایک صوفی نے کہا ہے—"وہ میرے دل کے اندر ہے اور میرا دل اس کے ہاتھ میں ہے، جس طرح آئینہ میرے ہاتھ میں ہوتا ہے اور میں آئینے میں ہوتا ہوں."

یہودیوں کی کتابوں میں بھی یہی بات جگہ جگہ اور بار بار اور طرح طرح سے کہی گئی ہے.

اپنشد میں صاف کہا گیا ہے—"یستو سروانی بھوتانی آتمنی ایوانو پشیتے سرو بھوتیشو چاتمانم تتو نہ وجگپستے، تتو نہ وچکتستے" یعنی جو سب جانداروں کو اپنے اندر دیکھتا ہے اور سب کے اندر اپنے کو دیکھتا ہے وہ پھر دھوکا نہیں کھا سکتا اور نہ کسی سے دویش یا دشمنی رکھ سکتا ہے.

ہم کسی اور جگہ کہہ آئے ہیں کہ جو آدمی کسی خاص مذہب کو اپنے اوپر سے اتار کر کسی بھی دوسرے مذہب کو اسکی جگہ اوڑھ سکتا ہے اس کی آتما سب الگ الگ مذہبوں سے اوپر اٹھ سکتی ہے. وہ سب کو سمجھ سکتا ہے.

ایک صوفی نے بہت صاف صاف لفظوں میں کہا ہے—

"چوں حقیقت را محقق خود توئی
عین حق این است عین الحق توئی
ہستی رب را مجوز چوں توئی
بالیقین اللہ اکبر خود توئی"

یعنی—چونکہ حقیقت کو پہچاننے والا تو ہی ہے اس لئے اصل حق یہی ہے کہ حق کی اصلیت بھی تو ہی ہے. رب کے ہونے کو طے کرنے والا چونکہ تو ہی ہے اس لئے اس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ اکبر بھی تو ہی ہے.

دھرم، کلچر اور راج کاج

انسانی جیون کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے اور سنوارنے کے لئے یہ ضروری ہو جاتا ہے کہ ہم اس کے الگ الگ پہلوؤں کو الگ الگ کرکے دیکھ سکیں. نہ سب پہلوؤں کو ایک ساتھ آسانی سے سمجھا جا سکتا ہے اور نہ ہر آدمی ہر پہلو کو سمجھنے کی قابلیت رکھتا ہے. یہی بات دنیا کی اور چیزوں کے بارے میں کہی جاسکتی ہے. ہم الگ الگ قومیں دیکھتے ہیں، الگ الگ پارٹیاں اور گروہ بناتے ہیں، مردوں، عورتوں، بچوں، امیروں اور غریبوں کی الگ الگ باتیں کرتے ہیں. یہ سب فرق ہماری آسانی، سبھیتے اور کام چلانے کے لئے ہیں. اس حد تک یہ ضروری اور مفید بھی ہیں. لیکن اگر حقیقت کی گہری نگاہ

हज़रत ईसा ने कहा है—"मेरी इस बात पर विश्वास करो, कि मैं पिता के अन्दर हूँ और पिता मेरे अन्दर है. जिसने मुझे देख लिया उसने पिता को देख लिया. अगर तुम मुझे जान जाते तो मेरे पिता को भी जान जाते." (इन्जील)

मुहम्मद साहब की मशहूर हदीसें हैं—

"अहमद का मीम निकाल दो तब भी मैं ही हूँ, यानी मैं ही अहद (एक अल्लाह) हूँ."

"जिस ने मुझे देख लिया उसने अल्लाह को देख लिया."

"जिसने अपने नफ़्स को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया."

क़ुरान की एक आयत है—"जो अल्लाह को भूल जाता है वह अपने को भूल जाता है."

चीनी महात्मा कन्फ़ूशियस का कहना है—"अनजान आदमी दूसरों को ढूंढता है, जानकार अपने को खोजता है."

एक और चीनी महात्मा ने कहा है—"आसमान ख़ामोश है. कोई आवाज़ नहीं आती. फिर मैं अल्लाह को कहां ढूंढूं? दूर के आसमानों में मत ढूंढो अल्लाह यहीं आदमी के दिल के अन्दर है."

यही बात जापान के शिन्तो धर्म की किताबों में बार बार मिलती है.

वेदान्त में जो फ़र्क़ परमात्मा और जीव आत्मा में बताया गया है वही सूफ़ी किताबों में रूह उल अरवाह और रूह में बताया गया है. वही फ़र्क़ 'ख़ुदा' और 'ख़ुदा के बेटे' में है. बात एक है कहने का ढंग अलग अलग.

हज़रत ईसा ने एक जगह कहा है—"मैं और मेरा पिता एक हैं. फिर भी मेरा पिता मुझसे बड़ा है. मैं अपने पिता में हूँ और तुम मुझ में हो और मैं तुम में हूँ."

स्वामी शंकराचार्य ने परमात्मा और जीव आत्मा के सम्बन्ध को समुन्द्र और लहर का सम्बन्ध बताया है.

उस अनन्त की हक़ीक़त को शब्दों में बयान करना बहुत कठिन है. इसी लिये उसे समझना कठिन है. इसी लिये बुद्ध जैसे बहुत से महात्मा जब उनसे असल हक़ीक़त या हक़ की बाबत सवाल किये जाते थे तो चुप हो जाते थे क्योंकि सवाल करने वाले शब्दों के पीछे की हक़ीक़त को समझने के नाक़ाबिल थे.

मुहम्मद साहब की एक हदीस है—"जो ख़ुदा को जान जाता है, उस का बोलना बन्द हो जाता है."

गुरु गीता में लिखा है—"गुरु की ख़ामोशी कभी कभी व्याख्यान का काम देती है और उसी से शागिर्दों के शक दूर हो जाते हैं."

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے—"میری اس بات پر وشواش کرو کہ میں پتا کے اندر ہوں اور پتا میرے اندر ہے۔ جس نے مجھے دیکھ لیا اُس نے پتا کو دیکھ لیا۔ اگر تم مجھے جان جاتے تو میرے پتا کو بھی جان جاتے۔" (انجیل)

محمد صاحب کی مشہور حدیثیں ہیں—

"احمد کا میم نکال دو تب بھی میں ہی ہوں، یعنی میں ہی احد (ایک اللہ) ہوں۔"

"جس نے مجھے دیکھ لیا اُس نے اللہ کو دیکھ لیا۔"

"جس نے اپنے نفس کو پہچان لیا اُس نے اپنے رب کو پہچان لیا۔"

قرآن کی ایک آیت ہے—"جو اللہ کو بھول جاتا ہے وہ اپنے کو بھول جاتا ہے۔"

چینی مہاتما کنفیوشس کا کہنا ہے—"انجان آدمی دوسروں کو ڈھونڈھتا ہے، جانکار اپنے کو کھوجتا ہے۔"

ایک اور چینی مہاتما نے کہا ہے—"آسمان خاموش ہے۔ کوئی آواز نہیں آتی۔ پھر میں اللہ کو کہاں ڈھونڈھوں؟ دور کے آسمانوں میں مت ڈھونڈھو اللہ یہیں آدمی کے دل کے اندر ہے۔"

یہی بات جاپان کے شنتو دھرم کی کتابوں میں بار بار ملتی ہے۔

ویدانت میں جو فرق پرماتما اور جیو آتما میں بتایا گیا ہے وہی صوفی کتابوں میں روح الارواح اور روح میں بتایا گیا ہے۔ وہی فرق 'خدا' اور 'خدا کے بیٹے' میں ہے۔ بات ایک ہے کہنے کا ڈھنگ الگ الگ۔

حضرت عیسیٰ نے ایک جگہ کہا ہے—"میں اور میرا پتا ایک ہیں۔ پھر بھی میرا پتا مجھ سے بڑا ہے۔ میں اپنے پتا میں ہوں اور تم مجھ میں ہو اور میں تم میں ہوں۔"

سوامی شنکراچاریہ نے پرماتما اور جیو آتما کے سمبندھ کو سمندر اور لہر کا سمبندھ بتایا ہے۔

اُس اننت کی حقیقت کو شبدوں میں بیان کرنا بہت کٹھن ہے۔ اسی لئے اُسے سمجھنا کٹھن ہے۔ اسی لئے بدھ جیسے بہت سے مہاتما جب اُن سے اصل حقیقت یا حق کی بابت سوال کئے جاتے تھے تو چپ ہو جاتے تھے کیونکہ سوال کرنے والے شبدوں کے پیچھے کی حقیقت کو سمجھنے کے نااہل تھے۔

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے—"جو خدا کو جان جاتا ہے، اُس کا بولنا بند ہو جاتا ہے۔"

گرو گیتا میں لکھا ہے—"گرو کی خاموشی کبھی کبھی ویاکھیان کا کام دیتی ہے اور اُسی سے شاگردوں کے شک دور ہو جاتے ہیں۔"

सब कुछ खुदा है

(डाक्टर भगवानदास)

आदमी का मन, यक़ीन और शक, विश्वास और अविश्वास के बीच टक्कर खाता रहता है. कभी कभी उसके दिल को इससे बड़ी घबराहट और तकलीफ़ होती है. एक तरफ़ उसे परमेश्वर, अल्लाह ताला के रहम, उसकी दयालुता पर भरोसा होता है. दूसरी तरफ़ अपने अन्दर के और अपने चारों तरफ़ के दुखों और मुसीबतों को देख कर उसे शक होने लगता है. यह शक या अविश्वास तब ही जाकर मिटता है जब आदमी इस बात को समझ ले और जान जाय कि मेरे अन्दर का 'मैं' ही सब के अन्दर का 'मैं' है, और यह सब में रमा हुआ 'मैं' ही ईश्वर, अल्लाह या खुदा है. भलाई और बुराई सुख और दुख सब उसी के अन्दर हैं. सब मेरे अन्दर हैं. सब सब के अन्दर हैं क्योंकि सब उसी एक अल्लाह के अन्दर हैं. भलाई बुराई और सुख दुख का यह मेल ही दुनिया है. यही ज़िन्दगी है. इन दोनों तरह के गुनों की टक्कर जिसे द्वंद्व यानी ज़ोजैन या ज़िद्दैन कहते हैं, उसी एक वजूद यानी एक अल्लाह में जाकर ख़त्म होती है और मिट जाती है. लेकिन मामूली आदमी जिनके दिमाग़ अभी बच्चों के दिमाग़ों की तरह हैं इस हक़ीक़त को नहीं समझ सकते. इसे समझने के लिये दिमाग़ को बालिग़ होना होगा. अपने पैरों पर खड़ा होना होगा यानी अपने अन्दर अन्तर दृष्टि यानी चश्म बसीरत पैदा करनी होगी. इसी को अन्दर की आंख या तीसरी आंख भी कहा जाता है. उस आंख के खुलने पर ही मैं, तू, या 'मैं' 'तू' और 'वह' का फ़र्क़ मिट सकता है. जब तक वह आंख न खुले तब तक लोगों के दिमाग़ों को बच्चों की तरह गोदी में रखना या हाथों हाथ संभालना होगा.

'मैं' ही से तो दुनिया है. 'मैं' नहीं यानी आत्मा नहीं तो दुनिया नहीं. फिर ज्ञान, या मारफ़त कहां और साइन्स कहां? हर चीज़ के बारे में शक हो सकता है पर 'मैं हूँ' इस पर शक नहीं हो सकता. शक करने वाला खुद अपने वजूद पर शक कैसे कर सकता है? दुनिया के बड़े बड़े साइन्सदानों ने अब इस बात को समझ लिया है. साइन्स की शुरू की जवानी के पागलपन में जिस माद्दीयत यानी जड़ वाद की तरफ़ वह तेज़ी से बढ़ रहे थे अब वह उससे बहुत दूर हट गए हैं. हम एक पिछले लेख में दिखा चुके हैं कि आजकल के बड़े बड़े साइन्सदानों के मुताबिक़ यह दुनिया रूह या आत्मा यानी स्प्रिट की दुनिया है, माद्दे या मिट्टी की नहीं. यह दूसरी बात है कि हम माद्दे या मिट्टी में ही वह सब गुन समझने लगें जो रूह या आत्मा में हैं, तब बहस सिर्फ़ लफ़्ज़ों की रह जाती है जो सब के अन्दर रमी हुई आत्मा है वही मेरे अन्दर भी है, वही मैं हूँ.

سب کچھ خدا ہے

(ڈاکٹر بھگوان داس)

آدمی کا من، یقین اور شک، وشواس اور اوشواس کے بیچ ٹکر کھاتا رہتا ہے. کبھی کبھی اُس کے دل کو اِس سے بڑی گھبراہٹ اور تکلیف ہوتی ہے . ایک طرف اُسے پرمیشور، اللہ تعالےٰ کے رحم، اُس کی دیالوتا پر بھروسہ ہوتا ہے . دوسری طرف اپنے اندر کے اور اپنے چاروں طرف کے دکھوں اور مصیبتوں کو دیکھکر اُسے شک ہونے لگتا ہے. یہ شک یا اوشواس تب ہی جا کر مٹتا ہے جب آدمی اِس بات کو سمجھ لے اور جان جائے کہ میرے اندر کا 'میں' ہی سب کے اندر کا 'میں' ہے، اور یہ سب میں رما ہوا 'میں' ہی ایشور، اللہ یا خدا ہے . بھلائی یا برائی سکھ اور دکھ سب اُسی کے اندر ہیں، سب میرے اندر ہیں. سب سب کے اندر ہیں کیونکہ سب اُسی ایک اللہ کے اندر ہیں . بھلائی برائی اور سکھ دکھ کا یہ میل ہی دنیا ہے. یہی زندگی ہے. ان دونوں طرح کے گنوں کی ٹکر جسے دوند یعنی زوجین یا ضدین کہتے ہیں، اُسی ایک وجود یعنی ایک اللہ میں جا کر ختم ہوتی ہے اور مٹ جاتی ہے . لیکن معمولی آدمی جن کے دماغ ابھی بچوں کے دماغوں کی طرح ہیں اِس حقیقت کو نہیں سمجھ سکتے . اسے سمجھنے کے لئے دماغ کو بالغ ہونا ہوگا . اپنے پیروں پر کھڑا ہونا ہوگا یعنی اپنے اندر انتر درشٹی یعنی چشم بصیرت پیدا کرنی ہوگی . اسی کو اندر کی آنکھ یا تیسری آنکھ بھی کہا جاتا ہے . اُس آنکھ کے کھلنے پر ہی میں، تو، یا 'میں' 'تو' اور 'وہ' کا فرق مٹ سکتا ہے . جب تک وہ آنکھ نہ کھلے تب تک لوگوں کے دماغوں کو بچوں کی طرح گودی میں رکھنا یا ہاتھوں ہاتھ سنبھالنا ہوگا.

'میں' ہی سے تو دنیا ہے . 'میں' نہیں یعنی آتما نہیں تو دنیا نہیں . پھر گیان یا معرفت کہاں اور سائنس کہاں؟ ہر چیز کے بارے میں شک ہو سکتا ہے پر 'میں ہوں' اِس پر شک نہیں ہو سکتا . شک کرنے والا خود اپنے وجود پر شک کیسے کر سکتا ہے؟ دنیا کے بڑے بڑے سائنسدانوں نے اب اس بات کو سمجھ لیا ہے . سائنس کی شروع کی جوانی کے پاگل پن میں جس مادیت یعنی جڑواد کی طرف وہ تیزی سے بڑھ رہے تھے اب وہ اُس سے بہت دور ہٹ گئے ہیں . ہم ایک پچھلے لیکھ میں دکھا چکے ہیں کہ آج کل کے بڑے بڑے سائنسدانوں کے مطابق یہ دنیا روح یا آتما یعنی اسپرٹ کی دنیا ہے، مادے یا مٹی کی نہیں . یہ دوسری بات ہے کہ ہم مادے یا مٹی میں ہی وہ سب گن سمجھنے لگیں جو روح یا آتما میں ہیں، تب بحث صرف لفظوں کی رہ جاتی ہے جو سب کے اندر رمی ہوئی آتما ہے وہی میرے اندر بھی ہے، وہی میں ہوں .

नया हिन्द | نیا ہند

जिल्द 13 · जुलाई, सन् '52 · नम्बर 1

جلد 13 · جولائی، سن 52' · نمبر 1

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
"نیا ہند" پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

लोकशाही जवानों का फ़ौजी कूच

हैं देश हमारे अलग, दूर, यह माना
हैं एक, एक जब बड़ा काम है ठाना
डांटे मारे कर ले दुश्मन मन माना
है इसी जमीं पर हमें अमन फैलाना

क़ौम का या मुल्कों का रंग
बदलतीं सदा जवान उमंग
जवानों का जोशीला गान
बुला कर रहता अमनो अमान
कूक उठता इक साथ जहान
यार हम, यारी हो ईमान

[illegible]ा उठता हरेक जवान सभी आजादी के गान
[illegible]ब में पड़ने लगती जान सच की बढ़ने लगती शान

फ़तेह का होता खड़ा निशान
किसका ?

[illegible]त का अमन का, शान्ति का पीस का, शान्ति का अमन का.

[illegible]क चीनी गीत से] —भगवानदीन

لوک شاہی جوانوں کا فوجی کوچ

ہیں دیش ہمارے الگ، دور، یہ مانا
ہیں ایک، ایک جب بڑا کام ہے ٹھانا
ڈانٹے مارے کر لے دشمن من مانا
ہے اسی زمیں پر ہمیں امن پھیلانا

قوم کا یا ملکوں کا رنگ
بدلتیں سدا جوان امنگ
جوانوں کا جوشیلا گان
بلا کر رہتا امن و امان
کوک اٹھتا اک ساتھ جہان
یار ہم، یاری ہو ایمان

گا اٹھتا ہر ایک جوان سبھی آزادی کے گان
سب میں پڑنے لگتی جان سچ کی بڑھنے لگتی شان

فتح کا ہوتا کھڑا نشان
کس کا ؟

شانتی کا امن کا، شانتی کا پیس کا، شانتی کا امن کا۔

[ایک چینی گیت سے] —بھگوان دین

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

जुलाई 1952

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

ماہواری پرچا

جولائی 1952

कथा किसमें

कीमत — हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने।

[illegible] ہندستان میں چھ روپئے سال، باہر دس روپئے سال، ایک پرچہ دس آنے۔

मैनेजर
"नया हिन्द"
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

مہتمم
"نیا ہند"
145 مٹھی گنج، الہ آباد

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर — ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر — تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर — सुरेश रामभाई

نائب ایڈیٹر — سریش رام بھائی

* * * * *

इस नम्बर के ख़ास लेख

اس نمبر کے خاص لیکھ

याद

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

जुलाई 1952 جولائی

क़ीमत दस आना — قیمت دس آنے



مولانا کے خود نوشت سوانحی اشارے

("تذکرہ" کا ایک باب)

گفتی کہ چرا حالِ دلِ زار نہ گوئی؟
من خود کنم آغاز، بہ پایاں کہ رساند؟

ان اوراقِ پریشاں کی تالیف کا باعث ایک دوستِ عزیز کا اصرار تھا۔ اب وہ مُصر ہیں کہ خود اپنے حالات بھی قلم بند کروں۔ اس تمام داستان سرائی کے اہتمام سے ان کا اصلی مقصد یہی تھا۔ ہر چند معذرت کی مگر مسموع نہ ہوئی۔ ناچار تعمیلِ فرمائش کے لیے مستعد ہونا پڑا۔ کتنی سو صفحے روشن دلانِ سلف کے تذکرۂ آثار و مناقب سے نورانی ہو چکے ہیں۔ اب دو چار صفحے اپنی سیہ روتیوں اور سیہ بختیوں کے سواد تحریر سے بھی سیاہ کرتا ہوں کہ تعرف الاشیاء باضدادھا!

در مجلسِ وصالش تنہا کشیدہ مرداں
چوں دورِ خسرو آمد مے در سبو نماندہ

یہ غریب الدیارِ عہد و ناآشنائے عصر و بیگانۂ خویش و نمک پروردۂ ریش، معمورۂ تمنا و خرابۂ حسرت کہ موسوم بہ احمد و مدعو بابی الکلام ہے۔ ۱۸۸۸ء مطابق ذوالحجہ ۱۳۰۵ھ میں ہستیِ عدم سے اس عدم ہستی نما میں وارد ہوا، اور تہمتِ حیات سے متہم۔ الناس نیام، اذا ماتوا انتبھوا۔

شورے شد و از خوابِ عدم چشم کشودیم
دیدیم کہ باقی است شبِ فتنہ غنودیم

والد مرحوم نے تاریخی نام "فیروز بخت" رکھا تھا، اور مصرعۂ ذیل سے ہجری سال کا استخراج کیا تھا:

"جواں بخت و جواں طالع جواں بلو!"

سبحان اللہ، بخت کی فیروزی اور طالع کی ارجمندی! اتنیہ عمر لغزشوں اور ٹھوکروں کی پامالی و درماندگی میں بسر ہو چکی۔ تتمہ جو شاید باقی ہے، دم لینے اور سستانے میں ختم ہو رہی ہے۔ نہ منزلِ مقصود کا پتہ ہے، نہ شاہراہِ منزل پر قدم۔ جب پاؤں میں تیزی اور ہمت میں جوانی تھی، تو رہ نوردی و منزل طلبی کا دروازہ کھلا۔ اب پامالیوں اور افتادگیوں سے نہ قدم میں پامردی رہی نہ ہمت میں کارفرمائی، تو طلب نے آنکھیں کھولیں اور غفلت نے کروٹ لی۔ راہ دور اور نشانِ منزل گم، کیسۂ زاد خالی اور سر و سامانِ کار ناپید۔ وقت جا چکا، اور ہر آن و ہر لمحے کاروانِ مقصود سے دوری اور منزلِ مراد سے مہجوری بڑھتی گئی۔ اب قدم کی تیزی اور ہمت کی چستی واپس بھی مل جائے، پھر بھی وہ دولتِ وقت کب واپس مل سکتی ہے، جو لُٹ چکی۔ اور وہ قافلۂ امید کب پس ماندگانِ غفلت کی خاطر لوٹ سکتا ہے جو جا چکا!:

رفتم کہ خار از پا کشم محمل نہاں شد از نظر
یک لحظہ غافل بودم و صد سالہ راہم دور شد!

ساری فیروز بختی و جواں طالعی کا معاملہ آج نہیں کل فیصل ہونے والا ہے یَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ۔ اصل فیروز مندی وہاں کی فیروز مندی ہے اور جواں بخت وہی ہے جو اس آنے والے دن کی آزمائش میں پورا اترے۔ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ! اگر وہاں رَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتُ نَعِيمٍ اور فَوْزٌ عَظِيمٌ کی فیروزی و کامرانی ہاتھ آئی، تو پھر بخت بختِ ارجمند ہے اور طالع طالعِ بلند۔ لیکن اگر وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ اور لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ کی رسوائی و مایوسی ملی، تو پھر نہ اس حرماں نصیبی کے لیے کبھی امید ہے، نہ اس ماتمِ حسرت کے لیے کبھی خاتمہ۔ بختِ اسکندری و تختِ جمشیدی بھی ہاتھ آئے، تو لے کر کیا کیجیے!:

گر بدانم کہ وصالِ تو بدیں دست دہد
دل و دیں را ہمہ در بازم و توفیر کنم!

آبائی وطن دہلی مرحوم ہے:

سلام علی نجد و من حل بالنجد

مگر وطنِ مادری سرزمینِ مطہرِ طیبہ و دار الہجرتِ سید الکونین و شہبستانِ نبوت و وحی ہے، قبلۂ عبادت گزارانِ عشق، و کعبۂ نیاز مندانِ شوق۔ علی صاحبھا الصلوٰۃ والتحیہ:

دارم دلے گرداں، کہ من قبلہ نمامی خوانمش
رو سوئے ابرویش کند، ہر چند می گردانمش

اور وطنِ حقیقی کی نسبت کیا کہیے کہ بحکم کن فی الدنیا کانک غریب ہم سب غربت سرائے ارضی کے آوارہ و مسافر۔ تمام مسافرانِ ہستی ایک ہی قافلۂ غربت کے رہ سپار، سب کو ایک ہی مستقر و موطن درپیش۔ البتہ کسی کے لیے سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا میں داخل، اور کسی خوش نصیب کے لیے حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا:

ابرح ما یکون الشوق یوما
اذا دنت الخیام من الخیام

مولد و منشاءِ طفولیت وادی غیر ذی زرع عند بیت اللہ المحرم ہے۔ یعنی مکۂ معظمہ



پرستش نہ آیا۔ جہاں میں مندروں اور مورتیوں کے سوا
کچھ نہ تھا۔ ہر مندر جبینِ نیاز کا طالب، ہر مورتی
دل و دیں و جان کی سپاس نامہ لیے وبالِ ہوش۔
ہر جلوہ برقِ تمکین و غارتِ یار، رنگ و ادا سے صبر و قرار:

الفراق اے صبر و ملیں، الوداع اے عقل و دیں

جس راہ میں قدم اٹھایا، زنجیروں اور کمندوں
نے استقبال کیا۔ جس گوشے میں پناہ لی، وہی زندانِ
ہوش و آگہی نکلا۔ ایک قید ہو، تو ذکر کیجیے۔ ایک
زنجیر ہو، تو اس کی کڑیاں گنیے۔ دل ایک تھا، مگر تیر
ہزاروں ہاتھوں میں تھے۔ نظر ایک تھی، مگر جلووں
سے تمام عالم معمور تھا۔ ہر شمع نے اپنا تیر چلایا۔
ہر مژگاں نے اپنی کمند پھینکی۔ ہر افسوں ساز نے اپنا
افسونِ محبت پھونکا۔ ہر جلوۂ ہوش ربا نے صرف اپنے
ہی دامِ الفت میں اسیر اور اپنی ہی فتراکِ اسیری کا
پابند رکھنا چاہا:

واے بر صیدے کہ یک باشد و صیاد سے چند!

یہ بات نہ تھی کہ امتیاز نے بالکل ساتھ چھوڑ
دیا ہو اور دیدۂ اعتبار یک لخت کور ہو۔ برق نے
بار بار چشمک کی، ستاروں نے بھی کبھی کبھی پردۂ شب
کی اوٹ سے جھانکا، لیکن رات کی تاریکی اور طوفان
کی تیرگی ایسی نہ تھی جو ان چنگاریوں سے روشن ہو جاتی۔
وہ برابر بڑھتی ہی گئی:

فرصت ز دست رفتہ و فرصت فشردہ پاے
کار از دوا گزشتہ و افسوں نکردہ کس

کبھی رہ کی بلندی و پستی پہ نگاہ پڑی تو بلندی
و سرفرازی کے لیے دل تڑپ اٹھا، کبھی سبزۂ پامالی کی
خاکساری و افتادگی پر نظر پڑ گئی، تو لپٹ پڑنے اور
خود پستی پر شرم آئی۔ کبھی بادِ صبا کی روش پسند آئی،
تو اقامت گزینی سے وحشت ہوئی۔ و ریگِ صحرانوردی
کی دل میں ہوا سمائی۔ کبھی آبِ رواں کی بے قیدی و
بے تعینی اس طرح جی کو بھائی کہ پابندیوں اور گرفتاریوں
پر آنکھوں نے آنسوؤں اور دل نے زخموں کے ساتھ
ماتم کیا۔ پھولوں کو جب کبھی مسکراتے دیکھا، تو اپنی
آنکھوں نے بھی رونے میں کمی نہ کی، اور درختوں کو
جب کبھی جنبش ہوئی، شاخوں نے جھوم جھوم کر وجد کیا،
تو اپنی سنگینی و بے حسی بھی بہت یاد آگئی۔ غرض کہ نہ
تو اسبابِ تسلی کی کمی تھی اور نہ استعداد بالکل مفقود تھی۔
تجلیاں کوندتی رہیں۔ بادل گرجتے رہے، لیکن افسوس کہ
نیند بھی بڑی ہی سخت تھی اور پشتِ غفلت کسی بڑے
ہی سخت تازیانے کا انتظار کر رہی تھی:

نپرسیدی صفت سے لب تک دعا نہ صدا
در قبول تو اسیرِ آرزو ہی ہی رہا!

بات یہ ہے کہ صاف صاف ہی کہہ دیا جائے:

ہاں! بانگِ بلند مست ایں ریو شیدنی گو کر!

گمراہی عمل کی آخری حد فسق ہے اور گمراہی
اعتقاد کی الحاد۔ جو فسق و الحاد کی کوئی قسم ایسی نہ تھی
جس سے اپنا نامۂ اعمال خالی رہا ہو۔ جو فسق خود بھی
ایک کامل قسم کا عملی الحاد ہے:

چو پرسشِ گنہم روزِ حشر خواہد شد
تمام کاستہ گندمی خلق یاد کنند!

قبل اس کے کہ تم پر شہادت دی جائے، بہتر
ہے کہ خود آپ اپنے لیے شہید بن جاؤ: اِقْرَأْ
كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا۔ اور
جو شہادت دی جائے گی، خود ہمارا وجود بھی مجسم
شہادت ہے۔ بَلِ الْإِنسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ
وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ۔ پھر تو پاؤں کی شہادت پر
تعجب کیوں ہو! جب اس دنیا ہی میں دیکھ لیتے ہیں
کہ اس کا ہر لمحہ یوم الاشہاد کا حکم رکھتا ہے۔ اور خود
ہمارا قرینِ بغل بھی دم بدم شہادت دے رہا ہے:
لَا أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَامَةِ وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ
اللَّوَّامَةِ۔ البتہ ساری ہلاکت اس میں ہے کہ ہنگامۂ
غفلت و خود فراموشی میں نفسِ لوامہ کی صدائے
شہادت بہت کم کانوں تک پہنچتی ہے۔ اور پہنچتی
ہے، تو خود ہمارے ہی ہاتھ سرشاری و بدمستی کے
نقاروں پر چوٹیں پڑ رہی ہوتی ہیں کہ ان کے شور و غل
میں یہ سرگوشیِ ملامت کب سنائی دے سکتی ہے! اِلَّا یہ کہ
صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَامِدُونَ! کی
گھڑی سر پر آجائے:

گوش تو از بہر دگراں شدہ است
کہ نشنوی نالہ و فغانِ ما!

لیکن دنیا کی ساری سچائیوں اور یقینوں سے
بڑھ کر یہ حقیقت ہے کہ:

کارساز ما بفکرِ کارِ ما
فکرِ ما در کارِ ما آزارِ ما!

ہوا اس راہ کی نیرنگیوں کا کچھ عجب حال ہے:

کہ علم بے خبر افتاد و عقل بے حس شد!

یہ چیز راہ ایک ہی ہے لیکن کرشمے بے شمار
ہیں۔ اور گوشے سب کھوتے ہیں مگر ایک ہی جلوے
سے نہیں:

اے ترا با ہر دلے رازے دگر!
ہر گدا را بر درت آوازے دگر!

کوئی پکارتا ہے اور دروازہ نہیں کھلتا۔
کوئی بھاگتا ہے اور اس پر کمند پھینکے جاتے ہیں۔ قانون
طلب و سعی سے انکار نہیں، لیکن اگر وہ بے طلب دینا
چاہے، تو اس کا ہاتھ کون پکڑ سکتا ہے؟ ان لربکم
فی ایام دھرکم نفحات۔ الا فتعرضوا لھا۔

گر زلفِ تست مشک افشانی اما عاشقاں
مصلحت را تہمتے بر آہوئے چیں بستہ اند!

غرض کہ اپنی غفلت پرستیوں کا تو یہ حال تھا۔
لیکن ادھر کارفرمائے غیب کا فیصلہ کچھ دوسرا ہی ہو چکا تھا:



یہ دور گردی من از غوری نخندد
حریف سخت کمانے کہ در کمیں دارم

ناگہاں جاذبۂ توفیق الٰہی پردۂ عشق مجاز میں نمودار ہوا۔ اور ہوس پرستیوں کی آوارگیوں نے خود بخود شاہراہ عشق و محبت تک پہنچا دیا۔ آگ لگتی ہے تو رفتہ رفتہ شعلے بھڑکتے ہیں۔ سیلاب آتا ہے، تو بتدریج پھیلتا ہے۔ یہ تو ایک تجلی تھی جو آناً فاناً نمودار ہوئی، چمکی اور دیکھا تو خاک کا ڈھیر تھا:

می گزشت ز غم آسودہ کہ ناگہ ز کمیں
عالم آشوب نگاہے سر راہم بگرفت

اصل میں منزلیں تین ہی ہیں۔ ہوس، عشق، حقیقت:

حاصل عمرم سہ سخن بیش نیست
خام بدم، پختہ شدم، سوختم

اور یہاں عشق سے مراد عشق محدود و ناقص یعنی مجاز ہے، نہ کہ علی الاطلاق، کیونکہ اس اعتبار سے تو اول و آخر جو کچھ ہوا ہے، عشق ہی ہے۔ تمام کائنات ہستی میں بجز اس کے ہے اور کون جو آسمانوں کا ستون ہے، تو یہی ہے: زمین کا مدار و محور اگر ہے، تو اسی کے دم سے۔ دنیا میں جس قدر ظاہر ہے، یہی ہے، جس قدر باطن ہے، اس کے سوا کچھ نہیں۔ یہ دوسری بات ہے، کہ تمھاری نگاہ وحدت ناآشنا نے ایک ہی حقیقت کو طرح طرح کے ناموں سے موسوم کر دیا ہو۔ کتنے ہی پردے ہیں، جو اسی کج نظری و کثرت بینی نے جمال حقیقت یگانہ و یک رنگ پر ڈال رکھے ہیں، ورنہ:

یک چراغ ست دریں خانہ کہ از پرتو آں
ہر کجا می نگری، انجمنے ساختہ اند

بلاشبہ یہ بھی لغزش تھی، لیکن اس لغزش کو کیا کہو گے، جو محبوب کے قدموں پر گرا دے۔ مقصود تو ساری باتوں سے اس تک پہنچنا ہے۔ اگر لغزش و مستی ہی رہنما بن جائے، تو عجب کیوں نہ ہو؟ راست قدمیں اس پر قربان ہوں! اور ہوشیاریاں اس پر نچھاور:

گر طمع خواہد زمن سلطان دیں
خاک بر فرق قناعت بعد ازیں!

اصل یہ ہے کہ اس راہ کی کامیابی کا سارا دار و مدار قطع و وصل اور شکستگی و پیوستگی پر ہے۔ اور وہ ایک منزل ہے جس تک پہنچنے کی راہ ابھی یہی ہے کہ ہر ایک سے ٹوٹنے کے لیے سب کو چھوڑنا اور ایک سے جڑنے کے لیے سب سے کٹنا۔ اس دروازے کا کھلنا اس پر موقوف ہے کہ وہ تمام دروازے بند کر دیے جائیں جو پہلے کھول دیے گئے تھے:

در قبول نظر عشق ہزاراں شرط ست
اول از عافیت خفتہ ندامت باشد

انسان کی محبت و الفت کے آلائش ایک نہیں ہزاروں ہیں۔ اس کی گردن میں الفتوں کی طوق کا بوجھ ہے۔ اس کے پاؤں علائق کی زنجیروں سے گراں بار، اس کا دل ہر طرف سے محبت کی کشش و انجذاب میں زنجیر کے بندھنوں پر، اور یہ علائق کی لغت میں اسی رنج و محبت ہے:

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا۔ تو اب اصلی کام یہ ہو کہ یہ ساری بندشیں کٹیں اور پرستش رسوم کی ساری زنجیریں ٹوٹیں۔ اس کے لیے صرف دو ہی صورتیں ہیں۔ یا تو ایسا کوئی ہاتھ ہو جو عقیدہ کشائی میں ایک ایک گرہ کھول دے، ایک کے بعد ایک ساری زنجیریں کھلتی جائیں۔ یا پھر ایک تلوار چمکے جس کا ایک ہی بھرپور ہاتھ چشم زدن میں ساری بندشوں اور زنجیروں کو ٹکڑے ٹکڑے کر کے رکھ دے۔ نہ ناخن گرہ کشا کی منت پذیری، نہ زنجیروں کی حلقہ شماری کی انتظاری۔ ایک سوکھی لکڑی کے جلانے کے لیے ہزاروں تدبیریں کیجیے، جب کہیں آگ سے دھواں اٹھے۔ مگر معلوم ہے ہزاروں آشیانوں اور خرمنوں کے لیے بجلی کی ایک ہی نگاہ غلط انداز کافی ہوتی ہے:

گفتم ببوسم می شوی و دل و دیں بدہی
از یک نگاہ گشتہ جوابے ولے نداد

قطع علائق اور دفع موانع کی جتنی امیدیں، سعی و ہمت اور طلب و جستجو سے پیدا کی جاتی ہیں سب پہلی صورت میں داخل ہیں۔ اور دوسری صورت جذب و عشق کی ہے۔ یہ قوت فرشتۂ عشق کے سوا اور کسی کے ہاتھ میں نہیں، کہ برسوں کے کام ایک ہی دم میں پورا کر دے:

دم شمشیر بود تیغ نگہ عشق بود
ہر کہ ایں رہ سپرد زیں رہ اول تیز برد

اسی لیے عرفائے طریقت نے عشق کی بڑی سے بڑی گرفتاری بھی پسند کی، کہ سب سوا کی آزادی سے بہتر یہی ہے۔ اور اس راہ کی بدنامی بھی کم بختی و بے راہروی نہیں:

درماں ز خستگی او نیست
عشق بر دوست و ہم دوستان ست

گو اس کی گرفتاری بھی گرفتاری، اور گناہ بھی گناہ ہے، لیکن جو عاشق کی نظر میں ہے اس کی بدولت کام بہت آسان و مختصر ہو جاتا ہے۔ آنے والی منزلوں کے سارے دام عشق پہلے ہی سے ہو جاتے ہیں۔ پہلے سو زنجیروں کو توڑنا تھا،

تو اس کی بدولت اب صرف ایک ہی زنجیر سے چھوٹنے کا معاملہ باقی رہ گیا۔ پہلے ہزاروں چوکھٹوں کی جبہ سائیوں سے پیشانی داغدار تھی۔ کس کس داغ کو مٹاتے، کن کن پرستشگاہوں کو ڈھاتے۔ اب خود بخود سب مٹ گئے۔ صرف ایک ہی چوکھٹ کا نشانِ سجدہ رہ گیا۔ اور اصلی کام بھی یہی تھا کہ پیشانی ایک ہے تو سجدہ گاہ بھی ایک ہی ہو۔ جب یہاں تک معاملہ پہنچ گیا اور ایک کے لیے سب کو چھوڑنے کا سبق مل گیا تو اُس ایک کو بھی مسجودِ حقیقی کی خاطر چھوڑنا کیا مشکل ہے! ممکن ہے کہ ایک جھٹکے میں یہ رشتۂ آخری بھی ٹوٹ جائے، اور پھر اس آزرکدۂ ہزار پرستش سے خلیل وار صدا سے: اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ بلند ہو:

بیفشاں زلف وصوفی را بیازی و برقص آور
کہ از ہر رقعۂ دلقش ہزاراں بت بیفشانی

یہی وجہ ہے کہ اس سفر کی سب سے اقرب راہ منزلِ مجاز ہی سے ہوکر نکلی ہے:

بادہ گر خام بود پختہ کند شیشۂ ما!

اور بعض صورتوں میں تو بغیر اس کے چارہ ہی نہیں۔ گو وہ خود بھی مرض ہے، لیکن ہزاروں بیماریوں کا علاج بھی اس کے سوا کوئی نہیں:

گرچہ آشفتگیِ کارِ من از زلفِ تو بود
حلِ ایں عقدہ ہم از روئے نگار آخر شد

مانا کہ گرفتاریِ عشق کی یہ ایک زنجیر بھی پابندیوں کی ہزاروں زنجیروں سے بوجھل ہوتی ہے اور اس کی ترکش میں پہلا تیر پانوں ہی پر لگتا ہے۔ وحشی کرمانی نے خوب کہا ہے:

عشق چوں بر سرِ کس حملۂ بیداد آرد
اولش قوت بگریختن از پا ببرد

لیکن عجب نہیں کہ کسی کے بامِ بلند تک پہنچنے کے لیے یہی زنجیر کمند کا کام دے جائے۔ کتنے ہی رہ کے خوش قسمت ہیں جن سے سیڑھیوں کا ایک ایک زینہ نہیں گنوایا گیا۔ کمندِ عشق نے ایک ہی جست میں قصرِ مطلوب تک پہنچا دیا:

تو و قطعِ منازلِ ہا من و یک لغزشِ پائے!

اور یہ تو منزلِ عشق کے معاملات ہیں۔ تجربہ کارانِ راہ کا فیصلہ تو یہ ہے کہ اگر رندی و ہوس پرستی کی منزل میں بھی کچھ دیر کے لیے دم لے لیا جائے تو فائدہ سے خالی نہیں۔ کتنی ہی شاہراہیں ہیں جو اسی خارزار سے نکلی ہیں:

کعبہ را ویراں مکن اے عشق! کانجا یک نفس
گہ گہے پسماندگانِ راہ منزل می کنند

البتہ یاد رہے کہ سفر کی کامیابی نہ تو منزلوں پر موقوف ہے، نہ مختلف راہوں پر۔ راہ کوئی ہو، قدم میں حرکت اور ہمت میں اقدام ہے، تو کبھی نہ کبھی منزلِ مقصود تک پہنچ ہی جاؤ گے۔ خواہ راہ میں ہر درخت کے سائے تلے دم لو، خواہ ہر سرائے میں کمر کھولو۔ لیکن ساری نامرادی و بے حاصلی اُس کے لیے ہے جس کے لیے راہ و منازل کے تماشے اس طرح دامن گیر ہوگئے کہ وہیں ہمیشہ کے لیے بستر جما دیا:

ہوگا کسی دیوار کے سائے کے تلے میرؔ
کیا کام محبت سے اُس آرام طلب کو

ہوس و عشق پر کیا موقوف ہے۔ کوئی درمیانی منزل ہو، اگر قدم آگے بڑھنے سے رُک گئے تو پھر وہی منزلِ بُت ہے اور رہرو اس کا پرستار، تسبیح آرائی و دلق پوشی ہی کی منزل کیوں نہ ہو۔ مَنْ شَغَلَكَ عن اللّٰہ فهو صنمك۔ کامیابی چلتے رہنے اور بڑھتے جانے کا نام ہے کہ:

ٹک دیکھ لیا، دل شاد کیا، خوش کام ہوئے اور چل نکلے
اور نامرادی نہیں ہے مگر اٹکنے اور رہ جانے میں:

یک لمحہ غافل بودم و صد سالہ راہم دور شد

مطلوب اس راہ میں منازل و مراحل ہیں، نہ کہ موانع و مہالک۔ اگر جاذبۂ توفیقِ الٰہی دست گیر رہے، تو موانع، وسائل بن سکتے ہیں اور قریب ہے کہ بہتر سے بہتر وسائل محرومانِ راہ کے لیے موانع و مہالک کے حکم میں داخل ہو جائیں:

من لم یکن للوصال اهلا
فکل طاعاته ذنوب!

چنانچہ الحمد للہ کہ اس منزل کے وقفہ نے بھی زیادہ طول نہ کھینچا۔ ایک سال پانچ ماہ کے اندر اس کوچے کے بھی تمام رسم و راہ ایک ایک کرکے دیکھ ڈالے، کوئی گوشہ، کوئی مقام باقی نہ چھوڑا۔ نہ مجنوں سے ہم عنانی کا سودا ہے، نہ فرہاد سے مقابلے کا دعویٰ۔ نہ یہ کہ:

شمۂ از داستانِ عشقِ شور انگیزِ ماست
ایں حکایتہا کہ از فرہاد و شیریں کردہ اند

البتہ یہ ضرور ہے کہ شیوۂ عشق و عاشقی و آشفتگی و جاں سپاری کی جتنی باتیں سننے میں آئیں، وہ سب کرکے دیکھ لیں، اور اس راہ کا کوئی حال و معاملہ ایسا نہیں رہا جو کسی کی زبان پر ہو اور اپنے اوپر نہ گزر چکا ہو:

کچھ قمریوں کو یاد ہیں، کچھ بلبلوں کو حفظ
عالم میں ٹکڑے ٹکڑے مری داستاں کے ہیں

اس راہ کے رسم و آئین اگرچہ بے شمار ہیں، لیکن ہر رہرو کو دو مسلکوں میں سے ایک مسلک ضرور اختیار کرنا پڑتا ہے: یا قمری و بلبل کی آوارگی و شورش، یا شمع کی خاموشی و سوزش:

وللناس فی ما یعشقون مذاهب

اور تجربہ کارانِ طریق جانتے ہیں کہ دوسری راہ پہلے سے کہیں زیادہ نازک اور کٹھن ہے۔ اس میں



بے قیدی و بے وضعی کی آزادی ہے، اس میں ضبط و احتیاط کی پابندی:

اے وضع احتیاط! یہ فصل بہار ہے
کلبانگ شوق زمزمہ سنج فغاں نہ ہو

اور معلوم ہے کہ شعلوں کی طرح بھڑکنا آسان ہے مگر تنور کی طرح اندر ہی اندر سلگنا اور حفظ و ضبط کے سارے آداب و شرائط سے عہدہ برآ ہونا مشکل ہے:

عریانی تنی خوش ست، ولے زیب دیگر ست
داماں چاک و گریباں دریدہ را

اگر یہ سچ ہے تو پھر نہ مجنوں کی دشت پیمائیوں پر رشک آتا ہے، نہ فرہاد کی شورش و کوہ کنی پر! اگر کسی نے عمر بھر دشت و صحرا میں نالہ و زاری کی ہو، تو کی ہو۔ یہاں ایک ایک گھڑی، ایک ایک لمحہ ایسا گزر چکا ہے کہ سینکڑوں آہیں اندر ہی اندر گھٹی ہیں ہزاروں شورشیں سینہ کے اندر ہی اندر جلی ہیں۔ آنسوؤں کو آنکھوں کی وسعت نہ ملی، تو دل کے گوشے ہی میں طوفان اٹھاتے رہے:

انداز جنوں کون سا ہم میں نہیں، مجنوں
پر تیری طرح عشق کو رسوا نہیں کرتے

اگرچہ اس معاملہ کا خاتمہ بظاہر ناکامی و مایوسی پر ہوا، لیکن فی الحقیقت فتح و مراد کی ساری شادمانی اسی ناکامی میں پوشیدہ تھی۔ اسی ناکامی نے بالآخر کامیابی کی راہ کھولی۔ اسی مایوسی سے امید کا دروازہ کھلا۔ جو تاریکی بے سروسامانیوں کی رات نظر آتی تھی، وہی صبح مقصود کے طلوع جہاں تاب کا نقاب ثابت ہوئی۔ گو قدم بت کدہ کی راہ پہ تھے، مگر غبار جادہ ہٹا، تو کعبہ حقیقت سامنے تھا: يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَٰلِكَ تُخْرَجُونَ!

کفر آوردم و در عشق تو ایماں بردم

سارا کام پہلے سے ہو چکا تھا۔ چولھا مدتوں سے گرم تھا۔ ہوس بازیوں نے چنگاریوں کا کام دیا تھا۔ عشق نے شعلے بھڑکا دیے تھے۔ صرف اتنی بات باقی رہ گئی تھی کہ ایک دیگ اتار کر دوسری چڑھا دی جائے۔

یہ کام عشق کی امیدوں سے نہ ہو سکا، تو کیا مضائقہ! عشق کی مایوسیوں نے تو پورا کر دیا:

آں نافہ کہ داد کسی خواستم ز غیب
در چین زلف آں بت مشکیں کلالہ بود

مولانا آزاد کی سیرت کا ایک پہلو

مولانا ابوالکلام مرحوم کی ترجمان القرآن پڑھنے والوں کو یاد ہوگا کہ سورۃ الکہف میں جہاں ذوالقرنین کا ذکر ہے، مولانا نے اس کا مصداق فارس و میڈیا کے تاریخی شہنشاہ خورس یا سائرس اول کو قرار دیا تھا اور اس کے بسط و تشریح میں ایک فوٹو بھی ایک شخص کے مجسمہ کا لے کر سر شروع کتاب لگا دیا تھا۔ قدیم طرز کے صاحب تفسیر قرآن میں انسانی فوٹو، خواہ وہ کسی مقصد سے ہی ہو، دیکھ کر نہایت برہم ہوئے اور پنجاب پنڈی بہاؤالدین کے ایک صاحب نے حضرت مولانا تھانوی سے اس کے متعلق استفتا بھی کر دیا۔ مولانا نے چند دوسرے علماء کے تائیدی دستخطوں کے ساتھ اس کا جواب بہت مفصل کئی صفحوں کا دیا اور حدیث و فقہ کی روشنی میں اس عمل کو سخت ناجائز بتایا۔ اور پھر اس فتوے کو ایک عنوان دے کر "التقدیس القرآن عن تدنیس التصاویر" کے نام سے ایک مستقل رسالہ کی صورت میں شائع کر دیا۔ یہ ذی قعدہ ۱۳۵۵ھ مطابق ۱۹۳۶ء کی بات ہے ۔۔۔ فتوے شائع ہونے کے بعد پھر کیا ہوا؟ یہی ہوا ہوگا کہ دونوں طرف سے کئی جواب نکلے ہوں گے، تائید کرنے والے فریقین کے پیدا ہو گئے ہوں گے اور ایک مستقل ہنگامہ مناظرہ کا قائم ہو گیا ہوگا۔ اہل قلم میں اپنی ہار ماننے والا کون ہے اور کون ایسا ہے جو کچھ نہ کچھ دلائل اپنی موافقت میں نہ رکھتا ہو۔ پھر مولانا ابوالکلام جیسے زبردست مجتہد صاحب قلم کے لیے جواب دشوار ہی کیا تھا۔

لیکن نہیں، یہ کچھ بھی نہ ہوا۔ مولانا ابوالکلام نے یہی نہیں کیا کہ آئندہ ایڈیشن سے تصویر کے نکال دینے کا اقرار کیا ہو، بلکہ ناشر کو لکھ دیا کہ اسی ایڈیشن کے باقی ماندہ نسخوں سے وہ تصویر نکال دی جائے! اور اس طرح ملت کو ایک فتنہ میں پڑنے اور مناظرہ و مجادلہ کی گرم بازاری سے بال بال بچا لیا۔ اس سلامت و شرافت نفس اور خود فنائی کی مثالیں اس بیسویں صدی عیسوی میں اگر معدوم نہیں تو کالمعدوم تو ضرور ہی ہیں۔ حضرت تھانوی اس سے خود بھی متاثر کیسے نہ ہوتے۔ اور مستفتین کو جو خط لکھا اس میں اس مسرت کے ساتھ یہ تہنیت آمیز الفاظ موجود ہیں:

"ماشاء اللہ تعالیٰ یہ آپ کے خلوص کا اثر اور ان کے سلامت قلب کی دلیل ہے، دونوں کے لیے اللہ تعالیٰ سے دعائے مزید کرتا ہوں۔"

رجوع حق کی یہ مثال امت کے لیے سبق آموز ہے اور اس قابل ضرور ہے کہ مولانا ابوالکلام کی سوانح عمری میں اسے عزت کے ساتھ جگہ دی جائے۔

مولانا عبدالماجد دریابادی صدق ۱۳ مارچ ۱۹۵۹ء

قولِ فیصل

یہ بدمستی سزد گر متہم سازد مرا ساقی
ہنوز از بادۂ پارینہ ام پیمانہ بردارد

الحمد للہ وحدہٗ

میرا ارادہ نہ تھا کہ کوئی تقریری یا تحریری بیان یہاں پیش کروں۔ یہ ایک ایسی جگہ ہے جہاں ہمارے لیے نہ تو کسی طرح کی امید ہے نہ طلب ہے نہ شکایت ہے۔ یہ ایک موڑ ہے جس کو گزرے بغیر منزلِ مقصود تک نہیں پہنچ سکتے۔ اس لیے تھوڑی دیر کے لیے اپنی مرضی کے خلاف دم لے لینا پڑتا ہے۔ یہ نہ ہوتا تو ہم سیدھے جیل چلے جاتے۔

یہی وجہ ہے کہ گذشتہ دو سال کے اندر میں نے ہمیشہ اس کی مخالفت کی کہ کوئی نان کوآپریٹر کسی طرح کا بھی حصہ عدالت کی کارروائی میں لے۔ آل انڈیا کانگرس کمیٹی، سنٹرل خلافت کمیٹی اور جمعیۃ العلماء ہند نے اگرچہ اس کی اجازت دے دی ہے کہ پبلک کی واقفیت کے لیے تحریری بیان دیا جا سکتا ہے لیکن ذاتی طور پر میں لوگوں کو یہی مشورہ دیتا رہا کہ خاموشی کو ترجیح دیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ جو شخص اس لیے بیان دیتا ہے کہ مجرم نہیں۔ اگرچہ اس کا مقصد پبلک کی واقفیت ہو۔ تاہم وہ اشتباہ سے محفوظ نہیں ہے۔ ہو سکتا ہے کہ اپنے بچاؤ کی ایک ہلکی سی خواہش اور سماعتِ حق کی ایک کمزور سی توقع اس کے اندر کام کر رہی ہو۔ حالانکہ نان کوآپریشن کی راہ بالکل قطعی اور یک سو ہے۔ وہ اس بارے میں اشتباہ بھی گوارا نہیں کر سکتی۔

کامل مایوسی اس لیے کامل تبدیلی کا عزم

"نان کوآپریشن" موجودہ حالت سے کامل مایوسی کا نتیجہ ہے اور اسی مایوسی سے کامل تبدیلی کا عزم پیدا ہوا ہے۔ ایک شخص جب گورنمنٹ سے نان کوآپریشن کرتا ہے تو گویا اعلان کرتا ہے کہ وہ گورنمنٹ کے انصاف اور حق پسندی سے مایوس ہو چکا۔ وہ اس کی غیر منصف طاقت کے جواز سے منکر ہے اور اسی لیے تبدیلی کا خواہش مند ہے۔ پس جس چیز سے وہ اس درجہ مایوس ہو چکا کہ تبدیلی کے سوا کوئی چارہ نہیں دیکھتا۔ اس سے کیونکر امید کر سکتا ہے کہ ایک معترف اور قابلِ بقا طاقت کی طرح اس کے ساتھ انصاف کرے گی؟

اس اصولی حقیقت سے اگر قطع نظر کر لیا جائے۔ جب بھی موجودہ حالت میں بریت کی امید رکھنا ایک بے سود زحمت سے زیادہ نہیں ہے۔ یہ گویا اپنی معلومات سے انکار ہو گا۔ گورنمنٹ کے سوا کوئی ذی حواس اس سے انکار نہیں کر سکتا کہ بحالتِ موجودہ سرکاری عدالتوں سے انصاف کی کوئی امید نہیں ہے۔ اس لیے کہ وہ ایسے اشخاص سے مرکب ہیں جو انصاف کرنا پسند نہیں کرتے۔ بلکہ اس لیے کہ ایسے نظام (سسٹم) پر مبنی ہیں جن میں رہ کر کوئی مجسٹریٹ ان ملزموں کے ساتھ انصاف نہیں کر سکتا۔ جن کے ساتھ خود گورنمنٹ انصاف کرنا پسند نہ کرتی ہو۔

میں یہاں واضح کر دینا چاہتا ہوں کہ "نان کوآپریشن" کا خطاب صرف گورنمنٹ، گورنمنٹ کے سسٹم اور موجودہ حکومتی اور قومی اصولوں سے ہے، افراد و اشخاص سے نہیں ہے۔

عدالت گاہ ناانصافی کا قدیم ترین ذریعہ ہے

ہمارے اس دَور کے تمام حالات کی طرح یہ حالت بھی نئی نہیں ہے۔ تاریخ شاہد ہے کہ جب کبھی حکمران طاقتوں نے آزادی اور حق کے مقابلے میں ہتھیار اٹھائے ہیں، تو عدالت گاہوں نے سب سے زیادہ آسان اور بے خطا ہتھیار کا کام دیا ہے۔ عدالت کا اختیار ایک طاقت ہے، اور وہ انصاف اور ناانصافی، دونوں کے لیے استعمال کی جا سکتی ہے۔ منصف گورنمنٹ کے ہاتھ میں وہ عدل اور حق کا سب سے بہتر ذریعہ ہے۔ لیکن جابر اور مستبد حکومتوں کے لیے اس سے بڑھ کر انتقام اور ناانصافی کا کوئی آلہ بھی نہیں۔

تاریخِ عالم کی سب سے بڑی ناانصافیاں میدانِ جنگ کے بعد عدالت کے ایوانوں ہی میں ہوئی ہیں۔ دنیا کے مقدس بانیانِ مذہب سے لیکر سائنس کے محققین اور مکتشفین تک، کوئی پاک اور حق پسند جماعت نہیں ہے جو مجرموں کی طرح



عدالت کے سامنے کھڑی نہ کی گئی ہو۔ بلاشبہ زمانے کے انقلاب سے عہدِ قدیم کی بہت سی برائیاں مٹ گئیں۔ میں تسلیم کرتا ہوں کہ اب دنیا میں دوسری صدی عیسوی کی خوفناک رومی عدالتیں اور ازمنۂ متوسط (مڈل ایجز) کی پُر اسرار "انکویزیشن" وجود نہیں رکھتی۔ لیکن میں یہ ماننے کے لیے تیار نہیں کہ جذبات ان عدالتوں میں کام کرتے تھے۔ ان سے بھی ہمارے زمانے کو نجات مل گئی ہے۔ وہ عمارتیں تو ورگرا دی گئیں جن کے اندر خوفناک اسرار بند تھے، لیکن ان دلوں کو کون بدل سکتا ہے جو انسانی خودغرضی اور ناانصافی کے خوفناک رازوں کا دفینہ ہیں۔

ایک عجیب مگر عظیم الشان جگہ

عدالت کی ناانصافیوں کی فہرست بڑی ہی طولانی ہے۔ تاریخ آج تک اس کے ماتم سے فارغ نہ ہو سکی۔ ہم اس میں حضرت مسیح جیسے پاک انسان کو دیکھتے ہیں، جو اپنے عہد کی اجنبی عدالت کے سامنے چوروں کے ساتھ کھڑے کیے گئے۔ ہم کو اس میں سقراط نظر آتا ہے، جس کو صرف اس لیے زہر کا پیالہ پینا پڑا کہ وہ اپنے ملک کا سب سے زیادہ سچا انسان تھا۔ ہم کو اس میں فلورنس کے فداکارِ حقیقت گلیلیو کا نام بھی ملتا ہے، جو اپنی معلومات و مشاہدات کو اس لیے جھٹلا نہ سکا کہ وقت کی عدالت کے نزدیک ان کا اظہار جرم تھا۔ میں نے حضرت مسیح کو انسان کہا، کیونکہ میرے اعتقاد میں وہ ایک مقدس انسان تھے، جو نیکی اور محبت کا آسمانی پیام لے کر آئے تھے۔ لیکن کروڑوں انسانوں کے اعتقاد میں تو وہ اس سے بھی بڑھ کر ہیں تاہم یہ مجرموں کا کٹہرا کیسی عجیب مگر عظیم الشان جگہ ہے جہاں سب سے اچھے اور سب سے بُرے دونوں طرح کے آدمی کھڑے کیے جاتے ہیں۔ اتنی بڑی ہستی کے لیے بھی یہ ناموزوں جگہ نہیں۔

حمد و شکر

اس جگہ کی عظیم الشان اور عمیق تاریخ پر جب میں غور کرتا ہوں اور دیکھتا ہوں کہ اسی جگہ کھڑے ہونے کی عزت آج میرے حصہ میں آئی ہے، تو بے اختیار میری روح خدا کے لیے حمد و شکر میں ڈوب جاتی ہے اور صرف وہی جان سکتا ہے کہ میرے دل کے سرور و نشاط کا کیا عالم ہوتا ہے۔ میں مجرموں کے اس کٹہرے میں محسوس کرتا ہوں کہ بادشاہوں کے لیے قابلِ رشک ہوں۔ ان کو اپنی خوابگاہِ راحت میں وہ خوشی اور راحت کہاں نصیب جس سے میرے دل کا ایک ایک ریشہ معمور ہو رہا ہے! کاش! غافل اور نعمت ناشناس انسان اس کی ایک جھلک ہی دیکھ پاتے۔ اگر ایسا ہوتا تو میں سچ کہتا ہوں کہ لوگ اس جگہ کے لیے دعائیں مانگتے۔

میں بیان کیوں دیتا ہوں

بہرحال میرا ارادہ نہ تھا کہ بیان دوں لیکن ۶ جنوری کو جب میرا مقدمہ پیش ہوا تو میں نے دیکھا کہ گورنمنٹ مجھے سزا دلانے کے معاملے میں نہایت عاجز اور پریشان ہو رہی ہے حالانکہ میں ایسا شخص ہوں جس کو اس کی خواہش اور خیال کے مطابق سب سے پہلے اور سب سے زیادہ سزا ملنی چاہیے۔

پہلے میرے خلاف ۱۰۸ ترمیم ضابطہ فوجداری کا دعویٰ کیا گیا تھا لیکن جب اس کا ویسا ثبوت بھی بہم نہ ہو سکا جیسا کہ کل ثباتِ جرم کے لیے کافی تصور کیا جاتا ہے، تو مجبوراً دفعہ بدل دی گئی۔ اب ۱۲۴۔الف کا مقدمہ چلایا گیا ہے لیکن بدقسمتی سے یہ بھی مقصد برآری کے لیے کافی نہیں۔ کیونکہ جو تقریریں ثبوت میں پیش کی گئی ہیں، وہ ان باتوں سے خالی ہیں جو میں اپنی تقریروں اور تحریروں میں ہمیشہ کہتا رہا ہوں اور وہ شاید گورنمنٹ کے لیے زیادہ کارآمد ہوتیں۔

یہ دیکھ کر میری رائے بدل گئی۔ میں نے محسوس کیا کہ جو سبب بیان نہ دینے کا تھا وہی بیان دینے کا متقاضی ہے کہ میں خاموش نہ رہوں اور جس بات کو گورنمنٹ باوجود جاننے کے ثابت نہیں کر سکتی، اسے خود کامل اقرار کے ساتھ اپنے قلم سے لکھ دوں۔ میں جانتا ہوں کہ قانونِ عدالت کی رو سے یہ میرے فرائض میں داخل نہیں ہے۔ میری جانب سے پراسیکیوشن کے لیے یہی بہت بڑی مدد ہے کہ میں نے ڈیفنس نہیں کیا۔ لیکن حقیقت کا قانون عدالتی قواعد کی جکڑ بندیوں کا پابند نہیں ہے۔ یقیناً یہ سچائی کے خلاف ہوگا، ایک بات صرف اس لیے پوشیدہ رہنے دی جائے کہ مخالف اپنی عاجزی کی وجہ سے ثابت نہ کر سکا۔

اقرار "جرم"

ہندوستان کی موجودہ بیوروکریسی ایک ویسا ہی حاکمانہ اقتدار ہے جیسا اقتدار ملک و قوم کی کمزوری کی وجہ سے ہمیشہ طاقتور انسان حاصل کرتے رہے ہیں۔ قدرتی طور پر یہ اقتدار قومی بیداری کے نشوونما اور آزادی اور انصاف کی جدوجہد کو مبغوض رکھتا ہے، کیونکہ اس کا لازمی نتیجہ اس کی غیر منصفانہ حاکمانہ قوت کا زوال ہے اور کوئی وجود اپنا زوال پسند نہیں کر سکتا۔ اگرچہ

از روئے انصاف کتنا ہی ضروری ہو۔ یہ گویا تنازع للبقاء STRUGGLE FOR EXISTENCE کی ایک جنگ ہوتی ہے۔ جس میں دونوں فریق اپنے اپنے فوائد کے لیے جد وجہد کرتے ہیں۔ قومی بیداری چاہتی ہے کہ اپنی جگہ سے نہ ہٹے۔ کہا جا سکتا ہے کہ پہلے فریق کی طرح آخر الذکر بھی قابلِ ملامت نہیں۔ کیونکہ وہ بھی اپنے بچاؤ کے لیے ہاتھ پاؤں مارتا ہے، یہ دوسری بات ہے کہ اس کا وجود انصاف کے خلاف واقع ہوا ہو۔ ہم طبیعت کی مقتضیات سے تو انکار نہیں کرسکتے۔ یہ واقعہ ہے کہ نیکی کی طرح بدی بھی زندہ رہنا چاہتی ہے۔ وہ خود کتنی بھی قابلِ ملامت ہو، لیکن زندگی کی خواہش قابلِ ملامت نہیں ہے۔

ہندوستان میں بھی یہ مقابلہ شروع ہوگیا ہے۔ اس لیے یہ کوئی غیر معمولی بات نہیں ہے۔ اگر بیوروکریسی کے نزدیک آزادی اور حق طلبی کی جد وجہد جرم ہو، اور وہ ان لوگوں کو سخت سزا کا مستحق خیال کرے۔ جو انصاف کے نام سے اس کی غیر منصفانہ ہستی کے خلاف جنگ کر رہے ہیں میں اقرار کرتا ہوں کہ میں نہ صرف اس کا مجرم ہوں بلکہ ان لوگوں میں ہوں جنھوں نے اس جرم کی اپنی قوم کے دلوں میں تخم ریزی کی ہے اور اس کی آبیاری کے لیے اپنی زندگی وقف کردی ہے۔ میں مسلمانانِ ہند کا پہلا شخص ہوں جس نے ۱۹۱۲ء میں اپنی قوم کو اس جرم کی عام دعوت دی اور تین سال کے اندر اس غلامانہ روش سے ان کا رُخ پھیر دیا۔ جس میں گورنمنٹ کے پُرپیچ فریب نے مبتلا کر رکھا تھا۔ پس اگر گورنمنٹ مجھے اپنے خیال میں مجرم سمجھتی ہے اور اس لیے سزا دلانا چاہتی ہے تو میں پوری صاف دلی کے ساتھ تسلیم کرتا ہوں کہ یہ کوئی خلافِ توقع بات نہیں ہے۔ جس کے لیے مجھے شکایت ہو۔

میں جانتا ہوں کہ گورنمنٹ فرشتہ کی طرح معصوم ہونے کا دعوا رکھتی ہے۔ کیونکہ اس نے خطاؤں کے اقرار سے ہمیشہ انکار کیا۔ لیکن مجھے یہ بھی معلوم ہے کہ اس نے مسیح ہونے کا کبھی دعوا نہیں کیا۔ پھر میں کیوں امید کردں کہ وہ اپنے مخالفوں کو پیار کرے گی؟ وہ تو وہی کرے گی جو کر رہی ہے اور جو ہمیشہ استبداد نے آزادی کے مقابلے میں کیا ہے۔ پس یہ ایک ایسا قدرتی معاملہ ہے جس میں دونوں فریق کے لیے شکوہ وشکایت کا کوئی موقع نہیں۔ دونوں کو اپنا اپنا کام کیے جانا چاہیے۔

گورنمنٹ بنگال اور میری گرفتاری

۲۔ میں یہ بھی ظاہر کردینا چاہتا ہوں کہ میرا معاملہ جو کچھ تھا گورنمنٹ آف انڈیا سے تھا۔ وہ کسی خاص معین الزام کی بنا پر نہیں بلکہ موجودہ تحریک کی عام مشغولیت کی وجہ سے مجھے گرفتار کرسکتی تھی اور جیسا کہ قاعدہ ہے۔ گرفتاری کے لیے کوئی حیلہ بید اکرلیتی، چنانچہ ملک میں عام طور پر خیال کیا جاتا تھا۔ کہ علی برادرز سے مجھے زیادہ مہلت دی گئی۔ مگر اب زیادہ عرصہ تک تغافل نہیں کیا جائے گا۔ لیکن یہ واقعہ ہے کہ گورنمنٹ بنگال کے سامنے اس وقت میرا معاملہ نہ تھا۔ نہ وہ دفعہ ۱۲۴۔ الف کا مقدمہ چلانا چاہتی تھی۔ اس دفعہ کے ثبوت میں جو تقریریں پیش کی گئی ہیں۔ وہ نصف سال پہلے کلکتہ میں کی گئی ہیں اور گورنمنٹ نے مقدمہ کی اجازت ۲۲ دسمبر کو دی ہے۔ یعنی میری گرفتاری سے بارہ دن بعد۔ اگر فی الواقع ان تقریروں میں سڈیشن تھا تو کیوں مجھے چھ ماہ تک گرفتار نہیں کیا گیا؟ اور اب گرفتار کیا بھی، تو گرفتاری کے بارہ دن بعد؟ ہر شخص ان دو واقعات سے صاف صاف سمجھ سکتا ہے کہ حقیقتِ حال کیا ہے؟ خصوصاً جب یہ تیسرا واقعہ بھی بڑھا دیا جائے۔ اس میں جو دفعہ ظاہر کی گئی وہ ۱۲۴ نہ تھی۔ ۱۷۔ ترمیم ضابطہ فوجداری تھی۔ پچیس دن کے بعد مجھ سے کہا جاتا ہے کہ وہ واپس لے لی گئی ہے۔

گرفتاری کا اصلی باعث

حقیقت یہ ہے کہ میری گرفتاری میں اس دفعہ کو دخل نہیں۔ یہ قطعی ہے کہ مجھے انہی حالات کے سلسلہ میں گرفتار کیا گیا جو ۱۷ نومبر کے بعد رونما ہوئے ہیں۔ اگر میں پہلی دسمبر کو کلکتہ نہ آتا۔ یا ۱۰ دسمبر سے پہلے باہر چلا جاتا۔ جس کی جلسۂ جمعیۃ العلماء بدایوں کی وجہ سے توقع تھی۔ تو گورنمنٹ بنگال مجھ سے تعرض نہ کرتی۔

۱۷ نومبر کے بعد دنیا کی تمام چیزوں میں سے جو چاہی جا سکتی ہے۔ وہ صرف یہ چاہتی تھی کہ ۲۴ نومبر کو جب پرنس کلکتہ پہنچیں تو ہڑتال نہ ہو اور جو جابرانہ بے وقوفی ترمیم ضابطہ فوجداری ۱۹۰۸ء کے نفاذ میں ہوگئی ہے وہ ایک دن کے لیے قبول کرلی جائے۔ وہ خیال کرتی تھی کہ میری اور مسٹر سی۔ آر داس کی موجودگی اس میں حارج ہے، اس لیے کچھ عرصہ کے تذبذب اور غور وفکر کے بعد ہم دونوں گرفتار کرلیے گئے۔ گرفتاری بلا وارنٹ کے ہوئی تھی لیکن جب دوسرے دن ضابطہ کی نمائش پوری کرنے کے لیے مجسٹریٹ جیل میں بھیجا گیا تو مسٹر داس کی طرح میری گرفتاری کے لیے بھی ۱۷-۲ ترمیم ضابطہ فوجداری کے ماتحت وارنٹ پیش کیا گیا۔

میں گزشتہ دو سال کے اندر بہت کم کلکتہ میں رہ سکا ہوں۔ میرا تمام وقت زیادہ تحریکِ خلافت



کی مرکزیت میں صرف ہوا۔ یا ملک کے پیہم دوروں میں۔ اکثر ایسا ہوا کہ مہینے کے بعد چند دنوں کے لیے کلکتہ آیا اور بنگال پراونشل خلافت کمیٹی کے کاموں کی دیکھ بھال کر کے پھر چلا گیا۔ وسط نومبر سے بھی میں سفر میں تھا۔ ۱۶ر کو کلکتہ سے روانہ ہوا تاکہ جمعیۃ العلماء ہند کے سالانہ اجلاس لاہور میں شریک ہوں۔ وہاں مہاتما گاندھی کے تار سے بمبئی کی شورش کا حال معلوم ہوا۔ اور میں بمبئی چلا گیا۔ جنوری تک میرا ارادہ واپسی کا نہ تھا کیونکہ ۱۰ دسمبر کو جمعیۃ العلماء کا اسپیشل اجلاس بدایوں میں تھا۔ اس میں شرکت ضروری تھی۔ اس کے علاوہ مجھے تمام وقت انگورہ فنڈ کی فراہمی میں صرف کرنا تھا۔ لیکن یکایک گورنمنٹ بنگال کے تازہ جبر و تشدد اور ۱۸ر کے کمیونک کی اطلاع بمبئی میں ملی اور میرے لیے ناممکن ہو گیا کہ ایسی حالت میں کلکتہ سے باہر رہوں۔ میں نے مہاتما گاندھی سے مشورہ کیا۔ ان کی بھی یہی رائے ہوئی کہ مجھے تمام پروگرام ملتوی کر کے کلکتہ چلا جانا چاہیے۔ زیادہ خیال ہمیں اس بات کا تھا کہ کہیں ایسا نہ ہو گورنمنٹ کا جبر و تشدد لوگوں کو بے قابو کر دے اور کوئی بات صبر و ضبط کے خلاف کر بیٹھیں، علی الخصوص جب کہ "سول گارڈ" کے قیام کی خبریں بھی آ چکی تھیں اور اس بارے میں ہمیں کوئی غلطی نہیں ہو سکتی تھی کہ یہ نئی اسلحہ بندی کن شریفانہ اور پُرامن اغراض کے لیے وجود میں آئی ہے۔

میں پہلی دسمبر کو کلکتہ پہنچا۔ میں نے ظلم اور برداشت دونوں کے انتہائی مناظر اپنے سامنے پائے۔

میں نے دیکھا کہ ۱۷ نومبر کی یادگار ہڑتال سے بے بس ہو کر گورنمنٹ اس آدمی کی طرح ہو گئی ہے جو جوش اور غصہ میں آپے سے باہر ہو جائے اور غیظ و غضب کی کوئی حرکت بھی اس سے بعید نہ ہو۔ ۱۹۰۸ء کے کریمنل لاء امنڈمنٹ ایکٹ کے ماتحت قومی رضاکاروں کی تمام جماعتیں "مجمع خلافِ قانون" (ان لا فل) قرار دے دی گئی ہیں۔ پبلک اجتماعات یک قلم روک دیے ہیں۔ قانون صرف پولیس کی مرضی کا نام ہے۔ وہ "ان لا فل جماعت" تفتیش اور شبہ میں جو چاہے کر سکتی ہے۔ حتیٰ کہ راہ چلتوں کی جان و آبرو بھی محفوظ نہیں۔ گورنمنٹ نے پہلے ۸ ر نومبر کے کمیونک میں صرف سابق و موجودہ رضاکار جماعتوں کا ذکر کیا تھا۔ لیکن ۲۴ ر کو دوسرا کمیونک جاری کر کے تمام آیندہ جماعتیں بھی خلافِ قانون قرار دے دیں اور پولیس نے بلا امتیاز ہر شخص کو جو اس کے سامنے آ گیا، گرفتار کرنا شروع کر دیا۔ کوئی بات بھی جس سے ۲۴ ر کی ہڑتال لے رکنے کا امکان ہو۔ پولیس اور پولیس سے بھی زیادہ شریف قوم "سول گارڈ" کے لیے ناجائز نہیں۔ سول گارڈ گویا قومی رضاکاروں کا جواب ہے۔ وہ بالکل نہتے ہوتے پر بھی "جبر و تشدد" سے ہڑتال کرا دیتے تھے۔ یہ ریوالور سے مسلح ہونے پر بھی "امن و صلح" کے ذریعے ہڑتال روک دیں گے۔

اس کے مقابلے میں لوگوں نے بھی برداشت اور استقامت، دونوں کا گویا آخری عہد لیا ہے۔ صاف معلوم ہوتا ہے کہ نہ تو وہ اپنی راہ سے ہٹیں گے نہ تشدد کا مقابلہ کریں گے۔

ان حالات میں میرے لیے فرض کی راہ بالکل صاف اور یک سُو تھی۔ میں نے اپنے سامنے دو حقیقتیں بے نقاب دیکھیں۔ ایک یہ کہ گورنمنٹ کی تمام طاقت کلکتہ میں سمٹ آئی ہے۔ اس لیے فتح و شکست کا پہلا فیصلہ یہیں ہوگا۔ دوسری یہ کہ ہم کل تک پوری آزادی کے لیے جد و جہد کر رہے تھے لیکن موجودہ حالت نے بتلا دیا کہ ہماری آزادی کی مبادیات تک محفوظ نہیں ہیں۔ آزادیٔ تقریر اور آزادیٔ تحریر و اجتماع انسان کے پیدائشی حقوق ہیں۔ ان کی پامالی مشہور فلاسفر مِل کی زبان میں انسانیت کے قتلِ عام سے کچھ ہی کم کہی جا سکتی ہے۔ لیکن یہ پامالی بلا کسی جھجک کے علانیہ ہو رہی ہے۔ پس میں نے باہر کا تمام پروگرام منسوخ کر دیا اور فیصلہ کر لیا کہ اس وقت تک کلکتہ ہی میں رہوں گا۔ جب تک دو باتوں میں سے کوئی ایک بات ظہور میں نہ آ جائے: یا گورنمنٹ اپنا کمیونک اور آرڈر واپس لے یا مجھے گرفتار کرے۔

گورنمنٹ نے ۱۰ دسمبر کو مجھے گرفتار کر لیا۔ میں پورے اطمینان اور مسرت کے ساتھ جیل کی طرف روانہ ہوا، کیونکہ میں اپنے پیچھے ایک فتح مند میدان چھوڑ رہا تھا۔ میرا دل خوشی سے معمور ہے کہ کلکتہ اور بنگال نے میری توقعات پوری کر دیں۔ وہ جتنے جس قدر پیچھے تھا، اتنا ہی آج سب سے آگے ہے۔ میں تسلیم کرتا ہوں کہ اس کامیابی کے لیے گورنمنٹ کی امداد کا ہمیں پوری طرح اعتراف کرنا چاہیے۔ اگر وہ ۱۰ نومبر کے بعد یہ طرزِ عمل اختیار نہ کرتی۔ تو فی الواقع ہمارے لیے آئندہ کاموں کے انتخاب میں چند در چند مشکلات تھیں۔ ہم ۲۲ نومبر میں انہی مشکلات پر باہم غور و خوض کر رہے تھے۔

دو حقیقتیں

حقیقت یہ ہے کہ ان گزشتہ ایام نے بیک وقت دونوں حقیقتیں صفحاتِ تاریخ کے لیے مہیا کر دیں۔ اگر ایک طرف گورنمنٹ کے چہرے سے ادعا و نمائش کے تمام نقاب دور ہو گئے، تو دوسری طرف



ملکی طاقت بھی ایک سخت آزمائش میں پڑکر بری طرح نمایاں ہوگئی۔ دنیا نے دیکھ لیا ہے کہ گورنمنٹ کی طاقت کے جبر و تشدد میں بالکل بے حقیقت و بے کام ہے۔ تو ملک میں بھی صبر و برداشت کی طاقت روز افزوں نشو و نما پا رہی ہے جیسا کہ ہمیشہ انکار کیا گیا ہے۔ آج بھی اس کا موقع حاصل ہے کہ انکار کر دیا جائے۔ لیکن کل تاریخ کے لیے یہ ایک نہایت ہی عبرت انگیز داستان ہوگی۔ یہ مستقبل کی راہنمائی کرے گی۔ کیونکہ اخلاقی مدافعت مادی طاقت کے جارحانہ گھمنڈ کو شکست دے سکتی ہے اور یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ صرف برداشت اور قربانی کے ذریعہ خوں ریز اسلحہ کا مقابلہ کیا جائے؟ البتہ میں نہیں جانتا کہ ان دونوں فریقوں میں سے کس فریق کے اندر اس بڑے انسان کی تعلیم تلاش کی جائے۔ جو برائی کے مقابلے میں صبر و عفو کی تعلیم لے کر آیا تھا؟ گورنمنٹ میں یا ملک میں؟ میں خیال کرتا ہوں کہ بیوروکریسی کے حکام اس کے نام سے ناواقف نہ ہوں گے۔ اس کا نام "مسیح" تھا۔

گورنمنٹ کا فیصلہ اور شکست

۳۔ فلسفۂ تاریخ ہمیں بتلاتا ہے کہ نادانی اور عاقبت نااندیشی ہمیشہ زوال پذیر طاقتوں کی رفیق ہوتی ہے۔ گورنمنٹ نے خیال کیا کہ وہ جبر و تشدد سے تحریکِ خلافت و سوراج کو پامال کر دے گی اور ۲۴ کی ہڑتال رک جائے گی اور اس نے والنٹیر کورز کو خلافِ قانون قرار دیا اور بلا امتیاز تمام کارکن گرفتار کر لیے گئے۔ وہ یہ بھی سمجھتی تھی کہ والنٹیرز کی ممانعت اور کارکنوں کی گرفتاری کے بعد خلافت اور کانگریس کا نظام معطل ہو جائے گا۔ اور اس طرح خود بخود ہڑتال رک جائے گی۔ لیکن بہت جلد گورنمنٹ کو معلوم ہو گیا کہ جبر و تشدد جب قومی بیداری کے مقابلے میں نمایاں ہو تو وہ کوئی مہلک چیز نہیں ہوتی۔ نہ ہڑتال رک سکی، نہ خلافت اور کانگریس کمیٹیاں معطل ہوئیں اور نہ والنٹیرز کا کام ایک دن کے لیے بھی بند ہوا۔ بلکہ ہماری غیر موجودگی میں یہ ساری چیزیں زیادہ طاقت اور غیر مسخر ہو گئیں۔ میں نے ۸ دسمبر کو جو پیغام ملک کے نام لکھا تھا، اس میں گورنمنٹ بنگال کے لیے بھی یہ پیغام تھا:

> "میری اور مسٹر سی آر داس کی گرفتاری کے بعد کام زیادہ طاقت اور مستعدی کے ساتھ جاری رہے گا۔ اور ۲۴ کو ہڑتال اس سے زیادہ مکمل ہوگی، جس قدر ہماری موجودگی میں ہو سکتی تھی۔"

چنانچہ ایسا ہی ہوا۔ گورنمنٹ خود اپنے پسند کیے ہوئے میدان میں ہار گئی۔ اب وہ اپنی شرمندگی چھپانے کے لیے ہاتھ پاؤں مار رہی ہے اور جن لوگوں کو گرفتار کر چکی ہے، انھیں کسی نہ کسی طرح سزا دلانا چاہتی ہے لیکن یہ بالکل بے سود ہے۔ طاقتور آدمی کو شکست دینے کے بعد زیادہ غصہ آتا ہے۔ لیکن کوئی شکست اس لیے فتح نہیں بن سکتی کہ ہم بہت زیادہ جھنجھلا سکتے ہیں۔

دفعہ ۱۲۴ - الف

غرضیکہ میری گرفتاری صریح طور پر انہی واقعات کا نتیجہ ہے اور اسی لیے دو ہفتہ تک میرے خلاف دفعہ ۱۷۔ ترمیم ضابطہ فوجداری ہی کا دعویٰ قائم رہا۔ لیکن جب اس بارے میں کوئی سہارا نہ ملا تو میرے پریس اور مکان کی تلاشی لی گئی تا کہ میری کوئی تحریر حاصل کر کے بنائے مقدمہ قرار دی جائے۔ جب وہاں سے بھی کوئی گوہرِ مراد ہاتھ نہ آیا تو مجبوراً سی۔ آئی۔ ڈی کے محفوظ ذخیرہ کی طرف توجہ کی گئی۔ یہ ذخیرہ ہمیشہ اس شریفانہ کام کے لیے مستعد رہتا ہے اور ضرورت مند کو کبھی مایوس نہیں کرتا۔ پس اس طرح بہ ہزار زحمت دفعہ ۱۲۴۔ الف کا دعویٰ تیار ہو گیا۔

اجتماعِ ضدّین

۴۔ یہ پریشانی گورنمنٹ کو خود اسی کی منافقانہ روش کی وجہ سے پیش آ رہی ہے۔ ایک طرف تو وہ چاہتی ہے کہ شخصی حکمرانوں کی طرح بے دریغ جبر و تشدد کرے۔ دوسری طرف چاہتی ہے کہ نمائشی قانون و عدالت کی آڑ بھی قائم رہے۔ یہ دونوں باتیں متضاد ہیں۔ جمع نہیں ہو سکتیں۔ نتیجہ یہ ہے کہ اس کی پریشانی و درماندگی روز بروز بڑھتی جاتی ہے۔ جو لوگ اس کے خیال میں سب سے زیادہ مستحقِ تعزیر ہیں انہی کو سزا دلانا اس کے لیے مشکل ہو گیا ہے۔ ابھی چند ہی مہینے گزرے ہیں کہ ہم کراچی میں گورنمنٹ کی سراسیمگی و درماندگی کا مضحکہ انگیز تماشا دیکھ رہے تھے۔ جو سرکاری استغاثہ اس دعویٰ اور اہتمام کے ساتھ شروع کیا گیا۔ اس سے خود گورنمنٹ کی پسندیدہ اور انتخاب کردہ جیوری بھی اتفاق نہ کر سکی۔

لطف یہ ہے کہ یہ مشکلات گورنمنٹ کو ایسی حالت میں پیش آ رہی ہیں۔ جبکہ وہ جانتی ہے کہ نان کوآپریٹرز کی جانب سے ڈیفنس نہیں کیا جائے گا۔ اور سخت سے سخت غلط بیانی اور قانون شکنی کی حالت میں بھی پردہ دری اور شکست کا کوئی کھٹکا نہیں ہے۔



نئی قانونی تشریحات

گورنمنٹ نے اس اطمینان سے پوری طرح کام لینے میں کوئی کوتاہی بھی نہیں کی ہے. نان کواپریٹرز کے مقدمات آج جس طرح چکائے جارہے ہیں۔ اس سے معلوم کیا جا سکتا ہے کہ "لا" اور "آرڈر" کے معنی بیوروکریٹک اصطلاح میں کیا ہیں؟ "لا" اور "آرڈر" کی طرح ابؔ دعویٰ ثبوت' شہادت، تشخیص' (آئی ڈینٹی فائی) وغیرہ تمام عدالتی مصطلحات کے معانی میں بھی انقلاب ہوگیا ہے۔ گو نان کواپریٹرز کو جلد سزا دے دینے کے لیے ہر طرح کی بے قاعدگی اور قانون شکنی جائز ہے۔ حتیٰ کہ اس بات کی بھی تحقیق ضروری نہیں کہ جس انسان کے ملزم ہونے کا دعویٰ کیا گیا ہے کٹہرے کا ملزم وہی آدمی ہے بھی یا نہیں؟ ابھی اسی ہفتہ جوڑا بگان کی عدالت سے ایک شخص "عبدالرحمٰن ہاشمی" کو اس پرزور قانونی اور منطقی ثبوت پر چھ ماہ کی سزا دے دی گئی ہے کہ "اعظم ہاشم" نامی ایک خلافت والنٹیر دنیا میں وجود رکھتا ہے اور دونوں کے نام میں لفظ "ہاشم" مشترک ہے. خود میرے مقدمہ میں جو صریح بے ضابطگیاں کی گئی ہیں' ان کا ذکر لا حاصل سمجھ کر نہیں کرنا چاہتا۔ ورنہ وہی اس حقیقت کے لیے کافی تھیں۔ مثال کے طور پر صرف ایک واقعہ کا ذکر کروں گا جو بے قاعدگی اور غلط بیانی دونوں کا مجموعہ ہے۔ مجھے دفعہ ۱۰۸ ترمیم ضابطہ فوجداری سے بری کر دیا گیا۔ اور ۱۲۴۔ الف کے ماتحت وارنٹ حاصل کیا گیا۔ قاعدہ کی رو سے رہائی اور از سر نو گرفتاری، دونوں باتیں آنی چاہیے تھیں۔ لیکن یہ واقعہ ہے کہ ۱۲۴۔ کا کوئی وارنٹ مجھ پر تعمیل نہیں کیا گیا۔ حتیٰ کہ ۲۰ جنوری تک مجھے اس کا علم بھی نہیں ہوا۔ لیکن میرے سامنے مسٹر گولڈی ڈپٹی کمشنر پولیس نے یہ حلفیہ شہادت دی ہے کہ اس نے پریذیڈنسی جیل میں مجھ پر وارنٹ سرو کیا ہے۔

یہ سچ ہے کہ نان کواپریٹر کسی طرح کا ڈیفنس نہیں کرتے، لیکن میں سمجھتا ہوں کہ یہ کوئی اچھی بات نہیں ہے کہ آدمی اپنے تمام کپڑے اتار ڈالے۔ اس لیے کہ شریف آدمی آنکھیں بند کریں گے۔ شریف آدمیوں نے تو سچ مچ آنکھیں بند کر لی ہیں لیکن دنیا کی بند نہیں ہیں۔

قانون کا ڈرامہ

فی الحقیقت "لا" اور "آرڈر" کا ڈرامہ کھیلا جا رہا ہے جسے ہم کامیڈی اور ٹریجیڈی دونوں کہہ سکتے ہیں۔

وہ تماشا کی طرح مضحک بھی ہے اور مقتل کی طرح درد انگیز بھی۔ لیکن میں ٹریجیڈی کہنا زیادہ پسند کروں گا۔ حسنِ اتفاق سے اس کا چیف ایکٹر انگلستان کا سابق جسٹس ہے۔

۵۔ پراسیکیوشن کی جانب سے میری دو تقریریں ثبوت میں پیش کی گئی ہیں۔ جو میں نے پہلی اور پندرھویں جولائی کو مرزا پارک کے جلسہ میں کی تھیں۔ اس زمانہ میں گورنمنٹ بنگال نے گرفتاریوں کی طرف پہلا قدم اٹھایا تھا اور چار مبلغینِ خلافت پر مقدمہ چلا کر سزائیں دلائی تھیں۔ میں اس وقت سفر سے بیمار واپس آیا تھا۔ میں نے دیکھا کہ لوگوں میں بے حد جوش پھیلا ہوا ہے اور ہر طرح کے مظاہرے کے لیے لوگ بے قرار ہیں۔ چونکہ میرے خیال میں گرفتاریوں پر مظاہرہ کرنا نان کواپریشن کے اصول کے خلاف تھا۔ اس لیے میں نے ہڑتال اور جلوس یک قلم روک دیے۔ اس پر عوام کو شکایت ہوئی تو میں نے یہ جلسے منعقد کیے اور لوگوں کو صبر و تحمل کی نصیحت کرتے ہوئے سمجھایا کہ نان وایلنس' نان کواپریشن کے اصول میں یہ بات داخل ہے کہ گرفتاریوں پر صبر و سکون کے خلاف کوئی بات نہ کی جائے۔ اگر فی الواقع ان گرفتاریوں کا تمہارے دل میں درد ہے تو چاہیے کہ اصلی کام کرو اور بیرونی کپڑا اتار کرکے دیسی کا[illegible] ہوا پہن لو۔

استغاثہ نے جو نقل پیش کی ہے وہ نہایت ناقص' غلط اور مسخ شدہ صورت ہے اور محض بے جوڑ اور بعض مقامات پر بے معنی جملوں کا مجموعہ ہے' جیسا کہ اس کے پڑھنے سے ہر شخص سمجھ سکتا ہے۔ تاہم میں اس کے غلط اور بے ربط جملوں کو چھوڑ کر (کیونکہ اس کے اعتراف سے میرا ادبی ذوق ابا کرتا ہے) باقی وہ تمام حصہ تسلیم کر لیتا ہوں جس میں گورنمنٹ کی نسبت خیالات کا اظہار ہے یا پبلک سے گورنمنٹ کے خلاف جد و جہد کی اپیل کی گئی ہے۔

استغاثہ کی جانب سے صرف تقریریں پیش کر دی گئی ہیں۔ یہ نہیں بتلایا ہے کہ ان کے کن جملوں کو وہ ثبوت میں پیش کرنا چاہتے ہیں؟ یا اس کے خیال میں مائی ڈیر برادران سے لے کر آخر تک سب ۱۲۴۔ الف ہے؟ میں نے بھی دریافت نہیں کیا کیونکہ دونوں صورتیں میرے لیے یکساں ہیں۔ تاہم ان نقول کو دیکھتا ہوں تو استغاثہ کے خیال کے مطابق زیادہ سے زیادہ قابلِ ذکر جملے حسبِ ذیل ہیں:

"ایسی گورنمنٹ ظالم ہے' جو گورنمنٹ ناانصافی کے ساتھ قائم ہو' ایسی گورنمنٹ کو یا تو انصاف کے آگے جھکنا چاہیے یا دنیا سے مٹا دینا چاہیے۔"

"اگر فی الحقیقت تمہارے دل میں اپنے گرفتار بھائیوں کا درد ہے



تو تم میں سے ہر شخص کا فرض ہے کہ وہ آج سوچ لے، کیا وہ اس بات کے لیے راضی ہے کہ جس جابرانہ قوت نے انھیں گرفتار کیا ہے وہ اس برِ اعظم میں اسی طرح قائم رہے جس طرح ان کی گرفتاری کے وقت تھی؟"

"اگر تم ملک کو آزاد کرانا چاہتے ہو تو اس کا راستہ یہ ہے۔ کہ جن چالاک دشمنوں کے پاس خون ریزی کا بے شمار سامان موجود ہے انھیں بانی برابر بھی اس کے استعمال کا موقع نہ دو اور کامل امن و برداشت کے ساتھ کام کرو۔"

بعض لوگوں کا خیال ہے کہ جب تقریروں میں کوئی ایسی بات کہی جاتی ہے تو اس سے مقرر کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ اپنے بچاؤ کا سامان کر لے، ورنہ اس کی دلی خواہش یہ نہیں ہوتی۔ لیکن میں سمجھتا ہوں کہ جو لوگ آج تمھارے لیے یہ کام کر رہے ہیں، تم میں سے کوئی آدمی بھی یہ ماننے کے لیے تیار نہ ہوگا۔ کہ وہ جیل جانے یا نظر بند ہونے سے ڈرتے ہیں (پس) اگر وہ یہ کہتے ہیں کہ امن و نظم کے ساتھ کام کرنا چاہیے، تو ان کا مطلب یہ نہیں (ہو سکتا) کہ اس ظالمانہ گورنمنٹ کے ساتھ وفاداری کرنی چاہتے ہیں، جو گورنمنٹ اس کی طاقت اور اس کا تخت آج دنیا میں سب سے بڑا گنا جاتا ہے۔ یقیناً وہ اس گورنمنٹ کے وفادار نہیں ہو سکتے۔"

"وہ تو صرف اس لیے یہ کہتے ہیں کہ خود تمھاری کامیابی با امن رہنے پر موقوف ہے۔ تمھارے پاس وہ شیطانی ہتھیار نہیں ہیں، جن سے یہ گورنمنٹ مسلح ہے۔ تمھارے پاس صرف ایمان ہے، دل ہے، قربانی کی طاقت ہے۔ تم انہی طاقتوں سے (اصل میں ہتھیاروں سے "ہو کا) کام لو۔ اگر تم چاہو کہ اسلحہ کے ذریعہ فتح کرو، تو تم نہیں کر سکتے۔ آج امن و سکون سے بڑھ کر (تمھارے لیے) کوئی چیز نہیں۔"

"اگر تم صرف چند گھڑیوں کے لیے گورنمنٹ کو حیران کرنا چاہتے ہو تو اس کے لیے میرے پاس بہت سے نسخے ہیں۔ اگر خدانخواستہ میں اس گورنمنٹ کا استحکام چاہتا، تو وہ نسخے بتلا دیتا۔ (لیکن) میں تو ایسی جنگ چاہتا ہوں (جو) ایک ہی دن میں ختم نہ ہو جائے بلکہ فیصلے کے آخری دن تک (جاری رہے) اور جب فیصلے کی گھڑی آ جائے، تو پھر یا تو یہ گورنمنٹ باقی نہ رہے، یا تیس کروڑ (انسان) باقی نہ رہیں۔"

جو الفاظ بریکٹ کے اندر ہیں۔ وہ تقریر کی پیش کردہ کاپیوں میں نہیں ہیں۔ لیکن عبارت کے معنی ہونے کے لیے ضروری ہیں۔ میں نے اس لیے تصحیح کر دی کہ پراسیکیوشن کو استدلال میں مدد ملے۔ اگر اس مقصد کے لیے پوری تقریر کی تصحیح و تکمیل ضروری ہو تو میں اسی طرح کر دینے کے لیے تیار ہوں۔

ان کے علاوہ دونوں تقریروں میں لوگوں کو نان کوآپریشن کی دعوت دی ہے، مطالباتِ خلافت اور سوراج کو دہرایا ہے، پنجاب کے مظالم کو وحشیانہ کہا ہے، لوگوں کو بتلایا ہے کہ جو گورنمنٹ جلیانوالہ باغ، امرتسر میں چند منٹوں کے اندر سینکڑوں انسانوں کو قتل کر ڈالے اور اس کو جائز فعل بتلائے، اس سے ناانصافی کی کوئی بات بھی بعید نہیں۔

اقرار

۶۔ میں اقرار کرتا ہوں کہ میں نے نہ صرف انہی دو موقعوں پر بلکہ گزشتہ دو سال کے اندر اپنی بے شمار تقریروں میں یہ اور اسی مطلب کے لیے اس سے زیادہ واضح اور قطعی جملے کہے ہیں۔ ایسا کہنا میرے اعتقاد میں میرا فرض ہے۔ میں فرض کی تعمیل سے اس لیے باز نہیں رہ سکتا۔ کہ وہ ۱۲۴۔ الف کا جرم قرار دیا جائے گا۔ میں اب بھی ایسا ہی کہنا چاہتا ہوں اور جب تک بول سکتا ہوں، ایسا ہی کہتا رہوں گا۔ اگر میں ایسا نہ کہوں تو اپنے آپ کو خدا اور اس کے بندوں کے آگے بدترین گناہ کا مرتکب سمجھوں۔

موجودہ گورنمنٹ ظالم ہے

۷۔ یقیناً میں نے کہا ہے: "موجودہ گورنمنٹ ظالم ہے۔" لیکن اگر میں یہ نہ کہوں تو اور کیا کہوں؟ میں نہیں جانتا کہ کیوں مجھ سے یہ توقع کی جائے کہ ایک چیز کو اس کے اصلی نام سے نہ پکاروں۔ میں



سیاہ کو سفید کہنے سے انکار کرتا ہوں۔

میں کم سے کم اور نرم سے نرم لفظ جو اس بارے میں بول سکتا ہوں، یہی ہے۔ ایسی ملفوظ صداقت جو اس سے کم ہو، میرے علم میں کوئی نہیں۔

میں یقیناً یہ کہتا رہا ہوں کہ ہمارے فرض کے سامنے دو ہی راہیں ہیں، گورنمنٹ ناانصافی اور حق تلفی سے باز آجائے۔ اگر باز نہیں آسکتی تو مٹا دی جائے۔ میں نہیں جانتا کہ اس کے سوا اور کیا کہا جا سکتا ہے؟ یہ تو انسانی عقائد کی اتنی پرانی سچائی ہے کہ صرف پہاڑ اور سمندر ہی اس کے ہم عمر کہے جا سکتے ہیں۔ جو چیز بری ہے اُسے یا تو درست ہو جانا چاہیے یا مٹ جانا چاہیے۔ تیسری بات کیا ہو سکتی ہے؟ جب کہ میں اس گورنمنٹ کی برائیوں پر یقین رکھتا ہوں، تو یقیناً یہ دعا نہیں مانگ سکتا، کہ درست بھی نہ ہو اور اس کی عمر بھی دراز ہو۔

میرا یہ اعتقاد کیوں

"میرا اور میرے کروڑوں ہم وطنوں کا یہ اعتقاد کیوں ہے؟ اس کے وجوہ و دلائل اب اس قدر آشکارا ہو چکے ہیں کہ ملٹن کے لفظوں میں کہا جا سکتا ہے: "سورج کے بعد دنیا کی ہر چیز سے زیادہ واضح اور محسوس"۔ محسوسات کے لیے ہم صرف یہی کہہ سکتے ہیں، نہ انکار نہ کرو۔ تاہم میں کہنا چاہتا ہوں کہ میرا یہ اعتقاد اس لیے ہے کہ میں ہندوستانی ہوں، اس لیے ہے کہ میں مسلمان ہوں، اس لیے ہے کہ میں انسان ہوں۔

شخصی اقتدار بالذات ظلم ہے

میرا اعتقاد ہے کہ آزاد رہنا ہر فرد اور قوم کا پیدائشی حق ہے، کوئی انسان یا انسانوں کی گھڑی ہوئی بیوروکریسی یہ حق نہیں رکھتی کہ خدا کے بندوں کو اپنا محکوم بنائے۔ محکومی اور غلامی کے لیے کیسے ہی خوشنما نام کیوں نہ رکھ لیے جائیں، لیکن وہ غلامی ہی ہے اور خدا کی مرضی اور اس کے قانون کے خلاف ہے۔ پس میں موجودہ گورنمنٹ کو جائز حکومت تسلیم نہیں کرتا اور اپنا ملکی، مذہبی اور انسانی فرض سمجھتا ہوں کہ اس کی محکومی سے ملک و قوم کو نجات دلاؤں۔

"اصلاحات اور بتدریج توسیع اختیارات" کا مشہور مغالطہ میرے اس صاف اور قطعی اعتقاد میں کوئی غلط فہمی پیدا نہیں کرسکتا۔ آزادی انسان کا پیدائشی حق ہے اور کسی انسان کو اختیار نہیں کہ حقوق کی ادائیگی میں حد بندی اور تقسیم کرے۔ یہ کہنا کہ کسی قوم کو اس کی آزادی بتدریج ملنی چاہیے، بعینہٖ ایسی ہی ہے جیسے کہا جائے کہ مالک کو اس کی جائیداد اور قرض دار کو اس کا قرض ٹکڑے ٹکڑے کر کے دینا چاہیے۔ میں تسلیم کرتا ہوں اگر مقروض سے ایک ہی دفعہ قرض واپس نہ مل سکے تو قرض دار کو یہی کرنا پڑے گا کہ قسط کی صورت میں وصول کرے لیکن یہ ایک مجبوری کا سمجھوتہ ہوگا۔ اس سے یک دفعہ وصولی کا حق زائل نہیں ہو سکتا۔

"ریفارم" کی نسبت میں روس کے عظیم الشان لیو ٹالسٹائی LES TALISTOY کے لفظوں میں کہوں گا: "اگر قیدیوں کو اپنے ووٹ سے اپنا جیلر منتخب کر لینے کا اختیار مل جائے تو اس سے وہ آزاد نہیں ہو جائیں گے۔"

میرے لیے اس کے اچھے برے کاموں کا سوال ایک ثانوی سوال ہے۔ پہلا سوال خود اس کے وجود کا ہے۔ میں ایسے حاکمانہ اقتدار کو بہ اعتبار اس کی خلقت ہی کے ناجائز یقین کرتا ہوں۔ اگر وہ تمام ناانصافیاں ظہور میں نہ آئیں جو اس کثرت سے واقع ہو چکی ہیں جب بھی میرے اعتقاد میں وہ ظلم تھا۔ کیونکہ اس کی ہستی ہی سب سے بڑی ناانصافی ہے اور اس کی برائی کے لیے اس قدر کافی ہے کہ وہ موجود ہو۔ اگر وہ اچھے کام کرے تو اس کی اچھائی تسلیم کرنی جائے گی۔ لیکن اس کا وجود ناجائز اور ناانصافی ہی رہے گا۔ اگر ایک شخص پرائی جائداد پر قابض ہو کر بہت اچھے اور نیک کام انجام دے تو اس کے کاموں کی خوبی کی وجہ سے اس کا قبضہ جائز نہیں ہو جا سکتا۔

برائی میں کم و کیفیت کے اعتبار سے تقسیم کی جا سکتی ہے لیکن حسن و قبح کے اعتبار سے اس کی ایک ہی قسم ہے۔ یعنی اس اعتبار سے تقسیم ہو سکتی ہے کہ وہ کتنی ہے اور کیسی ہے؟ اس اعتبار سے نہیں ہو سکتی کہ وہ اچھی ہے یا بری ہے؟ ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ "زیادہ بری چوری" اور "کم بری چوری" لیکن یہ تو نہیں کہہ سکتے کہ "اچھی چوری" اور "بری چوری"؟ پس میں بیوروکریسی کی اچھائی اور ناجائز ہونے کا کسی حال میں بھی تصور نہیں کر سکتا۔ کیونکہ وہ فی نفسہٖ ایک ناجائز عمل ہے البتہ اس کی برائی کم اور زیادہ ہو سکتی ہے۔ لیکن ہندوستان کی بیوروکریسی تو اتنا بھی نہ کرسکی کہ اپنی خلقی برائی ہی پر قانع رہتی۔ جب اس کی خلقی برائی پر اس کی بے شمار عملی برائیوں کا بھی برابر اضافہ ہو رہا ہے تو پھر کیوں کر اس کا تصور بھی کیا جا سکتا ہے کہ اس کے ظلم کا اعلان نہ کیا جائے؟

اسلام اور بیوروکریسی

۹۔ میں مسلمان ہوں اور بہ حیثیت مسلمان

نے کے بھی میرا مذہبی فرض یہی ہے۔

اسلام کسی ایسے اقتدار کو جائز تسلیم نہیں تا جو شخصی ہو۔ یا چند تنخواہ دار حاکموں کی بیورو ریسی ہو۔ وہ آزادی اور جمہوریت کا مکمل نظام جو نوع انسانی کو اس کی چھینی ہوئی آزادی اپس دلانے کے لیے آیا تھا۔ یہ آزادی بادشاہوں، ابر حکومتوں، خود غرض مذہبی پیشواؤں اور وسائل کی طاقتور جماعتوں نے غصب کر رکھی ی۔ وہ سمجھتے تھے کہ حق طاقت اور قبضہ ہے۔ لیکن اسلام نے ظاہر ہوتے ہی اعلان کیا کہ حق طاقت نہیں ہے بلکہ خود حق ہے اور خدا کے سوا کسی انسان زیبا نہیں کہ بندگان خدا کو اپنا محکوم اور غلام بنائے۔ اس نے امتیاز اور بالا دستی کے تمام قومی اور نسلی مراتب یک قلم مٹا دیے اور دنیا کو بتلا دیا کہ سب انسان درجے میں برابر ہیں۔ سب کے حقوق مساوی ہیں۔ نسل، قومیت، رنگ، معیار فضیلت نہیں ہے بلکہ صرف عمل ہے اور سب سے بڑا وہی ہے جس کے سب کام اچھے ہوں۔

یٰاَیُّھَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰکُمْ مِّنْ ذَکَرٍ وَّ اُنْثٰی وَجَعَلْنٰکُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا اِنَّ اَکْرَمَکُمْ عِنْدَ اللّٰہِ اَتْقٰکُمْ (سورۃ حجرات)

اسلام ایک جمہوری نظام ہے

انسانی حقوق کا یہ وہ اعلان ہے جو انقلاب فرانس سے گیارہ سو برس پہلے ہوا۔ یہ صرف اعلان ہی نہ تھا بلکہ ایک عملی نظام تھا جو مؤرخ گبن کے لفظوں میں "یہی کوئی مثال نہیں رکھتا تھا۔" پیغمبر اسلام اور ان کے جانشینوں کی حکومت ایک مکمل جمہوریت تھی اور صرف قوم کی رائے نیابت اور انتخاب سے اس کی بناوٹ ہوتی تھی۔ یہی وجہ ہے کہ اسلام کی اصطلاح میں جیسے جامع اور عمدہ الفاظ اس مقصد کے لیے موجود ہیں شاید ہی دنیا کی کسی زبان میں پائے جائیں۔ اسلام نے "بادشاہ" کے اختیار اور شخصیت سے انکار کیا ہے۔ اور صرف ایک رئیس جمہوریت (پریذیڈنٹ آف ری پبلک) کا عہدہ قرار دیا ہے لیکن اس کے لیے بھی "خلیفہ" کا لقب تجویز کیا جس کے لغوی معنی نیابت کے ہیں۔ گویا اس کا اقتدار محض نیابت ہے۔ اس سے زیادہ کوئی اختیار نہیں رکھتا۔ اسی طرح قرآن نے نظام حکومت کے لیے "شوریٰ" کا لفظ استعمال کیا، وَاَمْرُھُمْ شُوْرٰی بَیْنَھُمْ۔ چنانچہ ایک پوری سورت اسی نام سے قرآن میں موجود ہے۔ "شوریٰ" کے معنی باہم مشورہ کے ہیں۔ یعنی جو کام کیا جائے جماعت کے باہم رائے اور مشورہ سے کیا جائے شخصی رائے نہ ہو۔ اس سے زیادہ صحیح نام جمہوری نظام کے لیے کیا ہو سکتا ہے۔؟

قومی اور مسلم بیوروکریسی ظلم ہے

جب اسلام مسلمانوں کا یہ فرض قرار دیتا ہے کہ وہ ایسی اسلامی حکومت کو بھی منصفانہ تسلیم نہ کریں جو قوم کی رائے اور انتخاب سے نہ ہو تو پھر ظاہر ہے کہ مسلمانوں کے لیے ایک اجنبی بیوروکریسی کیا حکم رکھتی ہے۔ اگر آج ہندوستان میں ایک خالص اسلامی حکومت قائم ہو جائے، مگر اس کا نظام بھی شخصی ہو یا چند حاکموں کی بیوروکریسی ہو تو بہ حیثیت مسلمان ہونے کے اس وقت بھی میرا فرض یہی ہوگا۔ کہ اس کو ظالم کہوں اور تبدیلی کا مطالبہ کروں۔ اسلام کے علمائے حق نے ہمیشہ جابر مسلمان بادشاہوں کے خلاف ایسا ہی اعلان و مطالبہ کیا ہے۔

میں تسلیم کرتا ہوں کہ یہ نظام بعد کو قائم نہ رہ سکا۔ مشرقی رومی حکومت اور ایرانی شہنشاہی کے پُرشوکت انسانوں نے مسلمان حکمرانوں کو گمراہ کر دیا۔ اسلامی خلیفہ کی جگہ جو بسا اوقات پھٹے پرانے کپڑوں میں ایک عام فرد کی طرح ملبوس ہوتا تھا، انھوں نے قیصر و کسریٰ بننے کو ترجیح دی۔ تاہم تاریخ اسلام کا کوئی عہد بھی ایسے مسلمانوں سے خالی نہیں رہا جنھوں نے علانیہ حکام وقت کی استبداد و شخصیت کے خلاف احتجاج نہ کیا ہو اور ان تمام تکلیفوں کو خوشی خوشی نہ جھیل لیا ہو جو اس راہ میں پیش آئی ہیں۔

مسلمانوں کا قومی وظیفہ

ایک مسلمان سے یہ توقع رکھنا کہ وہ حق کا اعلان نہ کرے اور ظلم کو ظلم نہ کہے، بالکل ایسی ہی بات ہے، جیسے یہ کہا جائے کہ وہ اسلامی زندگی سے دست بردار ہو جائے۔ اگر تم کسی آدمی سے اس مطالبہ کا حق نہیں رکھتے کہ وہ اپنا مذہب چھوڑ دے تو یقیناً ایک مسلمان سے یہ مطالبہ بھی نہیں کر سکتے۔ کہ وہ ظلم کو ظلم نہ کہے کیونکہ دونوں باتوں کا مطلب ایک ہی ہے۔

یہ اسلامی زندگی کا وہ عنصر ہے جس کے الگ کر دینے کے بعد اس کی سب سے بڑی مایہ الامتیاز خصوصیت معدوم ہو جاتی ہے۔ اسلام نے مسلمانوں کی قومیت کی بنیاد ہی اس بات پر رکھی ہے کہ وہ دنیا میں سچائی اور حقیقت کے گواہ ہیں۔ ایک گواہ کا فرض ہوتا ہے کہ جو کچھ وہ جانتا ہے بیان کرے۔



ٹھیک اسی طرح ہر مسلمان کا بھی وظیفہ (ڈیوٹی) ہے کہ جس سچائی کا اسے علم و یقین دیا گیا ہے۔ ہمیشہ اس کا اعلان کرتا رہے اور اداءِ فرض کی راہ میں کسی آزمائش اور مصیبت سے نہ ڈرے۔ علی الخصوص جب ایسا ہو کہ ظلم و جور کا دَور دَورہ ہو جائے اور جبر و تشدد کے ذریعہ اعلانِ حق کو روکا جائے۔ تو پھر یہ فرض اور زیادہ لازمی اور ناگزیر ہو جاتا ہے۔ کیونکہ اگر طاقت کے ڈر سے لوگوں کا چپ ہو جانا گوارا کر لیا جائے۔ اور "دو اور دو" کو اس لیے چار نہ کہا جائے۔ کہ ایسا کہنے سے انسانی جسم مصیبت میں مبتلا ہو جاتا ہے تو سچائی درحقیقت ہمیشہ خطرے میں پڑ جائے اور حق کے ابھرنے اور قائم رہنے کی راہ باقی نہ رہے حقیقت کا قانون نہ تو طاقت کی تصدیق کا محتاج ہے نہ اس لیے بدلا جا سکتا ہے کہ ہمارے جسم پر کیا گزرتی ہے۔ وہ تو حقیقت ہے اور اس وقت بھی حقیقت ہے جب اس کے اعلان سے ہمیں پھولوں کی سیج ملے اور اس وقت بھی حقیقت ہے جب اس کے اظہار سے ہمارا جسم آگ کے شعلوں کے اندر جھونک دیا جائے۔ صرف اس لیے کہ ہمیں قید کر دیا جائے گا۔ آگ میں ٹھنڈک اور برف میں گرمی نہیں پیدا ہو سکتی۔

شہادت علی الناس

یہی وجہ ہے کہ اسلام کی کتاب شریعت (قرآن) میں مسلمانوں کو بتلایا گیا ہے کہ وہ خدا کی زمین میں "شاہد" ہیں۔ یعنی سچائی کی گواہی دینے والے ہیں۔ بہ حیثیت ایک قوم کے یہی ان کا قومی وظیفہ (نیشنل ڈیوٹی) ہے اور یہی ان کی قومی خصلت (نیشنل کیرکٹر) ہے جو ان کو تمام پچھلی اور آئندہ قوموں میں ممتاز کرتی ہے۔ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ۔ اسی طرح پیغمبرِ اسلامؐ نے فرمایا: انتم شہداء اللہ فی الارض۔ (بخاری) "تم خدا کی زمین پر خدا کی طرف سے سچائی کے گواہ ہو۔" پس ایک مسلمان جب تک مسلمان ہے۔ اس گواہی کے اعلان سے باز نہیں رہ سکتا۔

کتمانِ شہادت

اگر وہ باز رہے تو یہ قرآن کی اصطلاح میں "کتمانِ شہادت" ہے یعنی گواہی کو چھپانا۔ قرآن نے ایسا کرنے والوں کو خدا کی پھٹکار کا سزاوار بتلایا ہے اور بار بار کہا ہے کہ اسی کتمانِ شہادت کی وجہ سے دنیا کی بڑی بڑی قومیں برباد و ہلاک ہو گئیں۔ اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ (بقرہ) لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ

امر بالمعروف و نہی عن المنکر

اسی لیے اسلام کے واجبات و فرائض میں ایک اہم فرض "امر بالمعروف" اور "نہی عن المنکر" یعنی نیکی کا حکم دینا اور برائی سے روکنا۔ قرآن نے عقیدۂ توحید کے جن کاموں پر سب سے زیادہ زور دیا ہے۔ ان میں سے ایک کام یہ ہے۔ قرآن نے بتلایا ہے کہ مسلمانوں کی تمام قومی بڑائی کی بنیاد اسی کام پر ہے وہ سب سے بڑی اور اچھی قوم اس لیے ہیں کہ نیکی کا حکم دیتے ہیں اور برائی کو روکتے ہیں۔ اگر وہ ایسا نہ کریں تو وہ اپنی ساری بڑائی کھو دیں۔ كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

قرآن سچے مسلمان کی پہچان یہ بتاتا ہے:

"وہ حق کے اعلان میں کسی سے نہیں ڈرتے۔ دنیا کی لالچ ان پر غالب آ سکتی ہے نہ کوئی خوف۔ وہ طمع بھی رکھتے تو صرف خدا سے، اور ڈرتے بھی ہیں تو صرف خدا سے۔"

پیغمبرِ اسلامؐ کے بے شمار قولوں میں سے جو اس بارے میں ہیں ایک قول یہ ہے: "نیکی کا اعلان کرو، برائی کو روکو، اگر نہ کرو گے تو ایسا ہوگا کہ نہایت بُرے لوگ تم پر حاکم ہو جائیں گے اور خدا کا عذاب تمھیں گھیر لے گا۔ تم دعائیں مانگو گے قبول نہ ہوں گی۔ (ترمذی و طبرانی عن حذیفہؓ)

لیکن یہ فرض کیونکر انجام دیا جائے تو اسلام نے تین مختلف حالتوں میں اس کے تین مختلف درجے بتلائے ہیں۔ چنانچہ پیغمبرِ اسلام نے فرمایا:

"تم میں سے جو شخص برائی کی بات دیکھے تو چاہیے اپنے ہاتھ سے درست کر دے۔ اگر اس کی طاقت نہ پائے تو زبان سے اعلان کرے، اگر اس کی بھی طاقت نہ پائے تو اپنے دل میں اس کو بُرا سمجھے۔ لیکن یہ آخری درجہ ایمان کی بڑی ہی کمزوری کا درجہ ہے۔" (مسلم)

ہندوستان میں ہمیں یہ استطاعت نہیں

ہے کہ اپنے ہاتھ سے گورمنٹ کی برائیاں دُور کردیں اس لیے ہم نے دوسرا درجہ اختیار کرلیا۔

ارکانِ اربعہ

قرآن نے مسلمانوں کی اسلامی زندگی کی بنیاد چار باتوں پر رکھی ہے۔ اور بتلایا ہے کہ ہر طرح کی انسانی ترقی اور کامیابی انہی کے ذریعہ حاصل ہوسکتی ہے۔ ایمان، اعمالِ صالح، توصیۂ حق، توصیۂ صبر۔

"توصیۂ حق کے معنی یہ ہیں کہ ہمیشہ حق اور سچائی کی ایک دوسرے کو وصیت کرنا۔" توصیۂ صبر کے معنی یہ ہیں کہ ہر طرح کی مصیبتوں اور رکاوٹوں کو جھیل لینے کی وصیت کرنا۔ چونکہ حق کے اعلان کا لازمی نتیجہ یہ ہے کہ مصیبتیں پیش آئیں۔ اس لیے حق کے ساتھ صبر کی وصیت بھی ضروری تھی تاکہ مصیبتیں اور رکاوٹیں جھیل لینے کے لیے تیار رہو جائے۔

وَالْعَصْرِ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

اسلامی توحید اور امر بالمعروف

اسلام کی بنیاد "عقیدۂ توحید" پر ہے اور توحید کا ضد "شرک" ہے، مقصود یہ ہے کہ خدا کو اس کی ذات اور صفات میں ایک ماننا۔ شرک کے معنی یہ ہیں کہ اس کی ذات اور صفتوں میں کسی دوسری ہستی کو شریک کرنا۔ پس سچائی کے اظہار میں بے خوفی اور بے باکی ایک مسلمان کی زندگی کا مایۂ خمیر ہے۔ توحید مسلمانوں کو سکھلاتی ہے کہ ڈرنے اور جھکنے کی سزاوار صرف خدا ہی کی عظمت و جبروت ہے۔ اس کے سوا کوئی نہیں جس سے ڈرنا چاہیے یا جس کے آگے جھکنا چاہیے۔ وہ یقین کرتے ہیں کہ خدا کے سوا کسی دوسری ہستی سے ڈرنا، خدا کے ساتھ اس کو شریک کرنا، اپنے دل کے خوف، اطاعت کا حق دار ماننا ہے۔ یہ بات توحید کے ساتھ اکٹھی نہیں ہوسکتی۔

اسی لیے اسلام تمام تر بے خوفی اور قربانی کی دعوت ہے۔ قرآن جا بجا کہتا ہے: "مسلمان وہ ہے جو خدا کے سوا کسی سے نہ ڈرے۔ ہر حال میں سچی بات کہے۔" وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللّٰهَ۔

پیغمبر اسلام نے فرمایا: "سب سے بہتر موت اس آدمی کی ہے جو کسی ظالم حکومت کے سامنے حق کا اظہار کرے اور اس کی پاداش میں قتل کیا جائے۔" (ابوداؤد) وہ جب کسی آدمی سے اسلام کا عہد و قرار لیتے تھے تو ایک اقرار یہ ہوتا تھا: "میں ہمیشہ حق کا اعلان کروں گا خواہ کہیں ہوں اور کسی حالت میں ہوں۔" (بخاری و مسلم)

اسی کا نتیجہ ہے کہ دنیا کی کسی قوم کی تاریخ میں حق گوئی اور حق گوئی کے لیے قربانی کی ایسی مثالیں نہیں مل سکتیں، جن سے تاریخ اسلام کا ہر باب معمور ہے۔ اسلام کے عالموں، پیشواؤں، بزرگوں، مصنفوں کے تراجم — BIOGRAPHY — تمام تر اسی قربانی کی سرگزشت ہیں۔

جن مسلمانوں کے مذہبی فرائض میں یہ بات داخل ہے کہ موت قبول کرلیں مگر حق گوئی سے باز نہ آئیں۔ ان کے لیے دفعہ ۱۲۴۔ الف کا مقدمہ یقیناً کوئی بڑی ڈراؤنی چیز نہیں ہوسکتا۔ جس کی زیادہ سے زیادہ سزا سات برس کی قید ہے۔

اسلام میں کوئی دفعہ ۱۲۴ نہیں

تاریخ اسلام کے دو دَور ہیں۔ پہلا دَور پیغمبر اسلام اور ان کے چار جانشینوں کا ہے۔ یہ دَور خالص اور کامل طور پر اسلامی نظام کا تھا یعنی اسلامی جمہوریت (ری پبلک) اپنی اصلی صورت میں قائم تھی۔ ایرانی شاہنشاہی اور رومی امارت ARISTOCRACY کا کوئی اثر ابھی اسلامی مساواتِ عامہ DEMOCRACY پر نہیں پڑا تھا۔ اسلامی جمہوریہ کا خلیفہ خود بھی طبقۂ عوام (ڈیموکریٹ) کا ایک فرد ہوتا تھا اور ایک عام فرد قوم کی طرح زندگی بسر کرتا تھا وہ دارالخلافت کے ایک خس پوش جھونپڑ میں رہتا اور چار چار پیوند لگے ہوئے کپڑے پہنتا۔ اسلام کے دارالخلافت میں امریکن ری پبلک کا کوئی قصر سفید (وائٹ ہاؤس) نہ تھا۔

دوسرا دَور شخصی حکمرانی اور شہنشاہی کا ہے۔ جو خاندانِ بنو امیہ سے شروع ہوا۔ اس دَور میں اسلامی جمہوریت درہم برہم ہوگئی۔ قوم کے انتخاب کی جگہ طاقت اور تسلط کا دَور شروع ہوگیا۔ شاہی خاندان سے طبقۂ امراء (ارسٹوکریٹ) کی بنیاد پڑی۔ اور اسلام کے گلیم پوش خلیفہ کی جگہ شہنشاہیت کا تاج و تخت نمودار ہوگیا۔

تاہم مسلمانوں کی زبانیں جس طرح پہلے دَور کی آزادی میں بے روک تھیں۔ اسی طرح دوسرے دَور کے جبر و استبداد میں بھی بے خوف رہیں۔ میں بتلانا چاہتا ہوں کہ تعزیراتِ ہند (پینل کوڈ) کی طرح اسلامی قانون میں کوئی دفعہ ۱۲۴۔ الف نہیں۔ پہلے دور کے مسلمانوں کی حق گوئی کا یہ حال تھا کہ دارالخلافت کی ایک بڑھیا عورت خلیفۂ وقت سے برسرِ عام کہہ سکتی تھی: "اگر تم انصاف نہ کرو گے تو تکلے کی طرح تمہارے بل نکال دیں گے۔" لیکن وہ مقدمۂ بغاوت چلانے کی جگہ خدا کا شکر ادا کرتا کہ قوم میں ایسی راست باز زبانیں موجود ہیں۔ میں



جمعہ کے مجمع میں جب خلیفہ منبر پر خطبہ کے لیے کھڑا ہوتا اور کہتا: "اَسْمِعُوْا وَ اَطِیْعُوْا۔ سنو اور اطاعت کرو۔" تو ایک شخص کھڑا ہو جاتا، اور کہتا: "نہ تو سنیں گے اور نہ اطاعت کریں گے۔ کیوں؟ اس لیے کہ تمہارے جسم پر جو جبہ ہے، وہ تمہارے حصہ کے [illegible] سے زیادہ کا بنا ہوا ہے اور یہ خیانت ہے۔" اس پر خلیفہ اپنے لڑکے سے گواہی دلاتا۔ وہ اعلان کرتا کہ میں نے اپنے حصہ کا کپڑا بھی اپنے باپ کو دے دیا تھا اس سے جبہ تیار ہوا۔

قوم کا یہ طرزِ عمل اس خلیفہ کے ساتھ تھا جس کی صولت و سطوت نے مصر اور ایران کا تخت اُلٹ دیا تھا۔ تاہم اسلامی حکومت میں کوئی دفعہ ۱۲۴۔ الف نہ تھی۔

دوسرا دور شخصی استبداد۔ AUTOCR-ACY کا تھا جس کی پہلی ضرب آزادیٔ رائے اور آزادیٔ تقریر ہی پر پڑتی ہے لیکن اس دور میں بھی زبانوں کی بے باکی اور دلوں کی بے خوفی اسی طرح سرگرم رہی اور قید خانے کی تاریک کوٹھریاں تازیانوں کی ضرب اور جلاد کی تیغ بھی انھیں روک نہ سکی۔ پیغمبرِ اسلام کے ساتھی (صحابۂ کرام) جب تک زندہ رہے وقت کے جابر بادشاہوں کے ظلم کا اعلان کرتے رہے اور برابر مطالبہ کرتے رہے کہ حکومت قوم کے مشورہ اور انتخاب سے ہونی چاہیے۔ جو لوگ ان کے تربیت یافتہ تھے (تابعین) ان کا اعلان بھی بعینہٖ یہی رہا کہ درست ہو جاؤ یا مٹ جاؤ۔ امام محمد غزالیؒ نے جن کو یورپ کے مؤرخینِ فلسفہ بھی (ALGAZEL) کے نام سے پہچانتے ہیں اور اب میڈیم کوریلی کے ناول (ARDOTH) کے دوسرے باب نے انگریزی علم و ادب کو بھی روشناس کر دیا ہے۔ صرف ان صحابہؓ اور تابعین کا ذکر کیا ہے جو خلیفہ ہشام بن عبدالملک کے زمانے تک موجود تھے اور جنھوں نے حکمرانوں کے مظالم کا اعلان کر کے ہمیشہ منصفانہ اور نیابتی گورنمنٹ کا مطالبہ کیا تھا۔ ان کی تعداد ۲۳ سے بھی زیادہ ہے۔

ہشام بن عبدالملک نے طاؤس یمانی کو بلایا۔ وہ آئے مگر اس کا نام لے کر سلام کیا۔ "امیرالمومنین" یعنی قوم کا سردار نہ کہا جو مسلمان خلفاء کا لقب تھا۔ ہشام نے سبب پوچھا تو کہا قوم تیری حکومت سے راضی نہیں، اس لیے تجھے امیر کہنا جھوٹ ہے۔ ہشام نے کہا: "نصیحت کیجیے۔" فرمایا: "خدا سے ڈر کیونکہ تیرے ظلم سے زمین بھر گئی۔"

مالک بن دینار بصرہ کی جامع مسجد میں اعلان کرتے تھے: "ان ظالم بادشاہوں کو خدا نے اپنے بندوں کا چرواہا بنایا تھا تاکہ ان کی رکھوالی کریں۔ پر انھوں نے بکریوں کا گوشت کھا لیا، بالوں کا کپڑا بُن کر پہن لیا۔ اور صرف ہڈیاں چھوڑ دیں۔"

سلیمان بن عبدالملک جیسے ہیبت ناک خلیفہ سے ابوحازم کہتے: "ان اباك قهروا الناس بالسيف واخذ الملك عنوة من غير مشورة من المسلمين ولا رضا منهم" (تیرے باپ دادوں نے تلوار کے زور سے لوگوں کو مقہور کیا۔ اور بلا قوم کی رائے اور انتخاب کے مالک بن بیٹھے۔) سلیمان نے کہا: "اب کیا کیا جائے؟" جواب دیا: "جن کا حق ہے انھیں لوٹا دے۔" کہا: "میرے لیے دعا کیجیے۔" خدایا! اگر سلیمان حق پر چلے تو اسے مہلت دے، لیکن اگر ظلم سے باز نہ آئے تو پھر تو ہے اور اس کی گردن۔"

سعید بن مسیبؒ بہت بڑے تابعی تھے۔ وہ علانیہ برسرِ بازار حکام کے ظلم و جور کا اعلان کرتے اور کہتے: "کتوں کا پیٹ بھرتے ہو مگر انسانوں کو تم سے امان نہیں۔"

اس عہد کے بعد بھی مسلمان عالموں اور پیشواؤں کی حق گوئی کا یہی عالم رہا۔ منصور عباسی کے خوف و ہیبت سے گھر میں بیٹھے ہوئے لوگ کانپا کرتے تھے۔ سفیان ثوریؒ سے ایک بار اس نے کہا: "مجھ سے اپنی کوئی حاجت بیان کیجیے۔" انھوں نے جواب دیا: "اتق الله فقد ملأت الارض ظلما وجورا" (خدا سے ڈر۔ زمین ظلم و جور سے بھر گئی ہے۔)

جب مشہور عباسی خلیفہ، ہارون رشید تخت نشین ہوا (جس نے فرانس کے شارلیمن کو ایک عجیب گھڑی بطور تحفہ بھیجی تھی اور جس کو بقول گبن "اسے کتے کے بچے" کے لقب سے خط لکھا تھا۔) تو اس نے اپنی سفیان ثوریؒ کو اپنے ہاتھ سے اشتیاقِ ملاقات کا خط لکھ کر بھیجا۔ خط میں لکھا تھا کہ میں نے تخت نشینی کی خوشی میں بے شمار مال و دولت لوگوں میں تقسیم کی ہے۔ تم بھی مجھ سے آ کر ملو۔ سفیان کوفہ کی مسجد میں ایک بڑے مجمع کے اندر بیٹھے تھے کہ یہ خط پہنچا۔ لیکن انھوں نے لینے سے انکار کر دیا اور کہا: "جس چیز کو ایک ظالم کے ہاتھ نے چھوا ہے، میں اسے چھونا نہیں چاہتا۔" جب پڑھ کر سنایا گیا۔ تو اس کی پشت پر جواب لکھوا دیا۔ "خدا کے مغرور بندے ہارون کو جس کا ذوقِ ایمان سلب ہو چکا ہے، معلوم ہو! تو نے قوم کا مال جو کسی حق کے بغیر تخت نشینی میں لٹایا اور اس کا حال لکھ کر اپنے گناہ پر مجھے اور میرے ساتھیوں کو بھی گواہ ٹھہرایا۔ پس ہم سب کل کو اللہ کے آگے اس کی گواہی دیں گے۔ اے ہارون! تو نے انصاف و حق سے

کنارہ کیا۔ تو نے پسند کیا۔ کہ ظالم بنے اور ظالموں کی سرداری پائے۔ تیرے حاکم بندگانِ خدا کو ظلم و جور سے پامال کر رہے ہیں اور تو تختِ شاہی پر عیش و عشرت کر رہا ہے۔" ہارون نے جب یہ خط پڑھا تو بے اختیار رونے لگا اور کہا: "یہ خط ہمیشہ میرے ساتھ رہے گا۔"

مسلمان عالموں اور اماموں پر موقوف نہیں، اس عہد کا ہر عام فرد بھی اس اعلان میں بے خوف تھا۔ منصور عباسی ایک دن کعبہ کا طواف کر رہا تھا۔ آواز آئی کہ کوئی شخص دعا مانگ رہا ہے: "خدایا میں تیرے آگے فریاد کرتا ہوں، ظلم غالب آگیا ہے اور حق اور حقداروں کے درمیان روک بن گیا ہے۔" منصور نے اس شخص کو بلا کر پوچھا وہ کون ہے جس کا ظلم روک بن گیا ہے؟ کہا: "تیرا وجود اور تیری حکومت۔"

حجاج بن یوسف کا ظلم و ستم تاریخِ اسلام کا نہایت مشہور واقعہ ہے۔ لیکن اس کی بے پناہ تلوار بھی مسلمانوں کی حق گوئی پر غالب نہ آسکی۔ حطیط جب گرفتار ہو کر آیا۔ پوچھا: "اب میرے لیے کیا کہتے ہو؟" اس نے کہا: "تو خدا کی زمین پر اس کا سب سے بڑا دشمن ہے۔" پوچھا: "خلیفہ کے لیے کیا کہتے ہو؟" کہا: "اس کا جرم تجھ سے بھی زیادہ ہے۔ تیرا ظلم تو اس کے بے شمار ظلموں میں سے ایک ظلم ہے۔"

مامون الرشید کے عہد میں ایسے مسلمان موجود تھے جو پکار پکار کر برسرِ دربار کہتے: "یا ظالم! انا ظالم ان لم اقل لک یا ظالم! — اے ظالم! میں ظالم ہوں اگر تجھے ظالم کہہ کر نہ پکاروں۔"



فتنۂ تاتار اور فتنۂ یورپ

یہ تو تاریخِ اسلام کے ابتدائی اوراق ہیں۔ لیکن اس عہد کے بعد بھی ہر دور کا یہی حال رہا۔ مسلمانوں کے لیے موجودہ عہد کا عالمگیر فتنہ کوئی پہلا واقعہ نہیں ہے۔ وہ ایک ایسے سیلاب میں ڈوب کر اچھل چکے ہیں جس طرح آج یورپ اور علی الخصوص انگلستان کے ظہور و تسلط سے تمام ایشیا اور اسلامی ممالک کی آزادی کا خاتمہ ہوگیا ہے۔ ٹھیک اسی طرح پندرھویں صدی مسیحی میں بھی تاتاریوں کے وحشیانہ تسلط سے ظہور میں آیا تھا۔ یورپ کے فتنہ کا آخری نتیجہ عثمانی خلافت کی پامالی اور ایشیائے کوچک کا قتلِ عام ہے۔

تاتاری فتنہ کی آخری وحشت ناکی عباسی خلافت کا خاتمہ اور بغداد کا قتلِ عام تھا۔ تاتاری انسان نہیں تھے، درندے تھے۔ تاہم ہلاکو خاں، منکو خاں، اباقاآن خاں جیسے سفاکوں کے زمانے میں بھی وہ مسلمان موجود رہے جن کی زبانیں، اعلان میں ان کی تلواروں سے بھی زیادہ تیز تھیں، شیخ سعدی شیرازیؒ نے (جن کی "گلستان" کا نام اس کورٹ نے بھی سنا ہوگا) ہلاکو خاں کے منہ پر اسے ظالم کہا۔ شمس الدین نیازی نے منکو خاں کے دربار میں اس کی ہلاکت کی دعا مانگی۔ شیخ الاسلام احمد بن تیمیہ نے اباقاآن پر برسرِ دربار لعنت بھیجی۔ تلیاریوں کے پاس بے دریغ قتل کر دینے کا قانون تھا۔ تاہم "تورۂ چنگیز خانی (قوانینِ چنگیز خاں) میں کوئی دفعہ ۱۲۴-الف نہ تھی۔

"حجاج" اور "ریڈنگ"

"ہم مسلمانوں کا جب اپنی قومی گورنمنٹوں کے ساتھ (جن کی اطاعت از روئے شرع ہم پر واجب ہے) ایسا سلوک رہا ہے تو پھر ایک اجنبی گورنمنٹ کے کارندے ہم سے کیا امید رکھتے ہیں؟ کیا ہندوستان کی "از روئے قانون قائم شدہ" گورنمنٹ ہمارے لیے اس گورنمنٹ سے بھی زیادہ محترم ہے جو "از روئے اسلام" واجبِ اطاعت ہے۔ کیا انگلستان کی بادشاہت اور لارڈ ریڈنگ کی نیابت، عبدالملک کی خلافت اور حجاج بن یوسف کی نیابت سے بھی ہمارے لیے زیادہ مقدس ہو سکتی ہے؟ اگر ہم "اجنبی و غیر مسلم" اور "قومی و مسلم" کا عظیم الشان اور شرعی فرق بالکل نظر انداز کر دیں جب بھی ہم سے یہی امید کی جا سکتی ہے؟ کہ جو کچھ حجاج بن یوسف اور خالد قسری کی گورنمنٹوں کے لیے کہہ چکے ہیں، وہی "چمسفورڈ اور ریڈنگ" کی گورنمنٹوں کے لیے بھی کہیں۔ ہم نے ان سے کہا تھا: "اِتَّقُوا اللّٰهَ فَقَدْ مَلَأْتِ الْأَرْضَ ظُلْمًا وَّجَوْرًا" — خدا سے ڈرو کیونکہ تمہارے ظلم سے زمین بھر گئی ہے یہی ہم آج بھی کہتے ہیں۔

حقیقت یہ ہے کہ ہم اپنی کمزوری اور بے بسی کی وجہ سے آج ہندوستان میں جو کچھ کر رہے ہیں، وہ دراصل قومی حکمرانوں کے ظلم و جور کے لیے ہمیں بتلایا گیا تھا۔ نہ کہ ایک اجنبی قبضہ و تصرف کے مقابلہ میں۔ اگر برٹش گورنمنٹ کے ارکان اس حقیقت کو سمجھتے، تو انھیں تسلیم کرنا پڑتا کہ مسلمانوں کے تسامح اور درگذر کی حد ہو گئی ہے۔ اس سے زیادہ اسلام کو برطانیہ کے لیے نہیں چھوڑ سکتے۔

اسلام نے حکمرانوں کے ظلم کے مقابلے میں دو طرح کے طرزِ عمل کا حکم دیا ہے۔ کیونکہ حالتیں بھی دو مختلف ہیں۔ ایک ظلم اجنبی قبضہ و تسلط ہے۔



ایک خود مسلمان حکمرانوں کا ہے۔ پہلے کے لیے اسلام کا حکم ہے کہ تلوار سے مقابلہ کیا جائے۔ دوسرے کے لیے حکم ہے کہ مقابلہ نہ کیا جائے لیکن امر بالمعروف اور اعلانِ حق جس قدر بھی امکان میں ہو مسلمان کرتا رہے۔ پہلی صورت میں دشمنوں کے ہاتھوں قتل ہونا پڑے گا۔ دوسری صورت میں ظالم حکمرانوں کے ہاتھوں طرح طرح کی اذیتیں اور سزائیں جھیلنی پڑیں گی۔ مسلمانوں کو دونوں حالتوں میں دونوں طرح کی قربانیاں کرنی چاہئیں اور دونوں کا نتیجہ کامرانی و فتح مندی ہے۔ چنانچہ گزشتہ تیرہ صدیوں میں مسلمانوں نے دونوں طرح کی قربانیاں کیں۔ اجنبیوں کے مقابلے میں سرفروشی بھی کی اور اپنوں کے مقابلے میں صبر و استقامت بھی دکھلائی۔ پہلی صورتوں میں جس طرح ان کی "جنگی جد و جہد" کوئی مثال نہیں رکھتی۔ اسی طرح دوسری صورت میں ان کی "شہری جد و جہد" بھی عدیم النظیر ہے۔

ہندوستان میں آج مسلمانوں نے دوسری صورت اختیار کی ہے حالانکہ مقابلہ ان کا پہلی حالت سے ہے۔ ان کے لیے "جنگی جد و جہد" کا وقت آگیا تھا لیکن انھوں نے "شہری جد و جہد" کو اختیار کیا۔ انھوں نے "نان وائلینس" رہنے کا فیصلہ کر کے تسلیم کر لیا ہے کہ وہ ہتھیار سے مقابلہ نہ کریں گے۔ یعنی صرف وہی کریں گے جو انھیں مسلمان حکومتوں کے مقابلے میں کرنا چاہیے۔ بلاشبہ اس طرزِ عمل میں ہندوستان میں ایک خاص طرح کی حالت کو بھی دخل ہے لیکن گورنمنٹ کو سوچنا چاہیے کہ اس سے زیادہ بدبخت مسلمان اور کیا کر سکتے ہیں؟ حد ہو گئی کہ اجنبیوں کے ظلم کے مقابلے میں وہ بات کر رہے ہیں جو انھیں اپنوں کے مقابلے میں کرنی تھی۔

انقلابِ حال

میں سچ کہتا ہوں کہ مجھے اس کی رائی برابر بھی شکایت نہیں کہ سزا دلانے کے لیے مجھ پر مقدمہ چلایا گیا ہے۔ یہ بات تو بہرحال ہونی ہی تھی۔ لیکن حالات کا یہ انقلاب میرے لیے بڑا ہی درد انگیز ہے کہ ایک مسلمان سے کلمۂ حق شہادت کی توقع کی جاتی ہے اور کہا جاتا ہے کہ وہ ظلم کو صرف اس لیے ظلم نہ کہے کہ دفعہ ۱۲۴۔ الف کا مقدمہ چلایا جائے گا۔

مسلمانوں کو حق گوئی کا جو نمونہ ان کی قومی تاریخ دکھلاتی ہے وہ تو یہ ہے کہ ایک جابر حکمراں کے سامنے ایک بے پروا انسان کھڑا ہے۔ اس پر الزام یہی ہے کہ اس نے حکمراں کے ظلم کا اعلان کیا۔ اس کی پاداش میں اس کا ایک عضو کاٹا جا رہا ہے۔ لیکن جب تک زبان نہیں کٹ جاتی وہ یہی اعلان کرتی رہتی ہے کہ حکمراں ظالم ہے۔ یہ واقعہ خلیفہ عبدالملک کے زمانے کا ہے جس کی حکومت افریقہ سے سندھ تک پھیلی ہوئی تھی۔ تم دفعہ ۱۲۴۔ الف کو اس سزا کے ساتھ تول سکتے ہو۔

میں اس دردانگیز اور جانکاہ حقیقت سے انکار نہیں کرتا کہ اس انقلابِ حالت کے ذمہ دار خود مسلمان ہی ہیں۔ انھوں نے اسلامی زندگی کے تمام خصائص کھو دیے اور ان کی جگہ غلامانہ زندگی کے تمام رذائل قبول کر لیے۔ ان کی موجودہ حالت سے بڑھ کر دنیا میں اسلام کے لیے کوئی فتنہ نہیں۔ جب کہ میں یہ سطریں لکھ رہا ہوں تو میرا دل شرمندگی کے غم سے پارہ پارہ ہو رہا ہے کہ اسی ہندوستان میں وہ مسلمان بھی موجود ہیں جو ایمانی کمزوری کی وجہ سے علانیہ ظلم کی پرستش کر رہے ہیں۔

آزادی یا موت

لیکن انسانوں کی بدعملی سے تعلیم کی حقیقت نہیں جھٹلائی جا سکتی۔ اسلام کی تعلیم اس کی کتاب میں موجود ہے۔ وہ کسی حال میں بھی جائز نہیں رکھتی کہ آزادی کھو کر مسلمان زندگی بسر کریں۔ مسلمانوں کو مٹ جانا چاہیے یا آزاد رہنا چاہیے۔ تیسری راہ اسلام میں کوئی نہیں۔

اسی لیے میں نے آج سے بارہ سال پہلے "الہلال" کے ذریعہ مسلمانوں کو یاد دلایا تھا کہ آزادی کی راہ میں قربانی و جاں فروشی ان کا قدیم ورثہ ہے۔ ان کا اسلامی فرض ہے کہ ہندوستان کی تمام جماعتوں کو اس راہ میں پیچھے چھوڑ دیں۔ میری صدائیں بے کار نہ گئیں۔ مسلمانوں نے اب آخری فیصلہ کر لیا ہے کہ اپنے ہندو، سکھ، عیسائی، پارسی بھائیوں کے ساتھ مل کر اپنے ملک کو غلامی سے نجات دلائیں گے۔

مسئلہ خلافت و پنجاب

۱۰۔ میں یہاں گورنمنٹ کی ان ناانصافیوں کا افسانہ نہیں چھیڑوں گا جو مسئلہ "خلافت" اور مظالم "پنجاب" کا عالمگیر افسانہ ہیں۔ لیکن میں اقرار کروں گا کہ گزشتہ دو سال کے اندر کوئی صبح و شام مجھ پر ایسی نہیں گزری ہے کہ جس میں میں نے "خلافت" اور "پنجاب" کے لیے گورنمنٹ کے مظالم کا اعلان نہ کیا ہو۔ میں تسلیم کرتا ہوں کہ میں نے ہمیشہ یہ کہا ہے جو گورنمنٹ اسلامی خلافت کو پامال کر رہی ہو اور مظالم پنجاب کے لیے کوئی تلافی اور شرمندگی نہ رکھتی ہو۔ ایسی گورنمنٹ کے لیے کسی ہندوستانی کے دل میں وفاداری نہیں ہو سکتی۔

گورنمنٹ کی جگہ وہ ایک فریق محارب کی حیثیت رکھتی ہے۔ اس پر قائم رہیں گے۔ جب تک انھیں اپنا مذہب اور مذہب کے اٹل احکام عزیز ہیں۔
مسلمانوں کو یقین ہوگیا ہے کہ وہ حق و انصاف چاہتے ہیں تو اس کی راہ صرف ایک ہی ہے۔ سوراج یعنی ایسی گورنمنٹ کا حصول جو ہندوستانیوں کی ہو، ہندوستان میں ہو اور ہندوستان کے لیے ہو۔

اگر ظلم نہیں تو کیا عدل ہے؟

۱۔ غرضیکہ اس بارے میں میرا اقرار بالکل صاف اور واضح ہے موجودہ گورنمنٹ محض ایک ناجائز بیوروکریسی ہے۔ وہ کروڑوں انسانوں کی مرضی اور خواہش کے لیے محض نفی ہے۔ وہ ہمیشہ انصاف اور سچائی پر پرسٹیج کو ترجیح دیتی ہے۔ وہ جلیانوالہ باغ امرتسر کا وحشیانہ قتل عام جائز رکھتی ہے۔ وہ انسانوں کے لیے اس حکم میں کوئی ناانصافی نہیں مانتی کہ چارپایوں کی طرح پیٹ کے بل چلائے جائیں، وہ بے گناہ لڑکوں کو صرف اس لیے تازیانے کی ضرب سے بے ہوش ہوجانے دیتی ہے کہ کیوں ایک بت کی طرح یونین جیک" کو سلام نہیں کرتے؟ وہ تیس کروڑ انسانوں کی پیہم التجاؤں پر بھی اسلامی خلافت کی پامالی سے باز نہیں آتی، وہ اپنے تمام وعدوں کے توڑ دینے میں کوئی عیب نہیں سمجھتی، وہ سمرنا اور تھریس کو صریح نامنصفانہ طور پر یونانیوں کے حوالہ کر دیتی ہے۔ اور پھر میں نے ۱۳ر دسمبر ۱۹۱۸ء کو (جب میں رانچی میں گورنمنٹ آف انڈیا کے حکم سے نظربند تھا) لارڈ چیمسفورڈ کو ایک مفصل چٹھی لکھی تھی اس میں واضح کردیا تھا کہ خلافت اور جزیرۃ العرب کے بارے میں اسلامی احکام کیا ہیں؟ میں نے لکھا تھا کہ اگر برٹش گورنمنٹ اسلامی خلافت اور اسلامی ممالک پر خلاف وعدہ متصرف ہوگئی۔ تو اسلامی قانون کی رو سے ہندوستانی مسلمان ایک انتہائی کشمکش میں مبتلا ہوجائیں گے۔ ان کے لیے صرف دو ہی راہیں رہ جائیں گی۔ یا اسلام کا ساتھ دیں یا برٹش گورنمنٹ کا۔ وہ مجبور ہونگے کہ اسلام کا ساتھ دیں۔

بالآخر وہی ہوا۔ گورنمنٹ صریح وعدہ خلافی سے باز رہی۔ اس وعدہ کا بھی ایفا ضروری نہ سمجھا گیا جو گورنمنٹ آف انڈیا نے ۲ر نومبر ۱۹۱۴ء کے اعلان میں کیا تھا اور وہ وعدہ بھی فریب وقت ثابت ہوا جو مسٹر لائیڈ جارج وزیر اعظم انگلستان نے ۵ر جنوری ۱۹۱۸ء کو ہاؤس آف کامنس کی تقریر میں کیا تھا۔ شریف آدمیوں کے لیے وعدہ خلافی عیب ہے۔ لیکن طاقتور حکومتوں کے لیے کوئی بات بھی عیب نہیں ہے۔

اس حالت نے مسلمانوں کے لیے آخری درجہ کی کشمکش پیدا کردی۔ اسلامی قانون کی رو سے کم از کم بات جو ان کے فرائض میں داخل تھی، یہ تھی کہ ایسی گورنمنٹ کی اعانت اور کوآپریشن سے ہاتھ کھینچ لیں۔ چنانچہ انھوں نے ایسا ہی کیا۔ وہ اس وقت تک تمام اسلامی آبادی کے قتل و غارت کا تماشا دیکھتی ہے۔

انصاف کی پامالی میں اس کی جرأت اس حد تک اور دلیری بالکل بے باک ہے اور حقیقت کو جھٹلاتے ہوئے اس کے منہ میں کوئی لگام نہیں۔ سمرنا میں ۸۰ فیصدی مسلمانوں کی آبادی ہے، مگر وزیر اعظم بغیر کسی شرمندگی کے مسیحی آبادی کی کثرت کا اعلان کردیتا ہے۔ یونانی حکومت تمام اسلامی آبادی کو خون اور آگ کے سیلاب میں غرق کردیتی ہے لیکن وہ بے دھڑک ترکی مظالم کی داستانیں بیان کردیتا ہے۔ اور خود انگلستان کے ۔۔۔ امریکن کمیشن کی رپورٹ پوشیدہ کر ۔۔۔ پھر نہ تو ان تمام مظالم و جرائم کے ۔۔۔ کے پاس اعتراف ہے، نہ تلافی۔ بلکہ ملک ۔۔۔ اور باامن جد و جہد کو پامال کرنے کے لیے ۔۔۔ کا جبر و تشدد شروع کردیا جاتا ہے اور ۔۔۔ کیا جاتا ہے جو گزشتہ ایک سال کے اندر ۔۔۔ ہے اور ۱۸ر نومبر سے اس وقت تک ملک ۔۔۔ حصہ میں ہو رہا ہے۔ میں اگر ایسی گورنمنٹ ۔۔۔ اور" یا درست ہوجاؤ یا مٹ جاؤ" نہ کہ ۔۔۔ کیا "عادل" اور" نہ درست ہونے والی" کہوں ۔۔۔ کیا صرف اس لیے کہ ظالم طاقت ور ۔۔۔ اور اس کے پاس جیل ہے اس کا حق دار ۔۔۔ ہے کہ اس کا نام بدل دیا جائے؟ میں اٹلی کے ۔۔۔ اور حریت پسند جوزف میزینی ZZINI ۔۔۔ کی زبان میں کہوں گا: "ہم صرف اس لیے کہ ۔۔۔ ساتھ عارضی طاقت ہے، تمھاری برائیوں ۔۔۔ انکار نہیں کرسکتے۔"

"جرم" کا قدیم اور ناقابل شمار ارتکاب

۱۲۔ میں نہایت متعجب ہوں کہ میرے خلاف صرف یہی دو ناتمام اور ناکافی تقریریں کیوں پیش کی گئیں؟ کیا ان ہزاروں صفحات ۔۔۔ جو میرے قلم سے نکل چکے ہیں اور ان بے شمار تقریروں سے جن کی صدائیں ہندوستان کے گوشہ گوشہ میں گونج چکی ہیں۔ صرف یہی ۔۔۔ گورنمنٹ پہنچا سکی؟ میں اقرار کرتا ہوں کہ ۔۔۔ کوئی تقریر دو سال کے اندر ایسی نہیں ہوئی ہے جس میں یہ تمام باتیں میں نے بیان نہ کی ہوں ۔۔۔ میں متصل بارہ سال سے اپنی قوم و ملک



کو آزادی و حق طلبی کی تعلیم دے رہا ہوں میری ۸ برس کی عمر تھی جب میں نے اس راہ میں تقریر و تحریر شروع کی۔ میں نے زندگی کا بہترین حصہ یعنی عہد شباب صرف اسی مقصد کے عشق میں قربان کر دیا۔ میں اسی کی خاطر چار سال تک نظربند رہا۔ مگر نظربندی میں بھی میری ہر صبح و شام اسی کی تعلیم و تبلیغ میں بسر ہوتی۔ "رانچی" کے درو دیوار اس کی شہادت دے سکتے ہیں۔ جہاں میں نے نظربندی کا زمانہ بسر کیا ہے۔ یہ تو میری زندگی کا دائمی مقصد ہے۔ میں صرف اسی ایک کام کے لیے جی سکتا ہوں: اِنَّ صَلوٰتِیْ وَ نُسُکِیْ وَ مَحْیَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ

آخری اسلامی تحریک

۱۳۔ میں اس "جرم" سے کیوں انکار کر سکتا ہوں جب کہ میں ہندوستان کی اس آخری "اسلامی تحریک" کا داعی ہوں جس نے مسلمانانِ ہند کے پولیٹیکل مسلک میں ایک انقلابِ عظیم پیدا کر دیا۔ اور بالآخر وہاں تک پہنچا دیا جہاں آج نظر آ رہے ہیں۔ یعنی ان میں سے ہر فرد میرے اس جرم میں شریک ہو گیا ہے۔ میں نے ۱۹۱۲ء میں اردو جرنل "الہلال" جاری کیا جو اس تحریک کا آرگن تھا اور جس کی اشاعت کا تمام تر مقصد وہی تھا جو اوپر ظاہر کر چکا ہوں۔ یہ امر واقع ہے کہ "الہلال" نے تین سال کے اندر مسلمانانِ ہند کی مذہبی اور سیاسی حالت میں بالکل ایک نئی حرکت پیدا کر دی۔ پہلے وہ اپنے ہندو بھائیوں کی پولیٹیکل سرگرمیوں سے نہ صرف الگ تھے بلکہ اس کی مخالفت کے لیے بیوروکریسی کے ہاتھ میں ایک ہتھیار کی طرح کام دیتے تھے۔ گورنمنٹ کی تفرقہ انداز پالیسی نے انھیں اس فریب میں مبتلا رکھا تھا کہ ملک میں ہندوؤں کی تعداد بہت زیادہ ہے، ہندوستان اگر آزاد ہو گیا تو ہندو گورنمنٹ قائم ہو جائے گی۔ مگر "الہلال" نے مسلمانوں کو تعداد کی جگہ ایمان پر اعتماد کرنے کی تلقین کی اور بے خوف ہو کر ہندوؤں کے ساتھ مل جانے کی دعوت دی۔ اسی سے وہ تبدیلیاں رونما ہوئیں۔ جن کا نتیجہ آج متحدہ تحریکِ خلافت و سوراج ہے۔ بیوروکریسی ایک ایسی تحریک کو زیادہ عرصہ تک برداشت نہیں کر سکتی تھی۔ اس لیے پہلے "الہلال" کی ضمانت ضبط کی گئی۔ پھر جب "البلاغ" کے نام سے دوبارہ جاری کیا گیا تو ۱۹۱۶ء میں گورنمنٹ آف انڈیا نے مجھے نظربند کر دیا۔

میں بتلانا چاہتا ہوں کہ "الہلال" تمام تر "آزادی یا موت" کی دعوت تھی۔ اسلام کی مذہبی تعلیمات کے متعلق اس نے جس مسلک پر بحث و نظر کی بنیاد ڈالی۔ اس کا ذکر یہاں غیر ضروری ہے۔ صرف اس قدر اشارہ کروں گا کہ ہندوؤں میں آج مہاتما گاندھی مذہبی زندگی کی جو روح پیدا کر رہے ہیں "الہلال" اس کام سے ۱۹۱۴ء میں فارغ ہو چکا تھا۔ یہ ایک عجیب اتفاق ہے کہ مسلمانوں اور ہندوؤں دونوں کی نئی اور طاقتور سرگرمی اسی وقت شروع ہوئی۔ جب دونوں میں مغربی تہذیب کی جگہ مذہبی تعلیم کی تحریکوں نے فروغ پا لیا۔

خلافت کانفرنس کلکتہ

۱۴۔ چار سال کے بعد پہلی جنوری ۱۹۲۰ء کو میں رہا کیا گیا۔ اس وقت سے گرفتاری کے لمحہ تک میرا تمام وقت انہی مقاصد کی اشاعت اور تبلیغ میں صرف ہوا ہے۔ ۲۸ اور ۲۹ فروری ۱۹۲۰ء کو اسی کلکتہ کے ٹاؤن ہال میں خلافت کانفرنس کا جلسہ ہوا تھا اور مسلمانوں نے مجبور ہو کر اپنا آخری اعلان کر دیا تھا۔

"اگر برٹش گورنمنٹ نے مطالباتِ خلافت کی اب بھی سماعت نہ کی تو مسلمان اپنے شرعی احکام سے مجبور ہو جائیں گے کہ تمام وفادارانہ تعلقات منقطع کر لیں۔"

میں اس کانفرنس کا پریزیڈنٹ تھا۔

میں نے اس کے طولانی پریزیڈنشل ایڈریس میں وہ تمام امور بہ تفصیل بیان کر دیے تھے جو اس قدر ناقص شکل میں ان دو تقریروں کے اندر دکھلائے گئے ہیں۔

موالات اور فوجی ملازمت

میں نے اسی ایڈریس میں اس اسلامی حکم کی بھی تشریح کر دی تھی، جس کی بنا پر مسلمانوں کا مذہبی فرض ہے کہ موجودہ حالت میں گورنمنٹ سے "ترک موالات" کریں۔ یعنی کوآپریشن اور اعانت سے ہاتھ کھینچ لیں۔ یہی "ترک موالات" ہے جو آگے چل کر "نان کوآپریشن" کی شکل میں نمودار ہوا اور مہاتما گاندھی جی نے اس کی سربراہی کی۔

اسی کانفرنس میں فوج کے متعلق وہ ریزولیوشن منظور ہوا تھا جس میں اسلامی قانون کے بموجب مسلمانوں کے لیے فوجی نوکری ناجائز بتلائی گئی تھی۔ کیونکہ گورنمنٹ اسلامی خلافت اور اسلامی ملکوں کے خلاف برسرپیکار ہے۔ کراچی کا مقدمہ اسی ریزولیوشن کی بنا پر



چلایا گیا۔ میں بار بار اخبارات اور تقریروں میں اعلان کر چکا ہوں۔ کہ یہ ریزولیوشن سب سے پہلے میں نے ہی تیار کیا تھا اور میری ہی صدارت میں تین دفعہ منظور ہوا۔ سب سے پہلے کلکتہ میں پھر دہلی اور لاہور میں۔ پس اس جرم کی تعزیر کا بھی بلاشرکت غیرے حقدار میں ہی ہوں۔

میں نے اس ایڈریس کو مزید اضافہ کے ساتھ کتاب کی شکل میں بھی مرتب کیا۔ جو انگریزی ترجمہ کے ساتھ بار بار شائع ہو چکا ہے اور گویا میرے "جرائم" کا ایک تحریری ریکارڈ ہے۔

میری زندگی سرتاسر ۱۲۴۔ الف

۱۵۔ میں نے گذشتہ دو سال کے اندر تنہا اور مسٹر گاندھی کے ساتھ تمام ہندوستان کا بار بار دورہ کیا۔ کوئی شہر ایسا نہیں ہے جہاں میں نے خلافت، پنجاب، سوراج اور نان کوآپریشن پر بار بار تقریریں نہ کی ہوں اور وہ تمام باتیں نہ کہی ہوں جو میری ان دو تقریروں میں دکھلائی گئی ہیں۔

دسمبر ۱۹۲۰ء میں انڈین نیشنل کانگریس کے ساتھ آل انڈیا خلافت کانفرنس کا بھی اجلاس ہوا۔ اپریل ۱۹۲۱ء میں جمعیۃ العلماء کا بریلی میں جلسہ ہوا۔ گزشتہ اکتوبر میں یو۔ پی پراونشل خلافت کانفرنس آگرہ میں منعقد ہوئی۔ نومبر میں آل انڈیا علماء کانفرنس کا لاہور میں اجلاس ہوا۔ ان تمام کانفرنسوں کا بھی میں ہی صدر تھا۔ لیکن ان میں بھی تمام مقررین نے جو کچھ کہا اور صدارتی تقریروں میں میں نے جو خیالات ظاہر کیے ان سب میں وہ تمام باتیں موجود تھیں، جو ان دو تقریروں میں دکھلائی گئی ہیں۔ بلکہ میں اقرار کرتا ہوں کہ ان سے بہت زیادہ قطعی و واضح خیالات ظاہر کیے گئے تھے۔

اگر میری ان دو تقریروں کے مطالب دفعہ ۱۲۴۔ الف کا جرم ہیں تو میں نہیں سمجھتا کہ پہلی اور پندرھویں جولائی ہی کا ارتکاب کیوں منتخب کیا گیا ہے۔ میں تو اس کثرت کے ساتھ اس کا ارتکاب کر چکا ہوں کہ فی الواقع اس کا شمار میرے لیے ناممکن ہو گیا ہے۔ مجھے کہنا پڑے گا کہ میں نے گزشتہ سالوں کے اندر بجز ۱۲۴۔ الف کے اور کوئی کام نہیں کیا۔

نان وایلنس نان کوآپریشن

۱۶۔ ہم نے آزادی اور حق طلبی کی اس جنگ میں "نان وایلنس نان کوآپریشن" کی راہ اختیار کی ہے۔ ہمارے مقابلے میں طاقت اپنے تمام جبر و تشدد اور خون ریز وسائل کے ساتھ کھڑی ہے لیکن ہمارا اعتقاد صرف خدا پر ہے اور اپنی غیر مختتم قربانی اور غیر متزلزل استقامت پر۔ مہاتما گاندھی کی طرح میرا یہ اعتقاد نہیں ہے کہ کسی حال میں بھی ہتھیار کا مقابلہ ہتھیار سے نہیں کرنا چاہیے۔ اسلام نے جن حالتوں میں اس کی اجازت دی ہے میں اسے فطرت الٰہی اور عدل و اخلاق کے مطابق یقین کرتا ہوں لیکن ساتھ ہی ہندوستان کی آزادی اور موجودہ جدوجہد کے لیے مہاتما گاندھی کے تمام دلائل سے متفق ہوں اور ان دلائل کی سچائی پر پورا اعتقاد رکھتا ہوں۔ میرا یقین ہے کہ ہندوستان نان وایلنس جدوجہد کے ذریعہ فتح مند ہوگا اور اس کی فتح مندی اخلاقی و ایمانی فتح مندی کی یادگار مثال ہوگی۔

یہی وجہ ہے کہ میں نے ہمیشہ لوگوں کو باامن جدوجہد کی تلقین کی اور اسی کو کامیابی کی سب سے پہلی شرط قرار دیا۔ خود یہ تقریریں بھی اسی موضوع پر تھیں جیسا کہ پیش کردہ نقول سے بھی ثابت ہوتا ہے۔ میں ان چند مسلمانوں میں سے ہوں جو بجا طور پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ اگر انھوں نے نہایت مضبوطی کے ساتھ مسلمانوں کو باامن جدوجہد پر قائم نہ رکھا ہوتا تو نہیں معلوم مسئلہ خلافت کی وجہ سے ان کا صبر آزما اضطراب کیسی خوفناک شکل اختیار کر لیتا؟ کم از کم ہندوستان کے ہر حصہ میں "مالی بار" کا منظر تو ضرور نظر آ جاتا۔

سی آئی ڈی کے رپورٹر

۱۷۔ اب جبکہ میں ان دو تقریروں کے تمام ان حصوں کا اقرار کر چکا ہوں جن سے پراسیکیوشن استدلال کر سکتا ہے تو کوئی مضائقہ نہیں اگر چند الفاظ ان کی پیش کردہ صورت کی نسبت بھی کہہ دوں۔

سی آئی ڈی کے گواہوں نے بیان کیا ہے کہ میری تقریروں کے نوٹس بھی لیے گئے اور مختصر نویسی کے ذریعہ بھی قلم بند کی گئیں۔ جو کاپی داخل کی گئی ہے (اگزویٹ اے اور سی) وہ مختصر نویس کی مرتب کی ہوئی ہے۔ لیکن یہ میری تقریروں کی ایسی مسخ شدہ صورت ہے کہ اگر چند ناموں اور واقعات کی طرف اشارہ نہ ہوتا تو میرے لیے شناخت کرنا بھی بہت مشکل تھا۔ وہ بلاشبہ ایک چیز ہے جو دور تک پھیلتی ہوئی چلی گئی ہے۔ لیکن میں نہیں جانتا کہ کیا چیز ہے؟ محض بے جوڑ، بے تعلق اور اکثر مقامات پر بے معنی جملے ہیں۔ جو بغیر کسی ربط اور سلسلہ کے صفحوں پر بکھیر دیے گئے

ہیں۔ گرامر اور محاورہ دونوں سے انھیں یک قلم انکار ہے۔ صاف معلوم ہوتا ہے کہ رپورٹر تقریر سمجھنے اور قلم بند کرنے سے عاجز تھا۔ اس لیے درمیان سے جملوں کے جملے چھوڑ دیا جاتا ہے اور تمام حروف ربط و تحلیل تو بالکل ہی حذف کر دیے ہیں۔ اس سے بھی بڑھ کر یہ کہ تمام وہ الفاظ جن کی آواز یا [illegible] املا میں ذرا سا بھی تشابہ ہے بالکل بدل گئے ہیں اور عبارت بالکل بے معنی ہو گئی ہے یا محذوف۔

مثلاً میں نے جامعہ عثمانیہ کی تقریر میں مشہور شاعر اور ادیب وکیلؔ مولوی کا قول نقل کیا تھا:

"وہ آزادی کا بیج کبھی بار آور نہیں ہو سکتا جب تک ظلم کے پانی سے اس کی آبیاری نہ ہو۔"

مختصر نویس نے "ظلم" کی جگہ "دھرم" لکھ دیا جو صریح غلط اور بے موقع ہے البتہ اس کی آواز "ظلم" سے مشابہ ہے۔

اسی طرح ایک مقام پر تھا:-

"انھوں نے جیل جانے کی مصیبت کو برباد کیا ہے۔"

حالانکہ مصیبت کو برباد کرنے کے کوئی معنی نہیں ہو سکتے۔ خیال کیجیے "برداشت کیا ہے" کہا ہوگا یعنی انھوں نے جیل کی مصیبت جھیلی ہے۔ چونکہ دونوں لفظوں کی آواز ملتی جلتی ہے اور مختصر نویس خود فہم و امتیاز سے محروم ہے، اس لیے برداشت کی جگہ برباد لکھ گیا۔

اردو مختصر نویسی

اصل یہ ہے کہ اردو مختصر نویسی کا فقدان اور مختصر نویس کی نااہلیت دونوں ان نقائص کے لیے ذمہ دار ہیں۔

اردو مختصر نویسی کا [illegible] تاریخ لکھنؤ کے دو پروفیسروں نے ایجاد کیا جن میں سے ایک کا نام ڈاکٹر [illegible] ہے۔ میں اس وقت لکھنؤ ہی میں تھا اس لیے مجھے ذاتی طور پر اس کے دیکھنے اور جانچنے کا بارہا اتفاق ہوا۔ مجھے معلوم ہے کہ اس کے موجدوں نے انگریزی علامات کو بہت تھوڑے سے تغیر کے ساتھ [illegible] مرتب کیا لیکن وہ اردو حروف [illegible] کی آوازیں محفوظ رکھنے میں کامیاب نہ ہو سکے۔ خود انھیں بھی اس نقص کا احساس تھا۔ لیکن وہ خیال کرتے تھے کہ مختصر نویس کی ذاتی قابلیت اور حافظہ و مناسبت سے اس کی تلافی ہو جائے گی۔ میں اپنے ذاتی معلومات کی بنا پر کہتا ہوں کہ تجربے سے ان کا خیال درست نہ نکلا۔

حکومت متحدہ کی گورنمنٹ نے ابتدا میں تجربے کے لیے دو پولیس انسپکٹروں کو تعلیم دلائی تھی۔ انھوں نے سب سے پہلے آزمائشی طور پر جن تقریروں کو قلم بند کیا میں بتانا چاہتا ہوں [illegible] شمس العلماء مولوی شبلی نعمانی مرحوم کی تقریر تھی، ہم دونوں نے انجمن اسلامیہ [illegible] کے سالانہ جلسے میں لکچر دیے تھے۔ مجھے اچھی طرح یاد ہے کہ مولانا شبلی نعمانی نے [illegible] کی رفتار سے تقریر کی تھی اور میری تقریر کی رفتار [illegible] تک تھی۔ جیسا کہ خود مختصر نویسوں نے [illegible] کیا تھا [illegible] تاہم جب انھوں نے اپنا کام [illegible] کر کے دکھایا تو بالکل ناقص اور غلط تھا۔ اس کے بعد بھی مجھے بارہا [illegible] کا اتفاق ہوا لیکن ہمیشہ ایسا ہی نتیجہ نکلا۔ [illegible]

ایک مثال مختصر نویس [illegible] کی [illegible] گیا جو [illegible] کے [illegible] میں [illegible] دکھایا [illegible] صحیح [illegible] تھا۔

[illegible] دو مختصر نویس [illegible] کی [illegible] آسانی [illegible] سمجھ لی جائے کہ ہندوستان کی مخصوص [illegible] نے اس نقص کو [illegible] مصیبت بنا دیا ہے۔ یہاں کے [illegible] اردو زبان سے بالکل ناواقف ہیں [illegible] بول بھی نہیں سکتے۔ ان کے [illegible] وہ آدمی جو انگریزی زبان سے کسی مختلف [illegible] میں آواز نکال [illegible] اردو [illegible] ترجمہ [illegible] کہ پولیس اور عدالت ان رپورٹروں اور مختصر نویسوں کو بطور سند کے استعمال کرتی ہے جن بیچاروں کی استعداد پر ہم لوگ تمسخر کیا کرتے ہیں۔

میں وثوق کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ کلکتہ کی پولیس اور عدالتوں میں ایک شخص بھی اردو زبان کے لیے قابل اعتماد نہیں ہے۔ اگر یہاں اس حقیقت کا کچھ بھی احساس ہوتا تو [illegible] یہ بات [illegible] ایک عجیب و غریب خیال کی جاتی [illegible] تقریروں کے [illegible] پولیس اور [illegible] رپورٹروں کی شہادت لی جاتی ہے۔ [illegible] بے حقیقت ہوتی ہے۔

مشرقی لٹریچر اور [illegible] کاری و مسائل علم

[illegible] ضرورت نہیں [illegible] ڈاکٹر [illegible] کی [illegible] تنہا [illegible] اعتماد [illegible] نہیں



کر رہا ہوں۔ میں تو پورا پورا اقرار کر چکا ہوں مفقود صرف دو باتوں کا اظہار ہے۔

اولاً جو سرکاری مقدمات اردو تحریر و تقریر کی بنا پر چلائے جاتے ہیں، ان کے وسائل ثبوت کس درجہ ناکارہ اور ناقابلِ اعتماد ہیں؟

ثانیاً ہندوستان کی بیوروکریسی کی ناکامیابی اور ناموافقت، وہ ڈیڑھ سو برس حکومت کر کے بھی اس قابل نہیں ہوئی کہ ہندوستانی زبانوں کے متعلق صحیح اور مستند ذرائع سے معلومات حاصل کر سکتی۔ مجھے یاد ہے کہ جب اکتوبر ۱۹۱۶ء میں نظر بند کیا گیا اور بہار گورنمنٹ کے حکام اور پولیس افسر (جن کو اردو زبان سے بمقابلہ بنگالی کے زیادہ تعلق ہے) تلاشی کے لیے آئے تو انھوں نے میری تمام کتابوں کو بھی ایک خوفناک لٹریچر سمجھ کر نہایت احتیاط کے ساتھ قبضہ میں کر لیا۔ یہ تمام کتابیں عربی اور فارسی زبانوں میں تھیں اور تاریخ، فقہ، فلسفہ کا معمولی مطبوعہ ذخیرہ تھا جو بازاروں میں فروخت ہوتا رہتا ہے۔ صرف ایک کتاب "مطالب عالیہ" نامی قلمی تھی، جو سب سے زیادہ پُراسرار سمجھی گئی۔ لطف یہ ہے کہ ان کی فہرست ڈپٹی کمشنر کی درخواست سے مجھے ہی مرتب کرنی پڑی۔ کیونکہ تفتیش جرائم کے اس پورے کمیشن میں ایک شخص بھی اس قابل نہ تھا کہ کتابوں کے ٹائٹل پیج کو صحت کے ساتھ پڑھ لیتا۔

میں نے نظر بندی کے زمانے میں چار سال تک اپنی ڈاک کے لیے خود ہی سنسرشپ کے فرائض بھی انجام دیے ہیں۔ کیونکہ جو سرکاری افسر اس غرض سے مقرر کیا گیا تھا وہ اس قدر قابل آدمی تھا کہ اردو کے معمولی لکھے ہوئے خطوط بھی نہیں پڑھ سکتا تھا۔ وہ اکثر میری ڈاک صرف دستخط کر کے بھیج دیتا اور شب کو آ کر مجھ سے اس کا ترجمہ لکھوا لیتا۔

جب کہ نظر بندی میں میں اپنی ڈاک کی خود ہی نگرانی کر رہا تھا تو شملہ اور دہلی کے حکام اپنی کارفرمائی پر نہایت نازاں تھے اور سمجھتے تھے کہ انھوں نے اپنے ایک خطرناک دشمن کو بالکل مجبور اور معطل کر دیا ہے۔

اس وقت بھی میرے قلمی مسودات کلکتہ پولیس کے قبضہ میں ہیں۔ ان میں سب سے زیادہ خوفناک جرم تاریخ، تفسیر قرآن اور لٹریچر ہے۔

میں یہاں عربی داں اشخاص کی دلچسپی کے لیے ان کتابوں کے چند نام درج کر دیتا ہوں جنھیں نہایت خوفناک سمجھ کر پولیس نے شملہ بھیجا تھا اور عرصہ تک سر چارلس کلیولینڈ کے حکم سے میری نظر بندی کے دیگر معاملات کی طرح ان کی بھی تحقیقات ہوتی رہی۔

فتح القدیر، شرح ہدایہ، طبقات الشافعیہ سبکی، ازالۃ الخفاء، کتاب الام، مدونہ امام مالکؒ، مطالب عالیہ امام رازی، شرح حکمۃ الاشراق، شرح مسلم الثبوت، بحر العلوم، کتاب المستصفیٰ، کتاب اللمع۔

اصل یہ ہے کہ کسی جرم کے لیے جو لٹریچر سے تعلق رکھتا ہو، کوئی ایسی عدالت منصفانہ کارروائی نہیں کر سکتی جو ذاتی طور پر رائے قائم نہ کر سکے۔ یعنی خود اس بات سے واقف نہ ہو۔ لیکن موجودہ بیوروکریسی علاوہ بیوروکریسی ہونے کے غیر ملکی بھی ہے اس لیے ہر گوشہ میں اجنبی اقتدار کی غلامی کے نتائج کام کر رہے ہیں۔ عدالتیں ہندوستان کی ہیں اور ہندوستانیوں کے لیے ہیں۔ لیکن ان کی زبان جزیرہ برطانیہ کی ہے اور اکثر حالتوں میں ایسے افراد سے مرکب ہیں۔ جو ملکی زبان کا ایک لفظ بھی نہیں جانتے۔

یہی وجہ ہے کہ اب ہم اس گورنمنٹ سے اور کچھ نہیں چاہتے صرف یہ چاہتے ہیں کہ جس قدر بھی جلد ممکن ہو وہ اپنے سے بہتر اور حقدار کے لیے اپنی جگہ خالی کر دے۔

موجودہ حالت قدرتی ہے

۸۱۔ میں جیسا کہ ابتدا میں لکھ چکا ہوں۔ خاتمۂ سخن میں بھی دہراؤں گا۔ آج گورنمنٹ جو کچھ ہمارے ساتھ کر رہی ہے وہ غیر معمولی بات نہیں ہے جس کے لیے خاص طور پر اسے ملامت کی جائے۔ قومی بیداری کے مقابلے میں مقاومت اور جبر و تشدد تمام قابض حکومتوں کے لیے طبیعت ثانیہ (سیکنڈ نیچر) کا حکم رکھتا ہے اور ہمیں یہ توقع نہیں رکھنی چاہیے کہ ہماری خاطر انسانی طبیعت بدل جائے گی۔

یہ قدرتی کمزوری افراد اور جماعت دونوں میں یکساں طور پر نمود رکھتی ہے۔ دنیا میں کتنے آدمی ہیں جو اپنے قبضہ میں آئی ہوئی چیز صرف اس لیے لوٹا دیں گے کہ وہ اس کے حق دار نہیں! پھر ایک پورے براعظم کے لیے ایسی امید کیوں کر کی جا سکتی ہے؟ طاقت کبھی کسی بات کو صرف اس لیے نہیں مان لیتی کہ وہ معقول اور مدلل ہے۔ وہ خود طاقت کی نمود کا انتظار کرتی ہے اور جب وہ نمودار ہو جاتی ہے تو پھر ناواجب سے ناواجب مطالبہ کے آگے بھی جھک جاتی ہے۔ پس کشمکش اور انتظار ناگزیر ہے اور ایک ایسی قدرتی بات ہے جس کو بالکل دنیا کے معمولی کاموں کی طرح بلا کسی تعجب اور شکایت کے انجام پانا چاہیے۔



میں یہ بھی تسلیم کرتا ہوں کہ تاریخ نے اس بارے میں انسانی ظلم و تعدی کے جو ہیبت ناک مناظر دکھلائے ہیں، ان کے مقابلے میں موجودہ جبر و تشدد کسی طرح بھی زیادہ نہیں کہا جا سکتا۔ البتہ میں نہیں کہہ سکتا کہ یہ کمی اس لیے ہے کہ ظلم زیادہ مکمل نہیں ہے مستقبل اس کو واضح کر دے گا۔

جس طرح اس کشمکش کا آغاز ہمیشہ یکساں طور پر ہوا ہے اسی طرح خاتمہ بھی ایک ہی طرح ہوا ہے۔ ہمیں معلوم ہے کہ اگر ہمارا جذبۂ آزادی و حق طلبی سچا اور اٹل ثابت ہوا تو یہی گورنمنٹ جو آج ہمیں مجرم ٹھہرا رہی ہے، کل کو نغمۂ منتِ محب الوطنوں کی طرح ہمارے استقبال پر مجبور ہوگی۔

بغاوت

۱۹۔ مجھ پر سڈیشن کا الزام عاید کیا گیا ہے لیکن مجھے "بغاوت" کے معنی سمجھ لینے دو۔ کیا "بغاوت" آزادی کی اس جد و جہد کو کہتے ہیں جو ابھی کامیاب نہیں ہوئی ہے؟ اگر ایسا ہے تو میں اقرار کرتا ہوں لیکن ساتھ ہی یاد دلاتا ہوں کہ اسی کا نام قابلِ احترام حب الوطنی بھی ہے جب وہ کامیاب ہو جائے۔ کل تک آئرلینڈ کے مسلح لیڈر باغی تھے لیکن آج ڈی ویلرا اور گریفتھ کے لیے برطانیہ عظمیٰ کونسا لقب تجویز کرتی ہے۔

اسی آئرلینڈ کے پارنل PARNAL نے ایک مرتبہ کہا تھا: "ہمارا کام ہمیشہ ابتدا میں بغاوت اور آخر میں حب الوطنی کی مقدس جنگ تسلیم کرنا ہے۔

قانون "قضاء بالحق"

۲۰۔ میں مسلمان ہوں اور میرے یقین کے لیے وہ بس کرتا ہے جو میری کتاب شریعت نے بتلایا ہے۔ قرآن کہتا ہے: جس طرح مادہ اور اجسام میں انتخاب طبیعی NATURAL SELECTION اور بقائے اصلح SURVIVAL OF THE FITTEST کا قانون جاری ہے اور فطرت صرف اسی وجود کو باقی رہنے دیتی ہے جو صحیح و اصل ہو۔ ٹھیک اسی طرح تمام عقائد اور اعمال میں بھی قانون کام کر رہا ہے۔ آخری فتح اسی عمل کی ہوتی ہے جو حق ہو اور اس لیے باقی و قائم رہنے کا حق دار ہو۔ پس جب کبھی انصاف اور ناانصافی میں مقابلہ ہوگا تو آخری جیت انصاف ہی کے حصہ میں آئے گی۔

وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ

زمین پر وہی چیز باقی رہے گی جو نافع ہو۔ غیر نافع چھانٹ دی جائے گی۔

یہی وجہ ہے کہ قرآن کی اصطلاح میں سچائی کا نام "حق" ہے جس کے معنی ہی جم جانے اور ثابت ہو جانے کے ہیں اور جھوٹ اور بدی کا نام باطل ہے جس کے معنے ہی مٹ جانے کے ہیں۔

اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا

باطل تو صرف اس لیے ہے کہ مٹ جائے۔

پس آج جو کچھ ہو رہا ہے اس کا فیصلہ کل ہوگا۔ انصاف باقی رہے گا۔ ناانصافی مٹ جائے گی۔ ہم مستقبل کے فیصلہ پر ایمان رکھتے ہیں۔

البتہ یہ قدرتی بات ہے کہ بدلیوں کو کہ بارش کا انتظار کیا جائے۔ ہم دیکھ رہے ہیں کہ موسم نے تبدیلی کی تمام نشانیاں قبول کر لی ہیں۔ افسوس ان آنکھوں پر جو نشانیوں سے انکار کریں۔

میں نے اپنی تقریروں میں جو میرے خلاف داخل کی گئی ہیں کہا تھا: "آزادی کا بیج کبھی بار نہیں ہو سکتا جب تک ظلم کے پانی سے اس کی آبیاری نہ ہو۔"

لیکن گورنمنٹ نے آبیاری شروع کر دی ہے۔

میں نے اپنی تقریروں میں کہا تھا: "مبتلا کی گرفتاری پر مغموم کیوں ہو! اگر تم فی الحقیقت انصاف اور آزادی کے طلب گار ہو تو جیل جانے کے لیے تیار ہو جاؤ۔ علی برادران جیل اس طرح بھر دو کہ اس کی کوٹھریوں میں جو لوگ ہیں جگہ باقی نہ رہے۔"

فی الحقیقت جگہ باقی نہیں رہی ہے۔ پریزیڈنسی اور سنٹرل جیل کا بڑا حصہ معمولی قیدیوں سے خالی کر دیا گیا۔ پھر بھی جگہ باقی نہ ہوئی۔ نیا جیل بنایا گیا وہ بھی آناً فاناً بھر گیا۔ جگہ نکالنے کے لیے سینکڑوں قیدی رہا کر دیے گئے لیکن ان سے دوگنے نئے آگئے اب مزید نئے جیل بنائے جا رہے ہیں۔

سرکاری وکیل، پولیس اور مجسٹریٹ

۲۱۔ قبل اس کے کہ میں اپنا بیان ختم کر دوں اپنے ہم وطن بھائیوں کی نسبت بھی ایک دو جملے کہوں گا جو اس مقدمہ میں میرے خلاف کام کر رہے ہیں۔ میں نے اوپر کہا ہے کہ سی آئی ڈی کا کا



ں رہ سکتے۔ یہ ضروری ہے کہ اپنے مستقبل کی
بناتے ہوئے ہم صرف اپنے چاروں طرف
نہ دیکھیں، بلکہ اس سے باہر کی دنیا پر بھی برابر
رکھیں۔ زمانے کی بے شمار تبدیلیوں نے ملکوں
قوموں کو اس طرح ایک دوسرے سے نزدیک
دیا ہے، اور فکر اور عمل کی لہریں ایک گوشے میں
کر اس تیزی کے ساتھ دوسرے گوشوں پر اپنا
اثر شروع کر دیتی ہیں کہ آج کل کی حالت میں ممکن
ہیں، ہندوستان اپنے مسئلوں کو صرف اپنی
دیواری کے اندر ہی بند رہ کر سوچ سکے۔ یہ
رہ ہے کہ باہر کے حالات، ہمارے حالات پر
ری اثر ڈالیں۔ اور ناگزیر ہے کہ ہماری حالتوں
فیصلوں سے دنیا کی حالتوں اور فیصلوں پر
پڑے۔ یہی احساس تھا جس نے اس فیصلے
شکل اختیار کی۔ ہم نے ان تجویزوں کے ذریعے
علان کیا کہ یورپ میں جمہوریت اور انفرادی
قومی آزادی کے خلاف فیشزم اور نازی ازم
جو ارتجاعی (Rea-tionary) ری
تری) تحریکیں روز بروز طاقت پکڑتی جاتی
ں، ہندوستان انھیں دنیا کی ترقی اور امن کے
ایک عالمگیر خطرہ تصور کرتا ہے۔ اور اُس کا
ل اور دماغ اُن قوموں کے ساتھ ہے جو جمہوریت
ر آزادی کی حفاظت میں اِن تحریکوں کا مقابلہ
رہی ہیں۔

لیکن جب فیشی ازم اور نازی ازم کے خطروں
خلاف ہمارا دماغ جارہا تھا تو ہمارے لیے
ممکن تھا کہ ہم اُس پرانے خطرے کو بھلا دیتے۔
اِن نئی قوتوں سے کہیں زیادہ قوموں کے امن
ر آزادی کے لیے مہلک ثابت ہو چکا ہے، اور
س نے فی الحقیقت ان نئی ارتجاعی (-Reacti
onary) تحریکوں کی پیدائش کا سارا مواد بہم پہنچایا ہے۔ میرا اشارہ برطانیہ کی سامراجی قوت کی طرف ہے۔ اسے ہم ان نئی ارتجاعی (-Reac tionary) قوتوں کی طرح دور سے نہیں دیکھ رہے، یہ خود ہمارے گھر پر قبضہ جمائے ہمارے سامنے کھڑی ہے۔ اس لیے ہم نے صاف صاف لفظوں میں یہ بات بھی کھول دی کہ اگر یورپ کی اس نئی کشمکش نے لڑائی کی شکل اختیار کر لی تو ہندوستان جو اپنے آزاد ارادے اور آزاد پسند سے محروم کر دیا گیا ہے، اس میں کوئی حصّہ نہیں لے گا۔ وہ صرف اسی حالت میں حصّہ لے سکتا ہے، جب کہ اُسے اپنی آزاد مرضی اور پسند سے فیصلہ کرنے کی حیثیت حاصل ہو۔ وہ نازی ازم اور فیشی ازم سے بیزار ہے۔ مگر اس سے بھی زیادہ برطانوی شہنشاہیت سے بیزار ہے۔ اگر ہندوستان اپنی آزادی کے قدرتی حق سے محروم رہتا ہے، تو اس کے صاف معنی یہ ہیں کہ برطانوی شہنشاہیت اپنی تمام تر روایتی خصوصیتوں کے ساتھ زندہ ہے۔ اور ہندوستان کسی حال میں تیار نہیں کہ برطانوی شہنشاہی کی فتحمندیوں کے لیے مدد دے۔

یہ دوسری بات تھی جس کا یہ تجویزیں لگاتار اعلان کرتی رہیں۔

یہ تجویزیں کانگریس کے اجلاس لکھنؤ سے لے کر اگست ۱۹۳۹ء تک منظور ہوتی رہیں۔ اور "لڑائی کی تجویزوں" کے نام سے مشہور رہیں۔

کانگریس کے یہ تمام اعلان برٹش گورنمنٹ کے سامنے تھے کہ اچانک اگست ۱۹۳۹ء کے تیسرے ہفتے میں لڑائی کے بادل گرجنے لگے۔ اور ۳ ستمبر کو خود لڑائی بھی شروع ہو گئی۔

اب میں اس موقع پر آپ کو ایک لمحے کے لیے آگے بڑھنے سے روکوں گا۔ اور درخواست کروں گا کہ ذرا پیچھے مڑ کر دیکھیے، پچھلے اگست کو آپ نے کن حالات میں چھوڑا ہے۔؟

برطانوی حکومت نے گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ ۱۹۳۵ء ہندوستان کے سر جبراً تھوپا اور حسب معمول دنیا کو یہ باور کرانے کی کوشش کی کہ اس نے ہندوستان کو اس کے قومی حق کی ایک بہت بڑی قسط دے دی ہے۔ کانگریس کا فیصلہ اس بارے میں دنیا کو معلوم ہے۔

تاہم اس نے کچھ عرصے کے لیے دم لینے کا ارادہ کیا، اور اس پر آمادہ ہو گئی کہ ایک خاص شرط کے ساتھ وزارتوں کا قبول کرنا منظور کر لے۔ اب گیارہ صوبوں میں سے آٹھ صوبوں میں اس کی وزارتیں کامیابی کے ساتھ کام کر رہی تھیں، اور یہ بات خود برطانوی حکومت کے حق میں تھی کہ اس حالت کو جس قدر زیادہ مدت تک قائم رکھا جا سکتا ہے، قائم رکھے۔ ساتھ ہی صورت حال کا ایک دوسرا پہلو بھی تھا۔ جہاں تک لڑائی کی ظاہری صورت کا تعلق ہے، ہندوستان صاف صاف لفظوں میں نازی جرمنی سے اپنی بیزاری کا اعلان کر چکا تھا۔ اُس کی ہمدردیاں جمہوریت پسند کرنے والی قوموں کے ساتھ تھیں، اور صورتِ حال کا یہ پہلو بھی برطانوی حکومت کے حق میں تھا۔ ایسی حالت میں قدرتی طور پر یہ توقع کی جا سکتی تھی کہ اگر برطانوی حکومت کی پرانی سامراجی ذہنیت (Mentality) میں کچھ بھی تبدیلی ہوئی ہے تو کم از کم ڈپلومیسی (Diplomacy) ہی کی خاطر وہ اس کی ضرورت ضرور محسوس کرے گی۔ کہ اس موقع پر اپنا پرانا ڈھنگ بدل دے، اور ہندوستان کو ایسا محسوس کرنے کا موقع دے کہ اب وہ ایک بدلی ہوئی آب و ہوا



ں سانس لے رہا ہے۔ لیکن ہم سب کو معلوم ہے کہ
س موقع پر برطانوی حکومت کا طرزِ عمل کیسا رہا۔
بدیلی کی کوئی ذرا سی پرچھائیں بھی اس پر پڑتی
ہوئی دکھائی نہیں دی۔ ٹھیک اسی طرح جیسا کہ
س کے سامراجی مزاج کا ڈیڑھ صدی سے خاصہ
رہا ہے۔ اس نے اپنے طرزِ عمل کا فیصلہ کرلیا، اور
بغیر اس کے کہ کسی شکل اور کسی درجے تک بھی ہندوستان
کو اپنی رائے ظاہر کرنے کا موقع دیا گیا ہو، لڑائی میں
اس کے شامل ہوجانے کا اعلان کردیا گیا۔ اس
بات کی ضرورت محسوس نہیں کی گئی کہ ان نمائندہ
سمبلیوں ہی کو اپنی رائے ظاہر کرنے کا ایک موقع
دے دیا جائے جسے خود برطانوی حکومت نے اپنی
سیاسی بخششوں کی نمائش کرتے ہوئے ہندوستان
کے سر تھوپا ہے۔

تمام دنیا کی طرح ہمیں بھی معلوم ہے کہ اس
موقع پر برٹش امپائر کے تمام ملکوں کو اپنے اپنے
طرزِ عمل کے فیصلہ کا کس طرح موقع دیا گیا تھا۔
کینیڈا، آسٹریلیا، نیوزی لینڈ، جنوبی افریقہ،
آئرلینڈ، سب نے لڑائی میں شریک ہونے کا فیصلہ
اپنی اپنی قانون ساز مجلسوں میں بغیر کسی باہر کی
مداخلت کے کیا۔ اور اس کے اس فیصلہ پر برطانیہ
کے کسی باشندے کو تعجب نہیں ہوا۔ مسٹر ڈی ولیرا
نے برطانیہ کے ہمسایہ میں کھڑے ہوکر صاف صاف
کہہ دیا تھا کہ جب تک آلسٹر (Ulster) کا سوال
قابلِ اطمینان طریقہ پر طے نہیں ہوتا، وہ برطانیہ
کی مدد کرنے سے انکار کرتا ہے۔

لیکن برطانوی نوآبادیوں (Dominions) کے اس پورے موقع میں ہندوستان کی
جگہ کہاں دکھائی دے رہی ہے؟ جس ہندوستان
کو آج یہ قیمتی خوش خبری سنائی جارہی ہے کہ اسے
برطانوی حکومت کے فیاض ہاتھوں سے جلد، مگر
کسی نامعلوم زمانے میں برطانوی نوآبادیوں
(Dominions) کا درجہ (Status)
ملنے والا ہے، اس کی ہستی کا کیونکر اعتراف کیا گیا؟
اس طرح کہ اسے دنیا کی تاریخ کی شاید سب سے
بڑی بننے والی لڑائی میں اچانک دھکیل دیا گیا بغیر
اس کے کہ اُسے معلوم بھی ہوا ہو کہ وہ لڑائی میں شریک
ہو رہا ہے۔

صرف یہی ایک واقعہ اس کے لیے کافی ہے کہ
برطانوی حکومت کے موجودہ مزاج اور رُخ کو ہم
اُس کے اصلی رنگ روپ میں دیکھ لیں۔ مگر نہیں ہمیں
جلدی نہیں کرنی چاہیے۔ ہمیں اور موقع بھی پیش
آنے والے ہیں۔ وہ وقت دُور نہیں، جب ہم اُسے
اور زیادہ نزدیک سے، اور اُور زیادہ بے پردہ
دیکھنے لگیں گے۔

۱۹۱۴ء کی لڑائی کی پہلی چنگاری بلقان
کے ایک گوشہ میں سُلگی تھی۔ اس لیے انگلستان اور
فرانس نے چھوٹی قوموں کے حقوق کا نعرہ لگانا شروع
کردیا تھا۔ پھر یادش بخیر، پریسیڈنٹ ولسن کے
چودہ نکتے دنیا کے سامنے آئے۔ اور ان کا جو کچھ حشر
ہوا، دنیا کو معلوم ہے۔ اس مرتبہ صورتِ حال دوسری
تھی۔ پچھلی لڑائی کے بعد انگلستان اور فرانس نے
اپنی فتحمندی کے نشے میں چور ہوکر جو طرزِ عمل اختیار
کیا تھا، اس کا لازمی نتیجہ تھا کہ ایک نیا ردِ فعل
(Reaction) شروع ہوجائے۔ وہ شروع ہوا۔
اس نے اٹلی میں فیشزم اور جرمنی میں نازیزم کا روپ
اختیار کیا۔ اور وحشیانہ طاقت کی بنیادوں پر بے
روک آمریت دنیا کے امن اور آزادی کو چیلنج
دینے لگی۔ جب یہ صورتِ حال پیدا ہوئی تو قدرتی
طور پر دو نئی صفیں دنیا کے سامنے آکھڑی ہوئیں۔
ایک جمہوریت اور آزادی کا ساتھ دینے والی، دوسری
ارتجائی (Reactionary) قوتوں کو آگے
بڑھانے والی۔ اور اس طرح لڑائی کا ایک نیا
نقشہ بننا شروع ہوگیا۔ مسٹر چیمبرلین کی حکومت
جس کے لیے فیشسٹ اٹلی اور نازی جرمنی سے کہیں
زیادہ سوویٹ روس کی ہستی ناقابلِ برداشت
تھی، اور جو اسے برطانوی سامراج کے لیے ایک زندہ
چیلنج سمجھتی تھی، تین برسوں تک اس منظر کا تماشا
دیکھتی رہی۔ اتنا ہی نہیں، بلکہ اُس نے اپنے طرزِ عمل
سے کھلے طور پر فیشسٹ اور نازی قوتوں کی جرأتیں
ایک کے بعد ایک بڑھائیں۔ ابے سینیا، اسپین،
آسٹریلیا، چیکوسلاواکیا، اور البانیہ کی ہستیاں
ایک کے بعد ایک دنیا کے نقشے سے مٹتی گئیں۔ اور
برطانوی حکومت نے اپنی ڈگمگاتی ہوئی پالیسی سے
انھیں دفن کرنے میں برابر مدد دی۔ لیکن جب اس
طرزِ عمل کا قدرتی نتیجہ اپنی انتہائی شکل میں اُبھر
آیا، اور نازی جرمنی کا قدم بے روک آگے بڑھنے
لگا، تو برطانوی حکومت بالکل بے بس ہوگئی۔ اُسے
لڑائی کے میدان میں اُترنا پڑا۔ کیونکہ اگر اب تو اُترتی
تو جرمنی کی طاقت برطانوی شہنشاہی کے لیے
ناقابلِ برداشت ہوجاتی۔ اب چھوٹی قوموں کی
آزادی کے بدلے نعرے کی جگہ "جمہوریت"، "آزادی"
اور عالمگیر امن کے نئے نعروں نے لے لی۔ اور تمام
دنیا ان صداؤں سے گونجنے لگی۔ ستمبر کا اعلانِ جنگ
انگلستان اور فرانس نے ان ہی صداؤں کی گونج
میں کیا۔ اور دنیا کی ان تمام بے چین روحوں نے جو
یورپ کی نئی ارتجاعی (Reactionary)
قوتوں کی وحشیانہ زور آزمائیوں اور عالمگیر بدامنی
کے عذاب سے حیران اور سراسیمہ ہو رہی تھیں، ان
خوشنما صداؤں پر کان لگا دیے:

[کا]نگریس کا مطالبہ

[illegible] اعلان ہوا [illegible] کانگریس ورکنگ کمیٹی [illegible] منعقد ہوئی [illegible] صورت حال پر غور [illegible] کانگریس کے [illegible] سامنے [illegible] ۱۹۳۶ [illegible] ہیں [illegible] عمل [illegible] ابھی حل نہیں تھا [illegible] فیصلہ کردیتی [illegible] حالات [illegible] منطقی نتیجہ تھا [illegible] سا تھ اپنے [illegible] فرصت [illegible] [illegible] انہوں نے [illegible] ہندوستان [illegible] دنیا [illegible] صورت حال [illegible] سارے [illegible] ملتوی کردیے [illegible] فیصلہ [illegible] سارے [illegible] شریک ہونے کی [illegible] ہندوستان [illegible] معلوم ہونا چاہیے [illegible] [illegible] جو کچھ [illegible] ذریعہ واقعی [illegible] جاری

ہے کہ آزادی، جمہوریت، اور امن کے ایک نئے نظم (نیا نظام) سے دنیا کو آشنا کیا جائے، تو پھر یقیناً ہندوستان کو اس مطالبے کا حق حاصل ہے کہ وہ معلوم کرے، خود اس کی قسمت پر ان مقصدوں کا کیا اثر پڑے گا؟

ورکنگ کمیٹی نے اپنے اس مطالبے کو ایک مفصل اعلان کی صورت میں مرتب کیا۔ اور ۱۴ ستمبر ۱۹۳۹ء کو یہ شائع ہوگیا۔ گرمیں امید کروں کہ یہ اعلان ہندوستان کی سیاسی تاریخ میں اپنے لیے ایک مناسب جگہ کا مطالبہ کرے گا تو مجھے یقین ہے، میں آنے والے مورخ سے کوئی بےجا توقع نہیں کر رہا ہوں۔ یہ سچائی اور معقولیت ([illegible]) کا ایک سادہ مگر نا قابل رد نوشتہ ([illegible] Document) ہے، جس کو وقت صحیح تاریخ کا بہترین [illegible] کہا جا سکتا ہے۔ [illegible] اگرچہ ہندوستان کی تھی، لیکن فی الحقیقت یہ صرف ہندوستان ہی کی آواز نہ تھی، یہ عالمگیر انسانیت کی زخمی امیدوں کی چیخ تھی، پچیس برس ہوئے کہ دنیا بربادی اور ہلاکت کے ایک سب سے بڑے عذاب میں جیسے تاریخ کی نگاہیں دیکھ سکتی تھیں مبتلا کی گئی۔ اور صرف اس لیے مبتلا کی گئی تاکہ اس کے بعد اس سے بھی زیادہ ایک سخت عذاب کی تیاریوں میں لگ جائے۔ کمزور قوموں کی آزادی اس کی ضمانت، خود مختاری فیصلہ ([illegible]) (Self [illegible]) چھوٹی قوموں کی حد بندی میں قومی [illegible] [illegible] کی حمایت کا فیصلہ، اور اسی طرح کے سارے وعدے اور خوشنما مقصدوں کی صداؤں سے قوموں کے کانوں پر جادو کیا گیا۔ ان کے دلوں میں امیدیں شگفتہ کی گئیں۔ مگر بالآخر یہ نتیجہ نکلا، ہر صد فریب [illegible]

نکلی! ہر جلوہ خواب و خیال ثابت ہوا! آج پھر قوموں کے گلوں کو خون اور آگ کی ہولناکیوں میں دھکیلا جا رہا ہے۔ کیا معقولیت (Reason) اور حقیقت کی موجودگی سے ہمیں اس درجہ مایوس ہو جانا چاہیے کہ ہم موت اور بربادی کے سیلاب میں کود نے سے پہلے یہ بھی معلوم نہیں کر سکتے کہ یہ سب کچھ کیوں ہو رہا ہے، اور خود ہماری قسمت پر اس کا کیا اثر پڑے گا؟

برطانوی حکومت کا جواب اور کانگریس کا پہلا قدم

کانگریس کے اس مطالبے کے جواب میں برطانوی حکومت کی جانب سے بیانوں کا ایک سلسلہ شروع ہوگیا جو ہندوستان اور انگلستان میں ہوتے رہے۔ اس سلسلے کی پہلی کڑی وائسرائے ہند کا وہ اعلان سمجھنا چاہیے جو ۱۷ اکتوبر کو دہلی سے شائع ہوا۔ یہ اعلان جو شاید حکومت ہند کے سرکاری علم ادب ([illegible]) کے الجھے ہوئے انداز اور تھکا دینے والی طوالت کا سب سے زیادہ مکمل نمونہ ہے، صفحوں کے صفحے پڑھ جانے کے بعد بھی اس قدر بتانے پر مشکل آمادہ ہوتا ہے کہ لڑائی کے مقصد کے لیے برطانوی وزیر اعظم کی ایک تقریر پڑھنی چاہیے، جو صرف یورپ کے امن اور بین الاقوامی [illegible] رشتوں کی درستگی کا ذکر کرتی ہے۔ "جمہوریت" اور "قوموں کی آزادی" کے لفظ اس میں نہیں ڈھونڈے جا سکتے۔ جہاں تک ہندوستان کے مسئلہ کا تعلق ہے، وہ ہمیں بتاتا ہے کہ برطانوی حکومت نے ۱۹۱۹ء کے قانون کی تمہید میں اپنی جس پالیسی کا اعلان کیا تھا اور جس کا نتیجہ ۱۹۳۵ء کے قانون کی شکل میں



نکلا، آج بھی وہی پالیسی اُس کے سامنے ہے۔ اس سے زیادہ اور اس سے بہتر وہ کچھ نہیں کر سکتی۔

۱۷ اکتوبر ۱۹۳۹ء کو وائسرائے کا اعلان شائع ہوا، اور ۲۲ اکتوبر کو ورکنگ کمیٹی اس پر غور کرنے کے لیے واردھا میں بیٹھی۔ وہ بغیر کسی بحث کے اس نتیجہ پر پہنچی کہ یہ جواب کسی طرح بھی اسے مطمئن نہیں کر سکتا، اور اب اسے اپنا وہ فیصلہ بلا تامل کر دینا چاہیے جو اس وقت تک اس نے ملتوی کر رکھا تھا۔ جو فیصلہ کمیٹی نے کیا، وہ اُس کی تجویز کے لفظوں میں یہ ہے:

"ان حالات میں کمیٹی کے
لیے ممکن نہیں کہ وہ برطانوی
حکومت کی سامراجی پالیسی کو
منظور کرے۔ کمیٹی کانگریس
وزارتوں کو ہدایت کرتی ہے کہ
جو راہ اب ہمارے سامنے کھل گئی
ہے، اس کی طرف بڑھتے ہوئے
بطور ایک ابتدائی قدم کے اپنے
اپنے صوبوں کی حکومتوں سے مستعفی
ہو جائیں۔"

چنانچہ آٹھوں صوبوں میں وزارتوں نے استعفا دے دیا۔

یہ تو اس سلسلے کی ابتدا تھی۔ اب دیکھنا چاہیے کہ یہ سلسلہ زیادہ سے زیادہ کہاں تک پہنچتا ہے تو وائسرائے ہند کا ایک کمیونکے جو ۵ فروری کو دہلی سے شائع ہوا اور جو اس گفتگو کا خلاصہ بیان کرتا ہے جو مہاتما گاندھی سے ہوئی تھی۔ دریں خود مہاتما گاندھی کا بیان جو انھوں نے ۶ فروری کو شائع کیا، اس کی آخری کڑی سمجھی جا سکتی ہے۔ اس کا خلاصہ ہم سب کو معلوم ہے۔ برطانوی حکومت

اس بات کی پوری خواہش رکھتی ہے کہ ہندوستان جلد سے جلد وقت میں جو صورت حال کے لحاظ سے ممکن ہو، برطانوی نوآبادیوں کا درجہ حاصل کر لے، اور درمیانی زمانے کی مدت جہاں تک ممکن ہو کم کی جائے۔ مگر وہ ہندوستان کا یہ حق ماننے کے لیے تیار نہیں کہ بغیر باہر کی مداخلت کے وہ اپنا دستور اساسی (کانسٹی ٹیوشن) خود اپنے چنے ہوئے نمائندوں کے ذریعہ بنا سکتا ہے، اور اپنی قسمت کا فیصلہ کر سکتا ہے۔ دوسرے لفظوں میں برطانوی حکومت ہندوستان کے لیے خود اختیاری فیصلے (Self-determination) کا حق تسلیم نہیں کر سکتی۔

حقیقت کی ایک چھوت (Touch) سے دکھاوے کا سارا طلسم کس طرح نابود ہو گیا! پچھلے چار برسوں سے جمہوریت اور آزادی کی حفاظت کے نعروں سے دنیا گونج رہی تھی۔ انگلستان اور فرانس کی حکومتوں کی زیادہ سے زیادہ ذمہ دار زبانیں اس بارے میں جو کچھ کہتی رہی ہیں، وہ ابھی اس قدر تازہ ہیں کہ یاد دلانے کی ضرورت نہیں۔ مگر جونہی ہندوستان نے یہ سوال اٹھایا، حقیقت کو بے پردہ ہو کر سامنے آ جانا پڑا۔ اب ہمیں بتایا جاتا ہے کہ قوموں کی آزادی کی حفاظت بلاشبہ اس لڑائی کا مقصد ہے، مگر اس کا دائرہ یورپ کی جغرافیائی حدوں سے باہر نہیں جا سکتا۔ ایشیا اور افریقہ کے باشندوں کو یہ جرأت نہیں کرنی چاہیے کہ امید کی نگاہ اٹھائیں۔ مسٹر چیمبرلین نے ۲۴ فروری کو برمنگھم میں تقریر کرتے ہوئے یہ حقیقت اور زیادہ واضح کر دی ہے، اگرچہ ان کی تقریر سے پہلے بھی ہمیں اس بارے میں کوئی شبہ نہ تھا۔ انھوں نے ہمارے لیے برطانوی حکومت کے صاف طرز عمل کے ساتھ

صاف قول بھی بہم پہنچا دیا۔ وہ لڑائی کے برطانوی مقاصد کا اعلان کرتے ہوئے دنیا کو یہ یقین دلاتے ہیں:

"ہماری لڑائی اس لیے ہے کہ
ہم اس امر کی ضمانت حاصل کر لیں
کہ یورپ کی چھوٹی قومیں آئندہ
اپنی آزادی کو بیرونی جارحانہ حملوں
کی دھمکیوں سے بالکل محفوظ
پائیں گی۔"

برطانوی حکومت کا یہ جواب اس موقع پر اگرچہ برطانوی زبان سے نکلا ہے، مگر فی الحقیقت وہ اپنی قسم میں خالص برطانی نہیں ہے، بلکہ ٹھیک ٹھیک براعظم یورپ کی اُس عام ذہنیت کی ترجمانی کر رہا ہے جو تقریباً دو صدیوں سے دنیا کے سامنے رہی ہے۔ اٹھارویں اور انیسویں صدی میں انسان کی انفرادی اور جماعتی آزادی کے جس قدر اصول قبول کیے گئے، ان کے مطالبے کا حق صرف یورپی قوموں ہی کے لیے خاص سمجھا گیا اور یورپ کی قوموں میں بھی مسیحی یورپ کے تنگ دائرے سے کبھی باہر نہ جا سکا۔ آج بیسویں صدی کے درمیانی عہد میں دنیا اس قدر بدل چکی ہے کہ پچھلی صدی کے فکر اور عمل کے نقشے تاریخ کی پرانی کہانیوں کی طرح سامنے آتے ہیں اور ہمیں ان نشانوں کی طرح دکھائی دیتے ہیں جنھیں ہم بہت دور پیچھے چھوڑ آئے۔ لیکن ہمیں تسلیم کرنا چاہیے کہ کم از کم ایک نشان ابھی بھی ہمارے پیچھے نہیں ہے، وہ ہمارے ساتھ ساتھ آ رہا ہے۔ وہ انسانی حقوق کے لیے یورپ کا امتیازی نشان ہے۔

ٹھیک ٹھیک معاملہ کا یہی نقشہ ہندوستان کے سیاسی اور قومی حق کے سوال نے بھی ہمارے



سامنے پیش کر دیا ہے۔ ہم نے جب اعلانِ جنگ کے بعد یہ سوال اٹھایا کہ لڑائی کا مقصد کیا ہے، اور ہندوستان کی قسمت پر اس کا کیا اثر پڑنے والا ہے؟ تو ہم اس بات سے بے خبر نہ تھے کہ برطانوی حکومت کی پالیسی ۱۹۱۷ء اور ۱۹۱۹ء میں کیا رہ چکی ہے۔ ہم معلوم کرنا چاہتے تھے کہ ۱۹۳۹ء کی اس دنیا میں جو دنوں کے اندر صدیوں کی چال سے بدلتی اور پلٹتی ہوئی دوڑ رہی ہے، ہندوستان کو برطانوی حکومت کس شکل میں دیکھنا چاہتی ہے! اس کی جگہ اب بھی بدلی ہے یا نہیں؟ ہمیں صاف جواب مل گیا کہ نہیں بدلی۔ وہ اب بھی سامراجی مزاج میں کوئی تبدیلی پیدا نہیں کر سکی ہے۔ ہمیں یقین دلایا جاتا ہے کہ برطانوی حکومت بہت زیادہ اس کی خواہش مند ہے کہ ہندوستان جہاں تک جلد ممکن ہو، نو آبادیات (Dominion Status) کا درجہ حاصل کرے۔ ہمیں معلوم تھا کہ برطانوی حکومت نے اپنی یہ خواہش ظاہر کی ہے۔ اب ہمیں یہ بات بھی معلوم ہو گئی کہ وہ اس کی "بہت زیادہ خواہش مند ہے۔" مگر سوال برطانوی حکومت کی خواہش اور اس کی خواہش کے مختلف درجوں کا نہیں ہے۔ صاف اور سادہ سوال ہندوستان کے حق کا ہے۔ ہندوستان کو یہ حق حاصل ہے یا نہیں کہ وہ اپنی قسمت کا خود فیصلہ کرے؟ اسی سوال کے جواب پر وقت کے سارے سوالوں کا جواب موقوف ہے۔ ہندوستان کے لیے یہ سوال بنیاد کی اصل اینٹ ہے۔ وہ اسے نہیں ہلنے دے گا۔ اگر یہ ہل جائے تو اس کی قومی ہستی کی ساری عمارت ہل جائے گی۔

جہاں تک لڑائی کے سوال کا تعلق ہے، ہمارے لیے صورتِ حال بالکل واضح ہو گئی۔ ہم برطانوی سامراج کا چہرہ اس لڑائی کے اندر بھی اسی طرح صاف صاف دیکھ رہے ہیں، جس طرح ہم نے پچھلی لڑائی میں دیکھا تھا۔ ہم تیار نہیں کہ اس چہرے کی فتح مندیوں کے لیے لڑائی میں حصہ لیں۔ ہمارا مقدمہ بالکل صاف ہے۔ ہم اپنی محکومیت کی عمر بڑھانے کے لیے برطانوی سامراج کو زیادہ طاقتور اور زیادہ فتح مند نہیں دیکھنا چاہتے۔ ہم ایسا کرنے سے صاف صاف انکار کرتے ہیں۔ ہماری راہ یقیناً بالکل اس کے مقابل سمت جا رہی ہے۔

ہم آج کہاں کھڑے ہیں؟

اب ہم اس جگہ پر واپس آجائیں، جہاں سے ہم چلے تھے۔ ہم نے اس سوال پر غور کرنا چاہا تھا کہ ۳ ستمبر کے اعلانِ جنگ کے بعد جو قدم ہم اٹھا چکے ہیں، اس کا رُخ کس طرف ہے؟ اور ہم آج کہاں کھڑے ہیں؟ میں یقین کرتا ہوں کہ ان دونوں سوالوں کا جواب اس وقت ہم میں سے ہر شخص کے دل میں اس طرح صاف صاف اُبھر آیا ہوگا کہ اب اسے صرف زبانوں تک پہنچنا ہی باقی رہ گیا ہے۔ یہ ضروری نہیں کہ آپ کے لب ہلیں، میں آپ کے لبوں کو ہلتا ہوا دیکھ رہا ہوں۔ ہم نے عارضی تعاون (Coopera-tion) کا جو قدم ۱۹۳۱ء میں اٹھایا تھا، ہم نے اعلانِ جنگ کے بعد واپس لے لیا۔ اس لیے قدرتی طور پر ہمارا رُخ ترکِ تعاون (Non Co-operation) کی طرف تھا۔ ہم آج اس جگہ کھڑے ہیں جہاں ہمیں فیصلہ کرنا ہے کہ اس رُخ کی طرف آگے بڑھیں، یا پیچھے ہٹیں؟ جب قدم اٹھا دیا جائے، تو وہ رُک نہیں سکتا۔ اگر رکے گا تو پیچھے ہٹے گا۔ ہم پیچھے ہٹنے سے انکار کرتے ہیں۔ ہم صرف یہی کر سکتے ہیں کہ آگے بڑھیں۔ مجھے یقین ہے کہ میں آپ سب کے دلوں کی آواز اپنی آواز کے ساتھ ملا رہا ہوں، جب میں یہ اعلان کرتا ہوں کہ ہم آگے بڑھیں گے!

باہمی مفاہمت

اس سلسلے میں قدرتی طور پر ایک سوال سامنے آجاتا ہے۔ تاریخ کا فیصلہ ہے کہ قوموں کی کشمکش میں ایک طاقت جبھی اپنا قبضہ چھوڑ سکتی ہے جبکہ دوسری طاقت اسے ایسا کرنے پر مجبور کر دے۔ اور معقولیت اور اخلاق کے اعلیٰ اصول افراد کا طرزِ عمل بدلتے رہے ہیں، مگر غلبہ جمائی ہوئی قوموں کی خود غرضیوں پر کبھی اثر نہیں ڈال سکے۔ آج بھی ہم عین بیسویں صدی کے درمیانی عہد میں دیکھ رہے ہیں کہ یورپ کی نئی ارتجاعی (Reactionary) قوموں نے کس طرح انسان کے انفرادی اور قومی حقوق کے تمام عقیدے تہ و بالا کر دیے، اور انصاف اور معقولیت (Reason) کی جگہ صرف وحشیانہ طاقت کی دلیل فیصلوں کے لیے اکیلی دلیل رہ گئی۔ لیکن ساتھ ہی جہاں دنیا تصویر کا یہ مایوس رُخ اُبھار رہی ہے، وہیں امید کا ایک دوسرا رُخ بھی نظر انداز نہیں کیا جا سکتا۔ ہم دیکھ رہے ہیں کہ بلا امتیاز دنیا کے بے شمار انسانوں کی ایک نئی عالمگیر بیداری بھی ہے جو نہایت تیزی کے ساتھ ہر طرف اُبھر رہی ہے۔ یہ دنیا کے پرانے نظم (Order) کی ناہمواریوں سے تھک گئی ہے، اور معقولیت، انصاف اور امن کے ایک نئے نظم کے لیے بے قرار



دنیا کی یہ نئی بیداری جس نے پچھلی لڑائی بعد سے انسانی روحوں کی گہرائیوں میں کروٹ نا شروع کر دیا تھا، اب روز بروز دماغوں ر زبانوں کی سطح پر ابھر رہی ہے، اور اس ح ابھر رہی ہے کہ شاید تاریخ میں کبھی نہیں مری۔ ایسی حالت میں کیا یہ بات وقت کے انوں کے دائرے سے باہر تھی کہ تاریخ میں ے کے پرانے فیصلوں کے خلاف ایک نئے فیصلے اضافہ ہوتا؟ کیا ممکن نہیں کہ دنیا کی دو بڑی میں جنھیں حالات کی رفتار نے حکومت اور لومیت کے رشتے سے جمع کر دیا تھا، آئندہ لیے معقولیت، انصاف اور امن کے رشتوں اپنا نیا تعلق جوڑنے کے لیے تیار ہو جائیں۔ لمگیر جنگ کی مایوسیاں کس طرح امیدوں کی ب نئی زندگی میں بدل جاتیں، معقولیت اور صاف کے دَور کی ایک نئی صبح کس طرح دنیا کو ے نئے سورج کا پیام دینے لگتی۔ انسانیت کی یں بے مثال اور عالمگیر فتح مندی ہوتی، اگر ج برطانی قوم سر اٹھا کر دنیا سے کہہ سکتی کہ اس ۔ تاریخ میں ایک نئی مثال بڑھانے کا کام انجام یا ہے!

یقیناً یہ ناممکن نہیں ہے، مگر دنیا کی م دشواریوں سے کہیں دشوار ہے۔

وقت کی ساری پھیلی ہوئی اندھیاریوں ے انسانی فطرت کا یہی ایک روشن پہلو ہے، جو ہاتما گاندھی کی عظیم روح کو کبھی تھکنے نہیں یتا۔ وہ باہمی مفاہمت کے دروازے میں جو ن پر کھولا جاتا ہے، بغیر اس کے کہ اپنی جگہ کو ر باہمی کمزور محسوس کریں، بلا تامل قدم رکھنے لیے تیار ہو جاتے ہیں۔

برطانوی کابینہ (cabinet) کے متعدد ممبروں نے لڑائی کے بعد دنیا کو یہ یقین دلانے کی کوشش کی ہے کہ برطانوی سامراج کا پھیلاؤ در اب ختم ہو چکا اور آج برٹش قوم صرف امن اور انصاف کے مقصدوں کو اپنے سامنے رکھتی ہے۔ ہندوستان سے بڑھ کر اور کونسا ملک ہو سکتا ہے جو آج کسی ایسے اعلان کا استقبال کرتا! لیکن واقعہ یہ ہے کہ باوجود ان اعلانوں کے، برطانوی سامراج آج بھی اُسی طرح امن اور انصاف کی راہ روکے کھڑا ہے، جس طرح لڑائی سے پہلے تھا۔ ہندوستان کا مطالبہ اس طرح کے تمام دعووں کے لیے ایک حقیقی کسوٹی تھی۔ دعوے کسوٹی پر کسے گئے، اور اپنی سچائی کا یقین نہ دلا سکے۔

ہندوستان کا سیاسی مستقبل اور اقلیتیں

جہاں تک وقت کے اصلی سوال کا تعلق ہے، معاملہ اس کے سوا کچھ نہیں ہے، جو میں نے اختصار کے ساتھ آپ کے سامنے رکھ دیا۔ گذشتہ ستمبر میں جب اعلان جنگ کے بعد کانگریس نے اپنا مطالبہ ترتیب دیا، تو اُس وقت ہم میں سے کسی شخص کے وہم و گمان میں بھی یہ بات نہیں گذری تھی کہ اس صاف اور سادہ مطالبہ میں جو ہندوستان کے نام پر کیا گیا ہے، اور جس سے ملک کے کسی فرقہ اور کسی گروہ کو بھی اختلاف نہیں ہو سکتا، فرقہ وارانہ مسئلہ کا سوال اُٹھایا جا سکے گا۔ بلاشبہ ملک میں ایسی جماعتیں موجود ہیں، جو سیاسی جد و جہد کے میدان میں وہاں تک نہیں جا سکتیں جہاں تک کانگریس کے قدم پہنچ گئے ہیں، اور براہِ راست [illegible] عمل (ڈائرکٹ ایکشن) کے طریقہ سے جو سیاسی ہندوستان کی اکثریت نے اختیار کر لیا ہے، متفق نہیں ہیں۔ لیکن جہاں تک ملک کی آزادی اور اس کے قدرتی حق کے اعتراف کا تعلق ہے، ہندوستان کی ذہنی بیداری اب اُن ابتدائی منزلوں سے بہت دُور نکل چکی کہ ملک کا کوئی گروہ بھی اس مقصد سے اختلاف کرنے کی جرأت کر سکے۔ وہ جماعتیں بھی جو اپنے طبقہ (کلاس) کے خاص مفاد کے تحفظ کے لیے مجبور ہیں، کہ موجودہ سیاسی صورتِ حال کی تبدیلی کے خواہش مند نہ ہوں۔ وقت کی عام آب وہوا کے تقاضہ سے بے بس ہو رہی ہیں اور انھیں بھی ہندوستان کی سیاسی منزلِ مقصود کا اعتراف کرنا پڑتا ہے۔ تاہم جہاں وقت کے آزمائشی سوال نے صورتِ حال کے دوسرے گوشوں پر سے پردے اٹھا دیے، وہیں اس گوشے کو بھی بے نقاب کر دیا۔ ہندوستان اور انگلینڈ، دونوں جگہ یکے بعد دیگرے اس طرح کی کوششیں کی گئیں کہ وقت کے سیاسی سوال کو فرقہ وارانہ مسئلہ کے ساتھ خلط ملط کر کے سوال کی اصلی حیثیت مشتبہ کر دی جائے۔ بار بار دنیا کو یہ یقین دلانے کی کوشش کی گئی کہ ہندوستان کے سیاسی مسئلہ کے حل کی راہ میں اقلیتوں کا مسئلہ حارج ہو رہا ہے۔

اگر پچھلے ڈیڑھ سو برس کے اندر ہندوستان میں برطانوی شہنشاہی کا یہ طرزِ عمل رہ چکا ہے کہ ملک کے باشندوں کے اندرونی اختلافات کو اُبھار کر نئی نئی صفوں میں تقسیم کیا جائے، اور پھر ان صفوں کو اپنی حکومت کے استحکام کے لیے کام میں لائے، تو یہ ہندوستان کی سیاسی محکومیت کا ایک قدرتی نتیجہ تھا۔ اور ہمارے لیے اب یہ صد

ہے کہ اس کی شکایت سے اپنے جذبات میں کڑواہٹ پیدا کریں۔ ایک اجنبی حکومت یقیناً اس ملک کے اندرونی اتحاد کی خواہش مند نہیں ہو سکتی جس کی اندرونی پھوٹ ہی اس کی موجودگی کے لیے سب سے بڑی ضمانت ہے۔ لیکن ایک ایسے زمانہ میں جبکہ دنیا کو یہ باور کرانے کی کوششیں کی جا رہی ہیں کہ برطانوی شہنشاہیت کی ہندوستانی تاریخ کا پچھلا دور ختم ہو چکا، یقیناً یہ کوئی بڑی توقع نہ تھی اگر ہم برطانوی مدبروں سے امید رکھتے تھے کہ کم از کم اس گوشے میں وہ اپنے طرزِ عمل کو پچھلے عہد کی دماغی وراثت سے بچانے کی کوششیں کریں گے۔ لیکن پچھلے پانچ مہینوں کے اندر واقعات کی جو رفتار رہ چکی ہے اس نے ثابت کر دیا کہ ابھی ایسی امیدوں کے رکھنے کا وقت نہیں آیا ہے، اور جس دور کی نسبت دنیا کو یقین دلایا جا رہا ہے کہ ختم ہو گیا اسے ابھی ختم ہونا باقی ہے۔

بہر حال اسباب خواہ کچھ ہی رہے ہوں لیکن ہم تسلیم کرتے ہیں کہ دنیا کے تمام ملکوں کی طرح ہندوستان بھی اپنے اندرونی مسائل رکھتا ہے، اور ان مسئلوں میں ایک اہم مسئلہ فرقہ وارانہ مسئلہ کا ہے۔ ہم برطانوی حکومت سے یہ توقع نہیں رکھتے، اور نہیں رکھنی بھی نہیں چاہیے کہ وہ اس مسئلہ کی موجودگی کا اعتراف نہیں کرے گی۔ یہ مسئلہ موجود ہے اور اگر ہم آگے بڑھنا چاہتے ہیں، تو ہمارا فرض ہے کہ اس کی موجودگی مان کر قدم اُٹھائیں۔ ہم تسلیم کرتے ہیں کہ ہر قدم جو اس کی موجودگی سے بے پروا رہ کر اُٹھے گا، یقیناً ایک غلط قدم ہوگا۔ لیکن فرقہ وارانہ مسئلہ کی موجودگی کے اعتراف کے معنی صرف یہی ہونے چاہئیں کہ اس کی موجودگی کا اعتراف کیا جائے۔ یہ معنی نہیں ہونے چاہئیں کہ اسے ہندوستان کے قومی حق کے خلاف بطور ایک آلہ کے استعمال کیا جائے۔ برطانوی شہنشاہی ہمیشہ اس مسئلہ کو اسی غرض سے کام میں لاتی رہی۔ اگر اب وہ اپنی ہندوستانی تاریخ کا پچھلا دور ختم کرنے پر مائل ہے، تو اُسے معلوم ہونا چاہیے کہ سب سے پہلا گوشہ جس میں ہم قدرتی طور پر اس تبدیلی کی جھلک دیکھنی چاہیں گے، وہ یہی گوشہ ہے۔

کانگریس نے فرقہ وارانہ مسئلہ کے بارے میں اپنے لیے جو جگہ بنائی ہے، وہ کیا ہے؟ کانگریس کا اول دن سے دعوا رہا ہے کہ وہ ہندوستان کو بہ حیثیت مجموعی اپنے سامنے رکھتی ہے، اور جو قدم بھی اُٹھانا چاہتی ہے، ہندوستانی قوم کے لیے اٹھانا چاہتی ہے۔ ہمیں تسلیم کرنا چاہیے کہ کانگریس نے یہ دعوا کر کے دنیا کو اس بات کا حق دے دیا ہے کہ وہ جس قدر بے رحم نکتہ چینی کے ساتھ چاہے، اس کے طرزِ عمل کا جائزہ لے اور کانگریس کا فرض ہے کہ اس جائزہ میں اپنے کو کامیاب ثابت کرے۔ میں چاہتا ہوں کہ معاملہ کا یہ پہلو سامنے رکھ کر ہم آج کانگریس کے طرزِ عمل پر نئے سرے سے ایک نگاہ ڈال لیں۔

جیسا کہ میں نے ابھی آپ سے کہا ہے، اس بارے میں قدرتی طور پر تین باتیں ہی سامنے آسکتی ہیں: فرقہ وارانہ مسئلہ کی موجودگی، اس کی اہمیت، اس کے فیصلے کا طریقہ۔

کانگریس کی پوری تاریخ اس کی گواہی دیتی ہے کہ اُس نے اس مسئلہ کی موجودگی کا ہمیشہ اعتراف کیا۔ اس نے اس کی اہمیت کو گھٹانے کی کبھی کوشش نہیں کی۔ اس نے اس کے فیصلہ کے لیے وہی طریقہ تسلیم کیا، جس سے زیادہ قابلِ اطمینان طریقہ اس بارے میں کوئی نہیں بتلایا جا سکتا، اور اگر بتلایا جا سکتا ہے، تو اس کی طلب میں اس کے دونوں ہاتھ ہمیشہ بڑھے رہے اور آج بھی بڑھے ہوئے ہیں!

اس کی اہمیت کا اعتراف اس سے زیادہ ہمارے تخیل پر کیا اثر ڈال سکتا ہے کہ اسے ہندوستان کے قومی مقصد کی کامیابی کے لیے سب سے پہلی شرط یقین کریں؟ میں اس واقعہ کو بطور ایک ناقابلِ انکار حقیقت کے پیش کروں گا کہ کانگریس کا ہمیشہ ایسا ہی یقین رہا۔

کانگریس نے ہمیشہ اس بارے میں دو بنیادی اصول اپنے سامنے رکھے، اور جب کبھی کوئی قدم اُٹھایا تو ان دونوں اصولوں کو صاف صاف اور قطعی شکل میں مان کر اُٹھایا:

۱۔ ہندوستان کا جو دستورِ اساسی (کانسٹی ٹیوشن) بھی آئندہ بنایا جائے، اس میں اقلیتوں کے حقوق اور مفاد کی پوری ضمانت ہونی چاہیے۔

۲۔ اقلیتوں کے حقوق اور مفاد کے لیے کن کن تحفظات (سیف گارڈز) کی ضرورت ہے؟ اس کے لیے جج خود اقلیتیں ہیں نہ کہ اکثریتیں۔ اس لیے تحفظات کا فیصلہ ان کی رضامندی سے ہونا چاہیے، نہ کہ کثرتِ رائے سے۔

اقلیتوں کا مسئلہ صرف ہندوستان ہی کے حصے میں نہیں آیا ہے۔ دنیا کے دوسرے حصّوں میں بھی رہ چکا ہے۔ میں آج اس جگہ سے دنیا کو مخاطب کرنے کی جرأت کرتا ہوں۔ میں معلوم کرنا چاہتا ہوں کہ کیا اس سے بھی زیادہ کوئی صاف اور بے لاگ طرزِ عمل اس بارے میں اختیار کیا جا سکتا ہے؟ اگر کیا جا سکتا ہے تو وہ کیا ہے؟ کیا اس طرزِ عمل میں کوئی بھی ایسی خامی رہ گئی



ں کی بنا پر کانگریس کو اس کا فرض یاد دلانے رت ہو؟ کانگریس اپنے ادائے فرض کی خامیوں ـنے کے لیے ہمیشہ تیار رہی ہے اور آج بھی ے۔

میں انیس برس سے کانگریس میں ہوں۔ م عرصے میں کانگریس کا کوئی اہم فیصلہ ایسا ۔ا، جس کے ترتیب دینے میں مجھے شریک ا عزت حاصل نہ رہی ہو۔ میں کہہ سکتا ہوں انیس برس میں ایک دن بھی ایسا کانگریس غ پر نہیں گزرا، جب اس نے اس مسئلہ کو اس کے سوا کسی طریقہ سے بھی کرنے کا خیال ۔ یہ صرف اس کا اعلان ہی نہ تھا اس کا ا اور طے کیا ہوا طرزِ عمل تھا۔ پچھلے پندرہ کے اندر بار بار اس طرزِ عمل کے لیے سخت ت آزمائشیں پیدا ہوئیں، مگر یہ چٹان رسے کبھی نہ ہل سکی۔

آج بھی اس نے دستور ساز مجلس (کانسٹی ٹ اسمبلی) کے سلسلے میں اس مسئلہ کا جس عتراف کیا ہے، وہ اس کے لیے کافی ہے کہ ان ں اصولوں کو ان کی زیادہ سے زیادہ صاف ں دیکھ لیا جائے۔ تسلیم شدہ اقلیتوں کو یہ صل ہے کہ اگر وہ چاہیں تو خالص اپنے ووٹوں ے نمائندوں کو چن کر بھیجیں۔ ان کے نمائندوں مدھوں پر اپنے فرقہ کی رایوں کے سوا اور ی رائے کا بوجھ نہ ہوگا۔ جہاں تک اقلیتوں ق اور مفاد کے مسائل کا تعلق ہے، فیصلہ یہ مجلس (اسمبلی) کی کثرتِ رائے نہیں خود اقلیتوں کی رضامندی ہوگی۔ اگر کسی ملہ میں اتفاق نہ ہو سکے، تو کسی غیر جانبدار یت کے ذریعہ فیصلہ کرایا جا سکتا ہے، جسے

اقلیتوں نے بھی تسلیم کر لیا ہو۔ آخری تجویز محض ایک احتیاطی پیش بندی ہے۔ ورنہ اس کا بہت کم امکان ہے کہ اس طرح کی صورتیں پیش آئیں گی۔ اگر اس تجویز کی جگہ کوئی دوسری قابلِ عمل تجویز ہو سکتی ہے، تو اسے اختیار کیا جا سکتا ہے۔

اگر کانگریس نے اپنے طرزِ عمل کے لیے یہ اصول سامنے رکھ لیے ہیں، اور پوری کوشش کر چکی ہے، اور کر رہی ہے کہ ان پر قائم رہے، تو پھر اس کے بعد اور کونسی بات رہ گئی ہے جو برطانوی مدبّروں کو اس پر مجبور کرتی ہے کہ اقلیتوں کے حقوق کا مسئلہ ہمیں بار بار یاد دلائیں؟ اور دنیا کو اس غلط فہمی میں مبتلا کریں کہ ہندوستان کے مسئلہ کی راہ میں اقلیتوں کا مسئلہ راستہ روکے کھڑا ہے؟ اگر فی الحقیقت اسی مسئلہ کی وجہ سے رکاوٹ پیش آ رہی ہے، تو کیوں برطانوی حکومت ہندوستان کی سیاسی قسمت کا صاف صاف اعلان کر کے ہمیں اس کا موقع نہیں دے دیتی کہ ہم سب مل کر بیٹھیں اور باہمی رضامندی سے اس مسئلہ کا ہمیشہ کے لیے تصفیہ کر لیں؟

ہم میں تفرقے پیدا کیے گئے اور ہمیں الزام دیا جاتا ہے کہ ہم میں تفرقے ہیں۔ ہمیں تفرقوں کے مٹانے کا موقع نہیں دیا جاتا اور ہم سے کہا جاتا ہے کہ ہمیں تفرقے مٹانے چاہییں۔ یہ صورتِ حال ہے جو ہمارے چاروں طرف پیدا کر دی گئی ہے۔ یہ بندھن ہیں جو ہمیں ہر طرف سے جکڑے ہوئے ہیں۔ تاہم اس حالت کی کوئی مجبوری بھی ہمیں اس سے باز نہیں رکھ سکتی کہ سعی اور ہمت کا قدم آگے بڑھائیں، کیونکہ ہماری راہ تمام تر دشواریوں کی راہ ہے اور ہمیں ہر دشواری پر غالب آنا ہے۔

ہندوستان کے مسلمان اور ہندوستان کا مستقبل

یہ ہندوستان کی اقلیتوں کا مسئلہ تھا۔ لیکن کیا ہندوستان میں مسلمانوں کی حیثیت ایک ایسی اقلیت کی ہے جو اپنے مستقبل کو شک اور خوف کی نظر سے دیکھ سکتی ہے، اور وہ تمام اندیشے اپنے سامنے لا سکتی ہے، جو قدرتی طور پر ایک اقلیت کے دماغ کو مضطرب کر دیتے ہیں؟

مجھے نہیں معلوم، آپ لوگوں میں کتنے آدمی ایسے ہیں، جن کی نظر سے میری وہ تحریریں گزری ہیں جو آج سے اٹھائیس برس پہلے میں الہلال کے صفحوں پر لکھتا رہا ہوں۔ اگر چند اشخاص بھی ایسے موجود ہیں، تو میں ان سے درخواست کروں گا کہ وہ اپنا حافظہ تازہ کریں۔ میں نے اس زمانے میں بھی اپنے اس عقیدے کا اظہار کیا تھا، اور اسی طرح آج بھی کرنا چاہتا ہوں کہ ہندوستان کے سیاسی مسائل میں کوئی بات بھی اس درجہ غلط نہیں سمجھی گئی ہے، جس درجہ یہ بات کہ ہندوستان کے مسلمانوں کی حیثیت ایک سیاسی اقلیت کی حیثیت ہے۔ اور اس لیے انھیں ایک جمہوری ہندوستان میں اپنے حقوق و مفاد کی طرف سے اندیشہ ناک رہنا چاہیے۔ اس ایک بنیادی غلطی نے بے شمار غلط فہمیوں کی پیدائش کا دروازہ کھول دیا۔ غلط بنیادوں پر غلط دیواریں چنی جانے لگیں۔ اس نے ایک طرف تو خود مسلمانوں پر ان کی حقیقی حیثیت مشتبہ کر دی۔ دوسری طرف دنیا کو ایک ایسی غلط فہمی میں مبتلا کر دیا، جس کے بعد وہ ہندوستان کو اس کی صحیح صورتِ حال میں نہیں دیکھ سکتی۔

اگر وقت ہوتا تو میں آپ کو تفصیل کے ساتھ بتلاتا کہ معاملہ کی یہ غلط اور بناوٹی شکل



گذشتہ ساٹھ برس کے اندر کیونکر ڈھالی گئی اور کن ہاتھوں سے ڈھلی؟ دراصل یہ بھی اسی پھوٹ کی پیداوار ہے، جس کا نقشہ انڈین نیشنل کانگریس کی تحریک کے شروع ہونے کے بعد ہندستان کے سرکاری دماغوں میں بننا شروع ہو گیا تھا، اور جس کا مقصد یہ تھا کہ مسلمانوں کی اس نئی سیاسی بیداری کے خلاف استعمال کرنے کے لیے تیار کیا جائے۔ اس نقشہ میں دو باتیں خاص طور سے ابھاری گئی تھیں۔ ایک یہ کہ ہندستان میں دو مختلف قومیں آباد ہیں: ایک ہندو قوم ہے، اور ایک مسلمان قوم ہے۔ اس لیے متحدہ قومیت کے نام پر یہاں کوئی مطالبہ نہیں کیا جا سکتا۔ دوسری یہ کہ مسلمانوں کی تعداد ہندوؤں کے مقابلہ میں بہت کم ہے، اس لیے یہاں جمہوری اداروں کے قیام کا لازمی نتیجہ یہ نکلے گا کہ ہندو اکثریت کی حکومت قائم ہو جائے گی، اور مسلمانوں کی ہستی خطرہ میں پڑ جائے گی۔ میں اس وقت اور زیادہ تفصیل میں نہیں جاؤں گا۔ میں صرف اتنی بات آپ کو یاد دلا دوں گا کہ اگر اس معاملہ کی ابتدائی تاریخ آپ معلوم کرنا چاہتے ہیں، تو آپ کو ایک سابق وائسرائے ہند، لارڈ منٹو اور ایک سابق لیفٹیننٹ گورنر مغربی و شمالی اضلاع یونائیٹڈ پراونسز، سر آکلینڈ کالون کے زمانے کی طرف لوٹنا چاہیے۔

برطانوی سامراج نے ہندستان کی سرزمین میں وقتاً فوقتاً جو بیج ڈالے، ان میں سے ایک بیج یہ تھا۔ اس نے فوراً پھول پتے پیدا کیے۔ ... برس گزر چکے ہیں، مگر ابھی تک اس کی جڑوں میں نمی خشک نہیں ہوئی!

سیاسی بول چال میں جب کبھی "اقلیت" کا لفظ بولا جاتا ہے، تو اس سے مقصود یہ نہیں ہوتا کہ ریاضی کے عام حسابی قاعدے کے مطابق انسانی افراد کی ہر ایسی تعداد جو ایک دوسری تعداد سے کم ہو، لازمی طور پر "اقلیت" ہوتی ہے اور اسے اپنی حفاظت کی طرف سے مضطرب ہونا چاہیے، بلکہ اس سے مقصود ایک ایسی کمزور جماعت ہوتی ہے، جو تعداد اور صلاحیت، دونوں اعتبار سے اپنے کو اس قابل نہیں پاتی کہ ایک بڑے اور طاقتور گروہ کے ساتھ رہ کر اپنی حفاظت کے لیے خود اپنے اوپر اعتماد کر سکے۔ اس حیثیت کے تصور کے لیے صرف یہی کافی نہیں کہ ایک گروہ کی تعداد کی نسبت دوسرے گروہ سے کم ہو، بلکہ یہ بھی ضروری ہے کہ بجائے خود کم ہو، اور اتنی کم ہو کہ اس سے اپنی حفاظت کی توقع نہ کی جا سکے۔ ساتھ ہی اس میں تعداد (Number) کے ساتھ نوعیت (Kind) کا سوال بھی کام کرتا ہے۔ فرض کیجیے، ایک ملک میں دو گروہ موجود ہیں۔ ایک کی تعداد ایک کروڑ ہے۔ دوسرے کی دو کروڑ ہے۔ اب اگرچہ ایک کروڑ، دو کروڑ کا نصف ہوگا اور اس لیے دو کروڑ سے کم ہوگا، مگر سیاسی نقطۂ خیال سے ضروری نہ ہوگا کہ صرف اس نسبتی فرق کی بنا پر ہم اسے ایک اقلیت فرض کر کے اس کی کمزور ہستی کا اعتراف کر لیں۔ اس طرح کی اقلیت ہونے کے لیے تعداد کے نسبتی فرق کے ساتھ دوسرے عوامل (Factors) کی موجودگی بھی ضروری ہے۔

اب ذرا غور کیجیے کہ اس لحاظ سے ہندستان میں مسلمانوں کی حقیقی حیثیت کیا ہے؟ آپ کو دیر تک غور کرنے کی ضرورت نہ ہوگی۔ آپ صرف ایک ہی نگاہ میں معلوم کر لیں گے کہ آپ کے سامنے ایک عظیم گروہ اپنی اتنی بڑی اور پھیلی ہوئی تعداد کے ساتھ سر اٹھائے کھڑا ہے کہ اس کی نسبت "اقلیت" کی کمزوریوں کا گمان بھی کرنا اپنی کو صریح دھوکا دینا ہے۔

اس کی مجموعی تعداد ملک میں آٹھ نو کروڑ کے اندر ہے۔ وہ ملک کی دوسری جماعتوں کی طرح معاشرتی اور نسلی تقسیموں میں بٹی ہوئی نہیں ہے۔ اسلامی زندگی کی مساوات اور برادرانہ یک جہتی کے مضبوط رشتے نے اسے معاشرتی تفرقہ کی کمزوریوں سے بہت حد تک محفوظ رکھا ہے۔ بلاشبہ یہ تعداد ملک کی پوری آبادی میں ایک چوتھائی سے زیادہ نسبت نہیں رکھتی۔ لیکن سوال تعداد کی نسبت کا نہیں ہے، خود تعداد اور اس کی نوعیت کا ہے۔ کیا انسانی مواد کی اتنی عظیم مقدار کے لیے اس طرح کے اندیشوں کی کوئی جائز وجہ ہو سکتی ہے کہ وہ ایک آزاد اور جمہوری ہندستان میں اپنے حقوق و مفاد کی خود نگہداشت نہیں کر سکے گی؟

یہ تعداد کسی ایک ہی رقبہ میں سمٹی ہوئی نہیں ہے، بلکہ ایک خاص تقسیم کے ساتھ ملک کے مختلف حصوں میں پھیل گئی ہے۔ ہندستان کے گیارہ صوبوں میں سے چار صوبے ایسے ہیں، جہاں اکثریت مسلمانوں کی ہے، اور دوسری مذہبی جماعتیں اقلیت کی حیثیت رکھتی ہیں۔ اگر برٹش بلوچستان کا بھی اس میں اضافہ کر دیا جائے، تو چار کی جگہ مسلم اکثریت کے پانچ صوبے ہو جائیں گے۔ اگر ہم ابھی مجبور ہیں کہ مذہبی تفریق کی بنا پر ہی "اکثریت" اور "اقلیت" کا تصور کرتے رہیں، تو بھی اس تصور میں مسلمانوں کی جگہ محض ایک اقلیت کی دکھائی نہیں دیتی۔ وہ اگر سات صوبوں میں اقلیت کی حیثیت رکھتے ہیں تو پانچ صوبوں میں انھیں



اکثریت کی جگہ حاصل ہے۔ ایسی حالت میں کوئی وجہ نہیں کہ انھیں کو ایک اقلیت گروہ ہونے کا احساس مضطرب کر سکے۔

ہندستان کا آئندہ دستور اساسی (Constitution) اپنی تفصیلات میں خواہ کسی نوعیت کا ہو، مگر اس کی ایک بات ہم سب کو معلوم ہے۔ وہ کامل معنوں میں ایک آل انڈیا وفاق (Federations) کا جمہوری دستور ہوگا، جس کے تمام حلقے (Units) اپنے اندرونی معاملات میں خود مختار ہوں گے، اور فیڈرل مرکز کے حصے میں صرف وہی معاملات رہیں گے، جن کا تعلق ملک کے عام اور مجموعی مسائل سے ہوگا۔ مثلاً بیرونی تعلقات، دفاع، کسٹم وغیرہ۔ ایسی حالت میں کیا ممکن ہے کہ کوئی دماغ جو ایک جمہوری دستور کے پوری طرح عمل میں آنے اور دستوری شکل میں چلنے کا نقشہ تھوڑی دیر کے لیے بھی اپنے سامنے لا سکتا ہے، ان اندیشوں کو قبول کرنے کے لیے تیار ہو جائے، جنھیں اکثریت اور اقلیت کے اس پُر فریب سوال نے پیدا کرنے کی کوشش کی ہے؟ میں ایک لمحہ کے لیے یہ باور نہیں کر سکتا کہ ہندستان کے مستقبل کے نقشے میں ان اندیشوں کے لیے کوئی جگہ نکل سکتی ہے۔ دراصل یہ تمام اندیشے اس لیے پیدا ہو رہے ہیں کہ ایک برطانی مدبر کے مشہور لفظوں میں جو اس نے آئرلینڈ کے بارے میں کہے تھے:

"ہم ابھی تک دریا کے کنارے کھڑے ہیں، اور گو تیرنا چاہتے ہیں، مگر دریا میں اترتے نہیں۔ ان اندیشوں کا صرف ایک ہی علاج ہے۔ ہمیں دریا میں بے خوف وخطر کود جانا چاہیے۔"

جوں ہی ہم نے ایسا کیا، ہم معلوم کر لیں گے کہ ہمارے تمام اندیشے بے بنیاد تھے۔

مسلمانانِ ہند کے لیے ایک بنیادی سوال

تقریباً تیس برس ہوئے، جب میں نے بحیثیت ایک ہندوستانی مسلمان کے اس مسئلہ پر پہلی مرتبہ غور کرنے کی کوشش کی تھی۔ یہ وہ زمانہ تھا کہ مسلمانوں کی اکثریت سیاسی جدوجہد کے میدان سے یک قلم کنارہ کش تھی، اور عام طور پر وہی ذہنیت ہر طرف چھائی ہوئی تھی، جو ۱۸۸۸ء میں کانگریس سے علیحدگی اور مخالفت کی اختیار کر لی گئی تھی۔ وقت کی یہ آب وہوا میرے غور وفکر کی راہ نہ روک سکی۔ میں بہت جلد ایک آخری نتیجہ تک پہنچ گیا اور اس نے میرے سامنے یقین اور عمل کی راہ کھول دی۔ میں نے غور کیا کہ ہندستان اپنے تمام حالات کے ساتھ ہمارے سامنے موجود ہے، اور اپنے مستقبل کی طرف بڑھ رہا ہے۔ ہم بھی اسی کشتی میں سوار ہیں، اور اس کی رفتار سے بے پروا نہیں رہ سکتے۔ اس لیے ضروری ہے کہ اپنے طرز عمل کا ایک صاف اور قطعی فیصلہ کر لیں۔ یہ فیصلہ ہم کیونکر کر سکتے ہیں؟ صرف اس طرح کہ معاملہ کی سطح پر نہ رہیں، اس کی بنیادوں تک اُتریں، اور پھر دیکھیں کہ ہم اپنے آپ کو کس حالت میں پاتے ہیں۔ میں نے ایسا کیا، اور دیکھا کہ سارے معاملے کا فیصلہ صرف ایک سوال کے جواب پر موقوف ہے۔ ہم ہندوستانی مسلمان ہندوستان کے آزاد مستقبل کو شک اور بے اعتمادی کی نظر سے دیکھتے ہیں، یا خود اعتمادی اور ہمت کی نظر سے؟ اگر پہلی صورت ہے، تو بلاشبہ ہماری راہ بالکل دوسری ہو جاتی ہے۔ وقت کا کوئی اعلان، آئندہ کا کوئی وعدہ، دستور اساسی کا کوئی تحفظ، ہمارے شک اور خوف کا اصلی علاج نہیں ہو سکتا۔ ہم مجبور ہو جاتے ہیں کہ کسی تیسری طاقت کی موجودگی برداشت کریں۔ یہ تیسری طاقت موجود ہے اور اپنی جگہ چھوڑنے کے لیے تیار نہیں، اور ہمیں بھی خواہش رکھنی چاہیے کہ وہ اپنی جگہ نہ چھوڑ سکے، لیکن اگر ہم محسوس کرتے ہیں کہ ہمارے لیے شک اور خوف کی کوئی وجہ نہیں، ہمیں خود اعتمادی اور ہمت کی نظر سے مستقبل کو دیکھنا چاہیے۔ تو پھر ہماری راہِ عمل بالکل صاف ہو جاتی ہے۔ ہم اپنے آپ کو بالکل ایک دوسرے عالم میں پانے لگتے ہیں۔ شک، تذبذب، بے عملی اور انتظار کی درماندگیوں کی یہاں پرچھائیں بھی نہیں پڑ سکتی۔ یقین، جماؤ، عمل اور سرگرمی کا سورج یہاں کبھی نہیں ڈوب سکتا۔ وقت کا کوئی الجھاؤ، حالات کا کوئی اتار چڑھاؤ، معاملوں کی کوئی چھیمن ہمارے قدموں کا رُخ نہیں بدل سکتی۔ ہمارا فرض ہو جاتا ہے کہ ہندوستان کے قومی مقصد کی راہ میں قدم اٹھائے بڑھتے جائیں۔!

مجھے اس سوال کا جواب معلوم کرنے میں ذرا بھی دیر نہیں لگی۔ میرے دل کے ایک ایک ریشے نے پہلی حالت سے انکار کیا۔ میرے لیے ناممکن تھا کہ اس کا تصور بھی کر سکوں۔ میں کسی مسلمان کے لیے بشرطیکہ اس نے اسلام کی روح اپنے دل کے ایک ایک کونے سے ڈھونڈ کر نکال نہ پھینکی ہو، یہ ممکن نہیں سمجھتا کہ اپنے کو پہلی حالت میں دیکھنا برداشت کرے۔!

میں نے ۱۹۱۰ء میں "الہلال" جاری کیا اور اپنا یہ فیصلہ مسلمانوں کے سامنے رکھا۔ آپ کو یہ یاد دلانے کی ضرورت نہیں کہ میری صدائیں

بے اثر نہیں رہیں۔ ۱۹۱۲ء سے ۱۹۱۶ء تک کا زمانہ مسلمانانِ ہند کی نئی سیاسی کروٹ کا زمانہ تھا۔ ۱۹۲۰ء کے اواخر میں جب چار برس کی نظربندی کے بعد میں رہا ہوا تو میں نے دیکھا کہ مسلمانوں کی سیاسی ذہنیت اپنا پچھلا سانچہ توڑ چکی ہے اور نیا سانچہ ڈھل رہا ہے۔ اس واقعہ پر بیس برس گزر چکے۔ اس مدت میں طرح طرح کے اُتار چڑھاؤ ہوتے رہے۔ حالات کے نئے نئے سیلاب بہے۔ خیالات کی نئی نئی لہریں اٹھیں۔ تاہم ایک حقیقت بغیر کسی تبدیلی کے اب تک قائم ہے۔ مسلمانوں کی عام راہ پیچھے لوٹنے کے لیے تیار نہیں۔

ہاں، وہ اب پیچھے لوٹنے کے لیے تیار نہیں۔ لیکن آگے بڑھنے کی راہ اُس پر پھر مشتبہ ہو رہی ہے۔ میں اس وقت اسباب میں نہیں جاؤں گا۔ میں صرف اثرات دیکھنے کی کوشش کروں گا۔ میں اپنے ہم مذہبوں کو یاد دلاؤں گا کہ میں نے ۱۹۱۲ء میں جس جگہ سے انھیں مخاطب کیا تھا، آج بھی میں اسی جگہ کھڑا ہوں۔ اس تمام مدت نے حالات کا جو انبار ہمارے سامنے کھڑا کر دیا ہے، اُن میں سے کوئی حالت ایسی نہیں جو میرے سامنے سے نہ گزری ہو۔ میری آنکھوں نے دیکھنے میں اور میرے دماغ نے سوچنے میں کبھی کوتاہی نہیں کی۔ حالات میرے سامنے سے صرف گزرتے ہی نہ رہے بلکہ میں اُن کے اندر کھڑا رہا اور میں نے ایک ایک حالت کا جائزہ لیا۔ میں مجبور ہوں کہ اپنے مشاہدے کو نہ جھٹلاؤں، میرے لیے ممکن نہیں کہ اپنے یقین سے لڑوں۔ میں اپنے ضمیر کی آواز کو نہیں دبا سکتا۔ میں اس تمام عرصے میں ان سے کہتا رہا ہوں اور آج بھی ان سے کہتا ہوں کہ ہندوستان کے نو کروڑ مسلمانوں کے لیے صرف وہی راہِ عمل ہو سکتی ہے جس کی میں نے ۱۹۱۲ء میں انھیں دعوت دی تھی۔

میرے جن ہم مذہبوں نے ۱۹۱۲ء میں میری صدا کو قبول کیا تھا، مگر آج انھیں مجھ سے اختلاف ہے، میں انھیں اس اختلاف کے لیے ملامت نہیں کروں گا، مگر میں ان سے اخلاص اور سنجیدگی سے اپیل کروں گا۔ یہ قوموں اور ملکوں کی قسمتوں کا معاملہ ہے، ہم اسے وقتی جذبات کی رو میں بہہ کر طے نہیں کر سکتے۔ ہمیں زندگی کی ٹھوس حقیقتوں کی بنا پر اپنے فیصلوں کی دیواریں تعمیر کرنی ہیں۔ ایسی دیواریں روز بنائی اور ڈھائی نہیں جا سکتیں۔ میں تسلیم کرتا ہوں کہ بدقسمتی سے وقت کی فضا غبار آلود ہو رہی ہے۔ مگر انھیں حقیقت کی روشنی میں آنا چاہیے۔ وہ آج بھی ہر پہلو سے معاملے پر غور کر لیں، وہ اس کے سوا کوئی راہِ عمل اپنے سامنے نہیں پائیں گے۔

مسلمان اور متحدہ قومیت

میں مسلمان ہوں اور فخر کے ساتھ محسوس کرتا ہوں کہ مسلمان ہوں۔ اسلام کی تیرہ سو برس کی شاندار روایتیں میرے ورثے میں آئی ہیں۔ میں تیار نہیں کہ اس کا کوئی چھوٹے سے چھوٹا حصہ بھی ضائع ہونے دوں۔ اسلام کی تعلیم، اسلام کی تاریخ، اسلام کے علوم و فنون، اسلام کی تہذیب، میری دولت کا سرمایہ ہے۔ اور میرا فرض ہے کہ اس کی حفاظت کروں۔ بحیثیت مسلمان ہونے کے میں مذہبی اور کلچرل دائرے میں اپنی ایک خاص ہستی رکھتا ہوں۔ اور میں برداشت نہیں کر سکتا کہ اس میں کوئی مداخلت کرے۔ لیکن ان تمام احساسات کے ساتھ میں ایک اور احساس بھی رکھتا ہوں، جسے میری زندگی کی حقیقتوں نے پیدا کیا ہے۔ اسلام کی روح مجھے اس سے نہیں روکتی، وہ اس راہ میں میری رہنمائی کرتی ہے۔ میں فخر کے ساتھ محسوس کرتا ہوں کہ میں ہندوستانی ہوں۔ میں ہندوستان کی ایک اور ناقابلِ تقسیم متحدہ قومیت کا ایک عنصر ہوں۔ میں اس متحدہ قومیت کا ایک ایسا اہم عنصر ہوں، جس کے بغیر اس کی عظمت کا ہیکل ادھورا رہ جاتا ہے۔ میں اس کی تکوین (بناوٹ) کا ایک ناگزیر عامل (Factor) ہوں۔ میں اپنے اس دعوے سے کبھی دست بردار نہیں ہو سکتا۔

ہندوستان کے لیے قدرت کا یہ فیصلہ ہو چکا تھا کہ اس کی سرزمین انسان کی مختلف نسلوں، مختلف تہذیبوں، اور مختلف مذہبوں کے قافلوں کی منزل بنے۔ ابھی تاریخ کی صبح بھی نمودار نہیں ہوئی تھی کہ ان قافلوں کی آمد شروع ہو گئی۔ اور پھر ایک کے بعد ایک سلسلہ جاری رہا۔ اس کی وسیع سرزمین سب کا استقبال کرتی رہی اور اس کی فیاض گود نے سب کے لیے جگہ نکالی۔ ان ہی قافلوں میں ایک آخری قافلہ ہم پیروانِ اسلام کا بھی تھا۔ یہ بھی پچھلے قافلوں کے نشانِ راہ پر چلتا ہوا یہاں پہنچا۔ اور ہمیشہ کے لیے بس گیا۔ یہ دنیا کی دو مختلف قوموں اور تہذیبوں کے دھاروں کا ملاپ تھا۔ یہ گنگا اور جمنا کے دھاروں کی طرح پہلے ایک دوسرے سے الگ الگ بہتے رہے، لیکن پھر جیسا کہ قدرت کا اٹل قانون ہے، دونوں کو ایک سنگم میں مل جانا پڑا۔ ان دونوں کا میل تاریخ کا ایک عظیم واقعہ تھا۔ جس دن یہ واقعہ ظہور

میں آیا، اُسی دن سے قدرت کے مخفی ہاتھوں نے، پُرانے ہندوستان کی جگہ ایک نئے ہندوستان کے ڈھالنے کا کام شروع کر دیا۔

ہم اپنے ساتھ اپنا ذخیرہ لائے تھے، یہ سرزمین بھی اپنے ذخیروں سے مالا مال تھی۔ ہم نے اپنی دولت اس کے حوالے کر دی اور اس نے اپنے خزانوں کے دروازے ہم پر کھول دیے۔ ہم نے اُسے اسلام کے ذخیرے کی وہ سب سے زیادہ قیمتی چیز دے دی، جس کی اُسے سب سے زیادہ احتیاج تھی۔ ہم نے اسے جمہوریت اور انسانی مساوات کا پیام پہنچا دیا۔

تاریخ کی پوری گیارہ صدیاں اس واقعے پر گزر چکی ہیں۔ اب اسلام بھی اس سرزمین پر ویسا ہی دعوا رکھتا ہے، جیسا دعوا ہندو مذہب کا ہے۔ اگر ہندو مذہب کئی ہزار برس سے اس سرزمین کے باشندوں کا مذہب رہا ہے، تو اسلام بھی ایک ہزار برس سے اس کے باشندوں کا مذہب چلا آتا ہے۔ جس طرح آج ایک ہندو فخر کے ساتھ کہہ سکتا ہے کہ وہ ہندوستانی ہے، اور ہندو مذہب کا پیرو ہے، ٹھیک اسی طرح ہم بھی فخر کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ ہم ہندوستانی ہیں اور مذہبِ اسلام کے پیرو ہیں۔ میں اس دائرے کو اس سے زیادہ وسیع کروں گا۔ میں ہندوستانی مسیحی کا بھی یہ حق تسلیم کروں گا کہ وہ آج سر اُٹھا کے کہہ سکتا ہے کہ میں ہندوستانی ہوں، اور باشندگانِ ہند کے ایک مذہب یعنی مسیحیت کا پیرو ہوں۔

ہماری گیارہ صدیوں کی مشترک (ملی جلی) تاریخ نے ہماری ہندوستانی زندگی کے تمام گوشوں کو اپنے تعمیری سامانوں سے بھر دیا ہے۔ ہماری زبانیں، ہماری شاعری، ہمارا ادب، ہماری معاشرت، ہمارا ذوق، ہمارا لباس، ہمارے رسم و رواج، ہماری روزانہ زندگی کی بے شمار حقیقتیں، کوئی گوشہ بھی ایسا نہیں ہے، جس پر اس مشترک زندگی کی چھاپ نہ لگی ہو۔ ہماری بولیاں الگ الگ تھیں، مگر ہم ایک ہی زبان بولنے لگے۔ ہمارے رسم و رواج ایک دوسرے سے بیگانہ تھے، مگر انھوں نے مل جل کر ایک نیا سانچا پیدا کر لیا۔ ہمارا پرانا لباس تاریخ کی پُرانی تصویروں میں دیکھا جا سکتا ہے۔ مگر اب وہ ہمارے جسموں پر نہیں دیکھا جا سکتا۔ یہ تمام مشترک سرمایہ ہماری متحدہ قومیت کی ایک دولت ہے، اور ہم اسے چھوڑ کر اس زمانے کی طرف لوٹنا نہیں چاہتے، جب ہماری یہ ملی جلی زندگی شروع نہیں ہوئی تھی۔ ہم میں اگر ایسے ہندو دماغ ہیں، جو چاہتے ہیں کہ ایک ہزار برس پہلے کی ہندو زندگی واپس لائیں، تو انھیں معلوم ہونا چاہیے کہ وہ ایک خواب دیکھ رہے ہیں، اور وہ کبھی پورا ہونے والا نہیں۔ اسی طرح اگر ایسے مسلمان دماغ موجود ہیں، جو چاہتے ہیں کہ اپنی اس گزری ہوئی تہذیب اور معاشرت کو پھر تازہ کریں جو وہ ایک ہزار برس پہلے ایران اور وسطِ ایشیا سے لائے تھے، تو میں ان سے بھی کہوں گا کہ اس خواب سے جس قدر جلد بیدار ہو جائیں، بہتر ہے۔ کیونکہ یہ ایک غیر قدرتی تخیل ہے۔ اور حقیقت کی زمین میں ایسے خیالات اُگ نہیں سکتے۔ میں ان لوگوں میں ہوں جن کا اعتقاد ہے کہ تجدید (Revival) کی مذہبیت میں ضرورت ہے، مگر معاشرت میں یہ ترقی سے انکار کرنا ہے۔

ہماری اس ایک ہزار سال کی مشترک زندگی نے ایک متحدہ قومیت کا سانچا ڈھالا دیا ہے۔ ایسے سانچے بنائے نہیں جا سکتے۔ و قدرت کے مخفی ہاتھوں سے صدیوں میں خود بنا کرتے ہیں۔ اب یہ سانچا ڈھل چکا۔ اور قسمت کی مہر اس پر لگ چکی۔ ہم پسند کریں یا نہ کریں، اب ہم ایک ہندوستانی قوم اور ناقابلِ تقسیم ہندوستانی قوم بن چکے ہیں۔ علیحدگی کا کوئی بنا تخیل ہمارے اس ایک ہونے کو دو نہیں بنا سکا ہمیں قدرت کے فیصلے پر رضامند ہونا چاہیے اور اپنی قسمت کی تعمیر میں لگ جانا چاہیے۔

خاتمہ

حضرات! میں اب آپ کا زیادہ وقت نہیں لوں گا۔ میں اب اپنی تقریر ختم کرنا چاہتا ہوں۔ لیکن قبل اس کے کہ ختم کردوں، مجھے ا بات کے یاد دلانے کی اجازت دیجیے۔ آج ہما ساری کامیابیوں کا دارومدار تین چیزوں پر ہے: اتحاد، ڈسپلن (Discipline) اور مہاتما گاندھی کی رہنمائی پر اعتماد۔ یہی ا تنہا رہنمائی ہے، جس نے ہماری تحریک کا شا ماضی تعمیر کیا، اور صرف اسی سے ہم ایک فتح من مستقبل کی توقع کر سکتے ہیں۔

ہماری آزمائش کا ایک نازک وقت ہمارے سامنے ہے۔ ہم نے تمام دنیا کی نگاہوں نظارے کی دعوت دے دی ہے۔ کوشش کیجیے اس کے اہل ثابت ہوں۔

(خطباتِ آزاد" مرتبہ مالک رام، شائع کردہ ساہتیہ ا کا

)



مسلمانانِ دلی کا اجتماع

(جامع مسجد دلی ـــ اکتوبر ۱۹۴۷ء)

میرے عزیزو! آپ جانتے ہیں کہ وہ کون سی چیز ہے جو مجھے یہاں لائی ہے۔ میرے لیے شاہ جہاں کی اس یادگار مسجد میں یہ اجتماع کوئی نئی بات نہیں۔ میں نے اس زمانہ میں جس پر لیل و نہار کی بہت سی گردشیں بیت چکی ہیں، تمھیں یہیں سے خطاب کیا تھا۔ جب تمھارے چہروں پر اضمحلال کی بجائے اطمینان تھا اور تمھارے دلوں میں شک کی بجائے اعتماد۔ آج تمھارے چہروں کا اضطراب اور دلوں کی ویرانی دیکھتا ہوں تو مجھے بے اختیار پچھلے چند برسوں کی بھولی بسری کہانیاں یاد آجاتی ہیں۔ تمھیں یاد ہے، میں نے تمھیں پکارا تم نے میری زبان کاٹ لی، میں نے قلم اٹھایا اور تم نے میرے ہاتھ قلم کر دیے۔ میں نے چلنا چاہا تم نے میرے پاؤں کاٹ دیے۔ میں نے کروٹ لینی چاہی، تم نے میری کمر توڑ دی۔ حتیٰ کہ پچھلے سات برس کی تلخ نوا سیاست جو تمھیں آج داغِ جدائی دے گئی ہے، اس کے عہد شباب میں بھی میں نے تمھیں خطرے کی شاہراہ پر جھنجھوڑا لیکن تم نے میری صدا سے نہ صرف احتراز کیا، بلکہ غفلت و انکار کی ساری سنتیں تازہ کریں۔ نتیجہ معلوم کہ آج ان ہی خطروں نے تمھیں گھیر لیا ہے، جن کا اندیشہ تمھیں صراطِ مستقیم سے دور لے گیا تھا۔

سچ پوچھو تو میں ایک جمود ہوں یا ایک دور افتادہ صدا جس نے وطن میں رہ کر بھی غریب الوطنی کی زندگی گذاری ہے۔ اس کا یہ مطلب نہیں کہ جو مقام میں نے پہلے دن اپنے لیے چن لیا تھا، وہاں میرے بال و پر کاٹ لیے گئے ہیں، یا میرے آشیانے کے لیے جگہ نہیں رہی۔ بلکہ میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ میرے دامن کو تمھاری دست درازیوں سے گلہ ہے۔ میرا احساس زخمی اور میرے دل کو صدمہ ہے۔ سوچو تو سہی، تم نے کون سی راہ اختیار کی؟ کہاں پہنچے اور اب کہاں کھڑے ہو؟ کیا یہ خوف کی زندگی نہیں؟ کیا تمھارے حواس میں اختلال نہیں آگیا ہے؟ یہ خوف تم نے خود ہی فراہم کیا ہے۔ یہ تمھارے اپنے اعمال کے پھل ہیں۔

ابھی کچھ زیادہ عرصہ نہیں بیتا جب میں نے تم سے کہا تھا کہ دو قوموں کا نظریہ حیاتِ معنوی کے لیے مرض الموت کا درجہ رکھتا ہے، اس کو چھوڑ دو۔ یہ ستون جن پر تم نے بھروسہ کیا ہے۔ نہایت تیزی سے ٹوٹ رہے ہیں۔ لیکن تم نے سنی ان سنی برابر کر دی، اور یہ نہ سوچا کہ وقت اور اس کی تیز رفتار تمھارے لیے اپنا ضابطہ تبدیل نہیں کر سکتے۔ وقت کی رفتار تھمی نہیں۔ تم دیکھ رہے ہو کہ جن سہاروں پر تمھیں بھروسہ تھا، وہ تمھیں لاوارث سمجھ کر تقدیر کے حوالے کر گئے۔ وہ تقدیر جو تمھارے دماغی لغت کی منشاء سے مختلف مفہوم رکھتی ہے۔ یعنی ان کے نزدیک فقدانِ ہمت کا نام تقدیر ہے۔

انگریز کی بساط تمھاری خواہش کے برخلاف الٹ دی گئی اور رہنمائی کے وہ بت جو تم نے وضع کیے تھے، وہ بھی دغا دے گئے۔ حالاں کہ تم نے یہی سمجھا تھا کہ یہ بساط ہمیشہ کے لیے بچھائی گئی ہے، اور ان ہی بتوں کی پوجا میں تمھاری زندگی ہے۔ میں تمھارے زخموں کو کریدنا نہیں چاہتا اور تمھارے اضطراب میں مزید اضافہ میری خواہش نہیں۔ لیکن اگر کچھ دور ماضی کی طرف پلٹ جاؤ، تو تمھارے لیے بہت سی گرہیں کھل سکتی ہیں۔ ایک وقت تھا، میں نے ہندوستان کی آزادی کے حصول کا احساس دلاتے ہوئے تمھیں پکارا تھا اور کہا تھا۔

"جو ہونے والا ہے اس کو کوئی قوم اپنی نحوست سے روک نہیں سکتی۔ ہندوستان کی تقدیر میں سیاسی انقلاب لکھا جا چکا ہے اور اس کی غلامانہ زنجیریں بیسویں صدی کی ہوائے حریت سے کٹ کر گرنے والی ہیں۔ اگر تم نے وقت کے پہلو بہ پہلو قدم اٹھانے سے پہلوتہی کی اور تعطل کی موجودہ زندگی کو اپنا شعار بنائے رکھا تو مستقبل کا مورخ لکھے گا کہ تمھارے گروہ نے جو سات کروڑ انسانوں کا ایک غول تھا، ملک کی آزادی کے بارے میں وہ رویہ اختیار کیا، جو صفحۂ ہستی سے محو ہو جانے والی قوموں کا شیوہ ہوا کرتا ہے۔ آج ہندوستان کا جھنڈا اپنے پورے شکوہ سے لہرا رہا ہے۔ یہ وہی جھنڈا ہے جس کی اڑانوں سے حاکمانہ غرور کے دل آزار قہقہے تمسخر کیا کرتے تھے۔"

یہ ٹھیک ہے کہ وقت نے تمھاری خواہشوں کے مطابق انگڑائی نہیں لی، بلکہ اس نے ایک قوم کے پیدائشی حق کے احترام میں کروٹ بدلی اور یہی وہ انقلاب ہے، جس کی ایک کروٹ نے تمھیں بہت حد تک خوفزدہ کر دیا ہے۔ تم خیال کرتے ہو کہ تم سے کوئی اچھی شے چھن گئی ہے اور اس کی جگہ بری شے آگئی ہے۔ ہاں، تمھاری بیقراری اسی لیے ہے کہ تم نے اپنے تئیں اچھی شے کے لیے تیار نہیں کیا تھا اور بری شے کو ملجا و ماویٰ سمجھ رکھا تھا۔ میری مراد غیر



ملکی غلامی سے ہے۔ جس کے ہاتھوں تم نے مدتوں حاکمانہ طمع کا کھلونا بن کر زندگی بسر کی ہے۔ ایک دن تھا جب ہماری قوم کے قدم کسی جنگ کے آغاز کی طرف تھے، اور آج تم اس جنگ کے انجام سے مضطرب ہو۔ آخر تمھاری اس عجلت پر کیا کہوں؟ کہ ادھر سفر کی جستجو ختم نہیں ہوئی اور ادھر گمرہی کا خطرہ بھی پیش آ گیا۔

میرے بھائی! میں نے ہمیشہ سیاست کو ذاتیات سے الگ رکھنے کی کوشش کی ہے۔ میں نے اس پرخار وادی میں قدم نہیں رکھا۔ یہی وجہ ہے کہ میری بہت سی باتیں کنایوں کا پہلو لیے ہوتی ہیں۔ لیکن مجھے آج جو کچھ کہنا ہے، اسے بے روک ہو کر کہنا چاہتا ہوں۔ متحدہ ہندوستان کا بٹوارہ بنیادی طور پر غلط تھا۔ مذہبی اختلاف کو جس ڈھب سے ہوا دی گئی اس کا لازمی نتیجہ یہی آثار و مظاہر تھے، جو ہم نے اپنی آنکھوں سے دیکھے اور بدقسمتی سے بعض مقامات میں آج بھی دیکھ رہے ہیں۔

پچھلے سات برس کی روداد دہرانے سے کوئی فائدہ نہیں اور نہ اس سے کوئی اچھا نتیجہ نکل سکتا ہے۔ البتہ ہندوستان کے مسلمانوں پر جو ریلا آیا ہے وہ یقیناً مسلم لیگ کی غلط قیادت کی فاش غلطیوں ہی کا نتیجہ ہے لیکن میرے لیے اس میں کوئی نئی بات نہیں۔ میں پہلے دنوں ہی سے ان نتائج پر نظر رکھتا تھا

اب ہندوستان کی سیاست کا رخ بدل چکا ہے۔ مسلم لیگ کے لیے یہاں کوئی جگہ نہیں ہے۔ اب یہ ہمارے اپنے دماغوں پر منحصر ہے کہ ہم کسی اچھے انداز فکر میں بھی سوچ سکتے ہیں یا نہیں۔ اسی لیے میں نے نومبر کے دوسرے ہفتہ میں ہندوستان کے مسلمان رہنماؤں کو دہلی بلانے کا قصد کیا ہے... دعوت نامے بھیج دیے گئے ہیں۔ ہراس کا موسم عارضی ہے۔ میں تم کو یقین دلاتا ہوں کہ ہم کو ہمارے سوا کوئی زیر نہیں کر سکتا۔ میں نے ہمیشہ کہا اور آج پھر کہتا ہوں کہ تذبذب کا راستہ چھوڑ دو، شک سے ہاتھ اٹھا لو، اور بدعملی کو ترک کر دو۔ یہ تین دھار کا انوکھا خنجر لوہے کی اس دو دھاری تلوار سے زیادہ کاری ہے، جس کے گھاؤ کی کہانیاں میں نے تمھارے نوجوانوں کی زبانی سنی ہیں۔

یہ فرار کی زندگی جو تم نے ہجرت کے مقدس نام پر اختیار کی ہے، اس پر غور کرو، اپنے دلوں کو مضبوط بناؤ، اور اپنے دماغوں کو سوچنے کی عادت ڈالو اور پھر دیکھو کہ تمھارے یہ فیصلے کتنے عاجلانہ ہیں۔ آخر کہاں جا رہے ہو اور کیوں جا رہے ہو؟

یہ دیکھو مسجد کے بلند مینار تم سے اچک کر سوال کرتے ہیں کہ تم نے اپنی تاریخ کے صفحات کو کہاں گم کر دیا ہے؟ ابھی کل کی بات ہے کہ جمنا کے کنارے تمھارے قافلوں نے وضو کیا تھا اور آج تم ہو کہ تمھیں یہاں رہتے ہوئے خوف محسوس ہوتا ہے۔ حالاں کہ دہلی تمھارے خون سے سینچی ہوئی ہے۔

عزیزو! اپنے اندر ایک بنیادی تبدیلی پیدا کرو جس طرح آج سے کچھ عرصے پہلے تمھارا جوش و خروش بیجا تھا، اسی طرح آج یہ تمھارا خوف و ہراس بھی بیجا ہے مسلمان اور بزدلی، یا مسلمان اور اشتعال، ایک جگہ جمع نہیں ہو سکتے۔ سچے مسلمانوں کو نہ تو کوئی طمع ہلا سکتی ہے، اور نہ کوئی خوف ڈرا سکتا ہے۔ چند انسانی چہروں کے غائب ہو جانے سے ڈرو نہیں۔ انھوں نے تمھیں جانے کے لیے اکٹھا کیا تھا آج انھوں نے تمھارے ہاتھ سے اپنا ہاتھ کھینچ لیا ہے تو یہ عیب کی بات نہیں۔ یہ دیکھو، تمھارے دل تو ان کے ساتھ ہی رخصت نہیں ہو گئے۔ اگر دل ابھی تک تمھارے پاس ہیں، تو اسے خدا کی جلوہ گاہ بناؤ جس نے آج سے تیرہ سو برس پہلے عرب کے ایک اُمّی کی معرفت فرمایا تھا: "جو خدا پر ایمان لائے اور اس پر جم گئے تو پھر ان کے لیے نہ تو کسی طرح کا ڈر ہے اور نہ کوئی غم۔" ہوائیں آتی ہیں اور گزر جاتی ہیں۔ یہ صرصر سہی لیکن اس کی عمر کچھ زیادہ نہیں۔ ابھی دیکھتی آنکھوں ابتلا کا موسم گزرنے والا ہے۔ یوں بدل جاؤ جیسے تم پہلے کبھی اس حالت ہی میں نہ تھے

میں کلام میں تکرار کا عادی نہیں ہوں۔ لیکن مجھے تمھاری تغافل کیشی کے پیش نظر بار بار یہ کہنا پڑتا ہے کہ تیسری طاقت اپنے گھمنڈ کا پشتارہ اٹھا کر رخصت ہو چکی ہے۔ جو ہونا تھا وہ ہو کر رہا۔ سیاسی ذہنیت اپنا پچھلا سانچہ توڑ چکی ہے اور اب نیا سانچہ ڈھل رہا ہے۔ اگر اب بھی تمھارے دلوں کا معاملہ بدلا نہیں، اور دماغوں کی چبھن ختم نہیں ہوئی، تو پھر حالت دوسری ہے۔ لیکن اگر واقعی تمھارے اندر سچی تبدیلی کی خواہش پیدا ہو گئی ہے تو پھر اس طرح بدلو، جس طرح تاریخ نے اپنے تئیں بدل لیا ہے آج بھی کہ ہم ایک دور انقلاب کو پورا کر چکے ہیں، ہمارے ملک کی تاریخ میں کچھ صفحے خالی ہیں اور ہم ان صفحوں میں زیب عنوان بن سکتے ہیں مگر شرط یہ ہے کہ ہم اس کے لیے تیار بھی ہوں۔

عزیزو! تبدیلیوں کے ساتھ چلو۔ یہ نہ کہو کہ ہم اس تغیر کے لیے تیار نہ تھے، بلکہ اب تیار ہو جاؤ۔ ستارے ٹوٹ گئے، لیکن سورج تو چمک رہا ہے۔ اس سے کرنیں مانگ لو اور ان اندھیری راہوں میں بچھا دو، جہاں اجالے کی سخت ضرورت ہے۔

میں تم سے یہ نہیں کہتا کہ تم حاکمانہ اقتدار کے مدرسے سے وفاداری کا سرٹیفکیٹ حاصل کرو اور کاسہ لیسی کی وہی زندگی اختیار کرو، جو غیر ملکی حاکموں کے عہد میں تمھارا شعار رہا ہے۔ میں کہتا ہوں کہ جو

جیتے نقش و نگار تمھیں اس ہندوستان میں ماضی کی روداد کے طور پر نظر آ رہے ہیں، وہ تمھارا ہی قافلہ تھا۔ انھیں بھلاؤ نہیں، انھیں چھوڑو نہیں، ان کے وارث بن کر رہو، اور سمجھ لو کہ اگر تم بھاگنے کے لیے تیار نہیں تو پھر تمھیں کوئی طاقت نہیں بھگا سکتی۔ آؤ عہد کرو کہ یہ ملک ہمارا ہے، ہم اس کے لیے ہیں اور اس کی تقدیر کے بنیادی فیصلے ہماری آواز کے بغیر ادھورے ہی رہیں گے۔

آج زلزلوں سے ڈرتے ہو؟ کبھی تم خود ایک زلزلہ تھے۔ آج اندھیرے سے کانپتے ہو، کیا یاد نہیں کہ تمھارا وجود ایک اجالا تھا۔ یہ بادلوں نے میلا پانی برسایا ہے اور تم نے بھیگ جانے کے ڈر سے اپنے پائینچے چڑھا لیے ہیں۔ وہ تمھارے ہی اسلاف تھے، جو سمندروں میں اتر گئے، پہاڑوں کی چھاتیوں کو روند ڈالا، بجلیاں آئیں تو ان پر مسکرا دیے۔ بادل گرجے تو قہقہوں سے جواب دیا۔ صرصر اٹھی، تو اس کا رُخ پھیر دیا۔ آندھیاں آئیں تو ان سے کہا کہ تمھارا راستہ یہ نہیں ہے۔ یہ ایمان کی جاں کنی ہے کہ شہنشاہوں کے گریبانوں سے کھیلنے والے آج خود اپنے گریبانوں سے کھیلنے لگے۔ اور خدا سے اس درجہ غافل ہو گئے کہ جیسے اس پر کبھی ایمان ہی نہیں تھا۔

عزیزو! میرے پاس تمھارے لیے کوئی نیا نسخہ نہیں ہے۔ وہی پرانا نسخہ ہے، جو برسوں پہلے کا ہے۔ وہ نسخہ جس کو کائناتِ انسانی کا سب سے بڑا محسن لایا تھا۔ وہ نسخہ ہے قرآن کا یہ اعلان کہ لَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ۔

آج کی صحبت ختم ہو گئی۔ مجھے جو کچھ کہنا تھا، وہ اختصار کے ساتھ کہہ چکا ہوں۔ پھر کہتا ہوں اور بار بار کہتا ہوں: اپنے حواس پر قابو رکھو، اپنے گرد و پیش اپنی زندگی خود فراہم کرو۔ یہ منڈی کی چیز نہیں کہ تمھیں خرید کر لا دوں۔ یہ تو دل کی دکان ہی میں سے اعمالِ صالحہ کی نقدی سے دستیاب ہو سکتی ہے۔

والسلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ ؎

(خطباتِ آزاد، مرتبہ مالک رام)



مہاتما گاندھی کی یادگار

(نئی دہلی ـــــ فروری ۱۹۴۸ء)

[گاندھی جی کے حادثۂ قتل کے چند ہی روز بعد فروری ۱۹۴۸ء میں کانسٹی ٹیوشن کلب نئی دلّی میں ایک اجتماع ہوا تھا، جہاں یہ مسئلہ زیر بحث تھا کہ گاندھی جی کی یادگار کس شکل میں قائم کی جائے۔ اس جلسے کی صدارت مولانا آزاد نے فرمائی تھی۔ یہ ان کی صدارتی تقریر ہے۔]

آج مہاتما گاندھی کے بعد نہ صرف ہندوستان میں، بلکہ تمام دنیا میں ان کی یادگار مختلف شکلوں میں قائم ہے۔ حال ہی میں کانگریس ورکنگ کمیٹی نے بھی چھ اصحاب پر مشتمل ایک کمیٹی بنائی ہے، جو مہاتما گاندھی کی ایک ایسی یادگار قائم کرنے کے مسئلے پر غور و فکر کرے گی، جو ان کے پاکیزہ مقصد حیات اور اس کی روح کو دنیا کے سامنے نمایاں کردے۔

اس کے علاوہ دوسرے طریقوں سے بھی ان کی خدمات کے تذکرے اور قلمی یادگاریں، ان کے کارنامے محفوظ کیے جارہے ہیں۔ تاکہ آنے والی نسلیں جب ان کی زندگی کا مطالعہ کریں، تو ایک روشن حقیقت ان کے سامنے آجائے۔

یہ سب کچھ ہے لیکن میں جب بھی سوچتا ہوں ایک چیز بار بار میرے سامنے آتی ہے، اور وہ یہ کہ اس طرح جو کچھ بھی کیا جارہا ہے، اس میں مجھے ایک بڑا خانہ خالی نظر آتا ہے، اور اگر اس کو پُر نہ کیا گیا، تو ایک بڑی کمی رہ جائے گی۔

آپ کو معلوم ہے کہ مہاتما جی کی زندگی مختلف کاموں میں گزری ہے، لیکن ان جیسی شخصیتیں دنیا میں کبھی کبھی ابھرا کرتی ہیں، جو دنیا کی تمام خود ساختہ حد بندیوں سے بالاتر ہوا کرتی ہیں۔

تاریخ انسانی کے ہر دور میں آپ دیکھیں گے کہ انسان نے دنیا میں بہت سی حد بندیاں قائم کی ہیں۔ جیسے جغرافیائی حد بندی، کہا جاتا ہے: یہ یورپ ہے، یہ ایشیا، یہ عرب ہے، یہ ہندوستان وغیرہ۔ مذہبی حد بندی، ہم کہتے ہیں: یہ مسلمان ہے، یہ عیسائی، یہ ہندو، یہ سکھ وغیرہ۔

قومی حد بندی: کہا جاتا ہے "یہ انگریز ہے، یہ اٹالین، یہ ہندی وغیرہ"

لسانی حد بندی: کہا جائے گا "یہ فلاں زبان کا بولنے والا ہے اور یہ فلاں زبان کا وغیرہ" ایسے ہی رنگ و نسل کی حد بندی وغیرہ۔

یہ تمام حد بندیاں ہماری زندگی کی قدرتی ضروریات ہیں۔ لیکن جب تک یہ تعمیری دائرہ میں رہتی ہیں، ہمارے لیے ایک بڑا سہارا بنتی ہیں اور جب یہ تخریبی رنگ اختیار کرلیتی ہیں تو گروہ انسانی کو تباہ کردینے والی اور برباد کردینے والی بن جایا کرتی ہیں۔

دنیا کی پوری تاریخ میں جب بھی ان حد بندیوں کا غلط استعمال ہونے لگتا ہے، تو وہی مقاصد جو ان کے سہارے چمکتے تھے، خاک میں مل جاتے ہیں۔

مثال کے طور پر مذہب کی حد بندی کو لیجیے سب جانتے ہیں کہ مذہب دنیا کی اصلاح کے لیے آیا ہے۔ اور صلح و آشتی، امن و انصاف وغیرہ ایسی چیزیں ہیں، جن کو ہر مذہب بنیادی طور پر صحیح مانتا ہے۔ لیکن یہی مذہبی حد بندی جب فرقہ جامہ پہن لیتی ہے تو ہزاروں خوں ریزیوں کا باعث بن جاتی ہے۔ دنیا کی تاریخ میں ہزاروں کشت و خون ہیں، جو اسی مذہب کے نام پر ہوئے ہیں۔

اپنے ہی ماحول کو دیکھیے۔ آج ہمارے چاروں طرف جو کچھ ہو رہا ہے، وہ مذہب کا نام لے کر ہی کیا جا رہا ہے۔ ایسے ہی جغرافیائی حد بندی کو لیجیے۔ قرآن کی بولی میں یہ بندشیں اس لیے تھیں کہ لِتَعَارَفُوا تاکہ باہم پہچان پیدا ہو۔ لیکن یہی حد بندی جب تنگ ہی شکل میں آتی ہے تو دنیا میں بڑی بربادیوں کا باعث بن جاتی ہے۔

یہی حال قومی حد بندی کا ہے۔ اس کا مقصد بھی وہی لِتَعَارَفُوا ہے۔ یعنی آپس کی پہچان کا ذریعہ۔ لیکن یہی قومیت کی حد بندی، جو ایک ذریعہ پہچان کا تھی، جب اپنی حدوں سے گزر جاتی ہے، تو دنیا میں بڑی خوں ریزیاں سی قومی حرص و طمع اور غرور و گھمنڈ کے نتیجے میں ہوئی ہیں

غرض کہ دنیا میں بہت سی حد بندیاں ہماری زندگی پر چھا گئی ہیں، اور ہم ان میں ایسے بند ہو گئے ہیں کہ اگرچہ ہم میں تیزی سے بڑی روشن خیالی کی بڑی سے بڑی جگہ پیدا ہوگئی ہے، لیکن ان حدود کے اندر ہی اندر رہ کر، ان سے آگے قدم رکھنے کی ان میں جرأت ہی پیدا نہیں ہوسکتی۔ لیکن جس طرح زمانہ ہمیشہ نئی شکل پر چلتا ہے۔ لیکن کبھی کبھی اپنا رنگ چھوڑ دیتا ہے۔ ایسے ہی ہم دیکھتے ہیں کہ تاریخ کے افق پر کبھی کبھی ایسی شخصیتیں ابھرتی ہیں کہ دنیا کی



کوئی حد بندی بھی انھیں بڑائی تک پہنچنے سے نہیں روک سکتی۔ مذہب کی حد بندی ان کی آنکھوں کو بند نہیں کر سکتی۔ قومیت کی حد بندی ان کے پاؤں کی زنجیر نہیں بن سکتی۔ وطنیت کی حد بندی ان کے ہاتھوں کو پکڑ نہیں سکتی۔ وہ ان تمام حدود سے بہت اونچے اور بلند ہوتے ہیں

جب یہ شخصیتیں ان بندشوں کی حدود سے بلند ہو جاتی ہیں، تب آپ دیکھیں گے کہ ان کی آنکھوں میں سچائی کا نور پیدا ہو جاتا ہے۔ ان کی نگاہ میں تعصب کا ایک شمہ نہیں رہتا۔ ان کی نظر ہر طرف اور ہر گوشے پر یکساں پڑتی ہے۔ دنیا کا تمام پھیلاؤ ان کے سامنے ہوتا ہے۔ وہ سب کو ایک ہی نور سے دیکھتے اور پہچانتے ہیں۔ انھیں جہاں کہیں حسن نظر آتا ہے، وہ دوڑتے ہیں کہ یہ تو ہمارے لیے ہے۔ انھیں جس طرف خوبی نظر آتی ہے، وہ اس کو اپناتے ہیں۔ اور کہتے ہیں کہ یہ ہمارا حق ہے۔ لیکن آپ یاد رکھیے تاریخ میں ایسی ہستیاں بہت ہی کم ہوا کرتی ہیں

مہاتما جی کی ہستی تاریخ عالم کی ان ہی ہستیوں میں سے ایک تھی۔ وہ دنیا کی ان تمام حد بندیوں سے بلند تر تھے۔ اور ان کی نگاہ میں ہر قوم اور ہر وطن ہر نسل اور ہر گروہ ایک ہی حیثیت رکھتا تھا۔ اور وہ ہر ایک کی خوبیوں کو اپناتے اور پسند کرتے تھے۔ جہاں تک میری یادداشت کام کرتی ہے، مجھے ان کا تعارف سب سے پہلے ۱۹۰۸ء میں ہوا، جب کہ والد مرحوم نے انتقال فرمایا۔ بمبئی، ٹرانسوال وغیرہ میں والد مرحوم نمایاں حیثیت رکھتے تھے۔ اور ان اطراف میں ان کے بہت سے مریدین و معتقدین تھے۔ ان دنوں گاندھی جی ان اطراف کے حالات سے دلچسپی لے رہے تھے اور ٹرانسوال کانگریس کے پروگراموں میں سرگرم عمل تھے۔ اس وقت مجھے ایک ٹیلی گرام ملا جس کے نیچے گاندھی جی کے دستخط تھے۔ انھوں نے اس ٹیلی گرام میں والد مرحوم کی تعزیت کی تھی۔ اس کے بعد ۱۹۱۸ء تک مجھے ان سے خط و کتابت یا زیارت و ملاقات کا موقع نہ ملا۔ ۱۹۱۹ء میں جب میں رانچی جیل میں نظر بند تھا ان دنوں گاندھی جی بہار کے دورے کے لیے آئے اور انھوں نے ایک شخص کے ذریعے مجھے جیل میں پیغام بھیج کر میں بہار آیا ہوا ہوں اور تم سے ملنا چاہتا ہوں۔ مگر گورنر بہار نے مجھے اس کی اجازت نہیں دی۔ اس کے بعد جب میں رانچی جیل سے رہا ہوا، اور ایک جلسہ میں شرکت کے لیے ۱۹۲۰ء کی ۲۰ جنوری کو دہلی آیا، تو حکیم اجمل خاں صاحب مرحوم کے مکان پر سب سے پہلے مجھے گاندھی جی سے نیاز حاصل ہوا۔ اس دن سے آج تک جب کہ ۱۹۴۸ء ہے، ۲۸ برس گذر چکے ہیں۔ ۲۸ برس کے یہ دن ہم پر ایسے گذرے ہیں کہ گویا ہم ایک ہی چھت کے نیچے رہے۔

اس عرصے میں بسا اوقات ان سے اختلافات بھی ہوئے۔ چنانچہ اس لڑائی کے زمانے میں میرا اور ان کا جو اختلاف ہوا تھا، اس سے آپ بھی واقف ہوں گے۔ کانگریس ورکنگ کمیٹی میں میری یہ قطعی رائے تھی جس پر ممبران کی اکثریت کو اتفاق تھا کہ اگر برطانیہ یہ مان لے کہ جنگ کے بعد ہندوستان کو آزادی دی جائے گی، تو ہم لڑائی میں شریک ہو سکتے ہیں۔ ان کو اس سے سخت اختلاف تھا۔ وہ بالکل دوسری جانب جا رہے تھے۔ وہ کہتے تھے: ہم ایسی آزادی لینا ہی نہیں چاہتے، جو لڑائی کے معاوضے میں ہم کو ملے۔ اس لیے وہ کسی طرح بھی لڑائی میں شرکت کے لیے تیار نہ تھے۔

آپ کو یہ بھی معلوم ہے کہ کانگریس ورکنگ کمیٹی کی تجویز کا ڈرافٹ گاندھی جی ہی بنایا کرتے تھے چنانچہ اس مرتبہ بھی اپنے اس ریزولیوشن کا ڈرافٹ بنوانے کے لیے میں اور پنڈت نہرو گاندھی جی کے پاس گئے۔ اور انھوں نے اپنے پورے اختلاف کے باوجود اس تجویز کا ڈرافٹ بنا دیا۔

غرض اس طویل مدت میں بہت سے موقعے آئے کہ ہم میں اور ان میں اختلاف ہوا اور کشمکش تک نوبت پہنچی، انھوں نے اور ہم نے، دونوں ہی نے اپنی اپنی جگہ اس کو محسوس بھی کیا۔ لیکن اس پوری زندگی میں کوئی ایسا وقت نہیں آیا کہ ہمارے دلوں کا رخ پھر گیا ہو۔ ایسے ایسے اختلافوں کے باوجود ان کی عظمت کی جو رسی ہماری گردنوں میں پڑی ہوئی تھی۔ ہم کبھی اس سے باہر نہ ہو سکے۔

اس وقت پر آپ سے یہ کہہ دوں کہ میری طبیعت میں ایک طرح کا نقص اور خامی ہے۔ وہ یہ کہ جب تک کسی کی کوئی خصوصیت میرے سامنے نہ آ جائے، جو میرے دماغ پر چھا جائے اور میری گردن کو دبا لے، اس وقت تک وہ مجھے اپنے سامنے جھکا نہیں سکتا: "میری گردن کی رگیں سخت ہیں۔" میرے سامنے جب کوئی دماغ آتا ہے، تو پہلے میرا ذہن اس کے خلاف ہی جانا چاہتا ہے۔ یہاں تک کہ وہ میرے ذہن کو اپنی مضبوط گرفت میں لے لے۔ چنانچہ جب میں پہلی دفعہ مہاتما جی سے ملا، اس وقت میں ان کا معتقد نہیں تھا۔ میری آنکھوں پر اعتقاد کی پٹی نہ تھی جو انسان کی آنکھوں کو بند کر دیا کرتی ہے۔ لیکن اس کے بعد ان کی ہر ہر چیز نے ان کی عظمت کو میرے دل میں راسخ کر دیا۔ اور جو دن گذرا میرا اعتقاد ان کے بارے میں بڑھتا ہی چلا گیا۔ ہم دو آدمیوں کو ان سے انتہائی قرب تھا اور ہمیں بہت طویل موقع ملا۔ وہ ایک کھلی ہوئی کتاب تھے، جس کا ہر ورق کھلا ہوا، ہر سطر روشن، اور ہر لفظ دھلا ہوا اور ہر حرف چمکتا ہوا تھا۔

آج تمام دنیا میں شاید ان ہی کی زندگی ایسی



تھی، جس کا ایک حرف بھی چھپا ہوا نہ تھا۔ انسانیت کی عظمت کے لیے سب سے بڑی کسوٹی ہے۔ اور اس معیار پر اترنے والے تمام تاریخِ انسانی میں صرف چند انسان ہوئے ہیں جنھیں آپ اپنی انگلیوں پر گن سکتے ہیں۔

جن کو تمام دنیا کی حد بندیوں نے الجھانے کی کوشش کی، لیکن وہ الجھ نہ سکے۔ تمام بندشوں نے ان کا دامن پکڑنا چاہا، مگر وہ گرفت میں نہ آ سکے۔ میرے نزدیک گاندھی جی کی سب سے بڑی عظمت یہی ہے۔

یہ نہ تھا کہ مہاتما جی ہندو نہ تھے۔ وہ بیشک ہندو تھے۔ لیکن انھوں نے ہندو مذہب و دماغ کی ایک نئی تعبیر کی تھی۔ اور ایک نیا زاویہ بنایا تھا، جو تمام حد بندیوں پر چھا گیا تھا۔ اور وہ ایک ایسی جگہ بن گئی کہ نہ وہاں جغرافیہ اور قومیت کی لکیریں چل سکتی ہیں، نہ اور دوسری حد بندیوں کی دیواریں قائم رہ سکتی ہیں۔ یہ وہ بلندی ہے کہ اگر ہمارا دماغ وہاں تک پہنچ سکے، تو اس سے بڑی کوئی خوبی نہیں ہے۔

ہندو مذہب کا پرانا دماغ اور نقشہ جو ہمارے سامنے آتا ہے، اس میں بہت زیادہ وسعتیں تھیں۔ اور جہاں تک میرا مطالعہ ہے، دنیا کے تمام مذاہب میں نظریۂ توحید کو جس مذہب نے سب سے زیادہ قریب سے دیکھا ہے، وہ ہندو مذہب ہے۔ میرے پاس اس کے بہت سے تاریخی شواہد و نظائر موجود ہیں، لیکن آج ہندو دھرم کی وہ شکل باقی نہیں ہے۔ اور اس کے بہت سے خانے خالی ہو چکے ہیں۔ ہندو مذہب نے ابتدائی دور میں یونانیوں کو وہ درجہ دیا تھا، جو ایک برہمن کا ہوتا ہے۔ صرف اس لیے کہ یونان علم دوست ملک تھا۔ لیکن دوسری جگہ یہ ہے کہ ہندو دماغ گرنے لگا۔ چھوت چھات اور تنگ دماغ پیدا ہو گیا۔ تب ہی سے ہندو دھرم اپنی بلند سطح سے گر گیا۔

گاندھی جی ہندو تھے اور ہندو ہی رہے۔ لیکن انھوں نے ہندو دھرم کی اتنی اونچی جگہ بنائی تھی کہ جب وہ اس بلندی پر سے دیکھتے تھے تو دنیا کے تمام جھگڑے ان کو مٹے ہوئے نظر آتے تھے۔ ان کے سامنے ایک کھلی ہوئی سچائی تھی جو کسی ایک کا ورثہ نہیں ہے بلکہ سورج اور اس کی شعاعوں کی طرح سب کے لیے ہے۔

پس ہمیں گاندھی جی کی عظمت ان ادنیٰ درجے کی چیزوں میں نہیں ڈھونڈھنی چاہیے، بلکہ پردہ اٹھا کر دیکھنا چاہیے تب حقیقت کا چہرہ صاف نظر آئے گا۔ وہ اتنی بلندی پر تھے کہ دنیا کی کوئی حد بندی ان کا راستہ روک نہیں سکی۔

آج ہم ان کی کوئی بھی یادگار بنائیں، وہ نامکمل ہوگی، جب تک کہ وہ ان کی اس بلندی کو ظاہر نہ کرے۔ اس لیے مجھے آپ سے یہ کہنا ہے کہ گاندھی جی کی یادگار اس شکل میں ہونی چاہیے جو مہاتما جی کی اس بلندی کو ظاہر کرے۔ آنے والی نسلوں کو اپنی خاموش زبان سے بتا دے کہ مہاتما جی کا مشن اور مقصدِ حیات یہ تھا، جو دنیا بھر کے زائرین کو اپنی زبانِ حال سے گاندھی جی کی عظمت و بلندی کی تاریخ بتا سکے۔

آپ کتنی ہی یادگاریں بنا لیں لیکن وہ بیکار ہیں، جب تک کہ ان کی نگاہیں اس عالمگیر سچائی کی طرف نہ اٹھیں، جو گاندھی جی کے پیشِ نظر تھی۔

"خطباتِ آزاد" مرتبہ مالک رام،



حکایتِ بادہ و تریاک

(۱)

قلعۂ احمد نگر

۲۰ اگست ۱۹۴۲ء

صدیقِ مکرم

انسان اپنی ایک زندگی کے اندر کتنی ہی مختلف زندگیاں بسر کرتا ہے۔ مجھے بھی اپنی زندگی کی دو قسمیں کر دینی پڑیں۔ ایک قید خانے سے باہر کی، ایک اندر کی :

ہم تمنا رہا باش و ہم ماہی کہ در اقلیمِ عشق
روے دریا سلسبیل و قعرِ دریا آتش ست

دونوں زندگیوں کے مرقعوں کی الگ الگ رنگ و روغن سے نقش آرائی ہوئی ہے۔ آپ شاید ایک کو دیکھ کر دوسری کو پہچان نہ سکیں :

لباسِ حسنِ صورت گر دو رنگوں کند بینند
کہ خرقہ خشن ما ز طلا باف است

قید سے باہر کی زندگی میں اپنی طبیعت کی افتاد بدل نہیں سکتا، خود رفتگی اور خود مشغولی مزاج پر چھائی رہتی ہے۔ دماغ اپنی فکروں سے باہر آنا نہیں چاہتا اور دل اپنی نقش آرائیوں کا گوشہ چھوڑنا نہیں چاہتا۔ بزمِ انجمن کے لیے بارِ خاطر نہیں ہوتا، لیکن یارِ نشاط بھی بہت کم بن سکتا ہوں :

تا کے چو موجِ بحر بہ سر شوریدہ فتن،
در عینِ بحر پاے چو گرداب بند کن

لیکن جونہی حالات کی رفتار قید و بند کا پیام لاتی ہے میں کوشش کرنے لگتا ہوں کہ اپنے آپ کو یک قلم بدل دوں۔ میں اپنا پچھلا دماغ سر سے نکال دیتا ہوں اور ایک نئے دماغ سے اس کی خالی جگہ بھرنی چاہتا ہوں۔ جب دل کے طاقوں کو دیکھتا ہوں کہ خالی ہو گئے، تو کوشش کرتا ہوں کہ نئے نئے نقش و نگار بناؤں اور انھیں پھر سے آراستہ کروں :

وقت ست دگر بُت کدہ سازند حرم را

اس تحولِ صورت (Metamorphism) کے عمل میں کہاں تک مجھے کامیابی ہوتی ہے؟ اس کا فیصلہ تو دوسروں ہی کی نگاہیں کر سکیں گی، لیکن خود میرے فریبِ حال کے لیے اتنی کامیابی بس کرتی ہے کہ اکثر اوقات اپنی پچھلی زندگی کو بھولا رہتا ہوں اور جب تک اس کے سراغ میں نہ نکلوں اسے واپس نہیں لا سکتا :

دل کہ جمع ست غم از بے سروسامانی نیست
فکرِ جمعیت اگر نیست پریشانی نیست

اگر آپ مجھے اس عالم میں دیکھیں تو خیال کریں، میری پچھلی زندگی مجھے قید خانے کے دروازے تک پہنچا کر واپس چلی گئی، اور اب ایک دوسری ہی زندگی سے سابقہ پڑا ہے۔ جو زندگی کل تک اپنی حالتوں میں گرد و خوش کامیوں اور دل شگفتگیوں سے بہت کم آشنا تھی، آج اچانک ایک ایسی زندگی کے قالب میں ڈھل گئی جو شگفتہ مزاجیوں اور خندہ روئیوں کے سوا اور کسی بات سے آشنا ہی نہیں، "ہر وقت خوش رہو اور ہر ناگوار حالت کو خوشگوار بناؤ"، جس کا دستور العمل ہے :

حاصلِ کارگہِ کون و مکاں این ہمہ نیست
بادہ پیش آر کہ اسبابِ جہاں این ہمہ نیست

پنج روزے کہ دریں مرحلہ مہلت داری
خوش بیاسا زمانے کہ زماں این ہمہ نیست

میں نے قید خانے کی زندگی کو دو متضاد فلسفوں سے ترکیب دی ہے۔ اس میں ایک جز رواقیہ (Stoics) کا ہے، ایک لذتیہ (Epicureans) کا :

پنبہ را آشتی این جا بہ شرار افتاد است !

جہاں تک حالات کی ناگواریوں کا تعلق ہے، رواقیت سے ان کے زخموں پر مرہم لگاتا ہوں اور ان کی چبھن بھول جانے کی کوشش کرتا ہوں :

ہر وقت بد کہ زود در آب سیل داں
ہر نقشِ خوش کہ جلوہ کند موجِ آب گیر

جہاں تک زندگی کی خوشگواریوں کا تعلق ہے، لذتیہ کا زاویۂ نگاہ کام میں لاتا ہوں اور خوش رہتا ہوں :

ہر وقتِ خوش کہ دست دہد مغتنم شمار
کس را وقوف نیست کہ انجامِ کار چیست !

میں نے اپنے کاک ٹیل (Cocktail) کے جام میں دونوں بوتلیں انڈیل دیں۔ میرا ذوقِ بادہ آشامی بغیر اس جامِ مرکب کے تسکین نہیں پا سکتا تھا۔ اسے قدیم تعبیر میں یوں سمجھیے کہ گویا حکایتِ بادہ و تریاک میں نے تازہ کر دی ہے :

چناں افیون ساقی در مے افگند
حریفاں را نہ سر ماند و نہ دستار

البتہ کاک ٹیل کا یہ نسخۂ خاص ہر خامکار کے بس کی چیز نہیں ہے۔ صرف بادہ گساران کہن مشق ہی اسے کام میں لا سکتے ہیں۔ ورموتھ (Vermouth) اور



جن (Gin) کا مرکب پینے والے اس رطلِ گراں کے متحمل نہیں ہوسکیں گے۔ مولانائے روم نے ایسے ہی معاملات کی طرف اشارہ کیا تھا:

بادۂ آں در خورِ ہر ہوش نیست
حلقۂ آں سخرۂ ہر گوش نیست

آپ کہیں گے کہ قید خانہ کی زندگی رواقیت کے لیے تو موزوں ہوئی کہ زندگی کے رنج و راحت سے بے پروا بنا دینا چاہتی ہے لیکن لذتیہ کی عشرت اندوزیوں کا وہاں کیا موقع ہو؟ جو نامراد قید خانے سے باہر کی آزادیوں میں بھی زندگی کی عیش کوشیوں سے تہی دست رہتے ہیں، انھیں قید و بند کی محروم زندگی میں اس کا سر و سامان کہاں میسر آسکتا ہے؟ لیکن میں آپ کو یاد دلاؤں گا کہ انسان کا اصلی عیش دماغ کا عیش ہے، جسم کا نہیں۔ میں لذتیہ سے ان کا دماغ لے لیتا ہوں، جسم ان کے لیے چھوڑ دیتا ہوں۔ داغ مرحوم نے ناصح سے صرف اس کی زبان لے لینی چاہی تھی:

ملے جو حشر میں لے لوں زبان ناصح کی
عجیب چیز ہے یہ طولِ مدعا کے لیے

اور غور کیجیے، تو یہ بھی ہمارے وہم و خیال کا ایک فریب ہی ہے کہ سر و سامانِ کار ہمیشہ اپنے سے باہر ڈھونڈھتے رہتے ہیں۔ اگر یہ پردۂ فریب ہٹا کر دیکھیں تو صاف نظر آجائے کہ وہ ہم سے باہر نہیں ہے، خود ہمارے اندر ہی موجود ہے۔ عیش و مسرت کی جن گل شگفتگیوں کو ہم چاروں طرف ڈھونڈھتے ہیں اور نہیں پاتے، وہ ہمارے نہاں خانۂ دل کے چمن زاروں میں ہمیشہ کھلتے اور مرجھاتے رہتے ہیں۔ لیکن محرومی ساری یہ ہوئی کہ ہمیں چاروں طرف کی خبر ہے مگر خود اپنی خبر نہیں۔ وَفِیْ اَنْفُسِکُمْ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ۔

کہیں تجھ کو نہ پایا گرچہ ہم نے اک جہاں ڈھونڈھا
پھر آخر دل ہی میں پایا، بغل ہی میں سے تو نکلا!

جنگل کے مور کو کبھی باغ و چمن کی جستجو نہیں ہوئی۔ اس کا چمن خود اس کی بغل میں موجود رہتا ہے۔ جہاں کہیں اپنے پر کھول دے گا، ایک چمنستانِ بوقلموں کھل جائے گا:

نہ با صحرا سرے دارم نہ با گلزار سودائے
نہ ہر جا می روم، از خویش می جوشد تماشائے

قید خانے کی چار دیواری کے اندر بھی سورج ہر روز چمکتا ہے اور چاندنی راتوں نے کبھی قیدی اور غیر قیدی میں امتیاز نہیں کیا۔ اندھیری راتوں میں جب آسمان کی قندیلیں روشن ہو جاتی ہیں، تو وہ صرف قید خانے کے باہر ہی نہیں چمکتیں، اسیرانِ قید و محن کو بھی اپنی جلوہ فروشیوں کا پیام بھیجتی رہتی ہیں۔ صبح جب طباشیر بکھیرتی ہوئی آئے گی اور شام جب شفق کی گلگوں چادریں پھیلانے لگے گی، تو صرف عشرت سراؤں کے دریچوں ہی سے ان کا نظارہ نہیں کیا جائے گا، قید خانے کے روزنوں سے لگی ہوئی نگاہیں بھی انھیں دیکھ لیا کریں گی۔ فطرت نے انسان کی طرح کبھی یہ نہیں کیا کہ کسی کو شاد کام رکھے، کسی کو محروم کر دے۔ وہ جب کبھی اپنے چہرے سے نقاب الٹتی ہے، تو سب کو یکساں طور پر نظارۂ حسن کی دعوت دیتی ہے۔ یہ ہماری غفلت اندیشی ہے کہ نظر اٹھا کر دیکھتے نہیں اور صرف اپنے گرد و پیش ہی میں کھوئے رہتے ہیں:

محرم نہیں ہے تو ہی نواہائے راز کا
یاں ورنہ جو حجاب ہے، پردہ ہے ساز کا

جس قید خانے میں صبح ہر روز مسکراتی ہو، جہاں شام ہر روز پردۂ شب میں چھپ جاتی ہو، جس کی راتیں کبھی ستاروں کی قندیلوں سے جگمگانے لگتی ہوں، کبھی چاندنی کی حسن افروزیوں سے جہاں تاب رہتی ہوں، جہاں دوپہر ہر روز چمکے، شفق ہر روز نکھرے، پرند ہر صبح و شام چہکیں، اسے قید خانہ ہونے پر بھی عیش و مسرت کے سامانوں سے خالی کیوں سمجھ لیا جائے؟ یہاں سر و سامانِ کار کی تو اتنی فراوانی ہوئی کہ کسی گوشہ میں بھی گم نہیں ہوسکتا۔ مصیبت ساری یہ ہے کہ خود ہمارا دل و دماغ ہی گم ہو جاتا ہے۔ ہم اپنے سے باہر ساری چیزیں ڈھونڈھتے رہیں گے، مگر اپنے کھوئے ہوئے دل کو کبھی نہیں ڈھونڈھیں گے، حالانکہ اگر اسے ڈھونڈھ نکالیں، تو عشرت و مسرت کا سارا سامان اسی کوٹھڑی کے اندر سمٹا ہوا مل جائے:

بغیرِ دل ہمہ نقش و نگار بے معنی ست
ہمیں ورق کہ سیہ گشت، مدعا ایں جاست

ایوان و محل نہ ہوں، تو کسی درخت کے سایے سے کام لے لیں۔ دیبا و مخمل کا فرش نہ ملے، تو سبزۂ خودرو کے فرش پر جا بیٹھیں۔ اگر برقی روشنی کے کنول میسر نہیں ہیں، تو آسمان کی قندیلوں کو کون بجھا سکتا ہے؟ اگر دنیا کی ساری مصنوعی خوشنمائیاں اوجھل ہو گئی ہیں، تو ہو جائیں، صبح اب بھی ہر روز مسکرائے گی، چاندنی اب بھی ہمیشہ جلوہ فروشیاں کرے گی لیکن اگر دلِ زندہ پہلو میں نہ رہے، تو خدارا بتلائیے، اس کا بدل کہاں ڈھونڈھیں؟ اس کی خالی جگہ بھرنے کے لیے کس چولھے کے انگارے کام دیں گے:

مجھے یہ ڈر ہے دلِ زندہ! تو نہ مر جائے
کہ زندگانی عبارت ہے تیرے جینے سے

میں آپ کو بتلاؤں، اس راہ میں میری کامرانیوں کا راز کیا ہے؟ میں اپنے دل کو مرنے نہیں دیتا۔ کوئی



جگہ ہو، اس کی تڑپ کبھی دھیمی نہیں پڑے گی۔ میں جانتا ہوں کہ جہاں زندگی کی ساری ولولہ انگیزیاں اسی میکدۂ خلوت کے دم سے ہیں۔ یہ اُجڑا، اور ساری دنیا اُجڑ گئی :

از صد سخن پیرم یک حرف مرا یاد ست
"عالم نہ شود ویراں، تا میکدہ آباد ست"

باہر کے ساز و سامانِ عشرت مجھ سے چھین جائیں، لیکن جب تک یہ نہیں چھنتا، میرے عیش و طرب کی سرمستیاں کون چھین سکتا ہے؟ :

دیدمش خرم و خنداں قدحِ بادہ بدست
واندراں آینہ صد گونہ تماشا می کرد
گفتم: "ایں جامِ جہاں بیں بتو کے داد حکیم؟"
گفت: "آں روز کہ ایں گنبدِ مینا می کرد"

آپ کو معلوم ہے، میں ہمیشہ صبح تین بجے سے چار بجے کے اندر اٹھتا ہوں اور چائے کے پیہم فنجانوں سے جامِ صبوحی کا کام لیا کرتا ہوں۔ خواجہ شیراز کی طرح میری صدا سے حال بھی یہ ہوتی ہے کہ :

خورشید سر زمشرقِ ساغر طلوع کرد
گر برگِ عیش می طلبی ترکِ خواب کن

یہ وقت ہمیشہ میرے اوقاتِ زندگی کا سب سے زیادہ پُرکیف وقت ہوتا ہے۔ لیکن قید خانے کی زندگی میں تو اس کی سرمستیاں اور خود فراموشیاں ایک دوسرا ہی عالم پیدا کر دیتی ہیں۔ یہاں کوئی آدمی ایسا نہیں ہوتا، جو اس وقت خواب آلود آنکھیں لیے ہوئے اٹھے اور قرینہ سے چائے بنا کر میرے سامنے دھر دے۔ اس لیے خود اپنے ہی دستِ شوق کی سرگرمیوں سے کام لینا پڑتا ہے۔ میں اس وقت بادۂ کہن کے شیشہ کی جگہ چینی چائے کا تازہ ڈبا کھولتا ہوں، اور ایک ماہرِ فن کی دقیقہ سنجیوں کے ساتھ چائے دم دیتا ہوں۔ پھر جام و صراحی کو میز پر داہنی طرف جگہ دوں گا کہ اس کی اولیت اسی کی مستحق ہوئی۔ قلم و کاغذ کو بائیں طرف رکھوں گا کہ سر و سامانِ کار میں ان کی جگہ دوسری ہوئی۔ پھر کرسی پر بیٹھ جاؤں گا، اور کچھ نہ پوچھیے کہ بیٹھتے ہی کس عالم میں پہنچ جاؤں گا۔ کسی بادہ گسار نے شامپین اور بورڈو کے صد سالہ تہ خانوں کے عرقِ کہن سال میں بھی وہ کیف و سرور کہاں پایا ہوگا، جو چائے کے اس دورِ صبح گاہی کا ہر گھونٹ میرے لیے مہیا کر دیتا ہے :

ما در پیالہ عکسِ رخِ یار دیدہ ایم
اے بے خبر زلذتِ شربِ مدامِ ما!

آپ کو معلوم ہے کہ میں چائے کے لیے روسی فنجان کام میں لاتا ہوں۔ یہ چائے کی معمولی پیالیوں سے بہت چھوٹے ہوتے ہیں۔ اگر بے ذوقی کے ساتھ پیجیے، تو دو گھونٹ میں ختم ہو جائیں۔ مگر خدا ناخواستہ میں ایسی بے ذوقی کا مرتکب کیوں ہونے لگا؟ میں تو بادہ کشانِ کہن مشق کی طرح ٹھہر ٹھہر کر پیوں گا، اور چھوٹے چھوٹے گھونٹ لوں گا۔ پھر جب پہلا فنجان ختم ہو جائے گا، تو کچھ دیر کے لیے رک جاؤں گا، اور اس درمیانی وقفہ کو امتدادِ کیف کے لیے جتنا طول دے سکتا ہوں، طول دوں گا۔ پھر دوسرے اور تیسرے کے لیے ہاتھ بڑھاؤں گا، اور دنیا کو اور اس کے سارے کارخانۂ سود و زیاں کو یک قلم فراموش کر دوں گا :

خوشتر از فکرِ مے و جام چہ خواہد بودن
تا بہ بینیم سرِ انجام چہ خواہد بودن

اس وقت بھی کہ یہ سطریں بے اختیار نوکِ قلم سے نکل رہی ہیں۔ اسی عالم میں ہوں، اور نہیں جانتا کہ ۹ اگست کی صبح کے بعد سے دنیا کا کیا حال ہوا، اور اب کیا ہو رہا ہے :

شرابِ تلخ دہ ساقی کہ مرد افگن بود زورش
کہ تا یک دم بیاسایم ز دنیا و شر و شورش
کمندِ صیدِ بہرامی بیفگن، جامِ مے بردار
کہ من پیمودم ایں صحرا، نہ بہرام ست، نے گورش

میرا دوسرا پُرکیف وقت دوپہر کا ہوتا ہے، یا زیادہ صحتِ تعین کے ساتھ کہوں کہ زوال کا ہوتا ہے۔ لکھتے لکھتے تھک جاتا ہوں، تو تھوڑی دیر کے لیے لیٹ جاتا ہوں، پھر اٹھتا ہوں، غسل کرتا ہوں، چائے کا دور تازہ کرتا ہوں اور تازہ دم ہو کر پھر اپنی مشغولیتوں میں گم ہو جاتا ہوں۔ اس وقت آسمان کی بے داغ نیلگونی اور سورج کی بے نقاب درخشندگی کا جی بھر کے نظارہ کروں گا، اور روزنِ دل کا ایک ایک دریچہ کھول دوں گا۔ گوشہ ہائے خاطر افسردگیوں اور گرفتگیوں سے کتنے ہی غبار آلود ہوں، لیکن آسمان کی کشادہ پیشانی اور سورج کی چمکتی ہوئی خندہ روئی دیکھ کر ممکن نہیں کہ اچانک روشن نہ ہو جائیں :

با زم بہ کلبہ کیست، نہ شمع و نہ آفتاب
بام و درم ز ذرہ و پروانہ پُر شدہ ست

لوگ ہمیشہ اس کھوج میں لگے رہتے ہیں کہ زندگی کو بڑے بڑے کاموں کے لیے کام میں لائیں، لیکن نہیں جانتے کہ یہاں ایک سب سے بڑا کام خود زندگی ہوئی، یعنی زندگی کو ہنسی خوشی کاٹ دینا۔ یہاں اس سے زیادہ سہل کام کوئی نہ ہوا کہ مر جائیے اور اس سے زیادہ مشکل کام کوئی نہ ہوا کہ زندہ رہیے۔ جس نے یہ مشکل حل کر لی، اس نے زندگی کا سب سے بڑا کام انجام دے دیا :

ناصحم گفت کہ جز غم چہ ہنر دارد عشق
گفتم: "اے خواجۂ عاقل! ہنرے بہتر ازیں؟"

غالباً قدیم چینیوں نے زندگی کے مسئلہ کو



دوسری قوموں سے بہتر سمجھا تھا۔ ایک پرانے چینی مقولہ میں سوال کیا گیا ہے: "سب سے زیادہ دانشمند آدمی کون ہے؟" پھر جواب دیا ہے: "جو سب سے زیادہ خوش رہتا ہے۔" اس سے ہم چینی فلسفۂ زندگی کا زاویۂ نگاہ معلوم کر سکتے ہیں اور اس میں شک نہیں کہ یہ بالکل صحیح ہے:

نہ ہر درخت تحمل کند جفائے خزاں
غلامِ ہمتِ سروم کہ ایں قدم دارد!

اگر آپ نے یہاں ہر حال میں خوش رہنے کا ہنر سیکھ لیا ہے تو یقین کیجیے کہ زندگی کا سب سے بڑا کام سیکھ لیا۔ اب اس کے بعد اس سوال کی گنجائش ہی نہیں رہی کہ آپ نے اور کیا کیا سیکھا؟ خود بھی خوش رہیے اور دوسروں سے بھی کہتے رہیے کہ اپنے چہروں کو غمگین نہ بنائیں:

چو مہمانِ خراباتی، بعشرت باش باریداں
کہ دردِ سر کشی جاناں، گر ایں مستی خمار آلود

زمانۂ حال کے ایک فرانسیسی اہلِ قلم آندرے ژیدا (Andre Gide) کی ایک بات مجھے بہت پسند آئی جو اس نے اپنی خود نوشتہ سوانح میں لکھی ہے:

خوش رہنا محض ایک طبعی احتیاج ہی نہیں ہے، بلکہ ایک اخلاقی ذمّہ داری ہے۔ یعنی ہماری انفرادی زندگی کی نوعیت کا اثر صرف ہم ہی تک محدود نہیں رہتا، وہ دوسروں تک بھی متعدی ہوتا ہے، یا یوں کہیے کہ ہماری ہر حالت کی چھوت دوسروں کو بھی لگتی ہے۔ اس لیے ہمارا اخلاقی فرض ہوا کہ خود افسردہ خاطر ہو کر دوسروں کو افسردہ خاطر نہ بنائیں:

افسردہ دل افسردہ کند انجمنے را

ہماری زندگی ایک آئینہ خانہ ہے۔ یہاں ہر چہرے کا عکس بیک وقت سینکڑوں آئینوں میں پڑنے لگتا ہے۔ اگر ایک چہرے پر غبار آجائے گا، تو سینکڑوں چہرے غبار آلود ہو جائیں گے۔ ہم میں سے ہر فرد کی زندگی محض ایک انفرادی واقعہ نہیں ہے، وہ پورے مجموعہ کا حادثہ ہے۔ دریا کی سطح پر ایک لہر تنہا اٹھتی ہے، لیکن اسی ایک لہر سے بے شمار لہریں بنتی چلی جاتی ہیں۔ یہاں ہماری کوئی بات بھی صرف ہماری نہیں ہوتی: ہم جو کچھ اپنے لیے کرتے ہیں اس میں بھی دوسروں کا حصہ ہوتا ہے۔ ہماری کوئی خوشی بھی ہمیں خوش نہیں کر سکے گی اگر ہمارے چاروں طرف غمناک چہرے اکٹھے ہو جائیں گے۔ ہم خود خوش رہ کر دوسروں کو خوش کرتے ہیں اور دوسروں کو خوش دیکھ کر خود خوش ہونے لگتے ہیں۔ یہی حقیقت ہے جسے عرفی نے اپنے شاعرانہ پیرایہ میں ادا کیا تھا:

بدیدارِ تو دل شاد ند باہم دوستانِ تو
تراہم شادماں خواہم چو روئے دوستاں بینی

یہ عجیب بات ہے کہ مذہب، فلسفہ اور اخلاق، تینوں نے زندگی کا مسئلہ حل کرنا چاہا اور تینوں میں خود زندگی کے خلاف رجحان پیدا ہو گیا۔ عام طور پر سمجھا جاتا ہے کہ ایک آدمی جتنا زیادہ بجھا دل اور سوکھا چہرہ لے کر رہے گا، اتنا ہی زیادہ مذہبی، فلسفی اور اخلاقی قسم کا ہوگا۔ گویا علم اور تقدس، دونوں کے لیے یہاں ماتمی زندگی ضروری ہوئی۔ زندگی کی تحقیر اور توہین صرف یونان کے کلبیہ (Cynics) ہی کا شعار نہ تھا، بلکہ رواقی (Stoics) اور مشائی (Peripatetic) نقطۂ نگاہ میں بھی اس کے عناصر برابر کام کرتے رہے۔ نتیجہ یہ نکلا کہ رفتہ رفتہ افسردہ دلی اور ترش روئی فلسفیانہ مزاج کا ایک نمایاں خط و خال بن گئی۔ اخلاق سے اگر اس کے مذہبِ طمانیت و مسرت (Eudemonism) اور مادیاتی مذہبِ عشرت (Hedonism) کے تصورات مستثنیٰ کر دیجیے تو اس کا عام طبعی مزاج بھی فلسفیانہ سرگرانی سے خالی نہیں ملے گا۔ مذہب اور روحانیت کی دنیا میں تو زہدِ خشک اور طبعِ خنک کی اتنی گرم بازاری ہوئی کہ اب زہد مزاجی اور حق آگاہی کے ساتھ کسی ہنستے ہوئے چہرے کا تصور ہی نہیں کیا جا سکتا۔ دینداری اور ثقالتِ طبع تقریباً مرادف لفظ بن گئے ہیں۔ یہاں تک کہ قاآنی کو کہنا پڑا تھا:

اسبابِ طرب را ببر از مجلس بیروں
زاں پیش کہ ناگاہ ثقیلے رسد از در

آپ جانتے ہیں کہ اہلِ ذوق کی مجلسِ طرب تنگ دلوں کے گوشۂ خاطر کی طرح تنگ نہیں ہوتی، اس کی وسعت میں بڑی سمائی ہے۔ نظامی گنجوی نے اس کی تصویر کھینچی تھی:

ہر چہ درجملہ بہ آفاق دریں جا حاضر
مومن وارمنی و گبر و نصارا و یہود!

لیکن اتنی سمائی ہونے پر بھی اگر کسی چیز کی وہاں گنجائش نہ نکل سکی تو وہ زاہدانِ خشک کے ضخیم اور گنبد نما عمامے تھے۔ ایک عمامہ بھی پہنچ جاتا ہے تو پوری مجلس تنگ ہو جاتی ہے۔ اسی لیے بعض یارانِ بے تکلف کو کہنا پڑا تھا:

در مجلسِ ما زاہد! زنہار تکلف نیست
البتہ تو می گنجی، عمامہ نمی گنجد

یہ سچ ہے کہ جن مسئلوں کو دنیا سینکڑوں برس کی کاوشوں سے بھی حل نہ کر سکی، آج ہم اپنی خوش طبعی کے چند لطیفوں سے انھیں حل نہیں کر دے سکتے۔ تاہم یہ ماننا پڑے گا کہ یہاں ایک حقیقت سے انکار نہیں کیا جا سکتا۔ ایک فلسفی، ایک زاہد، ایک سادھو کا خشک چہرہ بنا کر ہم اس مرقع میں کھپ نہیں سکتے، جو نقاشِ فطرت کے موقلم نے یہاں کھینچ دیا ہے



جس مرقع میں سورج کی چمکتی ہوئی پیشانی، چاند کا ہنستا ہوا چہرہ، ستاروں کی چشمک، درختوں کا رقص، پرندوں کا نغمہ، آبِ رواں کا ترنّم اور پھولوں کی رنگین ادائیں اپنی اپنی جلوہ طرازیاں رکھتی ہوں۔ اس میں ہم ایک بجھے ہوئے دل اور سوکھے ہوئے چہرہ کے ساتھ جگہ پانے کے یقیناً مستحق نہیں ہوسکتے۔ فطرت کی اس بزمِ نشاط میں تو وہی زندگی سج سکتی ہے جو ایک دمکتا ہوا دل پہلو میں اور چمکتی ہوئی پیشانی چہرے پر رکھتی ہو اور جو چاندنی میں چاند کی طرح نکھر کر، ستاروں کی چھاؤں میں ستاروں کی طرح چمک کر، پھولوں کی صف میں پھولوں کی طرح کھل کر اپنی جگہ نکال سکتی ہو۔ صائب کیا خوب کہہ گیا ہے :

دریں دو ہفتہ کہ چوں گل دریں گلستانی
گشادہ روے تر از رازِ طلبے مستاں باش
تمیزِ نیک و بدِ روزگار کارِ تو نیست
چو چشمِ آئینہ در خوب و زشت حیراں باش

(۲)

قلعۂ احمد نگر
۲۹ اگست ۱۹۴۲ء

ایں رسم و راہ تازہ ز حرمانِ عہدِ ماست
عنقا بہ روزگار کسے نامہ بر نبود

صدیقِ مکرم!

وہی چار بجے صبح کا جانفزا وقت ہے۔ چائے کا فنجان سامنے دھرا ہے اور طبیعت دراز نفسی کے بہانے ڈھونڈھ رہی ہے۔ جانتا ہوں کہ میری صدائیں آپ تک نہیں پہنچ سکیں گی۔ تاہم طبعِ نالہ سنج کو کیا کروں کہ فریاد و شیون کے بغیر نہیں رہ سکتی۔ آپ سُن رہے ہوں یا نہ سُن رہے ہوں، میرے ذوقِ مخاطبت کے لیے یہ خیال بس کرتا ہے کہ روئے سخن آپ کی طرف ہے :

اگر نہ دیدی تپیدن دل شنیدنی بود نالۂ ما

بانسری[1] اندر سے خالی ہوتی ہے مگر فریادوں سے بھری ہوتی ہے: یہی حال میرا ہے :

بہ فسانۂ ہوس طرب تہی از خودیم و پُر از طلب
چہ دمد ز صنعتِ شُشفرے بجز اینکہ نالہ فزوں کند

قید و بند کے جتنے تجربے اس وقت تک ہوئے تھے، موجودہ تجربہ ان سب سے کئی باتوں میں نئی قسم کا ہوا۔ اب تک یہ صورت رہتی تھی کہ قید خانے کے قواعد کے ماتحت عزیزوں اور دوستوں سے ملنے کا موقع مل جایا کرتا تھا۔ ریخ کی خط و کتابت روکی نہیں جاتی تھی۔ اخبارات دیے جاتے تھے اور اپنے خرچ سے منگوانے کی بھی اجازت ہوتی تھی۔ خاص خاص حالتوں میں اس سے بھی زیادہ دروازہ کھلا رہتا تھا چنانچہ جہاں تک خط و کتابت اور ملاقاتوں کا تعلق ہے مجھے ہمیشہ زیادہ سہولتیں حاصل رہیں۔ اس صورتِ حال کا نتیجہ یہ تھا کہ گو ہاتھوں میں زنجیریں اور پاؤں میں بیڑیاں پڑ جاتی تھیں لیکن کان بند نہیں ہو جاتے تھے اور آنکھوں پر پٹیاں نہیں بندھتی تھیں۔ قید و بند کی ساری رکاوٹوں کے ساتھ بھی آدمی محسوس کرتا تھا کہ ابھی تک اُسی دنیا میں بس رہا ہے جہاں گرفتاری سے پہلے رہا کرتا تھا :

زنداں میں بھی خیالِ بیاباں نورد تھا

کھانے پینے اور ساز و سامان کی تکلیفیں ان لوگوں کو پریشان نہیں کرسکتیں جو جسم کی جگہ دماغ کی زندگی بسر کرنے کے عادی ہوتے ہیں۔ آدمی اپنے آپ کو احساسات کی عام سطح سے ذرا بھی اونچا کرے، تو پھر جسم کی آسائشوں کا فقدان اسے پریشان نہیں کرسکے گا۔ ہر طرح کی جسمانی راحتوں سے محروم رہ کر بھی ایک مطمئن زندگی بسر کر دی جاسکتی ہے اور زندگی بہرحال بسر ہو ہی جاتی ہے :

رغبتِ جاہ چہ و نفرتِ اسباب کدام
زیں ہوسہا بگذر یا نگذر، می گذرد

یہ حالت انقطاع و تجرّد کا ایک نقشہ بناتی تھی، مگر نقشہ ادھورا ہوتا تھا، کیونکہ نہ تو باہر کے علاقے پوری طرح منقطع ہو جاتے تھے، نہ باہر کی صدائیں زنداں کی دیواریں روک سکتی تھیں :

قید میں بھی ترے وحشی کو رہی زلف کی یاد
ہاں، کچھ اک رنجِ گرانباریِ زنجیر بھی تھا

لیکن اس مرتبہ جو حالت پیش آئی، اس نے ایک دوسری ہی طرح کا نقشہ کھینچ دیا۔ باہر کی نہ صرف تمام صورتیں ہی یک قلم نظروں سے اوجھل ہو گئیں بلکہ صدائیں بھی بیک دفعہ رک گئیں۔ اصحابِ کہف کی نسبت کہا گیا ہے۔ فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا تو ایسی ہی ضرب علی الاذان کی حالت ہم پر بھی طاری ہو گئی۔ گویا جس دنیا میں بستے تھے، وہ دنیا ہی نہ رہی :

كَأَنْ لَمْ يَكُنْ بَيْنَ الْحَجُونِ إِلَى الصَّفَا
أَنِيسٌ وَلَمْ يَسْمُرْ بِمَكَّةَ سَامِرُ!

اچانک ایک نئی دنیا میں لا کر بند کر دیے گئے جس کا جغرافیہ ایک سو گز سے زیادہ پھیلاؤ نہیں رکھتا اور جس کی ساری مردم شماری پندرہ زندہ شکلوں سے زیادہ نہیں۔ اسی دنیا میں ہر صبح کی روشنی طلوع ہونے لگی، اسی میں ہر شام کی تاریکی پھیلنے لگی :

گویا نہ وہ زمیں ہے نہ وہ آسماں ہے اب

اگر کہوں کہ اس ناگہانی صورتِ حال سے طبیعت

---

[1] بانسری میں جو سوراخ بنائے جاتے ہیں، انھیں فارسی میں "شُشفر" کہتے ہیں، یعنی بانسری کے نقطے۔



کا سکون متاثر نہیں ہوا، تو یہ صریح بناوٹ ہوگی۔ واقعہ یہ ہے کہ طبیعت متاثر ہوئی اور تیزی اور شدت کے ساتھ ہوئی، لیکن یہ بھی واقعہ ہے کہ اس حالت کی عمر چند گھنٹوں سے زیادہ نہ تھی۔ چنانچہ گرفتاری کے دوسرے ہی دن جب حسب معمول علی الصباح اٹھا اور جام و مینا کا دور گردش میں آیا تو ایسا محسوس ہونے لگا۔ جیسے طبیعت کا سارا انقباض اچانک دور ہو رہا ہو اور افسردگی و تنگی کی جگہ انشراح و شگفتگی دل کے دروازے پر دستک دے رہی ہو۔ مرزا مخلص خان عالمگیری نے کیا خوب لف و نشر مرتب کیا ہے۔ اس ذوقِ سخن میں میرا ساتھ دیجیے:

خمار ما در توبہ و دل ساقی
بیک تبسمِ مینا شکست و بست و گشاد

اب معلوم ہوا کہ اگرچہ نگاہوں اور کانوں کی ایک محدود دنیا کھو گئی ہے، مگر فکر و تصور کی کتنی ہی نئی دنیائیں اپنی ساری پہنائیوں اور بے کناریوں کے ساتھ سامنے آکھڑی ہوئی ہیں۔ اگر ایک دروازے کے بند ہونے پر اتنے دروازے کھل سکتے ہیں، تو کون ایسا زیاں عقل ہوگا جو اس سودے پر گلہ مند ہو:

نقصاں نہیں جنوں میں بلا سے ہو گھر خراب
دو گز زمیں کے بدلے بیاباں گراں نہیں

باقی رہی قید و بند کی تنہائی اور علائق کا انقطاع، تو حقیقت یہ ہے کہ یہ حالت کبھی میرے لیے موجبِ شکایت نہ ہو سکی۔ میں اس سے گریزاں نہیں رہتا، اس کا آرزومند رہتا ہوں۔ تنہائی خواہ کسی حالت میں آئے اور کسی شکل میں، میرے دل کا دروازہ ہمیشہ کھلا پائے گی۔

بَاطِنُهٗ فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ۔ ۱۵

ابتدا ہی سے طبیعت کی افتاد کچھ ایسی واقع ہوئی تھی کہ خلوت کا خواہاں اور جلوت سے گریزاں رہتا تھا۔ یہ ظاہر ہے کہ زندگی کی مشغولیتوں کے تقاضے اس طبعِ وحشت سرشت کے ساتھ نباہے نہیں جا سکتے، اس لیے بہ تکلف خود کو انجمن آرائیوں کا خوگر بنانا پڑتا ہے، مگر دل کی طلب ہمیشہ بہانے ڈھونڈھتی ہے۔ جونہی ضرورت کے تقاضوں سے مہلت ملی اور وہ اپنی کامجوئیوں میں لگ گئی:

در خرابات نہ دیدستی خراب
بادہ پندار ہی کہ پنہاں نی زنم

لوگ لڑکپن کا زمانہ کھیل کود میں بسر کرتے ہیں، مگر بارہ تیرہ برس کی عمر میں میرا یہ حال تھا کہ کتاب لے کر کسی گوشہ میں جا بیٹھتا اور کوشش کرتا کہ لوگوں کی نظروں سے اوجھل رہوں۔ کلکتہ میں آپ نے ڈلہوزی اسکوائر ضرور دیکھا ہوگا۔ جنرل پوسٹ آفس کے سامنے واقع ہے، اسے عام طور پر لال ڈگی کہا کرتے تھے۔ اس میں درختوں کا ایک جھنڈ تھا کہ باہر سے دیکھیے تو درخت ہی درخت ہیں، اندر جائیے تو اچھی خاصی جگہ ہے اور ایک بنچ بھی بچھی ہوئی ہے۔ معلوم نہیں اب بھی یہ جھنڈ ہے کہ نہیں۔ میں جب سیر کے لیے نکلتا تو کتاب ساتھ لے جاتا اور اس جھنڈ کے اندر بیٹھ کر مطالعہ میں غرق ہو جاتا۔ والد مرحوم کے خادمِ خاص حافظ ولی اللہ مرحوم ساتھ ہوا کرتے تھے۔ وہ باہر ٹہلتے رہتے اور جھنجلا جھنجلا کر کہتے: "اگر تجھے کتاب ہی پڑھنی تھی، تو گھر سے نکلا کیوں؟" یہ سطریں لکھ رہا ہوں اور ان کی آواز کانوں میں گونج رہی ہے۔ دریا کے کنارے ایڈن گارڈن میں بھی اسی طرح کے کئی جھنڈ تھے۔ ایک جھنڈ جو برمی پگوڈا کے پاس مصنوعی نہر کے کنارے تھا، اور شاید اب بھی ہو، میں نے چن لیا تھا۔ کیونکہ اس طرف لوگوں کا گذر بہت کم ہوتا تھا۔ اکثر سہ پہر کے وقت کتاب لے کر نکل جاتا اور شام تک اس کے اندر گم رہتا۔ اب وہ زمانہ یاد آجاتا ہے تو دل کا عجیب حال ہوتا ہے:

عالم بے خبری طُرفہ بہشتے بود است
حیف صد حیف کہ ما دیر خبردار شدیم!

کچھ یہ بات نہ تھی کہ کھیل کود اور سیر و تفریح کے وسائل کی کمی ہو۔ میرے چاروں طرف ان کی ترغیبات پھیلی ہوئی تھیں، اور کلکتہ ہیساہنگامہ گرم کُن شہر تھا، لیکن میں طبیعت ہی کچھ ایسی لے کر آیا تھا کہ کھیل کود کی طرف رخ ہی نہیں کرتی تھی:

ہمہ شہر پُر ز خوباں منم و خیال ماہے
چہ کنم کہ نفسِ بدخو نکند بکس نگاہے

والد مرحوم میرے اس شوقِ علم سے خوش ہوتے مگر فرماتے: یہ لڑکا اپنی تندرستی بگاڑ دے گا۔ معلوم نہیں جسم کی تندرستی بگڑی یا سنوری مگر دل کو تو ایسا روگ لگ گیا کہ پھر کبھی پنپ نہ سکا:

کہ گفت بود کہ دردش دوا پذیر مباد

میری پیدائش ایک ایسے خاندان میں ہوئی جو علم و مشیخت کی بزرگی اور مرجعیت رکھتا تھا۔ اس لیے خلقت کا جو ہجوم واژدہام آج کل سیاسی لیڈری کے عروج کا کمال مرتبہ سمجھا جاتا ہے، وہ مجھے مذہبی عقیدت مندیوں کی شکل میں بغیر طلب و سعی کے مل گیا تھا۔ میں نے ابھی ہوش بھی نہیں سنبھالا تھا کہ لوگ پیرزادہ سمجھ کر میرے ہاتھ پاؤں چومتے تھے اور ہاتھ باندھ کر سامنے کھڑے رہتے تھے۔ خاندانی پیشوائی و مشیخت کی اس حالت میں نو عمر طبیعتوں کے لیے بڑی ہی آزمائش ہوتی ہے۔ اکثر حالتوں میں ایسا ہوتا ہے کہ ابتدا ہی سے طبیعتیں بدخو و غلط ہو جاتی ہیں اور نسلی غرور اور پیدائشی خود پرستی کا وہی روگ لگ جاتا ہے جو خاندانی امیرزادوں کی تباہی کا باعث ہوا کرتا ہے۔ ممکن ہے اس کے کچھ نہ کچھ اثرات میرے حصہ میں بھی آئے ہوں کیونکہ اپنی چوریاں پکڑنے کے لیے خود اپنے کمیں میں



یٹھنا جیسا کہ غنی نے کہا ہے آسان نہیں:

خواہی کہ عیبہا ے تو روشن شود ترا
یک دم منافقانہ نشیں در کمین خویش

لیکن جہاں تک اپنی حالت کا جائزہ لے سکتا ہوں مجھے یہ کہنے میں تامل نہیں کہ میری طبیعت کی مدرتی افتاد مجھے بالکل دوسری ہی طرف لے جا رہی تھی۔ ین خاندانی مریدوں کی ان عقیدتمندانہ پرستاریوں سے خوش نہیں ہوتا تھا۔ بلکہ طبیعت میں ایک طرح انقباض اور توحش رہتا تھا۔ میں چاہتا تھا کوئی ہی راہ نکل آئے کہ اس فضا سے بالکل الگ ہو جاؤں ۔رکوئی آدمی آکر میرے ہاتھ پاؤں نہ چومے۔ لوگ یہ یاب جنس ڈھونڈھتے ہیں اور ملتی نہیں۔ مجھے گھر یٹھے ملی اور میں اس کا قدر شناس نہ ہو سکا:

دونوں جہان دے کے وہ سمجھے یہ خوش رہا
یاں آپڑی یہ شرم کہ تکرار کیا کریں

البتہ اب سوچتا ہوں کہ یہ معاملہ بھی فائدہ سے خالی نہ تھا۔ اور یہاں کا کونسا معاملہ ہے جو ائدہ سے خالی ہوتا ہے! یہی فائدہ کیا کم ہے کہ س غذا کے لیے دنیا کی طبیعتیں للچاتی رہتی ہیں، اس سے پہلے ہی دن اپنا جی سیر ہو گیا اور طبیعت پر لچاہٹ تی نہ رہی۔ فیضی نے ایک شعر ایسا کہا ہے کہ اگر اور چھ نہ کہتا جب بھی فیضی تھا:

کعبہ را ویران کُن از عشق کاندر کوی عشق
گرگ گہے پس ماندگان راہ منزل می کنند

طبیعت کی اس افتاد نے ایک بڑا کام یہ دیا کہ لنے کے بہت سے ترجمے میرے لیے بیکار ہو گئے۔ ب اگر میری طرف سے رخ پھیرتے ہیں تو بجائے یا کے کہ دل گلہ مند ہو اور زیادہ منت گزار ہونے تا ہے کیونکہ ان کا جو ہجوم لوگوں کو خوشحال کرتا ہے میرے لیے بسا اوقات ناقابل برداشت ہو جاتا ہے۔ میں اگر عوام کا رجوع و ہجوم گوارا کرتا ہوں تو یہ میرے اختیار کی پسند نہیں ہوتی، اضطرار و تکلف کی مجبوری ہوتی ہے۔ میں نے سیاسی زندگی کے ہنگاموں کو نہیں ڈھونڈھا تھا: سیاسی زندگی کے ہنگاموں نے مجھے ڈھونڈھ نکالا۔ میرا معاملہ سیاسی زندگی کے ساتھ وہ ہوا، جو غالب کا شاعری کے ساتھ ہوا تھا:

ما نبودیم بدیں مرتبہ راضی غالب
شعر خود خواہش آں کرد کہ گردد فن ما

اسی طرح اگر حالات کی رفتار قید و بند کا باعث ہوتی ہے تو اس حالت کی جو رکاوٹیں اور پابندیاں دوسروں کے لیے اذیت کا موجب ہوتی ہیں، میرے لیے یکسوئی اور خود مشغولی کا ذریعہ بن جاتی ہیں اور کسی طرح بھی طبیعت کو افسردہ نہیں کر سکتیں۔ میں جب بھی قید خانے میں سنا کرتا ہوں کہ فلاں قیدی کو قید تنہائی کی سزا دی گئی ہے، تو حیران رہ جاتا ہوں کہ تنہائی کی حالت آدمی کے لیے سزا کیسے ہو سکتی ہے! اگر دنیا اسی کو سزا سمجھتی ہے، تو کاش، ایسی سزائیں عمر بھر کے لیے حاصل کی جا سکیں!:

حسد بتہمت آزادی سرو مرا بگداخت
کیں مرا دلیست کہ بتہمت آں ہم حسد ست

ایک مرتبہ قید کی حالت میں ایسا ہوا کہ ایک صاحب نے جو میرے آرام و راحت کا بہت خیال رکھنا چاہتے تھے، مجھے ایک کوٹھڑی میں تنہا دیکھ کر سپرنٹنڈنٹ سے اس کی شکایت کی۔ سپرنٹنڈنٹ فوراً تیار ہو گیا کہ مجھے ایسی جگہ رکھے جہاں اور لوگ بھی رکھے جا سکیں، تو تنہائی کی حالت باقی نہ رہے۔ مجھے معلوم ہوا تو میں نے ان حضرت سے کہا: آپ نے مجھے راحت پہنچانی چاہی، مگر آپ کو معلوم نہیں کہ جو تھوڑی سی راحت یہاں حاصل تھی، وہ بھی آپ کی وجہ سے اب چھینی جا رہی ہے! یہ تو وہی غالب والا معاملہ ہوا کہ:

کی ہم نفسوں نے اثر گریہ میں تقریر
اچھے رہے آپ اس سے مگر مجھ کو ڈبو آئے

میں اپنی طبیعت کی اس افتاد سے خوش نہیں ہوں نہ اسے حسن و خوبی کی کوئی بات سمجھتا ہوں۔ یہ ایک نقص ہے کہ آدمی بزم و انجمن کا حریف نہ ہو، اور صحبت و اجتماع کی جگہ خلوت و تنہائی میں راحت محسوس کرے:

حریف صافی و دُردی نہ، خطا اینجاست
تمیز ناخوش و خوش می کنی، بلا اینجاست

لیکن اب طبیعت کا سانچہ اتنا پختہ ہو چکا ہے کہ اسے توڑا جا سکتا ہے، مگر موڑا نہیں جا سکتا:

قطرہ از تشویش موج آخر نہاں شد در صدف
گوشہ گیری ہا ے خلق از انفعال صحبت ست

اس افتاد طبع کے ہاتھوں ہمیشہ طرح طرح کی بدگمانیوں کا مورد رہتا ہوں، اور لوگوں کو حقیقت حال سمجھا نہیں سکتا۔ لوگ اس حالت کو غرور و پندار پر محمول کرتے ہیں، اور سمجھتے ہیں، میں دوسروں کو حقیر تصور کرتا ہوں، اس لیے ان کی طرف بڑھتا نہیں۔ حالانکہ مجھے خود اپنا ہی بوجھ اٹھنے نہیں دیتا، دوسروں کی فکر میں کہاں رہ سکتا ہوں! غنی کشمیری نے ایک شعر کیا خوب کہا ہے:

طاقت برخاستن از گرد دمنم کم نہ ماند
خلق پندارد کہ مے خوردست و مست افتادہ است

سرخوش نے کلمات الشعراء میں جو شعر نقل کیا ہے اس میں "خلق می داند" ہے۔ مگر میں خیال کرتا ہوں، یہ محل "دانستن" کا نہیں ہے "پنداشتن" کا ہے! اس لیے "پندارد" زیادہ موزوں ہوگا اور عجب نہیں،



اصل میں ایسا ہی ہو۔

بہر حال جو صورت حال پیش آئی ہے اس سے جو کچھ بھی انقباضِ خاطر ہوا تھا وہ صرف اس لیے ہوا تھا کہ باہر کے علائق اچانک یک قلم قطع ہو گئے۔ اور ریڈیو، پوسٹ اور اخبار تک روک دیے گئے، ورنہ قید و بند کی تنہائی کا شکوہ نہ پہلے ہوا ہے نہ اب ہے:

دماغ عطر پیراہن نہیں ہے
غمِ آوارگی ہائے صبا کیا

اور پھر جو کچھ بھی زبانِ قلم پر طاری ہوا صورتِ حال کی حکایت تھی شکایت نہ تھی کیونکہ اس راہ میں شکوہ و شکایت کی تو گنجائش ہی نہیں ہوتی۔ اگر ہمیں اختیار ہے کہ اپنا سر ٹکراتے رہیں، تو دوسرے کو بھی اختیار ہے کہ نئی نئی دیواریں چنتا رہے۔ بیدل کا یہ شعر موجودہ صورتِ حال پر کیا چسپاں ہوا ہے:

دوری وصلش طلسمِ اعتبارِ ما شکست
ورنہ ایں عجزے کہ می بینی، غبارِ ناز بود

اگرچہ یہاں تنہا نہیں ہوں، گیارہ رفیق ساتھ ہیں، لیکن چونکہ ان میں سے ہر شخص از راہِ عنایت میرے معمولات کا لحاظ رکھتا ہے، اس لیے حسبِ دلخواہ یکسوئی اور خود مشغولیت کی زندگی بسر کر رہا ہوں۔ دن بھر میں صرف چار مرتبہ کمرے سے نکلنا پڑتا ہے کیونکہ کھانے کا کمرہ قطار کا آخری کمرہ ہے، اور چائے اور کھانے کے اوقات میں وہاں جانا ضروری ہوا۔ باقی تمام اوقات کی تنہائی و خود مشغولی بغیر کسی خلل کے جاری رہتی ہے:

خوش فرشِ بوریا و گدائی و خوابِ امن
کیں عیش نیست در خورِ اورنگِ خسروی

زندگی کی مشغولیتوں کا وہ تمام سامان جو اپنے وجود سے باہر تھا، اگر چھین گیا ہے تو کیا مضائقہ! وہ تمام سامان جو اپنے اندر تھا، اور جسے کوئی چھین نہیں سکتا، سینہ میں چھپائے ساتھ لایا ہوں۔ اسے سجاتا ہوں اور اس کے سیر و نظارہ میں محو رہتا ہوں:

آئینہ نقش بندِ طلسمِ خیال نیست
تصویرِ خود بہ لوحِ دگر می کشیم ما

گرفتاری چونکہ سفر کی حالت میں ہوئی تھی اس لیے مطالعہ کا کوئی سامان ساتھ نہ تھا صرف دو کتابیں میرے ساتھ آ گئی تھیں، جو سفر میں دیکھنے کے لیے رکھ لی تھیں، اسی طرح دو چار کتابیں بعض ساتھیوں کے ساتھ آئیں۔ یہ ذخیرہ بہت جلد ختم ہو گیا۔ اور مزید کتابوں کے منگوانے کی کوئی راہ نہیں نکلی۔ لیکن اگر پڑھنے کے سامان کا فقدان ہوا، تو لکھنے کے سامان میں کوئی کمی نہیں ہوئی۔ کاغذ کا ڈھیر میرے ساتھ ہے۔ اور روشنائی کی احمد نگر کے بازار میں کمی نہیں۔ تمام وقت خامہ فرسائی میں خرچ ہوتا ہے:

در جنوں بیکار نتواں زیستن
آتشم تیز است و داماں می زنم

جب تھک جاتا ہوں تو کچھ دیر کے لیے برآمدہ میں نکل کر بیٹھ جاتا ہوں، یا صحن میں ٹہلنے لگتا ہوں:

بیکاریِ جنوں میں ہے سر پیٹنے کا شغل
جب ہاتھ ٹوٹ جائیں تو پھر کیا کرے کوئی

میں نے جو خط انسپکٹر جنرل کو لکھا تھا، وہ اس نے گورنمنٹ کو بھیج دیا تھا۔ کل اس کا جواب ملا۔ اب نئے احکام ہمارے لیے یہ ہیں کہ اخبار دیے جائیں گے۔ قریبی رشتہ داروں کو خط لکھا جا سکتا ہے۔ لیکن ملاقات کسی سے نہیں کی جا سکتی۔ چیتہ خاں نے یہاں کے فوجی مس (MESS) سے "ٹائمز آف انڈیا" کا تازہ پرچہ منگوا لیا تھا، وہ اس نے خط کے ساتھ حوالہ کیا۔ اخبار کا ہاتھ میں لینا تھا کہ تین ہفتے پہلے کی دنیا جو ہمارے لیے معدوم ہو چکی تھی، پھر سامنے آ کھڑی ہوئی۔ معلوم ہوا کہ ہمارے گرفتار ہو جانے سے ملک میں امن چین نہیں ہو گیا، بلکہ نئے ہنگاموں نے نئے غلغلے برپا کیے:

ہے ایک خلق کا خوں اشک خونفشاں پہ مرے
سکھائی طرز اسے دامن اٹھا کے آنے کی

میں نے چیتہ خاں سے کہا کہ اگر ۹ اگست سے ۲۷ تک کے پچھلے پرچے کہیں سے مل سکیں تو منگوا دے۔ اس نے ڈھونڈھوایا، تو بہت سے پرچے مل گئے۔ رات دیر تک انھیں دیکھتا رہا تھا:

دیوانگاں ہزار گریباں دریدہ اند
دستِ طلب بہ دامنِ صحرا نمی رسد

مگر مجھے یہ قصہ یہاں نہیں چھیڑنا چاہیے۔ میری آپ کی مجلس آرائی اس افسانہ سرائی کے لیے نہیں ہوا کرتی:

از ما بجز حکایتِ مہر و وفا مپرس

میری دکانِ سخن میں ایک ہی طرح کی جنس نہیں رہتی۔ لیکن آپ کے لیے کچھ نکالتا ہوں تو احتیاط کی چھلنی میں اچھی طرح چھان لیا کرتا ہوں کہ کسی طرح کی سیاسی ملاوٹ باقی نہ رہے۔ دیکھیے، اسی چھان بین کے مضمون کو شریف خاں شیرازی نے کہ جہانگیر کے عہد میں امیر الامراء ہوا کیا خوب باندھا ہے:

شور نالہ بہ خیال ادب نمی بیزم
کہ گوشِ تو مبادا رسد آوازِ درشت

یہ وہی امیر الامراء ہے جس کے حسب ذیل شعر پر جہانگیر نے شعرائے دربار سے غزلیں لکھوائی تھیں اور خود بھی طبع آزمائی کی تھی:

بگزر مسیح از سرِ ما کشتگانِ عشق
یک زندہ کردنِ تو بہ صد خوں برابر است

(٭ غبارِ خاطر۔ مرتبہ: مالک رام، شائع کردہ: ساہتیہ اکادمی)

رحلتِ نبوی

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰہِ وَالْفَتْحُ وَرَاَیْتَ النَّاسَ یَدْخُلُوْنَ فِیْ دِیْنِ اللّٰہِ اَفْوَاجًا ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّکَ وَاسْتَغْفِرْہُ ط اِنَّہٗ کَانَ تَوَّابًا ۝

جب اللہ کی مدد آگئی اور مکہ فتح ہوا تم نے دیکھ لیا کہ لوگ دینِ خداوندی میں فوج در فوج داخل ہو رہے ہیں۔ اب تم اللہ کی یاد میں مصروف ہو جاؤ اور استغفار کرو۔ بیشک وہی توبہ قبول کرنے والا ہے۔]

آخری حج کی تیاری

جب یہ سورت نازل ہوئی تو پیغمبرِ انسانیت نے اللہ کی مرضی کو پا لیا کہ اب وقتِ رحلت قریب آگیا ہے۔ حضورؐ اس سے پہلے خانۂ کعبہ پر تطہیرِ حرم کا آخری اعلان کر چکے تھے کہ آئندہ کسی مشرک کو اللہ کے گھر میں داخل ہونے کی اجازت نہیں ہو گی اور کوئی برہنہ شخص خانۂ کعبہ کا طواف نہیں کر سکے گا۔ حضورؐ نے ہجرت کے بعد فریضۂ حج ادا نہیں فرمایا تھا۔ اب ۱۰ھ سنہ ہجری میں آرزو پیدا ہوئی کہ سفرِ آخرت سے پہلے تمام امت کے ساتھ مل کر آخری حج کر لیا جائے۔ بڑا اہتمام کیا گیا کہ کوئی عقیدت کیش ہمرکابی کی سعادت سے محروم نہ رہ جائے۔ حضرت علیؓ کو یمن سے بلایا گیا۔ قبائل کو آدمی بھیج کر ارادۂ پاک کی اطلاع دی گئی۔ تمام ازواجِ مطہراتؓ کو رفاقت کی بشارت سنائی۔ حضرت فاطمہؓ کو تیاری کا حکم دیا۔ ۲۵۔ ذیقعد کو مسجدِ نبوی میں جمعہ ہوا اور وہیں ۲۶۔ کی روانگی کا اعلان ہو گیا۔ جب ۲۶۔ کی صبح منور ہوئی تو چہرۂ انور سے روانگی کی مسرتیں نمایاں ہو رہی تھیں۔ غسل کر کے لباس تبدیل فرمایا اور ادائے ظہر کے بعد حمد و شکر کے ترانوں میں مدینہ منورہ سے باہر نکلے۔ اس وقت ہزارہا خدامِ امت اپنے نبی رحمت کے ہمرکاب تھے۔ یہ قافلۂ مقدس مدینہ منورہ سے ۶ میل دور ذی الحلیفہ میں پہنچ کر رکا اور شب بھر اقامت فرمائی۔ دوسرے روز حضورِ پاک نے دوبارہ غسل فرمایا۔ حضرت صدیقہؓ نے جسمِ پاک پر اپنے ہاتھوں سے عطر ملا۔ راہ سپار ہونے سے پہلے آپ پھر اللہ کی حاضری میں کھڑے ہو گئے اور بڑے درد و گداز سے دو رکعتیں ادا کیں۔ پھر قصواء پر سوار ہو کر احرام باندھا اور ترانۂ لبیک بلند کیا۔

لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ لَبَّیْکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ لَبَّیْکَ اِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَۃَ لَکَ وَالْمُلْکَ لَکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ۔

اس ایک صدائے حق کی اقتدا میں ہزارہا خدا پرستوں کی صدائیں بلند ہونے لگیں۔ آسمان کا جوف حمدِ خدا کی صداؤں سے لبریز ہو گیا اور دشت و جبل توحید کے ترانوں سے گونجنے لگے۔ حضرت جابرؓ فرماتے ہیں کہ حضور سرورِ عالمؐ کے آگے پیچھے اور دائیں بائیں جہاں تک انسان کی نظر کام کرتی تھی، انسان ہی انسان نظر آتے تھے۔ جب اونٹنی کسی اونچے ٹیلے پر سے گزرتی تو تین مرتبہ صدائے تکبیر بلند فرماتے آوازۂ نبویؐ کے ساتھ لاکھوں آوازیں اور اٹھتیں اور کاروانِ نبوت کے سروں پر نعرہ ہائے تکبیر کا ایک دریائے رواں جاری ہو جاتا۔ سفرِ مبارک نو روز جاری رہا۔

۴۔ ذی الحج کو طلوعِ آفتاب کے ساتھ مکہ معظمہ کی عمارتیں نظر آنے لگی تھیں۔ اور ہاشمی خاندان کے معصوم بچے اپنے بزرگ کائناتؐ کی تشریف آوری کی ہوا سن کر اپنے اپنے گھروں سے دوڑتے ہوئے نکل رہے تھے کہ چہرۂ انور کی مسکراہٹوں کے ساتھ لپٹ جائیں۔ ادھر سرورِ عالمؐ شفقتِ منتظر کی تصویر بن رہے تھے۔ حضورِ پاکؐ نے اپنے کم سن بچوں کے معصوم چہرے دیکھے تو جوشِ محبت سے جھک گئے اور کسی کو اونٹ کے آگے بٹھا لیا اور کسی کو پیچھے سوار کر لیا۔ تھوڑی دیر بعد کعبۃ اللہ کی عمارت پر نظر پڑی تو فرمایا۔

"اے اللہ! خانۂ کعبہ کو اور زیادہ شرف و امتیاز عطا فرما۔"

معمارِ حرم نے سب سے پہلے کعبۃ اللہ کا طواف فرمایا۔ پھر مقامِ ابراہیم کی طرف تشریف لے گئے اور دوگانۂ تشکر ادا کیا۔ اس وقت زبانِ پاک پر یہ آیت جاری تھی:

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرَاھِیْمَ مُصَلًّی۔

اور مقامِ ابراہیم کو سجدہ گاہ بناؤ۔

کعبۃ اللہ کی زیارت کے بعد صفا اور مروہ کے پہاڑوں پر تشریف لے گئے۔ یہاں پر آنکھیں کعبۃ اللہ سے دوچار ہوئیں تو زبانِ پاک سے ابرِ گہربار کی طرح کلماتِ توحید و تکبیر جاری ہو گئے۔

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ



وَحْدَهٗ اَنْجَزَ وَعْدَهٗ نَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ.

[خدا صرف خدا، معبودِ برحق کوئی اس کا شریک نہیں۔ ملک اس کا، حمد اس کے لیے، وہی جلاتا ہے وہی مارتا ہے اور وہی ہر چیز پر قادر ہے اس کے سوا کوئی معبود نہیں۔ اس نے اپنا وعدہ پورا کر دیا۔ اس نے اپنے بندے کی امداد فرمائی اور اکیلے نے تمام قبائلی جمعیتیں پاش پاش کر دیں۔]

۸ ذی الحج کو منیٰ میں قیام فرمایا۔ ۹ کو جمعہ کے روز نماز ادا کر کے منیٰ سے روانہ ہوئے اور وادیِ نمرہ میں آ ٹھہرے، دن ڈھلے میدانِ عرفات میں تشریف لائے تو ایک لاکھ ۴۴ ہزار خدا پرستوں کا مجمع سامنے تھا۔ اور زمین سے آسمان تک تکبیر و تہلیل کی صدائیں گونج رہی تھیں۔ اب سرکارِ دو عالم قصواء پر سوار ہو کر آفتابِ عالمتاب کی طرح کوہِ عرفات کی چوٹی سے طلوع ہوئے تاکہ خطبۂ حج ارشاد فرمائیں۔ پہاڑ کے دامن میں عائشہؓ اور صفیہؓ اور علیؓ۔ فاطمہؓ۔ ابوبکرؓ اور عمرؓ۔ خالدؓ بلالؓ اصحابِ صفہ اور عشرۂ مبشرہؓ اور دوسری سینکڑوں اسلامی جماعتیں اور قبائلی جمعیتیں جلوہ فرما تھیں۔ اور پہلی نظر سے یہ معلوم ہو جاتا تھا کہ والیِ اُمت، اپنی اُمت کی موجودات لے رہے ہیں اور محافظِ حقیقی کو اس کا چارج سپرد فرما رہے ہیں۔

خطبۂ حجۃ الوداع

رسول اللہؐ کے آخری آنسو جو اس اُمت کے غم میں بہے حجۃ الوداع کے خطبے میں جمع ہیں اس وقت دولت و حکومت کا سیلاب مسلمانوں کی طرف اُمنڈ چلا آرہا تھا اور رسول اللہؐ کا غم یہ تھا کہ دولت کی یہ فراوانی آپ کے بعد آپ کی اُمت سے رابطۂ اتحاد کو پارہ پارہ کر دے گی۔ اسی لیے اتحادِ اُمت کا موضوع اپنے سامنے رکھ لیا اور پھر دردِ نبوت کی پوری توانائی اسی موضوع پر صرف فرما دی۔ پہلے نہایت ہی درد انگیز الفاظ میں قیامِ اتحاد کی اپیل کی۔ پھر فرمایا کہ پس ماندہ طبقات کو شکایت کا موقع نہ دینا تاکہ حصارِ اسلام میں کوئی شگاف نہ پڑ جائے۔ پھر اسبابِ نفاق کی تفصیل پیش کر کے ان کی بیخ کنی کا عملی طور پر سر و سامان فرمایا۔ پھر واضح کیا کہ جملہ مسلمانوں کے اتحاد کا سنگِ اساس کیا ہے؟ آخری وصیت یہ فرمائی کہ ان ہدایات کو آئندہ نسلوں میں پھیلانے اور پہنچانے کے فرض میں کوتاہی نہ کرنا۔ خاتمۂ تقریر کے بعد حضورؐ نے اپنی ذاتی سرخروئی کے لیے حاضرین سے شہادت پیش کرتے ہوئے اس طرح بار بار اللہ کو پکارا کہ مخلوقِ خدا کے دل پگھل گئے آنکھیں پانی بن گئیں اور روحیں انسانی جسموں کے اندر تڑپ تڑپ کر الامان اور الغیاث کی صدائیں بلند کرنے لگیں۔

حمد و صلوٰۃ کے بعد خطبۂ حج کا پہلا درد انگیز فقرہ یہ تھا:

"اے لوگو! میں خیال کرتا ہوں کہ آج کے بعد میں اور تم اس اجتماع میں کبھی دوبارہ جمع نہیں ہوں گے۔"

اس ارشاد سے اجتماع کی غرض و غایت بے نقاب ہو کر سب کے سامنے آگئی اور جس شخص نے بھی یہ ارشادِ مبارک سنا تڑپ کر رہ گیا۔ اب اصل پیغام کی طرف متوجہ ہوئے اور فرمایا:

"اے لوگو! تمھارا خون، تمھارا مال اور تمھارا ننگ و ناموس؛ اسی طرح ایک دوسرے پر حرام ہے، جس طرح یہ دن (جمعہ) یہ مہینہ (ذی الحج) اور یہ شہر (مکہ مکرمہ) تم سب کے لیے قابلِ حرمت ہے۔"

اسی نکتے پر مزید زور دے کر ارشاد فرمایا:

"اے لوگو! آخر تمھیں بارگاہِ ایزدی میں پیش ہونا ہے، وہاں تمھارے اعمال کی باز پرس کی جائے گی۔ خبردار! میرے بعد گمراہ نہ ہو جانا کہ ایک دوسرے کی گردنیں کاٹنی شروع کر دو۔"

رسول پاکؐ کی یہ دردمندانہ وصیت پاک زبان سے نکلی اور تیر کی طرح دلوں کو چیر گئی۔ اب اُن نفاق انگیز شگافوں کی طرف توجہ دلائی، جن کے پیدا ہو جانے کا اندیشہ تھا۔ یعنی یہ کہ اقتدارِ اسلام کے بعد غریب اور پس ماندہ گروہوں پر ظلم کیا جائے گا۔

اس سلسلے میں فرمایا:

"اے لوگو! اپنی بیویوں کے متعلق اپنے اللہ سے ڈرتے رہنا۔ تم نے نامِ خدا کی ذمہ داری سے انھیں زوجیت میں قبول کیا ہے اور اللہ کا نام لے کر ان کا جسم اپنے لیے حلال بنایا ہے۔ عورتوں پر تمھارا یہ حق ہے کہ وہ غیر کو تمھارے بستر پر نہ آنے دیں، اگر وہ ایسا کریں تو تم انھیں ایسی مار مارو جو نمایاں نہ ہو اور عورتوں کا حق تم پر یہ ہے کہ انھیں بافراغت کھلاؤ اور بافراغت کپڑا پہناؤ۔"

اسی سلسلے میں فرمایا:

اے لوگو! تمھارے غلام، جو خود کھاؤ گے وہی انھیں کھلانا جو خود پہنو گے وہی انھیں پہنانا

عرب میں فساد و خوں ریزی کے بڑے بڑے موجبات دو تھے ادائے سود کے مطالبات اور مقتولوں کے انتقام۔ ایک شخص، دوسرے شخص سے اپنے قدیم خاندانی سود کا مطالبہ کرتا تھا۔ اور یہی جھگڑا پھیل کر خون کا دریا بن جاتا تھا۔ ایک آدمی دوسرے آدمی کو قتل کر دیتا۔ اس سے نسلاً بعد نسلٍ قتل و انتقام کے سلسلے جاری ہو جاتے تھے۔

رسول اللہؐ انھیں دونوں اسبابِ فساد کو باطل فرماتے ہیں:

"اے لوگو! آج میں جاہلیت کے تمام قواعد و رسوم



ـنے قدموں سے پامال کرتا ہوں۔ میں جاہلیت کے
ں کے جھگڑے ملیامیٹ کرتا ہوں اور سب سے
خود اپنے خاندانی مقتول ربیعہ بن حارث کے خون
جسے ہذیل نے قتل کیا تھا، دست بردار ہوتا ہوں۔
زمانۂ جاہلیت کے تمام سودی مطالبات باطل قرار
ہوں اور سب سے پہلے خود اپنے خاندانی سُود
س بن عبدالمطلب کے سود سے دست بردار ہوتا
ں۔"

سُود اور خوُن کے قرض معاف کر دینے کے بعد عدالتِ نفاق کی طرف متوجہ ہوئے اور وراثت، نسب وِصیت اور ضمانت کے تنازعات کے متعلق فرمایا:

"اب اللہ تعالیٰ نے ہر ایک حقدار کا حق مقرر دیا ہے، لہٰذا کسی کو وارثوں کے حق میں وصیت نے کی ضرورت نہیں ہے۔ بچہ جس کے بستر پر ہو، اس کو دیا جائے اور زناکاروں کے لیے پتھر اور ان کی جواب دہی اللہ پر ہے۔ جو لڑکا باپ ہوا کسی دوسرے نسب کا دعویٰ کرے اور م اپنے مولا کے سوا کسی طرف اپنی نسبت کرے، پر خدا کی لعنت ہے۔ عورت شوہر کے بلا اجازت کا مال صرف نہ کرے۔ قرض ادا کیے جائیں عاریت پس کی جائے۔ عطیات لوٹائے جائیں اور ضامن ان ادا کرنے کا ذمّہ دار ہے۔"

اہلِ عرب کے نزاع اور اسبابِ نزاع کا فیصلہ چکا تو اس بین الاقوامی تفریق کی طرف توجہ فرمائی جو مدیوں کے بعد عرب و عجم یا گورے اور کالے کے سے پیدا ہونے والی تھی۔ ارشاد فرمایا:

"ہاں اے لوگو! تم سب کا خدا بھی ایک ہے اور تم سب کا باپ بھی ایک ہے۔ لہٰذا کسی بی کو عجمی پر، کسی سُرخ کو سیاہ پر، کسی سیاہ کو سرخ لو کی پیدائشی برتری یا امتیاز حاصل نہیں ہوگا ہاں افضل وہی ہے جو پرہیزگاری میں افضل ہو۔"

"ہر مسلمان دوسرے کا بھائی ہے اور تمام مسلمان ایک برادری ہیں۔"

اتحادِ اسلام کی مستقل اساس کی طرف راہنمائی فرمائی:

"اے لوگو! میں تم میں وہ چیز چھوڑ چلا ہوں کہ اگر تم نے اسے مضبوطی کے ساتھ پکڑے رکھا تو تم کبھی گمراہ نہیں ہو گے، وہ چیز اللہ کی کتاب قرآن ہے۔"

اتحادِ اُمت کے عملی پروگرام کی طرف راہنمائی فرمائی:

"اے لوگو! میرے بعد کوئی نبی نہیں ہے، اور نہ میرے بعد کوئی نئی امت ہے۔ پس تم سب اپنے اللہ کی عبادت کرو۔ نماز پنجگانہ کی پابندی کرو، رمضان کے روزے رکھو، خوش دلی سے اپنے مالوں کی زکوٰۃ ادا کیا کرو۔ اللہ کے گھر کا حج کرو۔ حکامِ اُمت کے احکام مانو اور اپنے اللہ کی جنّت میں جگہ حاصل کرلو۔"

آخر میں فرمایا:

وَاَنْتُمْ تُسْئَلُوْنَ عَنِّیْ فَمَا اَنْتُمْ قَائِلُوْنَ

[ایک دن اللہ تعالیٰ تم لوگوں سے میرے متعلق گواہی طلب کرے گا تم اس وقت کیا جواب دو گے؟]

اس پر مجمع عام سے پُرجوش صدائیں بلند ہوئیں۔

اِنَّکَ قَدْ بَلَّغْتَ واَدّیت ونصحت

[اے اللہ کے رسولؐ! آپ نے احکام پہنچا دیے۔ اے اللہ کے رسولؐ! آپ نے فرضِ رسالت ادا کردیا۔ اے اللہ کے رسولؐ! آپ نے کھرے کھوٹے کو الگ کردیا۔]

اس وقت سرورِ عالمؐ کی انگشتِ شہادت آسمان کی طرف اٹھی۔ ایک دفعہ آسمان کی طرف اُنگلی اٹھاتے تھے اور دوسری دفعہ مجمع کی طرف اشارہ فرماتے تھے اور کہتے جاتے تھے:

اللّٰھم اشھد اللّٰھم اشھد

[اے اللہ خلقِ خدا کی گواہی سُن لے۔ اے اللہ! مخلوقِ خدا کا اعتراف سُن لے۔]

اللّٰھم اشھد

[اے اللہ! گواہ ہو جا۔]

اس کے بعد ارشاد ہوا:

"جو لوگ موجود ہیں، وہ ان لوگوں تک جو یہاں موجود نہیں ہیں، میری ہدایات پہنچاتے چلے جائیں ممکن ہے کہ آج کے بعض سامعین سے زیادہ پیغامِ تبلیغ کے سننے والے اس کلام کی محافظت کریں[1]۔"

تکمیلِ دین واتمامِ نعمت

خطبۂ حج سے فارغ ہوئے تو جبریلِ امین وہیں تکمیلِ دین اور اتمامِ نعمت کا تاج لے آئے اور یہ آیت نازل ہوئی:

اَلْیَوْمَ اَکْمَلْتُ لَکُمْ دِیْنَکُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَیْکُمْ نِعْمَتِیْ وَرَضِیْتُ لَکُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا[2]

[آج میں نے تمہارے لیے تمہارا دین مکمل کردیا تم پر اپنی نعمت مکمل کردی اور دینِ اسلام پر اپنی رضا مندی کی مہر لگادی۔]

سرکارِ دو عالمؐ نے جب لاکھوں کے اجتماع میں اتمامِ نعمت اور تکمیلِ دینِ فطرت کا یہ آخری اعلان فرمایا تو آپ کی سواری کا سامان ایک روپے سے زیادہ

۱۔ صحیح بخاری۔ ج ۱ ص۔ ۲۳۴۔ نور محمد کراچی ۱۹۶۱ء

۲۔ المائدہ آیت ۳



قیمت کا نہ تھا۔ اختتامِ خطبہ کے بعد حضرت بلالؓ نے اذان بلند کی اور حضورؐ نے ظہر اور عصر کی نماز ایک ساتھ پڑھائی۔ یہاں سے ناقے پر سوار ہو کر موقف میں تشریف لائے اور دیر تک بارگاہِ الٰہی میں کھڑے دعائیں کرتے رہے۔ جب غروبِ آفتاب کے قریب ناقۂ نبویؐ ہجوم خلائق میں سے گذری تو آپ کے خادم اسامہ بن زیدؓ آپ کے ساتھ سوار تھے اور کثرتِ ہجوم کے باعث لوگوں میں اضطراب سا پیدا ہو رہا تھا اس وقت حضورؐ ناقے کی مہار کھینچے جاتے تھے اور زبانِ پاک سے ارشاد فرماتے جاتے تھے :

السکینه ایها الناس السکینه
ایها الناس
لوگو! سکون کے ساتھ لوگو! آرام کے ساتھ

مزدلفہ میں نماز مغرب ادا کی اور سواریوں کو آرام کے لیے کھول دیا گیا۔ پھر نمازِ عشاء کے بعد لیٹ گئے اور صبح تک آرام فرماتے رہے محدثینؒ لکھتے ہیں کہ عمر بھر میں یہی ایک شب ہے جس میں آپ نے نمازِ تہجد ادا نہیں فرمائی۔ ۱۰ ذی الحج کو ہفتہ کے روز جمرہ کی طرف روانہ ہوئے۔ اس وقت آپ کے چچیرے بھائی فضل بن عباسؓ آپ کے ساتھ سوار تھے۔ ناقہ قدم بہ قدم جا رہی تھی۔ چاروں طرف ہجوم تھا لوگ مسائل پوچھتے تھے اور آپ جواب دیتے تھے۔ جمرہ کے پاس ابن عباسؓ نے کنکریاں چن کر دیں تو آپ نے انھیں پھینکا اور ساتھ ہی ارشاد فرمایا :

"اے لوگو! مذہب میں غلو کرنے سے بچتے رہنا تم سے پہلی قومیں اسی سے برباد ہوئی ہیں۔"

تھوڑی تھوڑی دیر کے بعد فراقِ امت کے جذبات تازہ ہو جاتے تھے، آپ اس وقت ارشاد فرماتے تھے :

"اس وقت حج کے مسائل سیکھ لو، میں نہیں جانتا کہ شاید اس کے بعد مجھے دوسرے حج کی نوبت آئے۔"

میدانِ منیٰ اور غدیرِ خم کے خطبات

یہاں سے منیٰ کے میدان میں تشریف لائے، ناقے پر سوار تھے، حضرت بلالؓ مہار تھامے کھڑے تھے اسامہ بن زیدؓ پیچھے بیٹھے کپڑا تان کر سایہ کیے ہوئے تھے آگے پیچھے اور دائیں بائیں مہاجرین انصار، قریش اور قبائل کی صفیں، دریا کی طرح رواں تھیں۔ اور ان میں ناقۂ نبویؐ کشتی نوحؑ کی طرح ستارۂ نجات بن رہی تھی اور ایسا معلوم ہو رہا تھا کہ باغبانِ ازل نے قرآن کریم کے انوارِ صدق و اخلاص کی جو نئی دنیا بسائی تھی، اب وہ شگفتہ و شاداب ہو چکی ہے۔ حضورؐ نے اسی دورِ جدید کی یاد تازہ کرتے ہوئے ارشاد فرمایا :

"آج زمانے کی گردش دنیا کو پھر اسی نقطۂ فطرت پر لے آئی جبکہ اللہ تعالیٰ نے تخلیقِ ارض و سما کی ابتدا کی تھی۔"

پھر ذیقعدہ، ذی الحجہ، محرم اور رجب کی حرمت کا اعلان کرتے ہوئے مجمع کو مخاطب کر کے ارشاد فرمایا :

پیغمبرِ انسانیت : آج کون سا دن ہے ؟

مسلمان : اللہ اور رسولؐ بہتر جانتے ہیں۔

پیغمبرِ انسانیت : (طویل خاموشی کے بعد) کیا آج قربانی کا دن ہے ؟

مسلمان : بے شک! قربانی کا دن ہے۔

پیغمبرِ انسانیت : یہ کون سا مہینہ ہے ؟

مسلمان : اللہ اور رسولؐ بہتر جانتے ہیں۔

پیغمبرِ انسانیت : (طویل خاموشی کے بعد) کیا یہ ذی الحجہ نہیں ہے ؟

مسلمان : بے شک یہ ذی الحجہ ہے۔

پیغمبرِ انسانیت : یہ کون سا شہر ہے ؟

مسلمان : اللہ اور رسولؐ بہتر جانتے ہیں۔

پیغمبرِ انسانیت : (طویل خاموشی کے بعد) کیا یہ بلدۃ الحرام نہیں ہے ؟

مسلمان : بے شک یہ بلدۃ الحرام ہے۔

اس کے بعد فرمایا :

"مسلمانو! تمھارا خون، تمھارا مال، تمھاری آبرو اسی طرح محترم ہیں جس طرح یہ دن، یہ مہینہ اور یہ شہر محترم ہیں۔ تم میرے بعد گمراہ نہ ہو جانا کہ ایک دوسرے کی گردن مارنے لگو۔ اے لوگو! تمھیں اللہ کے دربار میں حاضر ہونا ہے وہ تم سے تمھارے اعمال کی باز پرس کرے گا اگر کسی نے جرم کیا تو وہ اپنے جرم کا ذمہ دار ہو گا۔ باپ بیٹے کے جرم کا ذمہ دار نہیں اور بیٹا باپ کے جرم کا ذمہ دار نہیں۔ اب شیطان اس بات سے مایوس ہو گیا ہے کہ تمھارے اس شہر میں کبھی اس کی پرستش کی جائے گی۔ ہاں تم چھوٹی چھوٹی باتوں میں اس کی پیروی کرو گے تو وہ ضرور خوش ہو گا اے لوگو! توحید، نماز، روزہ، زکوٰۃ اور حج یہی جنت کا داخلہ ہے، میں نے تمھیں حق کا پیغام پہنچا دیا ہے، اب موجود لوگ، یہ پیغام ان لوگوں تک پہنچاتے رہیں، جو بعد میں آئیں گے۔"

یہاں سے قربان گاہ میں تشریف لائے اور ۶۳ اونٹ خود ذبح فرمائے اور ۳۷ کو حضرت علیؓ سے ذبح کرایا اور ان کا گوشت اور پوست سب خیرات کر دیا۔ پھر عبداللہ بن معمر کو طلب کر کے سر کے بال اتروائے اور یہ موئے مبارک تبرکاً تقسیم ہو گئے۔ یہاں سے اُٹھ کر خانۂ کعبہ کا طواف فرمایا۔ اور زمزم پی کر منیٰ میں تشریف لے گئے اور ۱۲ ذی الحجہ تک وہیں اقامت فرما رہے ۱۳ کو خانۂ کعبہ کا آخری طواف کیا اور انصار و مہاجرین کے ساتھ مدینۂ منورہ کی طرف مراجعت فرمائی۔ جب غدیرِ خم پہنچے تو صحابہؓ کو جمع کر کے ارشاد فرمایا :

"اے لوگو! میں بھی بشر ہوں۔ ممکن ہے اللہ کا بلاوا اب جلد آجائے اور مجھے قبول کرنا پڑے میں تمھارے



یہ دو مرکز ثقل قائم کر چلا ہوں ایک اللہ کی کتاب ہے جس میں ہدایت اور روشنی جمع ہے اسے مضبوطی اور استواری کے ساتھ پکڑو' دوسرا مرکز میرے اہل بیت ہیں۔ میں اپنے اہل بیت کے بارے میں تمھیں خدا ترسی کی وصیت کرتا ہوں۔"

گویا یہ اجتماعِ عامّت کے لیے اہل و عیال کے حقوق واحترام کی وصیت تھی۔ تاکہ وہ کسی بحث میں الجھ کر حضورؐ کے خاندان کے ساتھ بے لحاظی کا سلوک نہ کریں۔ مدینے کے قریب پہنچ کر رات ذوالحلیفہ میں ٹھہرے اور دوسرے دن مدینہ منورہ میں داخل ہو گئے۔ محفوظ ومامون حمد کرتے ہوئے اور شکر بجا لاتے ہوئے۔

مُلکِ بقا کی تیاری

حضور سرورِ دوعالمؐ مدینہ منورہ میں پہنچ کر فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ کی تعمیل میں مصروف ہو چکے تھے۔ بارگاہِ ایزدی کی حاضری کا شوق روز بروز بڑھتا جاتا تھا۔ صبح و شام معبودِ حقیقی کے ذکر و یاد کی طلب تھی اور بس۔

رمضان المبارک میں ہمیشہ دس روز کا اعتکاف فرماتے تھے سنہ ۱۰ھ میں ۲۰ روز کا اعتکاف فرمایا۔ ایک دن حضرت فاطمہ بتولؓ تشریف لائیں تو ان سے فرمایا "پیاری بیٹی اب مجھے اپنی رحلت قریب معلوم ہوتی ہے۔" انھیں ایام میں شہدائے اُحد کی تکلیف، بے بسی کی شہادت اور مردانہ وار قربانیوں کا خیال آگیا تو گنجِ شہیداں میں تشریف لے گئے اور بڑے درد و گداز سے ان کے لیے دعائیں کیں۔ نمازِ جنازہ پڑھی اور انھیں اس طرح الوداع کہی جس طرح ایک بزرگ شفیق اپنے کم سن بچوں سے پیار کرتا ہے اور پھر انھیں الوداع کہتا ہے۔ یہاں سے واپس آئے تو منبرِ نبوی پر جلوہ طراز ہوئے اور اربابِ صدق و صفا سے نہایت دردمندانہ لہجے میں مخاطب ہو کر ارشاد فرمایا:

"دوستو! اب میں تم سے آگے منزلِ آخرت کی طرف چلا جا رہا ہوں تاکہ بارگاہِ ایزدی میں تمھاری شہادت دوں۔ واللہ مجھے یہاں سے وہ اپنا حوض نظر آ رہا ہے جس کی وسعت ایلہ سے جحفہ تک ہے۔ مجھے تمام دنیا کے خزانوں کی کنجیاں دے دی گئی ہیں۔ اب مجھے یہ خوف نہیں کہ میرے بعد تم شرک کرو گے۔ البتہ میں اس سے ڈرتا ہوں کہ کہیں دنیا میں مبتلا نہ ہو جاؤ اور اس کے لیے آپس میں کشت و خون نہ کرو۔ اس وقت تم اسی طرح ہلاک ہو جاؤ گے جس طرح پہلی قومیں ہلاک ہوئیں۔"

کچھ دیر کے بعد قلبِ صافی میں زید بن حارثؓ کی یاد تازہ ہو گئی۔ انھیں حدودِ شام کے عربوں نے شہید کر دیا تھا۔ "اسامہ بن زیدؓ فوج لے کر جائیں اور اپنے والد کا انتقام لیں۔"

ان ایام میں خیال مبارک زیادہ تر گذر سے ہوئے نیاز مندوں ہی کی طرف مائلِ محبت رہتا تھا۔ ایک بار آسودگانِ بقیع کا خیال آگیا۔ یہ عام مسلمانوں کا قبرستان تھا۔ جوشِ محبت سے آدھی رات کو اٹھ کر وہاں تشریف لے گئے اور عام امتیوں کے لیے بڑے سوز سے دعا فرماتے رہے۔ پھر یہاں کے روحانی دوستوں سے مخاطب ہو کر فرمایا: انا بکم للاحقون میں اب جلد تمھارے ساتھ شامل ہو رہا ہوں۔

ایک دن مسجدِ نبوی میں پھر مسلمانوں کو یاد فرمایا۔ اجتماع ہو گیا تو ارشاد فرمایا:

"مسلمانو! مرحبا اللہ تعالیٰ تم سب پر اپنی نعمتیں نازل فرمائے تمھاری دل شکستگی دور فرمائے تمھاری اعانت و دستگیری فرمائے تمھیں عزّت و رفعت سے سرفراز فرمائے۔ تمھیں دولتِ امن و عافیت سے شاد کام فرمائے۔ میں اس وقت تمھیں صرف خوفِ خدا و اتقا کی وصیت کرتا ہوں اب اللہ تعالیٰ ہی تمھارا وارث اور خلیفہ ہے اور میری تم سے اپیل اسی کے خوف کے لیے ہے۔ اس لیے کہ میرا منصب نذیرِ مبین ہے۔ دیکھنا اللہ کی بستیوں اور بندوں میں تکبّر اور برتری اختیار نہ کرنا۔ یہ حکمِ ربّانی ہر وقت تمھارے ملحوظِ خاطر رہنا چاہیے۔"

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ
لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا
وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ.

[یہ آخرت کا گھر ہے ہم یہ ان لوگوں کو دیتے ہیں جو زمین میں غرور اور فساد کا ارادہ نہیں کرتے آخرت کی کامیابی پرہیزگاروں کے لیے ہے۔]

پھر فرمایا:

أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْمُتَكَبِّرِينَ.

کیا تکبّر کرنے والوں کا ٹھکانہ دوزخ نہیں ہے؟

آخری الفاظ یہ ارشاد فرمائے:

"سلام تم سب پر اور ان سب لوگوں پر جو واسطۂ اسلام سے میری بیعت میں داخل ہوں گے۔"

علالت کی ابتدا

۲۹ صفر بروز دوشنبہ ایک جنازے سے واپس تشریف لا رہے تھے کہ اثنائے راہ میں سر کے درد سے علالت کا آغاز ہو گیا۔ حضرت ابوسعید خدریؓ فرماتے تھے کہ سرکارِ دوجہاں کے سرِ مبارک پر رومال بندھا تھا میں نے ہاتھ لگایا۔ یہ اس قدر جل رہا تھا کہ ہاتھ کو برداشت نہ ہوتی تھی۔ دوشنبہ تک اشتدادِ مرض نے مرضِ اقدس پر زیادہ قابو پا لیا۔ اس واسطے ازواجِ مطہرات نے اجازت دے دی کہ اب حضورؐ کا مستقل قیام حضرت عائشہؓ صدیقہ کے ہاں کر دیا جائے۔ اس وقت مزاجِ اقدس پر ضعف اس قدر طاری تھا کہ خود قدموں سے چل کر حجرۂ عائشہؓ تک تشریف نہیں لے جا



سکے۔ حضرت علیؓ اور حضرت عباسؓ نے رسولؐ کردگار کے دونوں بازو تھامے اور آپ بڑی مشکل سے حجرۂ عائشہؓ میں تشریف لائے۔ حضرت صدیقہؓ فرماتی ہیں کہ نبی خدا صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم جب کبھی بیمار ہوتے تھے یہ دعا اپنے ہاتھوں پر دم کر کے جسم مبارک پر ہاتھ پھیر لیتے تھے۔

اِذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ
اَنْتَ الشَّافِيْ لَاشِفَآءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَاءً
لَايُغَادِرُ سَقَمًاهُ

[اے مالکِ انسانیت! خطرات دور فرما دے اے شفا دینے والے تو شفا عطا فرما دے، شفا عطا فرما دے، شفا وہی ہے جو تو عنایت کرے۔ وہ صحت عطا کر کہ کوئی تکلیف باقی نہ رہے۔]

اس مرتبہ میں نے یہ دُعا پڑھی اور نبی خدا صلی اللہ علیہ وسلم کے ہاتھوں پر دم کر کے یہ چاہا کہ جسم اطہر پر مبارک ہاتھ پھیر دوں۔ مگر حضورؐ نے ہاتھ پیچھے ہٹا لیے اور ارشاد فرمایا:

اَللّٰهُمَّ اَغْفِرْلِیْ وَاَلْحِقْنِیْ بِالرَّفِیْقِ الْاَعْلٰی

[اے اللہ! معافی اور اپنی رفاقت عطا فرما دے۔]

وفات سے پانچ روز پہلے

وفاتِ اقدس سے ۵ روز پہلے (چہار شنبہ) پتھر کے ایک ٹب میں بیٹھ گئے اور سر مبارک پر پانی کی سات مشکیں ڈلوائیں۔ اس سے مزاجِ اقدس میں خنکی اور تسکین سی پیدا ہو گئی۔ مسجد میں تشریف لائے اور فرمایا:

"مسلمانو! تم سے پہلے ایک قوم گذر چکی ہے جس نے اپنے انبیاءؑ و صلحاء کی قبروں کو سجدہ گاہ بنا لیا تھا۔ تم ایسا نہ کرنا۔" پھر فرمایا: "ان یہود و نصاریٰ پر خدا کی لعنت ہو جنھوں نے اپنے نبیوں کی قبروں کو سجدہ گاہ بنا لیا۔"

پھر فرمایا: "میری قبر کو میرے بعد وہ قبر نہ بنا دینا کہ اس کی پرستش شروع ہو جائے۔"

پھر فرمایا: "مسلمانو! وہ قوم اللہ کے غضب میں آجاتی ہے جو قبور انبیاء کو مساجد بنا دے۔"

پھر فرمایا: "مسلمانو! دیکھو میں تم کو اس سے منع کرتا ہوں، دیکھو اب پھر یہی وصیت کرتا ہوں۔ اے اللہ تو گواہ رہنا۔ اے اللہ تو گواہ رہنا۔"

پھر یہ ارشاد فرمایا:

"خدا تعالیٰ نے اپنے ایک بندے کو اختیار فرمایا ہے کہ وہ دنیا و مافیہا کو قبول کرے یا آخرت کو۔ مگر اس نے صرف آخرت کو قبول کر لیا ہے۔"

یہ سن کر رمز شناسِ نبوت حضرت صدیق اکبرؓ آنسو بھر لائے اور رونے لگے اور کہا: "یا رسولؐ اللہ ہمارے ماں باپ ہماری جانیں اور ہمارے زر و مال آپ پر قربان ہو جائیں۔" لوگوں نے ان کو تعجب سے دیکھا کہ حضور انورؐ تو ایک شخص کا واقعہ بیان فرما رہے ہیں۔ پھر اس میں رونے کی کون سی بات ہے؟ مگر یہ بات انھوں نے سمجھی جو رو رہے تھے۔ حضرت صدیقؓ کی اس بے کلی نے خیالِ اشرف کو دوسری طرف مبذول کر دیا۔ ارشاد فرمایا:

"میں سب سے زیادہ جس شخص کی دولت اور رفاقت کا مشکور رہوں وہ ابوبکرؓ ہیں۔ اگر میں اپنی امت میں سے کسی ایک شخص کو اپنی دوستی کے لیے منتخب کر سکتا تو وہ ابوبکرؓ ہوتے لیکن اب رشتۂ اسلام میری دوستی کی بنا ہے اور وہی کافی ہے۔ مسجد کے رُخ پر کوئی دریچہ ابوبکرؓ کے دریچے کے سوا باقی نہ رکھا جائے۔"

انصارِ مدینہ حضورؐ کے زمانۂ علالت میں برابر رو رہے تھے۔ حضرت ابوبکرؓ اور حضرت عباسؓ وہاں سے گذرے تو انھوں نے انصار کو روتے دیکھا، دریافت کرنے پر انھوں نے بتایا: "آج ہمیں حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی صحبتیں یاد آرہی ہیں۔" انصار کی اس دردمندی اور بے دلی کی اطلاع سمعِ مبارک تک پہنچ چکی تھی، ارشاد فرمایا:

"اے لوگو! میں اپنے انصار کے معاملے میں تم کو وصیت کرتا ہوں، عام مسلمان روز بروز بڑھتے جائیں گے۔ مگر میرے انصار کھانے میں نمک کی طرح رہ جائیں گے۔ یہ لوگ میرے جسم کا پیرہن اور میرے سفرِ زندگی کا توشہ ہیں۔ انھوں نے اپنے فرائض ادا کر دیے مگر ان کے حقوق باقی ہیں جو شخص اُمت کے نفع اور نقصان کا متولی ہو، اس کا فرض ہے کہ وہ انصار نکوکار کی قدر افزائی کرے اور جن انصار سے لغزش ہو جائے ان کے متعلق درگذر سے کام لے۔"

حضورؐ نے حکم دیا تھا کہ حضرت اسامہؓ بن زید شام پر حملہ آور ہوں اور اپنے شہید والد کا انتقام لیں۔ اس پر منافقین کہنے لگے ایک معمولی نوجوان کو اکابر اسلام پر سپہ سالار مقرر کر دیا گیا ہے، اس سلسلے میں پیغمبر مساوات نے ارشاد فرمایا:

"آج اسامہؓ کی سرداری پر تم کو اعتراض ہے اور کل اس کے باپ زیدؓ کی سرداری پر تم کو اعتراض تھا۔ خدا کی قسم! وہ بھی اس منصب کے مستحق تھے اور یہ بھی۔ وہ بھی مجھے سب سے زیادہ محبوب تھے اور اس کے بعد یہ بھی سب سے زیادہ محبوب ہیں۔"

پھر فرمایا: "حلال و حرام کے تعین کو میری طرف منسوب نہ کرنا۔ میں نے وہی چیز حلال کی ہے جسے قرآن نے حلال کیا ہے اور اسی کو حرام قرار دیا ہے، جسے خدا نے حرام کیا ہے۔"

اب آپ اہلِ بیت کی طرف متوجہ ہوئے کہ کہیں رشتۂ نبوت کا غرور انھیں عمل و سعی سے بیگانہ نہ بنا دے، ارشاد فرمایا:

"اے رسولؐ کی بیٹی فاطمہ! اور اے پیغمبر خدا



کی پھوپھی صفیہ! خدا کے ہاں کے لیے کچھ کرلو۔ میں تمھیں خدا کی گرفت سے نہیں بچا سکتا۔"

یہ خطبۂ درد، حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کا آخری خطبہ تھا جس میں حضور نے حاضرینِ مسجد کو خطاب فرمایا، اختتامِ کلام کے بعد حجرۂ عائشہؓ میں تشریف لے آئے۔ شدتِ مرض کی حالت یہ تھی کہ عالمِ بے تابی میں کبھی ایک پاؤں پھیلاتے تھے، اور کبھی دوسرا سمیٹتے تھے، کبھی گھبرا کر چہرۂ انور پر چادر ڈال لیتے تھے اور کبھی ہٹا دیتے تھے۔ ایسی حالت میں حضرتِ عائشہ صدیقہؓ نے زبانِ مبارک سے یہ الفاظ سُنے۔

"یہود و نصاریٰ پر خدا کی لعنت ہو کہ انھوں نے اپنے پیغمبروں کی قبروں کو عبادت گاہ بنالیا ہے۔"

وفات سے چار روز پہلے

وفات سے چار روز پہلے (جمعرات) حضرت عائشہؓ سے ارشاد فرمایا اپنے والد ابوبکرؓ اور اپنے بھائی عبدالرحمٰنؓ کو بلا لیجیے اسی سلسلے میں فرمایا "دوات کاغذ لے آؤ میں ایک تحریر لکھوا دوں جس کے بعد تم گمراہ نہیں ہوگے۔" یہ شدتِ مرض میں حضورؐ سرورِ عالم کا ایک خیال تھا۔ حضرت فاروقؓ نے یہ رائے ظاہر کی کہ حضورؐ کو اس حال میں تکلیف دینا مناسب نہیں ہے۔ اب تکمیلِ شریعت کا کوئی ایسا نکتہ باقی نہیں رہا جس میں قرآن کافی نہ ہو۔ بعض دوسرے صحابہؓ نے اس رائے سے مطابقت نہ کی۔ جب شور زیادہ ہوا تو بعض نے کہا "خود حضورؐ ہی سے دریافت کر لیا جائے۔" ارشاد فرمایا: "مجھے چھوڑ دو۔ میں جس مقام میں ہوں وہ اس سے بہتر ہے جس کی طرف تم مجھے بلا رہے ہو۔"

اسی روز تین وصیتیں اور فرمائیں :

(۱) کوئی مشرک عرب میں نہ رہے (۲) سفیروں اور وفود کی بدستور عزت و مہمانی کی جائے (۳) قرآن پاک کے متعلق بھی کچھ ارشاد فرمایا جو راوی کو یاد نہیں رہا ہے۔

سرکارِ پاکؐ علالت کی تکلیف اور بے چینی کے باوجود ۱۱ روز تک برابر مسجد میں تشریف لاتے رہے۔ جمعرات کے روز مغرب کی نماز بھی خود پڑھائی اور اس میں سورۂ مرسلات تلاوت فرمائی۔ عشا کے وقت آنکھ کھولی اور دریافت فرمایا "کیا نماز ہو چکی؟"

مسلمانوں نے عرض کیا: "مسلمان حضورؐ کے منتظر بیٹھے ہیں۔" لگن میں پانی بھروا کر غسل فرمایا اور ہمت کر کے اُٹھے مگر غش آگیا۔ تھوڑی دیر میں پھر آنکھ کھولی اور وہی سوال دہرایا "کیا نماز ہو چکی ہے؟" لوگوں نے عرض کیا "یارسول اللہ! مسلمان آپ کا انتظار کر رہے ہیں۔" اس مرتبہ پھر اٹھنا چاہا۔ مگر بے ہوش ہو گئے، کچھ دیر کے بعد پھر آنکھ کھولی اور وہی سوال دہرایا "کیا نماز ہو چکی ہے؟" لوگوں نے عرض کیا: "یارسول اللہ! سب لوگوں کو حضور ہی کا انتظار ہے۔" تیسری مرتبہ جسمِ مبارک پر پانی ڈالا اور جب اٹھنا چاہا تو غشی آگئی۔ افاقہ ہونے پر ارشاد فرمایا: "ابوبکرؓ نماز پڑھادیں۔" حضرت عائشہ صدیقہؓ نے عرض کیا "ابوبکرؓ نہایت رقیق القلب آدمی ہیں۔ جب وہ آپ کی جگہ پر کھڑے ہوں گے تو نماز نہیں پڑھا سکیں گے۔"

ارشاد فرمایا: "وہی نماز پڑھائیں۔" حضرت عائشہؓ کا خیال یہ تھا کہ جو شخص رسول اللہؐ کے بعد امام مقرر ہوگا لوگ اسے لازماً منحوس خیال کریں گے روایت ہے کہ اس وقت صدیق اکبرؓ تشریف فرما نہیں تھے۔ اس واسطے حضرت عمرؓ کو آگے بڑھایا گیا مگر حضورؐ نے تین مرتبہ فرمایا: "نہیں، نہیں، نہیں، ابوبکرؓ نماز پڑھائیں۔"

رسول اللہؐ کا منبر چند روز پہلے خالی ہو چکا تھا۔ آج رسول اللہ کا مصلّٰی بھی خالی ہو گیا۔ جب ابوبکر صدیقؓ حضرت محمد مصطفےٰ صلی اللہ علیہ وسلم کی جگہ کھڑے ہوئے تو عالمِ یاس نے مسجدِ نبویؐ پر اپنے پردے تان دیے اور مسلمانوں کے دل بے اختیار رو دیے۔ اور خود صدیق اکبرؓ کے قدم بھی لڑکھڑا گئے۔ چوں کہ رسول اللہؐ کے ارشاد کے ساتھ توفیقِ الٰہی شامل تھی اس واسطے یہ کٹھن گھاٹی بھی گذر گئی۔ حضرت صدیق اکبرؓ نے حیاتِ پاکِ نبویؐ میں اسی طرح سترہ نمازیں پڑھائیں۔

وفات سے دو روز پہلے

حضرت صدیق اکبرؓ ظہر کی نماز پڑھا رہے تھے کہ حضورؐ کی طبیعت نے مسجد کی طرف رجوع کیا اور حضرت علیؓ اور حضرت عباسؓ کے کندھوں پر سہارا لیتے ہوئے جماعت میں تشریف لے آئے نمازی نہایت بے قراری کے ساتھ حضورؐ کی طرف متوجہ ہوتے اور صدیق اکبرؓ بھی مصلّے سے پیچھے ہٹے۔ مگر حضورؐ نے دستِ مبارک سے ارشاد فرمایا: "پیچھے مت ہٹو۔" پھر حضرت صدیقؓ کے برابر بیٹھ گئے اور نماز ادا کرنے لگے۔ حضورؐ کی اقتدا صدیق اکبرؓ کرتے تھے اور صدیقؓ کی اقتدا مسلمان کرتے تھے۔ یہ پاک نماز اسی طرح مکمل ہوگئی تو حضور پاکؐ حجرۂ عائشہ میں تشریف لے گئے۔

وفات سے ایک روز پہلے

مخدومِ انسانیت جو قیدِ دنیا سے آزاد ہو رہے تھے صبح بیدار ہوئے تو پہلا کام یہ کیا کہ سب غلاموں کو آزاد فرمایا۔ یہ تعداد میں ۴۰ تھے۔ پھر اثاث البیت کی طرف توجہ فرمائی۔ اس وقت کاشانۂ نبویؐ کی ساری دولت صرف سات دینار تھے حضرت عائشہؓ سے فرمایا "انھیں غریبوں میں تقسیم کردو۔ مجھے

شرم آتی ہے کہ اگر رسول اللہ اپنے اللہ سے ملے اور اس کے گھر میں دولت دنیا پڑی ہو۔" اس ارشاد پر گھر کا گھر صاف کر دیا گیا۔ آخری رات کاشانۂ نبویؐ میں چراغ جلانے کے لیے تیل تک موجود نہیں تھا۔ یہ ایک پڑوسی عورت سے ادھار لیا گیا۔ گھر میں کچھ ہتھیار باقی تھے انھیں مسلمانوں کو ہبہ کر دیا گیا۔ زرہ نبوی ۳۰ صاع جَو کے عوض ایک یہودی کے پاس رہن تھی۔ چوں کہ ضعف لحہ بہ لحہ ترقی پذیر تھا اس واسطے بعض درد مندوں نے دوا پیش کی۔ مگر انکار فرمایا۔ اسی وقت غشی کا دورہ آ گیا اور تیمار داروں نے منہ کھول کر دوا پلا دی۔ افاقے کے بعد جب اس کا احساس ہوا تو فرمایا اب یہی دوا ان پلانے والوں کو بھی پلائی جائے۔ یہ اس لیے کہ جس وجود باجود کی صحت کے لیے ایک دل گرفتہ دنیا دعائیں کر رہی تھی وہ اپنے اللہ کی دعوت کو اس طرح قبول کر چکا تھا کہ اب اس میں نہ دعا کی گنجائش باقی تھی اور نہ دوا کی۔

یومِ وفات

۹ ربیع الاول (دوشنبہ) کو مزاج اقدس میں قدرے سکون تھا۔ نماز صبح ادا کی جا رہی تھی کہ حضورؐ نے مسجد اور حجرہ کا درمیانی پردہ سرکا دیا۔ اب چشم اقدس کے روبرو نمازیوں کی صفیں مصروفِ رکوع و سجود تھیں سرکار دو عالمؐ نے اس پاک نظارے کو جو حضور پاکؐ کی تعلیم کا نتیجہ تھا بڑے اشتیاق سے ملاحظہ فرمایا اور جوشِ مسرت سے ہنس پڑے۔ لوگوں کو خیال ہوا کہ مسجد میں تشریف لا رہے ہیں۔ نمازی بے اختیار سے ہو گئے۔ صفیں ٹوٹنے لگیں اور حضرت صدیقؓ نے جو امامت فرما رہے تھے پیچھے ہٹنا چاہا۔ مگر حضور پاکؐ نے اشارۂ مبارک سے سب کو تسکین دی اور چہرۂ انور کی ایک جھلک دکھا کر پھر حجرے کا پردہ ڈال دیا۔ اجتماع اسلام کے یہ رسولؐ کا یہ جلوۂ زیارت آخری تھا اور شاید یہ انتظام بھی خود قدرت کی طرف سے ہوا کہ رفیقانِ صلوٰۃ جمالِ جہاں آرا کی آخری جھلک دیکھتے جائیں۔

۹ ربیع الاول کی حالت صبح ہی سے نہایت عجیب تھی۔ ایک سورج بلند ہو رہا تھا اور دوسرا سورج غروب ہو رہا تھا۔ کاشانۂ نبویؐ میں پے در پے غشی کے بادل آئے اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے وجودِ اقدس پر چھا گئے۔ "ایک بے ہوشی گذر جاتی تھی تو پھر دوسری وارد ہو جاتی تھی۔ انھیں تکلیفوں میں پیاری بیٹی کو یاد فرمایا۔ وہ مزاج اقدس کا یہ حال دیکھ کر سنبھل نہ سکیں۔ سینۂ مبارک سے لپٹ گئیں اور رونے لگیں۔" بیٹی کو اس طرح نڈھال دیکھ کر ارشاد فرمایا:

"میری بیٹی! رو نہیں، میں دنیا سے رخصت ہو جاؤں تو إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ کہنا اسی میں ہر شخص کے لیے سامانِ تسکین موجود ہے۔" حضرت فاطمہؓ نے پوچھا: کیا آپ کے لیے بھی؟ فرمایا ہاں اس میں میری بھی تسکین ہے۔

جس قدر رسول اللہؐ کا درد و کرب بڑھ رہا تھا حضرت فاطمہؓ کا کلیجہ بھی کٹتا جا رہا تھا۔ حضرت رحمۃ للعالمینؐ نے ان کی اذیت کو محسوس کر کے کچھ کہنا چاہا تو پیاری بیٹی نے سرورِ کائناتؐ کے لبوں سے اپنے کان لگا دیے۔ آپ نے فرمایا: "بیٹی میں اس دنیا کو چھوڑ رہا ہوں" فاطمہؓ بے اختیار رو دیں۔ پھر فرمایا: "فاطمہؓ! میرے اہل بیت میں تم سب سے پہلے مجھے ملو گی۔" فاطمہؓ بے اختیار ہنس دیں کہ یہ جدائی قلیل ہے۔

پیغمبر انسانیتؐ کی حالت نازک ترین ہوتی جا رہی تھی۔ یہ حال دیکھ کر فاطمہؓ نے کہنا شروع کیا وا کرب اباہ! ہائے میرے باپ کی تکلیف ہائے میرے باپ کی تکلیف! فرمایا: "فاطمہؓ آج کے بعد تمہارا باپ کبھی بے چین نہیں ہوگا۔" حسنؓ اور حسینؓ بہت غمگین ہو رہے تھے۔ انھیں پاس بلایا دونوں کو چوما پھر ان کے احترام کی وصیت فرمائی پھر ازواجِ مطہرات کو طلب فرمایا اور انھیں نصیحتیں فرمائیں اسی دوران میں ارشاد فرماتے تھے۔

مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ

[ان لوگوں کے ساتھ جن پر خدا نے انعام فرمایا۔]

کبھی ارشاد فرماتے:

اَللّٰهُمَّ بِالرَّفِيقِ الْأَعْلٰى

اے خداوند! بہترین رفیق۔

پھر حضرت علیؓ کو طلب فرمایا۔ آپ نے سر مبارک کو اپنی گود میں رکھ لیا۔ انھیں بھی نصیحت فرمائی۔ پھر ایک دم اللہ تعالیٰ کی طرف متوجہ ہوئے اور فرمایا:

اَلصَّلٰوةُ اَلصَّلٰوةُ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

نماز، نماز، لونڈی، غلام اور پس ماندگان

اب نزع کا وقت آ پہنچا تھا۔ حضرت رحمۃ للعالمین صلی اللہ علیہ وسلم، حضرت عائشہؓ کے ساتھ ٹیک لگائے ہوئے تھے۔ پانی کا پیالہ پاس رکھا تھا اس میں ہاتھ ڈالتے تھے اور چہرۂ انور پر پھرا لیتے تھے روئے اقدس کبھی سرخ ہو جاتا تھا اور کبھی زرد پڑ جاتا تھا۔ زبانِ مبارک آہستہ آہستہ ہل رہی تھی لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ إِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ خدا کے سوا کوئی معبود نہیں اور موت تکلیف کے ساتھ ہے۔

حضرت عبدالرحمن بن ابوبکرؓ ایک تازہ مسواک کے ساتھ آئے تو حضور پاکؐ نے مسواک پر نظر جما دی۔ حضرت عائشہؓ سمجھ گئیں کہ مسواک فرمائیں گے۔ ام المومنینؓ نے دانتوں میں نرم کر کے مسواک پیش کی۔ اور آپ نے بالکل تندرستوں کی طرح مسواک کی۔ زبانِ مبارک پہلے ہی طہارت کا سراپا تھا۔ اب مسواک کے بعد اور بھی مجلا ہو گیا تو یک لخت ہاتھ اونچا کیا کہ گویا



نہیں تشریف لے جا رہے ہیں اور پھر زبانِ قدس سے نکلا۔ بَلِ الرَّفِیْقُ الْاَعْلٰی۔ اب اور کوئی نہیں صرف اسی کی رفاقت منظور ہے۔

بَلِ الرَّفِیْقُ الْاَعْلٰی بَلِ الرَّفِیْقُ الْاَعْلٰی

تیسری آواز پر ہاتھ لٹک گئے، پتلی اوپر کو اٹھ گئی اور روحِ شریف عالمِ قدس کو ہمیشہ کے لیے رخصت ہو گئی۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

یہ ربیع الاول ۱۱ھ دوشنبہ کا دن اور چاشت کا وقت تھا۔ عمرِ مبارک قمری حساب سے ۶۳ سال اور ۴ دن ہوئی۔

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

صحابۂ کرامؓ میں اضطرابِ عظیم

خبرِ وفات کے بعد مسلمانوں کے جگر کٹ گئے، قدم لڑکھڑا گئے، چہرے بجھ گئے، آنکھیں خون بہانے لگیں۔ ارض و سما سے خوف آنے لگا۔ سورج تاریک ہو گیا۔ آنسو بہہ رہے تھے اور تھمتے نہیں تھے۔ کئی صحابۂ حیران و سرگرداں ہو کر آبادیوں سے نکل گئے۔ کوئی جنگل کی طرف بھاگ گیا، جو بیٹھا تھا بیٹھا رہ گیا، جو کھڑا تھا اس کو بیٹھ جانے کا یارا نہ ہوا۔ مسجدِ نبوی قیامت سے پہلے قیامت کا نمونہ پیش کر رہی تھی۔ حضرت صدیقِ اکبرؓ تشریف لائے اور چپ چاپ حجرۂ عائشہ صدیقہؓ میں داخل ہو گئے۔ یہاں حضرت رحمۃ للعالمین کی میتِ پاک رکھی تھی۔ حضرت صدیقؓ نے چہرۂ اقدس سے کپڑا اٹھا کر پیشانی پر بوسہ دیا۔ پھر چادر ڈھک دی اور رو کر کہا:

"حضورؐ پر میرے ماں باپ قربان! آپؐ کی زندگی بھی پاک تھی اور موت بھی پاک ہے۔ واللہ اب آپ پر دو موتیں وارد نہیں ہوں گی۔ اللہ نے جو موت لکھ دی تھی آج آپؐ نے اس کا ذائقہ چکھ لیا اور اب اس کے بعد موت ابد تک آپؐ کا دامن نہ چھو سکے گی۔"

جب صدیقِ اکبرؓ مسجدِ نبوی میں تشریف لائے، حضرت عمر فاروقؓ نہایت بے بسی سے نڈھال کھڑے تھے اور بڑے درد و جوش سے یہ اعلان کر رہے تھے" منافقین کہتے ہیں کہ حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم انتقال فرما گئے ہیں۔ واللہ! آپ نے وفات نہیں پائی۔ آپ اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں حضرت موسیٰؑ کی طرح طلب کیے گئے ہیں جو ۴۰ روز تک غائب رہ کر واپس آ گئے تھے۔ اس وقت حضرت موسیٰؑ کی نسبت بھی یہی کہا جاتا تھا کہ آپ وفات پا گئے ہیں۔ خدا کی قسم حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم بھی انھیں کی طرح دنیا میں واپس تشریف لائیں گے اور ان لوگوں کے ہاتھ پاؤں کاٹ دیں گے جو آپ پر وفات کا الزام لگاتے ہیں۔"

حضرت صدیقِ اکبرؓ نے عمر فاروقؓ کا کلام سنا تو فرمایا عمرؓ! سنبھلو اور خاموش ہو جاؤ۔ جب عمر فاروقؓ اپنی وارفتگی میں بہے چلے گئے تو حضرت صدیقِ اکبرؓ نہایت دانشمندی کے ساتھ ان سے الگ ہٹ گئے اور خود گفتگو شروع کر دی۔ جب حاضرینِ مسجد بھی حضرت عمرؓ کو چھوڑ کر ادھر متوجہ ہو گئے تو آپ نے پہلے حمد و ثنا بیان کی۔ پھر فرمایا:

"اے لوگو! تم میں سے جو شخص محمدؐ کو پوجتا تھا وہ سمجھ لے کہ محمد وفات پا گئے ہیں اور جو شخص خدا کا پرستار ہے وہ جان لے کہ خدا تعالیٰ زندہ ہے اور وہ کبھی مرنے کا نہیں اور یہ حقیقت خود قرآنِ پاک نے واضح کر دی ہے:

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ۗ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْئًا ۗ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ۔

نہیں ہیں محمدؐ مگر ایک رسول۔ ان سے پہلے رسول گزر چکے ہیں۔ کیا اگر وہ مر جائیں یا شہید ہو جائیں تو تم دین سے برگشتہ ہو جاؤ گے؟ جو شخص برگشتہ ہو جائے گا وہ اللہ تعالیٰ کو کچھ نقصان نہ پہنچا سکے گا اور اللہ عنقریب شکر گزاروں کو جزا دے گا۔"

اس آیتِ پاک کو سن کر تمام مسلمان چونک پڑے۔ حضرت عبداللہ فرماتے ہیں کہ "خدا کی قسم ہم لوگوں کو ایسا معلوم ہوا کہ یہ آیت اس سے پہلے نازل ہی نہیں ہوئی تھی۔" حضرت عمرؓ فرماتے ہیں: "حضرت ابو بکرؓ سے یہ آیت سن کر میرے پاؤں ٹوٹ گئے اور کھڑے رہنے کی قوت باقی نہیں رہی۔ میں زمین پر گر پڑا اور مجھ کو یقین ہو گیا کہ واقعی حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم رحلت فرما گئے ہیں۔"

حضرت فاطمہؓ غم سے نڈھال تھیں اور فرما رہی تھیں۔

"پیارے باپ نے دعوتِ حق کو قبول کیا اور فردوسِ بریں میں نزول فرمایا۔"

آہ! وہ کون ہے جو جبریلِ امینؑ کو اس عالمِ غم کی اطلاع کر دے۔ الٰہی! فاطمہ کی روح کو محمد مصطفیٰؐ کی روح کے پاس پہنچا دے۔ الٰہی مجھے دیدارِ رسولؐ کی مسرت عطا فرما دے۔

الٰہی! مجھے اس مصیبت کے ثواب سے بہرہ ور کر دے۔ الٰہی! مجھے رسولِ امینؐ کی شفاعت سے محروم نہ رکھنا۔"



حضرت عائشہ صدیقہؓ کے دل و جان پر غم کی
گھٹائیں چھا گئی تھیں اور زبان اخلاقِ نبویؐ کی ترجمانی
کر رہی تھی:

• حیف، وہ نبی جس نے تونگری پر فقیری کو چن لیا۔
جس نے تونگری کو ٹھکرا دیا اور مسکینی قبول کر لی۔"

"آہ! وہ دین پرور رسولؐ جو اُمتِ عاصی کے
غم میں ایک پوری رات بھی آرام سے نہ سویا!"

• آہ! وہ صاحبِ خلقِ عظیم جو ہمیشہ آٹھوں پہر
نفس سے جنگ آزما رہا۔"

• آہ! وہ اللہ کا پیغمبرؐ، جس نے ممنوعات کو
کبھی آنکھ اُٹھا کر بھی نہ دیکھا۔"

• آہ! وہ رحمۃ للعالمینؐ جس کا بابِ فیض فقیروں
اور حاجتمندوں کے لیے ہر وقت کھلا رہتا تھا۔
جس کا رحیم دل اور پاک ضمیر کبھی دشمنوں کی ایذا رسانی
سے غبار آلود نہ ہوا۔"

• جس کے موتی جیسے دانت توڑے گئے اور
اس نے پھر بھی صبر کیا۔"

• جس کی پیشانیِ انور کو زخمی کیا گیا اور اس نے
پھر بھی دامنِ عفو ہاتھ سے نہ جانے دیا۔"

" آہ! کہ آج اسی وجودِ مسعود سے ہماری
دنیا خالی ہے۔"

تجہیز و تکفین

سہ شنبہ سے تجہیز و تکفین کا کام شروع ہوا۔ فضل بن عباسؓ اور اسامہ بن زیدؓ پردہ تان کر کھڑے ہو گئے۔ انصار نے دروازے پر پہنچ کر آواز دی کہ ہم رسول اللہؐ کی آخری خدمت گزاری میں اپنا حصہ طلب کرنے آئے ہیں۔ حضرت علیؓ نے اوس بن خولی انصاریؓ کو اندر بلایا، وہ پانی کا گھڑا بھر کر لاتے تھے۔ حضرت علیؓ نے جسم مبارک سینے سے لگا رکھا تھا، حضرت عباسؓ اور ان کے صاحبزادے جسم مبارک کی کروٹیں بدلتے تھے اور حضرت اسامہ بن زیدؓ اوپر سے پانی ڈالتے تھے۔ حضرت علیؓ غسل دے رہے تھے اور کہہ رہے تھے:

" میرے مادر پدر قربان! آپ کی وفات سے وہ دولت گم ہوئی ہے جو کسی دوسری موت سے گم نہیں ہوئی۔"

" آج نبوت، اخبارِ غیب اور نزولِ وحی کا سلسلہ کٹ گیا ہے۔ آپ کی وفات تمام انسانوں کے لیے یکساں مصیبت ہے۔"

• اگر آپ صبر کا حکم نہ دیتے اور گریہ وزاری سے منع نہ فرماتے تو ہم دل کھول کر آنسو بہاتے لیکن پھر بھی یہ دکھ لاعلاج ہوتا اور یہ زخم لازوال رہتا۔"

• ہمارا درد بے درماں ہے، ہماری مصیبت بے دوا ہے۔"

• اے حضورؐ! میرے والدین آپ پر قربان جب آپ بارگاہِ الٰہی میں پہنچیں تو ہمارا ذکر فرمائیں اور ہم لوگوں کو فراموش نہ کر دیں۔"

تین سوتی سفید کپڑوں میں کفن دیا گیا۔ چوں کہ وصیت پاک یہ تھی کہ آپ کی قبر ایسی جگہ نہ بنائی جائے کہ اہلِ عقیدت اسے سجدہ گاہ بنالیں۔ اس لیے حضرت صدیق اکبرؓ کی رائے کے مطابق حجرۂ عائشہؓ میں قبر کھودی گئی جہاں آپ نے انتقال فرمایا تھا۔ حضرت طلحہؓ نے لحدی قبر کھودی۔ چوں کہ زمین میں نمی تھی اس واسطے وہ بستر جس میں وفات پائی تھی قبر میں بچھا دیا گیا۔ جب تیاری مکمل ہو گئی تو اہلِ ایمان نماز کے لیے ٹوٹ پڑے۔ چوں کہ جنازہ حجرے کے اندر تھا، اس واسطے باری باری جماعتیں اندر جاتی تھیں اس نماز میں امام کوئی نہیں تھا۔ پہلے کنبے والوں نے جنازہ پڑھا، پھر مہاجرین نے، پھر انصار نے، مردوں نے الگ جنازہ پڑھا، پھر عورتوں نے الگ اور بچوں نے الگ۔ یہ سلسلہ رات اور دن برابر جاری رہا۔ اس لیے تدفین مبارک چہار شنبہ کی شب کو یعنی رحلت پاک سے ۳۲ گھنٹے بعد عمل میں آئی۔ جسم مبارک کو حضرت علیؓ، فضل بن عباسؓ، اسامہ بن زیدؓ اور حضرت عبدالرحمٰن بن عوفؓ نے قبر میں اتارا اور آخر اس علم کے چاند، دین کے سورج اور اتقا کے گلزار کو اہلِ دنیا کی نگاہ سے اوجھل کر دیا گیا۔

اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

متروکات

صاحبِ سیرۃ النبیؐ نے کتنا اچھا لکھا ہے، حضور پاکؐ اپنی زندگی ہی میں اپنے پاس کیا رکھتے تھے جو مرنے کے بعد چھوڑ جاتے۔ پہلے ہی اعلان فرما چکے تھے۔ لانورث ما ترکنا صدقہ۔ ہم نبیوں کا کوئی وارث نہیں ہوتا ہم جو کچھ چھوڑیں وہ صدقہ ہے

عمرو بن حویرثؓ سے روایت ہے کہ حضورؐ نے مرتے وقت کچھ نہ چھوڑا۔ نہ درہم، نہ دینار، نہ غلام نہ لونڈی اور نہ کچھ اور، صرف اپنا سفید خچر، ہتھیار اور کچھ زمین تھی جو عام مسلمانوں پر صدقہ کر گئے۔

آثارِ متبرکہ چند یادگاریں صحابہؓ کے پاس باقی رہیں۔ حضرت طلحہؓ کے پاس موئے مبارک تھے۔ حضرت انس بن مالک کے پاس موئے مبارک کے علاوہ نعلین مبارک اور ایک لکڑی کا ٹوٹا ہوا پیالہ تھا۔ ذوالفقار حضرت علیؓ کے پاس تھی۔ حضرت عائشہؓ کے پاس وہ کپڑے تھے جن میں انتقال فرمایا۔ مہر نبوت اور عصائے مبارک حضرت صدیق اکبرؓ کو تفویض ہوئے ان کے علاوہ سب سے بڑی نعمت اور دولت جو عرشِ عظیم سے بھی زیادہ بیش قیمت تھی، آپ اسی



پوری انسانیت کو عطا فرما گئے یہ نعمتِ عظیم اللہ کی کتاب قرآن ہے۔
وقد ترکت فیکم ما لن تضلوا

بعدہٗ ان اعتصمتم بہ کتاب اللہ۔
[اے لوگو! میں تم میں وہ چیز چھوڑ چلا ہوں اگر

اگر اسے مضبوط پکڑو لوگے، تو کبھی گمراہ نہ ہو گے۔ یہ اللہ کی کتاب قرآن ہے]
("انسانیت موت کے دروازے پر")

نیا اُردو افسانہ

تجزیہ اور مباحث

اُردو دنیا کا کوئی کارنامہ چاہے اُس کا تعلق اُردو کے لسانی مباحث سے ہو، شاعری یا فکشن کی تنقید و تفہیم سے ہو، پروفیسر گوپی چند نارنگ نے جس موضوع کو بھی چھوا ہے اپنی شخصیت کے گہرے نقوش مرتسم کر دیے ہیں۔

اُردو کے افسانوی ادب کی قدر شناسی پروفیسر گوپی چند نارنگ کے نمایاں علمی اوصاف میں سے ایک خاص وصف ہے۔

اِس کتاب میں نارنگ صاحب نے اُردو اکادمی، دہلی کے زیر اہتمام منعقدہ افسانہ ورکشاپ سیمینار میں پڑھے جانے والے افسانے، ان افسانوں کے فنی تجزیے اور ان پر ہونے والے مباحث یک جا کر دیے ہیں۔

افسانہ نگاروں میں ۱۹۷۰ء کے بعد سامنے آنے والے اہم افسانہ نگار اور تجزیہ نگاروں میں افسانوی ادب کے ممتاز نقاد شامل ہیں۔ شرکائے بحث میں بھی اہم شخصیتیں ہیں۔

کتاب کے آغاز میں پروفیسر گوپی چند نارنگ کے خیال انگیز جسوہ۔ تبصرے کے علاوہ، جو اس سیمینار کے ڈائرکٹر تھے، بیگم صالحہ عابد حسین اور شمس الرحمٰن فاروقی کے مضامین ہیں۔

سیمینار کی مکمل روداد بھی جو بابل عباسی نے لکھی ہے، شاملِ کتاب ہے۔

سیمینار پر دنیا بھر کے اخبارات و رسائل نے جو تبصرے کیے ہیں آخر میں ان کے اقتباسات بھی دے دیے گئے ہیں۔ ہمہ صفت افسانوی ادب و تنقید کی ایک اہم دستاویز۔

مرتب : پروفیسر گوپی چند نارنگ
صفحات : ۶۳۱
قیمت : ۹۰ روپے

دِلّی والے

جلد دوم

اُردو اکادمی، دہلی کی طرف سے منعقدہ "دلّی والے" سیمینار میں پڑھے جانے والے خاکوں کا مجموعہ۔ ان شخصیتوں کے قلمی خاکے جنھوں نے دلّی کی ادبی، سیاسی، سماجی و ثقافتی زندگی کے خدوخال سنوارے کہا جاتا ہے کہ جب شاہ جہاں نے شاہ جہاں آباد یعنی دلّی کو بسایا تو اس شہر کی رونق کو چار چاند لگانے کی غرض سے نہ صرف ملک کے کونے کونے سے بلکہ بیرونِ ملک سے بھی تمام شعبہ ہائے زندگی سے تعلق رکھنے والے ہنرمندوں کو بلا کر یہاں آباد کیا۔ حالانکہ یہ سلسلہ شاہ جہاں کے عہد سے بہت پہلے سے جاری تھا اور دلّی عہدِ قدیم سے تہذیب و تمدن کا گہوارہ بنی ہوئی تھی۔

دلّی کی سرزمین میں وہ کشش ہے کہ جو یہاں آیا، یہیں کا ہو رہا۔ اسی سبب سے اس سیمینار میں ایسی شخصیات پر بھی خاکے لکھوائے گئے جو پیدائشی طور پر تو "دلّی والے" نہیں تھے لیکن انھوں نے اپنی زندگی کا بڑا حصہ یہاں گزارا، یہاں کی سماجی زندگی میں قابلِ لحاظ کردار ادا کیا، یہاں کے شب و روز پر اپنی شخصیت کے ایسے نقوش مرتسم کیے جو ان کے بعد بھی ان کی یاد کو تازہ رکھنے والے اور بالآخر یہیں کی مٹی میں سما گئے۔

اچھے خاکے کی تعریف یہ ہے کہ کسی شخصیت کے کچھ اہم یا منفرد پہلو، ایسی خوبی کے ساتھ اُجاگر کیے جائیں کہ قاری شخصیت کو اپنے روبرو محسوس کرے اور اس کے افکار و کردار کی جھلکیاں بھی دیکھنے کو مل جائیں۔

اس کتاب کو ڈاکٹر صلاح الدین نے مرتب کیا ہے کتاب کے شروع میں مبسوط مقدمہ شامل ہے جس میں موضوع سے متعلق اہم نکات پر بحث کی گئی ہے۔

مرتب : ڈاکٹر صلاح الدین
جلد دوم، صفحات : ۵۰۶
قیمت : ۵۶ روپے

اُردو اکادمی، دہلی سے طلب کریں



اولیاء اللہ و اولیاء الشیطان

اصحاب النار و اصحاب الجنۃ

قرآنِ حکیم کے تدبّر و مطالعہ سے معلوم ہوتا ہے حق و باطل، ایمان و کفر، نور و ظلمت، تعلقِ علوی و رشتۂ سفلی اور اعمالِ صالحہ و کاروبارِ مفسدہ مبینہ کے اختلاف کے اعتبار سے دو بالکل متضاد اور باہم دگر مخالف گروہ دنیا میں ہمیشہ سے ہوتے چلے آئے ہیں۔ اور جب کبھی حق و باطل کا معرکہ گرم ہوتا ہے تو انھیں دو جماعتوں کی قطاریں ایک دوسرے کے مقابلے میں صف آرا ہوتی ہیں۔ قرآنِ حکیم نے مختلف ناموں سے ان دونوں جماعتوں کا ذکر کیا ہے اور جابجا ان کے آثار و علائم اور خواص و اعمال کی تشریح کی ہے۔

مثلاً ۲۲ سے زیادہ مقامات میں ایک ایسی جماعت کا ذکر کیا ہے جس نے اپنے دلوں کو حق کے قبول کے لیے مستعد کر لیا ہے۔ اور جو اپنی تمام قوتوں اور تمام جذبوں سے اللہ اور اس کی صداقت کو چاہنے والی اور پیار کرنے والی ہے۔ اور اس لیے اللہ نے بھی اسے اپنا دوست اور ساتھی بنا لیا ہے۔

اس جماعت کو "اولیا اللہ" کے لقب سے پکارا لیا ہے یعنی وہ خدا کے دوست ہیں اور اس کے چاہنے والوں کے گروہ میں داخل ہیں۔ چنانچہ سورۂ بقر میں اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

اَللّٰہُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْ یُخْرِجُھُمْ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ط

[اللہ تعالیٰ مومنوں کا ولی (دوست) ہے وہ انھیں تاریکی سے نکال کر روشنی میں لاتا ہے۔]

آلِ عمران میں کہا:

والله ولی المومنین

[اور اللہ مومنوں کا ولی اور دوست ہے۔]

سورۂ جاثیہ میں متقین کہا:

والله ولی المتقین

[اللہ متّقی انسانوں کا ولی ہے۔]

سورۂ اعراف میں صالحین کہا:

وَھُوَ یَتَوَلَّی الصّٰلِحِیْنَ

[اللہ صالح انسانوں کا دوست ہے۔]

اولیا اللہ کی پہچان

سورۂ جمعہ میں اس گروہ کے لیے ایک آزمائش بتلائی جس میں پڑ کر معلوم ہو جائے گا کہ کون اولیا اللہ میں سے ہے اور کون اولیا الشیطان میں سے؟

قُلْ یٰاَیُّھَا الَّذِیْنَ ھَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّکُمْ اَوْلِیَآءُ لِلّٰہِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ کُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝

[اے پیغمبر! یہودیوں سے کہہ دو کہ اگر تم کو اس بات کا دعویٰ ہے کہ تمام بندوں میں سے صرف تم ہی اللہ کے ولی اور دوست ہو تو اس کی آزمائش یہ ہے کہ خدا کی راہ میں موت کی آرزو کرو۔ اگر تم سچّے ہوگے تو ضرور ایسا ہی کروگے۔]

اس آیت سے ثابت ہوا کہ اللہ کے دوستوں کی سب سے بڑی پہچان یہ ہے کہ جب انھیں جان دینے اور زندگی اور اس کی لذّتوں سے دست بردار ہو جانے کی دعوت دی جاتی ہے۔ تو وہ لبّیک کہتے ہوئے اس طرح دوڑتے ہیں گویا بھوکوں کو غذا کی اور پیاسوں کو پانی کی پکار سنائی دی۔ پر جو جھوٹے ہیں اور اللہ کی ولایت سے محروم، وہ انکار کر دیتے ہیں۔ اور یہ ان کے جھوٹے ہونے کی مہر ہے۔ جو خود انھوں نے اپنے اوپر لگا دی۔

وَلَا یَتَمَنَّوْنَہٗٓ اَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ اَیْدِیْھِمْ وَاللّٰہُ عَلِیْمٌۢ بِالظّٰلِمِیْنَ ط

[اور یہ اللہ اور اس کی صداقت کی دوستی کا جھوٹا دم بھرنے والے کبھی بھی موت کی تمنّا کرنے والے نہیں کیوں کہ انھوں نے ایسے کام کیے جو انھیں موت کے تصوّر سے ڈراتے ہیں اور زندگی کی مہلت کو غنیمت سمجھے ہوئے ہیں۔]

موت کی تمنّا سے مقصود ہرگز یہ نہیں ہے کہ کوئی آدمی موت کو پکارے اور اس کے لیے التجا کرے۔ اللہ کا مقصود اس سے یہ تھا کہ سچّے اور جھوٹے کی پہچان کے لیے ایک کسوٹی دے دے۔ پس فرمایا کہ اگر خدا کے دوست ہو تو موت کی تمنّا کرو یعنی اس کے لیے اور اس کے کلمۂ حق کے لیے ایسے کاموں میں پڑو جن میں جان دینے، اپنا خون بہانے، اپنے جسم کو طرح طرح کی مہلک مشقتوں میں ڈالنے اور زندگی کے عیش و نشاط سے محروم ہونے کی ضرورت ہے۔ اس کے بعد پھر خود ہی فیصلہ کیا کہ یہ کام اولیا اللہ کا ہے۔ اولیا الشیطان کبھی بھی ایسا نہیں کریں گے کیوں کہ یہ موت کے نام سے ڈرتے اور کانپتے ہیں اور زندگی کے عشق میں پاگل ہو گئے ہیں۔



قل ان الموت تفرون منہ فانہ ملاقیکم ثم تردون الی عالم الغیب والشہادۃ فینبئکم بما کنتم تعملون ۵

[ان سے کہہ دو کہ اے نفس پرستو! جس موت سے کہ تم اس قدر بھاگتے ہو وہ کبھی تمھیں چھوڑ نہ دے گی۔ ایک دن ضرور ہی آنے گی۔ پھر تم اسی خدا کی طرف لوٹائے جاؤ گے۔ جو پوشیدہ او ظاہر سب کچھ جانتا ہے۔]

لاخوف علیھم ولاھم یحزنون

سورۂ یونس میں ان کی ایک بہت بڑی علامت یہ بتلائی کہ ان کے لیے خوف اور غم نہ تو دنیا میں ہوتا ہے او نہ آخرت میں۔

الا ان اولیاء اللہ لاخوف علیھم ولاھم یحزنون ۵ الذین آمنوا وکانو یتقون ۵ لھم البشری فی الحیٰوۃ الدنیا وفی الاخرۃ ط لا تبدیل لکلمات اللہ ذالک ھوالفوز العظیم!

[یاد رکھو کہ اولیاء اللہ پر نہ تو کسی طرح کا ڈر او خوف طاری ہوگا۔ اور نہ وہ غمگین ہوں گے۔ یہ وہ لوگ ہیں کہ اللہ پر سچی روحوں کی طرح ایمان لاتے اور اپنے اعمال میں اس کا خوف پیدا کیا پس ان کے لیے دنیا کی زندگی میں بھی خوش خبری ہے اور آخرت میں بھی۔ یہ اللہ کا قانون ہے۔ اور اللہ کے کلمات میں ذرا بھی تبدیلی نہیں ہوتی۔ انسان کے لیے یہی سب سے بڑی کامیابی ہے۔]

دارالسلام

سورۂ انعام میں ان ارباب حق کا ذکر کیا۔ جن کے دلوں کو خدا نے اسلام کے لیے کھول دیا ہے۔

فمن یرد اللہ ان یھدیہ یشرح صدرہ للاسلام

او جو ان لوگوں کے مقابلے میں ہیں جن کے دل فشار کفر و ضلالت سے اس قدر تنگ ہوگئے ہیں کہ اب ان کا انشراح روحانی ہو نہیں سکتا۔

ومن یرد ان یضلہ یجعل صدرہ ضیقا حرجاً

اس کے بعد اول الذکر جماعت کے لیے بشارت دی۔

لھم دارالسلام عند ربھم وھو ولیھم بما کانوا یعملون ۵

[ان کے پروردگار کے پاس ان کے لیے امن اور سلامتی کا گھر ہے اور ان کے نیک عملوں کے صلے میں وہی ان کا ولی ہے۔]

قال اننی من المسلمین

سورۂ حم سجدہ میں ان مومنین کاملین کا حال بیان کیا ہے جنھوں نے پہلے مقام عبودیت و اعتراف ربوبیت حاصل کیا۔ پھر مقام استقامت و ثبات عمل و ایمان تک مرتفع ہوئے۔ ان الذین قالوا ربنا اللہ ثم استقاموا، ان کی نسبت فرمایا کہ تتنزل علیھم الملائکۃ الاتخافوا ولاتحزنوا وابشروا بالجنۃ التی کنتم توعدون۔ یعنی ایسے صاحبان استقامت و کاملین پر نزول ملائکہ ہوتا ہے جو طمانیت سکینت اور بے خوفی اور بے غمی کا مقام ان پر طاری کرتے ہیں۔ جس نعمت جنت کا وعدہ کیا گیا ہے، اس کی انھیں بشارت دیتے ہیں اور کہتے ہیں کہ :

نحن اولیآؤکم فی الحیٰوۃ الدنیا وفی الاخرۃ ولکم فیھا ما تشتھی انفسکم ولکم فیھا ما تدعون ۵ نزلا من غفور رحیم ۵ ومن احسن قولا ممن دعا الی اللہ وعمل صالحا وقال اننی من المسلمین ۵

[ہم تمھارے مددگار ہیں دنیا میں بھی اور آخرت میں بھی۔ اور تمھیں اس حیات بہشتی میں ہر طرح کا اختیار اور حکم بخش دیا گیا ہے۔ جس چیز کو تمھارا جی چاہے تمھارے لیے مہیا کرتا ہے اور جو نعمت اللہ سے مانگو گے تمھیں عطا ہوگی۔ یہ مقام تمھیں خدائے غفور الرحیم کی طرف سے عطا ہوا ہے او ظاہر ہے کہ اس شخص سے بڑھ کر اور کس کی بات ہو سکتی ہے۔ جو اللہ کی طرف لوگوں کو دعوت دے۔ اور اعمال صالح اختیار کرے نیز کہے کہ میں مسلم ہوں۔]

اولیاء الشیطان

لیکن اس جماعت کے مقابلے میں ایک دوسری جماعت ہے جو اپنے خواص و اعمال میں بالکل اس کی ضد اور مخالف واقع ہوتی ہے۔ قرآن کریم اسے "اولیاء الشیطان" سے تعبیر کرتا ہے۔ قرآن کی اصطلاح میں وہ تمام قوتیں جو تعلق الٰہی اور رشتۂ حق و صداقت کے مخالف ہیں۔ شیطانی قوت ہیں اور ان میں ہر قوت اور ہر عمل شیطان لعین کا ایک مظہر خبیث ہے۔ پس جو لوگ حق و عدالت کی راہ روشن سے ہٹ کر اعمال باطلہ کی تاریکی میں گم ہو جاتے ہیں اور اللہ کا رشتہ ان کے ہاتھوں میں نہیں ہے۔ وہ خواہ کسی حال اور کسی شکل میں ہوں لیکن در حقیقت شیطان کے ولی، اس کے پرستار، اس کی نسل کے چاکر ..... اور اس کی بادشاہت کے غلام ہیں۔ یہی وہ شیطان کی ولادت اور پرستش ہے جس کے متعلق نبی آدم سے ربوبیت الٰہیہ نے عہد لیا تھا۔

الم اعھد الیکم یابنی آدم ان لا



تعبدوالشیطن انہ لکم عدو مبین ○ وان اعبدونی ھذا صراط مستقیم ط

[اے اولاد آدم! کیا ہم نے تمھیں تاکید نہیں کر دی تھی کہ شیطان کی پوجا نہ کرنا۔ وہ تمھارا کھلا دشمن ہے۔ اور یہ کہ صرف ہماری ہی بندگی کرنا یہی انسان کے لیے سیدھا راستہ ہے۔]

چنانچہ سورۂ اعراف میں صاف صاف اس کی تصریح کی:

فریقاھدی وفریقاحق علیھم الضلالۃ انھم اتخذوا الشیاطین اولیاء من دون اللہ ویحسبون انھم مھتدون ○

[خدا نے دو فرقوں میں سعادت و شقاوت کو تقسیم کر دیا۔ اس نے ایک جماعت کو ہدایت دی ہے۔ اور ایک فریق ہے کہ گمراہی اس پر چھا گئی ہے۔ یہ وہ لوگ ہیں (یعنی دوسری جماعت کے گمراہ) کہ انھوں نے خدا کو چھوڑ کر شیطانوں کو اپنا ولی بنا لیا ہے۔ اور باایں ہمہ اس زعم باطل میں گرفتار ہیں کہ وہ ہی راہ راست پر چل رہے ہیں۔]

اسی سورت میں اس سے کچھ پہلے ایمان و مومنین کے مقابلے میں "اولیاء الشیطان" کا ذکر کیا ہے:

انا جعلنا الشیاطین اولیاء للذین لایومنون ○

[ہم نے شیطانوں کو ان لوگوں کا ولی یعنی آشنا و ہمدم بنا دیا ہے جو ایمان سے محروم ہیں۔]

معرکۂ قتال و جدال

پس اس آیت سے صاف صاف ہمارا استدلال واضح ہو گیا۔ یعنی دو فرقے ہیں جن میں سے ایک کو خدا نے اولیاء اللہ کے نام سے پکارا اور دوسرے کی نسبت تصریح کی کہ اس نے شیطان کو اپنا ولی بنالیا ہے۔

سورۂ کہف میں شیطان کا ذکر کر کے فرمایا:

افتتخذونہ وذریتہ اولیاء من دونی وھم لکم عدو بئس للظالمین بدلا ○

[کیا تم ہم کو چھوڑ کر شیطان کو اور اس کی نسل کو اپنا ولی بناتے ہو۔ حالانکہ وہ تمھارا دشمن ہے۔ ظالموں کے لیے یہ کیا ہی برا بدلہ ہے کہ وہ خدا کی جگہ نسل شیطانی کے ماتحت آ گئے۔]

پس ایک طرف تو اولیاء اللہ اور دوسری طرف اولیاء الشیطان۔ اولیاء الشیطان کے بھی مثل اولیاء اللہ کے مختلف مدارج و مراتب ہیں۔ آخری مرتبہ درجۂ "کفر" ہے۔ اور اس کا سب سے بڑا افضل و اشقی گروہ "الکافرین" کا ہوتا ہے۔ یہ دونوں جماعتیں ہمیشہ ایک دوسرے کے مقابلے میں صف آرا رہتی ہیں اور باہم معرکۂ جنگ و قتال گرم رہتا ہے۔

الذین آمنوا یقاتلون فی سبیل اللہ والذین کفروا یقاتلون فی سبیل الطاغوت ○

[پس جو لوگ مومن اور اللہ کے ولی ہیں۔ وہ تو اللہ کی راہ میں لڑتے ہیں۔ مگر جن لوگوں نے "کفر" اختیار کیا وہ "طاغوت" کی راہ میں لڑنے کے لیے نکلتے ہیں۔]

طاغوت

"طاغوت" سے مراد بھی قوت ابلیسی و شیطانی اور اس کے مختلف مظاہر ہیں۔ خواہ وہ پتھر کے بت ہوں یا بولنے والے انسان۔ اسی لیے سورۂ بقرۃ کی آیت کریمہ میں اولیاء اللہ کا ذکر کر کے اولیاء الشیطان کی نسبت فرمایا کہ والذین کفروا اولیاءھم الطاغوت۔ جن لوگوں نے حق سے انکار کیا، ان کا دوست اور ولی خدا نہیں ہے۔ طاغوت ہیں۔

حکم قتال

غرض کہ پہلی جماعت اللہ کی راہ میں اپنے تئیں قربان کرنے کے لیے نکلتی ہے۔ اور دوسری جماعت شیطان کی راہ میں جنگ و قتال کرنے کے لیے

فقاتلوا اولیاء الشیطن ان کید الشیطان کان ضعیفا ○

[پس اولیاء الشیطان کو قتل کرو۔ تاکہ دنیا ظلم و فساد سے نجات پائے اور صرف اللہ کے لیے ہو جائے۔ شیطان کے مکر و فریب خواہ کتنے ہی مہیب اور ڈراونے نظر آئیں تاہم یقین کرو کہ اولیاء اللہ کے مقابلے میں بالکل کمزور و ضعیف ہیں۔]

اگر ان تمام آیتوں کو تتبع کیا جائے جن میں ان متضاد اور مخالف دو جماعتوں کے خواص و اعمال کا اور ان کی پہچان کی نشانیوں کا ذکر کیا گیا ہے، تو مضمون اس قدر بڑھ جائے کہ اصل مطلب کی گزارش کی نہیں معلوم کتنی اشاعتوں کے بعد نوبت آئے۔ پس میں نہایت اختصار سے کام لوں گا۔ اور صرف اشارات موجزہ پر اکتفا کروں گا۔

ماوجدنا علیہ اباءنا

ازاں جملہ اس جماعت کا ایک خاصہ یہ ہے کہ جب کبھی اولیاء اللہ اسے برائیوں اور معصیتوں سے روکتے ہیں تو وہ کہتی ہے کہ:

وجدنا علیہ اباءنا۔ واللہ امرنا بھا قل ان اللہ لا یامر بالفحشاء اتقولون علی اللہ مالا تعلمون ○

[ہم نے اپنے باپ دادا کو اسی طریقہ پر پایا اور

اسی کا ہمیں حکم دیا گیا ہے۔ اس کے جواب میں ان کو کہا گیا ہے کہ خدا نے کبھی بھی اپنے بندوں کو برائیوں اور فواحش کا حکم نہیں دیا۔ کیا تم اللہ کی نسبت وہ باتیں کہتے ہو جنھیں نہیں جانتے۔]

خسرانِ عاقبت

اولیاء الشیطان کی ایک بہت بڑی علامت یہ بھی ہے کہ کامیابی و فلاح انھیں نصیب نہ ہوگی۔ وہ عاقبت کا گھاٹا ہی ہمیشہ رہیں گے۔

ومن یتخذ الشیطان ولیا من دون اللہ فقد خسر خسرانا مبینا ۝ یعدھم ویمنیھم ومایعدھم الشیطان الا غرورا ۝

[اور جس شخص نے اللہ کو چھوڑ کر شیطان کو اپنا دوست بنایا تو یقیناً بڑے ہی سخت گھاٹے میں پڑا۔ شیطان اپنے دوستوں اور پجاریوں سے طرح طرح کے وعدے کرتا اور بڑی بڑی امیدیں دلاتا ہے۔ لیکن یاد رکھو کہ شیطان جو کچھ وعدے کرتا ہے۔ ان میں دھوکے اور فریب کے سوا کچھ نہیں۔]

تخویفِ شیطانی

شیطان اپنے ولیوں اور پجاریوں کے ذریعہ اللہ کے ولیوں اور پرستاروں کو ہمیشہ ڈراتا اور دھمکاتا رہتا ہے۔ مگر مومنوں کے لیے کوئی خوف نہیں۔

انما ذالکم الشیطان یخوف اولیاء فلا تخافوھم وخافون ان کنتم مومنین ۝

[بے شک یہ شیطان تھا جس کا قاعدہ ہے کہ اللہ کے دوستوں کو اپنے دوستوں کی جماعت کا ڈراوا دکھلاتا ہے۔ مگر اے مسلمانو! تم اس سے ذرا بھی نہ ڈرنا۔ اگر تم سچے مسلمان ہو تو بس ہماری ہی حکومت کا خوف کرو۔]



یخرجونھم من النور الی الظلمات

ایک بہت بڑا فرق حالت یہ بھی ہے کہ اولیاء اللہ ایسے عہد میں ہوتے ہیں جب کہ حق اور سچائی محدود، مگر باطل اور فساد عام ہوتا ہے۔ اور گمراہی کی تاریکی اس طرح پھیل جاتی ہے کہ کوئی گوشہ بھی پوری طرح روشن و منور نہیں ہوتا۔ ایسی ہی سوسائٹی اور اسی طرح کے گرد و پیش میں وہ پرورش پاتے ہیں۔ اور انہی خیالات کو آنکھیں کھول کر ہر طرف دیکھتے ہیں۔ ان کے سامنے جو کچھ ہوتا ہے۔ وہ بھی یک سر گمراہی ہوتی ہے۔ ان کے کان جو کچھ سنتے ہیں اس میں بھی ضلالت ہی کی صدا اٹھتی ہے۔ اور دماغ و فکر جو کچھ سوچتا ہے۔ اس کا بیان بھی سرتاسر گمراہی و باطل ہی کے واسطے سے میسر آتا ہے۔

لیکن جب کہ وہ اس طرح چاروں طرف کی پھیلی ہوئی اندھیاری میں گھرے ہوتے ہیں تو یکایک خدا کا ہاتھ چمکتا ہے اور انھیں گمراہی سے نکال کر حق و ہدایت کے اجالے میں لے آتا ہے۔ ان کی ہدایت کی مثال بالکل ایسی ہوتی ہے۔ جیسے کوئی معذور آدمی اندھیری رات میں ٹھوکروں سے قریب اور غاروں کے کنارے کھڑا ہوا اور اندھوں کی طرح دیکھنے اور چلنے سے معذور ہو گیا ہو۔ اتنے میں ایک واقف راہ اور باخبر ہاتھ ظاہر ہو کر اس کا ہاتھ تھام لے اور ٹھوکروں سے بچاتے ہوئے اور گڑھوں اور غاروں سے ٹکر دیتے کرتے ہوئے ایک سیدھے اور محفوظ شاہراہ سے منزلِ مقصود تک پہنچا دے۔ یا یوں سمجھنا چاہیے کہ جب کہ گمراہی اور باطل پرستی کی رات آنکھوں کو اندھا اور بصارت کو بے فائدہ کر دیتی ہے تو اس وقت خدا تعالیٰ اپنے دوستوں کے لیے ہدایت کا سورج چمکا دیتا ہے۔ اور ان کے دلوں کا اس کی روشنی کے اخذ و انعکاس کے لیے انشراح کر دیتا ہے۔

لیکن جو لوگ قوائے الٰہیہ کی جگہ قوائے شیطانیہ کو اپنا مولیٰ اور آقا بناتے ہیں اور شیطان کے عاشقوں اور پیار کرنے والوں کے جرگے میں شامل ہو جاتے ہیں۔ سو ان کی حالت ان لوگوں سے بالکل برعکس ہوتی ہے۔ پہلی جماعت تاریکی سے نکل کر روشنی میں آتی ہے۔ پر یہ جماعت روشنی سے نکال کر تاریکی میں ڈالی جاتی ہے۔ پہلی جماعت کی اصلی اور ابتدائی حالت تاریک ہوتی ہے مگر اللہ انھیں سعادت و ہدایت کی نورانیت میں نکال لاتا ہے۔ دوسری جماعت کے لیے ابتدا میں تو ہدایت و سعادت موجود ہوتی ہے۔ لیکن بعد کو شیطان سعادت سے نکال کر شقاوت میں دھکیل دیتا ہے۔

چنانچہ سورۂ بقر کی آیت کریمہ اوپر گزر چکی ہے۔ اس کے لفظوں پر غور کرو:

اللہ ولی الذین امنوا یخرجھم من الظلمت الی النور ط والذین کفروا اولیاء ھم الطاغوت یخرجونھم من النور الی الظلمات ط

[اللہ مومنوں کا دوست اور ولی ہے۔ وہ انھیں تاریکی سے نکال کر روشنی میں لاتا ہے۔ مگر جن لوگوں نے راہ کفر اختیار کی ان کے دوست طاغوت ہیں۔ جو انھیں اللہ کی روشنی سے نکال کر شیطان کی اندھیاری میں ڈالتے ہیں۔]

اولیاء اللہ کی نسبت کہا کہ:

یخرجھم من الظلمات الی النور ط

اور اولیاء الشیطان کے لیے کہا:

یخرجونھم من النور الی الظلمات ط

ویحسبون انھم مھتدون

ایک علامت ان کی یہ بھی ہے کہ وہ ہمیشہ اپنے زعم باطل میں اپنے تئیں حق و ہدایت پر سمجھتے ہیں۔ اس کا انھیں بڑا دعویٰ ہے اور بڑا ہی گھمنڈ۔ حالاں کہ وہ ہدایت سے اس قدر دور ہوتے ہیں۔ جس قدر باوجود اتصال کے روشنی سے تاریکی۔

انھم اتخذوا الشیاطین اولیاء من دون اللہ ویحسبون انھم مھتدون

[انھوں نے اللہ کو چھوڑ کر شیطانی قوتوں کو اپنا دوست بنالیا ہے۔ باایں ہمہ اس زعم باطل میں گرفتار ہیں کہ وہی راہ ہدایت پر ہیں۔]

وحی شیطانی

شیاطین ہمیشہ اپنے اولیا پر وحی کرتے رہتے ہیں۔ تاکہ خدا کے دوستوں سے شیطانی الہامات کے مطابق بحث و جدل کرسکیں۔ اور انھیں اللہ کی بادشاہت سے نکال کر شیطانی حکومتوں میں داخل ہونے کی ترغیب دیں۔

وان الشیاطین لیوحون الی اولیاءھم لیجادلوکم وان اطعتموھم انکم لمشرکون ۵

[اور شیاطین اپنے ولیوں کی طرف وحی کرتے رہتے ہیں۔ تاکہ وہ تمھارے ساتھ شیطانی القا کے بموجب بحث و جدل کریں۔ لیکن اگر تم نے ان کی باتوں کی اطاعت کرلی تو جان رکھو کہ پھر تمھارا شمار بھی مشرکوں میں ہوگا۔]

حزب اللہ و حزب الشیطان

قرآن کریم ان دو جماعتوں کو ایک دوسری اصطلاح سے بھی موسوم کرتا ہے۔ سورۃ مائدہ میں مسلمانوں کو اس نے منع کیا ہے کہ اللہ اور اس کی شریعت کے مقابلے میں یہود و نصاریٰ کو اپنا ولی بنائیں۔ لا تتخذوا الیھود والنصاریٰ اولیاء اس کے بعد فرمایا ہے کہ اگر لوگ اللہ کی دوستی کی راہ چھوڑ کر الگ ہو جائیں تو اسلام کے کاموں کا کچھ بھی نقصان نہ ہوگا۔ خدا ایک دوسری جماعت سچے مومنوں اور اپنے دوستوں کی پیدا کر دے گا۔ جن کی ولایت الٰہی اور محبت ربانی یہاں تک بڑھی ہوگی کہ وہ اللہ کے چاہنے والے ہوں گے اور اللہ ان سے پیار کرے گا۔ یحبھم ویحبونہ۔ پھر کہا کہ:

انما ولیکم اللہ ورسولہ والذین امنوا الذین یقیمون الصلوٰۃ ویؤتون الزکوٰۃ وھم راکعون ۵ ومن یتول اللہ والذین امنوا فان حزب اللہ ھم الغالبون ۵

[مسلمانو! تمھارا دوست اللہ اور اس کا رسول ہے اور وہ مومن جو ایمان لاچکے ہیں۔ جو صلوٰۃ الٰہی کو دنیا میں قائم کرتے ہیں۔ جو خدا کی راہ میں اپنا مال خرچ کرتے ہیں اور جو ہر وقت اللہ اور اس کے حکموں کے آگے جھکے رہتے ہیں۔ پس جو شخص اللہ اور اس کے رسول اور مومنوں کا دوست و ولی ہو کر رہے گا، وہ حزب اللہ میں سے ہے۔ اور یقین کرو کہ حزب اللہ ہی کے لوگ غالب ہونے والے ہیں۔]

اس آیت کریمہ سے معلوم ہوا کہ جو لوگ اللہ کے ولی اور اس کے دوست ہیں۔ ان کا ایک نام لسان اللہ الحکیم میں "حزب اللہ" بھی ہے۔ حزب کہتے ہیں گروہ اور جماعت کو۔ حزب اللہ سے مقصود وہ لوگ ہوئے جو اللہ کی جماعت ہیں۔

چنانچہ سورۂ حشر میں فرمایا۔ کہ جو لوگ اللہ کی محبت کی راہ میں دنیا کے تمام رشتوں کی کچھ پروا نہ کریں۔ حتیٰ کہ ماں باپ اور عزیز و اقربا کی محبت اور دامن گیری کو بھی ہیچ سمجھیں۔ اور خدا کی پکار جب ان کے کانوں میں پڑ جائے تو سب کو چھوڑ چھاڑ کر اسی کی طرف دوڑ جائیں تو ایسے لوگ "حزب اللہ" ہیں۔

اولٰئک حزب اللہ الا ان حزب اللہ ھم المفلحون ۵

[یہی لوگ حزب اللہ ہیں۔ سن رکھو، کہ یقیناً حزب اللہ ہی کے افراد فلاح پانے والے ہیں۔]

جس طرح اولیاء اللہ کا ایک نام یا ایک درجہ "حزب اللہ" ہے۔ اسی طرح "اولیاء الشیطان" کا بھی دوسرا نام "حزب الشیطان" ہے۔

استحوذ علیھم الشیطان فانساھم ذکر اللہ ط اولٰئک حزب الشیطان الا ان حزب الشیطان ھم الخاسرون ۵

[شیطان اور اس کی قوتیں ان پر مسلط ہوگئی ہیں۔ پس انھوں نے خدا کے ذکر اور رشتے کو فراموش کر دیا ہے۔ یہی لوگ "حزب الشیطان" ہیں اور جان رکھو کہ حزب الشیطان کے لیے آخر کار نقصان اور خسران ہی ہے۔]

اصحاب النار و اصحاب الجنۃ

اور یہی وہ دو جماعتیں ہیں جن کو صدہا مقامات میں "اصحاب النار و اصحاب الجنۃ" کے لقب سے بھی یاد کیا گیا ہے۔ اور ان کے اعمال و خواص کی جا بجا توضیح کی گئی ہے۔ چنانچہ سورۂ بقر کی آیت کو ایک بار اور پڑھو اور اس کے بقیہ ٹکڑے کے الفاظ پر غور کرو:

والذین کفروا اولیاءھم الطاغوت یخرجونھم من النور الی الظلمات ط اولٰئک اصحاب النار ھم فیھا خالدون ۵

[اور جن لوگوں نے راہِ کفر اختیار کی ہوں ان کے



اولیاء طاغوت ہیں۔ جو انھیں نور و ہدایت سے نکال کر ظلمات و ضلالت میں مبتلا کرتے ہیں۔ یہ لوگ اصحاب النار ہیں۔ اور ہمیشہ دوزخی عذابوں میں رہیں گے۔]

اس آیت کریمہ سے معلوم ہوا کہ جن لوگوں کے اولیاء و سردار "طاغوت" ہوں۔ (طاغوت سے مراد بھی شیطان اور اس کے خلفاء اور مظاہر ہی ہیں) تو ایسے لوگ "اصحاب النار" ہیں۔ کیوں کہ ان کی زندگی ہمیشہ آگ میں جلتے رہنے کی اور سوختنی ہوگی۔ روح کی راحت اور دل کا سکھ انھیں نصیب نہ ہوگا۔ اس سے پہلے ایک آیت گزر چکی ہے۔ جس میں اولیاء اللہ کی نسبت فرمایا کہ تتنزل علیہم الملآئکتہ الا تخافوا ولا تحزنوا وابشروا بالجنتہ التی کنتم توعدون

اس آیت کریمہ میں خاص طور پر اولیاء اللہ کو جنّت کی بشارت دی گئی ہے۔ پس فی الحقیقت وہی اصحاب الجنت بھی ہیں۔ کیونکہ ان کی حیات دنیوی اور دینی، جسمی و روحی، ظاہری و معنوی، ہر حال اور عہد و دور میں کامیابیوں، فتح مندیوں، آرام و راحت، نعائم و لذائذ اور عیش و نشاط کی زندگی ہوگی۔

اعمال و خصائص

سورۂ یونس میں اصحاب الجنتہ اور اصحاب النار کی تعریف پوری وضاحت کے ساتھ بتلادی ہے۔ اور یہ بھی واضح کر دیا ہے کہ دونوں جماعتوں کے اعمال کیسے ہوتے ہیں۔ اور کن نتائج کی بناء پر ایک کو جنّت والوں کی اور ایک کو نار والوں کی زندگی ملتی ہے۔

الذین احسنوا الحسنیٰ و زیادۃ ولا یرھق وجوھھم قتر ولا ذلتہ اولٓئک اصحاب الجنتہ ھم فیھا خلدون ○

[اور جن لوگوں نے دنیا میں اچھے اور بھلائی کے کام کیے انھیں نیک کاموں کے بدلے میں ویسی ہی بھلائی اور فلاح ملے گی۔ ان کو کبھی بھی ناکامی کا غم۔ شکست کی رسوائی اور نامرادی و تذلل کی ذلت پیش نہ آئے گی۔ یہی لوگ اصحاب الجنتہ ہیں جو ہمیشہ بہشتی زندگی بسر کریں گے۔]

اس کے بعد دوسرے گروہ کی حالت بتائی:

والذین کسبوا السیّئات جزآء سیّئتہ بمثلھا وترھقھم ذلتہ۔ مالھم من اللہ من عاصم کانما اغشیت وجوھھم قطعا من الیل مظلما اولٓئک اصحب النار ھم فیھا خلدون ○

[اور جن لوگوں نے دنیا کے کاموں میں برائی حاصل کی اور بدی کا راستہ اختیار کیا۔ تو یہ ظاہر ہے کہ فطرتِ الٰہی برائی کا بدلہ ویسی ہی برائی سے دے گی۔ ذلّت اور نامرادی سے ان کے چہرے ایسے کالے پڑ جائیں گے گویا رات کی چادرِ ظلمت کا ایک ٹکڑا پھاڑ کر ان کے چہروں پر ڈال دیا گیا ہے۔ اللہ کے اس عذاب سے انھیں کوئی نہیں بچا سکتا۔ یہی لوگ اصحاب النار ہیں۔ جن کے لیے ہمیشہ دوزخی زندگی ہوگی۔]

ان آیتوں کی اگر اپنے مذاق کے مطابق تفسیر کروں تو ایک مستقل کتاب ہو جائے۔ اسلامی تعلیم کی حقیقت اور قرآن حکیم کے اصول و دروس حقائق و معارف کا ایک بحرِ ذخّار ہے۔ جو ان دو چار جملوں کے اندر بند کر دیا گیا ہے۔ ختامہ مسک و فی ذٰلک فلیتنافس المتنافسون ۵

ثواب و عذاب کی حقیقت، نتائج افعال اور مکافاتِ عمل کے فطری اور طبیعی اصول کی تشریح۔ مذہب و اخلاق کی اساسات اصلیہ اور امتیازات عملیہ قانون تعالیٰ و تسفل بشری کے مبادی حقائق، اصحابِ جنت و اربابِ نار کی قدرتی تقسیم فطرت کا قانون عمل بالمثال اور انسان کے لیے راہ سعادت و ہدایت کی کلی اور اصولی تعلیم غرضیکہ شریعت و اخلاق اور حکمت و تعلیم کی کوئی اصولی بحث ایسی نہیں ہے جو ان دو آیتوں پر متفرع نہ ہوتی ہو اور ان کی طرف ایک ایک واضح اور بیّن اشارہ ان میں نہ کر دیا گیا ہو تاوقتیکہ تفسیر القرآن کی تحریر و توزیع کا مستقل انتظام نہ ہو ضمنی طور پر یہ چیزیں بیان میں نہیں آسکتیں۔

مندرجہ بالا آیات کے درج کرنے سے مقصود یہ تھا کہ "اصحاب الجنّتہ" اور "اصحاب النّار" کی کھلی کھلی تقسیم کر کے ان کے کاموں اور کاموں کے نتائج کو صاف صاف بتلا دیا ہے۔ بس یہ دو آیتیں میری بحث و استدلال کی اصل و اساس ہیں۔ ان سے واضح ہو گیا کہ دونوں گروہ بالمقابل اور بالضد واقع ہوتے ہیں۔ ایک کے لیے کامیابی، فتح و مراد اور فوز و فلاح ہے۔ اور ذلت و رسوائی سے ہمیشہ محفوظ ہے۔ دوسرے کے لیے شرمندگی، خجالت، ناکامی اور ہمیشہ آگ میں سوکھی لکڑی اور خشک پتّوں کی طرح جلنے کا عذاب الیم ہے۔

دونوں جماعتوں کی سب سے بڑی پہچان یہ ہے کہ "اصحاب الجنّتہ" ہمیشہ کامیاب و فتح مند ہوں گے اور "اصحاب النّار" کے حصّے میں ہمیشہ عاقبت کار اور انجام امور کا خسران و نقصان آئے گا۔

لا یستوی اصحاب النّار و اصحاب الجنّتہ ط اصحاب الجنتہ ھم الفائزون ○

[اصحاب الجنتہ اور اصحاب النّار اپنے کاموں اور ان کے نتیجوں میں ایک طرح نہیں ہو سکتے۔ اصحاب الجنتہ ہی کامیاب ہونے والے ہیں۔]

موقع تفصیل کا نہیں۔ تقریباً ۸۰ مقامات پر اصحاب النار اور اصحاب الجنتہ کے اعمال و علائم اور آثار و نتائج بہ تفصیل بیان کیے گئے ہیں۔ پھر ان جماعتوں کے بھی



مختلف مدارج ہیں۔ اور اسی بنا پر اصحاب النّار کو "اصحاب الجحیم" اور "اصحاب السعیر" بھی کہا گیا ہے۔ میں بحث کو طول نہ دوں گا۔

تمام آیتوں کے جمع کرنے سے ثابت ہوتا ہے وہ نفوس مومنہ وصالحہ جو اعتقادِ حق اور عملِ صالح کے ساتھ متصف ہیں اور جنھوں نے اللہ کے رشتے اور تعلق کے آگے تمام باطل اور خبیث قوتوں کے رشتوں کو توڑ ڈالا ہے اور اس کی بخشی ہوئی قوتوں کو اسی کے بتلائے ہوئے صالح اور صحیح کاموں میں خرچ کرتے ہیں، سو ایسے تمام لوگ اصحاب الجنّۃ میں داخل ہیں۔ ھم فیھا خلدون ○ ہمیشہ ہر طرح کی کامیابیاں اور خوبیاں انھی کے لیے ہیں۔ لیکن جو لوگ اعتقادِ حق اور عملِ صالح سے محروم ہیں۔ اور اللہ کے تاج وتختِ قدوس سے باغی ہوگئے ہیں۔ خواہ کسی بھیس اور کسی ہی روپ میں ہوں لیکن وہ سب کے سب اصحاب النّار میں داخل ہیں۔ ان کے تمام کاموں کے لیے آگ کی تپش اور سوختنی کے سوا اور کچھ نہیں ہے۔ جنگل کی سوکھی لکڑی اور درختوں کے خشک پتّے جس طرح بھڑکتے ہوئے شعلوں میں جلتے ہیں۔ ٹھیک ٹھیک اسی طرح وہ بھی جلیں گے۔

(الہلال)

○

اشاریہ آجکل (جلد اوّل)

"آجکل" اردو کا ایک اہم ادبی ماہنامہ ہے۔ یہ ۱۹۴۲ء میں جاری ہوا اور ۱۹۴۷ء کے تین مہینے چھوڑ کر اب تک باقاعدگی سے شائع ہو رہا ہے۔ اس کے ایڈیٹروں میں جوش ملیح آبادی، سید وقار عظیم، عرش ملسیانی، بشیشور پرشاد منور، مہندر سنگھ بیدی، باسط سکنی اور راج نرائن راز جیسے شاعر اور ادیب رہے ہیں اور نائب مدیروں میں طالب دہلوی، شان الحق حقی، معین احسن جذبی، فضل حق قریشی اور بلونت سنگھ کے نام شامل ہیں۔

یہ اسی اہم رسالے کا اشاریہ ہے۔ اشاریوں کی عدم موجودگی تحقیق کے راستے کی سب سے بڑی رکاوٹ ہے۔ اگر کوئی ریسرچ اسکالر معلوم کرنا چاہے کہ کسی ادبی جریدے میں اس کے موضوع سے متعلق کیا مواد موجود ہے تو اسے اس رسالے کا پورا فائل تلاش کرنا پڑے گا اور ممکن ہے کہ اس تمام محنت وکاوش کے بعد ایک آدھ مقالہ ہی اس کے ہاتھ لگے۔ ہزاروں اہم علمی ادبی تحقیقی تنقیدی مضامین اور اعلیٰ درجے کے تخلیقی ادب کا بڑا حصہ ادبی رسالوں میں مدفون ہے۔ اس سرمایے تک ہماری رسائی اس لیے مشکل ہے کہ ان رسالوں کے اشاریے تیار نہیں ہوئے اور آج کی مصروف زندگی میں ہمارے پاس اتنا وقت نہیں ہے کہ ہزاروں صفحات کی ورق گردانی کرسکیں۔ ماہنامہ "آجکل" کی حد تک یہ مشکل اردو اکادمی نے یہ کتاب شائع کرکے آسان کردی ہے۔ یہ "آجکل" کی ۴۶ سال کی فائلوں کا اشاریہ ہے۔ اسے دو حصوں میں تقسیم کیا گیا ہے۔ ایک حصہ ادبی مضامین سے متعلق ہے اور دوسرا ادب کے علاوہ دیگر مضامین سے۔

یہ کتاب ریسرچ اسکالروں کے لیے ایک ایسا قیمتی تحفہ ہے جس کی اہمیت اور افادیت وقت گزرنے کے ساتھ ساتھ کم ہونے کی بجائے بڑھتی جائے گی۔

مرتب : جمیل اختر
صفحات : ۶۸۳
قیمت : ۷۷ روپے

حواشیِ ابوالکلام آزاد

جو لوگ مولانا ابوالکلام آزاد کے نام سے واقف ہیں وہ یہ بھی جانتے ہیں کہ مولانا کو اوائل عمر ہی سے پڑھنے لکھنے کا بہت شوق تھا۔ عمر کا جو حصہ بچے کھیل کود میں گزارتے ہیں مولانا نے کتابوں کے مطالعے میں صرف کیا اور ان کا یہ ذوق آخر عمر تک ان کے ساتھ رہا۔ مولانا نے کسی مدرسے میں تعلیم نہیں پائی لیکن گھر پر ہی پڑھا اور پھر انھیں ایسے مواقع ملے کہ اردو، فارسی اور عربی کے علاوہ انھوں نے انگریزی اور فرانسیسی سے بھی واقفیت حاصل کی اور ان زبانوں میں قدیم و جدید علم کا جو سرمایہ تھا اسے اپنی شخصیت میں سمو لیا۔

یہ کتاب ان حواشی کا مجموعہ ہے جو مولانا ابوالکلام آزاد نے دورانِ مطالعہ مختلف کتابوں پر لکھے ہیں۔ یہ کتابیں مختلف زبانوں کی ہیں اور مختلف علوم سے تعلق رکھتی ہیں۔ مولانا نے، جب وہ حکومتِ ہند کے وزیرِ تعلیمات تھے، انڈین کونسل فار کلچرل ریلیشنز کے نام سے ایک ادارہ قائم کیا تھا اور اپنا ذاتی کتب خانہ جو ہزاروں کتابوں پر مشتمل تھا، اس ادارے کو دے کر ایک لائبریری قائم کر دی تھی۔ سید مسیح الحسن صاحب نے، جو برسوں تک اس لائبریری میں کام کرتے رہے ہیں، ان تمام کتابوں کو بنظر غائر دیکھا ہے اور ان پر مولانا کے قلم سے جو حواشی درج ہیں وہ اس کتاب میں یکجا کر دیے ہیں۔ ایک اور اہم کام انھوں نے یہ کیا ہے کہ جن کتابوں پر یہ حواشی درج تھے ان کے بارے میں بھی تمام ضروری معلومات فراہم کر دی ہیں۔

مصنف : مولانا ابوالکلام آزاد
مرتب : سید مسیح الحسن
صفحات : ۵۰۹
قیمت : ۶۲ روپے

اُردو اکادمی دہلی، سے طلب کریں

اُردو اکادمی دہلی کے اغراض و مقاصد

(۱) دہلی کی سابق ریاست کے مشترکہ تہذیبی ورثے کے طور پر اردو زبان و ادب کا تحفظ اور ارتقا

(۲) اردو میں ادبی و معیاری تصنیفات اور تحقیقی کتابوں کی اشاعت اور حوصلہ افزائی

(۳) [illegible]

(۴) اردو میں حوالہ جاتی کتابوں کی تالیف و اشاعت۔

(۵) قدیم ادب کی تصحیح، ترتیب، تدوین اور اشاعت

(۶) اردو کے غیر مطبوعہ معیاری ادب کی اشاعت

(۷) اردو کے مستحق مصنفین کی غیر مطبوعہ تصنیفات کی اشاعت میں تعاون

(۸) [illegible] مصنفوں کو انعامات کی تقسیم۔

(۹) [illegible]

(۱۰) [illegible]

(۱۱) [illegible] دعوت دینا۔

(۱۲) [illegible]

(۱۳) [illegible]

(۱۴) [illegible]

(۵) [illegible]

(۲) [illegible]

(۳) [illegible]

(۴) [illegible]



اداریہ

"انڈیا وِنز فریڈم" کے ان تیس۳۰ صفحات کا تعارف و تجزیہ
جو حال ہی میں منظرِ عام پر آئے ہیں

اور

مولانا آزاد کی رفیقۂ حیات زلیخا بیگم کی نوٹ بک کے چند اوراق



۳۰ سال بعد

۲۲-۲-۵۸ — ۲۲-۲-۸۸

مولانا ابوالکلام آزاد کے انتقال کے سات ماہ بعد ستمبر ۱۹۵۹ء میں انڈیا ونس فریڈم کا مسودہ اورینٹ لانگ مین اشاعت ناشرین کے حوالے کرتے ہوئے پروفیسر ہمایوں کبیر (مرحوم) نے ناشرین کو مطلع کیا تھا کہ مکمل کتاب کا مسودہ جس میں تیس صفحات کا مزید مواد شامل ہوگا مولانا آزاد کی تیسویں برسی کے موقعے پر ۲۲ فروری ۱۹۸۸ء کو اشاعت کے لیے دیا جائے گا۔

لیکن ان تیس صفحات کے مواد کی اشاعت ملتوی کرنے کا سبب یہ بیان کیا جاتا ہے کہ مولانا آزاد کچھ افراد اور واقعات پر اپنے خیالات کی اشاعت اس وقت نہیں کرنا چاہتے تھے۔ عام طور پر یہ خیال تھا کہ یہ تیس صفحات کتاب کے ایک علیحدہ باب کی حیثیت رکھتے ہوں گے لیکن حال ہی میں مکمل کتاب کی اشاعت کے بعد یہ معلوم ہوا کہ ان تیس صفحات کو علیحدہ باب کی حیثیت حاصل نہیں ہے بلکہ ان کا تعلق مختلف شخصیات اور واقعات سے ہے اور یہ صفحات پوری کتاب میں بکھرے ہوئے ہیں۔ ان تیس صفحات کا خلاصہ کچھ اس طرح ہے۔

مولانا آزاد کا خیال ہے کہ ڈاکٹر سید محمود کو بہار کا پہلا کانگریسی وزیر اعلیٰ نہ بنا کر ان کے ساتھ ناانصافی کی گئی۔ دوسری جانب احمد نگر جیل سے رہائی حاصل کرنے کے سلسلے میں ڈاکٹر سید محمود کے اقدام پر مولانا آزاد نے ناپسندیدگی کا اظہار کیا ہے۔ انھوں نے ڈاکٹر سید محمود کے رہائی حاصل کرنے کے بعد کے اقدامات کو بھی ناپسندیدہ قرار دیا ہے۔

مولانا آزاد کا خیال ہے کہ سردار پٹیل نے جو کردار ادا کیا وہ ہمیشہ کانگریس کے اصولوں کے مطابق نہیں تھا۔

مولانا آزاد نہ صرف یہ کہ کرشنا مینن کو پسند نہیں کرتے تھے بلکہ انھیں حقارت کی نظر سے بھی دیکھتے تھے۔ ان کے خیال میں مسٹر مینن ناقابل اعتماد آدمی تھے۔ اور جب ۱۹۴۴ء میں جواہر لال نہرو نے مسٹر مینن کو اپنی کابینہ میں شامل کرنا چاہا تھا اس وقت مولانا آزاد نے اپنا استعفیٰ دے دیا تھا۔

مولانا آزاد کے خیال میں جواہر لال نہرو سے کچھ غلطیاں سرزد ہوئیں جو اگر نہ ہوتیں تو ملک تقسیم نہ ہوتا۔

مولانا آزاد رقمطراز ہیں کہ صوبائی مختاری کے اعلان کے بعد ہونے والے پہلے الیکشن میں کانگریس نے زبردست کامیابی حاصل کی پانچ بڑے صوبوں میں اسے مکمل اکثریت حاصل ہوئی اور چار صوبوں میں وہ سب سے بڑی پارٹی کی حیثیت میں ابھری صرف پنجاب اور سندھ میں کانگریس کو مطلوبہ کامیابی نہ مل سکی۔ مگر حکومت میں شرکت کے سوال پر شدید اختلاف رائے پیدا ہو گیا۔ دریں اثنا تمام صوبوں میں غیر کانگریسی اور چند صوبوں میں کانگریس مخالف عناصر کی عبوری وزارتیں عالم وجود میں آگئیں اور اس طرح رجعت پسند طاقتوں کو دوبارہ اپنے پاؤں مضبوط کرنے کا موقع مل گیا۔ کانگریس کے ذریعے صوبوں میں حکومت نہ بنانے کی خاص وجہ یہ دلیل تھی کہ چوں کہ مخصوص اختیارات گورنر کو حاصل ہوں گے اس لیے صوبائی خود مختاری محض ایک ڈھکوسلہ ہوگی۔ کافی بحث و مباحثہ اور غور و خوض کے بعد بالآخر کانگریس نے حکومت بنانے کا فیصلہ کر لیا اور پہلے اس نے ان صوبوں میں حکومت بنائی جہاں اسے پارلیمانی اکثریت حاصل تھی۔ پھر ان صوبوں میں حکومت بنائی جہاں اسے لیجسلیچر میں سب سے بڑی واحد پارٹی کی حیثیت حاصل تھی۔ اور آخر میں ان صوبوں میں حکومت بنائی جہاں وہ بنا سکتی تھی۔ یہ پہلا موقع تھا کہ کانگریس نظم و نسق کی ذمہ داری سنبھال رہی تھی۔ اس لیے یہ کانگریس کا امتحان تھا اور لوگ یہ جاننا چاہتے تھے کہ کانگریس اپنے قومی کردار پر کس طرح پوری اترے گی۔ کانگریس کے خلاف مسلم لیگ کا پروپیگنڈہ یہ تھا کہ وہ صرف نام کی "نیشنل" ہے لیگ نے کانگریس کی اس عمومی تضحیک ہی پر اکتفا نہیں کی بلکہ یہ تاثر قائم کیا کہ کانگریسی وزارتیں اقلیتوں پر مظالم ڈھا رہی ہیں۔ اس نے ایک کمیٹی قائم کی جس نے ایک رپورٹ پیش کی اس میں مسلمانوں اور دوسری اقلیتوں سے کانگریس کے غیر منصفانہ سلوک کے سلسلے میں ہر طرح کے الزامات لگائے گئے تھے۔ یہ الزامات بالکل بے بنیاد تھے۔ وائسرائے اور مختلف

پروانہ ردولوی

۱۴۵ حوض رانی، مالویہ نگر، نئی دہلی۔ ۱۱۰۰۱۷



صوبوں کے گورنر بھی یہی سمجھتے تھے۔ اور مسلم لیگ کی رپورٹ نے سمجھدار لوگوں کو بالکل متاثر نہیں کیا۔

مسلم لیگ نے اقلیتوں پر مظالم کی جو کہانیاں پھیلائی تھیں وہ قطعی طور پر من گھڑنت تھیں۔ مگر اس وقت دو باتیں ایسی ہوئیں جن سے صوبائی کانگریس کمیٹیوں کے رویّے کے سلسلے میں بُرے تاثرات پیدا ہوگئے۔ مولانا آزاد افسوس کے ساتھ یہ اعتراف کرتے ہیں کہ بہار اور بمبئی دونوں صوبوں میں کانگریس اپنی قوم پرستی کے امتحان میں پوری طرح کامیاب نہیں ہوئی۔ کانگریس نے ایک قومی تنظیم کے طور پر فروغ حاصل کیا تھا اور اس نے مختلف فرقوں کے لوگوں کو قیادت کے مواقع فراہم کیے تھے۔ لہٰذا بمبئی میں مسٹر نریمان مقامی کانگریس کے مسلّمہ قائد تھے۔ جب صوبائی حکومت کی تشکیل کا سوال سامنے آیا تو عام خیال یہ تھا کہ ان کے ریکارڈ اور مرتبے کے مطابق ان ہی سے قیادت کرنے کو کہا جائے گا مگر اس کا مطلب یہ ہوتا کہ ایک پارسی چیف منسٹر ہوگا جب کہ کانگریس اسمبلی پارٹی میں اکثریت ہندو ممبروں کی تھی۔ سردار پٹیل اور ان کے ساتھی اس صورتِ حال سے اتفاق نہ کر سکے۔ ان کا خیال تھا کہ اس اعزاز سے کانگریس کے ہندو حلیفوں کو محروم کرنا غیر منصفانہ اقدام ہوگا۔ لہٰذا مسٹر بی۔ جی۔ کھیر کو آگے لایا گیا اور بمبئی میں انھیں کانگریس اسمبلی پارٹی کا لیڈر منتخب کر لیا گیا۔ جواہر لال جانتے تھے کہ لوگ ان کو سردار پٹیل کا نکتہ چیں اور مخالف سمجھتے ہیں۔ انھوں نے ایسی کوئی بات کرنا مناسب نہ سمجھی جس کے نتیجے میں سردار پٹیل کے دوستوں کو ان کی نکتہ چینی کا موقع ملتا۔ لہٰذا انھوں نے سردار پٹیل کی ہمنوائی کی اور نریمان کی اپیل مسترد کر دی۔ مولانا کا خیال ہے کہ وہ غالباً یہ ثابت کرنا چاہتے تھے کہ وہ اپنے عہدے کے دوران سردار پٹیل پر الزام تراشی کی اجازت نہ دیں گے۔

ایسی ہی بات بہار میں بھی ہوئی۔ انتخابات کے وقت ڈاکٹر سیّد محمود صوبے کے اعلیٰ ترین قائد تھے۔ وہ آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے جنرل سکریٹری بھی تھے۔ لہٰذا صوبے کے اندر اور باہر بھی ان کی ایک پوزیشن تھی۔ جب کانگریس نے مکمل اکثریت حاصل کر لی تو یہ بات طے شدہ سمجھی گئی کہ ڈاکٹر سیّد محمود کو لیڈر چنا جائے گا۔ اور صوبائی خودمختاری کے تحت وہ بہار کے چیف منسٹر ہوں گے لیکن ان کے بجائے شری کرشن سنہا اور انوگرہ نرائن سنہا کو جو سینٹرل اسمبلی کے ممبر تھے بہار واپس لایا گیا۔ اور انھیں چیف منسٹر بنانے کی تیاریاں کی جانے لگیں۔ ڈاکٹر راجندر پرساد نے بہار میں وہی کردار ادا کیا جو بمبئی میں سردار پٹیل نے ادا کیا تھا۔ بہار اور بمبئی میں صرف یہ فرق تھا کہ جب شری کرشن سنہا نے وزارت بنائی تو ڈاکٹر سیّد محمود کو بھی کابینہ میں شامل کیا گیا۔ ان دو واقعات نے اس وقت بڑی بدمزگی پیدا کی۔ مولانا کہتے ہیں: "ان واقعات پر غور کرنے کے بعد میں یہ محسوس کیے بغیر نہیں رہ سکتا کہ کانگریس نے اپنے نظریات پر عمل نہیں کیا جن کا وہ اعلان کرتی تھی۔ افسوس کے ساتھ اس بات کا اعتراف کرنا پڑے گا کہ اس وقت تک کانگریس کی قوم پرستی اس مرحلے پر نہیں پہنچی تھی جہاں وہ فرقہ وارانہ تصورات سے گریز کر کے لیڈروں کا انتخاب اکثریت اور اقلیت کی تفریق کے بغیر استحقاق کی بنیاد پر کرتی۔"

احمد نگر جیل سے ڈاکٹر سیّد محمود کی رہائی کے سلسلے میں مولانا آزاد رقمطراز ہیں کہ جب ڈاکٹر سیّد محمود (رہائی حاصل کرنے کے بعد) پٹنہ پہنچے تو اخبار نویسوں نے ان سے بات چیت کی۔ انھوں نے کہا کہ وہ نہیں جانتے کہ انھیں کیوں رہا کیا گیا ہے۔ ان کے اس بیان کا انتہائی غیر متوقع نتیجہ برآمد ہوا۔ حکومت نے ڈاکٹر سیّد محمود کے بیان کی تردید کرنے کا فیصلہ کر لیا اور اخباروں کو وہ خط جاری کر دیا جو ڈاکٹر سیّد محمود نے احمد نگر سے وائسرائے کو بھیجا تھا۔ حکومت کی جانب سے وضاحت کی گئی کہ اس خط کی بنیاد پر ڈاکٹر محمود کو رہا کیا گیا ہے۔ مولانا لکھتے ہیں: "جب ہم نے احمد نگر جیل میں یہ خط پڑھا تو ہمیں غصّہ بھی آیا اور رسوائی بھی محسوس ہوئی۔ ہم کبھی یقین نہ کر سکتے تھے کہ ڈاکٹر محمود اس طرح کا خط لکھ سکتے تھے اور ہمیں اس بات سے بے خبر رکھ سکتے تھے کہ وہ حکومت سے خط و کتابت کر رہے ہیں۔ یہ درست ہے کہ انھوں نے انگریزی کے چند فقروں اور محاوروں کے سلسلے میں ہم سے مشورہ کیا تھا۔ جواہر لال کا اور میرا خیال تھا کہ وہ کوئی کتاب لکھ رہے ہیں اور کچھ فقروں کے صحیح استعمال کے سلسلے میں یقین حاصل کرنا چاہتے ہیں۔ یہ بات کبھی ہمارے دماغ میں نہیں آئی تھی کہ وہ وائسرائے کے نام معافی نامہ تیار کر رہے ہیں۔" اپنے خط میں ڈاکٹر سیّد محمود نے کہا تھا کہ "ہندوستان چھوڑ دو" قرارداد کی منظوری کے وقت ورکنگ کمیٹی یا آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے جلسوں میں شریک نہیں ہوئے تھے۔ اس بات نے مولانا کو اور زیادہ حیرت زدہ کیا کیوں کہ وہ موجود تھے اور انھوں نے قرارداد پر بحث میں بھی حصّہ لیا تھا۔ مولانا رقمطراز ہیں: "جیسا کہ میں کہہ چکا ہوں اس واقعے سے ہم سب کو بڑی خفت ہوئی۔ حیرت کی بات یہ تھی کہ وہ کوئی خط لکھیں گے اور اس سے بھی زیادہ حیرت کی بات یہ تھی کہ پٹنہ میں اخبار نویسوں سے بات چیت کرتے ہوئے وہ اس کا کوئی ذکر نہ کریں گے۔ شاید



ان کا یہ خیال تھا کہ وائسرائے کے نام ان کا خط صیغۂ راز میں رہے گا۔ جب حکومت نے ان کا خط شائع کر دیا تو وہ بہت گھبرائے اور گاندھی جی سے ملنے آئے ان سے بات چیت کے بعد ڈاکٹر محمود نے یہ بیان جاری کیا کہ انھوں نے خط تو لکھا تھا مگر اسے طویل عرصے تک وائسرائے کو نہیں بھیجا گیا۔ درحقیقت وہ ذہنی طور پر یہ طے نہیں کر سکے تھے کہ انھیں یہ خط بھیجنا چاہیے یا نہیں۔ اس پس و پیش کے عالم میں انھوں نے قرآن سے تین بار فال نکالی اور ہر بار ان کی نظر اس آیت پر پڑی جس میں حکم دیا گیا تھا کہ انھیں اپنی خواہشات کے مطابق عمل کرنا چاہیے۔ ڈاکٹر محمود نے اپنے بیان میں کہا کہ اسے انھوں نے باری تعالیٰ کا اشارہ سمجھا اور وائسرائے کو خط بھیج دیا۔ مولانا کو ان کی یہ وضاحت ان کے عمل سے زیادہ عجیب لگی۔ مولانا کہتے ہیں: "اپنی حرکت کی ذمہ داری اللہ پر ڈالنے کے باوجود معاملے میں کوئی سدھار نہیں آیا۔"

گاندھی جی اس طرح کے ہر معاملے میں بہت فراخ دل تھے۔ ڈاکٹر سید محمود نے جب ان سے مل کر اپنی غلطی کا اعتراف کر لیا تو انھیں ڈاکٹر محمود پر ترس آگیا اور انھوں نے یہ بیان دے دیا کہ ڈاکٹر سید محمود کے لیے یہ مناسب نہ تھا کہ جیل میں اپنے دوستوں کو بتائے بغیر اس طرح کا خط وائسرائے کو لکھتے مگر ہندوستان کے لوگوں کو چاہیے کہ ان کے اعتراف کو مدنظر رکھ کر ان کے بارے میں زیادہ سخت رویہ نہ اختیار کریں۔

مولانا آزاد نے ان ہی صفحات میں شملہ کانفرنس کی ناکامی کے بعد ڈاکٹر سید محمود کے ذریعے جاری کیے گئے ایک بیان کا بھی ذکر کیا ہے لکھتے ہیں: "انھوں نے (ڈاکٹر سید محمود نے) بنارس میں جاری کیے گئے اپنے ایک بیان میں کانفرنس کی ناکامی کا ذمہ دار مجھ کو ٹھہرایا۔ ان کا بیان تھا کہ کانگریس ورکنگ کمیٹی مسلم لیگ کے مطالبات تسلیم کرنے پر تیار ہوگئی تھی مگر میری مخالفت کی وجہ سے کانگریس نے اپنی پوزیشن بدل دی اور لیگ کے مطالبات ماننے سے انکار کر دیا۔ یہ بالکل غلط بات تھی مجھے افسوس ہوا کہ ڈاکٹر محمود نے اس طرح کا بیان جاری کیا۔ وہ جانتے تھے کہ بڑی مشکل سے میں نے مزید کانگریس کے بعد میں انھیں اپنی ورکنگ کمیٹی میں لے سکا تھا۔ معافی مانگ کر آئے ہوئے شخص کو دوبارہ شامل کرنے کے بعد انھیں ورکنگ کمیٹی میں شامل کرنے پر میرے کچھ ساتھیوں نے مجھ پر طنز کیا تھا۔ ڈاکٹر محمود کا خیال تھا کہ چونکہ انھوں نے یہ بے بنیاد الزامات مجھ پر لگائے ہیں اس لیے میں بہار کابینہ میں انھیں شامل نہ ہونے دوں گا۔ انھیں نہیں معلوم تھا کہ اس طرح کے معاملات میں میں نے کبھی ذاتی محسوسات کو اپنے کسی فیصلے پر حاوی نہیں ہونے دیا۔ میں نے وائسرائے کو ان کے معافی نامے اور اپنے خلاف ان کے بیان پر بھی اظہار افسوس کیا تھا مگر ملک میں اس وقت کے حالات کے پیش نظر میں نے ان کی کمزوریوں کو نظر انداز کیا۔ بہرحال میں نے اپنے ذہن کو اس بات کے لیے تیار کر لیا تھا کہ حکومت سازی کے سلسلے میں صرف استحقاق پر نظر رکھی جانی چاہیے اور میں نے الزامات کو اپنے فیصلے پر اثر انداز نہ ہونے دیا جب فہرست تیار ہوگئی اور میں نے کانگریس اسمبلی پارٹی کے نام پڑھ کر سنائے تو صاف ظاہر تھا کہ ڈاکٹر محمود کو بڑی حیرت ہوئی اور فہرست میں اپنا نام دیکھ کر انھیں مسرت بھی ہوئی۔"

مولانا آزاد جواہر لال کو دل سے چاہتے تھے۔ مگر ان کا خیال ہے کہ کچھ لوگ جواہر لال سے ان کے تعلقات کو خراب کرنے کے درپے تھے۔ جواہر لال نظریاتی آدمی تھے اس لیے مخالفین نے نظریات کا سہارا لے کر انھیں مولانا کے خلاف کرنے کی کوشش کی انھوں نے جواہر لال جی سے مل کر کہا کہ یونینسٹ پارٹی سے کانگریس کا اتحاد اصولی طور پر غلط ہے۔ انھوں نے یہ دلیل دی کہ مسلم لیگ ایک رجعت پسند تنظیم ہے اس لیے کانگریس کو مسلم لیگ سے مل کر پنجاب میں حکومت بنانی چاہیے نہ کہ یونینسٹ پارٹی سے اتحاد کر کے۔ مولانا لکھتے ہیں: "کمیونسٹوں نے کھل کر اس نظریے کی تبلیغ کی تھی جواہر لال ان کے نظریات سے جزوی طور پر متاثر تھے اس لیے انھوں نے سوچا ہوگا کہ میں یونینسٹ پارٹی سے اتحاد کر کے بائیں بازو کے اصولوں کو قربان کر رہا ہوں۔ جو لوگ میرے اور جواہر لال کے درمیان خلیج پیدا کرنا چاہتے تھے۔ وہ ان سے یہ بھی کہا کرتے تھے کہ میری تعریف کا مطلب بشمول جواہر لال دوسرے کانگریسی قائدین کی تضحیک کے مترادف ہے۔ اگر خود ان کے اخبار نیشنل ہیرالڈ نے میری اتنی زیادہ تعریف اور توصیف کی تو جلد ہی کانگریس میں میرے مقابلے کا کوئی لیڈر نہ رہ جائے گا۔ مجھے نہیں معلوم کہ ان باتوں کا جواہر لال کے ذہن پر کس حد تک اثر ہوا مگر بمبئی میں کانگریس ورکنگ کمیٹی کی میٹنگ کے دوران میں نے دیکھا کہ سب معاملات میں انھوں نے میرے نقطۂ نظر کی مخالفت شروع کر دی۔ ان کا موقف یہ تھا کہ پنجاب کے سلسلے میں میری پالیسی صحیح نہیں تھی۔ انھوں نے یہ بھی کہا کہ میں نے کانگریس کا وقار گرایا ہے یہ سن کر مجھے حیرت بھی ہوئی اور افسوس بھی ہوا۔ پنجاب میں میں نے جو کچھ کیا تھا وہ یہ تھا کہ کانگریس کو حکومت میں شامل کرایا تھا جب کہ گورنر مسلم لیگ کی وزارت بنوانے میں دلچسپی رکھتا تھا۔ میری کوششوں سے مسلم لیگ الگ تھلگ ہو گئی اور کانگریس نے اقلیت میں ہونے کے باوجود پنجاب میں فیصلہ کن پوزیشن حاصل کر لی۔ خضر حیات



خاں کانگریس کی حمایت سے چیف منسٹر تھے اور وہ قدرتی طور پر اس کے زیرِ اثر آ گئے تھے۔ جواہر لال کا نقطۂ نظر یہ تھا کہ اکثریتی پارٹی بنے بغیر حکومت میں کانگریس کا شامل ہونا درست نہیں تھا۔ اس کے نتیجے میں کانگریس کو سمجھوتے اور اپنے اصولوں کا سودا کرنا بھی پڑ سکتا ہے۔ میں نے اس کی تردید کی اور کہا کہ کانگریس کے اپنے اصولوں سے ہٹنے کا کوئی خطرہ نہیں ہے۔ اس کے ساتھ ہی میں نے یہ بھی کہا کہ اگر ورکنگ کمیٹی کو لاہور میں کیے گئے میرے فیصلے سے اتفاق نہ ہو تو وہ جو نئی پالیسی چاہے اختیار کر سکتی ہے۔ کانگریس نے حکومت میں رہنے کی کوئی گارنٹی نہیں دی تھی اور وہ جب بھی چاہے حکومت سے نکل سکتی ہے۔"

مولانا مزید تفصیل میں جاتے ہوئے کہتے ہیں:

"گاندھی جی نے میرے نظریات کی زبردست حمایت کی۔ انھوں نے کہا کہ پنجاب میں کانگریس اقلیت میں ہے مگر اس نے وزارت کی تشکیل اور کارکردگی میں فیصلہ کن مقام حاصل کر لیا ہے۔ انھوں نے کہا کہ کانگریس کے نقطۂ نظر سے اس سے بہتر کوئی اور حل نہیں ہو سکتا۔ وہ میرے ذریعے کیے گئے فیصلے میں کسی بھی تبدیلی کے خلاف تھے۔ جب گاندھی جی نے واضح طور پر اپنے خیالات کا اظہار کر دیا تو ورکنگ کمیٹی کے تمام دوسرے ممبروں نے میری حمایت کی اور جواہر لال کو بھی اس سے متفق ہونا پڑا۔ ورکنگ کمیٹی کے سامنے جو دوسرا سوال آیا وہ کیبنٹ مشن سے مذاکرات کا تھا۔ اس وقت تک حکومت سے ہونے والی ہر بات چیت میں کانگریس کا صدر ہی تنظیم کی نمائندگی کرتا رہا تھا۔ جب ۱۹۴۲ء میں اسٹیفورڈ کرپس آئے تھے اس وقت خود جواہر لال جی نے تجویز رکھی تھی کہ کانگریس کی نمائندگی صرف مولانا آزاد کریں گے۔ شملہ کانفرنس میں بھی مولانا ہی واحد نمائندہ تھے اور گاندھی جی تک نے بات چیت میں حصہ نہیں لیا تھا۔ مگر مولانا کے بقول "اس بار جواہر لال نہرو نے دوسرا رُخ اختیار کیا کہ کیبنٹ مشن سے بات چیت ورکنگ کمیٹی کی ایک چھوٹی سب کمیٹی کرے اور کوئی واحد شخص نمائندہ نہ ہو۔"

مولانا لکھتے ہیں: "ان کی تجویز نے مجھے حیرت میں ڈال دیا۔ میں نے کبھی سوچا بھی نہ تھا کہ جواہر لال اس طرح کا کوئی سوال اٹھائیں گے۔ چونکہ میں نے یہ محسوس کیا کہ اب اعتماد کا سوال پیدا ہو گیا ہے اس لیے ان کی مخالفت کی۔ میں نے یاد دلایا کہ اب تک صدرِ کانگریس ہی تنظیم کا واحد نمائندہ ہوتا رہا تھا اور اب اس طریقے کو تبدیل کرنے کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔ اگر ورکنگ کمیٹی کا خیال ہو کہ اس وضع طریقے کو بدلنا ضروری ہے تو وہ یقینی طور پر اپنے خیال کو عملی شکل دینے کی مجاز ہے لیکن میں کسی ایسے فیصلے میں فریق نہ ہوں گا۔ درحقیقت میں اسے کانگریس کے صدر کی ذمہ داریوں میں تخفیف سے تعبیر کروں گا۔"

مولانا مزید لکھتے ہیں: "اس موقع پر بھی گاندھی جی نے میری حمایت کی۔ انھوں نے واضح طور پر کہا کہ انھیں کسی تبدیلی کی ضرورت نظر نہیں آتی اگر آج تک پچھلے اور دور سے بات چیت میں صدرِ کانگریس واحد نمائندہ ہو سکتا ہے تو اب کوئی تبدیلی کیوں کی جائے۔ اگر اب کیبنٹ مشن سے بات چیت کے لیے کوئی کمیٹی بنائی گئی تو یہی تصور کیا جائے گا کہ کانگریس کے صدر میں اعتماد کی کمی ہے۔ تجربے سے بھی یہ ظاہر ہو چکا ہے کہ صدرِ کانگریس سے بہتر کوئی اور نمائندہ نہیں ہو سکتا۔ اس لیے اس مرحلے پر کسی کمیٹی کی تقرری سے کوئی مدد نہ ملے گی۔ بلکہ کانگریس اور عام لوگوں کی صفوں میں الجھن پیدا ہو جائے گی۔"

۱۹۴۶ء میں کیبنٹ مشن کی ہندوستان میں آمد، وزارتوں کی تقسیم اور فرقہ وارانہ مسئلے کے حل کے سلسلے میں اپنے خیالات ظاہر کرتے ہوئے مولانا آزاد نے کانگریس کی صدارت سے اپنی سبکدوشی کے ضمن میں لکھا ہے کہ وہ چاہتے تھے کہ نئے صدرِ کانگریس کوئی ایسا شخص بنے جو ان کی پالیسیوں کو آگے بڑھا سکے۔ اسی خیال سے انھوں نے سردار پٹیل کے نام کی مخالفت کی اور کانگریسیوں سے اپیل کی کہ وہ متفق ہو کر جواہر لال نہرو کو صدر چن لیں۔ اپنے اس فیصلے کے سلسلے میں مولانا آزاد نے بعد میں شائع ہونے والے ان تیس صفحات میں لکھا ہے "میں نے اپنے بہترین اندازے کے مطابق عمل کیا لیکن اس کے بعد جس طرح کے حالات رونما ہوئے ان کے نتیجے میں میں نے محسوس کیا کہ یہ میری سیاسی زندگی کی سب سے بڑی غلطی تھی۔ مجھے اپنے کسی بھی اقدام پر اتنا افسوس نہیں ہوا جتنا کہ اس نازک مرحلے پر کانگریس کی صدارت سے سبکدوش ہونے کے فیصلے پر ہوا۔ یہ ایک غلطی تھی جو گاندھی جی کے لفظوں میں ہمالیائی غلطی کہی جائے گی۔ میری دوسری غلطی یہ تھی کہ جب خود میں نے کھڑے نہ ہونے کا فیصلہ کیا تو سردار پٹیل کی حمایت نہ کی۔ ہمارے درمیان کئی معاملوں میں اختلاف تھا مگر مجھے یقین ہے کہ اگر وہ صدرِ کانگریس ہوتے یا میرے جانشین بنتے تو کیبنٹ مشن پلان پر کامیابی سے عمل کراتے۔ ان سے جواہر لال والی غلطی کبھی نہ ہوتی جس نے مسٹر جناح کو پلان کا ستیاناس کرنے کا موقع دے دیا۔ جب میں یہ سوچتا ہوں کہ اگر میں نے یہ غلطی نہ کی ہوتی تو شاید آخری دس برسوں کی تاریخ کچھ اور ہوتی تو میں خود کو معاف نہیں کر سکتا۔" ان صفحات میں مولانا آزاد نے ۱۰ جولائی ۱۹۴۶ء کو ایک کانفرنس میں جواہر لال نہرو کے اس اخباری بیان کی تفصیل درج کی ہے جو انھوں نے لکھنؤ میں دیا تھا۔ مولانا آزاد



ازہیں کہ جب کچھ اختیاری نمائندوں نے ان وال کیا کہ آیا آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے ذریعے اد کی منظوری کے بعد کانگریس نے پلان کو من وعن ر کرلیا ہے جس میں عبوری حکومت کی تشکیل بھی ہے تو انھوں نے یہ حیرت انگیز جواب دیا کہ ریس آئین ساز اسمبلی میں تمام معاہدوں سے ہوکر داخل ہوگی اور جو صورت حال بھی پیدا اس کا سامنا آزادی سے کرے گی۔ آگے چل کر نا آزاد نے لکھا ہے کہ مسلم لیگ نے محض دباؤ میں لینٹ مشن پلان منظور کیا تھا۔ قدرتی طور پر رجناح اس سے زیادہ خوش نہ تھے۔ انھوں نے کونسل کے جلسے میں اپنی تقریر میں واضح طور پر کہا تھا کہ س کی منظوری کی سفارش صرف اس لیے کر ہے ہیں کہ اس سے بہتر کوئی چیز حاصل نہیں کی تھی۔ ان کے سیاسی مخالفوں نے یہ کہہ کر ان کی ہ چینی شروع کردی تھی کہ وہ کوئی اچھا حل پیش نے میں ناکام ہوگئے ہیں۔ انھوں نے الزام لگایا تھا نھوں نے (مسٹر جناح نے) آزاد اسلامی ریاست یال ترک کردیا ہے۔ انھوں نے ان پر اس طرح نز بھی کیا کہ اگر مسلم لیگ کیبنٹ مشن پلان کو منظور نے پر تیار تھی جو مسلمانوں کو علیحدہ ملک بنانے حق سے محروم کرتا ہے تو مسٹر جناح نے آزاد مسلم ست کے لیے اس قدر غل کیوں مچایا۔ مولانا لکھتے کہ ان واقعات کی روشنی میں مسٹر جناح کیبنٹ مشن مذاکرات کے نتائج سے زیادہ خوش نہ تھے۔ ہرلال کا بیان ان کے لیے لُطفِ غنیمت ثابت ہوا اور وں نے فوراً یہ بیان جاری کردیا کہ صدر کانگریس یان پوری صورت حال پر نظر ثانی کا متقاضی ہے۔ ا انھوں نے لیاقت علی خان سے لیگ کونسل طلب کرنے کو کہا اور یہ بیان جاری کیا کہ مسلم لیگ۔ مل نے دہلی میں کیبنٹ مشن پلان اس یقین دہانی کی روشنی میں منظور کیا تھا کہ کانگریس نے بھی اسے منظور کرلیا ہے اور یہ پلان ہندوستان کے آئندہ آئین کی بنیاد بنے گا۔ چوں کہ اب کانگریس کے صدر نے یہ بیان دے دیا کہ کانگریس آئین ساز اسمبلی میں اپنی اکثریت کے بل پر اسکیم کو بدل سکتی ہے اس لیے اس کے معنی یہ ہوں گے کہ اقلیت اکثریت کے رحم و کرم پر ہوگی۔ ان کا موقف یہ تھا کہ جواہر لال کے اعلان کا مفہوم یہ ہے کہ کانگریس نے کیبنٹ مشن پلان کو مسترد کردیا ہے لہٰذا وائسرائے کو چاہیے کہ وہ مسلم لیگ سے حکومت بنانے کو کہے جس نے پلان کو منظور کرلیا ہے۔

اس واقعے کے بعد مسلم لیگ نے ڈائریکٹ ایکشن کا منصوبہ بنایا اور ۱۶ اگست کا دن راست اقدام کے لیے مقرر کردیا مسٹر جناح کو اختیار دے دیا گیا کہ وہ جو چاہیں کریں ۱۶ اگست کو کلکتہ میں فسادات شروع ہوگئے۔ و ربے گناہوں کا خون بہنے لگا مولانا آزاد کے خیال میں ۱۶ اگست ۱۹۴۶ء کا دن صرف کلکتہ ہی کے لیے نہیں پورے ملک کے لیے تاریک دن تھا۔ حالات نے ایک ایسا موڑ اختیار کرلیا کہ کانگریس اور مسلم لیگ میں مفاہمت ناممکن ہوگئی۔ مولانا آزاد اس سلسلے میں رقمطراز ہیں کہ "یہ ہندوستان کی تاریخ کا ایک عظیم ترین المیہ تھا اور مجھے انتہائی دکھ کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ اس صورت حال کی ذمہ داری سب سے زیادہ جواہر لال پر تھی۔ ان کے اس افسوسناک بیان نے کہ کانگریس کیبنٹ مشن پلان میں رد و بدل کرنے کے لیے آزاد ہوگی۔ فرقہ وارانہ اور سیاسی سمجھوتے کے سوال کو دوبارہ کھڑا کردیا۔ مسٹر جناح نے ان کی غلطی سے پورا فائدہ اٹھایا اور شروع میں مسلم لیگ کے ذریعے کیبنٹ مشن پلان کی منظوری کے فیصلے سے گریزاں ہوگئے۔"

پنڈت جواہر لال کو اپنا عزیز ترین دوست اور ہندوستان کی قومی زندگی میں ان کی خدمات کی عظمت کا اعتراف کرتے ہوئے ان تیس صفحات میں مولانا آزاد نے یہ بھی لکھا ہے کہ "میں یہ کہنے پر مجبور ہوں کہ یہ پہلا موقع نہیں تھا کہ انھوں نے قومی کاز کو زبردست نقصان پہنچایا انھوں نے ۱۹۳۷ء میں بھی اسی طرح کی ایک غلطی کی تھی۔ ۱۹۳۵ء میں گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ کے تحت جب پہلے انتخابات ہوئے تھے۔ ان انتخابات میں بمبئی اور یو۔پی کو چھوڑ کر مسلم لیگ کو ملک بھر میں زبردست دھکا لگا تھا۔"

عبوری حکومت میں محکموں کی تقسیم کے سلسلے میں اختلاف رائے کا تفصیلی ذکر مولانا آزاد نے کیا ہے۔ اس اختلاف کا نتیجہ یہ تھا کہ خزانے کا محکمہ مسلم لیگ کو مل گیا۔ مولانا آزاد رقمطراز ہیں کہ "اس تجویز کو مسلم لیگ نے اپنے طویل المیعاد اور قلیل المیعاد دونوں ہی طرح کے مفادات کو مدِنظر رکھ کر منظور کیا تھا۔ درحقیقت مسٹر جناح نے غالباً یہ سوچا تھا کہ چوں کہ کانگریس نے عبوری حکومت کی تجویزیں نامنظور کردی ہیں جبکہ مسلم لیگ نے دونوں کو منظوری دے دی ہے اس لیے انھیں حکومت بنانے کی دعوت دی جائے گی۔ مگر جب وائسرائے نے یہ بیان دے دیا کہ چوں کہ نمائندہ عبوری حکومت بنانے کی کوششیں ناکام ہوگئی ہیں لہٰذا وہ افسروں کی ایک عارضی حکومت قائم کریں گے اور آئین ساز اسمبلی کے انتخاب کے بعد عبوری حکومت کی تشکیل کے لیے دوبارہ بات چیت شروع کریں گے۔ وائسرائے نے اس بات پر بھی مسرت کا اظہار کیا کہ آئین سازی کا



کام دو بڑی پارٹیوں اور ریاستوں کی منظوری سے آگے بڑھے گا۔ قارئین کو یاد ہوگا کہ اس کے فوراً بعد جواہرلال نے ایک بیان لکھنؤ میں دے دیا تھا جس نے جناح کو کیبنٹ مشن پلان کو پوری طرح مسترد کردینے کا موقع دیا۔ اس کے نتیجے میں مسلم لیگ ممبروں نے آئین ساز اسمبلی کا بائیکاٹ کردیا تھا اور سچ تو یہ ہے کہ لیگ عمومی طور پر کانگریس کی ہر بات کی مخالف تھی۔"

نئے صفحات میں مولانا آزاد نے مزید لکھا ہے کہ "دس سال بعد پچھلے واقعات کا تجزیہ کرتے ہوئے مجھے یہ تسلیم کرنا پڑتا ہے کہ مسٹر جناح نے جو کچھ بھی کہا تھا اس میں جان تھی۔ کانگریس اور لیگ دونوں ہی معاہدے میں شامل تھیں اور مرکز صوبوں اور گروپوں کے مابین تقسیم ہی کی بنیاد پر لیگ نے پلان منظور کیا تھا کانگریس نے شبہات پیدا کرکے دانشمندی کی بات نہیں کی اگر وہ ہندوستان کے اتحاد کی خواہاں تھی تو کسی حیل و حجت کے بغیر اسے پلان کو منظور کرلینا تھا شکوک و شبہات نے مسلم لیگ کو ہندوستان کے بٹوارے کا موقع فراہم کردیا۔"

نئے صفحات میں مولانا آزاد نے مسٹر کرشنا مینن کی سخت نکتہ چینی کی ہے اور پنڈت جواہرلال کے نقطۂ نظر میں تبدیلی کی ذمہ داری ان پر بھی ڈالی ہے اس سلسلے میں وہ رقمطراز ہیں کہ "ہم سب اپنے معترفین کو پسند کرتے ہیں۔ مگر شاید جواہرلال نہرو دوسروں کے مقابلے میں انھیں زیادہ ہی پسند کرتے ہیں۔ کچھ عرصے بعد تیسرے دہے کے آغاز میں لیبر پارٹی نے مس ایلن وِلکنسن کی قیادت میں ایک وفد ہندوستان بھیجا مسٹر مینن اس وفد کے ساتھ ہندوستان آئے وہ لندن میں انڈیا لیگ کی سرگرمیوں میں حصہ لیا کرتے تھے۔ اس عرصے میں ان کے تعلقات خاص طور پر ان لوگوں سے تھے جن کو کمیونسٹ یا ان کے ہم نوا سمجھا جاتا تھا جب جواہرلال دوبارہ لندن گئے تو کرشنا مینن نے اپنے روابط کی تجدید کی اور جواہرلال کے لیے اپنی وفاداری کا پھر اعادہ کیا۔ جب جنگ چھڑی تو کرشنا مینن نے مشورہ دیا کہ انھیں سرمایہ فراہم کیا جائے تاکہ لندن میں ہندوستان کی طرف سے پروپیگنڈہ مہم چلا سکیں جب ہٹلر نے روس پر حملہ کردیا تو انھوں نے لندن میں روسی سفارت خانے سے رابطہ قائم کیا۔ انھوں نے ہمیں بہت سے پیغامات بھیجے جن میں کہا کہ وہ جواہرلال کے ذاتی نمائندے کی حیثیت سے سوویت سفیر سے ملاقاتیں کررہے ہیں انھوں نے ہندوستان کے دوستوں کی امداد حاصل کرنے کے لیے ہر طرح کی تجاویز بھیجیں انھوں نے کئی اسکیمیں بھی تیار کیں اور کانگریس سے سرمائے کی فراہمی کے لیے کہا۔ جواہرلال ان سے متاثر تھے اور انھوں نے مجھ سے کچھ رقم منظور کرنے کو کہا۔ میں نے رقم فراہم کردی اور معاملہ ورکنگ کمیٹی کے سامنے پیش کیا گیا گاندھی جی اور سردار پٹیل نے کھل کر مجھ سے کہا کہ انھیں میرا یہ اقدام پسند نہیں آیا مگر وہ مزید کچھ نہ کہیں گے کیونکہ میں نے نیک نیتی سے رقم ادا کی ہے۔ لیکن انھوں نے مجھ سے کہا کہ میں مزید ادائیگیاں نہ کروں انھوں نے کہا کہ لندن میں مقیم ہندوستانیوں میں کرشنا مینن کے بارے میں شدید اختلاف رائے ہے۔ ان کے کچھ حمایتی ہیں مگر ایک زبردست حلقہ ان کے خلاف ہے جو ان پر ہر طرح کے الزامات لگاتا ہے۔ میں نے عام تاثر یہ لیا کہ ان کا رویہ نقائص سے پاک نہیں ہے اس لیے میں ان پر پوری طرح بھروسہ نہ کرسکا۔ بعد کے واقعات نے یہ ثابت کردیا کہ کرشنا مینن پر گاندھی جی اور سردار کا شبہ درست تھا۔ ان کے خلاف کم سے کم بات یہ کہی جاسکتی ہے کہ وہ ناقابلِ اعتماد شخص تھے اور بڑی بے قدری سے پبلک فنڈ خرچ کرتے تھے مگر زیادہ تر لوگوں کا ان کے بارے میں بہت خراب نقطۂ نظر تھا اور وہ انھیں ازسرتاپا بے ایمان آدمی سمجھتے تھے۔ جب عبوری حکومت قائم ہوئی تھی تو جواہرلال نے کرشنا مینن کو لندن میں ہائی کمشنر مقرر کرنا چاہا تھا سردار پٹیل نے اس سے اتفاق نہ کیا تھا حکومت برطانیہ نے بھی یہ مشورہ دیا تھا کہ ان کی تقرری مناسب نہ ہوگی کیوں کہ انھیں کمیونسٹوں کا حلیف سمجھا جاتا ہے۔ لارڈ واول کے جانے کے فوراً بعد کرشنا مینن ہندوستان آئے اور جواہرلال کے پاس ٹھہرے۔ لارڈ ماؤنٹ بیٹن نے فوراً اندازہ لگا لیا کہ کرشنا مینن جواہرلال کی کمزوری ہیں اور ان کے ذریعے جواہرلال پر اثر انداز ہوا جاسکتا ہے لارڈ واول نے کرشنا مینن کی تقرری کی مخالفت کی تھی مگر لارڈ ماؤنٹ بیٹن نے ان کی سرپرستی کرنے کا فیصلہ کرلیا اور ان کو کئی بار وائسرائے ہاؤس میں مدعو کیا۔" مولانا آزاد طنزیہ انداز میں لکھتے ہیں: "کرشنا مینن کمیونسٹ نظریات رکھتے تھے مگر جب انھوں نے دیکھا کہ لارڈ ماؤنٹ بیٹن ان کے تئیں دوستانہ روش پر عمل کرتے ہیں اور انھیں کوئی عہدہ دلانے میں مددگار ثابت ہوسکتے ہیں تو وہ راتوں رات برطانیہ نواز بن گئے۔ انھوں نے برطانیہ کے لیے اپنے دوستانہ احساسات سے لارڈ ماؤنٹ بیٹن کو متاثر کیا۔ لارڈ ماؤنٹ بیٹن نے سوچا کہ ہندوستان کے بٹوارے کی اسکیم کو جواہرلال سے منظور کرانے کے سلسلے میں کرشنا مینن مفید ثابت ہوسکتے ہیں۔" مولانا لکھتے ہیں: "مجھے یقین ہے کہ اس سوال پر کرشنا مینن نے جواہرلال کے ذہن کو متاثر کیا۔ جب کچھ عرصے بعد مجھے یہ معلوم ہوا کہ لارڈ ماؤنٹ بیٹن نے لندن میں کرشنا مینن کو ہائی کمشنر مقرر کرنے کے سلسلے میں جواہرلال کو تعاون کی پیش کش کی ہے تو مجھے کوئی حیرت نہیں ہوئی۔"



مولانا آزاد نے پہلے ایڈیشن میں ملک کی تقسیم کے اسباب، پاکستان کے قیام اور دونوں ملکوں میں فرقہ وارانہ فسادات کی تفصیل بیان کی تھی۔ دہلی میں ستمبر کے شروع میں فسادات رکوانے کے لیے گاندھی جی [illegible] تھا۔ برت کے پہلے دن جواہر لال، سردار پٹیل اور مولانا آزاد ان کے پاس بیٹھے تھے۔ سردار پٹیل نے گاندھی جی سے کہا کہ ان کے برت کی کوئی منصفانہ بنیاد نہیں ہے اور ان کا طریقہ کار یہ تاثر دیتا ہے کہ جیسے مسلمانوں کے قتل کی ذمہ داری سردار پٹیل پر ہے۔ اس کا جواب گاندھی جی نے بہت نرم انداز میں دیتے ہوئے کہا تھا کہ "میں چین میں نہیں ہندوستان میں ہوں۔ میری قوت بصارت اور قوت سماعت ختم نہیں ہوئی ہے اگر تم میری اپنی آنکھوں اور کانوں کی گواہی پر یقین نہیں کر سکتے اور مجھ سے یہ کہتے ہو کہ مسلمانوں کے لیے شکایت کا کوئی جواز نہیں ہے تو میں یقیناً تم کو مطمئن نہیں کر سکتا اور نہ ہی تم مجھ کو مطمئن کر سکتے ہو۔ ہندو اور سکھ میرے بھائی ہیں۔ وہ میرا گوشت پوست ہیں اور اگر وہ اس وقت غصے سے پاگل ہو گئے ہیں تو میں ان کو الزام نہ دوں گا مگر مجھے یقین ہے کہ میرا برت ان کی آنکھیں کھول دے گا۔"

نئے صفحات میں مولانا آزاد نے ان واقعات کے ضمن میں یہ باتیں کہی ہیں۔ "اس جواب سے سردار پٹیل ناراض ہو گئے اور انھوں نے تند لہجے میں گاندھی جی سے بات کی۔ ان کے رویے سے مجھے اور جواہر لال کو دکھ ہوا اور ہم خاموش نہ رہ سکے۔ میں نے احتجاج کیا اور کہا ولبھ بھائی ہو سکتا ہے کہ تم اسے محسوس نہ کرو مگر ہم دل کی گہرائیوں سے محسوس کرتے ہیں کہ آپ کا رویہ کتنا توہین آمیز ہے۔ اور آپ گاندھی جی کو کس قدر دکھ پہنچا رہے ہیں۔"

سردار پٹیل کے تنازعہ میں کتاب کے آخری باب میں مولانا آزاد نے ان تیس سطروں کا اضافہ کیا ہے۔

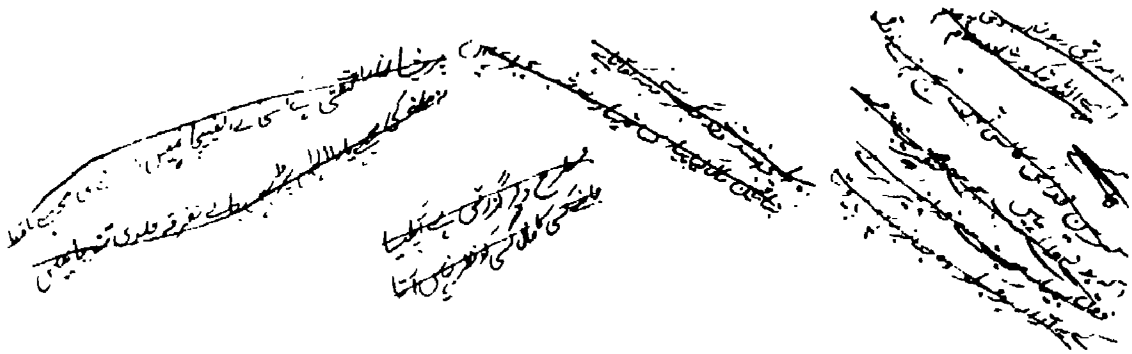
"ان تمام باتوں سے یہ واضح ہوتا تھا کہ سردار پٹیل گاندھی جی کے خلاف ہو گئے تھے جب گاندھی جی نے مسلمانوں کے تحفظ کے سوال پر برت رکھا تو سردار پٹیل نے لاپروائی سے کام لیا۔ پٹیل کا خیال تھا کہ برت ان کے خلاف ہے۔ یہی وجہ ہے کہ میرے یہ کہنے پر بھی وہ نہ رکے کہ وہ بمبئی نہ جائیں۔ ان کے رویے کا مقامی پولیس پر بہت برا اثر پڑا۔ مقامی حکام سردار پٹیل کی طرف دیکھتے تھے اور جب انھوں نے دیکھا کہ پٹیل نے گاندھی جی کی سلامتی کے لیے کوئی حکم نہیں جاری کیا ہے تو انھوں نے کوئی احتیاطی تدابیر کو ضروری نہ سمجھا۔" گاندھی جی کی شہادت کے واقعے کے بعد کے حالات پر روشنی ڈالتے ہوئے مولانا آزاد نے صفحات میں لکھا ہے کہ "[illegible] ہونے کے بعد قدرتی طور پر غصے کی لہر پیدا ہو گئی۔ کچھ لوگوں نے سردار پٹیل پر کھلے اہتمام نہ کرنے کا الزام لگایا بلکہ زیادہ سخت باتیں بھی کہیں۔ جے پرکاش نارائن نے اس سوال کو اٹھانے میں قابلِ ذکر جرأت کا مظاہرہ کیا۔ گاندھی جی کی موت پر دہلی میں جو جلسہ اظہارِ تاسف اور اظہارِ غم کے لیے ہوا تھا اس میں جے پرکاش نارائن نے واضح طور پر کہا کہ حکومت ہند کا وزیر داخلہ اس قتل کی ذمہ داری سے بچ نہیں سکتا۔ انھوں نے سردار پٹیل سے اس سوال کا جواب دینے کو کہا کہ جب گاندھی جی کو قتل کرنے کے لیے لوگوں کو اکسانے کی غرض سے کھلا ہوا پروپیگنڈہ ہو رہا تھا اور ان پر ایک بم پھینکا بھی جا چکا تھا تو کوئی خاص اقدام کیوں نہیں لیا گیا۔" یہ ہے ان تیس صفحات کا خلاصہ جو حال ہی میں شائع ہوئے ہیں لیکن ان تمام باتوں کو پوری کتاب سے الگ کر کے پوری طرح نہیں سمجھا جا سکتا بہتر ہو کہ قارئین انڈیا ونز فریڈم کا جدید مکمل ایڈیشن پڑھیں تاکہ تمام باتوں سے وہ اچھی طرح واقف ہو سکیں۔

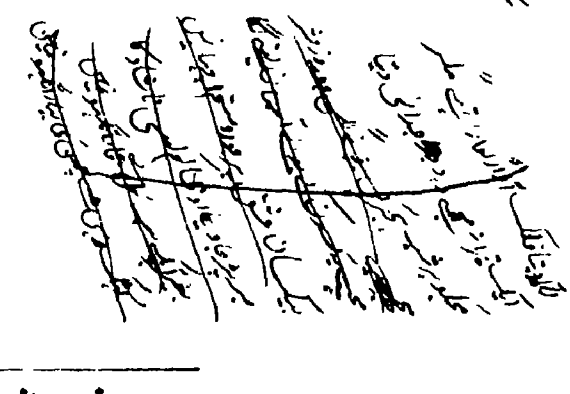
○

نوشتہ ہائے زلیخا بیگم

زلیخا بیگم مولانا آزاد کی وفا شعار شریک حیات تھیں۔ ان کی ایک نوٹ بک یا ڈائری مندرجہ بالا عنوان سے ان کاغذات میں تھی دستیاب ہوئی ہے جو مولانا آزاد کے سیکریٹری مولوی محمد اجمل خاں مرحوم نے اپنی وفات سے چند روز قبل آئی سی سی آر کے "آزاد کلکشن" کے لیے مرحمت فرمائے تھے۔ اس ڈائری کے کچھ اوراق پر مرحومہ نے اپنے پسندیدہ اشعار نوٹ کیے ہیں جو زیادہ تر ہجر اور کیفیاتِ ہجر سے متعلق ہیں۔ ان سے اندازہ کیا جا سکتا ہے کہ مولانا کی سیاسی مصروفیات اور قید و بند کی زندگی نے انھیں بہت کم موقع دیا کہ وہ اپنی رفیقۂ حیات کی رفاقت کا حق ادا کر سکیں۔ کچھ صفحات پر مرحومہ نے ایک مضمون درج کیا ہے جو لڑکیوں کی اچھی تعلیم و تربیت پر زور دیتا ہے۔ یہ معلوم نہیں ہو سکا کہ یہ مضمون کسی اور کا ہے اور انھوں نے ازراہِ پسندیدگی اسے اپنی نوٹ بک میں نقل کر لیا ہے یا یہ خود انھی کا لکھا ہوا ہے۔ دونوں صورتوں میں یہ اندازہ تو ہو ہی جاتا ہے کہ وہ عورتوں کی گھریلو اور سماجی زندگی کی خوشگواری کے لیے کن صفات کو ضروری سمجھتی تھیں۔

ذیل میں اس نوٹ بک کے چند اوراق کا عکس نمونتہً پیش کیا جا رہا ہے:





خواجہ منیر احمد
نگراں شعبۂ مخطوطات آئی سی سی آر لائبریری، آزاد بھون،
نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲

بتائیں کیا تمھیں اب ہم کہ کیا گزرتی ہے
[illegible] شعلے ورنہ [illegible]

ترے مریض کی [illegible] علاج [illegible]
[illegible] زیبون میں [illegible] لیا کیجے

بدن کی [illegible] وتاب و توان داغ جا چکے
اب بھی جلنے والے ہیں سامان جا چکے

[illegible] براہ [illegible]

عندلیب نو گرفتار چمن ہم [illegible]
[illegible] راہ [illegible]
آشیانہ نہیں نہ غافل رہیں [illegible] چمن
[illegible] باغ میں صیاد [illegible] آتا ہے

[illegible]

دیکھیں وہ [illegible] قسمت [illegible]
[illegible] روشن
[illegible] سینہ گلشن
[illegible]

[illegible]

کونسا [illegible]
زندگی اک شمع روشن ہے [illegible] سامنے

دسمبر ۱۹۱۱ء



یا رب اِدھر ہو جس دل ناشاد کی
پہلو سے صدا آتی نہیں فریاد کی
کیا شکایت یار سے ظالم تیری بیداد کی
دیکھ رہا ہے جل مگر آرزو نہیں فریاد کی
زخم کی بار بیداد نے تازہ ستم
نہیں دیتا غنچہ جو بلبل نے ذرا فریاد کی
بلبل نالاں پر گرہ لا خموشی پس نالہ کیا
جب گئی لعبہ آزادی پس میں فریاد کی
بد زبانی مزہ پایا دین گونگا ہوا
یہ خدا نے دی سزا اے بت تیری فریاد کی
نالہ کرتا ہوں یاں پوشیدہ ذرا پردۂ ستار
ساز کے پردے سے نکلے گی صدا فریاد کی
کہہ رہی ہے شمع رو رو کر یہ زبان حال سے
سر کٹا سو بار پہلو سے نہیں فریاد کی



تعلیم کی بہار بالکون کے ہاتھ میں ہوتی ہے ایسے زمانہ سے وہ عادات و اطوار
کی بیل ڈالتی ہے بچپن کے موسم میں جو باتیں بیل و بہار بنکر آتی ہیں
کام کر جاتی ہیں اور انکے باقاعدہ اثر سے بچوں کی شام جوانی اور صبح پیری
خالی نہیں جاتی اور وہ بڑے بڑے کام جو دلی جذبات کی وجہ سے عمل میں
وہ انکے دلوں میں گھر کر لیتے ہیں اور گویا بچپن کے زمین ہو جاتے ہیں پھر اگر
تر جاہل اور ناشائستہ ہیں تو اپنی اولاد کی کیا خبر لینگی ہر ذی ہوش
کہ بچے بری باتوں کی جانب کسقدر جلد مائل ہو جاتے ہیں اور جہاں
دفعہ بگڑا پھر سمجھیے کہ ہمیشہ کے لیے ہاتھ سے جاتا رہتا ہے اس
سے اُسے محفوظ رکھنے کے لیے عورتوں کی تعلیم کی ضرورت ہے شائستہ
پڑھی لکھی عورتوں کا کام ہے کہ وہ بچوں کو نگاہ کے سامنے رکھیں
اچھی اچھی باتیں بتائیں بری باتوں سے نفرت دلوائیں اخلاق و تربیت
بیان یہانتک کے اسکا یقین ہو جائے کہ نصیحتوں نے اتنا اثر کیا کہ اب وہ
نہ پائینگے اور بری باتوں سے گو نہ جانگے برائی کے بیج شروع ہی میں اُگتے
اگر وہ اخلاقی زمین سے نکال کر دور نہ پھینک دئے جائینگے تو ایک
زمانہ میں اُنھیں سے برائیوں کا ایک انبار لگ جاتا ہے اور وہ



خوشگوار امیدیں اور دلی مسرتیں جو ماؤں کے دلوں میں ان کے بچوں کی
سے پیدا ہوتی ہیں سب کی سب خاک میں مل جاتی ہیں اگر ہم ان کے گلشن
مسرت کے پھولوں سے ہرا بھرا دیکھنا چاہتے ہیں تو ان کے دلوں کو اچھے خیال
مشفقوں اور مفید نصیحتوں سے اس قدر بھر دیں کہ انہیں برائیوں کی جگہ
نہ ہو سکے ان لوگوں سے ظاہر ہے کہ جو بچے اپنے والدین کے
نجات کا سبب ہوئے ان کی مائیں شائستہ و علم یافتہ نہیں اگر ان
کی مائیں نیک اور پارسا تھیں اور باپ محض جاہل ناہموار و سنگدل
تو کوئی مضائقہ نہیں مائیں اپنی نیک رفتار حلم مروت جو
اخلاق کے میٹھے جادو سے انہیں مسخر کر لیں گی مائیں اگر وہ خود
شائستہ ہیں اور باپ بھی زمانہ بھر کی خوبیاں کوٹ کوٹ کے
رکھتا ہو تو بچے شکل سے اچھے اور تہذیب یافتہ نکلیں گے گھر ایک ایسا
باغ ہے جہاں درخت نخل الفت کے ہیں جو ثمر لاتے بلکہ شاداب
عمدہ عادات و اطوار کے ایسے گل تر کھلتے ہیں جن کی خوشبو سے سب وہ
معطر رہتی ہے اور گھر بہشت بریں بن جاتا ہے بچوں کو تعلیم دینا گو
درستی پارسائی اور راستبازی کا سبق دینا ہے ہم انکی نہ
نصیحت کرتے ہیں کہ وہ پڑھ لکھ کر نوکریاں کریں یا علم کی متفرق شاخوں



سے زیادہ خطائیں بیجا آرزوؤں ناسزا خواہشوں اور خودپسندیوں کی بدولت
ہوتی ہیں اور بچپن ہی میں آسانی کے ساتھ انکی اصلاح ہوسکتی ہے کیونکہ
عادت ماں کے بس میں ہوتا ہے وہ اُسے جس طرف پھیرتی ہے جلد پھر جاتی ہے
جب بچہ اگر نا اصول کی پیروی اور وہ رنگ طبیعت یا روش
اختیار کریگا جو ابتدائی تربیت میں اُسے اُسکی ماں سکھاتی ہے
بدعادتوں کی بلا سے محفوظ رہیگا تو پھر پھولیگا پھلیگا اور بعد کو حسن اخلاق
پیش صفات ہوگا اور اُسکی نیکیاں عمل میں آئینگی

زلیخا

اِس نوٹ بک کے پہلے صفحے پر مولانا آزاد کی بہن محترمہ آبرو بیگم کے قلم سے یہ عبارت درج۔

[illegible]

7072

1908

اُردو اکادمی دہلی کا ماہانہ رسالہ

فون نمبر:
۲۷۹۲۱۱ اور ۲۶۳۳۴۸

ایوانِ اُردو دہلی

ادارۂ تحریر
سیّد شریف الحسن نقوی، مخمور سعیدی

جلد: ۲ — شمارہ: ۹ | فی کاپی ۵۰ر۲ روپے، سالانہ قیمت ۲۵ روپے | جنوری ۱۹۸۹ء

سرورق
چند رقاص لڑکیاں
(جشنِ جمہوریت کی پریڈ میں)

خوشنویس: تنویر احمد

حرفِ آغاز

۲۶ جنوری کا دن آزاد ہندوستان کی تاریخ کا ایک اہم دن ہے۔ یہ وہ دن ہے جب ہمارا جمہوری آئین ملک میں نافذ ہوا۔ یہ ایک طرح سے ہماری تحریکِ آزادی کی تکمیل کا دن تھا۔ ۱۵ اگست کو ہمیں غیر ملکی تسلط سے چھٹکارا ملا، ۲۶ جنوری کو ہمارے آئین نے بلا امتیاز ملک کے ہر شہری کو فکر و عمل اور تحریر و تقریر کی آزادی کی ضمانت دی اور زیر دستوں کو زبردستوں کے جبر و استحصال سے نجات کی نئی راہ دکھائی۔

آج ہندوستان دنیا کی بڑی جمہوریتوں میں سے ایک ہے۔ اتنے وسیع و عریض ایشیائی ملک میں جمہوری نظام کا قیام اور اس کی کامیابی ایسا کارنامہ ہے جس پر ہم ہندوستانی بجا طور پر فخر کرسکتے ہیں۔ اس کامیابی کا سہرا جہاں ایک طرف ہمارے ان رہنماؤں کے سر ہے جنھوں نے ہمیں آزادی اور جمہوریت کی قدر و قیمت سمجھائی اور جمہوری نظام کی برکتوں سے ہمیں باخبر ہی نہیں، عملی طور پر آشنا بھی کیا، وہیں دوسری طرف ہمارے عوام بھی مبارکباد کے مستحق ہیں جنھوں نے جمہوری قدروں کو نہ صرف اپنی اجتماعی زندگی کی پہچان بنایا بلکہ نجی زندگی میں بھی رواداری اور کشادہ دلی کو عصبیت اور تنگ نظری پر فوقیت دی۔

تصویر کا یہ پہلو بہت ہی روشن اور فرحت بخش ہے لیکن پچھلے چند برس میں علاقائی، لسانی اور مذہبی عصبیت کے جو مظاہر سامنے آئے ہیں انھوں نے ملکی منظر نامے کے اس پہلو کو خاصا دھندلا کر دیا ہے اور ان مظاہر سے ہر محبِ وطن ہندوستانی کا تشویش اور پریشانی میں مبتلا ہو جانا ناگزیر ہے۔ ہندوستان جیسے بڑے ملک میں جو بہت سی زبانوں، ثقافتوں، تہذیبوں اور مذہبوں کا گہوارہ ہے، گروہی مفادات کی موجودگی غیر قدرتی نہیں لیکن ان مفادات کو مجموعی قومی مفاد کا تابع ہونا چاہیے۔ پھر ایک اور بات بھی غور طلب ہے، ایک جمہوری نظام میں اپنے مطالبات جمہوری طریقے ہی سے منوائے جانے چاہئیں، غیر جمہوری طریقوں سے نہیں۔ جمہوری طریقے پُر امن طریقے ہوں گے، تشدد اور نفرت کی جمہوریت میں کوئی گنجائش نہیں۔

جمہوریت نے ہمیں جو حقوق دیے ہیں، ہمیں ان کا تحفظ بھی کرنا چاہیے اور استعمال بھی لیکن جمہوریت ہم پر کچھ فرائض بھی عائد کرتی ہے۔ اگر ان فرائض سے غفلت برتیں گے تو جمہوری عمل کو ضعف پہنچے گا اور اس کے جو نتائج نکلیں گے وہ ان تمام خوابوں کی نفی کر دینے والے ہوں گے، جو ہمارے بزرگوں نے بھی دیکھے تھے، ہم بھی دیکھتے رہے ہیں اور جن کی تکمیل ہی میں ہماری آنے والی نسلوں کی فلاح مضمر ہے۔

ابوالکلام آزاد نمبر کی ہم نے دس ہزار کاپیاں چھاپی تھیں۔ نمبر کو ہماری توقعات سے کہیں زیادہ مقبولیت حاصل ہوئی۔ جس وقت یہ سطر لکھی جارہی ہیں، اس نمبر کو منظر عام پر آئے ہوئے صرف دس دن ہوئے ہیں اور دفتر میں ریکارڈ کی کاپیوں کے علاوہ کوئی کاپی موجود نہیں۔ ہمارے پاس کچھ ایسی اطلاعات بھی آئی ہیں کہ بہت سے دکاندار اس نمبر کو تگنی چوگنی قیمت پر فروخت کر رہے ہیں۔ ہماری آپ سے گزارش ہے کہ نمبر زیادہ قیمت خرید کر اس غیر اخلاقی عمل کی حوصلہ افزائی نہ کریں بلکہ ہم سے رابطہ قائم کریں۔ ہم جلد ہی اسے دوبارہ چھاپنے کا انتظام کر رہے ہیں، جو آرڈر ہمیں موصول ہوں گے انشاء اللہ ان سب کی تعمیل کر دی جائے گی۔

ہم نے اعلان کیا تھا کہ "ایوانِ اردو" کے سالانہ خریداروں کو اور ان لوگوں کو بھی جو اب سالانہ خریدار بنیں گے، یہ نمبر بلا قیمت پیش کیا جائے گا، ایسے حضرات کو سالانہ قیمت کے علاوہ پانچ روپے رجسٹری خرچ کے اور بھیجنے ہوں گے تاکہ نمبر رجسٹرڈ ڈاک سے بھیجا جاسکے۔ یہ پیشکش ہم دہرا رہے ہیں۔ آپ ۱۵ جنوری تک تیس روپے ہمیں منی آرڈر سے بھیج دیں یا اسی رقم کا بینک ڈرافٹ "سیکریٹری اردو اکادمی دہلی" کے نام کا بنوا کر ارسال کر دیں۔ ابوالکلام آزاد نمبر آپ کو رجسٹری سے ارسال کر دیا جائے گا اور سال بھر تک "ایوانِ اردو" بھی آپ کی خدمت میں پہنچتا رہے گا۔

مولانا ابوالکلام آزاد نمبر کے بعد اب ہم نے پنڈت جواہر لال نہرو نمبر کی تیاریاں شروع کر دی ہیں، ہماری کوشش ہے کہ یہ نمبر بھی پنڈت نہرو کے شایانِ شان ہو اور ابوالکلام آزاد نمبر کی طرح ایک یادگار حیثیت کا حامل بن جائے ـــــ ایجنٹ حضرات نہرو نمبر کے آرڈر جلد از جلد بھجوائیں تاکہ ان کی روشنی میں ہم تعدادِ اشاعت کا تعین کر سکیں۔ قیمت نہرو نمبر کی بھی چھ روپے ہی ہوگی اور ضخامت تقریباً تین سو صفحات۔

مہاتما گاندھی کے سانحۂ قتل پر دو منظوم تعزیت نامے

مہاتما گاندھی کے سانحۂ قتل پر سات مختلف سنین میں
۔ سیماب اکبرآبادی نے تاریخی قطعات کہے تھے۔ اور یہ قطعات
اب تلوک چند محروم کے نوٹ کے ساتھ روزنامہ "تیج" دہلی کے خاص
(۱۳ فروری ۱۹۴۸ء) میں شائع ہوتے تھے۔ ان کا فوٹو اسٹیٹ
اِہ ارسال خدمت ہے۔ علامہ موصوف نے تیسرے قطعے میں چوتھی کی
لبب استعمال کی ہے۔ جس سے مراد سولہ (۱۶) ہے۔

"تیج" کے اسی خاص نمبر میں ایک نظم "تعزیت نامہ" بھی شائع
ئی تھی۔ جو سر رضا علی خاں، نواب رام پور کی تخلیق ہے۔ ہندی میں
رجا تخلص استعمال کرتے تھے۔ اس نظم کے دو مختلف مصرعوں میں
می اور عیسوی سن میں مادۂ تاریخ موجود ہے۔ فوٹو اسٹیٹ ارسال ہے
اب چالیس برس کے بعد آپ ان قطعات اور اس نظم کو "ایوانِ اردو دہلی"
جنوری کے شمارے میں شامل کرنا چاہیں تو یہ نوادر قارئین کے لیے
بسپی کا باعث ہوں گے۔

مخلص

ساحر ہوشیارپوری

تاریخی قطعاتِ وفاتِ مہاتما گاندھی، زمانۂ حال کے سات مروجہ سنوں میں

[ذیل کے قطعات ہندوستان کے مشہور و معروف ادیب اور شاعر حضرت علامہ سیماب اکبرآبادی کے زورِ قلم کا نتیجہ ہیں۔ علامہ کے یہ قطعات محض رسمی قطعاتِ تاریخ ہی نہیں بلکہ ان میں نوحہ گری کے جذبات کا حق بھی ادا ہوگیا ہے۔ ان شہ پاروں کی اہمیت اخبار میں شائع ہو جانے پر ختم نہیں ہو جاتی۔ ہماری رائے میں جہاں مہاتما گاندھی کی یادگار قائم کی جائے وہیں ان قطعات کو سنگ مرمر پر کندہ کرا کر کتبوں کی صورت میں لگوایا جائے۔ (محروم)]

(۱)

مہینے بھی نہ گذرے تھے کہ آزادی ملک — پیکرِ آزاد گاندھی پر ہوئی ثابت عذاب
ری کی تیسویں تاریخ کو جمعے کے دن — شام سے قبل آگیا وقتِ غروبِ آفتاب
جو اہنسا کا دیا کرتا تھا دُنیا کو سبق — کر دیا ہنسا نے اس کی زندگی کا سدِ باب
اِک اٹھتّر سال کے بُوڑھے پہ برسیں گولیاں! — غیرتِ انسانیت خود شرم سے ہے آب آب

سالِ آزادی میں تھی سیماب فکرِ سالِ فوت
بولا ہاتف لکھ دو، پہلا حرفِ لفظِ انقلاب

سنۂ آزادی

(۲)

وہ سولہ ماگھ کی آتش فشاں شام — قیامت سے تھی جس نے شرط باندھی
زعیمِ ہند کا بھی کر دیا خون — چلی جب مردم آزاری کی آندھی
کہو بنگلہ میں سالِ فوتِ سیماب — "فسردہ تن، شہیدِ قوم گاندھی"

۵۴ بنگلہ ۱۳

(۳)

چوتھی کو ماگھ کی سدھار گیا — جگ کا پیارا مہاتما گاندھی
بزم ہستی میں کاش آجائیں — پھر دوبارہ مہاتما گاندھی
ہے فراق آپ کا ہر اک دل کو — ناگوارا مہاتما گاندھی

سالِ فصلی میں ہے یہ سالِ وفات
وقعت آرا مہاتما گاندھی

۵۵ فصلی ۱۳

(۴)

چل دیے دُنیا سے ستائیس اسفندار کو — وہ کہ جن کی برادرانِ تھی مقبولِ قوم
قوم کو دیتے رہے جو درسِ صلح و آشتی — پھر بھی ناقص ہی رہی ذہنیتِ مجہولِ قوم
مردِ درویش اور دانائے رموزِ خسروی — چارہ ساز و ناسخِ تحریکِ نامعقولِ قوم
اتحادِ بین الاقوام اُن کی سعیِ خاص تھی — تھا عمل اُن کا خلاف اُس کے جو تھا معمولِ قوم

سنیے اب سالِ الٰہی میں بھی تاریخِ وفات
پاکباز و ہادیِ ہندوستاں مقتولِ قوم

۵۷ فصلی الٰہی ۱۳

(۵)

شوّلہ ماہِ ربیع الاوّل کو
خاک میں مِل گئی اُمیدِ وطن
شامِ جمعہ کو چل بسے گاندھی
حملہ آور ہُوا بزیدِ وطن
حامیِ امن و صلح و آزادی
آہ، وہ رہبرِ سعیدِ وطن
اُس کا دل مخزنِ سیاست تھا
ہاتھ میں اُس کے تھی کلیدِ وطن
سالِ ہجری یہ لکھ دو اے سیماب
"مخلصِ بے ریا شہیدِ وطن"

۱۳ ہجری ۶۷

(۶)

تیس ماہِ جنوری جمعے کے دن
ہوگیا ہندوستاں سارا یتیم
خونِ گاندھی ایک ہندو نے کیا
ہند پر یہ آپڑا وقتِ سقیم
گولیاں پیٹ اور سینے میں لگیں
کیوں نہ ہوجائیں یہ سُن کر دل دو نیم
یوں کہو سیماب سالِ عیسوی
خونِ صاحب جاہ انسانِ عظیم

۱۹ عیسوی ۴۸

(۷)

بدی پنچم بھی کیا تاریخِ بدِ تھی
چُھپا نظروں سے ناہیدِ سیاست
تھی شوّلہ ماگھ، شکروار کا دِن
محرّم بن گئی عیدِ سیاست
وہ گاندھی جس کی فکرِ کارگر سے
ہوئی دُنیا میں تجدیدِ سیاست
وہ قائد جس کے فیضانِ نظر سے
جواں رہتی تھی اُمیدِ سیاست
کیا خون اُس کا، اس کی قوم ہی نے
یہ تھی کورانہ تقلیدِ سیاست
کہو سمّت میں سالِ فوت سیماب
ہُوا مسمار خورشیدِ سیاست

۲۰۰۴
بکرمی

—— سیماب اکبر آبادی

تعزیت نامہ

[از ہز ہائی نس نواب رامپور]

اکھیاں کھولو مُکھ سوں بولو دیش کی راکھو لاج
لائے ہیں شردھانجلی ہم گاندھی جی مہاراج
گھر گھر دُکھ کے بادل چھائے سکھ کی نیّا ڈوبی جاتے
بھارت ماتا رو رو کہت ہیں بن کے بگڑ گئے کاج
نینن نیر بہاتا چھوڑا بھگتوں سے کاہے مُکھ موڑا
دیویں دُہائی بھارت واسی باپو جاگو آج
دونوں جگ میں تُمری جے ہو گولی کھا کے اَمر بھئے ہو
ہم سے بچھڑ کے سُورگ گئے ہو سنگت[۲] کا پہنے تاج
جس نے بیڑا دیش کا تارا بھئے ساگر سے پار اُتارا
اُس کو کس[۳] نر دئی نے مارا بتا دو ہے یم راج
اسنے دھرتی کی ریت ہے نیاری اس کو بھیٹیں ہنسا کاری[۴]
تن من دھن جو تج کے چاہے سدا اہنسا[۵] راج
ہندو مسلم اب بلہاریں من تُمرے اُپدیش پہ واریں
مل جل سب جے ہند پکاریں باجیں پریمی باج
ہار گیا یہی ستیہ[۶] کی جے ہے گھر گھر دیکھو تمری جے ہے
سمت ۲۰۰۴ بکرمی
پہلے تو گاندھی جی دیش گورو تھے جگت گورو بھیو آج
سنہ ۱۹۴۸ء عیسوی
رجا پیا کو سوچ یہی ہے تُمرے بن سنکوچ[۷] یہی ہے
اِس جیون میں دیکھ نہ پائے پھُولا پھلا سوراج

حواشی:

۱ اشکِ عقیدت ۲ شہادت ۳ فرشتۂ اجل
۴ تشدد پسند ۵ امن پسند ۶ حق کی فتح ۷ اضطراب۔

قلمکار حضرات سے گزارش

دفتر میں مضامینِ نثر و نظم کثیر تعداد میں جمع ہوگئے ہیں اس لیے اعلانِ ثانی تک اپنی نگارشات بلا طلب بھجوانے کی زحمت نہ فرمائیں۔

اُمید ہے اس گزارش کو گستاخی پر نہیں ہماری مجبوری پر محمول کیا جائے گا۔

ادارہ

رشید نعمانی ردولوی

ڈاکٹر ذاکر حسین کے سیاسی نظریات

ذاکر صاحب کی شخصیت کے مختلف گوشوں پر کافی لکھا گیا ہے۔ لیکن ان کے سیاسی نظریات پر کم ہی روشنی ڈالی گئی ہے۔ اس مضمون میں مختصراً ان کے سیاسی نظریات سے بحث کی جائے گی۔ ان کے سیاسی نظریات کا ماخذ ان کی تحریریں اور فرمودات ہیں۔

ذاکر صاحب اصلاً عملی سیاست کے آدمی نہیں تھے لیکن سیاسی بصیرت ضرور رکھتے تھے۔ سیاست میں وہ جس انداز سے آئے اس کی ترجمانی اس مصرعے سے ہو سکے گی:

میں خود آیا نہیں لایا گیا ہوں

ذاکر صاحب اپنی طالب علمی کے زمانے میں ہی دنیا کے واقعات سے متاثر ہونے لگے تھے۔ حالات زمانہ کی واقفیت کے لیے پائینر اخبار پابندی سے پڑھتے تھے۔ اس بصیرت کا نتیجہ یہ ہوا کہ ان میں قومی معاملات اور بین الاقوامی حالات کے متعلق صحیح جذبات اور رجحانات پیدا ہو گئے اور ہندوستان کے باہر دوسرے مسلم ممالک سے ان کی گہری ہمدردی بھی راسخ ہو گئی ــــ اس ہمدردی کا مظاہرہ مختلف طریقوں سے ہوتا رہا۔ ان کے اسکول کے زمانے میں ترکی اور اٹلی کی جنگ شدت اختیار کر گئی تھی۔ ہندوستانی مسلمانوں کو ترکوں سے ہمدردی تھی۔ ذاکر صاحب نے ان کی مدد کے لیے گوشت کھانا ترک کر دیا اور دوسرے مسلمان طلبا کو بھی اس بات پر آمادہ کیا۔ اس سے جو پیسہ بچتا تھا وہ ترکی بھیجدیا کرتے تھے۔ نماز جمعہ کے بعد ذاکر صاحب نمازیوں سے مظلوم ترکوں کے لیے چندہ وصول کرتے۔ ایک مرتبہ اٹاوہ کی ایک مسجد میں انھوں نے ایک تقریر کی اس کے بعد اپنی پھندنے کی ترکی ٹوپی میں چندہ جمع کرنا شروع کیا۔ چندہ جمع کرتے وقت انھوں نے فرمایا "لائیے حضرات جو آپ کے پیسے اس ٹوپی میں ڈالیں گے وہ پیسے گولیوں میں تبدیل ہو کر دشمن کے سینے کے پار ہوں گے۔" ایک سفید ریش بزرگ پر اس جملے کا یہ اثر ہوا کہ وہ چیخ چیخ کر رونے لگے اور اپنا پورا بٹوہ ذاکر صاحب کی ٹوپی میں الٹ دیا۔ ہر مرتبہ اچھی خاصی رقم جمع ہو جاتی اور ذاکر صاحب اسے منی آرڈر کے ذریعے ترکوں کی مدد کے لیے بھیجتے رہتے۔

ذاکر صاحب تحریک ترک موالات اور تحریک خلافت کے ہنگامہ خیز دور کی پیداوار تھے۔ ۱۹۱۹ء میں علی گڑھ میں تحریک ترک موالات کا زلزلہ آیا جس سے ایم اے او کالج مسلم یونیورسٹی بن گیا۔ جب خلافت کمیٹی کو مسلم یونیورسٹی سے اختلاف ہوا تو اس نے علی گڑھ ہی میں مسلم یونیورسٹی سے متصل بٹ میں ۲۹ اکتوبر ۱۹۲۰ء کو جامعہ ملیہ اسلامیہ کے نام سے ایک آزاد ملی و قومی تعلیمی ادارہ قائم کیا۔ اس ادارے کے بانیوں میں مولانا محمد علی، حکیم اجمل خاں، ڈاکٹر مختار احمد انصاری اور مولانا ابوالکلام آزاد کے نام قابل ذکر ہیں۔ ذاکر صاحب نے بھی ایم اے او کالج کو خیرباد کہا اور جامعہ ملیہ کی تعمیر میں مولانا محمد علی کا ہاتھ بٹانے لگے ۱۹۲۶ء میں برلن سے ان کی واپسی پر ملک کی یہ کیفیت تھی کہ ترک موالات اور خلافت کی تحریکیں سرد پڑ چکی تھیں اور خصوصاً مسلمانوں میں ایک عام افسردگی چھائی ہوئی تھی اس وقت انھوں نے جامعہ ملیہ کو اپنے خون جگر سے سینچا اور پروان چڑھایا۔ ۱۹۲۷ء کے آخر میں حکیم اجمل خاں کے انتقال کے بعد جامعہ ملیہ کا چلنا قریب قریب ناممکن ہو گیا تو انھوں نے تن من دھن کی بازی لگا کر جامعہ کی ساکھ قائم کی اور اس کی بنیادی مقصد ذاکر صاحب کے الفاظ میں یہ قرار پایا:[۱]

"ہندوستانی مسلمانوں کی آئندہ زندگی کا ایک ایسا نقشہ جس کا مرکز مذہب اسلام ہو اور اس میں ہندوستان کی قومی تہذیب کا وہ رنگ بھرے جو عام انسانی تہذیب کے رنگ میں کھپ جائے اس کی بنیاد اس عقیدے پر ہے کہ مذہب کی سچی تعلیم ہندوستانی مسلمانوں کو وطن کی محبت اور قومی اتحاد کا سبق دے گی۔"[۲]

اگرچہ جامعہ سیاسی تحریکوں کے جلو میں قائم ہوا لیکن ذاکر صاحب نے اسے تعلیم و تہذیب کی جوئے رواں میں تبدیل کر دیا جس نے قوم کی ذہنی و اخلاقی تربیت کو ہر چیز پر مقدم رکھا اور اس طور پر سیاست کو تعلیم کا خادم اور تابع بنا کر قومی تہذیب کے تخلیقی ارتقا کے امکانات کو واضح اور روشن کیا۔

ذاکر صاحب پر شروع ہی سے مہاتما گاندھی اور حکیم اجمل خاں کا بڑا گہرا اثر رہا۔ وہ گاندھی جی کی حق بینی، حق شناسی اور ہمہ گیر انسانیت کے جذبے سے متاثر ہوئے اور حکیم اجمل خاں کے خلق و مروت اور صبر و حلم نے ان کو جلا بخشی۔ گاندھی جی جامعہ ملیہ کے

خالق فلیٹس، ۱۸۰ ـ اے، باپو روڈ، کرلا (مغربی) بمبئی ۷۰۰۰۰

ہمدردوں میں رہے اور بنیادی تعلیم کا خاکہ ان ہی کی سرپرستی میں ذاکر صاحب نے تیار کیا۔

۱۹۳۷ء سے ۱۹۴۷ء تک کا زمانہ ذاکر صاحب کے لیے بڑی آزمائش کا تھا۔ ذاکر صاحب اور ان کا ادارہ جامعہ دو گونہ رنج و عذاب میں مبتلا تھے۔ فرقہ پرست ہندو اور مسلمان چاہتے تھے کہ دونوں کو نفرت کی آگ میں جلا کر خاک کر دیں، قوم پرور ہندو اور مسلمان چاہتے تھے کہ دونوں کو محبت کی زنجیروں سے سیاست کی جنگ میں گھسیٹ لیں۔ ذاکر صاحب کو احساس تھا کہ یہ وقت ملک کے لیے بڑا فیصلہ کن ہے۔ سیاست سب سے اہم چیز ہے لیکن اس کے باوجود وہ عملی سیاست میں حصہ نہ لے سکے البتہ ان کی یہ کوشش ضرور رہی کہ کانگریس اور مسلم لیگ میں مصالحت کرانے اور ملک کی تقسیم کو روکنے میں گاندھی جی کا ہاتھ بٹائیں اور انھیں آخر تک یہ امید رہی کہ اس کوشش میں انھیں کامیابی ہوگی۔ اس سلسلے میں ڈاکٹر عابد حسین رقمطراز ہیں۔[۲]

"چناں چہ ۱۹۴۶ء میں جب معتبر ذریعوں سے معلوم ہوا کہ ذاکر صاحب کو پہلی قومی کابینہ میں رکھنے کی تجویز ہے تو انھوں نے اس امید پر کہ ایک نہ ایک دن کانگریس اور لیگ کی مشترکہ کابینہ متحدہ ہندوستان کا اصول مان کر بنے گی اس وقت وزارت قبول کرنے سے انکار کر دیا اور یہ وہی کر سکتا تھا جو اقبال کی اصطلاح میں مردِ فقیر ہو۔"

ذاکر صاحب عملی سیاست کے آدمی نہیں تھے۔ میری نظر سے ایسی کوئی تحریر نہیں گذری جس سے یہ بات معلوم ہوتی ہو کہ وہ کانگریس یا کسی سیاسی پارٹی کے چار آنے کے ممبر بھی رہے ہوں۔ ان کا راجیہ سبھا کی ممبری سے قبل کسی سیاسی پارٹی سے براہ راست تعلق نہیں تھا لیکن وہ راسخ العقیدہ مسلمان اور قوم پرست ہندوستانی شروع سے تھے۔ رشید صدیقی صاحب ان کے خلوت و جلوت کے ساتھی رہے ہیں۔ وہ رقمطراز ہیں۔

"عام طور پر کہا جاتا ہے کہ ذاکر صاحب سیاسی آدمی نہ تھے، اس اعتبار سے یقیناً نہ تھے کہ ان کی کوئی پارٹی ہوتی جس کا کوئی سیاسی مقصد یا موقف ہوتا اور اس پارٹی کے وہ باضابطہ لیڈر یا پیرو ہوتے۔ ذاکر صاحب عملی سیاست سے بلند و برکراں رہے لیکن انھوں نے سیاسی شخصیتوں اور سیاسی اسالیبِ فکر کا گہرا مطالعہ کیا تھا۔ وہ حکومت کے اعلیٰ مناصب پر رہے، اپنی دانشمندی، منصفی، ہمدردی اور وسیع النظری سے سیاست کی ساحری اور شاطری کو حتی الوسع حدود سے آگے بڑھنے نہ دیا، منصب کی پابندی اور سیاست کی غیر ذمہ داری کو انھوں نے جام و سنداں باخلق کے معیار تک پہنچا دیا تھا۔۔۔ جامعہ ملیہ کی پہلی جوبلی کے موقع پر ذاکر صاحب نے عملی سیاست کے مختلف نہیں متضاد اندازِ فکر و عمل کے دو ممتاز ترین سربراہوں کو جیسے خونیں و آتشیں دور میں جامعہ کے پلیٹ فارم پر اکٹھا کر لیا تھا۔ وہ اس زمانے میں کسی اور کے بس کی بات نہ تھی۔"[۳]

ذاکر صاحب کا سیاسی عقیدہ یہ تھا کہ قوم کی ترقی کے لیے تمام جماعتوں کو اپنی مخصوص صلاحیتوں کی مکمل نشوونما کا موقع ملنا چاہیے انھیں کی ہم آہنگ ترتیب میں قومی فلاح کا راز پوشیدہ ہے۔ ہندوستانی تہذیب ایک مشترک کارنامہ ہے اس کی نشوونما میں مختلف جماعتیں اور قومیں اور مختلف نسلوں اور مذہبوں کے لوگ شامل ہیں اس اجتماعی کارنامے میں جو ایک ہزار سال کے میل جول کا نتیجہ ہے مسلمانوں نے بہت نمایاں اور قابلِ قدر حصہ لیا ہے۔ ذاکر صاحب اس مشترک ورثے کو قائم رکھنے اور مالا مال کرنے کے خواہشمند تھے۔ ان کے نزدیک مسلمانوں کے لیے یہ پوزیشن ہرگز شایانِ شان نہیں کہ وہ اپنی گذشتہ تاریخ اور روایات سے بے تعلقی اختیار کریں اور جس ملک میں انھیں جینا اور مرنا ہے اس کی سماجی اور سیاسی خدمت میں پیش پیش نہ رہیں جہاں کہیں ظلم ہے، بے انصافی ہے، جہالت ہے، توہمات ہیں، انسانوں میں رنگ و نسل کا امتیاز رائج ہے، اس کو دور کرنا مسلمانوں کا مذہبی اور ملی فریضہ ہے۔ خدمت ان کی سب سے بڑی سعادت ہے اور اس خدمت میں ہندو اور مسلمان مشرق اور مغرب، سیاہ و سفید کی تمیز کوئی معنی نہیں رکھتی اس لیے انھوں نے جامعہ ملیہ کی تعلیم کا مقصد اعلیٰ بنی نوعِ انسانی کی خدمت کو قرار دیا۔

ذاکر صاحب کی ہمیشہ یہ آرزو رہی کہ مسلمان ہندوستان کے مستقبل میں ایک نمایاں اور قابلِ فخر حصہ لیں اور اس مقصد کے لیے اپنے مذہب اور تہذیب و تمدن کے بہترین عناصر کو نہ صرف اپنی قومی خودی میں جذب کریں بلکہ ان کے ذریعے ہندوستانی تہذیب کو مالا مال کر دیں۔ ان کے نزدیک رواداری اور انصاف کی تلقین سب سے اہم مقصد ہے وہ لکھتے ہیں۔

"اگر ہم مسلمان کی حیثیت سے حریت خواہ ہونے پر مجبور رہیں، اگر ہم دنیا کی ہر قسم کی غلامی کو مٹانے پر مامور ہیں اگر ہم ایسی سیاسی تنظیم چاہتے ہیں جس میں امیر و غریب کا فرق انسانوں کی اکثریت کو انسانیت کے شرف ہی سے محروم نہ کر دے اگر ہم نسل و رنگ کے تعصبات کو مٹانا اپنا فرض سمجھتے ہیں تو ان فرائض کو پورا کرنے کا موقع سب سے پہلے اپنے پیارے وطن میں ہے جس کی مٹی سے ہم بنے ہیں اور جس کی مٹی میں ہم واپس جائیں گے ہمارے نوجوان روٹی بھی کمائیں گے اور نوکریاں بھی کریں گے، پر ان کی نوکری خالی پیٹ کی چاکری نہ ہوگی بلکہ اپنے دین کی اور وطن کی خدمت ہوگی۔"[۴]

ذاکر صاحب چاہتے تھے کہ ہندوستان کی مختلف جماعتیں اپنی مخصوص انفرادیت کو قائم رکھتے ہوئے ایک منظم، روادار اور فراخ دل قومیت کی بنیاد ڈالیں۔ اور اپنے مخصوص تمدنی ورثے اور صلاحیتوں سے ہندوستانی تہذیب و تمدن کو فروغ بخشیں اس لیے انھوں نے

جامعہ میں بیک وقت قومیت اور اسلامیت کی قدروں کو سمونے کی کوشش کی ہے۔ بے شک غلط قومیت اور اسلام' ایک دوسرے کے نقیض ہیں لیکن سچی قومیت میں جو وطن کی محبت اور اس کی خدمت کو ایمان کا جزو سمجھتی ہے اور مذہب کی حقیقی روح میں کوئی بنیادی تناقض نہیں ہے انھوں نے عمل سے اس بات کو ثابت کر دکھایا کہ بیک وقت ایک اچھا مسلمان اور ایک اچھا ہندوستانی نہ صرف ممکن ہے بلکہ دونوں چیزیں ایک دوسرے کے ساتھ وابستہ ہیں جو شخص واقعتاً ایک اچھا مسلمان ہوگا اس میں یقیناً وہ صفات ہونی چاہییں جو ایک اچھے شہری کے لیے ضروری ہیں۔ وہ نہ غلط اور تنگ نظر قومیت کے لیے اپنے مذہب کا سودا کرے گا اور نہ مذہب کو اپنی تنگ نظری اور ناروا داری کی آڑ بنا کر تاریخی ارتقا کے سلسلے میں حارج ہوگا۔

لیکن جہاں ذاکر صاحب ایک طرف اس بات کے مخالف ہیں کہ مسلمان خود کو قومی زندگی کے دھارے سے الگ کر لیں وہاں وہ سختی اور خلوص کے ساتھ اس تحریک پر بھی احتساب کرتے ہیں جو ہندوستان کی زندگی اور تہذیب ہی سے ان قابلِ قدر عناصر کو نکال دینا چاہتی ہے جو مسلمانوں نے گذشتہ ہزار برس میں ہندوستان کو بخشے ہیں' خواجہ غلام السیدین ذاکر صاحب کی انصاف پسندی' جرات و بیباکی کے متعلق رقمطراز ہیں۔

"میں نے انھیں مسلمانوں کے مجمع میں وہ سچی اور کڑوی باتیں کہتے سنا ہے جس سے بہت سے ہر دلعزیزی کے بھوکے لیڈر جان بوجھ کر پرہیز کرتے ہیں۔ میں نے انھیں افتراق اور اختلاف کی یورش میں اتحاد اور ہم آہنگی کی تائید کرتے دیکھا ہے جس کی وجہ سے شاید بعض کوتاہ بیں اور سطحی لوگ جو عوام کی کمزوریوں کے ساتھ کھیل کر ان کے جذبات سے فائدہ اٹھانے کے عادی ہیں یہ سمجھتے رہے کہ ذاکر صاحب کے دل میں مسلمانوں کے لیے وہ تڑپ نہیں ہے جو خود ان بندگانِ ملت کے دل میں ہے لیکن وہی ذاکر صاحب جب کسی غیر مسلم مجمع کو خطاب کرتے ہیں یا کسی غیر مسلم لیڈر سے گفتگو کرتے ہیں تو انھیں اپنے مسلمان ہونے پر جو فخر ہے وہ ان کی ہر بات اور ہر انداز سے ٹپکتا ہے اور وہ ان سے پُر زور مطالبہ کرتا ہے کہ وہ ہندوستان میں مسلمانوں کی باعزت حیثیت کو تسلیم کریں۔"

کاشی ودیا پیٹھ کے سالانہ جلسۂ تقسیم اسناد منعقدہ بنارس مورخہ ۱۴ اگست ۱۹۳۵ء میں انھوں نے ایک غیر مسلم مجمع کے سامنے مسلمانوں کا نقطۂ نظر جس واضح' بیباک اور دل نشیں انداز میں پیش کیا اور مسلمانِ ہند کی صحیح اور سچی ترجمانی کی اس کا ایک اقتباس ملاحظہ ہو۔

"آپ مجھے معاف فرمائیں اگر اس معزز مجمع کے سامنے میں صفائی سے یہ بات پیش کروں کہ مسلمانوں کو جو چیز متحدہ قومیت سے بار بار کھینچتی ہے اس میں جہاں شخصی خود غرضیاں' تنگ نظری اور دیس کے مستقبل کا صحیح تصور نہ قائم کر سکنے کو دخل ہے وہاں اس شدید شبہ کا بھی بڑا حصہ ہے کہ قومی حکومت کے ماتحت مسلمانوں کی تمدنی ہستی کے فنا ہونے کا ڈر ہے۔ اور مسلمان کسی حال میں بھی یہ قیمت ادا کرنے پر راضی نہیں اور میں بحیثیت مسلمان ہی نہیں سچے ہندوستانی کی حیثیت سے بھی اس پر خوش ہوں کہ مسلمان اس قیمت کو ادا کرنے پر تیار نہیں' اس لیے کہ اس سے مسلمانوں کو جو نقصان ہوگا سو ہوگا ہی' خود ہندوستان کا تمدن پستی میں کہاں سے کہاں پہنچ جائے گا۔

اگرچہ مثلِ غنچہ دل گیریم ما
گلستاں میرد اگر میریم ما"

دوسری بنیادی تعلیمی کانفرنس منعقدہ اپریل ۱۹۴۱ء میں جس کا افتتاح ڈاکٹر راجندر پرشاد نے کیا تھا' ذاکر صاحب نے بحیثیت صدر کانفرنس خطاب کرتے ہوئے کہا تھا۔

"خدا کے لیے اس ملک کی سیاست کو سلجھایئے اور جلد سے جلد ایسی ریاست کی بنا ڈالیے جس میں قوم قوم پر بھروسہ کر سکے' کمزور کو زور آور کا ڈر نہ ہو' غریب امیر کی ٹھوکر سے بچا رہے' جس میں تمدن تمدن امن کے ساتھ پہلو بہ پہلو پھل پھول سکیں اور ہر ایک سے دوسرے کی خوبیاں اجاگر ہوں جہاں ہر ایک وہ بن سکے جس کے بننے کی اس میں صلاحیت ہے اور وہ بن کر اپنی ساری قوت کو اپنی سماج کا چاکر جانے' میں جانتا ہوں ان باتوں کا کہہ دینا آسان ہے اور کرنا کسی ایک آدمی کے بس کی بات نہیں' لیکن مجھے یقین ہے کہ آج یہ بات ہمارے سیاسی رہنماؤں کے ہاتھ میں اتنی ہے جتنی کہ پہلے کبھی نہ تھی کہ کچھ سمجھ کر' کچھ سمجھا کر' کچھ مان کر' کچھ منوا کر ایسی ریاست کی نیو رکھ دیں' جب تک یہ نہیں ہوتا ہم تعلیمی کام کرنے والوں کا حال قابلِ رحم ہے۔ ہم کس حد تک اس سیاسی ریگستان میں ہل چلائیں؟ کب تک شبہ اور بدگمانی کے دھوئیں میں تعلیم گھٹ گھٹ کر سسکتی دیکھیں؟ کب تک ہم اس ڈر سے تھراتے رہیں کہ ہماری عمر بھر کی محنت کو کوئی ایک سیاسی طاقت کوئی ایک سیاسی ضد بھسم کر دے گی' ہمارا کام بھی کوئی پھولوں کی سیج تو ہے نہیں' اس میں بہت مایوسیاں ہوتی ہیں اور اکثر دل ٹوٹتا ہے۔ پھر جب ہمارے قدم ڈگمگائیں تو ہم کہاں سہارا ڈھونڈیں؟ کیا اس سماج میں جس میں بھائی بھائی یک دل نظر نہیں آتے' کوئی قدر آخری قدر نہیں معلوم ہوتی' جس میں کوئی گیت نہیں کہ سب مل کر گائیں' کوئی تہوار نہیں جو سب مل کر منائیں' کوئی شادی نہیں جسے سب مل کر رچائیں' کوئی دکھ نہیں جسے سب بٹائیں' ہماری یہ مشکل دور کیجیے اب بھی بہت دیر ہو چکی ہے اور دیر نہ جانے کیا دن دکھائے۔"

۱۹۴۶ء کا زمانہ آزادی سے قبل کا پُر آشوب زمانہ ہے' تقسیم ملک کا سایہ سروں پر منڈلا رہا تھا

اس سال ۱۵ر نومبر ۱۹۴۶ء سے جامعہ کی سلور جوبلی کا جشن منایا جا رہا تھا۔ ذاکر صاحب کی سیاسی سوجھ بوجھ اس جشن سے کھل کر سامنے آئی جب انھوں نے اس جلسے میں کانگریسی رہنماؤں کے ساتھ ساتھ جناح صاحب کو بھی شرکت کی دعوت دی اور تمام حریف مخالف ایک پلیٹ فارم پر جمع ہو کر لوگوں کے سامنے آئے۔ ذاکر صاحب نے ان رہنماؤں کا شکریہ ادا کرتے ہوئے ان کی موجودگی سے فائدہ اٹھایا اور دل کی گہرائیوں سے نکلی ہوئی پُر درد آواز میں ان سے مخاطب ہو کر پوچھا:

"آج ملک میں باہمی منافرت کی جو آگ بھڑک رہی ہے اس میں ہمارا چمن بندی کا کام دیوانہ پن معلوم ہوتا ہے۔ یہ آگ شرافت اور انسانیت کی سرزمین کو جھلسے دیتی ہے، اس میں نیک اور متوازن شخصیتوں کے تازہ پھول کیسے پیدا ہوں گے؟ حیوانوں سے بھی پست تر سطح اخلاق پر ہم انسانی اخلاق کو کیسے سنوار سکیں گے؟ بربریت کے دور دورے میں تہذیب کو کیسے بچا سکیں گے؟ جانوروں کی دنیا میں انسانیت کو کیسے سنبھال سکیں گے؟"

وطن کے بااقتدار قومی لیڈروں سے دردمندانہ التجا کی۔

"خدا کے لیے سر جوڑ کر بیٹھیے اور اس آگ کو بجھائیے۔ یہ وقت اس تحقیق کا نہیں ہے کہ آگ کس نے لگائی، کیسے لگی۔ آگ لگی ہوئی ہے اسے بجھائیے، یہ مسئلہ اس قوم کے زندہ رہنے کا نہیں ہے، مہذب انسانی زندگی اور وحشیانہ زندگی میں انتخاب کا ہے، خدا کے لیے اس ملک میں مہذب زندگی کی بنیادوں کو یوں نہ کھُدنے دیجیے۔" اگست ۱۹۴۷ء میں ملک آزاد ہوا لیکن آزادی اپنے ساتھ کشت و خون کا ایک سیلاب لائی۔ ذاکر صاحب کے دل پر درد نے ان زہریلی فضاؤں میں تڑپ کر آل انڈیا ریڈیو دہلی سے قوم کو مخاطب کیا۔[۵]

"اپنی انسانیت کو بچاؤ، اپنی قوم کے مہذب زندگی کے حق کو تلف نہ ہونے دو، تہذیب اور انسانیت و شرافت کی وہ ساری پونجی جو ہم نے غلامی کی کٹھن و پر آفات میں نفاق کی آگوں سے، خود غرضی کے طوفانوں سے بچا رکھی تھی، اسے آزادی کی پو پھٹتے وقت تباہ ہونے سے بچاؤ، اپنی تعمیری و مادی زندگی کو اس پیارے کام میں کھپا دو جس کی ذمہ داری آزادی نے تمھارے کاندھوں پر ڈالی ہے۔ یہ سمجھ لو کہ اس کام کو نفرت کی گندگی میں لتھڑے ہوئے ہاتھوں اور دلوں سے کبھی انجام نہیں دیا جا سکتا۔ اس کے لیے ضرورت ہے محبت کی، بھرپور اور بے پناہ کی۔"

جامعہ کی ملازمت کے دوران ان کی مستقل مزاجی اور ارادے کی پختگی نے ہزاروں اکھڑے ہوئے قدم جما دیے اور جامعہ کی تو ساری داستان اس جان بازی اور دل سوزی کی امر کہانی ہے جسے یہاں دہرانے کی ضرورت نہیں۔

مہاتما گاندھی کی شہادت پر انھوں نے جو پُرسوز تقریر کی تھی وہ ایک طرف گاندھی جی سے ان کی بے پایاں محبت و عقیدت کی غماز ہیں تو دوسری طرف عدل و سالمیت کی شکست ہونے کی داستان۔ ملک کی تقسیم کے بعد ہندوستان جس سیاسی انتشار کا شکار ہوا علی گڑھ یونیورسٹی بھی اس کی زد میں آئی۔ اس پُرآشوب دور میں ذاکر صاحب کو اس ادارے کی وائس چانسلری قبول کرنا پڑی۔ اس موقع پر انھوں نے فرمایا۔

"مجھے اس کا تصور تسکین دیتا ہے کہ ہندوستانی قومی زندگی کی تعمیر میں اس ادارے کا ایک مقام ہے مجھے اس بات کا یقین نہ ہوتا تو میں جامعہ کے کام چھوڑ کر جس کے ساتھ میری ذہنی اور روحانی نشوونما وابستہ ہے علی گڑھ نہ آتا۔ میں یہاں آنے اور مجھے بلانے پر صرف اس لیے آپ کو راضی کر سکا کہ مجھے صاف محسوس ہوا کہ یہاں اہم قومی کام کا ایک نادر موقع ہے وہ کام ہندوستانی تدبر اور ہندوستانی تعلیم دونوں کا بنیادی کام ہے یعنی ایک طرف سیکولر جمہوری ریاست میں ایک متحدہ قوم کی تعمیر کا کام اور اس کی زندگی میں چار کروڑ مسلمان شہریوں کا حصہ اور مقام . . . علی گڑھ جس طرح آج کام کرے گا، علی گڑھ جس اسلوب پر سوچے گا، علی گڑھ ہندوستانی زندگی کے مختلف شعبوں کی خدمت کے لیے جو پیش کش دے گا اس سے متعین ہوگا ہندوستانی قومی زندگی میں مسلمانوں کا مقام، ہندوستان علی گڑھ کے ساتھ جو سلوک کرے گا اس پر بڑی حد تک اس پر منحصر ہوگی وہ شکل جو ہماری قومی زندگی مستقبل میں اختیار کرے گی۔"

ذاکر صاحب کی آمد سے یونیورسٹی کے ہر شعبے میں اصلاح و ترتیب اور ترقی کے آثار پیدا ہوئے۔ وہ لوگ جو یونیورسٹی کے مستقبل سے مایوس ہو چکے تھے ان میں اُمید و آرزو کی کرن جگمگانے لگی۔ رشید صدیقی صاحب لکھتے ہیں۔[۶]

"جب سے یونیورسٹی ذاکر صاحب کی قیادت میں آئی اس پر وہ نقش و نگار اُبھرنے لگے ہیں جو کہ مدرسۃ العلوم اور اس کے بانی کے نصب العین کی یاد تازہ کرتے ہیں اور کہا جا سکتا ہے کہ تقریباً ایک تہائی صدی تک ایک گونہ بے ثمر رہ کر اس ادارے میں برگ و بار تیزی سے پیدا ہونے لگے۔"

علی گڑھ سے علٰحدگی کے بعد ذاکر صاحب بہار کے گورنر مقرر ہوئے بقول خورشید مصطفٰے رضوی:

"علی گڑھ سے علٰحدگی تعلیم، حرکت اور عمل کے میدان سے علٰحدگی تھی۔"

لیکن ذاکر صاحب نے اپنی گورنری، نائب صدارت اور صدارت کے دور میں جس تدبر اور اعتدال توازن کے نمونے پیش کیے وہ ان کی سیاسی بصیرت اور سوجھ بوجھ کی جیتی جاگتی تصویر ہے ان تمام عہدوں

سے وہ جس خوبی سے عہدہ برآ ہوئے وہ قابلِ صد تحسین ہے۔

ان کے نائب صدارت کے دور میں دارالمصنفین اعظم گڑھ کی گولڈن جوبلی ۲۰ فروری ۱۹۶۵ء میں ہوئی۔ انھیں صدارت کے لیے بلایا گیا یہاں جو خطبۂ صدارت انھوں نے پڑھا وہ نہ صرف زبان و ادب کا نمونہ شہ پارہ ہے بلکہ اس میں انھوں نے ہندوستانی مورخین کو ان کا اصل فرض بھی یاد دلایا ہے۔

"آپ سے میری یہ التجا ہے کہ وحشتوں کی روداد دوسروں کے لیے چھوڑ دیجیے آپ تہذیبوں کی کہانی کہیے اور نئے ہندوستان کو ماضی کی روشنی میں حال کا یہ اہم ترین مسئلہ حل کرنے میں مدد دیجیے۔ مختلف تہذیبوں کے الگ الگ رنگ و آہنگ کو ضروری حد تک قائم رکھتے ہوئے ان میں وہ ہم رنگی اور ہم آہنگی پیدا کیجیے جو ایک متحد و منظم قوم بننے کے لیے ضروری ہے۔"

صدارت کا عہدہ سنبھالتے وقت انھوں نے جو تقریر کی وہ بڑی فکر انگیز اور بصیرت افروز تھی۔ انھوں نے کہا:

"سارا ہندوستان ہمارا گھر ہے اور اس کے باشندے میرا کنبہ۔ عوام نے کچھ عرصے کے لیے مجھے اس کنبے کا سربراہ منتخب کیا ہے۔ میری یہی لگن ہے اس گھر کو مستحکم اور خوبصورت بنانے کی کوشش کروں تاکہ یہ گھر ان عظیم لوگوں کے شایانِ شان بن سکے جو انصاف خوشحالی اور شائستگی کی بنیادوں پر زندگی کو سنوارنے میں لگے ہیں۔"

ذاکر صاحب مجموعۂ خوبی تھے وہ ایک سچے مسلمان ایک قوم پرست ہندوستانی اور محسنِ انسانیت تھے وہ اعلیٰ انسانی اقدار کے حامل اور ان کے پیرو اپنی ساری زندگی رہے۔ آل احمد سرور کا اقتباس ملاحظہ ہو۔

"ذاکر صاحب تمام ہندوستانیوں کے لیے عموماً اور ہندوستانی مسلمانوں کے لیے خصوصاً جینے کا ایک ڈھنگ اور عاشقی کے کچھ آداب دے گئے ہیں انھیں پہچاننا ہی ان کی گراں قدر خدمات کا سب سے اچھا اعتراف ہوگا۔ کاش ہم اس بات کا ثبوت دے سکیں۔"[14]

حواشی:

1. اقتباس منقول از حیاتِ ذاکر حسین، از خورشید مصطفیٰ رضوی۔ ص۔ ۱۱۔
2. انشائیات۔ مضمون ذاکر صاحب از ڈاکٹر عابد حسین۔ ص، ۱۴۷۔
3. ہمارے ذاکر صاحب از رشید احمد صدیقی، ص ۱۵۰۔
4. منقول از مردِ مومن از خواجہ غلام السیدین (ڈاکٹر ذاکر حسین سیرت و شخصیت) مرتبہ عبداللطیف اعظمی ص، ۱۔
5. منقول از مردِ مومن از خواجہ غلام السیدین (ڈاکٹر ذاکر حسین شخصیت و سیرت) مرتبہ عبداللطیف اعظمی ص، ۸۳۔
6. منقول از مردِ مومن از خواجہ غلام السیدین (ڈاکٹر ذاکر حسین، شخصیت و سیرت) مرتبہ عبداللطیف اعظمی، ص ۸۴۔
7. منقول از حیاتِ ذاکر حسین مولفہ خورشید مصطفیٰ رضوی ص۔ ۱۴۵۔
8. اقتباس از حیاتِ ذاکر حسین مولفہ خورشید مصطفیٰ رضوی ص، ۱۵۹۔
9. علی گڑھ میگزین، علی گڑھ نمبر
10. آشفتہ بیانی میری، از پروفیسر رشید احمد صدیقی ص۔ ۶۶۔
11. حیاتِ ذاکر حسین مولفہ خورشید مصطفیٰ رضوی ص ۲۴۵۔
12. اراکین دارالمصنفین سے خطاب، اقتباس از اُردو ادب، ذاکر نمبر، ص۔ ۳۹۔
13. ذاکر حسین، ہندوستانی جمہوریت کا صدر، پبلیکیشنز ڈویژن، وزارتِ نشریات و اطلاعات، حکومتِ ہند، ص ۱۱۔ ۱۲۔
14. مضمون ذاکر حسین کی یاد میں از پروفیسر آل احمد سرور، اردو ادب، شمارہ ۳۔ ۱۹۶۹ ص:

غزل

سب حال سے سرگراں ملیں گے
ماضی کے کتاب خواں ملیں گے

تنکوں کی بھی شخصیت کا سمّان !
شہرود کے پاسباں ملیں گے

مذہب کے حصار میں تو جھانکو !
تہذیب کے نوحہ خواں ملیں گے

پلٹو بھی تو سر ورق زمیں کا
قبروں کے تلے مکاں ملیں گے

قبروں پہ مکاں ، مکاں پہ قبریں
یہ سلسلے جاوداں ملیں گے

سُن کلمۃ المعاشں ، معبود !
معبد تجھے بے اماں ملیں گے

لے دیکھ مری اُڑان کی رو
دُھنکے ہوئے آسماں ملیں گے

رندانِ جنوں نماز ہم سے
بس ہوچکے ، اب کہاں ملیں گے

اچھا تو پھر الوداع ، جاؤ
ہاں سچ تو ہے ـ اب کہاں ملیں گے

اَنہونے سے ہوگئے نہ ہم تم ؟ (ق)
کیا ہوگا ، جو ناگہاں ملیں گے

کیوں شعلوں سے اوس پوچھتی ہو
سب خواب دھواں دھواں ملیں گے

آج اپنے شہاب کو تو رو لے
پھر رونے سے بھی کہاں ملیں گے

شہاب جعفری



آر۔ پی ۔ ۴ ۔ ۹ موریا انکلیو ۔ پیتم پورہ ، دہلی ۱۱۰۰۳۴

گیت

میں اپنے سنگ اکیلی ، ترے ساتھ پیا ہرآ
تجھے دیکھ حسد مجھے آئے ، جلے اندر اندر جا
سکھی تو سچ مچ ہے دھنوان

ترے دوارے نیم کی چھایا ، چھایا میں بیٹھی بکھر
دالان میں ساس کی کھٹیا ، دروازے سسر کی لاٹ
الگنی پہ گیلے کپڑے ، کھونٹی پہ پیا کی ٹو
تیری رچی بسی یہ دُنیا ، ترا بھرا پُرا یہ مد
سکھی تو سچ مچ ہے دھنوان

کھپریل پہ چڑھتی بیلیں ، کچھ کچے پکے کد
ساجن آنکھوں کے آگے ، تھالی میں تِل کے لڈ
آنگن میں اُگی اجوریا ، گودی میں چُنّو مُنّ
ترے رنگ بھرے نینوں میں ، کیسا پیارا اجیما
سکھی تو سچ مچ ہے دھنوان

کچھ بول سکھی کیوں چپ ہے ، کیوں آج ترا من بھا
کیا قید لگے ہے تجھ کو ، یہ گھر کی چار دِواز
تو کیا جانے ، میں جانوں ، یہ قید ہے کتنی پیار
تجھے کاٹ رہا ہے پنجرا ، مجھے پنجرے کا ارما
سکھی تو سچ مچ ہے دھنوان

ترے بھاگ میں گھر اور بچے ، مرے حصے میں مجبو
تو کتنی پوری پوری ، میں کتنی لگوں ادھو
اور اسی ادھورے پن میں ، جینا بھی سکھی ضرو
بابا کی غریبی پوچھے ، تو کاہے ہوئی ؟
سکھی تو سچ مچ ہے دھنوان

ظفر گورکھپوری



۴/۶ ـ ایف ، نیو میونسپل کالونی ، دیونار ، بمبئی ۴۰۰۰۸۸

علی امام نقوی

سراب

اُن دونوں کو کھجور کے درخت کی تلاش تھی۔ جستجو کے اس سفر نے اُنھیں بُری طرح تھکا دیا تھا' اور درد تھا کہ بڑھتا ہی جارہا تھا' درد نے اُن کی آنکھوں میں اُمّید کے جو چراغ روشن کیے تھے اب اُن کی لو ٹمٹمانے لگی تھی' اور وہ بزرگ ہستیاں جنھوں نے اُن دونوں کو یہ باور کرایا تھا کہ تمھارا درد اسی صورت میں زائل ہوگا جب کہ تم کسی خرمے کے ٹنڈمنڈ درخت کے قریب پہنچو اور اپنے جسم کے زیریں حصّے کو اس بے برگ و بار درخت سے مَس کردو۔ تمھارے جسم کے تمسّک سے وہ درخت مزیّن ہوگا۔ اُس پہ خرمے آجائیں گے اور ــــ تم درد سے نجات پا جاؤگی جس دن سے ان بزرگ ہستیوں نے یہ نسخۂ درماں تجویز کیا تھا اُسی روز سے اُن دونوں نے کھجور کے درخت کی تلاش شروع کردی تھی۔ لیکن کھجور کا درخت اُس بستی میں انھیں اب تک دکھائی نہ دیا تھا اور پھر وہ بزرگ ہستیاں بھی . . . . .

شام کو اپنے اپنے گھر جانے سے پہلے دونوں کیفے اطمینان میں بیٹھ' اپنی دن بھر کی جستجو کی روداد ایک دوسرے کو سنایا کرتیں۔ آج بھی دونوں کیفے کے ایک پُرسکون گوشے میں بیٹھی تھیں' دونوں کے سامنے جُوس کے گلاس رکھے تھے۔

"کیا رہا ملڈریڈ۔؟"

"ایک درخت نظر تو آیا ہے ممتاز۔"

"کہاں۔؟"

"سینٹ زیویرس چرچ کے پیچھے۔"

"پھر تم نے اپنا جسم . . ."

"نہیں ــــ میں نے اسے دیکھا تو سورج اپنا سفر ختم کر رہا تھا۔ اور چرچ کے عقبی حصّے کا دروازہ چوکیدار بند کرچکا تھا . . . لیکن آج . . . میں آج تمھارے چہرے پر کسی قدر اطمینان دیکھ رہی ہوں۔ کیا تم بھی . . ."

"ہاں ــــ!"

ممتاز کے ہونٹوں پر ہلکا سا تبسّم رقصاں تھا۔ ملڈریڈ نے ممتاز کے ہونٹوں پر رقص کرتے تبسّم کو معنی خیز نظروں سے دیکھا پھر اُس کی طرف جھکتے ہوئے اُس نے پوچھا:

"تمھارے اپنے کیا کہتے ہیں۔؟"

"کس مسئلے پر؟"

"اسی درد کے پرابلم پر۔"

"ان کی آنکھوں میں ٹہلتی ہوئی بے یقینی اور شبہات مجھے صاف نظر آتے ہیں۔"

"تمھارے اپنوں نے کسی ذاتی . . ."

"ذاتی . . . ہاہاہا . . . اب . . . تو . . . اب تو۔"

"ہاں ــــ اسپیشلسٹوں کا زمانہ ہے۔ میرے اپنوں نے بھی Gynochologist سے میرا چیک اَپ کرایا تھا۔"

"پھر کیا رہا؟"

"اُس نے کہا میرا علم کہتا ہے یہ لڑکی . . ."

"پھر؟"

"پھر یہ کہ بڑی بوڑھیوں کی حیرت دوچند ہوگئی۔"

"میرے اپنے بھی حیرتوں میں مبتلا ہیں۔ لیکن زیادہ حیرت انھیں اس پر ہے کہ آثار . . . تم . . . تم سمجھ رہی ہونا۔؟"

"ہاں۔ ہاں۔ میں کیوں نہ سمجھوں گی۔ لیکن ہوگا کیا؟"

"جب ہوگا۔ تب ہوگا۔ ابھی تو مسئلہ یہ ہے کہ اس درد سے نجات کیسے ملے؟"

"میں نے تو بڑی بوڑھیوں کے مشوروں پر کھجور کے درخت کو ڈھونڈنا شروع کردیا ہے۔"

"اور تم نے اُس کا پتا بھی لگا لیا۔"

"ہاں ــــ بس اب . . . جوں ہی میں اپنے جسم کے زیریں حصّے کو اُس درخت سے مس کروں گی مجھے درد سے نجات مل جائے گی۔ اور وہ درخت . . . اور میں۔"

"کہتی تو میری بڑی بوڑھیاں بھی یہی ہیں۔"

"اس کی مصلحت وہی جانے۔"

"کل . . . کل پتا چل ہی جائے گا۔"

دوسرے روز وہ پھر کیفے کے اُسی گوشے میں بیٹھی تھیں، تھکن ان کے پیروں کی زنجیریں



چکی تھی ۔ اور ان کی آنکھوں میں گزرے ہوئے کل تک جلنے والے چراغ کی لو خاموش ہو چکی تھی ۔ ناکامی کے صدمے نے ان کے چہروں پر گہرے اثرات چھوڑے تھے ، مایوسی آنکھوں کے نیچے سیاہ حلقوں میں اپنا وجود پھیلا چکی تھی ۔ دونوں بنا پلکیں جھپکائے ایک دوسرے کو دیکھ رہی تھیں ۔ پتلیاں اک ذرا اُوپر نیچے ہو کر ان کی زندگی کی گواہی دے رہی تھیں ۔

یہ ۔ ۔ ۔ یہ د ۔ د ۔ ۔ ۔ ۔ جان لے کر ٹلے گا ۔"

" لگتا ہے ۔"

" جانتی ہو ـــــ آج جب ـــــ میں قبرستان کے عقبی سرے پر اس درخت کے پاس پہنچی تو کیا ہوا ہے ؟"

" تمھیں پتہ چلا ہوگا ۔ وہ درخت ۔ ۔ ۔ کھجور کا نہیں ہے ۔"

" ہاں ـــ لیکن ۔ ۔ ۔ لیکن تمھیں کیسے پتہ چلا ؟"

بے اختیار ممتاز نے سوال کیا ۔ پھر فوراً ہی اُسے یاد آیا کہ کل ملڈریڈ نے بھی ایک ـــ درخت تلاش کیا تھا ۔ اور درد جو ـــــ ہمارے وجود کا لازمی حصّہ بن چکا ہے ۔ اسے بھی آج اسی درخت کے پاس لے گیا ہوگا ۔ اور ۔ ۔ ۔ اور ۔ ۔ ۔ اور ۔ ۔ ۔

" پھر کیا ہوا تمھیں معلوم ہے ؟"

" وہاں کسی نے تم سے کہا ہوگا ۔ اس بستی میں کھجور کے درخت نہیں اُگتے ۔"

" ہاں ـــ یہی جواب ملا ۔ اور اس کے بعد پتا چلا کہ ' او بیرائے شاور میں ایک زمیندار ٹھہرا ہوا ہے ۔"

" جس کی زمین پر خرمے کاشت ہوتے ہیں "ـــ ممتاز نے بات مکمل کی اور وہ ۔ ۔ ۔

دوسرے روز سورج کا چہرہ اُتر چکا تب ان کی ٹیکسی او بیرائے شاور کے پورچ میں رُکی ۔

ہوٹل کے دراز قد سکھ دربان نے مسکراتے ہوئے آگے بڑھ کر ٹیکسی کا دروازہ کھولنے کے بعد ان دونوں کو سلام کیا ۔ دونوں نے لابی منیجر سے اُس زمیندار کی بابت دریافت کیا ۔ لابی منیجر نے معنی خیز نظروں سے ان دونوں کو دیکھتے ہوئے بتایا کہ زمیندار ہوٹل کی تیئسویں منزل پر سنگاپور سوٹ میں مقیم ہے ۔ خودکار لفٹ کے ذریعے وہ تیئسویں منزل پر پہنچیں لفٹ سے باہر آتے ہی ان کی نظروں نے سنگاپور سوٹ کو ڈھونڈا ـــــ

" کہاں جانا ہے آپ کو ؟"

" سنگاپور سوٹ ۔"

" اوہ ـــــ"

روم سروس گرل کے ہونٹ سیٹی بجانے کے انداز میں سمٹے ، پھر اُس نے مسکراتے ہوئے ایک دروازے کی طرف اشارہ کر دیا ۔ دونوں شکریہ ادا کرنے کے بعد آگے بڑھ گئیں ۔ دو قدم ـــ بس دو قدم ہی انھوں نے بڑھائے ہوں گے ۔ پھر دونوں ہی ساتھ رُک گئیں ۔

" دل دھڑک رہا ہے ۔ ۔ ۔ زور زور سے ۔" ملڈریڈ بولی

" ہوں ۔"

" پیر دیکھو ۔ کانپ رہے ہیں ۔"

" میرے بھی ۔"

" ہاتھ بھی لرز رہے ہیں ۔"

" ہاں ۔"

" اور ۔ ۔ ۔ اور درد کچھ کچھ ٹھہر گیا ہے ۔"

" میرا بھی یہی حال ہے ۔"

کانپتے پیروں سے وہ دونوں آگے بڑھیں ۔

چند ثانیہ بعد ملڈریڈ اپنی لرزتی ہوئی انگلی سے نوک کر رہی تھی ۔ چند ہی لمحوں بعد اک ذرا سا دروازہ کھلا ۔ خمار میں ڈوبی دو آنکھوں نے انھیں دیکھا ۔ دوسرے ہی پل دروازہ کھلتا چلا گیا ۔ ایر کنڈیشنڈ سوٹ میں قید وہسکی کی بو دروازہ کھلتے ہی ان کے نتھنوں پر حملہ آور ہوئی ۔ ممتاز نے ناگواری سے منہ بنایا ۔ ملڈریڈ نے اُسے دیکھتے ہوئے سرگوشیانہ انداز میں کہا :

" موم ـــ د ۔ د ۔ ۔ ۔ کسی خاص پوائنٹ پر رُک گیا ہے ۔"

" ہوں ـــ" ہونٹ ہلاتے بنا ممتاز نے ہنکاری بھری ۔

" آؤ ۔"

ملڈریڈ نے اس کا ہاتھ تھاما ۔ ممتاز نے چونک کر ماحول کا جائزہ لیا ۔ سوٹ میں سات آٹھ لڑکیاں اِدھر اُدھر صوفوں اور غالیچے پر بیٹھی ہوئی تھیں ۔ وسطی صوفے پر زمیندار نیم دراز تھا ۔ اس کے پہلو میں بھی دائیں بائیں دو خوب صورت لڑکیاں نیم دراز تھیں ۔ صوفے کے بالائی حصّے پر ان کے سر ٹکے ہوئے تھے اور ان کی آنکھوں پر نوٹ رکھے ہوئے تھے ۔ زمیندار نے غور سے ان دونوں کو دیکھا ۔ تپائی پر سے وہسکی کا بھرا ہوا گلاس اٹھانے کے بعد وہ ممتاز کی طرف بڑھا اُس نے وہسکی کا گلاس اس کے ہونٹوں سے لگانا چاہا تو ممتاز نے نفی میں سر کو جنبش دی ۔ ایک معنی خیز نگاہ ممتاز پر ڈالنے کے بعد اُس نے جیب میں ہاتھ ڈالا اور دوسرے ہی لمحہ جب اس کا ہاتھ جیب سے باہر آیا تو خوشی کے مارے ممتاز کھل اٹھی ۔ اس کی ہتھیلی پر دو بے حد خوب صورت تھیلے چمک رہے تھے ۔ زمیندار نے وہسکی کا گلاس ملڈریڈ کی طرف بڑھایا اور جمنہ

کے کانوں کو ان جھمکوں سے آراستہ کر دیا۔ ممتاز خوش تھی۔ درد جو کسی خاص نکتے پر ٹھہر سا گیا تھا، خربے کی کاشت کرنے والے کے پاس اُسے لے آیا تھا۔ اور اب وہ دیکھ رہی تھی۔ ہر لڑکی کے کان سونے کے بڑے بڑے آویزوں سے مزین تھے۔ ان کی آنکھوں پر نوٹ رکھے ہوتے تھے اور ملڈریڈ کے ہونٹوں پر زمیندار کے ہونٹ۔ زمیندار کچھ کہنے کی خاطر پل بھر کے لیے سر اٹھاتا اور پھر۔۔۔

"یہ کیا کہہ رہے ہیں؟" اس نے بائیں طرف بیٹھی ایک لڑکی سے پوچھا ــــــــ

"تم کیا کہہ رہی ہو؟" اس لڑکی نے اُس سے پوچھا۔ لیکن اُس نے تو بس اس کے متحرک ہونٹ ہی دیکھے تھے۔ کوئی آواز اُس کی سماعت سے نہیں ٹکرائی تھی۔

"میں پوچھتی ہوں، یہ کیا کہہ رہے ہیں؟" اس نے دوسری لڑکی سے معلوم کیا۔

"تم نے کچھ کہا، مجھے۔۔۔ کچھ سنائی نہیں دے رہا۔"

جھنجھلاتے ہوئے اس نے ملڈریڈ کا ہاتھ پکڑ کر کھینچا اور چیخ کر اُس سے دریافت کیا۔

"یہ۔۔۔ یہ زمیندار کیا کہہ رہے ہیں؟"

اور ـــ جواب میں اُس نے دیکھا ــ ملڈریڈ کچھ کہہ رہی ہے۔ کہہ رہی ہے یا کہنا چاہتی ہے۔ ممتاز نے مڑنے کے بعد زمیندار کو دیکھا اور اس سے پوچھا ــــــــ

"تم کیا کہہ رہے تھے؟"

جواب میں زمیندار نے ممتاز کے ہونٹوں پر اپنے ہونٹ رکھ دیے۔ ممتاز کے اندر، جانے کہاں، شاید رگ رگ میں یا کسی خاص نقطے پر، خود سپردگی کا جذبہ مچلنے لگا۔ اُس کی آنکھوں میں رنگین تتلیاں اڑنے لگیں۔ بند ہوتے ہوتے پلکوں کے کواڑ کی جھری سے اُس نے شیشے کی دیوار کے اُس پار، درد سے بے تاب بحیرۂ عرب کی موجوں کو دیکھا۔ دیکھتی رہی۔ دیکھتی ہی رہی۔ درد، کا دُور دُور پتا نہ تھا ــــــــ

⬡

دہلی کے مشائخ کی ادبی خدمات

یہ ایک تسلیم شدہ حقیقت ہے کہ اردو زبان و ادب کی ترویج و ترقی میں ہندوستان کے صوفیائے عظام اور مشائخین کرام کا اہم کردار رہا ہے اور سچ تو یہ ہے کہ اُردو نظم و نثر کا ذخیرہ ان مقدس ہستیوں کا مرہون منت ہے۔ حضرت نظام الدین اولیا نے فرمایا ہے کہ "انسانی ذہن نثر کی بہ نسبت نظم سے جلد اور زیادہ متاثر ہوتا ہے" چنانچہ اکثر مشائخین متقدمین نے تبلیغِ حق کے لیے نظم ہی کو وسیلہ بنایا لیکن ایسا نہیں کہ انھوں نے نثر کی اہمیت اور افادیت کو نظر انداز کر دیا ہو۔ جہاں نثر کی ضرورت تھی وہاں انھوں نے نثر سے بھی کام لیا ہے اس طرح ان کی تحریریں ان دونوں اصناف ادب کے فروغ کا ذریعہ بنی ہیں۔

اس کتاب میں محبوب الٰہی حضرت نظام الدین اولیا سے لے کر سحبان الہند مولانا احمد سعید دہلوی تک ایسے ۱۳ اکابرین علم و تصوف کے حالات اور ان کی بالواسطہ یا بلاواسطہ لسانی اور ادبی خدمات کا جائزہ پیش کیا گیا ہے، جو دہلی کی سرزمین سے وطنی نسبت رکھتے ہیں۔ کتاب کی مصنفہ بیگم ریحانہ فاروقی خود دہلی کی ایک بڑی درگاہ کی نگراں ہیں اور یہاں کے اکابرین علم و تصوف کے بارے میں ان کی معلومات بہت وسیع ہیں۔ یہ کتاب ان معلومات کا نچوڑ ہے۔

مصنفہ : بیگم ریحانہ فاروقی
صفحات : ۸۴
قیمت : ۲۱ روپے

دِلّی کی درگاہ شاہِ مرداں

دلّی کی درگاہ شاہ مرداں کے بارے میں عام خیال یہ تھا کہ محمد شاہ بادشاہ کی بیگم نواب قدسیہ نے قدم شریف حاصل کرکے اس جگہ نصب کیا تھا۔ یہ بھی خیال تھا کہ نواب قدسیہ ہی نے علی گنج آباد کیا تھا اور درگاہ شاہ مرداں تعمیر کی تھی۔ ڈاکٹر خلیق انجم نے اس کتاب میں مدلل طریقے سے ثابت کیا ہے کہ نواب قدسیہ کے زمانے سے دو سو سال قبل بھی قدم شریف یہیں موجود تھا۔ انھوں نے فارسی زبان کی مختلف تاریخوں کے حوالے سے ان تمام مزارات کی بھی نشاندہی کی ہے جو شاہِ مرداں کے احاطے میں واقع تھے اور بعد میں مسمار کر دیے گئے۔

کربلا اور شاہِ مرداں کی تاریخ، اس کی عمارتوں اور وہاں مدفون لوگوں پر یہ پہلی کتاب ہے ــ ڈاکٹر خلیق انجم دہلی کے ایک قدیم خاندان کے چشم و چراغ اور اس تہذیبی فضا کے پروردہ ہیں جسے دہلویت سے موسوم کیا جاتا ہے ــ دہلی اور متعلقاتِ دہلی کے ساتھ جو گہرا تعلق خاطر دہلی والوں کی پہچان رہا ہے، وہ اس کتاب کے ایک ایک نقطے میں جلوہ گر ہے۔

کتاب بہت سی تاریخی عمارتوں کی تصویروں سے بھی مزین ہے جو فاضل مصنف نے خود اپنے کیمرے سے لی ہیں۔

مصنف : ڈاکٹر خلیق انجم
صفحات : ۱۷۴
قیمت : ۳۳ روپے

اُردو اکادمی، دہلی سے طلب کریں

نیّر مسعود

سرشار کا ناول "پی کہاں"

رتن ناتھ سرشار کے ناول "پی کہاں" کا پلاٹ اس طرح ہے:

۱

راحت ایک بڑے تعلقہ دار کا لڑکا تھا۔ تعلقہ دار کی وفات ہوگئی تو راحت کے چچا نے تعلیم دلانے کے بہانے راحت کو علاقے سے نکال دیا۔ اس کی ماں کے ساتھ شادی کر کے اسے قریب قریب خانہ قید کر دیا اور پرانے ملازموں کو دھمکی دی کہ اگر انھوں نے راحت کو تلاش کرنے کی کوشش کی تو ان کا انجام برا ہوگا۔

۲

راحت کی پرورش شہر میں ایک شخص نے کی جو ایک رئیس آسمانی نواب کی ڈیوڑھی پر داروغہ تھا۔ راحت کو اسی داروغہ کا لڑکا سمجھا جاتا تھا۔ نواب کی بیٹی نور جہاں کو پڑھانے کے لیے جو مولوی صاحب مقرر کیے گئے انھیں سے راحت نے بھی پڑھنا شروع کیا۔ لیکن جب نور جہاں سیانی ہوئی تو اسے راحت سے پردہ کرایا جانے لگا۔ تب بھی وہ اور راحت کوٹھے کوٹھے پر اشاروں میں باتیں کیا کرتے رفتہ رفتہ ان کی محبت عشق میں بدل گئی۔ نواب نے یہ دیکھا تو داروغہ اور راحت کو شہر سے نکل جانے کا حکم دے دیا۔

۳

نور جہاں کی اصلاحِ حال کے لیے اسے ایک جنگل کے مکان میں بھیج دیا گیا اور چار لڑکیاں اس کی دیکھ بھال کے لیے ساتھ کر دی گئیں۔ لیکن نور جہاں کا عشق زور پکڑتا گیا۔ برسات میں ایک بار آدھی رات کو اس کی آنکھ کھلی تو اسے مکان کے باہر "پی کہاں پی کہاں" کی آواز سنائی دی۔ پپیہے کی یہ آواز سن کر نور جہاں نے بھی "پی کہاں، پی کہاں" کی آواز لگانا شروع کر دی۔ ساتھ کی لڑکیاں جاگ اٹھیں۔ انھوں نے سمجھا بجھا کر اسے سلا دیا اور خود بھی سو گئیں۔ کچھ دیر بعد پپیہا پھر بولا۔ نور جہاں اٹھ کر بیٹھ گئی۔ لیکن اس بار کچھ بولے بغیر وہ مکان سے باہر آگئی اور اس سے کھنڈر کی پانچویں منزل پر چڑھ گئی جس سے ملے ہوئے شیشم کے ایک درخت پر پپیہے کا گھونسلا تھا۔ اس نے گھونسلے میں ہاتھ ڈال کر ایک پپیہے کو نکال لیا۔

صبح کو لڑکیوں نے دیکھا کہ نور جہاں باہر زینے پر سو رہی ہے۔ ہاتھ میں ایک پپیہا ہے اور اوپر ایک پپیہا چیخ رہا ہے۔ نور جہاں جاگی تو اسے کچھ یاد نہ تھا کہ وہ اپنے کمرے سے نیچے اتر کر باہر کب آئی اور پپیہا اس کے ہاتھ میں کیوں کر آگیا۔ لڑکیوں نے پپیہے کے لیے ایک پنجرے کا انتظام کر دیا۔

۴

اس عرصے میں راحت کے سوتیلے باپ کی وفات ہوگئی۔ آسمانی نواب کے یہاں سے نکالے جانے کے بعد وہ اسی داروغہ کے ساتھ اپنے علاقے پر پہنچ گیا اور اچانک نہایت ثروت مند ہوگیا لیکن نور جہاں کا خیال اسے بے چین رکھتا تھا۔ اسے پتا نہیں تھا کہ نور جہاں کہاں اور کس حال میں ہے۔ وہ جانتا تھا کہ اس کے یہاں خاندان سے باہر شادیاں نہیں ہوتیں تاہم جب اسے معلوم ہوا کہ اس کی شادی رشتے کی ایک بہن کے ساتھ ٹھہر رہی ہے تو وہ صدمے سے بیمار پڑ گیا۔ اس نے اپنے بے تکلف دوست کشوری لال کو نور جہاں کا پتا لگانے پر مامور کر دیا۔

۵

نور جہاں کو ایک ذریعے سے خبر ملی کہ اس کے ماں باپ نے ایک اور جگہ اس کی شادی کرنے کا فیصلہ کر لیا ہے تو وہ بے ہوش ہوگئی۔ جب اس کی ماں اور خالہ زاد بہن وغیرہ اس کی قیام گاہ پر پہنچیں تو انھیں نور جہاں کی "پی کہاں" کی رٹ کا حال معلوم ہوا۔ باتوں باتوں میں خالہ زاد بہن نے نور جہاں کو اس کی شادی کی بات بتائی اور اس پر اس کا چہرہ متغیر دیکھ کر داروغہ کے لڑکے کو کوسنے لگی نور جہاں پر اس کا اتنا اثر ہوا کہ وہ غش کھا گئی۔ شہر سے بہن کے شوہر آئے تو پپیہے والا واقعہ سن کر گھبرا گئے اور کہنے لگے کہ یہ بڑا خطرناک عارضہ ہے کہ مریض سوتے میں کچھ کام کرے اور پھر سو جائے۔ عارضے کا نام انھوں نے "سامنام بولزم" بتایا۔

۶

کشوری لال نے پتا لگا کر راحت کو بتایا کہ نور جہاں کو شہر سے باہر کسی مکان میں رکھا گیا ہے وہ "پی کہاں، پی کہاں" پکارتی رہتی ہے، غم سے گھل گئی ہے اور عجب نہیں ہے کہ بالکل ہی پاگل ہو جائے یہ سن کر راحت پر اختلاج کا دورہ پڑ گیا۔ حکیم صاحب بلوائے گئے انھوں نے بتایا کہ راحت کو کوئی بڑا صدمہ پہنچا ہے۔ اب داروغہ نے آسمانی نواب کے یہاں

"ادبستان" دین دیال روڈ، لکھنؤ ۲۲۶۰۰۳

کے واقعات بتائے۔ حکیم صاحب نے کہا کہ وہ آسمانی نواب سے بخوبی واقف ہیں اور نور جہاں ان کے زیرِ علاج رہ چکی ہے۔ راحت کی ماں کو سب حال بتایا گیا اور یہ طے ہوا کہ آسمانی نواب کے یہاں پیغام دیا جائے اور انھیں بتایا جائے کہ راحت داروغہ کا لڑکا نہیں بلکہ ایک علاقے کا راجا ہے۔

۷

نور جہاں کی والدہ اور بہن اس کے ساتھ جنگل والے مکان میں رک گئی تھیں۔ اس نے کچھ دن ان کا لحاظ کیا لیکن آخر پھر وہی "پی کہاں، پی کہاں" کی رٹ لگانے لگی۔ ایک حکیم نے اُسے دیکھ کر عشق کا شبہہ ظاہر کیا۔ شہر سے آسمانی نواب ایک ڈاکٹر کے ساتھ بلائے گئے۔ مگر نور جہاں نے ڈاکٹر کے سوالوں کے جواب میں "پی کہاں" کے سوا کچھ نہ کہا۔ یہ حال دیکھ کر گھر والوں نے مجبوراً فیصلہ کیا کہ داروغہ کے لڑکے کو تلاش کر کے اس کے ساتھ نور جہاں کی شادی کر دی جائے۔

۸

دوسرے دن داروغہ اور حکیم صاحب جنگل والے مکان پر پہنچ گئے نواب صاحب وغیرہ کو راحت کی اصل حیثیت کا علم ہوا تو سب بہت خوش ہوئے چونکہ راحت کی حالت اچھی نہیں تھی اس لیے فیصلہ ہوا کہ نور جہاں کو لے کر سب لوگ اس کے یہاں جائیں۔ نور جہاں نے پنجرے والے پپیہے کو آزاد کر دیا۔ قافلہ روانہ ہوا۔ نور جہاں خوش تھی۔ مگر کبھی کبھی اس کا دل بیٹھنے لگتا تھا۔ راستے میں خبر ملی کہ راحت کی حالت اور بگڑ گئی ہے اتنے میں درخت پر ایک پپیہا بولا۔ سنتے ہی نور جہاں بھی "پی کہاں، پی کہاں" چلانے لگی۔

۹

آخر سب وہاں پہنچ گئے۔ نور جہاں کو راحت کے قریب بھیجا گیا۔ اس نے نور جہاں کو دیکھا لیکن کچھ بول نہ سکا اور تھوڑی دیر میں مر گیا۔ نور جہاں نے لاش کی گردن میں باہیں ڈال کر اس کے دونوں رخسار چومے۔ تین بار "پی کہاں" کی صدا بلند کی اور دم توڑ دیا۔

اس پلاٹ پر لکھے جانے والے ناول میں سرشار نے واقعات کی پیش کش اور ابواب[1] کی ترتیب اس طرح رکھی ہے:

باب ۱

نور جہاں کا جنگل والا مکان۔ وہ پپیہے کی آواز سن کر خود بھی ویسی ہی آواز نکالتی ہے۔ ست کھنڈے پر جا کر پپیہے کو پکڑتی ہے۔ لڑکیاں اسے پپیہے کو ہاتھ میں لیے بنچ پر سوتا ہوا پاتی ہیں۔

باب ۲

راحت کا محل جہاں وہ دو دن پہلے پہنچا ہے۔ اہل کاروں کی گفتگو کے ذریعے ہمیں اس کے باپ کی وفات پر ماں سے چچا کی شادی، چچا کی وفات اور راحت کی واپسی کے بارے میں بتایا جاتا ہے۔

باب ۳

آسمانی نواب کا مکان۔ وہ اپنی بیگم کو بتاتے ہیں کہ انھوں نے داروغہ اور اس کے لونڈے کو نکال دیا ہے۔ دونوں اپنی بیٹی کی شادی کے بارے میں باتیں کرتے ہیں۔

باب ۴

جنگل والا مکان۔ نور جہاں کو پتا چلتا ہے کہ اس کی شادی کہیں اور ٹھہر رہی ہے اور وہ بے ہوش ہو جاتی ہے۔

باب ۵

راحت کا محل۔ راحت کستوری لال کو بتاتا ہے کہ ماں اس کی شادی چچا زاد بہن سے کرنا چاہتی ہے لیکن وہ انکار کر چکا ہے۔ وہ کستوری لال سے نور جہاں کا پتا لگانے کو کہتا ہے۔

باب ۶

جنگل والا مکان۔ نور جہاں کی ماں اور بہن وغیرہ آتی ہیں بہن کے شوہر بتاتے ہیں کہ اسے خواب خرابی کا عارضہ ہو گیا ہے۔

باب ۷

راحت کا محل۔ کستوری لال سے نور جہاں کی حالت سن کر راحت پر دورہ پڑ جاتا ہے حکیم صاحب آتے ہیں اور اب داروغہ آسمانی نواب کے یہاں اپنی ملازمت، راحت کی پرورش اور نور جہاں سے اس کے معاشقے کا حال سناتا ہے۔ داروغہ اور حکیم آسمانی نواب سے ملنے روانہ ہوتے ہیں۔

باب ۸

جنگل والا مکان۔ حکیم، آسمانی نواب اور ڈاکٹر آتے ہیں۔ داروغہ کے لڑکے سے نور جہاں کی شادی کا فیصلہ ہوتا ہے حکیم اور داروغہ پہنچتے ہیں۔ معاملات طے ہو جاتے ہیں۔

باب ۹

سب لوگ راحت کے یہاں کے لیے نکلتے ہیں راستے میں راحت کی خراب حالت کی خبر ملتی ہے۔ نور جہاں پھر جنونی کیفیت میں مبتلا ہو جاتی ہے سب راحت کے یہاں پہنچتے ہیں۔ راحت مر جاتا ہے۔ نور جہاں بھی مر جاتی ہے۔

ناول کی اصل کہانی یا پلاٹ کا اس کے ابواب سے مقابلہ کرنے پر یہ حقیقت سامنے آتی ہے کہ سرشار نے اپنے بیانیے میں کچھ ایسے تصرفات کیے ہیں کہ کہانی کی زمانی ترتیب اور ناول کی بیانی ترتیب میں فرق ہو گیا ہے۔ "پی کہاں" کے پلاٹ کے بیان میں ہم نے واقعات کی زمانی ترتیب قائم کر کے انھیں نو حصوں میں تقسیم کر دیا ہے۔ سرشار نے ناول بھی نو ابواب میں تقسیم کیا ہے دونوں

۱۔ ناول کے نام "پی کہاں" کی رعایت سے سرشار نے اس کے ہر باب کو "ہوک" کا نام دیا ہے۔

تقسیموں کے فرق کا اندازہ اس سے ہو سکتا ہے کہ پلاٹ کا پہلا حصہ ناول کے دوسرے باب میں، دوسرا حصہ تیسرے اور ساتویں باب میں، تیسرا حصہ پہلے باب میں، چوتھا حصہ دوسرے اور پانچویں باب میں، پانچواں حصہ چوتھے اور چھٹے باب میں، چھٹا حصہ ساتویں باب میں، ساتواں حصہ آٹھویں باب میں، آٹھواں حصہ آٹھویں اور نویں باب میں رکھا گیا ہے۔ پلاٹ کا نواں حصہ یعنی نورجہاں اور راحت کی ملاقات اور موت البتہ ناول کے نویں باب کے مطابق ہے۔

قصے کی زمانی اور بیانی ترتیب میں فرق عموماً اس لیے کر دیا جاتا ہے کہ اس سے قصے میں تجسس کا عنصر بڑھتا ہے جس کی وجہ سے قاری کی دلچسپی برقرار رہتی ہے۔ "پی کہاں" کے پلاٹ میں تجسس اور دلچسپی کے کوئی خاص عناصر موجود نہیں ہیں۔ یہ ایک عام روایتی قسم کی کہانی ہے جس میں بچپن کا لگاؤ عشق میں تبدیل ہو، مفارقت کا صدمہ موت کا باعث ہوتا ہے۔ ہیروئن کی جنونی کیفیت اور خوابِ خرامی کا عارضہ البتہ دلچسپ چیز ہے۔ چنانچہ سرشار نے ناول کو اسی کے بیان سے شروع کیا ہے مگر اس کی وجہ سے ان کو اس سے قبل کے واقعات براہِ راست کے بجائے بالواسطہ بیان کرنے پڑے ہیں، اور وہ بھی منتشر صورت میں۔ راحت کے باپ کی وفات، راحت کی جلاوطنی اور ماں سے بچی کی شادی کا تذکرہ دوسرے باب میں دیوان جی کی زبان سے ہوا ہے۔ داروغہ کا راحت کی پرورش کرنا، آسمانی نواب کے یہاں نورجہاں اور راحت کا ایک دوسرے کی محبت، پھر عشق میں مبتلا ہونا ساتویں باب میں داروغہ کی زبان سے بیان ہوا ہے۔ آسمانی نواب کا داروغہ اور راحت کو نکال دینا تیسرے باب میں نواب اور بیگم کی گفتگو سے، پھر ساتویں باب میں داروغہ کے بیان سے معلوم ہوتا ہے، وغیرہ۔

تجسس پیدا کرنے کے لیے سرشار نے کچھ اور صورتیں بھی اختیار کی ہیں جن میں بعض صرف تجسس پیدا کر کے رہ گئی ہیں۔ مثلاً تقریباً آدھے اور ابواب کے حساب سے دو تہائی ناول تک نورجہاں کو ایک لڑکے کی حیثیت سے پیش کیا گیا ہے، اگرچہ شروع ہی سے قاری کے ذہن میں یہ شبہ بھی پیدا کر دیا جاتا ہے کہ لڑکے کے لباس میں دراصل کوئی لڑکی ہے۔ چھٹے باب میں وہ لڑکی کی صورت میں سامنے آتی ہے اور معلوم ہوتا ہے کہ اس روپ بہروپ کا مقصد کچھ بھی نہ تھا، یوں ہی اس کے ساتھ کی ایک لڑکی نے ہنسی ہنسی میں اسے مردانے کپڑے پہنا دیے تھے۔ چوتھے باب میں ایک سکھ نورجہاں کی قیام گاہ کے باغ میں چلا آتا ہے اور نورجہاں کو گھورنے لگتا ہے۔ پہرے کا سپاہی اسے باہر نکال دیتا ہے۔ اس سکھ کے بارے میں قاری کا متجسس ہونا فطری ہے، لیکن اس کا آنا اور جانا بے علت ثابت ہوتا ہے۔ راحت کے محل کا ایک دالان کی ہر چیز گلابی رنگ کی ہے۔ راحت کی ماں بھی سر سے پاؤں تک گلابی کپڑوں میں ملبوس ہے۔ گلابی رنگ کا یہ زور بڑا تجسس پیدا کرتا ہے، خصوصاً اس لیے کہ راحت کی ماں بیوہ ہے اور اس کے دو شوہر مر چکے ہیں۔ بیوہ عورتیں گلابی لباس نہیں پہنتیں، لیکن یہاں بھی اس رنگ کی فراوانی کا کوئی سبب نہیں بتایا گیا ہے۔ ساتویں باب تک ہمیں یہ بھی نہیں بتایا جاتا کہ نورجہاں کا جنون راحت کے سبب اور راحت کی حالتِ زار نورجہاں کے سبب سے ہے، بلکہ ساتویں ہی باب میں آکر ہمیں معلوم ہوتا ہے کہ ہیرو کا نام راحت حسین ہے۔ ہیروئن کا نام بھی بہت بعد میں معلوم ہوتا ہے۔

قصے میں دلچسپی اور تجسس برقرار رکھنے کی ایک صورت یہ بھی ہوتی ہے کہ اس کی رفتار تیز کر دی جائے۔ سرشار نے اس سے بھی کام لیا ہے اور اس کے لیے یہ طریقہ اختیار کیا ہے کہ ناول کے ابواب کو زمان و مکان کی بہت چھوٹی چھوٹی اکائیوں میں تقسیم کر دیا ہے۔ صرف آٹھویں باب میں کئی دن کے واقعات ہیں۔ باقی ابواب کی کیفیت یہ ہے کہ پہلے باب میں آدھی رات سے صبحِ کاذب تک، دوسرے، تیسرے اور چوتھے باب میں ایک دن کے کچھ حصے، پانچویں باب میں ایک دن اور دوسری صبح، چھٹے باب میں دو دن، ساتویں اور نویں باب میں ایک دن کے واقعات پیش آتے ہیں۔ یہی صورت مکانی اکائیوں کی ہے۔ نویں باب کو چھوڑ کر جس میں نورجہاں کے مکان سے چل کر راحت کے محل تک پہنچنے کے واقعات ہیں، باقی ہر باب کے واقعات کسی ایک جگہ (نورجہاں کے مکان، آسمانی نواب کے گھر یا راحت کے محل میں) رونما ہوتے ہیں۔

غرض سرشار نے "پی کہاں" میں قصہ گوئی کی ان ترکیبوں سے اپنی واقفیت کا ثبوت دیا ہے جو آگے بڑھ کر اردو ناول اور افسانے میں بکثرت اور بخوبی استعمال ہوئیں۔ لیکن خود "پی کہاں" قاری کو پوری طرح اپنی گرفت میں نہیں لے پاتا۔ اس کے خاص سبب دو ہیں۔ ایک تو یہ کہ جا بجا اس کا بیانیہ تجسس سے زیادہ الجھن پیدا کرتا ہے۔ تجسس کا الجھن میں بدل جانا کہانی کی تاثیر کے حق میں زہر کا کام کرتا ہے۔ دوسرے یہ کہ جس بنیاد پر "پی کہاں" کی پوری کہانی قائم ہے اس کو مستحکم کرنے کی طرف سرشار نے توجہ نہیں کی، یعنی آسمانی نواب کے یہاں راحت اور نورجہاں کے بڑھتے ہوئے لگاؤ کو انھوں نے ناول کی اصل بافت سے باہر رکھا ہے اور ساتویں باب میں داروغہ کی زبانی اس زمانے کے واقعات کا صرف حوالہ دیا ہے، وہ بھی اس طرح:

"جس ڈیوڑھی کی داروغگی پر ہم مقرر تھے ان کی ایک لڑکی تھی، بڑی خوبصورت۔ نواب نے اس لڑکی کو پڑھانے کے لیے ایک بڈھا مولوی نوکر رکھا تھا اور یہ لڑکا بھی وہیں پڑھنے لگا۔ جب لڑکی ذرا سیانی ہوئی تو ان صاحبزادے سے پردہ کرانے لگے۔ مگر دونوں

کو یہ روک ٹوک شاق گذری' اور کوٹھے سے' جھروکے سے' اِدھر سے اُدھر سے اشارے بازیاں ہونے لگیں۔ مگر پاک محبت' بدی کا خیال نہ تھا۔ بچپنے کے دن رفتہ رفتہ محبت بڑھتی گئی اور اب عشق کا درجہ ہو گیا۔ نواب نے جو یہ کیفیت دیکھی تو مجھے اور لڑکے کو نکال دیا۔"

اس سرسری حوالے کے بجائے اگر ان واقعات کی تفصیل کو ناول کے کم از کم ایک باب کی صورت دے دی جاتی تو ناول میں جان پڑ سکتی تھی۔

"پی کہاں" سے یہ ضرور ظاہر ہوتا ہے کہ سرشار ایک عمدہ ناول نویس کے اکثر شرائط پورے کرتے ہیں۔ مثال کے طور پر یہ چند اقتباس دیکھیے:

(دیوان کاکجی مل کا اندازِ گفتگو)

"بعد ازاں اس نے بیگم کے ساتھ عقد کر لیا اور اپنے آپ کو ملازمینوں سے راجا صاحب اور بیگم صاحبہ کو رانی صاحبہ کہلوایا' اور جو ان کی پہلی بی بی تھیں وہ چھوٹی رانی باجنے لگیں۔ آیا آپ سب صاحبوں کی سمجھ کے بیچ میں؟ اور کل علاقے اور جائداد پر قبضہ کر کے اس کے مالک بن بیٹھے اور ہم سب ملازمینوں دیرینہ و قدیمہ کو زجر اور توبیخ کے ساتھ فہمائش کی کہ اگر ذرا گردن اٹھاؤ گے اور لڑکے کا کھوج لگاؤ گے تو زندہ چنوا دوں گا۔ اور خبردار بڑی رانی کے پاس نہ جانا... وہ بے دخل ہو گئیں۔ حتیٰ کہ ہم قدیم ملازمینوں ریاست کو ان تک رسائی دوبھر بلکہ کٹھن ہو گئی۔"

(سمانی نواب کی بیگم کی گفتگو)

"اے وہ گھر کیا برا ہے کشمیری دروازے کے پاس جو وثیقے دار رہتے ہیں۔ میں ایک دفعہ خاقان منزل دعوت میں گئی تھی۔ وہاں ان وثیقے دار کی گھر والی کے ساتھ ان کا لڑکا آیا تھا۔ ہماری نوری جہاں کے برابر ہی برابر عمر میں ہوگا۔ لڑکی کی بڑھت ذرا زیادہ ہوتی ہے۔ یہ تیز' وہ نجھگا۔ بس کھیلتے کھیلتے نوری جہاں نے اس کے بال پکڑ لیے تو رونے لگا اور ماں سے لپٹ کر کہا امی جان دیکھیے' یہ لڑکی ہمیں مارتی ہے' سارے بال پکڑ کے نوچ ڈالے۔ اس نے کہا اچھا لڑو نہیں۔ دوسری دفعہ پھر کھیلتے کھیلتے اس نے زور سے ایک چٹاخا دیا تڑ سے۔ بہت رویا' پھر ماں سے شکایت کی۔ اس نے اب کی جھلا کے کہا' ارے تو تو بھی کیوں مار نہیں بیٹھتا؟"

(ماں کی گفتگو)

"سرکار یہ جون مت کھنڈا ہے' اس کے درختے کے پاس گلام کی بو سوتی ہے۔ اس نے ہم سے سوتے سوتے کہا' بابا' رات کو ایک لڑکا ایک کوٹھے پر چڑھ گیا اور وہاں سے پھر اترا' اور وہاں وہ جو بیچ پڑی ہے وہاں لوٹنے لگا۔"

(خط نواب دولہا بنام سمانی نواب)

"التماس یہ ہے کہ بہ خود ملاحظہ نیاز نامہ ہذا آپ ڈاکٹر صاحب کو لے کر روانہ ہو جیے اگر ہومیو پیتھک ڈاکٹر کو لائیے تو دواؤں کا بکس ان کے ساتھ ضرور ہوگا اور اگر ایلوپیتھک ہوں تو ضروری دوا لیتے آئیں۔ اس میں توقف نہ فرمائیے گا۔ سب کی یہی رائے ہے کہ آپ یہاں چلے آئیے۔ طبیعت بہت ناساز ہے۔ بہ ہیئت خدا پر شاکر رہنا چاہیے۔ بڑی بیگم صاحبہ دن رات رویا کرتی ہیں کیوں کہ مریضہ کی بیماری اب مبدل بہ جنون ہے۔ افسوس مگر مرضی خدا۔"

(خط راحت بنام کشوری لال)

"مائی ڈیئر کشوری' ارے یار آنکھیں تم کو دیکھنے کو ترستی ہیں۔ بھائی کچھ پتا لگا یا نہیں؟ تمھارا دوست راحت برائے نام۔"

(ایک شیر کا ذکر)

"آدمی نے کٹہرے میں ہاتھ ڈال کے پکارا: "بچے" وہ شیر خوش ہو کے اٹھا اور ہاتھ چاٹنے لگا جب اس نے ہاتھ نکال دیا اور چھپ رہا تو شیر کٹہرے کے اِدھر اُدھر ڈھونڈنے لگا اور جب آدمی پھر ابھرا تو شیر نے دوڑ کر اس کی جانب کٹہرے پر سر رکھ دیا۔"

اس طرح کی مثالیں اس ناول میں جا بجا ملتی ہیں اور انھیں دیکھ کر یہ احساس ہوتا ہے کہ پی کہاں میں متفرق طور پر ایک اچھے ناول کے عناصر موجود ہیں لیکن انھیں سلیقے سے ترتیب دے کر ایک سانچے میں ڈھالنے کی کوشش نہیں کی گئی ہے۔

نظمیں

آخری گجر

ازل سے اب تک
لبوں سے آزاد
سارے الفاظ
آہٹیں، دھڑکنیں، دھماکے
اتھاہ خاموشیوں کی گہرائیوں میں گم ہیں
ابھی فضائے بسیط کے لب سلے ہوئے ہیں
ابھی فضا اک خموش آتش فشاں ہے
جس میں
لطیف لہروں کا ایک سیال آتشیں بے کراں سمندر مچل رہا ہے
جو بے صدا ہے
تمام آوازیں ایک سانچے میں ڈھل رہی ہیں
تمام آوازیں ایک آواز بن رہی ہیں
وہی اک آواز معتبر ہے
وہ ایک آواز
کوچ کا آخری گجر ہے

پس منظر

سُنا ہے ہم نے
حسین پھولوں پہ رقص کرتی ہوئی
دھنک رنگ تتلیوں سے
ہمارے اجداد پیار کرتے تھے
ہم نے یہ بھی سُنا ہے
ان تتلیوں کی خاطر
ہمارے اجداد نے یہاں بستیاں بسائیں
حسین پھولوں کے باغ اُگائے

مگر انھیں تتلیوں کو
ہم جب بھی دیکھتے ہیں
تو نفرت آمیز خوف کا
اِک عجیب احساس جاگتا ہے
بدن میں اِک جھرجھری سی آتی ہے
ایک ٹھنڈی سی لہر
رگ رگ میں دوڑ جاتی ہے

لیکن
ہمارے بچے
عجیب بچے ہیں
صبح سے شام تک
تعاقب میں تتلیوں کے
بھٹکتے پھرتے ہیں
جنگلوں، جھاڑیوں میں
باغوں میں
بس یہی دُھن
کہ تتلیوں کا شکار کرلیں
پھر اُن کے رنگیں پروں کو نوچیں
اور اپنے البم میں جمع کرلیں

اسلم بدر



۱۵۲ - KF۶، دھات کڈیہہ، جمشید پور (بہار)

دھاری سنگھ دواکر/ترجمہ: جاوید اقبال

سرحد کے پار

شہری حالات آج کل ٹھیک نہیں ہے شام بعد ہی سناٹا چھا جاتا ہے سڑکوں پر۔ پندرہ سولہ ے فرقہ وارانہ آگ کی ایک چنگاری بغل کے قصبے ڑ کر شہر کے ایک محلے پر آن گری تھی۔ قصبے میں کسی بات ے کر ہندوؤں اور مسلمانوں میں مارپیٹ ہوئی۔ چھُرے ں اور آتش زنی کے واقعات بھی ہوئے۔ حکومت ختی اور راحت کا کام ادھر جاری ہی تھا کہ اس شہر یک محلے میں آگ بھڑک اٹھی۔ یہاں بھی چھوٹی موٹی دائیں ہوئیں لیکن افواہیں زیادہ اڑی ہیں۔ منٹ دو ٹ پر نظر آنے والی گشتی پولیس کی گاڑیاں دہشت پیدا ی ہیں۔ کچھ علاقوں میں شام کے بعد لوگوں کی آمد و رفت ل کم ہو جاتی ہے۔ اپنا مکان ایسے ہی علاقے میں ہے ا لیے میں جلدی لوٹ آتا ہوں۔

اُس دن بھی میں جلدی لوٹا تھا۔ شام سے کچھ ہی۔ اوپر اپنے فلیٹ پر گیا تو ڈرائنگ روم کا دروازہ ا ملا۔ باہر بے ڈھب دو چپل پڑی ہوئی تھیں ر بابوجی صوفے پر اپنے دونوں پیر موڑے بیٹھے تھے۔ توقع طور پر انھیں یہاں دیکھ کر میں چند لمحوں کے لیے ششدر رہ گیا۔ نہ جانے کس جذباتی تموج کے زیر اثر انے ان کے پیر چھوئے۔ ان کی آنکھیں چھلچھلا آئیں۔ ائی ہوئی آواز میں وہ دیر تک مجھے دعائیں دیتے رہے۔

میں ان کے سامنے کھڑا تھا اور دیکھ رہا تھا کہ ہوں نے اپنا بوریا بستر کہاں رکھا ہے۔ کہیں کچھ نظر نہیں ا تھا۔ میں نے پوچھنے کی غرض سے یوں ہی پوچھ لیا۔ پ کو یہاں تک پہنچنے میں کوئی دقت تو نہیں ہوئی؟"

بابوجی پھیکی سی ہنسی ہنسے "نہیں، کچھ خاص نہیں۔ پتہ تھا میرے پاس۔ پھر بھی پوچھنا پڑا لوگوں سے" وہ پھر سامنے کی دیوار کی طرف دیکھنے لگے۔ دیوار پر ایک بڑا سا لینڈ اسکیپ آویزاں تھا اور ایک دوسرے فریم میں ایک ہرن تھا جو پانی کی تلاش میں بے تحاشا بھاگا جا رہا تھا۔ وہ دونوں تصویریں میرے ایک آرٹسٹ دوست کے فن پارے ہیں۔ بابوجی کی آنکھیں دیر تک ان تصویروں کی سمت میں ٹنگی رہیں۔

اس کے بعد جیسے کوئی موضوع ہی نہیں تھا۔ گفتگو کو آگے بڑھانے کے لیے میں نے غور سے بابوجی کے چہرے کو دیکھا دھان کے کٹے کھیت کی طرح چہرہ تھا ان کا۔ ویسا ہی خشک سونا اور اجڑا ہوا۔ داڑھی کے سفید بال کھونٹیوں کی طرح اُگے ہوئے تھے۔ گڈھوں میں چھپی مریل آنکھوں کے آس پاس دھند کی طرح سیاہی تھی۔

اندر کمرے میں گیا تو رشمی نے سرگوشی کی "آپ کے پتا جی ہیں کیا؟"

"ہاں کب آئے ہیں؟"

"تھوڑی ہی دیر پہلے میں باہر نکل رہی تھی پیشو کو لیے ہوئے تھی گود میں کہ یہ بالکنی میں چپ چاپ کھڑے ملے۔ پوچھا کس کو کھوجتے ہیں؟ تو صاف صاف کچھ بولے نہیں۔ اچانک گھبرا سے گئے۔ پھر آہستہ سے بولے نرین، نریندر رہتا ہے یہاں؟ سہرسا والا نریندر؟ پوچھا کہ کیا کام ہے تو کچھ بولے نہیں۔ آگے بڑھنے لگی تو بولے۔ وہ نریندر میرا لڑکا ہے۔ میں ٹھٹھک گئی کبھی کے دیکھے رہیں تب نہ!"

"اچھا چائے والے کچھ دی؟"

"ہاں گئی تھی چائے لے کر۔ بولے نہیں پیتا ہوں۔ لوٹا کر لے آئی"

کمرے میں کھڑا میں سوچتا رہا کہ بابوجی اس طرح اچانک کیسے چلے آئے۔ وہ کبھی آئے نہیں تھے یہاں۔ تقریباً سات برسوں سے ان سے ملاقات بھی نہیں ہوئی ہے۔ اس عرصے میں صرف تین بار ان کے خط آئے تھے۔ پہلا خط برائے اطلاع تھا۔ چار پانچ برس پہلے ماں کی موت کی خبر لے کر ان کا خط آیا تھا۔ خط اتنی دیر سے ملا تھا کہ کریا کرم بھی تب تک ختم ہو چکے تھے۔ دوسرا خط چھوٹے بھائی کی شادی کی اطلاع لے کر آیا تھا۔ اور تیسرے خط میں اس سیلاب کا ذکر تھا جس میں گھر دروازے سب غرقاب ہو گئے تھے سارے مویشی مر گئے تھے اور کھڑی فصل کا تنکا تک نہ بچا تھا۔ اس تیسرے خط کے جواب میں میں نے تین سو روپے کا منی آرڈر بابوجی کے نام روانہ کر دیا تھا۔ انھوں نے یہ امدادی رقم برائے سیلاب زدگان قبول بھی کر لی تھی۔ وصولی کی رسید مجھے مل گئی تھی۔ رسید پر کیتھی رسم الخط میں بابوجی کے دستخط تھے۔ یدو دیو پرساد۔

رفتہ رفتہ مٹتے جا رہے اس کیتھی رسم الخط میں بابوجی کے دستخط پڑھنے میں مجھے کوئی دقت نہیں ہوئی تھی حالانکہ میری پڑھائی لکھائی میں کیتھی رسم الخط نہیں آیا تھا۔ لیکن خاندانی اثرات سے اس رسم الخط کا علم مجھے ہو گیا تھا۔ بہت پہلے جب میں میٹرکولیشن میں تھا، بابوجی کے لیے بعض اوقات

جاوید اقبال ـــــ پربھات خبر روزنامہ
۱۵-پی، کوکر انڈسٹریل ایریا، رانچی ۸۳۴۰۰۰

مجھے کیتھی رسم الخط میں کچھ لکھنا پڑ جاتا تھا۔ ویسے بابوجی کو کام چلاؤ اردو بھی آتی تھی لیکن وہ اردو لکھ نہیں پاتے تھے۔ صرف پڑھ لیتے تھے۔ ان کے پاس اپنی تعلیم کی کوئی سند بھی نہیں تھی۔ گاؤں میں مولوی صاحب کا پرانا مدرسہ تھا جس میں بابوجی کو کاغذات وغیرہ پڑھنے لکھنے کی عملی اور کام چلاؤ تعلیم ملی تھی۔ پڑوس کے گاؤں میں خانگی مڈل اسکول تب کھلا جب میں مڈل پاس کر چکا تھا اس لیے میری ابتدائی تعلیم بھی مولوی صاحب کے اسی مدرسے میں ہوئی تھی۔

بابوجی کے دستخط والی وصولی کی رسید پر فراموش ہو رہے اس رسم الخط کو دیکھنا میرے لیے ایک خوشگوار تجربہ تھا۔ کافی دیر تک میں کیتھی رسم الخط کے حروف اپنے حافظے میں لکھتا اور مٹاتا رہا تھا۔

بابوجی صوفے پر اسی طرح پیر موڑے بیٹھے تھے۔ اپنے دونوں پیروں کو بازوؤں کے حلقے میں لے کر بیٹھنے کے ان کے مانوس انداز اور چھت کے خلا میں کھوئی ہوئی ان کی آنکھیں دیکھ کر مجھے اس گوریا کی یاد آئی تھی جو کچھ ہی دن قبل اس کمرے میں ایک آندھی میں کہیں سے بھٹک کر آگئی تھی اور ساری رات صوفے کے نیچے ایک کونے میں پڑی رہی تھی۔ جان کی حفاظت کے لیے جیسی بدحواسی میں نے اس گوریا میں دیکھی تھی ویسی گھبراہٹ کسی آدمی میں میں نے کبھی نہیں دیکھی۔

بابوجی بالکل خاموش تھے۔ سناٹا توڑنے کے لیے یوں ہی پوچھ لیا "اچانک کیسے آئے؟"

انھوں نے مصنوعی کھانسی سے گلا صاف کیا۔ شاید کچھ اور بات کہنا چاہتے تھے لیکن انھوں نے بہت اختصار سے کام لیا۔ "ہاں، یوں ہی۔"

میں نے اپنا پہلا سوال دہرایا۔ "ڈیرہ کھوجنے میں کوئی دقت تو نہیں ہوئی؟"

"کوئی خاص نہیں۔ لکھا ہوا تھا۔" بولتے ہوئے انھوں نے پرزہ میری طرف بڑھا دیا۔ پرزے پر کیتھی رسم الخط میں میرے فلیٹ کا پتہ تھا۔

بات پھر خاموشی کے درمیان کہیں پھنس گئی۔

وہ پھر سامنے کی دیوار کی طرف دیکھنے لگے۔ کمرے کے باہر غروب ہوتے سورج کا اجالا کٹے ہوئے عکس کی طرح نیم وا دروازے سے آ رہا تھا۔ بابوجی کا آدھا چہرہ اس اجالے کے حلقے میں تھا جس میں ان کی نیم باز آنکھوں کی خاموشی کو محسوس کیا جا سکتا تھا۔

شہر کی واردات اور افواہوں کی دہشت میں مارچ مہینے کی تنہا شام باہر کی سڑک پر آہستہ آہستہ گہری ہو رہی تھی۔ عجیب سی گھٹن تھی کمرے میں۔ تقریباً سات برسوں کے بعد بابوجی سے ملاقات ہوئی تھی لیکن ان کے پاس کہنے کے لیے کچھ نہیں تھا۔ عدم مکالمہ کا تناؤ مجھے وہاں سے اٹھنے دے رہا تھا اور نہ بیٹھنے ہی دے رہا تھا۔ میرا کوئی کام نہیں تھا وہاں۔ سامنے بیٹھے ہوئے شخص میرے بابوجی تھے لیکن ایسا لگتا تھا جیسے میں بس کی اس سیٹ پر ہوں جس کی برابر کی سیٹ پر میرا مدعا علیہ بیٹھا ہو۔ پتہ نہیں، ایک ان بوجھے ذہنی تناؤ میں میں یہ سب کیوں سوچ رہا تھا۔ کم سے کم بابوجی کی بابت یہ سب سوچنا پرسکون ذہنی حالت میں یقیناً غیر واجب تھا۔ ان کے ساتھ ویسا کوئی بھی کشیدہ رشتہ نہیں تھا۔ بس خشک ہوتی ہوئی جھیل کی طرح ہم دونوں کے درمیان کی داخلیت تھی جس میں الزام اور جوابی الزام کی کوئی بھی بصری بنیاد نہیں تھی۔

کچن میں رشمی ناشتہ تیار کر رہی تھی۔

"ان کے لیے بنا رہی ہو؟" میں نے پوچھا تو رشمی نے کڑاہی میں پکتے حلوے کی طرف دیکھتے ہوئے کہا "آپ بھی لے لیجیے گا۔" کچن میں ہلکا اندھیرا تھا لیکن پہلے سے کچن میں رہنے کی وجہ سے رشمی کو اندھیرا محسوس نہیں ہو رہا تھا۔ میں نے بلب جلا دیا۔ تھوڑی دیر وہیں کھڑا رہا۔ سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ بابوجی سے کیا بات کروں گا۔ الگ الگ حوالوں کے کٹے ہوئے جملے لے کر میں پھر ڈرائنگ روم میں آگیا اور سامنے بیٹھتے ہوئے پوچھا "گھر کا حال چال کیسا ہے؟"

"اچھا نہیں ہے۔" ان کا سپاٹ اور بے لاگ جواب تھا۔ بابوجی کا یہ جملہ حوالے کے بیج کی طرح تھا۔ میں بیج کے انکھوے کو جڑ سے ہی توڑ دینا چاہتا تھا۔ بابوجی میری خاموشی کو وضاحت کا اشارہ سمجھ بیٹھے تھے۔ کہنے لگے۔

"بس جی رہے ہیں کسی طرح ہم لوگ تو . . ." اس کے بعد ان کی آواز اچانک کٹ گئی۔ شاید وہ اندر سے لڑکھڑا گئے تھے۔ سنبھلتے ہوئے بولے۔ "کرن یہیں اسپتال میں ہے۔ آپریشن ہوا ہے پیٹ کا۔ آج تیرہواں دن ہے۔ نہیں چودھواں دن ہے آج۔ بچ گئی ہے پھر بھی . . ."

"چودہ پندرہ دنوں سے آپ یہاں ہیں؟ آپ نے خبر نہیں دی؟" میں اندر سے بے حد تذلیل محسوس کر رہا تھا۔ چودہ دنوں سے بابوجی میری چھوٹی بہن کو لے کر یہیں اسی شہر کے اسپتال میں ہوں اور مجھے خبر تک نہ ہو، یہ بات مجھے بری طرح کچوٹنے لگی تھی۔

بابوجی بالکل لاجواب ہو گئے۔ میرے اندر ایک بوکھلاہٹ سی تھی۔ مجھے لگ رہا تھا کہ بابوجی کے پاس اس کا جواب ہے ضرور لیکن وہ دینا نہیں چاہتے۔ جواب کے اس بے زبان معنی کو میں سمجھ رہا تھا۔ وہ صورت حال صاف صاف محسوس ہو رہی تھی جس کے تحت ہمارے درمیان ایک خلیج بن گئی تھی۔ رفتہ رفتہ سرد ہوتے جا رہے رشتے کے تئیں اپنی اپنی غیر جانب داری لے کر جہاں تک ہم پہنچے تھے، اس کے بعد کسی وضاحت کی ضرورت ہم دونوں کو شاید نہیں تھی۔

لیکن بابوجی چلے کیسے آئے؟ کیا اپنی شکست کو فتح میں بدلنے کا فیصلہ کر کے وہ اس طرح چلے آئے ہیں؟ یہیں اسپتال میں میری بہن کا آپریشن ہوا، دو ہفتے گذر جائیں اور مجھے خبر تک نہ ہو، کیا یہ بدلا نہیں ہے ان کا؟ نہ آتے کیا فرق پڑ جاتا؟

بابوجی کا جواب شاید مجھے مل گیا تھا۔ اپنے اندر

کسی پتھر پر جھکے حصے کو گھسنے کی کوشش کرتے ہوئے
پوچھا "کون سی بیماری ہے کرن کو؟"
"پیٹ کی بیماری تھی۔ گاؤں میں بلاک کے ڈاکٹر
نے کہا۔ پٹنہ یا دربھنگہ لے جائیے۔ کسی بڑے اسپتال میں
آپریشن کا کیس ہے۔" بابوجی جیسے کسی سوچ میں غرق ہو گئے
تھوڑی دیر خاموش رہ کر کہنے لگے۔ "ہار کر آنا پڑا بڑی ہی
مصیبت تھی۔ پیسے کوڑی کا کوئی اُپائے نہیں تھا۔ آخر
سلیمان بھائی بولے کہ چلیے پٹنہ۔ پٹنہ میں ان کی بیٹی رہتی
ہے نہ نغمہ۔ داماد وہیں اسپتال والے کالج میں کلرک
ہیں۔ کوئی دقت نہیں ہوئی۔ سلیمان بھائی کے داماد
نے سب انتظام کر دیا۔" بولتے ہوئے ان کی آواز جیسے
تھک گئی تھی۔ چند لمحوں تک سستانے کے بہانے وہ
دروازے کے باہر اندھیرے کی طرف دیکھنے لگے۔

بہت دنوں کے بعد سلیمان چاچا کی یاد آئی۔ بالکل
ذہن میں ۔۔۔ اپنے گھر کے بعد دوسرا دروازہ سیدھے
ان کا جہاں سے مسلمان ٹولے کی سرحد شروع ہوتی ہے۔
جب میں چھوٹا تھا، مجھے اپنے اور سلیمان چاچا کے گھر میں
کوئی فرق محسوس نہیں ہوتا تھا۔ ایسا بھی ہوتا کہ کبھی اپنے
گھر میں نمک نہ رہتا یا کبھی سرسوں کا تیل کم ہو جاتا تو
ماں مجھے یا کرن کو سلیمان چاچا کے گھر بھیج کر منگا لیتی تھی۔
سلیمان چاچا کے گھر میں کوئی ضرورت ہوتی تو سب
سے پہلے ہمارے گھر میں دریافت کیا جاتا۔ سلیمان چاچا
کی بیٹی نغمہ اور کرن میں بہناپا تھا۔ اس رشتے کی وجہ سے
نغمہ کی امی میری ماں کو "دیا دی" کہتی تھیں۔ سلیمان چاچا
کے پاس زیادہ کھیتی تھی اس لیے ان کی حالت زیادہ
بہتر تھی۔ ورنہ کئی معاملوں میں بابوجی کو سلیمان چاچا پر
منحصر رہنا پڑتا تھا۔ سلیمان چاچا اور بابوجی ہم عمر تھے۔
مولوی صاحب کے مدرسے میں دونوں کی تعلیم ہوئی تھی
اس لیے دوستی کا جذبہ بھی تھا۔ یہ اتفاق ہی تھا کہ جن
مولوی صاحب نے بابوجی اور سلیمان چاچا کو تعلیم دی
انھوں نے مجھ کو کرن کو اور نغمہ کو بھی اسی دالان والے
مدرسے میں پڑھایا۔ ان دنوں کوئی اسکول نہیں تھا
گاؤں میں۔ جب مڈل اسکول کھلا میں مولوی صاحب
کے مدرسے کا تیسرا اور آخری درجہ پاس کر چکا تھا۔ مدرسہ
سلیمان چاچا کے دالان میں چلتا تھا اس لیے تقریباً میرے
دروازے پر تھا۔ کرن چھوٹی تھی۔ نغمہ کے ساتھ اس کی
تعلیم کی ابتدا بھی مولوی صاحب کے مدرسے سے ہوئی۔ بعد
میں کرن اور نغمہ اسی خانگی مڈل اسکول میں پڑھنے لگیں
جس میں دو سال پہلے میرا داخلہ ہوا تھا۔ مڈل کے بعد
گاؤں میں آگے کی تعلیم کا انتظام نہیں تھا۔ اس لیے کرن
اور نغمہ کی تعلیم وہیں رک گئی۔ میں گاؤں سے دور قصبے کے
ہائی اسکول میں پڑھنے چلا گیا۔

میٹریکولیشن کے بعد پٹنہ یونیورسٹی میں میرا داخلہ
ہوا۔ گھر کے ساتھ دعا سلام کا رشتہ رہا۔ وقت پر
منی آرڈر مل جایا کرتا تھا۔ منی آرڈر کی اس رقم کا انتظام
کہاں سے ہوتا تھا۔ اس سے میرا کوئی سروکار نہیں تھا۔
منی آرڈر میں کبھی دیر ہو جاتی تو معافی نامہ جیسی زبان
میں بابوجی کا خط آ جاتا۔ اس خط سے اتنا احساس
ضرور ہوتا تھا کہ بڑی مجبوری میں یہ روپے بھیجے جا رہے
ہیں۔ اس موضوع پر مغز ماری کرنے کی فرصت میرے
پاس نہیں تھی کہ بابوجی کی مجبوری کیا ہے۔ مجھے تو یہی لگتا
تھا کہ کسی قرار کے تحت ان کو روپے بھیجنے پڑتے ہیں۔
میں نے آنرس کے بعد بی۔ ایس۔ سی کیا۔
اسی سال بہار پبلک سروس کمیشن کے امتحان میں
کامیاب ہو گیا۔ پروبیشن پیریڈ میں جب رانچی میں
ٹریننگ چل رہی تھی، انھی دنوں بابوجی نے
سلیمان چاچا کو میرے پاس بھیجا تھا۔ وہ پیغام
رساں بن کر آئے تھے۔ انھیں سے معلوم ہوا تھا کہ بابوجی
نے میری شادی طے کر رکھی ہے۔ بغل کے گاؤں میں کوئی
لڑکی ہے جس کے والدین کو بابوجی نے زبان دے رکھی
ہے۔ سمدھی کی حیثیت سے تین چار سال پہلے سے آمد و رفت
جاری ہے۔ سن کر مجھے ہنسی آئی۔ شادی مجھے کرنی ہے اور
رشتہ بابوجی طے کر رہے ہیں۔ دراصل میں اپنی ہم جماعت
لڑکی رشمی سے شادی کرنا چاہتا تھا۔ ہم دونوں کے
درمیان مستقبل کے اس رشتے کی بنیادی زمین ہموار ہو
گئی تھی اور وہاں سے مڑنا بہت مشکل ہو گیا تھا۔
میں نے سلیمان چاچا کو صاف صاف کہہ دیا تھا کہ شادی
مجھے کرنی ہے اور اپنا بھلا برا میں خود سوچتا ہوں۔
سلیمان چاچا لوٹ گئے تھے۔

پٹنہ میں ہی میرا تقرر ہو گیا۔ دوستوں سے مل
کر شادی کا دن بھی طے کر لیا گیا۔ میں نے بابوجی کو
شادی کی تاریخ کی اطلاع دے دی۔ لیکن وہ آئے
نہیں۔ یہ شادی ان کے اور میرے درمیان آخری
خطِ تقسیم بن گئی شاید۔ گاؤں گھر یا بابوجی کی کوئی ضرورت
بھی نہیں رہ گئی تھی مجھے۔ خط و کتابت بھی نہیں ہو رہی
تھی۔ سال بھر کے بعد مجھے معلوم ہوا کہ بابوجی روٹھے
ہوئے ہیں [illegible]
تھا کہ میری شادی میں وہ شامل نہیں ہوئے۔ میری
بے عزتی ہوئی ہے۔ گاؤں گھر کے ردِعمل مجھ تک پہنچ رہے
تھے اور وہ میرے اندر تناؤ پیدا کر رہے تھے۔ آخر میں نے
سوچ لیا کہ گاؤں نہیں جاؤں گا۔ چار برسوں تک بابوجی بھی
بالکل خاموش رہے۔ اس کے بعد شاید شکست خوردہ
ہو کر انھوں نے ایک ایک سال کے وقفے پر تین خطوط
لکھے جن کا ذکر میں پہلے کر چکا ہوں۔

اتنے طویل وقفے کے بعد بابوجی اچانک آ گئے
ہیں۔ مجھے لگتا ہے کہ انھوں نے اپنی شکست قبول کر لی
ہے۔ لیکن دور کے کسی رشتے دار کی طرح وہ محض ملاقات
والی رسم ادا کرنے کیوں آئے ہیں؟ چودہ دنوں سے پٹنہ
میں ہیں۔ اسپتال میں میری بہن کا آپریشن ہوا ہے اور اب
جب کہ وہ گاؤں لوٹنے والے ہیں، ایک بار ادھر چلے آئے ہیں۔
ٹیوب لائٹ کی روشنی میں بابوجی کو دیکھتا ہوں۔
صوفے پر بیٹھے ہوئے وہ جھپکی لے رہے ہیں۔ ان کی وہی پوشاک
ہے۔ پہلے والی۔ کھدر کا پوری آستین کا کرتا، جو [illegible]

شکن آلود ہے۔ گھٹنے سے کچھ نیچے تک جیسے تیسے باندھی گیروے رنگ کی دھوتی۔ مجھے یاد آتا ہے کہ کپڑے کا یہ رنگ کنویں کے پانی کی وجہ سے ہے۔ سوچتا ہوں کہ اب تک وہی کنواں ہے گھر پر اور اسی حالت میں ہے۔ بابو جی اس کنویں کے بارے میں کہتے تھے کہ ہر سال اگر کنویں کی صفائی نہ کی جائے تو پانی گندا اور بدبودار ہو جاتا ہے۔ جس کنویں سے پانی برابر نہیں نکالا جاتا وہ کنواں آہستہ آہستہ مر جاتا ہے۔ بابو جی کی دھوتی کا گیروا رنگ دیکھ کر مجھے لگتا ہے وہ کنواں یقیناً مر گیا ہوگا۔

بیٹھے بیٹھے بابو جی اونگھ رہے تھے۔ میں نے کہا۔ "کھانا کھا لیجیے اب۔" وہ اچانک ہوشیار ہو گئے۔ "نہیں ... کھانا آ گیا ہوگا وہاں اسپتال میں۔"

"اسپتال میں؟ کہاں سے آیا ہوگا؟"

بابو جی اچانک جیسے چہک اٹھے۔ "ارے ... وہ سلیمان بھائی کے داماد ہیں نہ! نغمہ کے ..."

"اچھا ہاں۔ نغمہ یہیں رہتی ہے؟"

"ہاں پہلے اُدھر دربھنگہ میں تھی۔ اب یہیں ہے۔ کیا نام ہے محلے کا ... مصطفیٰ پور۔ وہیں رہتی ہے۔"

میں اچانک چھوٹا ... بہت چھوٹا پڑ گیا تھا۔ مجھے لگ رہا تھا میں بہت دور ہوتا جا رہا ہوں اور بابو جی کا وجود آہستہ آہستہ اوجھل ہوتا جا رہا ہے۔

بابو جی کی آواز بہت گہرائی سے اٹھتی ہوئی محسوس ہوتی ہے۔ "داماد کی وجہ سے کوئی دقت نہیں ہوئی۔ آپریشن کا پیسہ بھی نہیں لگا۔ بس صرف دوا اور تھوڑا سامان لگا۔ یعنی انجکشن وغیرہ۔" بابو جی جیسے کسی روحانی خوشی میں ڈوب کر بول رہے تھے۔ "ارے وہ نغمہ تو سگی ہے نہ کرن کی! جس دن آپریشن ہوا۔ قریب دو بجے دن میں تب سے لے کر رات بھر بیٹھی رہی وہ۔ دوسرے دن گئی۔ کھانا بھی گھر سے ہی بھجوانے لگی۔ میں نے کہا بھی کہ کھا لیا کروں گا ہوٹل میں لیکن ضد کر بیٹھی۔ دوپہر کا کھانا داماد لے آتے ہیں دفتر جاتے وقت۔ رات کا کھانا بھی نغمہ بھجوا دیتی ہے۔ کرن کو تو سادی کھچڑی کھلانی پڑتی ہے۔ وہ بھی وہیں سے بن کر آتی ہے۔ ڈاکٹر نے کہا ہے اب رہنے کی ضرورت نہیں ہے۔ کل یا پرسوں چھٹی مل جائے گی اسپتال سے۔"

بابو جی پُرمسرت انداز میں بولے جا رہے تھے۔ اور مجھے لگ رہا تھا کہ اپنے ہی اندر کے کسی دلدل میں حلق تک دھنستا جا رہا ہوں۔ اندر کا کوئی حصہ آہستہ آہستہ کٹتا جا رہا تھا۔ لیکن بابو جی کے دل میں غضب کا جوش تھا۔ مانوس مریل سی آواز کی جگہ جوش سے بھری ہوئی آواز تھی۔ "سلیمان بھائی کا سہارا نہ ملتا تو مر گئی ہوتی۔ کرن۔ دولہا جی کلکتہ میں رہتے ہیں۔ کرن کے گھر والوں کو تو مطلب ہی نہیں ہے کسی کے مرنے جینے سے۔ مجھے خبر ملی کرن کو لے آیا۔ بلاک کے ڈاکٹر کو دکھایا تو ڈاکٹر نے کہا۔ آپریشن کا معاملہ ہے۔ دربھنگہ یا پٹنہ لے جائیے لیکن لے کیسے جائیں؟ گھر میں تو کچھ تھا نہیں۔ آخر سلیمان بھائی نے مدد کی۔ بولے کہ چلیے پٹنہ۔ وہاں تو اپنے داماد ہیں ہی اسپتال میں۔ روپے بھی انھوں نے ہی دیے ساتھ ساتھ آئے اپنے خرچ سے۔"

کسی گہری احسان مندی سے بوجھل ان کی آواز جیسے ٹوٹنے لگی۔ "گاؤں میں اتنے لوگ ہیں اپنے بھائی بھتیجے چاچا ہیں گو سب ہیں لیکن ضرورت پڑنے پر سب نے ہاتھ کھینچ لیے۔ بڑے بھیا سے قرض مانگا تو اپنے بڑے بیٹے سُریش کے بارے میں بولے کہ وہی مالک ہے گھر کا۔ سُریش نے بہانہ بنا دیا۔ 'روپے کہاں ہیں کاکا' بعد میں ایک دوسرے آدمی سے معلوم ہوا کہ سریش کہتا ہے۔ کون دے گا قرض؟ جس آدمی کو اس کا بیٹا نہیں پوچھتا اس کو کون دے گا قرض۔" کسی تذلیل کے زہر کو پیتے ہوئے بابو جی ایکدم مغموم ہو گئے تھے۔ میں سوچ رہا تھا کیا بابو جی اپنی تذلیل کے بہانے مجھے ذلیل کرنے کی کوشش تو نہیں کر رہے ہیں۔ انھوں نے تو تنبیہ کر رکھا تھا کہ اگر میں ان کے پاس نہیں جاؤں گا تو وہ کبھی نہیں آئیں گے میرے پاس۔ پھر اچانک آ کیسے گئے؟

کھانا انھوں نے نہیں کھایا۔ یہی کہتے رہے کہ وہاں آ گیا ہوگا کھانا۔ رہنے دو۔ برباد جائے گا۔

رات ہو گئی تھی۔ گھڑی میں وقت دیکھا۔ نو بج رہے تھے۔ جانے سے پہلے بابو جی بولے "منّا کہاں ہے۔ دیکھ لیتا ایک بار۔"

منّا میرے بیٹے کی نام کی عمومیت تھی۔ ویسے ہم لوگ ٹیشو کہتے ہیں اپنے بیٹے کو۔

اندر بیڈ روم میں ٹیشو گہری نیند سو رہا تھا۔ سوئی ہوئی حالت میں ہی ٹیشو کو گود میں اٹھا کر بابو جی کے پاس لے آیا۔ گود میں لینے کے لیے انھوں نے باہیں پھیلا دیں۔ چند لمحوں تک وہ ٹیشو کو تکتے رہے۔ ٹیوب لائٹ کی دودھیا روشنی میں ٹیشو کا گورا چہرہ کچھ زیادہ ہی گورا لگ رہا تھا۔ بابو جی کی گود میں ٹیشو اچانک زور سے چیخا۔ اتنے زور سے کہ اندر سے رشمی دوڑی ہوئی آ گئی۔ بابو جی تجربے کار آدمی تھے۔ بالکل پُرسکون رہتے ہوئے بولے۔ "ڈر گیا ہے سپنے میں۔ اس کے سرہانے کچھ ڈنڈا یا لوہے کی کوئی چیز رکھ دیا کرو۔ نہیں ڈرا کرے گا۔"

بابو جی اُٹھنے لگے۔ باہر اندھیرا تھا۔ میں نے روکنا چاہا "نہیں۔ ابھی ٹھیک نہیں ہے بابو جی شہر میں بدامنی ہے۔"

بابو جی آہستگی سے ہنسے۔ جیسے یہ کسی معصوم بچے کی بات ہو۔ "نہیں کوئی بات نہیں۔ شہر کے لوگوں کو ڈر ہوگا ہم لوگ دیہات کے ہیں۔ پھر جانا ضروری ہے کرن اکیلی ہوگی وہاں۔"

بابو جی رُکے نہیں۔ سیڑھیوں سے اترتے ہوئے انھوں نے کرن کا بیڈ نمبر بتا دیا۔ یہ بھی بولے کہ کل تک ہیں۔ پرسوں چلے جائیں گے۔

میں سڑک تک انھیں چھوڑنے گیا۔ بالکل سونی تھیں سڑکیں۔ اندرونی دہشت کی وجہ سے اندھیرا زیادہ خوفناک لگ رہا تھا۔ میں نے کہا "اگلے چوراہے پر شاید کوئی رکشہ مل جائے۔"

بالوجی میں وہی بے فکری تھی۔ "کوئی بات نہیں، زیادہ دُور نہیں ہے۔"

اپنے فلیٹ کی جانب لوٹتے ہوئے میں بالوجی کی کہی ہوئی ایک لوک کتھا پر سوچ رہا تھا۔ جس میں ایک پنڈت بددُعا سے متاثر ندی کے کنارے بیٹھا ہوا تھا۔ اس نے ندی میں ایک انگلی ڈالی اور پایا کہ وہ انگلی پتھر بن گئی ہے۔ وہ اسی سوچ میں ندی کے کنارے بیٹھا ہوا تھا۔ تبھی لٹھ لیے ایک دیہاتی آدمی آیا اور کسی غور و فکر کے بغیر ندی میں داخل ہو گیا۔ پھر تیرتا ہوا اس پار چلا گیا۔

اگلے دن دفتر سے کچھ پہلے لوٹا۔ رشمی یشو کے ساتھ پہلے سے تیار بیٹھی تھی۔ اسپتال کے سرجیکل بلاک میں بیڈ نمبر پینتیس پر جو مریضہ لیٹی ہوئی تھی اس کو پہچان سکنا مشکل تھا کہ وہ میری چھوٹی بہن کرن ہے۔ تیمارداری کرنے والے بازجی اس وقت وہاں نہیں تھے۔ ہم لوگوں کو دیکھتے ہی کرن اٹھ کر بیٹھنے کی کوشش کرنے لگی سہارا دے کر میں نے اسے بٹھا دیا۔ موہوم سی مسکراہٹ کرن کے بیمار سُوکھے چہرے پر اُبھری لیکن کچھ ہی لمحوں کے بعد جانے کیا ہوا کہ وہ اچانک رونے لگی۔ رشمی کرن کے پائتانے بیٹھی تھی۔ میں یشو کو اپنی گود میں لیے سرہانے کے پاس تھا۔ کرن نے جانے کتنی بار یشو کو چوما۔ پھر زور زور سے رونے لگی۔ آس پاس کے بستروں پر پڑی مریضاؤں اور ان کی تیمارداری کرنے والوں کے لیے ہم تماشہ بن رہے تھے۔ میں نے کرن کو کسی طرح چُپ کرایا لیکن سسکیوں کے رُکنے کے باوجود اس کی آنکھیں لگاتار روتی رہیں۔

بالکل لاغر ہو گئی تھی کرن۔ چہرہ سوکھا اور پیلا پڑ گیا تھا۔ کرن کو دیکھ کر مجھے بے آب بادلوں کی ہلکی پرت کے درمیان کٹے ہوئے چاند کی یاد آئی تھی۔ اس لمحے میں کرن کا بچپن یاد آ رہا تھا مجھے۔ گاؤں کے مڈل اسکول میں دو جماعت پیچھے پڑھنے والی کرن اور نغمہ۔ کلاس شروع ہونے سے پہلے پرارتھنا ہوا کرتی تھی۔ پرارتھنا کی گھنٹی بجتے ہی سارے طلبہ قطار میں کھڑے ہو جاتے تھے۔ پرارتھنا کی قیادت کرنے کا ذمہ میرا اور کرن کا تھا۔ ہم آگے آگے گاتے تھے:

ہے پربھو آنند داتا گیان ہم کو دیجیے
شیگھر سارے اوگنوں سے دور ہم کو کیجیے
لیجیے ہم کو شرن میں ہم سدا چاری بنیں

مجھ سے صرف تین سال چھوٹی تھی کرن لیکن اس کے جسم کی باڑھ دیکھ کر ماں کہتی تھی کہ لڑکی بدنصیبی کی طرح بڑھتی ہے۔ ماں کہہ کر ہنسنے لگتی تھی اور کرن شرما کر بھاگ جاتی تھی۔ چنچل اور نٹ کھٹ کرن آہستہ آہستہ یادوں کے پار چلی گئی۔ جانے کیسے بالوجی نے کرن کی شادی کی۔ جیجا جی کو میں نے کبھی دیکھا نہیں۔ اتنا معلوم ہوا تھا کہ وہ کلکتہ میں کوئی چھوٹی موٹی نوکری کرتے ہیں۔ سال چھ مہینے پر کبھی آتے ہیں اور مہینے بھر یا پندرہ دن بعد لوٹ کر چلے جاتے ہیں۔

لیکن اسپتال کے بیڈ پر یہ جو کرن لیٹی ہوئی ہے، وہ بچپن کی اس کرن کے دردانگیز کارٹون کی طرح لگتی ہے۔ چت لیٹی ہوئی ہے کرن۔ آنکھوں کے کناروں سے ٹپکے ہوئے آنسوؤں سے سر کے دونوں طرف کا بستر بھیگ گیا ہے۔

بولتی نہیں ہے وہ۔ بس کبھی کبھی اندر ہی اندر رونے کے درمیان آنے والی ہچکیاں گھٹتی ہوئی سی لگتی ہیں۔

گھنٹے بھر سے زیادہ کا وقت نکل گیا ہے۔ بالوجی بازار سے لوٹ آتے ہیں۔ پوچھتے ہیں "کب آئے ہو؟"

میں گھڑی میں وقت دیکھتا ہوں اور وقت کو زیادہ بتاتا ہوں "قریب ڈیڑھ دو گھنٹے سے ہوں۔"

بالوجی نیچے فرش پر بیٹھ جاتے ہیں "اب ٹھیک ہے سب۔ مرض نکل گیا جسم سے۔ کل نہیں تو پرسوں چلے جائیں گے۔ شام کو گاڑی ملتی ہے نہ پریاگ ایکسپریس؟ جو گیبنی والی؟"

مجھے کچھ پتہ نہیں ہے۔ پھر بھی کہتا ہوں "ہاں شاید شام میں ہی ہے۔"

کرن ایک ٹک دیکھ رہی ہے مجھے، رشمی کو، یشو کو۔ اس کی آنکھیں پتھر کی آنکھوں کی طرح ساکت ہیں۔ مجھ سے برداشت نہیں ہوتا۔ کچھ چھیدتا سا لگتا ہے۔ چلتے وقت بالوجی سے کہتا ہوں "کوئی ضرورت ہو تو . . ."

"نہیں کچھ نہیں۔ پھر نغمہ تو ہے ہی یہاں۔" بالوجی کی آسودگی اور مسکراہٹ مجھے ذبح کرتی ہوئی لگتی ہے۔ لگتا ہے کسی تیز دھار والے ہتھیار سے آہستہ آہستہ کوئی چھیل رہا ہے۔ بالوجی اسی پُرمسرت لہجے میں کہتے ہیں "چھٹی مل جائے گی کل۔ لیکن نغمہ تو جانے نہیں دے گی کل۔ پرسوں شام کی گاڑی پکڑیں گے۔"

شہر ابھی تک اعتدال پر نہیں آیا ہے۔ اندھیرا ہوتے ہی سڑکیں ویران ہو جاتی ہیں۔ پندرہ سولہ دن قبل صرف دو دن کے کرفیو نے کسی شدید مرض کی طرح شہر کو اندر سے بہت کمزور کر دیا ہے۔ پھر بھی جانا ہی پڑا اسٹیشن۔ گاڑی نہیں آئی تھی۔ پلیٹ فارم کی بینچ پر کرن بیٹھی ہوئی تھی۔ اسی سے سٹ کر نغمہ بیٹھی تھی۔ پہچان میں نہیں آ رہی تھی نغمہ۔

"آداب بھائی جان!" مسکراتی ہے نغمہ بہن۔ میں غور سے دیکھتا ہوں۔ ایک دم بھری پُری صحت مند اور خوش۔ بغل میں ایک لڑکا نغمہ کا کندھا پکڑے کھڑا ہے . . . چار پانچ سال کا ہوگا۔ اندازہ لگاتا ہوں . . . نغمہ کا بیٹا ہوگا۔ جو صاحب ٹکٹ لے کر آتے ہیں میں سمجھ جاتا ہوں کہ وہ نغمہ کے شوہر ہوں گے۔ بالوجی مسکراتے ہیں "یہی ہیں داماد جی . . . رفیق عالم۔" رفیق صاحب "آداب عرض" کہہ کر میری طرف دیکھنے لگتے ہیں۔

"نریندر جی . . ."

میں مسکرانے کی کوشش کرتا ہوں۔ لیکن اس کوشش میں مجھے لگتا ہے میرا چہرہ المناک ہو گیا ہے۔ بالوجی کہتے ہیں "دیکھتے ہو نہ یہ سوغات! اس نوکری

شکن آلود ہے۔ گھٹنے سے کچھ نیچے تک جیسے تیسے باندھی گیروے رنگ کی دھوتی۔ مجھے یاد آتا ہے کہ کپڑے کا یہ رنگ کنویں کے پانی کی وجہ سے ہے۔ سوچتا ہوں کہ اب تک وہی کنواں ہے گھر پر اور اسی حالت میں ہے۔ بابوجی اس کنویں کے بارے میں کہتے تھے کہ ہر سال اگر کنویں کی صفائی نہ کی جائے تو پانی گندا اور بدبودار ہو جاتا ہے۔ جس کنویں سے پانی برابر نہیں نکالا جاتا، وہ کنواں آہستہ آہستہ مر جاتا ہے۔ بابوجی کی دھوتی کا گیروا رنگ دیکھ کر مجھے لگتا ہے وہ کنواں یقیناً مر گیا ہوگا۔

بیٹھے بیٹھے بابوجی اونگھ رہے تھے۔ میں نے کہا۔
"کھانا کھا لیجیے اب۔" وہ اچانک ہوشیار ہو گئے: "نہیں ... کھانا آ گیا ہوگا وہاں اسپتال میں۔"

"اسپتال میں؟ کہاں سے آیا ہوگا؟"

بابوجی اچانک جیسے چہک اٹھے: "ارے ... وہ سلیمان بھائی کے داماد ہیں نہ! نغمہ کے ..."

"اچھا ہاں۔ نغمہ نہیں رہتی ہے؟"

"ہاں پہلے ادھر دربھنگہ میں تھی۔ اب یہیں ہے۔ کیا نام ہے محلے کا ... مصطفیٰ پور۔ وہیں رہتی ہے۔"

میں اچانک چھوٹا ... بہت چھوٹا پڑ گیا تھا۔ مجھے لگ رہا تھا میں بہت دور ہوتا جا رہا ہوں اور بابوجی کا وجود آہستہ آہستہ بوجھل ہوتا جا رہا ہے۔

بابوجی کی آواز بہت گہرائی سے اٹھتی ہوئی محسوس ہوتی ہے: "داماد کی وجہ سے کوئی دقت نہیں ہوئی۔ آپریشن کا پیسہ بھی نہیں لگا۔ بس صرف دوا اور تھوڑا سامان لگا۔ ایتھر، انجکشن وغیرہ۔" بابوجی جیسے کسی روحانی خوشی میں ڈوب کر بول رہے تھے: "ارے، وہ نغمہ تو سکھی ہے نہ کرن کی! جس دن آپریشن ہوا، قریب دو بجے دن میں تب سے لے کر رات بھر بیٹھی رہی وہ۔ دوسرے دن گئی۔ کھانا بھی گھر سے ہی بھجوانے لگی۔ میں نے کہا بھی کہ کھا لیا کروں گا لیکن ضد کر بیٹھی۔ دوپہر کا کھانا داماد لے آتے ہیں دفتر آتے وقت۔ رات کا کھانا بھی نغمہ بھجوا دیتی ہے۔ کرن کو تو سادی کھچڑی کھلانی پڑتی ہے۔ وہ بھی وہیں سے بن کر آتی ہے۔ ڈاکٹر نے کہا ہے اب رہنے کی ضرورت نہیں ہے۔ کل یا پرسوں چھٹی مل جائے گی اسپتال سے۔"

بابوجی پُرمسرت انداز میں بولے جا رہے تھے۔ اور مجھے لگ رہا تھا کہ اپنے ہی اندر کے کسی دلدل میں حلق تک دھنستا جا رہا ہوں۔ اندر کا کوئی حصہ آہستہ آہستہ کٹتا جا رہا تھا۔ لیکن بابوجی کے دل میں غضب کا جوش تھا۔ مانوس مریل سی آواز کی جگہ جوش سے بھری ہوئی آواز تھی: "سلیمان بھائی کا سہارا نہ ملتا تو مر گئی ہوتی کرن۔ دولہا جی کلکتہ میں رہتے ہیں۔ کرن کے گھر والوں کو تو مطلب ہی نہیں ہے کسی کے مرنے جینے سے۔ مجھے خبر ملی، کرن کو لے آیا۔ بلاک کے ڈاکٹر کو دکھایا تو ڈاکٹر نے کہا۔ آپریشن کا معاملہ ہے۔ دربھنگہ یا پٹنہ لے جائیے۔ لیکن لے کیسے جائیں؟ گھر میں تو کچھ تھا نہیں۔ آخر سلیمان بھائی نے مدد کی۔ بولے کہ چلیے پٹنہ۔ وہاں تو اپنے داماد ہیں ہی۔ اسپتال میں روپے بھی انھوں نے ہی دیے۔ ساتھ ساتھ آئے اپنے خرچ سے۔"

کسی گہری احسان مندی سے بوجھل ان کی آواز جیسے ٹوٹنے لگی: "گاؤں میں اتنے لوگ ہیں۔ اپنے بھائی بھتیجے چاچا، گو سب ہیں لیکن ضرورت پڑنے پر سب نے ہاتھ کھینچ لیے۔ بڑے بھیا سے قرض مانگا تو اپنے بڑے بیٹے سُریش کے بارے میں بولے کہ وہی مالک ہے گھر کا۔ سریش نے بہانہ بنا دیا، 'روپے کہاں ہیں کاکا' بعد میں ایک دوسرے آدمی سے معلوم ہوا کہ سریش کہتا ہے۔ کون دے گا قرض؟ جس آدمی کو اس کا بیٹا نہیں پوچھتا اس کو کون دے گا قرض؟" کسی تذلیل کے زہر کو پیتے ہوئے بابوجی ایک دم مغموم ہو گئے تھے۔ میں سوچ رہا تھا کیا بابوجی اپنی تذلیل کے بہانے مجھے ذلیل کرنے کی کوشش تو نہیں کر رہے ہیں۔ انہوں نے تو تہیہ کر رکھا تھا کہ اگر میں ان کے پاس نہیں جاؤں گا تو وہ کبھی نہیں آئیں گے میرے پاس۔ پھر اچانک کیسے آ گئے؟

کھانا انھوں نے نہیں کھایا۔ یہی کہتے رہے کہ وہاں آ گیا ہوگا کھانا۔ رہنے دو۔ بساد جائے گا۔

رات ہو گئی تھی۔ گھڑی میں وقت دیکھا۔ نو بج رہے تھے۔ جانے سے پہلے بابوجی بولے: "منا کہاں ہے۔ دیکھ لیتا ایک بار۔"

منا میرے بیٹے کی نام کی عمومیت تھی۔ ویسے ہم لوگ یشو کہتے ہیں اپنے منے کو۔

اندر بیڈروم میں یشو گہری نیند سو رہا تھا۔ سوئی ہوئی حالت میں ہی یشو کو گود میں اٹھا کر بابوجی کے پاس لے آیا۔ گود میں لینے کے لیے انھوں نے بانہیں پھیلا دیں۔ چند لمحوں تک وہ یشو کو تکتے رہے۔ ٹیوب لائٹ کی دودھیا روشنی میں یشو کا گورا چہرہ کچھ زیادہ ہی گورا لگ رہا تھا۔ بابوجی کی گود میں یشو اچانک زور سے چیخا، اتنے زور سے کہ اندر سے رشمی دوڑتی ہوئی آ گئی۔ بابوجی تجربےکار آدمی تھے، بالکل پُرسکون رہتے ہوئے بولے۔ "ڈر گیا ہے سپنے میں۔ اس کے سرہانے کچھ ڈنڈا یا لوہے کی کوئی چیز رکھ دیا کرو۔ نہیں ڈرا کرے گا۔"

بابوجی اٹھنے لگے۔ باہر اندھیرا تھا۔ میں نے روکنا چاہا: "نہیں، ابھی ٹھیک نہیں ہے بابوجی۔ شہر میں بدامنی ہے۔"

بابوجی آہستگی سے ہنسے۔ جیسے یہ کسی معصوم بچے کی بات ہو: "نہیں کوئی بات نہیں۔ شہر کے لوگوں کو ڈر ہوگا۔ ہم لوگ دیہات کے ہیں۔ پھر جانا ضروری ہے۔ کرن اکیلی ہوگی وہاں۔"

بابوجی رکے نہیں۔ سیڑھیوں سے اترتے ہوئے انھوں نے کرن کا بیڈ نمبر بتا دیا۔ یہ بھی بولے کہ کل تک ہیں۔ پرسوں چلے جائیں گے۔

میں سڑک تک انھیں چھوڑنے گیا۔ بالکل سونی تھیں سڑکیں۔ اندرونی دہشت کی وجہ سے اندھیرا زیادہ خوفناک لگ رہا تھا۔ میں نے کہا: "اگلے چوراہے پر شاید کوئی رکشہ مل جائے۔"

بابوجی میں وہی بے فکری تھی۔ "کوئی بات نہیں، زیادہ دُور نہیں ہے۔"

اپنے فلیٹ کی جانب لوٹتے ہوئے میں بابوجی کی کہی ہوئی ایک لوک کتھا پر سوچ رہا تھا۔ جس میں ایک پنڈت بددُعا سے متاثر ندی کے کنارے بیٹھا ہوا تھا۔ اس نے ندی میں ایک انگلی ڈالی اور پایا کہ وہ انگلی پتھر بن گئی ہے۔ وہ اسی سوچ میں ندی کے کنارے بیٹھا ہوا تھا۔ تبھی ٹھیلے لیے ایک دیہاتی آدمی آیا اور کسی غور و فکر کے بغیر ندی میں داخل ہو گیا۔ پھر تیرتا ہوا اس پار چلا گیا۔

اگلے دن دفتر سے کچھ پہلے لوٹا۔ رشمی پشو کے ساتھ پہلے سے تیار بیٹھی تھی۔ اسپتال کے سرجیکل بلاک میں بیڈ نمبر پینتیس پر جو مریضہ لیٹی ہوئی تھی اس کو پہچان سکنا مشکل تھا کہ وہ میری چھوٹی بہن کرن ہے۔ تیمارداری کرنے والے بابوجی اس وقت وہاں نہیں تھے۔ ہم لوگوں کو دیکھتے ہی کرن اٹھ کر بیٹھنے کی کوشش کرنے لگی سہارا دے کر میں نے اسے بٹھا دیا۔ موہوم سی مسکراہٹ کرن کے بیمار، سوکھے چہرے پر اُبھری لیکن کچھ ہی لمحوں کے بعد جانے کیا ہوا کہ وہ اچانک رونے لگی۔ رشمی کرن کے پائتانے بیٹھی تھی۔ میں پشو کو اپنی گود میں لیے سرہانے کے پاس تھا۔ کرن نے جانے کتنی بار پشو کو چوما۔ پھر زور زور سے رونے لگی۔ آس پاس کے بستروں پر پڑی مریضائیں اور ان کی تیمارداری کرنے والوں کے لیے ہم تماشہ بن رہے تھے۔ میں نے کرن کو کسی طرح چپ کرایا لیکن سسکیوں کے رُک کنے کے باوجود اس کی آنکھیں لگاتار روتی رہیں۔

بالکل لاغر ہو گئی تھی کرن، چہرہ سوکھا اور پیلا پڑ گیا تھا۔ کرن کو دیکھ کر مجھے اب بادلوں کی ہلکی پرت کے درمیان کے ہوئے چاند کی یاد آئی تھی۔ اس لمحے میں کرن کا بچپن یاد آرہا تھا مجھے۔ گاؤں کے مڈل اسکول میں دو جماعت پیچھے پڑھنے والی کرن اور نغمہ۔ کلاس شروع ہونے سے پہلے پرارتھنا ہوا کرتی تھی۔ پرارتھنا کی گھنٹی بجتے ہی سارے طلبہ قطار میں کھڑے ہو جاتے تھے۔ پرارتھنا کی قیادت کرنے کا ذمہ میرا اور کرن کا تھا۔ ہم آگے آگے گاتے تھے:

ہے پربھو آنند داتا گیان ہم کو دیجیے
شیگھر سارے اوگنوں سے دور ہم کو کیجیے
لیجیے ہم کو شرن میں ہم سدا چاری بنیں

مجھ سے صرف تین سال چھوٹی تھی کرن لیکن اس کے جسم کی باڑھ دیکھ کر ماں کہتی تھی کہ لڑکی بد نصیبی کی طرح بڑھتی ہے۔ ماں کہہ کر ہنسنے لگتی تھی اور کرن شرما کر بھاگ جاتی تھی۔ چنچل اور نٹ کھٹ کرن آہستہ آہستہ یادوں کے پار چلی گئی۔ جانے کیسے بابوجی نے کرن کی شادی کی۔ جیجا جی کو میں نے کبھی دیکھا نہیں۔ اتنا معلوم ہوا تھا کہ وہ کلکتہ میں کوئی چھوٹی موٹی نوکری کرتے ہیں۔ سال چھ مہینے پر کبھی آتے ہیں اور مہینے بھر یا پندرہ دن بعد لوٹ کر چلے جاتے ہیں۔

لیکن اسپتال کے بیڈ پر یہ جو کرن لیٹی ہوئی ہے، وہ بچپن کی اس کرن کے درد انگیز کارٹون کی طرح لگتی ہے۔ چت لیٹی ہوئی ہے کرن۔ آنکھوں کے کناروں سے ٹپکتے ہوئے آنسوؤں سے سر کے دونوں طرف کا بستر بھیگ گیا ہے۔

بولتی نہیں ہے وہ۔ بس کبھی کبھی اندر ہی اندر رونے کے درمیان آنے والی ہچکیاں گھٹتی ہوئی سی لگتی ہیں۔

گھنٹے بھر سے زیادہ کا وقت نکل گیا ہے۔ بابوجی بازار سے لوٹ آتے ہیں۔ پوچھتے ہیں "کب آئے ہو؟"

میں گھڑی میں وقت دیکھتا ہوں اور وقت کو زیادہ بتاتا ہوں۔ "قریب ڈیڑھ دو گھنٹے سے ہوں۔"

بابوجی نیچے فرش پر بیٹھ جاتے ہیں۔ "اب ٹھیک ہے سب۔ مرض نکل گیا جسم سے۔ کل نہیں تو پرسوں چلے جائیں گے۔ شام کو گاڑی ملتی ہے نہ پریاگ ایکسپریس؟ جو کہ بمبئی والی؟"

مجھے کچھ پتہ نہیں ہے۔ پھر بھی کہتا ہوں۔ "ہاں شاید شام میں ہی ہے۔"

کرن ایک ٹک دیکھ رہی ہے مجھے، رشمی کو، پشو کو، اس کی آنکھیں پتھر کی آنکھوں کی طرح ساکت ہیں۔ مجھ سے برداشت نہیں ہوتا۔ کچھ چبھتا سا لگتا ہے۔ چلتے وقت بابوجی سے کہتا ہوں۔ "کوئی ضرورت ہو تو . . ."

"نہیں کچھ نہیں۔ پھر نغمہ تو ہے ہی یہاں۔" بابوجی کی آسودگی اور مسکراہٹ مجھے ذبح کرتی ہوئی لگتی ہے۔ لگتا ہے کسی تیز دھار والے ہتھیار سے آہستہ آہستہ کوئی چھیل رہا ہے۔ بابوجی اسی پرمسرت لہجے میں کہتے ہیں۔ "چھٹی مل جائے گی کل۔ لیکن نغمہ تو جانے نہیں دے گی کل۔ پرسوں شام کی گاڑی پکڑ لیں گے۔"

شہر ابھی تک اعتدال پر نہیں آیا ہے۔ اندھیرا ہوتے ہی سڑکیں ویران ہو جاتی ہیں۔ پندرہ سولہ دن قبل صرف دو دن کے کرفیو نے کسی شدید مرض کی طرح شہر کو اندر سے بہت کمزور کر دیا ہے۔ پھر بھی جانا ہی پڑا اسٹیشن۔ گاڑی نہیں آئی تھی۔ پلیٹ فارم کی بینچ پر کرن بیٹھی ہوئی تھی۔ اسی سے سٹ کر نغمہ بیٹھی تھی۔ پہچان میں نہیں آرہی تھی نغمہ۔

"آداب بھائی جان!" مسکراتی ہے نغمہ بہن۔ میں غور سے دیکھتا ہوں۔ ایک دم بھری پُری صحت مند اور خوش۔ بغل میں ایک لڑکا نغمہ کا کندھا پکڑے کھڑا ہے... چار پانچ سال کا ہوگا۔ اندازہ لگاتا ہوں... نغمہ کا بیٹا ہوگا۔ جو صاحب ٹکٹ لے کر آتے ہیں میں سمجھ جاتا ہوں کہ وہ نغمہ کے شوہر ہوں گے۔ بابوجی مسکراتے ہیں۔ "یہی ہیں داماد جی . . . رفیق عالم۔" رفیق صاحب "آداب عرض" کہہ کر میری طرف دیکھنے لگتے ہیں۔

"نریندر جی . . ."

میں مسکرانے کی کوشش کرتا ہوں لیکن اس کوشش میں مجھے لگتا ہے میرا چہرہ المناک ہو گیا ہے۔

بابوجی کہتے ہیں۔ "دیکھیے ہو نہ یہ سوغات! اس نوکری

میں پوری سنجیدگی سے سمجھ رہا ہے۔ پوری وداعی ہی کر دی ہے نغمہ نے۔ دلہن کی ساڑی ، بھی اُن کے پاس سے پوری ... بابوجی کے خوش وخرم چہرے کے اندر میں غم یا خوشی کی کوئی لکیر تک نہیں ہے تب بھی اُن کے جسم سے مہک رہے جیسے میرے اندر آ رہی ہے اور سبھی دنیا ہی بندھن کے تو بیٹی کا رشتہ ہے۔ مجھے ندامت سی محسوس ہو رہی ہے۔

شہر میں کشیدگی ہے۔ مجھے بند ٹوٹنے کی فکر ہو رہی ہے۔ گاڑی آ گئی ہے۔ کرن اور نغمہ گلے مل رہی ہیں۔ میں گھسٹ کر بغل میں کھڑا ہو جاتا ہوں۔ دیکھتا ہوں نغمہ کو۔ شہری تہذیب کے باوجود اس نے برقعہ نہیں پہنا ہے۔

وداع کے وقت بابوجی کے پیر چھوتا ہوں۔ عجلت میں ہونے کی وجہ سے وہ آشیرواد دینا بھی بھول گئے ہیں۔ نغمہ کرن کو سہارا دے کر ڈبے میں بٹھا رہی ہے۔ میں خاموشی سے دیکھ رہا ہوں۔ میرے لیے کوئی کام نہیں ہے۔

پلیٹ فارم کی بھیڑ میں میں اکیلا کھڑا ہوں اور دیکھ رہا ہوں۔ کرن کے آنسوؤں سے بھیگے چہرے کا نصف حصہ میری جانب ہے۔ نغمہ کھڑکی کے پاس کھڑی بابوجی سے کچھ کہہ رہی ہے۔ گاڑی آہستہ آہستہ کھسکنے لگتی ہے۔ نغمہ آنچل سے آنکھیں پونچھتی ہے ... لیکن میرے اندر کوئی جذباتی تلاطم نہیں ہے۔ کھسکتی گاڑی سے کرن میری طرف دیکھتی ہے۔ اس کے آنسوؤں کا بند ٹوٹ گیا ہے۔ بابوجی نے میری طرف ایک بار دیکھا ہے لیکن میں طے نہیں کر پاتا کہ رخصت ہوتی ان کی نظر میں کس کی تصویریں ساتھ جا رہی ہیں۔ اچانک مجھے ٹوٹنے کی ہڑبڑی ہو جاتی ہے ... شہر میں بدامنی ہے اور شام گہری ہوتی جا رہی ہے۔ ○

رؤف خیر

کھل گیا ہم سے بہر حال جو سب سے نہ کھلا
ہائے وہ شخص خدا جانے جو کب سے نہ کھلا

شعر مبہم وہ نہ تھا حرفِ مذبذب بھی نہ تھا
جو کسی ڈھب سے کھلا اور کسی ڈھب سے نہ کھلا

میری پہچان ہی کیا تیرے حوالے کے بغیر
میں کسی پر بھی مگر تیرے سبب سے نہ کھلا

کچھ تو ہم نے بھی تکلف سے بہت کام لیا
اور وہ شخص بھی کچھ پاسِ ادب سے نہ کھلا

خیر یاروں نے پہاڑوں پہ پہاڑے لکھے
چاہتے کیا ہیں کبھی شعر و ادب سے نہ کھلا

کن طلسمات کا اثر ہے یہاں
کون سا اسم کارگر ہے یہاں

گمشدہ منزلوں کا رونا کیا
اپنی تقدیر ہی سفر ہے یہاں

شکر ہے ناصروں کا ڈر نہ رہا
اپنی ہی جان اب سپر ہے یہاں

ڈر ہے سب کچھ بہا نہ لے جائے
ایک دریا جو باڑھ پر ہے یہاں

موسموں پر یہ قہر کیا ہے
بے ثمر کیوں شجر شجر ہے یہاں

میر صاحب بجا ہی کہتے تھے
کیسی نا قدریِ ہنر ہے یہاں

بلا کی دھوپ تھی اور سایۂ شجر بھی نہ تھا
مگر جنونِ سفر سے اسے مفر بھی نہ تھا

وہ شہر میر کی دِلّی کی طرح سونا تھا
مکاں بہت تھے پر آباد ایک گھر بھی نہ تھا

خزاں رسیدہ شجر موسمِ بہاراں میں
ہرا بھرا تو نہ تھا، ایسا بے ثمر بھی نہ تھا

تمیز کرتا رہا خواب اور حقیقت میں
کہ بے خودی تھی مگر ایسا بے خبر بھی نہ تھا

اسے سسکتی ہوئی زندگی سے نفرت تھی
مگر وہ شخص رضا مند موت پر بھی نہ تھا

ہمایوں ظفر زیدی

۱۴، انارکلی بازار، پرگتی میدان نئی دہلی ۱۱۰۰۰۱

اطہر فاروقی

مجروح سلطان پوری

سے ایک غیر رسمی گفتگو

یہ انٹرویو انجمن ترقی پسند مصنفین کی گولڈن جوبلی کے موقعے پر ۲۷، دسمبر ۸۷ء کو نئی دہلی میں لیا گیا۔

سوال : مجروح صاحب! آپ کی شاعری کی ابتدا کا زمانہ، ایک طرف اگر زبردست جوش و خروش، سیاسی بیداری اور ترقی پسند تحریک کے عروج کا زمانہ تھا تو دوسری طرف روایتی شاعری کی آب و تاب بھی اس وقت تک ماند نہیں ہوئی تھی اور کلاسیکل رچاؤ معیوب نہیں ٹھہرا تھا ——— تو ان اثرات کی کس حد تک کارفرمائی بہ حیثیت مجموعی یا جزوی طور پر آپ کی شاعری میں، خود آپ کو نظر آتی ہے؟

جواب : یہاں کئی وضاحتیں بہت ضروری ہیں۔ اوّل تو جس کلاسیکل رچاؤ کو معیوب ٹھہرایا جاتا ہے وہ آج بھی ہماری شاعری کے لیے حُسن کی آخری حد ہے وہ لوگ جو اسے معیوب ٹھہراتے ہیں وہ اُردو شاعری کا مطالعہ پورے طور پر اس کے کلاسیکی محاسن کے ساتھ نہیں کر سکے ہیں، ان کا ملجا و ماوا مغربی ادب ہے وہ اپنی مشرقی شاعری کی بُنیاد مغرب پر رکھتے ہیں۔ اُن کا تضاد یہی ہے ویسے استفادہ بالکل دوسری چیز ہے۔ اسی وجہ سے غلط فہمیوں کا ایک سلسلہ چل نکلا ہے۔ اب رہی میری شاعری تو میری شاعری کی شروعات کا زمانہ ۱۹۳۶ء کے آس پاس کا زمانہ ہے مگر اس وقت میں لفظِ ترقی پسندی سے بھی واقف نہ تھا۔ دستورِ زمانہ کے مطابق میں بھی زبان کے اہتمام کے ساتھ ایسی طرحی غزلیں کہتا تھا:

چشم تر، لب خشک، آہ و زاریاں
رنگ پر ہیں ان کی فتنہ کاریاں
ہر قدم پر لڑکھڑاتے ہیں قدم
دیدنی ہیں عشق کی سرشاریاں

(وغیرہ ۱۹۳۵ء)

اس وقت یہی انداز مقبول بھی تھا حالانکہ عوامی طور پر جدید طرزِ فکر متعارف ہو رہا تھا اور صنائع بدائع کی جگہ اسلوب میں تازگی اور استعارے کی شروعات ہو چکی تھی مگر یہ روشنی بہت آہستہ آہستہ پھیل رہی تھی۔ ہم نے بھی اسی زمانے میں پہلے پہل مجاز اور جاں نثار اختر کو سُنا۔ میرا اپنا خیال ہے اور بہت سے لوگ اس سے اختلاف بھی کریں گے کہ مجاز کی نظم "آوارہ" نے ہی اُردو نظم گوئی کا رُخ موڑ دیا تھا اور ان کی اس غزل سے ترقی پسند غزل کی شروعات ہوئی:

اے ذوقِ تصوّر کیا کیجے
نظروں میں کوئی صورت ہی نہیں
اے شوقِ تماشا رُخصت ہو
ہم صورتِ جاناں بھول گئے

مگر اس سے بھی کوئی بہت واضح اثرات مرتب نہ ہو سکے۔ اس کا سب سے بڑا سبب ماحول تھا۔ حالانکہ کبھی کبھی گیت کے انداز میں کچھ نہ کچھ کہہ لیا کرتے تھے اور یہ سلسلہ بہت بعد تک چلا۔ جب ۱۹۴۵ء میں پہلی دفعہ بمبئی گئے تو وہاں بھی ۱۹۴۳ء میں میرٹھ کے طرحی مشاعرے کی، جو سر رضا علی خاں کی صدارت میں منعقد ہوا تھا، غزل پڑھی:

کوئی آتش در سبو شعلہ بہ جام آ ہی گیا
آفتاب آ ہی گیا ماہِ تمام آ ہی گیا
محتسب! ساقی کی چشمِ نیم وا کو کیا کروں
میکدے کا در کھلا، گردش میں جام آ ہی گیا

اور اسی غزل کا یہ شعر سبط حسن نے اپنی اخباری رپورٹ میں لکھا:

ہم قفس صیاد کی رسمِ زباں بندی کی خیر
بے زبانوں کو بھی اندازِ کلام آ ہی گیا

سوال : اور آپ کی ترقی پسند تحریک سے وابستگی؟

جواب : یہ بہت بعد کی بات ہے۔ ۱۹۴۲ء میں جونپور کے ایک مشاعرے میں جگر مرادآبادی صاحب سے ملاقات ہوئی۔ اس زمانے میں جگر صاحب سے شرفِ تلمذ ہی بہت بڑی بات تھی (یہ تلمذ ذہنی تھا اور فیض بخش مگر مصرعوں پر اصلاح والا تلمذ یہ نہیں تھا) خوش قسمتی سے مجھے جگر صاحب کے ساتھ رہنے کے مواقع بھی میسر آ گئے۔ میں ان کے ساتھ گونڈہ رہا اور اس زمانے میں جو کچھ جگر صاحب سے سیکھا وہی سرمایۂ حیات ہے اس کے بعد ایک دفعہ علی گڑھ میں رشید احمد صدیقی صاحب



[illegible]

سے مُلاقات ہوئی وہ ڈیوٹی سوسائٹی کے صدر تھے اور علی گڑھ اس زمانے میں ترقی پسند شعرا کا مرکز تھا۔ میں کافی دنوں تک رشید صاحب کے ساتھ بھی رہا۔ جب بھی رشید صاحب کے یہاں لوگ آتے تو شعر سُنانے کے لیے میں اور جذبی صاحب بُلائے جاتے۔ یہیں سے میں نے زندگی کا ایک سفر شروع کیا اور شاعری کے ساتھ فلمی کیریئر کی بھی شروعات ہوئی۔ یادش بخیر! ہوا یوں کہ ایک مشاعرے میں جگر صاحب کے ساتھ ۱۹۴۵ء میں بمبئی گیا۔ مشاعرے میں میرا نمبر تخشب جارچوی کے بعد آیا۔ تخشب کی شخصیت اور سحر آفریں ترنم خدا کی پناہ اور اس کے بعد مجھ جیسا مبتدی کہ عوام سُننے کو تیار ہی نہ ہوئے۔ اور مجھے پڑھے بغیر بیٹھ جانا پڑا۔ اس بات پر جگر صاحب برہم ہو گئے اور ناظم مشاعرہ نے مجھے دوبارہ پڑھوایا۔ میں نے میرٹھ والی غزل جس کا اُوپر ذکر آیا ہے پڑھی۔ غزل کا پڑھنا تھا کہ مجمع پلٹ گیا اور ہم نے یکے بعد دیگرے کئی غزلیں پڑھیں۔ اس محفل میں فلم ڈائرکٹر کاردار بھی موجود تھے جو اُن دنوں شاہجہاں بنا رہے تھے۔ انھیں میری شاعری پسند آئی اور انھوں نے جگر صاحب کو فون کیا کہ وہ شاہجہاں کے گانے مجھ سے لکھوانا چاہتے ہیں۔ جگر صاحب نے مجھ سے کہا مجھے کچھ زیادہ تجربہ نہ تھا اور مشاعروں سے اچھے پیسے مل جاتے تھے اس لیے میں نے انکار کر دیا مگر جگر صاحب کو میں بہت عزیز تھا انھوں نے مجھے سمجھایا اور زندگی کے نشیب و فراز سمجھائے تو میں تیار ہو گیا۔ اس کے بعد جو فلمی سفر ایک دفعہ شروع کیا تو کبھی پیچھے مُڑ کر نہیں دیکھا۔ اس دَور میں بعض گیت اتنے مقبول ہوئے کہ تصور نہیں کیا جا سکتا۔ ان میں خصوصاً وہ گیت جو سہگل کی آواز اور نوشاد کی موسیقی کے تحت لکھے گئے۔ ایک گیت:

اب جی کے کیا کریں گے
جب دل ہی ٹوٹ گیا

سہگل کے جنازے کے ساتھ قبرستان تک بجتا ہوا گیا تھا۔ علاوہ اس کے لاتعداد گیت مختلف میوزک ڈائرکٹروں کے ساتھ بہت مقبول ہوئے۔ وہ دَور ترقی پسند تحریک کا زرّیں دَور تھا مگر مجھے ترقی پسند تحریک سے وابستگی ان دنوں بہت مہنگی پڑی۔ ایک طرف تو روایت کا باغی مجرم قرار دیا گیا، دوسری طرف اس دَور میں ترقی پسندوں نے غزل کو معتوب قرار دے رکھا تھا تمام بڑے ترقی پسند شعرا غزل کے نام سے بڑے بُرے مُنہ بناتے تھے ایک طرف جوش صاحب تھے تو دوسری طرف سردار جعفری۔ حالانکہ اس مخالفت کے اسباب مختلف تھے جوش صاحب کا معاملہ سب کو معلوم ہے۔ سردار جعفری ان دنوں آزاد نظم "نئی دُنیا کو سلام" لکھ رہے تھے۔ مگر میں بہت ثابت قدمی سے خاموشی کے ساتھ غزل کی اہمیت منوانے کی کوشش کرتا رہا۔ ترقی پسند کہتے تھے کہ زندگی کا ساتھ غزل نہیں دے سکتی اور جو کچھ ہم تیسری دُنیا کے دبے کچلے عوام، مزدور اور کسان اور استحصال زدہ معاشرے سے متعلق کہنا چاہتے ہیں اس کے لیے تو غزل کا دامن بہت تنگ ہے مگر میں نے ان الزامات کی بے بنیادی کو غزل میں ثابت کر دیا اور انھی اعتراضات کے پیشِ نظر غزل میں ایسے اشعار کہے:

عہدِ انقلاب آیا دَورِ آفتاب آیا
منتظر تھیں یہ آنکھیں جس کی اِک زمانے سے
اب زمین گائے گی ہل کے ساز پر نغمے
وادیوں میں ناچیں گے ہر طرف ترانے سے
منچلے بُنیں گے اب رنگ و بو کے پیراہن
اب سنور کے نکلے گا حُسن کارخانے سے

سوال: اور وہ ہٹلر کے چیلے والا مشہور شعر؟

جواب: جی ہاں! وہ بھی مگر وہ ایک سیاسی گیت کا مصرعہ ہے مجھے اس دَور میں کمیونسٹ پارٹی کی طرف سے مزدوروں کے سامنے تقریر کرنا تھی اور اسی لیے یہ عام فہم شعر کہا۔ کچھ لوگوں نے اس معاملے کو دوسرا رُخ دے دیا ہے۔ سردار نے اسے صرف میرے مجموعے میں شامل کرنے کا مشورہ دیا تھا۔ اسی غزل کے ایک اور شعر کو یاروں نے دوسرا رُخ دے دیا حالانکہ اس شعر:

کامن ویلتھ کا داس یہ نہرو اور تباہی لانے نہ پائے

کی حیثیت بھی علیحدہ مصرعے کی ہے جس پر مجھے جیل جانا پڑا۔ مگر میرے جیل جانے پر حالات تبدیل ہو گئے۔ جیل میں بہت سے لوگ مجھ سے ملنے آتے اور مصلحت پسندی کا مشورہ دیتے۔ عصمت آپا گرتی پڑتی چلی آئیں اور کہتیں کہ مجروح کیوں پریشان ہو رہے ہو اب حالات تیزی سے بدل رہے ہیں تلنگانہ ٹوٹ رہا ہے اسی لیے مجھے بھی مصلحت پسندی سے کام لینا چاہیے معافی مانگ لو مگر میرا ایک ہی جواب ہوتا کہ میں پولس سے معافی نہیں مانگوں گا۔ مسکراتے ہوئے" حالانکہ کچھ لوگ معافی مانگ کر مجھ سے بہت پہلے جیل سے نکل آئے۔

سوال: کیا اس کے بعد آپ کی شاعری کا طرز تبدیل ہوا؟

جواب: طرز کو تو تبدیل ہونا تھا پہلے:

التفات سمجھوں یا بے رُخی کہوں اس کو
رہ گئی خلش بن کر اس کی کم نگاہی بھی
شمع بھی اُجالا بھی میں ہی اپنی محفل کا
میں ہی اپنی منزل کا راہبر بھی راہی بھی
بہانے اور بھی ہوتے جو زندگی کے لیے
ہم ایک بار تری آرزو بھی کھو دیتے

'لیا مجھے طوفاں کی موج نے ورنہ
کنارے والے سفینہ مرا ڈبو دیتے

ے ڈھرّے پر شاعری چلتی رہی تھی۔ مگر
قلابی آہنگ زیادہ شدّت سے جیل ہی میں شروع
۔ہ میری زبان پر شروع سے ہی آتش کا بہت اثر
اور یہ اثرات میرے گیتوں سے لے کر نظموں تک
بھی میں بہت واضح ہیں۔ مگر یہ اسلوب کی
ت ہے۔

سوال: مگر آپ کے فلمی نغموں میں ایک بڑی تعداد
ہ نغموں کی ہے جن کا معیار انتہائی پست ہے اور
پ کی شاعری جس وقار و وزن کی حامل ہے فلمی
غمے اس سے بالکل علاقہ نہیں رکھتے۔

اب: آپ کی یہ بات بہت حد تک دُرست ہے
مگر فلم کی اپنی مجبوریاں اور حدیں ہوتی ہیں کوئی
لم ساز معیار کے نام پر کروڑوں روپیے ڈبو دینے کا
سک نہیں لے سکتا۔ مگر مَیں نے، جہاں بھی گنجائش
ہی ہے معیار کے اعلیٰ ترین نمونے فلم بینوں کے
سامنے پیش کیے ہیں مثلاً فلم شاہجہاں، انداز، بھیگی
ات، آرتی، دستک، ممتا، دوستی، مرے ہمدم مرے
دوست اور دوسری فلموں کے کتنے ہی گیت۔ مگر
ج کل فلموں کا معیار بہت تیزی سے گر رہا ہے۔
یں بھی اس صورتِ حال سے ناخوش ہوں۔ اپنے
لم معیار فلمی نغموں کے لیے مجھے شرمندگی نہیں ہے
لبتہ افسوس ضرور ہے۔

سوال: پچھلے دنوں آپ پاکستان تشریف لے گئے
تھے وہاں سے لوٹنے کے بعد اخبارات میں آپ سے متعلق
بہت سی غلط فہمیاں ساحر لدھیانوی اور جاں نثار
اختر کے فلمی نغموں سے متعلق وابستہ کی گئیں ان
معاملات میں کس حد تک صداقت تھی؟ کیا واقعی
آپ نے ساحر کے لیے نغمے لکھے تھے؟

جواب: وہاں مَیں نے صرف اتنا کہا تھا کہ ایک فلم
ارمان کا ایک گانا مَیں نے لکھا اس کا سبب یہ تھا
کہ ساحر کے ماموں کا انتقال ہو گیا وہ بستر پر تھے
اور قیمتی سیٹ بیکار ہو رہا تھا۔ ایسا فلمی دُنیا میں
اکثر ہوتا ہے اس فلم کے اسسٹنٹ این۔ دتا آج
بھی زندہ ہیں وہ اس کی گواہی دے سکتے ہیں۔ ایسے
ہی ایک موقع پر راجہ مہدی علی خاں کی کسی فلم کے
لیے بھی لکھا جو ان کی موت سے ادھوری رہ گئی تھی
مگر ان گیتوں پر اپنا نام دینا اچھا نہیں لگا جاں نثار
اختر کی کسی فلم سے متعلق اس امر کا اعتراف نوشاد
نے کسی مضمون میں کیا ہے۔

سوال: اور فیض صاحب والا معاملہ؟

جواب: مَیں نے صرف یہ کہا تھا کہ فیض بہر حال
مجھ سے بڑے شاعر ہیں مگر مَیں غزل میں خود کو فیض
سے کم تر نہیں سمجھتا۔ فیض نظم کے بادشاہ ہیں اور مَیں
نظم میں کوئی کمال نہ کر سکا۔ مَیں جب شاعری شروع
کر رہا تھا یعنی ۱۹۳۶ء کے آس پاس اس وقت
بھی فیض نئے اسلوب کے شاعر کی حیثیت سے بہت
مقبول تھے۔ یہاں ترقی پسندی سے متعلق بعض
دوسری باتوں کا تذکرہ بھی ناگزیر ہے۔ زمانۂ اسیری
میں ایک دفعہ ساحر مجھ سے ملنے آئے مَیں نے انھیں
چپکے سے شاہراہ میں اشاعت کے لیے ایک غزل دی
[ساحر اس زمانے میں شاہراہ کے مدیر تھے] مگر اگلے
ماہ بجائے میرے شاہراہ میں ساحر کی غزل شائع ہوئی
جس میں میری ترکیبیں [جو مَیں نے اُردو غزل میں پہلی
دفعہ استعمال کی تھیں] بدل کر استعمال کی گئی تھیں اور
ان کا استعمال بالکل غلط تھا۔ میرا شعر تھا:

شبِ ظلم نرغۂ راہزن سے پکارتا ہے کوئی مجھے
مَیں فرازِ دار سے دیکھ لوں کہیں کاروانِ سحر نہ ہو

ساحر نے اپنا جو شعر شائع کر دیا اس کا مصرعہ
تھا:

درِ زنداں سے دیکھیں یا عروجِ دار سے دیکھیں

مَیں نے فیض سے متعلق یہ ضرور کہا تھا کہ ان کے یہاں
فرازِ دار و رسن اور مشعلِ جہاں کا استعمال میرے بعد
ہے اور فرازِ دار و رسن تو غلط بھی ہے۔ فرازِ رسن بے معنی
ہے۔ بہر حال:

دُعائیں دیں مرے بعد آنے والے میری وحشت کو
بہت کانٹے نکل آئے مرے ہمراہ منزل سے
(ثاقب)

میری شاعری سے متعلق (خصوصاً ترقی پسندی)
بہت سے مفروضے قائم کر کے غلط تاویلیں پیش
کی گئی ہیں:

مری نگاہ میں ہے ارضِ ماسکو مجروح
وہ سرزمیں کہ ستارے جسے سلام کریں

یہاں ارضِ ماسکو صرف ایک علامت ہے
اس سرزمین کی جہاں سوشلزم سب سے پہلے کامیابی
کے ساتھ نمودار ہوا ورنہ ہماری منزل تو کوئی اور ہے
ہندوستان ہے۔

سوال: انجمن ترقی پسند مصنفین کی کانفرنس میں آپ
کا موقف سب سے جدا تھا۔ بعض مقامات پر تو
آپ ترقی پسند تحریک کے تمام اصولوں سے انحراف
کرتے نظر آئے۔ اس کا کیا سبب ہے؟

جواب: آپ نے غلط سمجھا، مَیں اپنے اس موقف پر
شروع سے قائم ہوں۔ فیض پر یہ اعتراض کیا گیا کہ:

تری آنکھوں کے سوا دُنیا میں رکھا کیا ہے

حالانکہ اس میں اعتراض کی کوئی بات ہی نہیں۔ یہ بالکل
سچ ہے کہ "تری آنکھوں" کے سوا دُنیا میں کچھ نہیں
یہ موضوع جاوداں ہے، لافانی ہے۔ دُنیا میں سب کچھ
یا تو عشق ہے یا پھر اس کا پرتو۔ عشق آفاقی ہے اور جس
شاعری نے اسے موضوع بنایا وہ بھی آفاقی ہے حُسن و
عشق اُردو شاعری کے لافانی موضوع ہیں خیر! یہ بہت
طویل بحث ہے۔ مَیں نے کانفرنس میں بھی یہی کہا کہ
ہم کہنا تو یہی چاہتے ہیں:

"تری آنکھوں کے سوا دُنیا میں رکھا کیا ہے"
مگر دوسرے مسائل بیچ میں آجاتے ہیں جو یہ نہیں کہنے دیتے ان مسائل میں فرقہ پرستی بھی ہو سکتی ہے اور دار و رسن بھی۔ جب جب ان مسائل سے فرصت مل پائے گی ہم صرف اور صرف یہی کہیں گے، اور جہاں ہم نے مصائب کے سبب ماضی میں ایسا نہیں کہا اس کا افسوس ہے:

آرزو ہی رہ گئی مجروحؔ کہتے ہم کبھی
اِک غزل ایسی جسے تصویرِ جاناں کہیں

دیارِ جور میں رستہ ہے اِک یہی ورنہ
کِسے پسند ہے اپنے دل کو سرِ دار کرے

سوال: جدید شاعری کے بارے میں آپ کا کیا خیال ہے؟

جواب: جدید شاعری اب اپنے حصاروں سے نکل کر نئی منزلوں کی طرف گامزن ہے۔ پاکستان میں جدید شاعری کا ارتقا انتہائی خوشگوار ہے یعنی اب جدید شاعروں کے اشعار بتلاتے ہیں کہ وہ کمٹمنٹ کے قائل ہوگئے ہیں مگر وہاں کے نئے لڑکوں پر فیض کا اثر بہت زیادہ ہے اور اگر یہ اثر برقرار رہا تو ان کے تشخص و انفرادیت کا برقرار رہنا مشکل ہو جائے گا۔ ہندوستان میں بھی جدید شاعری آزاد فضا میں پرواز کر رہی ہے مگر ان کے یہاں زبان کا استعمال بہت غلط اور اکتا دینے کی حد تک زبان سے دور و بست کی طرف سے ان کی غفلت دیکھ کر عبرت ہوتی ہے۔

سوال: آج کل آپ کی مصروفیات کیا ہیں؟

جواب: بمبئی کی زندگی کا اپنا ایک مزہ ہے۔ ویسے میں آج کل فلمیں بہت کم کر رہا ہوں کیونکہ اب فلمیں پست معیار کی تمام حدود پار کر کے جس مرحلے میں داخل ہو چکی ہیں اسے کوئی نام دینا ممکن نہیں اور ایسی فلموں میں کام کر کے نہ تو کوئی نغمہ نگاری کی خدمت ہو سکتی ہے نہ ذہنی سکون ہی میسر آنے کے امکانات ہیں۔ میرے بیٹے نے فلموں کی ادارت کا کام شروع کر دیا ہے مگر فلمی زندگی بہت زیادہ غیر یقینی ہے اور نشیب و فراز کے ساتھ ساتھ بہت زیادہ سرمایہ بھی درکار ہوتا ہے جو میرے پاس نہیں ہے۔ لہٰذا بقول سیمابؔ اکبرآبادی:

طولِ رہِ حیات سے گھبرا رہا ہوں مَیں
گھبرا رہا ہوں اور چلا جا رہا ہوں مَیں

پس نوشت:

۱۹۶۹ء میں غالب صدی کے سلسلے میں تاشقند، ماسکو اور لینن گراڈ بُلایا گیا۔ ۱۹۷۹ء میں وزارتِ خارجہ کے ایما پر ہندی اُردو ورکشاپ کے سلسلے میں ماریشس بھیجا گیا۔ ۱۹۸۰ء میں غالب نیشنل ایوارڈ تفویض ہوا انھیں دنوں لکھنؤ اُردو اکیڈمی کی طرف سے ادبی و شعری خدمات پر اوّل انعام ملا اور میر اکیڈمی نے اپنے ایوارڈ سے نوازا ساہتیہ اکیڈمی نے کبھی قابلِ اعتنا نہیں سمجھا اور اب کیا سمجھے گی جبکہ میرے جونیئرز کو ایوارڈ دینا شروع کر چکی ہے۔ ۱۹۸۳ء میں کناڈا اور امریکہ کے مختلف شہروں میں یاد کیا گیا کبھی شکاگو کبھی برکلے اور مینے سوٹا کی یونیورسٹیوں میں۔ کبھی ٹورانٹو، نیویارک، کیلیفورنیا کے شہر لاس اینجلس اور سان فرانسسکو اور منیا پولس کے مشاعروں میں میامی اور بوسٹن مَیں خود نہیں گیا۔ ⬡

اُردو میں بارہ ماسے کی روایت
مطالعہ و متن

اُردو میں عوامی شعر و ادب کے سلسلے بھی کلاسیکی ادبیات کے ساتھ ساتھ چلتے رہے ہیں۔ ان شعری اصناف کی رنگا رنگی اور صدیوں تک ان کی روایتوں کا تسلسل، ان کی مقبولیت کا بیّن ثبوت ہے۔ ایسی عوامی شاعری اور اس کے مختلف نمونے، اور عام پسند قصّے کہانیاں اُردو زبان میں لوک ساہتیہ کی موجودگی کی گواہی دیتے ہیں۔ افسوس یہ ہے کہ ہماری تنقید و تحقیق نے اس نثری اور شعری روایت پر وہ توجہ نہیں کی جس کی یہ مستحق تھی۔

اُردو میں کلاسیکی شاعری کی ابتدا، جہاں تک شمالی ہند کا تعلق ہے، افضل کے بارہ ماسے سے ہوتی ہے۔ بعد میں دوسرے کئی شعرا نے بھی بارہ ماسے لکھے۔ بعض نے ہندی دوہوں کو بھی اس میں شامل کیا جو کھڑی بولی کے علاقے میں خصوصیت کے ساتھ عوامی شاعری اور عوامی شعور کا حصہ رہے ہیں۔ بارہ ماسوں کا مطالعہ اُردو زبان کے ارتقائی مراحل کو سمجھنے اور اس کے علاقائی رشتوں کو جاننے میں بہت معاون ہو سکتا ہے۔

ڈاکٹر تنویر احمد علوی نے جو اُردو میں عوامی شعر و ادب کی روایت پر ایک مدت سے کام کر رہے ہیں، ۱۲ بارہ ماسے اس کتاب میں یکجا کر دیے ہیں۔ متن قدیم مطبوعہ اور قلمی نسخوں کو سامنے رکھ کر تیار کیا گیا ہے۔ آغازِ کتاب میں مبسوط و مفصّل مقدمے کے علاوہ ہر بارہ ماسے کا تعارف اور اس کا تنقیدی مطالعہ بھی فاضل مرتب نے پیش کیا ہے۔

مصنّفین: ۱۲ مختلف شعرا
مرتب: ڈاکٹر تنویر احمد علوی
صفحات: ۳۸۷
قیمت: ۴۹ روپے

اُردو اکادمی، دہلی سے طلب کریں

آزاد گورداسپوری

جو آفتاب میں دیکھا جلال میرا تھا
نظر جو چاند میں آیا جمال میرا تھا

سب اپنی دُھن میں تھے کس کو خیال میرا تھا
مثالِ شمع سرِ بزم حال میرا تھا

بہ غور تم نے سُنا ہی نہیں فسانۂ دل
عروج اِس میں تمھارا، زوال میرا تھا

میں اور تیری محبّت کا دم بھروں! توبہ
خطا معاف یہ بے جا خیال میرا تھا

ہر ایک در کی جبیں سائی کی مگر آزاد
وہ پورا ہو نہ سکا جو سوال میرا تھا

کوارٹر نمبر ۴، بلاک نمبر ۷/۵۲، روڈ نمبر ۱، ادت پور، جمشید پور ۸۳۱۰۱۳

فاصلہ بردار تھے، ہمراہِ جاں رکھا مجھے
اپنے دِل کی گرد جھاڑی، آئینہ سمجھا مجھے

پوچھنا ہے، کیا تعلّق ہی نہیں تعبیر سے
روک لینا ہے کسی دن خواب کا رستہ مجھے

دم بخود تھی مجھ کو ہر دم جوڑنے والی زمیں
آسماں نے ایک ہی جھٹکے میں جب توڑا مجھے

بھول ہی بیٹھا تھا میں اپنے بکھر جانے کا غم
ہائے کس انداز سے تم نے سمیٹا تھا مجھے

ہاں ترے رحم و کرم پر جی رہا ہوں آج بھی
اے مرے تعبیر دیدہ خواب! پہچانا مجھے؟

کب تلک بے سمت راہیں ساتھ میرے جائیں گی
کون دکھلائے گا اپنے گھر کا دروازہ مجھے

شاہد لطیف

۶/۴، رشید کمپاؤنڈ، کوسا، ممبرا، ضلع تھانہ ۴۰۰۶۱۲

مظہر محی الدّین

غزل کہنے سے جی اُکتا رہا ہے
مرے اندر کوئی مجھ سے خفا ہے

بھٹک جانے کا اندیشہ بڑھا ہے
کئی سمتوں میں رستہ بٹ گیا ہے

پڑوسی کے مکاں میں دُور درشن
مرا بچّوں سے گھر ویراں پڑا ہے

مری بستی کا اِک اِک سونا آنگن
گلی کوچوں سے بچپن مانگتا ہے

یہ دِل کو چھُو رہی ہے سوچ کیسی
یہ کیسا خوف دل پر چھا رہا ہے

الطاف کلاتھ سینٹر، گاوان چوک، بیدر، کرناٹک ۵۸۵۴۰۱

طیّب انصاری

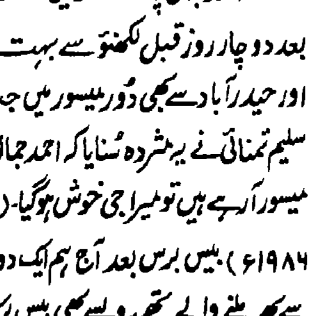
احمد جمال پاشا ـ چند یادیں

بیس سال اُدھر، مجھے اچھی طرح یاد ہے جب نومبر کے مہینے میں لکھنؤ کی کپکپاتی مگر صحت افزا سردیوں میں احمد جمال پاشا سے میری پہلی ملاقات "قومی آواز" کے دفتر میں محترمی حیات اللّٰہ انصاری نے کرائی تھی۔ وہ اس وقت اسم بامسمّیٰ، سراپا جمال تھے۔ بیضوی چہرہ، گوری رنگت، گھنیرے، گھنے اور سیاہ بال، اوسط سے کچھ اُبھرتا قد، اور آنکھوں سے ذہانت اور ذہانت سے کچھ زیادہ ظرافت جھانکتی ہوئی! وہ بڑی گرمجوشی سے ملے تھے اور اس طرح دوستی اور محبت کا رشتہ ہم دونوں میں قائم ہوگیا۔ دوسرے دن اپنے مکان "سروری منزل" لے گئے اور پھر وہاں سے قریب کسی ہوٹل میں چائے نوشی ہوئی۔ احمد جمال پاشا اس وقت کچھ زیادہ ہی منکسرالمزاج لگ رہے تھے۔ مجھے بار بار عبدالحلیم شرر کا "گذشتہ لکھنؤ" یاد آرہا تھا۔ اہلِ لکھنؤ کی وضعداری، رواداری اور مہمان داری تو لکھنؤ سے زیادہ مشہور ہے۔ مجھے شرر پر ترس بھی آرہا تھا کہ بیچارے اہلِ لکھنؤ کو یاد کرکرکے آبدیدہ ہوتے تھے کہ اب وہ لکھنؤ کی مہمان نوازی کہاں؟ ایسا لگتا ہے شرر کی ملاقات احمد جمال پاشا ایسے مخلص اور مہمان نواز شخص سے نہیں ہوئی تھی۔ اصل میں اس میں خود شرر کا ہی قصور تھا۔ انھیں احمد جمال پاشا سے بہت پہلے پیدا نہیں ہونا چاہیے تھا۔ سو انھوں نے اس کی سزا بھگتی اور میں اس بات پر مسرور تھا کہ احمد جمال پاشا میرے زمانے میں پیدا ہوتے ہیں۔ بہرحال ابھی میں اپنی قسمت پر رشک کر ہی رہا تھا کہ احمد جمال پاشا اصلی موضوع پر آئے اور انھوں نے انتہائی رازداری برتتے ہوئے کہا: "بھائی! اب آپ مصالحت کرادیں۔"

قصہ یہ تھا کہ ان کے اور مجتبیٰ حسین کے درمیان کچھ "غلط فہمیاں" تھیں۔ وہ نہیں چاہتے تھے کہ مجتبیٰ حسین ان سے خفا رہیں۔ انھیں اس بات کا علم ہوگیا تھا کہ میں مجتبیٰ کا اچھا دوست ہوں اور ان کے کام آسکتا ہوں۔ ویسے ہی میں ان کی مہمان نوازی سے متاثر تھا اب میری شرافت کا یہ تقاضہ تھا کہ حقِ نمک ادا کرتا۔ بہرحال میں نے وعدہ کیا کہ حیدرآباد جاؤں گا تو اوّلین فرصت میں مجتبیٰ سے ملوں گا اور پیدا شدہ غلط فہمی کو دُور کردوں گا۔ چنانچہ میں لکھنؤ سے جب حیدرآباد واپس ہوا تو دفتر "سیاست" میں مجتبیٰ سے حسبِ معمول شام کے وقت ملاقات ہوئی۔ میں نے احمد جمال پاشا سے اپنی لکھنؤ والی ملاقات کا احوال سُنایا۔ وہ بد کنے سے زیادہ اپنی عادت کے مطابق اُچھلنے لگا۔ میں نے کہا: "بھئی! چلو اورینٹ چلتے ہیں!!" وہ فوری راضی ہوگئے اور پھر اس بات پر بھی آمادہ ہوگئے کہ وہ ماضی کو فراموش کردیں گے اور مستقبل میں اب کوئی تنازعہ کھڑا نہیں ہوگا۔

میرے مزاح نگار دوستوں میں مجتبیٰ حسین تنہا تھا۔ اور اب ایک سے دو بھلے تھے! احمد جمال پاشا سے قلمی دوستی قائم ہوگئی۔ اور پھر کچھ ایسا ہوا کہ ایک زمانے تک کوئی خط نہ انھوں نے لکھا نہ میں نے۔ دونوں ہی طرف سے سکوت ہی سکوت تھا۔ ایک مدت کے گذرنے پر معلوم ہوا کہ احمد جمال پاشا نے کسی سرور صاحبہ سے شادی رچالی ہے۔ سرور نام سُن کر میں قدرے حیرت زدہ رہ گیا اور ساتھ ہی ان کی دور اندیشی کا قائل ہوگیا کہ کس طرح انھوں نے سرور صاحبہ سے شادی سے پہلے ہی اپنے مکان کا نام "سروری منزل" رکھ چھوڑا تھا۔ شاید "سروری منزل" اب انھیں راس نہ آئی اس لیے انھوں نے لکھنؤ کو اُجاڑ سیوان (بہار) کو آباد کیا تھا۔ شادی کی خوشخبری کے ساتھ ساتھ ان کی ادبی تخلیقات کی خبریں بھی ملتی رہیں۔ اب تک احمد جمال پاشا کی چھ تصانیف اندیشۂ شہر، ستم ایجاد، لذت آزار، چشم حیراں، مضامین پاشا اور پتّیوں پر چھڑکاؤ منظر عام پر آچکی ہیں۔

احمد جمال پاشا سے طویل غفلت کے بعد دو چار روز قبل لکھنؤ سے بہت دُور اور حیدرآباد سے بھی دُور میسور میں جب سلیم تمنائی نے یہ مژدہ سُنایا کہ احمد جمال پاشا میسور آرہے ہیں تو میرا جی خوش ہوگیا۔ (۱۹۶۶ء۔ ۱۹۸۶ء) بیس برس بعد آج ہم ایک دوسرے سے پھر ملنے والے تھے۔ ویسے بھی بیس برس کا



۱۱۶ - ڈی' ایوانِ شاہی کالونی' گلبرگہ ۵۸۵۱۰۲

عرصہ کوئی مختصر عرصہ تو ہوتا نہیں ہے! زمانے نے ان بیس برسوں میں کیا کچھ رنگ نہیں بدلا، حکومتیں بنیں اور بگڑیں، سرحدوں کے کنارے انگارے دہک اٹھے، کتنی ہی جانیں تلف ہوئیں، کتنے ہی گھر اجڑے اور پھر ان بیس برسوں میں تالاب بنے، نہریں کھدیں، چھوٹی چھوٹی بستیاں بستے بستے شہر بنے اور شہر بن سنور کر فردوس نظر ہوئے! منفی اور مثبت دونوں ہی طرح کی تبدیلیاں اور یہ تبدیلیاں ہم دونوں میں بھی نمایاں تھیں، میرا لڑکپن جوان تھا اور جمال پاشا کی جوانی اب باریش تھی! جب میں ان سے ملنے کے لیے آدرش لاج پہنچا تو سلیم تمنائی وہاں پہلے سے موجود تھے۔ مجھے دیکھ کر احمد جمال پاشا اپنی جگہ سے اٹھے اور یوں گلے لگایا جیسے کوئی بڑا بھائی اپنے چھوٹے بھائی کو گلے سے لگاتا ہے۔ بھابی سرور جمال کھڑی یہ منظر دیکھ رہی تھیں بڑی وضعدار خاتون ہیں۔ پاشا نے جب میرا تعارف کرایا تو کہنے لگیں "یہ آپ کے بارے میں پہلے ہی سے بہت کچھ بتا چکے تھے!" میں نے مسکراتے ہوئے احمد جمال پاشا کے حلیے کی طرف اشارہ کیا، کہنے لگے "میں نے حج کیا ہے!"

یہ سن کر میں نے کہا کہ "آدمی کو عمر کے کسی نہ کسی حصے میں سیدھے راستے پر آنا ہی چاہیے!" قہقہے بلند ہوئے، ان قہقہوں میں سلیم تمنائی کے معصوم قہقہے بھی شامل تھے اور بھابی سرور جمال کے معنی خیز قہقہے بھی! مجھے میسور کی سردیوں میں لکھنؤ کی کپکپاتی سردیاں محسوس ہوئیں بیس سال اِدھر، بیس سال اُدھر کا منظر پیش ہو رہا تھا۔ اور پھر احمد جمال پاشا اور سلیم تمنائی ایسے مخلص احباب کے بیچ میں کچھ زیادہ ہی خوش تھا اور سچ بھی تو یہی ہے نا! کہ ماہ و سال کا اثر زمانے اور ذات پر تو پڑ سکتا ہے لیکن جذبۂ محبت پر نہیں، محبت تو ہر دم جوان ہے۔ یہ جذبہ ایسا نہیں کہ سایے کی طرح گھٹ بڑھ جائے۔ یہ تو زمانے کے لیل و نہار سے بے نیاز ہے ——

چنانچہ میسور کے اس خوابوں اور خواب زاروں کے شہر میں میں شامِ اودھ کی انھی رنگینیوں اور بہاروں کا جلوہ دیکھ رہا تھا جو پہلے کی طرح آج بھی حیات بخش اور حیات افزا ہے!

رات دیر گئے تک ہم لوگ رات کے دھندلکوں سے بے نیاز قہقہے بکھیرتے اور قہقہے لوٹتے رہے اور پھر اپنے گیسٹ ہاؤس پہنچ کر میں تنہائی کے لمحوں میں بیتے لمحوں کو مقید کرنے کی کوشش کرنے لگا۔

(۲۲ر اکتوبر ۱۹۸۶ء)

بعد از مرگ: میسور کے دورانِ قیام وہ چند سطریں معرضِ وجود میں آئیں جنھیں ابھی آپ نے پڑھا ہے، میسور سے واپس گلبرگہ آیا مضمون کی اشاعت کی طرف دھیان ہی نہ گیا کچھ دنوں کے بعد احمد جمال پاشا کا خط آیا اور پھر انھوں نے اپنی کتاب "پتیوں پر چھڑکاؤ" ۸ جنوری ۱۹۸۷ء کی دستخط کے ساتھ بھجوائی اور پھر کچھ دنوں کے بعد یہ اندوہناک خبر کہ احمد جمال پاشا کا انتقال ہو گیا، زبان سے نکلا: ہزار حیف کہ یار اپنے درمیاں نہ رہا۔

احمد جمال پاشا

شاعروں کے شر سے میں

احمد جمال پاشا اُردو کے مزاح نگاروں میں ہندوستان اور پاکستان دونوں ملکوں میں ایک ممتاز مقام رکھتے تھے۔ آخر میں وہ کچھ بجھ سے گئے تھے لیکن اپنے بہترین دَور میں انھوں نے اُردو کے طنزیہ اور مزاحیہ ادب میں قابلِ قدر اضافے کیے ـــ یہ مضمون مرحوم نے ہمیں اپنے انتقال سے چند روز پہلے ارسال کیا تھا، عجب نہیں کہ یہ ان کی آخری تحریر ہو۔

ـــــــ ادارہ

بھلا شاعروں سے ہمیں شکوے کا کیا سوال؟ نہ ہم شعر کہہ سکتے ہیں نہ یاد رکھ سکتے ہیں، سچی بات تو یہ ہے بلا ٹانگ توڑے شعر کیا مصرعہ تک نہیں پڑھ سکتے۔ اگر کبھی طبیعت گدگدائی بھی تو حسبِ حال شعر یا مصرعہ نہیں بلکہ بے ترتیب اس کا کوئی کونا یا ٹکڑا بے ساختہ یاد آجاتا ہے۔ کوئی تشبیہہ، استعارہ یا ترکیب اُس وقت وہ آوارہ مصرعہ یا شعر ہمارے لاشعور سے تحت الشعور میں داخل ہوکر ہمارے اعصاب پر بے اختیار مسلط ہوجاتا ہے۔ اور ہم مخاطب سے الکاری شروع کردیتے ہیں۔

"وہ! وہ! نہ مٹ جاؤ گے، غضب کا شعر کہہ گیا۔ ظالم نے کمال ہی کردیا ہے۔ وہ... وہ... جس میں کچھ مٹا دینے کی دھمکی دی گئی ہے۔ ارے صاف غالب کا شعر ہے۔ مہربان آپ تو غالب کے حافظ ہیں بتائیے نا؟" اور مخاطب جو خیر سے شاعر بھی واقع ہوا ہے، کافی بُرا مانتے ہوئے بولتا ہے۔ "کہیں آپ کی مراد:

نہ سمجھو گے تو مٹ جاؤ گے اے ہندوستاں والو

سے تو نہیں؟"

اور ہم پھڑک اُٹھے اب شعر تحت الشعور سے مصرعہ کی شہ پاکر شعور میں پھاندنے کو بے تاب تھا بولے "ارے آگے بھی تو کچھ ہے۔ ہائے ہائے کیا شعر کہہ گیا چچا ہمارا!"

وہ صاحب رونی صورت بنا کر بولے۔

"غالباً آگے سے آپ کی مراد مصرعۂ ثانی سے ہے:

تمھاری داستاں تک بھی نہ ہوگی داستانوں میں

مگر جناب یہ شعر غالب کا نہیں اقبال کا ہے۔"

ہم بے بسی سے بولے۔ "ہوگا بھی علامہ کا ہی ہوگا۔ مگر اس شعر نے کم از کم ایک اُلجھن دور کردی کہ اس میں داستان ہے دستانے نہیں جبکہ یہ شعر ہم دستانوں سے پڑھ چکے ہیں۔ اسی غزل میں علامہ اقبال نے پائے یار پر جان تک دے دی ہے۔ نہ دیتے تو بھلا عمر بھر کی بے قراری کو قرار کیسے آتا۔ بے قراری اور وہ بھی شاعر کی۔" مخاطب چمک کر بولے۔ "بھلا صاحب! آپ بھی کمال کرتے ہیں، یہ تو جگر کا شعر ہے:

جان ہی دے دی جگر نے آج پائے یار پر

عمر بھر کی بے قراری کو قرار آ ہی گیا"

ہم نے رفع شر کی خاطر کہا: "چھوڑیے صاحب! سب پرانے زمانے کی باتیں ہیں۔" وہ صاحب گرم ہوتے ہوئے بولے "میں آپ سے ہزاروں دفعہ کہہ چکا ہوں کہ شعر و شاعری پر آپ مجھ سے بات نہ کیا کیجیے۔ اگر پرانے زمانے کی باتیں ہوتیں تب بھی چھوڑی جاسکتی تھیں۔ کم از کم جگر تو اسی زمانے کے شاعر ہوئے۔ رہے غالب و اقبال تو وہ ہر زمانے کے شاعر ہیں۔"

ہم نے موقع کی نزاکت دیکھتے ہوئے معاملہ سنبھالا۔ "وہ تو ہم کو یوں ہی کچھ یاد آ گیا تھا۔ اور آپ شاعری کا فلسفہ لے بیٹھے۔ چھوڑیے سب کو! کچھ اپنا تازہ کلام سنائیے۔"

اب جو انھوں نے مطلع عرض کیا تو قطعوں تک چار کے آٹھ بجا دیے۔

زمانۂ طالب علمی میں جب ہمیں شاعروں سے کوئی شکوہ نہ تھا، ایک ایسے ہاسٹل میں ہمارا داخلہ ہوگیا جو ہاسٹل کم اور شعرستان زیادہ تھا۔ مالک ہاسٹل، بیرے، چپراسی، دھوبی اور رہنے والے ایک سرے سے شاعر تھے۔ جو صاحب ہاسٹل چلاتے تھے، صاحبِ دیوان تھے۔ ذرّہ تخلص فرماتے۔ ہمارے بیچ بالوں پر دھوکا کھا گئے اور شاعر سمجھ کر ہاسٹل میں داخلہ منظور کرلیا۔ جیسا کہ عرض کیا جاچکا ہے، ہاسٹل ضرور ذرّہ کا تھا۔ لیکن ہمہ خانۂ آفتاب تھا۔ اس میں غیر شاعر کا گذر نہ تھا۔ ہمارے رُوم پارٹنر شباب کاکوری شاگردِ کافر عدم آبادی تھے۔ شاعری سے جو وقت بچتا احباب کی ٹوپیاں چرانے میں گذار دیتے۔ دراصل ان کے والد کی ٹوپیوں کی دکان تھی۔ اس لیے ہر نئی ٹوپی کے آدھے دام مل جاتے۔ مزے میں گذارا ہوجاتا بلکہ پس انداز کرکے ایک آدھ مشاعرہ بھی اسی رقم سے کر ڈالتے روزانہ کئی ٹوپیاں پار کردیتے۔ جس دوست

کو ریل پر پہنچانے جاتے ادھر ریل چلی اور انھوں نے اس کی ٹوپی اُچک لی۔ ٹوپی اتار نے کو پگڑی اُچھالنا کہتے۔ خیر شباب صاحب تو مجسّم شاعر تھے۔ برابر والے کمرے میں نحیف صاحب رہتے۔ پیشے کے اعتبار سے پہلوان تھے۔ بزورِ بازو کلام سناتے۔ تیسرے کمرے میں نجیبر صاحب رہتے زیادہ تر نثر میں کلام سناتے۔ ہم تے خفار ہتے ادھر انھوں نے نظم سنائی اور ہم نے اس کی نثر کر دی۔ ایک دن انھوں نے ایک نظم سنائی ہم نے اسی روانی سے حکیم لقمان کی" سارس اور لومڑی" والی کہانی سنادی اس کے بعد انھوں نے ہمارے کمرے میں اپنا داخلہ بند کر دیا۔ چوتھے کمرے میں صلیب صاحب رہتے تھے جو دیکھنے میں اس قدر مہیب نظر آتے کہ یقین تھا کہ ضرور کسی دن ہمیں مصلوب کر دیں گے۔ صلیب صاحب بے حد پڑھے لکھے مگر سوائے شاعر کے سب کچھ تھے۔ بھیڑ میں تنہائی' اندر کے آدمی' اور رقیق اشیا جیسے پگھلتے ہوئے احساسات' بہتے ہوئے خیالات اور جمتے ہوئے جذبات پر الجبرا' جامیٹری قسم کے اشعار سناتے۔

پانچویں کمرے میں گناہ گار توبہ پوری رہا کرتے جن پر مذہب کے شدید دورے پڑا کرتے۔ شعر پڑھتے تو معلوم ہوتا کہ خطائیں بخشوا رہے ہیں۔ انھیں کے برابر چھٹے کمرے میں بھیا غریب آبادی رہتے اس شدت سے بھوک پیاس کا ذکر کرتے کہ بھوکے تک بھاگ کھڑے ہوتے۔ کبھی وہ ریل کا پہیا جام کرتے کبھی ہوائی جہاز کا غرض ان کی شاعری بالکل جام تھی۔

ساتویں کمرے میں نقاد ہلوی رہا کرتے۔ بڑے نستعلیق، شین قاف اور نوک سک سے درست ہر طرحی غزل میں قفس کی تیلیوں اور صیاد کا ذکر کچھ اس انداز سے کرتے کہ ڈر لگتا کہیں شعر خوانی کے دوران پھڑپھڑا کر دم نہ توڑ دیں۔

آخری کمرے میں صاحب کا قیام تھا۔ تھے بھی بہت بڑے آدمی کے بیٹے۔ شاعری کچھ ذریعۂ عزت نہ تھی۔ بڑی خاطر میں دو زانو کلام فرماتے لیکن اگر لہک کر داد نہ دی تو ناشتہ سامنے سے اُٹھوا دیتے۔ کھل کر تعریف نہ کرنے کی صورت میں ہاسٹل سے نکالے جانے کا الگ خطرہ رہتا۔ کیوں کہ ذرّہ صاحب کے والد صاحب کے یہاں ملازم تھے۔ اور معاملہ آقا اور نوکر کا تھا۔

غرض ہم غیر شاعر کی حیثیت اس ہاسٹل کی بتیسی میں زبان کی تھی۔ بیرے اور جمعدار تک بُلانے پر کہتے کہ" صاحب اس وقت ہم فکر میں ہیں"! حجّام تک آدھا شیو بنا کر، وغزلے' سہ غزلے کانوں میں گھوستا رہتا۔

یہ سب باتیں تو دن کی ہیں۔ مگر اس بیمار پر رات بہت بھاری گذرتی۔ رات کیا سرِ شام ہی مشاعرہ پھٹ جاتا۔ محلے اور شہر کے شاعر بیاضیں دبائے نازل ہو جاتے۔ پھر صبح تک خوب دھماچوکڑی رہتی۔ وہ گھڑیاں کاٹے نہ کٹتیں۔ نہ پڑھ سکتے' نہ سو سکتے' نہ احتجاج کر سکتے۔ اگر باہر سے ٹوٹا پھوٹا شاعر بھی آجاتا تو لاؤڈ اسپیکر کی مدد سے رات بھر ہمیں بیدار رکھا جاتا۔

ایک دن کوئی آل انڈیا قسم کے شاعر صاحب ہاسٹل تشریف لے آئے۔ بس اب کیا تھا۔ ساری رات گذر گئی۔ سارا دن بیت گیا۔ مشاعرہ جاری رہا۔ امتحان سر پر تھا۔ عافیت اسی میں جانی کہ بستہ بغل میں دبایا اور خاموشی سے سامان چھوڑ کر بھاگ کھڑے ہوئے۔ ایک عزیز کے یہاں پناہ لی۔

ہاسٹل چھوڑنے سے بھی چنداں فائدہ نہ ہوا۔ اب شہر کے ہر موڑ پر ہاسٹلی شاعر ٹکرانے لگے۔ ادھر ملاقات ہوئی اور کسی بھی بات کے جواب میں بولے۔ " اس پر مجھے اپنا ایک شعر یاد آگیا۔ ۔ عرض ہے۔ اس پر بھی میں نے کہا ہے"۔ بس اب اللہ دے اور بندہ لے ہوگئی گھنٹوں کی فرصت۔ ہم نے شہر چھوڑ دیا۔ ریاست چھوڑ دی اکثر ملک سے باہر تک چلے گئے مگر جہاں بھی گئے آج تک ہمارے ہاسٹلی شعرا اور ان کے شاگردوں نے ہمارا پیچھا نہیں چھوڑا۔

اسی لیے ہم یہ کہتے ہیں کہ ہمیں شاعروں سے شکوہ نہیں ہے اس ہاسٹل سے شکایت ہے۔ نہ اُس ہاسٹل میں جاتے نہ بے بھاؤ کی سننا پڑتیں۔ اکثر ہم بھی سوچتے ہیں اگر ہم ہاسٹل میں نہ رہتے تو بھی صورت حال کچھ مختلف نہ ہوتی کیوں کہ شاعر آبادی سے کچھ زیادہ ہی ہیں اس لیے جہاں آپ جائیے گا وہاں انھیں پائیے گا۔ اور بقول شاعر اجی! ہم سے بچ کر کہاں جائیے گا۔

متاز شارق

اچھے لوگ

اپنے وطن کی سرزمین پر قدم رکھتے ہی ﺭل میں ایک عجیب انجانی سی گدگداہٹ کا احساس ہونے لگتا ہے۔ اعزّہ و اقارب کے استقبال اور اپنی ﻬذیب و تمدن کی خوشبو سے دیارِ غیر میں ہونے ﻟﮯ تلخ تجربات اور ذہنی کسلاہٹیں دور ہو جاتی ﯾں۔ بیوی بچّوں اور عزیز و اقارب کے درمیان ﻦ کی سنتے اور اپنی کہتے ہی چھٹیوں کا دامن تنگ ﮨو جاتا ہے اور پھر رُندھی ہوئی آوازیں، پُرنم ﻜﮭیں اُمیدوں کے دیپ جلائے واپسی کے لیے ﯾﺮ پورٹ کی راہ دِکھا دیتی ہیں ——

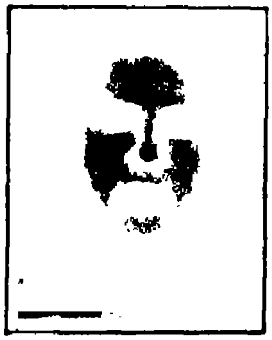
لیکن آج جب ہفتہ بھر کی ایمرجنسی چھٹی ﮯ اپنے والد صاحب کی عیادت کے لیے آیا تو ﻦ بار نہ جانے کیوں دل کہیں اٹکا اٹکا سا لگنے ﻟﮕا۔ فرصت کے اوقات میں وہ پُرنم آنکھیں میری ﻧﮕاہوں کا مرکز بن جاتی ہیں —— ایک ایک دن ﺭﯾﻨﮕﺘﮯ کیڑے کی طرح سرک رہا تھا۔ جب کہ اس ﺳﮯ قبل کی چھٹیوں کے ایّام تیز پرواز پرندے ﮐﯽ طرح پلک جھپکتے ہی اُفق کی لالی میں غائب ﮨو جاتے تھے۔ آج ہسپتال سے والد صاحب کو ﭼﮭﭩﯽ مل گئی تھی۔ گھر کے تمام لوگ اُن کی صحت ﯾﺎﺑﯽ کی خوشیاں منا رہے تھے اور بچّے ویڈیو گیم ﻣﯿﮟ مشغول تھے۔ میں ڈرائنگ روم میں تنہا بیٹھا ﺍﯾﮏ ایکوریم کو گھور رہا تھا جس میں رنگ برنگی ﺑﮩﺖ ساری مچھلیاں چھوٹے چھوٹے مصنوعی فوّاروں کے اردگرد گھوم رہی تھیں۔ مچھلیوں کی ننّھی ننّھی چمکتی ہوئی آنکھوں میں وہ پُرنم بڑی بڑی آنکھیں پھر نظر آنے لگیں —— اور یہ بڑی بڑی آنکھیں پھیلتی ہوئی ایک چہرے پر محیط ہو کر رہ گئیں۔ یہ وہی چہرہ ہے جو ایک سال قبل میری کمپنی میں وارد ہوا تھا —— ذہنی، تعلیمی، ذوقی اور فنّی اختلافات کے سبب ہم دونوں کے درمیان اجنبیت کی ایک دیوار قائم تھی —— اور یہی اجنبیت کبھی کبھار تو سخت نفرت میں بدل جاتی تھی۔ لیکن آج نہ جانے کیوں اُس کی یاد شدّت سے آ رہی ہے۔ آخر اُس سے میرا کیا رشتہ ہے؟ وہ ایک سال قبل میری کمپنی میں ایک ڈرائیور کی حیثیت سے آیا تھا —— یوں تو سات برسوں میں کتنے ہی ہندوستانی، پاکستانی اور فلیپینی تھائی لینڈی لوگ اِس کمپنی میں آئے اور گئے۔ کسی کے آ جانے اور جانے سے میری صحت پر کیا اثر پڑنا تھا لیکن وہ —— جمال تو خاص کر میرے دفتر کا ڈرائیور تھا —— اور سب سے بڑی مصیبت تو اُس وقت آن پڑی جب وہ میرے ہی فلیٹ کے خالی کمرے میں رہنے لگا ——

شروع شروع میں تو عربی زبان سُن کر وہ اس طرح چونکا جیسے کوئی بندر کسی سیٹی کی آواز پر کان کھڑے کر لیتا ہے۔

مجھے آفس کے کام سے لانے اور لے جانے کے علاوہ باقی وقت وہ اپنے سعودی کفیل کے گھریلو کام، سودا سلف کرنے، اُن کے بچّوں کو پابندی سے اسکول پہنچانے اور وہاں سے گھر لانے میں صرف کرتا تھا۔ سعودی کفیل کے گھر میں روزانہ عربی کے نئے نئے الفاظ سے ٹکرایا کرتا تھا۔ پہلے دن لفظ "انا" سے متعارف ہو کر اس کا اُردو ترجمہ "میں" اس نے اپنے ذہن میں محفوظ کر لیا۔ لیکن دوسرے ہفتے وہ اِس "انا" کو لے کر بہت پریشان ہو گیا —— بات یہ تھی کہ ہمارے سعودی مالک کی ایک عادت ہے کہ وہ شعوری یا غیر شعوری طور پر تکیہ کلام کی طرح "اناعارف" (میں جانتا ہوں) ہر جملہ میں استعمال کرتا ہے۔ لیکن اس "اناعارف" کا حل اس کو نہیں ملا تو مجھ سے پوچھ ہی لیا —— "معاف کیجیے گا جناب! بات دراصل یہ ہے ہم لوگ جس کمپنی میں کام کر رہے ہیں اُس کے مالک کا نام تو شیخ عبداللہ بتایا گیا ہے لیکن وہ تو سبھی لوگوں سے کہتا پھرتا ہے "اناعارف" یعنی "میں عارف ہوں"...

اُس وقت اس کی ذہانت پر داد دیتے ہوئے اپنا سر پیٹ لینے کو جی چاہا تھا۔ اس کی تعلیمی صلاحیت کی سند اُسی کی زبانی معلوم ہوئی تھی کہ —— وہ ابتدائی عمر میں مدرسے کی آخری صف میں بیٹھ کر بغدادی قاعدے کی چند کتابیں پھاڑ چکا تھا۔ بچپن کے گذرے ہوئے وہی چند ماہ اس کا سُنہری تعلیمی دَور کہلاتا ہے۔ لیکن اس تعلیمی دَور کا اثر اس کے ذہن پر ہنوز باقی ہے جس کی روشنی میں کسی

پوسٹ بکس ۴۱۶۳۴، ریاض ۱۱۵۳۱، المملکۃ العربیہ السعودیہ



نجم عثمانی

پچھلی رُتوں کے زخم چھپانے لگے درخت
بارش کے ساتھ رقص میں آنے لگے درخت

یہ اپنے آپ کے لیے جینے کا عہد ہے
اپنے پھلوں کو آپ ہی کھانے لگے درخت

اس روز میرے گاؤں کی تہذیب مر گئی
جس روز گاؤں چھوڑ کے جانے لگے درخت

موسم پہ اس نے طنز کیا ہے کچھ اس طرح
پھولوں سے اپنے جسم سجانے لگے درخت

اِک پل میں پھول، پتّیاں، شاخیں جھلس گئیں
یہ کیسی روشنی میں نہانے لگے درخت

"مرکزِ ادب" واسع پور، دھنباد (بہار)

ہر ایک قافلۂ گمشدہ بھی اس کا ہے
ہر ایک راستہ دیکھا ہوا بھی اس کا ہے

اسی کا گھر جلا گنجان شہر میں تنہا
وہی ہے شعبدہ گر، شعبدہ بھی اس کا ہے

شکست و ریخت مری اب اسی کے ہاتھ میں ہے
وہی ہے چہرہ شناس، آئینہ بھی اس کا ہے

نجانے کتنے جرائم کا اب ہدف ٹھہروں
وہ مدّعی بھی ہے اور فیصلہ بھی اس کا ہے

ادیب قافلہ سالار ہے زمانے کا
لُٹا لُٹا سا مگر قافلہ بھی اس کا ہے

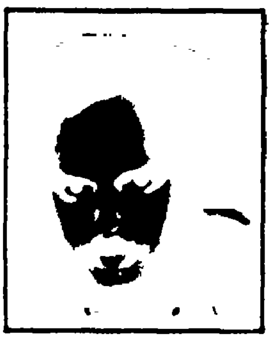
دھوپ کا بارش کا سر پر سائباں محفوظ رکھ
لامکاں جیسا ہمارا یہ مکاں محفوظ رکھ

ہم کو تھوڑا وقت دے اس ناؤ کی تعمیر تک
کوئی ٹیلہ پانیوں کے درمیاں محفوظ رکھ

روزِ اوّل سے وفا کے باب میں شبہات ہیں
آخری دن بھی یہی وہم و گماں محفوظ رکھ

ہر نفس نقصان ہے یہ زندگی یارب مگر
تو مرا یہ کاروبارِ رائیگاں محفوظ رکھ

انور ادیب



مظہر منشن، گوری شنکر روڈ، جگسلائی، جمشید پور ۸۳۱۰۰۶

شاہد رضا

ٹھہرے ہوئے لمحات

ایک تجسس تھا، ایک سحر تھا، ورنہ سخت ہدایت کے باوجود چلچلاتی دھوپ میں کون سائے سے جدا ہوتا ہے۔ اور میں تو برہنہ پا نکل پڑا تھا۔ شاید اس لیے کہ میری چاپ میرے ارادوں کو نہ روند ڈالے۔

ایک دن اسکول سے واپس ہوا تو اپنے دروازے کے سامنے کھڑی اونچی سی دیوار کو زمین پر ڈھیر پایا۔ نہ جانے کتنی پرانی تھی وہ دیوار۔ نہ جانے کب سے سینہ تانے کھڑی تھی۔ اس گھر کے مکین کہاں چلے گئے تھے۔ اس مکان میں کوئی رہتا بھی تھا۔ مجھے ٹھیک سے یاد بھی تو نہیں۔ اُس کھنڈر نما گھر میں زندگی کے کوئی آثار نظر نہیں آرہے تھے۔ سائیں سائیں کرتی وہ دوپہر۔ جگہ جگہ سے ٹوٹی دیواریں بڑی ڈراؤنی لگ رہی تھیں۔ وسیع وعریض آنگن، آنگن کیا، ایک اچھا خاصا میدان تھا۔ جو شاید طویل عرصے سے قدموں کی آہٹ کو ترس رہا تھا۔ ایک درخت جس کا قد میرے ہی قد کے برابر تھا یا کچھ نکلتا ہوا ہو۔ میدان کے بیچوں بیچ کھڑا تھا۔ چمکیلے اور شاداب پتے۔ چکنی اور سڈول شاخیں۔ کسی کو خوش آمدید کہنے کے لیے بے چین تھیں۔ شاید اُس درخت کو لباس تبدیل کیے زیادہ وقت نہیں گزرا تھا۔

نہ جانے کیوں میں زیادہ دیر تک اُس سمت نہ دیکھ سکا۔ عجلت میں دروازہ کھول کر گھر میں آگیا۔ لیکن اُس کھنڈر میں یک و تنہا کھڑا درخت مجھ کو اپنی طرف کھینچ رہا تھا۔ اُس رات میں جب سونے کے لیے لیٹا تو اس سمت سے آنے والی ہوا کانوں میں سرگوشیاں کرنے لگی۔ معطر سرگوشیاں۔ نہ جانے کیسی خوشبو تھی۔ شاید اُس درخت پر کوئی پھول کھلا ہو۔

دوسرے دن اسکول بند تھا۔ نہیں شاید اسکول بند نہیں تھا بلکہ میں ہی نہیں جا سکا تھا۔ اُسی رات طبیعت اچانک خراب ہوگئی تھی۔ حالانکہ صبح کو میں بالکل ٹھیک اُٹھا تھا۔ چاہتا تو اسکول جا سکتا تھا لیکن دل ہی نہیں چاہا۔ اس کی خواہش تھی کہ جاکر اُس درخت کے سائے میں بیٹھا جائے۔ میں نے یہی سوچا۔ بھلے ہی وہ سایہ معمولی سہی مگر میرے لیے تو کافی تھا۔ دل میں ڈر بھی تھا کہ کوئی دیکھ نہ لے۔ اِسی کشمکش میں صبح سے دوپہر ہوگئی۔

گرمی کی دوپہر کتنی بھیانک ہوتی ہے۔ انگارے برساتا سورج۔ آگ اُگلتی ہوئی زمین۔ نہ جانے کتنے چہرے کو سیاہ کر دیتی ہے۔ نہ جانے کتنے جسم مفلوج ہو جاتے ہیں لیکن یہ سب وہی لوگ ہوتے ہیں جن کے سروں پر یا تو سائبان نہیں ہوتا۔ اور اگر ہوتا بھی ہے تو برائے نام۔

میرے سر پر تو سائبان تھا لیکن اُس کے سائے میں بھی کبھی کبھی گرمی اور گھٹن محسوس ہوتی۔ اُس دوپہر بھی جب سب لوگ سو گئے تو شدید گھٹن محسوس ہوئی۔ تبھی اُس سرسبز و شاداب درخت کا خیال آیا۔ چمکیلے اور شاداب پتے۔ چکنی اور سڈول شاخیں۔

دھوپ اس قدر تیز تھی کہ پاؤں باہر نکالنے کی ہمت نہیں ہو رہی تھی۔ اور کئی مرتبہ تو پاؤں باہر نکال کر کھینچ لیا۔ گھٹن بھی ہر پل بڑھتی جا رہی تھی۔ شاید فضا میں گھٹن نہیں تھی بلکہ میرے اندر ہی یہ احساس گھر کر گیا تھا۔ آخر کار جلتی ہوئی زمین پر ننگے پاؤں نکل پڑا۔ آہستہ سے دروازہ کھول کر۔ دبے پاؤں چپکے سے۔ اتنی خاموشی سے کہ کسی کو خبر ہی نہ ہوئی۔

چوں کہ ٹھنڈا فرش کافی دیر تک زیرِ قدم رہا تھا۔ اس لیے دو چار قدم تو آرام سے چل لیا لیکن ہر قدم پر زمین پہلے سے زیادہ گرم ہوتی گئی۔ پھر تو ایسا ہونے لگا کہ جب قدم آگے بڑھانے کے لیے ایک ہی پیر پر بدن کا سارا بوجھ پڑتا تو وہ زمین سے چپک جاتا تھا۔ اور پھر تو شاید میں بھاگنے لگا تھا۔ ہاں میں بھاگنے ہی لگا تھا۔ بدحواس سا۔ اور اس ٹوٹی ہوئی دیوار کو پار کرتے ہوئے میں بُری طرح لڑکھڑا گیا تھا۔ نہیں شاید گر پڑا تھا۔ ریت، مٹی اور جانے کتنے پتھر اُس آگ اُگلتی زمین پر میرے منتظر تھے۔ امداد طلب نظروں سے اِدھر اُدھر دیکھا لیکن کوئی پاگل بھی دُور تک نظر نہیں آیا۔ پھر میری نظریں اس درخت پر جاکر ٹھہر گئیں۔

ہمارے درمیان زیادہ فاصلہ بھی تو نہیں رہ گیا تھا۔ میں دونوں ہاتھوں کو زمین پر ٹیک کر کھڑا ہوا۔ ہتھیلیاں سُرخ ہوگئی تھیں خون سے، یا شاید وہاں کی مٹی ہی سُرخ ہو۔ اَنگنت ننھے ننھے کنکر اندر تک گھُس گئے تھے۔

اس درخت کے سائے میں پہنچ کر میری روح کو سکون ملا۔ پیاس سوکھ گیا۔ مٹی اور ریت جو کہ زمین پر گرنے سے چپک کر رہ گئی تھی جھڑنے لگی۔ ہتھیلیوں اور تلووں کے چھالے ٹھیک ہوگئے۔ حالانکہ درخت زیادہ بڑا نہیں تھا۔ لیکن اس کا سایہ اس قدر گھنا تھا کہ سورج کی کرنیں اس کی زلفوں پر عمل کر رہی اپنا اثر کھو دیتی تھیں۔ اس کے پتّوں کی سرسراہٹ ایسی لگتی تھی کہ وہ



۷۰ ـ مہندر گنج، شاہجہاں پور ۲۴۲۰۰۱ (یوپی)

مجھ سے محوِ گفتگو ہو۔

کچھ دیر اُس کے سائے میں بیٹھ کر کھنڈر کا جائزہ لینے کی غرض سے میں سائے سے نکل آیا۔ میں حیرت سے وہاں کی ایک ایک چیز دیکھ رہا تھا۔ سورج سست روی سے اپنی منزل کی جانب رواں تھا۔ لیکن نہ تو میرے پیر ہی جل رہے تھے۔ اور نہ ہی برستی ہوئی آگ مجھ پر کوئی اثر کر رہی تھی۔ نہ جانے کیوں۔ شاید کوئی طائر میرے سر پر سایہ کیے تھا۔ یا ہو سکتا ہے بادل کا کوئی ٹکڑا ہو۔ میں تنہا تھا۔ لیکن اپنے ساتھ کسی اور کو چلتے ہوئے محسوس کر رہا تھا۔ شاید کوئی میرے آگے آگے چل رہا تھا۔ کسی کے بدن کو چھو کر آتی ہوئی ہوا پسینے کو خشک کر رہی تھی۔ یا ہو سکتا ہے مجھے ایسا لگا ہو۔

میں بار بار آ کر درخت کے نیچے بیٹھ جاتا۔ یا اگر زیادہ دور نکل جاتا تو پلٹ کر بار بار اس کو دیکھتا رہتا۔ اس کے سائے میں بیٹھ کر ایک لمحے میں ہی ساری تھکن دُور ہو جاتی۔ پھر میں اس میدان سے متصل ایک دوسرے میدان میں نکل گیا۔ وہ میدان بہت وسیع تھا۔ اُونچے اُونچے درختوں کی قطاروں نے اس کو کئی حصوں میں تقسیم کر دیا تھا۔ زمین پر کہیں کہیں گھاس بھی تھی۔ میں چلتا رہا اور گھوم گھوم کر پیچھے دیکھتا رہا۔ درخت نظر آ رہا تھا۔ سورج کچھ نیچے اُتر آیا تھا۔ زمین بدستور جل رہی تھی۔ مگر میرے لیے نہیں۔ کوئی تب بھی میرے سر پر سایہ کیے تھا۔

پھر میں بغیر پیچھے دیکھے کافی دیر تک چلتا رہا۔ شاید میں بہت دور نکل گیا تھا۔ پلٹ کر دیکھا درخت نظر نہیں آ رہا تھا۔ غلطی کا احساس ہوا۔ میں واقعی بہت دور نکل آیا تھا۔ میں گھبرایا گھبرایا سا واپس ہوا۔ لیکن سب کچھ بدلا بدلا سا تھا۔ پیروں کے نیچے آگ بچھی تھی۔ آتشیں مینہ برس رہا تھا۔ گرم ہوا میری پشت پر تازیانے لگا رہی تھی۔ سب کچھ بدل گیا تھا۔ تو کیا ایک لمحے کی غفلت میں سب کچھ بدل جایا کرتا ہے۔

جو زمین جاتے وقت سرد تھی۔ واپسی پر آگ اُگل رہی تھی۔ بادل کا ٹکڑا بھی شاید کسی اور سمت نکل گیا تھا۔ جلتی ہوئی زمین نے میری رفتار کو تیز کر دیا تھا۔ تیز کیا میں شاید پھر بھاگنے لگا تھا۔ بہت تیز۔ پھر بھاگتے بھاگتے میرے قدم رُک گئے۔ میں حیرت سے اس درخت کو دیکھ رہا تھا جس کے سائے میں بیٹھ کر گیا تھا جس نے مجھ سے باتیں کی تھیں۔ مجھ کو جُھک کر چھوا تھا۔ اس کا قد مجھ سے بلند ہو گیا تھا۔ اُس کے نیچے کوئی محوِ خواب تھا۔ پورے سائے پر قابض نیچے دو چھوٹے چھوٹے پیڑ بھی دکھائی دے رہے تھے ہو سکتا ہے وہ پیڑ نہ ہوں۔ بلکہ نیچے لیٹے ہوئے شخص نے درخت کی شاخوں کو توڑا ہو۔ یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اس شخص کو اپنے سائے پر قبضہ کرتے دیکھ کر درخت نے احتجاج کیا ہو۔

کھنڈر میں بھی ہلچل دکھائی دے رہی تھی شاید اس گھر کے مکین لوٹ آئے تھے میں نے اپنی بھیگتی ہوئی آنکھوں کو سختی سے بھینچ لیا تھا۔ نہ جانے کیوں وہ منظر دیکھنے کی تاب نہ رہی تھی۔ یا شاید سورج کی چمک سے ایسا ہوا ہو۔ ایک جگہ پر کھڑے کھڑے پیر زمین سے چپک سے گئے تھے۔ پھر میں آنکھیں بند کیے کیے ہی دوڑ پڑا۔ گرتا پڑتا۔ جیسے موت میرے تعاقب میں ہو۔ نوکیلی اینٹیں۔ پتھر میرے پیروں کو زخمی کرتے رہے۔ لیکن میں نے گھر کے اندر آ کر ہی دم لیا۔

اور یہ اچھا ہوا کہ میں سب لوگوں کے جاگنے سے پہلے ہی واپس آ گیا۔ میرے گھر کا دروازہ اتنا ہی کھلا تھا جتنا میں چھوڑ کر گیا تھا۔ ہاں اس جگہ ضرور سایہ اُتر آیا تھا جہاں میں نے اپنے پاؤں عریاں کیے تھے۔

عرصہ ہوا اس حادثے کو۔ نہ جانے کتنے لمحات ماضی کی عمیق گہرائیوں میں گم ہو چکے ہیں۔ وقت تو گزرتا ہی ہے اس کو کوئی نہیں روک سکتا۔ لیکن کچھ لمحے ٹھہر جاتے ہیں۔ آج بھی اکثر ہتھیلیاں دکھنے لگتی ہیں۔ تلوے جلنے لگتے ہیں۔ ایک ایک چبھن ایک ایک زخم تازہ ہو جاتا ہے۔ میری روح ماہیِ بے آب کی مانند تڑپنے لگتی ہے۔ پھر میں گھنٹوں ٹھنڈے فرش پر ٹہلا کرتا ہوں۔ بار بار ہتھیلیوں کو گیلا کرتا ہوں تب جا کر آرام ملتا ہے۔ یہ تکلیف ہمیشہ کے لیے ختم کیوں نہیں ہو جاتی۔ ○

جمیل ارشد

دانہ و دام

ایک بار پھر روپیوں کی گنتی کرکے اس نے مٹھی اس طرح بند کرلی جیسے اسے خدشہ ہو کہ گرفت ذرا سی بھی ڈھیلی ہوئی تو روپے بند مٹھی سے بھی غائب ہو سکتے ہیں۔

اسے اپنے اندر بھرپور اطمینان کا احساس ہوا جیسے ان ایک سو پچاس روپیوں میں اس کے سارے مسئلوں کا حل پوشیدہ ہو۔

یہ اس کی ایک ہفتے کی کمائی تھی۔

اتنے روپے اس نے تقریباً چھ ماہ بعد پائے تھے۔ ورنہ ہر ہفتے سو روپے پر ہی قناعت کرنا پڑتی تھی۔

ٹرام میں بیٹھے بیٹھے بیوی کا چہرہ اس کی آنکھوں میں گھوم گیا۔ خوبصورت چہرہ جس کی حالت مالی پریشانی سے ایسی ہوگئی تھی جیسے نئی بلڈنگ کا پلاسٹر کہیں کہیں سے ادھڑ گیا ہو۔

اس نے ایک بار پھر روپیوں کا احساس کیا۔

خدا کا شکر ہے، آج اس سے جھگڑا نہیں ہوگا۔

اس نے سوچا ــــ کتنے دن ہوگئے اس کے مُنہ سے میٹھے بول سُنے ہوئے۔

لیکن آج . . . وہ مسکرایا۔

آخر اس میں اس کا کیا قصور ہے ــــ وہ بے چاری بھی کیا کرے؟ سو روپے ہفتے میں کہیں گھر چلتا ہے؟

ٹرام ڈپو کے اندر داخل ہونے لگی تو اسے یاد آیا کہ وہ تو ایک اسٹاپ آگے آگیا ہے۔

وہ جلدی سے اُتر گیا۔

گھر پہنچنے کے بعد بیوی سے لپٹ کر جی بھر کر اسے پیار کرنے کی خواہش اس کے دل میں مچل رہی تھی۔ مگر بچوں کی موجودگی نے ایسا کرنے سے روک دیا۔

کسی بھی سنیچر کی رات وہ بیوی سے آنکھ نہیں ملا پاتا تھا۔ آمدنی اتنی کم تھی کہ روپے بیوی کے ہاتھ میں دینے کے بجائے چپکے سے سرہانے رکھ دیتا۔ اور کھانا کھا کر خاموشی سے نکل جاتا۔ اور اس وقت واپس لوٹتا جب یہ یقین ہو جاتا کہ اب وہ سوگئی ہوگی۔

ویسے بھی گھر کے اندر گرمی بہت لگتی تھی۔ وہ اکثر باہر ہی کسی چبوترے پر سو جاتا۔ چھ ماہ قبل اس نے پنکھا الگ کر دیا تھا، کیوں کہ ہر ماہ باڑی والا (مکان مالک) پنکھے کا کرایہ لینے آجاتا تھا۔ گھر کا کرایہ بھلے ہی اس ماہ سے اُس ماہ ہو جاتے مگر پنکھے کا کرایہ وہ وقتِ مقررہ پر وصول کر لیا کرتا تھا۔

کئی بار پنکھے کی وجہ سے بیوی سے جھگڑا بھی ہوا تھا۔ اور پھر اس دن تو بات اتنی بگڑ گئی کہ اس جھمیلے کو ہمیشہ کے لیے ختم کر دینا پڑا۔

ایک سو پچاس روپے پاکر دونوں میاں بیوی بہت خوش تھے۔ اس رات پنکھے کے بغیر بھی انھیں بڑی اچھی نیند آئی۔

صبح کئی بار اس کی بیوی نے اسے جگایا مگر وہ بستر سے نہیں اٹھا تھا۔ وہ جی بھر کے سونا چاہتا تھا، گویا یہ وقت اگر نکل گیا تو پھر کبھی ہاتھ نہ آئے گا۔

لیکن جب اس کے چچازاد بھائی نے آکر جگایا تو اسے اُٹھنا ہی پڑا۔

بھائی نے کہا کہ میں آج ہی گاؤں جا رہا ہوں، ماں کے لیے کچھ دینا ہو تو دے دو۔ جب کوئی یہاں سے جاتا ہے تو بے چاری دوڑی ہوئی آتی ہے، بیٹے بہو کی خیریت پوچھنے ــــ اور پھر مایوس ہو کر لوٹ جاتی ہے۔ میں اسے اس طرح واپس ہوتے ہوئے دیکھتا ہوں تو بڑی تکلیف ہوتی ہے۔

اس نے سوچا ــــ بہت دنوں سے ماں کے لیے کچھ نہیں بھیجا ہے۔

اور اس نے پچاس روپے ماں کے لیے بھیج دیے۔ وہ اندر ہی اندر بہت خوش تھا۔

راشن لے کر واپس لوٹا تو دیکھا کہ اس کی بیوی پھیری کرکے ساڑھی بیچنے والے کے ساتھ حجت کر رہی ہے۔

وہ کہہ رہا تھا کہ مجھے روپیہ ابھی چاہیے۔



ویشالی کلینک، ۲- ٹریٹ بازار اسٹریٹ، کلکتہ ۷۰۰۰۷۳

میں ملک (گاؤں) جا رہا ہوں۔

بیوی نے بتایا کہ تین مہینے قبل اس نے پچاس روپے کی ایک ساڑھی خریدی تھی یہ سوچ کر کہ ہفتہ ہفتہ پیسے دے دیا کریں گے۔ مگر رضیہ کی شادی نے سارا پلان چوپٹ کر دیا۔

رضیہ اس کی ماموں زاد بہن تھی۔ پھر رسم دُنیا تو ہر حال میں نبھانا ہی پڑتی ہے۔ وہ تو بھلا ہو شکیلہ خالہ کا جنھوں نے عین موقعے پر سو روپے دے کر اس کی عزت بچالی تھی۔ ورنہ . . .

آخر اس کی بیوی نے جل بھُن کر ساڑھی واپس کر دی۔ اور جان کو ہلکا کیا لیکن آدھی جان تو شکیلہ خالہ کے سو روپے میں پھنسی رہ گئی تھی۔ صرف دو ہفتے کے وعدے پر انھوں نے روپے اُدھار دیے تھے۔ آج تو ہر حالت میں ان کے روپے واپس کرنے تھے۔

اس نے بیوی سے کہا بھی کہ جب خریدی ہے تو واپس کیا کرنا ہے۔ رکھ لو ۔۔۔ مگر بیوی نے کہا کہ کیا ضرورت ہے، دو ساڑھیاں تو ہیں میرے پاس، پھر دو مہینے بعد عید آ رہی ہے۔

"کیا . . . ؟" وہ صرف اتنا ہی کہہ سکا؟

اس نے پھر سوچا ... دو ماہ بعد عید ہے۔ ابھی پچھلی عید کا قرض تو میں نے چکایا ہی نہیں۔

اس نے محسوس کیا کہ اس کے چاروں طرف بہت سی ضرورتیں دائرہ بنا کر کھڑی ہیں اور وہ ان کے حصار میں ایسا قیدی بنا ہوا ہے، جو حصار توڑنا چاہتا ہے مگر توڑ نہیں پاتا۔

اسے ایسا لگا کہ اچانک اس کی بند مٹھی کھل گئی ہے اور سارے روپے اُڑ کر اس کے سامنے ناچ رہے ہوں مگر ۔۔۔ وہ انھیں پکڑ نہیں سکتا ۔۔۔ چھو بھی نہیں سکتا ۔۔۔ کیوں کہ وہ ناچنا نہیں جانتا۔ اور روپیوں کو صرف وہی پکڑ سکتا ہے جو ہر طرح کے ناچ کا ماہر ہو۔ ؟

سوموار کی صبح جب وہ ڈیوٹی پر جانے لگا تو اس کی بیوی کے پاس صرف پانچ روپے باقی تھے، جن میں سے ایک روپیہ اسے مل گیا تھا۔

پھر سارا ہفتہ اسی معمول میں ان کے شب و روز گذرے، جس طرح پانچ سال سے گذر رہے تھے۔

محبت ۔۔۔ تکرار ۔۔۔ جھگڑا ۔۔۔

اور آخر میں . . . ؟

ایک شام وہ کام سے واپس لوٹا تو دیکھا کہ گھر میں پڑوس کی عورتوں کا ہجوم ہے۔ اندر گیا تو پتہ چلا کہ اس کے سب سے چھوٹے لڑکے کی حالت بہت خراب ہے، جو ابھی صرف چار ماہ کا تھا۔

بیوی نے بتایا کہ دم پھول رہا ہے۔ سانس لینے میں تکلیف ہو رہی ہے۔ لگتا ہے نمونیا ہو گیا ہے۔ اس نے یہ بھی کہا کہ طبیعت تو کئی دنوں سے اس کی خراب تھی مگر گھر میں تو پھوٹی کوڑی بھی نہیں۔ علاج کیا کرتی۔

لوگوں نے مشورہ دیا کہ اسے فوراً کسی اچھے ڈاکٹر کے پاس لے جاؤ۔ ورنہ حالت اور زیادہ نازک ہو سکتی ہے۔

اس نے جیب ٹٹولی ۔۔۔ صرف دو روپے تھے۔ جو اس نے فیکٹری کے ایک ساتھی سے لیے تھے۔

کچھ دیر رُک کر اس نے پُر اُمید نظروں سے بیوی کی طرف دیکھا۔ اور جب اسے یقین ہو گیا کہ وہ اشارہ سمجھ گئی ہے تو دھیرے سے کہا:

"جلدی کرو ۔۔۔ نو بج رہے ہیں دُکان بند ہو جائے گی ... !"

اس کی بیوی کے جی میں آیا کہ چیخ پڑے۔ اور صاف صاف کہہ دے کہ نہیں ۔۔۔ ہرگز نہیں۔ میں تمھیں یہ زیور بیچنے نہیں دوں گی۔ ایک ایک کر کے تم نے میرے سارے زیور بیچ ڈالے، بس ۔۔۔ یہی تو ایک بچ رہا ہے۔ میں اسے کسی قیمت پر بیچنے نہیں دوں گی۔

مگر ۔۔۔ اس نے بچے پر ایک نظر ڈالی جو بتدریج موت کی طرف بڑھ رہا تھا۔

وہ ایک لفظ نہ بول سکی ۔۔۔ چپ چاپ آہستہ سے اٹھی، الماری کھول کر زیور نکالا اور چپکے سے شوہر کے ہاتھ میں دے دیا۔

نئی مطبوعات

لمحوں کی خوشبو
مصنف: تنویر احمد علوی
صفحات: ۲۱۶
قیمت: ۴۵ روپے
ملنے کا پتہ: ڈاکٹر تنویر احمد علوی، ۴۷۴۷ چوڑی والان، دہلی ۱۱۰۰۰۶

'لمحوں کی خوشبو' ڈاکٹر تنویر احمد علوی کا شعری مجموعہ ہے۔ اب تک احباب کو یہی علم تھا کہ ڈاکٹر صاحب ایک عالم، محقق اور ماہر زبان ہیں۔ تحقیق کی خشک وادیوں میں یہ کسی کو معلوم نہ تھا کہ ایک شاعر بھی سو رہا ہے۔ اچانک 'لمحوں کی خوشبو' کی شکل میں وہ شاعر بیدار ہوگیا۔ یہ شاعر مزاج کے اعتبار سے اس محقق سے بالکل مختلف تھا۔ جو تحقیق کی وادیوں میں جوئے شیر لانے کا دعوےٰ کر رہا تھا۔ کتاب کا نام خود شاعر کے جمالیاتی ذوق کی نشاندہی کر رہا ہے۔ تقریباً دو سو صفحات کی یہ کتاب تنویر علوی کے شاعرانہ تخیل، فنکارانہ احساس اور جمال پرست نگاہ کا بہترین نمونہ ہے جس میں انھوں نے اپنی زندگی کے حسین ترین لمحوں کو بڑی چابکدستی سے نقش کرلیا ہے۔

شاعری کو مصوری کی ایک شاخ کہا گیا ہے۔ اور محاکات کو اعلا شاعری کی صنعت قرار دیا گیا ہے مگر اعلا شاعری محاکات سے بھی بلند تر چیز ہے۔ ایک شاعر صرف کسی منظر یا شے کی تصویر ہی نہیں پیش کرتا بلکہ وہ اس بے جان اور بے روح منظر کو زبان عطا کر دیتا ہے وہ پتھروں میں زندگی کے چشمے ابلتے دیکھتا ہے۔ خاموش چیزوں میں تعلیم اور موسیقی کو محسوس کرتا۔ سنگ مرمر اور پتھر کے بے جان مجسموں میں زندگی کی حرارت اور تڑپ دیکھتا ہے۔ اس کے لیے زمانے کے فاصلے کوئی معنی نہیں رکھتے۔ وہ اپنے تخیل کی مدد سے ماضی اور مستقبل کی سیر خود بھی کرتا ہے اور اپنے پڑھنے والوں کو بھی نئی دنیا میں لے جاتا ہے۔ تنویر علوی کی نظموں کو پڑھ کر ہم بھی ان کے ساتھ کبھی قلوپطرہ کے لافانی حسن کا نظارہ کرتے ہیں تو کبھی سالومی کے قاتل حسن اور شدید جذبات کی تصویر ہمارے سامنے آجاتی ہے۔ کبھی وہ ہمیں اجنتا کی گپھاؤں میں اپنے ساتھ چلنے پر مجبور کر دیتے ہیں کبھی ایلورا کی سرزمین پر پہنچا دیتے ہیں۔ اور کبھی کجھو راہو کی نظر فریب اور ولولہ انگیز فضاؤں میں لے جاتے ہیں۔ جہاں ہم ان مناظر کو صرف آنکھوں سے دیکھتے ہی نہیں بلکہ ہماری روح ان سے ہم کلام بھی ہوتی ہے اور ان کے پیغام کو دل کی گہرائیوں میں اترتا ہوا محسوس کرتے ہیں۔

قلوپطرہ کا یہ بند ملاحظہ ہو:

یہ ژولیدہ گیسو
یہ بالیدہ سنبل
یہ زلف پریشاں
یہ آوارہ کاکل
یہ تاتار سے اٹھنے والی گھٹائیں
یہ سحر مصور
یہ جادوئے بابل
یہ زلف پریشاں
یہ مشکیں سلاسل
گنہگار دنیا پہ یہ شب کا دامن

'سالومی' ایک دلچسپ علامت بھی ہے اور تنویر صاحب کا محبوب موضوع بھی۔ تنویر صاحب نے 'سالومی' کی صرف تصویر دیکھی تھی۔ اس منظر کو ان الفاظ میں بیان کرتے ہیں۔

"ایک خوبصورت نوجوان لڑکی جسے مغربی حسن صباحت کا نمونۂ جمیل کہا جا سکتا ہے۔ اس پر سفید برف کی طرح پاکیزہ لباس کا ایک بے حد پرکشش مرقع اس کے ایک ہاتھ میں چاندی کی طرح چمکتی ہوئی خم آمیز خون آلود تلوار اور دوسرے ہاتھ میں یوحنا کا سر اور طشت زرنگار سے باہر آتا ہوا جیتا جیتا خون جیسے سورج کا قتل ہوگیا ہو:

زہر اور زندگی سے اتنا قریب
قہر اور بندگی سے اتنا قریب
جیسے کانٹے ہوں، دامن دل میں
جیسے خوشبو ہو دستِ قاتل میں

شعلۂ زخمِ دل لپکنے لگا
شاخِ گل سے لہو ٹپکنے لگا
طشت زر میں وہ خون ناب کا رقص
دشت میں جیسے آفتاب کا رقص

'سالومی' ایک طویل نظم ہے۔ اور شاید یہ کہنا مبالغہ نہ ہو کہ اس پورے مجموعہ کی جان بھی ہے۔ جمالیات کے جو خوبصورت نمونے اس نظم میں نظر آتے ہیں ان کو پڑھ کر ایسا محسوس ہوتا ہے کہ ایک محقق کا چھپا ہوا شاعر بیدار ہو رہا ہے۔

مست رفتار وہ غزالوں کی
شوخ چتون وہ ناز والوں کی
ساری آزادیاں ہیں اس کے لیے
پھولوں کی وادیاں ہیں اس کے لیے

شاخِ صندل سادہ حسین پیکر
ریشمی بیل جیسی پتلی کمر
کیا ہوا میں لہکتی رہتی ہے
پھول بن سی مہکتی رہتی ہے

اور یہ کلائمکس ملاحظہ ہو :

جیسے بادل دھنک سے بکھرے ہوں
جیسے زلفوں میں پھول بکھرے ہوں

اس نظم میں جو روانی اور جمالیاتی پیکر تراشی ہے اس نے سالونی کے مجسمہ کو زندگی بخش دی ہے عشق ہے اور ماضی کی بھی وہ قدریں ان کو عزیز ہیں۔ جن کا جمالیات سے براہِ راست یا بلا واسطہ تعلق ہے۔ قلوپطرہ، سالونی، زلیخا، گوتم بدھ، اجنتا، ایلورا اور کھجوراہو ان سب میں وہی جمالیاتی ذوق کارفرما ہے۔ یہ جمال انسان میں ہو یا پتھروں میں۔ وہ مذہب کے تقدس میں ہو یا گنہہ کی زندگی میں، تنویر صاحب کو عزیز ہے ایلورا کا جو تاثر شاعر نے قبول کیا ہے اس کی ایک جھلک ملاحظہ ہو :

یہ حسیں بت کدہ، یہ نقشِ مجاز
وہ جسے زودکشِ خرم کہیے!
سحر ہے وہ خود رنگ و بُو کی طرح
جس کو تابِ رخِ صنم کہیے

نفسِ شوق کا یہ لمس جمیل
دل دھڑکتا ہے کوہساروں کا
ڈھل گیا ہے صنم کدوں میں یہاں
رقصِ فطرت کے لالہ زاروں کا

ان نظموں سے قطع نظر علوی صاحب کا ایک نیا رخ بھی نظر آتا ہے۔ جہاں وہ خوابوں کی دنیا سے نکل کر اس دنیا میں آجاتے ہیں، جہاں ان کے بقول :

کتنی آزادیوں کے شانوں پر
ہیں غلامی کے تختہ و تابوت

ان کی نظمیں۔ یو۔ این۔ او، عوام، تاریخ، کسبی، باندی وغیرہ ایک نئے جذبے اور لب و لہجے کے ساتھ ہمارے سامنے آتی ہیں خوابوں کے حسین پیکر زمانہ کے مسائل اور مصائب کے سامنے چکنا چور ہو جاتے ہیں :

کتنا نازک ہے یہ سنگین حقائق کا طلسم
ٹوٹ جاتا ہے جو خود لمسِ بیاں سے پہلے
اور الفاظ و معنی کا یہ رنگین حصار
کھینچ سکتا ہے بھلا کون زباں سے پہلے

تنویر صاحب فارسی اور ہندی دونوں پر عبور رکھتے ہیں اور انھوں نے دونوں زبانوں کی شاعری کا گہرا مطالعہ کیا ہے اور ان کے بعض عناصر کو اپنی شاعری میں جذب کیا ہے۔ لیکن ان کا شاعرانہ مزاج ہندی سے نزدیک نظر آتا ہے۔ ان کی نظموں میں جسم اور اس کی پکار کا اظہار جا بجا ملتا ہے۔ لیکن اس میں بڑی رعنائی اور ایک طرح کا اہتزاز پایا جاتا ہے۔ ان کے شعور میں کہیں بھی رکاکت یا سطحیت راہ نہیں پاتی۔ ان کی نظموں کے بعض بند ہمیں فراق کی رباعیوں کی یاد دلاتے ہیں۔ لیکن فراق کے یہاں جذبہ کی جو آنچ ہے، تنویر صاحب کی نظموں میں اس کی کمی محسوس ہوتی ہے۔ ان کے یہاں حسن کی عکاسی تو ہے مگر عشق کی تڑپ نہیں ہے۔ ان کا لب و لہجہ نشاطیہ ہے۔ اس میں درد کی کسک نہیں ہے۔ وہ حسن کے شاعر ہیں، اور یہ حسن مناظر قدرت میں بھی تلاش کر لیتے ہیں اور پتھروں میں بھی حسن کی تلاش ان کا مرکزی خیال ہے وہ "لمحوں کی خوشبو" میں ہو یا "بساطِ شب" میں پوشیدہ ہو۔

تنویر علوی صاحب کو زبان پر بڑی قدرت حاصل ہے۔ ان کی تشبیہہ نہایت حسین اور ان کا تخیل بڑا رنگین ہے۔ لیکن اکثر نظموں کو پڑھ کر محسوس ہوتا ہے کہ ان کی کچھ مخصوص علامتیں اور استعارے ہیں۔ جنھیں وہ بار بار استعمال کر کے ہمیں مسحور کر دیتے ہیں۔ جیسے جسم سے پھوٹتی کرنیں، شاخِ صندل سا حسین پیکر، بوسہ زرنگار، آغوش میں اترتے ہوئے چاند، پھولوں کی آنچ، زلفوں کے ریشمی سائے، وغیرہ اور یہ وہ پیرایہ بیان ہیں جو وہ زینیا کے حسن کی تصویر کشی میں بھی استعمال کرتے ہیں، قلوپطرہ کی پیکر تراشی کے بھی کام آتے ہیں "سالومی" کا پیکر بھی اسی سے سجاتے ہیں اور ملکہ کوہسار (مری) اور اجنتا و ایلورا کی تصویروں میں بھی انہی سے رنگ بھرتے ہیں۔ پھر بھی ان کی حسن کاری سے انکار نہیں کیا جا سکتا۔

تنویر علوی بنیادی طور پر نظم کے شاعر ہیں۔ مگر ان کے اس مجموعہ میں چند غزلیں بھی ہیں۔ جن کو شاید تفننِ طبع کی خاطر اپنے سے لگا رکھا ہے۔ "تنویر صاحب کو غزلوں میں تلاش کرنا بے سود ہے۔ البتہ ان کو زبان و بیان پر جو قدرت حاصل ہے اس لیے وہ اس میدان میں بھی اجنبی نظر نہیں آتے۔ چند اشعار سُن لیجیے :

چلتے رہیے کہ یہاں دھوپ کھڑی ہے سر پر
دور تک دشتِ وفا میں کوئی سایہ بھی نہیں

یہ میلوں کا سفر ہے یہ تو معلوم ہی تھا
یہ نہ سوچا تھا کہ آگے کوئی رستہ بھی نہیں

سایہ بن کر میں صلیبوں سے اُتر آیا ہوں!
اب کوئی اور سزا دو کہ میں زندہ ہوں ابھی

یہ دشمنوں کی عنایت ہے کون مانے گا . . . !
جو واقعہ کرمِ دوستاں سا لگتا ہے

اک اشک ندامت کے سوا کچھ بھی نہیں ہے
پلکوں پہ سجایا ہوا وہ خواب کہاں ہے

اس مجموعہ میں کچھ فارسی نظمیں بھی ہیں۔ مگر سردست ان سے قطع نظر کرتے ہیں۔ صرف یہ کہا جا سکتا ہے کہ یہ نظمیں شاعر کے جذبات کے ساتھ ساتھ قدرت بیان کی خوبصورت مثال ہیں۔

عام طور پر کہا جاتا ہے کہ شاعری کی عمر بھی شاعر کی طرح لڑکپن، شباب اور پھر بڑھاپے کی منزلوں سے گذرتی ہے۔ بقول فراق۔ ہر شاعر ایک عمر میں "کھڑک" ہو جاتا ہے۔ خود فراق کی شاعری پر بھی یہ بات صادق آتی ہے مگر تنویر صاحب کی شاعری اس کلیہ سے مستثنیٰ ہے۔ ان کی شاعری بڑھاپے میں بھی جوان ہے۔ ۱۹۴۶ء اور ۱۹۸۶ء کی نظموں میں کوئی خاص فرق نظر نہیں آتا۔ بلکہ اول دور کی نظموں میں خیال کی گہرائی اور حالات و ماحول کے مسائل اور کرب کا شعور بھی پایا جاتا ہے جو آگے چل کر ایک مخصوص جمالیاتی حساس میں بدل گیا ہے۔

ـــــــــ ظہیر احمد صدیقی

اُردو کہاوتیں اور ان کے سماجی و لسانی پہلو

مصنف: ڈاکٹر یونس اگاسکر

صفحات: ۳۳۶

قیمت: اسّی روپے

تقسیم کار: ماڈرن پبلشنگ ہاؤس گولا مارکیٹ دریا گنج نئی دہلی ۲

کتابوں کی بھیڑ میں کبھی کبھی کوئی ایسی کتاب مل جاتی ہے جسے دیکھ کر حیرت ہوتی ہے اور پڑھ کر خوشی۔ ڈاکٹر یونس اگاسکر کی کتاب "اُردو کہاوتیں اور ان کے سماجی و لسانی پہلو" ایسی ہی کتاب ہے۔ میرے علم میں اُردو میں ابھی تک کوئی ایسی کتاب نہیں، جس میں کہاوتوں کا اتنا تفصیلی مطالعہ کیا گیا ہو۔ ہوا یہ ہے کہ ہم "ڈرائنگ روم" کے ادب کے مطالعے کے اس قدر عادی ہو چکے ہیں کہ اس سے باہر پھیلے ہوئے تخلیقی سرمایے کو بالکل نظر انداز کر دیتے ہیں۔ یہ عادت ادب کے عام قارئین کے علاوہ تعلیمی اداروں کی بھی بن چکی ہے۔ کسی شعبۂ اُردو میں عوامی اصناف ادب کو تحقیق کا موضوع نہیں بنایا جاتا بلکہ تمام تر تحقیقی کام چند موضوعات کے گرد ہی گردش کرتا رہتا ہے۔ اس کا ایک سبب یہ بھی ہے کہ ہمارے بیشتر اساتذہ نہ تو عوامی اصناف ادب میں دلچسپی رکھتے ہیں اور نہ دسترس۔ دراصل اس طرح کا کام محنت چاہتا ہے، اس کام میں لائبریریوں سے زیادہ عوام سے رابطہ قائم کرنا ہوتا ہے، ڈاکٹر یونس اگاسکر اس لیے قابل مبارکباد ہیں کہ انھوں نے اس تحقیقی کام کو بحسن و خوبی انجام دیا ہے۔ کتاب کا ہر صفحہ اُن کی محنت اور لگن کی نشاندہی کرتا ہے۔

مروّجہ اور غیر مروّجہ کہاوتوں کا جمع کرنا ہی سمندر سے گہر تلاش کرنے کے مترادف ہے، انھوں نے تقریباً چار ہزار سے زیادہ کہاوتیں یکجا کی ہیں۔ نہ صرف ان کہاوتوں کی کھوج کی ہے بلکہ سماجی اور لسانی اعتبار سے بھی ہر کہاوت پر الگ الگ تفصیلی گفتگو کی ہے۔

سات ابواب میں منقسم اس کتاب میں کہاوت کی تعریف، لفظ کہاوت کی تحقیق، دوسری ہندوستانی زبانوں میں لفظ کہاوت، لفظ کہاوت کے مترادفات، غیر ملکی زبانوں میں کہاوت کے مترادفات، کہاوت کی قسمیں، کہاوت اور محاورے کا فرق، کہاوت اور تلمیح کا رشتہ۔ کہاوت کے آغاز و ارتقا کے اسباب کے ساتھ ساتھ کہاوت کی سماجی، فلسفیانہ، اخلاقی، تاریخی اور لسانی اہمیت پر بھی مفصل بحث کی ہے۔

کہاوتوں کے سماجی مطالعے میں ہندوستان کے مشترک کلچر اور کہاوتوں کے سماجی اور ثقافتی پس منظر کا بیان کرتے ہوئے الگ الگ طبقوں سے متعلق کہاوتوں کا جائزہ پیش کیا ہے۔ یہ تقسیم اس ترتیب سے کی ہے:

۱۔ ذات پات
۲۔ پیشے
۳۔ زراعت و کاشت کاری
۴۔ عورتوں کا مرتبہ
۵۔ رسم و رواج
۶۔ شادی بیاہ
۷۔ مہمان
۸۔ رشتے ناتے
۹۔ خور و نوش
۱۰۔ پوشاک
۱۱۔ صحت و علاج
۱۲۔ توہمات

مثلاً ذات پات کے ذیل میں برہمن، بنیا، جاٹ، جُلاہا، دھوبی وغیرہ اور پیشے میں قاضی، مُلّا، چور، بھاٹ، بھانڈ، حکیم وغیرہ شامل ہیں۔ ان سب کے ساتھ وابستہ کہاوتیں اور ان کے سماجی اور تاریخی یا اخلاقی پس منظر پر بحث کی ہے۔ مثال کے طور پر جوتی کے بارے میں لکھا ہے کہ:

"جوتی کو پگڑی اور ٹوپی کے برعکس کمتری اور رذالت کی نشانی سمجھا گیا ہے اور کمین کو مُنہ نہ لگانے کا مشورہ دیتے ہوئے "پانو کی جوتی پانو ہی میں بھلی" کی مثال دے کر اسے واضح کیا ہے"۔

کتاب کے آخری باب میں کہاوتوں کے لسانی پہلو کا ذکر کرتے ہوئے کہاوتوں میں وزن و قافیہ اور تُک بندی، تشبیہ و استعارہ، تضاد و تقابل، اختصار و جامعیت، عربی و فارسی اثرات پر گفتگو کی ہے۔ کتاب کے یہی دونوں آخری ابواب زیادہ اہم ہیں ڈاکٹر یونس نے لکھا ہے کہ "ان ابواب میں غالباً پہلی مرتبہ اُردو کہاوتوں کی روشنی میں مشترک ہندوستانی کلچر اور سماج کے مختلف گوشوں کو اُجاگر کیا گیا ہے اور کہاوتوں میں موجود

لسانی خصوصیات کی نشاندہی کی گئی ہے۔" ڈاکٹر یونس نے یہ بھی کہا ہے کہ "ان دو ابواب کے لکھنے میں مجھے دانتوں پسینہ آگیا۔"

کتاب کے آخر میں وہ تمام کہانیاں بھی شامل ہیں۔ جن پر بحث کی گئی ہے۔

سچ تو یہ ہے کہ ڈاکٹر یونس اگاسکر نے انتہائی محنت اور لگن کے ساتھ اس منفرد کام کو انجام دیا ہے۔ بقول جناب رشید حسن خاں "اُردو میں اپنی نوعیت کا یہ پہلا مفصل مطالعہ ہے جس میں ضرب الامثال کے متعلقات پر سنجیدگی کے ساتھ گفتگو کی گئی ہے۔"

—— (ڈاکٹر) ابن کنول

سہ ماہی پیش رو

ادارۂ تحریر: انور پاشا، توحید اختر، ابرار رحمانی، ابواللیث شمسی، شریف احمد، مظہر مہدی، تیر نسیم۔

صفحات: ۱۲۸

قیمت: ۶ روپے

پتہ: پوسٹ بکس ۱۰۵۱۲، جواہر لال نہرو یونیورسٹی، نئی دہلی ۶۷-۱۱۰۰۔

جواہر لال نہرو یونیورسٹی کا شمار دُنیا کی معیاری درس گاہوں میں ہوتا ہے۔ خوش قسمتی سے یہاں شعبۂ اُردو بھی ہے جو یونیورسٹی کی معیاری تعلیمی روایات کا امانت دار ہے۔ پیش رو کا شعبۂ ادارت شعبۂ اُردو کے طالبِ علموں ہی پر مشتمل ہے اس زمانے میں اُردو جریدہ نکالنا کتنا دشوار کام ہے اس کا اندازہ صرف انھی دیوانوں اور فرزانوں کو ہے جنھوں نے خود ایسا کیا ہو۔

اداریے کا یہ اقتباس دیکھیے، جس سے شعبۂ ادارت کے فکر و نظر کا کچھ اندازہ کیا جا سکتا ہے۔

"آج پورے ملک کی فضا کہرآلود ہے فرقہ واریت، رجعت پسندی، دہشت گردی، کرپشن، تعلیمی و معاشی، پس ماندگی، بے روزگاری اور مہنگائی سے پیدا شدہ حالات نے ملک اور معاشرے کو تباہی کے دہانے پر لاکر کھڑا کر دیا ہے۔ آزادی کے چالیس سال بعد بھی ملک کی یہ خطرناک صورتِ حال کسی نہ کسی سطح پر ہمارے موجودہ نظامِ حکومت کی پالیسیوں اور سیاسی کارکردگیوں کی ناکامی کی چغلی کھا رہی ہے۔ عوامی زندگی میں بے اطمینانی، عدم تحفظ، ناانصافی اور تعصب کے خدشات بُری طرح گھر کر چکے ہیں جس کے سبب مختلف تخریبی قوتیں ان حالات کا استحصال کرکے اپنا اُلّو سیدھا کرنے میں لگی ہیں نتیجے کے طور پر انتشار اور افراتفری مزید بڑھتی جارہی ہے۔"

مضامین کے انتخاب میں مدیران نے صرف اُردو اور ادب پر ہی اکتفا نہیں کی ہے بلکہ مختلف موضوعات پر بہترین مضامین منتخب کیے ہیں یہی وجہ ہے کہ "ہندوستان میں مسلم عورتوں کا مسئلہ" از اصغر علی انجینیر، "جدید ہندوستان کے مؤرخین اور فرقہ واریت" از بپن چندر، "ہندوستان میں مسلمانوں کی تعلیمی پسماندگی" از امتیاز احمد اور "نئی تعلیمی پالیسی کا کردار" از انور پاشا ایسے مضامین اس میں شامل ہیں۔ زبان کے مسائل پر پروفیسر محمد حسن کا تفصیلی انٹرویو اور گوتم نولکھا کے مضمون میں بعض بالکل نئے زاویے سامنے آتے ہیں۔ ادبی منظرنامے میں شمیم حنفی اور وزیر آغا کے مضامین بہت خوب ہیں مگر اختصار کھٹکتا ہے۔ پروفیسر صدیق الرحمان قدوائی کا مضمون "منٹو: ایک باغی افسانہ نگار" موضوع کی مناسبت سے نیا اور جریدے کا معیاری مضمون ہے۔ اویس احمد دوراں کا مضمون مجروح کی شاعری سے دلچسپی رکھنے والوں کے لیے تحفہ ہے۔

ایسا نہیں کہ مدیران تخلیقی ادب کی افادیت کے منکر ہوں۔ ظفر پیامی اور رتن سنگھ کی کہانیاں، شہاب جعفری، شریف احمد قریشی، سرور احمد، مجروح سلطانپوری اور خورشید طلب کی منظوم تخلیقات بھی پیش رو کی زینت ہیں۔

ہر جریدے میں اہم کالم نئی کتب کا ہوتا ہے وہ اس میں بھی فراموش نہیں ہوا ہے۔ "سانحۂ کربلا بطور شعری استعارہ" اور "فراز" پر دو معیاری تبصرے اس کالم کی زینت ہیں۔

—— اطہر فاروقی

درد کا گلاب (افسانوی مجموعہ)

مصنف: صبوحی طارق

صفحات: ۹۹

قیمت: ۲۰ روپے

ناشر: حنا پبلی کیشن، نیو تیواری ٹینک روڈ، رانچی۔

"درد کا گلاب" صبوحی طارق کی بارہ طبع زاد کہانیوں پر مشتمل، اوّلین افسانوی مجموعہ ہے۔ کتاب میں شامل کئی افسانے ادبی رسائل میں شائع ہوچکے ہیں۔ کتاب کے دیباچے میں ش۔ اختر نے صبوحی کے عہد کو ایک نیک شگون بتاتے ہوئے (صبوحی کے) عصمت چغتائی اور شکیلہ اختر سے آگے بہت آگے جانے کی پیشین گوئی کی ہے۔ ش۔ اختر کے تعریفی کلمات میں غلو کا عنصر کچھ زیادہ ہی نظر آتا ہے۔

صبوحی طارق کے بیشتر افسانے موضوعاتی اعتبار سے ان تخلیقی جہتوں کی نشاندہی نہیں کرتے جو آج کی جدید کہانیوں کا خاصہ ہے۔ صبوحی

کی سب سے بڑی خوبی یہ ہے کہ وہ سچ کی عظمت و حرمت کو سمجھتی ہیں اور اپنے تخلیقی اظہار میں خارجی عناصر کو سچ کے لیے مانع نہیں بننے دیتی ہیں۔ ان کی کہانیوں کے موضوعات روایتی اور تحریر بیانیہ ہے۔ چند ایک کو چھوڑ کر سبھی افسانے عشق و محبت اور رومانی المناکی کی تصویریں ہیں۔ عشق و رومانس میں جو ایک زیریں کسک اور چبھن ہوتی ہے وہ ان کے یہاں بدرجۂ اتم موجود ہے۔ معاشرے میں صدیوں سے عورتیں جس استحصال جبر اور مردوں کی بالادستی کا شکار ہیں، مصنفہ نے اس کی بھی نشاندہی کی ہے۔ "شعلے کی لپک" اور "اپنا گھر اپنا دکھ" اس کی اچھی مثالیں ہیں۔ "اذانوں کے پہرے" اور "کندھوں کا کتبہ" لکھ کر صبوحی نے اپنی صلاحیت کو بے جا صرف کیا ہے۔ یہ افسانے ابہام کی نذر ہو کر جدید افسانے کی فیشن پریڈ میں شامل ہوگئے ہیں۔

صبوحی ایک ذہین اور باشعور افسانہ نگار ہیں۔ یہ افسانوی مجموعہ بظاہر آغازِ سفر ہے۔ انھوں نے اپنا یہ سفر جاری رکھا تو امید قوی ہے کہ خاتون افسانہ نگاروں کی صف میں وہ اپنی پہچان بنانے میں کامیاب ہوں گی۔ طباعت و کتابت کے لحاظ سے یہ مجموعہ نفیس ہے۔

—— ہمایوں اشرف

چند یادگار مشاعرے
مصنف : ذکی تال گانوی
صفحات : ۱۹۲
قیمت : ۲۸ روپے
پتہ : ذکی منزل، محلہ سوتھا، بدایوں (یو۔پی)

تاریخ السنہ کا ایک معمولی طالب علم بھی اس حقیقت سے واقف ہے کہ زبانوں کے تدریجی ارتقا

اور ادبیات کے نشو و نما میں شعرا نے ہر دور میں بڑا اہم رول ادا کیا ہے۔ مشاعروں کی سماجی، لسانیاتی، تہذیبی اور ادبی حیثیت سے انکار نہیں کیا جا سکتا کیونکہ مشاعرے عوام میں ادبی ذوق اور سماجی شعور پیدا کرنے کا مؤثر ترین ذریعہ ہیں۔

زیرِ نظر کتاب میں فاضل مصنف نے بیس نمائندہ مشاعروں کو کتابی صورت دی ہے اور ہر مشاعرے کا تفصیلی ذکر کیا ہے جس میں مشاعرے میں شریک ہونے والے شعرا کا تعارف بھی دیا گیا ہے۔ عرض صنف میں مشاعروں کی تاریخ بیان کی گئی ہے۔ اور ان کی افادیت اور اہمیت پر روشنی ڈالی گئی ہے۔ اہلِ ذوق کے لیے یہ کتاب ایک دلکش تحفہ ہے۔

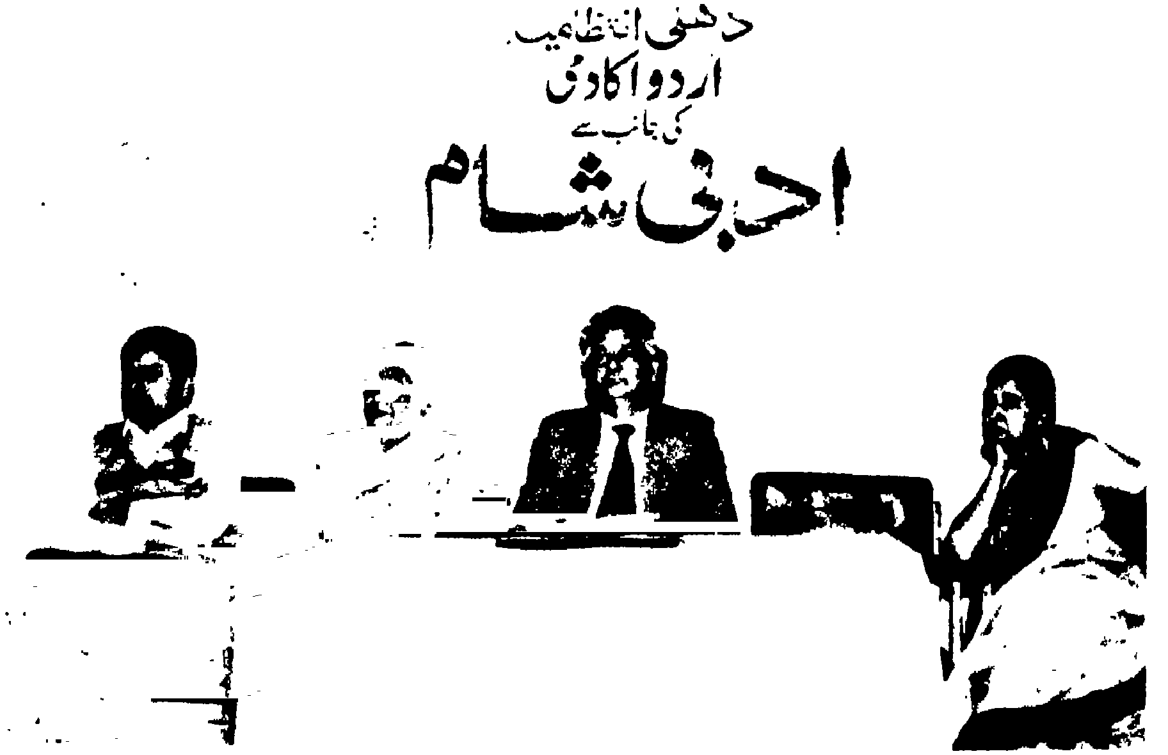
—— دلیپ بادل

اُردو خبر نامہ

ادبی شام

اُردو اکادمی، دہلی نے ہر مہینے کے آخری جمعے کو ایک ادبی نشست کے انعقاد کا سلسلہ شروع کیا ہے۔ نومبر کے آخری جمعے کو یہ نشست اکادمی کے آڈیٹوریم میں منعقد ہوئی۔ یہ نشست خاکوں کے لیے مخصوص کی گئی تھی۔ ایک خاکہ ڈاکٹر صغریٰ مہدی نے پڑھا اور دوسرا ڈاکٹر شمیم نکہت نے۔ جلسے کی صدارت پروفیسر عنوان چشتی نے کی۔ اتفاق سے دونوں خاکوں کا موضوع ایک ہی تھا — ایک ایسی گھریلو خادمہ جو خاندان کا حصّہ بن گئی ہو اور جو عام طور پر 'بُوا' کے لاحقے سے جانی جاتی ہے۔ مگر موضوع ایک ہونے کے باوجود دونوں خاکوں میں 'بُوا' کا جو کردار پیش کیا گیا وہ مختلف تھا۔ صغریٰ مہدی صاحبہ کی 'بُوا' گاؤں سے چل کر شہر تک آئیں اور پھر ملک سے بیرونِ ملک تک گئیں۔ ان کا رویّہ سماج اور زندگی میں رونما ہونے والی تبدیلیوں کی طرف ایجاب و قبول کا تھا لیکن شمیم نکہت صاحبہ کی 'بُوا' اپنی 'وضع' کی پابند اور بڑی حد تک لکیر کی فقیر تھیں۔ انجام دونوں کا حسرتناک ہوا لیکن صغریٰ مہدی صاحبہ کی 'بُوا' اس انجام کو اس صبر و سکون کے ساتھ قبول کرنے کی اہل نہ تھیں جس صبر و سکون اور اطمینانِ خاطر کے ساتھ شمیم نکہت صاحبہ کی 'بوا' نے موت کو گلے لگایا۔ اپنی بے اطمینانی کی پردہ داری کی کوشش صغریٰ مہدی صاحبہ کی بوا نے بھی کی اور شاید یہ اخلاقی وصف بھی انھیں اسی معاشرے سے ملا تھا جسے وہ پیچھے چھوڑ آئی تھیں لیکن دوسری 'بُوا' نے جس کے زیرِ سایہ اپنی پوری زندگی بسر کر دی۔

خاکوں پر ڈاکٹر تنویر احمد علوی، ڈاکٹر



دائیں سے: محترمہ ریحانہ فاروقی، پروفیسر عنوان چشتی (صدرِ جلسہ)، ڈاکٹر شمیم نکہت، جناب پیغام آفاقی

(فوٹو: سیّد فدا علی)

شارب ردولوی، جناب پیغام آفاقی اور صاحبِ صدر پروفیسر عنوان چشتی نے تفصیل سے اظہارِ خیال کیا۔ ڈاکٹر شارب ردولوی کا خیال تھا کہ دونوں 'بُواؤں' کے کردار میں جو فرق ہے وہ دراصل دو معاشروں کے فرق کی نشاندہی کرتا ہے۔ ایک 'بُوا' ایک جمے جماتے اور ٹھہرے ہوئے معاشرے کی قناعت پسند خاتون ہے، دوسری ایک اکھڑتے ہوئے یا بدلتے ہوئے معاشرے میں اپنی جگہ بنانے کی کوشش میں اپنا توازن کھو بیٹھتی ہے۔ شرکا میں سے کچھ دیگر حضرات نے بھی اظہارِ خیال میں حصہ لیا۔

آخر میں پاکستان سے آئے ہوئے قوال جعفر حسین نظامی اور ان کے ہمنواؤں نے قوالی کا پروگرام پیش کیا۔

بیرسٹر آصف علی پر دو روزہ سیمینار

تحریکِ آزادی کے ممتاز رہنما بیرسٹر آصف علی کی حیات اور خدمات پر اُردو اکادمی دہلی کی طرف سے ۳، اور ۴، دسمبر ۱۹۸۸ء کو غالب اکیڈمی (بستی حضرت نظام الدین، نئی دہلی) میں دو روزہ سیمینار منعقد کیا گیا۔ اس سیمینار کا افتتاح مرکزی وزیر شہری ترقیات محترمہ محسنہ قدوائی نے کیا۔ انھوں نے کہا کہ آصف علی تحریکِ آزادی کے سرکردہ رہنما ہونے کے ساتھ ساتھ ہمارے مشترکہ تہذیبی ورثے کا جیتا جاگتا نمونہ بھی تھے۔ نئی نسل کو ان کے کارناموں سے واقف کرنا ضروری ہے۔ آصف علی صاحب کے قریبی دوست اور ممتاز ماہرِ تعلیم کرنل بشیر حسین زیدی نے تجویز پیش کی کہ آصف علی کی زندگی پر ایک دستاویزی فلم تیار کی جائے۔ مسز ارونا آصف علی افتتاحی اجلاس میں مہمانِ خصوصی کی حیثیت سے شریک تھیں، انھوں نے اپنے مرحوم شوہر کی قبر پر پھولوں کی چادر چڑھانے کی رسم میں بھی شرکت کی۔ مہمانوں کا خیر مقدم اکادمی کی سیمینار کمیٹی کے چیئرمین جناب ظفر پیامی نے کیا، صدارت دلّی کے میئر جناب جہندر سنگھ ساتھی نے اور نظامت کے فرائض ادا کیے جناب سیّد ضمیر حسن دہلوی نے جو اس سیمینار کے ڈائرکٹر بھی تھے۔



بیرسٹر آصف علی

دوسرے دن کے پہلے اجلاس کی صدارت پروفیسر خواجہ احمد فاروقی نے کی۔ پروفیسر موصوف کے علاوہ جناب محمد اکرام خاں (آصف علی اور ان کے معاصرین) جناب عظمت اللہ خاں (آصف علی کی ادبی خدمات) اور ڈاکٹر طیّبہ خاتون (سوانحی نقوش) نے مقالے پڑھے۔ دوسرے اجلاس کی صدارت جناب مہیشور دیال نے کی اور مقالہ خوانوں میں خواجہ حسن ثانی نظامی (آصف علی اور خواجہ حسن نظامی) انور دہلوی (تحریکِ آزادی میں آصف علی کا حصہ) ڈاکٹر ماجدہ اسد (میں نے آصف علی کو دیکھا تھا ـــ چار انٹرویو) اور سیّد ضمیر حسن دہلوی (ہے مشقِ سخن جاری چکّی کی مشقّت بھی) شامل تھے۔

آخر میں ممتاز ادیبوں اور دانشوروں نے دہلی میں آصف علی میوزیم قائم کرنے پر زور دیا جو تحریکِ آزادی میں دہلی کے کنٹری بیوشن کا آئینہ دار ہو۔ دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی نے کہا کہ آصف علی

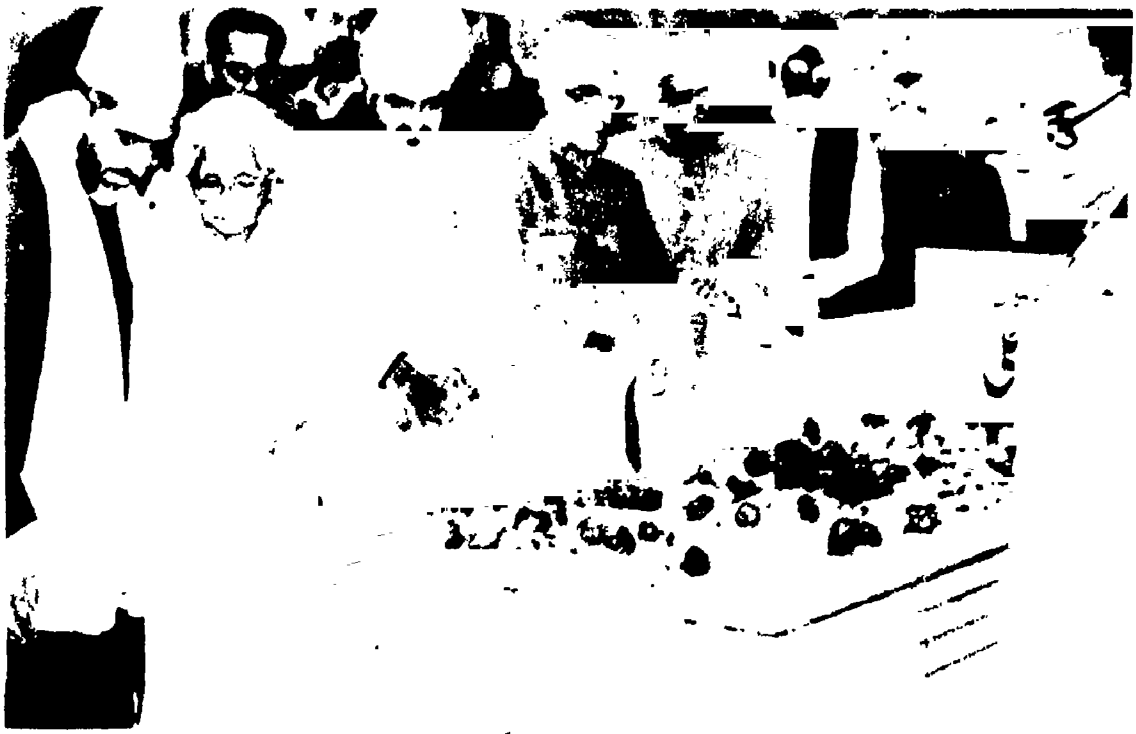
دہلی اردو اکادمی
کی جانب سے

دو روزہ سیمینار
آصف علی - حیات و خدمات



دو روزہ آصف علی سیمینار' افتتاحی اجلاس' دائیں سے: میر مشتاق احمد' محترمہ ارونا آصف علی' محترمہ محسنہ قدوائی' جناب مہندر سنگھ ساتھی اور کرنل بشیر حسین زیدی
(فوٹو: سید فدا علی)

جیسے قوم پرست مسلمانوں کی شاندار خدمات کو اجاگر کرنے کی بھرپور کوشش ہونی چاہیے۔ بدقسمتی سے ابلاغِ عامہ کے ذرائع اس حقیقت کا انکشاف کرنے سے قاصر ہیں کہ ہندوستانی مسلمانوں نے سب سے پہلے برطانوی حکومت کے خلاف بغاوت کا پرچم بلند کیا تھا۔ سیکریٹری اکادمی کے کلماتِ تشکر پر یہ دو روزہ سیمینار اختتام کو پہنچا۔



آصف علی صاحب کے مزار کی گل پوشی (فوٹو: سید فدا علی)

مضمون نگاری کا مقابلہ
(برائے طلبا و طالبات ڈگری کالج)

تنظیم رضا انعامات، ہبلی کے زیر اہتمام یوم جمہوریہ ۱۹۸۹ء کے موقعے پر ڈگری کالج کے طلبا و طالبات سے حسب ذیل عنوان پر اُردو میں مضمون مطلوب ہیں:

عنوان: "تاجر حضرات کی اُردو میں کھاتہ نویسی"
(اس سے زندگی کے امور میں ہمہ پہلو فوائد، درپیش مشکلات دور کرنے کے لیے اقدام اور نتیجہ)۔

شرائط:

۱۔ مضمون صفائی کے ساتھ فل اسکیپ ورق کے ایک طرف ہو، زیادہ سے زیادہ پانچ صفحات کا ہو۔ بیاض کے اوراق میں لکھا ہو اور ورق کے دونوں طرف لکھا ہوا مضمون مقابلے میں شامل نہ ہوگا۔

۲۔ طلبا یا طالبات مضمون پر اپنا نام نہ لکھیں، بلکہ علیحدہ کاغذ پر اپنا نام، جماعت، کالج کا نام پن کوڈ نمبر لکھ کر بھیجیں اور آپ کے یہاں پڑھے جانے والے مقبول اُردو اخبار کا نام اور مکمل پتہ اگر ہو تو بتا دیں، کالج کی تصدیق و مہر اس علیحدہ کاغذ پر ہو، اسے مضمون کے ساتھ منسلک کر دیں۔

۳۔ اوّل، دوم اور سوم انعام کے علاوہ پانچ ترغیبی انعامات دیے جائیں گے۔

۴۔ اوّل انعام یافتہ کے اعزاز میں بطور عطیہ کالج کو ایک سال تک رسالہ جاری رہے گا۔

۵۔ انعام یافتہ مضمون تنظیم ھٰذا اخبارات میں شائع کرا سکتی ہے۔

۶۔ جج حضرات کا فیصلہ قطعی ہوگا۔

۷۔ مضمون واپس نہ ہوگا لہٰذا مضمون کی نقل اپنے پاس ضرور رکھیں۔

۸۔ طلبا و طالبات کسی بھی مقام سے اپنے کالج کی معرفت اس مقابلے میں حصہ لے سکتے ہیں۔

۹۔ مضمون چاہے مقامی ہوں یا بیرونی ہوں بذریعہ ڈاک ہی قبول کیے جائیں گے۔ اور لفافے پر پتہ صرف اور صرف اُردو ہی میں مصدقہ ڈاک (Under Certificate of Posting) سے ہو (محکمۂ ڈاک میں اُردو میں ڈاک کے سارے امور رائج ہیں کسی ڈاک خانے میں انکار کیا جائے تو اُس ڈاک خانے کی شکایتی بیاض میں شکایت درج کر دیں، محکمۂ ڈاک والے اپنی سہولت کے لیے وہ ترجمہ کر لیتے ہیں)۔

۱۰۔ مضمون درج ذیل پتے پر ۱۰؍ جنوری ۱۹۸۹ء تک موصول ہونا چاہیے۔

پتہ: "انعامی مقابلہ ۸۹" سیکریٹری تنظیم "رضا انعامات" عطا از ہری بک ایجنسی کمہار محلہ، ہبلی ۵۸۰۰۲۸ (کرناٹک)۔

یک بابی ڈراموں کا انعامی مقابلہ

مہاراشٹر اسٹیٹ اُردو اکادمی کی طرف سے علاقائی یک بابی ڈراموں کا انعامی مقابلہ بمبئی کے تیج پال آڈیٹوریم ہال میں منعقد کیا گیا، جس میں بمبئی اور بھیونڈی کے مختلف اداروں اور کالجوں نے حصہ لیا۔

ڈراموں کے جج پینل کے ایک رُکن اور آرٹسٹ اطہر قریشی نے اپنے تاثرات پیش کرتے ہوئے کہا کہ فن ڈرامہ زندگی کو ایک مکمل، ڈسپلن اور نظم و ضبط سے آراستہ کرتا،



ہدایت کار و اداکار اطہر قریشی (جنھوں نے ٹی وی پر عصمت چغتائی کی کہانی "چوتھی کا جوڑا" کی ہدایت دی تھی) مقابلے میں شامل ڈراموں پر تبصرہ کرتے ہوئے ـــــ مہمان خصوصی جاوید ناصر (پروگرام ایگزیکٹیو آل انڈیا ریڈیو بمبئی) بھی دیکھے جا سکتے ہیں

ہے۔ ڈراما ایک آئینہ ہے جس میں ہم اپنا اور دوسروں کا چہرہ دیکھتے ہیں، یہ ہماری کمزوری اور طاقت، ہماری خوبیاں اور خامیاں پُر اثر طریقے سے دوسروں تک پہنچاتا ہے، ہمارے غصّے اور تناؤ کو کم کرتا اور دلوں پر جمی گرد کو دور کرتا ہے۔

جاوید ناصر (پروگرام ایگزیکیٹو آل انڈیا ریڈیو) نے درج ذیل انعامات تقسیم کیے:

۱۔ پہلا انعام: یہ ناممکن ہے (آرٹسٹ ایس دتا اشیش گروپ، بمبئی)
۲۔ دوسرا انعام: سورگیہ بابوجی (بی۔ این۔ این۔ کالج، بھیونڈی)
۳۔ تیسرا انعام: آپ زندہ ہیں (رضوی کالج، بمبئی)
۴۔ ترغیبی انعام: بندوبست (انجمن اتحاد المسلمین، بمبئی)
۵۔ بہترین اسکرپٹ: عالیہ جبیں (آپ زندہ ہیں)
۶۔ بہترین ہدایت کار: عرفان برڈی (سورگیہ بابوجی)
۷۔ بہترین اداکار: عرفان برڈی (سورگیہ بابوجی)
۸۔ بہترین اداکارہ: رکمنی پربھاکر (یہ ناممکن ہے)

(سید وقار حسن قادری)

مولانا ابوالکلام آزاد پر سیمینار

مہاراشٹر اسٹیٹ اُردو اکادمی کی جانب سے مہاراشٹر کے علاقہ ودربھ میں مولانا ابوالکلام آزاد پر ایک سیمینار ضلع اکولہ کے ٹاؤن ہال میں منعقد کیا گیا۔

سیمینار کا افتتاح تلاوتِ کلام پاک سے ہوا۔ مقالوں کا آغاز نائب صدر اکادمی ڈاکٹر ظ۔ انصاری صاحب کے تبصرے سے ہوا (جو انھوں نے اُردو اکادمی دہلی کی جانب سے مولانا آزاد پر شائع شدہ ۲۶ مقالوں کے مجموعے پر کیا ہے)۔ ظ۔ انصاری صاحب اس سیمینار میں شریک نہ ہوسکے لہٰذا یہ مضمون ان کی غیر موجودگی میں پڑھا گیا، اس کے بعد جناب غلام صوفی حیدری صاحب نے بھی اپنا مقالہ "مولانا ایک ہمہ گیر شخصیت" پڑھا۔ مولانا ہادی نقش بندی صاحب نے جنھوں نے مولانا کو دیکھا اور سنا ہے ان کی شخصیت پر مضمون پڑھا، پروفیسر محمد مصطفٰے خاں صاحب نے "دورِ حاضر کی ایک عظیم شخصیت مولانا آزاد" کے موضوع پر روشنی ڈالی۔

(سید وقار حسن قادری)

ایک اُردو اخبار کی پانچویں سالگرہ

پندرہ روزہ "گوشوارہ" رُوڑکی کی پانچویں سالگرہ کے موقعے پر سینچائی محکمہ کے آڈیٹوریم میں ایک شعری اور ادبی پروگرام منعقد ہوا۔ جس میں دیگر مہمانوں کے علاوہ خصوصی مہمانوں کی حیثیت سے سید شریف الحسن نقوی (سیکریٹری اُردو اکادمی دہلی) م۔ افضل (ایڈیٹر "اخبار نو" دہلی) انجم عثمانی (اُردو پروگرام پروڈیوسر ٹی۔ وی) شریک ہوئے — عہدۂ صدارت پر متمکن ہوئے نقوی صاحب۔ پہلے حصّے کی نظامت کی مُدیر "گوشوارہ" مسیح الزماں امروہوی نے اور دوسرے حصّے کی منصور عثمانی نے۔ پروگرام کا افتتاح سینچائی محکمہ کے چیف انجینیر شری ڈی۔ این۔ بھارگو نے شمع روشن کرکے کیا۔ نقوی صاحب نے اپنی تقریر میں کہا کہ



بیٹھے ہوئے (دائیں سے): مسیح الزماں امروہوی، م۔ افضل، انجم عثمانی، سید شریف الحسن نقوی، رئیس نجمی، آر۔ کے۔ شرما۔ کھڑے ہوئے (دائیں سے) عبدالملک، ظہور احمد، مستجاب عادل، غلام ربانی، نواز دیوبندی

آج کل ہر مجلس میں، ہر محفل میں، ہر جلسے میں قومی یکجہتی کی بات کہی جاتی ہے۔ مسیح الزماں صاحب نے آر۔ کے۔ شرما اور عبدالملک صاحبان سے یہ کہہ کر متعارف کرایا کہ یہ حضرات مشترکہ طور پر ایک فیکٹری چلاتے ہیں تو میں نے کہا، سبحان اللہ آج کے دور میں یہ مثالیں یاد رکھنے والی ہیں ــــ قومی یک جہتی کی اتنی باتیں ہوتی ہیں۔ اتنے بڑے بڑے لوگ کرتے ہیں اور پھر بھی ہر جگہ اس کی کمی نظر آتی ہے۔ ایسا کیوں ہے؟ اگر پلیٹ فارم سے محض بولنے سے قومی یک جہتی پیدا ہو سکتی ہے تو کب کی پیدا ہو گئی ہوتی ہم یہ کوشش چالیس سال سے کر رہے ہیں۔ ہر جگہ کر رہے ہیں۔ کہاں نہیں کر رہے ہیں؟ کب نہیں کر رہے ہیں؟ ہوگی کیسے؟ صرف عمل سے اِس عمل کا ایک نمونہ آر۔ کے۔ شرما اور عبدالملک صاحبان ہیں۔ جناب ان دونوں نے وہ مشکل کام کیا ہے، جو آج کم لوگ کریں گے۔ یعنی یہ اُردو کا ساتھ دے رہے ہیں۔ وہ اُردو جو آخری سانسیں لیتی نظر آ رہی ہے، اس کو زندہ کر رہے ہیں۔ اگر ایسا نہ ہوتا تو "گوشوارہ" ۵ سال نہ چلتا۔ چھٹا سال شروع نہ ہوا ہوتا۔ اس کے طفیل میں آپ اور ہم یہاں جمع نہ ہوتے۔ راہ کانٹوں سے بھری ہے لیکن :

نہ شاخِ گل ہی اونچی ہے نہ دیوارِ چمن بلبل
تری ہمت کی کوتاہی تری قسمت کی پستی ہے

دوسرے حصّے کا آغاز غمگین امروہوی کے قومی ترانے سے ہوا، جو مستجاب عادل نے ترنم سے سنایا دیگر شعرائے کرام میں سلیم دانش، شمیم عباسی، خورشید حیدر، کشور عثمانی، طاہر فراز، حافظ شمیم، ساحل فریدی، نواز دیوبندی، رئیس نجمی، منصور عثمانی، فرید پاشا آزاد اور قمر قدیر ارم صاحبہ نے سامعین کو محظوظ کیا۔

(مسیح الزماں امروہوی مدیر گوشوارہ)

تقلید کی بجائے اپنی راہ خود نکالی جائے

گلبرگہ (کرناٹک) "کہانی اور گیت ــــ زبان و ادب کے سب سے قدیم روپ ہیں۔ بلکہ کہانی تو زبان سے پہلے ملتی ہے۔ اُردو کہانی نے مختلف ادوار میں مختلف روپ اختیار کیے، پریم چند سے منٹو اور عصمت کے بعد آج کی جدید کہانی تک اس کے موضوعات ہیئت اور اسلوب میں مُسلسل تبدیلیاں ہوتی رہی ہیں۔ آج بھی ہمارے پاس کہانی کے قارئین زیادہ ہیں۔ یہی اس کی اہمیت کی دلیل ہے"۔ اِن خیالات کا اظہار محترمہ ڈاکٹر لیئق صلاح (صدر کرناٹک اُردو اکادمی) نے کوثر پروین کے دوسرے افسانوی مجموعے "بن باس" کی رسمِ اجرا انجام دیتے ہوئے کیا۔

ڈاکٹر شکیب انصاری نے کہا کہ ادب تاریخ انسانی کا ایک اہم شعبہ ہے۔ کہانی انسان کو متاثر کرنے والا فن ہے یہ انسانی جذبات کے اظہار کو ایک رنگ اور راستہ دیتا ہے۔ یہ زمانے کے مسائل کی عکاس بھی ہے۔ کوثر پروین ہمارے علاقے کے نئے لکھنے والوں میں اپنا الگ مقام بنا رہی ہیں۔ ان کا مشاہدہ گہرا ہے اور ان کے احساسات کے سوتے سدا بہتے ہیں۔

مہمانِ خصوصی جناب احمد جلیس (اسسٹنٹ اسٹیشن ڈائرکٹر آل انڈیا ریڈیو، بنگلور) نے اپنی تقریر میں کہا کہ آج سے ۴ سال قبل کوثر پروین کے پہلے افسانوی مجموعے 'ہلچل سی کوئی' کے دیباچے میں انھوں نے اس خیال کا اظہار کیا تھا کہ کوثر پروین کا قلم رُکنے والا نہیں ہے۔ "بن باس" کی اشاعت سے یہ خیال دُرست ثابت ہوا۔ انھوں نے کہا کہ وہ یہ محسوس کرتے ہیں کہ ادیب کے لیے ایک ادبی عقیدہ بہت ضروری ہے۔ اس کی تشکیل اس وقت ہوتی ہے جب وہ اپنے عہد کے علاوہ اپنے پیشرو فنکاروں کا مطالعہ کرے اور ان کا فنکارانہ جائزہ لے۔ ادب کو کسی نظریے کا آلۂ کار نہیں بنایا جانا چاہیے۔ نئے قلمکاروں کو سکّہ رائج الوقت کی تقلید سے بچنا چاہیے اور اپنے طور پر زمانے کو دیکھنے اور سمجھنے کی کوشش کرنا چاہیے انھوں نے افسانے کی زبان، تکنیک اور عصری تقاضوں پر توجہ کے بغیر تخلیق ادب کو بے سود قرار دیا۔ جناب احمد جلیس نے کہا کہ مرد افسانہ نگاروں کے مقابلے میں خاتون افسانہ نگار کہانی کہنا زیادہ بہتر طور پر جانتی ہیں۔ اور آج بھی ہماری کہانی پر ایک طرح سے ان کی اجارہ داری ہے۔

"بن باس" کی مصنفہ کوثر پروین نے اپنی جوابی تقریر میں کہا کہ میں یہ نہیں کہہ سکتی کہ میری کہانیاں فن کے معیار پر کہاں تک پوری اُترتی ہیں۔ لیکن میری کوشش ہے کہ میں کبھی نہ کبھی کوئی مکمل کہانی لکھوں۔ ان کا تاثر ہے کہ آج کی زندگی "بن باس" ہے کبھی نہ ختم ہونے والا بن باس۔ ادیب اور فنکار کا منصب یہ ہے کہ وہ لوگوں میں زندگی کا احساس بیدار کرے۔ یہ بہت بڑا منصب ہے اور میں حتی المقدور احساس زندگی بیدار کرنے کی کوشش کرتی ہوں۔ مجھے اپنی بات کو پیش کرنے سے زیادہ دوسروں کو سمجھنے اور ان کے جذبات کی عکاسی سے دلچسپی ہے۔ یہ کتاب عام آدمی کے لیے ہے اس عام آدمی کے لیے جو زندگی جینا جانتا ہے۔

جناب محمد عبدالعظیم (صدر انجمن ترقی اُردو شاخ گلبرگہ) نے اس تقریب کی صدارت کی۔ انھوں نے نئے قلمکاروں کو معاشرتی ناہمواریوں کے خلاف جہاد کا مشورہ دیتے ہوئے نیک خواہشات کا اظہار کیا۔

تعزیتی جلسہ

ہندوستان کے مشہور مجاہدِ آزادی اور اُردو زبان کے معروف ادیب پرنسپل چھبیل داس کے انتقال پر اُردو اکادمی، دہلی کی طرف سے ایک تعزیتی جلسہ دفتر اُردو اکادمی، دہلی میں منعقد ہوا جس میں ان کی وفات پر گہرے رنج وغم کا اظہار کیا گیا اور ان کی روح کے سکون اور شانتی کے لیے دُعا کی گئی۔

پرنسپل چھبیل داس مجاہدینِ آزادی کی اس بزرگ نسل سے تعلق رکھتے تھے جس کی زندہ نشانی ان کے بعد اب شاید ہی کوئی باقی رہ گئی ہو۔ انتقال کے وقت ان کی عمر ۸۸ سال تھی۔ وہ لالہ لاجپت رائے کے قریبی ساتھی اور ملک اسکول آف پالٹکس کے پرنسپل تھے جو بعد میں نیشنل کالج لاہور کے نام سے پہچانا جانے لگا۔ یہ کالج تحریکِ عدم تعاون کے بعد ۱۹۲۰ء کے اوائل میں قائم ہوا۔ پرنسپل چھبیل داس مشہور انقلابیوں جیسے بھگت سنگھ، سکھ دیو سنگھ اور بھگوتی چرن ورما کے اُستاد رہے تھے۔ وہ سرونٹس سوسائٹی آف انڈیا کے تاحیات رکن تھے۔ وہ کئی کتابوں کے مصنف بھی تھے۔ ان کی خود نوشت سوانح عمری "میری انقلاب یاترا" کے نام سے دو سال قبل شائع ہوئی تھی۔

پس ماندگان میں چار بیٹیاں ہیں جن میں مشہور ادیب دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی کی رفیقۂ حیات اور پریس ایشیا انٹرنیشنل کی ایڈیٹر محترمہ منورما دیوان بھی شامل ہیں۔ ہم ان کے غم میں شریک ہیں اور ان سے اظہارِ ہمدردی کرتے ہیں۔

پرنسپل چھبیل داس کا انتقال طویل علالت کے بعد جالندھر کے ایک اسپتال میں ۱۱ دسمبر کو ہوا اور اسی روز ان کی آخری رسوم ہرنام داس پور میں ادا کی گئیں۔ اُمید کی جانی چاہیے کہ حکومتِ پنجاب ان کی مناسب یادگار قائم کرنے پر غور کرے گی۔

ہم طرح اشعار

پچھلا شمارہ ابوالکلام آزاد نمبر تھا اس لیے ایوانِ اُردو کے بعض مستقل کالم اس میں شامل نہیں ہو سکے تھے، اس شمارے سے یہ کالم پھر شروع کیے جا رہے ہیں، اُمید ہے ان کالموں میں قارئین کی دلچسپی حسبِ سابق برقرار رہے گی۔

اس کالم کے تحت آپ اگلے مہینے کے لیے اس مصرعے پر اپنی پسند کے اشعار، شاعر کے نام کے ساتھ بھجوائیں:

ہے جستجو کہ خوب سے ہے خوب تر کہاں

قافیہ ردیف

(یہ مصرعہ حالی کی ایک غزل سے لیا گیا ہے۔ اس غزل کا کوئی شعر شاملِ مقابلہ نہ ہوگا)

آپ کی رائے

○ ماہ اگست ۱۹۸۸ء سے "ایوانِ اُردو دہلی" قریبی ایجنٹ کے ذریعے مل رہا ہے۔ نہایت خوبصورت رسالہ ہے "حرفِ آغاز" مضامین، انشائیے، افسانے، نظمیں، غزلیں، ہم طرح اشعار، شعری اور نثری عنوانات، نئی مطبوعات، خبرنامہ اور آپ کی رائے کی ترتیب و تنظیم بھی خوب ہے۔ تقریباً ۶۰ صفحوں کا رسالہ ہے، جس میں دلچسپ حُسن ترتیب کی کوشش ہے جو قابلِ مبارکباد ہے۔

صفحۂ آپ کی رائے، آپ نے مخصوص رکھ دیا ہے۔ چنانچہ چند باتیں عرض کرتا ہوں۔

۱۔ سرورق اور تزئین ارشد علی صاحب کے ذمّے ہے۔ یہ کام بخوبی انجام پا رہا ہے۔ ارشد علی صاحب قابلِ مبارک باد ہیں۔ ایک گذارش ہے کہ سرورق پر جن عمارتوں کی تصویریں دی جاتی ہیں ان کے بارے میں کوئی عبارت لکھی جائے تو اچھا ہے۔ مثلاً ستمبر، اکتوبر اور نومبر ۱۹۸۸ء کے سرورق، اسی طرح اگست ۸۸ء کے سرورق سے کوئی واقفیت نہ ہو سکی۔ قارئین کو آپ سے دریافت کرنے کی ضرورت پیش آتی ہے، اگر سرورق کی تصویروں کے تحت مختصر عبارت بطور نوٹ لکھ دیں تو عام فائدہ ہوگا۔(۱)

۲۔ سرورق سے منسلک "سرودِ رفتہ" کے عنوان سے اُردو کے مشہور و معروف شعرا کا کلام پیش کرنے کا سلسلہ قابلِ قدر ہے۔ اگست، ستمبر، اکتوبر اور نومبر میں بالترتیب شیخ محمد ابراہیم ذوقؔ، مرزا اسداللہ خاں غالبؔ، مومن خاں مومنؔ اور سراج الدین محمد بہادر شاہ ظفرؔ کی تصویریں مع ان کے کلام کے شائع ہوئی ہیں۔ یہ کام قابلِ ستائش ہے۔

اُردو اکادمی، دہلی کا ماہانہ رسالہ کہلانے والے "ایوانِ اُردو دہلی" کو نہایت ذمہ دارانہ فرض ادا کرنا چاہیے۔ شاعروں یا مشاہیر کے بارے میں ایسی مختصر مفید معلومات فراہم کرنی چاہیے جو مستند تسلیم کی جاتی ہو۔ مشکوک یا غیر معتبر روایتیں، سن ولادت، سن وفات وغیرہ درج کرنا غیر ذمہ دارانہ عمل ہے۔ حوالہ جات درج کرنے سے پیشتر، تحقیق اور تصدیق کر کے اطمینان کر لیا جائے، روایتوں کو پرکھا اور جانچا جائے۔ محض بہ روایت ڈاکٹر تنویر احمد علوی یا بہ روایت اُردو انسائیکلوپیڈیا فیروز سنز، لاہور لکھ دینا کافی نہیں۔ غالبؔ اور مومنؔ کے بارے میں تو کوئی حوالہ بھی نہیں دیا گیا ہے۔ غالباً یہ مان لیا گیا ہے کہ ان کے بارے میں کثرت سے لکھا جا چکا ہے اور قارئین کو بخوبی علم ہے۔ لیکن جب آپ نے سلسلہ شروع کیا ہے تو صحیح اور مستند حال مختصراً لکھ دینا ضروری ہو جاتا ہے۔(۲)

مرزا غالبؔ کے بارے میں حالاں کہ بہت کچھ لکھا جا چکا ہے۔ پھر بھی اطمینان نہیں ہوتا۔ کم از کم مجھے ان کی تاریخ ولادت کے بارے میں شبہ ہے۔ مرزا غالبؔ کا اپنا بیان ۸، رجب ۱۲۱۲ھ کی پیدائش پر یقین ہے لیکن عیسوی تاریخ، ماہ اور سن کے بارے میں قطعی فیصلہ نظر نہیں آتا۔ کہیں ۱۷۹۲ء، ۱۷۹۵ء، ۱۷۹۶ء یا ۱۷۹۷ء لکھتے ہیں، تاریخ اور ماہ کا مذکور نہیں ہوتا۔ ظ۔ انصاری صاحب نے ۲۷، دسمبر ۱۷۹۷ء درج کیا ہے۔ اب پتہ نہیں۔ جنتری یا تقویم کے حساب سے ۸، رجب ۱۲۱۲ھ مطابق ۲۷، دسمبر ۱۷۹۷ء ہے یا نہیں۔ البتہ تاریخ وفات کے بارے میں کوئی اختلاف نظر نہیں آیا۔ یعنی دوم ذیقعدہ ۱۲۸۵ھ م ۱۵، فروری ۱۸۶۹ء۔ تاریخ وفات کے بارے میں ظ۔ انصاری، ورکالی داس گپتا رضاؔ صاحب متفق نظر آتے ہیں۔ ولادت کے بارے میں میرا شبہ باقی رہا۔

سراج الدین محمد بہادر شاہ ظفرؔ کے بارے میں تو آپ نے تاریخ ولادت اور وفات بلا تحقیق جوں کی توں بہ روایت اُردو انسائیکلوپیڈیا فیروز سنز، لاہور سے درج کرنا کافی سمجھا۔ اب نہ جانے یہ انسائیکلوپیڈیا کس درجہ قابلِ سند اور معتبر ہے؟

مرزا غالبؔ اپنے ایک خط بنام میر مہدی مجروحؔ میں لکھتے ہیں "۔۔۔ ۷، نومبر، ۱۴، جمادی الاول سال حال جمعہ کے دن ابو ظفر سراج الدین بہادر شاہ قیدِ فرنگ اور قیدِ جسم سے آزاد ہوا۔ انا للہ وانا الیہ راجعون! ۔۔۔" یہ خط منگل ۱۶، جمادی الثانی، ۹، دسمبر ۱۸۶۲ء کا ہے۔ چنانچہ بہادر شاہ ظفرؔ کی وفات ۱۸۶۲ء ہوئی نہ کہ ۱۸۶۹ء۔ اب بہادر شاہ ظفرؔ کی پیدائش کے بارے میں کیا کہا جائے۔ تاریخ کی کسی کتاب میں پڑھا ہے کہ ظفرؔ نے اسّی سال کی عمر پائی تھی۔ صحیح تاریخ، ماہ و سال معلوم کی جائے تو عنایت ہوگی! — عام طور پر ہجری سن یا عیسوی سن لکھ دیا جاتا ہے۔ اس روایت کو ترک کیا جائے۔ صحیح تاریخ، ماہ اور سال بہ حساب ہجری اور

عیسوی لکھے جائیں، اس دورِ ترقی میں یہ کام مشکل نہیں۔ ہاں کچھ زحمت اٹھانی ہوگی۔ یعنی تاریخ، ماہ اور سال مفصل لکھنا چاہیے۔

رائے دینا اور مشورہ دینا آسان ہے۔ عملی طور پر کافی دشواریاں ہیں یہ مجھے بھی تسلیم ہے لیکن جب عملی طور پر ہم کچھ کر رہے ہیں تو جو بھی کام کیا جائے وہ بہتر سے بہتر ہونا چاہیے۔ سرورق اور تزئین کا معاملہ لیجیے اس ورق کو زیادہ سے زیادہ دلکش اور خوبصورت بنانے کی سعی کی جاتی ہے۔ لیکن ساتھ ہی معلوم ہونا چاہیے کہ جو تصویریں پیش کی جارہی ہیں ان کی افادیت کیا ہے؟ ان کی مدد سے ہم کیا اظہار کرنا چاہتے ہیں؟ ان کی تاریخی اہمیت اور قدریں بھی ہیں یا نہیں؟ عمارتوں کی تصویریں ہیں تو یہ عمارتیں کہاں ہیں اور کیا اہمیت رکھتی ہیں۔ ملک میں سیر و تفریح کے مقامات کا کیا حال اور انتظام ہے۔ اگر ان سے تھوڑی بہت معلومات مل جائے تو کم از کم سیاح اور مسافروں کے حق میں مفید ثابت ہو ـــــ

ایک اہم گذارش اُردو اکادمی دہلی کے اغراض و مقاصد کے پیش نظر کرتا ہوں ـــ رسالے میں مندرجہ اغراض و مقاصد کی طرف آپ کی خاص توجہ چاہوں گا۔

۱۔ اُردو میں ادبی اور معیاری تصنیفات اور بچوں کی کتابوں کی اشاعت اور حوصلہ افزائی۔

۲۔ اُردو میں ادبی اور سائنسی اور دوسرے موضوعات سے متعلق اہم کتابوں کے تراجم کا اہتمام کرنا جن کا ابھی تک اُردو زبان میں ترجمہ نہ ہوا ہو۔

۳۔ اُردو میں حوالہ جاتی کتابوں کی تالیف و اشاعت۔

۴۔ قدیم اُردو ادب کی صحیح ترتیب و تدوین کے بعد اشاعت۔

۵۔ اُردو کے غیر مطبوعہ معیاری ادب پاروں کی اشاعت ـــ وغیرہ

حقیر کی نظر میں مندرجہ بالا اغراض و مقاصد ہی اصل اور خاص اہمیت کے حامل ہیں۔

حوالہ جاتی کتابوں کی تالیف و اشاعت اور قدیم اُردو ادب کی صحیح ترتیب و تدوین کے بعد اشاعت یہ دو کام آپ اپنے رسالے "ایوانِ اُردو" سے بخوبی کر سکتے ہیں۔

آخر میں قارئین "ایوانِ اُردو" اور خصوصاً اُردو کے مخلص ادیبوں اور فنکاروں سے مودبانہ التماس کرتا ہوں کہ وہ اس اہم کام میں آپ کی حتی الامکان مدد فرمائیں۔

اُمید کہ میری یہ حقیر تحریر صفحہ "آپ کی رائے" میں جگہ پائے گی۔!

ـــــ ایچ۔ اے۔ رسید، شولاپور

(۱) اس مہینے سے اس مشورے پر عمل شروع کیا جارہا ہے۔
(۲) ہماری کوشش ہوتی ہے کہ اس کالم میں شاعروں کی ولادت اور وفات کی تاریخیں مستند حوالوں سے لی جائیں۔ (ادارہ)

○ "ایوانِ اُردو دہلی" یہاں پابندیٔ وقت سے پڑھنے کو مل جاتا ہے۔ اتنے عرصے میں، میں نے اور کچھ دوستوں نے محسوس کیا کہ اوائل کے بارہ مہینوں میں آپ لوگوں نے بڑی قابل قدر اور حیرت انگیز تبدیلیاں لاکر پرچے کو رنگا رنگ، متنوع اور معیاری بنانے میں کوئی کسر نہیں اٹھا رکھی۔ اور "ایوانِ اُردو" نے اُردو رسالوں کی بھیڑ میں اپنا ایک الگ اور منفرد مزاج بنا لیا۔ حالاں کہ سرکاری اور نیم سرکاری رسالوں سے عام طور پر ایسی توقع نہیں کی جاتی لیکن ادھر کچھ شماروں سے یہ تاثر مل رہا ہے کہ پرچے کو جو کچھ بننا تھا بن گیا۔ بڑی حد تک "ایوانِ اُردو" ٹائپ رسالہ بن گیا ہے اور غالباً یہی وجہ ہے کہ یہاں اس رسالے کے قارئین کی تعداد آہستہ آہستہ سکڑ رہی ہے(۱)۔ اس پرچے میں ان کی دلچسپی اب پہلے جیسی نہیں رہ گئی ہے۔ اُردو کے اور حلقوں کے بارے میں، میں کچھ نہیں کہہ سکتا کہ وہاں کیا صورتِ حال ہے؟

ـــــ فاروق شفق، کلکتہ

(۱) پچھلے چند مہینوں میں، آپ کے شہر میں "ایوانِ اردو" کی مانگ بڑھی ہے، کم نہیں ہوتی ہے ـــ ادارہ

○ نومبر ۸۸ء کا "ایوانِ اُردو دہلی" باصرہ افروز ہوا۔ رسالہ رفتہ رفتہ معیاری اور مزید دلچسپ ہوتا جارہا ہے۔ افسانوی ادب جو "ایوانِ اُردو" میں پیش کیا جا رہا ہے اس کے معیار کی طرف ذرا اور دھیان دیں تو بہتر ہے۔ مضامین، نظمیں اور غزلیں بے حد متاثر کرتی ہیں۔ تازہ شمارے میں ارتضیٰ کریم کا مضمون "فیض کا تنقیدی رویہ" فکر انگیز اور معلوماتی ہے۔ موصوف نے فیض کی تنقید نگاری کا جائزہ تخلیقی انداز میں پیش کیا ہے۔ انور قمر کا افسانہ "گم شدہ باپ" بے حد علامتی ہے۔ افسانے کی تہہ میں اترنا عام قاری کے لیے ممکن نہیں۔ بہرحال افسانہ پسند آیا۔ بلراج کومل اور محمد علوی کی نظمیں دامنِ دل کھینچ لیتی ہیں۔ منشاء الرحمٰن خاں منشا، خلیل تنویر اور خسرو متین کی غزلیں نئی شاعری کا عمدہ نمونہ ہیں۔

ـــــ نجم عثمانی، دھنباد

فون نمبر:
۲۷۶۲۱۱ اور ۲۶۳۳۴۸

اُردو اکادمی دہلی کا ماہانہ رسالہ

ایوانِ اردو دہلی

ادارۂ تحریر
سیّد شریف الحسن نقوی، مخمور سعیدی

جلد: ۲ — شمارہ: ۱۰ | فی کاپی ۵۰ر۲ روپے، سالانہ قیمت ۲۵ روپے | فروری ۱۹۸۹ء

ماہنامہ "ایوانِ اُردو دہلی" میں شائع ہونے والے افسانوں میں نام، مقام اور واقعات سب فرضی ہیں، کسی اتفاقیہ مطابقت کے لیے ادارہ ذمّہ دار نہیں۔
مضمون نگاروں کی آرا سے ادارے کا متفق ہونا ضروری نہیں۔

خط و کتابت اور ترسیلِ زر کا پتہ:
ماہنامہ ایوانِ اُردو دہلی
اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج
نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲

تزئین: ارشد علی خاں
خوشنویس: تنویر احمد

سیّد شریف الحسن نقوی (ایڈیٹر، پرنٹر، پبلشر) نے [illegible] پریس دہلی [illegible] اُردو اکادمی نئی دہلی ۲ سے شائع کیا۔

عیسوی لکھے جائیں، اس دورِ ترقی میں یہ کام مشکل نہیں۔ ہاں کچھ زحمت اٹھانی ہوگی۔ یعنی تاریخ، ماہ اور سال مفصل لکھنا چاہیے۔

رائے دینا اور مشورہ دینا آسان ہے۔ عملی طور پر کافی دشواریاں ہیں یہ مجھے بھی تسلیم ہے لیکن جب عملی طور پر ہم کچھ کر رہے ہیں تو جو بھی کام کیا جائے وہ بہتر سے بہتر ہونا چاہیے۔ سرورق اور تزئین کا معاملہ لیجیے اس ورق کو زیادہ سے زیادہ دلکش اور خوبصورت بنانے کی سعی کی جاتی ہے۔ لیکن ساتھ ہی معلوم ہونا چاہیے کہ جو تصویریں پیش کی جا رہی ہیں ان کی افادیت کیا ہے؟ ان کی مدد سے ہم کیا اظہار کرنا چاہتے ہیں؟ ان کی تاریخی اہمیت اور قدریں بھی ہیں یا نہیں؟ عمارتوں کی تصویریں ہیں تو یہ عمارتیں کہاں ہیں اور کیا اہمیت رکھتی ہیں۔ ملک میں سیر و تفریح کے مقامات کا کیا حال اور انتظام ہے۔ اگر ان سے تھوڑی بہت معلومات مل جائے تو کم از کم سیاح اور مسافروں کے حق میں مفید ثابت ہو —

ایک اہم گزارش اردو اکادمی دہلی کے اغراض و مقاصد کے پیش نظر کرتا ہوں — رسالے میں مندرجہ اغراض و مقاصد کی طرف آپ کی خاص توجہ چاہوں گا۔

۱۔ اُردو میں ادبی اور معیاری تصنیفات اور بچوں کی کتابوں کی اشاعت اور حوصلہ افزائی۔

۲۔ اُردو میں ادبی اور سائنسی اور دوسرے موضوعات سے متعلق اہم کتابوں کے تراجم کا اہتمام کرنا جن کا ابھی تک اُردو زبان میں ترجمہ نہ ہوا ہو۔

۳۔ اُردو میں حوالہ جاتی کتابوں کی تالیف و اشاعت۔

۴۔ قدیم اُردو ادب کی صحیح ترتیب و تدوین کے بعد اشاعت۔

۵۔ اُردو کے غیر مطبوعہ معیاری ادب پاروں کی اشاعت — وغیرہ

حقیر کی نظر میں مندرجہ بالا اغراض و مقاصد ہی اصل اور خاص اہمیت کے حامل ہیں۔

حوالہ جاتی کتابوں کی تالیف و اشاعت اور قدیم اُردو ادب کی صحیح ترتیب و تدوین کے بعد اشاعت یہ دو کام آپ اپنے رسالے "ایوانِ اُردو" سے بخوبی کر سکتے ہیں۔

آخر میں قارئین "ایوانِ اُردو" اور خصوصاً اُردو کے مخلص ادیبوں اور فنکاروں سے مودبانہ التماس کرتا ہوں کہ وہ اس اہم کام میں آپ کی حتی الامکان مدد فرمائیں۔

اُمید کہ میری یہ حقیر تحریر "صفحہ" آپ کی رائے میں جگہ پائے گی۔!

— ایچ۔ اے۔ سید، شولاپور

(۱) اس مہینے سے اس مشورے پر عمل شروع کیا جا رہا ہے۔

(۲) ہماری کوشش ہوتی ہے کہ اس کالم میں شاعروں کی ولادت اور وفات کی تاریخیں مستند حوالوں سے لی جائیں۔ (ادارہ)

○ "ایوانِ اُردو دہلی" یہاں پابندیِ وقت سے پڑھنے کو مل جاتا ہے۔ اتنے عرصے میں، میں نے اور کچھ دوستوں نے محسوس کیا کہ اوائل کے بارہ مہینوں میں آپ لوگوں نے بڑی قابل قدر اور حیرت انگیز تبدیلیاں لاکر پرچے کو رنگا رنگ، متنوع اور معیاری بنانے میں کوئی کسر نہیں اٹھا رکھی۔ اور "ایوانِ اُردو" نے اُردو رسالوں کی بھیڑ میں اپنا ایک الگ اور منفرد مزاج بنا لیا۔ حالاں کہ سرکاری اور نیم سرکاری رسالوں سے عام طور پر ایسی توقع نہیں کی جاتی لیکن ادھر کچھ شماروں سے یہ تاثر مل رہا ہے کہ پرچے کو جو کچھ بننا تھا بن گیا۔ بڑی حد تک "ایوانِ اُردو" تاپ رسالہ بن گیا ہے اور غالباً یہی وجہ ہے کہ یہاں اس رسالے کے قارئین کی تعداد آہستہ آہستہ سکڑ رہی ہے۔[1] اس پرچے میں ان کی دلچسپی اب پہلے جیسی نہیں رہ گئی ہے۔ اُردو کے اور حلقوں کے بارے میں، میں کچھ نہیں کہہ سکتا کہ وہاں کیا صورتِ حال ہے

— فاروق شفق، کلکتہ

(۱) پچھلے چند مہینوں میں، آپ کے شہر میں "ایوانِ اُردو" کی مانگ بڑھی ہے، کم نہیں ہوئی ہے — ادارہ

○ نومبر ۸۸ء کا "ایوانِ اُردو دہلی" باصرہ افروز ہوا۔ رسالہ رفتہ رفتہ معیاری اور مزید دلچسپ ہوتا جا رہا ہے۔ افسانوی ادب جو "ایوانِ اُردو" میں پیش کیا جا رہا ہے اس کے معیار کی طرف ذرا اور دھیان دیں تو بہتر ہے۔ مضامین، نظمیں اور غزلیں بے حد متاثر کرتی ہیں۔ تازہ شمارے میں ارتضیٰ کریم کا مضمون "فیض کا تنقیدی رویّہ" فکر انگیز اور معلوماتی ہے۔ موصوف نے فیض کی تنقید نگاری کا جائزہ تخلیقی انداز میں پیش کیا ہے۔ انور قمر کا افسانہ "گم شدہ باپ" بے حد علامتی ہے۔ افسانے کی تہہ میں اترنا عام قاری کے لیے ممکن نہیں۔ بہرحال افسانہ پسند آیا۔ بلراج کومل اور محمد علوی کی نظمیں دامنِ دل کھینچ لیتی ہیں۔ منشاء الرحمٰن خاں منشار، خلیل تنویر اور خسرو متین کی غزلیں نئی شاعری کا عمدہ نمونہ ہیں۔

— نجم عثمانی، دھنباد

فون نمبر:
۲۶۴۲۱۱ اور ۲۶۳۴۴۸

اُردو اکادمی دہلی کا ماہانہ رسالہ

ایوانِ اُردو دہلی

ادارۂ تحریر
سیّد شریف الحسن نقوی، مخمور سعیدی

جلد: ۲ — شمارہ: ۱۰ | فی کاپی ۲ روپے ۵۰ پیسے، سالانہ قیمت ۲۵ روپے | فروری ۱۹۸۹ء

ماہنامہ "ایوانِ اُردو دہلی" میں شائع ہونے والے افسانوں میں نام، مقام اور واقعات سب فرضی ہیں، کسی اتفاقیہ مطابقت کے لیے ادارہ ذمّہ دار نہیں۔
مضمون نگاروں کی آرا سے ادارے کا متفق ہونا ضروری نہیں۔

خط و کتابت اور ترسیلِ زر کا پتہ:
ماہنامہ ایوانِ اُردو دہلی
اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج
نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲

تزئین: ارشد علی خاں
خوشنویس: تنویر احمد

سیّد شریف الحسن نقوی (ایڈیٹر، پرنٹر، پبلشر) نے [illegible] آرٹ پریس دہلی ۶ سے چھپوا کر دفتر اُردو اکادمی نئی دہلی ۲ سے شائع کیا۔

حرفِ آغاز

ہندوستان اور پاکستان دو ایسے پڑوسی ملک ہیں، جو جغرافیائی قرب کے علاوہ بہت سے تاریخی، تہذیبی اور لسانی رشتوں میں بھی ایک دوسرے کے ساتھ وابستہ ہیں۔ مگر اس قربت اور وابستگی کے باوجود عام طور پر دونوں کے مراسم خیر سگالی سے زیادہ بدگمانی اور بے اعتمادی پر مبنی رہے ہیں۔

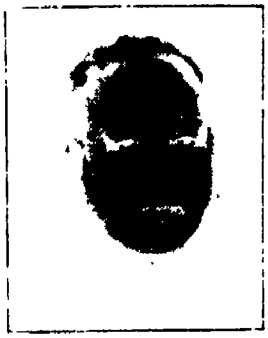
وزیر اعظم راجیو گاندھی نے حال ہی میں جہاں ایک اور پڑوسی ملک چین کے ساتھ باہمی تنازعات کو طے کرنے اور تعلقات کو خوشگوار بنانے کے لیے وہاں کا دورہ کیا اور باہمی افہام و تفہیم کا جو باب بالکل بند پڑا تھا اسے کھولنے کی مثبت کوشش کی، وہیں سارک کانفرنس میں، جو اسلام آباد میں منعقد ہوئی، شرکت کا فائدہ اٹھاتے ہوئے وہاں کی نومنتخب وزیر اعظم محترمہ بے نظیر بھٹو کے ساتھ بھی دونوں ملکوں کو در پیش معاملات و مسائل پر کھلے دل و دماغ کے ساتھ گفتگو کی۔ اس گفتگو کے نتیجے میں دونوں ملکوں کے درمیان تین معاہدے بھی عمل میں آئے جن کی تفصیلات اخباروں میں آچکی ہیں۔

یہ ایک خوش آئند صورت حال ہے جس کا ان تمام لوگوں کی طرف سے خیر مقدم ہوگا جو ان تینوں ملکوں کے خیر خواہ ہیں۔ چین ہو، ہندوستان ہو یا پاکستان، ان کے وسائل اگر باہمی صف آرائی کی بجائے اپنے اپنے عوام کی فلاح و بہبود کے لیے کام میں لائے جائیں تو اس کے بہت اچھے نتائج برآمد ہوں گے اور یہ تبھی ممکن ہے کہ باہمی تنازعات کو گفت و شنید کے ذریعے پُر امن طور پر طے کرنے کی کوشش کی جائے۔ ہمارے جواں سال وزیر اعظم نے اس سمت میں پہل کر کے ایک تاریخی قدم اٹھایا ہے۔ امید ہے کہ پڑوسی ملکوں کے ذمہ دار بھی دور اندیشی سے کام لیتے ہوئے برصغیر کی تاریخ کو ایک نیا موڑ دینے کے عمل میں معاون ہوں گے۔

مولانا آزاد نمبر کو ملک بھر میں ہماری توقعات سے کہیں زیادہ پسند کیا گیا اور ایک اطلاع کے مطابق اسے پاکستان میں بھی جوں کا توں آفسیٹ کے ذریعے شائع کر دیا گیا ہے۔ یہ نمبر ہم نے دس ہزار کی تعداد میں چھاپا تھا، یہ دس ہزار کاپیاں دو ہفتے میں ختم ہوگئیں اور مزید مانگ کے پیش نظر ہم نے اسے دوبارہ چھاپنے کا فیصلہ کیا۔ امید ہے کہ اس شمارے کے ساتھ ہی آزاد نمبر کا دوسرا ایڈیشن بھی منظر عام پر آجائے گا۔ جن ایجنٹوں کے آرڈر ہمیں مل چکے ہیں، ان کی فوری تعمیل کر دی جائے گی؛ جو دوسرے ایجنٹ حضرات مزید کاپیاں منگوانے کے خواہش مند ہوں وہ فوراً اپنے آرڈر ہمیں ارسال کریں اور اگر آرڈر دس کاپیوں سے زیادہ کا ہو تو اپنے قریب ترین ریلوے اسٹیشن کا نام بھی لکھیں۔ دس سے زیادہ کاپیاں ریلوے پارسل کے ذریعے ہی بھیجی جا سکیں گی۔

مولانا آزاد نمبر کی اس غیر مشروط پسندیدگی اور غیر معمولی پذیرائی کے ساتھ ہی ساتھ ہمارے ایک کرم فرما نے کچھ مقامی اخباروں میں نمبر کی مذمت میں خط اور کالم لکھے اور اپنے پڑھنے والوں سے سفارش کی کہ اسے نذرِ آتش کر دیا جائے۔ ان کا الزام ہے کہ ہم نے یہ نمبر نکال کر مولانا آزاد کو بدنام کرنے کی کوشش کی ہے۔ ہم اس کے جواب میں اتنا ہی عرض کر سکتے ہیں کہ جہاں تک مولانا کی ذات جامع الصفات سے عقیدت اور ان کے احترام کا تعلق ہے، ہم کسی سے پیچھے نہیں۔ اسی طرح ان کے مختلف النوع کارناموں کی جتنی قدر و منزلت کالم نگار موصوف کے دل میں ہوگی، شاید اس سے کچھ زیادہ ہی ہمارے دل میں ہو۔ ہم یقین رکھتے ہیں کہ دوسرے اوصاف کے علاوہ اخلاق و کردار کی پاکیزگی کے لحاظ سے بھی مولانا اپنے دور کے ایک بلند مرتبت انسان تھے۔ تاہم ایک خفیف سا شبہ اگر کالم نگار موصوف یا کسی اور شخص کو تکلیف پہنچی ہے تو ہم اس پر متاسف اور معذرت خواہ ہیں ——— جہاں تک "ایوانِ اُردو" کے مولانا آزاد نمبر کا سوال ہے جن ہزاروں باذوق حضرات نے یہ نمبر دیکھا اور پڑھا ہے وہ خود فیصلہ کر سکتے ہیں کہ یہ نمبر مولانا کی مہتم بالشان زندگی علم و ادب اور مذہب و سیاست کے میدان میں ان کے گراں قدر کارناموں کا ایماندارانہ اعتراف ہے یا بد دیانتی پر مبنی انحراف۔ ہم اپنی زبان سے کیا کہیں۔

——— سیّد شریف الحسن نقوی



حفیظ میرٹھی

عجیب لوگ ہیں کیا خوب منصفی کی ہے
ہمارے قتل کو کہتے ہیں خودکشی کی ہے

یہ بانکپن ہے ہمارا کہ ظلم پر ہم نے
بجائے نالہ و فریاد شاعری کی ہے

ذرا سے پاؤں بھگوئے تھے جاکے دریا پر
غرور یہ ہے کہ ہم نے شناوری کی ہے

کہیں چمن میں نئی پود کو جگہ نہ ملے
یہ سوچ اصل میں احساسِ کمتری کی ہے

ہماری قدر کرو چودھویں کا چاند ہیں ہم
خود اپنے داغ دکھانے کو روشنی کی ہے

اداسیوں کو حفیظ آپ اپنے گھر رکھیں
کہ انجمن کو ضرورت شگفتگی کی ہے

پورہ شیخ لال، میرٹھ (یو۔پی)

آئینہ ہے دل، اُس میں سنور کیوں نہیں جاتے
تم چاند ہو، پھر چاند نگر کیوں نہیں جاتے

کیا سوچتے ہو؟ خود سے گزر کیوں نہیں جاتے
اک "نور سمندر" میں اُتر کیوں نہیں جاتے

بچّوں سے محبت ہے، مگر جیب ہے خالی
کس سے کہیں پردیس سے گھر کیوں نہیں جاتے

اُس سمت کوئی کوہِ ندا تو نہیں یارو
جس سمت سے آئے ہو اُدھر کیوں نہیں جاتے

کیا ایک ثمر بھی مری قسمت میں نہیں ہے
پھر سنگ مرے سوئے شجر کیوں نہیں جاتے

تنہائی میں چھوتے ہوئے کیوں خود کو ڈرو ہو
گہرا نہیں دریا تو اُتر کیوں نہیں جاتے

خوشبو کا سفر چاہیئے جلووں کی زمیں پر
لمحوں کی سواری سے اُتر کیوں نہیں جاتے

عنوان! سوا نیزے پہ سورج تو ہے، لیکن
پھر دشت سے دربار کو سر کیوں نہیں جاتے

عنوان چشتی



۱۱۷۔ بی، جامعہ نگر، نئی دہلی ۱۱۰۰۲۵

کمال احمد صدیقی

عروض معروض

۸؍ جنوری ۱۹۸۸ء کے "ہماری زبان" میں ڈاکٹر گیان چند جین کا تحقیقی مقالہ "اقبال کے منسوخ اشعار کا وزن" دیکھا، جس میں موصوف نے تان یہاں توڑی ہے: "کیا فرماتے ہیں عروضی اور ان کے معروض حضرات: "چونکہ "عروض معروض" سے کے مضامین یہ حقیر کمال لکھتا ہے، اس لیے ڈاکٹر گیان چند نے، جو بہت باخبر مصنف ہیں، ایہام کے ڈانڈے ملاحی سے ملا دیے ہیں۔ ظاہر ہے موصوف کا اشارہ واضح ہے کہ انھوں نے کسے مخاطب کیا ہے۔ یہ مقالہ ایک کھلی چٹھی ہے، جس کی رسید نہ دینا بداخلاقی ہوگی۔

عروض پر ڈاکٹر صاحب موصوف بڑے پُرلطف مضامین لکھتے رہتے ہیں، جن سے اُس موضوع سے اُن کے شغف کا اندازہ ہوتا ہے۔ موصوف کی عروضی صدجہتوں کے بارے میں میں نے دو مضمون لکھے تھے، جو "ہماری زبان" کے پاس ایک برس سے زیادہ عرصے سے محفوظ ہیں۔ اس بات کا ذکر صرف اس وجہ سے کیا گیا ہے کہ جب بھی وہ شائع ہوں، اُنھیں موصوف کے زیرِغور تحقیقی مقالے کا ردِّعمل نہ سمجھا جائے۔ یہ بات بھی بڑی عاجزی کے ساتھ عرض کر دوں کہ مجھے عروضی ہونے کا دعویٰ نہیں۔ بس عروض کا طالبِ علم ہوں، آج سے نہیں، نصف صدی سے زیادہ سے۔ اس لیے پروفیسر موصوف نے عروضیوں سے جو استفسار کیا ہے، جواب اس کا وہ دیں گے جنھیں عروضی ہونے کا زعم ہے، معروضات البتہ میں پیش کروں گا۔

ڈاکٹر گیان چند لکھتے ہیں: "... عروضیوں نے اس کثرت سے اصطلاحات بنائے ہیں کہ ایک نئی زبان معلوم ہوتی ہے ... میں اسی نامطبوع زبان میں بات کروں گا۔ بحر رجز مثمن سالم میں مستفعلن بار بار آتا ہے ..."

کمال عرض کرتا ہے کہ جب مثمن کی تخصیص کر دی گئی ہے تو "بار بار" عروض کی نامطبوع زبان میں نادرست ہے۔ مثمن میں اس سالم رکن کی تکرار مصرعے میں چار بار یعنی شعر میں آٹھ بار ہوتی ہے۔ کلاسیکی عروض میں چونکہ بیت اکائی ہے، اس لیے تکرارِ رکن ۸ بار ہے۔

پروفیسر موصوف تحریر فرماتے ہیں:

"... ایک وزن رجز مثمن مطوی مخبون یہ ہے 'مفتعلن مفاعلن مفتعلن مفاعلن' کتبِ عروض کے لحاظ سے اس میں کسی بھی مقام پر مفتعلن کی جگہ مفعولن یا فاعلن بھی لا سکتے ہیں۔"

کمال عرض کرتا ہے کہ عروض کی نامطبوع زبان میں ارکان لکھنے کے بعد "۲ بار" لکھنا لازمی تھا۔ پروفیسر موصوف نے پھر وہ زبان استعمال کی ہے، جو شہرِ عروض میں ٹکسال باہر ہے۔ دوسری گذارش یہ ہے کہ مفتعلن میں تین متوالی حرکات ت، ع اور ل پر ہیں۔ محقق طوسی نے تسکینِ اوسط کے جس زحاف کو اپنے عہد کی لسانی روش کے پیشِ نظر ارکانِ بحر کے سلسلے میں وضع کیا، اس کے تحت ع پر سے حرکت اُڑ جاتی ہے، اس طرح رکن مفتعلن ہو جاتا ہے، جسے مفعولن سے بدل لیتے ہیں، کہ ہموزن مانوس رکن ہے۔ عروضیوں کی نامطبوع زبان میں اس تصریح کی ضرورت تھی۔

فاعلن مرفوع مزاحف ہے مستفعلن کا۔ مطوی مزاحف کی جگہ مخبون اور مخبون کی جگہ مطوی لانے کی اجازت تو ہے۔ یعنی مفتعلن (جو مستفعلن کے دوسرے سببِ خفیف تف کے ساکن ف کے ساقط ہونے سے وجود میں آتا ہے) اور مفاعلن (جو مستفعلن کے پہلے سببِ خفیف مس کے ساکن س کے ساقط ہونے سے وجود میں آتا ہے) بالترتیب مطوی اور مخبون ہیں۔ یہ مرفوع رکن فاعلن کو ڈاکٹر گیان چند نے کہاں سے لا دیا ہے؟ کتبِ عروض کا ذکر تو ڈاکٹر صاحب موصوف نے کیا ہے، لیکن حوالہ نہیں دیا۔ غضب یہ ہے کہ موصوف کتبِ عروض کے لحاظ سے عام معافی کا اعلان فرماتے ہیں کہ "کسی بھی مقام پر مفتعلن کی جگہ فاعلن بھی لا سکتے ہیں"۔ کسی بھی مقام کے سلسلے میں فاضل پروفیسر موصوف کا بیان افسوسناک بھی ہے اور عروض سے مس رکھنے والوں کے لیے عبرتناک بھی۔

جس سالم رکن میں، دو سببِ خفیف شروع میں ہوں، اس کے پہلے سببِ خفیف کو



بلاک ۱۰۶/۱، اولڈ کیمپس، جواہر لال نہرو یونیورسٹی، نئی دہلی ۱۱۰۰۶۷

گرانے سے مرفوع مزاحف وجود میں آتا ہے۔ یہ صرف صدر و ابتدا اور حشو میں آسکتا ہے۔ عروض و ضرب میں لانے کے لیے حکم امتناعی ہے۔ لیکن فاضل پروفیسر موصوف نے ہر مقام پر مفتعلن کی جگہ رجز کی مزاحف بحروں میں فاعلن لانے کو از روئے کتب عروض جائز قرار دیا ہے۔ حقیر کمال، جس کا نامۂ اعمال "عروض معروض" کی وجہ سے سیاہ ہوا ہے، ڈاکٹر گیان چند جین سے مطالبہ کرتا ہے کہ اپنے اس اہم بیان کی تصدیق اور تائید میں باقاعدہ "مستند کتب عروض" سے حوالے پیش کریں۔

(اسی تحقیقی مقالے میں موصوف نے اپنی غلطی کاتب کے سر منڈھنے پر اقبال کے بیان کو دُہرایا ہے۔ اُمید ہے موصوف خود کاتب کو ڈھال نہیں بنائیں گے۔)

فاضل پروفیسر نے اپنے تحقیقی مقالے کے پہلے کالم میں لکھا ہے: "فارسی کی دو غزلوں کے مطلعے یہ ہیں:

پیرہنِ وجود چوں آتشِ جنوں گرفت
سینہ بہ برق درکنم، دیدہ بہ نیشترِ زنم

اے گُل چو خار آرزو آزاد چوں رسیدہٗ
تو ہم زخاک ایں چمن مانندِ مارسیدہٗ"

فاضل پروفیسر موصوف نے "عروض کی نامطبوع زبان" میں بات کرنے کا وعدہ فرمایا تھا۔ مطلع اور شعر میں تمیز کرنے کے لیے تو عروضی ہونا بھی ضروری نہیں۔ پہلے "مطلع" کے مصرعِ اولیٰ کا آخری لفظ "گرفت" ہے، اور مصرعِ ثانی "زنم" پر ختم ہوتا ہے۔ اس پر بھی اگر فاضل پروفیسر موصوف کو اصرار ہے کہ یہ مطلع ہے تو واقعی انھوں نے اپنا وعدہ پورا کیا ہے، یعنی نامطبوع بات کی ہے۔

دوسرے "مطلع" میں، دونوں مصرعوں میں "رسیدہٗ" ردیف ہے، لیکن قافیے کیا ہیں؟ پہلے مصرع میں چوں اور دوسرے مصرع میں ما۔ یہ تو ہوئی "مطلعوں" کی بات۔

کالم دو میں اقبال کے دو شعر، مصرعوں کے نیچے ارکان کے ساتھ درج ہیں:

کیوں کر نہ وہ جہاں کو پیغامِ بزمِ راز دے
مستفعلن مفاعلن مستفعلن مفاعلن
غافل مجھے خبر نہیں لذتِ فراغ میں ہے کیا
مستفعلن مفاعلن مستفعلن مفاعلن

اوروں کا ہے پیام اور میرا پیام اور ہے
مستفعلن مفاعلن مستفعلن مفاعلن
غربت کے دردمند کا طرزِ کلام اور ہے
مستفعلن مفاعلن مستفعلن مفاعلن

کمال عرض کرتا ہے:

۱۔ اگر ہر مصرع کا وزن "مستفعلن مفاعلن مستفعلن مفاعلن" ہی تھا، تو ہر مصرع کے نیچے ارکان لکھنے کے تکلف کی وجہ؟ تیسرے مصرعے "اوروں کا ہے پیام اور، میرا پیام اور ہے" کے جو ارکان درج کیے گئے ہیں، وہ نادرست ہیں۔ دوسرا رکن مخبون مفاعلن نہیں، بلکہ مخبون مذال مفاعلان ہے۔ عروض کی یہی نزاکتیں ہیں، جو اس حقیر کمال جیسے عروض کے طالب علم کو شوقیہ "عروض بازوں" کے بلند مرتبے سے دُور رکھتی ہیں۔ تقطیع ملاحظہ فرمائیں:

اوروں کَ ہے = مستفعلن، پیام اور = مفاعلان، میرا پیا = مستفعلن، م اور ہے = مفاعلن۔

ملاحظہ فرمایا۔ جائے معروض خالیست، حکم تھا۔ اس لیے معروضات پیش کی گئیں۔

۲۔ پہلے مصرعے میں 'جہاں' نون کے اعلان کے ساتھ لکھنا چاہیے تھا۔

۳۔ دوسرے مصرعے میں "لذتِ فراغ" میں اضافت نادُرست ہے۔ اس سے مصرع ساقط الوزن ہو جاتا ہے۔

فاضل پروفیسر موصوف نے اقبال کو ٹھیک پکڑا ہے کہ انھوں نے کاتب کے سر غلط الزام دھرا تھا۔ کم از کم اس مضمون کے سلسلے میں تو وہ اپنے عروضی کارنامے میں کاتب کو شریک نہ فرمائیں، کیوں کہ یہ اُن کے منصب، مرتبے اور وقار کے منافی ہوگا۔ یہ بھی مودبانہ گذارش ہے کہ ہم جیسے کم سواد عروض کے طالب علموں پر آئندہ چھینٹے نہ پھینکیں گے، کیوں کہ نصف صدی سے زیادہ یہ پاپڑ بیلتے ہوگئے، اور ہم ہنوز خود کو طفلِ مکتب سمجھتے ہیں۔

ڈاکٹر گیان چند رجز کی مزاحف صورتوں کا ذکر کرتے ہوئے لکھتے ہیں: "معیار الاشعار میں محقق نے پہلے رجز مثمن مطوی، یعنی مفتعلن آٹھ بار کا ذکر کیا اور کہا کہ اس میں مفتعلن کی جگہ کہیں بھی مفعولن (مفتعلن کا مسکّن) لا سکتے ہیں۔" فاضل پروفیسر نے حوالہ دُرست دیا ہے، لیکن انھوں نے طوسی کے قول کو اس طرح پیش کیا ہے گویا یہ عام معافی ہے۔ ایک مصرعے میں چاروں مفتعلن مفعولن کر دیجیے، پھر کیا وہ مصرع رجز مطوی مسکّن میں رکھے جانے کے لائق رہے گا؟ رمل کا مخبون فعلاتن ہے۔ تسکین اوسط سے یہ بھی فعلاتن ہو کر مفعولن سے بدلا جاتا ہے۔ رمل مخبون مسکّن میں بھی چاروں ارکان مفعولن رکھ دیجیے۔ پھر دو مفعولن، تین فعلن (بہ سکونِ عین) کے برابر ہوتے ہیں۔ متقارب (فعولن) کا اثلم فعلن ہے، اور متدارک (فاعلن) کا مخبون مسکّن بھی فعلن ہے۔ یا تو فاضل پروفیسر

ڈکس دیکھ کر، صرف اپنے مطلب کی بات کی
حقق طوسی نے جو شرط تسکین اوسط کے
ائی ہے، اس پر اُن کی توجہ نہیں رہی،
ھوں نے اس سے صرفِ نظر کیا۔ واضح رہے
نِ اوسط فارسی الفاظ میں محقق کے زمانے
لے لسانی عمل کے طور پر تھا، محقق نے ارکان
ں کو زحاف کی حیثیت سے داخل کیا۔ محقق
کا یہ قول ہے :

" از جملہ تغیرات عام کہ بہ شعرِ فارسی خاص
یکے آن است کہ ہر کجا سہ حرف متحرک
فتد، تسکینِ اوسط روا دارند ۔ در یک وزن
ومسکن باہم بیامیزند، وایں عطر دانست،
جا کہ مانعے افتد، مثلاً باشد کہ بحر بر سببِ
در بدل افتد ۔"

محقق طوسی کی عاید کی ہوئی اس اہم شرط
منے رکھتے ہوئے، اب ہم فاضل پروفیسر کے
کا باقی حصّہ پیش کرتے ہیں۔ موصوف نے
ہے "(محقق نے) مزید کہا ہے کہ مفتعلن کی
فاعلن بھی لا سکتے ہیں اور اس میں زیادہ عیب
(عیب زیادت نہ باشد : حاشیہ ۲ : حوالہ:
ل عیار ترجمہ معیار الاشعار، مترجم اسیر
ی ... ص ۱۶۲)۔ پھر کہتے ہیں کہ مخبون اور
ں کا میل بھی کر سکتے ہیں۔ یعنی مفاعلن مفتعلن
ار، یا مفتعلن مفاعلن چار بار۔ اہم بات یہ
ہے کہ اگر اس ترتیب میں فرق آجائے تو
ر نا ہوتا ہے۔ مثلاً خاقانی نے مفتعلن
علن کے وزن کے قصیدے میں ایک
ے میں دوسرا رکن بھی مفتعلن استعمال کیا
نارت کی :

کیسہ ہنوز فربہ است با تو از ایں توی دہیم
مفتعلن مفاعلن مفتعلن مفاعلن

چارہ چہ خاقانی اگر کیسہ رسد بہ لاغری
مفتعلن مفتعلن مفتعلن فاعلن

گرچہ بہ موقعِ لقب، مفتعلن دوبارہ شد
بحر ز قاعدہ نہ شد، تا تو بہانہ آوری[۳۵]

(۳۵ : قداعد العروض ص ۹۶)۔ لقب سے مراد
تخلص خاقانی ہے، جہاں مفاعلن کی جگہ مفتعلن
آگیا ہے۔"

میرا تاثر تھا کہ ڈاکٹر گیان چند خاصے
محتاط قسم کے محقق / نقاد ہیں، لیکن انھوں نے
اپنے اس منصب کے ساتھ انصاف نہیں کیا
جس پر ایک پروفیسر فائز ہوتا ہے۔ قواعد العروض
کا حوالہ دفاع کے لیے آڑ ہو سکتا ہے، اسکول
اور کالج کے طالبِ علم کے لیے۔ پروفیسر گیان چند
کے لیے نہیں۔ اتنی سی عبارت میں اتنی غلطیاں یوں تو
سما نہیں سکتی تھیں، اگر کوٹ کوٹ کر نہ بھری
جاتیں۔

۱۔ یہ دو شعر خاقانی کے قصیدے میں نہیں
ہیں، حالانکہ اس زمین میں کئی مطلعوں کا ان
کا ایک قصیدہ ہے۔ فاضل پروفیسر موصوف
کو ایک بار خاقانی کا دیوان تو دیکھنا چاہیے تھا۔
اگر یہ کم سواد کمال جو ۵۸ برس سے پیشہ ور
طالبِ علم ہے، خاقانی کے ایک سو چھ بڑے
قصیدے، ایک سو دس چھوٹے قصیدے، تین سو
سے کچھ کم قطعے، سوا تین سو سے کچھ زاید غزلیں،
تین سو کے قریب رباعیاں سبقاً سبقاً پڑھ
سکتا ہے، تو خاقانی کا حوالہ دینے سے پہلے
پروفیسر موصوف کے مرتبے کے محقق کو کم از کم
خاقانی کے دیوان پر ایک نظر تو ڈالنا ہی چاہیے
تھی۔ وہ نہیں تو یہی دیکھ لیتے کہ یہ اشعار کسی
قصیدے میں ہیں بھی یا نہیں۔

۲۔ خاقانی کے کلام کا قدیم ترین نسخہ، آخر
نسخے میں دیے ہوئے سالِ ہجری کے مطابق ۶۶۴ھ
کا ہے، جو برٹش میوزیم کی لائبریری میں ہے۔ دو
نسخے مجلس شورائے ملی تہران کے کتب خانے میں
ہیں۔ ایک نسخہ آقائے صادق کے پاس ایران میں
ہے۔ ان سب سے مقابلہ کر کے تہران میں خاقانی
کا دیوان مرتب کیا گیا ہے۔ لکھنؤ میں ۱۸۷۸ء
میں، کلامِ خاقانی دو جلدوں میں چھپا تھا۔ اس
میں اغلاط کے علاوہ الحاقی کلام بھی تھا۔ ایک
بار بمبئی میں اور ایک بار شاید لکھنؤ میں اور
دیوان چھپا۔ نولکشور پریس لکھنؤ نے بھی تین
جلدوں میں یہ دیوان چھاپا تھا۔ سالِ طباعت
درج نہیں ہے، لیکن یہ میں نے پڑھا ہے۔ سب
سے زیادہ مستند نسخہ دکتر ضیاء الدین سجادی کا مرتب
کیا ہوا ہے، جس میں تعلیقات بھی ہیں، اور فٹ نوٹ
میں اختلافِ نسخ بھی۔ پروفیسر گیان چند نے
قواعد العروض کے حوالے سے جو دو شعر نقل کیے
ہیں، ان میں دوسرا شعر مجلسِ شورای ملی (تہران)
کے نسخے میں ہے ہی نہیں۔ اندراج یہ ہے :

"ایں بیت راجع در ہیچ یک از دو جاند ارد،
در معیار الاشعار خواجہ نصیر، چاپ تہران، ص ۱۰۸،
دو بیت مطابق متن۔"

تعلیقات میں وہی بات ہے، جو مزاحف
کے سلسلے میں قواعدِ عروض سے، معیار الاشعار کے
حوالے سے نقل کی گئی ہے۔

محقق طوسی بہت ثقہ شخصیت تھے۔ ہم
انھیں صرف عروضی کی حیثیت سے جانتے ہیں۔
لیکن وہ اپنے عہد کے سب سے اعلیٰ مرتبے کے
عالم تھے۔ فلسفہ، ہیئت، ریاضی اور دوسرے
علوم میں وہ یکتائے روزگار تھے۔ اس کے باوجود
صرف ان کی شہادت پر ہم ان دو شعروں کو خاقانی
کا کلام نہیں سمجھ سکتے۔ ایک بڑی وجہ تو یہی ہے کہ

انھوں نے ان دو شعروں کو قصیدے کے بتایا۔ غزل کے نہیں ستم ظریفی ملاحظہ فرمائیے کہ آج جب خاقانی کے کلام کے نسخے کم از کم یونیورسٹیوں میں فراہم ہیں، ایک پروفیسر، جو محقق بھی ہے ثانوی مآخذ کے حوالے سے غزل کے شعروں کو قصیدے کے شعر سمجھتا ہے، اور بڑے اعتماد سے بطرز استفہام صلائے عام دیتا ہے "کیا فرماتے ہیں اس باب میں عروضی اور اُن کے معروض حضرات؟"

۲۔ چار مصرعے، جو فاضل پروفیسر نے قواعد العروض سے نقل فرماتے ہیں، اُن میں سے تین کی قرأت نادرست ہے۔

(الف) پہلے مصرعے میں "قوی دلیم" نہیں "قوی دلم" ہے۔

(ب) دوسرے مصرعے، جس میں تخلص خاقانی دکھایا گیا ہے، اور جس کی وجہ سے تین مفتعلن متصل ہوگئے ہیں، اور یہ عروضی مسئلہ پیدا ہوا ہے، تہران کے مطبوعہ دیوان میں جسے نسخہ سجادی میں (ط) بتایا گیا ہے، تخلص خاقنی ہے۔

چارہ چہ خاقنی اگر کیسہ رسد بلاغری

اس مصرع کا وزن مفتعلن مفاعلن مفتعلن مفاعلن ہے۔

(ج) تیسرے مصرعے میں فاضل پروفیسر موصوف نے "گرچہ بہ موقع لقب" لکھا ہے۔ نسخہ سجادی میں تعلیقات کے تحت، اور ص ۴۸۸ پر غزل کے متن میں لفظ بموقع نہیں، بلکہ بموضع ہے۔

(د) موقع اور لقب کی جو تاویل پروفیسر موصوف نے کی ہے، وہ اس لیے قابل قبول نہیں کہ خاقانی تخلص تھا، لقب نہیں۔ خاقان اکبر منوچہر شروان شاہ کی نسبت سے خاقانی تخلص رکھا گیا، ورنہ پہلے تخلص حقایقی تھا۔ ڈاکٹر سجادی نے لقب کی ذیل شرحی کے تحت لکھا ہے:

"لقب: در زمان حیاتش بہ افضل الدین شہرت داشتہ و ہمیں لقب ہم در اشعارش درموارد زیاد آمدہ و معاصرینش نیز او را باہمیں لقب یاد کردہ اند۔"

یہ بہت جائز سوال ہوگا کہ اگر لقب نہیں، تو کیا لفظ ہے؟ تہران کے مطبوعہ (ط) دیوان میں "بموضع لبت" ہے۔

جن حضرات کو خاقانی کے دیوان کے مدوّن نسخے دیکھنے کی سعادت حاصل ہوئی ہے، وہ جانتے ہیں کہ خاقانیا اور خاقنی بہت سے مقطعوں میں تخلص نظم ہوا ہے۔ وہ یہ بھی جانتے ہیں کہ مقطعے شاذ ہی قصیدوں، غزلوں، رباعیوں اور قطعوں کے آخر میں ہیں۔

ڈاکٹر گیان چند تحریر فرماتے ہیں: "اقبال متعدد مقامات پر مفتعلن کی جگہ رکن سالم مستفعلن لائے ہیں۔ کیا اس کا جواز ہے؟ مجھے رجز مطوی مخبون کے سلسلے میں ایسی کوئی تائید نہ مل سکی۔"

ہوسکتا ہے عروض کے چھوٹے بڑے رسالوں میں اس کی مثال نہ ہو۔ فارسی شاعروں کے یہاں خاص طور سے خاقانی کے یہاں مثالوں کی کمی نہیں۔ تعمیل ارشاد میں ایک ایسا شعر خاقانی کا پیش ہے جس میں سالم، مخبون، مطوی اور مطوی مسکّن سب ارکان مل جائیں گے۔ شعر ہے:

از قطرات جرعہ با ژالہ زرد ریختہ
یافتہ چوں رُخ فلک، پشت زمیں مجدّری

از قطرا = مفعولن: تے جرعہ با = مستفعلن؛ ژالہ زرد = مستفعلن؛ ریختہ = مستفعلن

یافتہ چوں = مفتعلن؛ رُخ فلک = مفاعلن؛ پشت زمیں = مفتعلن؛ مجدّری = مفاعلن

ہماری کلاسیکی شاعری میں بھی مثالیں ہیں لیکن میں قصداً ان کی نشاندہی اس لیے نہیں کر رہا ہوں کہ جن حضرات کو عروضی ہونے کا دعویٰ ہے، وہ اُردو شاعری کے ذخیرے کا بھی مطالعہ کریں، صرف عروض کے رسالوں کے دائرے میں محدود نہ رہیں۔

معروضات پیش کی گئیں۔ فیصلہ خود ڈاکٹر گیان چند صادر فرمائیں۔

...ن سنگھ

شہرِ آرزو

شہرِ آرزو میں میرا کچھ ایسا استقبال ہوا مجھے وہ لوک کہانی یاد آ گئی جس میں شہر والے سب سے پہلے آنے والے مہمان کو شہر کا بادشاہ بنا دیتے ہیں اور پھر شاہانہ شان و شوکت کے ساتھ شہر کے اندر لے جاتے ہیں۔ میں اپنی عمر کی لمبی تھکا دینے والی مسافت طے کرکے جب شہرِ آرزو میں پہنچا تھا، تب تک راستے میں مجھ کو کہیں بھی کوئی ٹھور ٹھکانہ نہیں ملا تھا۔ اپنے جسم کا بوجھ اٹھائے اٹھائے جب میں بری طرح تھک گیا تو میں نے دل ہی دل میں سوچا کہ اب تو چلنے کی سکت نہیں رہی۔ اب اگلے پڑاؤ پر جو پہلا شہر پڑے، وہ میرا گھر ہونا چاہیے۔

بس یہ سوچنا تھا کہ شہرِ آرزو کی زمین میرے قدموں کے سامنے اس طرح آ گئی جیسے گھنے جنگل میں بھٹکتے ہوئے راہی کے سامنے اچانک کوئی جادوئی شہر رونما ہو جاتا ہے۔

اور یہ شہر، میرا شہرِ آرزو، کوئی جادوئی شہر نہیں تھا جس کی کوئی حقیقت نہ ہوتی بلکہ یہ تو میرے تصور کا بسایا ہوا ایک ایسا شہر ہے جسے میں اپنے ملک تو کیا دھرتی کے ہر کونے میں [illegible] رکھتا ہوں۔

ہاں! تو جب میں نے شہرِ آرزو کی سرزمین پر قدم رکھا تو یہی نہیں کہ میں چلتا، میرے قدموں کے نیچے کی پگڈنڈی نے مجھے اپنے دوش پر لیے ہوئے سرپٹ دوڑنا شروع کر دیا۔ پھر دیکھتے دیکھتے وہ پکی سڑک میں تبدیل ہو گئی جس کے دونوں طرف سایہ دار پیڑ لگے ہوئے تھے۔ اور ان کی اوپری شاخوں نے سڑک کو اس طرح ڈھک رکھا تھا کہ دھوپ نہ پڑنے کی وجہ سے ساری سڑک ٹھنڈی سڑک بن گئی تھی۔ ٹھنڈی سڑک جس پر چلتے ہوئے زندگی کا سفر پرسکون اور آرام دہ ہو جاتا ہے۔ یہ سڑک تھوڑا آگے بڑھی تو ایسے لگا جیسے ہوا خوشبوؤں سے لدی ہوئی ہے۔ میں نے ارد گرد نظر دوڑائی تو دیکھا کہ پھولوں سے لدی ہوئی بیلیں پیڑوں سے لپٹی ہوئی تھیں۔ تھوڑا اور آگے بڑھے تو سڑک کے دونوں طرف بڑی بڑی نہریں نمودار ہو گئیں، جن میں تھوڑے تھوڑے فاصلے پر پانی کے پھوارے اونچے اٹھ کر جب واپس نہر میں گرتے تو ایسا لگتا جیسے پانی موتیوں کی لڑیاں بن کر گر رہا ہو۔

جب میں شہر کی چمکتی ہوئی دیواروں کے پاس پہنچا تو کچھ لوگ جنھیں میں جانتا نہیں تھا، لیکن جو میرے اپنے اپنے سے لگتے تھے، وہ ہاتھوں میں ہار اور پھولوں کے گلدستے لے کر میرے استقبال کے لیے آگے بڑھے۔

"ہم شہرِ آرزو کے خالق کا استقبال کرتے ہیں۔"

"میں نے تو صرف اس شہر کی کلپنا کی ہے۔ اسے بنانے والے تو آپ لوگ ہیں۔" میں نے کہا۔

"تصور تخلیق کی بنیاد ہوتا ہے۔" کسی نے کہا اور وہ مجھے لے کر شہر کی مرکزی نہر کی طرف بڑھے، جہاں پھولوں سے سجی ڈھکی ایک بہت بڑی ناؤ ہمارا انتظار کر رہی تھی۔ اس وقت شام ہو رہی تھی اس لیے نہر کے دونوں طرف لگے کھمبوں پر رنگ برنگی بتیاں جل اٹھی تھیں، اور ان کا عکس نہر کے پانی میں جھلمل جھلمل کرتا تو ایسے لگتا جیسے کہکشاں زمین پر اتر آئی ہو۔

تھوڑی دیر بعد نہر کے دونوں طرف خوبصورت مکانوں کا سلسلہ شروع ہو گیا جس کا مطلب تھا کہ شہر کی آبادی والا علاقہ شروع ہو گیا ہے۔ وہاں سے نوکاؤں کی آمد و رفت کا سلسلہ بڑھ گیا۔ پھولوں سے سجی ایک سے ایک وضع کی خوبصورت نوکائیں تیزی سے آ جا رہی تھیں۔ ان میں بیٹھنے اترنے والے لوگ خوش لباس تھے، خوش مزاج تھے۔ جیسی رونق ان میں بیٹھنے والے مسافروں کے چہرے پر تھی، زندگی کی وہی چمک دمک ناؤ کھینے والے ملاح، ناؤ کو صاف رکھنے والے ملازم اور اس دوسرے ملازم کی بھی جو بڑے ادب سے آگے بڑھتا اور ٹکٹ دے کر پیسے وصول کرتا جاتا تھا۔

ایک جگہ مسافر اتارنے کے لیے ناؤ رکی تو ایک نہایت خوش لباس عورت ناؤ صاف رکھنے والے ملازم سے مخاطب ہوئی۔

"پال شام کو سات بجے تک گھر آ جانا۔ بچوں کو کلب لے کر جانا ہے۔"

اور پال اپنے فلیٹ کی بالکنی میں کھڑے ننھے ننھے بچوں کو ہاتھ ہلا کر یقین دلا رہا تھا کہ وہ وقت سے گھر پہنچ جائے گا۔

ناؤ تھوڑی آگے بڑھی تو شہر کے دوسرے علاقوں کی طرف جانے والی چھوٹی چھوٹی نہروں کا سلسلہ شروع ہو گیا۔ ان میں بھی نوکائیں شہر والوں

ایم۔۱۰، چوڑی پاتھر کالونی، گوری چوک، روڑکی جبل پور، یوپی

کو اِدھر اُدھر لے جانے میں مصروف تھیں۔

"ان نہروں کے لیے اتنا پانی کہاں سے ملتا ہے؟" میں نے اس آدمی سے پوچھا جو میرا استقبال کرنے والوں کا سربراہ معلوم ہوتا تھا۔

"جو دریا باڑھ میں بڑھ کر ہماری فصلوں کو تباہ کر دیتے تھے، گاؤں کے گاؤں اجاڑ دیتے تھے اب ہم نے ان کی ناک میں نکیل ڈال دی ہے۔ ان دریاؤں کے پانی کو جگہ جگہ اس طرح باندھ دیا گیا ہے کہ ایک طرف ان سے بجلی پیدا ہوتی ہے، تو دوسری طرف فالتو پانی کو ان نہروں میں ڈال دیا گیا ہے۔ پہلے یہ دریا آئے دن ہم پر سوار رہتے تھے، اب ہم ان پر سواری کر رہے ہیں۔"

"اور یہ پانی اسی شہر میں چکر کاٹتا رہتا ہے۔۔۔؟"

"اس وقت تو یہ نہریں، اس شہر کے ارد گرد کے دیہات اور چھوٹے چھوٹے قصبوں تک پہنچتی ہیں، جہاں یہ اسی طرح گلیوں، محلّوں سے گزرتی، کھیتوں کو سیراب کرنے کے لیے آگے بڑھ جاتی ہیں۔"

"اور اب یہ سلسلہ ملک گیر ہوتا جا رہا ہے۔" کسی دوسرے آدمی نے بڑے فخر سے کہا۔

اب تک ہم اس مکان تک پہنچ گئے تھے جہاں مجھے ٹھہرنا تھا۔ ناؤ رک گئی تھی۔ اور ہم ایک پلیٹ فارم سے ہوتے ہوئے گھر کی طرف بڑھ رہے تھے۔ گھروں کی طرف جانے والے راستے پر دونوں طرف چھوٹے چھوٹے سجاوٹی پودے لگے ہوئے تھے، جن کو مختلف شکلوں میں تراشا گیا تھا۔ جس پودے کو مور کی شکل دی گئی تھی، اس کے پنکھوں کو خوشنما بنانے کے لیے لال، پیلے ہرے، عنابی رنگوں کے بلبوں سے سجا کر روشن کر دیا گیا تھا۔ اسی طرح اور پودوں کے بھی کہیں نیچے، کہیں اوپر خوشنما روشنیاں جل رہی تھیں اور ان کی روشنی گھروں کی طرف جانے والے راستے پر اس طرح پڑتی تھی، جیسے کسی نے اُن پر رنگ برنگے غالیچے بچھا دیے ہوں۔

گھر بڑا ہی خوبصورت تھا، چھوٹا سا۔ ایک ڈرائنگ روم۔ اس کے ساتھ ہی چھوٹا سا کمرہ لائبریری کا تھا۔ جس کو سنگیت کے کمرے کے طور پر بھی استعمال کیا جا سکتا تھا۔ بیچ میں ایک کھلی گیلری تھی، پھر سونے کے لیے دو کمرے تھے۔ گیلری سے جڑا ہوا ایک اور کمرا تھا چھوٹا سا بچوں کے پڑھنے اور سونے کے لیے۔ گھر کے پچھواڑے ایک چھوٹا سا باغیچہ تھا، جس میں کنارے کی کیاریوں میں پھول اگائے گئے تھے۔ اور بیچ کی کیاریوں میں طرح طرح کی سبزیاں۔

میں نہا کر تازہ دم ہو چکا تو وہ لوگ اسی محلّے میں بنے ایک بڑے ہال کمرے میں مجھے کھانا کھانے کے لیے لے گئے۔ یہاں سنگیت کی دھنیں گونج رہی تھیں۔ عورتیں، مرد، بوڑھے، بچے، سب لوگ آپس میں ہنستے، باتیں کرتے ہوئے آہستہ آہستہ خالی میزوں کی طرف بڑھ رہے تھے۔

ہم لوگ ایک خالی میز کے گرد بیٹھ چکے تو انھوں نے بتایا کہ اب یہاں گھروں میں کھانا کوئی نہیں پکاتا۔ سب محلّوں میں اسی طرح کے ریسٹورنٹ کھول دیے گئے ہیں، جہاں بہت بڑھیا اور صاف ستھرا کھانا نہایت سستے داموں پر ملتا ہے۔

ایک عورت ہنستے ہوئے بتا رہی تھی کہ عورتوں کو اس سے بڑی راحت مل گئی ہے۔ ورنہ ہمارا تو سارا دن چوکے چولہے کے سامنے ہی گزر جاتا تھا۔

"اور اگر کوئی بیمار ہو تو۔۔۔۔؟"

"اگر کوئی بیمار ہے تو وہ علاج کے لیے فوراً ہسپتال پہنچا دیا جاتا ہے، اور وہیں اُسے اس کی ضرورت اور مزاج کے مطابق کھانا مل جاتا ہے۔ ویسے اگر کوئی کسی مجبوری کی وجہ سے یہاں نہ آسکے تو اُس کے گھر پر کھانا پہنچانے کا معقول انتظام ہے۔"

"اور اب عورتیں خالی وقت میں کیا کام کرتی ہیں؟"

"یہاں خالی وقت کسی کے پاس نہیں۔ سب کام پر جاتے ہیں۔ یہاں تک کہ چھوٹے چھوٹے بچے بھی خالی وقت میں دو ایک گھنٹے کام کر کے کچھ نہ کچھ کما لیتے ہیں۔"

تبھی چھوٹے چھوٹے بچوں نے میزوں پر پلیٹیں سجانی شروع کر دیں۔

ابھی ہم نے کھانے سے فرصت پائی ہی تھی کہ کوئی صاحب میرے پاس آئے۔ اور بولے۔

"آپ کا فون ہے۔"

"میرا فون، مجھے اس اجنبی شہر میں کون جانتا ہے۔"

"خود کو اجنبی نہ کہیے۔ سارا شہر آپ کی خدمت کے لیے حاضر ہے۔"

فون شہر کے مرکزی کلب کے سکریٹری کا تھا۔ اس کا اصرار تھا کہ شہر جانے سے پہلے میں تھوڑی دیر کے لیے ان کے کلب میں ضرور جاؤں۔ ان کا کوئی آدمی مجھے لینے کے لیے آ رہا تھا۔

جب ہم وہاں پہنچے تو ایسا لگتا تھا، جیسے سارا شہر اس کلب میں امڈ آیا تھا۔ اتنے میں مجھے ایک جگہ وہ ناؤ صاف رکھنے والا ملازم بھی دکھائی دیا، جو بیوی بچوں کے ساتھ کھڑا کسی سے باتیں کر رہا تھا۔

کلب کے مختلف حصّوں میں رنگا رنگ پروگرام ہو رہے تھے۔ کہیں کتھا کلی تو کہیں منی پوری ناچ ہے۔ کہیں آلہ اُودل گایا جا رہا ہے تو کہیں راجپوتی لباس پہنے تیز دھاروں والی تلواریں منہ میں دبائے، تھالیوں میں رکھے شیشوں کے گلاسوں پر کھڑی رقاصائیں، منجیرے بجاتی ہوئی ایسی تال دے رہی تھیں کہ دل عش عش کر اٹھتا تھا۔ ایک جگہ رابندر سنگیت کی میٹھی دھنیں اُٹھ رہی تھیں تو دوسری جگہ مہاراشٹر کی رائس لیلا رنگ جمائے تھی۔ ایک اور جگہ پنجاب کی البیلیاں گدّا ناچ رہی تھیں تو دوسری جگہ کشمیری عورتیں ہلکے ہلکے سُروں میں یوں گا رہی تھیں جیسے جھیل ڈل کی لہریں ہوا کے چلنے کی وجہ سے ہچکولے کھا رہی ہوں۔

آدھی رات کے وقت جب میں سونے کے لیے اپنے گھر پہنچا تو اسی وقت ٹیلیفون کی گھنٹی بجی۔

اب تک مجھے یہ بھی معلوم نہیں تھا کہ اس گھر میں ٹیلیفون بھی ہے۔

دوسری طرف سے میری بیوی مخاطب تھیں۔ وہ کہہ رہی تھیں کہ مالک مکان نے پندرہ دن کے اندر اندر مکان خالی کرنے کے لیے کہا ہے۔ بڑی فکر کی بات ہے آپ فوراً آجایئے۔

میں نے فون رکھا تو مکان بدلنے کی فکر ہی مجھے حقیقی دنیا میں لے آئی۔

وہ شہرِ آرزو کی کھلی کھلی سڑکیں، اور نہریں، ان کے کنارے بنے ہوئے ہر طرف خوبصورت مکانوں کا سلسلہ، ان مکانوں کی طرف جاتے ہوئے صاف ستھرے راستے، ان گھروں میں، میرا بھی ایک چھوٹا سا گھر، کھلے کھلے کمروں والا، جس کے پیچھے ایک چھوٹا سا باغیچہ بھی تھا، وہ سب آنکھوں سے اوجھل ہو گئے۔

اب میں پھر اپنے تھکے ہوئے جسم کے ساتھ ایک پُرخار پگڈنڈی پر کھڑا ہوں، آدھی رات ادھر، آدھی رات اُدھر، چاروں طرف گہرا اندھیرا، پاؤں بڑھاؤں بھی تو کس طرف۔ کوئی راستہ بھی دکھائی نہیں دے رہا۔

اب کیسے شہرِ آرزو کا تصوّر کروں، جہاں حقیقتاً میرا بھی ایک گھر ہو۔

O



حیات لکھنوی

جس اُجالے کی طرف دیکھا اندھیرا نکلا
کیا مرے خواب تھے اور کیسا نتیجہ نکلا

میں تو خوش ہوں کہ کسی سمت سے پتھر آئے
کوئی تو شہر میں پہچاننے والا نکلا

کوئی آواز اُبھر آئی سکوتِ شب میں
ایک سایہ در و دیوار سے تنہا نکلا

میں رہا اُس کے لیے وہم و گماں کی صورت
وہ بھی میرے لیے بے جان سا سایہ نکلا

ایسا محسوس ہوا اُجڑی فضا میں مجھ کو
جیسے اس دشت سے میرا کوئی رشتہ نکلا

کوئی ٹھہرا ہوا موسم ہو اثر کھوتا ہے
جب فضا بکھری تو منظر بھی سہانا نکلا

ایک وہ تھا جو بسا میری نگاہوں میں حیاتؔ
اور جو کچھ بھی یہاں دیکھا تماشا نکلا

۵۔ امامیہ ہال، پنچکوئیاں روڈ، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۱

روکنے کو روکتی ہے ایک دُنیا راستہ
اپنا رہبر ہوں بنا لیتا ہوں اپنا راستہ

بے ارادہ چل پڑے چلتے رہے سوچا نہیں
شہر کیسا، لوگ کیسے اور کیسا راستہ

جب اٹھاتے ہیں قدم محسوس ہوتا ہے ہمیں
جس قدر طے ہو چکا باقی ہے اتنا راستہ

جب وہ ملتا تھا اسی کے ساتھ ہو جاتے تھے ہم
دیکھ کر جس کو بدل دیتے ہیں اپنا راستہ

دیکھنا ہے کون، کب، کیسے، وہاں تک جائے گا
ایک اپنا راستہ ہے ایک ان کا راستہ

اس قدر بڑھ جائے گی منزل کو پانے کی للک
جس قدر دشوار و ناہموار ہوگا راستہ

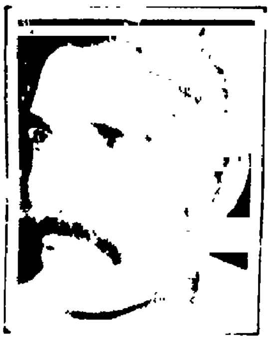
جب نظر آنے لگیں روشن ضمیروں کے گروہ
یہ سمجھنا مل گیا شہرِ سخن کا راستہ

دوستی کے واسطے اتنا ضروری بھی نہیں
ایک جیسی منزلیں ہوں ایک جیسا راستہ

راہ کے پتھر بنے اب ٹھوکریں کھاتے رہیں
آ گئے تھے روکنے اقبالؔ جی کا راستہ

اقبال عمر

۲۰ مری انسٹی ٹیوشنل ایریا، حوض خاص، نئی دہلی ۱۱۰۰۱۶



فصیح اکمل

کئی چاند تھے کبھی ہم نفس کئی پھول تھے کبھی ہم سبق
جو پڑھو تو کتنی حسین ہے یہ کتابِ عمر ورق ورق

کبھی تتلیوں کی تلاش میں کبھی جگنوؤں کے فراق میں
کبھی دھوپ میں کبھی چھاؤں میں کبھی قہقہے کبھی رنگ فق

وہی گرمیوں کی دوپہریاں وہی شاخ شاخ گلہریاں
وہ لہو میں کوندتی بجلیاں وہ بدن تمام عرق عرق

وہ رقابتوں کی جراحتیں وہ شرارتوں کی مسرتیں
کبھی سرد شام لہو لہو کبھی گرم رات شفق شفق

وہی اک خیال جو خواب سا وہی ایک نشہ شراب سا
وہی ایک نام نفس نفس وہی ایک چہرہ اُفق اُفق

۱۱۸، سلمہ منزل، کولیواڑہ، واسائی، تھانے (مہاراشٹر)

خوشحال زیدی

بچّوں کا عالمی ادب

صدیوں تک "بچہ" بڑوں ہی کا محتاج رہا ہے۔ اس کو سماج میں کوئی مقام حاصل نہیں تھا۔ انیسویں صدی عیسوی میں سائنس اور علم نفسیات نے تیزی سے ترقی کی۔ جدید سائنسی ایجادات اور انکشافات سامنے آئے۔ بچّے کے احساسات، جذبات، و نفسیاتی رجحانات کی طرف بھی توجہ دی جانے لگی۔ بچّے کو ایک اکائی تسلیم کیا گیا۔ بیسویں صدی میں سماج میں بچّے کی ایک حیثیت تسلیم کی گئی۔ اسی سبب بچّوں کے ادب کا تصور بیسویں صدی میں ہی ابھر کر سامنے آیا۔ ادب اطفال اس ادب کو قرار دیا گیا جو محض بچّوں کی درس و تدریس کے لیے نہیں بلکہ ان کی تفریح طبع، ان کی دلچسپیوں اور ان کے فطری رجحانات کی نشوونما کے لیے ہو۔ آج دنیا میں بچّوں کے ادب کو جو مقام حاصل ہے وہ صرف ادیبوں کی کاوشوں کا نتیجہ نہیں بلکہ اس میں بچّوں کی بڑھتی ہوئی مانگ اور دلچسپیوں کا بھی اہم حصّہ رہا ہے۔ بچّوں کے ادب کی اہمیت کے احساس کے ساتھ اس بات کو بھی محسوس کیا جانے لگا کہ ادب اطفال کا تخلیقی عمل اور مقصد بڑوں کے ادب کے مقصد سے جداگانہ ہو۔

بچّوں کے ادب میں ترقی کا سلسلہ انیسویں صدی سے شروع ہوا لیکن بیسویں صدی میں بچّوں کے ادب میں ایک زبردست انقلاب آیا۔ اس صدی میں بچّوں کا ادب امریکہ اور انگلینڈ میں عروج کو پہنچا۔ ان دونوں ملکوں میں ادب اطفال کو یکساں ترقی ملی۔ انگلینڈ اور امریکہ دونوں ممالک کے ادب میں نمایاں فرق بھی ہے۔ انگلینڈ میں ابتدا ہی سے بچّے کے مستقبل پر توجہ دی جاتی رہی ہے۔ یہاں بچّوں کا ادب ہمیشہ بامقصد رہا ہے، جو بچّوں میں عمل کا جذبہ بیدار کرتا ہے۔

امریکہ میں بچّوں کا ادب انگلینڈ کے ادب اطفال سے کئی اعتبار سے مختلف ہے۔ یہ بچّوں میں بطور خاص مساوات کی تعلیم عام کرتا ہے۔ انسانیت سے محبت کرنا سکھاتا ہے۔ امریکہ میں بچّے کو یہ بھی بتایا جاتا ہے کہ زندگی عیش کے ساتھ گذاری جاسکتی ہے۔ امریکہ میں انسان کی باطنی اور روحانی ترقی کی بہ نسبت مادی ترقی پر زیادہ توجہ دی جاتی ہے۔ تخیلاتی، طلسماتی اور جادو بھری کہانیوں کو وہاں کوئی اہمیت حاصل نہیں، بلکہ یہ تصور کیا جاتا ہے کہ ایسے موضوعات بچّوں کی شخصیت پر منفی اثر ڈالتے ہیں۔ اور ان سے بچّے زندگی کی حقیقتوں سے دور ہو جاتے ہیں۔ ایسی باتوں کے بجائے بچّے کے لیے مشینوں کی کارگزاری سمندر اور خلا میں سفر کے طریقے جیسی باتوں کا جاننا زیادہ مفید ہے۔

روس میں بچّوں کی نشوونما اور ان کے مستقبل پر خصوصی توجہ دی جاتی ہے۔ انقلاب روس کے بعد ابتدا میں بچّوں کے ادب کو حکومت نے کلیتاً اپنے ہاتھ میں لے رکھا تھا۔ روس میں حکومت بچّوں کو کمیونسٹ بنانے کی سعی ابتدا ہی سے کرتی ہے۔ بچّوں کو لینن اور مارکس کے نظریات ازبر کرائے جاتے ہیں۔ ایسے اصولوں کی تبلیغ کی جاتی ہے جو بچّوں میں تنظیم اور ریاست کی وفاداری کا جذبہ پیدا کریں۔ سرمایہ دارانہ نظام کی برائیاں ان کے ذہن نشین کرائی جاتی ہیں۔ روسی ادب اطفال میں بزرگوں کے کارناموں کا بیان برا سمجھا جاتا ہے اور ایسی کہانیوں کو بچّوں کے لیے افیون قرار دیا جاتا ہے جو انھیں کاہل، بےعمل اور لکیر کا فقیر بناتی ہیں۔

فرانس میں بچّوں کو ابتدا سے سن بلوغ کے لیے تیار کیا جاتا ہے۔ خوش حال زندگی کی خاطر مشکلات کا سامنا کرنے کی تعلیم دی جاتی ہے۔ تفریح کی وہاں چنداں اہمیت نہیں۔ جرمنی میں بھی ابتدا ہی سے بچّوں کو زندگی کے مسائل سے نبرد آزما ہونے کی تعلیم دی جاتی ہے تاکہ وہ کارگاہ زیست کی الجھنوں، مصیبتوں اور پریشانیوں کا سامنا کامیاب سپاہی کی طرح کرسکیں۔

مغربی ممالک کے ادب اطفال پر حکومت ہمیشہ اثر انداز رہی ہے۔ وہاں ہر دور میں سیاسی حالات نے بچّوں کے ادب کو متاثر کیا ہے اور اس میں زمانے کے ساتھ تبدیلیاں آتی رہی ہیں۔ مغربی ممالک کے برعکس مشرقی ممالک خصوصاً ایران اور ہندوستان وغیرہ کے



۸۰ - انتظار لاج، غفار منزل ایکسٹینشن، جامعہ نگر، نئی دہلی ۲۵

ادب اطفال میں زندگی کے مادی پہلوؤں اور سیاسی تقاضوں کو نظر انداز کر دینے کی روش اختیار کی گئی ہے۔ ان ممالک میں بچّے سے اعلیٰ کردار اور بلند اخلاق کی تعمیر پر زور دیا جاتا رہا ہے۔

حتمی طور پر اس بات کا تعین مشکل ہے کہ بچّوں کے ادب کا آغاز کس سن، کس صدی، یا کس ملک میں ہوا۔ اس ضمن میں زیادہ سے زیادہ یہ کہا جا سکتا ہے کہ بطور خاص بچّوں کے لیے لکھی گئی سب سے پہلی کتاب، جس کا تذکرہ برٹانیکا جونیر انسائیکلو پیڈیا میں ملتا ہے: بشپ ایلڈہیم 640-709 (Bishop Aldhelm) کی تصنیف ہے جو لاطینی زبان میں لکھی گئی تھی اس تصنیف کا نام نامعلوم ہے۔

بشپ ایلڈہیم کے بعد تقریباً ۱۵۰۰ منظوم کتابیں بچّوں کے لیے لکھی گئیں جو مکالموں اور سوال و جواب کی شکل میں تھیں سن ۱۰۷۳ء تا ۱۰۷۵ء کے دوران وینرایبل بیڈ نے لڑکوں کے لیے اوّلین درسی کتب قلمبند کیں۔ یہ کتابیں بھی لاطینی زبان میں تھیں۔ بعد ازاں کینٹربری (Centubuny) کے سینٹ اینسلم آرک بشپ (St. Anselm Anch. Bishop) کا نام آتا ہے جس نے بچّوں کے لیے دُنیا کا پہلا انسائیکلو پیڈیا تیار کیا جو عالمی ادب اطفال میں عام معلومات کی پہلی کتاب ہے۔

سن ۱۰۶۶ء میں نارمنس (Normans) نے انگلینڈ فتح کر لیا تو وہاں کی زبان فرانسیسی ہو گئی اور زیادہ تر کتابیں فرانسیسی زبان میں لکھی جانے لگیں۔ ۱۴۵۰ء کے آس پاس طباعت کا آغاز ہوا۔ ولیم کیکسٹن (William Caxton) پہلا شخص ہے جس نے ۱۴۲۲ء — ۱۴۹۱ء کے دوران کتابوں کی اشاعت کا سلسلہ شروع کیا۔ ۱۶۵۸ء میں پہلی باتصویر کتاب "آربیس پکچر" (Orbes Picture) شائع ہوئی۔ یہ جان اماس کومینیس (John Amos Comenius) کی تیار کردہ تھی اور بیک وقت لاطینی اور جرمنی زبان میں طبع کی گئی تھی۔ اس کتاب کا ترجمہ بعد میں انگریزی زبان میں کیا گیا۔

ادب اطفال میں سترھویں صدی عیسوی (۱۷۰۰ء) میں مذہبی عناصر کی شمولیت کا آغاز ہوا اور کتابوں کی مدد سے بچّوں میں تبلیغ کا سلسلہ شروع کیا گیا۔ ایسی کتابوں میں رائل پرائمر (Royal Pnimen) کا نام لیا جا سکتا ہے۔ ۱۶۷۱ء میں ایک عیسائی مُبلّغ جیمس جینوے (James Janway) نے ٹوکن فار چلڈرن (Token Fon Children) نام کی کتاب لکھی۔ ان کتابوں کے علاوہ جان بنیار (John Banyan, 1628-1688) کی کتاب پلگرم پروگریس (Pilignim Pno-gness) بھی بہت مشہور کتاب ہے۔ اس کتاب میں عیسائیت کی تبلیغ کی گئی ہے۔

جوناتھن سوئفٹ (Jonathon Swift, 1667-1765) کی گلیور ٹریولس (Gulliven's Travels) اور ڈینیل ڈیفو (Denial Defoe, 1660-1731) کی رابنسن کروسو (Robinson Cnuso) عالمی ادب اطفال میں ایسی دلچسپ کتابیں ہیں جو اصلاً بڑوں کے لیے لکھی گئی تھیں لیکن بچّوں نے انھیں اپنے ادب کا جزو تسلیم کیا۔ ان کتب کے ترجمے دنیا کی تقریباً تمام زبانوں میں ہوئے ہیں۔

۱۶۹۷ء میں فرانس کے مشہور دانشور چارلس پیرالٹ (Chanles Pannault) نے مدر گوز ٹیلس (Mothen Goose's Tales) تصنیف کی جو آٹھ کہانیوں پر مشتمل ہے۔ یہ پریوں کی دلچسپ کہانیاں ہیں۔

حقیقتاً "مدر گوز ٹیلس" عالمی ادب میں اپنی نوعیت کی اوّلین کتاب ہے جس کو بچّوں کے ادب کا سنگ میل مانا گیا ہے۔ یہ بچّوں کی پہلی کتاب اس لیے بھی ہے کہ صرف تفریح کے مقصد سے لکھی گئی ہے اور اس کے ذریعے بچّوں میں کسی قسم کی تبلیغ کرنا مقصود نہ تھا۔

مدر گوز ٹیلس کی بے پناہ مقبولیت کے زیر اثر عالمی ادب اطفال میں تفریحی کتب کا ایک لامتناہی سلسلہ شروع ہو گیا اور تبلیغی، درسی، سبق آموز کتابوں کی بہ نسبت تفریحی کتب کی مقبولیت بڑھتی گئی۔ مدر گوز ٹیلس کی مانند بچّوں کے عالمی ادب میں قدیم ہندوستانی کہانیوں نے بھی خاصی مقبولیت حاصل کی۔ سنسکرت کی لافانی تصنیف "پنچ تنتر" عالمی مقبولیت کی حامل رہی ہے۔ جو جانوروں کی کہانیوں پر مشتمل ہے۔

سنسکرت کی قدیم کتابوں میں تین قسم کی کہانیاں ملتی ہیں:

۱۔ پریوں کی کہانیاں
۲۔ نصیحت آموز کہانیاں
۳۔ جانوروں کی کہانیاں

ان کہانیوں میں جانوروں کی کہانیاں سب سے زیادہ مقبول ہوتی ہیں۔ یہ کہانیاں تمثیلی پیرائے میں بچّوں کی تفریح طبع کے ساتھ تدریسی اعتبار سے بھی بہت اہمیت رکھتی ہیں۔

جانوروں کی وساطت سے کہانیاں کہنے کا یہ پیرایہ بعد میں بچوں کی جین اور بودھ کہانیوں میں بھی ملتا ہے۔ 'پنچ تنتر' کی کہانیاں انسانی سماج اس کے مسائل اور عام انسانوں کے باہمی رشتوں سے وابستہ ہونے کے باعث بہت مقبول ہوئیں۔ صدیوں بعد بھی ان کی دلچسپی برقرار ہے۔ 'پنچ تنتر' کی اہمیت بچوں کے عالمی ادب میں مسلّم ہے۔ ہندوستان کے علاوہ ایران، چین اور روس وغیرہ ممالک کی مختلف زبانوں میں ان کہانیوں کے ترجمے ہو چکے ہیں۔ تسلیم کیا جا سکتا ہے کہ وشنو شرما کی 'پنچ تنتر' سے واقعتاً ہندوستان کی بیشتر زبانوں میں ادبِ اطفال کی بنیاد پڑی ہے۔

ایس. ایم. عباس

مسئلہ

شریف نے خالی بالٹی سامنے لاکر رکھ دی ہے اور وہ خوف اور سراسیمگی کے عالم میں میرے سامنے کھڑا ہو گیا ہے۔ میں عجیب بے چارگی سے اُسے دیکھ رہا ہوں، مجھے اپنی گردن، کسی مضبوط گرفت میں محسوس ہو رہی ہے اور یہ گرفت لمحہ بہ لمحہ اور بھی مضبوط ہوتی جا رہی ہے۔

ابھی ابھی بجلی آئی تو جیسے جان میں جان سی آگئی تھی میں نے جلدی جلدی تیاری مکمل کرلی اور انٹرویو میں جانے کے لیے ضروری سامان اکٹھا کرنے لگا تھا۔ تبھی میں نے شریف سے کہا تھا۔

"بھئی! ذرا جلدی سے دو بالٹی پانی لادو مہربانی ہوگی گرمی سے بُرا حال ہو گیا ہے میں ذرا نہالوں۔"

پچھلے قریب چوبیس گھنٹوں سے ان اطراف میں بجلی غائب رہی تھی۔ معلوم ہوا کہ دو ٹرانسفارمر ایک ساتھ ہی جل گئے تھے۔

شدید گرمی، تیز دھوپ، سڑکوں پر ٹریفک کا اژدہام، گرد و غبار اُڑاتی، چیختی چلاتی سواریاں اور ملٹی اسٹوری عمارتوں کا گھٹتا ہوا ماحول۔ آدمی جیسے جیتے جی مرا جا رہا ہو۔

حالانکہ پہلے یہاں کا ماحول بالکل پُرسکون تھا۔ دُور تک کھلا میدان، اس میں ہرے بھرے درخت، اونچی نیچی ڈھلوان زمین میں سے بل کھاتے ہوئے پہاڑی ندی نالے، ان کے بیچ کہیں کہیں آبادیاں اور [illegible] ہوئے خوبصورت نوجوان لڑکے لڑکیاں —— یہی سب تھا یہاں کا ماحول۔

میرے چچا فارسٹ میں رینجر تھے جب میں کبھی اُن کے ساتھ یہاں آتا تو یہاں کے فطری اور پُرسکون ماحول میں یہ سب کچھ دیکھ کر مجھے بہت بھلا لگتا تھا۔

دھیرے دھیرے ملک نے ترقی کی تو یہ خطہ بھی سرکار کی نگاہ سے اوجھل نہیں رہا۔ یہاں کے بسنے والوں کی حالت سدھارنے کے لیے سرکار نے اس علاقے میں بہت سی ملیں اور فیکٹریاں قائم کر دیں۔ پھر دیکھتے دیکھتے چند سال میں یہاں کی کایا پلٹ گئی۔ اسکول، کالج، اسپتال، بینک، سنیما گھر ریڈیو اسٹیشن، دُوردرشن اور بہت سے دوسرے کیندروں نے مل جُل کر مزدوروں کی اس بستی میں جنگل میں منگل کا سماں پیدا کر دیا ہے۔

لیکن اتنے کاموں کے باوجود بھی یہاں کی تعمیر و ترقی کے بارے میں، جیسے کچھ لوگوں کو شبہ ہو۔

ہوا یہ ہے کہ مزدوروں کی آسائش کے لیے سرکار نے بجلی، پانی، تعلیم، علاج، آمد و رفت کے وسائل پر جتنی توجہ دی، اسی قدر یہاں والوں کی زندگی میں کچھ اُلجھنیں اور زحمتیں بھی بڑھتی گئی ہیں۔ اب تو یہاں کی آبادی اتنی بڑھ گئی ہے کہ دودھ کی سپلائی تو دُور، چند گھنٹے بجلی نہ رہنے پر پانی مل جانا بھی ایک مسئلہ بن جاتا ہے۔

مجھے دیر ہو رہی ہے اور میں اُکتا رہا ہوں۔

جلدی جلدی ضروری کاغذات سمیٹ کر میں نے کھڑکی سے باہر جھانکا ہے —— نل پر ایک جم غفیر اُمنڈا پڑا ہے۔ مرد، عورت، بچے بوڑھے ایک دوسرے پر گرے پڑ رہے ہیں جیسے کہیں کوئی لُوٹ ہو، جدھر سے دیکھیے لوگ خالی برتن اُٹھائے دوڑے چلے آرہے ہیں۔

ڈھلوان کے نیچے، گلی کے موڑ پر نل میں پانی ذرا جلدی اور تیز آجاتا ہے۔ حالانکہ اب تو آدمی کی تیز رفتاری، پانی کی تیز رفتاری سے بھی آگے بڑھ گئی ہے کسی کو اتنی فرصت نہیں کہ کہیں ذرا دیر سکون سے دم لے سکے کسی سے منٹ بھر رُک کر خیریت دریافت کرلے۔ جیسے ہر جگہ "رُکیے نہیں —— جلدی بڑھیے"، کا بورڈ لگا ہو۔

صبح سے شام تک کی مسلسل بھاگ دوڑ میں کسی کے پاس اتنی فرصت نہیں کہ وہ اپنے دوست احباب عزیز اقارب کے پاس ذرا دیر کو ٹھہر جائے۔ اب شاید آدمی کو کسی کو اپنی خیریت بتا کر اس کا، اور اس کا دُکھ درد معلوم کرکے اپنا وقت برباد کرنے کی ضرورت بھی نہیں رہ گئی ہے۔ وہ اپنے مصروف اور قیمتی وقت کا مصرف —— سیر و تفریح یا ایسے ہی کسی دوسرے کام کے لیے کیوں نہ کرے۔ اب تو سلام و آداب ایسی وقت ضائع کرنے والی رسمیں بھی اُٹھ جانا مناسب ہیں۔

شریف پانی لے کر ابھی تک نہیں لوٹا ہے اور میں پریشان ہو رہا ہوں۔ میں نے ایک بار پھر کھڑکی سے جھانکا ہے اور میرے اندر کوئی چیز ٹوٹ کر رہ گئی ہے —— نل پر اب بھیڑ بہت بڑھ چکی ہے۔ ایک ہنگامہ برپا ہے اور لوگ

مقام وڈاکخانہ مانی کلاں، ضلع جونپور (یوپی)

ایک دوسرے پر گرے پڑ رہے ہیں مجھے دیر ہو رہی ہے اور میرے اندر بے چینی اور جھنجھلاہٹ بڑھ رہی ہے۔

اُف! اب تو جینا دُشوار ہو رہا ہے۔

آخر کیا ہونے والا ہے؟

جیسے میں بھی بھیڑ سے جھگڑ رہا ہوں۔

شہر کی آبادی میں روز افزوں ترقی کو دیکھ کر مکانات پر مکانات بنتے چلے گئے۔ جنگل کاٹ کر آبادیاں بسائی گئیں۔ میدان میں نکل کر آدمی نے بسیرا لے لیا۔ ایک اسٹوری کے بعد دوسری پھر تیسری بنی، پھر ملٹی اسٹوریز بنائی گئیں۔ ہرطرف بجلی، پانی فراہم کیا گیا، صحت و صفائی کا انتظام کیا گیا۔ سرکاری دُکان، اسپتال، نرسنگ ہوم، ٹیرینٹی سینٹر قائم کیے گئے لیکن آدمی کی سہولت و آسائش کے سوچنے کے باوجود بھی اس کی بے چینی میں کمی نہیں آئی۔ جیسے سکون و آرام کے یہ سارے سامان کسی زبردست سیلاب میں بہے جا رہے ہوں اور آدمی خاموش تماشائی بن کے کھڑا ہو!

بدھر دیکھیے ٹھاٹھیں مارتی ہوئی ایک بھیڑ ہے آدمی اس بھیڑ میں قطار در قطار کھڑا ہے اور قطار بڑھتی جارہی ہے۔ ایک طرف وقت کی کمی سے آدمی حیران و پریشان ہے، دوسری جانب ریلوے اسٹیشن، بس اسٹاپ، سینما گھر، اسپتال، امپلائمنٹ آفس سے لے کر راشن، مٹی کے تیل اور نل کے پانی تک کے لیے آدمی ہر وقت کیو (قطار) میں لگے رہنے کو مجبور ہے۔

دریا، گھاٹ، پارک، پُر فضا مقامات، کھلے میدان سبھی بھیڑ کی غلاظتوں اور کثافتوں سے مکدّر ہیں اور آدمی اسی غلاظت اور کثافت میں گھٹ گھٹ کر مرا جا رہا ہے۔

شاید اب آدمی کو دریاؤں اور جھرنوں کے حُسن، گھاٹوں اور پارکوں کی خوبصورتی سے لُطف اندوز ہونے کی ضرورت بھی نہیں رہ گئی ہے۔ اس لیے کہ اب آدمی، آدمی بھی کہاں رہ گیا ہے۔ وہ بیچارا تو مشین کا ایک پُرزہ ہے، بے جان، بے رُوح۔ اور اس کا مقدر بھاگتی، دوڑتی ہوئی بھیڑ کے ساتھ بھاگتے رہنا اور ہجوم میں گم ہو جانا ہے۔

'بچاؤ۔ بچاؤ'۔

باہر زبردست شور اُٹھا ہے اور میرے خیالات کے تانے بانے بکھر گئے ہیں۔ اتنے میں شریف نے گرتے پڑتے خالی بالٹی لاکر سامنے رکھ دی ہے۔

'صاحب! نل پر جھگڑے بازی ...'

بلوہ ...،' وہ ہکلا گیا ہے اور ہمارے چہروں پر ایک ساتھ خوف و ہراس کے سائے لہرا گئے ہیں۔ مَیں عجیب بے چارگی سے شریف کو دیکھ رہا ہوں اور مجھے محسوس ہو رہا ہے جیسے میری گردن کسی گرفت میں ہو اور گرفت مضبوط ہوتی جارہی ہو۔

باہر کرفیو ہے اور پی۔ اے۔ سی گشت لگا رہی ہے۔ ایک عجیب سی تلخی اور گھٹن میرے وجود میں اُتر آئی ہے اور مَیں سوچ رہا ہوں اس ہمہ وقت کے کرب و اضطراب سے ہم نے اپنی زندگی تو جہنم بنالی ہے لیکن آئندہ کی معصوم نسلیں!

بے قصور — بے گناہ!

آخر ان کا کیا ہوگا؟ کیا ہوگا؟؟

جیسے میرے وجود میں کسی نے بہت ساری سوئیاں چبھو دی ہیں اور مَیں مضطرب ہو گیا ہوں!



سلیمان خمار

کن خواہشوں کا زور تھکے بال و پر میں تھا
"دن ڈھل چکا تھا اور پرندہ سفر میں تھا"

اک چیخ سی اُبھرتی ہوئی ہر مکاں میں تھی
اک لفظ گونجتا ہوا دیوار و در میں تھا

اک شے سکون نام کی ملتی نہ تھی کہیں
اک انتشار پھیلا ہوا بحر و بر میں تھا

کس کس کو بانٹ سکتے بھلا شبنمی لباس
ہر شخص مسئلوں کے جھلستے بھنور میں تھا

کچھ خوف تیرگی کا نہیں تھا مجھے خمارؔ
اک شہر روشنی کا مری رہگذر میں تھا

دفتر ڈپٹی ڈی۔پی۔آئی۔ بیجاپور ۵۸۶۱۰۱ (کرناٹک)

حسیب سوز

جیتے جی ایک بھی چُھٹی نہیں ملنے والی
جب تلک سانس ہے مُکتی نہیں ملنے والی

ہم بھی اس شہر میں دفنا دیے جائیں گے کبھی
ہم کو بھی گاؤں کی مٹّی نہیں ملنے والی

یہ بھی اتوار مشینوں نے نگل رکھا ہے
آج بھی بچّوں کو ٹافی نہیں ملنے والی

زندہ رہنے کی تمنّا ہو کہ مرنے کی قسم
نوکری کوئی بھی جلدی نہیں ملنے والی

ایسا لگتا ہے کہ سب شہر نے ہجرت کی ہے
ہم سے کمزور کو گاڑی نہیں ملنے والی

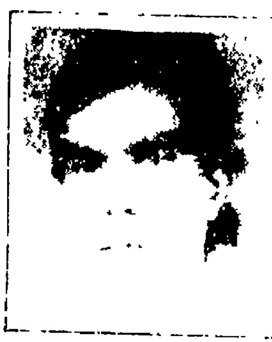
ڈائری میں کوئی تاریخ لکھا دیتا ہے
اور کچھ روز مری عمر بڑھا دیتا ہے

اِک محل دن میں بناتا ہوں میں جیسے تیسے
ایک اِک اینٹ کوئی شب کو گرا دیتا ہے

میں نے یہ سوچ کے ٹھکرادی نوازش اُس کی
رزق پتّھر میں بھی کیڑوں کو خدا دیتا ہے

ایک چنگاری کبھی شہر جلا دیتی ہے
کیوں غلط بول کے شعلوں کو ہوا دیتا ہے

فرحتِ جاں ہے یہی تیز ہوا کا جھونکا
اور یہی جلتے چراغوں کو بُجھا دیتا ہے



ایڈیٹر "مجھے مجھے" بدایوں (یو۔پی)

سید محمد کمال الدین حسین ہمدانی

جلالی کے مرثیہ گو

جلالی ضلع علی گڑھ میں ایک قدیم تاریخی بستی ہے جس کی قدامت سلطان غیاث الدین بلبن کے عہد کی مسجد جامع سے واضح ہے کہ جس پر ۶۶۵ھ کا کتبہ نصب ہے۔ ہندوستان کی قدیم تاریخوں میں جلالی کا ذکر واضح اور روشن الفاظ میں موجود ہے۔ ابنِ بطوطہ نے اپنے سفرنامہ میں غزوۂ کول کے ضمن میں جلالی کا تذکرہ کیا ہے۔ نیز واقعات مشتاقی میں شیخ رزق اللہ مشتاقی نے لکھا ہے کہ سلطان سکندر لودھی کی تاج پوشی جلالی کے نزدیک کالی ندی کے کنارے کوشک فیروز نامی محل شاہی میں ہوئی۔

جلالی میں سادات عابدی ہمدانی (از نسل حضرت میر سید علی ہمدانی علیہ الرحمہ متوفی ۷۸۶ھ) عہدِ ہمایوں بادشاہ سے آباد ہیں۔ سادات ہمدانی مسکونۂ جلالی کے جدِ اعلیٰ سید کمال الدین حسین ہمدانی عہدِ ہمایونی میں واردِ جلالی ہوئے اور آپ کے فرزندان نے جلالی کو ازسرِنو آباد کیا اور جلالی میں عزاداری کی بنا کی اور رفتہ رفتہ عالیشان امام باڑے تعمیر کرائے اور اعلیٰ پیمانہ پر جلوس عزا نکالے حتیٰ کہ یہ بستی عزاداری کے لیے دُور دُور مشہور ہوگئی۔

جلالی کی عزاداری سے متعلق ایک اہم تاریخی واقعہ یہ ہے کہ نوابِ اودھ، نواب شجاع الدولہ بہادر اور نوابِ فرخ آباد، نواب مظفر جنگ بنگش نے معہ لشکر عشرۂ محرم ۱۱۸۸ھ/۱۷۷۴ء کی عزاداری جلالی میں کی جس کا ذکر منور علی خاں نے تاریخ فرخ آباد موسومہ "لوح تاریخ" میں اور ولیم ارون نے "تاریخ فرخ آباد" میں کیا ہے۔ نیز نواب آصف الدولہ بہادر نے پانچ گاؤں (مال پور، کمال پور، نورنگر، نرولی اور مبارک پور) مفتوحہ روہیلکھنڈ سے باسم سید خیرات علیؓ معہ فرزندان برائے مصارف امام باڑہ سید خیرات علیؓ بطور نذر و نیاز ائمہ معصومین علیہم الصلوٰۃ والسلام وقف و معاف علی الدوام فرمائے۔ روہیلکھنڈ پر جب انگریزوں کا قبضہ ہوا تو اوّل الذکر چار مواضعات بوجہ گمشدگی اسناد ضبط ہوئے لیکن موضع مبارکپور معافی، پرگنہ بلرام تحصیل کاسگنج ضلع بدایوں (حال ضلع ایٹہ) حسبِ قدیم وقف و معاف رہا اور بعد ضبطیِ زمینداری (۱۹۵۰ء) اس کا انیوٹی مقرر ہوا۔

مرثیہ کی ابتدا ہندوستان میں دکن سے شروع ہوتی ہے اور اس کا فروغ شمالی ہند میں لکھنؤ میں انیس و دبیر کے عہد میں ہوا۔ مرثیہ کا تعلق نظم کی ہر قسم مثلاً رُباعی، نوحہ، مثنوی، مربع، مخمس، مسدس اور ترکیب بند وغیرہ سے رہا۔

مرثیہ کا ماخذ ابتداءً کتاب "روضۃ الشہداء" رہی جسے مولانا حسین واعظ الکاشفی نے دورِ تیموری ۹۰۸ھ/۱۵۰۲ء میں ہرات کے ایک شہزادہ مرشد الدولۃ والملۃ والدین عبداللہ المشتہر بسید مرزا کی فرمائش پر تالیف کیا تھا۔ یہ اس قدر کامیاب تصنیف تھی کہ ایران اور پھر ہندوستان میں بھی مقبول ہوئی اور مجالس عشرۂ محرم میں اس کثرت سے پڑھی گئی کہ یہ رسمِ روضہ خوانی اور اس کتاب کے پڑھنے والے روضہ خوان مشہور ہوئے۔ جیسا کہ ڈاکٹر رضا زادہ شفق نے ادبیاتِ ایران مطبوعہ ۱۳۲۱ھ/۱۹۰۴ء کے صفحہ ۳۲۲ پر لکھا ہے:

"روضۃ الشہداء کہ در مصائب حضرت امام حسین و یارانِ اوست وی توان گفت قدیم ترین کتاب است کہ بدین تفصیل مصیبت آئمہ را ذکر کردہ مدت ہا در ذکر مجالس عشرا از ان کتاب نقل گردید و گویا اصطلاح روضہ خوانی از نام ہمی کتاب آمدہ باشد۔"

اُردو مرثیے کی تاریخ کے مطالعے سے واضح ہوتا ہے کہ اولاً روشن علی نے ۱۱۰۰ھ ۱۶۸۸ء روضۃ الشہداء کا ایک منظوم خلاصہ بطرزِ شہادت نامہ لکھا اور اس کو بنام عاشور نامہ موسوم کیا جیسا کہ اُن کے حسبِ ذیل شعر سے واضح ہے:

کیا روضہ شہیداں سے بہتر ذکر
یہ ظاہر کیا ہے ولے مختصر

عاشور نامہ کا مخطوطہ رضا لائبریری رام پور۔



اجمل خاں طبیہ کالج مسلم یونیورسٹی علی گڑھ

میں موجود ہے۔ سید سفارش حسین رضوی مؤلف تاریخ اُردو مرثیہ اور پروفیسر مسعود حسین خاں کی مشترکہ کوشش سے ۱۹۷۳ء میں شائع ہوچکا ہے۔

سید محمد فیاض ولی ویلوری نے ۱۱۴۱ھ/۱۷۲۸ء میں روضۃ الشہدا کو دکنی اُردو میں نظم کیا۔ اس کا ایک مخطوطہ انڈیا آفس لائبریری میں نمبر ۱۱۲ پر ہے اس کے آخری دو شعر یہ ہیں:

ہوا ہے ختم جب یو درد کا حال
تھا گیارہ سو پہ اکتالیسواں سال
کہا ہاتف نے یو تاریخ معقول
ولی کا ہے سخن حق پاس مقبول

میر نوازش علی شیدا ہمعصر ولی ویلوری نے بھی ۱۱۷۳ھ/۱۷۵۹ء میں روضۃ الشہدا کا منظوم ترجمہ بزبان دکنی اُردو بنام روضۃ الاطہار مکمل کیا۔ اس کا مخطوطہ ادارۂ ادبیاتِ اُردو، حیدرآباد دکن کے کتب خانے میں موجود ہے۔ تین سو بائیس اشعار پر مشتمل ہے آخری اشعار کہ جن سے اس کا سال تصنیف واضح ہے یہ ہیں:

ہُوا جب ختم یو مضمونِ ماتم
کہا تاریخ ہاتف مجلسِ غم
(۱۱۷۳ھ)
کیا چاہو تم آسانی سے از بر
گیارہ سو برس تھا اور بہتّر

بیدر کے سید میر ولی خاں مونس نے روضۃ الشہدا کا ترجمہ اُردو نثر میں بنام ریاض الطاہرین یا حادثاتِ کربلا ۱۱۹۰ھ/۱۷۷۶ء میں مکمل کیا۔

مولانا سید محمد حیدر بخش حیدری استاد فورٹ ولیم کالج کلکتہ نے ۱۲۳۰ھ/۱۸۱۵ء کے مفصل روضۃ الشہدا کا ترجمہ اُردو زبان میں کیا۔

روضۃ الشہدا کے خلاصے دہ مجلس کے نام سے موسوم ہوئے اور یہ خلاصے بھی مجالس عشرہ محرم میں مقبول ہوئے اور مقبولیت کے لحاظ سے بعض فارسی دہ مجلس کے نسخوں کے اُردو تراجم بھی ہوئے۔

دہ مجلس فارسی کا اولین اُردو ترجمہ فضل علی فضلی نے ۱۱۴۵ھ/۱۷۳۲ء میں کیا جسے پروفیسر مختار الدین احمد و مالک رام صاحب نے اکتوبر ۱۹۶۵ء میں اور خواجہ احمد فاروقی صاحب نے مبسوط و جامع مقدمات کے ساتھ ۱۹۶۱ء میں شائع کیا۔

دہ مجلس کا دوسرا اُردو ترجمہ میر غلام حسن حسن دہلوی (متوفّی یکم محرم ۱۲۰۱ھ مطابق ۱۷۸۶ء) نے کیا اور اسی دہ مجلس کو اُردو مسدّس مرثیہ کی صورت میں میر حسن کے فرزند اکبر میر احسن خلق نے شاہی خاندان کی ایک بیگم مرشد زادی امتیاز بہو صاحبہ کی فرمائش پر نواب امجد علی شاہ بادشاہ اودھ کے عہد میں تالیف کیا جو ۱۲۶۲ھ میں تمام ہوا جیسا کہ پروفیسر سید مسعود حسن رضوی ادیب نے کتاب اسلاف میر انیس میں واضح فرمایا ہے۔

دہ مجلس کا تیسرا ترجمہ بزبان اُردو مولانا سید محمد حیدر بخش حیدری نے بزبان اُردو فرمایا اور اس کو گلِ مغفرت کے نام سے موسوم فرمایا۔ یہ ترجمہ آپ نے ۱۸۱۲ء میں کیا۔ ڈاکٹر ناظر حسن زیدی کے مبسوط مقدمہ کے ساتھ سید امتیاز علی تاج، ناظم مجلس ترقی ادب لاہور نے شائع کیا ہے۔

دہ مجلس اُردو کا ایک منظوم ترجمہ بطرز مثنوی مطبع جانِ جہان دہلی اور مطبع منشی نول کشور لکھنؤ سے شائع ہو چکا ہے۔ اس کے ابتدائی اشعار یہ ہیں:

سنو مومنو اب کہوں ماجرا
کتابوں میں دیکھا جو کچھ ہے لکھا

کہانی ہے غم کی سنو کان رکھ
توجہ سے دل کی ذرا دھیان رکھ

یہ ہے وہ کہانی نہایت سوز ناک
کہ جس سے جگر جل کے ہوتا ہے خاک

مرثیہ گویانِ دہلی و اودھ نے بھی روضۃ الشہدا سے خاطر خواہ استفادہ فرمایا۔ مرثیہ گو اساتذہ ضمیر، خلیق، فصیح، دلگیر وغیرہ نے اپنے مراثی میں روضۃ الشہدا یا دہ مجلس سے کافی استفادہ کیا ہے اور روضۃ الشہدا کی ہر روایت کو اپنے مراثی میں نظم کیا ہے۔ میر مظفر حسین ضمیر نے تو دہ مجلس کی روایات کو من و عن متعدد مراثی میں نظم فرمایا ہے بلکہ دہ مجلس کے ساتھ جو مرثیہ محتشم کاشی شامل تھا اس کے ابیات کو بھی مراثی میں شامل کیا ہے۔

سادات جلالی کے اسلاف کا سلسلہ چونکہ ہمدان (ایران) سے تھا لہٰذا ان کے جدِّ اعلیٰ جب وارد جلالی ہوئے تو انھوں نے مجالس میں ایرانی رسمِ روضہ خوانی کو بزبان فارسی بصورت روضۃ الشہدا یا بشکل دہ مجلس رواج دیا اور پھر جب زبان اُردو کو شمالی ہند میں فروغ حاصل ہوا تو سادات جلالی کے ایک بزرگ مولانا سید محسن علی اسیر نے فارسی دہ مجلس کا ترجمہ بزبان اُردو فرمایا جو جلالی میں رائج و مقبول ہوا۔ اور جب مرثیہ گوئی کو فروغ حاصل ہوا اور مرثیہ گویان دہلی و اودھ نے

فصیح و بلیغ مراثی تصنیف کیے تو ساداتِ جلالی نے منتخب مراثی بھی حاصل کیے اور ان کو بھی بطرز سوز خوانی یا تحت اللفظ مرثیہ خوانی رائج کیا لیکن قدیم ایرانی رسم روضہ خوانی کو دہ مجلس کی صورت میں قائم و برقرار رکھا اور آج بھی جلالی میں ساداتِ ہمدانی کے امام باڑوں میں عشرۂ محرم کی مجالس کی ابتدا دہ مجلس ہی سے کی جاتی ہے۔

سادات جلالی نے ترتیب دہ مجلس کے مطابق حضرتِ رسولِ خدا محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم، حضرت فاطمۃ الزہراؑ، امیر المومنین حضرت علی ابن ابیطالب، حضرت امام حسنؑ، شہید الشہدا، حضرت امام حسین اور روز عاشورہ محرم الحرام ۶۰ھ مطابق ۶۷۹ء آپ کے ساتھ شہید ہونے والے جملہ شہدائے کرام کے واقعات شہادت سے متعلق جملہ منتخب مراثی کا بےنظیر انتخاب کیا۔ اور ان مراثی کو مجالس و جلوس عزا میں رواج دیا۔

جلالی میں جب ایامِ عزا میں شبانہ یوم مجالس و جلوسِ عزا کا سلسلہ بڑھا تو مرثیت ہر فرد بشر کے رگ و پے میں سماگئی اور جو حضرات شاعری کی فطری صلاحیت رکھتے تھے انھوں نے عقیدت کے ساتھ طبع آزمائی کی۔ رباعی، سلام، قصائد، نوحے اور بالآخر مرثیے جو کچھ کہہ سکتے تھے کہا۔ بعض سادات نے مسدس مراثی بھی انیس و دبیر کے رنگ میں کہے جو مقبول ہوئے۔ پیش نظر مقالہ میں سادات جلالی سے انھی حضرات کا تعارف مقصود ہے کہ جنھوں نے مسدس مرثیے کہے ہیں۔

۱۔ سید ظلِ حسین فضا

آپ سید افسر علی رئیس محلہ امیر جلالی کے فرزند اور ایک ماہر مرثیہ گو تھے۔ آپ کے سلاموں کا مجموعہ "گلدستۂ فضا" کے عنوان سے مطبع یوسفی دہلی سے ۱۳۲۲ھ مطابق ۱۹۰۴ء میں شائع ہوا۔ لیکن رباعیات و مراثی غیر مطبوعہ آپ کے فرزند اصغر سید افسر علی بقا کے پاس محفوظ تھے۔ آپ نے میر انیس کے رنگ میں نہایت فصیح و بلیغ مراثی تصنیف کیے ہیں۔ نمونتاً آپ کے ایک مرثیے کے دو بند پیش کرتا ہوں:

عندلیب گل گلزار رسالت ہوں میں
خاص برگ شجر شاخ ولایت ہوں میں
نخلبند چمن نطق و فصاحت ہوں میں
گلشن نظم میں مصروف ریاضت ہوں میں
کیوں نیا رنگ نہ ہو اس کے گل والے میں
خون دل ڈال رہا ہوں میں ہر اک تھالے میں

ہمصفیر و تر و تازہ مرا گلشن دیکھو
کس روش سے ہے کیا اس کو مزین دیکھو
شاہدانِ چمنِ نظم کا جوبن دیکھو
گلِ مقصود سے بھر جائے گا دامن دیکھو
کیجے گل گشت تو کیا لطفِ نظر ملتا ہے
میرے گلزار سے جنت کا ثمر ملتا ہے

۲۔ سید طالب حسین خاک

آپ سید تراب علی رئیس محلہ نصیر کے فرزند تھے آپ کا ایک مرثیہ کتب خانۂ سید خیرات علیؑ واقع امام باڑہ سید خیرات علیؑ جلالی میں موجود ہے اس مرثیے میں آپ نے قید اہلبیت سے متعلق روایت کو نظم فرمایا ہے نمونے کے دو بند پیش کرتا ہوں:

رحم ہر حال میں خاصانِ خدا کرتے ہیں
قید خود ہوتے ہیں اوروں کو رہا کرتے ہیں
یاد جب ان کو مریضانِ بلا کرتے ہیں
اپنی بیماری میں بھی ان کی دوا کرتے ہیں
اُن کے سر پر ہوں بلائیں نہیں پروا کرتے
ہیں مسیحا پہ نہیں آپ کو اچھا کرتے

زاد و اقبال کتابیں ہیں جو دونوں مشہور
یوں ہے اک حال روایات میں اُن کے مذکور
شام کے شہر سے سادات تھے جس دم کچھ دور
جشن حاکم کو ہوا فتح کا اپنی منظور
دی ندا آکے منادی نے ہر اک خانے پر
جشن ہر خانے میں ہو قیدیوں کے آنے پر

۳۔ منشی اسد حیدر اسد

آپ محلہ جاناں جلالی کے ساکن تھے اور ایک مکتب بھی آپ نے جاری کیا تھا جس میں اُردو و فارسی کی ابتدائی تعلیم ہوتی تھی۔ کتب خانہ سید خیرات علیؑ جلالی میں آپ کا ایک مرثیہ محفوظ ہے جو آپ ہی کے قلم کا رقم کردہ ہے۔ یہ بیاسی بند پر مشتمل ہے۔ اس کے سرورق پر "اوپر تحریر ہے" مرثیہ من تصنیف بندہ اسد حیدر متوطن جلالی بتاریخ ۱۷ جولائی ۱۹۰۶ء تمام شد" وسط میں مرثیہ کا مطلع "آمد نبیرۂ اسد حق کی ان میں ہے" درج ہے اور نیچے" از بستہ سید اسد حیدر ذاکر جناب سید الشہداء" تحریر ہے۔ یہ مرثیہ آپ نے حضرت علی اکبرؑ کے واقعاتِ شہادت پر تصنیف کیا ہے نمونتاً اس کا پہلا اور آخری بند ملاحظہ ہو۔

پہلا بند:

آمد نبیرۂ اسد حق کی ان میں ہے
ہل چل بہادران عراق و یمن میں ہے

شیروں کو تپ ہے خوف سے لرزہ بدن میں ہے
رُستم بھی ان کے ڈر سے نہاں اب کفن میں ہے
گردوں پہ حاملانِ فلک غُل مچاتے ہیں
صلِّ علیٰ پڑھو شہِ لولاک آتے ہیں

آخری بند:

ہمشیر کے بیان پہ روتے بہت حسین
لاشہ اُٹھا کے گھر سے چلے شاہِ مشرقین
بس اے اسدؔ کہ بزم میں برپا ہے شور و شین
آقا سے کر یہ عرض کہ اے مصطفیٰ کے چین
صدقہ حضور اکبرِ عالی جناب کا
محشر کے روز غم نہ ہو مجھ کو حساب کا

۴۔ سیّد محمد حسین قمر

آپ میر نجیب علیؒ رسالدار میجر کے پوتے اور سیّد غلام سجاد حسین کے بیٹے تھے، آپ کی ولادت جلالی ضلع علی گڑھ میں ۱۸۸۷ء میں ہوئی اور وفات کراچی (پاکستان) میں ۲۴، اکتوبر ۱۹۶۸ء میں ہوئی۔ باکمال شاعر تھے آپ نے شاعری کی ہر صنف میں طبع آزمائی فرمائی۔ مرثیے بھی لکھے جو کامیاب و مقبول ہوئے۔ آپ نے پہلا مرثیہ ہی جس کا مطلع ہے: "مسند آرائے فلک جب شبِ عاشور ہوئی" بہت مقبول ہوا۔ اس مرثیے میں آپ نے لفظ "چراغ" سے اس طرح استفادہ کیا کہ اس کی مثال ماقبل مراثی میں موجود نہ تھی۔ لفظ "چراغ" سے متعلق بند ملاحظہ ہوں:

آکے زینب سے کہا مادرِ قاسم کو بُلاؤ
کہہ دو فرزندِ حسن کو ابھی نوشاہ بناؤ
چادرِ فاطمہ زہرا مری کبریٰ کو اُڑھاؤ
جمع سب اہلِ حرم بیاہ میں آکر ہو جاؤ
بزم آراستہ کی سینے کے داغوں کی طرح
جلوہ گر ہو گئے معصوم چراغوں کی طرح

رتبۂ خانۂ شبیر کے شاہد تھے چراغ
سر ہتھیلی پہ تھا جن کی وہ مجاہد تھے چراغ
لو لگی رہتی تھی اللہ سے زاہد تھے چراغ
جن کو کعبے میں رکھا جاتے وہ عابد تھے چراغ
چرخ پر مہر نہیں روشنی والا ایسا
سامنے خُلد نظر آئے اُجالا ایسا

محضرِ سیّد کونین کے مرقوم چراغ
سیکڑوں ظلم ہوئے جن پہ وہ مظلوم چراغ
جن کی تقصیر نہ تھی کوئی وہ معصوم چراغ
نام زندہ ہے ابھی جن کا وہ مرحوم چراغ
صبح کو ایسے گئے داغِ الم دے کے چراغ
آج تک رات انھیں ڈھونڈتی ہے لے کے چراغ

اسی مرثیے میں حضرت قاسم ابن امام حسن کی شادی کی روایت کو صرف ایک شعر میں پیش کیا ہے جو آپ کی مہارتِ فنّی کا ایک نادر نمونہ ہے۔ ملاحظہ ہو:

شاہ نے بھائی کی تعمیلِ وصیت کر دی
صیغۂ عقد پڑھا رولیے رُخصت کر دی

آپ نے جو بھی مضمون مرثیے میں بیان کیا بڑی نُدرت اور جدّت کے ساتھ مثلاً اسی مرثیے میں شبِ عاشور جہاد کے شوق میں حضرت قاسم کا اضطراب اس طرح بیان فرمایا کہ اس سے بہتر ممکن نہ تھا۔ ملاحظہ ہو:

شب جو باقی تھی کسی طرح نہ تھا دل کو قرار
سورۂ فجر کو دم کرتے تھے پڑھ کر ہر بار
دل میں رو کے سے نہ رُکتا تھا جو شوقِ پیکار
تیر ترکش سے نکالے کبھی تولی تلوار
تن پہ ہتھیار کبھی اپنے سنوارے دیکھے
شمع کی لو کبھی دیکھی کبھی تارے دیکھے

نظر آتے نہ تھے گردوں پہ جب آثارِ سحر
شیر کی طرح سے آجاتا تھا بل ابرو پر
اُٹھ کے ٹہلے کبھی خیمے میں اِدھر اور اُدھر
آئینہ لے کے کبھی غیظ میں دیکھے تیور
کبھی یہ عزم کہ کل لاشوں سے رَن پٹ جائے
کبھی خنجر کو کیا تیز کہ شب کٹ جائے

ایک دوسرے مرثیے میں شب کی گرمی کو اس جدّت کے ساتھ بیان فرمایا کہ بے مثال ہے۔ ملاحظہ ہو:

گرمی بلا کی شام سے تھی کائنات میں
تارے تمام رات نہاتے فرات میں

رثائیت بھی آپ کے کلام میں غضب کی ہے۔ ایک مرثیے کے دو بند پیش کرتا ہوں:

اے امتحان والے مرا امتحان دیکھ
دو دن کے بھوکے پیاسے شہیدوں کی شان دیکھ
تجھ پر نثار ہو گیا کڑیل جوان دیکھ
قربان ہو کے رہ گئی ننھی سی جان دیکھ
یہ بے زباں ہے اور وہ شبیہہِ رسول ہے
اب ان میں کون سا تجھے فدیہ قبول ہے

بندہ ہوں تیرا مجھ کو ہے تیری رضا سے کام
جو کچھ تھا تیرا حکم وہ تعمیل کی تمام
قربانیوں کا سلسلہ ٹوٹا نہ تا بہ شام
جز صبر و شکر تو نے سُنا اور کچھ کلام
غلطاں ہے رن میں لاشۂ اکبر زمین پر
مالک مرے شکن تو نہیں ہے جبین پر

۵۔ سیّد سجّاد حسین ہدف

آپ سیّد ابن حسین رئیس محلہ گڑھی کے فرزند تھے۔ ۲۱، رجب ۱۳۶۵ھ/ ۱۹۴۵ء وفات پائی۔ آپ نے رُباعیاں، سلام اور

لُدل کا مرثیہ کہا۔ آپ کا مجموعۂ کلام آپ کے بھتیجے سید شمشاد حسین بلالوی کے پاس محفوظ تھا۔

لُدل کے مرثیے کے دو بند حسب ذیل ہیں:

یہ دُلدُل ہے حسین ابن علی کا
یہ دُلدُل ہے ولی ابن ولی کا
یہ دُلدُل ہے سخی ابن سخی کا
یہ دُلدُل ہے نمونہ بے کسی کا
اسی دُلدُل پہ تھے شاہِ مدینہ
اسی دُلدُل سے لپٹی تھی سکینہ

سی دُلدُل پہ شہ رن کو سدھارے
اسی دُلدُل کو تیر اعدا نے مارے
سی پر ہوگئے شہ زخمی سارے
نہ تھا اتنا کوئی آکر اُتارے
رہا شہ کو سنبھلنے کا نہ یارا
اسی نے ٹیک کر گھٹنے اُتارا

۱۰۔ سید ظہیر محمد جدید

آپ سید جعفر محمد رئیس محلہ امیر کے فرزند تھے آپ کی ولادت ۱۳۱۶ھ مطابق ۱۸۹۸ء میں ہوئی۔ فنِ سوزخوانی میں مہارتِ کامل رکھتے تھے اور ۸ محرم کے جلوس عزا میں حیدری کا سلام "ہے سلام اُس پر جو بیکس بے پدر بے یار تھا" اور دیگر کا مرثیہ "پہنچے امیر شام کی مجلس میں جب اسیر" نہایت شان کے ساتھ پڑھتے تھے۔ آپ نے متعدد رُباعیاں، سلام، قصائد اور ایک مرثیہ بھی کہا جس کا مطلع ہے "جب آسماں پہ نجم سحر جلوہ گر ہوا" اس مرثیے کے ابتدائی دو بند پیش کرتا ہوں جس میں صبح کا سماں کھینچا ہے:

جب آسماں پہ نجم سحر جلوہ گر ہوا
مشرق سے آشکار بیاضِ سحر ہوا
مملو ضیا سے نُور سے ہر دشت و در ہوا
صحنِ چمن میں بادِ صبا کا گذر ہوا
بلبلیں شمیم عطر فشاں سے مہک گئیں
نرگس کی آنکھ کھل گئی کلیاں چٹک گئیں

ناگہ سپیدۂ سحری کا ہوا ظہور
پھیلا تمام دشت میں ہر سو سحر کا نور
یا حیُّ کہہ رہے تھے درختوں پہ سب طیور
شبنم سے کر رہے تھے وضو گل بصد سرور
غنچوں کو جب نسیم سحر نے جگا دیا
سبزے نے اپنا سبز مُصلّیٰ بچھا دیا

۷۔ سید افسر علی بقا

آپ سید ظل حسین فضا رئیس محلہ امیر جلالی کے فرزند تھے۔ تحت اللفظ مرثیہ خوانی میں مہارتِ کامل رکھتے تھے مرثیہ گو کی حیثیت سے بھی کامیاب رہے۔ ۲۳ اکتوبر ۱۹۸۷ء کو وفات پائی آپ نے سید آل رضا صاحب سے استفادہ کیا اور کامیاب مرثیے تصنیف فرمائے۔ آپ کے مراثی جدید طرز کے ہیں نمونتہً ایک مرثیے کے دو بند پیش کرتا ہوں جن میں جدید تبلیغی انداز نمایاں ہے ملاحظہ ہو:

سالک راہ رضا ہاں وہی بے سر جانباز
پیاس میں جو کہ نہ تڑپے تہہ خنجر جانباز
مسکراتے ہوئے پہنچے لب کوثر جانباز
فخر توحید کو جن پر وہ بہتّر جانباز
حق پرستی کا سبق دے گئے حق شاہد ہے
اُن کے افسانے کی سُرخی پہ شفق شاہد ہے

آج شرمندۂ احسان ہے اسلام اُن کا
ساتھ اسلام کے ہے تا بہ ابد نام اُن کا
مظہر رازِ مشیت تھا ہر اک کام اُن کا
سبق آموز ہے دُنیا کو یہ پیغام اُن کا
خلق سے سوئے عدم یُوں تو سبھی جاتے ہیں
ساتھ عزت کے جو مرتے ہیں وہ جی جاتے ہیں

۸۔ سید علی باقر، باقر

آپ سید حکمت علی صاحب رئیس محلہ ابوالفضل جلالی کے فرزند اصغر تھے شعر و شاعری کا ذوق فطری تھا۔ اُستاد قمر جلالوی سے استفادہ کیا۔ ۱۹۶۸ء میں وفات پائی۔ آپ تحت اللفظ مرثیہ خوانی میں مہارتِ تامہ رکھتے تھے متعدد رُباعیاں، قصائد، نوحے اور چند مرثیے بھی تصنیف کیے۔ ایک مرثیے کے ابتدائی دو بند پیش کرتا ہوں جن میں حضرت امام حسین کی نمازِ صبح کا منظر پیش کیا ہے:

ہمشکل مصطفیٰ کو جو حکم اذاں ہوا
سوکھی زباں سے بحر فصاحت رواں ہوا
ہر ذرہ کائنات کا تسبیح خواں ہوا
مصروف حمد حق شہ کون و مکاں ہوا
کس صدقِ دل سے بندگی بے نیاز تھی
معبود ناز کرتا ہے ایسی نماز تھی

فارغ ہوئے نماز سے جب شاہ بحر و بر
سوکھی زبان کرچکے ذکر خدا سے تر
ناگاہ طبلِ جنگ بجا یک بیک اُدھر
خدمت میں آئے شاہ کے عباس نامور
کی عرض ہاتھ جوڑ کے خوش خانہ زاد ہو
پہلے عطا غلام کو اِذنِ جہاد ہو

راہ میں حق کی جو جرّار ہوں پروانے وہ
آلِ احمد کے جو غم خوار ہوں پروانے وہ
ہر ستم سہنے کو تیّار ہوں پروانے وہ
عشق میں مثیم تمّار ہوں پروانے وہ
قلب میں جذبۂ ایثار و وفا رکھتے ہوں
راہِ حق پر ہو نظر خوفِ خدا رکھتے ہوں

قلب میں جوشِ ولا رکھتے ہوں پروانے وہ
اُلفتِ نُورِ خدا رکھتے ہوں پروانے وہ
مثلِ آئینہ ضیا رکھتے ہوں پروانے وہ
نفس پر حق کی جلا رکھتے ہوں پروانے وہ
جوش میں عشق کے محوِ رُخِ جاناں ہو جائیں
شمعِ حق نُورِ الٰہی پہ جو قرباں ہو جائیں

○

سیّد شبیر حسن سحر

آپ سیّد اسمٰعیل حسن صاحب رئیس ...ہ جاناں جلالی کے فرزند ہیں۔ آپ نے ...تدد رباعیات، قصائد، نوحے، سلام اور ...اثی تصنیف کیے۔ آپ کے نوحوں کی ایک ...اعن "غمِ حسین اور نوحہ جات" کے عنوان ...ے محرم ۱۳۹۹ھ مطابق ۱۹۷۸ء شائع ...ئی۔ آپ کے ایک مرثیے کے دو بند بطور ...نہ پیش کرتا ہوں جن میں میدانِ جنگ ...یں حضرت قاسم ابن حضرت امام حسن کی آمد کا سماں کھینچا ہے:

جب بہرِ جنگ قاسم گلگوں قبا چلا
لے کر رضا حسین کی وہ خوش ادا چلا
رفتار کے نثار کہ مثلِ ہوا چلا
تیغ و سپر لیے ہوئے وہ مہ لقا چلا
جلووں سے پیچ و تاب میں تھا آفتاب بھی
گیتی کو زلزلہ ہوا اور اضطراب بھی

پہنچا جو رزم گاہ میں وہ رشکِ ماہتاب
خیرہ نظر ہر ایک تھا لشکر میں بے حساب
بولی سپاہ شام نہیں حسن کا جواب
نظّارہ سوزیوں سے ہر اِک کو تھا اضطراب
ہر سُو یہ شور تھا کہ یہ بارش ہے نُور کی
ہم نے کبھی نہ دیکھی تجلّی یہ طُور کی

راقم نے بھی متعدّد رباعیات قصائد، سلام اور مرثیے لکھے ہیں۔ پہلا مرثیہ شبِ عاشور کے واقعات سے متعلق لکھا جس کا مطلع ہے "شبِ عاشور عجب کرب و بلا کی شب تھی"۔ استاد قمر جلالوی نے اپنے پہلے مرثیے میں لفظ "چراغ" سے استفادہ فرمایا تھا راقم نے اپنے اس پہلے مرثیے میں لفظ "پروانہ" سے استفادہ کیا ہے:

نظمیں

(۱)

احمد آباد

دیکھ رہا ہوں
کھڑکی سے باہر
ٹیڑھی میڑھی گلیوں میں
دم توڑتا
دھوپ کا آخری ٹکڑا

اپنی دُھن میں گاتے ہیں
سکول سے لوٹتے بچے:
جب کتّے پہ سسّا آیا
احمد شاہ نے شہر بسایا

اُونچی نیچی بلڈنگوں سے
دھوئیں کی مانند
شام اترتی
دیکھ رہا ہوں ——

دُور کہیں سے لوٹتا رستا
بُری خبر لاتا ہے
شہر میں خون خرابہ ہے
افواہوں کی چمگادڑ اُڑتی ہیں چاروں اور
آسمان پر آگ کی لپٹیں
کہیں سے چیخیں آتی ہیں
میری کھڑکی کے کانوں سے ٹکراتی ہیں
کھڑکی، دروازے، گلیاں ہیں خوفزدہ
پولس کے بھاری بوٹوں کی گشت سنائی دیتی ہے
کرفیو لگ جاتا ہے
دل دھک دھک کرنے لگتا ہے
اور میرے اندر کا شہر
اپنی ہی آنکھوں کے آگے مرتے دیکھ رہا ہوں
میں کیوں زندہ ہوں ——

(۲)

چاند دریا پار کر کے آرہا ہے

آگئی ہے رُت بہار
سبز پتے، سبز تتلی، سبز منظر، انتظار
عطر آگیں ہیں ہوائیں
پیڑ کی گردن پہ ہنستا ہے تری یادوں کا ہار
ایک سایہ پیڑ پر چڑھتا ہوا
اک ستارہ بادلوں کے آر پار
چاند دریا پار کر کے آرہا ہے
تم سے ملنے، بے قرار
شش جہت پر خوشبوؤں کی بھیڑ سی
بند رکھنا تم نہ اپنے گھر کے دوار

(۳)

امجد علی خاں کا سرود وادن

پہلی بارش کے جھونکے میں
ہلکی بوندا باندی میں
ہنستا سُرخ گلاب
کہرے اور بادل کا اک آکاش:

میں نے پلٹ کر پیچھے دیکھا
اک پرچھائیں
پیچھے پیچھے آتی ہوئی
اور اچانک گم ہوتی
اپنی ہی پرچھائیں میں

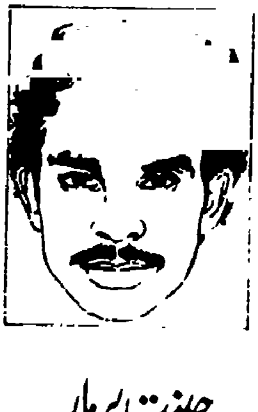
دیواروں پر اندر دھنش
رُکی ہے ساری کائنات
میری کھڑکی میں ——

انگلیوں سے بہتا ہے
اجلی کرنوں کا دریا
کوئی مجھ کو کھینچ رہا ہے
سُر کے آنسو میں

(۴)

ایک کھڑکی ایک چہرہ

ایک گلی مڑتی ہے جہاں سے
اک رستا ہے ٹیڑھا میڑھا
بائیں اور اِملی کا پیڑ ہے
سامنے اک چھپّر کا مکاں ہے
آدھی رات ہو یا دوپہری
اس کی کھڑکی کھلی ہوئی
کھلی ہوئی کھڑکی میں لیکن
نظر نہیں آتا وہ چہرہ
پھر بھی کیوں ہے دل میرا
اسی جگہ کا دیوانہ!



جینت پرمار

۳۰۰/اے، امبالی فالیا، سرکیواڑ، شاہ پور، احمد آباد ۳۸۰۰۰۱

محمد منظور کمال

آزادی کی برکتیں

جب ہماری پیدائش ہوئی اور ہم عالمِ بے رنگ و بو سے عالمِ رنگ و بو میں آئے تو ہمیں اس کی مطلق خبر نہ ہوسکی۔ غالباً بے خبری کی چادر میں لپیٹ کر پوسٹ کیا گیا تھا۔ جب بے خبری کی چادر زمینی ہوا کی تاب نہ لاکر ہمارے سر سے کچھ کچھ سرکنے لگی تب ہمیں اپنے وجود کا رفتہ رفتہ احساس ہونے لگا اور ایک وقت ایسا آیا کہ ہمیں اپنے وجود کا مکمل ادراک ہوگیا۔ تب ہمیں معلوم ہوا کہ ہم آزاد وطن کے آزاد واسی ہیں۔ غلام ملک میں غلام باشندوں کو کسی طرح کی آزادی نہیں تھی، ماسوائے بچہ پیدا کرنے کے کہ یہ ایک اندرونی معاملہ ہے اور کسی بھی آئین کی رو سے اس معاملہ میں دخل اندازی نہیں کی جا سکتی۔

آج سے کئی صدی قبل ایک بڑے آدمی نے کسی شخص کو مخاطب کرکے کہا تھا کہ ان کی (بیٹوں کی) ماؤں نے انھیں آزاد جنا تھا، تم نے انھیں غلام کب سے بنا لیا۔ چونکہ یہ بات کئی صدی قبل کہی گئی تھی اس لیے اب آؤٹ آف ڈیٹڈ قرار پا گئی ہے۔ ہم مہذب اور جدت پسند انسان اگر اتنی پرانی بات یاد رکھنے کی کوشش کریں تو ہاضمہ خراب ہونے کا ڈر رہتا ہے۔ لہٰذا اس بات کی نفی کرتے ہوئے انگریزوں نے ہمارے وطنِ عزیز پر غاصبانہ قبضہ کر لیا تھا اور یہاں کی آبادی کو غلام بنا لیا تھا۔ گرچہ یہ واقعہ اب طاقِ نسیاں کی نذر ہو چکا ہے پھر بھی بزرگوں سے گاہے گاہے رونگٹے کھڑے کر دینے والے واقعات سننے کو مل جایا کرتے ہیں جس سے ہمارا رونگٹا رونگٹا کھڑا ہو جاتا ہے۔ ویسے سننے میں آیا ہے کہ جن پر یہ ستم ڈھایا جاتا تھا ان کے رونگٹے نہیں کھڑے ہو پاتے تھے کہ وہ پہلے ہی منظم سازش کے تحت گھوڑے کے برش سے رگڑ رگڑ کر صاف کر دیے جاتے تھے۔ یہ سن کر مجھے بہت خوشی ہوئی اور میں نے خدا کا شکر ادا کیا کہ ہمیں کم از کم رونگٹے کھڑے کرنے کی آزادی تو ہے۔ ویسے ہماری آزادی کا دائرہ صرف اسی حد تک محدود نہیں ہے بلکہ اس کا دائرہ اتنا ہی وسیع ہے جتنا کہ ہمارا دیش۔ ہمارے دیش کو جنت نشان بھی کہا جاتا ہے۔ جس پر ہمیں سخت حیرت ہے۔ دراصل اس جنت کی نشانی کو لوگوں نے اس قدر کھرچا کہ اب وہ جگہ جگہ سے زخم کی طرح رسنے لگا ہے۔ غالباً اسی احساس نے فیض احمد فیضؔ کو "داغ داغ اُجالا اور شب گزیدہ سحر" کی ترکیب دی تھی۔ ویسے ہمارے لیڈر اس بات کو نہیں مانتے۔ ان کا کہنا ہے کہ چونکہ ہمارا دیش غریب ہے اور آزادی ملے ہوئے زیادہ عرصہ نہیں گزرا ہے اس لیے بہت سی جگہوں پر الیکٹرک نہ پہنچنے کی وجہ سے روشنی نہیں ہو پاتی۔ اسی لیے جب ہم پرواز کے دوران اپنی سرزمین پر نگاہ ڈالتے ہیں تو کہیں کہیں روشنی اور کہیں کہیں اندھیرا نظر آتا ہے جسے فیضؔ نے داغ داغ اجالے سے تشبیہ دی ہے اور جہاں تک شب گزیدہ سحر کا سوال ہے تو دراصل ملک میں اتنی ساری فیکٹریاں کھل گئی ہیں جن کی چمنیوں سے خارج ہوتے ہوئے دھوئیں اور گیس کی وجہ سے سحر، شب گزیدہ نظر آتی ہے۔ فیضؔ نے لوگوں کو گمراہ کرنے کے لیے یہ ترکیب استعمال کی ہے ورنہ ہمارا ملک مکمل آزاد ہے اور یہاں کے واسی پوری طرح سے آزادی کی نعمتوں سے بہرہ ور ہو رہے ہیں۔ جہاں تک میرا سوال ہے تو میں بھی لیڈروں کی اس صائب رائے سے کُلی طور پر اتفاق کرتا ہوں۔ یہ بات میں ہوا میں نہیں کہہ رہا ہوں بلکہ ٹھوس حقائق کی بنا پر کہہ رہا ہوں۔ اگر آپ یقین نہیں رکھتے تو چند مثالیں ملاحظہ ہوں:

مثال نمبر ا: پہلے ہمارے آبا و اجداد غلام تھے اس لیے انھیں ووٹ دینے کا حق نہیں تھا مگر اب ہم آزاد ہیں لہٰذا جب چاہیں ووٹ دے سکتے ہیں۔ "جب چاہتے" سے میری مراد یہ ہے کہ مقررہ معیاد سے قبل بھی اگر ہماری (یعنی عوام کی) خواہش ہو تو حکومت اس کے لیے راضی ہو جاتی ہے۔ بس ذرا سا توڑ پھوڑ کرنے کی ضرورت ہوتی ہے۔ اپنا ووٹ دینا تو خیر کوئی بڑی بات نہیں اگر مزید کی خواہش ہو تو اسے بھی ہم عملی جامہ پہنا سکتے ہیں یا پھر یہ خواہش ہو کہ پورے بوتھ (Booth) پر صرف ہم ہی ووٹ دیں تو یہ آرزو بھی ہم بزورِ قوت پایۂ تکمیل تک پہنچا سکتے ہیں۔ دراصل ہمارے وہ بزرگ جو غلام ملک میں پیدا ہونے کی وجہ سے ووٹ نہ دے پائے، ان کی روح کو خوش کرنے کے لیے ہم درج بالا تکنیک بروئے کار لاتے ہیں ورنہ ہم اتنے

اقبال اُردو لائبریری، محلہ پوکھریا، پوسٹ و ضلع بیگوسرائے ۸۵۱۱۰۱

غاصب بھی نہیں کہ دوسروں کا حق چھینتے پھریں۔

مثال نمبر۲: پہلے لوگوں کو بولنے تک کی آزادی نہیں تھی۔ اب نہ صرف ہم زور زور سے بھونک سکتے ہیں بلکہ ضرورت کے تحت کاٹ بھی سکتے ہیں جس کا مظاہرہ ہم آئے دن کرتے رہتے ہیں۔ ویسے یہ کاٹنا کتے کے کاٹنے سے مختلف چیز ہے۔ کتے نے اگر کبھی احتجاجاً کاٹا بھی تو زیادہ سے زیادہ دو دانت جسم میں گڑوئے اور چلتا بنا۔ مگر ہم چونکہ مہذّب انسان ہیں اس لیے ہمارے احتجاج کا دائرہ وسیع ہے جس کی زد میں بڑے بڑے ٹرک، بس، ریل گاڑی کے ڈبّے، بسٹریاں، سرکاری دفاتر، ٹیلی فون کے تار، بجلی کے کھمبے سبھی آجاتے ہیں۔

مثال نمبر۳: ہماری یہ روایت رہی کہ ہم خوشی و مسرّت کا اظہار کرنے کے لیے آتش بازیوں کا سہارا لیتے رہے ہیں۔ مگر برا ہو غلامی کا کہ انگریزوں نے اسے بھی نہیں بخشا اور نتیجے میں ہمیں سال میں صرف دو بار آتش بازی چھوڑنے کی اجازت دی گئی۔ آپ ہی سوچیے ۳۶۵ دن میں صرف دو دن۔ ہمارے بزرگوں پر کیا قیامت گذری ہوگی۔ لیکن خُدا کا شکر ہے کہ آزادی کے ساتھ ہی اس پابندی کا بھی قلع قمع ہوگیا اور اب ہم آزادانہ بلکہ فراخدلانہ حتّٰی کہ جارحانہ انداز میں اس آتش بازی سے لطف اندوز ہوسکتے ہیں۔ چونکہ آتش بازی چھوڑنے پر کوئی پابندی نہیں ہے اس لیے ہم اکثر و بیشتر اس خوشی میں دوسروں کو بھی شامل کرنے کے لیے ان کے گاؤں پر دھاوا بول دیتے ہیں اور آتش بازیوں کے کرتب دکھا دکھا کر ان کی آتش ذوق کو اس قدر بھڑکاتے ہیں کہ وہ بھی آتش زیر پا ہوکر اس کھیل میں پورے جوش و خروش کے ساتھ شامل ہوجاتے ہیں۔ چونکہ جوش و خروش میں ہوش و حواس کو قابو میں رکھنا مشکل کام ہے اس لیے یہ "رقصِ شرر" کبھی کبھی "رقصِ اجل" میں تبدیل ہوجایا کرتا ہے جسے شرپسند (شرپسند بھی کہہ سکتے ہیں) عناصر بلوہ، فساد جیسے مکروہ ناموں سے پکار پکار کر ہمارے اس "شغلِ بے مہار" (شترِ بے مہار سے قرض کے طور پر لیا گیا ہے) کو بدنام کرنے کی ناکام کوشش کرتے ہیں۔

مثال نمبر۴: آپ نے بزرگوں کو اکثر کہتے سُنا ہوگا کہ ہماری ہڈی شدھ چیزوں خصوصاً شدھ گھی سے پروان چڑھی ہے۔ دراصل یہ "شدھ" لفظ بھی غلام ملک کی دین ہے اور چونکہ ہم آزاد وطن کے آزاد واسی ٹھہرے اس لیے ہمیں ہر شدھ شے سے نفرت ہے۔ ہمارے بزرگ دُودھ میں پانی جیسی شدھ چیز بھی ملانے سے گریز کرتے تھے کہ سزا کا خوف ان پر مسلّط تھا۔ ذرا تصوّر کیجیے کہ ہمارے بزرگوں کو کتنی حقیر سی خواہش بھی پورا کرنے کا موقع نہیں مل پاتا تھا جبکہ ہمیں نہ صرف دُودھ میں پانی ملانے کی آزادی حاصل ہے بلکہ پانی میں دُودھ بھی ملانے کی آزادی میسّر ہے۔ آہ! وہ بزرگ اپنا من کیسے مسوس مسوس کر رہ جاتے ہوں گے؟ ویسے آج تک میری سمجھ میں یہ بات نہیں آئی کہ شدھ چیز میں دوسری شدھ چیز ملانے سے چیزیں اشدھ کیسے ہوجاتی ہیں۔

مثال نمبر۵: آزادی کے قبل ہمارے بزرگ ایک دوسرے سے گلے ملنے میں بھی احتراز کرتے تھے کہ کہیں حاکمِ وقت یہ نہ سمجھ بیٹھے کہ لوگ حکومتِ وقت کے خلاف سرگوشی کرنے کے لیے گلے مل رہے ہیں۔ مگر اب یہ حالت ہے کہ ہم جب چاہیں ایک دوسرے سے گلے مل سکتے ہیں بلکہ گلا دبانے کی خواہش کو بھی بروئے کار لاسکتے ہیں۔ صرف اس بات کا خیال رکھنا ضروری ہے کہ حریف ناتواں ہو ورنہ گلا دبایا ضرور جائے گا لیکن کس کا؟ یہ کہنا ذرا مشکل ہے۔ ویسے کچھ لوگ اس جھنجھٹ میں پڑنا مناسب نہیں خیال کرتے۔ ایسے لوگ نہ حریف سے گلے ملتے ہیں نہ حلیف سے۔ صرف جنسِ لطیف سے گلے ملنے کے شائق رہتے ہیں۔

مثال نمبر۶: سُنا کرتے ہیں کہ پہلے لوگ فرسٹ کلاس میں سفر نہیں کرسکتے تھے کہ یہ گورے لوگوں کے لیے مخصوص تھا۔ آزادی کے بعد غلامی کی اس لعنت کو بھی جڑ سے اُکھاڑ پھینکا گیا۔ اب ہم جس کلاس میں سفر کرنا چاہیں ہمیں کوئی روکنے والا نہیں حتّٰی کہ مفت سفر کی سہولت بھی ہمیں میسّر ہے۔

میرا خیال ہے کہ مندرجہ بالا مثالوں کی روشنی میں آپ بھی میرے ہم خیال بن گئے ہوں گے۔ یقین مانیے ہم اور آپ خوش قسمت ہیں کہ آزاد ملک میں پیدا ہوئے ورنہ غلام ملک میں پیدا ہوئے ہوتے تو ساری زندگی سسک سسک کر مرنا پڑتا جبکہ آزاد ملک میں ایسی موت کا تصور بھی نہیں کرسکتے۔ اگر اتفاقاً آپ کو ایسا نادر موقع دستیاب بھی ہوجائے تو آپ کے بھائی بند آپ کو اس دگرگوں حالت میں نہیں چھوڑ سکتے مثلاً آپ بس میں سفر کر رہے ہوں اور راستے میں اتفاقاً حادثہ پیش آجائے اور آپ زخمی حالت میں پڑے کراہ رہے ہوں۔ ایسی حالت میں قریبی گاؤں والے اگر آپ کو اس جان کنی کے عذاب سے نجات دلانا اوّلین فریضہ

خیال کریں گے۔ وہ کبھی نہ چاہیں گے کہ آپ اپاہج بن کر زندگی گزاریں یا آپ کو ہسپتال روانہ کیا جائے جہاں آپ کا کام تمام ہونا ہی ہے۔ بہرحال جب آپ کو مرنا ہی ہے تو پھر اتنی دیر عذاب میں مبتلا کیوں رکھا جائے۔ ان سب باتوں کو مدِنظر رکھتے ہوئے وہ لوگ آپ کو جائے حادثہ پر سے ہی دوسرے سفر پر روانہ کر دیں گے کہ اس سفر پر روانہ کرنے کے لیے کوئی خاص اہتمام کی ضرورت نہیں ہوتی آپ کو دوسرے سفر پر روانہ کر کے آپ کا سامان اپنے قبضے میں کر لیں گے کہ اسے بے مصرف یونہی چھوڑ دینا ملک کی جائیداد کو بے سبب ضائع کرنا ہے۔ دوسری بات ان کے ذہن میں یہ رہتی ہے کہ مرحوم بھی خوش ہوں گے کہ چلو مرنے کے بعد بھی میں کسی کے کام آیا۔

سید محی رضا

سمندری دوائیں

یہ دُنیا تین حصّے پانی سے ڈھکی ہے اور ایک حصّہ جسے خشکی یا زمینی حصّہ کہا جاتا ہے انسانوں، جانوروں، چرندوں اور پرندوں سے آباد ہے۔ ساتھ ہی ساتھ اس زمینی حصّے پر پہاڑ، جنگل، ریگستان اور جھیلیں بھی اپنا قبضہ جمائے ہوئے ہیں۔ زمین کے اس چھوٹے سے حصّے پر ہم انسانوں کی آبادی ہے اور اس کے مقابلے میں سمندر کا علاقہ بہت وسیع و عریض ہے۔ ہم لوگ اپنے کھانے پینے اور مرنے جینے کے لیے زیادہ تر اسی حصّے کو استعمال کرتے ہیں ہاں البتہ دوسرے ملکوں تک جانے یا تجارتی مال لانے اور لے جانے کے لیے سمندری راستے استعمال کرتے ہیں، سمندر سے مچھلیاں نکال کر کھاتے ہیں۔ عنبر اور موتی حاصل کرتے ہیں اور کہیں کہیں سمندر کا پانی بھی استعمال کرتے ہیں، اس سے نمک حاصل کرکے اپنے کھانوں کو ذائقہ بخشتے ہیں۔ سمندر کی وسعت کو دیکھتے ہوئے ہم جتنا اس سے فائدہ اٹھاتے ہیں وہ تناسب میں بہت ہی کم ہے:

سمندر سے ملے پیاسے کو شبنم
بخیلی ہے یہ رزّاقی نہیں ہے

اس بات کی کوشش جاری ہے کہ مچھلی کے علاوہ سمندر سے بڑے پیمانے پر انسانی غذائیں حاصل کی جائیں اور اس بات کی بھی کوشش جاری ہے کہ سمندر سے انسانی بیماریوں کے لیے زیادہ بہتر قسم کی دوائیں حاصل کی جائیں۔ غرض یہ ہے کہ سمندر ہمارے لیے جس قدر فائدہ بخش ہے ابھی اس کا پورے طور پر انسانوں کو اندازہ نہیں ہوا ہے اسی وجہ سے انسان پورے طور پر سمندر سے فائدہ نہیں اٹھا سکا ہے۔ سمندر نعمتوں سے مالا مال ہے ہمیں پورے طور پر اس سے آگاہی نہیں ہے:

تو ہی ناداں چند کلیوں پر قناعت کر گیا
ورنہ گلشن میں علاجِ تنگیٔ داماں بھی ہے

اب ہندوستانی اور امریکی سائنس دانوں نے مل کر بحرِ ہند میں کچھ خاص قسم کی چیزوں کی تلاش شروع کردی ہے اور یہ تلاش ہے دواؤں کی۔ سمندر کی گہرائیوں میں سے ایسے جاندار حاصل کیے جائیں جن کے ذریعے انسان کی مہلک بیماریوں کے لیے دوائیں حاصل کی جاسکیں۔ ہندوستان کی طرف سے جو ادارہ کام کر رہا ہے وہ کونسل آف سائنٹفک اینڈ انڈسٹریل ریسرچ ہے (C S I R) اور امریکہ کی طرف سے آفس آف نیول ریسرچ (O N R) کام کرتا ہے۔

سمندر میں دواؤں کی تلاش کا منصوبہ جولائی ۱۹۸۴ء سے زور پکڑنے لگا ہے۔ اس پروجکٹ میں دونوں ممالک کے تقریباً ایک سو سائنس داں، اس مفید کام میں مصروف ہیں۔ ان کے علاوہ گوا کے نیشنل انسٹی ٹیوٹ آف اوشنوگرافی (N I O) اور لکھنؤ کے سینٹرل ڈرگ انسٹی ٹیوٹ اور کلکتہ کے بوس انسٹی ٹیوٹ بھی مل کر کام کر رہے ہیں۔ ہندوستان کے سائنس دانوں نے ۴۳۰ سمندری نمونے جمع کیے ہیں جن میں ۳۵ کے اندر ایسی علامتیں و نشانیاں پائی جاتی ہیں جو جراثیم کُش ہیں اور انسانوں کی بیماریوں کے جراثیم کے لیے مہلک ہیں۔ سائنس دانوں نے ہندوستان کے مغربی ساحلی کناروں یعنی بندرگاہ اوکھا سے لے کر کنیا کماری تک کے علاقے سے بہت سے نمونے جمع کیے ہیں۔ اور ہمارے غوطہ لگانے والے سائنس دانوں نے لکشا دیپ کے آس پاس سے مونگے کے بہت سے نمونے حاصل کیے ہیں جن پر مزید ریسرچ کا کام جاری ہے۔

سائنس دانوں کا کہنا ہے کہ سمندر میں بہت سے ایسے جانور ہیں جو اپنے بچاؤ کے لیے فطری طور پر اپنے اندر زہرِ ہلاہل رکھتے ہیں اور اسی کے ذریعے وہ حملہ آوروں اور دشمنوں کا مقابلہ کرتے رہتے ہیں۔ مثلاً مونگے کے چاروں طرف ایک دبیز ڈھانچہ ہوتا ہے جس میں مضبوط ڈنک ہوتے ہیں، جنھیں وہ دشمنوں کو پسپا کرنے کے لیے استعمال کرتا ہے۔ اسی طرح سمندری اسپنج کے پاس بظاہر اپنے بچاؤ کا کوئی سامان نہیں ہوتا مگر خطرے کے وقت وہ اپنے جسم سے ایسے کیمیکل خارج کرتا ہے کہ آس پاس کے دشمنوں کا خاتمہ بھی ہوسکتا ہے۔ بعض سمندری جانداروں کے جسم کی کھال زہر بھری ہوتی ہے اور اسی سے وہ اپنا بچاؤ کر لیتے ہیں۔ سمندری جانداروں سے یہ زہر اگر حاصل کیے جاسکیں اور انھیں انسانوں کی بیماریوں کے لیے استعمال کیا جاسکے تو سرطان اور اسی طرح کی دوسری خطرناک بیماریوں کا علاج ہوسکتا ہے۔ سمندر سے دوائیں حاصل کرنے کے بہت سے طریقے ہوسکتے ہیں

۴/۴۴، سر جے۔ جے۔ روڈ بمبئی ۸

مثلاً سب سے سیدھا طریقہ تو یہ ہے کہ ایسے سمندری جانوروں کو سمندر سے نکال کر ان کے جسم سے مطلوبہ چیزیں حاصل کرلی جائیں مگر ان مطلوبہ چیز کو حاصل کرنے کے لیے اور مستقل طور پر حاصل کرتے رہنے کے لیے بڑے پیمانے پر مسلسل اس طرح کے جانداروں کو حاصل کرنا ایک مسئلہ ہے اس لیے کہ جب تک بڑے پیمانے پر ایسے جانداروں کو حاصل نہ کیا جائے، بڑی مقدار میں مطلوبہ چیزوں کا حاصل کرنا ناممکن ہوگا۔ مشکل یہ ہے کہ ایسے جانور سمندر کی گہرائیوں میں پائے جاتے ہیں جہاں انسان کی رسائی مشکل سے ہو پاتی ہے اور اس طرح آسانی سے بڑی تعداد یا بڑی مقدار میں جانداروں اور دواؤں کا حاصل کرنا ایک دشوار مرحلہ معلوم ہوتا ہے۔ دوسرا طریقہ یہ ہے کہ قدرتی اور قدرتی چیزوں کے نمونے سامنے رکھ کر مصنوعی طور پر یہ چیزیں لیبارٹری میں تیار کی جائیں جو اصل کی طرح تو نہیں ہوں گی مگر اصل سے مطابقت رکھیں گی اور انسانی بیماری کے علاج میں اسی طرح کام آئیں گی۔ ایک طریقہ یہ بھی ہے کہ ان جانداروں سے جین (GENE) حاصل کیے جائیں اور ان کے ذریعے مطلوبہ چیزیں تیار کی جائیں۔ جاپان کے جزیروں کے آس پاس جو سمندری کیڑے پائے جاتے ہیں وہ اپنے اندر غیر معمولی زہر رکھتے ہیں۔ ان کے مطالعے سے یہ پتہ چلتا ہے کہ ان کے ذریعے ایسی کیڑے مار دوائیں تیار کی جاسکتی ہیں جو دھان کی فصل کی حفاظت کے لیے مفید ہوسکتی ہیں۔ اسی طرح سمندر کے مختلف علاقوں کے جانداروں پر ریسرچ کرکے ان کے جسم سے مطلوبہ چیزیں حاصل کرکے بہت طرح کی دوائیاں بنائی جاسکتی ہیں جو انسانوں کی مختلف بیماریوں میں کام آسکتی ہیں۔

سائنس دانوں کا خیال ہے کہ بحر ہند دوسرے سمندروں کے مقابلے میں نسبتاً زیادہ گرم ہے اس لیے اس سمندر سے نئے مرکبات بڑے پیمانے پر حاصل کیے جاسکتے ہیں۔ بحر ہند پر چونکہ بہت دیر تک سخت دھوپ پڑتی رہتی ہے اس لیے اس کے اندر کے جانوروں کیڑے مکوڑوں اور پیڑ پودوں سے بڑی مقدار میں ایسی چیزیں حاصل کی جاسکتی ہیں جو دوسرے سمندروں سے حاصل نہیں کی جاسکتیں۔

اس طرح کے کام کو انجام دینے کے لیے سات ہندوستانی سائنس دانوں کی خاص طور پر تربیت کی جارہی ہے تاکہ ہمارے یہ سائنس داں سمندروں سے حاصل کی ہوئی چیزوں کا تجزیہ کرسکیں اور ان کے ذریعے وہ چیزیں حاصل کرسکیں جنھیں ہم تلاش کر رہے ہیں۔ اوسبورن لیبارٹری میں بھی ہندوستانی سائنس دانوں کی تربیت کی جارہی ہے تاکہ وہ سمندروں کے حیاتیاتی عمل کا گہرائی سے مطالعہ کرسکیں۔ اگرچہ سمندروں سے دوائی حاصل کرنے کا کام ۱۹۷۸ء سے شروع ہوچکا تھا مگر جب سے امریکی اور ہندوستانی سائنس دانوں نے مل کر کام شروع کیا ہے، اس کام میں تیزی آگئی ہے۔ ہندوستانی سائنس داں غوطہ خوری کا لباس پہن کر بذاتِ خود سمندر کی گہرائیوں میں ۳۰ میٹر تک جاتے ہیں تاکہ سمندر کی تہہ سے ان چیزوں کو حاصل کرسکیں جن کی ہمیں سخت ضرورت ہے۔ سمندر میں چار لاکھ کے قریب پیڑ پودے اور جاندار پائے جاتے ہیں ان میں سے دس فیصدی سے ہم اپنے کام کے لائق چیزیں حاصل کرسکتے ہیں۔ اسپنج، مونگا، سمندری کائی اور ہر طرح کی مچھلیاں اور دوسری قسم کے جانداروں سے یہ چیزیں حاصل کی جاسکتی ہیں اس عظیم الشان اور مفید کام پر ۲۰٫۱ ملین ڈالر کے خرچ ہونے کے امکانات ہیں۔

قلمکار حضرات سے گزارش

دفتر میں مضامین نثر و نظم کثیر تعداد میں جمع ہوگئے ہیں اس لیے اعلان ثانی تک اپنی نگارشات بلا طلب بھجوانے کی زحمت نہ فرمائیں۔

اُمید ہے اس گزارش کو گستاخی پر نہیں ہماری مجبوری پر محمول کیا جائے گا۔

—— ادارہ

اوم پرکاش لاغر

رات کی ظلمت سے کل نکلے گا روشن آسماں
کب تلک سورج کو ڈھک سکتی ہیں کالی بدلیاں

یوں نہ ڈھا تہذیبِ نو اکہنہ حویلی یوں نہ ڈھا
دیکھنے بھر کو ہے دلکش کانچ کا تیرا مکاں

دل ہو پتھر کا تمھارا سر پہ باندھا ہو کفن
پھر کسی کو دَورِ حاضر میں بنانا رازداں

بے شکن رکھو جبیں، پیتے رہو دل کا لہو
اہلِ گلشن کے لیے ہے اب یہ حکمِ باغباں

میرے سینے میں کھلا ہے ایک زخموں کا چمن
کیا ضرورت ہے مجھے دیکھوں میں سوئے گلستاں

8/71، نہرو گراؤنڈ، نزد پنجاب نیشنل بینک، این۔ آئی۔ ٹی، فریدآباد ۱۲۱۰۰۱

نامعتبر جو کل تھے وہ نقش معتبر ہیں
تو ساتھ ہے تو سارے منظر حسین تر ہیں

مانا ستمگروں کے فتنے عروج پر ہیں
ہم امن کے پیامی سچ کے پیامبر ہیں

جس سمت دیکھتا ہوں منظر عجیب تر ہیں
جھلسے ہوئے مکاں ہیں اُجڑے ہوئے نگر ہیں

کل بھی ہوا ہے ایسا اور اب بھی ہو رہا ہے
جو مدّعی ہیں حق کے نیزوں پہ ان کے سر ہیں

حیرت ہے اس زمیں پر چلنا ہمیں نہ آیا
نقشِ قدم ہمارے ویسے تو چاند پر ہیں

ہر سو شفیق پتھر پڑتے ہیں شورشوں کے
اس شہرِ بے اماں کے حالات ہی دگر ہیں

شفیق اعظمی

پرنس میڈیکل ہال، سرائے میر، اعظم گڑھ ۲۷۶۳۰۵ (یوپی)

اسرار الحق اسرار

خرد کی دسترس دیوانہ پن تک
مری دیوانگی دار و رسن تک

ہزاروں بستیاں اجڑی بسی ہیں
مری تنہائی سے اس انجمن تک

وہ خوشبو ہے میں جھونکا ہوں ہوا کا
نہیں ہے کوئی بستر میں شکن تک

زمیں اور آسماں کا فاصلہ ہے
مرے کردار سے تیرے چلن تک

یہی ہے انتہائے درد اسرار
نہیں ہے کوئی زخموں میں دُکھن تک

4/338 E، بٹلہ ہاؤس، جامعہ نگر، نئی دہلی ۱۱۰۰۲۵

تنویر اختر رومانی

ماں کا دل

ماں کے بارے میں جتنا کچھ کہا جائے کم ہے۔

کئی ہفتوں سے دُشمن فوجیوں نے اس شہر کو آہنی حصار میں لے رکھا ہے۔ تاریکی میں جب سُرخ لپٹیں دیوار پر پڑتی ہیں تو بے شمار سُرخ آنکھوں کی طرح دِکھائی دیتی ہیں۔

دیواروں سے شہر کے لوگ دیکھتے ہیں کہ دشمن کا شکنجہ لگاتار مضبوط ہوتا جا رہا ہے۔ آگ کے اِرد گرد منڈلاتے کالے سائے، صحت مند گھوڑوں کی تیز ٹاپیں، ہتھیاروں کی کھڑکھڑاہٹ، تیز قہقہے اور گانے کی آواز، لگتا ہے وہ اپنی فتح مندی پر مطمئن ہیں۔ کانوں کے لیے دُشمنوں کے قہقہوں سے زیادہ تکلیف دہ کیا ہو سکتا ہے؟ وہ ندیاں، جو پورے شہر کو پانی پلاتی تھیں، لاشوں سے پٹی پڑی ہیں۔ دیواروں کے کنارے لگی انگور کی فصل کو دُشمنوں نے جلا دیا ہے۔ کھیتوں کو روند ڈالا ہے۔ سیب کے باغ برباد کر دیے ہیں۔ شہر اب چاروں طرف سے اُجاڑ نظر آتا ہے۔ ہر روز دُشمن فوجی توپوں اور بندوقوں کے ساتھ آگے بڑھ رہے ہیں۔ فوجیوں کی ٹکڑیاں بھوکے شہر کی چھوٹی چھوٹی سڑکوں پر بکھری ہوئی بڑی منحوس لگتی ہیں۔

شہر کے لوگ بھوکے اور ننگے ہیں۔ ان کی نجات پانے کی امید دن بدن کمزور ہوتی چلی جا رہی ہے۔ جب بھی چاند دِکھائی دیتا ہے، پہاڑیوں کے کالے سرے نظر آتے ہیں، دُشمنوں کے گونجتے قہقہے سُنائی دیتے ہیں، وہ بُری طرح دہشت زدہ ہو اُٹھتے ہیں۔ ان کے لیے ہر چیز کا مطلب ہوتا ہے موت۔

گھروں میں چراغ جلانے سے انھیں ڈر لگتا ہے۔ سڑکوں پر گھُپ اندھیرا رہتا ہے جس طرح کوئی مچھلی ندی کی تاریکی بھری تلہٹی میں تیرتی ہو گی، ایک عورت بالکل کالے کپڑوں میں لپٹی ہوئی سڑکوں پر گھومتی نظر آتی ہے۔ وہ اتنی ہی خاموش ہے جتنی کہ اپنی سوئیوں پر گھومتی ہوئی کوئی گھڑی ہوتی ہے۔ جب شہر کے باشندے اسے دیکھتے ہیں تو پوچھتے ہیں "کیا یہی ہے وہ؟ وہی ہے یہ؟" اسے دیکھ کر لوگ چھُپ جاتے ہیں یا تیزی سے سر نیچا کیے گذر جاتے ہیں۔ گشتی سپاہی اسے تنبیہہ کرتے ہیں۔ "تم پھر سڑک پر نکل آئیں مونا میرنیا خود کو بچاؤ تم ماری بھی جا سکتی ہو کسی نے تمھیں مار دیا تو مجرم کا کوئی پتہ نہیں لگائے گا۔" وہ رُک کر انتظار کرتی ہے۔ ہتھیاروں سے لیس گشتی سپاہی اس کی طرف زیادہ دھیان نہیں دیتے۔ اسے تاریکی میں اکیلی چھوڑ جاتے ہیں۔ وہ سنسان سڑک پر گھومنا جاری رکھتی ہے۔ اس سڑک سے اس سڑک پر، اندھیرے میں شہر کی بدنصیبی کی طرح گھومتی رہتی ہے۔

اس شہر کی رہنے والی وہ ماں اپنے بیٹے اور اپنے وطن کے بارے میں سوچتی ہے۔ اس کے اپنے شہر کو تباہ کرنے والے دُشمن فوجیوں کا لیڈر ہے اس کا پیارا، خوبصورت، سجیلا بے رحم بیٹا، کچھ زیادہ وقت نہیں بیتا جب اسے اپنے بیٹے پر فخر ہوتا تھا۔ اس نے اپنے بیٹے کو فوج میں بھرتی کرا دیا تھا تاکہ وہ دیس کی خدمت کر سکے جہاں وہ پیدا ہوا تھا، وہ خود پیدا ہوئی تھی۔ اس کے رویں رویں میں یہ شہر بسا ہوا تھا۔ اس شہر کا ایک ایک پتھر، ایک ایک گھر اسے اپنے اسلاف کی یاد دِلاتا تھا جنھوں نے یہ گھر بنائے تھے۔ اس شہر کی حفاظت کرنے والی یہ دیوار بنائی تھی۔ وہ مٹی جہاں اس کا آرٹ، موسیقی اور لوگوں کی امیدیں پلی بڑھی تھیں۔

لیکن اب اس کے دِل نے ایک محبوب شخص کو کھو دیا۔ ایسا شخص جسے کھونے کے بعد دل زار زار رویا۔ اس نے اپنے دِل کے ترازو پر اپنے بیٹے اور وطن کی محبت کو تولا لیکن وہ سمجھ نہیں سکی کہ کون سا پلڑا زیادہ بھاری ہے۔ اسی لیے وہ رات رات بھر سڑکوں پر گھومتی رہی۔ بہتوں نے اسے پہچانا نہیں۔ بہت سے ڈر کر چھُپ گئے۔ بہتوں نے اسے مجسّم موت کا فرشتہ سمجھا کیونکہ موت ان سب کے بہت نزدیک تھی لیکن جب انھوں نے اسے پہچانا تو وہ وطن کے ایک باغی کی ماں کو دیکھ کر واپس مُڑ گئے۔

لیکن ایک دن شہر کے ایک سنسان علاقے میں اس نے ایک دوسری عورت کو دیکھا۔ وہ اپنے گھُٹنوں میں سر دیے چپ چاپ اس طرح بیٹھی تھی جیسے دھرتی کا ہی ایک حصّہ ہو۔ وہ عورت دُعائیں مانگ رہی تھی۔ اس کا چہرہ گہرے کرب میں ڈوبا ہوا تھا۔ پیچھے کی دیوار پر سنتری دھیمی آواز میں بول رہے تھے۔ اور ان کے ہتھیار پتھروں سے ٹکرا رہے تھے۔

وطن کے باغی کی ماں نے پوچھا۔ "تمھارا شوہر؟ تمھارے بھائی؟"

"میرا ایک بیٹا اور میرے شوہر تیرہ دن پہلے جنگ میں مارے گئے تھے، آج میرا دوسرا بیٹا بھی شہید ہو گیا"۔ پھر اس عورت نے اپنے گھُٹنوں سے سر اُٹھا کر دھیرے سے کہا۔ "دیوی میڈونا سب کچھ

آزاد نگر، جمشید پور ۸۳۲۱۱۰ (بہار)

دیکھتی ہیں۔ میں ان کا شکریہ ادا کرتی ہوں۔

"کس لیے؟" پہلی عورت نے پوچھا۔ دوسری نے جواب دیا: "وہ اپنے وطن کے لیے لڑتا ہوا باعزت طور پر مارا گیا۔ میں ڈر رہی تھی۔ وہ بہت نازک دل والا تھا۔ کہتا تھا کہیں خدا اور انسانیت کے دشمن میریانا کے لڑکے کی طرح اپنے ہی لوگوں کو دھوکا نہ دے۔ ہو سکتا ہے اس کی ماں میریانا میں ہی کوئی کمی رہی ہو۔"

میریانا نے اپنا چہرہ ڈھک لیا اور ایک طرف چلی گئی۔ اگلی صبح وہ شہر کی حفاظت کرنے والے فوجیوں کے پاس جا کر بولی: "میرا بیٹا تمھارا دشمن ہے۔ یا تو تم مجھے مار ڈالو یا دروازہ کھول دو تاکہ میں اس کے پاس جا سکوں۔"

"تم ایک شہری ہو۔ تمھارے لیے یہ وطن عظیم ہونا چاہیے۔ تمھارا بیٹا تمھارا اتنا ہی بڑا دشمن ہے جتنا کہ ہمارا۔" انھوں نے جواب دیا۔

"میں اس کی ماں ہوں۔ اسے پیار کرتی ہوں۔ اس لیے وہ جو کچھ بھی کرے گا اس کے لیے مجھے بھی ذمے دار ٹھہرایا جائے گا۔" تب ان سب نے ایک میٹنگ کر کے ہر ایک کی رائے لی۔ پھر اسے بتایا۔ "تمھارے بیٹے کے گناہوں کی سزا تمھیں دینا انصاف نہیں ہوگا۔ ہمیں معلوم ہے کہ اتنا بڑا جرم کرنے کی تم نے اسے ترغیب نہیں دی۔ ہم تمھاری تکلیف کو سمجھ سکتے ہیں۔ لیکن ہمیں اب تمھاری ضرورت نہیں ہے۔ تمھارا بیٹا شاید تمھیں بھول چکا ہے۔ اسی لیے تمھارا دھیان نہیں رکھتا۔ جاؤ اسے تلاش کرو۔"

"ہاں!" اس نے کہا۔ "یہ موت سے بھی زیادہ خوفناک ہے۔"

انھوں نے دروازہ کھول دیا۔ وہ اپنی اس مادرِ وطن سے دور جا رہی تھی جسے اس کے بیٹے نے خون میں ڈبو دیا تھا۔ وہ آہستہ آہستہ چلی جا رہی تھی۔ پیچھے سے فوجی اسے دور تک جاتا دیکھتے رہے۔ جب تک کہ وہ ایک سیاہ دھبے میں نہ بدل گئی۔ لیکن میریانا کے پیر شاید اپنے دیس کی مٹی سے دور نہیں جانا چاہتے تھے۔ اس لیے وہ بار بار چلنے سے جواب دے رہے تھے۔ اس نے پیچھے مڑ کر وطن کو بچانے والے فوجیوں کی طرف دیکھا۔ وہ خود ان ہتھیاروں کو ادھر ادھر پھینک رہے تھے۔ جو ان کی شکست کا سبب بنے تھے۔

جب وہ چلی تھی تو اس نے پانی کی ایک قیمتی بوتل اپنے ساتھ لے لی تھی۔ اس میں سے ایک بوند بھی نہ گرے اس کے لیے میریانا فکرمند تھی۔ اس کے اپنے شہر کے فوجی اسے جاتا ہوا دیکھ کر سوچ رہے تھے کہ اس کے ساتھ ان کی ساری ناامیدیاں چلی گئیں۔ انھوں نے دیکھا آدھے راستے تک جا کر وہ مڑی اور اپنے شہر کو اس نے دیکھا۔ دشمنوں کے خیموں نے جب ایک عورت کو اپنی طرف آتے دیکھا تو وہ اپنوں کی طرح اس سے ملے۔

"تمھارا سپہ سالار میرا بیٹا ہے۔" اس نے کہا۔ ایک بھی فوجی نے اس پر شبہ نہیں کیا۔ انھوں نے اس کا خیر مقدم کیا۔ استقبالیہ گیت گائے۔ اس کے بیٹے کی تعریف کے پل باندھ دیے۔ اس نے ان سب کی باتیں سنیں۔ اس کا سر بنا کسی حیرت کے فخر سے اٹھا رہا۔ سب سے آخر میں موقع آیا جب وہ اس کے سامنے کھڑی تھی جس کی پیدائش کے نو مہینے پہلے سے وہ اسے جانتی تھی۔ جو اس کا ایک اٹوٹ حصہ تھا۔ اپنے ریشمی اور مخملی کپڑوں میں وہ اس کے سامنے کھڑا تھا۔ اس کے ہتھیاروں تک میں بیش قیمت رتن جڑے تھے۔ سب کچھ ویسا ہی تھا جیسا کہ اس نے تصور کیا تھا۔ قیمتی اور قابلِ تعریف۔

"ماں" اس نے اس کے ہاتھوں کو چومتے ہوئے کہا۔ "تم میرے پاس آ گئیں۔ تم میرے ساتھ ہو۔ کل دیکھنا، میں اس شہر پر قبضہ کر لوں گا۔"

"اس شہر پر جہاں تم نے جنم لیا تھا!" ماں نے یاد دلایا۔ اپنی طاقت اور جرأت کے زعم میں اس نے جوش بھرے لہجے میں کہا۔ "میں دنیا میں دنیا کے لیے پیدا ہوا تھا۔ اور میں دنیا کو اپنے وجود کا احساس دلانا چاہتا ہوں۔ میں نے صرف تمھاری خاطر اس شہر کو بخش رکھا تھا۔ اب یہ مجھے کانٹے کی طرح کھٹک رہا ہے۔ یہ میری مقبولیت و شہرت کی راہ میں رکاوٹ ہے۔ لیکن کل میں احمقوں کی جنت کو نیست و نابود کر دوں گا۔"

"اس شہر کو جہاں کے ہر پتھر تک کو تمھارا بچپن یاد ہے۔" ماں بولی۔

"پتھر گونگے بہرے ہیں۔ جب تک انسان انھیں بولنے کے قابل نہ بنا دے۔ اب ان اونچی چوٹیوں کو میرے بارے میں بولنا چاہیے۔"

ماں نے کہا: "بہادر وہ ہے جو زندگی کے لیے موت کے خلاف لڑتا ہے اور موت پر فتح پاتا ہے۔"

"نہیں۔" اس نے مخالفت کی۔ "شہر کو برباد کرنے والا شہر کو بنانے والے ہی کی طرح عظیم ہے۔ روم کس نے بنایا تھا۔ اینیس نے یا روموس نے؟ لیکن لوگ الیک کا نام ضرور جانتے ہیں کیونکہ اس نے شہر کو تباہ کیا تھا۔"

"ہاں! اس نے سبھی ناموں اور ان کے کاموں کو بھی ختم کر دیا۔" ماں نے پھر اسے یاد دلایا۔

وہ دونوں تب تک باتیں کرتے رہے جب تک کہ سورج غروب نہ ہو گیا۔ ماں نے جتنی

زیادہ اس کی مغرورانہ، ذلیل باتیں سُنیں، اس کا فخر سے اونچا اٹھا ہوا سر جھکتا گیا۔

ایک ماں تعمیر کرتی ہے۔ بچاتی ہے، زندگی عطا کرتی ہے۔ اس لیے اس سے تخریب کی باتیں کرنے کا مطلب ہے خود اس کو ختم کر دینا۔ لیکن اسے معلوم نہیں تھا کہ وہ اپنی باتوں سے اپنی ماں کے وجود کی نفی کر رہا ہے۔ ایک ماں ہمیشہ موت کے خلاف ہوتی ہے۔ اس ہاتھ سے، جو آدمی کے گھروں میں موت لاتا ہے، ماں ہمیشہ نفرت کرتی ہے۔

سُورج کی سُرخ کرنوں نے دیواروں کو رنگ دیا۔ جگہ جگہ ایسا رنگ دکھائی دینے لگا جیسے پورا شہر زخموں سے بھر گیا ہو۔ پھر شہر سیاہ ہو گیا۔ آسمان میں چمکتے ستارے قبرستان میں جلتی موم بتیوں کی طرح دکھائی دے رہے تھے۔

اس نے ان اندھیرے گھروں کو دیکھا جہاں لوگ دُشمن کے خوف سے چراغ بھی نہیں جلاتے۔ موت کے انتظار میں دھیرے دھیرے بات کرتے ہیں۔ اس نے اپنے بیٹے کے خیمے سے دیکھا جو اس کے فیصلے کا خاموشی سے انتظار کر رہا تھا۔ اسے محسوس ہوا وہ اپنے شہر کے سبھی لوگوں کی ماں ہے۔

بادل پہاڑوں سے کھائیوں کی جانب تباہ شدہ شہر کی طرف شکاری پرندوں کی طرح بڑھ رہے تھے۔

ماں نے کہا: "او بیٹے! اپنا سر میری چھاتی سے لگا کر چھپا لو۔ یاد کرو بچپن میں تم کتنے رحم دل تھے۔ سبھی لوگ تمھیں کتنا پیار کرتے تھے۔" اس نے ماں کے حکم کی تعمیل کی۔ اپنا سر اس کی گود میں رکھ کر آنکھیں موند لیں۔

پھر بولا: "مجھے شہرت سے بہت پیار ہے ماں۔ میں تمھیں بھی بہت چاہتا ہوں۔ جو کچھ بھی میں آج ہوں صرف تمھاری بدولت۔"

"اور عورت؟" اس نے اس کے اوپر جھک کر پوچھا۔

"وہ تو بہت ہیں۔ کئی بار آدمی ان سے ایسے اوب جاتا ہے جیسے ہر روز مٹھائی کھانے سے۔"

"کیا تمھیں بچے بھی اچھے نہیں لگتے؟" اس نے پوچھا۔

"کس لیے؟ کہ وہ مارے جائیں۔ کوئی مجھ جیسا انھیں مار ڈالے۔ اس سے مجھے بہت تکلیف ہوگی۔"

"تم خوبصورت ہو لیکن آسمانی بجلی کی طرح بانجھ ہو۔"

"ہاں آسمانی بجلی کی طرح۔" وہ مسکرایا۔ اپنی ماں کی چھاتی میں اس نے بچوں کی طرح مُنہ چھپا لیا۔

ماں نے اپنے کالے کپڑوں سے اسے ڈھانپ لیا پھر اس کے دل میں اپنا چاقو پیوست کر دیا۔ ایک لرزش کے ساتھ وہ مر گیا۔ ایک ماں سے بہتر کون جان سکتا ہے کہ اس کے بیٹے کا دل کہاں دھڑکتا ہے؟ اس کے ہتھیار کو سنتریوں کے پاس پھینک کر شہر کو مخاطب کرتے ہوئے وہ بولی: "ایک شہری کی طرح جو کچھ میں اپنے وطن کے لیے کر سکتی تھی، میں نے کیا۔ ایک ماں کی حیثیت سے میں اب بھی اپنے بیٹے کے ساتھ ہوں۔ دوسرے بچے کی ماں بننے کے لیے اب میں بہت بوڑھی ہو چکی ہوں۔ اب میری زندگی کا کوئی مقصد نہیں ہے۔"

چاقو اس کے بیٹے کے گرم خون سے آلودہ تھا۔ اس نے پوری طاقت سے وہ چاقو اپنے سینے میں گھونپ لیا۔ اس بار بھی اس کا نشانہ صحیح تھا۔

(میکسم گورکی کی روسی کہانیاں)

سید شریف الحسن نقوی

محمد عثمان عارف نقشبندی
اور ان کی شاعری

جناب محمد عثمان عارف نقشبندی میرے ان مخصوص کرم فرماؤں میں ہیں جن کی ذہنی شرافت اور قلبی پاکیزگی کی میں قسم کھا سکتا ہوں۔ یہ چیزیں اکتسابی بھی ہوا کرتی ہیں خود اپنی فکری اور عملی ریاضت کا حاصل؛ لیکن اگر کسی کا خاندانی پس منظر بھی انھی سے عبارت ہو تو اس کے کردار میں ان کی نمود کچھ اور ہی جلوہ دکھاتی ہے۔ محمد عثمان عارف صاحب کا معاملہ یہی ہے۔

عارف صاحب ۲۳ اپریل ۱۹۲۳ء کو بیکانیر میں پیدا ہوئے۔ ابتدائی تعلیم انھوں نے وہیں حاصل کی۔ پھر آگرہ یونیورسٹی سے بی۔اے۔ اور علی گڑھ مسلم یونیورسٹی سے ایم۔اے۔ ایل۔ایل۔بی۔ کی سندیں حاصل کیں لیکن ان کی ذہنی تربیت میں زیادہ دخل ان کے والد محترم جناب حاجی محمد عبداللہ بیدل بیکانیری کا رہا جو ریاست بیکانیر کے مسلمانوں میں پہلے گریجویٹ اور تمام ہندو مسلمانوں میں دوسرے اعلیٰ تعلیم یافتہ شخص تھے۔ بیدل صاحب نے نہ صرف اپنے خاندان کی تعلیم و تربیت کے لیے اپنی بہترین کوششیں صرف کیں بلکہ سرکاری ملازمت میں رہتے ہوئے اپنے گھر پر اسکول قائم کرکے شہر کے لوگوں میں بھی تعلیم سے دلچسپی پیدا کی۔

بیدل صاحب نے اپنی عملی زندگی ایک وکیل کی حیثیت سے شروع کی۔ آگے چل کر وہ ڈسٹرکٹ اور سیشن جج کے عہدے پر فائز ہوئے۔ لیکن یہ ان کی زندگی کا ایک رخ تھا۔ دوسرا رخ تھا تعلیم و تدریس اور شعر و ادب سے ان کی اٹوٹ وابستگی۔ انھوں نے اردو کے علاوہ فارسی عربی اور انگریزی زبانوں میں بھی مہارت بہم پہنچائی تھی اور انگریزی کو چھوڑ کر باقی تینوں زبانوں میں شعر کہنے پر بھی قدرت رکھتے تھے۔ شاعری میں انھیں جانشین داغ بیخود دہلوی سے نسبت تلمذ حاصل تھی۔ بیخود دہلوی کے بارے میں مشہور ہے کہ وہ کسی کو خاطر میں نہیں لاتے تھے لیکن اپنے شاگرد جناب محمد عبداللہ بیدل بیکانیری کی صلاحیتوں کا اعتراف انھوں نے ان لفظوں میں کیا ہے: "بیدل نے میری زبان پر ڈاکہ ڈالا ہے۔ میرے پاس مال دنیا اور کچھ تو تھا نہیں، ایک زبان رکھتا تھا وہ حضرت بیدل کی نذر ہوئی۔ ان کے بہت سے شعر میرے ہی رنگ میں ڈوبے ہوئے ہیں۔ انھوں نے کمال محنت اور جاں فشانی سے میری زبان، میرا بیان اور میرا تخیل حاصل کرلیا ہے۔" لیکن بیدل صاحب کی شاعری محض ایک متاع مستعار نہیں جو انھیں استاد سے مل گئی ہو۔ عام عاشقانہ رنگ کو چھوڑ کر ان کے کلام میں تصوف و اخلاق اور ان کے زیر اثر خدا پرستی اور انسان دوستی کے جو عناصر جلوہ فرما ہیں، وہ خاص انھی کی چیزیں ہیں۔

محمد عثمان عارف نقشبندی انھیں محمد عبداللہ بیدل بیکانیری کے فرزند ہیں۔ انھیں اپنے پدر بزرگوار سے شعر و ادب، علم و اخلاق، فلسفہ و تصوف کی جو وراثت پہنچی، اسے انھوں نے نہ صرف سرمایۂ عزیز کے طور پر محفوظ رکھا بلکہ آگے بھی بڑھایا۔ بیدل صاحب مقامی عدالتوں کے وکیل تھے، عارف صاحب نے ہائیکورٹ اور سپریم کورٹ تک مقدمات کی پیروی کی۔ بیدل صاحب ڈسٹرکٹ اور سیشن جج رہے۔ عارف صاحب وکالت کے پیشے سے نکلے تو سیاست کی طرف متوجہ ہوئے اور کانگرس نے انھیں راجیہ سبھا کا ممبر نامزد کیا۔ محترمہ اندرا گاندھی کے زمانے میں وہ مرکزی حکومت میں ڈپٹی منسٹر رہے اور اب اتر پردیش کے گورنر ہیں۔ بیدل صاحب خدا پرست اور عاشق رسول تھے۔ نقشبندیہ سلسلے میں بیعت تھے اور اولیائے کرام سے والہانہ عقیدت رکھتے تھے۔ عارف صاحب کی ذات بھی ان صفات کی حامل ہے اور بیدل صاحب ہی کی شاعری کی طرح ان کی شاعری بھی ست رنگی دھنک کی طرح اگر ایک طرف عشق حقیقی اور حب رسول، حب اہل بیت اور حب اولیائے کرام کے پاکیزہ جذبات سے سرشار ہے تو دوسری طرف اس میں تصوف و اخلاق کے مسائل، حیات و کائنات کے حقائق اور عشق مجازی کے معاملات کی جھلکیاں بھی دیکھی جاسکتی ہیں۔

ایک زمانہ تھا جب فارسی اور اردو کے دواوین کا سرنامہ حمدیہ اور نعتیہ کلام ہوتا تھا۔ شعرا اسے خیر و برکت کا ذریعہ خیال کرتے تھے۔ کچھ شعرا کو یہ سعادت بھی حاصل ہوئی کہ انھوں نے حمد، نعت اور منقبت کے الگ دواوین مرتب کیے۔ اردو کے ایسے نعت گو شعرا میں

مولوی غلام امام شہید، احمد رضا خاں بریلوی، نیاز صاحب بریلوی، اکبر وارثی میرٹھی، حافظ عالمگیر خاں کیف ٹونکی، حافظ پیلی بھیتی، بیدم وارثی، حمید صدیقی لکھنوی، ماہر القادری اور دوسرے بہت سے نعت گو شامل ہیں۔ نعت میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے خصائل و فضائل، عالم انسانیت پر آپ کے احسانات عظیم اور آپ کی اخلاقی اور روحانی صفات: رحم و کرم، عفو درگزر، راستی و دیانت داری، عدل و انصاف اور مہر و وفا کا عقیدت مندانہ بیان شاعر اس طرح کرتا ہے کہ سننے والوں یا پڑھنے والوں پر ایک وجد و کیف کی حالت طاری ہو جائے۔ لیکن اصناف سخن میں نعت سب سے نازک صنف سخن ہے۔ وہ مقدس ذات جس پر خود خالق کائنات درود اور سلام بھیجے اور جسے رحمتہ للعالمین کا لقب دے۔ اس کی شان میں ہم جیسے گنہ گار بندوں کو لب کشائی کے لیے بڑی ہی احتیاط اور ہوشمندی کی ضرورت ہے۔ ادب و احترام کے تقاضے مستزاد۔ یہاں بے اختیار عرفی شیرازی کا ایک شعر اور ایک مقطع یاد آتا ہے:

ہزار بار بشویم زبان زمشک و گلاب
ہنوز نام تو گفتن کمال بے ادبیست

(میں زبان کو ہزار بار مشک اور گلاب سے دھولوں، پھر بھی تیرا نام لینا انتہا درجے کی بے ادبی ہے۔)

عرفی مشتاب این رہ نعت است نہ صحرا
آہستہ کہ رہ بر دم تیغ است قدم را

(عرفی عجلت نہ کر، یہ نعت کا راستہ ہے صحرا نہیں، آہستہ چل کہ تیرے قدم تلوار کی دھار پر ہیں۔)

لیکن اس دشوار گزار راہ کو تائید ایزدی کے سہارے اکثر شاعروں نے طے کیا ہے اور اس صف میں صرف مسلم ہی نہیں غیر مسلم شعرا بھی شامل ہیں۔۔۔ ہمارے زمانے میں نعت و منقبت سے جن شعرا کو خصوصی شغف رہا ہے، ان میں جناب محمد عثمان عارف کا نام خاص طور سے لیا جائے گا۔ اس وقت میرے سامنے ان کے دو ایسے مجموعے ہیں جو حمد و نعت اور سلام و منقبت پر مشتمل ہیں: "عقیدت کے پھول" جو ۱۹۸۰ء میں شائع ہوا تھا اور "جمال مصطفٰے" جو حال ہی میں منظر عام پر آیا ہے۔ ان دونوں مجموعوں کے مطالعے سے مجھ پر ایک ہی کیفیت طاری ہوتی ہے میں کوئی نام دینا چاہوں تو ایمان کی تازگی اور روح کی سرشاری کا نام دے سکتا ہوں۔

عارف صاحب کا ایک نعتیہ شعر ہے:

آنکھوں کے اشک دھوتے ہیں گے دل کے غبار کو
پہلے وضو کروں تو محمد کا نام لوں

اس سے اس والہانہ عقیدت و احترام کا کچھ اندازہ کیا جا سکتا ہے جو رسول خدا کے لیے ان کے دل و دماغ میں رچا بسا ہے۔ ان کا پورا نعتیہ کلام اسی رنگ میں ڈوبا ہوا ہے۔ نظم "ظہور قدسی" میں حضور کی ولادت کا بیان ان لفظوں میں کرتے ہیں:

آداب کے لیے ہوئے صف بستہ انبیا
حوروں نے مل کے نغمۂ صلِّ علیٰ پڑھا
جاری ہے قدسیوں کی زبانوں پہ لا الٰہ
گونجی ہوئی فضا میں ہے توحید کی صدا
عرشی تمام جھک پڑے تسلیم کے لیے
اہل زمیں کھڑے ہوئے تعظیم کے لیے

یہ بیان اُسی شاعر کو میسر آسکتا ہے جو مقام نبوت و رسالت کا عرفان و ایقان رکھتا ہو۔ اسی نظم کے اگلے بندوں میں عارف صاحب عالم انسانیت کو حضور کی دین کا ذکر اس طرح کرتے ہیں جو محض عقیدت پر نہیں صداقت پر مبنی ہے:

آئے حضور رحمت یزداں لیے ہوئے
شیرازۂ حیات کا ساماں لیے ہوئے
آسودگی قلب پریشاں لیے ہوئے
انسانیت کے درد کا درماں لیے ہوئے
دین محمدی کی جو تکمیل ہوگئی
بزم جہاں کی اک نئی تشکیل ہوگئی
ڈوبے ہوؤں کو ناؤ ترانے کو آگئے
گرتے ہوؤں کو اونچا اُٹھانے کو آگئے
بھٹکے ہوؤں کو راہ دکھانے کو آگئے
سینے سے بے کسوں کو لگانے کو آگئے
برسے جو بن کے ابر کرم غم مٹا دیے
جو دو سخا کے آپ نے دریا بہا دیے
آقا کوئی نظر میں نہ کوئی غلام ہے
دین خدا میں خاص ہے کوئی نہ عام ہے
اس دیں میں فرد فرد کا انسان نام ہے
سرگفتگو میں ان کی خلوص عوام ہے
انصاف و عدل وہ ہے طبیعت میں آپ کی
شاہ و گدا ہیں ایک شریعت میں آپ کی

اسلام نے زیردستوں کو زبردستوں اور مفلسوں کو منعموں کے جبر و تعدی سے چھٹکارا دلانے اور سماجی مساوات قائم کرنے کے لیے جس نظام کی تشکیل کی اس کا بیان ان بندوں میں کس خوبی کے ساتھ ہوا ہے۔

نعتوں کی طرح عارف صاحب کے مرثیوں، سلاموں اور منقبتوں میں بھی یہی رنگ پایا جاتا ہے۔ کربلا کا سانحہ ان کے لیے صرف آہ و بکا کا موضوع نہیں، وہ اس سے درس عمل لینے کے بھی متمنی رہتے ہیں۔ ان کے نزدیک یہ سانحہ

پورے عالم انسانیت کے لیے اپنے اندر ایک پیغام لیے ہوئے ہے: باطل کی مخالفت اور حق کی حمایت اور اس راہ میں آخری دم تک صبر و استقلال کے ساتھ کھڑے رہنے کی ہمت۔ انھیں یہ دیکھ کر دکھ ہوتا ہے کہ اب امام عالی مقام اور ان کے رفقا کی بے مثال قربانی کی یاد محض ایک رسم کے طور پر منائی جانے لگی ہے اور اس کی روح کو فراموش کر دیا گیا ہے۔ نظم "درسِ شہادت" کے یہ دو بند دیکھیے جن میں امام عالی مقام کے کردار کی جھلکیاں پیش کی گئی ہیں:

خالق پہ جان و مال سے قرباں حسینؑ ہے
روداد صبر و ضبط کا عنواں حسینؑ ہے
انسانیت کے درد کا درماں حسینؑ ہے
قائم ہے جس سے عظمتِ انساں حسینؑ ہے
دُنیا کو دے دیا ہے وہ آئینِ زندگی
مٹتی رہے گی موت میں تسکینِ زندگی
اللہ ری یہ شانِ عبادت حسینؑ کی
بنیادِ دینِ حق ہے امامت حسینؑ کی
آئے گی یاد تا بہ قیامت حسینؑ کی
کیا درس دے رہی ہے شہادت حسینؑ کی
باطل کی، جور و ظلم کی دُنیا خراب ہے
قائم جو حق پہ ہو گیا وہ کامیاب ہے

آگے چل کر اس امر پر کہ اہلِ کربلا نے تاریخ کے صفحات پر اپنے پاک خون سے جو پیغام درج کیا تھا، اسے ان کے نام لیواؤں نے بھلا دیا ہے، ان لفظوں میں اظہارِ افسوس کرتے ہیں:

افسوس ہے کہ ہم نے یہ سب کچھ بھلا دیا
رسموں میں، کارناموں کو ان کے چھپا دیا
تاریخ کو سب اپنی ٹھکانے لگا دیا
اِک واقعہ عظیم تھا اور کیا بنا دیا
ہر ایک رسم وجہ عقیدت بنی ہوئی
بدعت ہر اِک ہے آج شریعت بنی ہوئی
بھٹکا ہوا ہے راہ سے کچھ ایسا کارواں
منزل کا دُور، دُور نہیں نام اور نشاں
اس پر یہ ظلم چلتی ہیں ظلمت کی آندھیاں
حافظ خدا ہے، دیکھیں پہنچتے ہیں ہم کہاں
لفظی عقیدتیں ہیں جنابِ امام سے
نسبت نہیں ہے کوئی ہمیں ان کے کام سے

دو سلاموں کے یہ شعر بھی ملاحظہ طلب ہیں، ان میں بھی کربلا کی اسی معنویت پر زور دیا گیا ہے جو ہمارے لیے ایک درسِ فکر و عمل کی حیثیت رکھتی ہے اور جو امام عالی مقام کے پاکیزہ کردار میں متشکل ہو گئی تھی:

عالم میں روشنی ہے شہیدوں کے خون کی
بھڑکا ہوا ہے، شعلۂ غم ہے حسینؑ کا
ہر دَورِ انقلاب میں روحِ حسینؑ ہے
ہر دَورِ انقلاب کرم ہے حسینؑ کا
جو بڑھ گیا ہے راہِ خدا میں وہ بڑھ گیا
پیچھے نہ ہٹ سکے گا قدم ہے حسینؑ کا

ہر زخم پہ ہوتا ہے ادا شکر خدا کا
معلوم تھا شہ کو جو تقاضا تھا وفا کا
کٹوا دیا ہنس ہنس کے جوانانِ چمن کو
شبیرؑ سبق دے گئے تسلیم و رضا کا
گونج اٹھا جہاں حق و صداقت کی صدا سے
ہر قطرہ زباں بن گیا خونِ شہدا کا

عشقِ رسول اور حبِّ اہلِ بیت کی لازوال دولت کے ساتھ ساتھ خدا نے عارف صاحب کو ایک اور نعمت سے بھی نوازا ہے اور یہ ہے اولیائے کرام کے ساتھ ان کی والہانہ عقیدت۔ سب جانتے ہیں کہ عارف صاحب بزرگانِ دین کی درگاہوں پر کس خشوع و خضوع کے ساتھ حاضریاں دیتے ہیں اور عرس کی تقریبات میں کیسی عقیدت اور کتنے احترام کے ساتھ شریک ہوتے ہیں۔ یہ عقیدت جب اشعار میں ڈھلتی ہے تو بڑے ہی پُر اثر الفاظ کا قالب اختیار کرتی ہے۔ ان بزرگوں کی ذات بابرکات اور ان کی نیک تعلیمات سے فیض اٹھانے کا جذبہ جو عملی زندگی کو بنانے سنوارنے کے کام آئے ان کی منقبتوں کا بھی خاصہ ہے۔

حضرت عبدالقادر جیلانی کی شان میں کہتے ہیں:

نظر جس پر پڑی تیری، مقدر جگمگا اٹھا
ہزاروں کی یونہی قسمت بنی ہے غوثؒ جیلانی
مقامِ جاوداں کی آپ کس منزل پہ پہنچے ہیں
جہاں ہر اِک نفس اِک زندگی ہے غوثؒ جیلانی

حضرت خواجہ معین الدینؒ چشتی کو مخاطب کرکے کہتے ہیں:

زمیں اجمیر کی ہے سجدہ گاہِ عاشقاں خواجہؒ
تمھارا آستاں ہے کعبۂ ہندوستاں خواجہؒ
مرادیں کیسی بھرتے ہو، خزانے کیا لٹاتے ہو
چلی آتی ہے دُنیا کارواں در کارواں خواجہؒ

دوسرے اولیائے کرام میں حضرت نظام الدینؒ اولیا، حضرت سید پیر جماعت علی شاہؒ، حضرت پیر مہتاب شاہؒ، حضرت پیر محبوب بخش چشتیؒ، حضرت پیر غلام سرورؒ، حضرت احمد علی باباؒ ناگوری، حضرت پیر سید حیدر شاہؒ صاحب کی تعلیمات و کرامات کا عقیدت مندانہ بیان عارف صاحب نے اپنی منقبتوں میں کیا ہے اور ایک کیفیت پیدا کر دی ہے۔

"نورِ زندگی" عارف صاحب کی رُباعیوں اور قطعوں کا مجموعہ ہے۔ رُباعی کو حکیمانہ نکات کے اظہار کا بہترین ذریعہ سمجھا گیا ہے۔ یہ بات

کسی حد تک قطعے کے بارے میں بھی کہی جا سکتی ہے۔ قدیم زمانے میں جو قطعات کہے گئے' ان سے قطع نظر موجودہ قطعہ بھی رباعی کی طرح چار مصرعوں پر مشتمل ہوتا ہے' اور رباعی ہی کی مانند بات آخری مصرعے پر پہنچ کر مکمل ہوتی ہے۔ عارف صاحب نے ان دونوں اصنافِ سخن کو حکیمانہ نکات کے اظہار کے ساتھ زندگی کی گوناگوں کیفیات' مشاہدات و احساسات کے اظہار کا ذریعہ بنایا ہے۔ عارف صاحب وقت کے مختلف نشیب و فراز سے گزرے ہیں۔ نشاط آفریں ساعتیں بھی انھوں نے دیکھی ہیں اور غم انگیز لمحے بھی مگر زندگی کی طرف ان کا رویّہ مثبت رہا ہے۔ وہ اسے ایک ایسی نعمت خداوندی سمجھتے ہیں جس کی' اس کے ہر روپ میں قدر کی جانی چاہیے۔ درد و غم زندگی کا لازمہ سہی مگر زندگی سے بھرپور شناسائی اور قربت انھیں گوارا بنا دیتی ہے یہی احساس ہے جو عارف صاحب کو کبھی بے کیف یا بدحظ نہیں ہونے دیتا اور زندگی کی برکتوں سے انھیں بہرہ ور کیے ہوتے ہے۔ یہ دو رُباعیاں دیکھیے:

کیوں گردشِ ایّام سے گھبراتا ہے
ہر دَور زمانے کا گزر جاتا ہے
رہ فصلِ خزاں میں بھی شگفتہ خاطر
کانٹوں میں بھی گُل بہار دکھلاتا ہے

ملتی ہے کہیں یوں بھی عارف منزل
اس راہ میں درکار ہے عزمِ کامل
افلاک کی سرحدوں کو چھونا آساں
منزل پہ محبت کی پہنچنا مشکل

انسان چاند پر پہنچ گیا ہے مگر خود اس کے دیدہ و دل کی دُنیا خود شناسی اور خدا شناسی کے نور سے خالی ہے' عارف صاحب اسے مخاطب کر کے کہتے ہیں:

ہے اصل حقیقت سے تو مہجور ابھی
تاریک ہے دل' آنکھ ہے بے نور ابھی
اے چاند کی دُنیا میں پہنچنے والے
انسان کی منزل ہے بہت دُور ابھی

عارف صاحب کی چند رباعیوں میں رندانہ مضامین بھی نظم ہوئے ہیں' ایک رُباعی اس سلسلے کی بھی:

فطرت کا بھی کیا لطف کریمانہ ہے
گھنگھور گھٹا جھومتا میخانہ ہے
ہر قطرۂ شبنم میں ہے کیفِ صہبا
ہر پھول چھلکتا ہوا پیمانہ ہے

عارف صاحب کے ہاں قطعات کی تعداد رُباعیوں سے زیادہ ہے اور ان کی طبیعت کے جوہر بھی یہاں زیادہ کھلتے نظر آتے ہیں۔ کسی تبصرے کے بغیر میں یہاں ان کے چند قطعات نقل کرتا ہوں جن سے اس صنفِ فن میں عارف صاحب کے فکری رنگا رنگی اور بوقلمونی اور اسلوب پر قدرت کا کچھ اندازہ ہو سکے گا:

نور و نکہت' جمال و رعنائی
حسن کا شاہکار ہے دُنیا
باوجود ہزار رنج و الم
کیسی باغ و بہار ہے دُنیا

کتنا قدرت کا پیار ہے تجھ پر
لالہ و گُل کی تجھ کو سیج ملی
کیسی دلکش ہے تو عروسِ جہاں
چاند تاروں سے تیری مانگ بھری

سہل ہو جائے گی رہِ دشوار
گامزن ہو' قدم بڑھا تو سہی
نُور ہی نُور ہوگا منزل تک
تو چراغِ یقیں جلا تو سہی

زندگی کا وقار قائم رکھ
ناز بردارِ زندگی بن کر
ننگ ہستی ہے بے تمنّا دل
آرزو کے چراغ روشن کر

کیف' نشہ' سرور اور نشاط
سوز ہے' ساز ہے' ترنّم ہے
زندگی کی ہزار شکلیں ہیں
کبھی ساحل' کبھی تلاطم ہے

فنکار زندگی کا ترجمان ہوتا ہے اگر زندگی کی ہزار شکلیں ہیں تو اس کے فن کی بھی ہزار جہتیں ہوں گی لیکن جس طرح اہلِ نظر زندگی کی کثرت میں وحدت کا جلوہ دیکھ لیا کرتے ہیں اسی طرح احساس و اظہار کی سطح پر کسی فنکار کے ہاں جو تنوع پایا جاتا ہے' اس کے باوجود مختلف اسالیب اس کے ہاں ہم آہنگ ہو کر ہی اس کی فنکارانہ شناخت قائم کرتے ہیں۔۔۔۔ عارف صاحب کے ہاں ہیئت کا تنوع بھی ہے اور موضوعات کا بھی لیکن زبان و بیان کا وہ رکھ رکھاؤ جو ہماری کلاسیکل شاعری کی دین ہے' اور وہ مثبت ذہنی رویّہ جو مذہب و تصوف کے ساتھ ان کے گہرے قلبی لگاؤ کا ثمرہ ہے' ان کی پوری شاعری کی پہچان ہے۔

عارف صاحب کی غزلیں اپنے آپ میں موضوعات و مسائل کی ایک وسیع کائنات سمیٹے ہوتے ہیں۔ دل سے دُنیا یا دُنیا سے دل تک کے سفر میں ایک حسّاس انسان کو کیا

حلے پیش آسکتے ہیں' آج کے مادیت پسند اشرے میں اخلاقی اور روحانی قدریں کس ت شکست و ریخت کا شکار ہوئی ہیں شہروں ں جنگل کا قانون کس بُرے طریقے سے ن برا جاتا ہے اور پُر رونق گلیاں اور بازار کس ت آن کی آن میں خاک و خون میں لتھڑ جاتے ں. فرد سے فرد کا رشتہ اعتبار و اعتماد کا ہ کر بدظنی و بدگمانی کا رشتہ کیوں بن گیا ہے. یہ سارے سوال ہیں جن سے ہمیں عارف احب کی غزل دوچار کراتی ہے لیکن جیسا کہ پ جانتے ہیں غزل کا اصل موضوع تو حسن و عشق کے معاملات ہیں. میں نہیں کہہ سکتا کہ ن نازک معاملات سے عارف صاحب کو بھی ہی واسطہ پڑا ہے یا نہیں لیکن ایک شاعر کی حیثیت سے انھیں ان معاملات سے ذہنی شغف ور رہا ہے. ان کی غزلوں کے بہت سے اشعار ات کی گواہی دیتے ہیں کہ حسن کے نام پر ن کے دل کی دھڑکنیں تیز ہو جاتی ہیں اور وہ پنے سینے میں وہ لذت آمیز کسک محسوس رتے ہیں جسے جذبۂ عشق سے تعبیر کیا جاسکتا ہے. گوپی چند نارنگ صاحب کا تو یہ خیال ہے کہ ان کی "زیادہ تر غزلیں عاشقانہ کیفیتوں پتہ دیتی ہیں' وہ مزید کہتے ہیں" یہ نہیں سمجھنا ہیے کہ شباب کی رنگین وادی میں انھوں نے ی راہ بےتعلقی و بےنیازی سے طے کی ہے . . . عارف اس وادی کے بھی رمز آشنا ہیں."

اب عارف صاحب کی غزلوں کے چند شعار سنیے جو ان معروضات کی تائید کرتے نظر ئیں گے. ایک مطلع ہے:

جانے دو ڈوبتے سورج کی جو لالی جائے
زندگی ایک نئی صبح میں ڈھالی جائے

یہ وہی مثبت انداز نظر ہے جو بدلتے ہوئے وقت کا ساتھ دینے ہی پر نہیں اس کی رفتار پر اثر انداز ہونے کا حوصلہ بھی رکھتا ہے. یہ لے عارف صاحب کے ہاں خاصی بلند ہے:

موقوف ہے سب زندہ دلی حسنِ نظر پر
غم خانۂ دنیا کی ہر اک چیز حسیں ہے

نظر سرمایۂ جاں ہے تبسم راحت دل ہے
سکونِ زندگی کو فتنہ ساماں کون کہہ دے گا

غمِ زندگی کے واسطے تریاق بن گئے
جو سرخوشی کا زہر چڑھا تھا اتر گیا

جو شخص غم کو زندگی کا تریاق بنالے اسے آلامِ روزگار کی تلخیاں کیوں کر بے حوصلہ کر سکتی ہیں. موجودہ زمانے کے کئی مظاہر ایسے ہیں جن کی بدنمائی مسلّم ہے' عارف صاحب کی نظر بھی ان تک پہنچتی ہے' ان کی بدنمائی اور گراں باری کو محسوس کرتی ہے اور ان سے ایسے شعر بھی کہلواتی ہے:

اک خون کا سیلاب ہے' اک آگ کا دریا
جو امن کی دھرتی تھی وہ مقتل کی زمیں ہے
ہوگا یہ کبھی مالکِ و مختارِ زمانہ
اب ہاتھ میں انسان کے دینا ہے زمیں ہے

لیکن امید کا دامن ان کے ہاتھ سے نہیں چھوٹتا. وہ انسان اور انسانیت کے روشن مستقبل پر غیر متزلزل یقین رکھتے ہیں' اسی لیے اسے تلقین کرتے ہیں:

کر لیے مرنے کے سامان ہزاروں پیدا
اب تو جینے کی کوئی راہ نکالی جائے

انھیں وقت کی غلط بخشیوں کا بھی احساس ہے جو ان سے کہلواتا ہے:

صحرا کی پیاس کوئی بجھائے تو بات ہے
بادل سمندروں پہ جو برسا تو کیا ہوا

لیکن جلد ہی فطرت کی دل نوازیاں ان کا دھیان اپنی طرف کھینچ لیتی ہیں اور وہ محسوس کرتے ہیں. انسان کے خود ساختہ ماحول نے خواہ کتنی ہی تفریقوں کو جنم دیا ہو لیکن قدرت نے تو اپنی نعمتوں کے دروازے سبھی پر یکساں طور پر وا کر دیے ہیں اب اگر کوئی ان سے متمتع نہ ہو سکے تو یہ اس کی اپنی کوتاہی ہے:

ساماں ہزار دعوتِ قلب و نظر کے ہیں
فطرت کا ایک خوانِ کرم ہے بچھا ہوا

خود انھوں نے اپنے ذہن و دل کے دریچے کھلے رکھے ہیں کہ ماحول کی تاریکیوں کا سینہ چیرتی ہوئی اک صبحِ نو کی شوخ کرن پتہ نہیں کب ادھر آنکلے:

اک صبحِ نو کی شوخ کرن کی امید میں
رکھتا ہوں ذہن و دل کا دریچہ کھلا ہوا

ذہن و دل کے اسی کھلے دریچے سے وہ اس دنیا کی بھی سیر کرتے ہیں جو رنگ و رعنائی کی دنیا ہے' جہاں کی صبحیں کسی کے روئے زیبا کی تابانیوں سے روشن ہیں تو شامیں کسی کی زلف معنبر کی مہک میں بسی ہوتی' جہاں پیار کا جذبہ اجنبی چہروں کو بھی محبوب بنا دیتا ہے:

پیار کا جذبہ بھی کیا خواب دکھا دیتا ہے
اجنبی چہرے کو محبوب بنا دیتا ہے

اور جہاں کوئی انجان مغنی رات کے سناٹوں میں وہ نغمہ سناتا ہے جو دل کی دھڑکن بن جاتے:

شب کی تنہائی کے سناٹے میں اکثر کوئی
دل کی دھڑکن میں ترا نغمہ سنا دیتا ہے

حسن اور مظاہرِ حسن سے عارف صاحب کا

لگاؤ ان کے اکثر اشعار میں رچا بسا ہے :

کہکشاں، چاند، ستارے ترے نقشِ پا ہیں
آسمانوں کو ترا حسن سجا آیا ہے

وقت نے کتنے ہی چہروں کی اڑا دی رنگت
کاش رخساروں سے تیرے نہ یہ لالی جائے

جوشِ بہارِ حسن، کہ شوخیِ عشق ہے
ہر پھول کا جو بندِ قبا ہے کھلا ہوا

چاندنی چاند کی، سورج کی شعاعیں بھر لوں
کھول دے آکے اگر دل کا دریچہ کوئی

یہ بھی ہے کہ عارف صاحب کا حسن سے لگاؤ محض روحانی نہیں، وہ جسم کے تقاضوں کی دھمک بھی اپنے اندر محسوس کرتے ہیں اور اس کے اظہار میں انھیں کوئی جھجک بھی نہیں۔ ایک جگہ بڑی صفائی سے اعتراف کرتے ہیں :

جذبۂ جنس کی آوارہ مزاجی، توبہ
کتنے جسموں کے لیے ذہن کو للچایا ہے

محمد عثمان عارف صاحب کی شاعری کا ایک معتد بہ حصہ وہ ہے جسے ہم قومی اور وطنی شاعری کہہ سکتے ہیں۔ "نذرِ وطن" کے نام سے ان کی جو کتاب شائع ہوئی ہے وہ اسی قبیل کی نظموں پر مشتمل ہے۔ عارف صاحب ایک سچے محبِ وطن ہیں، ہندوستانی سرزمین کے ذرے ذرے سے انھیں محبت ہے اور وہ ان ذروں کو ماہتاب و آفتاب بنا دینے کی تمنا اپنے دل میں رکھتے ہیں۔ انھیں اگر ایک طرف ہندوستان کی تاریخ، یہاں کی تہذیبی اور تمدنی روایات، یہاں کے جغرافیائی ماحول اور قدرتی مناظر سے والہانہ لگاؤ ہے تو دوسری طرف ان عظیم شخصیتوں کے لیے بھی ان کے دل میں بے پناہ عقیدت ہے جنھوں نے اس صد رنگ باغ کو اپنے خونِ جگر سے سینچا اور یہاں کے شجر و حجر پر اپنی کاوشوں کے انمٹ نقوش ثبت کیے۔ "نذرِ وطن" کی پہلی نظم ہے : "جنت مرے وطن کی"۔ اس کے چند شعر پڑھیے اور حب الوطنی کے اس جذبے سے سرشار ہو جائیے جس میں خود شاعر ڈوبا ہوا ہے :

جنگل ہرے بھرے ہیں، سرسبز کھیتیاں ہیں
باغوں سے ہے دوبالا رنگت مرے وطن کی

چشمے ابل رہے ہیں، دریا مچل رہے ہیں
قدرت بڑھا رہی ہے زینت مرے وطن کی

اس کی زمیں فلک ہے، ذرے ہیں چاند تارے
تاریخ کہہ رہی ہے عظمت مرے وطن کی

ہے علم و فضل اپنا گہوارۂ ادب ہے
وگیان گیان سے ہے شوکت مرے وطن کی

اہلِ ہند کی وسیع القلبی اور امن پسندی کا ذکر ان لفظوں میں کرتے ہیں :

ہے پیار اس کا مسلک، امن و اماں ہے مقصد
مشہور ہے جہاں میں الفت مرے وطن کی

دشمن رہے جو اس کے ان کو گلے لگایا
دیکھے تو کوئی دل کی وسعت مرے وطن کی

روحانیت ہندوستان کا قدیم ورثہ ہے اور یہاں مختلف مذاہب بہ یک وقت پھولے پھلے ہیں۔ یہاں کے صوفیوں اور رشیوں منیوں نے بقائے باہم کے اس اصول کو جو آج ہمارے ملک کی خارجہ پالیسی کی بنیاد ہے، اندرونِ ملک صدیوں پہلے فروغ دیا اور پروان چڑھایا۔ عارف صاحب کہتے ہیں :

روحانیت یہاں ہے، انسانیت یہاں ہے
پاکیزہ کس قدر ہے فطرت مرے وطن کی

گیتا کی جوت اس میں قرآں کا نور اس میں
چمکی ہوئی ہے کیسی قسمت مرے وطن کی

خواجہ معین چشتی، نانک، کبیر، گوتم
پیغامِ حق ہے ان کا رحمت مرے وطن کی

پھر تمدنی مظاہر کی طرف ان کا دھیان جاتا ہے اور کہتے ہیں :

یہ تاج، لال قلعہ، ایلورا اور اجنتا
کہتے ہیں داستاں صنعت مرے وطن کی

یہ نظم اس شعر پر ختم ہوتی ہے جو ہمارے عزم و استقلال کی طرف بھی اشارہ کر رہا ہے اور ہماری تاریخ کو بھی دہراتا ہوا لگتا ہے :

ٹوٹی کبھی نہ ٹوٹے ظلم و ستم سے عارف
ہمت مرے وطن کی، طاقت مرے وطن کی

آزادی کے بعد ملک کی تعمیر و ترقی میں جن شخصیتوں نے اپنی زندگیاں کھپا دیں، ان میں محترمہ اندرا گاندھی کا نام بہت نمایاں ہے۔ عارف صاحب اندرا جی سے بے پناہ عقیدت رکھتے ہیں اور اس مجموعے کی اکثر نظموں میں انھوں نے انھی کی برگزیدہ صفات اور قوم و وطن کے لیے ان کی خدمات کو موضوعِ سخن بنایا ہے۔ دوسری شخصیت مہاتما گاندھی ہیں جنھیں انھوں نے خراجِ عقیدت پیش کیا ہے۔ بعض نظموں میں اہلِ وطن کو دعوت دی ہے کہ وہ وقت کی آواز پر دھیان دیں اور تخریب پسندی سے کنارہ کش رہتے ہوئے باہمی اتحاد و اعتماد کے ساتھ تعمیری سرگرمیوں میں منہمک ہو جائیں۔

اس زمانے میں جب ہر نو آموز متبدی خود ہی عظمت کا تاج اپنے سر پر رکھ لیتا ہے، عارف صاحب کا یہ شاعرانہ ضبط بطورِ خاص دادطلب ہے کہ وہ اپنے شعری کارناموں کو جو متنوع بھی ہیں، پُرمعنی بھی اور دلپذیر بھی، چالیس پینتالیس سال کے فنی ریاض کے بعد منظرِ عام پر لائے ہیں۔ اس طویل ریاضت نے ان کے بیان میں جو سلاست و صفائی اور ان کی فکر میں جو گہرائی اور گیرائی پیدا کی ہے اسے ایک شاعر کا حقیقی سرمایۂ افتخار کہا جا سکتا ہے۔

ہم طرح اشعار

جنوری کے شمارے میں دیے جانے والے مصرعے پر ہمیں ہمیشہ کی طرح سینکڑوں شعر موصول ہوئے لیکن ان میں زیادہ تر ایسے تھے جن کی بحر بدلی ہوئی تھی اور کچھ ایسے تھے جن میں ردیف قافیے کو بھی نظرانداز کر دیا گیا تھا۔ اگر قارئین شعر بھیجنے سے پہلے طرحی مصرعے کو بغور دیکھ لیا کریں تو شاید یہ صورت پیدا نہ ہو۔

بہ شعر تقطیع، بحر اور درست ردیف قافیے کے ساتھ موصول ہوئے ہیں ان کا انتخاب درج ذیل ہے۔ جلد سے جلد ان حضرات کو ارسال کیا جائے گا جن کے بھیجے ہوئے اشعار چوکھٹے میں دیے جا رہے ہیں۔

آئینہ دیکھنے کا گزرتا نہیں خیال
اپنی خبر نہیں انھیں میری خبر کہاں
(آتش)

مرسلہ: انیس ساجدہ سہروردی، انگلینڈ

دم کیا ہے گا کوئی نزہت کا یار کی
میرا سا دل کہاں ہے، میرا سا جگر کہاں
(آتش)

مرسلہ: نتیجہ سہروردی، انگلینڈ

مانا کہ لطف عشق میں ہے ہم نگر کہاں
کیا سوجھتا نہیں کہ پڑی ہے نظر کہاں
(داغ)

مرسلہ: نوشابہ بیگم، مجاہدپور، بھاگلپور

بھولا ہوں راہ فرط محبت میں دیکھیے
ہوتی ہے آج شام غریبی سحر کہاں
(داغ)

مرسلہ: سلطانہ بیگم، مجاہدپور، بھاگلپور

الفت جتائیے تو غلط جھوٹ نادرست
دل مانگیے تو کہتے ہیں کیسا، کدھر کہاں
(داغ دہلوی)

مرسلہ: شبانہ تبسم، مجاہدپور، بھاگلپور

اے آہ دل میں رہ کہ جو پردہ رہے ترا
جاتی ہے دوڑ دوڑ کے تو بے اثر کہاں
(داغ)

مرسلہ: ہاشم احمد، مجاہدپور، بھاگلپور

صورت میں اتحاد تو سیرت میں اختلاف
تجھ سا ہو اور تجھ سا نہ ہو وہ بشر کہاں
(داغ)

مرسلہ: محمد برکت علی، مجاہدپور، بھاگلپور

تھم تھم کے وار کر کہ مرا درد مٹ نہ جائے
جب میں نہیں تو لذت زخم جگر کہاں
(داغ)

مرسلہ: محمد لیسین احمد حقانی، مجاہدپور، بھاگلپور

میخانے کے قریب تھی مسجد بھلے کو داغ
ہر ایک پوچھتا ہے کہ حضرت ادھر کہاں
(داغ)

مرسلہ: محمد قاسم علی، مجاہدپور، بھاگلپور

تھا اس کا دیکھنا ہی سراسر خلاف عقل
کمبخت جا پڑی ہے ہماری نظر کہاں
(میر مہدی حسن نوح)

مرسلہ: ابن غوری، ملگنڈا، دہلی

محبوب بلبل کے پاس سے جانے ہو گھر کہاں
پھر تم کہاں یہ عاشق خستہ جگر کہاں
(جوش ملسیانی)

مرسلہ: وحیدہ تبسم، صاحب گنج

کہتے ہو کیا حضور کہ آئیں گے وقت صبح
اس شب کو خاتمہ ہے ہمارا سحر کہاں
(جوش)

مرسلہ: وحیدہ تبسم، صاحب گنج

تاریک دل کو آئینہ جس نے بنا دیا
کیا جانیے چھپا ہے وہ آئینہ گر کہاں
(اقبال)

مرسلہ: حامد مرزا، بسیسٹر

تقدیر میں ہے اس کی فشار لحد وہی
تدبیر سے اڑا بھی تو پہنچا بشر کہاں
(تلوک چند محروم)

مرسلہ: محمد معزالدین مکرم، حیدرآباد

کیا جانیے خیال کہاں ہے، نظر کہاں
تیری خبر کے بعد پھر اپنی خبر کہاں
(جگر)

مرسلہ: معتصم الرحمٰن، کامٹی (ناگپور)، افتخار قاسم خان سرائے (سنبھل)

آج اس کی میہماں ہے کل اس کی میہمان
اس خانماں خراب محبت کا گھر کہاں
(جگر)

مرسلہ: محمد فصاحت کوثر (سنبھل)، محمد مبین اختر (بھاگلپور)

ہر گام پہ ہے منزل نو جستجو طلب
جاتا ہے سر اٹھائے ہوئے بے خبر کہاں
(جگر)

مرسلہ: محمد ہمایوں انصاری (بھاگلپور)، محمد وثیق رغاب (سنبھل)

مل کر تجوم جلوہ میں خود جلوہ بن گئی
پہونچا ہے کس جگہ سے مقام نظر کہاں
(جگر)

مرسلہ: محمد قاسم امام معرفت عبدالکریم، مجاہدپور ویسٹ بھاگلپور، بہار ۸۱۲۰۰۲

کیا رسم ہوا کہ رسم محبت بدل گئی
دامن سے اب معاملہ چشم تر کہاں
(جگر)

مرسلہ: محمد نصر، مجاہدپور، بھاگلپور

سننے کو ہم شمع کی کوئی کمی نہیں
لیکن خود اپنی فکر خود اپنی نظر کہاں
(جگر)

مرسلہ: ارشاد فضل نعمانی، سبزی پور

ہر چند کائنات دو عالم میں اے جگر
انساں ہی ایک چیز ہے انساں مگر کہاں
(جگر)

مرسلہ: محفوظ الرحمٰن (ناگپور)، مظہر حسن، مجاہدپور ویسٹ، بھاگلپور

ظلمت بکھر رہی ہے اجالوں کے روپ میں
اے ہم نشیں فریب سحر ہے سحر کہاں
(انساں مس)

مرسلہ: ماجد مرزا، کارخانہ روڈ، بیڑ

دنیا میں اور اس کا ٹھکانا کہیں نہیں
جائے غم فراق مجھے چھوڑ کر کہاں (دعش ملسیانی)

مرسلہ: محمد عقیل الرحمٰن، بھاگلپور

گم کردہ راہ اہل حرم اہل دیر بھی
ناصر کرے تلاش تری رہ گزر کہاں (ناصر کاظمی)

مرسلہ: فرید مرزا، کارنجہ روڈ، بیڑ

نا کر حسن آہ سے ہوتا ہے بیقرار
لیکن کسی کی آہ میں اتنا اثر کہاں (شکیل بدایونی)

مرسلہ: زین اللہ صدیقی جلالپوری، بستی

مجھ ماورائے ہوش کو اتنی خبر کہاں
لے جا رہی ہے گردش شام و سحر کہاں (نریش کمار شاد)

مرسلہ: ساجد مرزا معرفت پیرا ماؤنٹ نرسری
ہاؤس، کارنجہ روڈ، ضلع بیڑ، مہاراشٹر ۴۳۱۱۲۲

دیر و حرم سے دور وجود و عدم سے دور
لے جا رہی ہے مجھ کو تری رہ گزر کہاں (نریش کمار شاد)

مرسلہ: حامد مرزا، کارنجہ روڈ، بیڑ

دنیا سے بھی الگ ہوں میں تم سے بھی دور ہوں
دیوانگی گئی ہے مجھے چھوڑ کر کہاں (شاد تمکنت)

مرسلہ: احمد مرزا، کارنجہ روڈ، بیڑ

ہر ذرہ آستاں ہے تری جلوہ گاہ کا
تو ہی بتا مجھے کہ جھکاؤں میں سر کہاں (آر ڈی شرما تاثیر)

مرسلہ: ایم صابر سرگم، ویلکم، مظہر ٹولہ،
صاحب گنج ۸۱۶۱۰۹ (بہار)

کہتے ہیں جس کو لوگ محبت، خلوص، پیار
وہ چیز اس جہان میں ملتی ہے پر کہاں

(خمار جالندھری)

مرسلہ: صبا ناز، صاحب گنج

——— (بقیہ صفحہ ۵۸ پر)

سرورق کے اندرونی صفحے کے لیے موصولہ عنوانات

جنوری ۱۹۸۹ء کے "ایوان اردو دہلی" کے سرورق کے اندرونی صفحے پر جو تصویر چھاپی گئی تھی اس کے لیے موصولہ والے شعری اور نثری عنوانوں میں سے تصویر کی مناسبت سے موزوں سمجھے جانے والے چند عنوان ذیل میں درج کیے جا رہے ہیں

شعری عنوانات

ہزاروں لالہ و گل ہیں ریاض ہستی میں
وفا کی جس میں ہو بو وہ کلی نہیں ملتی (اقبال)

مرسلہ: ایم۔ ایم حسن شبنم نورچکوی، مقام و پوسٹ
نورچک وایا ہومئی رنوے، ضلع مدھوبنی، بہار ۸۴۷۲۱۷

یوں مسکرائے جان سی کلیوں میں پڑ گئی
یوں لب کشا ہوئے کہ گلستاں بنا دیا (اصغر گونڈوی)

مرسلہ: محمد مہدی حسن نورچکوی، مدھوبنی

یوں مسکرا رہے ہو کہ دل کو نہ کل پڑے
کیا چاہتے ہو دل سے کلیجہ نکل پڑے (جوش)

مرسلہ: منصور حسین، انڈا بازار، برہانپور

جمع ہوئے ہیں کچھ حسیں گرد مرے مزار کے
پھول کہاں سے کھل گئے دن تو نہیں بہار کے (نامعلوم)

مرسلہ: محمد علی، منڈی بازار، برہانپور

چند ہنستے ہوئے پھولوں کا چمن نام نہیں
غور سے دیکھ کہ پامال صبا ہیں کتنے (روشن نگینوی)

مرسلہ: ناصر حسین، برہان پور

یہ شہر اجنبی ہے نہ تنہا پھرا کرو
ہمجولیوں کے سنگ ابھی تم رہا کرو (وحید انجم)

مرسلہ: ایم صابر سرگم، ویلکم، صاحب گنج

صحن گلشن میں ترا جب بھی گذر ہوتا ہے
لگتا ہے باغ کا ہر غنچہ غزل خواں مجھ کو (اظہر نیر دربھنگوی)

مرسلہ: ابوذر ہاشمی، بھلائی نگر

لبوں پہ موج تبسم، دلوں میں رقص بہار
مہک رہی ہے فضا مسکرا رہے ہیں چراغ (بشیر فاروقی)

مرسلہ: کاشف عمر بن جدید، حبیب پور، صاحب گنج

نثری عنوانات

"خوابوں کے سویرے" (جمیلہ نازلی کا ناول)

مرسلہ: کامران خاں معرفت ادریس خاں
(کرشنا گیراج) نیو مسلم ہائی اسکول، نا تھنگر روڈ، بھاگلپور، بہار ۸۱۲۰۰۱

"روزی کا سوال" (واجدہ تبسم کا افسانہ)

مرسلہ: محمد سبحان حیدر، سمیناوی، ضلع بیگوسرائے، بہار

"اپنی دھرتی چاند کا درپن" (بیکل اتساہی کا مجموعۂ کلام)

مرسلہ: ایس مسعود حسن، نیو کریم گنج، گیا

"تین چہرے ایک سوال" (کشمیری لال ذاکر)

مرسلہ: سامران خاں، حبیب پور (بھاگلپور)

"شکاری عورتیں" (سعادت حسن منٹو کے افسانوں کا مجموعہ)

مرسلہ: ارشاد احمد، مخدوم سرائے، ویسٹ سیوان

"تین چہرے" (سعادت حسن منٹو کے افسانے)

مرسلہ: محمد ضیاء الحق ضیا، قلی پاڑہ، صاحب گنج

"واپسی کا سفر" (عبداللہ حسین کا ناول)

مرسلہ: محمد واعظ الحق حکیم، قلی پاڑہ، صاحب گنج

"چند لمحے نشاط کے" (انور خاں کا افسانہ)

مرسلہ: ظہیر اکرم، پلادل، ہزاری باغ

"صحرا کی آگ" (اسلم راہی کا ناول)

مرسلہ: رتن لعل گپتا، دہیا ٹولہ، صاحب گنج

"خوابوں کی برات" (سلیمان اریب کی نظم)

مرسلہ: محمد شکیل الرحمٰن، بھاگل پور

"سویرے کی سیر" (عبدالستار انصاری کا انشائیہ)

مرسلہ: شبانہ تبسم، مجاہد پور، بھاگلپور

"خوشبو کا سفر" (عارف خورشید کا افسانہ)

مرسلہ: محمد شاداب قیصر، گارڈن ریچ روڈ، کلکتہ

گذشتہ پہلے نمبر پر درج شعری عنوان اور پہلے اور دوسرے نمبر پر درج نثری عنوان بھیجنے والے حضرات کو ارسال کیا جا رہا ہے۔

نئی مطبوعات

اُردو ناول میں طنز و مزاح

تصنیف : ڈاکٹر شمع افروز زیدی
موضوع : تحقیق
صفحات : ۳۶۹، ڈیمائی سائز، مجلّد
قیمت : ۱۰۰ روپے
تقسیم کار : بیسویں صدی پبلی کیشنز، دہلی ۶

جب کسی اچھی اور معقول کتاب سے متعلق یہ اطلاع ملتی ہے کہ یہ پی ایچ ڈی کا مقالہ ہے تو حیرت ہوتی ہے۔ ڈاکٹریٹ کے اچھے مقالوں کا لکھا جانا ہماری جامعات میں کب کا ممنوع ہو چکا . . . دو چار سال پہلے 'بیدی نامہ' نظر سے گذرا تھا تو طبیعت ہشاش بشاش ہو گئی تھی۔ اب یہ مقالہ 'اُردو ناول میں طنز و مزاح' ہاتھ آیا تو طبیعت کی بشاشت عود کر آئی (ہشاشت کوئی چیز نہیں ہوتی اس لیے وہ واپس نہیں آئی)۔

اردو ناول میں طنز و مزاح تو صرف عنوان ہے۔ جیسے بہت بڑے مکان کے صدر دروازے پر چھوٹی سی نیم پلیٹ لگی ہو (پلیٹ بھی اس کے لیے کوئی لفظ ہوا۔ یہ تو طشتری بھی نہیں ہوئی)۔ مقالہ نگار نے اصل میں طنز و مزاح کی تلاش میں پورے ادب کو کھنگال ڈالا ہے اور جہاں اس کی رمق بھی دکھائی دی ہے اسے وہاں سے اٹھا لیا ہے۔ مشکل یہ ہے کہ اُردو زبان میں طنز و مزاح کو دو ٹکڑے کرکے دیکھا جاتا ہے حالانکہ جب ہم طنز و مزاح کہتے ہیں تو اس سے مراد ظرافت ہوتی ہے نہ کہ زہر خند طنز، بس یہیں معاملہ بگڑتا ہے۔ خود مقالہ نگار نے دوسرے باب میں جو ۲۰ صفحات پر مشتمل ہے۔ ابوالکلام آزاد، مولانا حالی، احتشام حسین، شوکت سبزواری، محمد حسن، کرشن چندر اور آل احمد سرور کی رائیں لکھ کر مسئلے کو بخوبی اُلجھا دیا ہے۔ یہ مسئلہ سلجھنے والا ہے بھی نہیں بلکہ اب تو ظرافت کے پڑوس میں ایک اور مُصیبت باہر سے آکر آباد ہو گئی ہے --- انشائیہ۔ یہ مزاحیہ بھی ہے اور نہیں بھی یعنی جناب شیخ کا نقشِ قدم ہے۔ خاکسار یہ سب کچھ اس لیے لکھ رہا ہے کہ بتا سکے کہ مقالہ نگار نے کتنے جان جوکھم کا کام کیا ہے۔ کتاب ۹ ابواب پر مشتمل ہے اور ہر باب بیت الکتاب ہے (غزل کے اس شعر کی طرح جس کے لیے شاعر جان پر کھیل جاتا ہے اور اسے بیت الغزل کہلوا کر رہتا ہے)۔ پیش لفظ پروفیسر خواجہ احمد فاروقی نے لکھا ہے اور بڑی محتاط رائے دی ہے (برسوں ممتحن رہے ہیں)۔ محتاط رائے کو صائب رائے بھی کہا جاتا ہے --- آپ بھی سُن لیجیے: "انھوں نے (یعنی شمع افروز زیدی نے) اپنے پی ایچ ڈی کے مقالے کا عنوان 'اُردو ناول میں طنز و مزاح' قرار دیا ہے جو دلکش بھی ہے اور مُفید بھی۔ اس سے اُردو کی تہی دامنی کی شکایت کچھ کم ہو جاتی ہے" --- ہمارے بزرگ حسرت موہانی بھی اچھے شعر کی داد ایسے ہی الفاظ میں دیا کرتے تھے۔ فلیپ اوّل حیات اللہ انصاری جیسے بزرگ اور معتبر ادب شناس کا لکھا ہوا ہے اور فلیپ دوم عبدالقوی دسنوی کا رقم کردہ۔ موخر الذکر نے لکھا ہے کہ بات نہایت مسرت کی ہے کہ انھوں نے (مقالہ نگار کی طرف اشارہ ہے) اپنے موضوع کا نہایت سنجیدگی کے ساتھ جائزہ لے کر اس کی قدر و قیمت مقرر کرنے کا حق ہی نہیں ادا کیا بلکہ تحقیق کی راہ میں ایک روشن چراغ کا اضافہ کیا ہے"۔ میں نے اگر کتاب نہ پڑھی ہوتی تو کہہ دیتا کہ یہ مبالغہ ہے لیکن کتاب پڑھنے کے بعد ایسا کہنا ممکن نہیں ہے۔ (یوں شمع افروز کے نام کے ساتھ روشن چراغ کی ترکیب بھی مجھے پسند آئی۔ لیکن یاد رہے میرے اس اظہارِ خیال میں صرف مزاح ہے طنز کا دُور دُور تک کوئی شائبہ نہیں)۔

حیات اللہ انصاری صاحب نے مقالے کے موضوع، مقالہ نگار کے تجزیے، تاثر اور استدلال کے تعلق سے اپنی خوشنودی کا اظہار کرتے ہوئے پتے کی جو بات لکھی ہے وہ یہ ہے کہ "ان باتوں کی وجہ سے مقالہ پڑھنے میں جی لگتا ہے۔ یہ تو ایسی چیز ہے جو پی ایچ ڈی کے مقالوں میں ذرا کم ہی ملتی ہے"۔ مقالہ نگار کو خوش ہونا چاہیے کہ انھیں اس داد سے، اپنی محنت کا صلہ مل گیا۔

کتاب کے بارے میں مجھے بھی تو کچھ عرض کرنا چاہیے --- کتابت، طباعت اور کتاب کا گٹ اپ بے پناہ ہے اور متن و مواد کے اعتبار سے یہ ایک مکمل کتاب ہے۔ مقالہ نگار نے اپنی فراخدلی (یا وسیع و بسیط مطالعے) کی بنا پر آٹھویں باب میں ایسے کئی ناول شامل کر لیے ہیں جن کے مجموعی تاثر یا طرزِ نگارش پر 'طنز و مزاح' کی تعریف کا اطلاق نہیں ہوتا۔ ویسے طنزیہ اور مزاحیہ جملے کس ادیب اور انشا پرداز کی تحریر میں نہیں ملتے۔ لیکن اگر شمع افروز زیدی ان ناولوں پر جن میں 'اداس نسلیں' (عبداللہ حسین) آبلہ پا (رضیہ فصیح احمد) کار جہاں دراز ہے (قرۃ العین حیدر) وغیرہ شامل

ہیں، تبصرہ نہ کرتیں تو شاید کوئی تبصرہ نگار اپنی اس رائے کا اظہار کرتا کہ مقالہ نگار کی تحقیق میں کسر رہ گئی ہے۔ اس لیے مجھے اپنی کہی ہوئی بات واپس لینے میں کوئی تامل نہیں ہے کیونکہ بعض وقت تو خود مزاحیہ ناولوں میں طنز و مزاح کی جستجو کرنی پڑتی ہے۔

بہرحال یہ طے ہے کہ شمع افروز زیدی نے اپنے اس تحقیقی کارنامے کو سرانجام دینے میں بڑی کدوکاوش سے کام لیا ہے۔ جی بھر کر کتابیں پڑھی ہیں۔ کتابیات کی فہرست میں ۹۸ کتابوں کے نام درج ہیں۔ ان کے علاوہ ۷ عدد انگریزی کتابیں ہیں اور کچھ کئی رسائل واخبارات ـــــ ڈاکٹریٹ کی ڈگری تو انھیں صرف اتنی کتابیں پڑھنے ہی پر مل جانی چاہیے تھی (شاید ابھی یہ سلسلہ شروع نہیں ہوا ہے) ـــــ انھوں نے کئی لائبریریوں میں بھی دیدہ ریزی کی ہے۔ پٹنہ تک گئیں اور خدا بخش لائبریری سے (راہِ خدا میں) استفادہ کیا۔ ایک خاتون کے لیے اتنا سب کچھ کر لینا بظاہر ممکن نہیں لیکن ثبوت میں تو یہ ایک ضخیم کتاب موجود ہے۔

میرے حساب سے اس کتاب کا عنوان ہونا چاہیے تھا "اُردو کا گلستانِ ظرافت" لیکن شاید اس نوع کے عنوانات پی ایچ ڈی کے لیے قبول نہیں کیے جاتے ـــــ یہ مقالہ ڈاکٹر مظفر حنفی کی نگرانی میں لکھا گیا ہے۔ بہت کم مقالوں پر "نگراں" کی چھاپ ہوتی ہے لیکن اس مقالے پر ہے اور مقالہ نگار نے اس بات کا اعتراف بڑی خوشدلی کے ساتھ کیا ہے۔

اس خاکسار کا تھوڑا بہت تعلق اس موضوع سے ہے ـــــ (ناجائز سہی لیکن ہے) اسی لیے جیسا کہ انصاری صاحب نے کہا "مقالہ پڑھنے میں جی لگا اور خوب لگا۔ (کئی دن بھی لگ گئے)

ـــــ یوسف ناظم

خوشبو کا سفر ـ سفرنامۂ پاکستان

مصنف: ڈاکٹر کیول دھیر

صفحات: ۲۶۰، ڈیمائی سائز

قیمت: ساٹھ روپے

ملنے کا پتہ: موڈرن پبلشنگ ہاؤس، ۹ گولا مارکیٹ، دریا گنج، نئی دہلی ۲۔

غالب کے خطوط کی ادبی حیثیت کا اعتراف کیے جانے کے بعد جس طرح دوسرے ادیبوں اور شاعروں نے خط لکھتے وقت ادبی نقطۂ نظر کو ملحوظ رکھا اور خطوط نگاری کا باقاعدہ سلسلہ شروع ہوا ٹھیک اسی طرح موجودہ عہد میں سفرناموں کا ارتقا بڑی تیزی سے ہو رہا ہے۔

گو سفرناموں کا سلسلہ عہدِ قدیم سے چلا آرہا ہے ہیونگ سانگ، فاہیان، ابنِ بطوطہ، برنی سے لے کر موجودہ عہد میں ابنِ انشا، کرنل محمد خاں، پروفیسر گوپی چند نارنگ، رام لعل اور پروفیسر سید محمد عقیل رضوی اس سلسلے کی نمایاں کڑیاں ہیں پاکستان میں مستنصر حسین نے بھی دلچسپ سفرنامے لکھے ہیں۔

زیرِ تذکرہ کتاب "خوشبو کا سفر" ڈاکٹر کیول دھیر کا سفرنامۂ پاکستان ہے، ادب و تہذیب، ثقافت و سیاست کی بھرپور عکاسی ہمیں اس سفرنامے میں مل جاتی ہے۔ پاکستان میں بشریٰ رحمٰن ڈاکٹر کیول دھیر کی میزبان تھیں۔ بے پناہ خلوص و محبت اور اپنائیت جو حقیقی رشتوں کی بنیاد ہوتی ہے۔ ہمیں ان دونوں قلمکاروں کے مابین ملتی ہیں ویسے تو اس سفرنامے میں پاکستان کی بہت سی شخصیتوں سے ہماری ملاقات ہوتی ہے لیکن سابق صدر مملکت جنرل ضیاء الحق اور بشریٰ رحمٰن کی شخصیتوں نے خاص طور پر متاثر کیا۔ دونوں ادب اور انسانیت کے پرستار نظر آتے ہیں۔

اس سفرنامے سے پاکستان کے سماجی پس منظر کی جھلکیاں بھی اُجاگر ہوتی ہیں۔ مثلاً لاہور کے کوچے، لاہور کی مال روڈ، کاشتکاری، فیشن، غیر ملکی گاڑیوں کی بھرمار، الیکٹرانکس کا سامان، پاکستان غیر ممالک میں، منشیات کی اسمگلنگ، آبادی کا اضافہ پاکستان میں ہندو، کلاس راج شراب نہیں کوڑوں کی سزا۔ اُردو شاعری میں شراب کا ذکر نہیں پُرانے ہندو نام زندہ ہیں۔ گوشت خوری کی عادت، چائے اچھی نہیں۔ مہنگائی، ٹرانسپورٹ بجلی کی کمی، لذیذ کھانا، جذبات کا ردِ عمل، ترقی پسند تحریک، بھارت کے اُردو جریدے، بھارتی فلمیں، پاکستانی ٹیلی ویژن اور بھارتی دُوردرشن پاکستانی ٹی۔ وی کے اسٹوڈیو میں غیر ملکی نہیں جاسکتے۔ پاکستانی پنجاب کی صوبائی اسمبلی، پاکستان ٹی۔ وی کے ڈرامے، ادیب خوشحال ہو رہے ہیں، سرسوں کا ساگ اور مکئی کی روٹی، ادبی انعامات تحائف کی بھرمار۔ یہ تمام وہ عنوانات ہیں جو موجودہ پاکستانی معاشرے کا حصّہ ہیں۔

ڈاکٹر کیول دھیر نے صرف پندرہ دن کے سفر میں پاکستان کے کئی شہر دیکھے۔ ادبی مجلسوں سے لے کر وہاں کی اسمبلی تک دیکھی۔ زندگی کے مختلف پہلوؤں اور رنگا رنگی سے ہمکنار رہے۔ مختصر مدّتی سفر کے باوجود انھوں نے ہمیں پاکستانی کلچر سے روشناس کرایا ہے۔

کتاب کی کتابت و طباعت بہت عمدہ ہے نیز اغلاط سے بھی پاک ہے سرورق سہ رنگا اور خوب صورت ہے۔ پاکستان کے نئے کلچر کو سمجھنے میں یہ کتاب معاون ثابت ہو گی۔ جن حضرات نے پاکستان نہیں دیکھا

وہ پاکستان کی آب و ہوا اور بو باس کو اس کتاب کے وسیلے سے محسوس کر سکتے ہیں۔

۔ ۔ ۔ جلال انجم

تقویم
شاعر : صمد انصاری
صفحات : ۱۰۲، ڈیمائی سائز
قیمت : ۴۰ روپے
ناشر : ارم پبلی کیشنز، قصر قمر بارہ دری (دانگ) مراد آباد (یوپی)

یہ کتاب پاکستانی شاعر صمد انصاری کے شعری مجموعے کا ہندوستانی ایڈیشن ہے۔ صمد انصاری کہنہ مشق شاعر ہیں اور ان کی شاعری میں مذہبی عناصر کی کارفرمائی زیادہ ہے۔ اس مجموعے کے ہر شعر کی قرآن کی کسی نہ کسی آیت سے ربط کی بات کہی گئی ہے اور نیچے حوالہ درج کیا ہے۔ پیش لفظ میں انھوں نے وضاحت کی ہے کہ :

"تقویم کا ہر شعر تمام تر شعوری کوشش کا نتیجہ نہیں ہے اور بعض دفعہ تو اللہ سے استمداد کے بعد ہی شعر وارد ہوا ہے"، صفحہ ۹

موضوع کا انتخاب ہیئت کی مناسبت سے ہونا چاہیے اور قرآن کی وسعت ہے کہ اس کی ترجمانی کے لیے غزل ایسی ایجاز و اختصار والی صنف مناسب نہیں ہو سکتی مگر انھوں نے بعض اچھے اشعار نکال لیے ہیں :

لہو جلاتے رہے رات بھر چراغوں میں
نمودِ شہرِ غریب الدیار کرتے رہے

(ہین یدی)

کس نے پابستہ رکھا مجھ کو زمیں کے گھر میں
آسمانوں کو مری حد نظر کس نے کیا

کتابِ زیست سے اب اکتسابِ فن کے لیے
فقیہہِ دانشِ اہلِ فرنگ مانگتے ہیں

(القصص ۹، انا مثل)

مگر بعض مقامات پر غزل کا ایجاز مسئلہ بن گیا اور مفہوم کہیں سے کہیں جا پہنچا مثلاً :

عطا تو کی ہے خلافت مجھے زمینوں کی
مگر سکون سے جینا محال رکھا ہے

(الرعد ۲۸ تطمئن القلوب)

یہاں خطاب اہل ایمان سے ہے۔ اس کی طرف رجوع کرنے والے اس کے نبی کی دعوت کو قبول کرنے والے ہیں اور روگردانی کرنے والوں کو زبردستی راہ دکھانے کا طریقہ اللہ کے یہاں رائج نہیں پھر اہل ایمان کے لیے سکون سے جینا محال چہ معنی دارد؟

بعض مقامات پر غزل کا لہجہ بھی مجروح ہوا ہے :

سفر میں ساتھ تو رختِ سفر بھی جاتے ہیں

صفحہ ۲۳

اول تو رختِ سفر صیغۂ واحد ہے پھر جملہ اشیائے سفر پر مشتمل ہوتا ہے اور جاتا نہیں لے جایا جاتا ہے :

تھا جس سے چراغوں کے تلے نور سحر کا

صفحہ ۴۲

محاورہ چراغ تلے اندھیرے کا ہے

دل شاہجہاں پوری
مصنف : اظہار صہبائی
صفحات : ۱۵۸، ڈیمائی سائز
قیمت : ۵ روپے
ناشر : فخرالدین علی احمد میموریل کمیٹی، لکھنؤ

اُردو تحقیق درس گاہوں میں قید ہو گئی اس سے ایک طرف جہاں معیارِ تحقیق پست ہوا وہیں بعض بہت معیاری کام بھی ہوئے اور بہت سے ایسے موضوعات جنھیں عام حالات میں تحقیق کا موضوع بنانا ممکن نہیں تھا وہ بھی سلیقے سے تنقیدی مباحث کے ساتھ مرتب ہو گئے۔ اس صورتِ حال نے ایسے بہت سے کلاسیکل سرمایے کو بھی ہم تک پہنچایا جو عام حالات میں استدادِ زمانہ کا شکار ہو جاتا۔

شاہ جہاں پور یوپی کے نوابغِ روزگار فرزندوں میں ایک اہم نام دل شاہ جہاں پوری (۱۸۷۵ء تا ۱۹۰۹ء) کا ہے۔ دل صاحب کو امیر مینائی سے شرفِ تلمذ تھا۔ ان کی خدمات کا جائزہ اظہار صہبائی نے اپنے ایم فل کے تحقیقی مقالے میں لیا ہے جو انھوں نے دلی یونیورسٹی میں تحریر کیا۔ اظہار صہبائی بنیادی طور پر افسانہ نگار ہیں یوں ان کی نثر میں روانی اور شگفتگی ہوتی ہے۔ اس مقالے میں انھوں نے بہت جستجو سے مواد فراہم کر کے اس مبسوط مقالے کو مرتب کیا ہے اور حیات و شاعری سے لے کر اس کے تنقیدی جائزے تک جس میں انھوں نے ان کے شعری محاسن پر گفتگو کی ہے، تمام متعلق موضوعات کا احاطہ کیا ہے۔

۔۔۔ اطہر فاروقی

فرازِ ہنر (شعری مجموعہ)
مصنف : ظفر مراد آبادی
صفحات : ۱۱۲، ڈیمائی سائز
قیمت : ۴۰ روپے
دستیاب : انجمن ترقی اُردو، اُردو گھر، راؤز ایونیو، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲

ظفر مراد آبادی نوجوان شعرا میں ایک

مناسبتوں کی بدولت شعری نشستوں اور ادبی محفلوں کے حوالے سے اُردو والوں کو خاصا متوجہ کیا ہے۔

"فرازِ ہنر" ظفر کی شاعری کا اوّلین انتخاب ہے ایک مناجات اور ایک نعت کے علاوہ اس کتاب میں ۵۴ غزلیں اور ۲۶ منفرد اشعار ۹۷ صفحات پر محیط ہیں، کتاب کے آغاز میں فخرِ غزل حضرت قمر مرادآبادی دامت برکاتہم کا لکھا ہوا مقدمہ شامل ہے اور ابوالفیض سحر (پرنسپل پبلی کیشنز آفیسر، ترقی اُردو بورڈ، نئی دہلی) نے بھی اپنی مؤقر رائے تحریر فرمائی ہے، ان دونوں محترم حضرات کی مبسوط تحریروں سے قطع نظر عموماً ایسی تحریریں تعریفی و یک رُخی ہوتی ہیں اور ایسی ایسی باتیں شاعر سے منسوب کردی جاتی ہیں جن کا سایہ بھی اس غریب پر نہ پڑا ہو۔ مشورۃً چپکے سے یہ بات کہنے میں کوئی مضائقہ نہیں ہے کہ اُردو ادب کی اصطلاح میں فخرِ غزل، حضرت دامت برکاتہم، پرنسپل یا آفیسر جیسے خطابات کسی کے نام کے ساتھ لگانا اضافی حیثیت رکھتے ہیں اور مصنف کے خوشامدانہ رویّوں کا پتہ دیتے ہیں، خود مصنف کا اس کتاب میں شامل یہ شعر میرے خیال کی تائید کرتا ہے:

کس طرح ہوتی مرے فن کی پذیرائی یہاں
میں کہ مرہونِ طلبِ عالی جنابوں میں نہ تھا

ہاں تو بات ظفر کی شاعری کے بارے میں ہو رہی تھی۔ ظفر کی شاعری اور اس کے اسلوب و آہنگ کے بارے میں کتاب کے گرد پوش پر تین اہم ترین شعرا کی رائیں شامل کی گئیں ہیں۔ ان میں سے مخمور سعیدی کی رائے ظفر کی شاعری پہ زیادہ بہتر معلوم ہوتی ہے چند سطریں ملاحظہ کیجیے:

"ظفر کی شاعری سراسر ان کی داخلی کیفیات اور شخصی محسوسات کی ترجمان نظر آتی ہے اور اُن خامی سے پاک ہے جو اُن کے فطری میلانات سے تو کوئی مناسبت نہ رکھتے ہوں لیکن جنھیں قبولِ عام کے مروّجہ تقاضوں کے تحت قبول کرلیا گیا ہو۔"

بہر حال حرف بہ حرف کتاب پڑھنے کے بعد یہ تاثر بہ آسانی قائم کیا جا سکتا ہے کہ ظفر لسانی عادتوں کے شکار نہیں ہیں بلکہ داخلی تجربوں کی بنیاد پر کائنات اور زندگی کی مختلف جہات کو غزل کے مانوس لہجے میں پیش کرنے کی سوجھ بوجھ رکھتے ہیں۔ زیرِ نظر کتاب میں شامل اکثر غزلیں ایسی ہیں کہ جس کی زمینیں جانی پہچانی ہیں۔ ۱۱۲ صفحات والی اس کتاب کی قیمت چالیس روپے ہے جو بہت زیادہ ہے۔

—— ایم۔ آر۔ قاسمی

جذبات و نغمات (شاعری)
شاعرہ: تاج النساء تاج
صفحات: ۱۳۶، ڈیمائی سائز
قیمت: ۱۵ روپے
ملنے کے پتے: سیما پبلشرز اینڈ بکس، پرو موٹرس، ۴۷۔ وینکٹ گری نگر، حیدرآباد ۵۰۰۰۴۵۔
تاج النساء تاج، ۷۶/۱ ایسٹ انجانیا ٹمپل اسٹریٹ، بسونگڈی، گاندھی بازار، بنگلور ۵۶۰۰۰۴۔

اُردو ادب کی تاریخ شاہد ہے کہ انیسویں صدی کے اواخر تک شاعری پر مردوں کی اجارہ داری رہی۔ یہی وجہ ہے کہ خواتین کے احساسات و جذبات معرضِ اظہار میں نہ آسکے۔ پردے کی رسم، تعلیم کی کمی، مرد اور عورت کے فرائض کی غیر فطری تقسیم، فرسودہ معتقدات اور دیگر عوامل ایسے رہے جن کی وجہ سے اُردو شاعری میں شاعرات کی کمی رہی مگر جب بیسویں صدی کی نئی سماجی زندگی میں پرانے بندھن ٹوٹے تو عورتوں نے بھی علم و حکمت کے میدان میں بڑی استواری کے ساتھ قدم رکھا اور اپنے جوہر دکھلائے۔

زیرِ نظر کتاب تاج کا پہلا شعری مجموعہ ہے اس مجموعے میں غزلوں کے علاوہ چھ قطعات بھی ہیں چند ادیبوں اور شاعروں کی آرا بھی شامل ہیں جن سے تاج کی شاعرانہ صلاحیت اور ان کی شخصیت اجاگر ہوتی ہے۔

سچی شاعری کی ایک پہچان یہ بھی ہے کہ وہ شاعر یا شاعرہ کی شخصیت کی مکمل عکاس ہوتی ہے دوسرے لفظوں میں یہ ایک ایسا آئینہ ہے جس میں شاعر، شاعرہ کے خیالات اور محسوسات کو بخوبی دیکھا جا سکتا ہے اور اگر کسی کے یہاں یہ خصوصیت نہیں ہے تو اس کے کلام میں دیرپا تاثر کا سوال ہی نہیں اُٹھتا یہ بات جُدا کہ وہ اپنی فنّی مہارت سے وقتی طور پر اپنی طرف متوجہ کرلے۔

تاج کی شاعری بلاشبہ ان کی سیرت کی عکاسی کرتی ہے ان کے کلام میں جو رکھ رکھاؤ، پاکیزگی، انسان دوستی اور دردمندی ملتی ہے وہ اصل میں ان کی ہی شخصیت کا اظہار ہے۔ چند اشعار ملاحظہ فرمائیے:

خدا کرے کسی دشمن کو بھی نصیب نہ ہو
یہ انتظار کا موسم یہ میری تنہائی

ستارو ڈوب نہ جاؤ ابھی ذرا ٹھہرو
کہ دل کو ہے کسی ظالم کا انتظار ابھی

اِک آپ مل گئے ہیں تو کیا کیا ملا مجھے
شاداب زندگی کا سلیقہ ملا مجھے

آپ کو چھو کے آئی ہیں شاید
حُسن ہی حُسن ہے بہاروں میں

نظروں نے خود ہی دل کا احوال کہہ دیا تھا
بے وجہ آپ نے کیوں تکلیفِ گفتگو کی

(بقیہ صفحہ ۵۸ پر)

اُردو خبرنامہ

○ اُردو ٹائپ اور شارٹ ہینڈ کلاس کے نتائج ○ طنز و مزاح سیمینار ○ جدید ہندوستان کے معمار۔ پنڈت جواہر لال نہرو ○ بلاسپور میں ضلع اُردو صلاح کار کمیٹی کا قیام ○ ادیبوں کی حیاتِ معاشقہ ○ داستانِ اُردو (آزادی کے بعد کے مسائل) ○ سیّد اطہر حسین کی وفات

اُردو ٹائپ اور شارٹ ہینڈ کلاس کے نتائج

اُردو اکادمی دہلی نے اردو ٹائپ رائٹنگ و شارٹ ہینڈ کے یکسالہ کورس کا پہلا سال یکم دسمبر ۸۸ء کو مکمل کرلیا۔ دس طالب علموں نے اس کورس میں داخلہ لیا تھا جن میں سات کو کامیاب قرار دیا گیا۔ اس امتحان میں شہناز بیگم کو اوّل، سلیم احمد کو دوم، رضوان الرحمان کو سوم پوزیشن سے کامیابی حاصل ہوئی۔ ان کی مختصر نویسی کی رفتار بالترتیب ۷۵، ۷۵، ۵۵ الفاظ فی منٹ اور ٹائپ کی رفتار بالترتیب ۴۵، ۴۰، ۴۰ الفاظ فی منٹ رہی۔

اکادمی ہر طالب علم کو سال بھر تک سو روپیہ ماہنامہ وظیفہ دیتی ہے۔ کتابیں اور ضروری اسٹیشنری کی سہولت بھی مہیا کرتی ہے۔ ترقی اُردو بورڈ کے نمائندے شیخ سلیم احمد اور اردو شارٹ ہینڈ کے ماہر سید راشد حسین نے سفارش کی ہے کہ اگلے سال سے طالب علموں کے لیے ترقی اُردو بورڈ کی شائع کردہ شارٹ ہینڈ کی کتاب درسی کتاب کے طور پر استعمال کی جائے اور پریکٹیکل پر زیادہ زور دیا جائے۔ انھوں نے یہ بھی سفارش کی ہے کہ اس اضافے کی بنا پر اوقات کلاس میں ۴۵ منٹ کا اضافہ بھی کردیا جائے۔

اوّل حیثیت سے کامیاب طالبہ شہناز بیگم کو خصوصی انعام پانچ سو روپے ۵۰۰/- سند اور شیلڈ جناب جگ پرویش چندر کے دست مبارک سے دی گئی۔ باقی سبھی طلبا کو عارضی سرٹیفکیٹ دیے گئے۔

نئے کورس کے لیے اکادمی نے امیدواروں کا انتخاب کرلیا ہے۔ اور دو جنوری ۱۹۸۹ء سے کلاسیں شروع ہوگئی ہیں۔

طنز و مزاح سیمینار

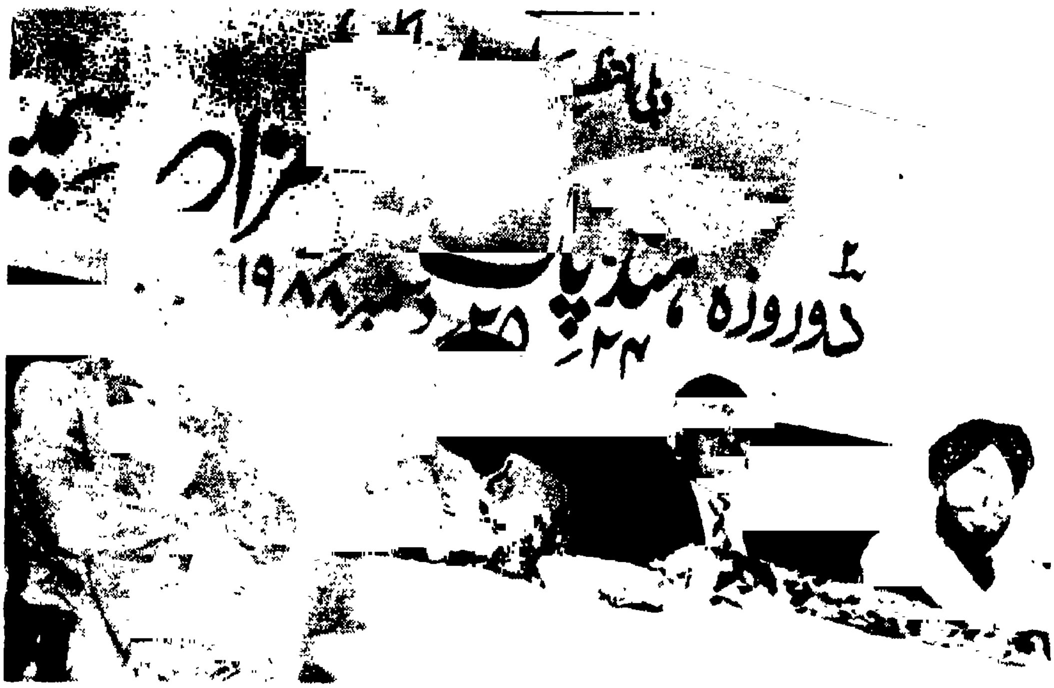
۲۴، ۲۵ دسمبر ۸۸ء کو اُردو اکادمی دہلی کی طرف سے غالب اکیڈمی نئی دہلی کے آڈیٹوریم میں دو روزہ طنز و مزاح سیمینار منعقد ہوا۔ مرکزی وزیر برائے انسانی وسائل جناب پی۔ شوشنکر نے سیمینار کے افتتاحی اجلاس میں تقریر کرتے ہوئے کہا کہ اُردو ایک زبان ہی نہیں بلکہ تہذیب بھی ہے۔ آزادی سے پہلے اور آزادی کے بعد آج تک یہ زبان ایک موثر سیکولر اور جمہوری کردار ادا کر رہی ہے۔ انھوں نے شستہ اور بامحاورہ اُردو میں تقریر کرتے ہوئے مزید کہا کہ اُردو زبان اب ایک ترقی یافتہ بین الاقوامی زبان بن کر اُبھر رہی ہے۔ ہماری خواہش ہے کہ یہ اور زیادہ پھولے پھلے اور عالمی ادب میں اس کا مرتبہ اونچا ہو۔

اپنی صدارتی تقریر میں جناب سید مظفر حسین برنی چیرمین اقلیتی کمیشن نے اس بات کی شکایت کی کہ اُردو میں ڈرامہ لکھنے والوں کی ویسے بھی کمی ہے۔ لیکن مزاحیہ ڈرامہ لکھنے والوں کی بہت زیادہ کمی محسوس ہوتی ہے اور یہی وجہ ہے کہ ہمارے یہاں سینما، ٹیلی ویژن اور ریڈیو پر معیاری طربیہ ڈرامے یا مزاحیہ مواد بہت کم آتا ہے۔ عظیم بیگ چغتائی کے بعد مزاحیہ ناولوں کا رواج بھی ختم ہوتا نظر آرہا ہے۔ مزاحیہ سفرناموں کی اردو میں بڑی کمی ہے۔ لیکن مجتبیٰ حسین نے اپنا جاپان کا سفرنامہ لکھ کر اس کمی کو قدرے پورا کردیا ہے۔

برنی صاحب نے کہا کہ فنکاری کے مزاق کی



مرکزی وزیر جناب پی شوشنکر سیمینار کا افتتاح کرتے ہوئے



افتتاحی اجلاس میں، دائیں سے بائیں: کنور مہندر سنگھ بیدی سحر، جناب سید مظفر حسین برنی، جناب پی۔ شو شنکر اور سیمینار کے ڈائرکٹر مشہور مزاح نگار مجتبیٰ حسین

رہنمائی کرنا بھی فنکار اور مزاح نگار کا ایک فرض ہے۔

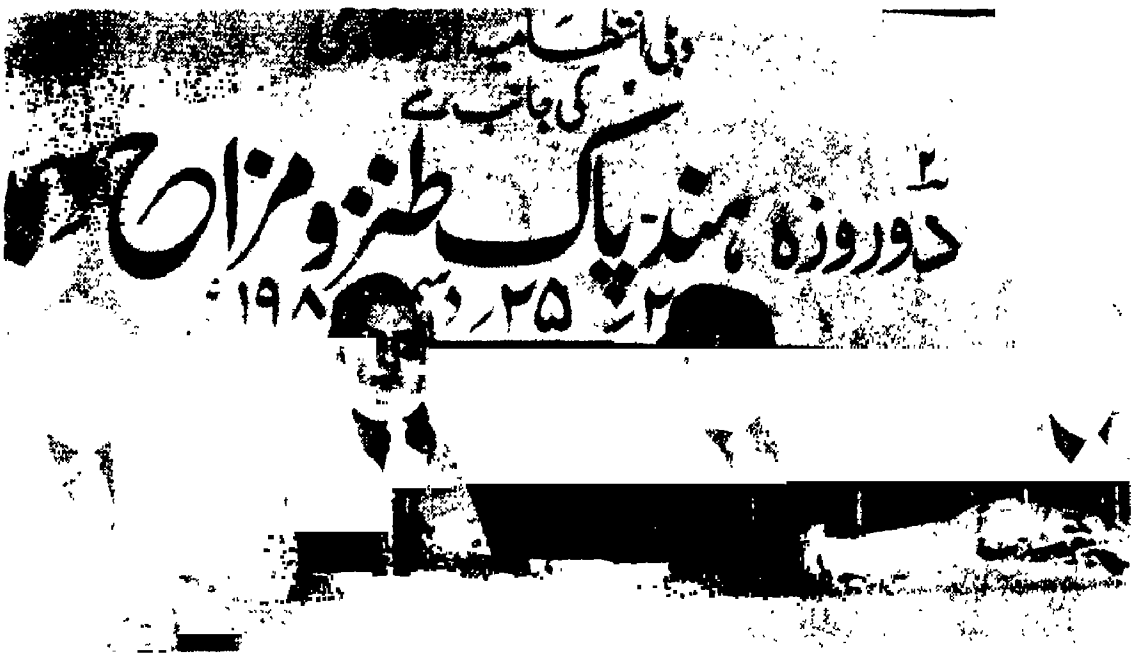
سیمینار کمیٹی کے چیرمین جناب بریندر ناتھ (ظفر پیامی) نے طنز و مزاح سیمینار کی اہمیت پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا کہ اس صنفِ ادب پر اب تک کوئی سیمینار نہیں ہوا تھا۔ بالفاظ دیگر ہنسنے ہنسانے والوں کو نظر انداز کر کے ہم نے شعر و ادب کو رونے کا سامان بنا لیا۔

انھوں نے اس امر پر زور دیا کہ طنز و مزاح نے اُردو ہندی کے درمیان فاصلوں کو پاٹنے میں نمایاں کردار ادا کیا ہے۔ ریڈیو، ٹیلی ویژن اور سینما کے ذریعے یہ دونوں زبانیں ایک دوسرے کے قریب آتی جا رہی ہیں۔ اس کے علاوہ ہندوستان اور پاکستان کے مابین جو خلیج تھی اس کو بھی طنز و مزاح کے ذریعے پاٹنے کی کوشش کی جا رہی ہے۔ دیوان صاحب نے کہا کہ جناب فکر تونسوی کا خیال تھا کہ پاکستان میں اظہارِ خیال کی پابندی کی وجہ سے وہاں طنز و مزاح کو فروغ حاصل ہوا ہے۔ لیکن ہندوستان میں اظہارِ خیال کی آزادی کی وجہ سے اس صنف ادب کی جانب بہت کم توجہ دی جا رہی ہے۔ لیکن اب پاکستان میں بھی اظہارِ خیال کی آزادی بحال ہو چکی ہے۔ اب دونوں ملک ایک سطح پر آ چکے ہیں۔ دیکھنا یہ ہے کہ کون کس پر سبقت لے جاتا ہے۔

سیمینار کے ڈائرکٹر جناب مجتبیٰ حسین نے جو خود بھی ایک ممتاز طنز و مزاح نگار ہیں اس امر پر زور دیا کہ جب تک مسکراہٹیں اس دنیا میں ہر کرہ مہ کو نہیں مل جاتیں امن عالم قائم ہو ہی نہیں سکتا۔

افتتاحی اجلاس کے بعد سیمینار کی دو نشستیں ہوئیں۔ پہلی نشست میں جو طنز و مزاح کے میدان میں تحقیقی کام سے متعلق تھی پروفیسر شمیم حنفی نے "اُردو طنز و مزاح اور موجودہ معاشرہ" کے عنوان پر اور جناب مرزا خلیل بیگ نے "مزاح کی تخلیق میں زبان کا حصّہ" کے عنوان پر اپنے مقالے پیش کیے۔ اس نشست کی صدارت ڈاکٹر سلیم اختر نے کی جو پاکستان سے آئے ہوئے تھے۔ اس موقع پر پاکستانی مزاح نگار جناب منیر احمد شیخ مہمان خصوصی تھے۔ انھوں نے ہندوستان اور پاکستان کے درمیان مہمانوں کی آمد و رفت پر سرکاری پابندیوں کے سلسلے میں ایک شگفتہ اور پر مغز انشائیہ پڑھ کر سنایا۔

سیمینار کی دوسری نشست بعد دوپہر شروع ہوئی جس کی صدارت ملک کے ممتاز مزاح نگار یوسف ناظم صاحب نے کی۔ مہمان خصوصی تھے نریندر لوتھر۔ اس نشست میں ملک کے درج ذیل مزاح نگاروں نے اپنی تخلیقات پڑھ کر سنائیں۔ جناب وجاہت علی سندیلوی،



دوسرے دن کے پہلے اجلاس میں دائیں سے بائیں: جناب سلیم اختر (پاکستان)، جناب سید ہاشم علی، جناب منیر احمد شیخ (پاکستان) اور اردو اکادمی دہلی کی کمیٹی اور سیمینار کمیٹی کے چیئرمین جناب دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی

جناب دلیپ سنگھ، جناب سید نصیر حسن دہلوی، جناب نصرت ظہیر، جناب رام لعل نابھوی، جناب بشیشر پیرو گلوی اور جناب اندر جیت لال۔

رات کو دفاتر اکادمی کے لان میں ایک کل ہند مزاحیہ مشاعرہ ہوا جس کی صدارت جناب کنور مہندر سنگھ بیدی سحر نے کی۔ اور ملک بھر سے آئے ہوئے مزاحیہ شاعروں نے اپنا کلام سنایا۔

سیمینار کے دوسرے دن کی پہلی نشست میں اردو کے مشہور کالم نگار فکر تونسوی کو خراجِ عقیدت پیش کیا گیا۔ فکر صاحب نے کم و بیش تیس سال تک ہر روز اردو اخبار ملاپ کے لیے کالم لکھا تھا۔

اس نشست کی صدارت سابق وزیر اطلاعات و نشریات جناب اندر کمار گجرال نے کی اور مہمانِ خصوصی علی گڑھ یونیورسٹی کے وائس چانسلر جناب سید ہاشم علی تھے۔

جناب اندر کمار گجرال نے کہا کہ فکر نے اپنی ادبی زندگی کا آغاز شاعری سے کیا تھا اور ترقی پسندوں کے گروہ میں ان کو اہم مقام حاصل تھا لیکن وہ بعد میں اردو اخبار ملاپ میں مزاحیہ کالم لکھنے لگے تھے جس کی وجہ سے میں خود بھی ملاپ پڑھنے لگا تھا۔

سیمینار کمیٹی کے چیرمین جناب دیوان بریندر ناتھ نے کہا کہ فکر تونسوی کا کارنامہ یہ ہے کہ انھوں نے اردو طنز و مزاح کو معین لفظوں کی قید سے آزاد کر دیا اور اس کا موضوع بدل دیا۔ اب تک بڑے لوگ غریبوں اور ملازمین یا لنگڑے لولوں کا مذاق اڑایا کرتے تھے۔ فکر نے چھوٹے لوگوں کے ہاتھوں بڑوں کا مذاق اڑوایا۔ اور اس طرح طنز کو زندگی سے ہمکنار کر دیا۔

جناب اعجاز علی ارشد نے فکر کی بسیار نویسی پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا کہ فکر نے ۵۵ء سے مزاحیہ کالم لکھنا شروع کیا اور کوئی گیارہ ہزار کالم انھوں نے لکھے ہیں۔ انھوں نے بتایا کہ ایک مرتبہ ملاپ میں بھینس کی گمشدگی کا اشتہار چھپا تھا جس کا کسی نے نوٹس نہیں لیا لیکن جب فکر تونسوی نے اس پر اپنا کالم لکھا تو اس گمشدہ بھینس کی دھوم مچی اور بھینس مل گئی۔

جناب ظ۔ انصاری نے اپنی مختصر سی تحریر پڑھ کر سنائی جس میں انھوں نے کہا کہ فکر طبعاً طنز نگار تھا اور ٹھیٹ پنجابی انداز میں بات کرتا اور لکھتا تھا۔ جناب بلونت گارگی کے مضمون کا عنوان تھا "فکر تونسوی — یادوں کے آئینے میں"

جناب شیر جنگ گرگ نے "ہندی میں فکر تونسوی کی مقبولیت" پر مضمون پڑھا اور جناب تارا سنگھ کامل نے فکر کی زندگی کے

بعض نئے پہلوؤں پر روشنی ڈالی اور ان کے بعض لطیفے سنائے۔

ڈاکٹر محمد حسن نے اپنے پرمغز مقالے میں فکر کے فن پر سیر حاصل بحث کی۔

پاکستانی نقاد ڈاکٹر سلیم اختر نے پاکستان میں فکر کی مقبولیت پر روشنی ڈالی منیر احمد شیخ صاحب نے بھی جو پاکستان سے آئے ہوئے تھے، اور گجرال صاحب کے چلے جانے کے بعد مسندِ صدارت پر رونق افروز تھے فکر تونسوی کو اپنا خراجِ عقیدت پیش کیا۔

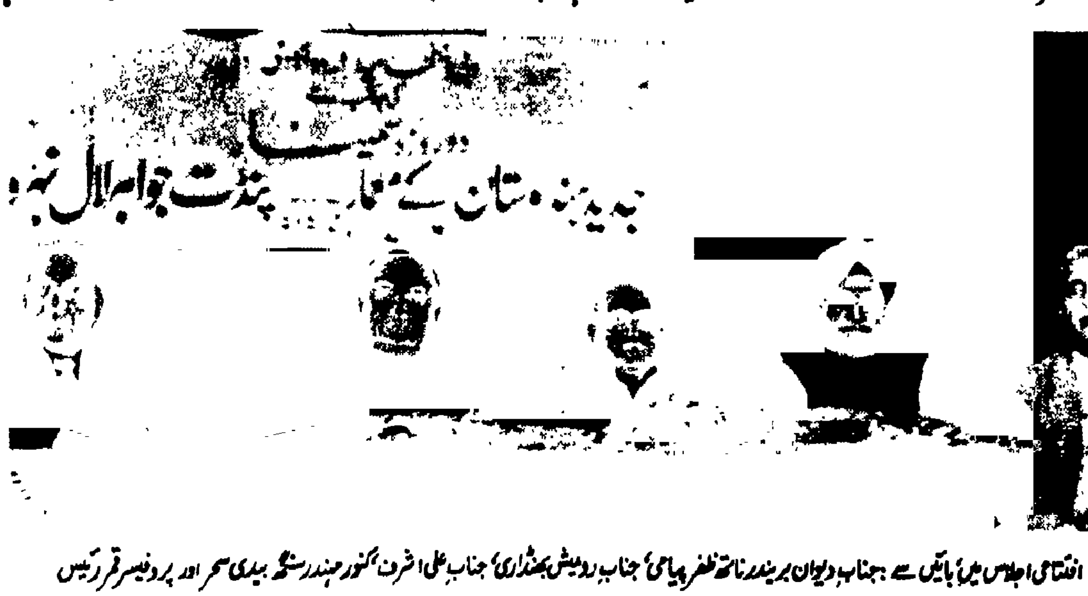
دوسرے دن کی دوسری اور سمینار کی آخری نشست میں، جس کی صدارت مشہور افسانہ نگار جناب جوگندر پال نے کی اور مہمانِ خصوصی کی حیثیت سے جناب ظ۔ انصاری شریک رہے، حسبِ ذیل چھ مقالے پڑھے گئے: 'دکن میں طنز و مزاح' (جناب ایس۔ مصطفےٰ کمال)، 'دورِ حاضر میں طنز و مزاح کی صورتِ حال' (جناب یوگندر بالی)، 'دہلوی زبان میں طنز و مزاح' (پروفیسر نثار احمد فاروقی) طنز و مزاح کے فروغ میں خواتین کا حصہ' (ڈاکٹر رشید موسوی) 'طنزیہ اور مزاحیہ شاعری آزادی کے بعد' (ڈاکٹر ابوالکلام قاسمی) اور 'پاکستان میں طنز و مزاح (پروفیسر سلیم اختر)

سکریٹری اکادمی کے شکریے پر یہ دو روزہ طنز و مزاح سمینار خیر و خوبی کے ساتھ اختتام پذیر ہوا۔

جدید ہندوستان کے معمار
پنڈت جواہر لال نہرو

اُردو اکادمی، دہلی کی طرف سے درجِ بالا عنوان پر دو روزہ سمینار ۶ اور ۷ جنوری ۸۹ء کو منعقد کیا گیا۔ سمینار کا افتتاح آندھرا پردیش بھون نئی دہلی کے امبیڈکر آڈیٹوریم میں ۶ جنوری کی شام کو دہلی کے لیفٹیننٹ گورنر اور اکادمی کے چیرمین جناب رومیش بھنڈاری نے کیا۔ انھوں نے جنگِ آزادی کے دنوں سے لے کر آزاد ہندوستان کی تعمیر و ترقی کے کاموں تک پنڈت جی کی انتھک جدوجہد اور ان کی بے مثال قربانیوں کا ذکر کیا۔ انھوں نے کہا کہ ہندوستان جب آزاد ہوا تو اسے بے شمار مسائل درپیش تھے جن کا بہ حیثیت وزیرِ اعظم پنڈت جی کو بہ طورِ خاص سامنا کرنا پڑا۔ ان مسائل کے حل کے لیے انھوں نے جمہوریت، سیکولرزم اور سوشلزم کا راستہ اختیار کیا اور آج چالیس سال بعد ہم محسوس کرتے ہیں کہ یہ موزوں ترین راستہ تھا۔ انھوں نے کہا کہ جمہوریت کی جڑیں اس ملک میں اب اتنی مضبوط ہو چکی ہیں کہ انھیں کوئی ہلا نہیں سکتا۔ سوشلزم کا جو تصور پنڈت جی نے ہمیں دیا وہ اصطلاحی سوشلزم سے مختلف تھا اور اب ہندوستانی معیشت میں یہ بھی اپنی مستقل جگہ بنا چکا ہے۔ خطرہ صرف سیکولرزم کے ان اصولوں کو درپیش ہے جن پر عمل آوری اس ملک کے اتحاد اور سالمیت کے لیے ضروری ہے۔ اس خطرے کو دور کرنا آج ہر محبِ وطن ہندوستانی کا فرض ہونا چاہیے۔

بین الاقوامی برادری میں پنڈت جی کی کوششوں سے ہندوستان کو جو عزت مندانہ مقام حاصل ہوا جناب رومیش بھنڈاری نے اس کا بھی تفصیل سے ذکر کیا۔ انھوں نے کہا



افتتاحی اجلاس میں، بائیں سے: جناب دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی، جناب رومیش بھنڈاری، جناب علی اشرف، کنور مہندر سنگھ بیدی سحر اور پروفیسر قمر رئیس

کہ غیر جانبداری کا تصوّر بعض بڑی طاقتوں کو شروع میں ایک غیر اخلاقی تصوّر نظر آتا تھا لیکن جیسے جیسے وقت گذرتا گیا' چھوٹے ملکوں کے لیے غیر جانبداری کے اصول کی افادیت اور اہمیت روشن سے روشن تر ہوتی گئی اور آج بیشتر ترقی پذیر ملکوں کی خارجہ پالیسی کا یہ بنیادی پتھر ہے۔

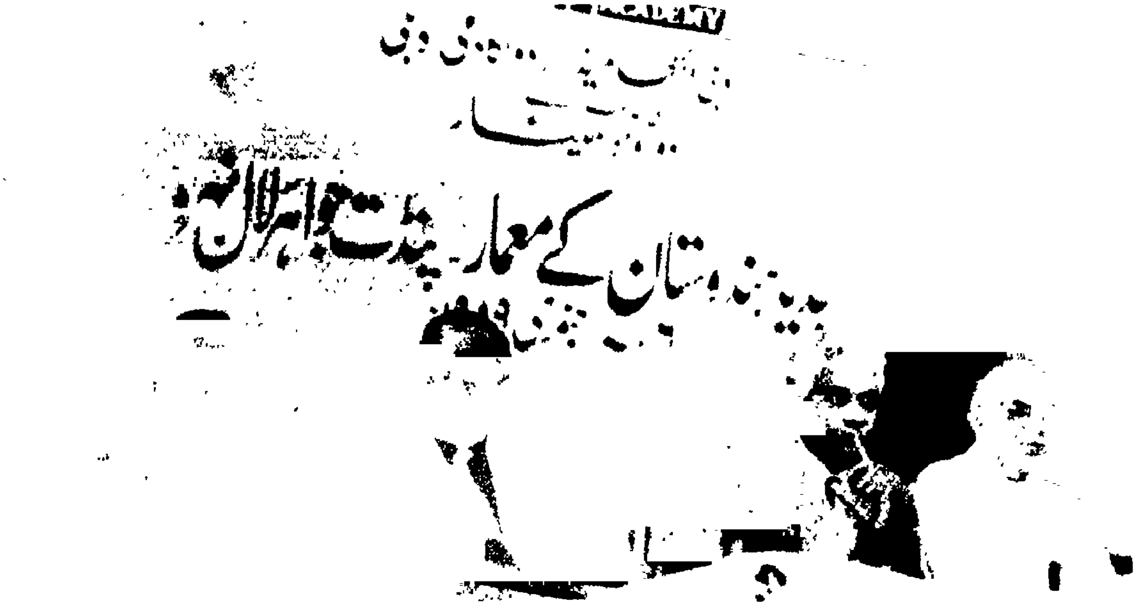
افتتاحی اجلاس کی صدارت جامعہ ملیہ اسلامیہ کے وائس چانسلر پروفیسر علی اشرف نے کی اور نظامت کے فرائض اس سمینار کے ڈائرکٹر ڈاکٹر شارب ردولوی نے انجام دیے۔ علی اشرف صاحب کی صدارتی تقریر کے بعد جو پنڈت جی کی زندگی کے بعض نجی گوشوں پر روشنی ڈالتی تھی' سکریٹری اکادمی کے شکریے پر یہ اجلاس اختتام کو پہنچا۔

۷ جنوری کو سمینار کا پہلا اجلاس غالب اکیڈمی نئی دہلی میں صبح دس بجے' جواہرلال نہرو یونیورسٹی کے وائس چانسلر پروفیسر محمد شفیع آگوانی کی صدارت میں شروع ہوا اور اس کی نظامت ڈاکٹر اختر الواسع نے کی۔ اس اجلاس میں دو مقالے پڑھے گئے۔ پہلا مقالہ جناب ڈی۔ آر۔ گوئل نے پڑھا' عنوان تھا "پنڈت نہرو کا سیکولر تصور" انھوں نے کہا کہ جس طرح پنڈت جی نے سوشلزم کے روایتی تصور کی توسیع کی' اسی طرح سیکولرزم کو بھی انھوں نے اس کے روایتی مفہوم میں قبول نہیں کیا جس سے مراد لامذہبیت لی جاتی رہی ہے۔ پنڈت جی کا سیکولرزم کا تصور یہ تھا کہ حکومت مذہب کی بنیاد پر اپنے شہریوں کے ساتھ کوئی امتیاز نہ برتے اور سب کے ساتھ مساوی سلوک کرے جناب احمد رشید شیروانی کے مقالے کا عنوان تھا "پنڈت نہرو اور اقلیتی مسائل"۔ انھوں نے اقلیتی مسائل کے حل کے لیے پنڈت جی کی مخلصانہ کوششوں کا ذکر کرتے ہوئے کہا کہ یہ مسائل زیادہ تر مسلم اقلیت سے تعلق رکھتے ہیں اور اگر یہ اب تک حل نہیں ہوسکے ہیں تو اس کی بھی زیادہ ذمے داری خود اس اقلیت پر عائد ہوتی ہے جو علم و عقل سے کم اور جذبات و توہمات سے زیادہ کام لینے کی عادی ہے۔ اب وقت آگیا ہے کہ وہ اپنا طرزِ عمل تبدیل کرے۔

دونوں مقالوں پر گرما گرم بحث ہوئی اور سامعین نے مقالہ نگاروں سے متعدد سوالات بھی کیے۔

اس اجلاس کے مہمانِ خصوصی علی گڑھ مسلم یونیورسٹی کے سابق وائس چانسلر پروفیسر علی محمد خسرو تھے ان کی تقریر خیال انگیز ہونے کے ساتھ ساتھ اس قدر دلچسپ تھی کہ وہ کہیں اور سنا کرے کوئی۔ آغاز سے اختتام تک سامعین نے انھیں ہمہ تن گوش ہوکر سنا۔ صاحبِ صدر' پروفیسر آگوانی صاحب نے کہا کہ پنڈت نہرو قومی اتفاق رائے بنانے کی غیر معمولی صلاحیت رکھتے تھے اور بہ حیثیت وزیر اعظم یہ ان کا بہت بڑا وصف تھا۔

کھانے کے وقفے کے بعد اس دن کا دوسرا اور آخری اجلاس سہ پہر ڈھائی بجے کشمیر



دوسرے دن کا پہلا اجلاس' بائیں سے : ڈاکٹر اختر الواسع' پروفیسر علی محمد خسرو' پروفیسر محمد شفیع آگوانی' جناب احمد رشید شیروانی

جدید ہندوستان کے معمار - پ...



آخری اجلاس، بائیں سے: پروفیسر عنوان چشتی، پروفیسر مسعود حسین خاں، پروفیسر مشیر الحق اور پروفیسر مشیر الحسن

(تصاویر: سیّد فدا علی)

یونیورسٹی کے وائس چانسلر پروفیسر مشیر الحق کی صدارت میں ہوا۔ نظامت کے فرائض پروفیسر عنوان چشتی نے انجام دیے۔ اس اجلاس میں بھی دو مقالے پڑھے گئے۔ پہلا مقالہ پروفیسر مسعود حسین خاں صاحب کا تھا۔ "پنڈت نہرو اور جدید ہندوستانی زبانیں" ان کا خیال تھا کہ پنڈت نہرو نے لسانی مسائل پر غیر ماہرانہ انداز میں سوچا ہے لیکن ان کے پیش نظر ملک کی لسانی یک جہتی تھی جس کی افادیت اپنی جگہ مسلم ہے۔ پروفیسر مشیر الحسن کے مقالے کا عنوان "پنڈت نہرو اور اقلیتیں" تھا۔ انھوں نے کانگریس کی اس عوامی رابطہ مہم کا تفصیلی جائزہ پیش کیا جس کے روح رواں پنڈت جی تھے۔

صدر جلسہ پروفیسر مشیر الحق نے اپنی صدارتی تقریر میں کہا کہ پنڈت جی عملی سیاست کے تقاضوں میں ہمہ وقت گھرے رہتے تھے لیکن انھوں نے اپنی تمام تر عملی مصروفیت کے باوجود نظریاتی سطح پر بھی ملک و قوم کو بہت کچھ دیا اور ایسی دور رس پالیسیاں وضع کیں جن سے ہم آج بھی روشنی حاصل کر رہے ہیں۔

صدارتی تقریر سے پہلے اکادمی کی کلچرل اور سمینار سب کمیٹی کے چیرمین دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی نے دونوں اجلاسوں میں پڑھے جانے والے مقالوں کا تجزیہ پیش کیا۔ اور ان اختلافی امور پر بھی اظہار خیال کیا جو دوران بحث سامنے آئے تھے۔

سکریٹری اکادمی کے اس اعلان کہ اردو اکادمی کی جانب سے ایک اردو ماڈل اسکول کے قیام کی حتی الوسع کوشش کی جائے گی اور شرکاے سمینار کے شکریے پر یہ دو روزہ سمینار اختتام پذیر ہوا۔

بلاسپور میں
ضلع اردو صلاح کار کمیٹی کا قیام

انجمن ترقی اردو بلاسپور کی کوششوں سے ڈپٹی ڈائرکٹر ایجوکیشن نے ضلع اردو صلاح کار کمیٹی تشکیل دی ہے جس میں انجمن ترقی اردو، بزم ادب، اردو سرکل سبھانیہ انجمن اسلامیہ کے نمائندوں کے علاوہ اردو تعلیم سے دلچسپی رکھنے والے حضرات کو بھی شامل کیا گیا ہے۔ اس کمیٹی کے ایما پر ۸۴ء میں تقرر کردہ بیس اردو ٹیچرس اور حال ہی میں اوپارک شکچھا یوجنا کے تحت قائم پانچ اردو اسکولوں کے ٹیچرس کا ایک سہ روزہ تربیتی کیمپ سبھانیہ انجمن اسلامیہ گرلز ہائر سکنڈری اسکول میں رکھا گیا۔ چھتیس گڑھ کے علاقے میں اپنے طرز کا پہلا کیمپ تھا۔ کیمپ میں ٹیچرس کے علاوہ غیر سرکاری افراد نے بھی شرکت کی۔ ڈاکٹر گپتا اور محترمہ پشپا دکھچت نے یہ کہا کہ اردو ٹیچرس ایسا ماحول بنائیں کہ غیر اردو داں خود اردو پڑھنے کی خواہش کریں۔ اساتذہ کو ٹریننگ کے سرٹیفکیٹ ہندی اور اردو میں تقسیم کیے گئے۔ ٹریننگ کے بعد جب ٹیچرس اپنے اسکولوں میں گئے تو انھیں اردو پڑھانے کی اجازت بخوشی مل گئی۔ اس سے قبل اس کام میں رکاوٹیں تھیں۔

(مقصود احمد مکی)

ادیبوں کی حیاتِ معاشقہ

اِدارۂ انشا "ادیبوں کی حیاتِ معاشقہ" کے عنوان سے ایک خاص نمبر شائع کرنے والا ہے جس میں پہلی بار اُردو و غیر اردو شاعروں اور ادیبوں کی حیاتِ معاشقہ کو یکجا پیش کیا جا رہا ہے۔ یقیناً شائقینِ علم و ادب اس میں دلچسپی رکھتے ہوں گے کہ جن قلم کاروں نے محبت کے انوکھے خیالات اور کرداروں کو جنم دیا خود انھوں کس طرح اور کیسی محبت کی ہوگی۔ اس شمارے کے چالیس پچاس مضامین بہ یک وقت سنجیدہ و دلچسپ، پُرتجسس اور تحریک سے بھرپور ہیں جو علمی و نفسیاتی پس منظر میں لکھے گئے ہیں۔ اس شمارے کے بعد ادیبوں کی زندگی کی صاف، متحرک اور بولتی ہوئی رومانی سچائیاں اُردو قاری کے سامنے پہلی بار بےنقاب ہوں گی۔ یہ کسی بھی لائبریری کے لیے یہ ایک اہم تاریخی دستاویز ہوگا۔ مزید معلومات کے لیے اِس پتے پر خط و کتابت کریں۔ مدیر ماہنامہ انشاء' انشاء پبلی کیشنز۔ ۶۔ اے، کنائی سیل اسٹریٹ کلکتہ ۔۷۳۔

(ف۔ س۔ اعجاز)

داستانِ اُردو
(آزادی کے بعد کے مسائل)

میں اُردو زبان کی اِس صورتِ حال کے بارے میں جو آزادی کے بعد سیاسی ناانصافی اور لسانی عصبیت سے عبارت ہے، اُردو کے مشہور معروف ہندوستانی ادیبوں، شاعروں، صحافیوں اور اُردو دوستوں کے اہم ترین مضامین، خطبات، مکتوبات، اِداریوں اور تقاریر کا ایک ضخیم مجموعہ مرتب کر رہا ہوں جسے آفسٹ سے شائع کر کے آئندہ پارلیمانی و عام انتخاب سے پہلے وزیرِ اعظم اور مختلف ریاستی وزرائے اعلیٰ کے علاوہ باضمیر عوام اور دانشوروں کی خدمت میں پیش کر دیا جائے گا۔ اُردو کی اِس تاریخی اہمیت کی حامل داستانِ غم و احتجاج کا ایک حصہ اُردو ہی کے بارے میں شعری تخلیقات پر مبنی ہوگا۔

اُردو کے اہلِ قلم حضرات کی فہرست بہت طویل ہے اور ایسے ہزاروں نثر نگار و شاعر ہیں جن کے اُردو زبان کے بارے میں افکار کو شامل کیے بغیر اِس دستاویز کو مکمل نہیں سمجھا جا سکتا، اِس لیے میں اپنے سارے ہم قلم ساتھیوں سے گذارش کروں گا کہ وہ اپنی مطبوعہ یا غیر مطبوعہ کوئی نثری تحریر یا شعری تخلیق چاہے وہ ایک ہی شعر کیوں نہ ہو مجھے درج ذیل پتے پر جلد از جلد معہ اپنا فوٹو و پتہ مرحمت فرمائیں۔

"شانتی نکیتن" ڈی۔ 2290' اندرا نگر لکھنؤ۔۲۲۶۰۱۶

(رام لال)

سیّد اطہر حسین کی وفات

اُردو شاعر اور مصنف سابق آئی۔ اے۔ ایس افسر اور اودھ کی ایک ممتاز شخصیت سیّد اطہر حسین صاحب کا ۲۱ر دسمبر کی رات کو فیض آباد میں جہاں وہ ریٹائر ہونے کے بعد مقیم ہو گئے تھے، قلبی عارضے میں انتقال ہو گیا۔ مرحوم کی عمر تقریباً ۶۸ برس تھی۔ اہلیہ کا انتقال پہلے ہی ہو چکا تھا۔

سید اطہر حسین صاحب یکم مارچ ۱۹۲۰ء کو فیض آباد ضلع کے موضع شمنوا میں پیدا ہوئے۔ ان کی تعلیم الہ آباد میں ہوئی۔ ایم۔ ایس۔ سی کی ڈگری حاصل کرنے کے بعد وہ سرکاری ملازمت میں آگئے۔ اور ڈپٹی کلکٹر کے عہدے پر فائز ہوئے۔ ترقی کر کے آئی۔ اے۔ ایس ہوئے اور حکومت اتر پردیش کے اعلا عہدوں پر فائز رہے جن میں لکھنؤ کے کمشنر کا عہدہ اور ریاستی حکومت کے سکریٹری کے عہدے شامل ہیں۔

اطہر حسین صاحب مرحوم کو باوجود سرکاری ملازمت کی ذمہ داریوں اور باوجود سائنس کی تعلیم کے اُردو ادب سے بہت شغف تھا، شاعری کے علاوہ ان کو مذہبی علوم سے بھی بہت دلچسپی تھی اور انھوں نے بہت سی کتابوں کے ترجمے کیے۔ اور بہت سی کتابیں تصنیف بھی کیں۔ ان کے کلام کے بھی متعدد مجموعے شائع ہوئے جن میں 'جامِ شعور'، 'شعاعِ زندگی'، اور 'حکایتِ ناتمام' کے علاوہ نعتیہ کلام کے مجموعے شامل ہیں۔

اُردو نثر میں ان کی آپ بیتی "ایک سویلین کی سرگزشت" قابلِ ذکر ہے اور مذہبی تصنیفات میں "خلاصۂ مضامینِ قرآن" اور "مطالعۂ قرآن کا رہنما" وغیرہ اہم ہیں۔ انھوں نے "اوقاف کی تنظیم" کے عنوان سے بھی ایک اہم اور مفید تصنیف یادگار چھوڑی ہے۔ اس کے علاوہ انھوں نے اہم دینی کتابوں کے انگریزی میں ترجمے کیے جن میں سیرتِ نبوی کی کتابیں، احادیث کے تراجم، مسلم پرسنل لا پر ایک تصنیف، قرآن مجید کے بارے میں متعدد تصنیفات اور تراجم حضرت مجدد الف ثانی کے مکتوبات کے ترجمے، شیخ عبدالوہاب کی کتاب ازالۃ الشکوک کا ترجمہ، سید سلیمان ندوی کی سیرت حضرت عائشہ کا ترجمہ وغیرہ شامل

(بقیہ صفحہ ۵۸ پر)

آپ کی رائے

○ آپ کا رسالہ "ایوانِ اُردو" پابندی کے ساتھ اپنے قریبی بُک ڈپو سے خرید کر زیرِ مطالعہ رکھتا ہوں۔ مضامین اکثر دلچسپ اور علمی و اخلاقی اعتبار سے قابلِ دید پاتا ہوں۔ ماشاء اللہ آپ کا رسالہ احیائے اُردو کا اس دورِ پر آشوب میں بہترین ترجمان اور داعی ہے۔

—— محمد نعیم اختر فیروزآبادی، سہارن پور

○ "ایوانِ اُردو" ہمارا پسندیدہ ادبی رسالہ ہے۔ بڑی بے چینی سے انتظار رہتا ہے اور دیکھتے ہی دل میں خوشی کی ایک لہر دوڑ جاتی ہے۔ ادبی سائنسی معلومات سے بھرپور تمام کالم دلچسپ ہوا کرتے ہیں۔

—— خالد ظفر، بمبئی

○ ماہ نامہ "ایوانِ اُردو" کو پیکرِ جمیل بہ لباسِ حریر کہنا مبالغہ نہ ہوگا۔ اس ماہ نامے نے وقت کی بہت بڑی ضرورت کو پورا کیا ہے۔

—— محمد معین الدین شمسی، گریڈیہہ

○ "ایوانِ اُردو" کی مُسلسل ترقی اور استحکام کے لیے دُعاگو ہوں۔ علمی اور سائنسی مضامین کی طرف مزید توجہ کی ضرورت ہے۔ "ہم طرح اشعار" اور "شعری و نثری عنوانات" کی جگہ لطیفے اور کارٹون کو دی جاسکتی ہے۔ کبھی کبھی غیر سیاسی مشہور شخصیتوں کے انٹرویوز بھی شائع کیے جاسکتے ہیں۔

—— حبیب اختر، گریڈیہہ

○ اُردو زبان کا بنیادی مسئلہ کیا ہے؟ اس پر ضرور غور کیا ہوگا۔ میں ایک اہم بات کی طرف توجہ منعطف کرانا چاہتا ہوں۔ نصاب کی انگریزی کتابوں میں ہر صوبے کے انگریزی ادیب داخل ہیں اور یہی نہیں بلکہ ہر صوبے کی مشہور و معروف عمارتوں اور شخصیتوں کے بارے میں اسباق اور نظمیں اس صوبے کی انگریزی نصاب کی کتابوں میں ملتے ہیں لیکن اُردو زبان کا کسی بھی مخصوص علاقے سے تعلق اور رشتہ ظاہر کرنے کے لیے نصاب کی کتابوں میں وہاں کے شعرا، ادبا یا وہاں کی عمارتوں کا تذکرہ نہیں ملتا آخر ایسا کیوں ہے؟ مغربی بنگال میں چلنے والی اُردو کی درسی کتابوں میں وحشت کلکتوی اور شانتی رنجن بھٹاچاریہ کا تذکرہ کیوں نہیں ملتا؟ تامل ناڈو میں چلنے والی اُردو کی درسی کتابوں میں ولی ویلوری کا تذکرہ یا مدراس کے بندرگاہ کا تذکرہ کیوں نہیں ملتا؟ راجستھان کی منظور شدہ درسی کتابوں میں جے پور، ٹونک اور دوسرے شہروں کے ادیبوں اور شاعروں وغیرہ کا تذکرہ کیوں نہیں ملتا۔

چند شعرا ہیں جو سارے صوبجات کے طلبا کو پڑھنے پڑتے ہیں یہی نہیں انھیں صرف دہلی اور لکھنؤ کی عمارتوں سے متعارف کرایا جاتا ہے جن میں سے زیادہ تر کو شاید وہ کبھی دیکھ بھی نہ پائیں۔ اس طرح ان کتابوں کے مرتبین زبان کو صرف چند شہروں کی زبان ثابت کرتے ہیں! علاقائی ربط کہاں ہے؟

—— شاہ نصیر فریدی، آگرہ

مولانا ابوالکلام آزاد نمبر

○ 'مولانا ابوالکلام آزاد نمبر' پسند آیا۔ مو کی شخصیت اور کارناموں پر اچھے مضامین محن سے مرتب کیے گئے ہیں اور مولانا کی چند نمایا تحریروں اور تقریروں کے علاوہ ان کے متعلق ک ہوئی بعض پرانی چیزیں بھی سلیقے سے جمع کر دی گ ہیں، تاریخی تصاویر اس کے علاوہ ہیں اگرچہ وہ واضح نہیں ہیں، اور بعض صفحات بھی بے ترتیب یا گُم ہوگئے ہیں۔

نمبر کی چند مندرجات کا تذکرہ خصوص طور سے کرنا چاہتا ہوں۔ جناب ایم حبیب خا نے "مولانا آزاد اور انجمن ترقیِ اُردو ہند" کے موضوع پر اچھی روشنی ڈالی ہے۔ صفحہ ۳۵ سے ۵۰ تک کے مضامین غائب ہیں[1]، جن میں جناب عبدالقوی دسنوی کا مضمون "آزاد : وادیِ صحا میں" اور جناب عبداللطیف اعظمی کا نوشتہ "مولانا آزاد کی گرفتاریاں اور سزائیں" بھی ہوا گے۔ جناب محمد ضیاء الدّین انصاری کی تحریر "علا شبلی اور مولانا آزاد کے تعلّقات پر ایک نظر" بہت خوب ہے، لیکن مصنّف کا خیال صحیح نہیں ہے کہ "مولانا کی تحریروں میں جو فصاحت اور شگفتگی ہے وہ بڑی حد تک شبلی ہی کے خوانِ تکلّم کی ریزہ چینی کے طفیل ہے۔" (ص ۵۶)۔ اس غلط خیال کی تردید خود مصنّف کے اس بیان سے ہوتی ہے: "اس کے برخلاف مولانا جس طرزِ تحریر کے موجد تھے اس میں خطیبانہ انداز اور جوش و ولولہ کی بالادستی تھی" (۵۹)

جناب خلیق احمد نظامی کا مضمون "مولانا آزاد کا تاریخی شعور" نہایت معلومات افزا، دلچسپ اور فکر انگیز ہے۔ جناب محمد حسن کی تحریر "مولانا ابوالکلام کے تعلیمی نظریے" مولانا کے ایک

کارنامے کا اچھا تعارف ہے۔ لیکن جناب ظ۔ انصاری نے "ابوالکلام آزاد: شخصیت اور کارناموں پر تفصیلی تبصرہ" کے عنوان سے اُردو اکادمی دہلی کے سیمینار کے مضامین پر مشتمل مجموعے مرتبہ ڈاکٹر خلیق انجم کا جو جائزہ لیا ہے وہ نہ صرف بہت سرسری ہے بلکہ ذرا سطحی قسم کا معلوم ہوتا ہے۔ موصوف نے "قومی تحریک کا اصلی مثلث" کے زیرِ عنوان جس طرح آزاد اور نہرو کے مقابلے میں گاندھی جی کو بڑھایا ہے وہ حد درجہ مبالغہ آمیز ہے اور علمی کے بجائے سیاسی تبصرہ معلوم ہوتا ہے۔ عوامی سطح پر گاندھی جی کی مقبولیت جتنی بھی ہو، ذہنی و علمی اعتبار سے آزاد اور نہرو ان سے ایک درجہ بھی کم نہیں تھے، بلکہ کہا جا سکتا ہے کہ فکری لحاظ سے یہ دونوں زیادہ ممتاز تھے اور گاندھی جی کا امتیاز زیادہ تر عملی میدان میں تھا۔ لہٰذا قومی تحریک کے مثلث میں آزاد اور نہرو کے زاویے گاندھی جی کے زاویے کے برابر تھے اور ان دونوں رہنماؤں کے بغیر صرف گاندھی جی کو مدِّ نظر رکھ کر نہ تو غلام ہندوستان کی آزادی کا کوئی صحیح تصور کیا جا سکتا ہے نہ آزاد ہندوستان کی نئی تعمیر کا۔ لہٰذا تینوں رہنماؤں کے موازنے میں توازن سے کام لینا چاہیے، جب کہ ظ صاحب نے صریح بے اعتدالی اور زیادتی کی ہے۔

مجھے اس بات کی خوشی ہے کہ نمبر کے اکثر مضامین میں تصحیح پر کافی توجہ دی گئی ہے اور کتابت و طباعت کے نقائص بہت ہی کم ہیں۔ یہ ایک ضخیم نمبر کے لیے نہایت قابل تعریف ہے اور [illegible]سے ادارے کی محنت اور سلیقے دونوں کا ثبوت [illegible] جس کی داد دی جانی چاہیے۔

—— عبدالمغنی، پٹنہ

[illegible] کی اس غلطی پر اور اس پر بھی کہ آپ کو یہ [illegible] ہمیں افسوس ہے —— ادارہ

○ آپ نے واقعی محنت کی ہے اور سلیقے سے یہ اشاعتِ خاص پیش کی ہے۔ مجھے خاص طور پر ڈاکٹر مشیر الحق کا حزب اللہ سے متعلق مضمون پسند آیا۔ مضامین اور بھی اچھے ہیں مگر مشیر صاحب نے مولانا کی ایک خفیہ تحریک کے بارے میں بہت سی معلومات یکجا کر دی ہیں جس سے اس کی کیفیت سمجھنے میں سہولت ہو جاتی ہے۔

ظ صاحب کا تبصرہ مزے دار ہے اور ان کے مخصوص انداز کا آئینہ دار۔ انھوں نے جامع مسجد والی مولانا کی تقریر کے بارے میں شبہ کا اظہار کیا ہے۔ مگر وہ اس موضوع پر الگ سے لکھیں تو بہتر ہوگا اور یہ بتائیں کہ اس کے کون کون سے جملے پہلے کی کسی تقریر یا تحریر سے لیے گئے ہیں۔ آپ ان سے فرمائش کرکے یہ دوسرا مضمون بھی لکھوائیں فی الحال تو یہ دعویٰ بغیر ثبوت کا ہے۔

—— عرشی زادہ، رام پور

○ "ایوانِ اُردو" کے مولانا ابوالکلام آزاد نمبر میں آپ کی محنت اور حسنِ ادارت کی جھلکیاں ہر صفحے پر موجود ہیں۔ اُردو دنیا کو یہ حسین اور گرانقدر تحفہ دینے کے لیے میں دل کی گہرائیوں سے آپ کی خدمت میں مبارکباد پیش کرتا ہوں۔

جناب عبداللطیف اعظمی کے مضمون "قطعہ تاریخ وفات مولانا آزاد" کے سلسلے میں عرض ہے کہ تاریخ وفات اس مصرعہ "دل پہ آج ہجوم یاس تیرے غم میں ہے آزاد" سے نکلتی ہے اور یہ سن عیسوی ۱۹۵۸ء ہے، 'ہماری زبان' اور 'آج کل' کے حوالے سے نقل کیے گئے قطعے میں ماہ و تاریخ غلط ہے۔ ان سے نہ تو سن ہجری میں اور نہ سن عیسوی ہی میں تاریخ نکلتی ہے۔ اعداد کی تفصیل یوں ہے: دل = چونتیس [34]؛ پہ = سات [7]؛ آج = چار [4]؛ ہجوم = چھپن [56]؛ یاس = اکہتر [71]؛ تیرے = چھ سو بیس [620]؛ غم = ایک ہزار چالیس [1040]؛ میں = ایک سو [100]؛ ہے = پندرہ [15]؛ آزاد = تیرہ [13] —— اور ان سب کا جوڑ ۱۹۵۸ء ہوتا ہے۔ اعظمی صاحب نے اصل مسودے کی جو نقل دی ہے وہ صحیح ہے۔ ابوالکلام کے نیچے کھینچا گیا خط عنوان کے لیے ہے اور مصرعے میں "ہجوم یاس" کے نیچے کا خط دراصل پورے مصرعے کے لیے ہے۔

جناب قاضی افضل حق قرشی نے "حیات ابوالکلام ماہ و سال کے آئینے میں" میں مولانا کی رانچی میں نظربندی سے رہائی کی تاریخ یکم جنوری ۱۹۲۰ء لکھی ہے۔ یہی تاریخ جناب عبداللطیف اعظمی نے اپنے مضمون "مولانا آزاد کی گرفتاریاں اور سزائیں" میں دہرائی ہے جو میرے خیال میں درست نہیں ہے۔ جناب مالک رام نے اپنے مضمون "مولانا آزاد بحیثیت صحافی" مطبوعہ ماہنامہ "آج کل" نومبر ۱۹۸۸ء (آزاد نمبر) اور جناب عبدالقوی دسنوی نے اپنی کتاب "ابوالکلام آزاد" مطبوعہ ساہتیہ اکادمی دہلی میں رانچی سے رہائی کی تاریخ ۲۷ دسمبر ۱۹۱۹ء درج کی ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ یہی تاریخ صحیح ہے۔ یکم جنوری ۱۹۲۰ء دراصل مولانا کی رانچی سے روانگی کی تاریخ ہے۔

—— یعقوب یاور کوٹی، بھوپال

○ "ایوانِ اُردو دہلی" کا ابوالکلام آزاد نمبر نظر نواز ہوا۔ اس میں مولانا موصوف کی ہمہ گیر شخصیت کو الفاظ کے حصار میں لینے کی ہر پہلو ہر زاویے سے حتی المقدور سعی کی گئی ہے۔ حقیقتاً بڑا ہی بیش بہا تحفہ آپ نے پیش کیا ہے۔ اس بھرپور جہد و کوشش کی تعریف نہ کرنا قطعی ناانصافی ہوگی۔

'قطعہ تاریخ وفات اور آزاد' میں

عبداللطیف اعظمی صاحب نے چند باتوں کی طرف توجہ دلائی ہے۔ ابوالکلام/۱۲۵ اور متعلقہ مصرعے کا ہجوم یاس/۱۲۵ دونوں کے اعداد یکساں ہیں یعنی آزاد کی وفات پر 'ابوالکلام' کو 'ہجوم یاس' کہا گیا ہے غالباً ڈاکٹر سیّد عابد حسین مرحوم کا اشارہ یہی ہے اور زیرخط کا مطلب بھی۔ اور اس پورے مصرعے سے: "دل پہ آج ہجوم یاس تیرے غم میں ہے آزاد"

۱۹۵۸ء

عیسوی سنہ میں تاریخ نکلتی ہے، ہجری سنہ کسی صورت میں نہیں۔ دل کے بعد لفظ 'پہ' ہی دُرست ہے 'پر' نہیں۔

"ابوالکلام آزاد: شخصیت اور کارناموں پر تفصیلی تبصرہ" میں جناب ظ۔ انصاری نے بڑی باریک بینی، حق بیانی اور عرق ریزی سے کام لیا ہے۔ ان کی تحریر میں جا بجا ہلکا پھلکا طنز بھی نمایاں ہے جو لطف سے خالی نہیں۔ اس کے مطالعے سے کم از کم کتاب کے تمام مقالوں کی مجمل طور پر واقفیت بھی ہو جاتی ہے۔ اس تبصرے کی سب سے بڑی افادیت یہی ہے۔

—— شاذ رحمانی، کٹیہار

○ اُردو رسائل کے مولانا آزاد نمبر اور ان پر کتابوں کے مطالعے کے بعد میرا خیال تھا کہ اس نمبر میں کوئی اہم نکتہ یا کوئی نئی جہت کیا ہو سکتی ہے، ہے مگر آپ نے اُردو رسائل کے مولانا آزاد نمبر اور ان پر کتابوں کی اس بھیڑ میں "ایوانِ اُردو دہلی" کے مولانا ابوالکلام آزاد نمبر کو ایک دستاویزی حیثیت کے ساتھ پیش کیا ہے۔ چند روایتی مضامین سے قطع نظر، بقیہ تمام مضامین میں مولانا کی شخصیت ان کی فکر اور اندازِ بیان کی وضاحت کے لیے اچھوتے نقطۂ نظر کی کارفرمائی ملتی ہے۔ خلیق احمد نظامی صاحب نے اپنے مضمون میں مولانا آزاد کے تاریخی شعور کا ان کی تحریروں کے تناظر میں نہایت عالمانہ تجزیہ کیا ہے۔ جو آزاد شناسی کے لیے ایک نئی اور اہم جہت ہے۔ جمیل مظہری اور کنور مہندر سنگھ بیدی سحر کے مضامین سے مولانا آزاد کی علمیت، اندازِ تفکر، فکر و عمل اور ان کے محسوسات و کیفیات کا بخوبی علم ہوتا ہے۔ "ایوانِ اُردو دہلی" کا ابوالکلام آزاد نمبر نئی نسل کے لیے ایک بیش قیمت تحفہ ہے۔

—— ابوالبرکات، سیوان

○ "ابوالکلام آزاد نمبر" کے لیے مبارکباد۔ نہایت ہی عمدہ اور کارآمد ہے۔ نہرو نمبر کا انتظار ہے۔

—— جاوید اختر آزاد، مونگیر

○ "ایوانِ اُردو" کا ابوالکلام آزاد نمبر میرے لیے آگہی و مسرّت کا سبب بنا۔ ویسے تو اس سے پہلے بھی بہت سے نمبر نکل چکے ہیں لیکن ان سب میں احقر کو "ایوانِ اُردو" کا یہ آزاد نمبر بے حد پسند آیا۔

—— نوشاد عالم ساقی، مظفر پور

○ "ابوالکلام آزاد نمبر" دیکھا۔ آپ نے اتنا اچھا اور ضخیم نمبر نکال کر دریا کو کوزے میں بند کر دیا ہے ایسا شاندار نمبر اب تک میری نظر سے نہیں گذرا۔ کتابت، طباعت، تصاویر کی سیٹنگ پُرمغز مضامین، حسین اور دلکش ٹائٹل پیج، سب میں آپ کی بیدار ذہانت کارفرما ہے۔

—— زین اللہ صدیقی جلال پوری، بستی

○ انشاء اللہ یہ خصوصی نمبر مولانا آزاد کے مختلف پہلوؤں پر تحقیق کرنے والوں کے لیے معاون و مددگار ثابت ہوگا۔ یہ صرف یہی نہیں بلکہ یہ نمبر تمام مسلمانانِ ہند کی مولانا ابوالکلام آزاد سے عقیدت میں اضافے کا باعث ہوگا۔ بلاشک و شبہ یہ نمبر ہماری توقع سے بہت زیادہ اچھا ہے۔

—— محمد فاروق اعظم، بھاگلپور

○ 'مولانا ابوالکلام آزاد نمبر' سے ماہنامہ 'ا[یوانِ] اُردو' کے علمی وقار میں قابلِ ذکر اضافہ ہوا۔ تین سو صفحات کے اس خاص نمبر میں مولانا [کی] متنوع زندگی کے مختلف پہلوؤں پر جو معتبر ا[ور] مفصّل معلومات فراہم کی گئی ہے وہ اس [سے] قبل یکجا صورت میں سامنے نہیں آئی تھی ارب[اب قلم] نے اپنے مضامین میں مولانا کی زندگی کے بعض اہم گوشوں کو اُجاگر کیا ہے اور کئی ایسے سوا[ل] بھی اٹھائے ہیں جن سے مزید تحقیق کے دروا[زے] کھلے ہیں اس خاص نمبر کا یہ ایک ایسا امتیاز [ہے] جو عام خصوصی شماروں میں کم ہی دیکھا جاتا [ہے]۔

تاباں نقوی، نئی دہ[لی]

○ 'ابوالکلام آزاد نمبر' پڑھ کر طبیعت خوش ہو گئی۔ مشمولہ مضامین سے واقعی آزاد جیسی ہم[ہ جہت] شخصیت کے ہر پہلو پر بھرپور روشنی پڑتی ہے۔ تشنگی کا احساس ذرا بھی نہ ہوا۔ اس میں شک نہیں کہ اُردو اکادمی، دہلی نے مرحوم کی صد سالہ سالگرہ کے موقعے پر ان کے شایانِ شان نمبر نکالا ہے۔

—— افتخار فہیم، کٹیہا[ر]

○ 'ابوالکلام آزاد نمبر' کے "حرفِ آغاز" میں آپ نے بالکل صحیح فرمایا ہے کہ "ایسی عظیم شخصیت کی سیرت و سوانح اور افکار و اعمال کی مختلف جہات کا احاطہ چند سو صفحات میں ممکن نہیں"۔ لیکن اس نمبر کو دیکھنے کے بعد آپ کی محنت کا اندازہ بخوبی لگایا جا سکتا ہے۔ اس نمبر کی جتنی بھی تعریف کی جائے کم ہے۔ "ایوانِ اُردو" [illegible] کی گوناگوں شخصیت کو اجاگر کر دیا ہے بیش بہا سرمایہ ہے جس سے آنے والی نسل مستفیض ہوگی۔

۴۶

۴۷ ——

۴۸ ——

۵۴ ——

...دہلی ۱۱۰۰۰۲ سے شائع کیا

[illegible] مولانا ابوالکلام آزاد نمبر
[illegible] دل سے دُعا نکل گئی کہ اللہ آپ
[illegible] پرواز اور حوصلے بلند کرے کہ آپ لوگ
[illegible] اور معیار کے نمبروں سے اُردو کو مالا مال
[illegible]۔ آپ لوگوں نے ایک کارنامہ انجام

—— شیخ رحمٰن اکولوی، اکولہ

[illegible] نے آزاد نمبر شائع کرکے اُردو اکادمی
[illegible] میں اضافہ کیا ہے۔ صوری و معنوی اعتبار
[illegible] نمبر اپنی مثال آپ ہے۔ بلاشبہ مولانا آزاد
[illegible] اسی قابل ہے کہ ان کے صد سالہ
[illegible] پر ایسے ہی فقید المثال نمبر شائع کیے
[illegible] نے حق ادا کر دیا۔

—— مرتضیٰ علی شاد، بھوپال

○ "ایوانِ اُردو دہلی" کا آزاد نمبر ابتدا تا انتہا
[illegible] دلچسپی سے پڑھا۔ سبھی مضامین داد طلب
[illegible] کا جس قدر گہرا مطالعہ کیا جائے گا
[illegible] کے مفاہیم اُجاگر ہو کر دماغ افروز
[illegible] گے۔ یہ اب اپنی اپنی سمجھ پر منحصر ہوگا
[illegible] صلاحیت ہوگی وہ اتنا ہی مستفید

—— عرفان زیدی بدایونی، رامپور

[illegible] نے 'ابوالکلام آزاد نمبر' نکال کر اُردو
[illegible] بلند کیا ہے۔ میری جانب سے تمام
[illegible] کی خدمت میں مبارکباد۔

—— ایم مختار احمد، کلکتہ

○ مولانا ابوالکلام آزاد پر ایک جامع
[illegible] اور تقریباً ہر لحاظ سے خاص نمبر
[illegible] کی گہرائیوں سے مبارکباد

[illegible] کی اس غلطی پر اور
[illegible] ہمیں افسوس ہے —— ایس۔ اعظمی، دیوبند

[illegible] آزاد نمبر [illegible]
بلکہ کسی بھی ادارے نے نہیں چھاپا۔

—— میر شفقت علی وفا، محلہ حسینی، فیروزآباد (آگرہ)

○ "ایوانِ اُردو" کا مولانا ابوالکلام آزاد نمبر باصرہ نواز ہوا اس میں کوئی احتمال نہیں کہ ایسی عظیم شخصیت کی سیرت و سوانح اور افکار و اعمال کی مختلف جہات کا صرف ۲۹۰ صفحات میں مجمل نہیں بلکہ ایک مفصل خاکہ آپ نے قارئین کی خدمت میں پیش کر دیا ہے دوسرے رسالوں کے آزاد نمبر بھی شائع ہوتے ہیں مگر ان میں اور "ایوانِ اُردو" کے آزاد نمبر میں مضامین اور ترتیب و تزئین کے لحاظ سے زمین آسمان کا فرق ہے اس نمبر کے ساتھ آپ نے بہترین مدبرانہ صلاحیت کا بھرپور اظہار کر دیا ہے۔ آپ اس عظیم نمبر کی ترتیب و تزئین کے لیے حکومتِ ہند سے اعلیٰ انعام کے مستحق ہیں۔

—— اسد رضوی، مظفرپور ○

بقیہ : نئی مطبوعات

عہدِ حاضر پر کیا خوب تبصرہ ہے :

اے خدا اس دَور کے بدلے ہوئے حالات میں
آدمیت مانگتی ہوں آدمی کے واسطے

ہرے شجر نے بھرے گھر میں آگ بھیلائی
گماں تھا جس پہ کہ اک روز راحتیں دے گا

تاج کی غزل کا رنگ و آہنگ خوشگوار، دِل کش، دِل نشیں ہے اور یہ توقع کی جا سکتی ہے کہ اسے وہ اور زیادہ خوشگوار، دل کش و دل نشیں بنائیں گی۔

—— دلیپ بادل

[illegible]
ہر شخص جل رہا ہے جفاؤں کی دھوپ میں
دُنیائے رنگ و بو میں وفا کا شجر کہاں (منظر [illegible])

مرسلہ: جاوید اقبال صدیقی، پالنڈ، گیا

جس آدمی کو خود پہ بھروسہ نہیں رہا، وہ آدمی کسی کے لیے معتبر کہاں
(رونق جعفری کالپی)

مرسلہ: دلدار حسین حیدری، حسین آباد کالپی

وہ آدمی جو جل گیا اپنی ہی آگ میں
دُنیا کے حادثات کا اس پر اثر کہاں (نامعلوم)

مرسلہ: اے۔ علی، منڈی بازار، بُرہانپور

مایوس ہونے والے ذرا یہ تو سوچ لے
ایماں میں جھول ہو تو دُعا میں اثر کہاں (یعقوب [illegible])

مرسلہ: محمد اسلم، سکندرآباد (یوپی)

غافل ہیں رسمِ پرسشِ احوال سے بھی لوگ
آدابِ چارہ سازیٔ زخمِ جگر کہاں (یونس احمر)

مرسلہ: محمد شکیل الرحمٰن، بھیکن پور، بھاگلپور

آئندہ مہینے کے لیے اس مصرعے پر اپنی پسند کے شعر اس طرح ارسال کریں کہ ہمیں ۲۱ فروری تک مل جائیں :

حال کُھلتا نہیں زمانے کا
(قافیہ: زمانے — ردیف: کا)

بقیہ : اُردو خبرنامہ

ہیں۔ مجموعی طور سے انھوں نے تقریباً ۵۰ کتابیں یادگار چھوڑی ہیں۔

تعمیری سرگرمیوں میں ان کا اہم کارنامہ لکھنؤ میں "مسلم مسافر خانہ" کی تعمیر ہے اس سلسلے میں انھوں نے خاصی محنت کی تھی۔ سرکاری حلقوں میں وہ مسلمانوں کے معاملات کے اہم واقف کار سمجھے جاتے تھے اور مسلمانوں کے بارے میں حکومت ان سے صلاح و مشورہ کرتی تھی۔ [illegible]
انھیں اپنے جوارِ رحمت میں جگہ [illegible]

فون نمبر: ۲۶۳۴۴۸ اور ۲۷۶۲۱۱

اُردو اکادمی دہلی کا ماہانہ رسالہ

2 = FEB 1989

ایوانِ اُردو دہلی

ادارۂ تحریر
سیّد شریف الحسن نقوی، مخمور سعیدی

جلد: ۲ — شمارہ: ۱۱ ○ فی کاپی ۲/۵۰ روپے، سالانہ قیمت ۲۵ روپے ○ مارچ ۱۹۸۹ء

خط و کتابت اور ترسیلِ زر کا پتہ:
ماہنامہ ایوانِ اُردو دہلی
اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج
نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲

تزئین: ارشد علی خاں
خوشنویس: تنویر احمد

سیّد شریف الحسن نقوی (ایڈیٹر، پرنٹر، پبلشر) نے سیما آفسیٹ پریس، دہلی ۱۱۰۰۰۶ سے چھپوا کر دفتر اُردو اکادمی، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲ سے شائع کیا

حرفِ آغاز

پچھلے دنوں دلّی اُردو اکادمی نے مولانا ابوالکلام آزاد پر ایک دو روزہ سیمینار کا اہتمام کیا۔ اس کے افتتاحی اجلاس کو خطاب کرتے ہوئے بزرگ سیاسی رہنما اور اُڑیسہ کے سابق گورنر جناب بشمبر ناتھ پانڈے نے کچھ ایسی باتیں کہیں جو اب عام طور پر سننے میں نہیں آتیں۔ پانڈے صاحب سیاست میں سرگرم رہنے کے باوجود علم و ادب کے آدمی رہے ہیں۔ ہندوستان کی تاریخ پر اُن کی گہری نظر ہے۔ انھوں نے کہا کہ جب انھوں نے ایک طالب علم کی حیثیت سے تاریخ کا مطالعہ شروع کیا تو تاریخ کی درسی کتابوں میں بہت سی ایسی باتیں پڑھنے کو ملیں جنھوں نے اسلام اور ہندوستانی مسلمانوں کی طرف سے انھیں خاصا بدگمان کر دیا۔ یہ کتابیں انگریز مورخین کی تیار کردہ تھیں اور ان میں بتایا گیا تھا کہ مسلمان حکمرانوں نے اپنی ہندو رعایا کے ساتھ ہمیشہ برا سلوک کیا۔ بالخصوص سلطان ٹیپو اور اورنگ زیب نے۔ پانڈے صاحب نے کہا کہ اس کے باوجود کہ نصاب میں ان کتابوں کو اعتبار کا درجہ حاصل تھا، انھیں ان میں کچھ ایسی داخلی شہادتیں نظر آئیں جو ان کے بیانات کو مشکوک ٹھہراتی تھیں، چنانچہ انھوں نے مطالعے کے لیے مزید کتابوں تک رسائی حاصل کی۔ یہ وہ کتابیں تھیں جو اس دَور کے ہندوستانی مورخین نے لکھی تھیں۔ پھر انھوں نے آرکائوز سے بھی رجوع کیا اور اس طرح دھیرے دھیرے ان کا ذہن صاف ہوتا گیا۔ پانڈے صاحب نے مزید کہا کہ انگریز مورخین نے ہندوؤں اور مسلمانوں کو ایک دوسرے سے بدظن کرنے کے لیے واقعات کو توڑ مروڑ کر ہی پیش نہیں کیا ہے بلکہ بہت سی بے بنیاد باتیں بھی تاریخ میں شامل کر دی ہیں۔ اس کے پیچھے انگریزی حکومت کی سیاسی اغراض کارفرما تھیں۔ انگریزوں کی آمد سے پہلے یہاں کے ہندو و مسلمان تہذیبی اور ثقافتی سطح پر جس طرح شیر و شکر تھے اسے انگریز اس لیے برقرار رہنے دینا نہیں چاہتے تھے کہ یہ اتحاد ان کے لیے ایک مستقل خطرہ تھا۔

پانڈے صاحب نے کہا کہ زیادہ افسوسناک بات یہ ہے کہ آزادی کے بعد بھی ہمارے بچے اپنے ملک کی جو تاریخ پڑھ رہے ہیں، اس کا بیشتر حصّہ انگریز مورخین کی فراہم کردہ اطّلاعات پر ہی مبنی ہے جو گمراہ کن بھی ہیں اور ضرر رساں بھی۔ انھوں نے حالیہ زمانے کی کئی ایسی درسی کتابوں کے حوالے بھی دیے جو اس طرح کی گمراہ کن اطلاعات سے بھری ہوئی ہیں۔ انھوں نے کہا کہ ایک صحت مند قومی فضا کی تعمیر کے لیے دوسری باتوں کے ساتھ ساتھ یہ بھی بہت ضروری ہے کہ ہم اپنے بچوں کو اپنے ملک کی صحیح تاریخ سے آشنا کرائیں، بالخصوص مسلمانوں کی آمد کے بعد سے آج تک کی تاریخ کے صحیح ماخذ تک رسائی بہت ضروری ہے۔

جناب بشمبر ناتھ پانڈے کا لہجہ ایسا دردمندانہ تھا کہ اکثر سامعین کی آنکھیں نم ہوگئیں۔ ہماری کوشش ہوگی کہ اس موضوع پر پانڈے صاحب سے ایک تفصیلی انٹرویو حاصل کرکے قارئین تک پہنچا سکیں۔

—— سید شریف الحسن نقوی

بلراج کومل

مارشل مکلوہن
(MARSHALL MCLUHAN)

مندرجۂ ذیل بیانات ملاحظہ کیجیے:

(۱) "عہدِ برقیہ ELECTRONIC AGE میں ہم بنی نوعِ انسان کو بطور کل اپنی جسمانی جلد کی طرح اوڑھتے ہیں۔"

(۲) "توسیع چاہے وہ جلد کی ہو یا دست و بازو کی یا پاؤں کی، ہماری مکمل اعصابی، نفسیاتی اور سماجی تنظیم پر اثر انداز ہوتی ہے۔"

(۳) "فنکار ہمیشہ مکمل اور ہمہ گیر بصیرت سے مالا مال انسان ہوتا ہے۔"

(۴) "... آج اور ۲۱ ویں صدی کے طلوع کے درمیانی عرصے میں لاکھوں کروڑوں نفسیاتی طور پر نارمل عام انسان مستقبل کے ساتھ یکایک متصادم ہونے کے عمل سے ناگزیر طور پر دوچار ہوں گے۔"

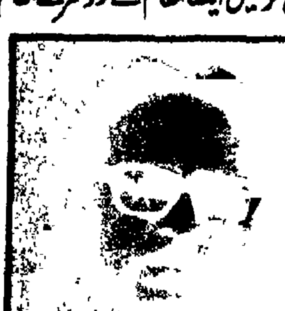
مندرجہ بالا بیانات میں سے پہلے تین بیانات مارشل مکلوہن کے ہیں اور چوتھا بیان فیوچر شاک (FUTURE SHOCK) اور تھرڈ ویو (THIRD WAVE) کے مصنف ایلون ٹافلر (ALVIN TOFFLER) کا ہے۔ مکلوہن ذرائع ترسیل کا نبّاض ہے اور ٹافلر مستقبل سے وابستہ صدیوں کا۔ یہ دونوں دانشور کسی حد تک ایک دوسرے کے متوازی بھی چلتے ہیں اور ایک دوسرے میں گڈمڈ بھی ہو جاتے ہیں۔ مکلوہن توسیعِ انساں کی حدود کی نشاندہی کرتا ہے اور ٹافلر مستقبل سے نبرد آزما ہونے کے امکانات کی۔ دونوں کی بصیرت ہمہ گیر تازہ کار اور دور رس ہے اور ان تمام قوسوں، زاویوں اور اشکال کے تواتر کا احاطہ کرتی ہے جس کے نقوش ہمارے سامنے ٹی۔ ایس۔ ایلیٹ، سنگر ڈی۔ ایچ۔ لارنس اور عہدِ حاضر کے دیگر دانشوروں کی تحریروں کے ذریعے سے اجاگر ہوتے ہیں۔

مکلوہن کا خاص میدان ذرائع ترسیل یعنی MEDIA ہے۔ ان کی پہلی کتاب میکانیکی دلہن (MECHANICAL BRIDE) ۱۹۵۱ء میں شائع ہوئی، دوسری GUTEN-BERG GALAXY ۱۹۶۲ء میں اور تیسری اور اہم ترین کتاب ذرائع ترسیل کا ادراک UNDERSTANDING MEDIA ۱۹۶۴ء میں۔ ۱۹۶۷ء میں ان کی شہرت انگلستان میں نقطۂ عروج پر تھی۔ ان کی تحریروں کا دائرۂ اثر وقت گذرنے کے ساتھ وسیع سے وسیع تر ہوتا گیا۔

مکلوہن کی تمام تحریروں میں ذرائع ترسیل کا ادراک UNDERSTANDING MEDIA اولین اہمیت کا حامل ہے۔ ذرائع ترسیل MEDIA سے تعلق رکھنے والی کوئی بحث اس کتاب کے ذکر کے بغیر مکمل نہیں ہو سکتی۔ فنونِ لطیفہ کے سلسلے میں بھی اس کتاب کا ذکر دورِ حاضر کے تعلق سے کم و بیش ناگزیر ہے۔ مکلوہن کا اسلوبِ تحریر بجائے خود ایک منفرد ذائقے اور خصوصیت کا حامل ہے اور اسے مکلوہنزم (MCLUHANISM) کے نام سے یاد کیا جاتا ہے۔ ہمہ گیری، تازہ کاری، دور بینی، باریک بینی — اس اسلوب کی خصوصیات میں سے چند قابلِ ذکر خصوصیات ہیں۔

مکلوہن کا پورا فلسفہ ان کے اپنے ہی اس جملے میں بند ہے کہ MEDIUM ہی MES-SAGE ہے یعنی ذریعۂ ترسیل محض ذریعہ نہیں بجائے خود پیغام ہے۔ مکلوہن نے اپنے نقطۂ نظر کی تفسیر و تشریح کے لیے جملہ علوم و فنون سے وابستہ دلائل اور حوالہ جات کا سہارا لیا ہے۔ اور ایک ایسی پرشکوہ عمارت تیار کی ہے جس کا ڈھانچہ، چونا گارا، دروازے کھڑکیاں، تزئین و آرائش سبھی ایک ہی پیغام دیتے ہیں اور وہ یہ ہے کہ MEDIUM ہی MESSAGE یعنی ذریعۂ ترسیل ہی پیغام ہے۔ تحریری تخلیقی اظہار میں اس نقطے کی توسیع لفظ و معنی کی جنت تک جا پہنچتی ہے۔

ذرائع ترسیل MEDIA کے بارے میں عام رائے یہ ہے کہ وہ پیغام رسانی کے ذرائع ہیں یعنی پیغام وہ مواد ہے جسے ذرائع ترسیل ایک مقام سے دوسرے مقام تک



ای-۱۳۹، کالکاجی نئی دہلی ۱۱۰۰۱۹

پہنچاتے ہیں۔ مکلوہن اس خیال سے اتفاق نہیں کرتا۔ وہ پیغام اور مواد اور ذرائع کی الگ الگ حیثیت کو تسلیم نہیں کرتا۔ اس کا خیال ہے کہ ہر ذریعۂ ترسیل اپنے منفرد انداز میں انسان کی توسیع کرتا ہے۔ یہ توسیع شعور کی ترتیب و تہذیب کی شکل میں ہوتی ہے اور پیغام اور مواد کی طے شدہ نوعیت کے باوصف اور باوجود۔ ذریعۂ ترسیل کی منفرد شخصیت کی نوعیت پر منحصر ہوتی ہے مختلف ذرائع ترسیل کی مختلف منفرد شخصیات ہیں۔ گفتگو، تصویر، شائع شدہ لفظ کتاب اخبار، ریڈیو، ٹیلی ویژن ـــــ ہر ذریعۂ ترسیل اپنے منفرد انداز میں انسان کی توسیع کرتا ہے اور یہ توسیع بیک وقت جسمانی بھی ہوتی ہے اور روحانی بھی کیونکہ ذہن کی سلطنت ماورائے حدود و قیود ہے جب بھی کوئی نیا ذریعۂ ترسیل ظہور میں آتا ہے تو وہ رائج الوقت نظام اقدار کو درہم برہم کر دیتا ہے اور اس کی جگہ اقدار کے ایک نئے نظام کی تشکیل و ترتیب کرتا ہے۔ مثال کے طور پر شائع شدہ لفظ نے جن قدروں کو جنم دیا وہ ان قدروں سے مختلف تھیں جو شائع شدہ لفظ کے پردۂ ظہور پر نمودار ہونے سے قبل رائج تھیں۔ مکلوہن کا محبوب ـــــ لفظ' ٹکنالوجی (TECHNOLOGY) ہے۔ ہر ٹکنالوجی انسانی زندگی کے جانے پہچانے طرزِ فکر میں خلل ڈالتی ہے اور بیک وقت اثبات و انکار کے توسط سے اقدار کی از سرِ نو ترتیب و تہذیب کرتی ہے۔ مکلوہن کا عقیدہ ہے کہ عہدِ رفتہ کی ہر ٹکنالوجی کا اثر جزوی اور نامکمل تھا۔ انسان بہرصورت اپنے ملک، اپنے شہر، اپنے قصبے، اپنے گاؤں، اپنے گھر کے ساتھ وابستہ تھا اور اپنے جزوی نقطۂ نظر کو صحیح نقطۂ نظر تصور کرتا تھا۔ اس کے برعکس مکلوہن کے خیال میں برقیہ ٹکنالوجی کے دور یعنی ELECTRONIC TECHNOLOGY کے عہد میں برقیہ ٹکنالوجی ایک ایسے انسان کی تشکیل کر رہی ہے جو مختلف ٹکڑوں میں تقسیم ہونے کی بجائے ایک ہمہ گیر اکائی میں ڈھل رہا ہے وہ اپنے ملک، شہر، گاؤں، قصبے اور ایک مخصوص نقطۂ نظر کی جگہ ایک تغیر آشنا شعور سے ہم کنار ہو رہا ہے اور تیزی سے اس منزل کی جانب قدم بڑھا رہا ہے جب ذرائع ترسیل کے ناگزیر جبر کے زیرِ اثر دنیا ایک گاؤں کی شکل اختیار کر لے گی۔ (ٹافلر اس انتہا تک مکلوہن کا ساتھ نہیں دیتا۔ ٹافلر کا خیال ہے کہ ہم رفتارِ تغیّر کی تندی و تیزی کے باعث ایک بار پھر اپنے اپنے جزیروں کی تلاش میں ہیں)۔

مختلف ذرائع ترسیل کی نوعیت اور کردار کا تجزیہ کرتے وقت مکلوہن ان کو دو گروہوں میں تقسیم کرتا ہے۔ اس کے نزدیک ذرائع ترسیل دو قسم کے ہیں "گرم" اور "سرد"۔ گرم ذرائع ترسیل وہ ہیں جن میں عمل اور ردِّ عمل کے درمیان یا تو طویل وقفہ آ جاتا ہے یا ردِّ عمل بہت کمزور ہوتا ہے۔ سرد ذرائع ترسیل وہ ہیں جن میں عمل اور ردِّ عمل بیک وقت ظہور پذیر ہوتا ہے۔ مکلوہن کے خیال میں وہ ذریعۂ ترسیل گرم ہے جس میں انسان کی شرکت کی گنجائش کم ہے یا مفقود ہے چھپا ہوا لفظ مکلوہن کے خیال میں گرم ذریعۂ ترسیل ہے کیوں کہ اس میں شرکت کا پہلو کمزور ہے اور عمل اور ردِّ عمل بیک وقت ظہور میں نہیں آتے۔ ٹیلی ویژن (T.V) مکلوہن کے نزدیک سرد ذریعۂ ترسیل ہے کیوں کہ اس میں دیکھنے والے کی شرکت فوری اور مکمل ہوتی ہے۔ اس بنیادی پیمانے کی مدد سے مکلوہن نے تمام ذرائع ترسیل کو ناپنے کی کوشش کی ہے گرم اور سرد ذرائع ترسیل بہرحال مطلق اصطلاحات ہرگز نہیں ہیں۔ جو ذریعۂ ترسیل ترقی یافتہ ملکوں میں سرد ذریعۂ ترسیل کی حیثیت رکھتا ہے وہ پچھڑے ہوئے ملکوں یا ترقی پذیر ملکوں میں سراسر مختلف نوعیت کا حامل ہے۔ مثلاً ریڈیو امریکہ میں گرم ذریعۂ ترسیل ہے کیوں کہ امریکہ میں ریڈیو اس شرکت کا حامل نہیں ہے جو کسی میڈیم کو سرد بناتی ہے لیکن ریڈیو ان پچھڑے ہوئے ملکوں یا علاقوں میں سرد ذریعۂ ترسیل ہے جو ابھی گفتگو کی ثقافت کی سطح پر ہیں۔ مکلوہن کی رائے ہے کہ انسانی تاریخ میں پہلا انقلاب انگیز موڑ اس وقت آیا جب چھپا ہوا لفظ ایجاد ہوا اور دوسرا انقلاب اس وقت آیا جب ELECTRONICS کا ظہور ہوا۔

مکلوہن کو توسیع اور شعور توسیع عزیز ہیں۔ وہ ایک ایسے انسان کا تصور کرتا ہے جو ذہنی طور پر کسی مخصوص ملک، مخصوص علاقے، مخصوص گاؤں اور شہر سے منسلک نہ ہو بلکہ ایک ایسے ذہن کا مالک ہو جو ان سب زنجیروں سے آزاد ہو چکا ہو۔ مکلوہن برقیہ عہد کے اس متوقع یا غیر متوقع انسان کا خیر مقدم کرتا ہے۔ برقیہ ٹکنالوجی ہی اس کا ساز ہے اور برقیہ ٹکنالوجی ہی اس کا نغمۂ ساز۔ یہی وہ جادو کی چھڑی ہے جو آٹومیشن کو جنم دے رہی ہے اور آٹومیشن

کے ذریعے محدود وابستگیوں اور محدود زاویہ ہائے نگاہ کو قتل کر رہی ہے۔ زندگی کا کوئی شعبہ ELECTRONICS کے انقلاب آفریں اثر سے محفوظ نہیں ہے (ٹافلر مکلوہن کے برعکس محدود وابستگیوں کے احیا کی جانب بار بار اشارہ کرتا ہے۔)

ہم پیداواری، اقتصادی، سیاسی اور تاریخی جبریت سے غالباً مانوس ہو چکے ہیں۔ ذرائع ترسیل کی جبریت کا تجربہ یقیناً نیا تجربہ ہے۔ سوال پیدا ہوتا ہے کیا ذرائع ترسیل واقعی مطلق حیثیت کے مالک ہیں۔ کیا ذرائع ترسیل وہ واحد ذرائع تغیّر ہیں جو سماج کے نظامِ اقدار کو درہم برہم کرنے کی اہلیت اور قوت رکھتے ہیں۔ کیا عمل اور ردِّ عمل کا جدلیاتی سلسلہ صرف ذرائع ترسیل تک محدود ہے؟

مکلوہن ان سوالات کا جواب یا تو بالکل نہیں دیتا یا نہایت مُبہم انداز میں دیتا ہے۔ اور یا جواب دیتے وقت ان گنت سماجی، سیاسی، اقتصادی، تاریخی، پیداواری محرکات کو سرے سے نظر انداز کر دیتا ہے۔ ذرائع ترسیل MEDIA کو مطلق حیثیت عطا کرنے کے بعد مکلوہن جس دُنیا کا خواب دیکھتا ہے وہ دیکھنے میں حسین ہے اور برقیہ ٹکنالوجی کا بہترین کارنامہ ہے۔ لیکن شاید خود کار یوٹوپیا ہے۔ مکلوہن کا انسان اگرچہ برقیہ ٹکنالوجی کے عہد میں زمان و مکاں سے آزاد ہونے کا خواب دیکھتا ہے لیکن حق تو یہ ہے کہ وہ انسان برقیہ یورشوں کے درمیان صرف ایک پا بہ زنجیر غلامیہ بن کر رہ گیا ہے۔ اپنی بے بسی کو "اپنی خود نہدایت" کا ... وہ تغیّرات کے طوفان میں اس سفاک ٹکنالوجی کی زد میں ہے جو آفاقی آزادی کے نام پر بڑی چابکدستی سے اس کی تمام جانی پہچانی آزادیاں چھینتی جا رہی ہے۔ اور اس کو مسلسل یہ یقین دلانے کی کوشش کر رہی ہے کہ وہ راہِ نجات کے لیے خود کو شعورِ آفاق میں مدغم کر دے اور ذرائع ترسیل کی مطلق العنان قوت اور عظمت قبول کر لے۔

لیکن حیاتِ انسانی کے سفر کی یہ انتہا نہیں ہے۔ درِ امکاں مسلسل وا ہے، مسلسل منوّر اور روشن ہے ہمیں ہنگام تغیّرات میں بہرحال ہر قسم کی جبریت (جس میں ذرائع ترسیل کی جبریت بھی شامل ہے) سے [illegible] ہوتا ہے اور اس سے آزاد ہوتا ہے اور [illegible] ذاتی اور سماجی وابستگیوں کو ترتیب دینا [illegible] جو تغیّر آشنا ہونے کے باوجود حیاتِ انسانی کے بنیادی جبلی، ذہنی، اور روحانی تقاضوں کو پورا کر سکیں۔

سفرِ انسان میں کوئی نقطہ 'منجمد نقطہ' نہیں ہوتا۔

ہر نقطہ، نقطۂ امکاں ہوتا ہے۔

ٹافلر کی تیسری موج (THIRD WAVE) شاید۔

مزید امکانات کی موجِ امکاں ہے۔ ○

آدمی

کئی دنوں سے محسوس ہو رہا تھا کہ زندگی میں کہیں کسی چیز کی کمی سی ہو گئی ہے ــــ فضا گرد آلود تھی۔ آسمان پر غبار چڑھا ہوا تھا اور اس دھند کے میں سورج کا چہرہ پھیکا پڑ گیا تھا یعنی جو روپیہ بھی ہاتھ آتا تھا، ہتھیلی پر دھر کر دیکھو تو سو پیسے کا نہیں لگتا تھا۔

لوگ سڑکوں پر سر جھکا کر اداس اداس سے چلتے دکھائی دیتے تھے۔ شہر کے بالکل وسط میں جو فوارہ تھا، اس میں سے نکلنے والی پھواریں بدستور وقت کا پتہ دیتی تھیں۔ یعنی ایک بجے ایک پھوارا اچھلتی۔ دو بجے دو پھواریں اور تین بجے . . . .

جب یہ فوارہ نیا نیا تعمیر ہوا تھا ــــ تو اس کے گرد ایک بھیڑ گھنٹوں جمع رہتی اور فوارے سے نکلنے والے پانی کی پھواروں پر یک آواز چلا اٹھتی "تین بج گئے ــــ چار بج گئے ــــ پانچ بج گئے۔"

غرض یہ کہ رات کے بارہ بجے تک جب فوارے کے سوراخوں سے بارہ کی بارہ پھواریں نمودار ہوتیں تو اہلِ شہر یہاں اکٹھے رہتے ــــ پھر دوپہر کے بارہ بجے تک اور پھر آہستہ آہستہ ان کا وہ شوق معدوم ہو گیا ــــ اور فوارہ شہری زندگی کا ایک حصہ بن کر رہ گیا۔ اور لوگ یہاں سے گذرتے ہوئے ایک نظر اس پر ڈالتے، وقت کا اندازہ کر لیتے اور اپنے کام پر چلتے بنتے۔

پھر فوارے کے گرد بنے ہودوں سے پانی پینے کے لیے کوستا اور عام چڑیاں آنے لگیں۔ مگر کبھی کبھی کوئی اجنبی چڑیا بھی نظر آ جاتی جس کے پنکھ رنگ دار اور چمکیلے ہوتے۔ وہ ہماری عام چڑیوں سے عادات اور انداز کے اعتبار سے مختلف ہوتی۔

شہر اقلیدس کے اصول کے مطابق تعمیر کیا گیا تھا۔ اس کا نقشہ کچھ یوں تھا جیسے ایک مرکزی نقطے پر سے آٹھ لکیریں گزار دی گئی ہوں۔ یا پھر آٹھ لکیروں کا جہاں اتصال ہوتا ہے وہاں مرکزی نقطہ بن گیا ہو۔

اور یہی مرکزی نقطہ وہ فوارہ تھا۔ اس کے گرد ایک باغیچہ گولائی میں بنا تھا جس کی سبز اور نرم گھاس پر تھکے ہارے مسافر ذرا سستا کر آگے بڑھتے تھے۔ اس کے بعد ایک گول سڑک فوارے کے سب طرف گھومتی تھی۔ اور اسی سڑک پر سے آٹھ سڑکیں نکلتی تھیں جو اس شہر کے آٹھ بازار کہلاتے تھے۔ اور جو بازار جس پڑوسی شہر کو جانے والی سڑک میں جا کر مل جاتا تھا۔ اس بازار کا نام اس شہر کے نام پر رکھ دیا گیا تھا۔

اور انہیں بازاروں کو کاٹتی ہوئی کئی گول گلیاں تھیں۔ جن میں بنے مکانوں میں شہر کے لوگ رہتے تھے۔

اور اسی شہر کے لوگ سر جھکا کر سڑکوں پر اداس، اداس سے چلتے دکھائی دیتے تھے ــــ اس اداسی کا کارن میری سمجھ میں نہیں آتا تھا ــــ اور میرا جگری دوست بشیر احمد شیخ بدستور اخبار بینی میں مصروف رہتا ــــ وہ ایک ایسا دوست تھا جو میرا دکھ سکھ، سنتا، جانتا اور اس کا مداوا کرنے کی کوشش کرتا۔

میں اور بشیر احمد شیخ بچپن سے ایک ہی اسکول میں پڑھتے رہے تھے۔ مجھے کل کی طرح یاد ہے ــ میں تیسری جماعت میں پڑھتا تھا۔ صبح کا وقت تھا ابھی ہم لوگ پرارتھنا کے لیے اکٹھے نہیں ہوئے تھے۔ اس سے پہلے کا معمول یہ تھا کہ ہر بچہ اسکول کے احاطے میں داخل ہوتے ہی دائیں طرف مندر میں پرنام کرنے جاتا ــــ مندر میں بھگوان کرشن اور رادھا جی کی سنگِ مرمر سے بنی بڑی سندر مورتیاں ستھاپت تھیں۔ جن کو رنگ دار ریشمی وستر پہنائے گئے تھے۔ سونے کے زیورات سے آراستہ کیا گیا تھا ــــ اور سروں پر موتی جڑے مکٹ رکھے تھے ــــ دونوں مورتیوں کی آنکھیں بڑی بڑی اور پُرکشش تھیں۔ آنکھوں کی پتلیاں پینٹ سے کالی کر دی گئی تھیں۔ جس سے اُن میں غیر معمولی چمک پیدا ہو گئی تھی۔ ہم دونوں ہاتھ جوڑ کر مورتیوں کے سامنے کھڑے ہو جاتے تھے اور ایک ٹک مورتیوں کو دیکھنے لگتے۔ اچانک ایسا محسوس ہونے لگتا کہ مورتیاں آنکھ جھپک رہی ہیں۔ اور ان کے ہونٹوں پر مسکراہٹ ناچنے لگی ہے۔ پھر ہم ہاتھ ٹیک کر پجاری جی سے چرن امرت لیتے۔ جو صاف شفاف پانی میں تلسی کے پتے ڈال کر بنایا جاتا تھا، بھگوتی ہوئی کشش کے د



دانے پرساد کے طور پر دیے جاتے۔ ہم چرن امرت تو فوراً ہی پی لیتے اور بھیگے ہوئے ہاتھوں کو اپنے سر کے بالوں سے پونچھ کر پرساد چباتے ہوئے مندر کی سیڑھیاں اُترتے اور پرارتھنا کے لیے گراؤنڈ کی طرف بڑھ جاتے۔

اس روز مندر کی سیڑھیاں اُترتے ہوئے میں نے ایک باوردی حولدار کو ایک چھوٹے سے بچے کے ساتھ ہیڈ ماسٹر صاحب کے کمرے کی طرف جاتے دیکھا تھا۔ بچے نے سر پر سرخ رنگ کی ترکی ٹوپی پہن رکھی تھی جس کا پھندنا اس کے سر کی حرکت سے اِدھر اُدھر پھدکتا پھرتا تھا۔ پولیس حولدار نے بچے کا ہاتھ تھام رکھا تھا۔ بظاہر معلوم یہ ہوتا تھا کہ پولیس والا بچے کو گرفتار کر کے کسی تحقیقات کے سلسلے میں یہاں لایا ہے۔ میرا اور کئی اور بچوں کا اشتیاق بڑھا اور ہم لپک کر آگے آ گئے اور اُن دونوں کو جاتے ہوئے دیکھا۔ بچہ صورت شکل سے بڑا معصوم اور پیارا لگ رہا تھا۔ میں نے دل ہی دل میں کہا ــــ "نہیں، یہ کوئی جرم نہیں کر سکتا۔" اور وہ دونوں کلرک صاحب کے ساتھ کھڑکی سے کچھ بات کر کے ہیڈ ماسٹر صاحب کے کمرے کے باہر بچھے ہوئے بنچ پر بیٹھ گئے۔ پھر اچانک پرارتھنا کی گھنٹی بجی اور ہم سب بھاگتے ہوئے گراؤنڈ کی طرف بڑھنے لگے۔

پرارتھنا یہی ہوا کرتی تھی ــــ کہ اے علم کی دیوی تو ہم نادان بچوں پر اپنا کرم فرما۔ ہماری زندگی کے اندھیرے راستوں میں اُجالا کر اور ہمیں توفیق دے کہ ہم جو علم حاصل کریں اس سے دوسروں کا بھلا کریں۔ اے مہربان دیوی تمھیں بار بار پرنام۔

کلاس روم میں ماسٹر تخت رام نے ہمیں حساب کا ایک سوال نکالنے کے لیے دیا تھا ــــ کہ وہ بچہ جس نے ترکی ٹوپی پہن رکھی تھی۔ ہیڈ ماسٹر صاحب اور پولیس حولدار کے ساتھ کمرے میں داخل ہوا ــــ ہم سب تعظیماً کھڑے ہو گئے ہیڈ ماسٹر صاحب نے بیٹھنے کا اشارہ کیا۔ ہم سب پھر اپنے لمبے ٹاٹ پر بیٹھ گئے۔ ہیڈ ماسٹر صاحب نے کہنا شروع کیا۔

"بچو ــــ! آج آپ کی کلاس میں آپ کا ایک نیا ساتھی آیا ہے۔ اس کا نام ہے بشیر احمد شیخ۔ یہ حولدار منیر احمد شیخ صاحب کا فرزند ہے۔ یہ آپ کے ساتھ ہی پڑھے گا۔" سب بچوں کے چہرے پر جو ایک طرح کا تجسس چھایا ہوا تھا۔ وہ دُور ہوا اور سب نے آگے بڑھ بڑھ کر یہ کوشش کی کہ بشیر ان کے ساتھ بیٹھے ــــ مگر وہ اپنی جگہ کھڑا سارے کلاس روم کا جائزہ لیتا رہا ــــ پھر آہستہ سے آگے بڑھا اور میرے ساتھ والی خالی جگہ پر بیٹھ گیا۔

یہ میری اور بشیر کی پہلی ملاقات تھی جس کی یاد چودہ سو برس گزر جانے پر بھی ابھی تک تازہ ہے ــــ میں اور بشیر اسی لمحے ایک دوسرے کے ہو گئے تھے ــــ اگلے دن سے ہم اسکول کے گیٹ پر ملنے لگے۔ میں مندر جاتا تو وہ سیڑھیوں پر کھڑا میرا انتظار کرتا۔ واپسی پر میں کشمش کا ایک آدھ دانہ اُسے دیتا۔ جسے وہ منہ میں ڈال کر چباتا ہوا پرارتھنا کے لیے گراؤنڈ کی طرف چلنے لگتا۔ ایک دن اس نے مجھ سے پوچھا۔

"چھندی۔ یہ آپ لوگوں کے مندر میں کیا ہوتا ہے؟"

میں نے تفصیل سے اُسے سب بتایا اور اس کے چہرے پر عجیب و غریب تحیر پھیل گیا۔ پھر اچانک ایک دن پرارتھنا کے بعد کلاس روم کی طرف جاتے ہوئے اس نے سوال کیا۔

"یار چھندی ــــ یہ علم کی دیوی کیوں ہے؟ علم کا فرشتہ کیوں نہیں؟"

میں کیا جواب دیتا ــــ کہ میرے پاس اس بات کا کوئی جواب ہی نہیں تھا۔ اسی طرح ہمارا بچپن گزر گیا تھا۔ اور اب ہم سیانے ہو گئے تھے۔ میں اپنے والد کی سوڈا واٹر فیکٹری پر بیٹھنے لگا تھا اور بشیر کو شہر کی عدالت میں مجسٹریٹ کے منشی کی نوکری مل گئی تھی۔ اور اسے اخبار بینی کی لت بیماری کی حد تک پڑ گئی تھی ــــ وہ زندگی کے ہر مسئلے کا حل اخبار میں چھپی خبروں اور اداریے میں ڈھونڈنے کی کوشش کرتا تھا۔ شہر میں جتنے اخبار آتے تھے وہ ان سب کو پڑھنا اپنا فرض سمجھتا تھا۔ اس سلسلے میں اس کو شہر کے کئی حلوائیوں، نانبائیوں اور حجاموں کی دکانوں کے چکر لگانے پڑتے۔ شام کو جب ہم ملتے تو اخبار کی تحریر کی روشنی میں دُنیا بھر کے مسائل پر گفتگو ہوتی۔

مگر اچانک ہماری زندگیوں میں کہیں کسی چیز کی کمی محسوس ہونے لگی تھی۔

اس کا سب سے بڑا ثبوت تو یہ تھا کہ اب اس نے اخبار کی خبروں پر تبصرہ کرنا بند کر دیا تھا۔ اس کا کارن جاننے کے لیے میں نے کئی دن تک لگاتار وہ تمام اخبار پڑھے جو وہ پڑھا کرتا تھا۔ اُن میں کچھ اس طرح کی خبریں ہوتی تھیں ــــ

فیروز آباد میں دو فرقوں میں تصادم۔ پولیس کی گولی سے تین ہلاک بارہ زخمی۔ سلیم پور میں بم پھٹا۔ فٹ پاتھ پر سوئے ہوئے پانچ لوگ ہلاک، جن میں دو بچے اور ایک عورت شامل ہے۔ چھ زخمیوں کو سرکاری ہسپتال میں داخل کرایا گیا ہے۔ جن میں ایک کی حالت نازک ــــ ایک بس کھڈ میں گر گئی۔ آدھے سے زیادہ باراتی ہلاک ــــ گھر گھر تلاشی سے بہت سا اسلحہ اور گولہ بارود

برآمد، تین اشخاص گرفتار … مال پور اکیڈمی کی طرف سے پروفیسر پوری کو ان کی بہترین ادبی خدمات پر گیارہ ہزار روپے کا خصوصی انعام ـــــ دہشت پسندوں نے چار کی جان لے لی ـــــ جن میں ایک حاملہ عورت بھی شامل ہے ـــــ چالیس لاکھ روپے کا اسمگلنگ کا مال پکڑا گیا۔ محکمۂ ڈاک اور تار کے ملازمین کی طرف سے ہڑتال کی دھمکی۔ غیر ملکی زرِ مبادلہ کے سلسلے میں ایک بڑا لیڈر ملوث ـــــ ملک کی سیاست پر سرمایہ داری کا شکنجہ سخت ہونے کا خطرہ۔

میں جب بشیر احمد شیخ کے گھر پہنچا تو وہ حسبِ معمول برآمدے میں چارپائی پر بیٹھا حقہ پی رہا تھا۔ میں بھی پاس جاکر بیٹھ گیا۔ ہم میں کافی دیر تک کوئی بات نہ ہوئی۔ اُس نے حقے کی نے میری طرف بڑھا دی اور میں پے در پے کش لگانے لگا ـــــ آج برآمدے میں ہم دونوں اکیلے تھے ـــــ اچانک مجھے بچپن کا وہ واقعہ یاد آگیا جب بشیر کی امّی زندہ تھیں۔ انھوں نے ایک عرصہ بیوگی کی زندگی کاٹی تھی کہ بشیر کے والد منیر احمد شیخ ایک پولیس پارٹی کے ساتھ ڈاکوؤں کے مقابلے پر گئے تھے اور ڈاکوؤں کی گولی کا نشانہ بن گئے تھے۔

اُس دن بھی ہم دونوں اسی طرح چارپائیوں پر آمنے سامنے بیٹھے حقہ پی رہے تھے اور باتیں کر رہے تھے ـــــ کہ بشیر کی امّی اندر سے ہمارے لیے چھاچھ لیکر آئی۔ چھاچھ کے چھنّے اس نے ہمیں پکڑا دیے اور دیر تک ہم دونوں کو غور سے دیکھتی رہی۔ پھر ایکا ایکی بولی۔

"وے بشیر ـــــ حیرانی کی بات ہے۔"

ہم دونوں امّی کی طرف متوجہ ہوئے۔

"کیوں کیا ہوا امّی جان؟" بشیر نے پوچھا۔

"اللہ رکھے ـــــ مجھے آج پہلی بار محسوس ہوا ـــــ کہ تم دونوں کی شکلیں ایک دوسرے سے بہت ملتی جلتی ہیں ـــــ"

"وہ کیسے امّاں جی!" میں نے مسکراتے ہوئے مگر حیرانی سے پوچھا۔

"اللہ رکھے ـــــ یہ تو معلوم نہیں مگر ایک بات آئی ہے دل میں ـــــ چھندی، پُتّر تو مسلمان کیوں نہیں ہوجاتا ـــــ" امّاں نے کہا۔

"آدھے سے زیادہ مسلمان تو میں ہوں ہی۔" میں نے جواب دیا۔ "رسول کو پیغمبر مانتا ہوں ـــــ کلمہ پڑھ لیتا ہوں ـــــ اور بشیر نے مجھے نماز بھی سکھادی ہے۔ ایک بار تو مسجد میں جاکر اس کے ساتھ باجماعت نماز بھی پڑھ آیا تھا ـــــ اب تو بشیر سے کہو وہ ہندو ہوجائے۔"

"نعوذ باللہ۔" امّاں کے چہرے پر غصّے کے تاثرات اُبھرے اور وہ یہ کہتے ہوئے: "ایسے لفظ مُنہ سے نہیں نکالنے چاہییں بے وقوف۔" اندر کی طرف چلی گئی۔

میں اور بشیر دیر تک اماں کی بات پر ہنستے رہے ـــــ مگر آج ہم خاموش تھے۔ اتنا بھی نہ ہوا کہ ڈیمو کریسی پر ہی گفتگو کر لیتے۔

"اچھا تو بشیر چلتا ہوں۔" میں نے حقے کی نے اس کے حوالے کی اور اٹھ کر کھڑا ہوگیا۔

"ہونہہ ـــــ" اس نے ذرا سی آواز مُنہ سے نکالی اور سر کے اشارے سے مجھے جانے کی اجازت دے دی۔

گھر پہنچا تو اچانک نظر والد صاحب کی تصویر پر پڑی۔ ان کی بہت سی باتیں یاد آئیں۔ وہ صبح سویرے اُٹھ کر پوجا پاٹھ کیا کرتے تھے ـــــ اور دن میں فرصت کے وقت سیرت النبی، قصص الانبیا اور ترجمان القرآن پڑھا کرتے تھے۔ اور اکثر کہا کرتے تھے: "محمدؐ بہت بڑی شخصیت تھے۔ ایسے پیغمبر تو ہر مذہب میں ہونے چاہییں۔ کبھی خواب میں بھی مل جائیں تو ان کے چرن دھو کر پینا ثواب ہے ـــــ" یہ باتیں یاد کرکے بھی من نہ بہلا ـــــ میں نے اپنی بیوی کی طرف دیکھا۔ جو حاملہ تھی اور پورے دنوں سے تھی ـــــ تھوڑی دیر اِدھر اُدھر ٹہلتا رہا مگر بے چینی کم نہ ہوئی اور میں گھر سے نکل کھڑا ہوا۔ ـــــ میرے گھر کے بالکل سامنے ایک سفید ریش بزرگ کھڑا دکھائی دیا۔ جو میرے گھر کی طرف ٹکٹکی باندھے دیکھ رہا تھا۔ مجھے دیکھ کر اس نے سر گھمایا اور ایک طرف کو چل دیا۔ مجھے اس کی صورت جانی پہچانی سی لگی۔ وہ جلد ہی آنکھوں سے اوجھل ہوگیا۔

میں شہر کی گلیوں اور بازاروں میں بے مطلب گھومتا رہا۔ کسی نے میری طرف آنکھ اٹھا کر بھی نہ دیکھا ـــــ اور نہ کچھ بات کی۔ شہر کے چوک میں سے گزرا تو فوارے کے قریب رک گیا ـــــ وقت دوپہر کا تھا ـــــ کہ دو پھواریں پوری طرح اُچھل رہی تھیں اور تیسری پھوار گویا اپنے سوراخ سے رہ رہ کر رِس رہی تھی ـــــ چوک میں سواریوں کے انتظار میں گھومنے والے تانگوں کے گھوڑے بھی سر جھکا کر چل رہے تھے۔

میں وہاں کھڑا رہا اور سوچنے لگا کہ جب یہ شہر نہیں بسا تھا تو یہاں کیا ہوگا ـــــ؟ وہ دُور تک ویرانہ ـــــ کیکر کے پیڑ، ببول کی جھاڑیاں، اُوبڑ کھابڑ زمین اور راستے ہوئے کچھ دُور پہاڑیوں کی سرمئی لکیر اور شہر کے باہر بہنے والی ندی۔

اور وہ کون تھا جو سب سے پہلے …

آیا ہوگا۔ جس نے اپنی آنکھوں پر اپنی ہتھیلی کا شامیانہ تان کر سارے میں اپنی نظر دوڑائی ہوگی۔ اور سوچا ہوگا کہ یہیں ڈیرے ڈال دینے چاہئیں۔ اور یہاں اپنا شہر بسانا چاہیے۔ وہ کون سے کیکر کے پیڑ کے نیچے سستایا ہوگا۔ کون سا پتھر کا ٹکڑا اس کا تکیہ بنا ہوگا ــــ وہ اب کہاں ہے جس کی آواز پر آنے والی کئی نسلوں نے لبیک کہا ہوگا اور پھر اتنا شاندار شہر یہاں بس گیا ہوگا ــــ آج اگر وہ سامنے آجائے تو ہم اس کو پہچان بھی نہ پائیں گے ــــ مگر اس کی روح ضرور اس شہر کی فصیل کو چھو کر گزرتی ہوگی۔ وہ ضرور شہر کے سارے وجود میں سانس لیتا ہوگا ــــ یہ سب سوچتا ہوا میں شہر کے باہر بہنے والی ندی تک پہنچ گیا ــــ ندی کی پلیا پر سے کسی ننگ دھڑنگ آدمی نے ندی میں چھلانگ لگائی۔ پانی میں سے ایک چھپاکے کی آواز آئی ــــ میں نے دیکھا ایک آدمی ندی میں کودا ہے اور اپنے جسم کو مَل مَل کر نہلانے لگا ہے ــــ نہانے کے بعد وہ آدمی ندی میں سے نکلا اور پلیا پر رکھے اپنے کپڑے پہننے لگا۔ اور سر پر سفید پگڑی باندھی ــــ سفید تہمد اور لمبا سفید کوٹ پہن کر وہ آدمی پلیا پر چلتا ہوا میرے قریب سے گزر کر شہر کی طرف بڑھ گیا۔ یہ وہی سفید ریش بزرگ تھا جسے میں نے اپنے گھر کے سامنے کھڑا دیکھا تھا ــــ جس کی صورت جانی پہچانی تھی۔

اب وہ اکثر شہر کے مختلف مقامات پر چلتا پھرتا مل جاتا۔ کبھی وہ کسی عمارت کو غور سے دیکھ رہا ہوتا۔ اور کبھی کسی آدمی یا عورت کو گھورتا پایا جاتا۔ کئی لوگوں نے نظر اٹھا کر اس کی طرف دیکھا بھی ــــ مگر کسی کے چہرے پر کسی قسم کے غیر معمولی تاثرات نہ ابھرے۔ مگر نہ جانے مجھے وہ کیوں بڑی ہی پُراسرار شخصیت لگتا ــــ

ایک دن تو میری حیرانی کی انتہا نہ رہی۔ جب میں نے اُسے شہر کے وسط میں فوارے کے پاس سے گزرتے دیکھا۔ دوپہر کا وقت تھا اور فوارے میں سے بارہ پھواریں نکل رہی تھیں۔ یعنی کہ بارہ بجے تھے۔ وہ فوارے کے قریب ایک پل کے لیے کھڑا ہوا' اس نے فوارے کی طرف نظر اٹھا کر دیکھا۔ اور فوراً ہی فوارے میں سے پانی اچھلنا بند ہوگیا ــــ فوارے کے گرد بنے حوض کا پانی بالکل سوکھ گیا اور حوض کی دیوار پر بیٹھی پانی پیتی چڑیاں اور کوے آناً فاناً پھر سے اُڑ گئے ــــ میں بالکل سکتے کے عالم میں کھڑا رہا ــــ اور جب وہ بزرگ ایک فاصلے پر پہنچا تو پانی دوبارہ اچھلنے لگا۔ لیکن ایک لمحے کے بعد ہی بارہ کی بجائے ایک پھوار گرنے لگی۔

میں اس کے پیچھے لپکا ــــ مگر وہ فوراً ہی آنکھوں سے اوجھل ہوگیا ــــ

ایک دو دن کے بعد بشیر میرے گھر آیا۔ میں کرسی پر بیٹھا اونگھ رہا تھا۔ اس نے میرے کندھے پر آہستہ سے ہاتھ رکھا۔ ہلکا سا جھنجھوڑا اور جب میں نے چونک کر اس کی طرف دیکھا تو بولا ــــ "یار یہ تم نے کیا آڈمبر رچ رکھا ہے سفید داڑھی مونچھ لگا کر سفید پگڑی سر پر باندھ کر اور سفید لباس پہن کر شہر میں گھومتے پھرتے ہو ــــ"

"نہیں تو ــــ" میں نے حیرانی میں ڈبڈبا کر جواب دیا۔

"جانے دے یار ــــ میں کیا تمھیں پہچانتا نہیں ہوں۔ تم کسی بھی روپ میں میری نظروں سے چھپ نہیں سکتے۔ اس میں ضرور کوئی شرارت ہے۔ تم لوگوں کو اپنی طرف متوجہ کرنا چاہتے ہو ــــ"

میرے ہزار یقین دلانے پر بھی بشیر نہ مانا ــــ ہم دونوں نے اکٹھے چائے پی۔ اِدھر اُدھر کی باتیں کیں ــــ جن سے مجھے معلوم ہوا کہ بشیر نے اخبار پڑھنا بالکل چھوڑ دیا ہے اور وہ شہر کی حالت کے بارے میں میری طرح ہی فکر مند ہے ــــ اس نے یہاں تک کہا کہ ڈیموکریسی پر سے اس کا یقین اٹھتا جا رہا ہے۔ اور وہ انتہائی بوریت کا شکار ہے۔ میں نے اس کی سب باتیں مانیں ــــ لیکن وہ یہ نہیں مانا ــــ کہ شہر میں پراسرار طریقے سے وارد ہونے والا سفید ریش بزرگ میں نہیں ہوں۔ اس نے جاتے ہوئے پوچھا۔

"اُرمِلا بھابی کے لیے کون سے میٹرنٹی ہوم میں رُوم بُک کروایا ہے ؟"

"یہیں پاس ہی ہے۔ اگلے بازار کے آخری سِرے پر۔"

"اندازاً کتنے دن باقی ہیں ؟"

"ایک ہفتے کے قریب۔ ــــ کل ہی لیڈی ڈاکٹر کو دکھانے گئے تھے۔"

"اچھا تو میں چلتا ہوں۔ ــــ ایک بات سنو' میں نے حقہ پینا چھوڑ دیا ہے۔"

"کیوں ــــ ؟"

"یوں ہی ــــ مجھے اس میں سے اُٹھنے والی گڑگڑاہٹ سے خوف محسوس ہونے لگا تھا۔"

میں بالکل سکتے میں آگیا ــــ بشیر کب گیا، مجھے معلوم بھی نہ ہوا۔ اسی کیفیت میں میں اپنے والد کی تصویر کے سامنے جا کھڑا ہوا۔ اچانک مجھ پر ایک عجیب و غریب راز کا انکشاف ہوا ــــ اُس سفید ریش بزرگ کی صورت میرے والد سے بہت ملتی تھی ــــ گو وہ

داڑھی مونچھیں نہیں رکھتے تھے ــــــ مگر ان کے چہرے پر داڑھی اور مونچھیں لگا دی جائیں تو شکل ہو بہو ویسی ہی ہو جاتی ــــــ جیسی کہ اس سفید ریش بزرگ کی تھی۔

اُن دنوں ایک بات کا بہت چرچا ہو رہا تھا ــــــ شہر میں ایک ناٹک کمپنی آئی تھی۔ اس میں ایک دراز قد اداکار تھا ــــــ جو ایک ناٹک میں راجہ کا کردار کرتا تھا۔ راجہ جیسا ہی زرہ بکتر پہن کر وہ اسٹیج پر آتا تھا ــــــ سر پر راجہ جیسا ہی خود پہنتا تھا۔ اس نے ہو بہو راجہ کی چال ڈھال اور آؤ بھاؤ کی نقل کی تھی ــــــ تماشائی اس کی اداکاری سے بہت متاثر ہوئے تھے۔ اور پھر پورے تین گھنٹے تک وہ راجہ کی طرح زندگی گزارنے کے دوران اپنی اصلی زندگی اور اصلی پہچان بھول گیا۔ نوٹنکی ختم ہوئی تو وہ سیدھا راج محل کے اندر داخل ہو گیا ــــــ اس کے بعد اُسے کسی نے نہیں دیکھا ــــــ ناٹک کمپنی والے ایک ہفتے تک اس کی واپسی کا انتظار کرتے رہے۔ جب کسی طرح بھی اس کا کوئی اتا پتا نہ ملا تو وہ مایوس ہو کر اپنا پنڈال لپیٹ کر چلے گئے ــــــ اب کسی کو یہ معلوم نہیں ہو پا رہا تھا ــــــ کہ شہر پر اصلی راجہ راج کر رہا تھا ــــــ یا اس کے بہروپ میں وہ اداکار ــــــ کیوں کہ موسم برسات کا تھا ــــــ مگر بارش نہیں ہو رہی تھی۔ کھیت سوکھے پڑے تھے۔ مرغیاں بیماری کا شکار ہو گئی تھیں۔ ڈھور، ڈنگر، چارے اور پانی کی قلت کی وجہ سے مر رہے تھے۔ انڈوں، دودھ اور گوشت کے نرخ آسمان کو چھونے لگے تھے ــــــ جس کے گھر میں اناج تھا، اس کی زندگی خطرے میں تھی۔ راہزنی کی وارداتیں عام ہو چلی تھیں ــــــ ایسے حالات میں ارملا کو لیبر پینز (LABOUR PAINS) اٹھی تھیں۔

میں ارملا کو لے کر ہسپتال کے لیے روانہ ہوا ــــــ کچھ بھی ہو میرا پہلا بچہ تھا ــــــ اس کے استقبال کے لیے کسی طرح کی کوئی کسر اٹھا نہ رکھنے کا میں نے تہیہ کر رکھا تھا۔ مجھے ایسے لگ رہا تھا، جیسے کئی صدیوں کے بعد اس زمین پر انسان کے بچے کے وارد ہونے کا وقت آیا ہے۔

جیسے ہی ہم دونوں گھر سے باہر نکل کر تانگے میں بیٹھنے لگے۔ میں نے دیکھا۔ گھر کے سامنے درخت کے نیچے وہی سفید ریش بزرگ کھڑا تھا ــــــ وہ ٹکٹکی باندھے ہم دونوں کو دیکھ رہا تھا اور غیر معمولی طور پر، اس کے چہرے پر ہلکی سی مسکراہٹ پھیلی ہوئی تھی ــــــ مجھے دیکھتے ہی درخت کی اوٹ میں ہو گیا ــــــ کوچوان نے گھوڑے کی پیٹھ پر چابک رسید کیا اور گھوڑے نے ایک جھٹکے کے ساتھ تانگہ کھینچنا شروع کیا۔

پورنماشی کی رات تھی ــــــ میں ہسپتال کے برآمدے میں بچھے ہوئے بنچ پر بیٹھا آسمان کو تک رہا تھا۔ پورے چاند کے گرد ڈھیروں تارے بکھرے ہوئے تھے ــــــ مجھے وہ پوئم یاد آئی جو میں اور بشیر بچپن میں مل کر بلند آواز میں گایا کرتے تھے TWINKLE TWINKLE LITTLE STAR.

اور میں نے گُن گُنانا شروع کیا TWINKLE TWINKLE...

اچانک برآمدے میں کسی کے پاؤں کی چاپ سنائی دی۔ میں نے پلٹ کر دیکھا، بشیر آہستہ آہستہ میری طرف بڑھ رہا تھا ــــــ وہ میرے قریب آ کر رک گیا اور بولا۔

" تانگے والے نے تمہارا پیغام دے دیا تھا۔ اسی تانگے سے آیا ہوں۔ کوئی خبر ــــــ ؟"

" ابھی تو کچھ نہیں ــــــ بڑا تکلیف دہ مرحلہ ہے یار "

"اب تو سب عادی ہو گئے ہیں۔ روزہ معمول ہو گیا ہے یہ مگر ذرا سوچو، جب خدا پہلا انسان پیدا کیا ہوگا تو زمین اور آسمان کی حالت ہوئی ہوگی " بشیر نے کہا۔

رات کے ایک بج کر دس منٹ اور سیکنڈ پر بچے کا جنم ہوا۔ نرس نے آکر بتایا۔

" مبارک ہو ــــــ لڑکا ہوا ہے۔ بہت خوبصورت ہے۔ اس کی ماں بالکل ٹھیک۔ آپ چل کر دیکھ سکتے ہیں ــــــ "

میں اور بشیر برآمدے میں چلتے ہوئے ارملا کے لیبر روم کی طرف بڑھنے لگے۔ سفید لباس میں کئی نرسیں اور ڈاکٹر ہمارے پاس سے گزر رہے تھے۔ اچانک ہم نے دیکھا کہ وہی سفید بزرگ ایک نوزائیدہ بچے کو سینے سے لگا ــــــ ایک کمرے میں سے نکلا ہے اور تیزی سے باہر کی طرف بڑھ گیا ہے ــــــ اس کے ساتھ ہی زنانہ آوازیں اور چیخ پکار سنائی دی۔

" پکڑو... پکڑلو ــــــ وہ بچہ چرا کر کے لے جا رہا ہے ــــــ " اور اس کے ساتھ ہی دو تین نرسیں سفید ریش بزرگ کے پیچھے بھاگنے لگیں ــــــ ہم دونوں بھی بے تحاشہ بھاگے ــــــ اور ہسپتال کے بڑے پھاٹک تک ہم نے اُس سفید ریش بزرگ کو جا لیا۔

اس نے بچہ بدستور سینے سے چپکا رکھا تھا اور ہانپ رہا تھا۔ کئی نرسیں اور ڈاکٹر بھی وہاں پہنچ گئے ــــــ اور تب معلوم ہوا کہ وہ میرا ہی بچہ چرا کر بھاگ رہا تھا۔

اپنا بشیر احمد شیخ مجسٹریٹ کا منشی تو تھا ہی۔ کسی قسم کی قانونی مدد لینے میں ہمیں دقت پیش نہ آئی ــــــ پولیس تھانے میں وہ سفید ریش

بزرگ ایک کونے میں بچے کو مضبوطی سے اپنے ساتھ چپکائے بیٹھا تھا ــــ وہ کسی طرح بھی بچے کو ہمارے حوالے کرنے کو تیار نہ تھا۔

تھانے والے کے ورغلانے، بہلانے اور دھمکانے کے باوجود وہ ٹس سے مس نہ ہو رہا تھا۔

ہسپتال میں اُرملا اسی وقت سے بے ہوش پڑی تھی۔ اور میں تھانے میں تھانے دار کے سامنے والی کرسی پر بیٹھا ایک ٹک اس بزرگ اور اس کی باہوں میں جکڑے ہوئے اپنے بچے کو دیکھے جا رہا تھا ــــ بشیر کا ایک پاؤں تھانے میں تھا ــــ تو دوسرا ہسپتال میں۔

"کیوں آخر کیوں ــــ لے جانا چاہتے ہیں آپ اپنے ساتھ اس بچے کو۔ اس سے آپ کا کیا تعلق ہے۔ اس پر آپ کا حق ہی کیا ہے؟"

تھانیدار ایکا ایکی دھاڑا۔

ہم سب اس کی دھاڑ سے خوفزدہ ہو گئے ــــ مگر اس بزرگ پر کوئی اثر نہ ہوا۔ وہ ویسے ہی بیٹھا رہا ــــ اس کے چہرے پر کسی قسم کے کوئی تاثرات ظاہر نہ ہوئے۔ اس نے بڑی شفقت بھری نظروں سے بچے کو دیکھا۔ پھر اپنا دایاں ہاتھ اس کے سر پر اُگے ہوئے چھوٹے چھوٹے ملائم بالوں پر پھرایا ــــ اور بڑی سنجیدہ اور پُروقار آواز میں کہا۔

"اس بچے پر میرا پورا حق ہے ــــ میں نے تیرہ نسل تک اس کی پیدائش کا انتظار کیا ہے۔"

ہم سب حیران سے ہو گئے۔

"میں آپ کا مطلب نہیں سمجھا بزرگوار۔"

تھانیدار نے بڑی نرمی سے پوچھا۔

"یہ ایک لمبی کہانی ہے تھانیدار صاحب! تیرہ نسل پہلے میں اس جگہ آیا تھا۔ تب یہ علاقہ بالکل ویران تھا۔ دور پہاڑیوں کی سرمئی لکیر تھی۔ اور جگہ جگہ کیکر کے پیڑ اور ببول کی جھاڑیاں تھیں۔ زمین اوبڑ کھابڑ تھی ــــ ادھر اُدھر روڑے اور پتھر بکھرے ہوئے تھے۔ میں نے ایک کیکر کے پیڑ کے نیچے پتھر کا تکیہ بنا کر ایک نیند لی تھی اور مجھے خواب میں بشارت ہوئی تھی کہ مجھے یہیں بس جانا چاہیے ــــ میں نے اس شہر کی تعمیر کے لیے پہلی اینٹ رکھی ــــ کئی برس تک اس کی تعمیر میں مصروف رہا ــــ اور میرے ایک خاندان کا وجود عمل میں آگیا ــــ میرے بچے ایک دوسرے سے انتہائی محبت کرتے تھے ــــ مل بانٹ کر کھاتے تھے۔ ایک دوسرے کے سکھ دکھ میں کام آتے تھے ــــ اور کھلے ہوئے چہروں کے ساتھ زندگی بسر کرتے تھے ــــ میری تیرہ نسلیں اس شہر میں پیدا ہوئیں ــــ اور وہ اسی شہر کی گلیوں اور بازاروں میں پرورش پا کر پروان چڑھیں ــــ اور آج یہ حالت ہے . . . اور حالت آپ جانتے ہی ہیں ــــ تھانیدار صاحب ــــ یہ تقسیم ہو کر ایک دوسرے سے بے تعلق ہو چکے ہیں ــــ میں نہیں چاہتا یہ بچہ جس کا کہ میں جدِ امجد ہوں۔ اس شہر کی گلیوں میں پرورش پائے اور کل کو ہابیل اور قابیل کا قصہ دُہرایا جائے ــــ اور یہ اپنے کھیتوں کو اپنے بھائیوں کے خون سے لال کر دے۔

"اس لیے میں اس بچے کو لے جانا چاہتا ہوں۔ میں خود اپنی دیکھ ریکھ میں اپنے ہاتھوں سے اس کی پرورش کروں گا ــــ اور جب یہ جوان ہو جائے گا سیانا ہو جائے گا تو میں خود اس کو اس شہر میں چھوڑنے آؤں گا ــــ اور وہ دن دنیا میں پھر سے پہلا دن ہوگا ــــ تب اس شہر کی فضا پر چھایا ہوا گرد و غبار دُور ہو جائے گا۔"

سفید ریش بزرگ نے اپنی بات ختم کی۔ اٹھا اور بچے کو لے کر ہمارے دیکھتے ہی دیکھتے تھانے کی حدود سے باہر ہو گیا ــــ اُسے نہ بشیر کی رفاقت روک سکی، نہ میری ممتا اور نہ ہی ملک کا قانون۔



کرشن موہن

ہمارا شوق فقط نامہ و پیام ہوا
عجیب یہ بھی تعلق کا اہتمام ہوا

ادب میں جدّت و نُدرت میں جس کا نام ہوا
عجیب ہے، وہ بھی روایات کا غلام ہوا

اگرچہ جہد و عمل میں کٹی حیات مری
مرے دوام کا ضامن مرا کلام ہوا

میں اپنی نظروں میں خود گر گیا، خبر تھی مجھے
اگرچہ اہلِ زمانہ میں احترام ہوا

سُنا ہے لے لیا بیراگ کرشن موہن نے
لو آج قصّہ مہر و وفا تمام ہوا

۱۵۸، پشپانجلی، آئی پی، ایکسٹینشن II، نئی دہلی ۱۱۰۰۹۲

(فیضؔ کے نام)

سارے سخن تمھارے، سارے سخن ہمارے
گل ہائے تر تمھارے، داغِ کہن ہمارے

شکرِ خدا کہ چمکی وہ برقِ نازِ جاناں
مدّت سے منتظر تھے یہ جان و تن ہمارے

گلگشت کا اُسی کے ہے عکس یہ جو اَب تک
محوِ خرام ہیں سب سرو و سمن ہمارے

لکھّا تھا خونِ دل سے قانونِ باغبانی
گلپوش و گلبدن ہیں دشت و دمن ہمارے

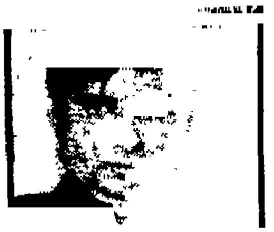
آتے ہیں روز ملنے زنداں میں بن کے خوشبو
غنچہ دہن ہمارے گل پیرہن ہمارے

صدیوں میں بس ہمیں تک آئی یہ سرفرازی
چھوٹے ہیں اب کے حق میں دار و رسن ہمارے

حرفِ جنوں کا لکھنا کچھ سہل تو نہیں تھا
کام آ رہے ہیں لیکن اندازِ فن ہمارے

عرشی زادہ

پھلوار، رام پور (یو۔پی)



شجاع خاور

دشت کو جا تو رہے ہو، سوچ لو کیسا لگے گا
سب اُدھر ہی جا رہے ہیں دشت میں میلہ لگے گا
تیر بن کر خیر سے ہر دل پہ جب سیدھا لگے گا
شعر میرا دشمنوں کو بھی بہت اچّھا لگے گا
خیر حشرِ آرزو پر تو تمھارا بس نہیں ہے
آرزو تو کر لو یارو آرزو میں کیا لگے گا
سارے اندازے نظر کے نسبتاً ہوتے ہیں ـــ مثلاً
ہم نہیں ہوں گے تو ہر کوتاہ قد لمبا لگے گا
فصلِ گل جو کر رہی ہے سامنے ہے، دیکھ لیجے
میں کروں گا کچھ تو نام اب میری وحشت کا لگے گا
دُور سے تو یوں سمندر کو بھی چاہے کچھ نہ سمجھو
پاس جاؤ تو میاں تالاب بھی گہرا لگے گا
سرسری انداز سے دیکھو کہ محفل رنگ میں ہے
غور سے مت دیکھ لینا، ہر کوئی تنہا لگے گا
زندگی پر غور کرنا چھوڑ کر دیکھو شجاعؔ تم
آہ بھی دے گی مزا اور درد بھی میٹھا لگے گا

۴۲، آفیسرز فلیٹ، مندر مارگ پولیس اسٹیشن، نئی دہلی

راج نرائن راز

اسم با مسمّیٰ

پرکاش پنڈت

ماضی کی بتدریج چھٹتی ہوئی دھند اور یادوں کے کم گہرے ہوتے ہوئے دھندلکوں میں ایک قدِآدم ہیولیٰ دھیرے دھیرے شکل اختیار کرنے لگتا ہے۔ آہستہ آہستہ خدوخال واضح ہونے لگتے ہیں۔

میانہ قد، گٹھا بھرا بدن، سفیدی کی طرف مائل سانولا رنگ، ذہانت کی چمک لیے سوچتی ہوئی موٹی موٹی آنکھیں۔ موٹے موٹے ہونٹ، پیچھے کی طرف سنوارے ہوئے بال، کشادہ پیشانی، تیکھا ناک نقشہ، نفیس لباس: نہایت ہلکے لطیف بھورے رنگ کی، چھوٹی دھاریوں والی قمیض، قمیض سے میل کھاتی گہرے بھورے رنگ کی پتلون، چمکتے، تازہ پالش ہوئے جوتے، منہ میں پان۔ پان کی ذرا سی سُرخی ہونٹوں پر۔ ہمیشہ تین چار دوستوں کے درمیان، جو یقیناً ادیب رہے ہوں گے...، جامع مسجد کے قریب اُردو بازار میں۔

میری یادوں کے نہاں خانے میں پرکاش پنڈت کی یہی تصویر محفوظ ہے۔ یہ نقش ۱۹۵۰ء کے آس پاس کا ہے۔ وہ زمانہ میری طالب علمی کا تھا۔ آج سوچتا ہوں تو محسوس ہوتا ہے کہ دو لفظوں کے مرکّب نام کا حامل یہ شخص اسمِ بامسمّیٰ: واقعی پرکاش اور واقعی پنڈت تھا۔

اُن دنوں پرکاش پنڈت ترقی پسند تحریک کے ترجمان ماہنامہ شاہراہ کا مدیر تھا۔ دونوں ایک دوسرے کی شناخت تھے۔ ایک کے بغیر دوسرا ادھورا۔ اُردو والوں کی بے حسی کے باعث شاید دونوں ادھورے۔ یہی وجہ ہے کہ شاہراہ جیسا عہد آفریں رسالہ بہت دنوں تک نہ نکل پایا لیکن جتنا عرصہ نکلا، ایک شان ایک وقار سے اور اس کا سب سے زیادہ سنہرا زمانہ وہی ہے، جب پرکاش پنڈت اس کا مدیر تھا۔

شاہراہ نے پرکاش پنڈت کو کچھ دیا؟ کیا دیا؟ اور نتیجتاً کیا پایا؟ اس بارے میں اختلافِ رائے ہو سکتا ہے۔ تاہم یہ واقعہ ہے کہ شاہراہ کی بدولت وقت کے چھوٹے بڑے اور اہم مصنفین پرکاش پنڈت کے رابطے میں آئے۔ ظاہر ہے، پرکاش پنڈت نے تعلقات کی اس نہج پر کچھ بلکہ بہت کچھ سیکھا۔ اور یہ بھی واقعہ ہے کہ نوجوان قلم کاروں کی استعداد بھر رہنمائی کی۔ ان کا حوصلہ بڑھایا۔ حبیب جالب جیسا آج کا اہم شاعر دنیائے ادب کو شاہراہ اور پرکاش پنڈت کی دین ہے۔ آج بھی ہمارے درمیان، ایک بڑی تعداد، بڑے اور اہم ادیبوں اور شاعروں کی ہے جو اپنی تخلیقی سرگرمیوں کے، ایک نہ ایک مرحلے میں، کسی نہ کسی طور پر شاہراہ سے جُڑے ہوئے تھے۔

جیسا کہ میں پہلے عرض کر چکا ہوں: اُردو والوں کی بے حسی کے باعث جو بالعموم رسائل اور کتب کی عدم خرید کی صورت میں ظاہر ہوتی ہے، شاہراہ اور پرکاش پنڈت دونوں ادھورے تھے۔

○

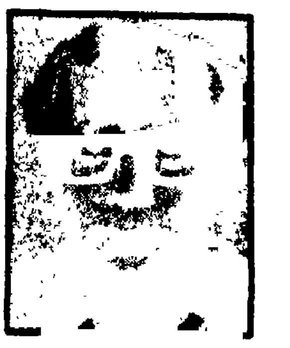
پھر معلوم ہوا: پرکاش پنڈت شاہراہ سے الگ ہو گئے ہیں۔ اب وہ فنکار نکالیں گے اور فنکار شائع ہوا، ایسا کہ ہر اعتبار سے اس کے معیار اور سلیقے کی مثال دی جا سکے۔ اس کی اعلیٰ مثالی کی قسم کھائی جا سکے۔ یہ رسالہ شاید دوماہی تھا۔ بے پناہ مقبولیت کے باوجود شاید دو شمارے شائع ہو سکے۔

اسی عرصے میں سُننے میں آیا: پرکاش پنڈت بمبئی چلے گئے ہیں۔ شاید فلموں کے لیے کہانی مکالمے وغیرہ لکھیں گے۔ بمبئی میں وہ ساحر لدھیانوی کے رفیق و جلیس ہوئے۔

یادوں کی خاکستر میں کھویا ہوا ایک اور نقش!

اُنھیں دنوں کی بات ہے۔ فلم نیا دور بڑی مقبول ہوئی تھی۔ اس کی مقبولیت کا ایک بڑا سبب ساحر لدھیانوی کے گیت تھے، جن کا خمیر پنجاب کے لوک گیتوں سے اٹھا تھا۔ 'ریشمی شلوار کرتا جالی کا'، 'روپ سہانا جائے نخرے والی کا'۔ یہ اور اس فلم کے دوسرے گیتوں کے بول ہر چھوٹے بڑے کے ہونٹوں پر، اور گونج دلوں میں، دماغوں میں تھی۔

پھر اچانک کسی ہلچل کا احساس ہوا۔ ساحر کے حاسدوں نے ان گیتوں کو مخربِ اخلاق قرار دیتے ہوئے فلم پر پابندی لگائے جانے کی شعر



۳۰/۲۹، ایسٹ پٹیل نگر، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۸

سو زمانگ کی تھی۔ ایسے میں دفاعی تدبیروں کا عمل میں [illegible] زیر تھا۔

یہ بات ۵۸-۱۹۵۷ کی ہے۔ میں پریس انفارمیشن بیورو کے شعبۂ اردو میں معاون صحافی کی حیثیت سے برسرِ کار تھا۔ جناب جگن ناتھ آزاد اردو کے انفارمیشن آفیسر تھے۔ ایک صبح آزاد صاحب نے مجھے بُلا بھیجا۔ حاضر ہوا تو کہنے لگے کہ ساحر کے گیتوں کی مخالفت میں، بمبئی کا ایک حلقہ فلم پر پابندی لگائے جانے کی مانگ کر رہا ہے۔ دفاعی تدبیر کے طور پر اردو شاعروں اور ادیبوں اور بعض سرکاری افسروں کی آرا حاصل کرنے کے لیے پرکاش پنڈت دہلی آئے ہوئے ہیں اور ابھی تھوڑی دیر میں دفتر آ رہے ہیں۔ ایک خط آپ بھی لکھ دیں۔ اس میں نیا دور کے گیتوں کو اس طرح حق بہ جانب قرار دیں کہ ان کی افادیت کا پہلو نمایاں ہو جائے۔

میں 'بہت خوب' کہہ کر اپنی سیٹ پر لوٹ آیا۔ آدھ پون گھنٹے بعد آزاد صاحب نے پھر بُلوا بھیجا۔ پرکاش پنڈت تشریف لے آئے تھے۔ پرکاش پنڈت سے یہ میری پہلی باضابطہ ملاقات تھی۔ سرسری، محض رسمی! میں نے عرض کیا 'خط میں نے لکھ لیا ہے ابھی لے کر حاضر ہوتا ہوں۔ اپنے خط میں' میں نے ساحر صاحب کو مبارکباد دی تھی کہ انھوں نے اپنے گیتوں کے ذریعے ثقافتی پنجاب کو پورے ملک سے روشناس کروا کے' قومی یک جہتی کی فضا کو سازگار بنانے کے سلسلے میں اہم خدمت انجام دی ہے۔

پرکاش پنڈت نے جو خط جمع کیے' اُن کا نتیجہ دوسرے عوامل کے ساتھ مل کر خاطر خواہ نکلا' نیا دور پر پابندی لگائے جانے کی مانگ رد کر دی گئی۔

○

پھر کچھ ہی عرصے بعد روشنی اور علم کی ایک چمکتی ہوئی لکیر' دنیائے ادب میں' ایک نئے اُفق پر نمایاں ہوئی۔ ساحر لدھیانوی کی شاعری پر پرکاش پنڈت کی ایک کتاب ہندی میں شائع ہوئی۔ یہ کتاب بڑی مقبول ہوئی۔ ایک اردو شاعر اور اس کی شاعری کو پڑھنے والوں کا ایک وسیع تر حلقہ میسر آیا۔ اور اسی وسیع تر حلقے کے ادبی ذوق کی تسکین کے تقاضوں کو محسوس کرتے ہوئے پرکاش پنڈت نے اردو شاعری کے انتخابات شائع کرنا شروع کیے۔ اور پھر اس کام نے ایک مستقل حیثیت اختیار کر لی۔ اور یہی کام دہلی کے معروف ہندی ناشر راجپال اینڈ سنز سے ان کے رابطے کا وسیلہ بنا۔ یہ ہر اعتبار سے سودمند ثابت ہوا۔ اب پرکاش پنڈت دہلی لوٹ آئے تھے۔

وقت کے ساتھ ایک تبدیلی اور رونما ہوئی۔ وسیع تر ہندی حلقے کے ادبی ذوق کی تسکین کے بجائے اب پرکاش پنڈت کی توجہ ان کے ادبی ذوق کی تہذیب پر تھی۔ اُن کی تالیفات 'مشاعرہ' اور 'آج کے آدھنک اردو شاعر' کو اس کی بہت اچھی مثال کے طور پر پیش کر سکتے ہیں۔ 'مشاعرہ' پرکاش پنڈت نے ریڈرز ڈائجسٹ ہندی کے لیے مرتب کیا تھا۔ دوسری کتاب ان کے اپنے ادارے سے شائع ہوئی تھی۔

پرکاش پنڈت نے' بقول ان کے 'مختلف اردو شاعروں پر الگ الگ ایسے انتخابات کے تقریباً پچاس مجموعے' بغیر کسی تعاون یا مدد کے' حاضر کیے ہیں۔" یہ الفاظ پرکاش پنڈت کے ہیں۔

پرکاش پنڈت ادبی سطح پر ایک زبان کے اچھے ادب کو دوسری زبان کے پڑھنے والوں سے متعارف کرانے کے اعلیٰ کام اور اعلیٰ ترین مقصد کی اہمیت سے بخوبی آگاہ تھے۔ ان کا خیال تھا اور صحیح تھا: "یہ حکومت کا کام تھا جو میں نے کیا۔" یہ الفاظ پرکاش پنڈت کے ہیں۔ ہم یہ خوب جانتے ہیں کہ اب یہ کام حکومت کے بڑے اشاعتی ادارے کر رہے ہیں۔ اس کی ابتدا ہندی کے تعلق سے' بڑے پیمانے پر' پرکاش پنڈت نے کی تھی۔ یہاں گوئلیہ کی خدمات کا اعتراف نہ کرنا کفرانِ نعمت ہوگا۔ اُردو شاعروں کے منتخب کلام کو دیوناگری رسم الخط میں شائع کرنے کے کام کو قاعدے ضابطے سے گوئلیہ نے شروع کیا اور بڑی دیدہ زیب کتابیں شائع کی تھیں۔

پرکاش پنڈت نے خود بتایا: "مجھے باجپائی (مرلو اٹل بہاری باجپائی سے ہے) وغیرہ بہت سے لوگوں نے کہا کہ انھوں نے اُردو شاعری میری کتابوں ہی کی بدولت پڑھی۔ ورنہ اسکرپٹ نہ جاننے کی وجہ سے وہ اُردو شاعری کی عظمت سے ناآشنا تھے۔" انھیں اس بات کا احساس بھی تھا کہ ان کی خدمات پر کوئی توجہ نہیں کی گئی۔

پرکاش پنڈت کے کینسر جیسے موذی مرض میں مبتلا ہونے اور ٹاٹا ریسرچ انسٹی ٹیوٹ میں' بمبئی میں علاج کرانے کی خبریں مختلف ادبی حلقوں میں' وقفے وقفے سے' سرگوشی کے سے انداز میں سننے میں آ رہی تھیں۔ اُردو والوں اور اردو اداروں نے ان کے لیے کیا کیا! اس بارے میں میرے کچھ عرض کرنے کی چنداں ضرورت نہیں۔ غالباً سبھی خاموش تماشائی تھے۔ وہ کبھی جنگل میں ناچتے ہوئے مور کی مثال تھے۔ بے نیاز' سرمست' اپنے آپ میں محو۔ اب ادا رقصِ بسمل کی تھی۔ اوّل تا آخر خاموشی۔ ایک چپ! ہم اُردو والے اس کے خاموش تماشائی بھی تھے یا نہیں۔ اس بارے میں وثوق سے کچھ کہنا مشکل ہے۔ میرا خیال ہے بقول

تاآخر' لاتعلق' بے حس سا اسباب ارباب اختیار جانیں۔
ہاں' قریبی لوگ مرض کے تموّج کو بڑھتے' اور حیات کی بالو کو برابر کھسکتے ہوئے دیکھ رہے تھے۔ وہ محسوس کر رہے تھے کہ زندگی کا آخری سرا ابھی انگلیوں کے درمیان سے سرکتا ہوا نکلا جا رہا تھا۔ تاہم کوشش جاری تھی۔ علاج چل رہا تھا۔ پرکاش پنڈت' ممکن ہے اندر سے ٹوٹا ہو! بہ ظاہر باہر سے ایسا نہیں تھا۔

جولائی، اگست ۱۹۸۳ء کی بات ہے۔ آج کل کی ڈاک میں مجھے ایک خط موصول ہوا۔ خط پرکاش پنڈت کا تھا۔ پوچھا تھا' ہم آج کل میں مضمون یا کسی تخلیق کا زیادہ سے زیادہ کتنا معاوضہ دے سکتے ہیں۔ لکھا تھا کہ جو انجکشن اُسے اب لگنے ہیں' اُس کے پورے کورس پر پانچ ہزار دو سو پچاس روپے صرف ہوں گے۔ اس بار کے لیے رقم کا انتظام اُس نے کر لیا ہے۔ لیکن آئندہ ضرورت پیش آنے پر یہ رقم اس کے بس سے باہر ہوگی۔ مرض کی شدت اور ایک اُردو ادیب کی بے بسی نے تلخی کی جو صورت اختیار کر لی تھی' اس کا احساس آج بھی میرے ذہن میں کنکھجورے کی طرح اپنے پنجے گڑوئے ہوئے ہے۔ لکھا تھا: "پھر کتے کی موت مرنا ہوگا۔"

پرکاش پنڈت کے خط نے افسردہ کر دیا۔ دل بجھ سا گیا تھا۔ میں نے ٹیلی فون پر بات کرنا چاہی مگر رابطہ قائم نہ ہو سکا۔ پھر 'گستاخیاں' عنوان سے ان کی ایک تحریر موصول ہوئی۔ میں نے شائع کرنے سے معذوری ظاہر کی۔ نیز لکھا کہ میں کسی وقت آنا چاہتا ہوں۔ جواب آیا: چیک اپ کے لیے بمبئی جا رہا ہوں۔ لوٹ کر ملاقات ہوگی۔

اور ایک روز میں کشمیری گیٹ میں واقع ان کے دفتر میں حاضر ہوا۔ یہ بات غالباً نومبر ۱۹۸۳ء کے اواخر کی ہے۔ زینے سے نکل کر دفتر میں قدم رکھا۔ میں نے دیکھا: ایک میز چھوڑ کر اگلی میز کے پاس رکھی کرسی پر بیٹھا ایک شخص بھیگی ہوئی سفید پٹی سے آنکھوں اور کسی قدر ماتھے کو ڈھانپے ہوئے ہے۔ میں یوں ہی کھڑا رہا۔ اس شخص میں حرکت ہوئی۔ اس نے بڑی آہستگی کے ساتھ سفید پٹی کو سامنے رکھے پیالے میں پڑے پانی میں بھگویا۔ نچوڑا۔ اور پھر دونوں ہاتھوں میں تھامے ہوئے آنکھوں اور ماتھے پر رکھ لیا۔

آنکھیں جو کچھ دیکھ رہی تھیں' دل اُن پر یقین کرنے کو آمادہ نہیں تھا۔ مجھے خاموش کھڑا دیکھ کر ان کے ایک ساتھی نے کہا: کوئی صاحب آپ سے ملنے آئے ہیں۔

پرکاش پنڈت نے آنکھیں کھولیں۔ اِس اثنا میں میں اُن کی سیٹ پر پہنچ چکا تھا۔ میں نے ہاتھ بڑھاتے ہوئے کہا' میں راج نرائن راز۔

شدید درد و کرب کے باوجود پرکاش پنڈت نے ہاتھ بڑھایا۔ ایک ہلکی سی مسکراہٹ' درد کو دھوکا دے کر' ہونٹوں پر بکھرنے میں کامیاب ہو گئی تھی۔

اشارے سے بیٹھنے کو کہا۔ پھر اُٹھ کھڑے ہوئے۔ اشارے سے سامنے دائیں کونے ایک کیبن میں چلنے کو کہا۔ پرکاش پنڈت کے ایک ہاتھ میں پانی والا پیالہ تھا' دوسرے میں بھیگی ہوئی سفید پٹی۔

کیبن میں بیٹھتے ہی گھنٹی بجائی۔ چپراسی آیا تو اسے چائے کی پرچی لکھ کر دی۔ بات چیت بڑے رسمی انداز میں شروع ہوئی۔ ایک طرف لفظ تھے' تحریر تھی۔ جواب میں لفظ تھے' آواز تھی۔ ایک غیر محسوس خلا تھا۔ جان کو ضیق میں ڈالنے والا جیسے کوئی شے کم تھی؛ کمی بس آنچ بھر کی تھی۔

"آپ کیسے ہیں؟" مزاج پُرسی کی غرض سے میں نے پوچھا۔ جواب ہلکے بھورے کاغذ پر نوک پلک سے درست خط میں لکھا: "اب مرض قابو سے باہر ہے۔ جو انجکشن تجویز ہوئے ہیں' وہ سر دست امریکہ میں بھی دستیاب نہیں۔ آرڈر پر بنائے جاتے ہیں۔ کیوں کہ ان میں ناگ کا تازہ زہر شامل کیا جاتا ہے۔ اُمید ہے ۲۲ تاریخ تک مل جائیں۔ ایک فی صد اُمید ہے کہ ان سے افاقہ ہو۔" اتنا لکھنے کے بعد لفظ انجکشن کے گرد ایک دائرہ بنایا اور اس پر انگریزی ہندسوں میں پانچ ہزار دو سو پچاس لکھا۔ یعنی اس کورس پر اتنی رقم صرف ہوگی۔ مزید لکھا: "اگر مزید کی ضرورت پڑی تو بس اللہ مالک ہے۔"

میں نے جواباً کہا: 'وزارتِ تعلیم اور اُردو اکادمی سے امداد کے لیے کہا جا سکتا ہے۔' خودداری کا عالم ملاحظہ ہو۔ لکھا: "میں خود کیسے کہوں!"

میں نے کہا: "آپ کیوں کہیں۔ میں کچھ کرتا ہوں۔" میں نے ایک صاحب کا نام لیا۔ بتایا کہ وہ اس ضمن میں مفید ثابت ہو سکتے ہیں۔ اور اس کے ساتھ ہی میں سوچ میں پڑ گیا۔ ہمارے اُردو والے تو ادیبوں کو انعام بھی محض 'رحم' کھا کر دیتے ہیں۔ یہ مدد کتنی مل پائے گی! یہ بہرحال دیکھنا ہے۔

اتنے میں چائے آ گئی۔ اپنے سامنے رکھے ہوئے پیالے کو دیکھ کر وہ ایک لمحے کے لیے اُلجھن میں پڑ گئے۔ پھر جیسے انھوں نے شکست کے ہر احساس کو جھٹک دیا ہو۔ وہ چمچے سے چائے پینے لگے۔ مُنہ ٹھیک سے کھلتا نہیں تھا۔ کچھ چائے منہ میں جا رہی تھی۔ کچھ میز پر بکھر رہی تھی۔ مگر وہ کسی قسم کے کرب یا کوفت کو ظاہر کیے بغیر چائے پیتے رہے۔ پسپائی جیسے مزاج میں نہ ہو' شعار میں نہ ہو۔

لکھا: "وہ میرے بھی دوست ہیں۔ لیکن میں تو کبھی نہیں کہوں گا۔"

میں نے اطمینان دلایا کہ آپ کو کسی سے کچھ نہیں کہنا۔ میں خود بات چلاؤں گا۔

پوچھا: "آج کل کیسا چل رہا ہے؟"

جو صورت حال تھی، وہ میں نے بتادی۔ ایک خوشگوار تبدیلی کا ذکر بھی کیا۔ کہا کہ اب آج کل دس ہزار سے زیادہ شائع و فروخت ہوتا ہے۔

بہت خوش ہوئے۔ لکھا: "پرچے کی اشاعت کو دُگنا کرنا اپنے آپ میں بڑا کام ہے۔ ہمیں تو اُردو رسالوں کا حشر معلوم ہے۔"

ابھی تھوڑی دیر پہلے، مزاج پرسی کیے جانے پر جس شخص نے جواباً لکھا تھا: اس بار اتنا شدید درد ہوتا ہے کہ مرسی کلنگ جائز معلوم ہوتی ہے۔"؛ اسی نے اپنی تیز تیکھی حس کا یوں ثبوت دیا۔

"یہ اسی تبدیلی کا نتیجہ ہے۔ ورنہ جو ش صاحب وغیرہ تو مکھی پر مکھی مارتے تھے اور جوش صاحب تو مکھی بھی نہیں مارتے تھے۔"

کوئی پون گھنٹے کے بعد میں ان سے رخصت لے کر ان کے دفتر چلا گیا۔ مالی امداد کے سلسلے میں موصوف نے جس شخص کا ذکر کیا تھا، میں نے ان سے بات کی۔ جواب ملا: ضرور کچھ کیا جانا چاہیے۔ میں اپنے طور پر کچھ کرتا ہوں؛ آپ سرکاری امداد کے امکانات پر ذرا توجہ کریں کوئی ہفتہ بھر بعد، وہ صاحب میرے دفتر تشریف لائے کہنے لگے: 'کچھ انتظام ہو گیا ہے۔ ہم ہاری ہوئی لڑائی لڑ رہے ہیں' خیر! اتنا کہہ کر وہ بڑی ہی خاموشی کے ساتھ دفتر سے رخصت ہو گئے۔ ان کی افسردگی اور مایوسی دیدنی تھی۔

ساڑھے تین ہزار روپے تھے جو بہ مشکل قبول کیے گئے۔

ایشیائی کھیلوں کے دن تھے۔ میں نے پرکاش پنڈت صاحب کے گھر پر فون کیا۔ معلوم ہوا کہ وہ انجکشن لگوانے کے لیے کل صبح ارون ہسپتال میں داخل ہونے جا رہے ہیں۔

اگلی دوپہر میں، میں ارون ہسپتال پہنچا۔ پرکاش پنڈت ایشیائی کھیلوں کے کھلاڑیوں کے لیے مخصوص وارڈ میں ایک بستر پر دراز تھے۔ ان کی بیگم قریب ہی کھڑی ہوئی تھیں۔ وارڈ خاصا بڑا تھا۔ پچاسوں بستر صاف ستھرے سفید سلیقے سے لگے ہوئے۔ مگر خالی۔ پرکاش پنڈت اور ان کی بیگم کی موجودگی بھی اس سناٹے کو منتشر نہ کر پائی تھی۔ شاید یہ سناٹا، کسی مزید گہرے سناٹے کی خبر دے رہا تھا۔

پرکاش پنڈت کی طبیعت زیادہ خراب معلوم ہوتی تھی۔ کرب، شدید کرب! دبتی، ٹوٹتی ڈوبتی ہوئی خفی کراہیں! ڈبڈباتی ہوئی آنکھیں۔

مجھے محسوس ہوا، جیسے میری موجودگی ان کے لیے مزید تکلیف کا باعث بن رہی ہے... شکست! اور ان چاہا اعترافِ شکست! شدید ذہنی و جسمانی اذیت کا باعث بن رہا تھا۔ درد کے سمندر میں، پرکاش کو یوں ڈوبتے ہوئے دیکھا نہ گیا۔ میں نے آہستہ سے وہ روپے جیب سے نکالے اور ان کی بیگم کو دے دیے۔ کہا کہ مزید کا انتظام بھی ہو جائے گا۔ روپے پرکاش پنڈت نے بیگم کے ہاتھ سے لے لیے اور اپنے نحیف ہاتھوں سے مجھے تھمانے کی کوشش کرنے لگے۔

آنکھیں ڈبڈبائی ہوئی تھیں۔ چہرہ شدید کرب سے مزید مسخ ہو رہا تھا۔ رنگ اور سانولا ہو گیا تھا۔ منہ کھل نہیں پا رہا تھا۔ خفی دبی ڈوبتی ہوئی کراہیں! رونے کی ٹوٹ ٹوٹ کراتی ہوئی مہین آواز — ریں — ریں — میں ایک ہی لفظ سمجھ پایا: نہیں — نہیں — نہیں —'

روپے میں نے ان کی بیگم صاحبہ کو دے دیے۔ تھوڑی دیر رکا۔ پھر چلا آیا۔ بہت بوجھل ذہن لیے، بہت بوجھل قدموں سے چلتا ہوا!

ارون ہسپتال میں ایشائی کھیلوں میں شامل کھلاڑیوں کے لیے مخصوص وارڈ میں، پرکاش پنڈت سے وہ میری آخری ملاقات تھی۔

مشکل سے پانچ روز گزرے ہوں گے۔ دفتر میں ٹیلیفون کی گھنٹی بجی۔ فون پرکاش پنڈت صاحب کے گھر سے تھا۔ لڑائی ہاری جا چکی تھی۔ جیت موت کی ہوئی تھی۔ موت ہی زندگی کا سب سے بڑا سچ ہے۔

وہ لڑائی ہم نے ہاری تھی پرکاش پنڈت نے نہیں۔ میں سوچتا ہوں: کیا اس 'ہم' میں سبھی اُردو والے، سبھی ادارے شامل ہیں۔ کیا پسپائی کے بعد بحالی کا کوئی مرحلہ نہیں ہوتا۔ اور یہ اہم ذمے داری کس کی ہے؟ ⬡

قلمکار حضرات سے گزارش

دفتر میں مضامینِ نثر و نظم کثیر تعداد میں جمع ہو گئے ہیں اس لیے اعلانِ ثانی تک اپنی نگارشات بلا طلب بھجوانے کی زحمت نہ فرمائیں۔

اُمید ہے اس گزارش کو گستاخی پر نہیں ہماری مجبوری پر محمول کیا جائے گا۔

——— ادارہ



پرکاش تیواری

زخم کھانے کا حوصلہ عجیب تھا
کربلا میں مقابلہ عجیب تھا
آسماں آسماں زمین پر تھے
پر شکستوں کا سلسلہ عجیب تھا
در و دیوار ہل گئے ہمارے
غمِ دوراں کا زلزلہ عجیب تھا
ہر طرف پھول حسرتوں کے مہکے
میرے پاؤں کا آبلہ عجیب تھا
ایک ہو کر بھی ہم الگ الگ تھے
قربتوں میں بھی فاصلہ عجیب تھا
اُکے سلجھا دیا قضا نے ورنہ
غمِ ہستی کا مسئلہ عجیب تھا
ہم ہی پرکاش ٹوٹے بکھرے پل پل
زندگی سے کوئی گلہ عجیب تھا

اس طرح شامِ ہجر کی تاریکیاں بڑھیں
سائے غروب ہو گئے سرگوشیاں بڑھیں
بکھرا کچھ اور ہاتھ لگانے سے اس کا جسم
چھونے سے اور پھول کی شادابیاں بڑھیں
پورا ہوا نوشتۂ دیوارِ آگہی
بستی کو روندتی ہوئی ویرانیاں بڑھیں
جب کھلکھلا کے فصلِ گلابوں کی ہنس پڑی
ہاتھوں میں پتھروں کو لیے آندھیاں بڑھیں
میرے ہی نقش بن گئے میرے لیے کمند
میرے ہی قتل کو مری پرچھائیاں بڑھیں
الفاظ ان لبوں پہ کھلے پھول کی طرح
عشرت غزل میں اور بھی رعنائیاں بڑھیں

(حمدیہ)

ہر ایک لمحۂ سود و زیاں بھی اس کا ہے
زمیں بھی اس کی ہے یہ آسماں بھی اس کا ہے

ہے اس کے نام سے طاری سمندروں پہ سکوت
ندی کی گود میں آبِ رواں بھی اس کا ہے

بساطِ دل پہ ہے فصلِ یقیں اسی کا کرم
سروں میں شعلۂ وہم و گماں بھی اس کا ہے

اسی کے دم سے ہے سب روشنی و تاریکی
چراغ اسی کا ہے یہ طاقِ جاں بھی اس کا ہے

اسی کے دم سے ہے جولانیِ سموم و صبا
تمام رنگِ بہار و خزاں بھی اس کا ہے

عشرت ظفر

۲۱۵۹، لودھی روڈ کمپلیکس، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۳
۱۰۵/۴۵۴، فہیم آباد، پوسٹ بکس نمبر ۴۹۲، کان پور ۲۰۸۰۰۱

ابراہیم یوسف

غالب اور ڈراما

غالب نے ڈرامے تو نہیں لکھے مگر ان کی شخصیت کچھ ایسی پرکشش ہے کہ وہ خود ڈراموں کا موضوع بن گئے۔ یوں تو ابتدائی ڈراما نگار غالب کی غزلیں اپنے ڈراموں میں استعمال کرتے رہے ہیں اور یہ سلسلہ رونق سے لے کر موجودہ ڈراما نگاروں تک برابر چلتا ہے لیکن بیسویں صدی میں جب غالب پر تحقیق اور تنقید پر زیادہ زور دیا گیا تو ان کی زندگی کے کچھ ایسے گوشے سامنے آئے جنھوں نے ڈراما نگاروں کو اپنی طرف متوجہ کیا اور ان کے پس منظر میں غالب کی شخصیت کے مختلف پہلوؤں کو کل وقتی اور یک بابی ڈراموں، فیچروں اور مکالموں کے ذریعے پیش کیا گیا۔ اگر کنہیا لال کپور نے غالب کو جدید شعرا کی مجلس میں لا بٹھایا اور غالب کو ترقی پسند بنا دیا تو خالد عابدی[1] انھیں فلم انڈسٹری میں لے گئے۔ اگر سلیم تمنائی[2] نے ان کی ملاقات کالج کی شوخ اور بے باک لڑکیوں سے کرائی تو آغا سہیل[3] نے غالب کو کالج کے ایک پروگرام کا مہمانِ خصوصی بنا دیا جہاں ایک ڈراما بھی کھیلا جا رہا تھا۔ خالد عابدی جب مرزا غالب کو فلم انڈسٹری میں لے جاتے ہیں تو وہاں کی شاعری میں نہ ردیف ہے نہ قافیہ، نہ بحریں ہیں نہ اوزان بلکہ عجیب و غریب دھنیں جن پر بے معنی یا بامعنی الفاظ فٹ کرنا ہوتا ہے۔ غالب اس کے متحمل نہ ہو سکے اور وہاں سے بھاگ نکلے اسی طرح جب سلیم تمنائی نے انھیں آج کی تہذیب زدہ کالج کی لڑکیوں میں لے جا کر بٹھلایا تو نہ صرف غالب کی تہذیبی اقدار کا مذاق اڑا بلکہ ان کے دور کی زبان بھی طنز کا نشانہ بنی اور وہ ایسے الفاظ سے متعارف ہوئے جو ان کے لیے نہ صرف غیر مانوس بلکہ شاید مضحکہ خیز بھی تھے ان شوخ اور بے باک لڑکیوں کے سامنے غالب کی شوخی اور حاضر جوابی دھری کی دھری رہ گئی۔ آغا سہیل نے انھیں کالج کے ایک پروگرام کا مہمانِ خصوصی بنایا تو ان کے اشعار کی ایسی ایسی تفسیریں پیش کی گئیں کہ انھیں اپنے اشعار بے معنی نظر آنے لگے۔ اس قسم کے ڈرامے بظاہر ہنسی مذاق اور تفننِ طبع کے لیے معلوم ہوتے ہیں اور ان کا ایک مقصد یہ ہے بھی لیکن اسی کے ساتھ ساتھ ان میں تہذیبی اور فکری تبدیلی کو بھی پیش کیا گیا ہے یہ ڈرامے مٹتی ہوئی تہذیبی اقدار اور فن کا نوحہ بن گئے ہیں۔

یہاں کنہیا لال کپور کے "غالب جدید شعرا کی مجلس میں" اور "ترقی پسند غالب[4]" پر تھوڑی تفصیل سے گفتگو کرنا ضروری ہے کیونکہ اپنے طنز اور مقصد کے لحاظ سے یہ شاہکار کا درجہ حاصل کر چکے ہیں۔ ان دونوں کو ڈرامے کہنا تو ذرا مشکل ہے صرف اسی حد تک ڈرامے کہے جا سکتے ہیں کہ یہ شکل و صورت سے ڈرامے نظر آتے ہیں۔ "ترقی پسند غالب" کو تو دو سین میں بھی تقسیم کیا گیا ہے غالب کی ان دونوں میں مرکزی حیثیت ضرور ہے مگر حقیقت یہ ہے کہ وہ اس طنز کا ذریعہ ہیں جو کپور نے اپنے دور کی ابتدائی ترقی پسند شاعری پر کیا ہے اور اس طرح ان دونوں ڈراموں (مضامین) نے ادبی تنقید کا درجہ حاصل کر لیا ہے۔ باقر مہدی سنگ و خشت کے سوا مضامین میں "غالب جدید شعرا کی مجلس میں" کو سب سے بہتر قرار دیتے ہیں اور خواجہ عبدالغفور اسے "ادبی شاہکار" مانتے ہیں۔ باقر مہدی کہتے ہیں کہ "اس مضمون کی کامیابی کی وجہ غالب کی پر فن شخصیت بھی ہے اگر کوئی اور شاعر اس مجلس کا مہمانِ خصوصی ہوتا تو ایسی دلچسپ لازوال فضا تعمیر نہ ہو پاتی[5]۔"

جب کنہیا لال کپور انھیں جدید شعرا (ترقی پسند شعرا) کی مجلس کا مہمانِ خصوصی بناتے ہیں تو ان کی شاعری غالب کے لیے نہ صرف ناقابلِ فہم ہوتی ہے۔ بلکہ ان کی شاعری وہاں طنز و مزاح کا نشانہ بنتی ہے اور پھر ان کے اشعار پر جدید شعرا کی اصلاحات اور مشورے غالب کی انا کا خون کر دیتے ہیں اور وہ دل برداشتہ ہو کر اس مجلس سے بھاگ کھڑے ہوتے ہیں۔ "غالب جدید شعرا کی مجلس میں" اور "ترقی پسند غالب" لکھے جانے کے درمیان تقریباً اٹھارہ بیس سال کا وقفہ ہے اس دوران ترقی پسندوں کی ابتدائی نظمیہ شاعری کے مقابلے میں اب اعتدال آ گیا تھا غزل سے بیزاری کی جو فضا پیدا ہو گئی تھی وہ آہستہ آہستہ ختم ہو رہی تھی چنانچہ جب غالب مصائب دہلوی سے نظم سنانے کی فرمائش کرتے ہیں تو مصائب دہلوی نظمیہ شاعری سے توبہ کر چکے ہیں



۴۴ نیم روڈ، امامی گیٹ، بھوپال

ں طرف مراجعت کر چکے ہیں اور فرماتے ہیں:
یہ نظمیں کہنا، محض تھی جعل سازی
کر چلے کر انھیں شہر کا کوئی قاضی
پکارے "الٰہی" یہ کیا بک رہا ہے
کہ لاحول پڑھنے کو جی چاہتا ہے"

بے معنی اور مہمل نظمیں کہنے والے شعرا کی دُکھتی
ں بڑی خوبصورتی سے پکڑا ہے، جدت لکھنوی
ی ہی سے توبہ کر چکے ہیں فرماتے ہیں:
"غزل سے مجھے اس لیے دشمنی تھی
کہ آساں نہیں ہے غزل اچھی کہنا
بڑا مارنا پڑتا ہے اس میں پِتّا
بڑی دُور کی لانا پڑتی ہے کوڑی
. . . .
چنانچہ بڑے چھوٹے مصرعے ملا کر
مَیں لکھتا رہا ایسی مہمل سی نظمیں
کہ پڑھ کے جنھیں آئے قاری کو غصہ
. . . ."

ی سے اتفاق کرتے ہوئے کہ "اگر کوئی اور
الب کے علاوہ) اس مجلس (بلکہ مجالس) کا
وہی ہوتا تو ایسی لازوال دلچسپ فضا تعمیر
" اسے غالب ہی کا اعجاز قرار دیا جا سکتا ہے کہ
موجودگی نے ان ڈرامے نما مضامین کو نہ صرف
ہ، طنز اور پیروڈی کا شاہکار بنا دیا ہے بلکہ
ی ذہنی، معاشرتی، سماجی اور ادبی اقدار کو
کر دیا ہے۔

غالب پر لکھے گئے ڈراموں میں دوسری قسم
ں میں غالب کے پرستار ان کی جانب اپنی
کا اظہار پاگل پن کی حد تک کرتے ہیں اور
ی شاعری کے اس قدر دیوانے ہیں کہ دُنیا ہی
ق ہو جاتے ہیں نہ انھیں اپنے گھر کا خیال رہتا
نہ اپنی ذمہ داریوں کا۔ وجاہت علی سندیلوی

کے ڈرامے "غالب کے پرستار"(۶) کے خاں صاحب ایک ایسے ہی بزرگ ہیں جو چوبیس گھنٹے اشعارِ غالب میں غرق رہتے ہیں۔ غالب کو پڑوسیوں سے متعارف کرانے کی ذمہ داری اس طرح اپنے کاندھوں پر لے رکھی ہے جیسے خدا نے روزے نماز کی طرح یہ فرض بھی انھیں سونپ رکھا ہو۔ راتوں کو بارہ بارہ بجے تک پڑوسیوں کو بور کرتے ہیں اور صبح مرغ کے بانگ دینے سے پہلے مزید بور کرنے کے لیے آن موجود ہوتے ہیں پڑوسی لاکھ ان سے رسّیاں تڑاتے ہیں مگر وہ پیر تسمہ پا کی طرح ان کے کاندھوں پر سوار رہتے ہیں۔ ڈاکٹر شمیم افزا قمر کے ڈرامے "دیوانِ غالب"(۷) کے من موہن صاحب ایک اور خبط میں مبتلا ہیں وہ اپنی بیوی کو غالب کی محبوبہ کی سج دھج میں رکھنا چاہتے ہیں۔ غالب کی محبوبہ کی طرح اس کے لیے لباس تیار کراتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ وہ وہ لباس زیب تن کیے ان کے سامنے بیٹھیں رہیں تاکہ وہ چشم تصوّر سے غالب کی محبوبہ کو دیکھتے رہیں۔ غالب اُن کا اوڑھنا بچھونا ہیں۔ کام کچھ کرتے نہیں قرض بڑھتا جاتا ہے گھر کی حالت سقیم ہوتی جاتی ہے مگر انھیں اس کی کوئی فکر نہیں ہوتی۔ قرض خواہ مقدمہ دائر کر دیتے ہیں عدالت میں پیشی ہوتی ہے وہاں ہر سوال کا جواب غالب کے اشعار سے دیتے ہیں جج انھیں پاگل سمجھ کر بری کر دیتا ہے وہ اپنی رہائی کو غالب کے اشعار کا اعجاز قرار دیتے ہیں۔ اس قسم کے مختصر ڈرامے بھی مزاحیہ انداز میں لکھے گئے ہیں اور صرف ہنسنے ہنسانے کے معلوم ہوتے ہیں مگر ان سے غالب کی غیر معمولی مقبولیت کا پتہ چلتا ہے کہ وہ کس طرح لوگوں کے ذہنوں پر سوار ہو جاتے ہیں اور کس طرح لوگ ان کے اشعار کو اپنا وظیفہ بنا لیتے ہیں۔

تیسری قسم ان ڈراموں کی ہے جن میں کچھ کردار غالب کے اشعار کے ایسے دیوانے ہیں کہ وہ نثر میں گفتگو ہی نہیں کرتے، ہر بات کا جواب شعر سے دیتے ہیں اور وہ بھی غالب کے شعر سے یوں تو اکثر مزاحیہ ڈراموں میں یہ اہتمام نظر آتا ہے مگر فیاض عالم کے "دیوان غالب صاحب" اور عارف نیازی کے "دیوانِ غالب"(۸) میں یہ اہتمام اپنے عروج پر ہے۔ اسی وجہ سے ان کرداروں کے نام "دیوان غالب صاحب" اور "دیوانِ غالب" پڑ گئے ہیں۔ فیاض عالم صاحب اور عارف نیازی صاحب کے ڈراموں میں کوئی بنیادی فرق نہیں ہے دونوں کے پلاٹ تقریباً ایک جیسے ہیں اشعار کے انتخاب میں بھی کچھ زیادہ فرق نہیں۔ دونوں کام کاج کچھ کرتے نہیں غالب کی سنت پر عمل کر کے قرض کی شراب پیتے ہیں دونوں پر مقدمہ چلتا ہے فرق اگر ہے تو یہ کہ فیاض عالم صاحب کے ڈرامے کو عارف نیازی صاحب کے ڈرامے پر تقدم حاصل ہے۔ فیاض عالم صاحب کے ڈرامے کا اختتام فطری ہے کہ جج دیوان غالب صاحب کو دیوانۂ محض سمجھ کر بری کر دیتا ہے جبکہ عارف نیازی صاحب کے دیوان غالب جب ہر بات کا جواب غالب کے شعر سے دیتے ہیں تو جج جلاد کو ان کا سر قلم کرنے کا حکم دیتا ہے جلاد وار کرتا ہے مگر دیوان غالب وار بچا جاتے ہیں اس پر قرض خواہ قرض معاف کر دیتا ہے اور جج قتل کا حکم واپس لے کر توہین عدالت میں تا برخواست عدالت قید کی سزا دیتا ہے دیوانِ غالب کا اختتام غیر فطری، غیر منطقی اور غیر استدلالی ہے غالباً غالب کے کچھ اور اشعار سنانے کے لیے ایسا کیا گیا ہے۔ دونوں ڈراموں میں مکالمے شعوری طور پر کسی شعر کے مناسب استعمال کے لیے ترتیب دیے گئے ہیں جس سے مکالموں کے فطری بہاؤ میں اڑچن پیدا ہوتی ہے۔ دونوں حضرات

کے پیشِ نظر یہ مقصد رہا ہے کہ غالب کے اشعار کی اس خوبی کو پیش کریں کہ غالب کے اشعار روزمرّہ کی زندگی اور گفتگو میں کس خوبصورتی سے استعمال کیے جاسکتے ہیں اور اس کے لیے ہر دو اصحاب نے غیر معمولی محنت کی ہے ــــ اسی سلسلے میں ایک اور قسم کا ذکر کیا جانا ضروری ہے۔ یہ مکمل طور پر ڈرامے تو نہیں ہیں مگر ان مکالموں میں غالب کی زبان کا استعمال کیا گیا ہے اس سلسلے میں حزب اللہ صاحب کا "غالب کے ساتھ اعتراف میں"[9] اور غلام مرتضیٰ حسین صاحب بلگرامی کا "مکالمۂ غالب"[10] قابلِ ذکر ہیں۔ "غالب کے ساتھ اعتراف میں" ایک انٹرویو ہے جس میں غالب سے اعتراف میں سوالات کیے جاتے ہیں اور غالب ان کے جوابات دیتے ہیں وہ اپنی زندگی کے کچھ واقعات بیان کرتے ہیں اور کچھ واقعات پر تبصرہ کرتے ہیں اور یہ سب کچھ غالب کے خطوط سے مرتب کیا گیا ہے۔ "مکالمۂ غالب" میں مرزا حاتم علی مہر اور غالب کی ایک ملاقات کا ذکر ہے۔ اس میں غلام مرتضیٰ حسین صاحب بلگرامی نے کوشش کی ہے کہ مہر زیادہ تر وہ مکالمے بولیں جو غالب اپنے خطوط میں استعمال کرتے رہے ہیں یا پھر اس سے ملتی جلتی نثر کا استعمال کیا گیا ہے۔ بلگرامی صاحب کی کوشش رہی ہے کہ وہ نہ صرف غالب کی شخصیت کو نمایاں کریں بلکہ اس دَور کی تہذیبی جھلکیاں بھی پیش کر دیں مگر ان سے چوک طلازم کلو کے بعض مکالموں میں ضرور ہوئی ہے جو گستاخی کی حدود میں داخل ہوگئے ہیں۔ بہرحال دیوان غالب صاحب، دیوانِ غالب اور مکالمۂ غالب سے یہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ غالب کی نظم و نثر روزمرّہ کی زندگی میں کس خوبصورتی سے استعمال کی جاسکتی ہے اور اس قسم کے ڈرامے اور مکالمے لکھنے کا مقصد بھی یہی ہے۔

غالب کی شخصیت پر یوں تو متعدد فیچر لکھے گئے ہیں لیکن محترم مالک رام صاحب کا فیچر "غالب سے ملیے"[11] بہت اہم ہے اگرچہ اس میں افسانویت جھلک آئی ہے مالک رام صاحب نے اس فیچر کے ذریعے حضرت غوث علی قلندر، خواجہ عزیز لکھنوی اور میر صغیر بلگرامی کی غالب کی ملاقاتوں کو بیان کیا ہے جن سے غالب کی شخصیت کے چند پہلو اُبھر کر سامنے آتے ہیں کہ غالب کتنے ہی آزاد خیال کیوں نہ ہوں مگر انھیں اپنے گنہگار ہونے کا احساس تھا وہ بزرگانِ دین کا احترام خلوصِ دل سے کرتے تھے اور دل آزاری ان کے مسلک میں گناہ تھی۔ اگر دعویٰ دلیل کے ساتھ پیش کیا جائے تو اسے قبول کرنے میں انھیں کوئی ہچکچاہٹ نہیں ہوتی تھی اور وہ اپنے ملاقاتیوں اور شاگردوں کی خاطر و مدارات اور آرام کا خیال رکھنا اپنا فرض سمجھتے تھے۔ غرض یہ کہ مالک رام صاحب نے اپنے فیچر میں غالب کے کردار کے چند پہلوؤں ہی کو نمایاں نہیں کیا ہے بلکہ یوں کہا جائے تو زیادہ مناسب ہوگا کہ غالب کو ایک تہذیب اور ایک اخلاق کا نمائندہ بنا کر پیش کیا ہے۔

۱۹۶۹ء میں غالب صدی منائی گئی۔ غالب پر تحقیقی اور تنقیدی کاموں میں تیزی آئی۔ سیمینار منعقد کیے گئے کلچرل پروگرام ہوئے اور غالب پر متعدد ڈرامے پیش کیے گئے جو صرف ہنسنے ہنسانے کے نہ ہو کر غالب کی زندگی اور شخصیت کو پیش کرنے کی سنجیدہ کوششیں تھیں۔ یوں تو غالب پر سنجیدہ ڈرامے لکھنے کی ابتدا بہت پہلے ہو چکی تھی۔ پروفیسر محمد دین تاثیر نے ایک ڈراما "مرزا غالب کے گھر کی ایک شام"[12] ۱۹۳۴ء میں لکھا تھا جس کے بارے میں ڈاکٹر فصیح احمد صدیقی لکھتے ہیں کہ "... اس ڈرامے میں غالب کے اس عملی کردار کی عکاسی کی گئی ہے جو کبھی ماحول، حالات کی مجبوری اور کشاکش سے معرضِ وجود میں آیا ہے ... غالب اپنے گھر میں ایک شاعر کم ایک شوہر اور ایک انسان زیادہ نظر آتے ہیں"[13]۔ سعادت حسن منٹو نے "غالب کی وضعداری"[14] ۱۹۴۵ء میں لکھا اس میں دکھایا گیا ہے کہ غالب دلّی کالج میں نوکری کرنے جاتے ہیں اور جب کوئی ان کا استقبال کرنے نہیں آتا تو غالب نوکری پر لعنت بھیجتے ہیں اور واپس آجاتے ہیں ایسے اور بھی ڈرامے ہوں گے جو رسائل کے صفحات پر بکھرے ہوئے ہوں گے۔

غالب صدی کے دوران جو ڈرامے لکھے گئے ان کی اہمیت اس لیے زیادہ ہے کہ ان میں زیادہ تر ڈرامے پڑھنے کے لیے نہیں بلکہ کھیلنے کے لیے لکھے گئے ہیں اور اسٹیج پر کامیاب ہوئے ہیں۔ ان میں سید محمد مہدی کا "غالب کون ہے"۔ ڈاکٹر محمد حسن کے دو ڈرامے "کہرے کا چاند" اور "تماشا اور تماشائی" منجو قمر کا "مرزا غالب" ڈاکٹر حامدی کاشمیری کا "حسرتِ تعمیر" اور ابراہیم یوسف کا "مغلوب غالب" قابلِ ذکر ہیں۔ ڈاکٹر حامدی کاشمیری کا ڈراما مختصر ہے جبکہ ابراہیم یوسف کا ایک بابی باقی ڈرامے کل وقتی ہیں۔ اظہر افسر نے دو ڈرامے "غالب"[15] اور "غالب کے گھر کی ایک شام"[16] لکھے "غالب کے گھر کی ایک شام" کو ڈراما کہنا مشکل ہے نہ تو اس میں عمل ہے نہ تصادم اور نہ نقطۂ عروج بس منشی نبی بخش حقیر اور غالب کی ملاقات کا ذکر ہے۔ دوسرے ڈرامے "غالب" کے بارے میں ڈاکٹر فصیح احمد صدیقی کا خیال ہے کہ "اس ڈرامے کی نمایاں خوبی یا خامی یہی ہے کہ ایک وقت میں کئی کئی واقعات کو ایک دوسرے منسلک کر دیا گیا ہے اور پھر ان واقعات کے انکشاف کچھ ایسے مکالماتی انداز اختیار کر گیا ہے

جیسے کوئی راوی قصّہ بیان کر رہا ہو بالفاظِ دیگر وحدتِ خیال میں غیر معمولی جھول پیدا ہو گیا ہے۔[۱۷] اور حقیقت بھی یہی ہے کہ مرکزی خیال نہ ہونے کے باعث ڈراما کوئی تاثر نہیں چھوڑتا۔

ڈاکٹر حامدی کاشمیری نے اپنے ڈرامے "حسرتِ تعمیر[۱۸]" میں غالب کی اس ذہنی کشمکش کو نمایاں کیا ہے جو ان کے تخلیقی سفر میں ان کی خارجی اور داخلی زندگی کے درمیان جاری رہی۔ اگر خارجی زندگی میں قرض خواہوں کی دھمکیاں، ہاتھ کی تنگی اور مجبوری ان کی شخصیت کو گھن کی طرح کھوکھلا کر رہی تھی اور وہ اپنی آشفتہ آرزوؤں کا بوجھ اُٹھائے خود کو شکست خوردہ محسوس کرتے تھے تو داخلی زندگی میں خود کو تنہا پاتے تھے اس قدر تنہا کہ کوئی ہم سفر تو کیا ان کی آبلہ پائی کی داد دینے والا بھی نہ تھا۔ بس ان کی ظرافت ان کے غموں کا مداوا تھی۔ امراؤ بیگم اور ان کے خیالات میں ٹکراؤ تھا مگر وہ اس سے کبھی دل برداشتہ نہیں ہوئے بلکہ اپنی ظرافت سے کبھی اسے اُبھرنے نہیں دیا امراؤ بیگم بھی ایک غمگسار ہم سفر اور ساتھی کی طرح ان کی دل جوئی کو اپنا ایمان سمجھتی رہیں۔ غالب کی زندگی میں اگر کوئی خوشی کا سہارا تھا تو وہ دوستوں اور شاگردوں کا خلوص تھا جو زندہ رہنے کا حوصلہ پیدا کرتا تھا غرض یہ کہ غالب کی شخصیت کے بہت سے گوشے اُبھر کر سامنے آگئے ہیں۔ فلیش بیک میں غالب کی زندگی کے اچھے دنوں کو بھی پیش کر دیا گیا ہے۔ ادبی اعتبار سے ڈرامے کو غالب کے اشعار، مصرعوں اور مصرعوں کے ٹکڑوں سے سجایا گیا ہے۔ ڈرامے کی سب سے بڑی خامی اس کے طویل طویل مکالمے اور خود کلامیاں ہیں جن کا اسٹیج ڈراما متحمل نہیں ہو سکتا۔

ڈاکٹر محمد حسن کے "کہرے کا چاند" کو ۱۹۶۹ء میں شعبۂ اردو دہلی یونیورسٹی نے شائع کیا۔ "تماشا اور تماشائی" ۱۹۷۵ء میں ادارۂ تصنیف دہلی سے شائع ہوا۔ "تماشا اور تماشائی" کو "کہرے کا چاند" کا تبدیل شدہ اور ترقی یافتہ ایڈیشن کہیں تو غیر مناسب نہ ہوگا۔ "کہرے کا چاند" کے زیادہ تر سین "تماشا اور تماشائی" میں فلیش بیک میں جُوں کے تُوں شامل کر لیے گئے ہیں۔ "کہرے کا چاند" کے دوسرے ایکٹ کا دوسرا سین جو مہرولی میں پھول والوں کی سیر سے متعلق ہے۔ "تماشا اور تماشائی" میں حذف کر دیا گیا ہے۔ "کہرے کا چاند" تین ایکٹ اور چھ سین میں تقسیم کیا گیا ہے جبکہ "تماشا اور تماشائی" کو ایکٹ اور سین میں تقسیم نہیں کیا گیا ہے بلکہ نمبر ڈال کر چھ حصّوں میں تقسیم کر دیا گیا ہے۔ واقعات میں غالب کا ڈومنی سے عشق، ڈومنی کی خودکشی، گھر میں خرچ کی تنگی، جوا خانہ چلانا اور گرفتاری، مرزا یوسف کا گورے کی گولی سے شہید ہونا پیش کیا گیا ہے یہ واقعات دونوں ڈراموں میں مشترک ہیں۔ "کہرے کا چاند" کا اختتام متاثر کرتا ہے۔ مرزا یوسف کے شہید ہونے کے بعد ہی اعلان کیا جاتا ہے کہ دہلی کی فتح کے سلسلے میں اپنے گھروں پر چراغاں کریں غالب کے لیے یہ بڑے امتحان کا وقت ہے چنانچہ وہ امراؤ بیگم سے کہتے ہیں "بیگم یہی زندگی کی پوری داستان ہے۔ اندھیروں میں چراغ جلانا ہی ہمارا منصب اور مقدر ہے ہر روشنی کے ساتھ اندھیرے ہیں اور ہر اندھیرے کے ساتھ روشنی۔ یہی زندگی ہے۔" یہاں دونوں ڈراموں کا مقابلہ کرنا مقصد نہیں ہے۔ بہر حال نقشِ ثانی نقشِ اوّل سے بہتر ہے۔ "تماشا اور تماشائی" غالب پر لکھے گئے دوسرے ڈراموں سے اس لحاظ سے مختلف ہے کہ اس میں غالب کی دوہری شخصیت کو پیش کیا گیا ہے۔ ایک شخصیت ہے شاعر غالب کی اور دوسری امیرزادہ اسداللہ خاں کی۔ یہ دونوں شخصیتیں ڈرامے میں ہمیشہ برسرِ پیکار رہتی ہیں۔ دونوں ایک دوسرے پر برابر طنز کے نشتر چلاتی رہتی ہیں اور ڈرامے میں پیش آنے والے واقعات پر دونوں اپنے اپنے نقطۂ نظر سے تبصرہ کرتی ہیں اور ایک دوسرے کو موردِ الزام قرار دیتی ہیں۔ ڈاکٹر محمد حسن نے اپنے ڈرامے کے ذریعے غالب کی ناکام زندگی کی بنیادی وجہ اس تضاد کو قرار دیا ہے جو امیرزادے اور شاعر کے درمیان تاعمر قائم رہا اور غالب ان دونوں کے درمیان مفاہمت کی کوئی صورت پیدا نہ کر سکے اور اسی تضاد کے باعث ایک روحانی کرب میں مبتلا رہے۔ ڈرامے کے اس بنیادی خیال کو بڑی خوبصورتی سے پیش کیا گیا ہے۔ ڈرامے میں ایک ہی بات کھٹکتی ہے کہ مکالمہ عمل پر حاوی ہو گیا ہے۔

سید محمد مہدی کا ڈراما "غالب کون ہے" متعدد بار کامیابی کے ساتھ اسٹیج کیا گیا اور ۱۹۸۰ء میں شائع ہوا۔ ڈرامے کی ابتدا ایک محفلِ مشاعرہ سے ہوتی ہے جہاں غالب کو داد نہیں ملتی اور وہ بددل ہو کر اُٹھ آتے ہیں اس کے بعد واقعات کا سلسلہ شروع ہو جاتا ہے۔ مغل سے غالب کا عشق، قرض خواہوں کے دعوے دوستوں کا ہجوم، قلعے کی پچاس روپے کی نوکری بادلِ ناخواستہ قبول کرنا، غدر، مرزا یوسف کا ایک گورے کی گولی سے مارا جانا وغیرہ غالب کی زندگی نشیب و فراز سے گزرتی ہے ایک طرف تو انھیں مشاعروں میں داد نہیں ملتی لیکن دوسری طرف گلی گلی اور کوچہ کوچہ ان کی غزلیں گائی جاتی ہیں۔ زندگی گزارنے کے لیے ان کے پاس ذرائع

نہیں ہیں اور جو کچھ ہیں وہ محدود ہیں ڈرامے پر ان کی یہی ناکامیاں چھائی ہوئی ہیں لیکن اداس ماحول کو شگفتہ بنانے کے لیے شعر و شاعری اور غزلوں کے گائے جانے سے مدد لی گئی ہے۔ اس ڈرامے کا ایک وصف یہ ہے کہ غدر سے کچھ پہلے کے قلعہ کی حالت اور غدر کے دوران دہلی کے ماحول کی جھلکیاں پیش کی گئی ہیں۔ مولوی فضل حق کے جوش و خروش اور غالب کے حقیقت پسند نظریات کو بڑی خوبی سے ظاہر کیا گیا ہے۔ اپنی متعدد خوبیوں کے باوجود حبیب تنویر کے ڈرامے "آگرہ بازار" کے اثرات کو نظر انداز نہیں کیا جا سکتا۔

منجو قمر کا ڈراما "مرزا غالب" اُردو کے قدیم کلاسیکل ڈراموں کی تکنیک پر لکھا گیا ہے جس میں کرتبی تھیٹر کی جھلکیاں بھی موجود ہیں۔ ڈرامے میں مرزا غالب کی پیدائش سے لے کر وفات تک کے تمام اہم واقعات کو پیش کیا گیا ہے جس سے ڈرامے کا کینواس اس قدر وسیع ہو گیا ہے کہ ڈراما کسی ایک نقطہ یا مرکزی خیال پر مرکوز نظر نہیں آتا اس لیے ڈرامائی کشمکش پیدا نہ ہو سکی کہیں کہیں افسانویت بھی جھلک آئی ہے مثلاً مرزا غالب کی شادی میں ادا کی جانے والی رسمیں بالکل افسانوی انداز میں بیان کی گئی ہیں یا پھر جس طرح غالب کے لطیفوں کو بیان کیا گیا ہے اور میرا اور مہتاب کے ذریعے کچھ واقعات کو پیش کیا گیا ہے۔ اس کے باوجود وہ سین جس میں ایک شبیہ جو مرزا غالب کی ہے زمین سے برآمد ہو کر غالب سے ہم کلام ہوتی ہے اہم ہے۔ غالب کی وفات کا سین بھی متاثر کرتا ہے ڈراما اس لیے بھی اہم ہے کہ اسے اسٹیج پر دیکھ کر پارسی تھیٹر کی بھولی بسری یادیں تازہ ہو جاتی ہوں گی۔

غالب صدی کے دوران راقم الحروف نے بھی ایک ڈراما "مغلوب غالب"[19] لکھا تھا ڈاکٹر فصیح احمد صدیقی نے اس ڈرامے کے بارے میں اپنی اس رائے کا اظہار کیا "زبان شگفتہ اور مکالمے دل نشین، ہر کردار کے ساتھ اس کے منصب اور درجے کا خیال رکھتے ہوئے صحیح انصاف کیا گیا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ غالب کی حقیقی شخصیت۔ ایک ہر دل عزیز شخصیت۔ نہایت نفاست سے ابھرتی ہے۔"[20] واقعات میں کرنل براؤن کے سامنے پیشی اور مرزا یوسف کی شہادت کو پیش کیا گیا ہے۔

غالب پر لکھے گئے ان چند ڈراموں کا مختصر جائزہ لینے کے بعد یہ بات واضح ہوتی ہے کہ غالب کی زندگی کے کچھ پہلو ایسے ہیں جن میں ڈرامائی عناصر موجود ہیں اور جن پر ہر ڈراما نگار کی نظر پڑی ہے اور انھوں نے اپنے اپنے طور پر انھیں پیش کیا ہے۔ جیسے مرزا یوسف کا گورے کی گولی سے شہید ہونا اور وہ بھی ایسے وقت میں جبکہ دلّی شہر میں افراتفری مچی ہوئی تھی نہ تو کسی کی جان محفوظ تھی اور نہ عزّت۔ غالب کو روزمرّہ کی ضرورتیں پوری کرنا مشکل ہو رہا تھا گھر سے نکلنے میں جان اور عزّت دونوں کو خطرہ تھا اسی صورت میں اس حادثے سے جو ان کی ذہنی کیفیت ہوئی اسے ہر ڈراما نگار نے پیش کیا ہے۔ دوسرا واقعہ غالب کا قمار بازی میں گرفتار کیا جانا ہے۔ غالب کا شمار شہر کے شرفا اور طبقۂ اعلیٰ میں ہوتا تھا ان کا قمار بازی جیسے جرم میں گرفتار ہونا اور سزا پانا ایک ایسا سانحہ تھا جس نے ان کی انا اور امیرزادگی کو ہلا کر رکھ دیا تھا۔ غالب کی زندگی کا تیسرا واقعہ ڈومنی سے ان کا عشق ہے جس کو تقریباً ہر ڈراما نگار نے پیش کیا ہے اس کی نوعیت پہلے دونوں واقعات سے مختلف ہے۔ پہلے دونوں واقعات میں غالب کی داخلی کیفیات کو پیش کیا گیا ہے جبکہ ڈومنی کے عشق سے غالب کی شخصیت اور شاعری کو اُبھارا گیا ہے۔ جن ڈراموں میں ان واقعات کو مجموعی طور پر شامل کیا گیا ہے ان میں بہتر ڈرامائی صورتیں پیدا ہوئی ہیں۔

ہر ڈراما نگار کی پوری کوشش رہی ہے کہ وہ اپنے ڈرامے میں غالب کے دور کی تہذیب اور معاشرت کو پیش کرے اور اس دور کی ہی زبان کا استعمال کرے غالب کا ظرافت کے پردے میں بڑے سے بڑا غم بھلا دینا مشہور ہے بعض ڈراموں میں ان کی اس فطرت سے بڑا اچھا کام لیا گیا ہے جب ڈرامے میں تناؤ کی صورت پیدا ہوتی ہے ان کی ظرافت سے ماحول میں شگفتگی پیدا کی گئی ہے لیکن بعض ڈراموں میں غالب کے لطیفوں کو افسانوی انداز میں بھی بیان کر دیا گیا ہے جس سے نہ تو ڈرامائی کیفیت ہی پیدا ہو سکی نہ شگفتگی۔ بہرحال غالب صدی کا یہ اُردو ڈرامے پر احسان ہے کہ اس کے دوران بعض اچھے ڈرامے عالمِ وجود میں آ گئے۔

ان ڈراموں کے علاوہ جن کا میں نے ذکر کیا ہے اور بھی ڈرامے لکھے گئے ہوں گے جو افسوس میری دسترس سے باہر رہے یا اسٹیج تو ہوئے مگر زیورِ طبع سے آراستہ نہ ہو سکے اگر وہ کسی صورت سے شائع کر دیے جائیں تو اُردو کے ڈرامائی ادب میں خاصہ اضافہ ہو سکتا ہے یہ کام غالب پر کام کرنے والا کوئی بھی ادارہ کر سکتا ہے۔

حواشی

۱۔ غالب فلم اور اسٹیج میں، محمد خالد عابدی

شگوفہ حیدرآباد (ڈراما نمبر) ۱۹۷۹ء
۲۔ غالب کی واپسی: سلیم تمنائی: شگوفہ حیدرآباد اکتوبر ۱۹۷۶ء
۳۔ غالب کالج میں: آغا سہیل: کہکشاں لاہور یکم اپریل ۱۹۶۹ء
۴۔ ترقی پسند غالب: کنہیا لال کپور: آج کل دہلی۔ نومبر ۱۹۵۹ء
۵۔ عقربی کپور کا ایک ناتمام مطالعہ: باقر مہدی، شگوفہ۔ حیدرآباد (کپور نمبر) جنوری ۱۹۸۱ء
۶۔ غالب کے پرستار: وجاہت علی سندیلوی: شگوفہ حیدرآباد۔ ستمبر ۱۹۸۱ء
۷۔ دیوانِ غالب: ڈاکٹر شمیم افزا قمر، شگوفہ، حیدرآباد۔ دسمبر ۱۹۸۱ء
۸۔ دیوانِ غالب: عارف نیازی: ہندوستانی ادب، حیدرآباد نومبر ۱۹۵۹ء و دسمبر ۱۹۵۹ء
۹۔ غالب کے ساتھ اعراف میں: حذب اللہ: ادبی دنیا۔ لاہور۔ اکتوبر ۱۹۵۰ء
۱۰۔ مکالمۂ غالب: غلام مرتضیٰ حسین بلگرامی: آج کل دہلی۔ فروری ۱۹۷۰ء
۱۱۔ غالب سے ملیے: مالک رام: شاعر بمبئی۔ (غالب نمبر) ۱۹۶۹ء
۱۲، ۱۳۔ اردو یکبابی ڈراما (جنگ آزادیٔ ہند ۱۸۵۷ء سے حصولِ آزادیٔ ہند ۱۹۴۷ء) فصیح احمد صدیقی۔ ص ۱۹۶
۱۴۔ غالب کی وضعداری۔ سعادت حسن منٹو۔ شیرازہ۔ (ہفت روزہ) لاہور ۸ فروری ۱۹۴۱ء
۱۵۔ غالب اظہر افسر: شاعر بمبئی (غالب نمبر) ۱۹۶۹ء
۱۶۔ غالب کے گھر کی ایک شام: اظہر افسر، شاعر بمبئی۔ مئی ۱۹۷۰ء
۱۷۔ اردو یکبابی ڈراما (آزادیٔ ہند ۱۹۴۷ء کے بعد) فصیح احمد صدیقی: ص ۴۱۶
۱۸۔ حسرتِ تعمیر: حامدی کاشمیری: شاعر بمبئی (غالب نمبر) ۱۹۶۹ء
۱۹۔ مغلوب غالب: ابراہیم یوسف شاعر بمبئی (غالب نمبر) ۱۹۶۹ء
۲۰۔ اردو یکبابی ڈراما (آزادیٔ ہند ۱۹۴۷ء کے بعد) فصیح احمد صدیقی: ص ۴۱۹



شہپر رسول

مصلحت کے زاویوں سے کس قدر انجان ہے
آئینوں کے بیچ میں پتھر بہت حیران ہے

کوئی کیوں بنتا سرِ محفل تماشا صاحبو!
سر اٹھا کر بولنا تو بس مری پہچان ہے

ایک ہی انداز میں لکھی کتابِ زیست کیوں
ہر کہانی عہدِ نو کی کیوں بلا عنوان ہے

میرا رونا گڑگڑانا رائیگاں سب رائیگاں
آپ کا اک مسکرانا دائمی فرمان ہے

ریختہ کا اک نیا مجذوب ہے شہپرؔ رسول
شہرت اس کے نام پر اک ننگ ہے، بہتان ہے

۵۷-اے، کچہری روڈ، نزد پالیکا مارکیٹ، علی گڑھ ۲۰۲۰۰۱

کون نکلے گھر سے باہر کون دیکھے کیا ہوا
میرا ہم سایہ ہے خود میری طرح سہما ہوا

آسماں حل کر سکے شاید زمیں کے مسئلے
کھول کر دیکھوں صحیفہ طاق پر رکھا ہوا

بارشوں کے قہر کی زد میں ہیں دیواریں تمام
دیکھیے، بچتا ہے کس کے ہاتھ کا لکھا ہوا

مشترک تھا ایک موسم اس کے میرے درمیاں
وہ بھی کچھ بکھرا ہوا سا، میں بھی کچھ ٹوٹا ہوا

میرے گرد و پیش منظرؔ اس کی گنجائش کہاں
قتل کر دے گا مجھی کو خود مرا سوچا ہوا

رئیس منظر



گلی لوہاران، پرانا گنج، رامپور (یوپی)



ایم۔ آر۔ قاسمی

کچھ دیر کناروں پہ ٹھہر شامِ شفق رنگ
دریا میں ابھی سے نہ اتر شامِ شفق رنگ

اشجار کی حیرت رہے کچھ دیر تو قا
اس دشت سے آہستہ گذر شامِ شفق رنگ

دریاؤں کی آغوش میں سونے کے لیے ر
آتی ہے پہاڑوں سے اتر شامِ شفق رنگ

پتے تری آمد سے پُر اسرار ہوتے ہیں
گلشن میں ذرا دیر ٹھہر شامِ شفق رنگ

خیمہ تو لگانے کا ہنر ہے، پہ کریں کیا
لکھا ہے مقدر میں سفر شامِ شفق رنگ

"شبکدہ" آئی کوارٹرز، عقب گھوڑا سنیما، جعفر آباد، دہلی ۱۳

سلام بن رزّاق

راستے بند ہیں سب

آگے راستہ مسدود تھا۔ اور تاحدِ نظر انسانی سروں کا جنگل اُگ آیا تھا۔ خاکی وردی پوش سپاہی ڈنڈے لہرا لہرا کر لوگوں کو پُرسکون رہنے اور ڈسپلن برقرار رکھنے کی ہدایتیں دے رہے تھے۔ بعض سروں پر لوہے کے خود رکھے، سنگینوں کو کاندھوں سے لٹکائے بڑے بڑے دستوں کی شکل میں اٹینشن کھڑے تھے۔ لوگوں کی نظریں سامنے بہت دُور ایک سجے سجائے اسٹیج پر جمی ہوئی تھیں۔ اسٹیج کے چاروں طرف دُور دُور تک لمبے لمبے بانس گڑے ہوئے تھے جن میں بڑے بڑے بھونپو فٹ تھے۔

لوگ بڑی بے چینی سے پنجوں کے بل کھڑے ہو ہو کر اسٹیج کی جانب دیکھنے لگتے۔ پھر اسٹیج پر کسی کو نہ پاکر کچھ پریشان سے اِدھر اُدھر نظریں دوڑاتے۔ اسٹیج پر دائیں طرف جو سڑک تھی اس پر قریب دو فرلانگ دور تک سبز مخملیں قالین بچھا تھا۔ اور قالین پر گلاب کے سُرخ سُرخ پھول بکھرے تھے۔ قالینی روش کے دونوں طرف بندوق بردار سپاہی لوہے کے خود پہنے چوکس کھڑے تھے۔

مجھے اسی چوراہے سے گزر کر اپنے گھر جانا تھا۔ اِرد گِرد کی گلیوں، سڑکوں اور فٹ پاتھوں سے لوگ غول در غول آتے اور چپ چاپ بھیڑ میں شامل ہو جاتے۔ اسٹیج کے گرد مجمع بڑھتا جا رہا تھا۔ سپاہی زیادہ مستعد ہو گئے تھے۔ میں بھی ایک طرف جا کر خاموشی سے کھڑا ہو گیا۔

لوگ چہروں پر اکتاہٹ اور آنکھوں میں خوف لیے بار بار اسٹیج کی جانب دیکھ رہے تھے۔ میں نے جھجکتے ہوئے قریب کھڑے ایک شخص سے پوچھا۔

"یہاں کیا ہو رہا ہے بھائی؟"

وہ شخص میرے سوال پر پہلے تو چونکا پھر مجھے مشتبہ نظروں سے گھورتا ہوا بولا۔

"تمھیں نہیں معلوم؟"

میں نے نفی میں گردن ہلاتے ہوئے کہا۔

"اگر معلوم ہوتا تو کیوں پوچھتا؟"

"اصل میں ـــــ مجھے بھی کچھ زیادہ نہیں معلوم۔"

"پھر بھی ـــــ؟"

"سُنا ہے کوئی تفریحی پروگرام ہے۔"

"تفریحی پروگرام! مگر یہ کون سا وقت ہے تفریحی پروگرام کا۔ میں سویرے کا گھر سے نِکلا ہوا ہوں۔ میں تو اپنے گھر جاؤں گا۔"

"گھر تو مجھے بھی جانا ہے۔ میں بھی بڑی دیر کا نِکلا ہوں گھر سے۔"

"تو پھر چلو ـــــ"

"مگر کدھر سے جائیں۔ دیکھتے نہیں بیچ چوراہے پر اسٹیج اس طرح بنایا گیا ہے کہ سبھی راستے مسدود ہو گئے ہیں۔"

"پھر کیا کریں؟"

"تھوڑی دیر انتظار کرو۔ دیکھتے ہیں کیا ہوتا ہے۔"

"اے خاموش رہو۔ جلسے میں بیجا التوبات مت کرو۔" ایک سپاہی ڈنڈا ہلاتا ہوا چیخا۔ اِرد گِرد کھڑے لوگ پلٹ پلٹ کر ہمیں دیکھنے لگے۔ ہم لوگ سہم کر چُپ ہو گئے۔ تھوڑی دیر بعد میں نے کنکھیوں سے دوبارہ اُس شخص کی طرف دیکھا جس سے میں ابھی ابھی گفتگو کر رہا تھا۔ اس کے چہرے کا رنگ زرد پڑ گیا تھا۔ میں اُس کے اور قریب سرک آیا اور سرگوشی کے سے انداز میں پُوچھا۔

"مگر یار پولیس کا اتنا سخت پہرا کیوں ہے؟"

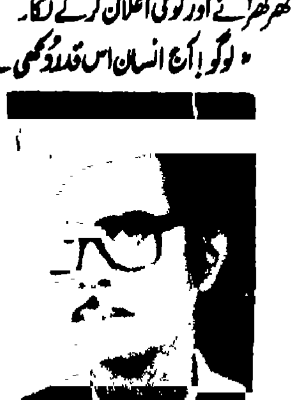
وہ شخص پہلے تو جھنجھلایا۔ پھر حتی المقدور آواز کو دباتا ہوا روہانسا ہو کر بولا۔

"تم تو میرے پیچھے پڑ گئے ہو۔ کیا مجھے مروا کر ہی دم لوگے۔ مجھے کچھ نہیں معلوم، پتہ نہیں تم کون ہو؟"

وہ سرکتا ہوا بھیڑ میں آگے نِکل گیا۔ مجھے اس شخص کے اس غیر مہذبانہ رویّے پر غصہ تو بے حد آیا۔ مگر چپ رہ جانے کے سوا کوئی چارہ نہیں تھا۔

اتنے میں بانسوں پر لگے بڑے بڑے بھونپو کھڑکھڑائے اور کوئی اعلان کرنے لگا۔

"لوگو! آج انسان اس قدر دُکھی ہے کہ



۱۱/۹، ایل۔آئی۔جی۔ کالونی اگروا (ویسٹ) بمبئی ۴۰۰۰۰

اس سے پہلے وہ کبھی اتنا دُکھی نہیں تھا۔ اُس کے چہرے کی بشاشت ختم ہو گئی ہے۔ ہونٹوں کی ہنسی چھن گئی ہے۔ لوگو! ہم کوشش کریں گے کہ آپ کے چہرے کی تازگی، آپ کی ہنسی، آپ کے قہقہے لوٹ آئیں۔ آپ نے سنا ہوگا کہ ہنسی علاجِ غم ہے۔ یہ ہمارا فرض ہے کہ حتی المقدور آپ کو ہنسائیں۔ اس قدر ہنسائیں کہ آپ کی دکھوں سے مرجھائی ہوئی اور مسائل سے بوجھل زندگیوں میں چند لمحوں کے لیے ہی سہی مسرت کی ایک لہر دوڑ جائے اور آپ بھوک، پیاس اور دیگر تفکرات سے بے نیاز ہو جائیں۔ ہمارے اس انوکھے دلچسپ اور حیات بخش منصوبے کو کامیاب بنانے کے لیے آپ سب لوگوں کے تعاون کی ضرورت ہے۔ ہمارے اس پروگرام کی کامیابی کا دار و مدار آپ پر اور صرف آپ پر ہے۔"

اتنے میں ایک تیز کڑکڑاہٹ ہوئی۔ جیسے کہیں بجلی کڑکی ہو۔ سب گردنیں اُٹھا اُٹھا کر اُدھر دیکھنے لگے۔ مخملیں روش پر دور سے کچھ ہیولے حرکت کرتے دکھائی دیے۔ دو رویہ قطاروں میں کھڑے سپاہیوں نے اپنی اپنی بندوقیں اُٹھا کر ہوا میں داغ دیں۔ تڑتڑ کی آوازوں سے فضا تھرا گئی۔ اِرد گرد کے درختوں پر بیٹھے پرندے پھڑپھڑا کر اُڑے دو چار پرندے گولیوں کی زد میں آ کر زخمی ہوئے اور قلابازیاں کھاتے ہوئے مجمع پر آ گرے۔ چاروں طرف سناٹا چھا گیا۔ میں اپنے قریب کھڑے ایک شخص کی طرف جھکا۔ اور آہستہ سے بولا۔

"اتنے دہشت ناک ماحول میں بھلا کوئی کیوں کر ہنس سکتا ہے؟"

اس شخص نے گھبرا کر اِدھر اُدھر دیکھا۔

"آپ چپ نہیں رہ سکتے؟"

"میں صبح کا گھر سے نکلا ہوں۔ مجھے بے حد بھوک لگی ہے۔ کوئی بھوکے پیٹ کیوں کر ہنس سکتا ہے؟"

"بھوک تو مجھے بھی لگی ہے مگر ہنسنا تو پڑے گا ہی۔"

"زبردستی؟"

"اب آپ چپ ہو جائیے۔ دیکھیے پروگرام شروع ہونے جا رہا ہے۔"

اس شخص نے تقریباً مجھے ڈانٹتے ہوئے کہا۔ میں نے نظر اٹھا کر دیکھا۔ مخملیں فرش پر حرکت کرتے ہوئے ہیولے دھیرے دھیرے واضح ہونے لگے۔ بندوق دھاری سپاہیوں کا ایک دستہ مارچ کرتا ہوا قدم قدم بڑھ رہا تھا۔ اُن کے درمیان کوئی شخص سفید براق کپڑے پہنے کلف دار ٹوپی لگائے خراماں خراماں چلا آ رہا تھا۔ بندوق بردار سپاہیوں کا دستہ اسٹیج کو گھیر کر کھڑا ہو گیا۔ سفید پوش ایک شانِ استغنا کے ساتھ اسٹیج پر چڑھ گیا۔ اور بیچ اسٹیج پر پہنچ کر دونوں ہاتھ جوڑے اور جھک کر سب کو پرنام کیا۔ اسپیکروں سے اُس کی جے جے کار کے نعرے نشر ہوئے۔ پھر اُس شخص نے کھنکار کر گلا صاف کیا اور مائک میں بولا۔

"ستیہ میو جیتے۔"

لوگ مسکرا دیے۔

اُس نے آگے کہا۔ "اہنسا پرمو دھرما۔"

لوگ ہنسنے لگے۔

اس شخص نے تھوڑے سے توقف کے بعد پھر کہا۔

"بہوجن ہتائے بہوجن سکھائے۔"

اب تو لوگ قہقہے لگانے لگے۔

سفید پوش مسلسل مائک پر بولے جا رہا تھا۔ اور لوگ بے تحاشا قہقہے لگا رہے تھے۔ پیٹ پکڑ پکڑ کر ہنس رہے تھے۔ پورا جلسہ گاہ قہقہوں سے گونج رہا تھا۔

میرے سامنے دو کمزور بوڑھے کھڑے تھے۔ وہ اس قدر ہنسے کہ بے ہوش ہو کر گر پڑے۔ دو چار رضا کار دوڑے اور انھوں نے بوڑھوں کو ڈنڈا ڈولی کر کے اٹھایا اور قریب ہی کھڑی ایک ایمبولینس میں ڈال دیا۔

لوگوں کی آنکھیں حلقوں میں دھنسی ہوئی تھیں گال پچک گئے تھے۔ پیٹ پیٹھ سے لگ گئے تھے۔ مگر وہ برابر ہنسے جا رہے تھے۔ ایسی دردناک ہنسی کبھی کسی نے نہ دیکھی ہوگی۔ میں بھی لوگوں کے ساتھ ہنسنے لگا۔ بھوک پیاس اور تھکن سے میری ہنسی میرے حلق میں پھندے ڈال رہی تھی۔ مگر میں ہنس رہا تھا۔ بلاوجہ ہنس رہا تھا۔ ہنستے ہنستے میری آنکھوں سے دو آنسو میرے رخساروں پر ڈھلک آئے۔ تبھی پیچھے سے کسی نے اپنا مضبوط ہاتھ میرے کاندھے پر رکھا۔ میں نے مڑ کر دیکھا ایک خاکی وردی پوش سپاہی مجھے پیچھے کی طرف کھینچ رہا تھا۔ میں مجمع سے باہر نکل آیا۔ سپاہی نے میری کلائی مضبوطی سے تھام لی۔ میں نے اس کی طرف استفہامیہ نظروں سے دیکھا۔ وہ مجھے قریب قریب کھینچتا ہوا ایک انسپکٹر کے پاس لے گیا۔

"سر! یہ آدمی جلسہ گاہ میں رو رہا تھا۔"

"ڈالو اندر ——" انسپکٹر نے ایک بند وین کی طرف اشارہ کرتے ہوئے خشونت بھرے لہجے میں کہا۔

"مگر — میں تو — میں تو ——"

میں نے کچھ کہنے کے لیے ہونٹ کھولے مگر سپاہی مجھے گردن سے پکڑ کر وین کے اندھیرے میں غرق کر چکا تھا۔

○

حفیظ اللہ نیولپوری

سرزمینِ اڑیسہ میں اُردو

اُردو اڑیا تہذیب کا باہمی ربط

تہذیب کے بغیر زبان کا تصور ممکن نہیں۔ اُردو کا تعلق اس مشترکہ تہذیب سے ہے جو کسی مذہب یا فرقہ میں محدود نہیں ہے۔ یہ تہذیب دراصل ان حد بندیوں کو توڑ کر پیدا ہوئی اس لیے یہی مشترکہ تہذیب دراصل ہندوستان کی قومی تہذیب ہے اور مکمل طور پر سیکولر مزاج کی آئینہ دار ہے۔ رواداری اور انسان دوستی کی بنا پر ہندو مسلمانوں نے مل کر اس کی تعمیر کی ہے۔

اڑیسہ میں مسلمانوں کی حکومت ۱۷۵۱ء میں ختم ہوئی لیکن مسلم حکومت کے سماجی اور ثقافتی اثرات مرہٹھوں اور برطانوی دورِ حکومت تک جاری رہے۔ یہ بات قابلِ ذکر ہے کہ برطانوی دور میں بھی اراضی کے سلسلے میں مغلیہ دستور کارفرما رہا۔ انھوں نے سابق ترتیب قائم رکھی اور ان کے مالیات کے افسران سابق فارسی ناموں سے ہی پکارے جاتے رہے۔ مثلاً زمیندار، تحصیلدار، قانون گو وغیرہ۔ آج تک بھی یہ اصطلاحیں سرزمینِ اڑیسہ میں مروّج ہیں۔ صرف اتنا ہی نہیں بلکہ مسلم دورِ حکومت کے اہم اثرات یہاں کے زبان و ادب، رسم و رواج، طرزِ معاشرت، خورد و نوش اور لباسوں تک میں پائے جاتے ہیں۔ دورانِ تحقیق سکندر نامہ نظامی گنجوی کا ایک قلمی نسخہ راقم الحروف کو دستیاب ہوا مجھے یہاں سے اجودھیا رام کی رہائش گاہ پر ۱۱۲۰ عملی مطابق ۱۷۱۲ء میں لکھا گیا تھا۔ اس نسخے کا اختتام ذیل کی عبارت پر ہوتا ہے:

"تمت تمام شد کار من نظام شد سکندر نامہ بحری من تصنیف حضرت مخدومی نظامی بوقت سہ پہر بروز سہ شنبہ بتاریخ بیست ونہم شہر شوال در عمل نواب نام وار میر محمد افضل صوبہ دار اڑیسا سالنسہ ۱۱۲۰ عملی درمقام رگھوناتھ پور بدولت خانہ اجودھیا رام از خط خام ضیاء الدین نام تحریر یافت۔"

اڑیسہ میں اُردو اور اڑیا کلچر کے باہمی ربط کا یہ عالم ہے کہ مذکورہ نسخہ ۵۷ سال تک اجودھیا رام کے خاندان میں رہا اور بعد میں اس نسخے کو دیوان بھگت رام کے بیٹے لالہ سری پت رائے نے ۱۱۷۷ عملی مطابق ۱۷۶۹ء میں کسی غلام حسین کو ہبہ کر دیا۔ مذکورہ بالا شواہد سے اڑیسہ کے ہندوؤں میں بھی فارسی کے رواج کا پتہ چلتا ہے۔ مزید اس امر کی تقویت فارسی لغات کے ایک قلمی نسخہ "فرہنگ جانی" سے بھی ہوتی ہے جو ۱۷۵۰ء میں لکھا گیا تھا اور کسی جگ موہن دیو کی ملکیت تھا۔ صرف اتنا ہی نہیں بلکہ اڑیسہ میں مسلم دورِ حکومت سے قبل اڑیا زبان و ادب میں عربی و فارسی کے اثرات پائے جاتے ہیں۔ کپلیندر دیو کے ۱۴۵۰ء کے ایک سنگی کتبہ سے بھی عربی و فارسی الفاظ کی نشان دہی ہوتی ہے۔

ڈاکٹر کنج بہاری تری پاٹھی نے بہت سارے قدیم سنگی کتبوں کی اڑیا تحریروں میں عربی و فارسی الفاظ کی نشاندہی کی ہے۔ ان کے مطابق ہندی یا ہندوستانی کے توسط سے سیمٹک یا فارسی و عربی الاصل الفاظ چودہویں صدی عیسوی تک اڑیا زبان میں کثرت سے داخل ہو چکے تھے اور جب اڑیسہ پر مسلمانوں کی حکومت قائم ہوئی تو عربی، فارسی اور اُردو کے بے شمار الفاظ تیزی کے ساتھ اڑیا زبان میں شامل ہونے لگے۔

برج ناتھ بڑجینا (۱۷۹۵ء - ۱۷۳۰ء) ابھی مینو سامنت سنگھار (۱۸۰۶ء - ۱۷۵۷ء) بلدیو رتھ (۱۸۴۵ء - ۱۷۸۹ء) نے ادبی تخلیقات میں بے شمار اُردو اور فارسی الفاظ استعمال کیے ہیں۔ اٹھارہویں صدی کی تخلیق "ستیہ نرائن پالا" اور "مغل تماشہ" تو اس امر کی بیّن دلیل ہیں جن میں اُردو فارسی دونوں زبانوں کے مکالمے استعمال کیے گئے ہیں۔ مغل تماشا اگرچہ اڑیا رسم الخط میں ہے لیکن اُردو اس میں حاوی زبان کی حیثیت رکھتی ہے اور یہی اُردو کا اوّلین ڈراما ہے جس کا زمانۂ تصنیف منشی امانت کے "اندر سبھا" سے خاصا پیشتر ہے۔ اُردو اور فارسی کی



مرزا پور، بھدرک ۔ ۷۵۶۱۰۰ (اڑیسہ)

یسہ میں مقبولیت کا ثبوت فقیر موہن سیناپتی رادھاناتھ رائے کی اکثر تخلیقات سے بھی ہے۔ بعد میں تو اُردو فارسی الفاظ اسی تکلفی کے ساتھ اُڑیا زبان میں داخل ہوتے اج تک دو ہزار سے زیادہ الفاظ اُڑیا زبان یز بن چکے ہیں۔ ہنوز اُڑیسہ کی عدالتوں اور ہریلوں میں جو تحریر، استغاثے اور قبالے یرہ اُڑیا زبان میں لکھتے ہیں ان پر بھی اُردو ہی کے اثرات واضح ہیں۔ اُڑیا کی کرنی طرز یر بھی فارسی کے خطِ شکستہ کے زیر اثر وجود ماآئی ہے۔

اُردو اُڑیا کلچر کے باہمی ارتباط کی سری کڑی اُڑیسہ کے اُردو قلمکاروں کی قابلِ منا اُڑیا تخلیقات ہیں۔ اوائل سولہویں صدی مسلم شاعر سال بیگ کے اُڑیا بھگتی گیتوں نے روؤں میں خاص مقبولیت حاصل کی۔ یہاں مسلم ادیبوں نے بہت سے اُردو اور فارسی ب پاروں کا اُڑیا میں ترجمہ کیا اور اس کے تھ ساتھ اُڑیا کی اہم تخلیقات کا اُردو میں بہ کرکے ساری اُردو دُنیا سے اُڑیا شاعروں ادیبوں کو روشناس کرایا۔ عبدالمجید نسیاں نے پندنامۂ عطار کا اُڑیا میں وم ترجمہ کیا جو ۱۸۶۹ء میں پربودھ کاویہ "ପ୍ରବୋଧ କାବ୍ୟ" کے نام سے شائع ہوا۔ ی شیخ حمید اللہ نے اُڑیا میں نبی کریم کی منظوم رت "جگت گرو حضرت محمدؐ" لکھی جو اشاعت بعد خاصی مقبول رہی۔ آکاش وانی کٹک، مسلسل تین سال تک صبح کے "مانگولی کو" پروگرام "جگت گرو حضرت محمدؐ" کے بند نشر کیے۔ مولوی منصور علی نے قرآن کریم کا اُڑیا ترجمہ کرکے آن رو آلوکو'' ''କୋରାନ୍‌ର ଆଲୋକ'' کے نام سے شائع کیا تھا جو آج تقریباً نایاب ہے۔ ادھر مولوی شیخ حمید اللہ نے قرآن کریم کے اکیس پاروں کا متنی ترجمہ کیا ہے اور حاشیے میں تفسیری نوٹس بھی دیے ہیں۔

ستیہ پیر کی پوجا کا آغاز بنگال میں ہونے کے باوجود اسے اُڑیسہ میں بھی خاصی مقبولیت حاصل رہی ہے۔ ستیہ پیر کی پوجا کا یہ سلسلہ دراصل بنگال میں حسین شاہی دورِ حکومت میں (۱۴۹۴ء — ۱۵۳۸ء) شروع ہوا اس کا مقصد تھا بنگال میں دو فرقے کے لوگوں کو ایک ہی جگہ مشترکہ عبادت کے لیے پیش قدمی کی کوشش۔ اٹھارہویں صدی کے آغاز میں جب شجاع الدین محمد خاں اُڑیسہ کے صوبے دار تھے، اُڑیسہ میں ستیہ پیر کی پوجا کا آغاز ہوا اور یہ پوجا ہندو مسلم اتحاد اور قومی یکجہتی کے نظریے سے فروغ پذیر ہوئی۔ اس پوجا کے سلسلے میں بہت سی ادبی تخلیقات بھی وجود میں آئیں، جنھیں اُڑیسہ میں پالا کہا جاتا ہے۔ جہاں اُردو و فارسی اُڑیسہ کے ہندو اور مسلمان دونوں کے تعلیم یافتہ طبقوں میں مقبول تھیں وہاں علاقائی زبان اُڑیا پران زبانوں کا اثر پڑنا فطری بھی تھا اور لازمی بھی۔

اُڑیسہ میں ہندو مسلم تہذیبی اتحاد کی جو مثالیں ملتی ہیں ملک کے دوسرے علاقوں میں مشکل سے ملیں گی۔ یہاں ہندو اور مسلمان اتفاق و اتحاد کے ساتھ ایک دوسرے کے مذہبی تہواروں میں کس طرح شریک ہوتے ہیں اس کی زندہ مثال پوری ضلع کے مانکا گوڑا گاؤں میں ملتی ہے جہاں ہندو مسلم مشترکہ آبادی ہے۔ اتفاق سے اس گاؤں کا "دل بیہرا" ایک مسلم ہے۔ اس گاؤں میں دُرگا پوجا کی ساری ذمہ داریاں اس کے سر ہوتی ہیں۔ وہ پوجا کا معرفت دار کہلاتا ہے۔ دسہرے کے دن برہمن کے لباس میں اسے جلوس کے ساتھ پوجا منڈپ پر لے جایا جاتا ہے۔ وہاں جاکر وہ پنڈت کو پوجا کرنے کی اجازت دیتا ہے تب پوجا کا آغاز ہوتا ہے۔ اس کے علاوہ وہ تلوار جس سے دسہرے کے وقت جانور کی قربانی دی جاتی ہے دبیر الدین خاں کے گھر رہتی ہے۔ اس علاقے میں شادی بیاہ کے موقعے پر ہندوؤں کی تقریب میں مسلمان اور مسلمانوں کی تقریب میں ہندو آیا کرتے ہیں جنھیں مقامی اصطلاح میں "گوآدی، آ.بندھو" (ଗୁଆଦିଆ ଆବନ୍ଧୁ) کہا جاتا ہے۔

اُڑیسہ میں اس طرح اُردو اُڑیا مشترکہ تہذیب کی وہ مثالیں جنھیں ہم ہندو مسلم یکجہتی کا نام دے سکتے ہیں، قدم قدم پر ملتی ہیں۔

کٹک کے قدم رسول میں ہندو اور مسلم زائرین مشترکہ طور پر زیارت کی غرض سے آتے ہیں، اسے ہندو مسلم عقیدوں کا مشترکہ ورثہ سمجھا جاتا ہے۔ اسی طرح کا تیدر کے حضرت سیّد جلال الدین بخاریؒ کے مزار پر بھی دونوں فرقوں کے زائرین منتیں مانگنے کے لیے جمع ہوتے ہیں۔ اس کے علاوہ پوری ضلع کے استرنگ میں ساحل سمندر پر حضرت جہانیاں جہاں گشت کی خانقاہ ہے جو ہندو مسلم عقیدت مند زائرین کی آماجگاہ ہے۔ حضرت جہانیاں جہاں گشت عہدِ وسطیٰ کے ایک سیّاح صوفی بزرگ تھے۔ کہا جاتا ہے کہ انھوں نے ساری دُنیا کا دورہ کیا تھا اس لیے انھیں جہاں گشت کہا جاتا ہے۔ دورانِ سفر جہاں جہاں انھوں نے قیام کیا تھا وہاں وہاں ان کی خانقاہیں قائم ہیں۔ پوری ضلع کے سوہن پور میں اس طرح کی اور ایک خانقاہ ہے جس کا متولّی اور خدمت گار ایک ہندو ہے۔ وہ مذکورہ خانقاہ میں فاتحہ خوانی

کرتا ہے۔ بھدرک کے پہلوان شاہ کے مزار
پر ہر جمعرات کو ہندو و مسلم زائرین کی بھیڑ رہتی
ہے۔ بری کی درگاہ کی بھی یہی کیفیت ہے۔ التی
کے پہاڑ للت گری پر حضرت سلیمان کے تحت
کا دورہ ہوا تھا۔ بلند پہاڑ کی چوٹی پر ۱۷۲۰ء
میں نواب مرشد قلی خاں کے نائب شجاع الدین محمد
خاں نے ایک مسجد اور خانقاہ قائم کی ہے۔ یہاں
بھی دونوں فرقوں کے زائرین کی بھیڑ رہتی ہے۔
اس ضمن میں بالیسر کے "بھوجا کھیا پیر" صاحب کا
بھی تذکرہ لازمی ہے۔ روایت ہے کہ ایک قدیم
نیم کے درخت کے نیچے پیر صاحب بیٹھے رہا کرتے
تھے۔ عام طور پر بھُنے ہوئے چاول کے مرمرے
(بھوجا) ان کی غذا تھی۔ اسی نیم کے نیچے پیر
صاحب کا مزار ہے۔ اُڑیا کے عظیم ادیب
برج موہن بچپن میں ایک مہلک مرض میں گرفتار
ہوئے تو ان کی دادی نے انھیں پیر صاحب کے
مزار پر لاکر ڈال دیا تھا۔ جب وہ بالکل اچھے
ہوگئے تو ان کا نام برج موہن سے بدل کر فقیر
موہن کر دیا گیا جو آج فقیر موہن سینا پتی کے
نام سے مشہور و معروف ہیں۔ ان کے ناولوں
میں اُردو الفاظ کثرت کے ساتھ مستعمل ہیں۔ گوپال
پرہراج کی تخلیقات کا بھی یہی عالم ہے۔

اُڑیسہ کے رسم و رواج، وضع قطع، خورد و
نوش اور طرزِ معیشت کی بات کی جائے تو قدم قدم
پر مشترکہ کلچر کے اثرات پھیلے ہوئے ملتے ہیں۔
آج بھی اُڑیا زبان میں ٹوپی، جامہ، پائجامہ،
رومال، شال، تکیہ، چپل، جوتا، شلوار، قمیض،
مٹھائی، حلوا، برفی، قلاقند، جلیبی، چپاتی،
روٹی، پلاؤ، قورما، شربت، ناشپاتی، انگور،
بادام، پستہ، کاجو، اخروٹ، آم، انگا جر، انار
وغیرہ زبان زد عام ہیں تو دوسری طرف اُڑیا
کے مندرجہ ذیل الفاظ یہاں کے اُردو روزمرہ
کا جز بن چکے ہیں۔ ہانڈی، سال، پکھال، گوہال،
پنڈا، پیٹھا، بلوا، منڈا، چھینا، دہیہ، پوکھر،
نابھی، پیٹر، مانڈیا، پیج، پکھرو، سینڈا، ڈھیہ،
پگھا وغیرہ وغیرہ صرف اتنا ہی نہیں بلکہ ہندو
کلچر کے زیر اثر اُڑیسہ کے مسلمانوں نے بھی متعدد
ہندو رسوم اپنائی ہیں۔ ان میں سے ولادت کے
بعد بچے کا زائچہ بنانا جسے یہاں جاتک کہا جاتا
ہے۔ علم رمل پر عقیدہ رکھنا۔ چلکا کے ساحلی
علاقے میں خود کو "اروا پٹھان" کہلانے والے
لوگوں کی زبان اُڑیا ہے اور وہ پوری طرح
ہندو رسم و رواج اپنائے ہوئے ہیں۔ عید
کے دن ان کے یہاں "لال کتاب" کی پوجا ہوتی
ہے۔ ایک قدیم کتاب پشتہا پشت سے سُرخ
رنگ کے کپڑے میں لپٹی ہوئی رکھی رہتی ہے
جسے وہ لال کتاب کہتے ہیں۔ دراصل اس سرخ
کپڑے کے اندر قرآن کریم کا ایک نسخہ نہایت
ادب و احترام کے ساتھ رکھا ہوا ہے جو یقینی
طور پر ان کے اجدادِ اعلا کی طرف سے وراثت میں
نصیب ہوا ہوگا۔

تحقیق سے پتہ چلتا ہے کہ دراصل یہ
"اروا پٹھان" ان عرب مسلمانوں کی نسل سے
ہیں جو ۱۵۷۱ء میں قطب شاہی فوج کے
ساتھ اُڑیسہ آئے ہوں گے اور مقامی لوگوں
کے ساتھ رشتۂ ازدواج میں منسلک ہونے
کے بعد یہیں کے ہو رہے۔

اُڑیسہ میں آراضی سے متعلق قدیم ریکارڈز
کے مطالعہ سے پتہ چلتا ہے کہ اُڑیا زبان پر
اُردو فارسی اثرات کس قدر گہرے تھے۔
مثال کے طور پر گوپی ناتھ دیو کے عہد کی ایک
اُڑیا سند بابت ۱۱۳۳ عملی مطابق ۱۷۲۵ء
کا اقتباس ملاحظہ ہو:

"ଦାନ (ଆଇନ ଅନୁଯାୟୀ ଦାନ) ମିର୍ଜା
ମହମ୍ମଦ ସଇଦ ବେଗ ଗ୍ରାହସ୍ଥ ପତ୍ର,
ଦଦାଇ ଠାକୁର କଲ୍ୟାଣ ବିଗାଡପାଞ୍ଚବାଟି
ଅରାଜି କଟରିଙ୍କେ ଦାନ ଗୋଚରମ
ପରମାନନ୍ଦ ସାନୋତ୍ରା ଅରାଜି ମସ୍ତୁରୁଙ୍କୋ
ଆଫତା ବୁଦ । ଦରିଦ୍ରାଲା (ଜେଥିପାଇଁ
ଅରାଜିଟ ମଜ୍କୁର କଟରିଙ୍କେ ଦାନ
ମୁକରର ହୁକମ୍ ଫର୍ମୁଦମ୍ । ବାୟଦ
କେ ତା ଆଫତାବ ଓ ମାହ୍‌ତାବ ପରମା-
ନନ୍ଦ ମଜକୁର ରା ଅମଲ ବଗୁଜାରମ୍ ତହ୍ରିର୍
ଦଖଲ ୫ ଶହରେ ଜମାଦିଲ୍ ଅୱଲ ୧୧୩୩
ଅମ୍ଲି ।"

["دان (آئین انوجاتی دان) مرزا محمد سعید
بیگ شری ہست پترو۔ ددائی ٹھاکر کلان بست
پانچ باٹی اراضی بطریق دان گوچرم پرمانند سانوترا
اراضی مشتری کرآفتہ بود۔ دریں تو الہ (سے تھی
پائیں) اراضی مذکور بطریق دان مکرر حکم فرمودہ
ایم باید کہ تا آفتاب و ماہتاب پرمانند مذکور را
عمل بگذارم۔ تحریر دخل ۵ شہر جمادی الاوّل
۱۱۳۳ عملی"]

مذکورہ بالا اقتباس کے ۵۶ الفاظ
میں اُردو اور فارسی کے ۳۵ الفاظ مستعمل
ہیں۔ اوائل انیسویں صدی کے ریکارڈز اور
بندوبست کے کاغذات میں بھی اس طرح کی
ذو لسانی تحریریں سامنے آتی ہیں۔

اس کے علاوہ اُردو فارسی کے حروف
فجائیہ بھی اُڑیا زبان میں کثرت سے مستعمل ہیں۔
مثال کے طور پر:

ଶାବାସ୍ ! ଖୁବ! ବାସ୍! ବାଃ! ହାଁ!
ଆଲବତ୍ ! ହାଏ! ଅଫସୋସ!ହାଏହାଏ!
ଖବରଦାର୍ ଇତ୍ୟାଦି

[شاباش! خوب! واہ! بس!
ہاں! البتہ! ہائے! افسوس!
ہائے ہائے! خبردار! وغیرہ وغیرہ]

آخر میں اُردو اُڑیا تہذیبی ارتباط کے نمونے کے طور پر عبدالمجید بھونیاں کے اس ذولسانی شعر پر اپنی گفتگو ختم کرتا ہوں :

حسن کا نور صنم ہے جو ترے تن میں بھرا
"چاہیں دے بوئی موتے چندر مُکھی سورگ تورا"
[ଚାହିଁ ଦେ ବୋଇ ମୋତେ ଚନ୍ଦ୍ରମୁଖୀ ସ୍ୱର୍ଗ ତୋରା]

چلتے چلتے آج سے سو سال قبل اُڑیا اُردو تہذیبی ارتباط کی ایک صحافتی جھلک ملاحظہ ہو جو ۱۸۶۸ء کے اُڑیا اخبار "اُتکل دیپیکا" سے مقتبس ہے :

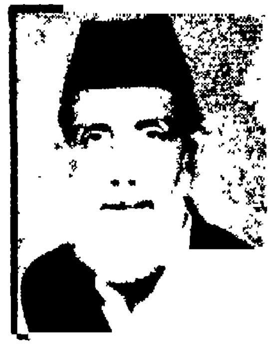
ସେ କାଳର ଓଡ଼ିଶା

ତା ୯ରିଖ ମାହେ ମଇ ସନ ୧୮୬୮ ମସିହା

ମହରମ ପର୍ବ ଓ ପୁଲିସ

କଟକ ନଗରରେ ସକଳ ପର୍ବାପେକ୍ଷା ମୁସଲମାନ ମହରମ ପର୍ବ ଅଧିକ ସମାରୋହରେ ସଂପନ୍ନ ହୁଅଇ । ହିନ୍ଦୁମାନେ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ପରିମାଣରେ ଏ ପର୍ବରେ ଯୋଗ ଦିଅନ୍ତି ସୁତରାଂ ଏପ୍ରକାର ସାଧାରଣ ପର୍ବ ହୋଇପଡ଼େ ଏବଂ ଅସ୍ତ୍ର ବିଦ୍ୟାର ଖେଳନା ଥିବାରୁ ଏପର୍ବ ଯେମନ୍ତ ଭୟଙ୍କର ସେପରି ଆନନ୍ଦ ପ୍ରଦ ଓ ହିତକର ଅତଏବ କଟକରେ ଯେରୂପେ ଏପର୍ବ ନିର୍ବାହ ହୁଅଇ ଏଥିରେ ନିଶ୍ଚୟ ଏହାକୁ ମହୋତ୍ସବ ପ୍ରଦର୍ଶନ ବୋଲିବାକୁ ହେବ । ଏବର୍ଷ ନଥିଲେ କେହି ଏ ବିଷୟରେ ଉତ୍ସାହିତ ହୁଅନ୍ତେ ନାହିଁ ଏବଂ କ୍ରମଶଃ ବଡ଼ କାର୍ଯ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି କରିବାର ଏକ ମହତ ଉପାୟର ଲୋପ ହୁଅନ୍ତା ଅତଏବ ଆମ୍ଭମାନଙ୍କର ଇଚ୍ଛା ଏହି ଯେ ଅପର ଧର୍ମାବଲମ୍ବୀମାନେ ଏ ପର୍ବ ଆଡ଼ମ୍ବର ରକ୍ଷା କରିବା ନିମନ୍ତେ ଧର୍ମର ହାନି ଲାଭର କଥା ମନେ ନକରି ଯୋଗ ଦେଉନ୍ତୁ । ଗତ ସପ୍ତାହରେ ଯଥାମତ ଏ ପର୍ବ ସମାଧାନ ହେଲା । ଜନତାର ସୀମା ନଥିଲା ଏବଂ ଯଥାର୍ଥ ଭୂପ ଭିଡ଼ ହୋଇଥିଲା । କିନ୍ତୁ ଆନନ୍ଦର ବିଷୟ ଏହି ଯେ କୌଣସି ଦୁର୍ଘଟଣା ହୋଇନାହିଁ ।

[دبزبان اُڑیا] :
تاریخ ۹ ماہِ مئی سنہ ۱۸۶۸ مسیہا
محرم پربو و پولس
کٹک نگرورو سکولو پربابیے کھشا مسلمان محرم پربو ادھیکو سمار وحو رے سمپن ہوئی۔ ہندو مانے مُدھا ادھیکو پریما نورے اے پربو رے جوگ دی انتی سوترانگ اے پرو کار سادھارن پربو ہوئی پوڈے۔ ایبنگ استرو دیارو جالونا تھی بارو اے پربو جے منتو بھینکور سے پوری آنند پرودو و ہیتوکور و اتوا کٹک رے جے روپے اے پربو نربا ہو ہو اے تھی رے نشچے اے باکو متو سادھنا رو پر ودرشنو کو بولی باکو ہے بو۔ اے پربو نو تھی لے کے ہی اے بی سوبیارے اوتساہیتو ہوانتے ناہیں ...]



قاضی حسن رضا

شکاری نے رکھا ٹھکانہ بلند
ہدف پست قامت نشانہ بلند

یہاں ظلم کی ہیں کمندیں دراز
کہاں تک کریں آشیانہ بلند

ترے سامنے سر بہ سجدہ ہیں لوگ
مرا نام ہے غائبانہ بلند

سمجھ لیجیے تلخ گذرا ہے دن
اگر ہے نوائے شبانہ بلند

مری چیخ بھی کھوگئی اے رضاؔ
ہوا ہر طرف سے ترانہ بلند

قاضی پورہ، کھنڈوا (ایم۔پی) ۴۵۰۰۰۱

چراغِ دل کا تھا روشن بجھا گیا پانی
کہ بن کے سیلِ بلا گھر میں آگیا پانی

خلوص پیار وفا سب اسی کے ساتھ گیا
محبتوں کے نشاں سب مٹا گیا پانی

چڑھا ہوا تھا جو دریا اتر گیا لیکن
ہماری اونچی عمارت کو ڈھا گیا پانی

بجھے گی پیاس بھلا کیا زمیں کی اشکوں سے
ہماری آنکھ میں کیوں آج آگیا پانی

ہوئی جو بارشِ غم تو بدل گئے منظر
ذرا سی دیر میں کیا کیا دکھا گیا پانی

ڈبو ہی دے گا تمھیں اب ندی کا یہ سیلاب
کہاں بچو گے کہ اب گھر میں آگیا پانی

میں اب یہ شہرِ ہوس چھوڑ کر کہاں جاؤں
مجھے تو راس یہاں کا اب آگیا پانی

احتشام اختر

پرانا خزانہ ہاؤس، سول لائنز، کوٹہ (راجستھان)



راشد احمد راشد

یونھی تو ہو نہیں سکتی مہک فضاؤں میں
یہ کس کے جسم کی خوشبو ہے ان ہواؤں میں

زمیں پہ جب ہیں میسّر ضرورتیں ساری
تلاش کیا ہے پھر انسان کو خلاؤں میں

وہ پیچ و خم کو نہ سمجھے گا تنگ گلیوں کے
مکاں بنایا ہے جس نے کھلی فضاؤں میں

بلائیں دور رہیں جس کے خوف سے کل تک
گھرا ہوا ہے وہی شخص اب بلاؤں میں

لکیر کھینچنا آساں ہے ریت پر راشدؔ
بنا کے نقش دکھاؤ ذرا ہواؤں میں

مکان نمبر 4-514-1-19، ممدہ بازار، حیدرآباد ۵۰۰۰۲۴

محمد عثمانی

بھنور

زندگی میں کبھی ایسے موڑ بھی آتے ہیں جہاں عقل دنگ رہ جاتی ہے۔ ایسے وقت انسان اپنے آپ کو غیر اہم اور معمولی سمجھنے پر مجبور ہو جاتا ہے۔

کبھی ایسا بھی ہوتا ہے کہ حادثے کا شکار تو کوئی اور ہوتا ہے۔ لیکن ہم اپنے آپ کو اس حادثے میں شریک سمجھتے ہیں۔ میرے ساتھ بھی ایسا ہی ہوا۔ حادثے کا نشانہ تو زاہد صاحب تھے۔ لیکن مجھے محسوس ہو رہا تھا کہ اس میں میں بھی شامل ہوں۔ اور اس حادثے نے مجھے بیس برس پیچھے ماضی میں دھکیل دیا۔ زاہد صاحب اور میری دوستی کے کئی ورق اُلٹ گئے۔

زاہد صاحب محلّے میں ہی رہتے تھے۔ ابتدا میں علیک سلیک ہوتی تھی۔ پھر چلتے چلتے ہم ایک دوسرے کی خیریت کے بہانے اِدھر اُدھر کی بات کر لیا کرتے تھے۔ چند دن بعد ہماری دوستی ہو گئی۔ ہم لوگ ہوٹل میں بیٹھنے لگے۔ گپ شپ ہونے لگی۔ حالاتِ حاضرہ پر تبصرہ، سماج کی تبدیلیوں اور برائیوں پر چوٹیں ہونے لگیں۔ کبھی وہ غالب کا کوئی چبھتا ہوا شعر سناتے تو میں میر کا کوئی گداز مصرع سناتا۔ کبھی کبھی ہماری بات چیت گرما گرم اور طویل بھی ہو جاتی۔ جسے ہوٹل میں بیٹھے ہوئے لوگ دلچسپی سے سُنتے۔

زاہد صاحب معقول آدمی تھے۔ کسی محکمے میں نوکری تھی۔ لیکن رہتے تھے بڑے ٹھسّے سے۔ بات چیت کا انداز بڑا متاثر کُن تھا۔ میں اُن کی بڑی قدر کرتا تھا۔ ان کی آمد کا منتظر رہتا تھا۔

دو ایک سال بعد زاہد صاحب میں کچھ تبدیلیاں ہونے لگیں۔ وہ کئی کئی دن غائب رہنے لگے۔ جب ملتے کچھ کھوئے کھوئے پریشان سے، دکھائی دیتے۔ میں نے پوچھا بھی تو بس مسکرا کر رہ گئے۔ مسکراہٹ بڑی پھیکی اور مریضانہ سی ہوتی ایسی کوئی بات تھی جسے وہ مجھے بتانا نہیں چاہتے تھے۔ وہ پہلے کی طرح گرم گفتاری اور خوش مزاجی بھی نہیں دکھاتے تھے۔ بس خاموش رہتے تھے۔

ایک مرتبہ کئی دن بعد ملے۔ اس دن ہم نے ایک ہی نشست میں کئی چائے کی پیالیاں ختم کیں اور ڈھیر سارے سگریٹ پھونکے۔ میں ہی بولتا رہا۔ وہ چائے پیتے رہے۔ سگریٹ جلاتے رہے یا میری باتیں سنتے رہے۔ میں نے بہت کریدا تو انھوں نے صرف اتنا کہا:

ہم کہاں کے دانا تھے کس ہنر میں یکتا تھے
بے سبب ہوا غالبؔ دشمن آسماں اپنا

میں مسکرایا اور تشریحاً کہا "نہیں جناب یہ بات نہیں غالبؔ دانا بھی تھا اور اپنے ہنر میں یکتا بھی تھا۔ لیکن اس شعر کے ذریعے خاکساری جتا رہا ہے۔ غالبؔ کے قصّے تو آپ جانتے ہی ہیں۔ ڈومنی سے اس کا۔ . . . "

زاہد صاحب اچانک اٹھ کھڑے ہوئے اور تیز تیز قدموں سے ہوٹل کے باہر نکل گئے۔ پھر بہت دنوں تک انھوں نے ادھر کا رُخ نہیں کیا۔ ان کی یاد آتی بھی لیکن میں نے انھیں تلاش کرنے کی کوشش نہیں کی اور نہ ہی ان کے موجودہ حالات جاننے کی۔

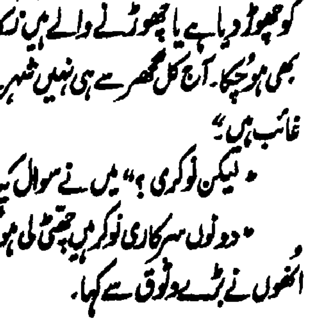
ایک دن میں ہوٹل میں یوں ہی بیٹھا اخبار کے صفحے الٹ پلٹ رہا تھا کہ ایک صاحب، جن سے معمولی شناسائی تھی، میرے قریب آکر بیٹھ گئے اور بولے: "آج کل اکیلے نظر آرہے ہیں آپ کے زاہد میاں دکھائی نہیں دیتے؟" میں نے اخبار پر سے نظریں ہٹا کر انھیں دیکھا تو جواب کا منتظر پایا۔ میں نے کہا: "پتا نہیں آج کل کس الجھن میں ہیں۔ پندرہ دن سے اوپر ہو گئے، وہ ملے تھے تب سے پتا نہیں کہاں ہیں؟" میرا جواب سن کر وہ اور نزدیک کھسک آئے اور گویا ہوئے: "آپ نہیں جانتے۔ آج کل وہ کیا کر رہے ہیں؟"

"بالکل نہیں" میں نے جواب دیا۔ وہ حضرت میری طرف یوں جھکے جیسے بڑی رازدارانہ بات بتانے والے ہوں۔ پھر دھیمی آواز میں کہنے لگے۔

"جناب! وہ آج کل ایک عورت کے چکّر میں ہیں سنا ہے وہ کسی اسپتال کی نرس ہے۔ پہلی بیوی کو چھوڑ دیا ہے یا چھوڑنے والے ہیں نکاحِ ثانی بھی ہو چکا۔ آج کل گھر سے ہی نہیں شہر سے بھی غائب ہیں۔"

"لیکن نوکری؟" میں نے سوال کیا۔

"دونوں سرکاری نوکر ہیں چھٹی لی ہوگی۔" انھوں نے بڑے وثوق سے کہا۔



معرفت ماہنامہ جوہر، ایم۔ اے۔ روڈ، نیا پورہ، مالیگاؤں ۴۲۳۲۰۳

الہ صاحب کی بات سُن کر مجھے حیرت ہوئی۔ چکر سا محسوس ہوا۔ یہ بکھیڑا پھیلایا زاہد صاحب نے۔ بڑے اصلاحی بنتے تھے۔ پھر ذہن میں کبھی کتابوں میں پڑھی بات آئی کہ محبت عمر نہیں دیکھتی، لیکن بات کتابوں میں ہی اچھی معلوم ہوتی ہے۔ عملی زندگی میں یہ مقولہ بڑی الجھن پیدا کرتا ہے۔ پتا نہیں زاہد صاحب کس حال میں ہوں۔ اُن کے لیے میرا دل بھر آیا اور میں بے چین ہو گیا۔

میں نے پتا لگایا تمام باتیں حرف بہ حرف سچ تھیں۔ میں اس زاہد شکن کو دیکھنا چاہتا تھا جس نے زاہد صاحب جیسے جہاندیدہ شخص کو اپنی زلف کا اسیر بنا لیا۔ کئی دن تک میں بے چین سا رہا۔ ایک دن اچانک زاہد صاحب ایک برقعہ پوش خاتون کے ساتھ نظر آئے۔ میں نے مخاطب ہونا مناسب نہیں سمجھا لیکن مجھے دیکھ کر وہ خود ہی رُک گئے۔ سلام علیکم کہا۔ مسکرائے پھر کہا۔ "ان سے ملو یہ ہیں تمھاری نئی بھابی۔" میں نے آداب کہا تو خاتون نے برقعہ اٹھایا اور آداب کہا۔ میں نے زاہد شکن کو دیکھ لیا۔ اور اندازہ لگایا کہ واقعی وہ اسم بامسمیٰ ہیں۔ کچھ مطمئن کچھ غیر مطمئن سا گھر آ گیا۔

زاہد صاحب جو یار باش قسم کے آدمی تھے۔ اب بیگم بردوش سے ہو گئے تھے۔ کبھی کبھار راستہ چلتے نظر آتے تھے۔ اب ان کے کپڑے بڑے سلیقے کے ہوتے تھے اور پرانی سائیکل کی جگہ اسکوٹر نے لے لی تھی۔ اُن کی دنیا ہی بدل گئی تھی۔ کپڑوں کی تراش خراش تو تبدیل ہو گئی تھی لیکن چہرے پر بے اطمینانی کی متعدد لکیریں بکھر گئی تھیں۔ بظاہر دیکھنے والوں کو اُن کے حالات کی آسودہ سی تبدیلی پر رشک آتا تھا۔ لیکن مجھے ادیب کی نظر سے نہیں اپنی نظروں سے دکھائی دیتا تھا کہ خاموش سمندر میں کہیں نہ کہیں بھنور ہے۔ جو زاہد صاحب کے بے شکن بے داغ کپڑوں، چمکدار جوتوں، چمچماتی گھڑی اور ان کے نئے نویلے اسکوٹر کی آواز میں چھپا ہوا ہے۔

بہت دنوں تک زاہد صاحب سے ملاقات نہ ہوئی۔ ایک دن انھوں نے اسکوٹر پہ سے ہاتھ دیا تو میں نے دیکھا سامنے ایک بچہ اور پیچھے وہی خاتون نظر آئیں جنھوں نے مجھے آداب کیا تھا۔ ان کے چہرے پر ایسا سکون تھا جیسا طوفان آنے سے پہلے سمندر میں ہوتا ہے اور کچھ فربہی بھی چڑھ رہی تھی۔

میں نے سوچا چلو زاہد صاحب کا معاملہ تو نپٹ گیا۔ اچھا ہوا۔ بے چارے کچھ آسودہ تو ہو گئے۔ خوشحالی آج کے دور میں خوش نصیبوں کو ہی میسر آتی ہے۔ . . لیکن چند دنوں بعد ہی زاہد صاحب کے متعلق عجیب عجیب خبریں آنے لگیں۔

زاہد صاحب کی پہلی بیوی نے ان پر کیس کر دیا ہے۔ عدالت نے ان کے خلاف فیصلہ دے دیا ہے۔ اب زاہد صاحب کو ایک موٹی رقم ادا کرنی ہے۔ اور ہر ماہ ایک الگ رقم بھی۔ زاہد صاحب پریشان ہیں۔ بچوں کی تعداد بھی بڑھ گئی ہے۔ گھر خرچ بھی بڑھتا چلا گیا۔ ان کی نئی بیوی نے معیارِ زندگی بلند کرنے کے چکر میں خود ہی خرچ بڑھا لیا۔ مہنگائی ہے کہ آسمان کو چھو رہی ہے۔ انسان کا سارا کس بل نکل گیا ہے۔ بے چارے زاہد صاحب دُبلے ہو گئے ہیں۔ غرض جتنے منہ اتنی باتیں۔

وقت کا چکر چلتا رہا۔

میں اب کبھی کبھار باہر نکلتا۔ ہوٹل میں تھوڑی دیر بیٹھتا۔ پرانی یادوں کو تازہ کرتا اور گھر چلا آتا۔ ایک دن میں اخبار میں منہمک تھا کہ زاہد صاحب آ گئے۔ میں نے کھڑے ہو کر انھیں خوش آمدید کہا اور دیکھنے لگا کہ ان کا اسکوٹر کہاں کھڑا ہے۔ لیکن اسکوٹر دکھائی نہیں دیا۔ وہ خاموشی سے بیٹھ گئے۔ میں نے کہا: "آج ہم بہت پیچھے ماضی میں چلے گئے ہیں، جب شب باشی اور گپ بازی ہوتی تھی۔ مجھے بیس سال پہلے کا زمانہ یاد آ رہا ہے۔"

وہ مسکرائے اور بولے: "ہاں مجھے بھی وہی زمانہ یاد آ رہا ہے۔ جب ہم اس دشت کے بلبل تھے۔"

میں نے چائے کا آرڈر دیا۔ انھوں نے بیرے کو روک کر کہا: "ایک بغیر شکر کی لانا۔ یہ سالا شوگر کا بھی عجیب روگ ہے نکالے نہیں نکلتا۔" بیرا انھیں حیرت سے دیکھتا بڑبڑاتا چلا گیا۔ جیسے کہہ رہا ہو "جو لوگ زیادہ آسودہ حال ہوتے ہیں ان پر خدا کی نعمتیں اکثر بند ہو جاتی ہیں۔" وہ ہمیشہ یہ ریمارک دیا کرتا تھا۔

میں نے پوچھا، "کہیے کیا حال ہے آپ کا؟ بہت دنوں بعد پرانی جگہ کی یاد آئی۔ پرانے دوستوں کو یاد رکھنے کا شکریہ۔" زاہد صاحب میری طرف دیکھتے ہوئے بولے: "کیا بتائیں صاحب! بس گذر رہی ہے۔ لیکن میں نے جو سوچا تھا وہ نہ ہو سکا۔ میرے اندر طوفان برپا رہتا ہے۔ میں اپنے گلّے سے الگ ہونے والا بے چین جانور بن گیا ہوں۔"

میں نے کہا: "زاہد صاحب! سمندر میں آئے طوفان سے ملاح کسی نہ کسی طرح کشتی کو ساحل تک لے جانے کی کوشش کرتا ہے لیکن کشتی میں ہی برپا ہونے والے طوفان سے ملاح نپٹ نہیں سکتا۔"

زاہد صاحب نے فوراً کہا: "ہاں صاحب وہی تو بات ہوگئی ہے۔ میرے یہاں بھی طوفان برپا ہے۔" پھر دھیرے سے بولے: "نہ بیگم عزت کرتی ہے نہ بچے۔ آدمی کو گھر میں اور باہر عزت چاہیے جو میں گھر اور باہر دونوں جگہ گنوا بیٹھا ہوں۔"

پھر وہ ہونٹوں ہی ہونٹوں میں پھوٹ پھوٹ کر یوں رونے لگے جیسے بیس سال سے جو لاوا اُن کے اندر پک رہا تھا اُسے آج ہی نکال پھینکنا چاہتے ہوں۔



مسعودہ حیات

تدبیر کھوگئی ہے نہ تقدیر کھوگئی
اس کے بغیر دل کی وہ تنویر کھوگئی

آتی نہیں ہے اب تو دریچوں سے دھوپ بھی
شاید ہمارے نام کی تنویر کھوگئی

جس کو چھپا کے رکھا تھا آنکھوں میں عمر بھر
کیا حادثہ ہوا کہ وہ تصویر کھوگئی

دیکھے ہیں جب سے جلتے ہوئے سامنے مکاں
دل سے ہمارے حسرتِ تعمیر کھوگئی

اتنا بڑھا حیاتؔ وہ ہنگامۂ سحر
میرے ہر ایک خواب کی تعبیر کھوگئی

کیا دیکھتا ہے حال کے منظر اِدھر بھی دیکھ
ماضی کے نقش یاد کی دیوار پر بھی دیکھ

دیکھے ہیں میرے عیب تو میرا ہنر بھی دیکھ
سودا ہے جس میں اپنی اَنا کا وہ سر بھی دیکھ

لے کام مجھ سے سخت اُڑانوں کا تو مگر
پہلے مری بساط، مرے بال و پر بھی دیکھ

چہرے کے رنگ و نور کو میرا ہنر سمجھ
مجھ کو مری نظر سے کبھی جھانک کر بھی دیکھ

اِک بار اور بیچ کے زمانے کی آنکھ سے
ہوں دیکھنے کی چیز تو بارِ دِگر بھی دیکھ

سیّدہ شانِ معراج





رعنا زیبا

اوروں کو اِک نظر نہیں بھاتا چلن مرا
دیوانے کو پسند ہے دیوانہ پن مرا

خود کو مصوّروں سے بچاتے ہوئے ہوں میں
لے جائے گا چُرا کے کوئی بانکپن مرا

یہ بات اُس کے ملنے سے پہلے کی بات ہے
جب گھر کے کام کاج میں لگتا تھا من مرا

یہ سچ ہے اس میں پھول ہیں کم خار ہیں بہت
مجھ کو مگر عزیز بہت ہے چمن مرا

وہ مجھ سے جیت جائے گا یہ جانتی ہوں میں
میرے نہ کام آئے گا کوئی جتن مرا

۴۱/۹۶، سیکٹر III، آر۔ کے۔ آشرم مارگ، گول مارکیٹ، نئی دہلی | تارین ٹولی، شاہجہاں پور ۲۴۲۰۰۱ | مدھوکنج، بابو ڈانڈی کی گوٹھ، گوالیار

نظمیں

غم کی شبنم

غم کی شبنم
قطرہ قطرہ
شام سے ہی گرنے لگتی ہے
ہجر کے پھول مہک اُٹھتے ہیں
جان و دل کے ویرانے پر
ہلکی ہلکی خوشبو کی
اک پیلی چادر تن جاتی ہے
اور۔۔۔۔۔
وہ دُور دھنک کی اوٹ سے
ہنستے ہنستے تھک جاتی ہے

گھاٹ کا پتّھر

وہ ہے اک طوفانی دریا
اور میں ہوں اک گھاٹ کا پتّھر
ساحل پر کتنی مدت سے
گم صم بیٹھا سوچ رہا ہوں
موج کوئی طوفانی آئے
اور ــــ
بہالے جائے مجھ کو

نیاز جیراجپوری
سی-۴۱، آر۔ ایم۔ ہال، اے۔ ایم۔ یو۔ علی گڑھ ۲۰۲۰۰۲

دِن

دن اُجلا اُجلا
لگتا ہے کہ ابھی ابھی
اِک دُودھ کی خوشبو دار نہر میں
خوب نہاکر آیا ہے
یا بیلا اور چمبیلی کے پھولوں کے
مہکتے جنگل سے ہوتا آیا ہے
اب روشن روشن مہک رہا ہے
اندر اندر لہک رہا ہے
لہو میں اُترا جاتا ہے
رگوں میں دوڑا جاتا ہے
شاید
تم نے بڑے پیار سے
برسوں بعد
یاد کیا ہے

اختر یوسف
ہند پیڑھی، لیک فیکٹری روڈ، رانچی ۸۳۴۰۰۱

ترنّم

غزل گاکر سُنا دو گے
سُناکر نظم
رس گھولو گے کانوں میں
مگر
پیارے مغنّی تم
ترنّم میں یہ افسانہ
کہانی مر کے جینے کی
حکایت آنسو پینے کی
روایت اُف نہ کرنے کی
سُنا ڈالو تو میں جانوں
سماعت میں
اسے نغمہ
بنا ڈالو تو میں جانوں

دُھوپ

جمی تھی برف خوابوں پر
نظر سے دُھوپ چمکا کر
کسی نے برف پگھلا دی

اَنا

اَنا کا سر بچانے میں
تمنّا
مرگئی کل شب

صدف جعفری
۷۶، زکریا اسٹریٹ، کلکتہ ۷۳

تاراچرن رستوگی

علمِ نفسیات
روزمرہ زندگی میں

موجودہ دورِ علم اور تکنیک کی پیش رفت نیز ظفریابی کے نقطۂ نظر سے بغاوت کاوش اختراق نیز انکشاف (EXPLORATION & EXPLOSION) کا دور ہے، ایسا دور جس کا اندازہ اقبال کو بھی تھا:

کھلے جاتے ہیں اسرارِ معانی
گیا دورِ حدیثِ لن ترانی
خودی جس کی ہوتی پہلے نمودار
وہی مہدی، وہی آخر زمانی

بے شمار اسرار اپنی سطح سے اُتارے جاچکے ہیں۔ زندگی کو بے شمار لن ترانیوں سے نجات دلائی جاچکی ہے۔ خلا کو پار کرتا ہوا انسان چاند پر پہنچنے میں کامیاب ہوگیا۔ نکلیائی توانائی کا برائے امن و آشتی استعمال ہورہا ہے۔ مختلف طور کی اطلاعات فراہم کرنے والے، صوروصوت کی ترسیل میں مدد دینے والے سیارچے فضا میں چھوڑے جاچکے ہیں۔

آج کی دُنیا جیسے پل صراط سے گذر رہی ہے اور علوم متداولہ سے متصف ہوکر وہ جنت کی جانب یا دوزخ کی سمت میں بڑھ رہی ہے۔ بہر کیف:

زندگی جہد است و استحقاق نیست

عمل ہی سے ہماری زندگی بنتی ہے۔ گیتا میں بھی نشکام کرم (निष्काम कर्म) یعنی تمنّائے جزا سے ما فوق عمل کی تلقین کی گئی ہے۔ رہنا بھی چاہے تو بھی کوئی شخص بے عمل نہیں رہ سکتا۔ جس سماج کا وہ فرد ہے اس کے ساتھ اس کو تعلّقات استوار کرنا پڑتے ہیں۔ تعلّقات کو صحیح سطور پر استوار کرنے کے لیے نفسیات (PSYCHOLOGY) اس کا ہاتھ بٹا سکتی ہے۔

شروعات فنطاسی (PHANTASY) جس کو عام زبان میں واہمہ کہتے ہیں، سے کی جائے۔ دماغ ہمیشہ عرصۂ تگ و تاز رہتا ہے۔ ایک سیکنڈ بھی ہمارے اندر کا بحرِ بے کراں بے تموّج نہیں رہ سکتا۔ کیا کبھی آپ نے غور کیا ہے کہ واہمہ بہت بڑی توانائی کا سرچشمہ بھی ہے۔ اگر آج کل کی اصطلاح میں بات کی جائے تو "واہمہ" کو IN-BUILT COMPUTER (درونی کمپیوٹر) اور IN-BUILT STABILIZER (درونی استحکام کار) دونوں سے بھرپور سرچشمۂ توانائی کہا جاسکتا ہے۔ دُنیا کے بڑے ٹیڑھے مسئلے واہمہ سے منکشف ہوتے رہے ہیں۔ مثال کے طور پر، آئنس ٹائن (EINSTEIN) نیوٹن (NEWTON) کے نظریات سے پڑھتے پڑھتے ایٹم (ATOM) اور ایٹم میں پائے جانے والے توانائی کے ذخائر تک جاپہنچا۔ لیبارٹری میں تجربات کرتے کرتے عاجز آچکا تھا کہ یکایک واہمہ میں اس راز کے تمام جہات و ابعاد یکایک چمک اٹھے۔ نظریۂ اضافیت (THEORY OF RELATIBILITY) وضع ہوگیا۔ سائنس ہی کیا، ہر شعبۂ حیات میں عمیق جائزہ لینے پر واہمہ کی کارگزاری نظر آتی ہے۔ شاعر تلاشِ لفظ و معنی کاوشِ ترتیب و اسلوب وغیرہ میں بسا اوقات کھو جاتا ہے۔ کبھی فکر و تخیّل کو خیرباد کہنے کی غرض سے کسی دوسرے کام پر لگ جانا چاہتا ہے۔ اس کے بعد خاصے طویل وقت کے بعد سراب واہمہ مطلوبہ لفظ و معنی کو سامنے لے آسکتا ہے۔ تجزیہ اس صورتِ حال کے متعلق یہی بتاتا ہے کہ ذہنی ارتکاز درماندہ ہوکر واہمہ میں پہنچ جاتا ہے، جہاں کی طلسم کاری فضا اس کی اعانت کرتی ہے۔ اس امر سے ماہرینِ نفسیات، بشریات، کیفیات وغیرہ نے یہ نتیجہ نکالا ہے کہ فنطاسی کو بہتر یہ ہے کہ CREATIVITY یعنی "تخلیقیت" کہا جائے۔ کیٹس (KEATS) نے اپنے ایک خط میں اسے CREATIVE SEGMENT OF PERSONALITY یعنی شخصیت کا ایک تخلیقی قوس کہا ہے:

الغرض، فنطاسی وہ ظلمات ہے جس میں سے وجدانی لمعات بھی ابھرتے ہیں اور شاید اسی لیے ایک امریکی عالم نفسیات نے فنطاسی کو "وجدانی خطّہ" (INTUITIVE REGION) بھی کہا ہے۔ بات یہیں ختم نہیں

بیروباری، گوہاٹی ۷۸۱۰۱۴

ہوتی۔ فنطاسی کو خدائی سائکی کا ذخیرہ (RESERVOIR OF THEOPSCHE) بھی کہا گیا ہے۔ ضروری یہ ہے کہ اس ذخیرے کو آلودگی سے بچایا جائے۔ ہر چند کہ یہ مشکل کام ہے مگر تعلیم و تنظیم نیز ماحول کے صحیح ذرائع استعمال کرتے ہوتے سائکی کو غلط روی سے بچایا جاسکتا ہے مگر اس پر تالا بندی نافذ کرنے سے فرد دشمن ہی نہیں بلکہ سماج دشمن نتائج بھی برآمد ہو سکتے ہیں۔ غالباً اقبال نے نیک صلاح دی ہے:

بہتر ہے دل کے پاس رہے پاسبانِ عقل
لیکن کبھی کبھی اسے تنہا بھی چھوڑ دے

تنظیم نفسیات سے ہم انسانی جذبات و محرکات (EMOTIONS & MOTIVATIONS) کا بھرپور جائزہ لے سکتے ہیں۔ ایک بڑی دلچسپ کہاوت ہے کہ خریدار اور مجرم اپنے جذبات سے پکڑے جاتے ہیں (CONSUM-ERS AND CRIMINALS ARE CA-UGHT BY THEIR EMOTIONS) - جذبہ کہتے کس کو ہیں۔ ایسا نہیں ہے کہ اس کا مفہوم مشکل ہے۔ اس کے برعکس معنی ہیں MEN-TAL RELAXATION - یعنی ذہنی تفریح کی اصطلاح استعمال ہوتی ہے۔ لہٰذا 'جذبہ کو کم از کم ذہنی تموّجات تو سمجھا ہی جاسکتا ہے۔ ذہنی تموّجات کے محرکات کیا ہوتے ہیں اور کیا ہو سکتے ہیں اس کو سماجی تناظر میں صالح سطور پر استوار کرنے کے لیے کیا کرنا چاہیے اس طریقہ کار (MODALITY) کو نفسیات ہی کے مطالعہ سے معلوم کیا جاسکتا ہے۔ مثال کے طور پر' ہندوستان کثیر المذاہب ملک ہے لہٰذا ہر فرد و جماعت کو اپنے جذبات پر اتنا کنٹرول تو ضرور لازم آتا ہے کہ ہم یہ سمجھ سکیں کہ کہیں ہمارا کوئی فعل دوسروں کے جذبات کو مجروح نہیں کر رہا ہے۔ ہمیں دوسروں کے جذبات پر گہری نظر رکھنے کی ضرورت کو بھرپور ڈھنگ سے سمجھنا چاہیے۔ ہر شخص اپنی پسند اور ناپسند رکھتا ہے۔ یہ نکتہ ذہن نشین کرنے کے قابل ہے کہ اپنی پسند کی تعریف سے ہر شخص کو مسرت ہوتی ہے۔ ایک عالم نفسیات نے ایک واقعہ کا ذکر کیا ہے جو خاصا اہمیت کا حامل ہے۔

ایک بار رجسٹری کے ذریعے ایک پیکٹ ارسال کرنے کے لیے وہ پوسٹ آفس گیا۔ کاؤنٹر کے سامنے لمبی قطار رجسٹری کرانے والوں کی تھی۔ اگر قطار میں شامل ہو جاتا تو اس کو کم از کم ایک گھنٹہ کھڑا رہنا پڑتا اور وہ اپنے آفس میں وقت پر نہ پہنچتا۔ کیا کیا جائے؟ یہی سوچتا ہوا وہ ایک طرف قطار سے ہٹ کر کھڑکی کے پاس کھڑا ہو گیا۔ وہ کلرک کی جانب دیکھتا رہا، جو اپنے کام میں مشغول تھا مگر بار بار اپنے رومال کو سر پر پھیر لیتا۔ اس کے بال فی الواقع خاصے رکھ رکھاؤ کا پتہ دے رہے تھے۔ بس پھر کیا تھا' ماہر نفسیات کو کلرک کے VANITY POINT یعنی بغایت عمیق پسند کے نقطے کا پتہ چل گیا' اور اس نے بڑی دبی زبان سے کہا کہ "تعجب ہے کہ کام میں انہماک اور مشغولیت کے باوجود آپ اپنے بالوں پر توجہ صرف کر لیتے ہیں ورنہ اس اسلوب کے بال رکھنا آسان نہ ہوتا مزید برآں آپ کے بالوں کا اسٹائل حسنِ مذاق کا بھی آئینہ دار ہے"۔ کلرک نے سر اٹھایا اور مسکراتے ہوئے جواب دیا کہ "شکریہ واقعی میرے بال بہت اچھے ہیں اور میں نے توجہ بھی صرف کی ہے' آپ نے بجا فرمایا"۔ اس کے بعد وہ پھر اپنے کام میں مشغول ہو گیا۔ آٹھ دس منٹ کے بعد کلرک نے دریافت کیا کہ "آپ کو کیا رجسٹری کرانا ہے' لائیے"۔ ماہر نفسیات کو کامیابی ہاتھ آ ہی گئی اور اس نے اپنا کام نفسیاتی رگ کو چھو کر کرا لیا۔ اگر ہم بھی اس "گُر" پر عمل پیرا ہونا سیکھ جائیں تو کچھ نہ کچھ تو کامیاب ہو ہی سکتے ہیں۔ یہاں قدرے مزید صراحت درکار ہے۔ کسی کے قلبی ذوق و شوق (VANITY POINT) کی تعریف کرنے میں ایک احتیاط لازم ہے۔ اس بات کا لحاظ رکھنا ضروری ہے کہ تعریف چاپلوسی معلوم نہ ہو ورنہ چرب زبانی کام بگاڑ دے گی۔ اور اگر' آپ کسی نااہل کی تعریف کرتے ہیں تو بھی مصیبت لاحق ہو سکتی ہے۔ اُردو کے شاعروں اور افسانہ نگاروں سے احتیاط برتنے کی ضرورت ہے۔ اگر آپ نے تعریف کر دی تو ہو سکتا ہے کہ آپ کو غزل پر غزل اور افسانے پر افسانے سُننا پڑیں یہاں تک کہ آپ کا سر ہی چکرانے لگے۔

ایک نکتہ اور دیکھیے۔ اگر کسی کی بات سے آپ کو اتفاق نہ ہو تو بھی آپ یہ کہنے سے ضرور پرہیز کیجیے کہ آپ کی رائے غلط ہے' آپ کچھ نہیں جانتے وغیرہ وغیرہ۔ اس قسم کے جواب سے آپ دوست کو بھی گنوا سکتے ہیں۔ کہا گیا ہے کہ:

"IT IS BETTER TO LOSE AN ARGUMENT THAN A FRIEND."

یعنی دلیل سے دوستی زیادہ بڑی نعمت ہے۔ دوست کو کھو دینا بُرا ہے' دلیل بیکار جائے تو کوئی حرج نہیں۔ آپ یوں بھی کہہ سکتے ہیں کہ

"آپ کا فرمانا دُرست ہے مگر میری اس بات پر بھی غور فرمائیں اور مجھے استفادہ کا موقع فراہم کیجیے کہ میں کہاں تک دُرست ہوں"۔ اس نوعیت کا جواب آپ کے موقّف کو پیش بھی کرے گا اور غالباً بازی بھی آپ کے ہاتھ رہے گی کیوں کہ دوسرے کے احساس کو کوئی گزند نہ پہنچے گا۔

زندگی میں تصادمات سے بھی واسطہ پڑتا ہے اور مصلحت اندیشیوں کو بھی خیرباد نہیں کہا جاسکتا۔ دوسروں کو سمجھنے کے لیے خود کو سمجھنا ضروری ہے۔ بقول اقبالؔ:

اپنے من میں ڈوب کر پاجا سراغِ زندگی
تو اگر میرا نہیں بنتا نہ بن اپنا تو بن

منفی اور مثبت (NEGATIVE & POSITIVE) رویّے ژرف بینی ہی کے توسّط سے مطالعے میں لائے جاسکتے ہیں۔ کائر کیگار نے کیسی صالح بات کہی ہے کہ:

"LIFE CAN ONLY BE UNDERSTOOD BACKWARDS BUT IT MUST BE LIVED FORW-ARDS."

زندگی صرف پیچھے کی طرف مڑ کر نظر کرنے ہی پر سمجھی جاسکتی ہے مگر زندگی آگے کی جانب کاوشوں ہی میں بسر کی جانا چاہیے ہندوستان کے پس منظر میں، اس نکتے کو یوں بھی پیش کیا جاسکتا ہے کہ رامائن، مہابھارت یا خلافت راشدہ کے ادوار و حالات سے روشنی حاصل کی جاسکتی ہے مگر ادوارِ رفتہ کو واپس نہیں لایا جاسکتا۔ ہمیں اپنے مشترکہ کلچر کی وراثت اور ثقافتی اقدار کی حفاظت کرتے ہوئے ملک و قوم کو آگے بڑھانا ہے۔ درپیش مسائل کا سیکولر انداز سے حل تلاش کرنا چاہیے:

دھرا کیا ہے، بھلا عہدِ کہن کی داستانوں میں

عہدِ کہن کی داستانوں کے طلسم میں کھو جانا منفی روّیہ کہا جائے گا۔ منفی اور مثبت کے مابین خطِ امتیاز تنظیمِ نفسیات ہی کھینچ سکتی ہے۔

نفسیات کی بھول بھلیّوں سے قطعِ نظر، اس تنظیم نے زندگی کی ہر سطح کے لیے مشعلیں فراہم کی ہیں، روزمرّہ کی زندگی میں بھی اس کا بھرپور استعمال کیا جاسکتا ہے۔ اپنے آپ کو سنبھالنے (AUTO REGULATION) سے سماج کو بہتر (SOCIOREGULATION) بنایا جاسکتا ہے۔

نئی مطبوعات

دِلّی کے آثارِ قدیمہ (فارسی تاریخوں میں)
مترجم و مرتب: ڈاکٹر خلیق انجم
صفحات: ۲۹۶
قیمت: ۴۸ روپے

دِلّی کی درگاہ شاہِ مرداں
مصنف: ڈاکٹر خلیق انجم
صفحات: ۱۷۳
قیمت: ۳۳ روپے
ناشر: اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج
نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲

یہ دو نہایت وقیع، دلچسپ، معلومات افزا اور عبرت انگیز کتابیں ہیں جن کے مرتب و مصنف مشہور محقق اور انجمن ترقی اُردو ہند کے جنرل سکریٹری ڈاکٹر خلیق انجم صاحب ہیں۔ اقبال نے کہا ہے:

سواد رومۃ الکبریٰ میں دلّی یاد آتی ہے
وہی عبرت وہی عظمت وہی شانِ دلآویزی

ہندوستان کے دارالسلطنت دلّی کا یہ شاندار مرقع جو اقبال نے صرف چند لفظوں میں مرتب کر دیا ہے اس کی ٹھوس دستاویزی تشریح عصرِ حاضر میں جس شخص نے کی ہے اس کا نام خلیق انجم ہے۔ یہ تشریح ایک بہت بڑا علمی کارنامہ ہے جس سے تاریخ کے اوراق منقش ہو کر ہماری نگاہوں کے سامنے آجاتے ہیں۔

پہلی کتاب کے نام سے ہی ظاہر ہے کہ وہ شاہجہاں آباد (دلّی) کے ان مقامات کا نقشہ کھینچتی ہے جن کے چپے چپے پر انسان کے عروج و زوال کی داستانیں رقم ہیں۔ اس نقشے کے نقوش ڈاکٹر انجم نے بڑی محنت، دیدہ ریزی اور دیدہ وری سے کام لے کر مختلف پرانے تذکروں نیز ذاتی مشاہدات سے فراہم کیے ہیں۔ اس مقصد کے لیے انھوں نے کتابوں سے کتبوں، مسجدوں سے مقبروں، قلعوں سے میناروں اور دروازوں سے فصیلوں تک مطالعہ کیا ہے۔ بازاروں، مدرسوں اور درگاہوں پر بھی نظر ڈالی ہے، اگرچہ وہ ایک محققانہ شان سے صرف فارسی تاریخوں کے ترجمے و ترتیب کا دعوا کرتے ہیں: نمونے کے طور پر چند مقامات کے نام یہ ہیں:

سلطان رضیہ کا مزار، درگاہ قطب الدین بختیار کاکی، حضرت نظام الدین اولیا کا مزار، امیر خسرو کا مزار، درگاہ حضرت شیخ نصیر الدین چراغ دہلی، مقبرہ ہمایوں، لال قلعہ، جامع مسجد، موتی مسجد، زینت المساجد، مقبرہ صفدر جنگ، دیوانِ عام، قطب مینار، مسجد قوۃ الاسلام، چاندنی چوک۔ بیانات کے علاوہ متعدد آثارِ قدیمہ کی تصاویر بھی کتاب میں دی گئی ہیں۔ جو گویا ماضی کا نگارخانہ ہیں۔

دوسری کتاب دلّی کے آثارِ قدیمہ میں سے ایک خاص مقام، درگاہ شاہِ مرداں کے بارے میں ہے اور اس میں بھی مصنف نے زبردست علمی کاوش اور تحقیقی تفتیش کا ثبوت دیا ہے۔ اس کتاب کی چند مندرجات سے اس کے قیمتی مواد کا کچھ اندازہ ہو سکتا ہے:

جور باغ۔ کربلا۔ ماہ خانم کی قبر، اشرف بیگ خاں کی قبر۔ نواب قدسیہ اور نواب جاوید خاں۔ قدم مبارک۔ بی بی فاطمہ کی چکّی۔ مرزا نجف خاں اور ان کا مقبرہ۔ صفدر جنگ۔

اس کتاب کے مطالعے سے معلوم ہوتا ہے کہ ڈاکٹر خلیق انجم عام آثار کا ایک عمومی جائزہ لینے کے علاوہ کسی خاص مقام کی تفصیلی جزئیات کا مشاہدہ بھی گہری نگاہ سے کرتے ہیں۔ یہ بہت عرق ریزی اور دیدہ ریزی کا کام ہے اور اس کے لیے جس قسم کی پتّہ ماری کی ضرورت ہے وہ ایک ماہرِ فن ہی پوری کر سکتا ہے۔ اسی سلسلے میں کرنل بشیر حسین زیدی صاحب، سابق وائس چانسلر علی گڑھ مسلم یونیورسٹی نے جن تاثرات کا اظہار کیا ہے وہ بالکل صحیح ہیں:

"ڈاکٹر خلیق انجم کا ذوقِ فنِ تعمیر ترقی کرتے کرتے یہاں تک پہنچ گیا کہ انھیں آثارِ قدیمہ کی تعمیر میں دلچسپی پیدا ہو گئی۔ اس فن پر انھوں نے اتنا کچھ پڑھا ہے کہ اب ان کی حیثیت آثارِ قدیمہ کے ماہر کی ہو گئی ہے۔"

جس "ذوقِ فنِ تعمیر" کا ذکر کرنل صاحب نے کیا ہے وہ انجمن ترقی اردو ہند کے اردو گھر کی دلی میں تعمیر سے تعلق رکھتا ہے اور یہ واقعہ ہے کہ اردو گھر تنہا ڈاکٹر خلیق انجم کا کارنامہ ہے، جس کی وجہ سے راقم السطور انھیں "معمارِ اردو" کہتا ہے۔

دونوں کتابوں کے آخر میں کتابیات اور اشاریات بھی ہیں جن سے ان کے تحقیقی افادے

میں اضافہ ہو گیا ہے۔

کتابت، طباعت، کاغذ، جلد، سرورق عمدہ واعلیٰ اور معیاری و مثالی ہیں۔

_______ عبد المغنی

اُردو میں کلاسیکی تنقید

مصنّف : پروفیسر عنوان چشتی

قیمت : ۴۸ روپے

ملنے کا پتہ : مکتبہ جامعہ، جامعہ نگر، نئی دہلی ۱۱۰۰۲۵

عنوان چشتی، اُردو تنقید اور تحقیق کی دنیا کا ایک معتبر نام ہے۔ اور ان کی کتاب "اُردو میں کلاسیکی تنقید" تنقید کا ایک مستند کارنامہ۔ انھوں نے بجا طور پر لکھا ہے کہ "اگر تنقید کا کام کھرے اور کھوٹے کو الگ الگ کرنا ہے اور تحقیق کا کام اثباتِ حق ہے تو میں کہوں گا کہ میں نے اس کارِ خیر سے عہدہ برآ ہونے کی کوشش کی ہے۔ اُردو تنقید کے قدیم دبستان میں تنقید اور تحقیق میں کوئی امتیاز نہیں ہے۔ یہاں تنقید تحقیق ہے اور تحقیق تنقید" (مقدمہ پیمانۂ صفات : ص ۱۰) پوری کتاب کے ہر باب میں یہی زاویۂ نظر کارفرما ہے۔ کتاب کی ورق گردانی کے بعد یہ بات وثوق سے کہی جا سکتی ہے کہ یہ کتاب تجزیاتی انداز، تحقیقی طریقۂ کار، معروضی اندازِ نظر اور دل نشیں اندازِ بیان کا شاہ کار ہے۔ اُردو نقاد اکثر ژولیدہ بیانی اور غیر دلچسپ اندازِ بیان کا شکار ہیں۔ لیکن پروفیسر عنوان چشتی علمی مسائل اور دقیق رموزِ فن کو سادہ و سلیس اور وضاحتی اسلوب میں بیان کرتے ہیں۔ وہ مولانا حالی کی نثری وراثت کے سچے امین ہیں۔ اس لیے ان کی تنقید کی زبان ایک طرف علمی ہوتی ہے اور دوسری طرف عام فہم اور ترسیل کے عناصر کی حامل۔۔۔۔ جہاں تک کتاب کے مباحث کا تعلق ہے۔ یہ دو قسم کے ہیں۔ ایک نظریاتی اور دوسرے عملی۔ یہ کہنا زیادہ موزوں ہوگا کہ موصوف نے قدیم اردو تنقید کے اصولوں کی بازیافت کر کے اردو شاعری اور فن پر ان کا اطلاق کیا ہے۔ اور نئے نتائج پیش کیے ہیں۔ اس لیے ان کی تنقید اور تحقیق کا چولی دامن کا ساتھ ہے۔ فی زمانہ اُردو میں تنقید لکھنے والے مغربی مفکرین کے اقوال سے اپنی تحریروں کو سجاتے ہیں۔ اور فن پارے سے زیادہ اس کے پس منظر یا پیش منظر پر گفتگو کرتے ہیں۔ پروفیسر عنوان چشتی نے تنقید کے متعدد دبستانوں کی خوبیوں اور خرابیوں سے بحث کی ہے اور اُردو تنقید کے قدیم دبستان کی ضرورت اور اہمیت پر اظہارِ خیال کرتے ہوئے لکھا ہے: "اردو کی کلاسیکی تنقید کا انحصار عربی و فارسی شعریات پر ہے۔ اور عربی و فارسی شعریات کا دائرہ علمِ بدیع و بیان اور معانی نیز علمِ عروض و قواعد اور قوافی پر محیط ہے۔" اساتذۂ سخن نے ان علوم اور اپنے تجربوں سے بعض اصول وضع کیے، جو محاسنِ سخن اور معائبِ سخن کے نام سے یاد کیے جاتے ہیں۔ عنوان چشتی صاحب نے انہی اصولوں کی روشنی میں جدید شاعری کے بعض پہلوؤں پر خیال انگیز گفتگو کی ہے۔ اس کتاب میں اس سلسلے کے تین ابواب ہیں۔ اصلاحِ سخن اور مسائلِ فن، آبرا احسنی : نظریۂ فن اور عملِ تنقید۔ جوش ملسیانی : نظریۂ فن اور عملِ تنقید۔ ان ابواب میں انھوں نے اصلاحِ سخن سے پیدا ہونے والے علمی، عروضی اور فنی نیز لسانی مسائل کا تجزیہ کیا ہے اور اُردو میں اصلاحِ سخن کی روایت کو صحیح تناظر میں پیش کرنے کی کوشش کی ہے۔ اسی نوعیت کا ایک اور باب ہے جو "نقد معائب" کے عنوان سے ہے۔ جس میں اُردو شاعری کے بعض عیوب مثلاً تعقید اور شتر گربہ پر نئے مواد کی روشنی میں بحث کی ہے۔ اور نئے شاعروں کے چلتے ہوئے اشعار پر ان کا اطلاق کیا ہے۔ اس کے علاوہ عروضیات پر چند ابواب ہیں۔ جن میں مراثیِ دبیر کا عروضی جائزہ۔ اور وتدِ مجموعی اور مفروقی املائی امتیاز ہے۔ عنوان چشتی صاحب نے عروضی تجزیے کے میدان میں اپنا گہرا نقش چھوڑا ہے۔ اس ضمن میں ان کے کئی مضامین اور مقالوں کا حوالہ دیا جا سکتا ہے۔ انھوں نے ثابت کیا ہے کہ دبیر نے پانچ بحروں کے نو (۹) اوزان میں ۳۶۶ مرثیوں کی تخلیق کی ہے۔ اور سوال اٹھایا ہے کہ ایسا کیوں ہے؟ انھوں نے مرثیے اور مجلس کے تعلق کی روشنی میں اس مسئلے پر اظہارِ رائے کیا ہے۔ وتدِ مجموعی اور مفروقی کی بحث پہلی بار اُردو میں اتنی جامعیت کے ساتھ ملتی ہے۔ انھوں نے اردو کے کئی معروف عروضیوں کو اس میدان میں ٹوکا ہے۔ اس کتاب کا ایک اور خیال انگیز باب "اُردو اور ہندی غزل کا عروضی جائزہ" ہے۔ اس میں موصوف نے اردو غزل میں برتے جانے والے ہندی چھندوں کو تلاش کیا ہے۔ اور ہندی غزل میں استعمال کی جانے والی عربی و فارسی بحروں کی نشاندہی کی ہے۔ اس اندازِ نظر سے ایک طرف موصوف کی ہندی اُردو عروضیات پر گہری نظر کا پتا چلتا ہے۔ اور دوسری طرف ہندوستان کی مشترکہ تہذیب کی طاقت کا احساس ہوتا ہے۔ بہرحال اس کتاب کا ہر باب اپنی جگہ شعر و فن کے کسی نہ کسی گوشے کو منور کرتا ہے۔

اس کتاب کے بارے میں یہ کہنا غلط نہیں

کرپاتی جو اردو شاعری کی ایک مستند دستاویز ہے جس کا مطالعہ ہر شاعر اور صاحب ذوق کے لیے ناگزیر ہے۔

ـــــ ماجد دیوبندی

قومی یکجہتی اور دکن دیس

مصنف: سلیم تمنائی
صفحات: ۱۹۲
قیمت: ۲۰ روپے
تقسیم کار: انجمن اشاعت اردو، دودھ پیر مکان، عیدگاہ، میسور۔

بعض کتابیں ہمیں بیک وقت علمی، ادبی اور تاریخی معلومات فراہم کرتی ہیں۔ سلیم تمنائی کی کتاب "قومی یکجہتی اور دکن دیس" کچھ اسی طرح کی کتاب ہے۔ اس میں مختلف موضوعات پر مضامین شامل ہیں۔ قومی یکجہتی صرف ایک مضمون کا موضوع ہے۔ جس میں ہندو راجاؤں اور مسلم سلاطین کی رواداری کے تذکرے ہیں۔ خصوصاً حیدر علی اور ٹیپو سلطان کے تاریخی واقعات کو نمایاں کیا گیا ہے، دراصل تمنائی صاحب نے اپنی کتاب کو میسور تک ہی محدود رکھا ہے۔ کتاب کے دوسرے مضمون میں میسور کے ان شعراء کا ذکر ہے جو داغ دہلوی کے شاگرد تھے۔ ایک اور مضمون میں میسور کے شعراء کے کلام پر اساتذۂ سخن کی دی ہوئی اصلاحوں کو بیان کیا ہے۔ اسی طرح دو مضامین میں عہد ٹیپو اور عہد وڈیر میں اردو کی صورت حال اور اہم ادبا اور شعراء کے سلسلے میں معلومات فراہم کی ہیں۔ ایک اور مضمون میں ریاست میسور کی اہل قلم خواتین کا تذکرہ ہے۔ کتاب کے آخر میں مشاہیر اردو کے وہ خطوط شامل ہیں جو میسوریوں کے نام لکھے گئے ہیں۔ زیر تبصرہ کتاب کا ایک مضمون بعنوان "کنڑی زبان پر اردو کا اثر" اس اعتبار سے بہت اہم ہے کہ اس میں اردو کے ان الفاظ کی نشاندہی کی گئی ہے جو کنڑ زبان میں شامل ہیں۔

سلیم تمنائی نے ریاست میسور کی اردو خدمات کے بارے میں مختلف رسائل میں کافی کچھ لکھا ہے۔ یہ کتاب بھی ان کے مخصوص موضوع کے مضامین کا ایک مجموعہ ہے۔ میری ناچیز رائے ہے کہ اگر کتاب کا نام "قومی یکجہتی اور دکن دیس" کے بجائے "کرناٹک اور اردو" ہوتا تو زیادہ مناسب معلوم ہوتا، خود موصوف کی رائے بھی کتاب کے بارے میں یہی ہے:

"ناچیز کے یہ مضامین کرناٹک میں پوری اردو تاریخ نہ سہی اس کے [illegible] چند باب ضرور ہیں مختصر۔"

ـــــ ڈاکٹر ابن کنول

سمندر در سمندر

شاعر: قیس رامپوری
صفحات: ۱۲۵
قیمت: ۴۰ روپے
پبلشر: صدف پبلیکشنز، ۹۹۸۔ راجان اسٹریٹ، فراش خانہ، دہلی ۱۱۰۰۰۶

دیے جلانے کی رسمیں بھلا چکے شاید
ہمارے شہر میں انسان جلائے جاتے ہیں

قیس رامپوری نئی نسل کے نمائندہ شاعروں میں ہیں جن کی نظر تاریخ کے سرد و گرم کے ساتھ عصری صورت حال پر بھی ہے۔ یہ امر قابل ذکر ہے کہ موجودہ دور کے حساس شاعروں نے زندگی کی ناکامیوں کے باوجود جذبات اور احساسات کے جو پھول غزل میں کھلائے ہیں ان کی خوشبو ہر خاص و عام [illegible] پہنچی ہے۔ نئی حسیت کا ذائقہ قیس کے یہاں بھی ملتا ہے۔ جرأت اور بے باکی ان کا بھی طرۂ امتیاز ہے۔ ان کے کلام میں غزل کی صحت مند روایت کا پاس بھی ہے اور موجودہ سیاسی اور سماجی صورت حال کی عکاسی بھی۔ اقتصادی ظلم و ستم سہنے والے انسانوں کے حالات پر شاعر کی تڑپ، معاشی نظام کا کھوکھلا پن "سمندر در سمندر" کی غزلوں اور نظموں میں نمایاں طور پر سامنے آتا ہے۔ ان کے کلام میں جگ بیتی آپ بیتی بن کر شعر کے سانچے میں ڈھل جاتی ہے۔ عصری درد و کرب اور کرو ریا شاعر کے ذاتی تجربات بن کر شعر اور نظم کے پیرائے میں بیان ہوتے ہیں۔

مذکورہ بالا کیفیات کے ساتھ محبت کے جذبات بھی نئے انداز میں پیش کیے گئے ہیں۔ چند اشعار ملاحظہ ہوں۔

نئی بہار کی زندہ مثال اس کا بدن
مہکتے لمحوں کا بے عیب ترجمان ہے وہ

دل کے زخموں کو بھی ممکن ہو تو دیکھو ورنہ
چاند سے چہرے بہت پھول سے رخسار بہت

شاید کسی سائے کی لطافت میں لٹا ہے
وہ شخص جو تپتے ہوئے صحرا میں کھڑا ہے

اب اس بہار کو کس نام سے پکاریں ہم
کہ شاخ شاخ پہ خنجر سجائے جاتے ہیں

نظموں کے دو بند بھی ملاحظہ ہوں۔

یہ خون اور آگ کا سیلاب جس نے چہروں سے
گلال رنگ ــــ ہنسی کا لہو نچوڑ لیا
مہکتے جسموں کی دوشیزگی کو نوچ لیا
نگینہ جیسی جواں عصمتوں کو لوٹ لیا

(کہاں پر دم لے گا)

ہر آنے والے کو بھائے
جیسے اس کا پریتم آئے
زخموں سے دل چُور ہے لیکن
پیٹ کی خاطر یہ مسکائے

(طوائف)

یہ اجتماعی محسوسات کی شاعری انفرادی جذبے کی شکل میں قیس کے کلام کو نکھارتی ہے۔ یہی ان کی شاعری کا خاص وصف ہے۔

ــــــــ (ڈاکٹر) مجیب الاسلام

جہیز کی لعنت

شاعر: الحاج حافظ محمد ایوب قمر واحدی
صفحات: ۴۸
قیمت: ۳۰ روپے
ناشر: موڈرن پبلشنگ ہاؤس ۹ گولا مارکیٹ، دریا گنج، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲۔

بلاشبہ سائنس اور ٹیکنالوجی نے حیاتِ انسانی کے لیے بہت راحتیں دی ہیں مگر اس کے ساتھ ساتھ زہر آلود فضا کو بھی جنم دیا ہے موجودہ دور میں آج کا انسان سکھ کا سانس نہیں لے سکتا، وہ ہر روز مرتا ہے اور پیدا ہوتا ہے۔ سکونِ قلب اکثر میسر نہیں ہوتا، ہندوستان ان گنت مراحل، مشکلوں، بیماریوں اور بدعنوانیوں کا شکار ہے، رشوت خوری، خوں ریزی، ڈاکہ زنی وغیرہ یہاں عام ہیں، مگر نہایت بدترین بدعت ہندوستان میں جہیز کی لعنت ہے، ہر روز معصوم لڑکیوں کی مانگ کے سندور نذرِ آتش ہوتے ہیں۔ لڑکوں کے والدین روپے کو ہی سب کچھ سمجھتے ہیں اور اگر لڑکی والے لڑکوں کے والدین کے دامنِ حرص کی تشفی نہیں کرتے تو انھیں اپنی لڑکیوں کو زندہ درگور دیکھنا پڑتا ہے۔

قمر واحدی نے جہیز کی لعنت کو منظوم کا روپ دے کر نہ صرف سماجی برائی کو مؤثر انداز سے اُجاگر کیا ہے بلکہ اہلِ ہند کو دعوتِ فکر بھی دی ہے اور دعوتِ عمل بھی۔ کاش یہ کتاب ہندی رسم الخط میں بھی چھپے۔ کتاب کی طباعت اور کتابت خوب ہے۔

ــــــــ دلیپ بادل

ہم طرح اشعار

فروری کے شمارے میں دیے جانے والے مصرعے پر ہمیں ہمیشہ کی طرح کافی تعداد میں شعر موصول ہوئے ہیں لیکن ان میں زیادہ تر ایسے تھے جن کی بحر بدلی ہوئی تھی اور کچھ ایسے تھے جن میں ردیف قافیے کو بھی نظرانداز کر دیا گیا۔ اگر قارئین شعر بھیجنے سے پہلے مطروحہ مصرعے کو بہ غور دیکھ لیا کریں تو شاید یہ صورت پیدا نہ ہو۔

جو شعر صحیح بحر اور درست ردیف قافیے کے ساتھ موصول ہوئے ان کا انتخاب درج ذیل ہے۔ گلدستہ ان حضرات کو ارسال کیا جائے گا جن کے بھیجے ہوئے اشعار چوکھٹے میں دیے جا رہے ہیں۔

جو ملا اس نے بے وفائی کی
کچھ عجب رنگ ہے زمانے کا (مصحفی)

مرسلہ: محمد عباس خاں (صاحب گنج)، حامد مرزا (بیٹر، مہاراشٹر)۔

تیرے نازک لبوں سے سیکھا ہے
غنچہ انداز مسکرانے کا (مصحفی)

مرسلہ: ایم۔ اے۔ رزاق، صاحب گنج

غلغلہ ہے جو اُن کے آنے کا
رنگ دیکھو غریب خانے کا (جوش)

مرسلہ: ایم۔ علی، برہان پور

کہہ رہی ہے نگاہِ دزدیدہ
رخ بدلنے کو ہے زمانے کا (اختر شیرانی)

مرسلہ: محمد شوکت سمیلوی، دربھنگہ

ہے قیامت ترے شباب کا رنگ
رنگ بدلے گا پھر زمانے کا (اختر شیرانی)

مرسلہ: محمد عارف سمیلوی، مقام بارہ سمیلا، وایا گھوگھا رنوے، ضلع دربھنگہ (بہار) ۸۴۷۱۲۱

چاندنی، خامشی اور آخرِ شب
آ کہ ہے وقت دل لگانے کا (اختر شیرانی)

مرسلہ: شبینہ پروین، بھاگلپور

دیکھتے ہیں ہمیں، وہ چھپ چھپ کر
پردہ رہ جائے منہ چھپانے کا (اختر شیرانی)

مرسلہ: ابن اختر، بھاگلپور

حاصلِ عمر ہے شباب، مگر
اِک یہی وقت ہے گنوانے کا (اختر شیرانی)

مرسلہ: اصغر امام، بھاگلپور

ذرے ذرے میں بے حجاب ہیں وہ
جن کو دعویٰ ہے منہ چھپانے کا (اختر شیرانی)

مرسلہ: محمد افسر امام، بھاگلپور

تیری آنکھوں کی ہو نہ ہو تقصیر
نام رسوا شراب خانے کا (اختر شیرانی)

مرسلہ: جمیل اختر، بھاگلپور

حاصلِ بزمِ رنگ و بو کیا ہے
حسن ہے اُن کے مسکرانے کا (نور تقی نور)

مرسلہ: پرویز عالم چمن، میرٹھ

جانے کس وقت پھیر لے نظریں
کیا بھروسہ ہے اس زمانے کا (جمیل اخلاقی)

مرسلہ: میر شفقت علی وفا، فیروز آباد

اپنے غم سے ہمیں نہیں فرصت
کیا کہیں حال ہم زمانے کا (مقصود عالم)

مرسلہ: حافظ شفاعت علی بستوی، امام مسجد سقوں والی، رسالداران، سکندر آباد (دہلی)

کیا ہے انجام دل لگانے کا
حال پوچھے کوئی دِوانے کا (غلام انصاری)

مرسلہ: انصاری عرفان احمد، احمد آباد

حال ایسا نہ تھا دِوانے کا
تھا بہانہ انہیں بلانے کا (منصور)

مرسلہ: معبود آمر صدیقی، دربھنگہ

وعدہ کر تو گئے ہیں آنے کا
اب مقدر غریب خانے کا (مومن ...)

مرسلہ: بیگم امیرون ضیا (صاحب گنج)، شہناز (صاحب گنج)۔

فکر کھاتی ہے ہم کو گلشن کی
غم ہے بلبل کو آشیانے کا (مومن ...)

مرسلہ: محمد شہود عالم صاحب (صاحب گنج)، مظہر امام (بھاگلپور)، مسرت جہاں (صاحب گنج)، محمد ذاکر حسین (صاحب گنج)۔

جھوٹ کہتے ہو سچ سمجھتا ہوں
شوق دیکھو فریب کھانے کا (مومن ...)

مرسلہ: محمد شہنشاہ عالم شہنشاہ (صاحب گنج)، مظہر بچن (بھاگلپور)، کماری رینا پانڈے (امراوتی)۔

تیری آنکھوں سے پینے والوں نے
منہ نہ دیکھا شراب خانے کا (مومن ...)

مرسلہ: محمد واعظ الحق حکیم (صاحب گنج)، ایم شاکر حسین شاکر (صاحب گنج)، شکیل ناداں (صاحب گنج)

جو ملا اس نے بے وفائی کی
کچھ بھروسا نہیں زمانے کا (نامعلوم)

مرسلہ: جانکی دیوی گپتا، صاحب گنج

ہو مناسب تو کیجیے تجویز
کوئی عنواں مرے فسانے کا (عادل عقیل)

مرسلہ: شہناز انجم، سہارن پور

اس بار مصرعۂ طرح "سرودِ رفتہ" کی غزل سے لیا جا رہا ہے، آئندہ بھی ایسا ہی کیا جایا کرے گا۔ حالی کی اس غزل کا کوئی شعر مقابلے میں نہ بھجوائیے

مصرعہ یہ ہے:

دھوم تھی اپنی پارسائی کی

قافیہ ردیف

سرورق کے اندرونی صفحے کے لیے

موصولہ عنوانات

۱۹۸۹ء کے "ایوانِ اُردو دہلی" کے سرورق کے اندرونی صفحے پر جو تصویر چھاپی گئی تھی، اس کے لیے موصول ہونے والے شعری اور نثری عنوانوں میں سے تصویر کی مناسبت سے موزوں سمجھے جانے والے چند عنوان ذیل میں درج کیے جا رہے ہیں۔

شعری عنوانات

رنگ دکھلاتی ہے کیا کیا عمر کی رفتار بھی
بال چاندی ہو گئے سونا ہوئے رخسار بھی (ناصر کاظمی)

مرسلہ: محمد معین الدین شمسی، کھگڑے

مجھ کو تھکنے نہیں دیتا یہ ضرورت کا پہاڑ
میرے بچے مجھے بوڑھا نہیں ہونے دیتے (معراج فیض آبادی)

مرسلہ: شفیق احمد سیفی، محلہ براہیور، پوسٹ سیوہارہ، ضلع بجنور، ۲۴۶۷۴۶

اس درجہ مصائب کے جہنم میں جلا ہوں
اب کوئی بھی موسم ہو پسینہ نہیں آتا (منور رانا)

مرسلہ: احمد مرزا، پیراماؤنٹ کراکری ہاؤس، کارنجہ روڈ، ضلع بیڑ (مہاراشٹر) ۴۳۱۱۲۲

نفیس شیراز، ۱۰۷۔ نظام الدین بستی، نئی دہلی ۱۱۰۰۱۳

بن محنت کچھ ہاتھ نہ آئے ہاتھ آئے ناداری
محنت ایسا جادو جس سے ریت بنے پھلواری (رئیس اختر شوق)

مرسلہ: ایم صابر سرگم، ویلکم، صاحب گنج

صبر کی سان پہ ہوتی ہے طبیعت کو جلا
ہر بڑے کام کی تکمیل ہے خود اس کا صلا (سکندر علی وجد)

مرسلہ: مظہر شاہ پوری، شولاپور

اس جگ کے راج دُلارے ہیں
مزدور ہیں ہم مزدور ہیں ہم (مجاز)

مرسلہ: سبحان حیدر، لکھمینیاں

زندگی شغلِ آہ وزاری ہے
زندگی ایک ضرب کاری ہے
پھر بھی کیا دلکشی ہے ظالم میں
پھر بھی کم بخت کتنی پیاری ہے (زریش کمار شعلہ)

مرسلہ: محمد محی الدین، کارنجہ، آکولہ

دھواں دل سے اُٹھے چہرے تک آئے نور ہو جائے
بڑی مشکل سے آتا ہے یہ فن، آہستہ آہستہ (شاذ تمکنت)

مرسلہ: محمد آمین بھیلونوی (حکی)، مہسانہ

ہوئے جو کہ پیدا ہیں محنت کی خاطر
بنے ہیں زمانے کی خدمت کی خاطر (حالی)

مرسلہ: قاری زبیر ارشد، رحمت، نوادہ

مجھ سے بے سود نہ اے گردشِ ایام اُلجھ
مَیں نے ہر رنگ میں جینے کی قسم کھائی ہے (نامعلوم)

مرسلہ: ف۔ ع، دیوگھاٹ

سنگ دل پیار کیا کرتے ہیں خونخواروں کو
سان سینے سے لگا لیتی ہے تلواروں کو

مرسلہ: محمد سفیان فاروقی، دیوگھاٹ

میری تصویر کے یہ نقش ذرا غور سے دیکھ
اس میں اِک دور کی تاریخ نظر آئے گی (اقبال سہیل)

مرسلہ: محمد عارف اصلاحی، علی گڑھ

ناقدریٔ فن دیکھیے اب اہلِ ہنر کو
دو وقت کی روٹی بھی میسّر نہیں آتی

(انور دیوبندی)

مرسلہ: ندیم جمیل، خیر نگر، میرٹھ

زندگانی کی حقیقت کوہ کن کے دل سے پوچھ
جوئے شیر و تیشہ و سنگ گراں ہے زندگی (اقبال)

مرسلہ: شکیل ناداں، صاحب گنج

جب تک حیات موت کی زد سے بچی رہی
غم ہائے روزگار سے وابستگی رہی (قمر انصاری)

مرسلہ: صبا ناز، صاحب گنج

مضمحل واماندگی سے اور فاقوں سے نڈھال
چار پیسے کی توقع سارے کنبے کا خیال

(سیماب اکبر آبادی)

مرسلہ: کائنات مرزا، صاحب گنج

غموں کی دھوپ میں کاٹا ہے زندگی کا سفر
کوئی شجر مرے رستے میں سایہ دار نہ تھا (ممتاز راشد)

مرسلہ: شاہد مرزا، بیڑ، مہاراشٹر

مَیں نہ طوفاں سے گرا ہوں اور نہ آندھی سے جھکا
ان درختوں سے تو اونچا ہوں، بلا سے گھاس ہوں (حکیم)

مرسلہ: مظہر امام، بھاگلپور

نثری عنوانات

"شامِ زندگی" (راشد الخیری کا ناول)

مرسلہ: محمد اسلم صبا، ویشالی

"گزر اوقات" (داؤد غازی کی نظم)

مرسلہ: محمد شکیل الرحمٰن، بھاگلپور

"پیشہ" (عابد سُرتی کا ناول)

مرسلہ: محمد واعظ الحق حکیم، صاحب گنج

"تنکے کا سہارا" (شکیلہ اختر کا ناول)

مرسلہ: لبنیٰ شاہین، صاحب گنج

"دو ہاتھ" (عظیم اقبال کی کہانی کا عنوان)

مرسلہ: ترنم الماس، بتیا

"جدوجہد" (خورشید ملک کا افسانہ)

مرسلہ: محمد شہنشاہ عالم شہنشاہ، صاحب گنج۔

مشیر احمد، دہلی۔ (بقیہ صفحہ ۵۸ پر)

● جدید ہندوستان کے معمار — مولانا ابوالکلام آزاد ● مولانا آزاد کو خراجِ عقیدت ● اخترالایمان — ایک منفرد شاعر ● تحریری انعامی مشاعرہ ● تذکرہ شعرائے سکندرآباد

اُردو خبرنامہ

جدید ہندوستان کے معمار مولانا ابوالکلام آزاد

نئی دہلی — ممتاز مورخ اور اڑیسہ کے سابق گورنر جناب بشمبر ناتھ پانڈے نے تاریخ کو توڑ مروڑ کر پیش کرنے والی ذہنیت پر افسوس کا اظہار کرتے ہوئے کہا کہ قومی یک جہتی اور متحدہ ہندوستانی کلچر کو اس ذہنیت نے بہت نقصان پہنچایا ہے۔ انھوں نے سلطان ٹیپو اور اورنگ زیب کے سلسلے میں بعض ایسے تاریخی اندراجات کا ذکر کیا جو انھیں متعصب اور غیر روادار حکمراں ثابت کرتے ہیں لیکن جو محض انگریز مورخین کی ذہنی اختراع ہیں۔ ان کا اصلیت سے دُور کا بھی واسطہ نہیں۔ یہ باتیں انھوں نے ۳ر فروری کی شام کو غالب اکیڈمی نئی دہلی میں مولانا آزاد پر اردو اکادمی دہلی کے دو روزہ سمینار کا افتتاح کرتے ہوئے کہیں۔ انھوں نے کہا کہ اپنے زمانۂ طالب علمی کی نصابی تاریخی کتابیں پڑھ کر اسلام اور مسلمانوں کے بارے میں خود انھوں نے بھی کچھ زیادہ اچھی رائے قائم نہیں کی تھی۔ لیکن جب انھیں سیاسی قید و بند کے سلسلے میں نینی جیل میں مولانا آزاد کے ساتھ رہنے کا شرف حاصل ہوا اور اس موضوع پر ان سے گفتگو کے مواقع ملے تو ان کی آنکھوں سے بہت سے پردے ہٹ گئے۔ تبھی انھوں نے ہند اسلامی تاریخ کے قدیم مآخذ سے رجوع کیا اور اس نتیجے پر پہنچے کہ انگریز مورخوں نے سیاسی مقصد برآری کے لیے ملک کے دو بڑے فرقوں میں باہمی منافرت پھیلانے کی غرض سے اسلامیانِ ہند کی تصویر کو دانستہ طور پر مسخ کرکے پیش کیا ہے۔

انھوں نے کہا کہ مولانا آزاد کے 'ترجمان القرآن' میں قرآن مجید کی تعلیمات کی جو تفسیر ہے، اس سے انھیں بڑی روشنی حاصل ہوئی۔ یہ ایک قومی سانحہ ہوگا اگر مولانا آزاد کی آواز ہماری نسلوں تک نہ پہنچے۔ انھوں نے اس سمینار کے انعقاد کے لیے اُردو اکادمی دہلی کو مبارکباد پیش کی۔

اس سے پہلے تقریب کے مہمان خصوصی پروفیسر مشیر الحق وائس چانسلر کشمیر یونیورسٹی نے کہا کہ مولانا آزاد مرحوم کی زندگی کے کسی بھی پہلو کو لیجیے وہ آج بھی ہمارے لیے روشنی کا سرچشمہ ثابت ہوگا۔ یہاں میں صرف ایک پہلو کی طرف اشارہ کروں گا۔ تحریکِ آزادی کے دوران میں کئی مرحلے ایسے آئے جب مولانا کی رائے اپنے ساتھیوں سے مختلف تھی۔ لیکن انھوں نے ایسے موقعوں پر ہمیشہ اپنی انفرادی رائے رکھنے کے باوجود اجتماعی فیصلے کو بخوشی قبول کر لیا۔ آج جب معمولی معمولی سے اختلافات پر ایک جماعت کئی جماعتوں میں منقسم ہو جاتی ہے اور سیاسی افراتفری میں اضافہ کر دیتی ہے۔ اگر مولانا کی مثال کو سامنے رکھا جائے تو موجودہ سیاسی زندگی کی بہت سی خرابیاں دُور ہو سکتی ہیں۔

اُردو اکادمی کی سمینار سب کمیٹی کے چیرمین دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی نے اپنی استقبالیہ تقریر میں کہا کہ مولانا آزاد کا ذکر جب بھی آتا ہے وہ ان کے ان کارناموں کے بیان سے آگے نہیں بڑھتا جو آزادی سے پہلے کے دور سے تعلق رکھتے ہیں۔ لیکن مولانا نے آزادی کے بعد نئے ہندوستان کی تعمیر و ترقی کے لیے بھی ناقابلِ فراموش خدمات انجام دی ہیں۔ افسوس یہ ہے کہ ان کی ان خدمات کا وہ اعتراف نہیں ہوا جو ہونا چاہیے تھا۔ سرکاری ذرائع ابلاغ نے بھی اس سلسلے میں افسوسناک کوتاہی کا مظاہرہ کیا ہے۔ اس سال ان کی صد سالہ سالگرہ کی تقریبات منائی جا رہی ہیں لیکن ریڈیو یا ٹیلی ویژن نے اب تک اس سلسلے میں کوئی قابلِ ذکر کارکردگی نہیں دکھائی ہے۔

سمینار کے ڈائرکٹر ڈاکٹر شارب ردولوی نے کہا کہ مولانا آزاد کی عظیم شخصیت ایک ہمہ صفت موصوف شخصیت تھی۔ ایک دو روزہ سمینار اس عظیم شخصیت کے تمام پہلوؤں کا احاطہ نہیں کرسکتا تھا۔ اس لیے ہم نے اس کا دائرہ قدرے محدود کر دیا ہے یعنی مولانا آزاد جدید ہندوستان کے معمار کی حیثیت سے۔ یہاں بھی مولانا آزاد کے کارنامے بہت گوناگوں ہیں اور ان کی قدر شناسی بھی آسان نہیں۔ آخر میں سکریٹری اکادمی سید شریف الحسن نقوی کے شکریے پر اس دو روزہ

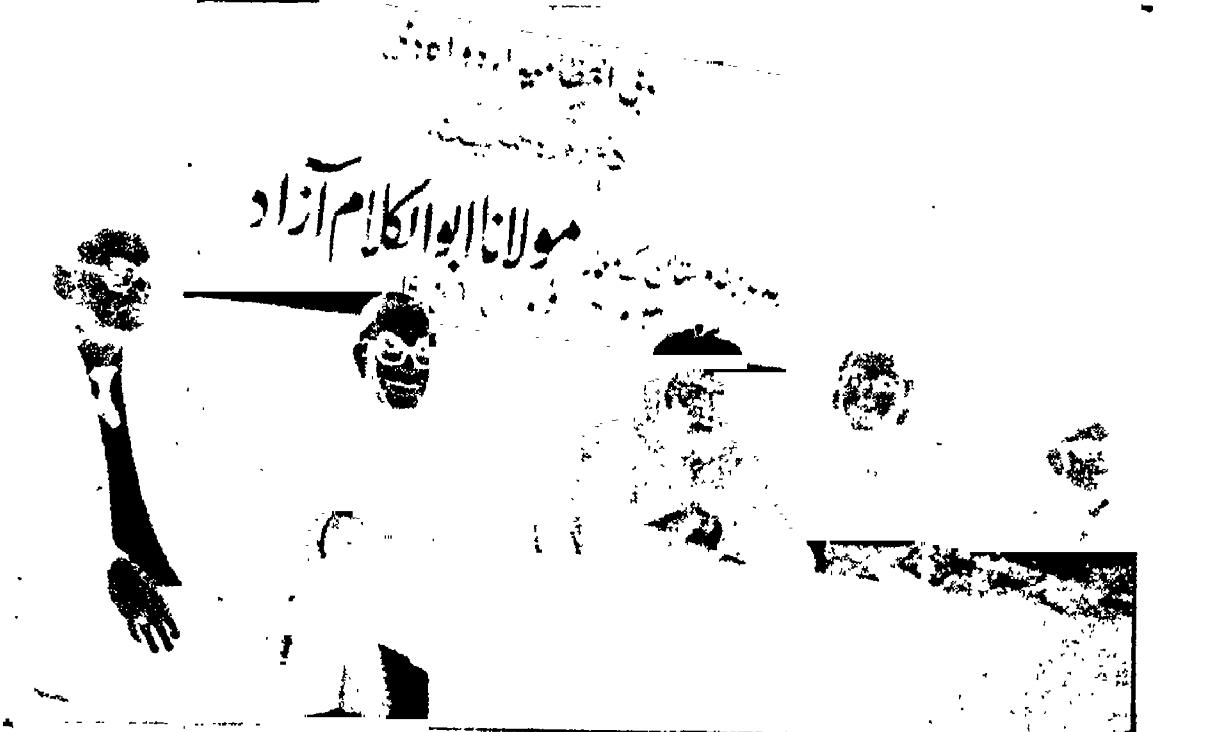
سمینار کا افتتاحی اجلاس اختتام کو پہنچا۔

۴ر فروری کو مقالہ خوانی کی پہلی نشست صبح دس بجے شروع ہوئی۔ ابتدا میں جناب دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی نے اُردو کے مشہور شاعر اور ڈرامہ نگار جناب نیاز حیدر کے انتقال پر قرارداد تعزیت پیش کی اور پورے ہال نے دو منٹ خاموش کھڑے رہ کر مرحوم کے تئیں اپنے احترام و عقیدت کا اظہار کیا۔ ڈاکٹر شارب ردولوی نے ایک بار پھر اس سمینار کی غرض و غایت پر روشنی ڈالتے ہوئے نشست کے آغاز کا اعلان کیا اور ڈاکٹر فریاد آذر کو جلسے کی کارروائی چلانے کی دعوت دی۔ اس نشست کی صدارت جناب مالک رام نے فرمائی اور اس میں پانچ مقالے پڑھے گئے۔

پہلا مقالہ ڈاکٹر اختر الواسع کا تھا۔ انھوں نے مولانا آزاد کی سیاسی تدبر کا ذکر کرتے ہوئے کہا کہ تحریک آزادی کا زمانہ ہو یا آزادی کے بعد کا زمانہ، مولانا نے قومی اور سیاسی زندگی کے ہر اہم موڑ پر گہری سیاسی بصیرت کا مظاہرہ کیا اور ملک و قوم کے قافلے کو آگے بڑھانے میں بنیادی کردار ادا کیا۔ جناب عبداللہ ولی بخش قادری نے "مولانا آزاد کے تعلیمی نظریات" سے بحث کی۔ انھوں نے "غبارِ خاطر" "تذکرہ" اور "خطبات آزاد" کے حوالوں سے کہا کہ مولانا تعلیم کو قومی ذہن کی تشکیل کا سب سے موثر وسیلہ خیال کرتے تھے۔ وہ جملہ فنونِ لطیفہ مثلاً موسیقی، مصوری، رقص، سنگ تراشی وغیرہ کو بھی قومی تعلیمی پالیسی کا حصہ سمجھتے تھے۔ اپنے تہذیبی ورثے کا عرفان و ادراک، اس کا تحفظ اور اس کی ترقی ان کے نزدیک ایک کامل قومی کردار کی تعمیر کے لیے ضروری تھا۔

جناب نثار احمد فاروقی کے مقالے کا عنوان تھا "مولانا آزاد ایک انسان، ایک دانشور" اور پروفیسر صدیق الرحمٰن قدوائی کے مقالے کا "مولانا آزاد کا اسلوب اور کلچر" فاروقی صاحب نے مولانا کو ایک عبقری قرار دیتے ہوئے ان کے علم و فضل اور ان کے تدبر و تفکر کو خراجِ تحسین پیش کیا اور قدوائی صاحب نے ان ہند ایرانی تہذیبی اثرات کی نشاندہی کی جن سے مولانا نے اپنے اسلوب کی تشکیل میں استفادہ کیا اور ایک ایسا اسلوب پیدا کرنے میں کامیاب ہوئے جس سے دوسرے اہلِ قلم متاثر ہوئے۔

پروفیسر شمیر الحق نے اپنے مقالے میں اس غلط فہمی کی مدلل تردید کی کہ آزادی کے بعد مولانا آزاد نے قومی مسائل میں دلچسپی لینا چھوڑ دی تھی۔ انھوں نے تفصیل سے بتایا کہ مولانا پیش



دائیں سے: جناب مالک رام، پروفیسر شمیر الحق، جناب شمبر ناتھ پانڈے، جناب دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی، ڈاکٹر شارب ردولوی

معاملات و مسائل پر ہندو مسلم نقطۂ نظر سے
نہیں ملکی نقطۂ نظر سے غور کرنے کے عادی تھے۔
یا پھر انہیں وسیع تر انسانی تناظر میں دیکھتے تھے۔
اور اپنے اس اندازِ نظر کو انھوں نے تا آخر تک
ترک نہیں کیا۔ لیکن اپنے زمانۂ وزارت میں مولانا
نے کئی ایسے کام کیے جن کا تعلق بالواسطہ یا بلاواسطہ
مسلم فرقے کی بحالی اور بہبود سے تھا۔

مقالات پر متعدد حضرات نے اظہارِ خیال کیا اور کچھ سوال بھی اٹھائے جن میں جناب خواجہ حسن ثانی نظامی، جناب نثار احمد فاروقی اور جناب نازؔ انصاری شامل تھے۔

صاحب صدر جناب مالک رام کے صدارتی کلمات پر مقالات کی پہلی محفل اختتام کو پہنچی۔ موصوف نے کہا کہ مولانا آزاد کے بارے میں گفتگو کرتے ہوئے یہ بات ترجیحی طور پر ذہن میں رہنی چاہیے کہ مولانا بنیادی طور پر ایک مذہبی انسان تھے۔ سیاست، خطابت، ادب اور صحافت یہ سب ان کے اضافی اوصاف ہیں لیکن وہ مولوی یا روایتی مذہب کے قائل نہیں تھے اور انھوں نے ذاتی غور و فکر کے ذریعے مذہب کو سمجھنے کی کوشش کی تھی۔

دوسری نشست میں ڈاکٹر خلیق انجم اور عبداللطیف اعظمی صاحب نے اپنے مقالے پیش کیے۔ ڈاکٹر خلیق انجم کے مقالے کا موضوع "انڈیا ونز فریڈم" اور اس کے وہ صفحات تھے جو حال ہی میں شائع ہوئے ہیں۔ ان کے اس خیال سے کہ اس کتاب کے بیانات کو مولانا آزاد سے منسوب کرنا درست نہیں، زبردست اختلاف کیا گیا اور بہت گرما گرم بحث ہوئی۔ ——

آخر میں سکریٹری اکادمی کے شکریے پر یہ دو روزہ سیمینار اختتام پذیر ہوا۔

مولانا آزاد کو خراجِ عقیدت

(۱)

ڈائرکٹوریٹ آف فیلڈ پبلسٹی، گورنمنٹ آف انڈیا اور انجمن ترقی اردو (ہند) شاخ میسور کے مشترکہ اہتمام میں فاروقیہ انسٹی ٹیوٹ آف فارمیسی کے "بوعلی سینا" ہال میں مولانا آزاد کے فکر و فن پر مذاکرہ منعقد ہوا جس میں علم نواز احباب، عمائدینِ شہر اور طلبا کا کثیر اجتماع تھا۔

تلاوت اور نعت خوانی کے بعد تسلیم تمنائی صدر انجمن نے مہمانِ خصوصی کا تعارف کرایا۔ جناب شمیم احمد فیلڈ پبلسٹی افسر نے خیر مقدمی تقریر کی۔

مذاکرے کا افتتاح کرتے ہوئے معتبر صحافی، ادیب اور بابائے اردو مولوی عبدالحق کے دیرینہ رفیق حکیم محمد امام صاحب امامی مدیر "آفتابِ اردو" بنگلور نے کہا کہ مولانا آزاد جیسی ہستیاں روز روز پیدا نہیں ہوا کرتیں مولانا کی شخصیت جامع کمالات تھی۔ امامی صاحب نے ان کی شخصیت پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا کہ سخت ترین مخالفتوں کی یلغار میں آزاد کی استقامت ذہنی متانت، ایمانی جوش، اخلاص عمل اور سب سے بڑھ کر ان کی ہمت اور جرأت اپنی مثال آپ تھی۔ مولانا ظفر علی خاں کی آزاد سے کٹر مخالفت کی تفصیلات بتاتے ہوئے امامی صاحب نے آزاد کو ایک جلیل القدر انسان اور تاریخ ساز عالم، مفکر اور بے نظیر ادیب کہا۔

میسور یونیورسٹی کے شعبۂ صحافت کے سربراہ پروفیسر سید اقبال قادری نے کہا کہ مولانا آزاد ایک بااصول انسان تھے ہندوستان کی حالیہ تاریخ کی فیصلہ کن گھڑیاں مولانا کی نظروں کے سامنے گزریں۔ استبداد برطانوی راج کو جڑ سے اکھاڑ پھینکنے کی کوششیں دعوت دیتا تھا۔ الفاظ کو منتخب، اور منضبط کرنے میں مولانا کو انوکھی مہارت حاصل تھی۔ "نیرنگ عالم" سے لے کر "ثقافۃ الہند" تک تمام جرائد کا تعارف کراتے ہوئے اقبال قادری صاحب نے کہا کہ مولانا آزاد صحافت کے بھی امام تھے۔

پروفیسر محمد ہاشم علی، شعبۂ اردو، جامعہ میسور نے اپنی صدارتی تقریر میں کہا کہ مولانا آزاد عظمت اور بڑائی لے کر پیدا ہوئے تھے۔ علم و معرفت کے دریا بہانے والے مولانا صحیح معنوں میں ایک عبقری (GENIUS) تھے۔ آزاد مرحوم اردو کی ترقی کے بھی خواہاں تھے۔ ملک ان کی علمی اور سماجی خدمات کا احسان مند ہے۔

جناب ماجد حسین اسسٹنٹ کمشنر نے ان طلبا و طالبات میں انعامات تقسیم کیے جنھوں نے مولانا آزاد کی حیات اور خدمات پر منعقدہ ضلعی سطح کے تحریری مقابلے میں امتیازی کامیابی حاصل کی تھی۔

(۲)

انجمن ترقی اردو ہند شاخ گھر دہ کے زیر اہتمام "مولانا ابوالکلام آزاد" پر ایک سیمینار منعقد کیا گیا۔ ۶ بجے شام کو سیمینار کا افتتاح ماسٹر محمد علی جان کی تمہیدی تقریر سے ہوا اس کے بعد ماسٹر حیدر علی، سکریٹری انجمن ترقی اردو ہند، شاخ گھر دہ نے مولانا موصوف کے حالاتِ زندگی پر روشنی ڈالی۔

شری کیندر یادو نے کہا کہ مولانا ابوالکلام آزاد کو سچا خراجِ عقیدت یہی ہو سکتا ہے کہ ہم سبھی ان کی باتوں پر عمل کریں۔ شری سمیندر یادو



بائیں سے دائیں: ماسٹر انور علی، ماسٹر محمد علی جان، مائیک پر پروفیسر سلیمان خورشید جنرل سکریٹری انجمن ترقی اُردو ہند شاخ مغربی بنگال

جناب شاہنواز سکریٹری انجمن ترقی اُردو ہند شاخ کلکتہ، ماسٹر محمد جلیل اسسٹنٹ سکریٹری ریاستی شاخ، جمیب الرحمٰن سکریٹری انجمن ترقی اُردو ہند شاخ ٹیٹا گڑھ نے بھی سامعین سے خطاب کیا۔

ڈاکٹر انور علی نے نظامت کی۔ صدر انجمن ترقی اُردو ہند شاخ کھردہ ماسٹر انور علی نے اپنا صدارتی خطبہ پیش کرتے ہوئے تمام حاضرین کو مولانا ابوالکلام آزاد کی زندگی سے درس لینے کو کہا۔ اور تمام حاضرین، مہمانانِ خصوصی، اراکین و منتظمین کا شکریہ ادا کیا۔ رات نو بجے سمینار اختتام پذیر ہوا۔

(محمد زاہد حسین)

اخترالایمان: ایک منفرد شاعر

۷ر فروری ۱۹۸۹ء کو شعبۂ اُردو دہلی یونیورسٹی کے زیرِ اہتمام اور اردو اکادمی دہلی کے تعاون سے ممتاز شاعر اخترالایمان کی شخصیت اور شاعری پر ایک سمینار منعقد ہوا۔ شعبۂ اُردو کے صدر پروفیسر قمر رئیس نے سمینار کے موضوع کی وضاحت کرتے ہوئے کہا کہ ہم اُردو والوں کے لیے یہ افسوس کی بات ہے کہ ہم فن کار کی قدر و قیمت کا تذکرہ اس کی زندگی میں نہیں کرتے اخترالایمان جیسے معتبر، منفرد اور ممتاز شاعر کو اب تک نظر انداز کیا جاتا رہا ہے۔ ادیبوں کی خدمات کا اعتراف ان کی زندگی میں کیا جائے تو یقیناً اس سے ادیب اور ادب دونوں کو فیض پہنچے گا۔ اخترالایمان پر یہ سمینار اسی سلسلے کی کڑی ہے۔ پروفیسر محمد حسن نے سمینار کا افتتاح کرتے ہوئے اخترالایمان کی چند نظموں کی علامتوں کی وضاحت کی۔ افتتاحی تقریر کے بعد باقاعدہ سمینار کا آغاز ہوا۔ پہلے اجلاس کی صدارت پروفیسر شمیم حنفی نے کی۔ جناب رفعت سروش نے اپنا مقالہ بعنوان "اخترالایمان چند تاثرات" پیش کیا۔ اخترالایمان سے اپنی ملاقاتوں کا ذکر کرتے ہوئے انھوں نے کہا کہ اخترالایمان نے فلموں کے لیے لکھا لیکن فلمی شہرت کی بیساکھی کا استعمال نہیں کیا۔ ڈاکٹر صادق نے اپنے مقالے "اخترالایمان کی شاعری کے سروکار" میں بتایا کہ ان کی ایک نمایاں خصوصیت محاکات نگاری ہے۔ ڈاکٹر ابوالکلام قاسمی نے "اخترالایمان کا علامتی اور طنزیہ اسلوب" پر مقالہ پڑھا۔ انھوں نے کہا کہ اخترالایمان کے کلام سے طنزیہ اور علامتی نظموں کی پوری تاریخ متعین کی جاسکتی ہے۔ ڈاکٹر عتیق اللہ نے اپنا مقالہ "اخترالایمان کی شاعری کے مضمرات" پیش کرتے ہوئے کہا کہ ان کی نظمیں میراجی کی نظموں سے مماثلت رکھتی ہیں۔ ان کی شاعری نہ سیاسی ہے نہ اخلاقی بلکہ وہ اپنے عہد کی آئینہ دار ہے۔ پروفیسر محمد حسن نے اپنے مقالے "اخترالایمان کا تصورِ نظم" میں اس بات پر زور دیا کہ اخترالایمان نے اُردو نظم کو نیا پیکر دیا۔ مقالوں پر بحث اور سوالات کا آغاز ڈاکٹر عتیق اللہ نے کیا جناب کمال احمد صدیقی، جناب رشید حسن خاں اور جناب شہاب جعفری نے بحث کو آگے بڑھایا۔ جناب رفعت سروش نے بحث میں حصہ لیتے ہوئے کہا کہ اگر میراجی نہ ہوتے تو اخترالایمان بھی نہ ہوتے۔

جلسے کے مہمانِ خصوصی جناب اعجاز احمد نے فرمایا کہ کچھ شاعر دروازے بند کردیتے ہیں اور کچھ کھول دیتے ہیں۔ اخترالایمان ان شعرا میں سے ہیں جنھوں نے نئی راہوں سے روشناس کرایا۔ آخر میں پروفیسر شمیم حنفی نے اخترالایمان کی شاعری کا جائزہ لیتے ہوئے صدارتی کلمات سے نوازا۔

سمینار کے دوسرے اجلاس کی صدارت پروفیسر صدیق الرحمٰن قدوائی نے کی۔ اس اجلاس میں ماسکو سے آئے ہوئے سوویت

ادیب سرگائی سماچوف بھی شریک ہوئے۔

ڈاکٹر عظیم الشان صدیقی نے اپنا مقالہ بعنوان "اختر الایمان اور ماضی کی بازیافت" پیش کیا۔ انھوں نے کہا کہ اختر الایمان کی نظموں میں تسلسل اور حرکت کی سی کیفیت پائی جاتی ہے۔

پروفیسر قمر رئیس نے بھی ماضی کی بازیافت کے موضوع پر اپنا مقالہ پیش کیا۔ انھوں نے کہا کہ اپنی شاعری کے ہر دور میں ان کے یہاں ماضی سے وابستگی ملتی ہے۔ لغزش، تنہائی، محرومی اس کی مثالیں ہیں۔ پروفیسر قمر رئیس نے مزید کہا کہ ان کی شاعری حقیقت سے وجدان پاتی ہے اور ماضی سے وابستگی کے سبب ان کا رویہ فلسفیانہ ہو جاتا ہے۔ رانچی یونیورسٹی کے پروفیسر شس اختر نے "اختر الایمان کے حوالے سے جمالیات کا اظہار" کے عنوان سے اپنا مقالہ پیش کیا۔

جلسے کے مہمانِ خصوصی جناب سرگائی سماچوف نے اختر الایمان سے اپنی ملاقاتوں کا ذکر کیا اور سوویت یونین میں اردو ادب کے سلسلے میں ہونے والے کام پر روشنی ڈالی۔ پروفیسر صدیق الرحمٰن قدوائی کے صدارتی کلمات کے بعد پروفیسر قمر رئیس نے تمام مندوبین کا شکریہ ادا کیا۔

(ڈاکٹر) ابن کنول

تحریری انعامی مشاعرہ

بزم معیارِ ادب کی جانب سے تحریری طرحی مشاعرے کا اعلان کیا جا رہا ہے۔ شعرائے کرام سے گزارش ہے کہ وہ اس مشاعرے میں شرکت فرمائیں۔ مصرعہ طرح:

دل سے ترے خیال گدا کون لے گیا

قافیہ ردیف

اس مشاعرے کی آخری تاریخ ۲۰ مارچ ۸۹ ہے۔ اس طرحی تحریری مشاعرے میں شرکت کرنے والے فن کاروں سے التماس ہے کہ وہ اپنا کلام مندرجہ بالا تاریخ سے پہلے ہمیں روانہ کر دیں۔

پہلا انعام: دو کامیاب غزلوں پر۔ 50/ + 50/ روپے۔

دوسرا انعام: چار کامیاب غزلوں پر۔ 25/ روپے فی غزل۔

تیسرا انعام: دس غزلوں پر۔ 10/ روپے فی غزل۔

جنرل سکریٹری۔

بزم معیارِ ادب، ہاشمیہ بک ڈپو، وزیر بلڈنگ بھنڈی بازار، بمبئی۔ ۴۰۰۰۰۳

تذکرہ شعرائے سکندر آباد

یعقوب بدر صاحب تذکرہ شعرائے سکندر آباد بعنوان "شہر تفتہ" کا دوسرا ایڈیشن تصحیح و اضافے کے ساتھ مرتب کر رہے ہیں۔ جن حضرات کے پاس سکندر آباد سے متعلق کسی قسم کی ادبی معلومات ہوں وہ ان سے عملی تعاون کے خواستگار ہیں۔

پتہ: یعقوب بدر۔ گلاؤٹھی روڈ، سکندر آباد ضلع بلند شہر ۲۰۳۲۰۵ (یو پی)

۳ر فروری کی رات دہلی میں انتقال کر گئے۔ چند ماہ قبل ان پر دل کا دورہ پڑا تھا اور اسی وقت سے وہ بیمار تھے۔ چار دن قبل ان پر فالج کا حملہ ہوا جس سے وہ جانبر نہ ہو سکے۔

نیاز حیدر ترقی پسند مصنفین کی انجمن کے روح رواں تھے۔ وہ ملک کی آزادی اور حیدر آباد میں نظام کے خلاف تحریک میں بھی پیش پیش رہے۔

انھوں نے زندگی بھر اپنے اصولوں سے گر کر سمجھوتہ نہیں کیا۔

نیاز حیدر یو پی کے شہر رائے بریلی میں پیدا ہوئے تھے۔ انھوں نے اردو میں ایک درجن سے زیادہ ڈرامے تصنیف کیے ہیں۔ انھوں نے "شکنتلا" کا اردو ترجمہ بھی کیا ہے۔

جامعہ ملیہ اسلامیہ کے قبرستان میں سوگواروں نے انھیں سپرد خاک کیا۔ ان کے جسد خاکی پر سی۔ پی۔ آئی اور دہلی اردو اکیڈمی کی طرف سے پھول چڑھائے گئے۔



رفتید و لے نہ از دلِ ما

ملک کے مشہور انقلابی شاعر نیاز حیدر

۴ر فروری کو صبح دس بجے مولانا آزاد اردو اکادمی کے دو روزہ سیمینار کے دوسرے دن کی پہلی نشست شروع ہونے کو تھی کہ یہ اندوہناک خبر ملی۔ جناب سلطان بخش تا ...

ظفر پیامی) نے جلسے کی کارروائی روک کر یہ خبر سامعین کو سنائی اور ڈاکٹر شارب ردولوی نے درج ذیل قرارداد تعزیت اُردو اکادمی کی طرف سے پڑھ کر سنائی جسے دو منٹ کی خاموشی کے ساتھ منظور کیا گیا۔

• دہلی اردو اکادمی کا یہ جلسہ اُردو کے مشہور ترقی پسند شاعر ڈرامہ نگار اور انقلابی نیاز حیدر کے اچانک انتقال پر اپنے دلی رنج و غم کا اظہار کرتا ہے۔ نیاز حیدر اردو کے منفرد شاعر تھے۔ ان کی شاعری میں جو کلاسیکی رچاؤ، استعاراتی بلاغت اور عصری پکار ہے وہ کسی دوسرے شاعر کے یہاں نظر نہیں آتی۔ وہ ایک اچھے ڈرامہ نگار تھے انھوں نے اُردو ڈرامے کو موضوع اور تکنیک کے اعتبار سے ایک نیا رُخ دینے کی کوشش کی۔ وہ ایک پُرکشش شخصیت کے حامل تھے انھوں نے اپنی شاعری ڈرامانگاری اور فکر سے کئی نسلوں کو متاثر کیا ہے۔ ان کے انتقال سے اُردو دنیا میں جو خلا پیدا ہوا ہے اس کا پُر ہونا بہت مشکل ہے۔

دہلی اُردو اکادمی اُردو دنیا کے اس سوگ میں برابر کی شریک ہے اور بارگاہِ رب العزت میں دُعا کرتی ہے کہ وہ مرحوم کو اپنے جوار رحمت میں جگہ دے اور ان کے تمام اعزا کو صبر کی طاقت عطا فرمائے۔

●

ممتاز ہندوستانی گلوکار استاد ناصر فیاض الدین ڈاگر ۷ ،فروری کو نئی دہلی میں حرکتِ قلب بند ہو جانے سے انتقال ہو گیا۔ وہ ۵۵ برس کے تھے ان کے پسماندگان میں بیوہ، ایک لڑکا اور ۳ لڑکیاں ہیں۔ مرحوم کے دو بھائی امین الدین ڈاگر اور ظہیر الدین ڈاگر بھی ملک کے مشہور گلوکار ہیں۔ وہ صبح کو اپنی رہائش گاہ پر حسب معمول ریاض کرنے کی تیاری کر رہے تھے کہ اچانک دل کا دورہ پڑا اور ان کا انتقال ہو گیا۔

فیاض الدین ڈاگر ۱۹۳۴ء میں اندور



میں پیدا ہوئے تھے اور دھرپد موسیقی میں انھوں نے اہم خدمات انجام دیں۔ جاپان، فرانس اور امریکا میں بھی انھوں نے دھرپد کی بنیاد ڈالی۔ اپنے مرحوم والد استاد نصیر الدین خاں اور بڑے بھائی استاد ناصر معین الدین سے انھوں نے تربیت حاصل کی۔

وزیر اطلاعات و نشریات مسٹر اننت کے، ایل، بھگت نے استاد ڈاگر کے انتقال پر گہرے صدمے کا اظہار کرتے ہوئے کہا کہ ہندوستانی موسیقی میں دھرپد کی صدیوں پرانی جُگل بندی کی روایت کا ایک عظیم فنکار دنیا سے چلا گیا ہے۔

○

آپ کی رائے

○ "ایوانِ اُردو" کے تازہ شمارے کے خطوط والے سیکشن میں شولاپور کے کسی صاحب نے صحیح درج کیا ہے کہ میری تحریروں میں بھی غالب کی ولادت کی تاریخ ۲۷ دسمبر ۱۷۹۷ء ملتی ہے۔

وہ پہلے کی بات تھی۔ غلط نکلی۔ تحقیق کرنے والے جن تقویم شناسوں نے بعد میں تحقیقات کی پوتھی کھولی، ہجری اور عیسوی سنین اور اوقات ملاتے، وہ اس نتیجے پر پہنچے —— اور ہمیں بھی اب یقین آگیا کہ ہم غلط، وہ صحیح :

غالب اتوار کے دن ۸، رجب ۱۲۰۸ھ / ۹، فروری ۱۷۹۴ء آگرے میں پیدا ہوئے۔

حوالہ: صمد رضوی ("صحیفہ") مولانا عرشی رام پوری، حنیف فوق (کراچی، پاکستان)۔

۹، فروری ۱۷۹۴ء ولادت: آگرہ

۱۵، فروری ۱۸۶۹ء وفات: دہلی

—— ظ۔ انصاری، بمبئی

○ فروری کا "ایوانِ اُردو دہلی" کا شمارہ ملا، جس میں آپ کا مضمون "محمد عثمان عارف نقشبندی اور ان کی شاعری" نظر نواز ہوا۔ میں نے دو دفعہ غور سے پڑھا۔ آپ نے مضمون مفصّل اور مکمل قلم بند فرمایا ہے اور میری ہر صنف شاعری کا بہت اچھا تجزیہ کیا ہے یہاں دیگر قارئین نے بھی آپ کا تبصرہ بہت پسند کیا اور جو لوگ مجھ سے ملے، اس کا انھوں نے مجھ سے ذکر بھی کیا۔ بہت بہت سراہا۔ دراصل آپ کی قابلیت کے ساتھ آپ کی محنت بھی مضمون قلم بند کرنے میں کار فرما رہی ہے۔ جس کے لیے آپ کا تہہ دل سے شکریہ۔

—— محمد عثمان عارف، لکھنؤ

○ "ایوانِ اُردو" پابندی سے پہنچ رہا ہے۔ شکریہ معیار کی جتنی تعریف کی جائے کم ہے۔ علمی ادبی دیدہ زیب جریدے کی اُردو میں جو کمی محسوس ہو رہی تھی اسے "ایوانِ اُردو" نے پورا کر دیا۔ مبارک باد قبول فرمائیے۔

—— شفیقہ فرحت، بھوپال

○ "ایوانِ اُردو" کا تازہ شمارہ نظر نواز ہوا۔ مقالات میں کمال احمد صدیقی، سیّد شریف الحسن نقوی اور محمد کمال الدّین حسین ہمدانی نے بڑی محنت کی ہے اور اپنے اپنے خیالات کو واضح انداز میں پیش کیا ہے۔ افسانوں میں اگر کوئی افسانہ ایسا ہے جو عصر حاضر کی تمام تر تلخیوں اور سچائیوں کو اپنے دامن میں سمیٹے ہوئے ہے اور جدید طرز اظہار کے باوجود واضح اور پُر اثر ہے تو —— وہ رتن سنگھ کا افسانہ "شہر آرزو" ہے۔ ایک کامیاب ترین اور بھرپور افسانہ۔ شعری حصّے میں عنوان چشتی، حفیظ میرٹھی، حسیب سوز، سلیمان خمار کی غزلیں خاص طور پر پسند آئیں۔

آپ اُردو کے معتبر ادیبوں اور شاعروں کے انٹرویو کیوں نہیں شائع کرتے۔

—— اظہر نیّر دربھنگوی، بھلائی

[1] دسمبر کے شمارے میں جناب مجروح سلطان پوری انٹرویو ملاحظہ کریں —— اِدارہ

○ یہ رسالہ اُردو زبان و ادب کے لیے ایک روشن مینار کی حیثیت رکھتا ہے۔ اس کا اپنا خاص مزاج ہے اور آپ اس پر پوری محنت صرف کر رہے ہیں۔

فروری کے شمارے میں رتن سنگھ کی کہانی "شہر آرزو" ایک کامیاب اور خوبصورت کہانی ہے۔ ایس۔ ایم۔ عبّاس کی کہانی "منظر" بھی عصر حاضر کی مُنہ بولتی تصویر ہے۔ شعری حصّہ بھی اچھا ہے۔ حفیظ میرٹھی، عنوان چشتی، حیات لکھنوی اور حسیب سوز کی غزلیں خاص طور پر پسند آئیں۔ جینت پرمار کی نظمیں بھی اچھی لگیں۔

—— نور مکتومی، سہسولی، اورائی

○ فروری کا شمارہ نظر نواز ہوا۔ "عروض معروض" کس نوعیت کا مضمون ہے اس کی وضاحت غیر ضروری ہے لیکن اس کی قدر و قیمت سے انکار نہیں کیا جا سکتا۔ مضمون نگار کمال احمد صدیقی صاحب نے گیان چند جین کے تحقیقی مقالے کے سلسلے میں بڑی متانت اور سنجیدگی سے اپنی معروضات پیش کی ہیں۔ ادبی بحث و مباحثہ اچھی چیز ہے بشرطیکہ وہ لعن و طعن سے پاک ہو۔

"محمد عثمان عارف نقشبندی اور ان کی شاعری" پڑھا، بہت عمدہ مضمون ہے یہ مضمون ذرا وہ بھی پڑھیں جو یہ کہتے ہیں کہ "جناب شریف الحسن نقوی کا اُردو زبان سے کیا تعلق ہے۔ وہ افسانہ نگار ہیں؟ شاعر ہیں؟ نقاد ہیں؟ مزاح نگار ہیں؟ صحافی ہیں؟"

—— افتخار فہیم، کٹیہار

○ "ایوانِ اُردو" کے ابتدائی شماروں میں شائع شدہ تبصروں کے لیے مبصر جتنی محنت کرتے تھے، تبصروں میں جو کاٹ ہوتی تھی وہ اب ــــ داستانِ پارینہ بنتی جارہی ہے۔ اس کی ایک مثال موجودہ شمارے میں "تقویم" پر اطہر فاروقی کا تبصرہ ہے۔ "ایوانِ اُردو" کے ابتدائی شماروں میں اطہر فاروقی صاحب نے جس محنت سے تبصرے لکھے تھے، اس تبصرے میں اس کا کہیں عکس بھی نظر نہیں آتا۔

"تقویم" ایک پاکستانی شاعر صمد انصاری کا شعری مجموعہ ہے جسے قمر قدیر ارم نے مرتب کیا ہے۔ انھوں نے شاعر صمد انصاری کے تحریر کردہ پیش لفظ جو اس کتاب میں شامل بھی ہے پورے کے پورے جملے اپنے مضمون "کیفیاتِ ارم" میں استعمال کیے ہیں مثلاً:

"اس ملوکیت نے بنو عبّاس کے زمانے میں یونانی فلسفۂ حیات کے زیرِ اثر اسلامی فکر کی بساط ہی بدل دی۔"

(پیش لفظ کا اقتباس ص ۱۱)

اور اب ارم صاحب کا جملہ ملاحظہ ہو:

"ملوکیت نے بنو عبّاس کے زمانے میں یونانی فلسفۂ حیات کے زیرِ اثر اسلامی فکر کی بساط ہی اُلٹ دی۔"

(کیفیاتِ ارم ص ۱۵)

یہ تو صرف ایک مثال تھی، زیادہ مثالوں کی یہاں گنجائش نہیں مگر موصوف کے پورے مضمون کو پیش لفظ کی تلخیص کہا جاسکتا ہے۔

ایک اور مثال:

"عطا تو کی ہے خلافت مجھے زمینوں کی
مگر سکون سے جینا محال رکھا ہے"

اس شعر میں وہ لفظ 'محال' کو بنیاد بنا کر علمی اعتراض تو کریں (یہ الگ بات ہے کہ سرسری کریں) مگر میری عقل یہ تسلیم نہیں کرتی کہ انھیں یہ معلوم نہ ہو کہ اللہ کی زمین ایک ہے۔ قرآن میں ہر جگہ صرف ایک زمین کا ذکر ہے پھر یہ زمینوں کی خلافت شاعر نے کہاں سے بنی نوعِ آدم کو ودیعت فرما دی۔ کیا مبصر وضاحت فرمانا پسند کریں گے؟

میں زیادہ تفصیل میں نہ جاکر اس امید کے ساتھ اپنا مراسلہ ختم کرتا ہوں کہ آئندہ آپ ایسے سرسری تبصرے شائع کرنے سے احتراز فرمائیں گے اور علمی دیانتداری کے پیشِ نظر میرا یہ مراسلہ بھی شائع کریں گے۔

ـــــ (ڈاکٹر) مجتبیٰ حسین، مرادآباد

○ جنوری ۱۹۸۹ء کے شمارے میں طیب انصاری کا مضمون "احمد جمال پاشا چند یادیں" بہت عجلت میں لکھا ہوا معلوم ہوتا ہے، وہ چاہتے تو اسے مزید وقیع بنا سکتے تھے۔ "شاعروں کے نرغے میں" کو آپ نے انشائیہ سے تعبیر کیا ہے، حالانکہ یہ انشائیہ تو مزاحیہ سے بالکل الگ شے ہے۔ مضمون سے پہلے آپ نے جو ادارتی نوٹ تحریر فرمایا ہے اس کی کوئی خاص ضرورت نہیں تھی۔ یہ لکھنا کہ "آخر میں وہ کچھ بجھ سے گئے تھے" صحیح نہیں ہے۔ پاشا صاحب نے آخری دور میں جو بہترین طنزیہ و مزاحیہ مضامین لکھے شاید وہ آپ کی نظر سے نہیں گزرے ہیں۔ ان کا تازہ ترین مجموعہ "چراگاہ" جو اشاعت کی منزل سے گزر رہا ہے اس خیال کی تکذیب کرے گا۔ پاشا صاحب نے ادھر اپنی صلاحیتوں کا رخ تحقیق کی جانب موڑ دیا تھا۔ ان کے تحقیقی کارنامے ابھی منظرِ عام پر آنا باقی ہیں۔ یہاں یہ بھی واضح کر دینا مناسب سمجھتا ہوں کہ "شاعروں کے نرغے میں" ان کی آخری تحریر نہیں ہے۔ آخری تحریر مجاز لکھنوی کی شخصیت سے متعلق ہے جو انھوں نے اپنے انتقال سے صرف دو روز قبل ٹھیک ٹھاک کی تھی، میں اس کا عینی شاہد ہوں۔

ـــــ (نام نہیں پڑھا جاسکا)، پٹنہ

○ انتظار کی گھڑیاں کتنی عجیب ہوتی ہیں۔ ایک ایک لمحہ صدی کے برابر ہوتا ہے۔ یہی کیفیت ہر ماہ "ایوانِ اُردو" کے لیے ہوتی ہے۔ میں نے اب تک جتنے بھی رسائل پڑھے ہیں ان سب میں "ایوانِ اُردو" منفرد ہے۔ اس رسالے کی مذمت کرنے والوں کو اللہ ہدایت دے۔

ـــــ محمد معین الدین شمسی، گانڈے، گیا، بہار

○ ماہ جنوری کے شمارے میں "اُردو خبرنامہ" کے تحت جناب بیرسٹر آصف علی مرحوم پر سیمینار کی اطلاع تھی، بہتر تھا اُن مقالوں کو بھی شائع کرتے خواہ ایک ہی سہی۔

"اُردو خبرنامہ" کے تحت صرف اندرون مُلک کی اطلاع ملتی ہے جب کہ پڑوسی ملکوں بلکہ جہاں جہاں بھی اُردو پر علمی، تحقیقی کام ہوتا ہے، سیمینار ہوتے ہیں اُن کی اطلاع و تعارف کے ساتھ اُن مقالوں کو بھی شائع کریں۔

ـــــ شیخ احمد، کریم نگر

مولانا ابوالکلام آزاد نمبر

○ مولانا آزاد کی زندگی کے گوناگوں گوشوں پر جو تفصیلات اس نمبر کے ذریعے منظرِ عام پر آئی ہیں وہ علم و ادب اور مذہب و اخلاق کے طلبہ اور اسکالرس کے لیے بڑے کام کی چیزیں ہیں۔ مبالغہ نہ ہوگا اگر یہ کہا جائے کہ آپ نے بڑی عرق ریزی اور جان کاہی سے اس نمبر کو مرتب اور مدوّن کیا ہے یہ علمی ریکارڈ سابقہ

تمام کاوشوں سے بہت آگے کی چیز ہے۔

نامی انصاری، خلیق احمد نظامی، عبدالمغنی، حامدی کاشمیری، عبدالقوی دسنوی، میر شفقت علی وفا اور محمد ضیاء الدین انصاری وغیرہ کے مضامین اپنی جگہ ایک ایک کتاب کے متقاضی تھے تاہم خوب ہیں۔

"مولانا آزاد چند ہمعصر اکابرین کی نظر میں" کے زیر عنوان واقعی چند ہی اکابر کے خیالات پیش کیے گئے ہیں۔ ذرا اور وسعت دی جاتی تو علامہ اقبال، شبلی، سید سلیمان ندوی، مولانا مودودی اور مولانا علی میاں وغیرہم کے خیالات بھی پیش کیے جا سکتے تھے۔ اس خصوص میں وہ خیالات جو مولانا مودودی نے ظاہر کیے ہیں بھیجنے کی جسارت کر رہا ہوں۔

جناب محمد فاروق اعظم کا مضمون "مولانا ابوالکلام اور مولانا مودودی (اسلوب کی روشنی میں)" خوب ہے موصوف نے اشارتاً ہی سہی بہتر تقابل کیا ہے۔ تاہم وہ چاہتے تو اپنے مضمون کو بسیط کر سکتے تھے جس کی کافی گنجائش تب بھی تھی اور اب بھی ہے۔

فاروق صاحب کے متذکرہ مضمون میں واقع ایک تسامح کی جانب اشارہ کرنا ضروری سمجھتا ہوں۔ فاروق صاحب لکھتے ہیں:

"مولانا مودودی بھی آزاد کی عظمت کا اعتراف کرتے تھے۔ مولانا مودودی کے عنفوانِ شباب کے دور میں ایک بار جہاد کے موضوع پر مولانا آزاد اپنی سحر بیانی سے لوگوں کو مسحور کر رہے تھے اور اتفاق سے مولانا مودودی بھی اس مجلس میں شریک تھے۔ مولانا آزاد کی انقلابی تقریر سننے کے بعد وہیں مولانا مودودی کے دل میں جہاد کے موضوع پر ایک کتاب لکھنے کا خیال پیدا ہوا۔ اور وہاں سے لوٹ کر چند دنوں کی کاوش کے بعد اپنی پہلی اور شاہکار تصنیف "الجہاد فی الاسلام" مرتب کی جو آج بھی بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھی جاتی ہے۔"

اس ضمن میں مندرجہ ذیل وضاحتیں ضروری ہیں:

۱۔ یہ صحیح ہے کہ مولانا سید ابوالاعلیٰ مودودی کے ذہن پر ابتداءً مولانا ابوالکلام آزاد کے علمی اثرات پائے جاتے تھے۔ جس کی وجہ سے مولانا آزاد کی ایک تقریر (بر موضوع "الامامۃ من القریش: کلکتہ: ۱۹۲۰ء) سے متاثر ہو کر مولانا مودودی نے خلافتِ اسلامیہ کے لیے قریشی ہونے کی شرط کو قبول کر لیا تھا لیکن بعد ازاں اپنی ذاتی تحقیق و تفتیش کے نتیجے میں مذکورہ خیال سے جو مولانا آزاد کی کلکتے والی تقریر سے ان کے ذہن میں آیا تھا ـــــ برأت کا اعلان کیا ـــــ اور قریشیت کے مسئلے کا دوٹوک حل الگ سے پیش کیا۔ (ملاحظہ ہو رسائل و مسائل جلد ۱، جلد ۲ اور تفہیمات جلد ۳، ص ۱۶۸، از مولانا مودودی: ایڈیشن نومبر ۱۹۷۱ء)

۲۔ یہ صحیح نہیں کہ مولانا مودودی نے "جہاد" کے موضوع پر مولانا آزاد کی کسی تقریر سے تحریک حاصل کی اور کتاب "الجہاد فی الاسلام" لکھی۔ بلکہ صحیح یہ ہے کہ اواخر ۱۹۲۶ء میں سوامی شردھانند جی کا قتل ہوا تو اس واقعے کی تمام تر ذمہ داری "اسلامی تلوار" پر ڈالی گئی۔ اور اسلام کے فلسفۂ جہاد کو ظلم و بربریت اور بہیمیت کا شاہکار قرار دینے کی کوششیں کی جانے لگیں۔ حتیٰ کہ "گاندھی جی جیسے شخص نے جو ہندو قوم میں سب سے بڑے صائب الرائے آدمی تھے" اس سے متاثر ہو کر بتکرار اس خیال کا اظہار کیا کہ اسلام ایسے ماحول میں پیدا ہوا ہے جس کی فیصلہ کن طاقت پہلے بھی تلوار تھی اور آج بھی تلوار ہے۔"

ان حالات سے دل برداشتہ ہو کر مولانا محمد علی جوہر نے جامع مسجد دہلی میں جمعہ کی ایک معمول کی تقریر میں فرمایا:

"کاش کوئی شخص اسلام کے خلاف ان افترا پردازیوں کا جواب دلائل و براہین کے ساتھ قلم بند کرے اور دنیا کے سامنے اسلامی نظریۂ جہاد کی حقیقت آشکارا کر سکے۔"

سامعین میں بیٹھے ۲۴ سالہ نوجوان مولانا مودودی نے اپنے آپ سے کہا "وہ شخص میں ہی کیوں نہ بن جاؤں!" اس کے بعد مودودی صاحب نے چھ ماہ شبانہ روز کی محنت، تحقیق و جستجو کر کے قرآن و حدیث اور فقہ کے کثیر مطالعہ کے علاوہ ۴۲ انگریزی کتب کے تحقیقی مطالعے کے نتیجے میں، چھ سو صفحات پر مشتمل "الجہاد فی الاسلام" تیار کی، جسے مولانا سید سلیمان ندوی نے دارالمصنفین اعظم گڑھ سے شائع کیا۔

مولانا آزاد کے بارے میں مودودی صاحب کے جس اظہار خیال کا اوپر ذکر کیا ہے وہ درج ذیل ہے:

محترم مولانا مودودی کا برسوں یہ معمول رہا کہ وہ عصر سے مغرب تک عام ملاقات کے لیے باہر بیٹھتے اور ملاقات کی غرض سے آنے والے حضرات کے مختلف سوالات کے جوابات بھی دیتے۔ اس عصری نشست کے موقع پر ایک دفعہ ایک صاحب نے مولانا ابوالکلام آزاد مرحوم کے بارے میں مولانا سے استفسار کیا، سائل کا سوال اور مولانا کا جواب تھا۔

مولانا! مجھے ایک سوال مولانا ابوالکلام

آزاد مرحوم [illegible] دریافت کرنا ہے وہ یہ کہ [illegible] ۱۹۴۱ء میں جماعت اسلامی کا قیام عمل میں آیا تو مولانا آزاد مرحوم کن خطوط پر کام کر رہے تھے۔

مولانا نے فرمایا:

"وہ انڈین نیشنل کانگرس سے وابستہ تھے اور برسوں سے اس کے پروگرام کے مطابق کام کر رہے تھے۔ کانگرس میں وہ ایک نمایاں مقام رکھتے تھے۔"

ان صاحب نے کہا:

"اس صورت میں یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ کیا مولانا ابوالکلام آزاد مرحوم نے بھی جماعت اسلامی کی اس طرح مخالفت کی، جس نوع کی مخالفت کا آج کل مظاہرہ کیا جاتا ہے۔"

مولانا نے دھیمے اور ٹھہرے ہوئے لہجے میں فرمایا:

"مولانا آزاد ایک شریف النفس اور وسیع الظرف انسان تھے۔ وہ ان حضرات میں سے تھے جو گالیاں سنتے تو ہیں لیکن کبھی کوئی ان کی زبان سے کسی کے لیے گالی نہیں سنتا۔"

[(ماخوذ از ۵-اے، ذیلدار پارک ــــ) حصہ اوّل ۴۵، ۴۶]

[ملاحظہ ہو (۱) ایک شخص ایک کارواں ص ۷، مضمون حیاتِ جاوداں از عبدالمغنی]

[(۲) سید مودودی بچپن، جوانی، بڑھاپا ص ۵، از اسعد گیلانی]

[(۳) روز نامہ جسارت کراچی کا سید مودودی نمبر، ص ۱۰۳، مضمون از ثروت صولت]

[(۴) روزنامہ جسارت کراچی کا سید مودودی نمبر، ص ۱۲۰، مضمون از ثروت صولت]

[(۵) ماہنامہ ذکری رامپور شخصیات نمبر، ص ۱۹۰، ۱۹۱]

ـــ محمد ظفراللہ خاں، بیدر، کرناٹک

"ایوانِ اُردو" کی پابندی سے اشاعت اور پھر عمدہ مواد کی فراہمی لائقِ تحسین ہے۔۔۔ "ابوالکلام آزاد نمبر" کو دیکھ کر دنگ رہ گیا۔ کیسے کیسے ہیرے موتی جگمگا رہے ہیں۔ عبداللطیف اعظمی، عبدالقوی دسنوی، خلیق احمد نظامی، ظ۔ انصاری اور پروانہ ردولوی نے بہت متاثر کیا۔ میں نے نئے سال کی آمد پر اپنے کئی دوستوں کو "آزاد نمبر" تحفے کے طور پر دیا۔ بہادر شاہ ظفر پر بھی اگر آپ ایسا ہی نمبر نکال دیں تو کتنا اچھا ہو؟

ـــ۔۔۔ (نام نہیں پڑھا جا سکا) پٹنہ

○ آپ نے آزاد نمبر نکال کر اردو دُنیا پر عظیم احسان کیا ہے اور مرحوم کی صد سالہ سالگرہ کے موقعے پر ان کے مذہب و سیاست اور زبان و ادب کے گرانقدر کارناموں یعنی ایک بحرِ بیکراں کو کوزے میں سمیٹ کر ان کے ساتھ اپنی عقیدت و احترام کا مخلصانہ اعتراف کیا ہے۔

ـــ۔۔۔ عبدالرزاق رضوی، پٹنہ

○ "ایوانِ اُردو" کا ابوالکلام آزاد نمبر آیا لیکن جو شخص مجھے اُردو کے جرائد لا کر دیا کرتا تھا اُسے لالچ نے مجبور کر دیا اور اس نے مجھے اس کی خبر تک نہیں کی کیوں کہ یہ شمارہ بلیک میں بک گیا۔ میں نے تقاضا کیا تو وہ کئی دنوں تک اِدھر اُدھر کی بات کرتا رہا کہ آج دوں گا۔ کل دوں گا۔ اس کے سامنے مشکل یہ تھی کہ وہ اس کی جائز قیمت سے زیادہ مجھ سے مانگ نہیں سکتا تھا۔ اب اور جلدیں آئیں گی تو وہ شاید مجھے دینا پسند کرے یا نہ بھی کرے۔ آپ کا یہ خاص نمبر دیکھنے کا شوق بار بار اُکسا رہا ہے۔ اور اس کی حد یہ کہ مجھے خط لکھنا پڑ رہا ہے۔ اگر ممکن ہو تو ابوالکلام آزاد نمبر ارسال کریں[1]۔

ـــ۔۔۔ م۔ق۔ خاں، گیا

[1] نمبر کا دوسرا ایڈیشن زیرِ طبع ہے۔ شایع ہونے پر ضرور ارسال کر دیا جائے گا۔ انتظار کی زحمت کا افسوس ہے۔ (ادارہ)

○ "ایوانِ اُردو" کے ابوالکلام آزاد نمبر کی دس ہزار کاپیوں کا دو ہفتے میں نکل جانا ایک ایک ایسا فقیدالمثال واقعہ ہے جس سے حیرت بھی ہوئی اور مسرت بھی۔ پھر یہ کہ اس کا دوسرا ایڈیشن بھی بڑھتی ہوئی مانگوں کو پورا کرنے کے لیے نکالا گیا ہے۔ میرے ایک دوست نے کانپور میں یہ نمبر دس روپے میں خریدا ہے۔

ـــ۔۔۔ نامی انصاری، کانپور

○ واقعی اس [illegible] نے نہ صرف مولانا آزاد کا حق ادا کیا ہے بلکہ ادب اور ادب کے طالب علموں جن کے لیے آزاد اہم ہو کر بھی اب تک ادھورے تھے یقیناً اب ان کے تمام مسائل حل ہو رہے ہوں گے۔

ـــ مسعود قیصر، مونگیر

○ مولانا ابوالکلام آزاد نمبر نہایت دلچسپی کے ساتھ پڑھ رہا ہوں۔ اس کے ہر مضمون میں مضمون نگار نے اپنی علمی صلاحیتوں کے ذریعے واقعی ایک نئی روح پھونک دی ہے، جس کی وجہ سے یہ نمبر دیگر تمام نمبروں پر (جو اس سے پہلے شائع ہوئے) بازی لے جاتا ہے۔

ظہیر اکرم، ہزاری باغ

○ مولانا ابوالکلام آزاد نمبر دیکھنے کا اتفاق ہوا۔ ناقابلِ یقین کم قیمت پر ایسا دلکش اور جاذبِ نظر اردو ماہنامہ میں نے زندگی میں پہلی بار دیکھا اس ماہنامے کے ظاہری و معنوی

حسن کو دیکھ کر بے ساختہ غالب کا یہ شعر زبان پر آگیا:

ہم سخن فہم ہیں غالب کے طرفدار نہیں
دیکھیں اس سہرے سے کہہ دے کوئی بہتر سہرا

—— محمد خلیل، کلکتہ

○ "ایوانِ اردو" کا آزاد نمبر دیکھا بہت پسند آیا۔ اس میں کئی چیزیں ایسی ہیں جنھیں پہلی بار منظرِ عام پر لانے کا فخر "ایوانِ اردو" کو ہے۔

آپ اور آپ کی ٹیم ماہ بہ ماہ محرابوں، طاقچوں، جالیوں، نقش و نگار اور گلدستوں سے "ایوانِ اردو" کی جو تزئین کر رہی ہے وہ بلاشبہ ایک یادگار شے ہے۔ اب تو اہر لعل نہرو نمبر کا انتظار ہے۔

—— جاوید اقبال، ناگپور

○ آپ نے مولانا ابوالکلام آزاد نمبر شائع کرکے بہت ہی اہم کام انجام دیا ہے۔ اس سے عوام و خواص دونوں ہی مولانا کی گراں قدر خدمات سے واقف ہوتے ہیں، خاص کر ملک کی نوجوان نسل کو حب الوطنی سیکولرزم اور قومی اتحاد جیسی قدروں پر عمل پیرا ہونے کی تلقین ملے گی۔ اس کی جتنی بھی تعریف کی جائے بجا ہے۔ اس نمبر سے ہم طالب علموں کو بہت جانکاری حاصل ہوئی، ہم آپ کے شکر گزار ہیں کہ آپ نے یہ نمبر اتنی کوشش اور محنت سے ہم لوگوں تک پہنچایا۔ جواہر لال نہرو نمبر کب تک شائع ہوگا؟

—— محمد آفتاب عالم، پھلور

؎ نہرو نمبر تیاری کے مرحلے میں ہے۔ ادارہ

○ جب سے آل انڈیا ریڈیو کے پروگرام "رسائل و جرائد" میں "ایوانِ اردو" کے مولانا آزاد نمبر پر تبصرہ سُنا تب سے بے چین ہوں کہ کاش مجھے یہ نمبر حاصل ہو سکتا۔

—— عبدالعزیز صدیقی

○

بقیہ: نثری عنوانات

"فنکاری" (انور خاں کا ناول)
مرسلہ: محمد ضیاء الحق ضیاء، صاحب گنج

"متاعِ ہنر" (رونق دکنی سیمابی کا مجموعۂ کلام)
مرسلہ: ابوذر ہاشمی، بھلائی درگ

"خوشبوؤں کا ہاتھ" (سید حرمت الاکرام کی نظم)
مرسلہ: محمد قیصر امام، بھاگلپور

"روٹی کی تلاش" (مجتبیٰ جمیل کا افسانہ)
مرسلہ: ریشما گوہر، صاحب گنج

"پت جھڑ کی بہار" (اصغر علی چکنگوری کی کہانی)
مرسلہ: ابنِ اسحٰق بنگلوری، تری کیرہ

"فرازِ ہنر" (ظفر مرادآبادی کا شعری مجموعہ)
مرسلہ: شکیل بابو، صاحب گنج

"فن اور فنکار" (صالحہ عابد حسین کا مقالات کا مجموعہ)
مرسلہ: مس روبی پروین، صاحب گنج

"گلدستہ" پہلے، دوسرے اور تیسرے نمبر پر درج شعری عنوان بھیجنے والے حضرات کو ارسال کیا جا رہا ہے۔

○

اُردو اکادمی دہلی کا ماہنامہ

ایوانِ اُردو دہلی

ادارت
سیّد شریف الحسن نقوی، مخمور سعیدی

جلد: ۲ — شمارہ: ۱۲ ⬤ فی کاپی ۵۰ر۲ روپے، سالانہ قیمت ۲۵ روپے ⬤ اپریل ۱۹۸۹ء

ماہنامہ "ایوانِ اُردو دہلی" میں شائع ہونے والے افسانوں میں نام، مقام اور واقعات سب فرضی ہیں، کسی اتفاقیہ مطابقت کے لیے ادارہ ذمہ دار نہیں۔
مضمون نگاروں کی آرا سے ادارے کا متفق ہونا ضروری نہیں۔

خط و کتابت اور ترسیلِ زر کا پتہ:
ماہنامہ ایوانِ اُردو دہلی
اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج
نئی دہلی ۲-۱۱۰۰۰

تزئین: ارشد علی خاں
خوشنویس: تنویر احمد

مخمور سعیدی نقوی (پبلشر، پرنٹر، پبلشر) نے سیما آفسیٹ پریس، دہلی ۱۱۰۰۰۶ سے چھپوا کر دفتر اُردو اکادمی، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲ سے شائع کیا

حرفِ آغاز

دہلی اُردو اکادمی کو ابتدا ہی سے بعض حلقوں کی مخالفتوں کا سامنا رہا ہے۔ مخالفت اگر محض برائے مخالفت نہ ہو اور اس کے پیچھے اکادمی کی کارکردگی کو بہتر بنانے کا جذبہ کارفرما ہو تو ہم کھلے دل سے اس کا خیر مقدم کرنے کو ہمہ وقت تیار ہیں، لیکن عموماً جو مخالفانہ تحریریں سامنے آتی رہی ہیں ان میں اصلاحی نقطۂ نظر کی کمی رہی ہے۔ اگر کسی اُردو دوست نے کبھی ایسی تجاویز پیش کی ہیں جن پر عمل پیرا ہو کر اکادمی اپنے اغراض و مقاصد کی تکمیل بہتر طور پر کر سکے، تو ہم نے ان کا سنجیدگی سے نوٹس لیا ہے۔ لیکن ذاتی اغراض کی تکمیل یا عدم تکمیل کو پیمانہ بنا کر کسی قومی ادارے کی حمایت یا مخالفت کرنا، ہمارے نزدیک اپنا کوئی معقول جواز نہیں رکھتا۔

بہرحال ہم نے ایسی مخالفتوں پر بھی، جن کے بارے میں ہمیں خوب اندازہ تھا کہ یہ نیک نیتی پر مبنی نہیں ہیں، آج تک کسی ردِ عمل کا اظہار نہیں کیا حتیٰ کہ اکادمی کے عملے کے بعض ارکان کی کردارکشی کی جو کوششیں کی گئیں، جو بہتان تراشیاں ہوئیں؛ ان کے جواب میں بھی ہم نے خاموشی ہی اختیار کی۔ لیکن اب ایک گوشے کی طرف سے ایک عجیب قسم کا کھیل کھیلا گیا ہے اور اپنی بات بعض ایسے لوگوں کی طرف منسوب کرنے کی جرأت کی گئی ہے جنھیں پوری اُردو دُنیا احترام کی نظر سے دیکھتی ہے۔ دہلی کے "قومی آواز" میں ایک خبر شائع ہوئی جس کا اختصار حسبِ ذیل ہے؛

"نئی دہلی۔ ۱۴ر فروری (اپنے نمائندے سے) آج یہاں عالمی اردو کانفرنس کے دفتر میں دانشوروں ادیبوں اور شعرا کی ایک ہنگامی میٹنگ ہوئی۔۔۔ صدارت مجروح سلطانپوری نے کی۔۔۔ میٹنگ میں شریک دانشوروں نے دہلی اُردو اکادمی کے کام کاج کی سخت مذمت کی۔ اس میں نوشاد علی، پروفیسر مسعود حسین خاں، کیفی اعظمی، پروفیسر گوپی چند نارنگ، نمی اور پروفیسر جگن ناتھ آزاد کے علاوہ دوسرے دانشوروں نے شرکت کی۔" (قومی آواز ۱۵ر فروری ۱۹۹۰ء)

جن حضرات کے اسمائے گرامی خبر میں دیے گئے ہیں، ان میں سے چند کو خط لکھ کر ہم نے معلوم کیا کہ دہلی اُردو اکادمی کے سلسلے میں جو بات ان سے منسوب کی گئی ہے کیا وہ درست ہے؟ جواباً ہمیں ڈاکٹر مسعود حسین خاں صاحب اور حضرت مجروح سلطانپوری کے خط ملے ہیں جو ہم اپنے قارئین اور پوری اُردو دُنیا کی آگاہی کے لیے یہاں نقل کر رہے ہیں:

"عنایت نامہ مورخہ ۱۷ر فروری کل بہ صدرست ہوا؛ ملفوف تراشہ بھی ——— میں نے کسی ایسے جلسے میں شرکت نہیں کی ہے جہاں دہلی اُردو اکادمی کی مذمت کا ریزولیوشن پاس ہوا ہو۔ براہِ کرم آپ میری اِس تردید کو زیادہ سے زیادہ مشتہر کرنے کی زحمت کیجیے۔
شکریہ کہ آپ نے مجھے 'قومی آواز' کا تراشہ ارسال کر کے ایک غلط بیانی سے باخبر کیا۔ ——— مسعود حسین"

"آج صبح بمبئی کے ایک اخبار 'انقلاب' کی رپورٹنگ کے مزے لے رہا تھا کہ اُردو کانفرنس (عالمی) کے فلسطین سے متعلق اجلاس میں کیفیؔ نے نظم سنائی حالانکہ انھوں نے نہیں بلکہ میں نے کچھ اشعار سنائے تھے۔ یہی نہیں تک نہیں بلکہ حاضرین کی فہرست میں میرا نام تک نہیں تھا کہ "یہ دوسری ہوتی! جہاں تک میری یادداشت کام کرتی ہے مجھے یاد نہیں کہ میں نے عالمی کانفرنس کے کسی اجلاس کی کبھی صدارت کی ہو اور اِس بار تو بقید ہوش و حواس حلفیہ کہہ سکتا ہوں کہ میں نے کسی اجلاس کی صدارت کی نہ آپ کی یا کسی اکادمی کی شان میں کوئی مثبت یا منفی کلمات کہے۔ لاحول ولا۔ آج کل کے رپورٹر کس قدر ذمہ دار ہیں، یہ تو خیر واقف ہو ہی گیا خود آپ کو بھی تھوڑا بہت تجربہ تو ہو گا ہی کہ یہ کس طرح سوئی کا نیزہ بنا دیتے ہیں مگر محترم اس بار میرے حق میں جو نیزہ استعمال کیا گیا ہے وہ تو کسی سوئی کا بھی منت پذیر نہیں ہے۔ آپ قطعی دل بُرا نہ کریں۔ یہ تو بے بات کی یاروں نے ہوا باندھی ہے ——— مجروح سلطانپوری"

جس روز یہ خبر شائع ہوئی اسی روز پروفیسر جگن ناتھ آزاد اکادمی کے دفتر میں تشریف لائے۔ ان سے خبر کی تصدیق یا تردید چاہی گئی تو انھوں نے پُر زور لفظوں میں تردید کرتے ہوئے فرمایا کہ اگر اس میں ذرا بھی سچائی ہوتی تو آپ خود ہی غور کیجیے کہ کیا میں اس وقت اس بے تکلفی کے ساتھ آپ کے دفتر میں بیٹھا ہوتا ——— ایک ملاقات میں پروفیسر گوپی چند نارنگ نے اس طرح کی کسی ہنگامی میٹنگ کے انعقاد سے لاعلمی ظاہر کی۔

جن لوگوں نے یہ خبر شائع کرائی ان کے بارے میں تو کیا عرض کریں لیکن 'قومی آواز' ایک ذمہ دار اخبار ہے بہتر ہوتا اس ... [illegible]

حمد

خداوندا! مرے تن میں رہے میرا لہو زندہ
اگر میرا لہو زندہ تو میری جستجو زندہ
بیک ساعت مکاں سے لامکاں تک روشنی پھیلی
کہا اِک لفظِ کُن تو نے ہوا یہ دشتِ ہُو زندہ
یہاں تو صرف سنّاٹا تھا یہ کس کی صدا گونجی
کہ دشت و کوہ سب جاگے ہوئے یہ کاخ و کُو زندہ
مگر نقشِ فنا اب بھی مٹانے سے نہیں مٹتا
فضائے نیستی باقی ہوائے تند خُو زندہ
دُعا کا وقت آتا ہے تو میں خاموش رہتا ہوں
مگر سینے میں رہتی ہے دُعا کی آرزو زندہ
یہ شامیں تیرا مرکز ہیں یہ صبحیں تیرا مسکن ہیں
شفق میں روشنی زندہ گلوں میں رنگ و بُو زندہ
یہ تیرا نام کیوں میری مناجاتوں میں روشن ہے
یہ میرے حرف میں کس واسطے رہتا ہے تُو زندہ
سحر کو سب پرندے جب تری تسبیح پڑھتے ہیں
چمن میں ہر طرف ہوتی ہے تیری گفتگو زندہ
نہ تو منظر میں پوشیدہ نہ میں تصویر سے غائب
میں تیرے سامنے حاضر تو میرے رُوبرُو زندہ

انیس اشفاق

ڈپارٹمنٹ آف اُردو، لکھنؤ یونیورسٹی، لکھنؤ

دوہے



وقار واثقی

(۱)
بابا اپنے آپ کو پہلے تو پہچان
کون سرشٹی کار ہے ہو جائے گا گیان

(۲)
منزل تو ہے سامنے بٹا ہوا ہے دھیان
پیچ و خم میں راہ کے بھٹک گیا انسان

(۳)
جس دن سُکھ کی کھوج میں پہلا قدم اٹھائے
بابا اُس ہی روز سے دُکھ بھی سنگ ہو جائے

(۴)
اپنے رچائے کھیل پر کس نے دیا ہے دھیان
گھٹتی بڑھتی چھاؤں کو کیا دیکھے دِھمان

۱۵۲۵، رسول آباد، احمد آباد

عبدالمغنی

آدھا شاعر، پورا آدمی

محمد حسین آزاد نے آبِ حیات میں میر تقی میر کی یہ گفتگو نقل کی ہے:

"لکھنؤ میں کسی نے پوچھا کہ کیوں حضرت آج کل شاعر کون کون ہے؟ کہا ایک تو سودا دوسرا یہ خاکسار اور کچھ تامل کر کے کہا آدھے خواجہ میر درد۔"

(ص ۲۱۸، مطبوعہ ۱۹۶۷ء، رام نرائن لال، الٰہ آباد)

دوسری طرف محمد حسین آزاد ہی اسی آبِ حیات میں خواجہ میر درد کا تذکرہ کرتے ہوئے رقم طراز ہیں:

"ملک کی بربادی، سلطنت کی تباہی، آئے دن کی غارت و تاراج کے سبب سے اکثر امرا و شرفا کے گھرانے گھر اور شہر چھوڑ چھوڑ کر نکل گئے۔ ان کے پائے استقلال کو جنبش نہ آئی۔ اپنے اللہ پر توکل رکھا اور جو سجادہ بزرگوں نے بچھایا تھا اسی پر بیٹھے رہے۔"

(ص ۱۸۵-۱۸۴)

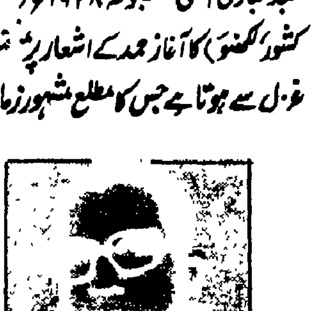
واقعہ یہ ہے کہ سودا تو سودا، میر جیسا غیور و قانع انسان بھی دِلّی کی گلیاں اور جامع مسجد کی سیڑھیاں چھوڑ کر لکھنؤ میں جا بسا لیکن خواجہ میر درد کے فقر و توکل نے انھیں جہان آباد ہی میں متمکن رکھا۔ اس کا ایک مطلب یہ ہے کہ جس شخص کو میر نے اپنے اور سودا کے مقابلے میں فقط آدھا شاعر تسلیم کیا وہ درحقیقت پورا آدمی تھا اور اس کی بھرپور آدمیت نے گوارا نہ کیا کہ دِلّی کے "اُجڑے دیار" سے نکل کر اپنا گھر کہیں اور بسائے۔ "دِلّی جو ایک شہر تھا عالم میں انتخاب" وہ آخری سانس تک درد کا مستقر رہا۔ خواجہ میر درد کی دردمندی نے انھیں یہ حوصلہ عطا کیا کہ وہ اپنے بزرگوں کے بچھائے ہوئے سجادے پر بیٹھے ہوئے ان تمام آفات و حوادث کا مردانہ وار مقابلہ کرتے رہیں جو ان کے دور میں ہندوستان کے دارالسلطنت پر نازل ہو رہے تھے۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ بگڑتے ہوئے حالات میں بھی درد کے لیے دِلّی کی اہمیت وہی تھی جو سالہا سال بعد ۱۸۵۷ء کے ماحول میں غالب کے لیے "آستانِ یار" کی تھی:

موجِ خوں سر سے گزر ہی کیوں نہ جائے
آستانِ یار سے اُٹھ جائیں کیا

میر و مرزا کے زمانے میں بھی ایک موجِ خوں دِلّی کے کوچوں میں رواں تھی، لیکن اس کے سر سے گذر جانے کا تصور معلوم ہوتا ہے کہ درد کے نزدیک بھی وہی تھا جو غالب کے یہاں، یعنی "آستانِ یار" سے اُٹھ جانے کا تصور۔ دِلّی درد کی نگاہ میں محض ایک شہر نہیں تھا، ایک تہذیب کا محبوب مرکز تھا اور ادبا و شعرا کے ساتھ ساتھ سلاطین و مجاہدین سے علما و اولیا تک کی شاندار روایتیں اور شیریں یادیں اس سے وابستہ تھیں، ایک پوری زندگی کا کاروبار اور تاریخ کا ہمہ گیر عمل تھا جو اُجڑتی ہوئی دِلّی میں اس وقت بھی جاری تھا جب میر و مرزا وہاں سے نکل رہے تھے اور درد اپنی خانقاہ میں بیٹھے ہوئے تھے۔ یہ استقلال ایک پورے آدمی کی شخصیت کی طرف اشارہ کرتا ہے۔

یہ پورا آدمی دراصل پورا شاعر بھی تھا، خواہ وہ میر کی نرگسی آنکھوں کو ادھورا نظر آیا ہو۔ کلامِ درد پر ایک نظر ڈال کر ہم بلا خوف تردید کہہ سکتے ہیں کہ نگاہِ تنقید میں میر کی رائے کا کوئی وزن نہیں۔ بلاشبہ درد نے نہ تو کسی رئیس و امیر کا قصیدہ لکھا نہ کسی احمق و شریر کی ہجو کی اور نہ انھوں نے حُسن و عشق کی روایتی داستان کسی مثنوی میں بیان کی بلکہ ان کا جو کچھ سرمایۂ سخن ہے، چند رباعیات اور مستزاد کے باوجود، صرف غزل ہے، لیکن یہ غزل تغزّل کی پوری شان رکھتی ہے اور اس کی ان تمام اداؤں سے متصف ہے جو عمومی طور پر میر و مرزا یا کسی بھی اعلیٰ پایے کے غزل گو سے منسوب کی جاتی یا کی جاسکتی ہیں۔

"دیوانِ اردو خواجہ میر درد" مرتبہ عبدالباری آسی، مطبوعہ ۱۹۲۸ء (منشی نول کشور، لکھنؤ) کا آغاز حمد کے اشعار پر مشتمل اس غزل سے ہوتا ہے جس کا مطلع مشہورِ زمانہ ہے:



وارث گنج، عالم گنج، پٹنہ ۸۰۰۰۰۷

مقدور ہمیں کب ترے وصفوں کے رقم کا
حقا کہ خداوند ہے تو لوح و قلم کا

اس مسندِ عزت پہ کہ تو جلوہ نما ہے
کیا تاب گذر ہووے تعقل کے قدم کا

بستے ہیں ترے سایے میں سب شیخ و برہمن
آباد تجھی سے تو ہے گھر دیر و حرم کا

ہے خوف اگر جی میں تو ہے تیرے غضب کا
اور دل میں بھروسا ہے تو ہے تیرے کرم کا

مانندِ حباب آنکھ تو اے دردؔ کھلی تھی
کھینچا نہ پر اس بحر میں عرصہ کوئی دم کا

یہ صرف پانچ اشعار کی مختصر سی غزل ہے، لیکن اس کا نہ صرف ہر شعر یا ہر مصرع بلکہ ہر لفظ اور فقرہ چُنا ہوا، پُرمعنی اور فکر انگیز ہے۔ یہی دردؔ کا خاص اندازِ تغزّل ہے، صاف ستھرا، سیدھا سادا، حشو و زواید سے پاک، محتاط اور معتدل۔ اس کے آہنگ میں نہ سوداؔ کا شور ہے نہ میرؔ کی سرگوشی، نہ ایک کی درشتی نہ دوسرے کی نرمی، بس ایک متوازن نوائے عارفانہ ہے جو اوّل سے آخر تک پوری غزل میں گونج رہی ہے۔ ہر شعر بندہ و خدا کی الگ الگ شان پر دلالت کرتا ہے۔ پہلا شعر قدرتِ الٰہی کی وسعت، دوسرا اس کی عزّت، تیسرا اس کی آفاقیت، چوتھا اس کی جلالت اور پانچواں انسان کی فنائیت کا غمّاز ہے، جب کہ قبل کے چاروں اشعار میں بھی خدا کے مقابلے میں بندے کی عاجزی، بے چارگی، آرزومندی اور حاجت مندی کے اشارات موجود ہیں۔ اس کے علاوہ ذاتِ باری کی عظمت کے ادراک میں "تعقّل" کی نارسائی کا ذکر کر کے شاعر نے عرفانِ حقیقت کے لیے عشق کی اہمیت پر تاکیدی نشان لگایا ہے، پھر دیر و حرم دونوں میں اسی عشق کی کارفرمائی کا ذکر کیا ہے، مگر اس کے ساتھ ہی ایک طرف خوفِ خدا اور دوسری طرف توکل علی اللہ کے بیانات سے عشق کے اندر ایک نظم و ضبط کا سامان کیا ہے۔

معرفتِ حق کے یہ مضمرات کلامِ درد میں بکثرت پائے جاتے ہیں جن سے شاعر کے مخصوص عرفانِ محبّت کے تصوّرات کا سراغ ملتا ہے۔ ذیل میں صرف چند بہت ہی منتخب اشعار درج کیے جاتے ہیں:

ماہیتوں کو روشن کرتا ہے نور تیرا
اعیان ہیں مظاہر ظاہر ظہور تیرا

مدرسہ یا دیر تھا یا کعبہ یا بُت خانہ تھا
ہم سبھی مہمان تھے واں تو ہی صاحب خانہ تھا

حیراں آئینہ وار ہیں ہم
کس سے یارب دوچار ہیں ہم

وحدت میں تیری حرف دوئی کا نہ آ سکے
آئینہ کیا مجال تجھے مُنہ دکھا سکے

ڈھونڈھے ہے تجھے تمام عالم
ہر چند کہ تو کہاں نہیں ہے

ہم جہاں میں آئے تھے تنہا ولے
ساتھ اپنے اب اسے لے کر چلے

پہلا شعر فلسفیانہ ہے اور آخری عاشقانہ دونوں کو ملا کر پڑھنے اور ان پر غور کرنے سے انکشاف ہوتا ہے کہ نورِ الٰہی بالآخر ایک اچھے، سچے اور پورے انسان کی شخصیت کو اس درجہ روشن کر دیتا ہے کہ وہ ایک پاکیزہ و بامقصد اور کامیاب زندگی گزار کر جب دُنیا سے آخرت کی طرف سفر کرتا ہے تو اکیلا اور بےسہارا نہیں ہوتا، محبوبِ ازل کی رفاقت اسے حاصل ہوتی ہے اور وہ اپنی منزلِ مقصود کی طرف پورے اطمینان و اعتماد کے ساتھ بڑھتا ہے۔ یہ خیال جس انداز سے ادا کیا گیا ہے وہ درد کے دَور کے لیے بالکل نیا اور چونکانے والا ہے۔ باقی اشعار کے مفاہیم گرچہ مروّجہ تصوّف کے مطابق اور بہ ظاہر رسمی و روایتی ہیں، مگر شاعر کے اپنے محسوس کیے ہوئے بھی ہیں اور جس صفائی، چُستی اور برجستگی کے ساتھ انھیں پیش کیا گیا ہے اس سے معلوم ہوتا ہے کہ دردؔ کا ذہن رائج الوقت علمی افکار پر پوری طرح حاوی تھا۔

بہرحال، آخری شعر میں خدا کے ساتھ خودی کی جو جہت آشکار ہوتی ہے اس پر دلالت کرنے والے حسبِ ذیل اشعار بہت معنی خیز ہیں:

جھکتا نہیں ہمارا دل تو کسی طرف یاں
جی میں سما رہا ہے از بس غرور تیرا

باوجودیکہ پر و بال نہ تھے آدم کے
واں یہ پہنچا کہ فرشتے کا بھی مقدور نہ تھا

ہر جزو کل کے ساتھ بمعنی ہے اتّصال
دریا سے دُر جدا ہے پہ ہے غرق آب میں

باغِ جہاں کے گل ہیں یا خار ہیں تو ہم ہیں
گو یار ہیں تو ہم ہیں، اغیار ہیں تو ہم ہیں

دریائے معرفت کے دیکھا تو ہم ہیں ساحل
گرداب ہیں تو ہم ہیں دریا ہیں تو ہم ہیں
وابستہ ہے ہمیں سے گو جبر ہے وگر قدر
مجبور ہیں تو ہم ہیں مختار ہیں تو ہم ہیں

ارض و سما کہاں تری وسعت کو پا سکے
میرا ہی دل ہے وہ کہ جہاں تو سما سکے
قاصد نہیں یہ کام ترا اپنی راہ لے
اس کا پیام دل کے سوا کون لا سکے

عالم ہو قدیم خواہ حادث
جس دم نہیں ہم جہاں نہیں ہے

نہ یاں علم و دانش نہ فضل و ہُنر
فقط ایک دل ہے کہ آگاہ ہے

ان اشعار کو اگر میرؔ کے انانیتی اشعار کے پہلو بہ پہلو رکھ کر دیکھیں تو دونوں کے درمیان ترجیح مشکل ہوگی۔ لیکن درد کے طرزِ اظہار میں جو ایقان و اعتماد ہے وہ میرؔ کے یہاں نمایاں نہیں، اس لیے کہ ان کے اسلوب میں عام طور پر ایک گداختگی اور خستگی پائی جاتی ہے۔ بہرحال، نفسِ انسانی کی عظمت جس طرح میرؔ کے متعدد اشعار سے ظاہر ہوتی ہے اسی طرح دردؔ کے کلام کے ایک معتدبہ حصّے سے بھی۔ عرفانِ نفس کا معاملہ میرؔ اور دردؔ کے درمیان ایک نقطۂ مشترک ہے۔ اس اشتراک کی بنیاد دونوں شاعروں کے کلام میں درد مندی کے ایک وسیع احساس پر استوار ہے۔ دردؔ کے حسبِ ذیل اشعار پر اسی احساس کا پرتو ہے:

اکسیر پر لے ہوش اتنا نہ ناز کرنا
بہتر ہے کیمیا سے دل کا گداز کرنا

آنسو کب تک کوئی پیے جاوے
اس محبت نے جی بہت کھایا

جگ میں کوئی نہ ٹک ہنسا ہوگا
کہ نہ ہنسنے میں رو دیا ہوگا
دل کے پھر زخم تازہ ہوتے ہیں
کہیں غنچہ کوئی کھلا ہوگا

سینہ و دل حسرتوں سے چھا گیا
بس ہجومِ یاس جی گھبرا گیا

زندگی ہے یا کوئی طوفان ہے
ہم تو اس جینے کے ہاتھوں مر چلے
شمع کے مانند ہم اس بزم میں
چشم تر آئے تھے دامن تر چلے

ہر آہ شرر بار ہے جوں سرو چراغاں
کیا آگ الٰہی مرے سینے میں بھری ہے

ان میں متعدد اشعار ایسے ہیں جن پر میرؔ کے شعر کا دھوکا ہوتا ہے۔ اس قسم کے درد انگیز شعروں کی روشنی میں ہم کہہ سکتے ہیں کہ بعض وجوہ سے میرؔ اور دردؔ ایک ہی زمرے کے شعرا تھے۔ دونوں کے دلوں پر ایک بسیط غم نے سایہ ڈالا تھا، جو بہ یک وقت غمِ یار بھی تھا اور غمِ روزگار بھی۔ درد ایک صاحبِ دل صوفی تھے اور میرؔ بھی دلِ پرخوں کی گلابی سے سرشار تھے۔ دونوں کے حسّاس قلوب نے اپنے اپنے طور پر حیات و کائنات اور زمانہ و ماحول کے الم ناک احوال کو شدّت سے ساتھ محسوس کیا تھا، لہٰذا سوز و گداز کی بے بہا دولت سے دونوں بہرہ ور تھے۔ یہ دوسری بات ہے کہ احساس کی جو شدّت میرؔ کے یہاں نالہ و شیون کا باعث ہوئی وہ دردؔ کے کلام میں فقر و غنا سے آگے نہیں بڑھی۔ مندرجۂ ذیل غزل میں دردؔ کے یہاں معرفتِ ربّ، معرفتِ نفس اور درد مندی کے عناصر یک جا ہو کر ایک ایسی ترکیبِ خیال پیش کرتے ہیں جسے شاعر کے مخصوص تغزّل کا نشانِ امتیاز کہا جاسکتا ہے:

تجھی کو جو یاں جلوہ فرما نہ دیکھا
برابر ہے دُنیا کو دیکھا نہ دیکھا
مرا غنچۂ دل ہے وہ دل گرفتہ
کہ جس کو کسی نے کبھی وا نہ دیکھا
یگانہ ہے تو آہ بیگانگی میں
کوئی دوسرا اور ایسا نہ دیکھا
اذیّت، مصیبت، ملامت، بلائیں
ترے عشق میں ہم نے کیا کیا نہ دیکھا
کیا مجھ کو داغوں نے سروِ چراغاں
کبھو تو نے آکر تماشا نہ دیکھا
تغافل نے تیرے یہ کچھ دن دکھائے
اِدھر تو نے لیکن نہ دیکھا نہ دیکھا
حجابِ رُخِ یار تھے آپ ہی ہم
کھلی آنکھ جب کوئی پردا نہ دیکھا
شب و روز اے دردؔ درپے ہوں اس کے
کسو نے جسے یاں نہ سمجھا نہ دیکھا

اس غزل کا زورِ بیان شاعر کی طبیعت میں وفور اور جوش دونوں کی نشان دہی کرتا ہے۔ یہ وفور و جوش یقیناً ایک زبردست

ذہنی ریاضت، اخلاقی تربیت اور قلبی صلاحیت کا نتیجہ ہے۔ اس کے علاوہ اسلوبِ بیان کی فصاحت و بلاغت اور متانت و حلاوت ایک عظیم فن کاری کی دلیل ہے۔ اپنے دور کے محاورات میں درد نے تغزّل کے بہترین تصوّرات کا اظہار جس نفاست و سلاست کے ساتھ کیا ہے وہ میر و سودا سے کسی طرح کم نہیں۔ پوری غزل کا تنقیدی تجزیہ اور دیگر ہم عصر شعرا کی تخلیقات سے اس کا موازنہ کرنے سے محسوس ہوگا کہ درد کی دردمندی میں جو بشاشت ہے وہ اسے میر کی رقّت سے ممتاز کرتی ہے اور جو دل گرفتگی ہے وہ اسے سودا کی شور انگیزی سے الگ کرتی ہے۔ بشاشت اور دل گرفتگی کا یہ امتزاج گویا ترکیبِ اضداد ہے اور اشعار کو سوز و گداز کے سانچے میں ڈھال دیتا ہے۔ درد کے کلام کا توازن انھیں سودا اور میر سے مختلف اور دونوں کے درمیان ایک تیسری قسم کا منفرد فن کار ثابت کرتا ہے۔ اس انفرادیت کی توجیہہ صرف تصوّف کے عنصر سے نہیں ہوسکتی، جس کا ذکر درد کے متعلّق تنقیدی مطالعات میں عام طور پر کیا جاتا ہے۔ بلا شبہ خواجہ میر درد ایک صوفی بھی مروّجہ معنوں میں تھے، لیکن اس کے ساتھ ساتھ ان کا ایک فلسفیانہ تفکّر بھی تھا جو ان کے وارداتِ قلب سے ہم آہنگ ہوکر ایک عاشقانہ انداز میں ڈھل گیا ہے۔ تصوّف، فلسفہ اور محبّت کے تجربات کا اظہار درد نے تغزّل کی مسلّمہ روایات میں اس خوبی اور تاثیر کے ساتھ کیا ہے کہ دہلی کے مکتبِ شاعری میں سودا و میر کے ساتھ ساتھ درد کے دبستانِ تغزّل کا بھی سراغ لگایا جانا چاہیے۔

ایک بڑے شاعر کی طرح درد کے کلام میں بھی متعدد اشعار ایسے ہیں جو سماج میں پھیلے ہوئے خیالات کو اس چابک دستی سے نظم کرتے ہیں کہ وہ محاورات و امثال بن گئے ہیں۔ ان میں بعض شعر اور مصرعے اتنے مشہور اور زبان زد ہوئے کہ آج بول چال کا حصّہ بن گئے ہیں اور کم لوگوں کو معلوم ہے کہ ان کا مصنّف کون ہے۔ ان میں چند حسبِ ذیل ہیں:

ان لبوں نے نہ کی مسیحائی
ہم نے سو سو طرح سے مر دیکھا

میں جاتا ہوں دل کو ترے پاس چھوڑے
مری یاد تجھ کو دلاتا رہے گا

قتلِ عاشق کسی معشوق سے کچھ دُور نہ تھا
پر ترے عہد سے آگے تو یہ دستور نہ تھا

تو اپنے دِل سے غیر کی الفت نہ کھو سکا
میں چاہوں اور کو تو یہ مجھ سے نہ ہوسکا

ہر چند فسق میں تو ہزاروں ہیں لذّتیں
لیکن عجب مزا ہے فقط دل کی چاہ کا

تم نے تو ایک دن بھی نہ ادھر گذر کیا
ہم نے ہی اس جہان سے آخر سفر کیا

طوفانِ نوح نے تو ڈبوئی زمیں فقط
میں ننگِ خلق سارِی خدائی ڈبو گیا
واعظ کسے ڈرائیے یوم الحساب سے
گریہ مرا تو نامۂ اعمال دھو گیا

تر دامنی پہ شیخ ہماری نہ جا، ابھی
دامن نچوڑ دیں تو فرشتے وضو کریں

ان نے کیا تھا یاد مجھے بھول کر کہیں
پاتا نہیں ہوں تب سے میں اپنی خبر کہیں

جتنی بڑھتی ہے اتنی گھٹتی ہے
زندگی آپ ہی آپ کٹتی ہے

مرا جی ہے جب تک تری جستجو ہے
زباں جب تلک ہے یہی گفتگو ہے
تمنّا ہے تیری اگر ہے تمنّا
تری آرزو ہے اگر آرزو ہے

یہ تحقیق ہے یا کہ افواہ ہے
کہ دل کے تئیں دل سے یاں راہ ہے

تہمتِ چند اپنے ذمّے دھر چلے
جس لیے آئے تھے سو ہم کر چلے
ساقیا یاں لگ رہا ہے چل چلاؤ
جب تلک بس چل سکے ساغر چلے

تجھ سے مر جائیں گے تو مر جائیں
جان ہے تو جہان ہے پیارے

غافل تو کدھر بہکے ہے ٹک دل کی خبر لے
شیشہ جو بغل میں ہے اسی میں تو پری ہے

دل بھی تیرے ہی ڈھنگ سیکھا ہے
آن میں کچھ ہے آن میں کچھ ہے

متداول افکار پر مشتمل یہ اشعار شاعر کے اپنے محسوسات بھی ہیں۔ اسی لیے ان میں صداقتِ عامّہ کا ایک بنیادی عنصر بھی ذاتی ادراک کے طور پر ظاہر ہوا ہے۔ اکثر اشعار میں نکتہ سنجی نمایاں ہے۔ بعض کا تعلق دردؔ کے مخصوص تصوّرِ حیات سے ہے، جو پاکیزہ، بلند اور گہرا ہے۔ جن اشعار میں کچھ ادّعا ہے وہ صوفیانہ بھی ہیں اور شاعرانہ بھی، جبکہ لفظ و معنی کے تناسب کی فنکاری ہر شعر سے عیاں ہے بعض اشعار میں ظرافت کی چاشنی بھی ہے۔ بیانِ دردؔ میں خوش طبعی ایک امتیازی شان رکھتی ہے، جب کہ زبانِ دردؔ کی شستگی و شایستگی بھی ایک خاص چیز ہے۔

خواجہ میر دردؔ کو اپنے فقر و غنا پر فخر ہے اور وہ سمجھتے ہیں کہ انھوں نے اُردو غزل میں عارفانہ شاعری کی بنیاد ڈالی ہے:

زِنہار ادھر کھولیو مت چشمِ حقارت
یہ فقر کی دولت ہے کچھ افلاس نہیں ہے

پھولیں گے اس زبان ہیں گلزارِ معرفت
یاں میں زمینِ شعر میں یہ تخم بو گیا

عارفانہ اشعار یقیناً دردؔ سے پہلے بھی کہے گئے۔ اُردو زبان کے نشو ونما میں صوفیائے کرام کا حصّہ معلوم ہے۔ اُردو کے اوّلین غزل گویوں نے بادۂ معرفت کے جام بالعموم مے خانۂ عجم سے لیے اور فارسی شعرا کے بے شمار صوفیانہ اشعار کا آزاد ترجمہ اُردو میں ہوا۔ لیکن یہ واقعہ ہے کہ کیف وکم کے اعتبار سے مجموعی و عمومی طور پر عارفانہ شاعری کا سب سے بڑا سرمایہ سب سے پہلے دردؔ کی غزلیات میں فراہم ہوا۔ بلاشبہ خواجہ میر دردؔ کی دردمندانہ صدائے تغزّل نے اُردو میں عارفانہ شاعری کو وہ اعتبار بخشا جو اس سے قبل اسے میسّر نہیں تھا۔

اندازِ فکر اور اسلوبِ فن کے لحاظ سے ہم کہہ سکتے ہیں کہ بعد کے دو عظیم شعرائے اُردو، غالبؔ و اقبالؔ کے کارناموں پر سوداؔ و میرؔ سے زیادہ دردؔ کا پرتو پڑا، اس لیے کہ ذہنی قوّت، قلبی معرفت روحانی بشاشت اور فنّی نفاست کا جو مجموعہ دردؔ کی غزلیات میں ہے اس کا بالیدہ تر ذخیرہ اور بلند تر نمونہ غالبؔ اور اقبالؔ کے کلام میں نظر آتا ہے، اگرچہ یہ دونوں آخر الذکر شعرا عمومی طور پر میرؔ کی نسبت سوداؔ سے زیادہ قربت رکھتے ہیں، اور بعض خاص امور میں میرؔ کا اثر بھی ان پر پڑا ہے۔ کہا جاسکتا ہے کہ غالبؔ و اقبالؔ کے ذہن میں وسعت میرؔ جیسی ہے، جب کہ ان دونوں کے فن میں شوکت سوداؔ جیسی ہے لیکن ذہن و فن کی خصوصیات کا مرکب تاثر غالبؔ و اقبالؔ کے کمالات پر سوداؔ و میرؔ سے زیادہ دردؔ کے تجربات کا معلوم ہوتا ہے۔ اس تاثر کی راہ میں دردؔ کے دیوان کا اختصار حایل نہیں ہے، ان کے منتخب اشعار کی تاثیر کافی ہے، آخر غالبؔ کا اُردو دیوان بھی تو مختصر ہی ہے۔ اس کے علاوہ تاثیر و تاثر کا معاملہ خرمن پر برق کے گرنے کا ہے، جس کی ایک چمک بھی اپنا کام کر جاتی ہے۔

آج جن محققین و ناقدین کو دبستانِ دلّی کے آثار و مظاہر کی تلاش ہے انھیں میرؔ اور غالبؔ کے ساتھ ساتھ دردؔ کے کارنامے کا بھی تجسّس اور اس کی تشریح کرنی چاہیے، تاکہ ایک عظیم دبستان کی پوری تصویر سامنے آئے اور اُردو غزل کے کمالات کی داد دینے میں کوئی کسر نہ رہ جائے۔

اِطلاع نامہ بابت "ایوانِ اُردو دہلی"
بموجب
فارم-۴

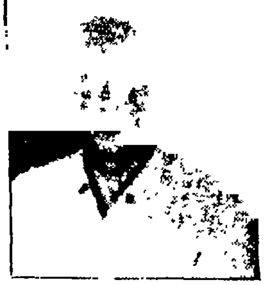
مقامِ اشاعت : دفتر اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲
وقفۂ اشاعت : ایک ماہ
پرنٹر : ایس۔ ایچ۔ نقوی
قومیت : ہندوستانی
پتہ : اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲
پبلشر : ایس۔ ایچ۔ نقوی
قومیت : ہندوستانی
پتہ : اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲
ایڈیٹر : ایس۔ ایچ۔ نقوی
قومیت : ہندوستانی
پتہ : اُردو اکادمی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲
مالک : (کوئی حصہ دار یا شیئر ہولڈر نہیں) اُردو اکادمی اُردو انتظامیہ گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج، نئی دہلی ۱۱۰۰۰۲

میں ایس۔ ایچ۔ نقوی بحالتِ ہوش و حواس اعلان کرتا ہوں کہ مندرجہ بالا تفصیلات میرے علم و یقین کے مطابق درست ہیں۔

۲۸ فروری ۱۹۸۹ء　　دستخط (ایس۔ ایچ۔ نقوی)

غزلیں

گوہر عثمانی



قتل انجانے میں ایسا بھی کوئی ہو جائے ہے
آنکھ قاتل کی بھی جس پر شبنمی ہو جائے ہے

طے کبھی اِک پل میں ہو جاتا ہے اِک شب کا سفر
اور کبھی اِک ایک لمحہ اِک صدی ہو جائے ہے

خود شناسی اور تو کچھ زندگی کو دے نہ دے
آدمی لیکن مکمل آدمی ہو جائے ہے

بھائی بھائی مل گئے تو آپ کیوں حیران ہیں
دشمنوں سے بھی تو اکثر دوستی ہو جائے ہے

تب خیال آتا ہے سب سے دوستی اچھی نہیں
بے سبب جب دوستوں سے دشمنی ہو جائے ہے

ختم ہو جاتی ہے گوہر زندگی کی دلکشی
شدتِ احساسِ غم میں جب کمی ہو جائے ہے

"ماہ و انجم" نئی بستی، مراد آباد ۲۴۴۰۰۱

مسلم شہزاد



اندھیرے سے اُبھرتی صبح کا خوش رنگ منظر دیکھ
خزاں دیدہ شجر سے پھوٹتی شاخِ گُلِ تر دیکھ

عجب سنکی ہوئی آندھی چلی چاروں طرف دن بھر
مگر قائم رہی پھر بھی مرے شانے کی چادر دیکھ

ہے مجھ پر نقش شب میں روشنی بھرنے کی دھن حاوی
میں لایا ہوں نگاہوں میں چھپا کر ماہ و اختر دیکھ

ہزاروں رتجگوں کی ضرب سے پامال ہیں آنکھیں
مگر ٹوٹا نہیں اب تک مرے خوابوں کا خور دیکھ

کسی صورت جو کھل سکتا نہیں شہزاد اوروں پر
اگر وہ میں نہیں تو کون ہے پھر میرے اندر دیکھ

مری آنکھوں میں صدیوں سے کوئی شئے ٹوٹتی سی ہے
ترے قدموں کی ہر آہٹ خلا میں ڈوبتی سی ہے

تمنا سربلندی کی سراسر دل لگی سی ہے
کسی شانے پر اب سر کی ضرورت عارضی سی ہے

رقم گل رنگ سی تحریر کرکے جا چکا کب کا
فضاؤں میں ابھی اُس حادثے کی سنسنی سی ہے

اُبھرتی جا رہی ہیں پھر مری ڈوبی ہوئی نبضیں
رگ و پے میں کوئی شے رینگتی پھر زندگی سی ہے

خیالوں میں نکھرتی چاندنی کا عکس ہے شہزاد
نگاہوں میں مگر تاروں کی مدھم روشنی سی ہے

بزمِ کہکشاں، نرکٹیا گنج، مغربی چمپارن

انجم عثمانی

فریب گزیدہ

"یاد ہے، یاد ہے۔" میں چلایا اور ٹیلیفون کا چونگا کریڈل پر پٹخ دیا۔

"ٹرن... ٹرن... ٹرن۔" فون کی گھنٹی پھر بج اٹھی۔

"اب کیا ہے؟" آواز پہچان کر میں غرایا۔

"ہاں بھائی! تم اتنے ناراض کیوں ہو رہے ہو؟ میں نے یاد دلانے کے لیے فون نہیں کیا میں تو...."

"تم مجھے کیا یاد دلاؤ گے؟ میں کبھی نہیں بھولا تھا کہ...." میں نے جھوٹ بولا۔

"ٹھیک ہے، میں کب کہہ رہا ہوں کہ تم بھول گئے تھے۔ میں تو صرف یہ کہہ رہا تھا کہ بھئی تم ٹھہرے مصروف آدمی، ایسا نہ ہو کہ کل میں تمہارے گھر پہنچوں اور تم . . . اب دیکھو تمہارا فون نمبر تلاش کرنے میں ہی کافی وقت لگ گیا اور پھر اس شہر میں کسی کا مکان تلاش کر کے وقت پر پہنچ جانا کم از کم مجھ جیسے قصباتی...."

"اچھا اچھا ٹھیک ہے، اب یہاں طنز کرنے کی ضرورت نہیں، میں گھر پر ہی . . ."

"ٹھیک ہے مگر ایسا نہ ہو کہ میں قصباتی۔"

"دیکھو ہر چیز کی ایک حد ہوتی ہے۔ تم قصباتی قصباتی کی رٹ لگا کر جس طرح کا طنز کر رہے ہو میں اسے...."

"نہیں یار! میں کیا طنز کروں گا تم تو میری ہر بات کو منفی...."

"اچھا اچھا اب تم گھر رہو...." اور میں نے فون رکھ دیا۔

تقریباً پانچ سال بعد ہم اتنی دیر تک ایک دوسرے سے بات کر پائے تھے، ان پانچ سالوں میں نہ اس کا لہجہ بدلا ہے اور نہ وہ یہ بھولا ہے کہ اسے مجھے کوئی وعدہ یاد دلانا ہے۔ گزشتہ بیس سال سے کبھی کم اور لمبے وقفے کے بعد وہ کہیں نہ کہیں سامنے آ جاتا ہے اور اچانک وعدہ پورا کرنے کا تقاضا شروع کر دیتا ہے اور میں پچھلے بیس سال سے ہر بار کوئی نہ کوئی بہانہ بنا کر ایسا بہلاتا ہوں کہ وہ مطمئن سا ہو کر چل دیتا ہے۔ اور کچھ عرصے کے لیے میں بھی بھول جاتا ہوں کہ بہلا دینے کا بھرم جب ٹوٹے گا تو وہ پھر کسی بھی دن کسی بھی وقت کسی بھی جگہ وارد ہوگا اور وعدہ یاد دلائے گا۔

ایمان کی بات تو یہ ہے کہ میں نے اس سے پیچھا چھڑانے کی بہت کوشش کی لیکن مکمل کامیابی کبھی نہ ہو سکی۔ ہر انسان کی طرح میں نے بھی زندگی بھر بہت سے وعدوں کو بھلایا ہے۔ مگر اس سے صاف صاف بات کرنا نہ جانے کیوں میرے بس کی بات نہیں۔ جب کہ شاید میں اس کو اتنے ہی پہلے سے جانتا ہوں جتنا پہلے سے اپنے آپ کو مگر میرے ساتھ اس کا رویہ ہمیشہ سے ہی ستانے اور چڑانے والا رہا ہے۔ پتہ نہیں کیوں اسے مجھے ستانے، میرا راستہ روکے رہنے اور میرے معمولات میں اتھل پتھل مچا دینے میں مزا آتا ہے۔ قصور شاید اس کا نہیں میرا ہے کہ میں نے اس کو اپنے معاملات میں اتنا دخیل کیوں ہونے دیا کہ وہ مجھے ستا سکے۔ مگر خدا گواہ ہے کہ میں نے اسے جان بوجھ کر اختیار نہیں دیا اور کوشش کے باوجود اس سے خود کو پورے طور پر الگ نہیں کر سکا۔

وہ اور میں ایک ہی گھر میں پیدا ہوئے۔ قصبے کے ایک طول طویل آنگن، اونچی اونچی دیواروں اور بڑے بڑے دالانوں والے گھر میں، ایسا گھر جس میں ہر عمر اور ہر طرح کے لوگ ایک ساتھ رہتے تھے، جن کی خوشیاں اور غم سب مشترک تھے۔ اس گھر کی اینٹوں سے بنی اونچی اونچی دیواروں میں جنگلی کبوتروں کے لیے موکھے بنائے گئے تھے۔ جن میں کبوتر انڈے دیتے، سیتے اور بچے پیدا کرتے تھے اور میں اور وہ صبح و شام کبوتروں کی "اللہ ہو" سنتے۔ اس گھر کے بڑوں کا کہنا تھا کہ جس گھر میں جنگلی کبوتر ہوں وہاں فالج کبھی نہیں ہوتا، سچ مچ اس گھر میں کسی کو فالج ہوتے نہیں دیکھا۔ بکریاں تھیں جن کے پیشاب کی بو سے تپِ دق بھاگتی تھی، جن کا دودھ ہمیں کم اور بکری کے بچوں کو زیادہ پلایا جاتا اور ہم اپنے ہاتھوں سے انھیں پتے کھلاتے، چڑیاں تھیں، ان کے گھونسلے تھے، بلیاں، گلہریاں، توتے، مرغیاں تھیں اور ان کے علاوہ ہم سمیت بہت



مکان نمبر ۵۵، گلشن بلاک، نئی دہلی

سے بچے تھے جو سب مل کر کھیلتے، لڑتے، روٹھتے اور منتے تھے اور گرمیوں میں کچے آنگن، کچی چھتوں پر چھڑکاؤ کر کے تاروں کی چھاؤں تلے کھاٹوں پر پڑے پڑے اور سردیوں میں لحافوں میں گھس کر نانیوں دادیوں سے کہانیاں سنتے سنتے سو جایا کرتے تھے۔ اور صبح بغل میں بستہ دبائے مدرسے کا رُخ کرتے۔ ہمارے ہاتھوں میں ملتانی مٹی سے پُتی تختیاں اور بستے میں لپٹا ہوا قاعدہ ہوتا اور لوٹتے ہوئے انگلیوں، ہونٹوں اور کپڑوں پر روشنائی کے دھبّے ہوتے ——— وقت نے ہمارے ہاتھوں میں قاعدے سے سپارے اور سپاروں سے موٹی موٹی کتابیں تھما دیں مگر ہم اسی طرح کبوتروں کی اللہ ہو، چڑیوں کی چہچہاہٹ سنتے، دالان میں ٹنگے جھولوں میں بیٹھی لڑکیوں کو جھوٹے دیتے اور ہر سال لگنے والے میلے میں اڑتی تو تنکیوں کے پیچھے دوڑتے۔

اور پھر یوں ہوا کہ میں اس دوڑ میں قاعدوں، سپاروں، کتابوں کو بھول کر دوڑتا، تیز دوڑتا گیا ——— اور شاید، یہیں سے میرے اور اس کے درمیان فاصلہ بڑھنا شروع ہوا۔

ہم ملتے اب بھی تھے مگر ہماری دلچسپیاں الگ الگ ہو چکی تھیں۔ اس کے ہاتھوں میں کتاب ہوتی تو میرے کان پر ٹرانسسٹر، وہ آج بھی کہانیاں سنتا اور سناتا اور میں قصبے میں ہر ماہ آنے والی فلم کا انتظار کرتا۔

شروع شروع میں اس نے مجھے سمجھایا بھی مگر اس کی باتوں میں مجھے دقیانوسیت کی بُو آتی اور کسی حد تک یہ سچ بھی تھا کہ اسے نہ شہر میں آکر رہنا پسند تھا اور قصباتی یکسانیت پر جھنجلاتا۔ دھیرے دھیرے میں نے اس کا نام ہی "قصباتی" رکھ دیا کہ وہ اب بھی قصبے میں تھا اور میں مستقل طور پر شہر میں۔

شہر میں میں نے کئی مکان بدلے، کئی دفتر مگر وہ نہ جانے کیسے میرا پتہ معلوم کر لیتا ہے اور جب چاہتا ہے بن بلائے آدھمکتا ہے۔ اس کے اس رویّے سے مجھے اکثر لگتا ہے کہ وہ شروع سے ہی قصبے سے مجھ میں چھپ کر یہاں آگیا تھا اور صرف مجھے دھوکہ دینے کے لیے کبھی کبھی یہاں سے غائب ہو جاتا ہے۔ مگر وسوسوں کو دور کرنے اور فضول کی چیزوں پر غور کرنے کے لیے کس کے پاس یہاں وقت ہے کہ بھاگتے جسموں کے اس دھوئیں بھرے جنگل میں کرسیوں کا جال سب کو گھیرے ہوئے ہے اور مجھے اپنی کرسی کی اونچائی قائم رکھنی ہے کہ اس کے بغیر نہ اولاد میری اولاد ہے، نہ بیوی میری بیوی اور نہ شاید میں ہی اپنا۔

پتہ نہیں اس قصباتی کے پاس اتنا وقت کہاں سے آتا ہے کہ مجھے پریشان کرنے آدھمکتا ہے جب کہ اب میرے پاس نہ چڑیوں کے گھونسلے گننے کا وقت ہے نہ کبوتروں کے برتن میں پانی ڈالنے اور بکریوں کو پتے کھلانے کا اور نہ میرے گھر والوں کو ان چیزوں کی ضرورت ہے کہ سب کچھ میرے ڈرائنگ روم میں رکھے الیکٹرانک ڈبے میں بند ہے جس کا بٹن دباتے ہی سب چیزیں چھوٹے سے اسکرین پر زندہ ہو جاتی ہیں مگر اسے کون سمجھائے کہ وہ قصباتی ہے اور ساری سہولیات کے باوجود اسے کھیت سے گنا توڑ کر کھانا، پتنگ بازی کے بہانے پڑوس کی لڑکیوں کو دیکھتے رہنا، دادا پردادا کے زمانے کی کتابوں کو کھنگالنا اور ہر چیز کو ایک مخصوص پردے میں رکھ کر دیکھنے میں مزہ آتا ہے۔ بیچارہ قصباتی۔

اور صاف بات ہے اب اس کا کبھی کبھی آنا بھی مجھے پسند نہیں کہ میرے بچے دوسری طرح پلے بڑھے ہیں۔ ان کو مقابلے کی زندگی میں آگے رہنا ہے، کام بہت ہے اور وقت کم، میں نہیں چاہتا کہ کوئی قصباتی ان کی زندگی پر اثر انداز ہو اور وہ دوسروں سے پیچھے رہ جائیں۔ میں نے اپنے بچوں، بیوی کے لیے سب کچھ بنا دیا ہے۔ میں نہیں چاہتا کہ میری طرح وہ وعدے کریں اور پھر ان وعدوں کے زخم تا عمر سہلاتے رہیں۔ اس لیے اس بار میں اسے ایسا ٹالوں گا کہ وہ ہمیشہ کے لیے وعدہ یاد دلانا بھول جائے۔ میں جانتا ہوں کہ وہ کل پھر آدھمکے گا۔ کہ اس بھولے قصباتی کو شاید یہ پتہ ہی نہیں کہ اس کی یاد دہانی کی ساری محنت اب اکارت اور لا حاصل ہے کہ اب میرے پاس وہ چیز ہے ہی نہیں جس کی مجھے وہ یاد دلاتا ہے کہ وہ چیز بیچ کر تو میں نے یہ الیکٹرانک ڈبہ خریدا ہے جس کا بٹن دباتے ہی چھوٹے سے اسکرین پر ساری دنیا سمٹ آتی ہے۔

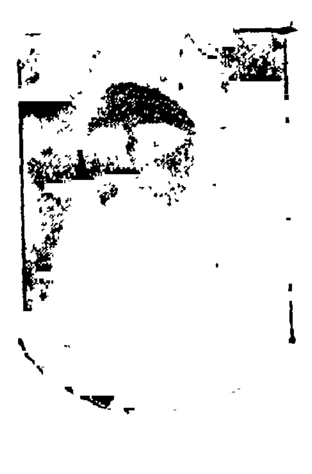
وہ بھولا قصباتی تو ہر مرتبہ کی طرح ٹل جائے گا مگر کسی دن اگر ہمارے بچوں نے ہم سے وہی چیز مانگ لی تو؟

احسان آوارہ

پہلی جنگ آزادی کا ایک گمشدہ کردار

نواب علی بہادر ثانی علی

اُردو کے شعرائے کرام کے دیوانوں کے مطالعے سے یہ بات طے کرلی بہت دقّت طلب ہوجاتی ہے کہ انھوں نے کس شعر پارے کی تخلیق کہاں، کب اور کن حالات کے تحت کی تھی؟ اساتذہ کے دواوین پر یہ بات پورے طور سے صادق آتی ہے، جن کو حروف تہجی کے مطابق ردیف وار مرتب کرکے شائع کیا جاتا رہا ہے۔ دیوان کے آخر میں مرتب ہونے اور طبع ہونے سے متعلق تاریخی اشعار درج کیے جاتے تھے۔ ہاں کبھی کبھی اشعار میں کوئی خاص حوالہ، کسی نام وغیرہ کا تذکرہ اس جانب ایک ہلکا سا اشارہ کرجاتا تھا مگر پھر بھی شک وشبہہ کی فضا قائم رہتی تھی اور کوئی بھی پورے یقین کے ساتھ یہ نہیں کہہ سکتا تھا کہ یہ شعر یا یہ شعر پارہ اس وقت، اور ان



نواب علی بہادر ثانی علی

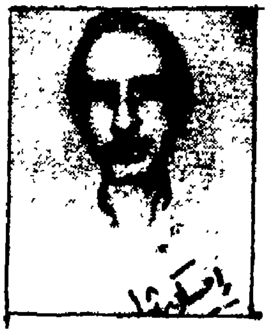
حالات کے تحت یہاں یا وہاں تخلیق کیا گیا ہوگا۔ اس سلسلے میں مرزا غالب کے دیوان میں "ن" کی ردیف کے تحت "مقدور ہو تو ساتھ رکھوں نوحہ گر کو میں" والی غزل میں، مقطع میں غالب فرماتے ہیں:

غالب خدا کرے کہ سوارِ سمندِ ناز
دیکھوں علی بہادرِ عالی گہر کو میں

اس شعر کو سامنے رکھ کر آئیے دیکھیں کہ اس کے کیا معنی اہلِ علم نے نکالے اور اسے کس قدر گہرائی سے سمجھا۔ ویسے اس شعر میں یہ بات تو صاف نظر آتی ہے کہ غالب کسی "علی بہادر" کی ملاقات کے متمنی ہیں۔ لیکن یہ علی بہادر کون ہیں؟ کہاں کے رہنے والے ہیں؟ اور ان کو سوار سمند ناز دیکھنے کی تمنا غالب کو کب اور کیوں پیدا ہوئی؟ ان سوالات کے جوابات نہ تو کسی نے تلاش کرنے کی کوشش کی ہے نہ ہی اس کی ضرورت کا احساس ہی کسی کو ہوا ہے۔ محض قیاس کے سہارے یہ کہا جاسکتا ہے کہ غالباً علی بہادر، غالب کی کوئی بہت عزیز شخصیت ہیں، جس کا تذکرہ انھوں نے شعر میں کیا ہے۔ ورنہ غالب ایسے نہ تھے کہ ہر کس وناکس کا تذکرہ اپنی شاعری میں کرتے۔ ایک محتاط اندازے کے مطابق یہ کہا جاسکتا ہے کہ ١٨٢٧ء میں غالب کلکتہ جاتے ہوئے باندہ (بندیلکھنڈ) میں اپنی بیماری کے ایام میں نواب ذوالفقار علی بہادر نواب باندہ کے مہمان رہے تھے اور اسی دوران انھیں

نواب موصوف کی محبت اور خلوص کی بنا پر ان سے گہرا انس ہوگیا تھا۔ اور اس مقطع میں وہ ان ہی نواب ذوالفقار علی بہادر کے صاحبزادے نواب علی بہادر ثانی کو دیکھنے کی تمنا کا اظہار کر رہے ہیں یا یوں کہیں کہ وہ اس شعر کے ذریعے نواب موصوف کو اپنے متعلق یاددہانی کرا رہے ہیں کہ میاں ہمیں پھر باندہ بلواؤ تاکہ ہم صاحبزادے علی بہادر کو دیکھ سکیں۔ یہ بھی ممکن ہے کہ بعد وفات نواب ذوالفقار علی بہادر۔ غالب، نواب علی بہادر ثانی سے ملنے کی تمنا رکھتے ہوں غالب کے دیوان میں تو کوئی ایسا اشارہ نہیں کہ ہم اس قیاس کو سند مان لیں، لیکن عودِ ہندی میں صفحہ ٢٧ پر غالب کا خط نمبر ٣٢ جو انوار الدولہ سعد الدین خاں بہادر شفق (نواب کدوباونی بندیلکھنڈ) کے نام مرقوم ہے اس میں غالب اپنے باندہ سے رشتے کا تذکرہ یوں کرتے ہیں۔

"میرا دل جانتا ہے کہ آپ کے دیکھنے کا میں کس قدر آرزومند ہوں میرا ایک بھائی ماموں کا بیٹا کہ وہ نواب ذوالفقار بہادر کی حقیقی خالہ کا بیٹا ہوتا تھا۔ اور مسند نشین حال کا (یعنی نواب علی بہادر ثانی) چچا تھا اور وہ میرا ہمشیر بھی تھا۔ یعنی میں نے اپنی ماں اور اس نے اپنی پھوپھی کا دودھ



چھاؤنی، باندہ ٢١٠٠٠١

پیا تھا۔ وہ باعث ہوا میرے باندہ بوندیل کھنڈ آنے کا۔ میں نے سب سامانِ سفر کر لیا۔ ڈاک میں روپیہ ڈاک کا دیا مقصد تھا کہ فتح پور ڈاک سے جاؤں گا۔ وہاں سے نواب علی بہادر کے یہاں کی سواری میں باندے جاکر ہفتہ بھر رہ کر کالپی ہوتا ہوا آپ کے قدم دیکھتا ہوا بہ سبیل ڈاک دلی چلا آؤں گا . . . . ۔"

اس خط کے پس منظر میں نواب علی بہادر نواب باندہ اور مرزا غالب میں کیا ربط ہے اس کا پتہ صاف صاف چل جاتا ہے اور یوں یہ بات تصدیق کو پہنچتی ہے کہ غالب نے اس مقطع میں جس علی بہادر کا تذکرہ کیا ہے وہ یہی علی بہادر ثانی نواب باندہ تھے۔ غالب ۱۸۲۷ء میں باندہ آئے، کیسے آئے، کس جانب سے آئے، کتنے دنوں یہاں قیام فرمایا اور ان کی کیا مشغولیات باندہ میں رہیں، کب واپس گئے، یہ ایک الگ موضوع ہے جس پر الگ سے لکھا گیا ہے۔

باندہ، جو خطۂ بندیلکھنڈ میں سب سے پس ماندہ علاقہ ہے، یہاں نوابی کا مکمل قیام ۱۷۹۰ء اور ۱۸۰۲ء کے درمیان عمل میں آیا تھا جس کے بانی نواب علی بہادر اوّل تھے۔ جب نواب موصوف اس سلسلے کی فتوحات کے آخری مراحل میں تھے تب ان کا انتقال مشہور عالم قلعہ کالنجر کے محاصرے کے دوران ہو گیا تھا۔ ان کے انتقال کے بعد ان کی پہلی زوجہ کے بطن سے پیدا نواب شمشیر بہادر گدی نشین ہوئے تھے۔ لیکن ٹھیک اسی وقت سارے حالات یکسر بدل گئے۔ نواب شمشیر بہادر کے سرپرست مرہٹہ پیشواؤں نے انگریزوں سے شکست کے بعد ایک معاہدے کے تحت پورا بندیلکھنڈ انگریزوں کے حوالے کر دیا۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ بندیل کھنڈ کے سارے راجہ مہاراجہ، نواب انگریزوں کے وظیفہ خوار ہو گئے۔ بس ان کی ذاتی جاگیریں ان کے تصرف میں رہ گئیں۔ اس تبدیلی سے یہاں ہندوستان کے اور علاقوں کے مقابلے میں امن و سکون کا قیام عمل میں آیا تھا اور اسی امن و سکون کی فضا میں علمی، ادبی اور تعمیری کاموں کی جانب توجہ دیے جانے کا رجحان یہاں کے رئیسوں میں پیدا ہونے لگا تھا۔ باندہ میں اس رجحان کی تکمیل نواب شمشیر علی بہادر کے انتقال ۱۸۲۳ء کے بعد ان کے سوتیلے بھائی نواب ذوالفقار علی بہادر کی گدی نشینی کے بعد عمل میں آئی۔

نواب ذوالفقار علی بہادر کی والدہ ماجدہ کا تعلق آگرہ سے تھا۔ اور بقول مرزا غالب وہ ان کی ممانی کی ہمشیرہ تھیں۔ اس لیے اُن کا رجحان خصوصی طور پر ادبی، سرپرستی کی جانب تھا۔ دلی اُجڑ رہی تھی، اور ملک کے دوسرے مقامات پر بھی انگریزی سازشیں نقطۂ عروج پر تھیں۔ ایسی ناقدری اور افراتفری کے عالم میں اہلِ علم جہاں سینگ سمائے وہاں منتقل ہو رہے تھے۔ ایسے وقت میں باندہ کی پرامن فضا نواب ذوالفقار علی بہادر کی ادب نوازی، فن شناسی و قدر دانی اور سرپرستی نے اہلِ ہنر کو باندہ کی جانب متوجہ کیا۔ اسی زمانے میں مرزا غالب ۱۸۲۷ء میں باندہ آئے اور یہاں چھ ماہ قیام کر کے عازم کلکتہ ہوئے۔ چلتے وقت نواب موصوف نے ان کی کس طرح دل جوئی کی اور بعدہٗ باندہ سے ان کی خبر گیری کرتے رہے۔ یہ واقعات ریکارڈ پر ہیں۔ تقریباً اسی سنِ عیسوی میں ریختی کے موجد جناب سعادت یار خاں رنگین بھی باندہ آئے اور نواب موصوف کی سرکار میں ملازمت اختیار کر کے یہیں کے ہو رہے (انتخابِ ریختہ مرتبہ سید سبطِ محمد نقوی۔ صفحہ ۸) اس کے علاوہ محمد یار خاں یکتا، بیدل، نامی بلگرامی، اور دیگر اہلِ علم حضرات نے باندہ کو اپنے دم قدم سے عزت بخشی تھی۔

حضرت منیر شکوہ آبادی، جن کی باندہ میں آمد کا اندازہ ۱۸۴۸ء، لگایا جاتا ہے وہ یہاں عرصے تک مقیم رہے۔ یہاں انھوں نے اپنا دیوانِ اوّل "منتخب العالم" ترتیب دیا جس میں ان کے شاگردِ عزیز نواب علی بہادر ثانی علیؔ کی ایک تاریخی رباعی بھی شاملِ اشاعت ہے۔ (کلیاتِ منیر صفحہ ۳۲۷) رباعی یہ ہے:

استاد کے دیوان کی ہے مدح محال
برجِ معنی کا نیّرِ اعظم لکھ
تھی فکر علی کو نام تاریخی کی
ہاتف نے کہا منتخب العالم لکھ
۱۲۶۴ء

منیر شکوہ آبادی، دوبارہ ۱۸۵۰ء میں ریکارڈ پر ہیں۔ اس کے بعد وہ ۱۸۵۸ء میں نواب موصوف کے باندہ چھوڑنے کے بعد باندہ سے چلے جاتے ہیں۔ یہاں وہ نواب کے استاد کی حیثیت سے ۲/ سو روپیہ ماہوار پر ملازم تھے۔ منیر شکوہ آبادی کو نواب موصوف کی ملازمت میں آنے کا کس قدر اشتیاق تھا۔ وہ ان کے منظوم عریضوں میں نمایاں ہے۔ کلیاتِ منیر کے صفحات ۴۴ تا ۴۷ پر جو عریضے درج ہیں، ان میں سے کچھ اشعار پیش کیے جاتے ہیں جو اس بات کی تصدیق کرتے ہیں:

خدمت سے حضور کی جو ہے دُور
دل ہے بے صبر آنکھیں بے نُور

مرتا ہے عَم معارفت سے
جیتا ہے سر ملازمت سے
ہو بخت مرا اگر مددگار
دیکھوں دربار عرش آثار
اے دل یہی رات دن دُعا کر
اے لب تو حضور کی ثنا کر
اے سر اس در سے آنکھوں کو مل
اے پاؤں تو باندہ کی طرف چل

اس سے صاف ظاہر ہوتا ہے کہ نواب موصوف اہل علم کی کس قدر سر پرستی کرتے تھے۔

۱۸۵۵ء کے بعد کا زمانہ وہ ہے کہ جب انگریزوں نے پورے ہندوستان پر اپنا اقتدار تقریباً مکمل کر لیا تھا۔ اور اب اُن کی پالیسی راجوں مہاراجوں، نوابین کے اختیارات میں کمی کی نئی نئی سازشانہ چالیں چل رہی تھی۔ انگریز اپنے مقاصد میں کامیاب ہوتے چلے جا رہے تھے۔ ایسے عالم میں اگر نواب علی بہادر ثانی علی نے بندیلکھنڈ کے دوسرے راجوں مہاراجوں کی مانند انگریزوں کی ہم نوائی قبول کر لی ہوتی تو وہ بھی باندہ میں اپنی جاگیر، محل، کوٹھیوں کے اسی طرح مالک و مختار ہوتے جیسے کہ بندیلکھنڈ کی دوسری ریاستیں انگریزی ہم نوائی میں قائم رہیں۔ لیکن نواب موصوف ایک وطن پرست تھے، وہ انگریزی غلامی سے نجات پانے کے مقصد سے تانتیا ٹوپے، مہارانی لکشمی بائی کے ہم نوا تھے اور اسی لیے انھیں انگریزی سازشوں کا شکار ہونا پڑا۔ ان کی پنشن کم کر دی گئی، اور ذاتی سپاہ کی تعداد گھٹا دی گئی۔ اور ایک طرح سے انھیں بے دست و پا کر دیا گیا۔

۱۰ مئی ۱۸۵۷ء کو میرٹھ میں انقلاب کا بگل بجا اور پورے ہندوستان میں باغیانہ سرگرمیاں تیز تر ہو گئیں۔ انگریزوں کی ملازمت میں دیسی سپاہیوں کی پلٹنوں نے باندہ میں بھی اپنے انگریز حاکموں کے احکامات سے انحراف کیا اور بغاوت شروع کر دی۔ انگریز اس بغاوت کی بنا پر باندہ شہر میں اپنے بنگلے چھوڑ کر نواب کے محل میں پناہ گیر ہوئے۔ ایک صاحب کردار انسان کی مانند نواب موصوف نے ان کو پناہ دی اور اپنی حفاظت میں ناگور اور ساگر پہنچایا۔ اس کے بعد باندہ، شہر و ضلع میں غنڈوں کے ذریعے لوٹ مار کی وارداتوں پر قابو پانے کی خاطر نواب موصوف نے خود شہر و ضلع کا انتظام سنبھالا۔ اور ایک وار کونسل مرتب کی جس میں حضرت منیر شکوہ آبادی بھی ایک اہم رکن تھے۔

۱۸۵۷ء گو پُر آشوب سال تھا۔ مگر باندہ میں نواب علی بہادر ثانی کے حسن انتظام سے عوام کو لوٹے جانے کے واقعات نہیں ہو پائے باغی سپاہیوں کی باندہ آمد چہار جانب سے ہوتی رہی اور تانتیا ٹوپے اور رانی جھانسی کے احکامات کے مطابق نواب انھیں امداد دے کر روانہ کرتے رہے۔ رانی جھانسی کو نواب نے فوج بھی فراہم کی۔ اسی سال کے آخر میں نواب صاحب کو خبر ملی کہ انگریزی افواج ساگر سے چھتر پور ہوتی ہوئی باندہ کی جانب آ رہی ہیں۔ جن کا کمانڈر، جی۔ سی۔ وہٹلاک ہے۔ نواب موصوف نے جو پہلے ہی اپنی نفیری کا بیشتر حصہ مع گولہ اندازوں کے رانی جھانسی کی امداد کی خاطر بھیج چکے تھے باقی ماندہ فوج کو اکٹھا کیا اور انگریزی افواج سے مورچہ لینے کی خاطر باندہ شہر سے نکل کر گوئرا مغلی موضع کے پاس گوائن کے نالے کی بھڑکوں میں مورچہ لگایا۔ ان کا مقابلہ انگریزی فوجوں سے ہوا۔ سات گھنٹے کی لڑائی کے بعد نواب کی بچی کچی فوج، کمتر اسلحہ جات اور دغاباز انشاء اللہ خان کی غداری کی وجہ سے جس نے بارود کی جگہ کوئلہ بھیج دیا تھا شکست کھا کر واپس باندہ آئی۔ یہ واقعہ ۱۹ اپریل ۱۸۵۸ء کو پیش آیا۔ نواب صاحب نے اعلان کیا کہ انگریزی فوجیں آ رہی ہیں۔ اور اب وہ اپنی رعایا کی حفاظت کرنے سے معذور ہیں۔ انھوں نے خود رخت سفر باندھا اور کالپی جا کر تانتیا کے معرکے میں شرکت کی۔ یہاں بھی شکست کا سامنا کرنا پڑا جس سے دل برداشتہ ہو کر وہ مع اہل و عیال کے اندور چلے گئے۔ جہاں میں وہ نظر بند ہوئے اور اعلان معافی کے بعد وہیں قیام پذیر ہو گئے۔ آج بھی ان کے ورثا اندور میں قیام پذیر ہیں۔

انگریزی فوجوں نے باندہ میں داخلے کے بعد حقیقی غدر کا سماں باندھا۔ جس کو چاہا پھانسی پر چڑھا دیا۔ مکانات برباد کر دیے اور دولت لوٹ لی۔ نواب کے محل گرا کر زمین دوز کر دیے گئے۔ آج نوابین کی یادگاروں میں سے ایک جامع مسجد، ایک تالاب، ایک سرائے اور ایک بارہ دری باقی ہے۔ جسے جناب اسداللہ غالب کی قدم بوسی کا شرف حاصل ہے۔

نواب ذوالفقار علی بہادر اور نواب علی بہادر ثانی علی دونوں ہی حضرات شاعری سے شغف رکھتے تھے۔ اس کے علاوہ علم موسیقی پر بھی انھیں عبور حاصل تھا۔ ان کے زمانے میں بڑے نامی گوّیے، باندہ میں قیام پذیر رہے۔ باندہ کی ٹھمریاں تو ہندوستان بھر میں اپنی شہرت رکھتی تھیں۔ ابھی تک نواب علی بہادر ثانی علی کے شاگرد حضرت منیر شکوہ آبادی کی ایک عشقیہ مثنوی "مہر و ماہ" ہی تلاش کی جا سکی ہے جس

کی تالیف ۸۰۰ ادن کے اندر نواب موصوف نے نو سو اشعار لکھ کر کی تھی۔

نواب علی بہادر ثانی علی کا انتقال ۳۹ ر سال کی عمر میں ۱۸۷۴ء میں بنارس میں طویل بیماری کے بعد ہوا۔ حضرت منیر شکوہ آبادی نے قطعہ تاریخ وفات یوں تحریر فرمایا:

نواب علی بہادر اے بحرِ کرم
یوسف طلعت شجاع یکتا ہے ہے
اے قدر شناس و ناز بردار منیر
اے اہلِ سخن کے عزت افزا ہے ہے
اے صدر نشینِ خلق و اقبال و شکوہ
اے بزم کرم میں مسند آرا ہے ہے
تاریخ تری پہ رو کے کہتا ہے منیر
فیاض زماں امیر زیبا ہے ہے

ایک صدی سے زائد عرصہ گذر جانے کے بعد بھی اس وطن پرست انسان دوست اور شاعر اور سرپرستِ اہلِ علم جس کی کاوشوں سے اردو زبان و ادب کا چراغ آج بھی اس خطۂ تاریک میں روشن ہے۔ اس کی نہ تو کوئی یادگار ہے نہ اس کا تذکرہ کہیں تاریخ و ادب میں آتا ہے۔ نواب ــــ موصوف کے ذریعے تالیف کی گئی مثنوی "مہر و ماہ" کی اشاعت کے بعد یہ قوی امید ہے کہ تحقیق کے شائقین کے ذریعے اس بھولے بسرے عظیم انسان کو پھر وہ مرتبہ حاصل ہو جو اس کی شان کے شایاں ہو۔



سیّد احمد سحر

نویدِ موسمِ صبر و قرار لائے گی
یہ رنگ بھی خلشِ انتظار لائے گی

ہوا کے رُخ سے ہمیں ہو گیا تھا اندازہ
بہارِ تازہ یہی برگ و بار لائے گی

یہی خلش، یہی کاوش، یہی جراحتِ دل
رُخِ حیات پہ اِک دن نکھار لائے گی

اُسے گماں بھی نہ تھا اُس کی بزم آرائی
سکونِ دل کے لیے انتشار لائے گی

نظر کو چھوٹ نہ دینا کہ مڑ کے پھر دیکھے
یہ عکسِ محفلِ ویراں اُتار لائے گی

دے ہمیں کوئی خبر پھر اے خدا اُس شخص کی
جی دُکھاتی ہے رفاقت گمشدہ اُس شخص کی
لوگ کہتے ہیں کہ وہ پورب دِشا سے آیا تھا
چہرہ روشن تھا، چمکتی تھی قبا اُس شخص کی
ڈوبا رہتا تھا بسنتی رنگ میں اُس کا وجود
سبزہ سبزہ لہلہاتی تھی دعا اُس شخص کی
وہ جدھر سے بھی گزرتا بچے ہو لیتے تھے ساتھ
شہر کی تھی ہر گلی درد آشنا اُس شخص کی
شام ہوتے ہی کہیں روپوش ہو جاتا تھا وہ
اور زمیں سے پھوٹتی آوازِ پا اُس شخص کی
ادھ کھلے ہونٹوں پہ کوئی نام تھا لکھا ہوا
نم نگاہی کہہ رہی تھی جانے کیا اُس شخص کی
بے زبانی اُس کی اظفرؔ کتنی معنی خیز تھی
یاد آتی ہے بہت اِک اِک ادا اُس شخص کی

پل بھر کو ساکت ہو جائے یہ سیمابی شہر
خود بینی کو بہم ہو تھوڑی آسانی آمین
اُگے ہتھیلی سے اِک سورج کٹے تھکن کی رات
دل میں بس جائے اِک صورت انجانی آمین
اِک بستر کی ملے خدائی کھلیں لہو کے پھول
ساری رات کریں دو پیکر من مانی آمین
کم سے کم اِک شب تو ہوتی نیندوں کی برسات
پیاسا ہوں! اِس خشک ندی کو دے پانی آمین
اپنے گھر کے سناٹوں سے ہو جاؤں مانوس
یاد نہ آئے شکل کوئی اب پہچانی آمین
دور کہیں سے ابھرے اظفرؔ اِک آسیبی چیخ
چاروں اور سے ٹوٹ کے برسے ویرانی آمین

اظفر جمیل



خلیل غربی، شاہجہاں پور ۲۴۲۰۰۱ (یو۔پی)
اندو موٹرس، نیر لوور بازار، چرچ روڈ، رانچی ۸۳۴۰۰۱

مشتاق مومن ———

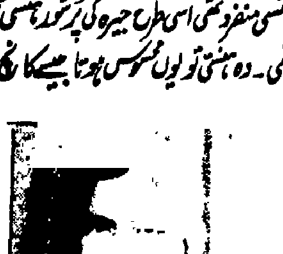
قصّہ جدید حاتم طائی

شہر کی بھری پُری اور گنجان آبادی والے علاقے کی ایک گلی کے کنارے بہت سے لوگ جمع ہیں۔ انڈر گراؤنڈ گٹر شاید ——— مگر شاید کیا بالکل صحیح ہے گٹر OVER FLOW ہوگیا ہے اور دودھیا رنگ کا گدلا گندا پانی مستطیل لوہے کے ڈھکن کے کونوں سے یوں اُبل رہا ہے جیسے انجان گھنے جنگلوں میں کسی سنگلاخ چٹان کے کونوں سے چشمہ اُبل رہا ہو۔ گندے پانی کی ناپاکی سے بچتے بچاتے لوگ آجا رہے ہیں قریب، ویڈیو پارلر کے شیشوں سے رنگین سیکس اور تشدد جھانک رہا ہے۔ چارلس براؤنزن آنکھوں کو بھینچے اسٹین گن تھامے آنے جانے والوں کو اپنی زد میں لیے ہوئے ہے۔ بہت دور کہیں کرکٹ میچ ہو رہا ہے اور بہت قریب کہیں رننگ کمنٹری ہو رہی ہے ——— تھوڑی ہی دور پر نوجوانوں کا ایک غول ربڑ کی بال سے انڈر آرمس کرکٹ کھیل رہا ہے ——— قریب میں نان چاپ کے تیل سے چیکٹے باکڑے پر کیچ بھری آنکھوں والے دو بھیا تہمد اور بنیان پہنے مشینی انداز میں ایک بڑی سی تیز دھار چھری سے پیاز کاٹ رہے ہیں۔ پیاز کے لچھے لگاتار ٹوکری میں گرتے جا رہے ہیں۔ دُور ناکے پر دو تین پھیری والے رنگین کاغذ سے مزین ٹوکروں میں کابلی انار اور کشمیری سیب لیے اکڑوں بیٹھے انگوچھے سے انھیں صاف کرکے چمکا رہے ہیں۔ اور یہاں سے صرف چند کلومیٹر کے فاصلے پر کرفیو لگا ہوا ہے اور اس ماحول میں بنچوں پر بہت سارے لوگ بیٹھے ہیں اور میری نگاہوں میں حاتم کا چہرہ فریز ہوگیا ہے۔ میں اس سے ابھی ابھی مل کر آ رہا ہوں اور نہ جانے کیوں اس کا چہرہ دیکھ کر مجھے جوتوں کے لیس یاد آنے لگے ہیں جو ایک دوسرے کو کراس کرتے ہوئے ایک سوراخ سے دوسرے سوراخ میں گزرتے چلے جاتے ہیں ——— جی ہاں میں حاتم کی بات کر رہا ہوں۔ اس حاتم کا تعلق قبیلۂ طے سے تو نہیں ہے۔ مگر اس کی سخاوت اور دلداری کے جو قصے اس کی ذات کے ساتھ منسوب ہیں اسی بنا پر جب میں نے اسے ایک دن ازراہِ مذاق حاتم طائی کہا تو اس پر وہ اتنا ہنسا، اتنا ہنسا کہ اس کی آنکھوں سے آنسو نکل آئے۔ اور اس کا چہرہ سُرخ ہوگیا۔ اور آج نہ جانے کیوں مجھے اس کے چہرے پر جوتوں کے لیس نظر آئے جو ایک دوسرے کو کراس کرتے ہوئے ایک سوراخ سے دوسرے سوراخ میں گزرتے چلے جاتے ہیں ماتھے سے چہرے اور چہرے سے گردن اور ...

حاتم مجھے بہت پسند ہے اور مجھے یقین ہے کہ جب آپ اس کے بارے میں تفصیل سے جان جائیں گے تو میری طرح آپ بھی اس کے گرویدہ بن جائیں گے۔ اس دنیا میں ایک طرح سے وہ اکیلا ہے۔ اس کا ایک چھوٹا بھائی تھا سیف الدین۔ محرم کے زمانے میں وہ ماتم کرتے ہوئے شہید ہوگیا تھا۔ ماتم کرتے وقت ایک چھوٹی سی برچھی اس کے حلقوم کے پاس شہ رگ میں پیوست ہوگئی تھی۔ میں نے وہ منظر تو نہیں دیکھا مگر دیکھنے والے کہتے ہیں کہ اس کی گردن سے چشمے کی مانند لہو اُبل رہا تھا۔ لوگ اسے چارپائی پر ڈال کر ہسپتال کی طرف دوڑے ضرور مگر راستے ہی میں اتنا خون نکلا اتنا خون نکلا کہ ہسپتال تک پہنچتے پہنچتے اس نے دم توڑ دیا اور اس کے بعد جہاں تک میری معلومات کا تعلق ہے حاتم کو کسی نے کسی کی موت پر روتے نہیں دیکھا۔

حاتم سے میری ملاقات میری شادی کے تیسرے دن ہوئی جب میں اپنی سسرال میں کھانے پر مدعو تھا۔ اس وقت دو باتوں کو خاص طور سے میں نے نوٹ کیا۔ ایک تو حاتم کی مسکراہٹ اور دوسرے اس کی بیوی جیرہ کی ہنسی ———

کڑکڑاتی انگلیوں سے اس نے میری بلائیں لیں تھیں اور حاتم مہمان نوازی میں مسکرائے جا رہا تھا۔ وہ ضیافت سات تھال کی تھی۔ اور بہت پُر لطف تھی مگر حاتم برابر کہے جا رہا تھا "بھائی ——— وہ تمھارے شادی کے دن کا کھانا، دال گوشت ——— بھئی واہ! اس کے سامنے تو یہ تھال کچھ بھی نہیں کیوں جیرہ ہے نا؟ اور اس کی بیوی جیرہ ہنسنا شروع کر دیتی۔ جس طرح حاتم کی خاموش ہنسی منفرد تھی اسی طرح جیرہ کی پُرشور ہنسی منفرد تھی۔ وہ ہنستی تو یوں محسوس ہوتا جیسے کانچ کے



۱۹/۲۹۸، مورتیج مینشن، سیکنڈ فلور، شاستری مارگ، کرلا، بمبئی ۴۰۰۰۷۰

بڑے سے پیالے میں چاندی کے سکّے گرتے جا رہے ہوں مسلسل، لگاتار۔

حاتم طائی نے تو سات سوال حل کیے تھے مگر اس حاتم نے لوگوں کے کتنے سوال حل کیے ہوں گے اس کا مجھے اس لیے اندازہ نہیں کہ میں اس کے شب و روز میں برابر کا شریک نہیں رہا اور ایک وجہ شاید یہ بھی رہی ہو کہ حاتم مسلسل سفر میں رہا اور اس سفر میں اس کی شریکِ حیات بھی رہی مگر مجھے اس کا گمان نہیں تھا کہ . . . .

جس بلڈنگ میں میری سسرال تھی اسی بلڈنگ میں حاتم بھی رہا کرتا تھا۔ اور چوں کہ ہماری سنیچر کی اکثر شامیں سیتارام بلڈنگ میں ہی گزرا کرتی تھیں اس لیے حاتم سے اکثر اتوار کو ہی ملاقات ہوتی تھی۔ اس دن اسے چھٹی ہوا کرتی تھی۔ اس کے تین بچے تھے دو لڑکے اور ایک لڑکی بے حد محنت کرنے والی ایک بیوی اور شفقت نچھاور کرنے والا پپا یعنی حاتم کے ڈیڈی۔ دنیا کہاں جا رہی ہے؟ شہر میں کیا ہو رہا ہے؟ محلّے کے کیا لیل و نہار ہیں ان سب جھمیلوں سے حاتم یکسر آزاد تھا۔ کبھی کبھی تو مجھے اس کی زندگی کی شادابی پر رشک آتا تھا۔ نہ ہم نہ غم۔ وہ عبدالرحمان اسٹریٹ کی کسی بہت بڑی دکان میں فریم میکر تھا۔ مالک کو کبھی کوئی شکایت حاتم سے نہیں رہی کاہکوں سے بھی اس کا برتاؤ بہت اچھا تھا اور جیسا کہ میں جانتا ہوں وہ جب کام پر جاتا تھا تو اس کی جیب میں دو روپے ہوتے تھے۔ کیوں کہ اس نے کوئی علّت پالی ہی نہیں تھی اس لیے یہ دو روپے بھی اکثر وہ بنا خرچ کیے واپس لے آتا اور بڑی سعادت مندی سے بیوی کے حوالے کر دیتا۔ حالاں کہ جے جے ہسپتال سے بہت ساری بسیں عبدالرحمان سٹریٹ جاتی تھیں مگر حاتم کام پر بس سے نہیں پیدل جاتا تھا۔ ناگپاڑہ سے عبدالرحمان اسٹریٹ کا فاصلہ وہ شارٹ کٹ تنگ و تاریک گلیوں سے طے کرتا اور اسی راستے سے واپسی بھی ہوتی تھی۔ جب کبھی وہ اوور ٹائم کرتا اور اسے نقد رقم ملتی تو آتے وقت وہ راستے میں سے جے جے جنکشن کے پاس سے جلیبیاں اور مالپوے بندھوا لاتا۔ اس وقت گھر میں سب سو رہے ہوتے وہ سبھوں کو جگاتا اور ان کا منہ میٹھا کراتا۔ بچے تو نیند میں منہ چلاتے ہوئے جلد ہی فوراً سو جاتے۔ مگر حاتم دیر تک بیوی سے میٹھی میٹھی باتیں کرتا اپنے ہاتھوں سے اسے جلیبیاں کھلاتا۔ اپنی زندگی میں شاید ہی اس نے کسی سے جھگڑا کیا ہو۔ آتے جاتے کبھی کبھار محلّے کے اوباش لونڈے ترنگ میں آکر اس پر آوازے کستے "کیوں حاتم بھائی ـــــ میاں بھائی نے ٹن نا لوڑ دو انی اے فقط ادھار" وہ یہ سن کر اپنی مخصوص مسکراہٹ سے ان کی طرف دیکھتا اور سر جھٹک کر ہولے ہولے قدم بڑھاتے ہوئے آگے بڑھ جاتا۔ اکثر ازراہِ مذاق میں اس سے کہا کرتا تھا۔ "یار حاتم بھائی ـــــ لگتا ہے یا تو تم دو نمبر کا دھندا کرتے ہو یا پھر تمہارے گھر کا خرچ جنّات آکر پورا کرتے ہیں۔ پہلی بات تو صحیح نہیں ہے دوسری بات میں یقیناً صداقت ہو گی۔" "ارے کیا بھائی تم بھی ایسا کہتے ہو۔ دیکھ جیرہ ـــــ کیا کہتے ہیں بھائی" وہ موٹے موٹے ہونٹوں سے مسکرا کر اپنی بیوی سے کہتا اور اس کی بیوی لگاتار ہنسنا شروع کر دیتی۔ اپنی بیوی سے تو اسے محبت تھی ہی مگر وہ اپنے پپا پر بھی جان نچھاور کرتا تھا اور پپا کی یہ حالت تھی کہ نہ منہ میں دانت نہ پیٹ میں آنت۔ وہ حاتم کی ضد تھے۔ انھیں دو چیزوں کا بے حد شوق تھا عمدہ لذیذ کھانے کھانا اور رمی کھیلنا۔ ہفتے کے دن وہ حاتم کے گھر آجاتے۔ کبھی اتفاق سے ہم لوگ وہاں ہوتے تو پھر رمی کی محفل جم جاتی پپا کو کم دکھائی دیتا تھا اور ان کی یادداشت بھی کم تھی وہ جب بھی کھیلنے بیٹھتے تو ہار کر ہی اُٹھتے۔ اکثر وہ رمی کی تیار بازی لیے بیٹھے رہتے اور کوئی دوسرا بازی مار لے جاتا۔ اکثر وہ جوکر اور ہیلو پھینک دیتے اور اسی افسوس میں کئی بازیاں اور ہار جاتے۔ اکثر جیرہ آدھمکتی اور پپا کو ڈانٹنا شروع کر دیتی بات بگڑتی دیکھ کر حاتم بیچ میں آجاتا اور کہتا "ارے جیرہ ـــــ جانے دینا کائے کو دھاندل کرتی ہے کمی کہاں ڈھلا ـــــ؟ کھچڑی میں ہی نا!"

صبح سویرے پپا نماز پڑھنے چلے جاتے تب تک حاتم فرمانبردار لڑکے کی طرح بوہری محلّے سے بارہ ہنڈی اور مغلئی روٹی لے آتا اور نماز کے بعد حاتم کو دعائیں دیتے ہوئے پپا مغلئی روٹی بارہ ہنڈی کے شوربے میں چورتے اور پوپلے مُنہ سے مزے لے لے کر کھاتے اور کبھی قسمت سے رمی میں جیت جاتے تو سارے پیسے حاتم کے بچوں میں بانٹ دیتے ـــ جس دن پپا کی طبعی موت ہوئی اس دن بھی حاتم بہت اداس اور دُکھی تھا۔ مگر خلافِ توقع دوسرے دن وہ کام پر گیا ضرور کیوں کہ دیوالی قریب تھی اور آرڈر کا مال بہت تھا۔ اس نے آدھے گھنٹے میں پانچ فریم بنائے جن میں تین کے کانچ ٹوٹ گئے۔ دو فریم صحیح سالم رہے۔ مالک جہاں دیدہ آدمی تھا اس نے اسی وقت اسے ایک ماہ کی پیشگی تنخواہ دی اور ایک ماہ کی چھٹی اور کہا کہ جب بھی پیسوں کی ضرورت ہو بلا جھجک آکر لے جائے۔

پپّا نے حاتم کے لیے خاصی معقول رقم اور جائداد چھوڑی تھی۔ قلابہ میں ایک چھوٹی سی کھولی جو اَب لاکھوں کی تھی، بمبئی مرکنٹائل بینک میں ۲۵ ہزار کی رقم اور اودے پور میں ایک دُکان اور اس کے پیچھے ایک مکان۔ پپّا کی موت کے بعد مجھے معلوم ہوا کہ حاتم کے دور اور نزدیک کے رشتہ داروں کا حلقہ بھی بہت وسیع ہے۔ وہ موقع پاتے ہی اپنے اپنے سوالات لے کر آ گئے اور حاتم نے ان کے سوالوں کے جو جوابات دینے شروع کیے تو بینک میں صرف ایک ہزار بیلنس رہ گیا۔ قلابہ والی کھولی عارضی طور پر اس کے ماموں کو مل گئی۔ لے دے کے اب اودے پور میں ہاتھی پول کے پاس والی دکان بچ رہی تھی۔ میں اکثر اس سے کہتا کہ یار حاتم یہ سب کیا کر رہے ہو تو وہ مسکرا کر صوفیانہ انداز میں مجھے سمجھانے کی کوشش کرتا۔ اودے پور کی دوکان بہت نلکے پر تھی اور اسی سے ملا ہوا قدیم طرز کا ان کا آبائی مکان تھا دونوں عرصے سے بند پڑے تھے۔ میں نے مشاہدہ کیا کہ اس کے عزیز و اقارب چاہتے ہیں کہ حاتم اودے پور شفٹ کر جائے۔ کیوں کہ دوسرا کوئی، بمبئی چھوڑ کر اودے پور جانا نہیں چاہتا تھا۔ حاتم کے وہاں چلے جانے سے دوسروں کے لیے ایک فائدہ اور تھا کہ حاتم کا ناگپاڑہ والا مکان بھی خالی ہو جاتا۔ میں نے ایک دن حاتم سے پوچھا "حاتم سنا ہے تم بمبئی چھوڑ کر اودے پور جا رہے ہو؟"

"ارے کیا بات کرتے ہو" حاتم نے کہنا شروع کیا "کیا میں گانڈا[1] ہو گیا ہوں۔ سالا جمانا بہت خراب ہے، اپنے بھائی اور اپنے لوگوں کو چھوڑ کر اتنی دور اودے پور میں کیوں جاؤں گا؟ کیوں جیرہ ہے نا؟" موٹے موٹے ہونٹوں پر وہی مخصوص مسکراہٹ لیے وہ اپنی بیوی سے گویا ہوا۔ "کیوں جیرہ ہے نا؟" اور حسبِ عادت جیرہ نے ہنسنا شروع کر دیا۔ ایک دن ایسا ہوا کہ سورت میں کسی عزیز کے یہاں شادی تھی۔ گھر والے سب جا چکے تھے میں میرے ہم زلف اور برادرِ نسبتی صبح کی گاڑی سے روانہ ہونے والے تھے۔ حاتم کی بیوی جیرہ اپنے دونوں بچوں کو لے کر ماں کے ہاں گئی تھی۔ حاتم اس دن گھر میں اکیلا بچوں کے بستے کی مرمت کر رہا تھا۔ اس دن میں نے حاتم سے کہا "یار حاتم — چلو آج تمھیں دال چہ کھلاتے ہیں" "کیا سچ مچ" اس کے چہرے پر خوشیوں کے چھوٹے چھوٹے بلب چمک اٹھے۔ "مگر بھائی شام میں اچھا گوشت کہاں ملے گا" وہ پھر مایوس ہونے لگا۔ "مایوس مت ہو یار" میں نے لے دلاسا دیا۔ "چلو آؤ کوشش کرتے ہیں" اس دن ناگپاڑہ میں اور بوہری محلّے کی تمام دکانوں پر گوشت ختم ہو گیا تھا۔ مگر قسمت اچھی تھی مدن پورہ کے گوشت بازار میں ہمیں اپنی پسند کا گوشت مل گیا۔ گوشت کا وہ عمدہ ٹکڑا جو گاہکوں کو بلانے اور لبھانے کے کام آتا ہے وہ ٹکڑا ہمارے حصے میں آیا۔

اس دن ہم نے حاتم سے سارے کام کروائے اس نے پیاز چھیلی، ہری مرچوں کے ڈنٹھل توڑے لہسن صاف کیا، باسمتی چاول صاف کیے دھوئے غرض وہ کام کرتا جاتا اور کہتا جاتا "دیکھو بھائی کچھ بھی ہو مگر دال گوشت اچھا بننا چاہیے اور مصالحہ ذرا تیز" اور یہ محض ایک اتفاق تھا کہ حاتم کی نیت کی برکت کہ واقعی دال گوشت بہت مزے دار اور لذیذ بنا۔ حاتم جھوم جھوم کر سوں سوں کرتا جاتا، دال گوشت کھاتا جاتا اور تعریفیں کرتا جاتا۔ کھانے کے بعد یہ پروگرام تھا کہ آج حاتم کے گھر میں رمی کی محفل جمائی جائے اس کے گھر میں اس کی بیوی کے کسی عزیز کا وڈیو رکھا ہوا تھا۔ وڈیو دیکھتے ہی میری رگِ شرارت پھڑک اٹھی میں نے شہادت کی انگلی سے حاتم کو اشارہ کیا وہ منہ چلاتے ہوئے میرے قریب آ گیا۔ اس کے منہ سے سونف کی بھینی بھینی خوشبو آ رہی تھی۔

"حاتم یہ وڈیو کس کا ہے؟"

"تمھارا ہی ہے بھائی"

"چالو ہے" میں نے پوچھا۔

"ہاں — چالو کرو نا" وہ مستی میں مسکرایا۔

"تو یار حاتم ایسا کرتے ہیں آج رمی نہیں کھیلتے۔ فلم دیکھتے ہیں"

"ضرور ضرور۔ بولو بولو کون سی فلم دیکھو گے" وہ پیٹ پر ہاتھ پھیرتے ہوئے مسکرایا۔ "مدر انڈیا" یا "بابل" یا "انارکلی" — یار انارکلی دیکھیں گے اس میں کیا مست گانا ہے: جاگ دردِ عشق جاگ" حاتم گنگنایا تھا۔

مگر اس دن ہم بلو فلم دیکھنے کے موڈ میں تھے۔ ایسا موقعہ پھر کہاں ملنے والا تھا مگر دقت یہ تھی کہ حاتم کو بلو فلم والی بات بتائی نہیں جا سکتی تھی۔ اگر حاتم کو ہمارے ارادوں کا پتا چل جاتا تو وہ جان سے چلا جاتا مگر ہرگز نہیں مانتا تو حسب سازش ہم ایک بلو فلم کا کیسٹ لے آئے اور سب جم کر بیٹھ گئے۔ کچھ دیر تک ٹھیک ٹھاک فلم چلتی رہی پھر اچانک بلو فلم اسٹارٹ ہو گئی۔ فلم کا شروع ہونا تھا کہ حاتم یوں تڑپ کر اچھلا

۱۔ گجراتی میں پاگل۔

جیسے اسے الیکٹرک شاک لگا ہو۔" ارے تم لوگوں کو بدو بھائی نے شاید غلط کیسٹ دے دیا ہے۔" ہم لوگوں نے بھی مصنوعی حیرت کا اظہار کیا۔ پھر بڑی منت سماجت سے اور مشکل سے اسے سمجھایا کہ یار کیا ہوا جو غلط کیسٹ آگیا۔ اگر غلطی ہوئی ہے تو جانے دو۔ آتی رات گئے کون جائے گا کیسٹ بدلنے۔ دُکان بھی بند ہوگئی ہوگی اور پھر ہم نے اسے سمجھایا کہ یار کبھی کبھی آنکھ کا مزہ بھی بدل لیا کرو۔ مگر حاتم بوکھلا گیا تھا۔ کھڑکی اور دروازے جنھیں ہم پہلے ہی سیٹ کر چکے تھے اس نے انھیں چیک کیا اور پھر چوروں کے انداز میں بولا۔" یار کہیں پولیس آگئی تو؟" تھوڑی دیر وہ چپ رہتا اور پھر کہتا۔" ارے اگر کسی کو معلوم ہوگیا تو؟" ہم نے زبردستی اُسے اپنے پاس بٹھایا اور چپ رہنے کا اشارہ کیا۔ کیوں کہ پکچر شروع کی کارروائی شروع ہو چکی تھی۔ بار بار ہم اشارے سے اسے پوچھتے اور ہر بار وہ ایک پھیکی ہنسی ہنس دیتا۔ ہمیں معلوم تھا کہ صرف ہمارا دل رکھنے کے لیے وہ ایسا کر رہا ہے۔ بلو فلم چلتی رہی نہ جانے کتنے ہاتھ اور کتنی ٹانگیں اسکرین پر حرکت کر رہے تھے۔ ایک گرما گرم شاٹ پر میں نے جب اُسے ہوکا دیا تو دیکھا ــــــ حاتم بچوں کی طرح انگلیوں میں سر دیے سکڑے سمٹے سو گیا تھا۔ اس کے چہرے پر صرف تبسم ہی نہیں ناگواری کا اظہار بھی تھا۔ یہ میری حاتم سے آخری ملاقات تھی کیوں کہ دوسری بار جانے کے بعد مجھے معلوم ہوا کہ وہ مع اہل و عیال اودے پور جا چکا ہے۔

پہلے پہل تو حاتم کے اودے پور جانے والی بات میری کچھ سمجھ میں آئی نہیں مگر بعد میں اس کی سخاوت کا سبب معلوم ہوگیا۔ اسے جتایا گیا کہ اس کے پتا کی خواہش تھی کہ انھیں اودے پور میں دفنایا جائے کیوں کہ ان کی مرحومہ بیوی کا مدفن وہیں تھا۔ اس میں کتنی صداقت تھی۔ مجھے نہیں معلوم مگر یہ بات میرے سامنے پتا اُسے بتا چکے تھے۔ ان کا بچپن وہیں گزرا اور اودے پور کی دُکان پہلی دکان تھی جس سے انھوں نے اپنا بزنس شروع کیا تھا۔ خود حاتم کی پیدائش وہیں کی تھی۔ ممکن ہے حاتم نے سوچا ہو کہ والد کی وصیت تو پوری نہ ہو سکی اودے پور جانے سے شاید ان کی روح خوش ہو جائے؟

اس بات کو کئی سال گزر گئے۔ کبھی کبھار وہ بمبئی آتا تو ناگپاڑہ ضرور آتا سب سے ملاقات کرتا اور واپس چلا جاتا۔ اس کی خیر خیریت کی خبر مختلف ذرائع سے مجھے ملتی رہی۔ مجھے یہ بھی معلوم ہوا کہ وہ اودے پور میں زیادہ خوش نہیں ہے۔ اس دوران میں بھی رہینِ ستم ہائے روزگار رہا۔ اور ویسے بھی بڑے شہر کی بے حسی بھی بڑی ہوتی ہے۔ لمحاتی طور پر میں بھول سا گیا تھا کہ حاتم نام کا کوئی شخص کبھی مجھ سے ملا تھا۔ پھر یوں ہوا کہ ایک ورک شاپ کے سلسلے میں مجھے اودے پور جانا پڑا۔ تبھی حاتم کا نام میرے لبوں پر آیا میری خوش دامن نے بھی مجھ سے کہا کہ تم اودے پور جا رہے ہو تو حاتم سے ضرور ملنا بہت یاد کرتا ہے وہ تمھیں ہر خط میں تمھاری اور بچوں کی خیریت پوچھتا ہے۔ وغیرہ وغیرہ اس سے ملنے کے خیال سے اچانک بھولی بسری تاریک یادیں جیسے اچانک روشن ہوگئیں میں اسے سرپرائز دینا چاہتا تھا اس لیے میں نے اسے ٹیلی گرام نہیں دیا۔ ــــــ اتفاق کی بات تھی کہ ورک شاپ سکھاڑیا یونیورسٹی میں تھا اور حاتم بھائی سکھاڑیا سرکل کے پاس کہیں رہتا تھا۔ بمبئی سینٹرل سے رات کی گاڑی سے میں روانہ ہوگیا اور دوسرے دن ٹرین نے مجھے اودے پور پہنچا دیا۔ آٹو رکشا لے کر میں سکھاڑیا یونیورسٹی پہنچا تو صدر دروازے پر موٹا سا تالا لگا ہوا تھا پوچھنے پر پتا چلا کیوں کہ کالج میں ہڑتال جاری ہے اس لیے یہاں کوئی نہیں ہے۔ مزید تفصیل یہ معلوم ہوئی کہ گفت و گو جاری ہے ممکن ہے ایک آدھ روز میں فیصلہ ہو جائے لیکن چوں کہ پروگرام سے ایک روز پہلے میں آگیا تھا اس لیے میرے پاس کافی وقت تھا۔ میں نے ورک شاپ کے رابطہ کار کا کارڈ نکالا اور ڈرائیور سے دریافت کرنے لگا ــــــ

ڈرائیور نے ایک مرتبہ اور پتا سنا اور مجھ سے کہنے لگا۔" صاب یہ جگہ تو یہاں سے بہت دور ہے آپ وہاں جانا چاہیں تو مجھے کوئی اعتراض نہیں، مگر ریٹرن کرایا دینا ہوگا کیوں کہ واپسی کی سواری وہاں سے ملتی نہیں ویسے بہتر یہی ہے کہ آج رات کسی مقامی ہوٹل میں آپ رک جائیں۔" مجھے ڈرائیور کی یہ بات اچھی لگی اس لیے میں نے اس سے کہا کہ وہ خود ہی مجھے کسی معقول ہوٹل میں لے چلے۔ اس طرح میں نے وہ رات شالیمار ہوٹل میں گزاری۔ دوسرے دن دوپہر تک سوتا رہا اور پھر سہ پہر کو میں سیر و تفریح کی غرض سے باہر نکلا۔ اس دن میں نے رانا پرتاپ سمارک، سہیلیوں کی باڑی اور گلاب باغ کی سیر کی اور شام میں واپس ہوا۔ پلنگ پر ایسے ہی تھکن دور کرنے کی غرض سے میں لیٹا تھا کہ نہ جانے کب میری آنکھ لگ گئی۔ نہ جانے کب تک میں سوتا رہا۔ پھر دروازے پر دستک ہونے کے بعد ہی میری آنکھ کھلی۔ میں نے دروازہ کھولا سامنے حاتم کھڑا مسکرا رہا تھا۔" حاتم تم...؟" میں نے حیرت اور تعجب سے پوچھا۔" ہاں میں؟" موٹے ہونٹوں سے وہ مسکرایا۔ میں نے مصافحے

کے لیے ہاتھ بڑھایا اس نے بھی دایاں ہاتھ بڑھایا اور دوسرے ہی لمحے اس نے بایاں ہاتھ میرے پیٹ میں گھسا دیا اور اس کے ہاتھوں کی انگلیاں میرے پیٹ میں پیوست ہوتی گئیں۔ اس نے واگھ ناخن پہن رکھے تھے۔ مگر نہ جانے کیوں مجھے درد اتنا محسوس نہیں ہوا۔ جیسے ادھے دھڑ کو خوف نے سُن کر دیا ہو ــــــ پھر مصافحے والا ہاتھ جھٹکے سے اس نے الگ کیا اور اس سے میری آنتوں کو باہر نکالنا شروع کیا۔ باہر کی تیز ہوا میرے پیٹ کے اندر گھس کر چکرانے لگی اور گرداب کی صورت اختیار کرنے لگی۔ میں درد و کرب کی شدّت سے دُہرا ہو گیا ــــــ دن بھر کی کھائی ہوئی چیزیں واپس حلق کے راستے مُنہ میں آنے لگیں جس سے میں کچھ کہہ بھی نہ سکا اور تبھی میری آنکھ کھُل گئی ــــــ معدے میں گیس گھوم رہی تھی۔ میں نے پھرتی سے اُٹھ کر کلی کی اور میز پر رکھی ڈائی جن کی دو ٹکیاں مُنہ میں ڈال کر چوسنے لگا ــــــ بڑا بھیانک خواب تھا۔ دن بھر الم غلم جو کھایا تھا وہ ہضم نہیں ہوا تھا اور شاید اسی کارن . . . میں پلنگ پر لیٹے لیٹے سوچتا رہا اچانک اب کی بار دروازے پر واقعی دستک ہوئی۔ خواب نے مجھے ڈرا دیا تھا اس لیے میں ساکت پڑا رہا۔ تھوڑی دیر بعد ذرا زور سے دستک ہوئی۔ "کون ہے ؟" میں بھی زور سے چلّایا ــــــ "صاب میں ہوں" مجھے اسی ویٹر کی مانوس آواز سنائی دی جو مجھے اٹینڈ کر رہا تھا۔ میں نے کمرے کی بتی جلائی۔ باہر کے دروازے کی بتی جلائی۔ "کیا کام ہے" اب میرا لہجہ نارمل ہو چکا تھا اور میں بھی "صاحب آپ سے ملنا چاہتے ہیں ــــــ" میں نے دروازے سے دُور رہ کر دروازہ کھولا، ہوٹل کا پنجابی مالک ارجن سنگھ میرے سامنے کھڑا تھا۔ "کیا بات ہے ارجن سنگھ صاحب" میں نے پوچھا۔ "میرا نام ارجن سنگھ نہیں بلونت سنگھ ہے۔ آپ ذرا گراؤنڈ فلور سے سیکنڈ فلور پر شفٹ ہو جائیے" ابھی میں اس کی وجہ جاننا ہی چاہتا تھا کہ اس نے ویٹر کو اشارہ کیا اور مسکراتے ہوئے مجھ سے کہا۔ "پلیز آپ ذرا میرے آفس تک آ ئیے" جب تک میرا سامان تیسرے مالے پر شفٹ ہوتا اُس سے پہلے معاملے کی نزاکت کا مجھے علم ہو گیا۔

یہ تو مجھے معلوم تھا کہ نہروں کے جال میں جکڑا ہوا راجستھان کا ہرا بھرا شہر اودے پور اس وقت بدترین سوکھے کی زد میں تھا۔ مگر میں اس خبر سے بے خبر تھا کہ آج شام شہر کے مختلف حصّوں میں تصادم کے کئی واقعات ہوئے ہیں اور پورے شہر میں زبردست تناؤ پھیلا ہوا ہے۔ میں چوں کہ نام لباس اور زبان سے پہچانا جا سکتا ہوں اس لیے حفظِ ماتقدم کے طور پر ہوٹل کے مالک نے مناسب سمجھا کہ مجھے گراؤنڈ فلور سے تھرڈ فلور پر شفٹ کر دیا جائے۔ میری ساری علمیت اور افسانویت ہوا ہو چکی تھی۔ بستر پر لیٹا میں سگریٹ کے کش لیتا رہا اور خواب اور حقیقت کے تانے بانے بُنتا رہا کہ دوبارہ دروازے پر دستک ہوئی۔ دروازہ کھولنے کے بعد میں نے دیکھا کہ ہوٹل کا مالک بلونت سنگھ میرے سامنے کھڑا ہے۔ میں سگریٹ کو ایش ٹرے پر بجھانا ہی چاہتا تھا کہ اس نے اشارے سے مجھے روکا اور کرسی پر بیٹھتے ہوئے کہنے لگا۔ "آپ کو جو زحمت ہوئی ہے اس کے لیے سوری، معاملہ ویسے ہندو مسلم فساد کا رنگ اختیار کر چکا ہے۔ مگر میں" وہ بڑے معنی خیز انداز میں ہنسنے لگا۔ "ڈرنک (DIRNK) کریں گے آپ ؟" اس نے بڑے مہذّب لہجے میں کہا اور ہاں کا اشارہ پا کر اس نے کال بیل دبائی۔

ہم لوگ دیر تک بیٹھے ملٹری رم پیتے رہے پھر تین پیگ کے بعد ہم دونوں ٹیرس پر آ گئے۔ بلونت سنگھ بے حد جذباتی ہو چکا تھا اور میں حد درجہ خائف۔ "ویسے گھبرانے کی بات نہیں ہے برادر گیٹ پر میرے آدمی موجود ہیں" اس نے پُراعتماد لہجے میں کہا۔ میں نے اودے پور پر ایک طائرانہ نظر دوڑائی دھندا اور کہرے میں ڈوبا یہ شہر مجھے کچھ عجیب سا لگا، دور نہر کے دوسرے سرے پر شعلے اٹھنے لگے تھے، شعلوں کے عکس پانی میں جھِل مِل کر رہے تھے کہیں قریب سے جانوروں کی وحشی آوازیں آ رہی تھیں اور دور کہیں مور چنگھاڑ رہے تھے۔

صبح سویرے بھی اس نے مجھے اکیلے جانے کی اجازت نہیں دی۔ پورے شہر میں آج بند منانے کا اعلان تھا۔ پولیس کا بندوبست زیادہ کر دیا گیا تھا۔ "میں نے آدمی بھیجا ہے وہ ابھی شہر کی رپورٹ لے کر آتا ہی ہوگا" اس نے مجھ سے کہا۔ میں اپنے ساز و سامان کے ساتھ کاؤنٹر کے پاس بیٹھا رہا۔ پھر کچھ سوچ کر میں نے ڈائری میں سے حاتم کا ایڈریس نکالا اور بلونت سنگھ سے پوچھا۔ "یہ جگہ یہاں سے کتنی دُور ہے ؟" اس نے ایک نظر پتے کو دیکھا اور مجھ سے کہنے لگا ــــــ "کیا آپ وہاں جانا چاہتے ہیں ؟" "ہاں" میں نے نا کے انداز میں کہا ــــــ "برادر ــــــ مت جاؤ وہاں" اس نے یقینی لہجے میں کہا۔ "چیتک سرکل ہی تو وہ جگہ ہے جہاں سے رائیٹ شروع ہوا ہے۔ وہاں تو بے حد تناؤ (TENTION) ہے"

مجھے سوچتا ہوا پا کر وہ پھر گویا ہوا۔ "ویسے برادر! اگر کسی کو وہاں سے نکالنا ہو تو میرے آدمی جان پر کھیل جائیں گے ——— بولو! کیا بولتے ہو؟"

"نہیں نہیں"۔ میں نے اپنے دلی جذبات کو دباتے ہوئے کہا: "نہیں کوئی خاص بات نہیں۔ ایسے ہی پوچھ رہا ہوں۔ ایک پرانے دوست سے ملاقات کرنا تھی اور بس"۔ یہ سن کر بلونت سنگھ زور سے ہنسا۔ "بہت برے کئی یہاں لوگوں کی جان جا رہی ہے اور تم ہو کہ دوستی کو گلے سے لگائے ہو"۔ اتنے میں گھوں گھوں کرتا ایک آٹو رکشا تیزی سے آیا۔ بریک چرچرائے اور ڈرائیور بے حد اکسائٹڈ انداز میں نیچے اترا اور بلونت سنگھ سے گرمکھی زبان میں کچھ کہنے لگا پوری بات تو میری سمجھ میں نہ آسکی مگر اتنا سمجھ میں آیا کہ سمسیا گمبھیر ہے۔ بلونت سنگھ کی زبانی پتا چلا کہ جیسے جیسے دن بڑھتا جائے گا گڑبڑ بڑھتی جائے گی ——— پھر بلونت سنگھ نے چینٹ کو دونوں ہاتھ لگا کر اوپر کھینچا اور رکشا کی گدی پر زور کا ہاتھ مار کر کہا: "بیٹھو جی تم ——— دلاور سنگھ تمھیں چھوڑ آئے گا ———" میں نے بلونت سنگھ سے مصافحہ کیا اس کا شکریہ ادا کیا اور آٹو رکشا میں بیٹھ گیا ——— اس نے دلاور سے کچھ سرگوشی کی، بش شرٹ کے اوپری دو بٹن کھول کر بغل سے کوئی شے نکال کر اسے دی اور مجھ سے کہا۔ ——— "جاؤ جی لوٹو شہر کے مزے ملیں گے پھر کبھی"۔ دلاور نے پوری قوت سے رکشا اسٹارٹ کیا ——— راستے میں وہی مناظر مجھے نظر آئے جنھیں میں بھیونڈی اور بمبئی میں دیکھ چکا تھا ——— لوگوں کی ٹولیاں نعرے فولادی ٹوپیاں، جالیوں اور رائفلوں سے لیس پولیس ... ڈرائیور صرف ایکسپرٹ ہی نہیں بلکہ نڈر بھی تھا مین روڈ سے بچتا بچاتا تنگ گلیوں کے جال سے گزرتا گیئر بدلتے وہ تیزی سے ڈرائیو کرتا رہا ایک دو جگہ لوگوں نے رکشا کو روکنے کا اشارہ بھی کیا مگر ایسے وقت اس نے رفتار اور بڑھا دی اور پندرہ منٹ کے اندر اس نے مجھے سکھاڈیا یونیورسٹی پہنچا دیا۔ آہنی دروازے سے گذر کر جب رکشا لان میں رکی تو تب میری جان میں جان آئی۔ اس نے مجھ سے پھرتی سے مصافحہ کیا اور بلونت سنگھ کو رپورٹ دینے چلا گیا کہ میں خیریت سے پہنچ گیا ہوں۔

میں نے وہاں ایک ہفتہ کیسے گزارا ورک شاپ کس طور اور کیوں کر ہوا یہ الگ داستان ہے۔ جسے حاتم طائی کے قصے سے کوئی خاص تعلق نہیں ——— آتے وقت بھی میں نے بہت کوشش کی کہ حاتم سے ملوں مگر چیتک سرکل اور ہاتھی پول پر بار ستور کرفیو لگا ہوا تھا اس لیے میں وہاں نہ جا سکا۔ ٹرین سے واپسی ممکن نہ تھی اس لیے میں ایک ویڈیو کوچ کے ذریعے راتوں رات اودے پور سے سورت پہنچا۔ وہاں چند گھنٹے قیام کیا اور پھر فلائنگ رانی سے واپس بمبئی آگیا۔

بمبئی میں خبریں پھیل کر پہنچ چکی تھیں ناگپاڑہ پر بھی بڑی بری بری خبریں پہنچی تھیں ——— لاپتہ لوگوں میں اور ایسے خاندان جن کی کوئی خبر نہ تھی ان میں حاتم کا خاندان بھی شامل تھا ——— کئی دنوں تک میں روزانہ ناگپاڑہ جاتا رہا مگر حاتم کی کوئی خبر نہ ملی۔ میں ایک طرح سے اپنے آپ کو قاتل مجرم سمجھنے لگا تھا ——— خواب کی تعبیریں اکثر الٹی ہوتی ہیں تو کہیں حاتم ——— اگر اسے کچھ ہو گیا تو شاید اس کے لیے میں ہی ذمے دار ہوں کیوں کہ ——— "ویسے برادر اگر کسی کو وہاں سے نکالنا ہو تو میرے آدمی جان پر کھیل جائیں گے بولو ——— کیا بولتے ہو؟" بلونت سنگھ کا جملہ میرے دل پر نقش ہو چکا تھا۔

کئی مہینے گزر گئے۔ ایک طرح سے میں اودے پور کے واقعات کو بھول چکا تھا اور بمبئی میں زندگی اپنی شدت کے ساتھ موجود تھی۔

ایسے ہی سنیچر کی ایک شام میں ہوٹل نجار کے قریب پان کی دکان پر اپنے عزیزوں کے ساتھ کھڑا تھا کہ پیچھے سے آواز آئی: "سلام علیکم بھائی"۔ میں نے پیچھے مڑ کر دیکھا مخصوص مسکراہٹ کے ساتھ جیتا جاگتا حاتم میرے سامنے کھڑا تھا۔ اس کے ایک ہاتھ میں ڈِس ٹمپر کا ڈبہ تھا۔

"ارے تم ———" میں ششدر رہ گیا۔

"ہاں میں ——— کیا بھائی تم نے بھی سمجھ لیا کہ میں مر گیا؟" موٹے موٹے ہونٹ مسکرائے۔

"ارے نہیں یار ———" میں پان کا بیڑہ منہ میں رکھ کر اس سے لپٹ گیا: "میرے بھائی کیسے ہو۔ چلو گھر چلو"۔ "ہاں گھر بھی چلنا ہے"۔ اس نے کہا پھر ہم دونوں ایک دوسرے کے کاندھے پر ہاتھ رکھے سیتارام بلڈنگ میں آگئے۔ حاتم پہلے اپنے پرانے کمرے میں گیا جو گودام بنا لیا گیا تھا۔ مگر اب اس کی صفائی ہو رہی تھی۔ حاتم نے ڈس ٹمپر کا ڈبہ ایک کونے میں رکھا اور صفائی کرنے والے مزدوروں سے جلدی کرنے کو کہا۔ پھر کمرے کے در و دیوار کو چھو کر اور ٹٹول ٹٹول کر دیکھتا رہا ——— بظاہر وہ مجھ سے باتیں کر رہا تھا مگر مجھے صاف محسوس ہو رہا تھا کہ وہ مجھ سے نہیں اپنے کمرے سے باتیں کر رہا ہے۔ پھر میں

سے لے کر دوسرے مالے پر آگیا۔ جہاں اس کی بیوی میری ساس سے لپٹی رو رہی تھی۔ ہم لوگوں کو دیکھتے ہی وہ سنبھل کر بیٹھ گئیں۔ سر پر آنچل لے لیا اور بھیگے لہجے میں مجھ سے کہنے لگی:
"کیوں بھائی کیسے ہو؟ کیا بات ہے بہت سکھا گئے ہو کیوں؟" اور پھر وہی ہنسی کا جل ترنگ ــــــ مدھم دھوپ میں رم جھم رم جھم ہوتی ہوئی بارش۔

اس دن ہم ساتھ ہی رہے حاتم نے مجھے پوری تفصیل بتائی کہ کس طرح اودے پور میں فساد ہوا کس طرح اور کن لوگوں نے اس کی دکان لوٹی اور وہ کیسے جان بچا کر بھاگے اور ... وہ اپنی داستان سناتا رہا اور میں خاموشی سے سنتا رہا۔ "تو پھر اب کیا ارادے ہیں حاتم صاحب" پوری کہانی سننے کے بعد میں نے اس سے پوچھا
"ارادہ کیا ــــــ میں نے اودے پور کی دکان اور مکان دونوں بیچ دیے ہیں۔ ادھر بوہری محلے میں ایک باکڑہ خریدنے کے لیے بات چیت چل رہی ہے میں اپنا خود کا فریم کا دھندا شروع کرنا چاہتا ہوں۔ کیوں جیرو ٹھیک ہے نا؟ ــــ" وہ اپنی بیوی سے مخاطب ہو رہا تھا۔

"ایسا ہے نا ــــــ اپنے لوگوں میں رہیں گے تو مرتے وقت حلق میں کوئی دو بوند پانی تو ڈالے گا۔" جیرو میری ساس سے مخاطب ہوئی تھی۔
"جمانا بہت خراب ہے، سالا ہر طرف لفڑا ہوتے رہتا ہے، ناگپاڑہ اپنا محلہ ہے، اپنے بھائی لوگ ہیں، اب رہیں گے تو اپنے بھائیوں کے بیچ، سالا اپنا لوگ کیسا بھی ہے، کچھ بھی کرتا ہے پر ٹائم بے ٹائم کام تو آتا ہے؟ ارے کچھ نہیں تو مرتے بکھت دو مٹھی مٹی تو قبر میں ڈالے گا ــــــ کیوں بھابی سچی بولتا ہوں نا؟" وہ میری بیوی سے مخاطب ہوا۔

میں نے محسوس کیا کہ حاتم اب گالیاں بھی بکنے لگا ہے جو اس کے جوش اور غصے کی علامت تھی پھر خدا کے فضل و کرم سے سب کچھ ایسا ہی ہوا جیسا حاتم چاہتا تھا۔ اس نے دوبارہ بمبئی میں اپنا گھر اپنے لوگوں میں بسا لیا۔ بوہری محلے کا باکڑہ بھی اس نے خرید لیا تھا محنتی اور ہنرمند تو وہ تھا ہی زبان بھی اس کی اچھی تھی اس کی فریم کی دکان چل پڑی صبح وہ جلدی دکان کھولتا۔ رات میں دیر سے بند کرتا۔ گھر قریب ہونے کے باوجود وہ کھانا دکان پر ہی کھاتا تھا جیرو اسے دو وقت کا کھانا پہنچا آتی۔

پھر اچانک ایک دن کرلا فون آیا کہ حاتم کا انتقال ہو گیا ہے۔ خبر سنتے ہی ہم دونوں پر سکتہ طاری ہو گیا۔ حیران، پریشان اور الجھن کا شکار ہم دونوں میاں بیوی ناگپاڑہ پہنچے۔ پوری تفصیل معلوم نہ ہو سکی بس اتنا معلوم ہوا کہ اس علاقے میں آپس ہی کے لوگوں میں کچھ گڑبڑ ہوئی، فریقین میں زبردست ٹکراؤ ہوا، سوڈا واٹر کی خوب بوتلیں چلیں اور علاقے میں بھگدڑ مچ گئی، حاتم دکان بند کر کے واپس آ رہا تھا کہ راستے میں اسے کسی نے چھرا مار دیا ــــــ کس نے مارا اس کا تو پتا نہیں چل سکا مگر دیکھنے والوں نے دیکھا کہ بیچ سڑک پر حاتم کو دو آدمیوں نے روکا اور شاید نام لے کر پکارا تھا کیوں کہ وہ تو ٹفن تھامے لمبے لمبے ڈگ بھرتا گھر جا رہا تھا ــــــ وہ رکا شاید ان میں ایک منٹ تک کچھ بات چیت بھی ہوئی پھر ایک نے اچانک چھرے کا وار کیا۔ اور دوسرے نے اندر ہاتھ ڈال کر آنتیں باہر کھینچ لیں حاتم طائی بغیر چیخے چلائے چکرا کر بیچ سڑک پر گرا اور خاموشی سے مر گیا اس واقعے کو ایک دن گزر چکا ہے۔

ابھی ابھی دوبارہ میں اس سے مل کر آ رہا ہوں، میں نے دوبارہ اس کے چہرے کو دیکھا ہے۔ اس کے چہرے کو دیکھ کر پھر مجھے جوتوں کے لیس یاد آ گئے ہیں جو ایک دوسرے کو کراس کرتے ہوئے سوراخ میں سے گزرتے چلے جاتے ہیں ماتھے سے چہرے اور چہرے سے گردن اور گردن سے... اس کا پوسٹ مارٹم ہوا ہے۔ میں نے بہت قریب سے جھک کر اسے دیکھا ہے اس کے چہرے پر جا بجا سوالات کھدے ہوئے ہیں، اس کی بند آنکھوں کے دونوں سروں پر مجھے آنسو کے قطرے نظر آئے ہیں۔
شاید حاتم اپنی موت پر خود رو رہا ہے میں گھبرا کر باہر آ گیا۔ دو گھنٹے پہلے میں یہاں آیا تھا میت اٹھانے میں چوں کہ دیر تھی اس لیے میں واپس چلا گیا تھا۔ وقت گزرنے کے بعد بھی کچھ نہیں بدلا ہے سب کچھ ویسا ہی ہے۔

دودھیا رنگ کا گندا گدلا پانی لوہے کے ڈھکن کے کونوں سے برابر اُبل رہا ہے ویڈیو پارلر کے شیشوں سے رنگین سیکس اور تشدد اسی طرح جھانک رہا ہے چارلس براؤنزن اسی طرح ہاتھ میں مشین گن لیے کھڑا ہے کرکٹ کا منٹری جاری ہے۔ اور پیاز کے چھلکے لگاتار ٹوکری میں گرتے جا رہے ہیں۔ میں رومال سے باکڑے کو صاف کر کے بیٹھ جاتا ہوں اور اپنے قریب بیٹھے شخص سے پوچھتا ہوں "بھائی صاحب! بہت دیر ہو گئی، آخر میت کب اٹھائی جائے گی؟" وہ میری طرف دیکھتا ہے اور آہستہ سے کہتا ہے۔
"تم کو مالوم نہیں کیا اس شہر کا دستور ہے کہ جب تک حاکم وقت کا پروانہ نہیں مل جاتا میت دفنائی نہیں جا سکتی۔ ــــ"

آدمی جب بھی فلک بوس عمارت میں رہے
چاہیے اس کو دُعاؤں کی حفاظت میں رہے

میرے معبود ستاروں کو زبانیں دے دے
ہمنوا کوئی تو میرا شبِ فرقت میں رہے

تیرے زخموں کا کسے علم بتا میرے سوا
آئینے یوں تو بہت تیری رفاقت میں رہے

ہو سکا ہم سے نہ معیارِ نظر کا سودا
ہم بہرحال مگر کوئے ملامت میں رہے

ہم تھے خاموش ہر اک بزم میں ساحلؔ کی طرح
لوگ موجوں کی طرح نشر و اشاعت میں رہے

سر ہتھیلی پر ہو جس کا ایسا سر والا نہیں
پیڑ کوئی اب یہاں برگ و ثمر والا نہیں

اُڑتے بادل کی پریشانی نے ثابت کر دیا
آسمانوں کا شبستاں بام و در والا نہیں

دام و دانہ کی ضرورت اک کہانی بن گئی
اب پرندوں میں کوئی بھی بال و پر والا نہیں

اپنے چہرے کی خراشیں بانٹنے کی ضد نہ کر
خیر خواہوں میں ترے کوئی نظر والا نہیں

کیوں فقط انسان ہی اپنے پڑوسی سے لڑے
کیا فرشتوں میں ترے کوئی بھی گھر والا نہیں

اپنے مخلص دوستوں کی رائے ساحلؔ ہے یہی
شعر کہتے ہو میاں، لیکن ہنر والا نہیں

ساحل مونگیری

وارڈ نمبر ۴، محلہ رحمت نگر، ڈاکخانہ برن پور، بردوان ۷۱۳۳۲۵

ملک زادہ جاوید

موسم کی پھر گھات ہوئی
بن بادل برسات ہوئی

گھر کو اب ہم لوٹ چلیں
جگنو چمکے، رات ہوئی

دولت ہاتھ میں آئی تو
اُونچی اُس کی ذات ہوئی

ایک کھنڈر اور آم کا باغ
پُرکھوں کی سوغات ہوئی

چھٹّی لے کر گاؤں گئے
اس سے اُس سے بات ہوئی

۶، پروفیسرز فلیٹس، بابو گنج، لکھنؤ

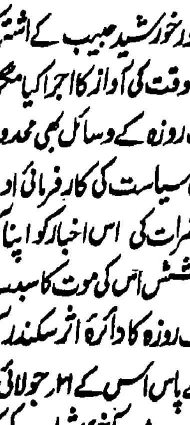
اطہر فاروقی

سکندر آباد کی ادبی روایتوں کے

گمشدہ سلسلوں کی بازیافت

سکندر آباد ضلع بلند شہر یو۔پی۔ کی ادبی روایتیں سولہویں صدی عیسوی سے بیسویں صدی کے نصفِ اوّل تک اردو ادب کی تاریخ میں اہم مقام کی حامل ہیں۔ تقسیمِ وطن کے بعد سکندر آباد بھی اردو کے ان سینکڑوں دیگر اہم مراکز کی طرح؛ اردو کلاسک کی ترتیب جن کی مرہونِ احسان ہے اور جہاں ادبی رویّوں کی حفاظت عقیدوں کی طرح کی گئی، ویران ہو گیا۔ ۱۹۴۷ء میں جب زمیں داری کا خاتمہ ہوا اور سینکڑوں چھوٹے بڑے کایستھ زمیں دار گھرانے تصویرِ محرومی بن گئے تو شعرا و ادبا کی سرپرستی کے سینکڑوں در بھی بند ہو گئے۔ کایستھ یہاں سب کچھ تھے، زمین دار ہی نہیں شاعر اور ادب نواز، ادب پرور، تعلیم کے دلدادہ ماضی کی تہذیبی روایتوں کے پروردہ انھیں ان کی اصل شکل میں قائم رکھنے پر کمربستہ۔ اشرافیہ کا دوسرا طبقہ قاضیوں کا تھا یہ زمین دار تو نہ تھے مگر علم و ادب کے دلدادہ تھے اور خصوصاً بیسوی صدی کی علمی و ادبی تاریخ میں سکندر آباد کے قاضیوں کا بڑا مقام ہے۔ قاضی حیات بخش رسا تو بعد میں ریاست رام پور سے وابستہ ہو گئے تھے اور رسا رام پوری کے نام سے مشہور ہوئے۔ قاضی حافظ الدین نشتر مقتدری دربارِ جے پور سے عرصۂ دراز تک وابستہ رہے (بہ روایت حسین سکندر آبادی) مگر ۴۷ء کے بعد یہاں کے ادب پر سہو کا عالم طاری ہو گیا۔ ایک طرف جہاں اسکولوں اور کالجوں سے اردو کو چشم زدن نکال باہر کیا گیا۔ وہیں قاضیوں کے کتب خانے ردّی میں فروخت ہوئے اور کایستھ زمیں دار جو اب خود دستِ نگر تھے اردو کی سرپرستی کیا کر سکتے تھے؟ تقریباً تمام ہی قاضی واڑہ پاکستان ہجرت کر گیا اُن مہاجرین میں سب سے اہم نام عالمی شہرت یافتہ جغرافیہ داں پروفیسر قاضی احمد سعید کا تھا۔ ۴۷ء سے ۵۷ء تک یہاں کی ادبی زندگی پوری طرح معطل رہی۔ علم و ادب کے چرچے تو کجا اردو کا نام لیوا باقی نہ رہا۔ ۱۹۵۷ء میں ڈاکٹر فطرت انصاری جب بمبئی سے سکندر آباد آئے تو ہفت روزہ طرحی نشستوں کا سلسلہ شروع ہوا۔ اس سناٹے کو چیخ کر توڑنے کی پہلی کوشش آفتاب شیر پوری مرحوم (وفات ۸۔ ۷ مارچ ۸۵ء کی شب) نے ماہنامہ آفتابِ سحر کی شکل میں کی۔ بہت کوشش کے بعد بھی مجھے اس کے تمام شمارے دستیاب نہ ہو سکے؛ لیکن جتنے بھی دستیاب ہوئے ان سے اندازہ لگایا جا سکتا ہے یہ رسالہ ۷۵ء تک مسلسل جاری رہا اور ایمرجنسی کے دور میں یہ بند ہوا۔ آفتابِ سحر کے شماروں سے اندازہ ہوتا ہے کہ مدیر کے وسائل بے حد محدود تھے اور انھیں سرورق کی تیاری سے لے کر کتابت تک کا سارا کام خود ہی کرنا ہوتا تھا۔ ثقہ راویوں کا بیان ہے کہ آفتاب شیر پوری پیشے سے پینٹر تھے۔ شاید یہی سبب ہے کہ ہر شمارے کا سرورق پہلے شمارے سے مختلف ہے ان میں بعض سرورق مصوّری کے نقطۂ نگاہ سے خاصے اچھے ہیں۔ مگر کتابت اور طباعت غیر معیاری ہے۔ جون ۱۹۷۵ء میں سکندر آباد کا پہلا بڑا مشاعرہ جشنِ عشرت کرتپوری کے سلسلے میں ہوا اس موقع پر آفتابِ سحر کا خصوصی نمبر شائع ہوا جس کی طباعت خاصی اچھی ہے۔ اگر آفتاب سحر کے جراکو چھوڑ دیں تو ۴۷ سے ۸۳ء تک سکندر آباد کی شمعِ ادب صرف طرحی نشستوں میں ہی فروزاں رہی۔

۱۹۸۲ء سے نشر و اشاعت کی طرف کچھ توجہ ہوئی۔ ۱۵ اگست ۱۹۸۲ء کو قاضی محمد ماہِ عالم کے کنور خورشید حبیب کے اشتراک سے ہفت روزہ وقت کی آواز کا اجرا کیا مگر اوّل تو اس ہفت روزہ کے وسائل بھی محدود تھے۔ پھر مقامی سیاست کی کارفرمائی اور بعض سیاست داں حضرات کی اس اخبار کو اپنا آلۂ کار بنانے کی کوشش اس کی موت کا سبب بنیں۔ اس ہفت روزہ کا دائرۂ اثر سکندر آباد ہی تھا۔ میرے پاس اس کے ۲۱ جولائی ۸۳ء تک کے شمارے ہیں۔ آخری شمارے کی کتابت اور



۲/۷، رسال داران، سکندر آباد ۲۰۳۲۰۵ (یو۔پی)

طباعت دم توڑتی ہوئی محسوس ہوتی ہے۔ مگر تمام شماروں کے مطالعے سے اندازہ ہوتا ہے کہ مدیر نے (بعد کے شماروں سے معاونِ مدیر کا نام حذف کر دیا گیا ہے اور صرف مدیرِ اعلا قاضی محمد ماہِ عالم درج ہے) اس کی اشاعت جاری رکھنے کی مقدور بھر پور کوشش کی۔ مدیر کا بیان ہے کہ ۲۱ جولائی کا شمارہ آخری شمارہ تھا مگر اس آخری شمارے میں اس طرح کی کوئی وضاحت نہیں ہے پھر درمیان میں بھی اشاعت کا سلسلہ ٹوٹتا رہا ہے۔ ممکن ہے مدیر کا خیال اس کی اشاعت ختم کرنے کا نہ ہو۔ مگر وسائل کی عدم دستیابی اس کی اشاعت کے خاتمے کا سبب بنی ہو۔

میں سکندرآباد کی مرحوم شعری وادبی روایتوں پر ۸۴ء سے ایک تفصیلی مضمون لکھنے کا خواہاں تھا۔ مگر جب مواد کی فراہمی کو نکلا تو کہیں کچھ نہ ملا۔ اسے اتفاق ہی پر محمول کیا جائے گا کہ قدیم قاضی اور کایستھ گھرانوں کی بربادی کے بعد جو لوگ اس نیم فروزاں شمع کو لے کر آگے بڑھے انھوں نے بھی ایسی بے نیاز طبیعت پائی تھی کہ نہ تو اپنی تخلیقات کی اشاعت کی طرف توجہ کی اور نہ ہی اپنے پیش رو اساتذہ کا کوئی سرمایہ ان کے پاس تھا۔ سکندرآباد کا قدیم ترین ایم۔ ایس انٹر کالج بھی اپنی لائبریری کے قیمتی ذخیرے کو برباد کر چکا ہے اور وہاں گرلز روم بنا دیا گیا ہے۔ آفتابِ سحر جو ۱۹۷۵ء میں بند ہوا اور وقت کی آواز ۱۹۸۳ء میں، ان کی مکمل فائلیں ان کے مدیران تک کے پاس موجود نہ تھیں اور مجھے صرف چند شمارے مل سکے، جو پیشِ نظر ہیں۔ ایسے نامساعد حالات میں مکمل تاریخ مرتب کرنا ہفت خواں طے کرنا ہے مگر میں نے بہت تگ و دو کے بعد جو مواد فراہم کیا اسی کی روشنی میں یہ مضمون ضابطۂ تحریر میں آسکا ہے۔

جیسا کہ میں نے عرض کی کہ سکندرآباد کا اردو ادب کی تاریخ کی تشکیل میں اہم مقام ہے۔ اردو کا پہلا لغت جو منظوم تھا یہیں لکھا گیا۔ غالبیات کے اہم ترین نقوش کی بازیافت ارضِ سکندرآباد میں ہو سکتی ہے۔ اس مضمون کا مقصد صرف اس طرف اشارہ کرنا ہے تاکہ آئندہ اگر کوئی تاریخِ سکندرآباد مرتب کرے تو اسے آسانی ہو۔

سکندرآباد کے بارے میں عام رائے یہ ہے کہ اسے سکندر لودھی (۱۴۸۹ء تا ۱۵۱۷ء) نے آباد کیا۔ امر سنگھ بجھل اسٹیٹ ایڈیٹر اتر پردیش نے لکھا ہے:

THE TOWN WAS BUILT BY SIKANDAR LODI IN 1498 A.D., WHO MADE IT THE HEADQUARTERS OF A DISTRICT COMPRISING 22 NEIGHBOURING PARGANAS. IN THE TIME OF AKBAR SIKANDARABAD WAS MADE THE HEADQUARTERS OF A PARGANA PAYING A YEARLY REVENUE OF 12,59,199 DAMS OR RS.62,959 AND BELONGING TO THE SARKAR OF DELHI. IT CONTINUED TO BE IN THE SAME STATE TILL THE RULE OF THE MARATHAS IN 1717 A.D. ON THE BRITISH OCCUPATION IT WAS INCLUDED IN THE ALIGARH DISTRICT, AND IN 1824 IT WAS TRANSFERRED TO THE DISTRICT OF BULANDSHAHR.

یعنی سکندرآباد جب آباد ہوا تو ہندستان کی تہذیبی زندگی پر فارسی کی اجارہ داری تھی۔ اور تہذیبی زندگی کا معیار فارسی کے سوا کچھ نہ تھا اور اردو اپنے نشوونما کے بالکل ابتدائی دور میں تھی۔ ابھی تک یہ خیال عام تھا کہ اردو کی تعلیم کا مکتبی رواج اورنگ زیب کے عہد سے قبل نہ تھا۔ حافظ محمود خاں شیرانی نے حفظ اللسان کے دیباچے میں لکھا ہے کہ گیارھویں صدی ہجری سے پہلے کی ایسی کوئی کتاب نہیں ملتی جس کے لیے یہ کہا جا سکے کہ اسے خالق باری کی طرح بچوں کو پڑھایا اور یاد کرایا جاتا تھا مگر تعجب کی بات ہے کہ اس سے بہت پہلے منشی اجے چند بھٹناگر سکندرآبادی نے ۹۰۴ھ میں بچوں کو پڑھانے کے لیے ایک منظوم کتاب اجے چند نامہ لکھا اور اس کے سنہ تحریر کی خود ہی صراحت بھی کر دی۔ جیسا کہ میں نے عرض کیا کہ یہ کتاب منظوم ہے اور اس میں خالق باری کی طرح فارسی عربی لفظوں سے ہندی مرادف بتائے گئے ہیں؛ لیکن سب سے زیادہ اہم بات یہ ہے کہ یہ کتاب اردو زبان میں ہے اور بلاشبہ اب تک کی تحقیق کے مطابق اردو کی پہلی کتاب ہے اس کا ایک نسخہ مصنف کے اپنے ہاتھ کا لکھا ہوا انجمن ترقی اردو پاکستان (کراچی) کے کتب خانے میں موجود ہے اور دوسرا بھوپال کے سینٹرل آرکائیوز میں ہے۔ کتاب کا مصنف

زیادہ پڑھا لکھا شخص نہیں معلوم ہوتا۔ کیوں کہ عربی فارسی کے بہت سے لفظوں کا تلفظ اس میں اسی طرح ملتا ہے جس طرح عوام انھیں استعمال کرتے ہیں۔ بعض ماہرینِ لسانیات کا خیال ہے کہ اردو میرٹھ اور دلّی کے نواحی علاقوں میں پیدا ہوئی۔ اس مختصر سی کتاب کے بہت سے لفظوں پر ہریانوی کا جو اثر ہے اس کی پہلی بار صحیح نشان دہی کی جا سکتی ہے۔ مثلاً "بڑھے" کو "بڈھے" اور "بڑھنا" کو "بڈہنا" اور بکری کے بچے کو بکروٹا لکھا گیا ہے۔ چند اشعار کی مثالیں دیکھیے:

مہنگا بیچے، گراں فروش
کھنکن پیو، دمادم نوش
دودھ: شیر، دہناں: دشیدن
نام چوکھنا بداں مکیدن

اس کتاب کے سامنے آنے سے یہ اندازہ بھی ہوتا ہے دہلی سے ہٹ کر دوسرے علاقوں میں نصابی ضروریات سے ایسی کتابیں لکھنے کا رواج بہت پہلے عام ہو چکا تھا۔ اور جب اُردو بہ حیثیت زبان نشو و نما کے ابتدائی مراحل میں تھی، سکندرآباد اس وقت بھی علم و ادب کا گہوارہ تھا۔

انیسویں صدی میں غالبیات کے سلسلے کے دو اہم نام ہرگوپال تفتہ اور بال مکند بے صبر سکندرآبادی، اردو شاعری میں اہم مقام رکھتے ہیں۔ تفتہ کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ وہ صرف فارسی کے شاعر تھے اور یہ جو چار اُردو مصرعے ان کے ملتے ہیں وہ انھوں نے غالب کی موت پر کہے تھے:

غالب وہ شخص تھا ہمہ داں جس کے فیض سے
ہم سے ہزار ہیچ مداں نامور ہوئے
فیض و کمال و صدق و صفا اور حسن و عشق
چھے لفظ اس کے مرتے ہی بے پا و سر ہوئے

کا استناد بھی نہیں۔ مگر میں نے کئی لوگوں سے سکندرآباد میں تفتہ کا ایک مقطع سنا ہے جس کے بارے میں وہ وثوق سے کہتے ہیں کہ یہ تفتہ ہی کی غزل ہے:

تپ سوزِ محبت کے لیے چارہ نہیں قمری
یہ گنڈا نیل گوں گردن میں کیوں اے تفتہ جاں باندھا

دیگر کئی لوگوں سے بھی میں نے تفتہ کے اُردو اشعار سُنے ہیں اور یہ بھی کہ ان کا اُردو دیوان ایم۔ ایس۔ انٹر کالج کی لائبریری میں موجود ہے۔ دیوان کی موجودگی سے متعلق تو ایم۔ ایس۔ انٹر کالج کے سابق منیجر راجندر سروپ بھٹناگر نے مجھے بتایا تھا کہ تفتہ کے اُردو دیوان کا خود انھوں نے مطالعہ کیا ہے۔ بہر حال! تفتہ کی اُردو شاعری کا معاملہ ابھی تحقیقِ مزید کا محتاج ہے کبھی اگر ایم۔ ایس۔ انٹر کالج کی لائبریری کا مقدر جاگا اور فہرستیں مرتب ہوئیں اور کچھ کتب کرم خوردہ ہونے سے محفوظ رہ گئیں تو شاید ان میں تفتہ کا اردو دیوان بھی ہو۔ پروفیسر مسعود حسین خاں تو اس شعر کو بھی تفتہ ہی کا تسلیم کرتے ہیں:

ناراض نہ ہو صحبتِ احباب سے تفتہ
جینے کا مزہ دہر میں تنہا نہیں ملتا

میں نے جو مواد فراہم کیا ہے اس سے اندازہ ہوتا ہے کہ ۱۹۴۷ء تک نہ صرف سکندرآباد علم و ادب کا مرکز تھا بلکہ سکندرآباد کے اہلِ علم کا طوطی ہندوستان بھر میں بجتا تھا۔ میری ناقص تحقیق کے مطابق بیسویں صدی کے ربع اوّل میں یہاں سے دو ماہنامے "ید بیضا" اور "شعاع" نکلتے تھے۔ پرانے کاغذات میں شعاع کا صرف ایک صفحہ محفوظ ہے اور ید بیضا کا ایک بھی نہیں یوں ید بیضا کی اشاعت کے استناد میں تامل ہو سکتا تھا مگر سید محفوظ علی بدایونی کی ایک تحریر نے یہ مسئلہ حل کر دیا۔ دراصل یہ "ید بیضا" پر سید صاحب کا تبصرہ ہے۔ جو ان کے مجموعۂ مقالات میں شامل ہے۔ اسے من و عن یہاں نقل کیا جاتا ہے:

"ید بیضا (سکندرآباد ضلع بلند شہر) میں آنریبل نواب عماد الملک بہادر بلگرامی اور شمس العلما خان بہادر مولوی ذکاء اللہ جیسے اکابر و مشاہیرِ قوم کے مضامین کے ساتھ غزلوں کے گلدستے اور میونسپل بورڈ سکندرآباد کی روئیداد کے ذہرے دُمہرے دم چھلے لگا کر شائع کیا گیا ہے اور گلدستے میں بھی مزا یہ ہے کہ جہاں الٰہ آباد یونیورسٹی کے ایک سور آوردہ گریجویٹ مولوی عبدالغفار خاں صاحب بی۔ اے الٰہ آبادی کا کلام ہے اس کے پہلو میں بی حیدری جان صاحبہ شورزا سکندرآبادی کی غزل بھی درج ہے۔ ید بیضا جیسے علمی پرچے کے ساتھ جس میں "ہندوستان کا افلاس" جیسا قابلِ قدر اور بے بہا مضمون اور "جولیس سیزر" جیسا بے ساختہ ترجمہ شائع ہوا ہے۔ ایسی رپورٹ شائع کرنا جس میں اس انبار خانے کی تعمیر تجویز ہو جس میں چوہا داخل نہ ہو سکے یا لعل جی چمار کے مرنے کی خبر درج ہو یا کریشن گراؤنڈ والے پل کا شہر پختہ سے ۴۹ فٹ کے فاصلے پر واقع ہونا بتا کر سکندرآباد کی جغرافی حالت کا انکشاف کیا گیا ہو۔ اس سے زیادہ بدنما ہے کہ تحریر میں

بوریے کا پیوند لگایا جاتا ہے۔

ہندستان کے افلاس کے اسباب اور اس کے رفع کرنے کی تدابیر کے متعلق مولوی عبدالستار خاں صاحب نے جس خوبی اور قابلیت سے بحث کی ہے وہ انہی کا حصہ ہے اور ہم چاہتے ہیں کہ وہ اسی قسم کے مباحث پر اکثر طبع آزمائی فرما کر نہ صرف ید بیضا بلکہ ملک کے دوسرے پرچوں کے ذریعے سے اپنے ہم وطنوں کو اپنے بیش قیمت خیالات سے مستفیض کیا کریں ان کا یہ خیال بالکل صحیح ہے کہ جس ملک میں تمام صنعت و حرفت کے کام بعض جاہل اور کندۂ ناتراش لوگوں کے ہاتھ میں ہوں وہ ملک ترقی اور دولت میں ان ممالک کا کیوں کر مقابلہ کر سکتا ہے۔ جن کی صنعت و حرفت ان لوگوں کے ہاتھ میں ہے جو کامل طور پر تعلیم یافتہ اور مکمل طور پر ماہرِ فن ہیں۔ ہم مولوی صاحب کے ہم آہنگ ہو کر پیشوایانِ قوم کو توجہ دلاتے ہیں کہ صنعتی کارخانوں کے افتتاح میں کوشش کی جائے۔ قومی صنعت ماہرانِ فن کے ہاتھ میں دی جائے۔ قوم کے دولت مند افراد کو ترغیب دی جائے کہ وہ اپنی دولت فیکٹریوں کے کھولنے اور چلانے میں صرف کریں اور بالاشتراک کام کو چلائیں تاکہ عظیم الشان اسکیل پر کام ہو سکے۔

ید بیضا کے اس نمبر میں "علم" کے عنوان سے خان بہادر شمس العلماء مولوی ذکاء اللہ صاحب نے ایک مضمون لکھا ہے جو کئی نمبروں میں ختم ہوگا۔ بعض لوگوں کا خیال ہے کہ شمس العلما ممدوح جس قدر پر گو ہیں نغز گو نہیں اور اس خیال کی تائید میں وہ "علم" والے مضمون کو پیش کریں گے۔ لیکن ہماری ذاتی رائے یہ ہے کہ مولوی ذکاء اللہ صاحب نے اردو کی جو خدمت کی ہے اور جسے باوجود پیرانہ سری کے وہ برابر انجام دیے چلے جا رہے ہیں۔ وہ اس قابل ہے کہ انھیں اردو زبان کے محسنوں کی صفِ اوّل میں جگہ دی جائے۔ اردو پرچوں میں جس قدر مضامین مولوی ذکاء اللہ صاحب کے شائع ہوتے ہیں کسی اور بزرگ کے شائع نہیں ہوتے۔"

رسالہ کمال نکلتا تو دلی کی سٹرک جدید (غالب نئی سٹرک) سے تھا مگر اس کے سرپرست کنور بدری کرشن فروغ تھے۔ فروغ صاحب سکندرآباد کے رؤسا میں تھے ماہر عروض اور تفتہ کے شاگرد اور پرگو شاعر تھے مجھے ان کی جو کتب دستیاب ہو سکی ہیں ان کی تفصیل یوں ہے:

۱۔ بزمِ فروغ یعنی دیوان (یہی عبارت درج ہے) صفحات ۱۴۰ — مطبع مصطفائی۔ دہلی، مارچ ۱۹۱۸ء:
اس میں ان کا اردو فارسی کلام، بڑی تعداد میں قطعاتِ تاریخ وفات اور مختلف موقعوں پر کہی گئی منظوم تخلیقات شامل ہیں۔

۲۔ فروغِ عروض صفحات ۱۱۰ مطبع نیٹو امپیریل پریس دہلی۔ ۱۹۰۴ء

۳۔ گوہرِ عرفانِ فروغ یہ رامائن کا منظوم فارسی ترجمہ ہے۔ صفحات ۱۳۶، مطبع عباسی پریس ترکمان دروازہ، دہلی ۱۹۲۱ء

۴۔ رہبر باغبانی۔ ناقص الطرفین دستیاب ہوئی ہے۔

فروغ صاحب کا رسالہ کمال غالبیات کے سلسلے میں اپنے اندر بہت اہم مندرجات رکھتا ہے پھر اس دور کی تاریخ کی تشکیل میں بھی اس سے استفادہ ناگزیر ہے۔

تفتہ کے بعد غالبیات کے سلسلے میں دوسرا اہم نام بال مکند بے صبر کا ہے۔ ان کے تفصیلی حالات تلامذۂ غالب اور دوسری کئی کتب میں دستیاب ہو جاتے ہیں مگر ان کی تمام کتب نایاب کی حد تک کم یاب ہیں۔ خصوصاً ان کی مثنوی لختِ جگر۔ اس مثنوی کی خصوصیت یہ ہے کہ اسے غالب نے بہ نظرِ اصلاح دیکھا تھا۔ مگر یہ مثنوی بھی چوں کہ نایاب کی حد تک کم یاب ہے۔ سو ماہرینِ غالبیات کو اس کے مندرجات سے بھی آگہی نہ ہو سکی بیسویں صدی کے نصفِ آخر میں مثنوی سے متعلق شائع ہونے والی تقریباً تمام کتب اس مثنوی کے ذکر سے خالی ہیں۔ بعض لوگوں نے (دمع مالک رام صاحب) صرف اس کا کہیں ذکر کرکے حوالہ دے دیا ہے دیکھا نہیں ہے۔ ثبوت اس کا یہ ہے کہ اگر انھوں نے اس مثنوی کو دیکھا ہوتا تو وہ یہ بھی لکھتے کہ اس مثنوی پر غالب کی اصلاح ہے اور اس میں غالب کا ایک اہم قصیدہ بھی ہے۔ لختِ جگر تاریخی نام ہے جس سے سنہ تصنیف ۱۲۵۳ھ نکلتا ہے اور بابع خرد سے عیسوی سال ۱۸۳۷ء برآمد ہوتا ہے۔ اس مشہور مثنوی پر ۱۲۷۵ھ میں نظرثانی کی گئی اور اس کے بعد اسے غالب کے سامنے اصلاح کے لیے پیش کیا بے صبر کا قول ہے:

نے مثنوی، ہے یہ اک طلسمات
چھوٹا سا منہ ہے اور بڑی بات

"لخت جگر" اس نے نام پایا
تام و سنہ اختتام پایا
فکرِ سنہ عیسوی جو آیا
"بالغ خرد" اس کا سال پایا

جب ہو گئی ختم یہ کہانی
باقی تھی ابھی نگاہِ ثانی
اب ہے جو یہ سالِ سالِ مسعود
بارہ سو پر پچھتر افزود
ترمیم کیا پھر اس کو میں نے
ترتیب دیا پھر اس کو میں نے
آراستہ کر دیا اب اس کو
پیراستہ کر دیا اب اس کو
غالب کی نگاہ سے گزر کر
بے عیب یہ ہو گئی سراسر
تصنیف کا سال تھا "جگر لخت"
ترمیم کا سنہ "زہے میر ابخت"

مثنوی کے آخر میں قطعات تاریخ طبع موجود ہیں۔ جن سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ مثنوی ۱۲۸۸ھ (مطابق ۱۸۷۱ء) میں مطبع خورشید جہاں تاب سہارن پور سے شائع ہوئی۔

یہاں بہت تفصیل کی گنجائش نہیں پھر بھی مختصراً یہ عرض کرنا ضروری سمجھتا ہوں کہ سکندرآباد کی شعری و ادبی روایات اگر تفصیلی تاریخی پس منظر کے ساتھ ضابطۂ تحریر میں لائی جائیں تو ایک مکمل اور ضخیم تصنیف کا موضوع ہیں۔ مگر اس کے لیے ہندوستان بھر کے کتب خانوں کی دشت نوردی ضروری ہے اور اگر موضوع کو وسعت دے دی جائے اور اردو کی قید ختم کر دی جائے تو موضوع بے حد وسیع ہو جائے گا! سکندرآباد کے لائق فرزندوں میں سر شانتی سروپ بھٹناگر نام ور سائنس داں) جن کا شعری مجموعہ لاجونتی کے نام سے شائع ہوا تھا مگر مجھے دستیاب نہ ہو سکا، ہندی کے صاحبِ طرز ادیب آچاریہ چترسین شاستری اور فلمی نغمہ نگار سنتوش آنند کے اسمائے گرام اہم ہیں۔ ۸۳ء میں یعقوب بدر، شاہد ایوبی اور شاکر انصاری نے شعرائے سکندرآباد کا سو سالہ تذکرہ شہرِ تفتہ مرتب کیا تھا مگر آدابِ ترتیب و تدوین سے عدم واقفیت نے اسے معمولی درجے کا رسالہ بنا کر رکھ دیا۔ مرتبین نے اسے ترتیب دینے کے لیے اچھی یا بُری مستند یا غیر مستند کوئی کتاب نہیں پڑھی۔ بس صرف اس میں موجودہ شعرا کا کلام اور چند سطری تعارف مل جاتا ہے اب جب کہ دانش گاہوں میں تحقیق کے لیے اس طرح کے موضوعات منظور ہونے لگے ہیں کیا ہی اچھا ہو کہ کسی دانش گاہ میں اسے پی۔ ایچ۔ ڈی کے لیے تحقیق کا موضوع بنایا جائے۔ میں نے برسوں کی تگ و دو کے بعد جو سرمایہ یک جا کیا ہے اگر کوئی اسے موضوعِ تحقیق بنائے گا تو میں سارا مواد فراہم کر دوں گا۔

حواشی

۱۔ یہ سکندر لودی کا زمانۂ حکومت ہے مگر یکم دسمبر ۱۵۱۷ء کو جب وہ گوالیار کے حکمراں کی بغاوت کا خاتمہ کرنے کی تیاری میں تھا، علیل ہو کر فوت ہوا۔

۲۔ UTTAR PRADESH DISTRICT GAZETTEERS BULANDSHAHR, LUCKNOW 1980.

۳۔ تفتہ اور غالب مرتبہ ضیاالدین انصاری ص ۱۴۱، غالب اکیڈمی نئی دہلی۔

۴۔ طنزیات و مقالات سید محفوظ علی بدایونی مولف محمد محی الدین بدایونی، ص ۲۸، ۳۲۷، انجمن ترقی اردو پاکستان کراچی۔ ۱۹۷۴ء۔

احساس کا سفر

یں برسوں سے مقید ہوں
رے کمرے کی نوکیلی سی دیواریں
چبھوتی ہیں مجھے نشتر
نہ جانے کتنی صدیوں سے
یں اپنے جسم کا جلتا ہوا ایندھن
بجھانے کی مسلسل کوششوں میں ہوں

رے احساس کا زخمی پرندہ
بھی تو آسماں کی وسعتوں کو ڈھونڈتا ہے
بھی مایوس ہوکر
پھڑپھڑاتا ہے مرے اندر

مقفّل در
دریچے بند
نہ سورج سے پگھلتے دن
نہ روزن سے اترتی دھوپ
نہ راتیں چاند سے روشن
نہ تاروں کا کوئی منظر
نہ آتے جاتے موسم کا اثر کوئی
اندھیرا ذہن کی تکلیف کا مظہر

مری راتوں کی بے خوابی
ہزاروں درد کے قصے سمیٹے
جاگتی ہے میری آنکھوں میں
مری سانسوں میں پنہاں
میری ناکامی کے افسانے
میں اپنی بے بسی کا اک شکستہ آئینہ
جس کو
حوادث نے کئی ٹکڑوں میں بانٹا ہے
نہیں ہے پاس میرے کوئی چہرہ
سبھی چہرے پرائے ہو گئے ہیں
جو اپنے تھے بچھڑ کر کھو گئے ہیں
دھندلکا چھا گیا ہے چاروں جانب
دکھائی کچھ نہیں دیتا ہے مجھ کو
کہاں جاؤں کدھر جاؤں
رسالے کھو چکے اپنا تعلق
کتابوں سے کوئی رشتہ نہیں ہے
مرے ٹیبل پہ رکھی روشنائی منجمد ہے
قلم انگلی کی پھانسوں سے نکل کر گر چکا ہے
وہ کاغذ جن کے سینوں پر
مری نظمیں مہکتی تھیں
جمی ہے گرد ان پر
سفر تخلیق کا ٹھہرا ہوا ہے
تخیل کی حسیں پریاں
مجھے تنہائیوں کا زخم دے کر
دھندلکوں میں کہیں گم ہو چکی ہیں
میں اپنے روز و شب کی
الجھنوں کا زہر پیتا
کھڑا ہوں سوچ کی وادی میں تنہا

OO

خالد رحیم

مانی ساہو چوک، بخشی بازار، کٹک ۷۵۳۰۰۱ (اڑیسہ)

ھائکو

(۱)

جنگ کا سماں
آؤ لے چلیں گے ہم
ساتھ آسماں

(۲)

ایسا کیوں ہوا
کھو گیا ہوں میں کہاں
زندگی بتا

(۳)

ہر طرف صدا
دستکیں نہ دے یہاں
تیز ہے ہوا

قطب کامران



معرفت ڈاکٹر کرامت علی کرامت، اوڈیا بازار، کٹک (اڑیسہ)

شہناز عشرت امیر

خمیازہ

پوجا روم سے نکل کر ان کی تصویر پر پھول چڑھائے اور ہاتھ جوڑے کھڑی تھی۔ آہٹ ہوئی تو پلٹ کر دیکھا، دیکھتی ہی رہ گئی جیسے اپنی آنکھوں پر مجھے یقین نہیں آ رہا تھا۔

بینا اور رینا ——— ! میری دونوں بچیاں میرے سامنے کھڑی تھیں ——— پورے تین سال بعد ——— او بھگوان ! کہیں یہ خواب تو نہیں، میں نے اپنی ساری کے پلو سے آنکھیں پونچھیں، غور سے دیکھا بینا کی گود میں ایک گول مٹول بچہ تھا، بے خیالی میں اس کی طرف لپکی، ٹھٹکی ——— ہچکچائی ——— ایک لمحے کے لیے رک گئی ——— کہیں وہ بچے کو میری گود میں دینے سے صاف انکار نہ کر دے

"او رام، میں کیا کروں ——— ادھر میرا دل مچل رہا تھا۔ اُدھر بچہ ہمک رہا تھا مانو وہ نانی کی گود میں آنے کے لیے بیقرار ہو اور کلیجے سے لگ کر ٹھنڈک پہنچانا چاہتا ہو ——— کئی وسوسے دل میں اُبھرے، کسی نے دل میں چٹکی بھر لی ——— تین سال بعد میری آنکھوں سے آنسو چھلک پڑے، میری آنکھوں میں ایک التجا تھی ——— جو بینا نے گویا پڑھ لی، اس کی آنکھوں نے یہ عندیہ دیا کہ میں بچے کو اپنی گود میں لے سکتی ہوں ——— میں بچے پر جھپٹی، اُسے گود میں بھر لیا، سینے سے لگایا، آنکھوں سے برسات ہونے لگی ——— وہ تو بالکل اپنے نانا پر گیا تھا، وہی مسکراتی آنکھیں، وہی معصوم چہرہ

میں بچوں کی طرح بلک بلک کر رونے لگی۔

جی چاہتا تھا کہ آج جی بھر کر رو لوں، تین سال گویا میں ایک عجیب سکتے کے عالم میں تھی، مجھے کچھ ہوش نہیں تھا، صبح ہوئی شام ہوئی اور دن یوں ہی بیت گئے تھے، کئی کئی گھنٹے میں خلا میں تکتی رہتی ——— مجھے کس بات کی جستجو تھی، میں کیا چاہتی تھی ——— میں کیا کر رہی ہوں ——— کیا کرنا چاہتی ہوں ——— ؟

میں اپنے خواب سے گویا جاگی، سامنے رمیش کو کھڑے ہوئے پایا۔

"او ! بیٹے، کھڑے کیوں ہو، آؤ بیٹھو یہاں"

"آپ کیسی ہیں ممی" وہ محبت سے پوچھ رہا تھا، داماد کو پہلی مرتبہ اپنے گھر میں دیکھا تو خوشی سے پاگل ہو رہی تھی۔

"کھانے کا انتظام کر دوں، آج پہلی مرتبہ داماد گھر آیا ہے" میں اٹھنے کی کوشش کرنے لگی۔

"نہیں ممی ———" بینو کہنے لگی۔

میں اس خیال سے کانپ گئی کہ کہیں وہ یہ کہنے تو نہیں جا رہی "نہیں ممی، ہم اپنے گھر لوٹ کر کھا لیں گے"

"نہیں ممی" بینا کہہ رہی تھی "آپ آرام کیجیے، رمیش سے باتیں کرتی رہیے، میں اور رینو کھانا بنا دیں گے ———" میں نے اطمینان کا سانس لیا۔

"میرے قریب آ کر بیٹھ جاؤ بیٹے" میں نے رمیش کو بیٹھنے کا اشارہ کیا "تمہارے کون کون ہیں ؟"

"میرا اس دنیا میں کوئی بھی نہیں ہے ممی، آپ میرے لیے سب کچھ ہیں" وہ کہہ رہا تھا "آپ سے ملنے کو بے حد جی کر رہا تھا۔"

"اچھا کیا بیٹے، چلے آئے، میری خوشی کا کوئی ٹھکانہ نہیں ہے آج" میں بولی ——— "مگر یہ کرشمہ کیسے ہو گیا" میں نے دل ہی دل میں سوچا، شاید وہ میرے دل کی بات جان گیا تھا، بولا "کل رات بینا نے ایک خواب دیکھا ——— ان کے پتا کہہ رہے تھے، اپنی ممی کے پاس فوراً جاؤ بہت سزا دے دی تم لوگوں نے، کیوں اس قدر سنگ دل ہو گئے ہو، پتا گویا ڈانٹ رہے تھے ———"

"صبح اٹھ کر بینا نے مجھے اپنا خواب سنایا، اسی وقت رینا کا فون آیا، وہ بتا رہی تھی کہ اس نے بھی پتا کو خواب میں دیکھا گویا وہ کہہ رہے تھے، دیکھتی ہو کیسے تیری ممی کو زمانے نے نچوڑ کر رکھ دیا ہے، جاؤ اپنی مما سے مل لو ———"

"آپ تو جانتی ہیں" رمیش کہہ رہا تھا۔ "ان دونوں کو اپنے پتا سے کتنا گہرا پیار ہے، یہ دونوں جنھوں نے کبھی بھی اس گھر میں قدم نہ



رکھنے کی قسم کھا رکھی تھی فوراً آپ سے ملنے دوڑی چلی آئیں۔"

"او میرے دیوتا ——" میں سوچنے لگی "ابھی بھی آپ کو اس بدبخت کا خیال ہے!! ہائے رام، مجھ سے کیسی خطا سرزد ہو گئی جس کا ازالہ ناممکن ہے —— زندگی بھر میرے لیے ایک چبھن بن کر رہ گئی، وہ شک اور گمان مجھے کیسا لے ڈوبا! ہائے میں کہیں کی نہ رہی، کسی نے سچ کہا ہے شک کی بیت میں جو آ گیا اس نے گویا اپنے پیر پر کلہاڑی مار لی۔ اس جال سے جو نکل آیا وہ واقعی دانشمند ہے۔ میرے دل اور دماغ میں صرف شک اور وہم نے گھر کر لیا تھا، میری آنکھوں پر گویا پردہ پڑ گیا تھا، ان کے ہر فیصلے کو میں غلط زاویے سے دیکھتی رہی۔ میرا دیوتا سمان پتی جس کے پیر دھو کر پینا بھی میری خوش نصیبی تھی، اس پر میں نے شک کیا ان سے بدگمان ہو گئی۔"

میں ایک بزنس مین کی بیوی تھی، ایسا بزنس مین جس کی نیک چلنی کے گیت گائے جاتے تھے، جس نے کبھی شراب کو ہاتھ نہیں لگایا۔ حالانکہ اس کو ایسی پارٹیاں دینی پڑتی تھیں مگر اس نے ہمیشہ اپنا دامن بچائے رکھا۔ وہ جو شادی سے پہلے ایک CHAIN SMOKER تھا اس نے سگریٹ پینا یک لخت بند کر دیا کیونکہ مجھے سگریٹ کی بو سے متلی آتی تھی۔

ہمارا ایک چھوٹا سا خوشحال کنبہ تھا —— وہ تھے، میں تھی، ان کی ایک موسی —— پھر گلاب جیسی جڑواں لڑکیاں بینا اور رینا تھیں —— مجھ سے میرے شوہر انتہائی پیار کرتے تھے چپکے چپکے ان کے چاہنے کا انداز ہی الگ تھا —— میری ہر بدتمیزی کو انھوں نے معاف کیا مگر میری بدقسمتی تھی کہ میں اپنی عادتوں سے باز نہیں آئی، وہ دن میرے لیے پہ پہ نج انتہائی منحوس تھا جس دن سے میں ان کی ہر حرکت کو غلط زاویے سے دیکھنے لگی تھی۔

ہمارے گھر کے کمپاؤنڈ ہی میں ان کی سکریٹری سونیا کا گھر تھا، وہ اپنی ماں کے ساتھ رہتی تھی، پھر دو سال بعد ماں چل بسی، وہ تنہا رہ گئی —— اس کے سونے کا کمرہ اور ہمارے بیڈ روم ایک دوسرے کے مقابل تھے۔ ویسے دونوں کے درمیان کافی فاصلہ تھا، اس کے کمرے کی لائٹ کبھی آن ہوتی اور کبھی آف —— میں یہ سمجھنے لگی کہ وہ میرے پتی پر ڈورے ڈال رہی ہے اور اپنی طرف میرے پتی کا خیال مبذول کرا رہی ہے —— میرے خیال میں لائٹ ایک سگنل بن گئی تھی۔

ایک دن ہمارے ہاں پارٹی تھی، سونیا نے ہی پارٹی کا سارا انتظام سنبھال رکھا تھا۔ جب وہ ہمارے ہاں تھی، میں چپکے سے اس کے گھر گئی۔ وہ صرف کواڑ بند کر کے پارٹی میں آ گئی تھی، میں اس کے کمرے میں داخل ہوئی۔ لائٹ آن کی، ٹیوب لائٹ خراب ہو گئی تھی لہٰذا کبھی خود بخود آن ہوتی اور کبھی آف —— کبھی سلگتی رہتی اور کبھی بجھ جاتی —— یہ بات ظاہر ہو چکی تھی کہ میری کلپنا غلط تھی میں نے اس منظر کا غلط نتیجہ نکالا تھا مگر پھر بھی شک کا بھوت میرے سر سے نہیں اترا۔

نہ جانے کیوں اور کیسے میرے دل میں ایک خیال ابھرا کہ انھیں بتاؤں گی کہ کسی غیر سے وابستگی کیسی جان لیوا ہوتی ہے، میں نے ایک نہایت ہی خطرناک کھیل کھیلنے کی ٹھانی، میں انھیں جلن کی آگ میں جھونکنا چاہتی تھی، میں ان کے دفتر کے ایک نوجوان کلرک راحمن کو لفٹ دینے لگی وہ کبھی دفتری کام کے سلسلے میں گھر آیا تھا، میں نے کسی نہ کسی بہانے اس کو دو چار مرتبہ گھر بلوا لیا تاکہ وہ مجھے اس کے ساتھ دیکھ کر جلیں —— مگر وہ تو ایک نیک اور شریف انسان تھے، بھلا وہ اپنی بیوی پر شک کیا کرتے، کبھی پوچھا بھی نہیں "تم نے راحمن کو دو چار مرتبہ فون کر کے گھر کیوں بلوایا تھا"۔

ایک موقع پر جب کہ وہ ٹور پر تھے، دوپہر کوئی تین بجے کوئی کال بیل بجا رہا تھا، دونوں لڑکیاں کالج گئی ہوئی تھیں، خادمہ اپنا کام ختم کر کے اپنے گھر جا چکی تھی، گھر کا چوکیدار چھٹی پر تھا۔ میں گھر پر اکیلی تھی۔ دروازہ کھولا تو راحمن کو کھڑا پایا، میں نے دالان میں بلا کر بٹھایا۔

"کیسے آنا ہوا راحمن" میں نے پوچھا

"بس، یوں ہی چلا آیا میڈم" وہ معنی خیز انداز میں مسکرایا "صاحب ٹور پر گئے ہیں سکریٹری بھی ساتھ ہے"

"اس سکریٹری کے متعلق تمہارا کیا خیال ہے راحمن" میں نے یوں ہی سوال کیا، مجھے یہ بات اس سے پوچھنی نہیں چاہیے تھی، مگر جو آگ میرے دل و دماغ میں لگی ہوئی تھی اس نے مجھ سے کہلوا دیا۔ باوجود میرے نہ چاہنے پر بھی

"بڑی پارسا بنتی ہے، اینگلو انڈین کی اولاد —— پیٹھ پر ہاتھ نہیں رکھنے دیتی" راحمن کہنے لگا "صاحب کا دل موہ لیا ہے، دوسروں کی کیا پروا کرے گی، اگر صاحب منہ نہ لگائے تو پوچھے بغیر ہماری گود میں آ کر بیٹھ جاتی"۔ راحمن زہر اگلنے لگا تھا، اس کے گندے الفاظ سے مجھے کچھ کراہت سی ہوئی۔ میں نے موضوع بدلنا

چاہا۔ مگر وہ کہے جارہا تھا: "صاحب گھر سے باہر ہوئے ہیں اپنی سکریٹری کے ساتھ ــــ آپ یہاں اکیلی سڑ رہی ہیں۔" وہ مجھے ان کے خلاف اکسانے لگا۔

"سوچا کہ شاید آپ کو میری ضرورت ہو۔" وہ معنی خیز نظروں سے میری آنکھوں میں آنکھیں ڈال کر بولا، مجھے اس کی یہ جرأت اچھی نہیں لگی۔ میری پیشانی پر ناگواری کی شکنیں دیکھیں تو بات پلٹ گیا: "شاید آپ کو کوئی ضرورت پیش آئے کوئی چیز بازار سے خرید لانے کی ــــ یا آپ شاید سنیما وغیرہ دیکھنا چاہیں ــــ" میرے بدلے ہوئے تیور دیکھ کر وہ خاموش ہو گیا۔

"کیا پیو گے کافی، چائے یا ٹھنڈا؟" میں کچھ تلخ ہو کر بولی۔

"آپ جو بھی پلائیں چلے گا میڈم۔"

میں کافی لینے کچن میں گئی، کافی بنا رہی تھی، رامن وہیں آگیا۔ دبے پاؤں، مجھے خبر تک نہ ہوئی وہ پیچھے سے آکر مجھے اپنی گرفت میں لینے کی کوشش میں آگے بڑھا تھا، بھگوان کا کرنا ایسا ہوا کہ اسی لمحے میں ٹرے لے کر پلٹی۔ اس کے ہاتھ سے ٹرے ٹکرائی، گرم کافی کا پیالہ اس کے پیر پر جا گرا۔ اس کی آنکھوں سے بُری نیت جھلک رہی تھی، میرا بدن لرزنے لگا، میں ہمت کر کے دالان میں چلی آئی، وہ میرے پیچھے پیچھے چلا آیا، میں نے اپنے آپ کو سنبھالا، دیکھا کہ سامنے کا دروازہ بند کر کے اس نے چٹخنی چڑھا دی تھی۔ میرا یہ معمول ہے کہ ان کی غیر موجودگی میں کوئی بھی غیر محرم آجائے تو سامنے کا دروازہ کھلا رکھتی ہوں۔ جب دروازہ بند پایا تو میرے پاؤں تلے کی زمین نکل گئی، ایک خیال ابھرا ــــ میں نے فون لیا، ڈائیل کیا ــــ ہاں، ہاں۔ ڈی۔ ایس۔ پی صاحب ــــ ہاں میں بول رہی ہوں، آپ کیسے ہیں بھابی کیسی ہیں ــــ بہت دن سے آپ کا ادھر آنا نہ ہوا ــــ جی ہاں وہ ٹور پہ گئے ہوئے ہیں ــــ دو چار دن لگ ہی جائیں گے ــــ آپ سے ایک ضروری کام تھا ــــ اسی وقت آجائیں تو بہتر ہوگا ــــ جی ہاں، رام رام ــــ" میں نے فون رکھ دیا، میں نے تو یونہی ڈائیل گھمایا تھا، رامن کے دل میں چور جو تھا اس کے چہرے کا رنگ اڑ گیا۔ وہ گھبرایا، اس نے اسی میں اپنی بھلائی جانی کہ وہاں سے جلد از جلد کھسکے۔

"میڈم مجھے معاف کیجیے، صاحب سے شکایت نہ کیجیے گا۔" وہ ہاتھ جوڑ کر رفو چکر ہو گیا۔

میں نے دھڑام سے اپنے آپ کو صوفے پر گرا دیا۔ او میرے رام یہ کیا ہو گیا تھا ــــ اگر وہ مجھے چھو بھی لیتا تو میں شرم سے مر جاتی، میں نے ہزار تو باتیں کیں۔

○

اس صبح میرا موڈ خراب تھا، ڈائننگ ٹیبل پر صرف رینو آئی تھی، وہ ابھی نہیں آئے تھے اس دن میں حد درجہ چڑچڑی سی رہی، رینو جانتی تھی کہ آج میں اس کے پپا کو ٹھیک طور سے کھانے نہیں دوں گی، کچھ نہ کچھ بکے چلے جاؤں گی۔

"ممّا، آپ اپنے آپ کو سنبھالیے۔" رینو مجھے سمجھانے لگی۔ "آپ کی یہ زیادتی ہے کہ آپ خواہ مخواہ پپا پر شک کر رہی ہیں۔"

"تو اپنی ماں سے کہہ رہی ہے؟" مجھے غصہ آگیا۔

"ممّا ہم نے بھی بہت سہہ لیا، سب کچھ دیکھ رہے ہیں، سمجھتے ہیں کہ کس کی غلطی ہے، اب تک تو ہم خاموش رہے اس خیال سے کہ شاید آپ خود بخود سنبھل جائیں گی مگر الٹا آپ نے اپنی بیکار باتوں سے گھر کا چین اجاڑ رکھا ہے۔"

"کیا بکتی ہے۔" میں بپھری۔

"دیکھیے ممّا میں یہ کہے بغیر نہیں رہ سکتی کہ آپ کا رویہ بڑا نازیبا ہے، غلطی آپ کی ہے، آپ پپا کو دوش دیتی ہیں۔ شک و شبہ کے طوفان میں آپ بہے جا رہی ہیں، آپ سمجھتی ہیں کہ جو آپ سوچتی ہیں وہی سچ ہے، آپ یہ دیکھنا نہیں چاہتیں کہ جو کچھ آپ سوچتی ہیں اس میں حقیقت کس حد تک ہے، پپا کے سمجھانے پر آپ بھڑک اٹھتی ہیں۔ پپا تو خاندان کی رسوائی سے خائف ہو کر اکثر خاموش ہو جاتے ہیں۔ اس کا آپ غلط مطلب نکالتی ہیں یا سوچتی ہیں کہ گناہ سرزد ہوا ہے۔ لہٰذا خاموشی کو اپنا لیا، کبھی کبھار غصہ کرتے ہیں تو آپ یہ سمجھتی ہیں کہ گناہ سر چڑھ کر بول رہا ہے ــــ خاموش رہو تو غلطی، غصہ کرو تو غلطی ــــ"

"او لونڈیا، بہت کہہ لیا۔" میں اپنے آپے سے باہر ہو گئی، طشتری میرے ہاتھ میں آگئی تھی، اسی لمحے وہ ڈائننگ روم میں چلے آئے تھے۔ میرے ہاتھ میں طشتری دیکھ چکے تھے، وہ میرے ارادے کو شاید بھانپ بھی گئے تھے، فوراً اپنے آپ کو میرے اور اپنی بیٹی کے درمیان لے آئے، طشتری ان کی پیشانی سے جا ٹکرائی۔

"بچوں کو بھی میرے خلاف بہکا دیا، بھگوان تمہیں غارت کرے۔" میں بپھری ہوئی گھر سے نکل کر میکے آگئی۔

دو دن بعد غصہ تو ٹھنڈا ہو گیا مگر اپنے

گھر نہیں لوٹی، چاہتی تھی کہ وہ آکر مجھے منا کر گھر لے جائیں۔ پچھلے کئی بار ایسا ہوا تھا، جب ایک ہفتہ گزر گیا اور وہ نہیں آئے تو میرا دل بے چین ہو گیا۔ اب میرا یہ معمول ہو گیا کہ صبح آٹھ بجے بالکونی میں آ بیٹھتی اس انتظار میں کہ انھیں دفتر جاتے ہوئے دیکھ لوں، اسی راستے سے انھیں گزرنا تھا، مگر انھیں دیکھ نہ پاتی۔

ماتا جی مجھ سے کہنے لگیں "دیکھو بیٹی، یوں بات بات پر میکے چلے آنا ٹھیک نہیں لگتا، اولاد جوان ہو گئی ہے، خواہ مخواہ خود دُکھی ہوتی ہو اور دوسروں کو دُکھی کر دیتی ہو، دراصل بات کچھ بھی نہیں ہوتی، بات کا بتنگڑ بنانے سے گھر اور من کی شانتی ختم ہو جاتی ہے، بفرض محال تمھارے پتی کسی اور کی طرف جھکے جا رہے ہیں تو تمھیں چاہیے اپنی محبت سے اس کا دل جیتو۔ ہر بات پر تکرار اور جھگڑے سے بات نہیں بنتی، بگڑتی ہے، جب تمھیں تمھارا اپنا پیار مل رہا ہے تو تمھیں کسی اور بات کی پروا نہیں کرنی چاہیے، عقل کے ناخن لو، سمجھنے کی کوشش کرو، ورنہ پچھتاؤ گی۔"

ماتا جی بالکل ٹھیک کہہ رہی تھیں مگر اس وقت مجھے ان کی باتیں اچھی نہیں لگیں پھر مجھے یہ پریشانی لاحق ہو گئی کہ کہیں مزاجِ دشمناں خراب تو نہیں، میرا دل دھڑکا، اب مجھ سے مزید رہا نہ گیا، میں نے دفتر فون کیا، معلوم ہوا کہ وہ نہ ٹور پر گئے ہیں اور نہ دفتر ہی آئے ہیں۔ میں نے گھر پر فون کیا۔

"کون، رینو ——؟"

"ہاں" وہ بولی

"کیسے ہیں تیرے پتا، کہیں مزاجِ دشمناں خراب تو نہیں؟"

"بڑی جلدی پتا کی یاد آئی؟ پتا ٹھیک ہیں۔"

"تو پھر دفتر کیوں نہیں گئے؟"

"گھر پر آرام کر رہے ہیں۔" رینا کی آواز میں طنز تھا۔

"کیوں کیا بات ہے رینو؟"

"بات کچھ بھی نہیں تھا، آنکھ سے کچھ اوپر ملشتری سے دو انچ گہرا زخم آیا ہے۔"

"ہائے بھگوان۔"

"تین دن ڈاکٹر کے پاس جانے سے کتراتے رہے، سوچا کہ یوں ہی زخم بھر جائے گا۔" رینو بتا رہی تھی۔ "ڈاکٹر چاچا کو بھی گھر پر نہیں بلوایا، محض اس خیال سے کہ کہیں وہ اس زخم کے متعلق پوچھ بیٹھیں تو کیا بتائیں گے —— یہی کہ پتنی نے پتی دیو کا سر پھوڑ دیا —— تین دن منہ پھولا رہا پھر پیپ بھر گیا زخم میں —— ایک رات بدن تپنے لگا، بے ہوش ہو گئے، بے ہوشی کے عالم میں بھی پتنی کو پکارتے رہے۔ میں نے ڈاکٹر چاچا کو فون کر کے بلا لیا، تین ٹانکے لگے، آج بخار ٹوٹا ہے —— پتا جیسا بے شرم انسان ہم نے نہیں دیکھا، بار بار پتنی کو پوچھتے رہے۔"

"کیا کہہ رہی ہے چھوکری تو۔" مجھے غصہ آ گیا۔ "اپنے پتا کو بے شرم کہتی ہے۔"

"پھر کیا کہوں، سر تو پھوٹا، پھر بھی کہہ رہے ہیں اپنی ممی کو فون کر کے بلا لو —— حد ہو گئی۔ انسان کو اتنا بھی نیک نہیں ہونا چاہیے —— میں نے آپ کو اطلاع نہیں دی، پتا نے مینا سے بھی کہا۔ اس نے وعدہ کیا مگر فون نہیں کیا آپ کو۔"

فوراً فون پٹخا، کار نکالی اور اپنے گھر کی طرف ہو لی، کمرے کی جانب لپکی، ابھی ابھی ڈاکٹر نیند کا انجکشن لگا کر گیا تھا، وہ کراہ رہے تھے۔

مجھے کمرے میں داخل ہوتے دیکھ کر مینا اور رینا کمرے سے نکل آئیں، ان کی صورتوں سے صاف ظاہر تھا کہ انھیں مجھ سے نفرت سی ہو چلی تھی —— میں ان کے قریب جا بیٹھی چہرہ ابھی سوجا ہوا تھا۔ چہرے پر تھکن کے آثار صاف نمایاں تھے "ہائے بھگوان مجھ سے یہ کیا ہو گیا۔" میں مسہری کی پٹی سے سر لگا کر خوب روئی، دو گھنٹے بعد انھوں نے آنکھ کھولی، مجھے اپنے قریب پایا تو لبوں پر مسکراہٹ آ گئی۔

"اچھا کیا تم آ گئیں۔" وہ آہستہ سے بولے

میری زبان سے الفاظ نہیں نکل رہے تھے، میں نے اپنا سر ان کے سینے پر ٹکا دیا۔ پھوٹ پھوٹ کر رونے لگی۔

"نہیں، نہیں۔" وہ میرے سر پر ہاتھ پھیرتے ہوئے بولے۔

پندرہ دن وہ بستر پر پڑے رہے، مزاج پرسی کے لیے جو بھی آتا وہ سر پر زخم آنے کا سبب پوچھتا تو بڑی صفائی سے کہہ دیتے کہ فرش سے لیے پھسلے کہ گلاب دان ٹوٹا اور زخم آ گیا۔ میں شرم سے پسینے پسینے ہو جاتی۔

اتنا کچھ ہو جانے کے باوجود میرا شک ابھی ویسے ہی جوں کا توں باقی تھا، میں ایک دن رینو سے پوچھنے لگی: "میری غیر حاضری میں کون کون آیا تھا۔"

"ہاں آپ سونیا کے متعلق جاننا چاہتی ہیں نا۔" رینو جیسے بے صبر ہو گئی۔ "اتنا کچھ ہو گیا مگر پھر بھی آپ نہیں بدلیں —— ہاں سونیا آئی تھی، جب کہ پتا بے ہوش پڑے تھے، ان کے قدموں پر اپنی آنکھیں رکھ کر آنسو ردی کہ

بس دل ہلا کے رکھ دیا" کہنے لگیں، رینا بینا آپ کے پاپا بے حد اچھے آدمی ہیں، اس قدر بڑا انسان میں نے نہیں دیکھا۔ ایک دن کہنے لگے " میری دو بیٹیاں تھیں بینا اور رینا ـــــ آج سے تم میری تیسری بیٹی ہو ـــــ" اور کیا سننا چاہتی ہیں آپ ممی" رینو طنز سے بولی۔

" تیری زبان بڑی لمبی ہوگئی ہے رینو" میں نے جھڑک دیا۔

میرے شک کی گرفت اس قدر مضبوط تھی کہ میں اس سے مکتی پا نہ سکی، دراصل میں نے اس زہرناک بیماری سے چھٹکارا پانے کی کوشش ہی نہیں کی۔ آج میں سوچتی ہوں تو مجھے لگتا ہے شک و شبہ کے چنگل میں پھنس جانے کے بعد انسان اپنے آپ کو کس قدر بے بس اور مایوس پاتا ہے۔ چھٹکارا پانا ایک مرحلہ بن جاتا ہے' ایک دشوار امر ہو جاتا ہے۔ اس سے اپنے آپ کو نکالنے کے لیے سچی لگن کی ضرورت ہے، وہ یہ سوچ سکے کہ وہ جو کچھ سوچ رہا ہے وہ سچ نہیں ہے۔

مجھ پر یہ بھوت سوار تھا' ان کی ہر بات میں مجھے برائی نظر آنے لگی۔ میں ان کے فرضی ظلم و ستم یا بے پروائی کا تذکرہ شروع کر دیتی یا ان عورتوں کا ذکر کرنے لگتی جن سے میرے خیال میں ان کے ناجائز تعلقات تھے۔ مجھے ایسے لگتا کہ وہ دوسری طرف جھک کر میری ہتک کر رہے ہیں اور میں یہ سوچ کر اور بھی بھڑک اٹھتی کہ انھوں نے دونوں بچیوں کو اپنی طرف کر لیا ہے ـــــ اب سوچتی ہوں تو میری سراسر غلطی تھی، میں نے کبھی ان کی اچھائیوں کو دیکھنے کی کوشش نہیں کی، بچیاں جوان تھیں انھیں سچ اور جھوٹ کی پہچان تھی، وہ جانتی تھیں کہ ان کے پاپا بے قصور تھے پر تو میں ان پر ایک تہمت لگا رہی تھی' غیبت میرا شیوہ بن گیا تھا' لہٰذا میرا اپنا خون مجھ سے نفرت کرنے لگا' مجھ سے دور ہونے لگا انھیں اپنے پاپا پر بھی غصہ تھا کہ بھلا کوئی اس قدر جھک جاتا ہے؟ جب ہم دونوں میں جھگڑا شروع ہو جاتا تو دونوں کے ماتھوں پر شکنیں نمودار ہو جاتیں اور مجھے ایسے لگتا کہ سارا قصور مجھ پر عائد کرتی ہیں، اس سے میرا خون اور کھول اٹھتا ـــــ

اب میں سوچتی ہوں کہ مجھے آخر کیا ہو گیا تھا' میں کیوں جھگڑے کو ترجیح دیتی رہی' بات کا بتنگڑ بناتی' ہزار جھوٹ بولتی' اپنی مدافعت میں کوئی نہ کوئی جواز نکالتی۔

ایک دن بینا جو خاموش اور بے حد صابر لڑکی تھی، وہ بھی اپنا صبر کھو بیٹھی۔ وہ جو اپنے آپ میں کڑھتی رہی تھی ایک دن بھڑک اٹھی

" آپ کیا چاہتی ہیں ممّا' کیوں آپ ہماری خوشیاں چھیننے پر تُلی ہوئی ہیں:" بینا کہہ رہی تھی تعجب سے میں اس کی صورت دیکھتی رہ گئی' کیا یہ وہی بینا ہے جس نے کبھی میرے اور اپنے پاپا کے رُو برو گفتگو نہیں کی۔

" کیا آپ سمجھتی ہیں آپ جو سوچتی ہیں وہی سچ ہے' کیا آپ کے سوا ہم سب جھوٹے ہیں کیا صرف آپ پاکباز ہیں اور ہم سب گندے:" بینا کی آنکھوں سے آنسو رواں تھے

" آپ کیوں پاپا کے صبر کا بے جا فائدہ اٹھا رہی ہیں' کیوں ان کی جان لینے پر تلی ہوئی ہیں۔ کیوں ممّا ـــــ بھگوان کے لیے سوچیے ـــــ آپ غلطی پر ہیں ممّا ـــــ سراسر غلطی آپ کی ہے ـــــ"

بینا کی باتیں گویا آگ پر تیل کا کام کر گئیں۔

" میں اس دن چین کی بنسری بجاؤں جس دن میں ودھوا ہو جاؤں، میں بھگوان سے ہر روز ہی پرارتھنا کرتی ہوں، سنتی ہو تم ـــــ مانگ کا سیندور مٹ جائے یہی میری تمنا ہے:"

" آپ تو پاگل ہو گئی ہیں ممّا" اس کو سمجھایا جا سکتا ہے جو ذرا بھر سننے کے لیے تیار ہو' آپ پہلے سے ایک رائے قائم کر لیتی ہیں اور اس کو بدلنا نہیں چاہتیں:"

○

پھر وہ منحوس دن بھی آپہنچا۔

ہر رات میں ان سے کسی نہ کسی بات پر تکرار ضرور کرتی، یہ گویا میری عادت سی ہو گئی تھی چھوٹی چھوٹی باتوں کو لے کر ان سے جھگڑنا میرا معمول ہو گیا' وہ اکثر خاموشی کو اپنا لیتے، اگر وہ میری کسی بات کی تردید کرتے تو میں گھر سر پر اٹھا لیتی۔

ایک دن ان کے دوست ڈاکٹر بھٹناگر نے مجھ سے کہا " دیکھو بھابی مجھے اس کی صحت کی فکر ہو رہی ہے' اس کو دو دل کے دورے پڑ چکے ہیں' مزید دورہ جان لیوا ہو سکتا ہے:" میں یہ سمجھ بیٹھی کہ یہ مجھے اپنی موت سے ڈرانے کی کوشش کر رہے ہیں اور انھوں نے جان بوجھ کر ڈاکٹر بھٹناگر کو میرے پاس بھیجا ہے۔

" میں تمھارے سب ہتھکنڈے پہچانتی ہوں:" میں ایک رات بھڑک اٹھی " ڈاکٹر کو میرے پاس بھجوا دیا کہ اپنی موت کی خبر دے کر مجھے ڈرایا جائے ـــــ الٹا مجھے خوشی ہوئی یہ جان کر کہ بہت جلد مجھے تم سے چھٹکارا مل جائے گا:"

"تم مجھ سے اس قدر بیزار ہو کہ میری موت چاہنے لگی ہو؟!" ان کی آواز میں ایک عجیب درد تھا۔ "میں تمھیں یہ بتادوں کہ میں سمجھتا تھا کہ خواہ تم مجھ سے جتنا بھی جھگڑا کرو مگر میری خرابیٔ صحت سے پریشان ہو جاؤ گی۔ لہٰذا میں نے بھٹناگر کو سخت تاکید کی تھی کہ کوئی بات نہ بتائے، بھگوان گواہ ہے تم بھٹناگر سے تصدیق کرلو ـــــ ہاں تمھاری دلی خواہش جان کر کہ تم مجھ سے چھٹکارا چاہتی ہو، اب ایسے لگ رہا ہے کہ میرا جینا کس کام کا، میں سوچتا ہوں کہ میں بہت جی لیا بھگوان مجھے اُٹھالے اور تمھیں سکون نصیب کرے ـــــ اب میں اپنا صبر بھی کھوتا جارہا ہوں، اس سے قبل کہ میں کوئی ایسا قدم اٹھاؤں جو بچیوں کی زندگیوں میں زہر گھول دے . . ."

"تمھارا کیا مطلب ہے، کیا تم مجھے DIVORCE کرنا چاہتے ہو ـــــ کرلو . . . یہاں کس کو پرواہ ہے ـــــ اس جہنم میں کون رہنا چاہے گا۔"

"بھگوان کے لیے تم خاموش ہو جاؤ، میرا دل دُکھ رہا ہے۔" انھوں نے آنکھیں بند کرلیں "میں تم سے بحث کرنا نہیں چاہتا۔"

"کیوں نہیں کرنا چاہتے، بزدل جو ہو۔" میں پاگلوں کی طرح چیخنے لگی، میری آواز سُن کر بینا اور رینا دونوں ہمارے کمرے میں چلی آئی تھیں۔ ان کی آنکھیں پتھرانے لگی تھیں، مگر میں اپنے غصّے میں دیکھ نہ پائی۔ بینا اور رینا اپنے پپا سے لپٹ کر رونے لگی تھیں۔

"بہت ہو چکا یہ ناٹک۔" میں بکتی رہی رینو نے ڈاکٹر چاچا کو فون کیا، بھٹناگر آئے مگر دیر ہو چکی تھی، ان کے لبوں پر ایک مسکراہٹ رینگ گئی تھی گویا مجھ سے کہہ رہے ہوں: "تم مجھے چین سے مرنے بھی نہ دو گی؟ مجھے مرتا دیکھ کر شاید تم یہ کہو تمھارے گناہوں کی سزا ملی ہے ـــــ" وہ مجھ سے اکثر کہتے "رام، رام، جہاں تک میں جانتا ہوں مجھ سے ایسا کوئی گناہ سرزد نہیں ہوا۔"

میں کہتی تم ایک نمبر کے جھوٹے ہو۔"

ان کا صبر تھا کہ وہ میری تمام بدتمیزیوں اور گستاخیوں کو صرف خاموشی کو اپنا کر معاف کر دیتے۔

"رام گولہ ہے۔" وہ بعض وقت کہتے۔

"رام اور گیتا کی جھوٹی قسمیں کھا کھا اپنے آپ کو اور گناہ گار کیوں بنا رہے ہو۔" میں بھڑکتی "رام اور گیتا کی بھی اگر انسان جھوٹی قسمیں کھانے لگے تو اس سے بُرا کوئی انسان نہیں ہو سکتا۔"

"مگر تم ہو، اس لیے تو میں کہتی ہوں کہ تم حد درجہ گرے ہوئے انسان ہو۔"

"وہ بھگوان جانتا ہے۔" وہ کہتے۔

اب میں سوچتی ہوں کہ میں نے انھیں کیسے کیسے نہیں ستایا۔ سیدھی سادی باتوں کے میں ایسے معنی نکالتی کہ میں اب سوچ کر حیران ہو جاتی ہوں۔ جب وہ دفتر سے لوٹتے تو طعنہ تشنہ بے سر و پا شک و شبہ اور جھک جھک جس کا سلسلہ ختم ہی ہونے میں نہیں آتا تھا، پھر نوبت گھر کی ضروری چیزیں توڑنے پھوڑنے تک پہنچی اور پھر انتہا تو مار پیٹ تک، کبھی یوں ہی بات بے بات گتھم گتھا ہونے کی نوبت آجاتی۔ مگر وہ نیک انسان اُف تک نہ کرتا، کیا انسان اس حد تک صبر کر سکتا ہے۔ ـــــ یہ باتیں یاد آتی ہیں تو میرا کلیجہ منہ کو آجاتا ہے۔

جب ڈاکٹر نے یہ تصدیق کردی کہ وہ ہمیشہ کے لیے روٹھ چکے تو میں سوچ بھی نہیں سکی کہ یکایک یہ کیسے اور کیوں ہو گیا، میں جو غصّے میں کمرے سے باہر نکل آئی تھی کمرے کی طرف دیوانہ وار دوڑی، لیکن چوکھٹ سے ٹکرا کر وہیں ڈھیر ہو گئی، مجھے ہوش اس وقت آیا جب ان کا انتم سنسکار ہو چکا تھا۔ اس بدبخت کو آخری دیدار بھی نصیب نہ ہوا۔ یا انھوں نے مجھے سب سے بڑی سزا دے دی، دونوں بچیاں اپنے نانا کے سینے سے لگ کر کہہ رہی تھیں "نانا جی، آپ ہمیں اپنے ساتھ لے چلیے۔ اس گھر میں ہمارا دم گھٹتا ہے۔ اگر آپ نے لے جانے سے انکار کیا تو کل کو دو داور لاشیں ملیں گی۔"

گھر ویران ہو چکا تھا، بچیاں اپنے نانا کے ہاں چلی گئی تھیں اور میں ـــــ بس ندامت کے آنسو بہاتی رہی۔ ـــــ مگر اب یہ کس کام کے تھے۔ میرا سب کچھ لُٹ چکا تھا، جب وقت نے کچھ سنبھالا دیا تو ایک اسپتال کھولا۔ دو چار لیڈی ڈاکٹر مقرر کیے، آدھ درجن سوشل ورکرس۔ ـــــ ایک پروگرام بنتا ہے، ایک محلّے کا انتخاب ہوتا ہے، اس محلّے کے ہر گلی میں یہ سوشل ورکرس پہنچتے ہیں۔ یہ جاننے کی کوشش کرتے ہیں کہ ان کی ازدواجی زندگی میں کہاں تک کشیدگی ہے۔ ایسی خواتین کو اسپتال لایا جاتا ہے، ٹھیک راہ کی نشاندہی کی جاتی ہے۔ اس طرح میں اپنی غلطی کا ازالہ کرنا چاہتی ہوں۔

○

اُردو اکادمی، دہلی کی جانب سے کُل ہند مقابلہ مضمون نویسی

برائے طلبا، طالبات، انڈر گریجویٹ، پوسٹ گریجویٹ اور ریسرچ اسکالرز

اُردو اکادمی، دہلی کے زیرِ اہتمام پنڈت جواہر لال نہرو اور مولانا ابوالکلام آزاد کی یاد میں ہونے والے مضمون نویسی کے اس مقابلے میں کالج اور یونیورسٹی کے طلبا اور طالبات شامل ہو سکتے ہیں۔ مضمون اُردو زبان میں ہونا چاہیے۔ اندازِ بیان ادبی کتابوں اور جریدوں کے معیار کے مطابق ہونا ضروری ہے۔ یہ مقابلہ تین سطحوں پر ہوگا۔ اوّل ان طلبا کے لیے جو انڈر گریجویٹ کلاسوں کے طالب علم ہیں۔ دوم ان کے لیے جو پوسٹ گریجویٹ کلاسوں کے طالب علم ہیں۔ اور سوم ان کے لیے جو یونیورسٹی میں ایم۔ فل یا پی۔ ایچ ڈی کر رہے ہیں۔ ہر زمرے میں شمولیت کے لیے مضمون کے ساتھ کالج کے پرنسپل یا صدرِ شعبہ کا شناختی سرٹیفکیٹ بھی منسلک ہونا چاہیے۔

انعام یافتہ مضامین اکادمی کی طرف سے ایک کتاب کی شکل میں شائع کیے جائیں گے۔ جس کے اجرا کے لیے ایک خصوصی تقریب کا اہتمام کیا جائے گا۔ بہتر ہوگا کہ مضمون نگار طلبا اور طالبات اپنا پاسپورٹ سائز فوٹو بھی ساتھ بھیجیں۔

عنوانات برائے انڈر گریجویٹ۔ (پنڈت جواہر لال نہرو)

۱۔ جنگِ آزادی میں نہرو کا حصہ۔
۲۔ آزاد ہندوستان کی تعمیر اور نہرو۔
۳۔ نہرو اپنے خطوط کے آئینے میں۔
۴۔ نہرو کا ورثہ
۵۔ نہرو اور امنِ عالم

عنوانات برائے پوسٹ گریجویٹ کلاسز

۱۔ نہرو کا تصورِ تاریخ۔
۲۔ نہرو اور گاندھی ازم۔
۳۔ سیکولرازم اور نہرو۔
۴۔ نہرو کی خارجہ پالیسی۔
۵۔ متحدہ قومیت اور نہرو۔

عنوانات برائے ریسرچ اسکالرز

۱۔ نہرو اور سائنسی مزاج۔
۲۔ نہرو کا لسانی نقطۂ نظر۔
۳۔ نہرو پر اُردو تصانیف کا جائزہ۔
۴۔ عہدِ نہرو ۔۔۔ ایک مطالعہ
۵۔ نہرو اور اقلیتیں۔

عنوانات برائے انڈر گریجویٹ کلاسز (مولانا ابوالکلام آزاد)

۱۔ تحریکِ آزادی اور آزاد۔
۲۔ خطباتِ آزاد
۳۔ آزاد اور مشترکہ تہذیب کا تصور۔
۴۔ آزاد کا سیاسی شعور۔
۵۔ آزاد بحیثیت مکتوب نگار۔

عنوانات برائے پوسٹ گریجویٹ کلاسز

۱۔ اردو صحافت میں آزاد کا مرتبہ
۲۔ آزاد کا نثری اسلوب۔
۳۔ ہماری آزادی ۔۔۔ ایک تنقیدی جائزہ۔
۴۔ آزاد کے مذہبی تصورات۔
۵۔ دورِ حاضر میں آزاد کی معنویت۔

عنوانات برائے ریسرچ اسکالرز

۱۔ ترجمان القرآن، ایک مطالعہ۔
۲۔ آزاد کے ثقافتی اور تعلیمی نظریات۔
۳۔ الہلال اور تحریکِ آزادی۔
۴۔ "تذکرہ" سے "انڈیا ونس فریڈم" تک آزاد کا ذہنی سفر۔
۵۔ آزاد کی ادبی شخصیت۔

قواعد و ضوابط

۱۔ مقابلے میں حصہ لینے والے طلبا اور طالبات اپنے تعلیمی زمرے کے اعتبار سے مجوزہ عنوانات میں سے کسی ایک عنوان پر مضمون لکھیں۔
۲۔ ایک کالج یا ایک یونیورسٹی سے بھیجے جانے والے مضامین کی تعداد پر کوئی پابندی نہیں ہے۔
۳۔ مضمون طالب علم کا خود نوشتہ ہونا چاہیے۔ طالب علم کو مضمون کے ساتھ ایک حلفیہ بیان بھی بھیجنا ہوگا کہ مضمون اسی کا لکھا ہوا ہے۔
۴۔ ہر مضمون کی دو نقلیں بھیجی جائیں۔ ایک نقل پر مضمون نگار کا نام، کلاس، کالج یا یونیورسٹی کا نام، عمر اور گھر کا پتہ درج ہو۔ اس پر کالج کے پرنسپل یا یونیورسٹی کے صدرِ شعبہ کی طرف سے تصدیق بھی ہونی چاہیے۔ دوسری نقل پر مضمون کے عنوان کے علاوہ کوئی اندراج نہ ہو کیونکہ اسے کوڈ نمبر لگا کر ممتحن کے پاس بھیجا جائے گا۔
۵۔ مضمون خوشخط اور کاغذ کی ایک طرف مناسب حاشیے کے ساتھ لکھا ہوا ہونا چاہیے۔
۶۔ مضمون میں دیے گئے حوالوں کی نشاندہی صفحہ نمبر، کتاب، مصنف اور ناشر کے نام کے ساتھ مضمون کے آخر میں ضروری ہے۔
۷۔ مضمون تین ہزار سے پانچ ہزار الفاظ پر مشتمل ہونا چاہیے۔

انعامات

ہر زمرے کے بہترین پانچ مضامین پر حسبِ ذیل انعام دیے جائیں گے۔

انڈر گریجویٹ کلاسز

پہلا انعام ۔ ایک ہزار روپے
دوسرا انعام ۔۔۔۔ سات سو پچاس روپے
تیسرا انعام ۔۔۔ پانچ سو روپے

چوتھا اور پانچواں انعام حوصلہ افزائی کے لیے تین تین سو روپے کا دیا جائے گا۔

پوسٹ گریجویٹ کلاسز

پہلا انعام ۔ ایک ہزار پانچ سو روپے
دوسرا انعام ۔ ایک ہزار دو سو روپے
تیسرا انعام ۔ ایک ہزار روپے
بقیہ دو انعام ۔ چار چار سو روپے کے حوصلہ افزائی کے لیے دیے جائیں گے۔

ریسرچ اسکالرز کے لیے

پہلا انعام ۔ دو ہزار روپے
دوسرا انعام ۔ ایک ہزار آٹھ سو روپے
تیسرا انعام ۔ ایک ہزار پانچ سو روپے

اس کے علاوہ دو انعام پانچ پانچ سو روپے کے حوصلہ افزائی کے لیے دیے جائیں گے۔

مضمون بھیجنے کی آخری تاریخ ۲۱ اپریل ۱۹۸۹ء ہے

سکریٹری اُردو اکادمی دہلی، گھٹا مسجد روڈ، دریا گنج، نئی دہلی۔ ۱۱۰۰۰۲۔

نئی مطبوعات

سلگتے خیموں کا شہر

مصنف: فخرالدین عارفی
صفحات: ۱۱۲
قیمت: ۱۵ روپے
ناشر: مکتبہ مریخ، "اردو بھون"، پٹنہ ۴

یہ نوجوان افسانہ نگار فخرالدین عارفی صاحب کے افسانوں کا پہلا مجموعہ ہے۔ عنوان کتاب کی کہانی کسی قصّے کے ماجرے پر مبنی نہیں صرف فن کار کے ان شدید احساسات کا اظہار ہے جو حوصلہ شکن حالات کے ردِعمل سے پیدا ہوئے ہیں۔ یہ اظہار نئے لکھنے والوں کے درمیان عام ہے اور اس سے معلوم ہوتا ہے کہ عبداللہ حسین کے لفظوں میں "اداس نسلیں" جمیلہ ہاشمی کے ایک ناول کے عنوان کے مطابق "تلاشِ بہاراں" میں ناکام ہو کر مایوس ہو رہی ہیں۔ یہ مایوسی ان کے احساسات کو مجروح اور جذبات کو مشتعل کر رہی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ بالعموم جدید افسانہ نگار فکری و فنی ضبط و تحمل سے کام لے کر قصّے کی تخلیق و ترتیب پر بہت کم توجہ دے رہے ہیں اور صرف اپنے خیالات کے اظہار کو کافی سمجھتے ہیں۔ یہ اظہار کبھی فلسفیانہ ہوتا ہے، کبھی صوفیانہ اور بعض اوقات دونوں کا مرکب۔ نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ افسانہ نگاری انشائیہ نگاری بن جاتی ہے اور قصّے کی دلچسپی جو افسانہ نگاری کی جان ہے، باقی نہیں رہتی۔

ایک جدید افسانہ نگار ہونے کے باوجود، زیرِ نظر مجموعے کے چند افسانے فخرالدین عارفی کے فن کو اس انجام سے بچاتے ہیں۔ مثال کے طور پر "دیوار"، "ایک اور طوفان" اور "تاریک راہوں کے ہم سفر" کے عنوانات سے لکھے ہوئے افسانے کچھ قصّے سناتے ہیں اور ان کو پڑھتے ہوئے افسانے کے ماجرا کا ایک ہیولا ابھرتا نظر آتا ہے۔ یہ تینوں افسانے ناکام محبت کے قصّے ہیں۔ ان میں عشق کی بیتابی بھی ہے اور فراق کی بے قراری بھی۔ کرداروں کے وجود میں ایک گہری تشنگی ہے۔ ان کی آرزو پوری نہیں ہوتی اور ان کی تمنا ناکام ہے۔ یہ ناکامی محبت میں شدّت پیدا کرتی ہے۔ مگر یہ افسانہ نگار کے ذہن کی سلامتی ہے کہ اِس شدّت سے کرداروں کے تعلقات میں کوئی بے اعتدالی اور کردار میں بے راہ روی نہیں پیدا ہوتی، صرف حسرت و اندوہ کے بادل کرداروں کی طبیعت پر چھا جاتے ہیں اور پڑھنے والوں کو ان کے ساتھ ایک ہمدردی سی ہونے لگتی ہے۔

فخرالدین عارفی اپنے افسانوی کرداروں کے احساسات و جذبات کا اچھا تجزیہ کرتے ہیں۔ ان کے طرزِ بیان کی سلاست اس تجزیے کو قابلِ فہم بناتی ہے اور اس میں وہ علامتی ابہام نہیں پیدا ہوتا جو متعدد نامور جدید افسانہ نگاروں کی تخلیقات کو ایک چیستاں بنا رہا ہے اور عام قارئین ان حل طلب معمّوں سے پریشان ہو کر نئے افسانوں ہی سے برگشتہ ہو رہے ہیں۔ اس صورتِ حال کے برخلاف عارفی صاحب کے مذکورہ بالا افسانے ان کے امید افزا مستقبل کا پتہ دیتے ہیں اور توقع کی جا سکتی ہے کہ وہ اگر ماجرا سازی اور تعمیرِ عروج پر زیادہ توجہ دیں تو آئندہ بہتر تخلیقات سے عام قارئین کو شاد کام کر سکتے ہیں۔

—— عبدالمغنی

داغ کے اہم تلامذہ

مصنف: اسعد بدایونی
قیمت: ۲۰ روپے
ملنے کا پتہ: مکتبہ جامعہ، یونیورسٹی مارکیٹ، علی گڑھ۔

داغؔ، ذوقؔ کے شاگرد تھے ان کی شاعری کی عمارت کی پہلی اینٹ ذوق کی محاورہ بندی اور صفائیِ زبان ہے۔ لیکن داغ کی شاعری ذوق اور شاہ نصیر کی طرح صرف زبان کے بل بوتے پر قائم نہیں بلکہ داغ جس عہد کے پروردہ تھے اس عہد کا مزاج اور شاعرانہ ابعاد بھی ان کے کلام میں جگہ پاتے ہیں اور یہ داغ کا اہم ادبی کارنامہ ہے۔

"داغ کے اہم تلامذہ" کے پہلے باب میں اردو شاعری میں تلمذ کی روایت کا تفصیلی جائزہ لیا گیا ہے۔ دوسرے باب میں داغ کے طریقۂ اصلاح اور ان کی اصلاحات کے نمونے

ہیں۔ تیسرے باب میں داغ کے گیارہ اہم شاگردوں کا تعارف، انتخابِ کلام اور تبصرہ شامل ہے۔ چوتھے باب میں داغ کے تلامذہ کی فہرست ہے۔

حرفِ آغاز میں کہا گیا ہے کہ "داغ اُردو کے ان خوش نصیب شاعروں میں سے ہیں جن کے رنگِ سخن کو ان کے عہد میں عوامی مقبولیت حاصل ہوئی اور مملکتِ شعر میں ان کا طوطی بولنے لگا۔ داغ کی مقبولیت میں اضافے اور ان کے رنگِ سخن کی توسیع و ترویج میں جہاں ایک طرف عوامی مزاج کا ہاتھ رہا ہے، وہیں ان کے تلامذہ کی کثیر تعداد بھی اس سلسلے میں معاون ثابت ہوئی ہے۔ ان کا رنگِ سخن ایک محدود دائرے کا اسیر ہے اور اس میں زبان و بیان کی کاریگری، محاورے اور روزمرّہ کی الٹ پھیر کو اساسی اہمیت حاصل ہے۔ سب موضوعات تو وہ سطحی جنسی جذبات اور محبوب کے خدوخال کی تعریف و توصیف پر مشتمل ہیں۔ داغ کی شاعری میں زندگی سے بھرپور لطف کشید کرنے کی خواہش نظر آتی ہے۔ داغ کی شاعری محفلوں، مشاعروں اور درباروں کی پروردہ تھی۔ داغ نے اپنے رنگِ سخن کے تمام امکانات کو کھنگال لیا تھا، لہٰذا ان کے تلامذہ میں سے کوئی بھی باوجود کوشش کے اس مرتبہ کو نہ پہنچ سکا۔ داغ کے ممتاز شاگردوں میں صرف دو شاگرد یعنی اقبال اور سیماب ہی ایسے ہیں جنھوں نے مضمون آفرینی اور تفکر کو اپنے آئندہ سفر کے لیے منتخب کیا۔"

• داغ کے اہم تلامذہ کے مصنف بڑی خوش اسلوبی سے اپنے موضوع سے عہدہ برآ ہوئے ہیں۔ اہم تلامذہ میں گیارہ شعرا کے کلام کا انتخاب اور تبصرہ خوبصورت ہے۔ انھوں نے جن گیارہ شاعروں کو داغ کے اہم تلامذہ میں شمار کیا ہے ان کے نام اس طرح ہیں:

بےخود بدایونی۔ بےخود دہلوی۔ حسن بریلوی۔ میر محبوب علی خاں آصف۔ سراج الدین خاں سائل۔ حیات بخش رسا۔ احسن مارہروی اقبال۔ نوح ناروی۔ سیماب اکبرآبادی۔ جوش ملسیانی۔

داغ نے اردو شاعری میں زبان و بیان کے سلسلے میں جو خدمات انجام دی ہیں ان سے کسی کو انکار کی جرأت نہیں۔ ماضی قریب کے شعروادب خصوصاً داغ اسکول کی شاعری کے سلسلے میں یہ کتاب ایک خاص اہمیت کی حامل ہے۔

—— قیصر زماں قیس

مہابھنشکرمن
شاعر: عنبر بہرائچی
صفحات: ۲۰۰
قیمت: ۸۰ روپے

اگر مہاتما بدھ کے بارے میں کچھ اور نہ پڑھ کر ان کی زبان سے نکلے ہوئے یہ آخری کلمات ہی پڑھ لیے جائیں تو بہت سے سوالوں کا جواب مل جائے گا۔

Now Monks, I Have Nothing More To Tell You, But That All That Is Composed Is Bible To Decay, Strive After Salvation Energetically.

رُوح کی گہرائیوں تک اتر جانے والی، فکر کی پرواز سے زیادہ تیزی سے اثر انداز ہونے والی بدھ کی تعلیمات مطالعے سے زیادہ مشاہدے اور فکر کی متقاضی ہیں۔ افسوس کا مقام ہے کہ آج ان تعلیمات کا چہرہ بہت حد تک مسخ ہو گیا ہے۔ اور خصوصاً ہندوستان میں بدھ مذہب کے ماننے والے تعلیمات سے زیادہ رسمیات کے طابع ہیں۔

مہابھنشکرمن (مہاتما بدھ کے گھر چھوڑنے کے لیے یہ اصطلاح مستعمل ہے) عنبر بہرائچی کی طویل نظم ہے جو مہاتما بدھ کی زندگی اور تعلیمات سے متعلق ہے۔ ایسی نظموں کی اُردو میں جتنی ضرورت ہے یہ اتنی ہی کمیاب ہیں۔ گوتم بدھ کی تعلیمات اور ان کے عہد کے مطالعے کے بغیر ہم ہندوستان کی تاریخ کا صحیح مطالعہ نہیں کر سکتے۔ اُردو میں (اگر مثنوی کو چھوڑ دیں) اتنی طویل نظمیں بہت زیادہ نہیں ہیں۔ عنبر بہرائچی نے اس موضوع پر قلم اٹھانے سے قبل (ان کے بیان کے مطابق سنسکرت کے اہم شاعر کی عظیم تخلیق بدھ چرِتم کا گہرا مطالعہ کیا۔ خوشی کی بات ہے کہ انھوں نے سنسکرت سے سیدھا استفادہ کیا اور یہ مزید خوشی کی بات ہے کہ وہ اردو میں اظہار پر قادر ہیں۔ چودہ ابواب میں منقسم کتاب میں موضوع کی مناسبت سے باب مختص کیے گئے ہیں۔ کتاب کا دیباچہ بھی بدھ تعلیمات پر ان کی گہری نظر کا غماز ہے مگر صفحہ ۷ پر ان کا یہ بیان:

"ہندوستان کی تاریخ میں پہلی بار انھوں نے عورتوں کا "سنگھ" بھی بنانے کی پیش رفت کی اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ خواتین نے بھی

مابعدالطبیعات کے میدان میں کافی شہرت حاصل کی۔"

ایک نئی غلط فہمی پیدا کرتا ہے۔ میرے ناقص مطالعے کی حد تک ابتدا میں وہ عورتوں کو سنگھ میں شامل کرنے کے سخت مخالف تھے مستند تاریخی روایت کے مطابق:

"سوجے پیروں سے دھول میں سنی ہوئی اور روتی ہوئی پرجاپتی کو بھی انھوں نے سنگھ میں شامل کرنے سے انکار کر دیا تھا۔"

HISTORY OF MEDIEVAL INDIA -
PAGE . 59.

MONIER WILLIAMS نے لکھا ہے کہ جب عزیز شاگرد آنند کے اصرار پر انھوں نے عورتوں کو سنگھ میں شامل کر لیا تو بہت افسوس کے ساتھ پیش گوئی کی کہ چوں کہ عورتیں گھر سے بے گھر ہوئی ہیں تو یہ مذہب ایک ہزار سال کے بجائے پانچ سو سال ہی قائم رہ پائے گا۔ بعض ماہرین تاریخ نے ایک ہزار کے بجائے پانچ سو سال کی مراد نصف عمر سے کی ہے۔

مجموعی طور پر نظم متاثر کن ہے۔ اُردو والوں کو اپنے حصاروں سے نکلنے کی توفیق ہی کب ہوتی ہے اور نکلتے بھی ہیں تو ثانوی ماخذ کے سہارے۔ اس مشکل موضوع سے عہدہ برآ ہونا بہت دشوار تھا پھر بھی نظم میں شگفتگی اور روانی کا دامن شاعر کے ہاتھ سے نہیں چھوٹتا۔ البتہ ایسے چند مصرعے ایسی خوبصورت نظم میں پیوند معلوم ہوتے ہیں اُمید ہے وہ ان پر نظر ثانی کریں گے۔

ہو چکے سیراب تو چلّو سے پانی پی لیا

صفحہ: ۱۶۸

سیراب ہونے کے بعد بھی پانی کا پینا سمجھ میں نہیں آتا۔

یا یہ:

الوداع! کہہ کے جو تم پھر روانہ ہو گئے

یہاں "الوداع" جس تلفظ کے ساتھ باندھا گیا ہے وہ غلطِ محض ہے۔

——— اطہر فاروقی

اُردو نعت کا شرعی محاسبہ

مصنّف: شمس بدایونی
صفحات: ۹۸
قیمت: ۱۵ روپے
ملنے کے پتے: ۱۔ روشن پبلیکیشنز، روشن محل سوتھا، بدایوں (یو پی)
۲۔ مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ، اُردو بازار، دہلی ۶

نعت عربی زبان کا لفظ ہے۔ جس کے معنی ہیں تعریف و توصیف مگر جب یہ لفظ فعل کی صورت میں باب فتح سے آتا ہے تو اس کے معنی تعریف کرنا یا بیان کرنا کے ہوتے ہیں۔ اصطلاحاً لفظ "نعت" سے ایک خاص قسم کی شاعری مراد لی جاتی ہے۔ جس میں آنحضور صلی اللہ علیہ وسلم کی پاکیزہ شخصیت کا اظہار ہوتا ہے۔ نثری نعت کو اصطلاحاً "محامد رسول" کا الگ سے نام دیا جا سکتا ہے۔ نعت کا سفر خاصا طویل ہے۔ نعت شعر کی مختلف اقسام کو اپنی منزل بناتی ہوئی آگے بڑھتی رہی۔ زیرِ تبصرہ کتاب شمس بدایونی کا پُر مغز مقالہ ہے جو چار ابواب پر مشتمل ہے باب اوّل، (نعتِ نبی ——— آغاز و سفر) باب دوم، (شعر و نعت کی شرعی حیثیت) باب سوم، (نعتِ نبی کے غیر مشروع موضوعات) اور باب چہارم (نعتِ نبی کے مشروع موضوعات)

اس کے علاوہ مصنف نے آخر میں شرعی اصطلاحات بھی پیش کی ہیں۔ جو قاری کے لیے نہایت سودمند ہیں۔ ہر باب نہایت تفصیل اور دیدہ ریزی کے ساتھ احاطۂ تحریر میں لایا گیا ہے۔ شمس بدایونی کی یہ کتاب یقیناً اُردو ادب میں ایک اضافہ ہے۔

پتھروں کے گیت

مصنّف: محمود بالیسری
صفحات: ۱۲۸
قیمت: ۲۵ روپے
ناشر: ایڈ شاٹ پبلیکیشنز، ۱۸/۴۴ ٹانڈیل اسٹریٹ (نارتھ) ڈونگری، بمبئی ۹
ملنے کا پتہ: موڈرن پبلشنگ ہاؤس، ۹ گولا مارکیٹ، دریا گنج، نئی دہلی ۲

اُردو افسانے کی عمر زیادہ نہیں ہے اسّی برس قبل اس کا قلم یورپ سے درآمد کیا گیا اور آج وہ ننھا سا پودا موسموں کی سردی، گرمی، سہتا ہوا ایک تناور درخت کی شکل اختیار کر چکا ہے۔ بلا شبہ اُردو افسانے نے کئی روپ اختیار کیے۔ کئی رنگ تبدیل کیے۔ اور تلخ و ترش تجربات کو سمیٹتا اور سموتا، روایتوں اور بغاوتوں کی زمینوں کو روندتا اور کچلتا پروان چڑھتا رہا۔

زیرِ نظر کتاب محمود بالیسری کے بیس افسانوں کا مجموعہ ہے جو صوبۂ اڑیسہ کی تہذیب و ثقافت، تمدنی رجحانات، تاریخی روایات اور جغرافیائی حالات کا احاطہ کرتے ہیں۔ موصوف کے افسانوں میں پلاٹ، کردار سازی، منظر نگاری، اور جزئیات رسی بدرجۂ اتم موجود ہیں

"پتھروں کے گیت" "خون کے دھبے" "ہلدی کا کھیت" "خموشی گفتگو ہے" "ڈوبتا سورج" اور "رقصِ ابلیس" ایسی کہانیاں ہیں جنھیں پڑھ کر قاری کسی بڑے تجربے سے روشناس تو نہیں ہوتا مگر وہ یہ محسوس کیے بغیر نہیں رہ سکتا کہ ان افسانوں میں بکھرے ہوئے چھوٹے چھوٹے مانوس، مانوس مناظر، آشنا نا آشنا چہرے، زندگی کا وسیع منظر نامہ ترتیب دینے میں کتنا اہم کردار ادا کرتے ہیں۔ چند مثالیں ملاحظہ فرمایئے:

"جوکر کے ہونٹوں پر ایک طنزیہ مسکراہٹ پھیل گئی۔ وہ مسلمان تھا یا ہندو؟ اس کا ثبوت دیے بغیر برگد کے اوپر چڑھ گیا اور اس طرح مُنہ بنا کر بیٹھ گیا۔ جیسے وہ نہ ہندو ہو نہ مسلمان، صرف بندر ہو۔"

(جوکر)

"مالکن گیری کے علاقے میں نکسل پنتھیوں کے ہاتھوں دو پولیس افسر مارے گئے۔" گاؤں کے معصوم و بے گناہ آدی باسیوں پر ڈھائے گئے مظالم اور جواں سال سومی کی موت کا خبروں میں کوئی ذکر تک نہ تھا بس پہاڑی کے دامن پر چند خون کے دھبّے کچھ ادھوری داستان سنا رہے تھے۔ (خون کے دھبّے)

دو نمبر والے ٹریفک پولیس نے کچھ سوچتے ہوئے کہا: "ہو سکتا ہے امریکن ہپی ہمارے دیش کی تصویریں لے کر اپنے ملک میں زیادہ قیمت پر فروخت کرتے ہوں۔" "تو پھر بھارت بک گیا۔" ایک نمبر والے ٹریفک پولیس کو گویا اس کا جواب مِل گیا۔

کتاب کا سرِ ورق پرمعنی اور دل کش ہے۔ کتابت اور طباعت قابلِ تحسین ہے۔

بے زمیں بے آسماں
مُصنّف: علی حیدر ملک
صفحات: ۱۲۰
قیمت: ۲۵ روپے
ناشر: منظر پبلیکیشنز، کراچی (پاکستان)

زیرِ نظر کتاب علی حیدر ملک کے بائیس افسانوں پر مشتمل ہے۔ ان افسانوں میں مصنّف نے انسانی زندگی کے مسائل، سماجی برائیوں اور اہلِ طاقت اور اہلِ سیاست کے جبر و استحصال کا نہایت موثر انداز میں احاطہ کیا ہے۔

"بڑھتے فاصلوں کے درمیان" ایک عام انسان کی نہایت دل کش علامتی کہانی ہے۔ "جھوٹے سچے خواب" پڑھنے کے بعد ایسا محسوس ہوتا ہے کہ مصنف نے اپنے ملک میں نافذ آمریت کے خلاف ایک خوبصورت انداز میں آواز بلند کی ہے۔ یہ الفاظ غور طلب ہیں: "خاموش خاموش۔ دیکھو وہ آ رہا ہے۔ یہ کہہ کر وہ خاموش ہو گیا اور سر جھکا کر دونوں ہاتھ سینے پر باندھ لیے۔" "اندر کا جہنم" ایک اچھی رمزیہ کہانی ہے: "دوزخ میں آگ کہاں؟ یہاں جو آتا ہے اپنی آگ اپنے ساتھ لاتا ہے۔" "صحرا ابھی نہ چھوڑیے" کے مطالعے سے یہ واضح ہوتا ہے کہ صنعتی ترقی کے پروردہ بڑے شہروں میں انسان کس طرح مشینوں میں الجھ کر اپنا ذہنی سکون کھو بیٹھا جس کی وجہ سے اس کا فطرت سے تعلق ٹوٹ گیا۔

کہانی "ترسے ہوئے آئینے" اس بات کو ظاہر کرتی ہے کہ جنگ کرنے والے ہر فلسفے سے بے نیاز اور ہر انجام کی طرف سے بے پروا ہو کر جنگ جاری رکھنا چاہتے ہیں اور جنگ کے حق میں طرح طرح کی فلسفہ طرازی کرتے ہیں۔ "نادیدہ افق" کہانی میں ایک دلچسپ سچویشن پیدا کر کے یہ دکھایا گیا ہے کہ اگر انسان میں ذاتی صلاحیت ہو تو جلد یا بدیر اس کی پہچان ہو جاتی ہے۔

"بے زمیں، بے آسماں" کہانی چار قیدیوں کی داستان ہے جنھیں اہلِ اقتدار نے قید میں ڈال دیا ہے۔ ان کا قصور یہ ہے کہ وہ بے قصور ہیں۔ چاروں حق کے لیے لڑتے ہیں۔ مگر عوام بے بسی اور بے حسی کا شکار ہیں۔ ذیل کے تیکھے جملوں میں افسانہ نگار نے کم لفظوں میں بہت کچھ کہہ دیا ہے:

"کیوں کہ وہاں کے مرد اپنی بزدلی کے باعث نامرد ہو گئے تھے اور عورتیں اپنی بنجر کوکھ کے نوحے سے بے خبر کتوں اور بلیوں سے دل بہلانے لگی تھیں۔"

کتاب کا سرِ ورق دل کش و دل آویز ہے اور کتابت اور طباعت روشن ہے۔

—— دلیپ بادل

قلمکار حضرات سے گزارش

دفتر میں مضامینِ نثر و نظم کثیر تعداد میں جمع ہو گئے ہیں اس لیے اعلان ثانی تک اپنی نگارشات بلا طلب بھجوانے کی زحمت نہ فرمائیں۔
اُمید ہے اس گزارش کو گستاخی پر نہیں ہماری مجبوری پر محمول کیا جائے گا۔

—— ادارہ

ہم طرح اشعار

مارچ کے شمارے میں دیے جانے والے مصرعے پر ہمیں ہمیشہ کی طرح کافی تعداد میں شعر موصول ہوئے ہیں لیکن ان میں زیادہ تر ایسے تھے جن کی بحر بدلی ہوئی تھی اور کچھ ایسے تھے جن میں ردیف قافیے کو بھی نظر انداز کر دیا گیا۔ اگر قارئین شعر بھیجنے سے پہلے مطروحہ مصرعے کو بغور دیکھ لیا کریں تو شاید یہ صورت پیدا نہ ہو۔

جو شعر صحیح بحر اور دُرست ردیف قافیے کے ساتھ موصول ہوئے ان کا انتخاب درجِ ذیل ہے۔ گلدستہ ان حضرات کو ارسال کیا جائے گا جن کے بھیجے ہوئے اشعار چوکھٹے میں دیے جا رہے ہیں:

کوہکن کیا پہاڑ توڑے گا
عشق نے زور آزمائی کی (میر تقی میر)

مرسلہ: محمد قیصر امام، مجاہد پور، پچھم ٹولہ، بھاگلپور ۸۱۲۰۰۲ (بہار)۔

اس کے ایفائے عہد تک نہ جیے
عمر نے ہم سے بے وفائی کی (میر)

مرسلہ: علی شیر اختر، بھاگلپور۔ واحد اختر گیلانی، صاحب گنج۔

دل میں اس شوخ کے نہ کی تاثیر
آہ نے آہ نارسائی کی (میر)

مرسلہ: فردوس النسا، نئی دہلی

خندۂ یار سے طرف ہو کر
برق نے اپنی جگ ہنسائی کی (میر)

مرسلہ: ابنِ غوری، نلگنڈا

چپکے اس کی گلی میں پھرتے رہے
دیر واں ہم نے بے نوائی کی (میر)

مرسلہ: محمد لیسین احمد حجازی، بھاگلپور

کاستہ چشم لے کے جوں نرگس
ہم نے دیدار کی گدائی کی (میر)

مرسلہ: راشد مرزا، حیدرآباد

اسی تقریب اس گلی میں رہے
منتیں ہیں شکستہ پائی کی (میر)

مرسلہ: فرید مرزا، حیدرآباد

زور و زر کچھ نہ تھا تو بارے میر
کس بھروسے پہ آشنائی کی (میر)

مرسلہ: افتخار فہیم، سنبھل

نہ کٹی ہم سے شب جُدائی کی
کتنی ہی طاقت آزمائی کی (مومن)

مرسلہ: نسیم بانو، دہلی

رشکِ دشمن بہانہ تھا سچ ہے
میں نے ہی تم سے بیوفائی کی (مومن)

مرسلہ: محمد جان عالم جان، صاحب گنج۔ اعجاز پروین ثریا، بھاگلپور۔ روبینہ عابد حسین، مراد آباد۔

گر نہ بگڑو تو کیا بگڑتا ہے
مجھ میں طاقت نہیں لڑائی کی (مومن)

مرسلہ: محمد شکیل الرحمٰن، بھاگلپور۔ شگفتہ مظفر، صاحب گنج۔

کوچۂ غیر میں ملا وہ ہمیں
ہرزہ تازی نے رہ نمائی کی (مومن)

مرسلہ: مظہر امام، بھاگلپور

دل ہوا خوں خیالِ ناخنِ یار
تو نے اچھی گرہ کشائی کی (مومن)

مرسلہ: جمیل اختر، بھاگلپور

کٹے وہ دستِ غیر میں دیے ہاتھ
آس ٹوٹی شکستہ پائی کی (مومن)

مرسلہ: محمود علی محمود، جے پور

مومن آؤ تمہیں بھی دکھلا دوں
سیرِ بُت خانے میں خدائی کی (مومن)

مرسلہ: محمد سبحان حیدری، بیگوسرائے

موت آ جائے قید میں صیاد
آرزو ہو اگر رہائی کی (رند)

مرسلہ: ایم۔ علی، برہان پور

نہ ہٹا جو لکھا تھا قسمت میں
ہم نے ہر چند جبہہ سائی کی (جوشش)

مرسلہ: محمد فصاحت کوثر، سنبھل۔ اشیش کمار گپتا، صاحب گنج۔

کیوں بڑھاتے ہو ارتباط بہت
ہم میں طاقت نہیں جدائی کی (فانی)

مرسلہ: رئیس النسا، نئی دہلی

ہو کے نادم وہ بیٹھے ہیں خاموش
صلح میں شان ہے لڑائی کی (حسرت موہانی)

مرسلہ: ثناء اللہ خاں، اجمیر۔ شفیق احمد سیفی، بجنور۔

موت کا حال اب خدا جانے
زندگی نے تو بے وفائی کی (ناطق گلاوٹھوی)

مرسلہ: محمد علیم الرحمٰن، معرفت محمد عبدالحلیم، قدوائی روڈ، مومن پورہ، ناگپور ۴۴۰۰۱۸

نہ کہوں اپنی داستاں سرِ حشر
بات رکھ لوں تری خدائی کی (ناطق)

مرسلہ: محمد نعیم الرحمٰن، ناگپور

آہ کب تو نے بے وفائی کی
بات الگ ہے غمِ جدائی کی (فراق)

مرسلہ: ماسٹر عابد حسین، مرادآباد۔
ذاکر حسین مہدی، صاحب گنج۔

ہم سے کیا ہو سکا محبت میں
خیر تم نے تو بے وفائی کی (فراق)

مرسلہ: ایم۔ شاکر حسین شاکر، صاحب گنج۔
منصور حسین، برہان پور۔ سعید احمد قائد دہلی۔
مجتبیٰ جمیل، صاحب گنج۔ محمد حنیف، بجنور۔

کوئی افسانہ چھیڑ تنہائی
رات کٹتی نہیں جدائی کی (فراق)

مرسلہ: مسرت جہاں، صاحب گنج

حسرتیں دل میں رہ گئیں سالک
آگئی عمر پارسائی کی (سالک)

مرسلہ: محمد شعیب خاں، دہلی

وصل کے دن کی آرزو ہی رہی
شب نہ آخر ہوئی جدائی کی (نامعلوم)

مرسلہ: طلحہ وقار غالب، سنبھل

لطف مٹ جائیں گے اسیری کے
آنہ جائے گھڑی رہائی کی (حفیظ)

مرسلہ: محمد ضیاء الحق ضیاء، محلہ قلی پاڑہ
پوسٹ وضلع صاحب گنج (بہار) پن ۸۱۴۱۰۹

دل میں آ بیٹھیے کہیں نہ کہیں
چھوڑیے محفلیں خدائی کی (آتو بھوپالی)

مرسلہ: دلنواز خاں، بھوپال

تیرے بندوں نے تیری دنیا میں
رنت نئے رنگ میں خدائی کی (عارف جمالی)

مرسلہ: ایم اسلم انصاری، کامٹی

بیٹھ کر میکدے میں آج عطا
بات کرتا ہے پارسائی کی (عطا عابدی)

مرسلہ: محمد ایوب، صاحب گنج

میں نشاں پا سکا نہ منزل کا
آپ نے خاک رہنمائی کی (عطا عابدی)

مرسلہ: محمد آدم گردش، بھاگلپور

اس لیے مل گئی ہمیں منزل
ایک رہزن نے رہنمائی کی (محمد مقصود مہتاب)

مرسلہ: حافظ حبیب احمد، سکندرآباد

بھیک دیدار کی مجھے دے دو
لاج رکھ لو مری گدائی کی (عادل عقیل)

مرسلہ: شہناز انجم، سہارنپور

بات کرتے ہو اب جدائی کی؟
پہلے کیوں ہم سے آشنائی کی (فخر سکندرآبادی)

مرسلہ: سید غلام رسول، خورجہ

آئندہ مہینے کے لیے اس مصرعے پر اپنی پسند کے شعر اس طرح ارسال کریں کہ ہمیں ۱۲ اپریل تک مل جائیں:

کچھ ان بن ہو چلی ہے باغباں سے
(قافیہ: باغباں — ردیف: سے)

یہ مصرع میر مہدی مجروح کی غزل کا ہے۔
اس غزل کا کوئی شعر مقابلے میں شامل نہیں کیا جائے گا۔

سرورق کے اندرونی صفحے کے لیے موصولہ عنوانات

مارچ ۱۹۸۹ء کے "ایوانِ اردو دہلی" کے سرورق کے اندرونی صفحے پر جو تصویر چھاپی گئی تھی، اس کے لیے موصول ہونے والے شعری اور نثری عنوانوں میں سے تصویر کی مناسبت سے موزوں سمجھے جانے والے چند عنوان ذیل میں درج کیے جا رہے ہیں۔

شعری عنوانات

کون ویرانے میں دیکھے گا بہار
پھول جنگل میں کھلے کن کے لیے (امیر)

مرسلہ: ایم۔ علی، برہانپور

تھی تازگی خنکی میں تو خنکی تھی ہوائیں
شادابی تھی نکہت میں تو نکہت تھی صبائیں (چکبست)

مرسلہ: امتیاز انور، علی گڑھ

صف باندھے دونوں جانب بوٹے ہرے ہرے ہوں
ندی کا صاف پانی تصویر لے رہا ہو (اقبال)

مرسلہ: اعجاز پروین گڑیا، بھاگلپور

آغوش میں زمیں کی سویا ہوا ہو سبزہ
پھر پھر کے جھاڑیوں میں پانی چمک رہا ہو
پانی کو چھو رہی ہو جھک جھک کے گل کی ٹہنی (اقبال)
جیسے حسین کوئی آئینہ دیکھتا ہو

مرسلہ: علی شیر اختر، بھاگلپور

جنگل کی شام، دل کی اداسی، وطن کی یاد
تنہائی میں بھی کتنا بڑا کارواں ہیں ہم (عدم)

مرسلہ: روبینہ عابد حسین، مرادآباد

مجھے چمن کی فضا راس آ نہیں سکتی
مرے نصیب میں لکھے ہوتے ہیں ویرانے (قمر انصاری)

مرسلہ: رفیع احمد اعظمی، بدایوں

بہتے پانی پر لکھی تحریر تھے وعدے سبھی
ہاتھ آئے گا نہ اب کچھ لاکھ ڈھونڈا کیجیے (بشر نواز)

مرسلہ: شگفتہ مظفر، صاحب گنج

کوئی پتھر کا نشاں رکھ کے جدا ہوں ہم تم
جانے یہ پیڑ کس آندھی میں اکھڑ جائے گا (علیم اللہ حالی)

مرسلہ: محمد یوسف خاں، آگرہ

صحرا میں بھی گل کھلتے ہیں آتی ہیں بہاریں
موسم کا اثر وقفِ گلستاں نہیں ہوتا (آرزو دہلوی)

مرسلہ: ماسٹر عابد حسین، مرادآباد

ماضی کے سارے زخم چھپاتے رہے درخت
بدلی جو رت تو جھوم کے گاتے رہے درخت (ندیم برہانپوری)

مرسلہ: ایم۔ انور، برہانپور

اب معتدل ہوا سے ہیں سہمے ہوئے درخت
یا آندھیوں کے سامنے جھکتے نہ تھے درخت (ذکی برنی)

مرسلہ: شیخ احمد میاں، بمبئی

اشجار کی حیرت رہے کچھ دیر تو قائم
اس دشت سے آہستہ گزر شامِ شفق رنگ (ایم۔ آر۔ قاسمی)

مرسلہ: مقصود حسن خاں گمنام پیہریوی
پیہریمتو ہاؤس، گرونانک نگر، رائے بریلی
۲۲۹۰۰۱ (یو۔پی)

وہ شاخیں بے مکیں ہو کر دعا مانگیں گی رو رو کر
پرندے شام کو جب اپنی شاخوں پر نہیں ہوں گے
(سید رونق رضا)

مرسلہ: محمد معین الدین شمسی، منجھلا ڈیہر،
گانڈے (گریڈیہہ)

سیلاب کا مزاج سمجھنے کے باوجود
پانی پہ سارے نقش بنائے گئے یہاں (جوہر)

مرسلہ: نظیر سہروردی، حیدرآباد

نثری عنوانات

"گلشنِ بے خار" (مصطفیٰ خاں شیفتہ کا تذکرہ)
مرسلہ: ایم۔ ندیم زیدی، صاحب گنج

"بزمِ قدرت" (علامہ اقبال کی نظم)
مرسلہ: محمد مستحسن اختر، گاچھپاڑہ، گلشن گنج، پورنیہ ۸۵۵۱۰۷ (بہار)

"مہکتی بہاریں" (کوثر چاندپوری کا ناول)
مرسلہ: کامل خاں، دہلی

"دھرتی سدا سہاگن" (کشمیری لال ذاکر کا ناول)
مرسلہ: محمد افتخار عالم، بھاگلپور

"ساحلی علاقہ" (شاہد انور کا افسانہ)
مرسلہ: ایم۔ صابر سرگرم، صاحب گنج

"رنگِ بہاراں" (شمس قدر کا افسانوی مجموعہ)
مرسلہ: محمد آدم گردش، بھاگلپور

"مناظرِ فطرت" (شمس منیری کی نظم)
مرسلہ: محمد اشرف عالم شاداب، پورنیہ

"آج کا موسم" (سعید پریمی کے افسانے)
مرسلہ: محمد ضیاء الحق ضیاء، صاحب گنج

"نوائے فطرت" (محمد فضل الرحمٰن کی نظم)
مرسلہ: محمد واعظ الحق حکیم، صاحب گنج

"گلستانِ بے خزاں" (قطب الدین باطن کا ناول)
مرسلہ: شمود ابیگم، صاحب گنج

"گلدستہ" ۱۲ اور ۱۳ نمبر پر درج شعری عنوان اور ۲ نمبر پر درج نثری عنوان ارسال کرنے والوں کو بھیجا جا رہا ہے۔

اُردو خبرنامہ

اکادمی کی سرگرمیاں



۱۶ فروری کی شام کو غالب اکیڈمی کے ہال میں اُردو اکادمی کی طرف سے ممتاز پاکستانی ادبا ڈاکٹر وزیر آغا اور ڈاکٹر انور سدید کو استقبالیہ دیا گیا۔ تصویر میں، دائیں طرف سے: ڈاکٹر انور سدید، ڈاکٹر وزیر آغا اور اکادمی کی کلچرل اور سیمینار کمیٹی کے چیئرمین دیوان بریندر ناتھ ظفر پیامی۔



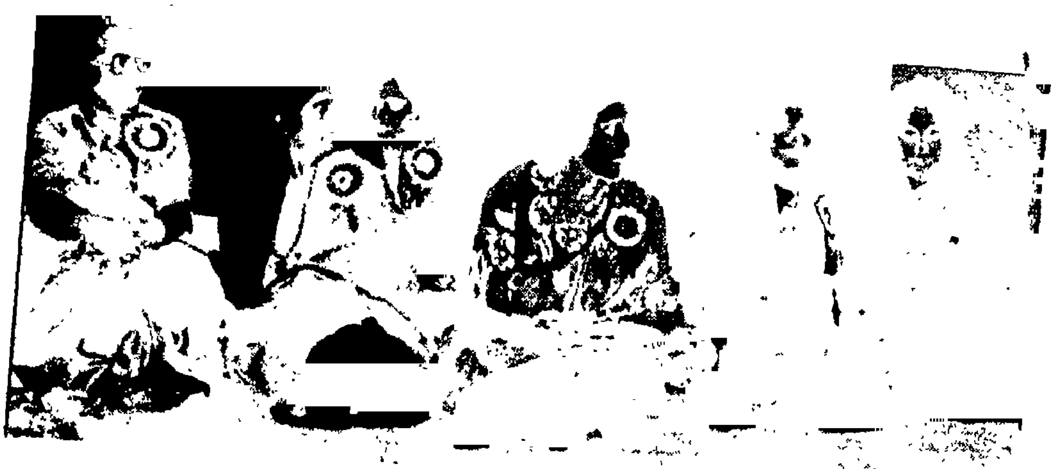
۲۲ فروری کو شام چار بجے اُردو زبان و ادب کی روسی ماہر ڈاکٹر چرنیکووا نے اُردو قواعد پر اکادمی کے کانفرنس روم میں ایک عالمانہ لیکچر دیا۔ تصویر میں انھیں مائک پر لیکچر دیتے ہوئے دیکھا جا سکتا ہے۔ دائیں جانب اکادمی کی تحقیقی اور اشاعتی کمیٹی کے چیرمین پروفیسر قمر رئیس تشریف فرما ہیں اور بائیں جانب اکادمی کے سیکریٹری سید شریف الحسن نقوی۔



۲۲ فروری ۸۹ء کو مولانا ابوالکلام آزاد کا اکتیسواں یومِ وفات تھا۔ ۲۳ فروری کی شام کو مرحوم کو خراجِ عقیدت پیش کرنے کے لیے اُردو اکادمی نے ایک جلسہ منعقد کیا جس کی صدارت محترمہ نجمہ ہیپت اللہ نے فرمائی۔ تصویر میں نظر آ رہے ہیں، دائیں طرف سے ڈاکٹر ایم۔ ورادہ راجن، کنور مہندر سنگھ بیدی سحر، محترمہ نجمہ ہیپت اللہ اور پروفیسر مشیر الحق۔



سامعین کی پہلی صف میں، دائیں سے: جناب آنند نرائن ملّا، پروفیسر گوپی چند نارنگ، جناب انیس دہلوی اور جناب کوثر چاند پوری



یکم مارچ ۸۹ء کو ہر سال کی طرح اردو اکادمی نے خواتین کا مشاعرہ منعقد کیا۔ یہ مشاعرہ ایوانِ غالب کے آڈیٹوریم میں ہوا۔ صدارت بیگم عابدہ احمد نے فرمائی اور نظامت کے فرائض محترمہ نور جہاں ثروت نے انجام دیے۔ تصویر میں، بائیں جانب سے: بیگم عابدہ احمد ممبر پارلیمنٹ، محترمہ شاہجہاں بانو یاد، محترمہ مسعودہ حیات، محترمہ کشور آرا شبنم، محترمہ ذکیہ انجم اور محترمہ نسیم مخموری۔



بنگالی گلوکارہ محترمہ سدیشنا بھٹاچاریہ پچھلے دنوں اپنے شہر کلکتے سے دلّی آئیں تو ۱۶ مارچ کی شام کو اُردو اکادمی نے ایوانِ غالب کے آڈیٹوریم میں ایک شامِ غزل کا اہتمام کیا۔ محترمہ سدیشنا بھٹاچاریہ نے بڑے صحیح تلفظ کے ساتھ اپنی سحرزا آواز میں شعرا کی منتخب غزلیں پیش کیں اور دلّی کے باذوق سامعین سے بھرپور داد و تحسین حاصل کی۔ (تصاویر: سیّد فدا علی)

راجستھان اُردو اکادمی کے جلسے میں وزیرِ تعلیم کا اظہارِ خیال

جے پور۔ راجستھان اُردو اکادمی کی نو تشکیل جنرل کاؤنسل کے افتتاحی جلسے میں راجستھان کے وزیرِ تعلیم جناب بی۔ ڈی۔ کلا صاحب نے کہا کہ راجستھان میں اردو کے فروغ کے لیے راجستھان اُردو اکادمی کی تجاویز پر عمل درآمد کرانے کی پوری کوشش کی جائے گی اور اس کے لیے گرانٹ میں اضافہ کیا جائے گا۔ نیز اکادمی کے دفتر کی عمارت کے لیے جے پور میں ایک قطعۂ زمین فراہم کرانے کی بھی کوشش کی جائے گی اور سرکاری سطح پر اُردو ایڈوائزری بورڈ بنانے پر بھی غور کیا جائے گا۔ اُردو طالب علموں کے لیے تعلیمی سہولتیں فراہم کی جائیں گی۔ ضرورت کے مطابق سیکنڈری ہائر سیکنڈری اور اعلیٰ سطح پر اُردو تعلیم کا انتظام کیا جائے گا۔

وزیرِ تعلیم جناب بی۔ ڈی۔ کلا صاحب نے ۱۲ر فروری ۱۹۸۹ء کو راجستھان اُردو اکادمی کی نوتشکیل جنرل کاؤنسل کے اجلاس میں اپنی افتتاحی تقریر کے دوران مذکورہ خیالات کا اظہار کیا۔ وزیرِ تعلیم کی تقریر سے قبل راجستھان اُردو اکادمی کے چیرمین ڈاکٹر ثاقب رضوی نے اپنے خطبۂ استقبالیہ میں وزیرِ تعلیم اور اکادمی کی نوتشکیل جنرل کاؤنسل کے اراکین کا استقبال کرتے ہوئے اکادمی کی کارکردگی پر روشنی ڈالی۔

ڈاکٹر ثاقب رضوی کے بعد اکادمی کے سکریٹری ڈاکٹر ابوالفیض عثمانی نے اپنی رپورٹ پیش کی اور نوتشکیل جنرل کاؤنسل کے اراکین نے اپنا تعارف کراتے ہوئے اپنے اپنے خیالات کا اظہار کیا۔

افتتاحی جلسے کے بعد سہ پہر کے اجلاس

میں اکادمی کے حسبِ ذیل عہدے داران کا انتخاب کیا:

جناب انعام الحق صاحب (جے پور) وائس چیرمین۔

جناب خداداد مونس صاحب (جے پور) خازن۔

جناب سید فضل المتین صاحب (اجمیر) رکن مجلس عاملہ۔

جناب ش۔ کاف۔ نظام صاحب (جودھپور) رکن مجلس عاملہ۔

جناب زماں عارف صاحب (بیکانیر) رکن مالیاتی کمیٹی۔

جناب ممتاز شکیب صاحب (جے پور) رکن مالیاتی کمیٹی۔

اُردو مراٹھی ادب کا آدان پردان

مہاراشٹر اُردو اکادمی کی جانب سے چپلون (رتناگری) میں 'اُردو مراٹھی ادب کا آدان پردان' کے موضوع پر سمینار کا انعقاد کیا گیا، جس کی صدارت محمد حسین دلوائی (ممبر راجیہ سبھا) نے کی۔ صدارتی خطبے میں اُنھوں نے کہا کہ آج کے ماحول میں زبانوں کا آپسی لین دین بہت ضروری ہے، مذہب دلوں کو جوڑنے میں ناکام ہو رہا ہے، تو تہذیبی، ادبی اور ثقافتی محاذ پر قومی یک جہتی کے لیے کام کیا جانا چاہیے، اردو اکادمی نے اس موضوع پر سمینار کا انعقاد کر کے وقت کی اہم ضرورت پوری کی ہے۔

خالد آرائی نے مراٹھی میں اُردو غزل پر اپنا تعارفی مضمون پیش کیا، شرف کمال نے اُردو مراٹھی ادب کا آدان پردان، ضرورت اہمیت پر اپنا مقالہ پیش کیا، انھوں نے صوفیا کی مذہبی رواداری اور لسانی حوالوں سے آدان پردان کی ضرورت پر زور دیا۔ ونایک گندھے نے مراٹھی میں ڈراموں کی روایت اور اردو ڈراموں کے پس منظر پر روشنی ڈالتے ہوئے کہا کہ پہلا مراٹھی ڈرامہ ۱۸۴۳ء میں کھیلا گیا۔ مراٹھی اسٹیج پر شیکسپیر کا زیادہ اثر ہے، کرلوسکر نے ۱۸۸۰-۹۰ء کے دوران ڈراموں میں گیت سنگیت کا تجربہ کیا، آدان پردان اور قومی یک جہتی کے لیے ڈرامہ اہم رول ادا کر سکتا ہے۔

سلام بن رزّاق نے مراٹھی اُردو افسانے پر اظہارِ خیال کیا، انھوں نے کہا کہ اُردو مراٹھی افسانوں کا ابتدائی سن تقریباً یکساں ہے، پریم چند اور وشنو سکھارام کھانڈیکر دونوں تقریباً ایک ہی عہد کے فن کار ہیں اور دونوں کو جدید کہانی کا سمراٹ کہا جاتا ہے، مراٹھی میں ۷۰ء میں دلت ادب کا چلن ہوا، اور اُردو میں قدیم کہانی سے انحراف کا سلسلہ بھی اسی دور میں شروع ہوا۔ انھوں نے اپنی کہانی کام دھینو بھی پیش کی، بھال چندر لواٹکر (مدیر مراٹھی، روزنامہ 'ساگر') نے ہندوستان کی جنگِ آزادی میں مسلمانوں کا حصّہ، پر اپنا طویل مقالہ پیش کیا اور وہابی تحریک، اصلاح پسند، ریشمی رومال تحریک، خلافت تحریک موپلا اور رضاکار تحریک، کاکوری کیس اور آزاد ہند فوج کے حوالے سے مسلمانوں کی خدمات کا ذکر کیا۔

ڈاکٹر عبدالستار دلوی نے اپنی تقریر میں اُردو مراٹھی کے تراجم اور ان کی تاریخ اور روایت پر روشنی ڈالی اور تخلیقی ادب کی اہمیت کے ساتھ ترجمے کی اہمیت پر زور دیا، اس سمت میں پہلا قدم صوفیا اور سنتوں نے اٹھایا، کیوں کہ انھیں ان صحت مند قدروں کی اہمیت کا اندازہ تھا۔

(شاہد ندیم)

اُردو — ایک تہذیبی ورثہ

"ہر زبان کا ایک مزاج ہوتا ہے، کچھ تاریخی تقاضے ہوتے ہیں، جن کے مطابق وہ اپنا رسم خط طے کرتی ہے۔ اردو رسم خط بھی اسی مزاج اور تاریخی تقاضوں کی دین ہے اسے تبدیل کرنے کی کوششیں تاریخ مخالف رویہ ہے جن کی شدت کے ساتھ مخالفت کرنا چاہیے۔

یہ الفاظ انجمن ترقی اُردو بلاسپور کے زیرِ اہتمام منعقدہ ایک استقبالیہ جلسے میں صوبائی انجمن ترقی اُردو بلاسپور کے نائب صدر پروفیسر آفاق احمد کے تھے۔ انھوں نے کہا کہ آج اردو کے لیے جتنا سازگار ماحول ہے اتنا پہلے کبھی نہ تھا اُردو کے جائز حق کے لیے ہندی کے ادیب اور شاعر اسی طرح سرگرم عمل ہیں جیسے اردو والے۔

انھوں نے کہا کہ اردو ایک سیکولر زبان ہے اور اس تہذیب کا نشان ہے جسے ہم کثرت میں وحدت کی تہذیب کہتے ہیں۔ انھوں نے اس پر زور دیا کہ نئی نسل کی ذہنی تربیت کے لیے اُردو کی حرف شناسی ضروری ہے۔ اسی کے ساتھ غیر اردو داں کو اردو سکھانے کی ذمے داری بھی ہمیں قبول کرنا چاہیے۔

اس موقعے پر اُردو تدریس کے

موضوع پر منعقدہ ورک شاپ و سمینار کے سلسلے میں مقابلۂ مضمون نگاری میں امتیاز حاصل کرنے والے اساتذہ کو پروفیسر آفاق احمد نے انجمن ترقی اُردو بلاسپور کی طرف سے سرٹیفکٹ اور انعامات تقسیم کیے۔

ابتدا میں انجمن ترقی اُردو کے جنرل سکریٹری مرزا مقصود احمد مکّی اور پروفیسر خالد اقبال صدیقی نے تقریروں میں بلاسپور میں اُردو کے لیے جو سرگرمی ہے اور عملی کام ہو رہا ہے اس پر روشنی ڈالی۔ اس جلسے کی صدارت ڈاکٹر عبدالہادی خاں نے کی جبکہ بلاسپور انجمن کے صدر جناب مدن موہن لھوترہ نے قرارداد تشکر پیش کی۔

(خالد اقبال صدیقی)

شاد عظیم آبادی کے فن پر سیمینار

ادبی مرکز پٹنہ کے زیر اہتمام شاد عظیم آبادی کے ۱۴۲ ویں یوم پیدائش کے موقعے پر سیمینار اور طرحی مشاعرہ کی تقریب منعقد ہوئی۔ معروف ناقد جناب شمس الرحمٰن فاروقی نے افتتاح کیا۔ جانشین شاد جناب عطا کاکوی نے صدارت کی اور نبیرۂ شاد بہزاد فاطمی مہمانِ خصوصی کی حیثیت سے شریک ہوئے۔

ڈاکٹر شکیب ایاز نے "شاد اور تصوف" کے موضوع پر مقالہ پڑھا۔ شمس الرحمٰن فاروقی، بہزاد فاطمی، بیتاب صدیقی۔ خورشید اکبر اور احسان نظر نے بحث میں حصہ لیا۔ دوسرا مقالہ ڈاکٹر اعجاز علی ارشد نے "شاد اور قومی یکجہتی" کے موضوع پر پیش کیا۔ اس مقالے پر بیتاب صدیقی اور رسید فیاض الرحمٰن نے چند سوالات اٹھائے۔ فراہیم شارب نے شکریہ ادا کیا۔ شاد کے دو مصرعوں پر طرحی مشاعرہ منعقد ہوا۔ لگ بھگ ۶ بجے شام کو ادبی مرکز کے ارکان کی کثیر تعداد کی موجودگی میں حسب اعلان انتخاب کی کارروائی شروع ہوئی۔ متفقہ طور پر مرکز کے عہدہ داران اور اس کی مجلس عاملہ کا انتخاب عمل میں آیا۔

سرپرست : رضا نقوی واہی۔
صدر : ڈاکٹر شکیب ایاز۔
نائب صدر : ڈاکٹر اعجاز علی ارشد۔
جنرل سکریٹری : معین کوثر۔
جوائنٹ سکریٹری : رشید عارف، اثر فریدی۔
اسسٹنٹ سکریٹری : واحد نظیر۔
خازن : فراہیم شارب۔
عاملہ : ظہیر صدیقی، متین عمادی، احمد تبسم، اختر عظیم آبادی، خورشید اکبر، قیصر جمال، شفیع الرحمٰن، فیاض الرحمٰن، رحمٰن شاہی۔ ضیاالرحمٰن۔ ممتاز احمد، شمیم احمد۔

(واحد نظیر)

در مدحِ انبہ

۲۵ فروری ساڑھے پانچ بجے شام ڈاکٹر شنکر دیال شرما وائس پریذیڈنٹ آف انڈیا نے جناب تاباں نقوی کی تحقیقی کتاب "شہنشاہ اثمار آم" کی رسم اجرا اپنی کوٹھی پر ادا فرمائی۔

جناب فاروق عبداللہ چیف منسٹر کشمیر کی والدہ محترمہ بیگم اکبر جہاں صاحبہ ممبر پارلیمنٹ نے بحیثیت مہمانِ خصوصی اسٹیج کو رونق بخشی۔

ڈاکٹر شریف احمد نے تقریب کی نظامت کرتے ہوئے تاباں نقوی کی ادبی اور صحافتی خدمات کا تعارف کرایا۔ جناب ابوالفیض سحر نے کہا کہ اُردو زبان میں آم کے موضوع پر کوئی کتاب موجود نہ تھی۔ مصنف نے ہندی اور انگریزی لٹریچر سے بھی زیادہ مکمل صورت میں یہ کتاب لکھی اور ایک بڑی کمی کو پورا کر دیا۔

جناب کنور مہندر سنگھ بیدی سحر نے اپنے روایتی شگفتہ انداز میں کتاب کے ادبی پہلو کا خاص طور پر ذکر کیا کہ اس میں مشاہیر شعرا اور اہلِ قلم حضرات کے اس کلام کو یکجا کر دیا گیا ہے۔ جو آم سے متعلق ہے۔ مصنف کتاب جناب تاباں نقوی نے کہا کہ میرا تعلق آموں کے شہر امروہہ سے ہے اس لیے میں نے اپنا فرض سمجھا کہ آم کے موضوع پر ایک جامع کتاب اردو میں شائع کی جائے جو اردو داں مالکان باغات کے لیے کارآمد اور شائقین انبہ کے ذوق کی تسکین کا سبب ہو۔

محترم نائب صدر جمہوریہ نے آم کے بارے میں پنڈت جواہر لال نہرو کے ذوق کا ذکر کیا نیز چند ایسے آموں کا بھی ذکر کیا جنھیں زیادہ شہرت نہیں ملی۔ پوری تقریر معیاری اردو میں تھی۔ موصوف نے مصنف سے نظم "در مدح انبہ" پڑھنے کی فرمائش کی اور اسے سراہا، محفل نے بھی اسے بطورِ خاص پسند کیا۔

آگرے کی ایک ادبی محفل

۵ فروری کو انجمن ہم زبان آگرہ کے زیرِ اہتمام حضرت میکش اکبرآبادی کے مکان پر ایک ادبی محفل منعقد ہوئی جس میں ڈاکٹر خوشحال

زیدی کی کتاب "اردو زبان اور ادب کا خاکہ" کا اجرا ڈاکٹر معتز علی بیگ صدر شعبۂ نفسیات مسلم یونیورسٹی علی گڑھ کے دستِ مبارک سے ہوا۔ جلسے کی صدارت جناب عظیم علی شاہ نے کی۔ اور نظامت کے فرائض معین فریدی صاحب نے انجام دیے۔ تقریب میں آگرے کی مختلف انجمنوں کے اراکین شعرا اور ادبا نے شرکت کی۔ جلسے میں خوشحال زیدی صاحب کی ادبی خدمات کو سراہا گیا اور گذشتہ بیس سال سے وہ اُردو طلبہ کے لیے جو کتابیں لکھتے گئے ہیں ان کی اہمیت اور افادیت پر روشنی ڈالی گئی۔ جناب معظّم علی شاہ صاحب نے اردو طلبہ کے مسائل پر سنجیدگی سے غور وفکر کرنے پر زور دیا۔ نیز انھوں نے کہا کہ اس وقت ضرورت اس بات کی ہے کہ رام بابو سکسینہ کی تصنیف" اردو ادب کی تاریخ "کو (اَپ ٹو ڈیٹ) کیا جائے اردو میں یہ اَبھی بڑی کمی ہے۔

(مقبول انصاری)

رفتید ولے نہ از دلِ ما

اُردو کے مشہور ادیب اور اُردو کتابوں کے بڑے ناشر جناب نسیم انہونوی کا لکھنؤ کے کنگ جارج میڈیکل میں انتقال ہوگیا۔ ان کی عمر اسّی سال تھی۔

نسیم انہونوی صاحب نے دو درجن سے زائد ناول خود لکھے اور درجنوں مقبول و معروف ناول نگاروں کی کتابیں زیورِ طباعت سے آراستہ کیں۔ خواتین کے مقبول ماہنامے حریم اور نیم ادبی نیم کاروباری جریدے۔ سرپنچ کی ادارت اور بچوں کے رسالے کلیاں' کی سرپرستی کے فرائض بھی انجام دیے۔

نسیم انہونوی کا آبائی وطن یو۔پی کا قدیم قصبہ انہونہ تھا۔ لیکن ان کی زندگی لکھنؤ میں گذری۔ لکھنؤ گویا ان کا وطنِ ثانی بن گیا تھا۔ وہ اپنی ذات سے ایک انجمن تھے۔ مشرقی تہذیب کا بے مثل نمونہ۔ وضعداری اور رواداری کے پیکر۔ وفاداری بشرطِ استواری کے قائل۔ فنکار۔ ناول نگار۔ صحافی اور تاجر۔ نسیم انہونوی میں بہت سی خوبیاں یکجا ہوگئی تھیں۔ ان کا ادارہ نسیم بک ڈپو' محض کتابوں کی خرید و فروخت کا وسیلہ ہی نہیں تھا' ادیبوں اور شاعروں کی امیدوں کا مرکز بھی تھا شوکت تھانوی' خان محبوب طرزی۔ الحاج امین سلونوی' ڈاکٹر عبدالاحد خاں خلیل جیسی شخصیتیں اس ادارے سے وابستہ تھیں اور ڈاکٹر سلام سندیلوی عفت موہانی' مظہر الحق علوی وغیرہم کی بیشتر تصانیف شائع کرنے کا اعزاز نسیم بک ڈپو کو حاصل ہوا۔

نسیم انہونوی مرحوم نشر و اشاعت کے علاوہ سماجی و قومی کاموں میں گہری دلچسپی لیتے تھے۔ متعدد ادبی' سماجی اور ملی اداروں سے وابستہ ہوکر انھوں نے اہم خدمات انجام دیں۔

نسیم انہونوی صاحب کے انتقال سے اُردو ادب میں بالخصوص لکھنؤ کی تہذیبی زندگی میں جو خلا پیدا ہوگیا ہے۔ اس کا پُر ہونا آسان نہیں۔ ان کی کمی مدتوں محسوس کی جائے گی۔

●

بچوں کے کہنہ مشق شاعر جناب خضر برنی کا ۸۰ برس کی عمر میں ایک طویل علالت کے بعد دہلی میں انتقال ہوگیا۔ مرحوم نے بچوں کے لیے متنوع موضوعات پر بے شمار نظمیں اور کہانیاں لکھیں جو انڈو پاک کے رسائل میں شائع ہوکر مقبولیت حاصل کرتی رہیں۔ موصوف کے انتقال سے اُردو ادبِ اطفال نے ایک بزرگ شاعر کھو دیا ہے۔

●

اُردو کے خوش فکر شاعر اور مشہور شاعرہ سیدہ شانِ معراج کے رفیقِ حیات سید رونق رضا صاحب کا ۱۹ رفروری کو رات بارہ بجے لکھنؤ میڈیکل کالج میں انتقال ہوگیا۔ ۱۵ رفروری کو شاہجہاں پور سے بذریعہ کار اپنے فارم تسوا ضلع بریلی جارہے تھے کہ کار کے بریک فیل ہوجانے کی وجہ سے حادثہ پیش آیا اور رونق رضا صاحب کی گردن کی ہڈی ٹوٹ گئی۔ ان کی بیگم سیدہ شانِ معراج اُنھیں لے کر لکھنؤ پہنچیں اور میڈیکل کالج میں انھیں داخل کردیا۔ لیکن رونق رضا صاحب کی حالت بگڑتی گئی اور اگلے دن انھوں نے داعیِ اجل کو لبیک کہا۔

سید رونق رضا خلوت پسند انسان تھے' مشاعروں وغیرہ میں بہت کم شریک ہوتے تھے جو کچھ کہتے دوستوں میں سنا کر مطمئن ہوجاتے۔ کچھ مدّت پہلے دوستوں ہی کے اصرار پر انھوں نے اپنے کلام کا پہلا مجموعہ" آئینے اکیلے ہیں" کے نام سے شائع کرایا تھا۔ جن حضرات نے اس کا مطالعہ کیا ہے وہ ان کے اچھا شاعر ہونے کی گواہی دیں گے۔

ہم بارگاہِ رب العزت سے ان تینوں مرحومین کی مغفرت کے طلب گار ہیں اور ان کے پس ماندگان کے غم میں شریک ہیں۔

آپ کی رائے

○ "ایوانِ اُردو" ماشاء اللہ خوب ہے۔ گرانقدر ادیبوں کی متنوع تخلیقات نے اسے دوسرے ادبی پرچوں سے منفرد کر دیا ہے۔ آدابِ کتابت اور تہذیبِ طباعت کے اعتبار سے بھی یہ پرچہ خوش گوار تاثر قائم کرتا ہے۔ اگر آپ اس کی معیار سازی میں اسی طرح منہمک رہے تو اس کی اہمیت اور افادیت میں روز بروز اضافہ ہوتا جائے گا۔

—— انیس اشفاق، لکھنؤ

○ اُردو والے ہندی داں طبقے سے غیریت کا سلوک رکھیں گے تو اُردو محض تنگ نظری کی علامت بن کے رہ جائے گی۔ میرا یہ مشورہ ہے کہ آپ ہندی اصناف جیسے "دوہا" "سویا" "بروئے" "گیت" "بھجن" وغیرہ کو بھی اُردو زبان میں رائج کرنے کا "خطرہ" مول لیں۔ کبھی کبھی یہ تجربہ جان لیوا ضرور ہو جاتا ہے مگر تجربہ زبان کو آب و تاب بخشتا ہے۔ دوسری بات یہ ہے کہ اُردو والے صرف بڑے لوگوں کو یا جانے پہچانے لوگوں کو زیادہ اُچھالتے ہیں اس سے اُردو کی نئی "پود" ایک کسمپرسی اور مایوسی میں ڈوب جاتی ہے میری یہ بات آپ کو گراں ضرور لگے گی مگر یہ حقیقت ہے اور حقیقت سے کب تک آپ آنکھ چرائیے گا۔ ہندی کا ایک رسالہ "دھرم یگ" ہے۔ "ساپتاہک ہندوستان" ہے۔ ذرا —— اُن کو تو دیکھیے کتنے "مسلمان" ہندی لیکھکوں کو انھوں نے اُجالے میں لاکر رکھ دیا —— اتنا تعصّب وہاں نہیں ہے۔ یہ عصبیت اور "غیریت" اُردو کو نقصان پہنچا رہی ہے۔ حالانکہ میں بنیادی طور پر اُردو لیکھک ہوں مگر ہندی والے مجھے اس لیے اُچھالتے ہیں کہ میں ہندی میں اُردو کو چھوڑ کر لکھ رہا ہوں مگر حقیقت کچھ اور ہے۔ آپ میرے غریب خانے پر کبھی بنارس آئیں تو ضرور تشریف لائیں۔ گیتا اور رامائن کے بعد میری لائبریری میں ۹۰٪ کتابیں اُردو کی ملیں گی۔ میں اُردو کے بیسیوں رسالوں کا خریدار ہوں جبکہ ہندی رسالے مُفت میرے لیے ارسال کیے جاتے ہیں۔ میں یہ کوئی اپنا رونا نہیں رو رہا ہوں۔ اُردو کے حالِ زار پر ماتم کُناں ہوں۔

میری دُعا ہے کہ بھگوان اُردو کو اُس کا جائز مقام عطا کر دے —— یہ دلوں کی زبان "روٹی روزی" سے بھی جوڑ دی جائے۔

—— ساجن پردیسی، بنارس

○ ساحر ہوشیار پوری صاحب کے ایک خط سے مجھے یہ معلوم ہوا کہ "ایوانِ اُردو" کی ماہ فروری کی اشاعت میں "ہم طرح اشعار" کے تحت کسی صاحب نے مندرجۂ ذیل شعر کو میرا بتایا ہے:

ہر ذرہ آستاں ہے تری جلوہ گاہ کا
تو ہی بتا مجھے کہ جھکاؤں میں سر کہاں

اور اس شعر پر انعام بھی دیا گیا ہے یہ شعر حضرت جوشؔ ملسیانی مرحوم کا ہے۔ میں تو اس شعر پر تضمین کا گنہگار ہوں یہ تضمین بہت پہلے پرواز ادب، پٹیالہ میں چھپی تھی شاید شعر بھیجنے والے حضرت تضمین کے بارے میں نہ جانتے ہوں لہٰذا انھیں غلط فہمی ہوئی ہوگی براہِ کرم میرا یہ خط یا مناسب تصحیح شائع کر دیں آپ کی تفریحِ طبع کے لیے تضمین حاضر ہے:

ہر رستہ کہکشاں ہے تری جلوہ گاہ کا
ہر جلوہ حرزِ جاں ہے تری جلوہ گاہ کا
ہر گوشہ دلستاں ہے تری جلوہ گاہ کا
"ہر ذرہ آستاں ہے تری جلوہ گاہ کا
تو ہی بتا مجھے کہ جھکاؤں میں سر کہاں"

—— آر۔ ڈی۔ شرما تاثیرؔ، چنڈی گڑھ

○ "دل شاہجہاں پوری" مصنفہ اظہار صہبائی پر "ایوانِ اُردو دہلی" کے فروری ۸۹ء کے شمارے میں تبصرہ پڑھا۔ تبصرے میں ایک بھی بات ایسی نہیں ہے جس سے کتاب کے بارے میں کچھ اندازہ ہو سکے۔ تبصرہ نگار نے کتاب کی قیمت اپنی طرف سے پانچ روپے مقرر کر دی ہے جو کتاب کی اصلی قیمت کا صرف آٹھواں حصہ ہے۔ اس کے علاوہ دل صاحب کے سنِ وفات کا تعین بھی تبصرہ نگار نے خود ہی کر لیا ہے اور سنِ وفات ۱۹۰۹ء[1] دکھایا ہے جب کہ دل صاحب کا انتقال ۱۹۵۹ء میں ہوا۔ مذکورہ بالا کتاب ایم فل کا ایک معمولی تحقیقی مقالہ ہے۔ مقالہ نگار نے اس مقالے میں جن موضوعات کو بھی اٹھایا ہے ان سے وہ عہدہ برآ نہیں ہو سکا ہے۔ اس کتاب کی طباعت بہت ہی ناقص ہے، کتابت کی اغلاط نمایاں ہیں اور قیمت چالیس روپے بہت زیادہ ہے۔

—— لطیف رشیدی، شاہ جہاں پور

(۱) یہ کتابت کی غلطی ہے جس کا ہمیں افسوس ہے۔ (ادارہ)

○ مارچ کا شمارہ نظر نواز ہوا۔ سرورق ماضی کی داستان بیان کر رہا ہے۔ اس بار افسانوی حصہ انتہائی جاندار ہے۔ خاص طور پر سلام بن رزّاق کا افسانہ سیاسی حالات کے جبر کی مُنہ بولتی تصویر ہے۔ سریندر پرکاش جدید افسانوی ادب کے انتہائی معتبر نمائندے کا افسانہ علامتی کہانی کی عمدہ مثال ہے۔ موصوف نے اُردو زبان کو دو نئی ترکیبیں دی ہیں 'غبار چڑھنا' اور 'باپ کی ممتا' اب تک میں 'غبار چھانا' اور 'ماں کی ممتا' سُنا اور پڑھا تھا۔ موصوف نے بڑی جرأت کے ساتھ خالص ہندی الفاظ 'ستھاپت' اور 'وستر' کا 'پریوگ' کیا ہے۔ احمد عثمانی کے افسانے "بھنور" کا اختتام عجیب ہے محسوس ہوتا ہے کہ ایک کہانی بیان کرتے کرتے ذہن میں کوئی دوسری بات آگئی تو کہانی کو اسی خیال پر ختم کر دیا۔

کرشن موہن، شجاع خاور اور پرکاش تیواری کی غزلیں کافی متاثر کرتی ہیں۔ ابراہیم یوسف کا مضمون "غالب اور ڈرامہ" انتہائی بھرپور اور معلومات افزا ہے۔ 'پرکاش پنڈت' کے حالاتِ زندگی جان کر اُردو والوں کی بے حسی پر رونا آتا ہے۔ میرا خیال ہے کہ ریاستی سطح پر ایسی تنظیم ہونی چاہیے جو شعرا و ادبا کی مدد کر سکے۔ "مارشل مکلوہن" اور "علم نفسیات: روزمرّہ زندگی میں" اصطلاحات کی بھرمار اور عدم تشریح کا شکار ہوگئے ہیں۔ تفصیلات کو نظر انداز کرنے کی وجہ سے گنجلک اور غیر واضح ہوگئے ہیں۔

——— غلام نبی مومن، کلیان

○ "ایوانِ اُردو" کا مارچ ۱۹۸۹ء کا شمارہ نظر نواز ہوا۔ بلراج کومل نئی نظم نگاری کا لوہا تو سبھی مانتے ہیں۔ ادھر انھوں نے بعض تنقیدی اور تشریحی نوعیت کے جو مضامین لکھے ہیں، ان میں بھی مطالعے اور فکر کی گہرائی نظر آتی ہے۔ مارشل مکلوہن کے نظریات کی انھوں نے بلیغ تشریح کی ہے۔ ذریعۂ ترسیل بجائے خود ذریعہ بھی ہے اور پیغام بھی ... اس نوعیت کے مباحث ادب میں ہیئت، اسلوب اور فن کے تعلق سے مختلف نظریاتی خیموں میں زیرِ بحث رہے ہیں۔ ٹینی سن نے اسلوب کی اہمیت کو واضح کرتے ہوئے کہا تھا کہ "قابلِ توجہ یہ بات نہیں کہ ہم کیا کہہ رہے ہیں، بلکہ یہ ہے کہ ہم کس طرح کہہ رہے ہیں۔" اس قول میں جو انتہا پسندی ہے، اس سے قطعِ نظر، یہ کہا جا سکتا ہے کہ اسلوب کی تشکیل میں بعض عناصر تو محض ذریعۂ ترسیل کے انتخاب سے ہی طے ہو جاتے ہیں اور فنکار کے لیے میڈیا کے اس اسلوبیاتی جبر سے نبرد آزما ہونا آسان مرحلہ نہیں۔ بلراج کومل ادب میں اس میڈیائی جبر کا خلاصہ بھی کر دیتے تو مضمون اور زیادہ کار آمد ہو جاتا۔ بہ حال، اپنی موجودہ تعارفی نوعیت کے باوجود اس مضمون نے "ایوانِ اُردو" کے زیرِ نظر شمارے کی اہمیت کو دو بالا کر دیا ہے۔

اس شمارے میں شامل بعض نظمیں اور غزلیں بیانیہ اور تبصراتی آہنگ کے سبب صحافتی ادب کی مثالیں بن گئی ہیں۔ مجھے رمز و ایما پر بے جا اصرار نہیں لیکن بیانیہ شاعری کے لیے بھی ایک سپردگی (DEDICA-TION) کی ضرورت ہوتی ہے۔ کرشن موہن، عرشی زادہ اور شجاع خاور بڑے نام ہیں اس کا ثبوت تو آپ نے ان کی غزلوں کو ترتیب میں سب سے پہلے رکھ کر فراہم کر دیا ہے لیکن بڑا نام اور بڑی شاعری ہم معنی نہیں۔ کرشن موہن سینئر شاعر ہیں لیکن ان کے کلام پر مجھ جیسے ابتدائی درجے کے طالبِ علم کو بھی نکتہ چینی کی گنجائش نظر آجائے تو ایسی SENIORITY کس کام کی۔ ان کی غزل کے مطلع میں لفظ "بھی" کا کردار مشکوک ہے۔ دوسرا شعر (مطلع ثانی) ایک ذاتی اور مبہم تبصرے سے زیادہ اور کچھ نہیں۔ تیسرا شعر سونے پر سہاگہ ہے۔ کیا ادب کی تخلیق جہد و عمل کے بغیر ممکن ہے؟ پھر اس غزل کو دیکھتے ہوئے تو ان کے کلام میں "دوام" کے خواص کہیں نظر نہیں آتے۔ چوتھے شعر میں "خبر بھی مجھے" کا ٹکڑا اپنی ماقبل اور مابعد کی عبارت سے قطعی لاتعلق ہے۔ البتہ مقطع کی داد نہ دینا ناانصافی ہوگی۔ کرشن جی اور ان کی گوپیوں کے جو افسانے مشہور ہیں، ان کے تناظر میں "کرشن"، "بیراگ" اور "مہر و وفا" کا تضادیاتی حسن مقطع کو خوبصورت بنا گیا ہے۔ ("بنا گیا ہے" اس لیے کہ یہ خوبی شاعر کی کوششوں کا ثمرہ معلوم نہیں ہوتی۔)

عرشی زادہ کی غزل کا پہلا مصرع تقابلی فضا پیدا کرتا ہے اور دوسرے مصرعے میں تضاد کا متقاضی ہے لیکن "گل ہائے تر" اور "داغ کہن" میں کوئی تضادیاتی علاقہ نہیں۔ باقی اشعار کا بھی یہی حال ہے۔ دوسرے شعر میں لفظ "جاناں" کیا کر رہا ہے۔ تیسرے شعر میں "عکس" کی جگہ کوئی اور لفظ مثلاً "فیض" ہوتا تو "اب تک" اور "خوش خرام" سے منطقی ربط قائم ہو جاتا۔ پھر سرو و سمن کا محوِ خرام ہونا بھی "خوب" ہے۔ آخری شعر میں ردیف کے جبر نے "اندازِ فن" کو جمع کا صیغہ بنا دیا ہے۔ "اندازِ فن" کو عموماً اسلوب کے معنی میں استعمال کیا جاتا ہے۔ شاعر کوئی ایک اسلوب دریافت کر لے، یہی کیا کم ہے،

عرشی زادہ صاحب نے جمع لکھ کر کئی اسالیب پر اپنی دسترس کا ثبوت دیا ہے۔ اور پھر "حرفِ جنوں کا لکھنا" "اندازِ فن" کا معلول ہے' یہ اسی شعر سے معلوم ہوا۔

شجاع خاور کی غزل کے بعض اشعار اچھے ہیں لیکن نوک پلک دُرست نہیں۔ چوتھے میں لفظِ مُثلاً کو انھوں نے مُثلاً باندھا ہے۔ ظاہر ہے کہ مثلاً کی "ث" ساکن نہیں محرک ہونا چاہیے اور بحر اس کی اجازت نہیں دیتی۔ آخری شعر میں "شجاع" کی "ع" گر گئی ہے۔ اگر وہ اپنا تخلص بغیر "ع" کے استعمال کریں تو کوئی مضائقہ نہیں لیکن "ع" کا تحریر میں لانا کیا ضرور ہے۔ معنوی اعتبار سے بھی شعر محلِ نظر ہے۔ جب زندگی پر غور کرنا ہی چھوڑ دیں گے تو پھر "آہ" اور "درد" کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ ان کا مزے دار اور میٹھا ہونا تو بہت دُور کی بات ہے۔ اسے SADISM کے علاوہ اور کیا کہا جا سکتا ہے۔

ان بزرگوں کے مقابلے میں رئیس منظر اور ایم۔ آر۔ قاسمی کی غزلیں کہیں زیادہ "بزرگ" اور پختہ ہیں۔ رئیس منظر کی غزل حاصلِ شمارہ ہے۔ احتشام اختر کی غزل میں "پانی" کے مختلف استعاراتی ابعاد سے خوبصورت تخلیقی فضا تعمیر ہوئی ہے۔ کاش یہ فضا دگیر تخلیقات میں بھی نظر آتی۔

ان تمام معروضات سے میرا مقصد تنقیص نہیں ہے۔ کہنا صرف یہ ہے کہ جس رسالے کی ادارت سے مخمور سعیدی جیسے بڑے شاعر کا نام وابستہ ہو' اس میں شاعر کے نام پر نہیں' اس کے کلام پر توجہ مرکوز ہونا چاہیے ورنہ "ایوانِ اردو" بھی دیگر اکادمیوں کے رسائل کی طرح محض بجٹ خرچ کرنے کا وسیلہ ہو کر رہ جائے گا۔

—— ارشد عبدالحمید' بیکانیر

○ "ایوانِ اُردو دہلی" اب ہر خاص و عام میں اپنی مقبولیت کا پرچم لہراتا ہوا نظر آرہا ہے۔ سرورق سے آخری صفحے تک جو حسن و دلکشی اپنے دامن میں رکھتا ہے وہ عصرِ حاضر کے اُردو رسالوں میں بہت کم ہی دیکھنے میں آتی ہے۔ آپ نے اتنے قلیل عرصے میں "خواجہ احمد عبّاس نمبر" اور "مولانا ابوالکلام آزاد نمبر" شائع کر کے اس کے معیار میں چار چاند لگا دیے ہیں۔

مارچ کے شمارے میں سریندر پرکاش کی کہانی "آدمی" ایک سبق آموز کہانی ہے۔ شعری حصّے میں پرکاش تیواری اور رعنا زیبا کی غزلیں خاص طور پر پسند آئیں۔ "ہم طرح اشعار" اور "اندرونی صفحے کی تصویر" کے سلسلے کو رسالے کی مقبولیت کا مینار کہا جائے تو کوئی مبالغہ نہ ہوگا۔ یہ چیزیں واقعی ہم نئے اُردو داں طبقے کے اندر ایک نئے عزم کے ساتھ لکھنے پڑھنے کا شوق اُجاگر کرتی ہیں۔

—— ایم۔ صابر سرگم' صاحب گنج

○ مارچ ۸۹ء کا "ایوانِ اُردو" کا شمارہ ملا۔ "حرفِ آغاز" کے تحت آپ نے جنابِ بشمبر ناتھ پانڈے کی بابت جو باتیں کہی ہیں وہ حقیقت پر مبنی ہیں۔ ہمارے ملک میں آپسی نفرت کی آگ جو بڑی تیزی سے بھڑک رہی ہے یہ بلاشبہ انگریزوں کی لگائی ہوئی ہے لیکن بڑے افسوس کی بات ہے کہ ہماری آزادی کو ۴۱ سال پورے ہو گئے پھر بھی ہم انگریزوں کی چلائی چال میں بُری طرح گرفتار ہیں اور آپس ہی میں مرنے کٹنے کے لیے تیار ہیں۔ بہرحال جنابِ بشمبر پانڈے کی طرح سوچنے والی بہت سی شخصیتیں اب بھی موجود ہیں۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ایسے ذی ہوش حضرات منظم ہو کر ملک کی سالمیت کو برقرار رکھنے کے لیے آگے بڑھیں اور دیش کو پارہ پارہ ہونے سے بچالیں۔

سریندر پرکاش کا افسانہ پڑھ کر میری آنکھوں سے ٹپ ٹپ آنسو گرنے لگے۔ ابراہیم یوسف کا مضمون "غالب اور ڈراما" اچھا لگا۔ یہ مضمون غالبیات کے ایک نئے پہلو کو اُجاگر کرتا ہے۔ غزلوں کا انتخاب عمدہ ہے۔ آپ کی کاوشیں "ایوانِ اُردو" کو اس کی منزلِ مقصود تک تیزی سے لے جا رہی ہیں۔

آپ کی رائے کے تحت جنابِ محمد ظفراللہ صاحب نے ہماری بڑی مدد کی ہے۔ جہاد اور الجہاد فی الاسلام کے تعلّق سے میں نے اپنے مقالے میں اپنی یادداشت کی بنیاد پر جو باتیں لکھی تھیں وہ غلط تھیں واقعہ وہی صحیح ہے جو محمد ظفراللہ بھائی نے بیان کیا ہے۔ میں "ایوانِ اُردو" کے قارئین سے گذارش کرتا ہوں کہ میرے مذکورہ مضمون سے مولانا مودودی کے مولانا آزاد کی کسی تقریر سے جہاد کے موضوع پر کتاب لکھنے کی تحریک والی بات کو خارج سمجھا جائے اور محمد ظفراللہ صاحب نے جو باتیں لکھی ہیں انھیں ہی دُرست سمجھا جائے۔

—— (ڈاکٹر) محمد فاروق اعظم' بھاگلپور

○ "ایوانِ اُردو" کا تازہ شمارہ (مارچ ۸۹ء) پیشِ نظر ہے۔ اس کے خطوط والے حصّے (آپ کی رائے) کے تحت جنابِ ظ۔ انصاری کا ایک خط شائع ہوا ہے جس میں یہ وضاحت کی گئی

ہے کہ جدید تحقیق کے مطابق "غالب اتوار کے دن ۸، رجب ۱۲۰۸ھ مطابق ۹، فروری ۱۷۹۴ء کو آگرے میں پیدا ہوئے" تھے۔ اس سلسلے میں حوالہ دیا گیا ہے "صمد رضوی (صحیفہ) مولانا عرشی رام پوری، حنیف فوق (کراچی، پاکستان)" کا۔ جہاں تک غالب کی تاریخِ ولادت کا تعلق ہے، وہ بالکل درست ہے لیکن حوالوں کے معاملے میں محترم مکتوب نگار سے بالیقین سہو ہوا ہے۔ جناب محمد حسین رضوی ماہرِ علم نجوم ہیں۔ انھوں نے غالب کے زائچۂ ولادت (مشمولہ کلیاتِ غالب، مطبوعہ مطبع نول کشور، لکھنؤ) کی بنیاد پر ان کی تاریخ ولادت ۸، رجب ۱۲۱۱ھ طے کی ہے۔ ایک اور ماہرِ علم نجوم جناب مسلم ضیائی کا فیصلہ یہ ہے کہ مذکورہ زائچے کی روشنی میں غالب کی تاریخِ ولادت ۱۸، رجب ۱۲۱۳ھ قرار پاتی ہے۔ مولانا عرشی رام پوری نے غالب کی بیان کردہ تاریخ (۸، رجب ۱۲۱۲ء) اور دن (یکشنبہ) میں عدم مطابقت کے پیشِ نظر یہ رائے قائم فرمائی ہے کہ صحیح تاریخِ ولادت ۸، رجب نہیں، ۱۸، رجب ہے کیونکہ ۱۸، رجب ۱۲۱۲ھ کو اتوار کا دن تھا۔ ڈاکٹر حنیف فوق صاحب نے، جہاں تک مجھے معلوم ہے اس موضوع پر مطلقاً کوئی اظہارِ خیال ہی نہیں کیا ہے۔

یہ تحقیق کہ غالب کی صحیح تاریخِ ولادت یکشنبہ، ۸، رجب ۱۲۰۸ھ مطابق ۹، فروری ۱۷۹۴ء ہے، درحقیقت اس خاکسار کی کوشش کا نتیجہ ہے۔ اس موضوع پر میں نے اپنا مقالہ فروری ۱۹۸۴ء میں غالب انسٹی ٹیوٹ، نئی دہلی کے زیرِ اہتمام منعقدہ انٹرنیشنل غالب سیمینار کے موقعے پر پیش کیا تھا۔ یہ مقالہ انسٹی ٹیوٹ کے تحقیقی جریدے "غالب نامہ" کے جنوری ۱۹۸۵ء کے شمارے میں شائع بھی ہو چکا ہے۔ جناب ظ۔ انصاری اس سیمینار میں شریک ہوتے تھے، لیکن جس وقت میں نے مقالہ پڑھا تھا، موصوف وہاں تشریف نہیں رکھتے تھے۔ مجھے یقین ہے کہ حوالوں کے سلسلے میں انھوں نے صرف اپنی یادداشت پر بھروسا کیا ہے جو تحقیق سے طبعی مناسبت نہ رکھنے والوں کو اکثر دھوکا دے جایا کرتی ہے۔ تحقیق کا تقاضا یہ ہے کہ ہر بات اصل مراجع کی طرف رجوع کے بعد مکمّل حوالوں کے ساتھ ضبطِ تحریر میں لائی جائے۔ امید ہے کہ یہ وضاحت محترم انصاری صاحب اور "ایوانِ اُردو" کے عام قارئین کی غلط فہمی کے ازالے کے لیے کافی ہوگی۔

—— حنیف نقوی، وارانسی

○ مارچ کا شمارہ زیرِ مطالعہ رہا۔ راج نرائن راز نے پرکاش پنڈت پر جس انداز سے قلم اٹھایا ہے مضمون اُن کی قلبی رادات کا آئینہ دار بن گیا ہے۔ اہلِ ہنر کا یہی انجام ہوتا ہے خاص طور سے ان حضرات کا جو خود دار بھی ہوں۔ ابراہیم یوسف اور نارا چرن رستوگی صاحبان کے مضامین پُرکشش ہیں۔ سریندر پرکاش کا افسانہ "آدمی" ایک کربناک حقیقت کو اُجاگر کرتا ہے۔ غزلوں میں عشرت ظفر، رئیس منظر، احتشام اختر اور رعنا زیبا نے متاثر کیا۔ رعنا زیبا کی غزل پڑھ کر پروین شاکر کی غزلیں یاد آئیں۔

—— مہدی پرتاپگڑھی، پرتاپگڑھ

مولانا ابوالکلام آزاد نمبر

○ ابوالکلام آزاد نمبر کے بارے میں کچھ لکھنا سورج کو چراغ دکھانا ہے۔

—— عبدالحق پٹھان، بمبئی

○ آزاد نمبر اُمید سے کہیں زیادہ عمدہ ثابت ہوا۔ یہ حقیقت ہے کہ مولانا ابوالکلام آزاد جیسی عظیم شخصیت کی سوانح عمری کو چند سو صفحات میں قید کرنا ممکن نہیں۔ یہ آپ کی سخت کاوشوں کا نتیجہ ہے کہ آزاد نمبر کے مطالعے کے بعد ہم مولانا ابوالکلام آزاد کے کافی قریب ہو گئے۔ میں یہ کہنے پر مجبور ہوں کہ آزاد نمبر تو اس سے قبل بھی کئی رسالوں کے نکلے مگر اُن سب میں "ایوانِ اُردو" کا آزاد نمبر اپنی مثال آپ ہے کوئی شک نہیں کہ آپ نے اُردو دُنیا کو گرانقدر تحفہ دیا۔ ہر مضمون گوناگوں خصوصیت کا حامل ہے ترتیب بھی قابلِ قدر ہے۔ اُمید ہے کہ نہرو نمبر کا معیار بھی کم و بیش اِس کا ہم پلّہ ہوگا۔

—— سہیل انجم، گیا

○ مولانا آزاد نمبر بہت عمدہ اور کارآمد ہے شاید اتنا وقیع اور جامع نمبر مولانا آزاد پر کسی دوسرے ادارے نے نہیں چھاپا آپ کی محنت اور منفرد حسنِ ادارت ہر صفحے سے نمایاں ہے اور اب اسی طرح کی اُمید نہرو نمبر سے بھی وابستہ ہے جس کا شدّت سے انتظار ہے۔

—— مسلم شہزاد، مغربی چمپارن

○ پُرکشش آزاد نمبر کی اشاعت پر پُرخلوص تہنیت۔ اس کی زیادہ سے زیادہ اشاعت کی ایک صورت یہ بھی ہے کہ اس کو ملک بھر کے سرکاری کُتب خانوں کے لیے ریاستی حکومتوں سے منظور کروایا جائے۔

تصاویر بڑی محنت سے جمع کی گئی ہیں۔

سرورق کے پشت کی تحریر، واقعی ع قلندر ہر چہ گوید دیدہ گوید۔ مولانا کی تحریروں کا انتخاب بہت جامع ہے۔ لیکن 'قولِ فیصل' میں جا بجا حاشی کی ضرورت ہے۔ ان کے بغیر نئی نسل کے لیے اس کا سمجھنا مشکل ہے۔ اسی طرح فارسی اشعار کا ترجمہ بھی ہونا چاہیے۔ بہت سی آیات قرآنی کا ترجمہ بھی رہ گیا ہے اور ص۲۱۹ پر ایک غلطی بھی ہے 'لُعن الذین' نہیں بلکہ 'لُعن الذین' ہونا چاہیے۔ یعنی ل پر پیش!!

سرورق پر نام انگریزی میں بھی درج ہوتا تو اچھا تھا۔ اسی طرح تصاویر کے نیچے بھی انگریزی میں نام دیے جاتے تو اُردو نہ جاننے والے بھی کچھ واقف ہو جاتے۔ بہر حال یہ ایک دستاویزی شے ہے۔

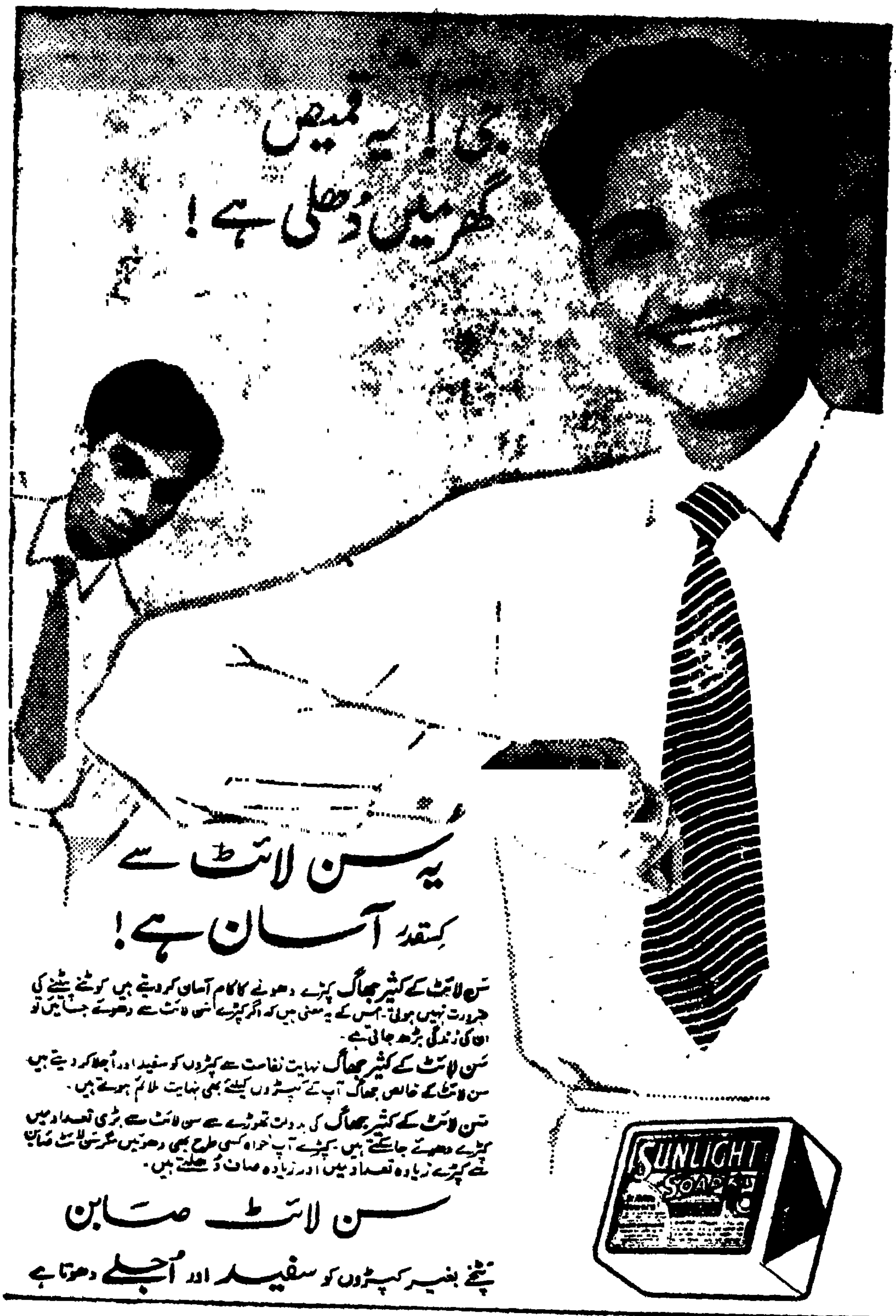
—— ابن غوری، نلگنڈا

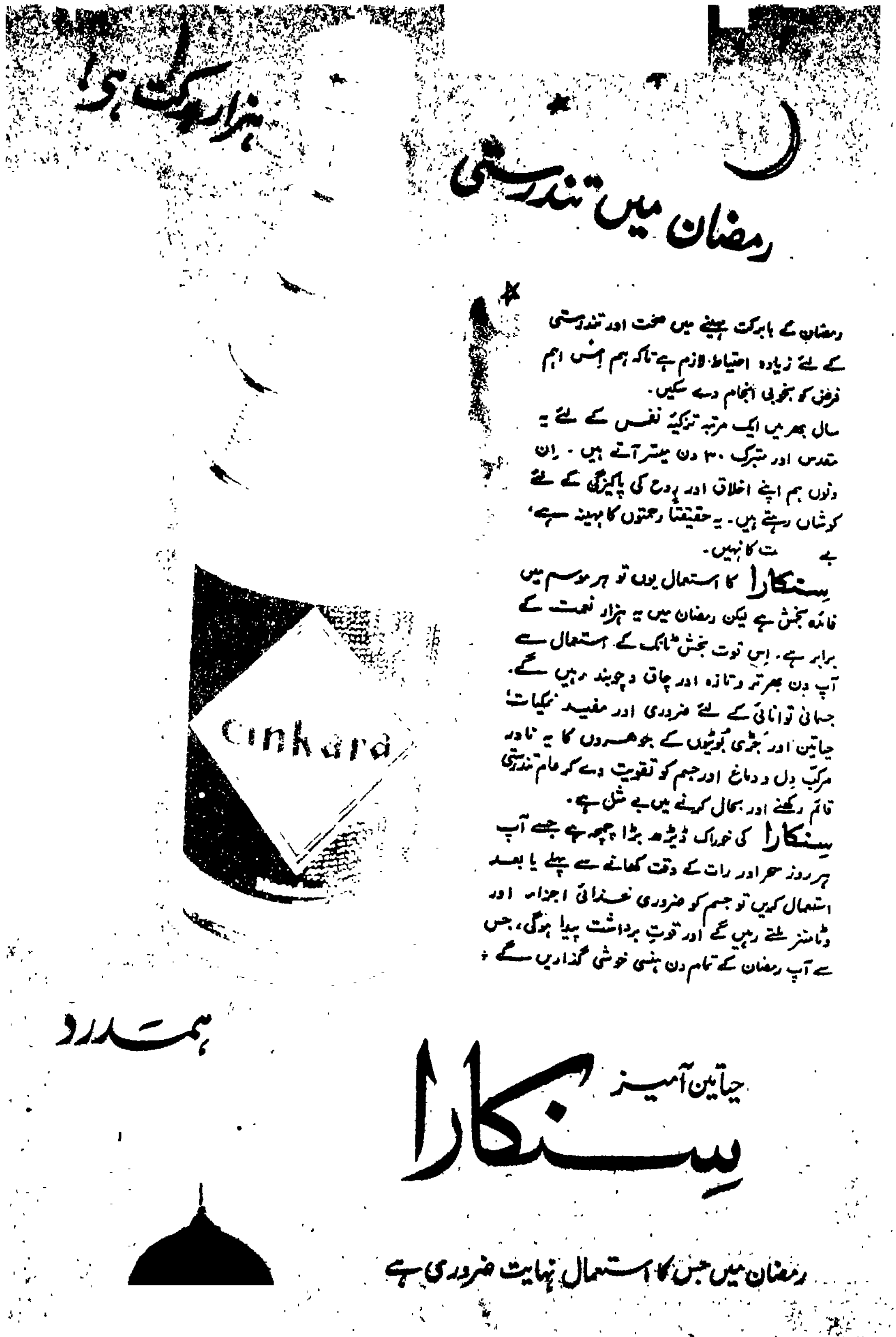
○ ابوالکلام آزاد نمبر نظر نواز ہوا۔ بطور مجموعی اچھا ہے۔ صفحہ ۲۴۳ پر نیچے داہنی طرف جو تصویر شائع کی ہے وہ کسی مغربی ایشیا کے دورے وغیرہ کی نہیں ہے بلکہ مولانا آزاد مرحوم ہندوستان کے مشہور شیعہ عالم سیّد علی نقی مرحوم المعروف بہ نقن صاحب کے ساتھ محو گفتگو ہیں۔ ۱۹۵۱ء میں خمینی مدظلہ العالی کی کوئی ایسی شناخت نہ تھی کہ مولانا آزاد مرحوم موصوف سے ملتے اور تصویر کھنچاتے۔ مہربانی فرما کر اس تاریخی غلطی کو دُرست فرما لیجیے۔ غالباً آپ نے اس تصویر کو غور سے ملاحظہ نہیں فرمایا ورنہ آپ سیّد العلماء کو پہچاننے میں غلطی نہ کرتے۔ اس لیے کہ مرحوم کا دہلی سے گہرا ربط تھا۔(۱)

—— صادق ردولوی، بمبئی

(۱) ہم اس سہو کے لیے معذرت خواہ ہیں۔ (ادارہ)




جی! یہ قمیص
گھر میں دھلی ہے!
یہ سن لائٹ سے
کسقدر آسان ہے!
سن لائٹ کے کثیر جھاگ کپڑے دھونے کا کام آسان کر دیتے ہیں کوٹنے پیٹنے کی ضرورت نہیں ہوتی۔ اس کے یہ معنی ہیں کہ اگر کپڑے سن لائٹ سے دھوئے جائیں تو ان کی زندگی بڑھ جاتی ہے۔
سن لائٹ کے کثیر جھاگ نہایت نفاست سے کپڑوں کو سفید اور اُجلا کر دیتے ہیں سن لائٹ کے خالص جھاگ آپ کے کپڑوں کیلئے بھی نہایت ملائم ہوتے ہیں۔
سن لائٹ کے کثیر جھاگ کی بدولت تھوڑے سے سن لائٹ سے بڑی تعداد میں کپڑے دھوئے جا سکتے ہیں۔ کپڑے آپ خواہ کسی طرح بھی دھوئیں مگر سن لائٹ صابن سے کپڑے زیادہ تعداد میں اور زیادہ صاف دُھلتے ہیں۔
سن لائٹ صابن
پٹخے بغیر کپڑوں کو سفید اور اُجلے دھوتا ہے
SUNLIGHT SOAP



ہزار برکت ہو!
رمضان میں تندرستی
رمضان کے بابرکت مہینے میں صحت اور تندرستی کے لئے زیادہ احتیاط لازم ہے تاکہ ہم اِس اہم فرض کو بخوبی انجام دے سکیں۔
سال بھر میں ایک مرتبہ تزکیۂ نفس کے لئے یہ مقدس اور متبرک ۳۰ دن میسّر آتے ہیں ۔ ان دنوں ہم اپنے اخلاق اور روح کی پاکیزگی کے لئے کوشاں رہتے ہیں۔ یہ حقیقتاً رحمتوں کا مہینہ ہے،
بے ت کا نہیں۔
سنکارا کا استعمال یوں تو ہر موسم میں فائدہ بخش ہے لیکن رمضان میں یہ ہزار نعمت کے برابر ہے۔ اِس قوت بخش ٹانک کے استعمال سے آپ دن بھر تر و تازہ اور چاق و چوبند رہیں گے۔
جسمانی توانائی کے لئے ضروری اور مفید نمکیات، حیاتین اور جڑی بوٹیوں کے جوہروں کا یہ نادر مرکب دل و دماغ اور جسم کو تقویت دے کر عام تندرستی قائم رکھنے اور بحال کرنے میں بے مثل ہے۔
سنکارا کی خوراک ڈیڑھ بڑا چمچہ ہے جسے آپ ہر روز سحر اور رات کے وقت کھانے سے پہلے یا بعد استعمال کریں تو جسم کو ضروری غذائی اجزاء اور وٹامنز ملتے رہیں گے اور قوتِ برداشت پیدا ہوگی، جس سے آپ رمضان کے تمام دن ہنسی خوشی گذاریں گے ÷
Cinkara
ہمدرد
حیاتین آمیز
سِنکارا
رمضان میں جس کا استعمال نہایت ضروری ہے

बलिया की तक़दीर

'यू. पी. का तेलंगाना' सिरनामे से एक लेख हमें देखने को मिला है जो यू. पी. के बलिया ज़िले से सम्बन्ध रखता है. वह लेख कई अख़बारों में निकल चुका है. हमारा ख़्याल है जिनके ग़ौर करने के लिए वह लेख लिखा गया है उनकी नज़रों से ज़रूर गुज़र गया होगा.

पढ़ने वालों के लिए हम कुछ इशारे नीचे देते हैं जिससे हमारे नोट को समझने में आसानी हो.

वह यह हैं:—

1. सुर्ख़ी है—यू. पी. का ते .

2. बलिया के गांव वालों की दुख भरी ज़िन्दगी.

3. किसी कान्फ़्रेन्स का होना.

4. पुलिस की नाराज़गी और गोली चलने तक की नौबत आ जाना.

5. एक पूछताछ कमेटी का इलाहाबाद से जाना. उस पूछताछ के नतीजे की ख़ास बातें यह हैं.

(क) मकानों का पुलिस के हाथों लुटना, और आग से जलना.

(ख) पुलिस के हाथों औरतों, मर्दों की मार पीट और बे इज़्ज़ती.

(ग) पुलिस के बूटों से एक तीन दिन के बच्चे का कुचला जाना, पुलिस का एक तीन चार बरस की लड़की को ढकेलना और उसका बायां हाथ जल कर हमेशा के लिये बेकार हो जाना. पुलिस की मार से एक दस बरस के बच्चे हाथ और पांव बेकार हो जाना.

(घ) एक आदमी का पुलिस की गोली से वहीं पर मर जाना, और दसियों का घायल हो जाना.

6. सरकार का इस तरफ़ ध्यान दिलाना और कहना कि लोग इस वक़्त कम से कम यह चाहते हैं कि ज़िनके ख़िलाफ़ मुक़दमे चल रहे हैं और जो जेल में हैं उनको राजकाजी क़ैदी माना जाय और उनके बचाव के लिए अच्छे वकील का सुभीता हो और मौक़ा मिले.

इन सब बातों पर कुछ लिखने से पहले हम अपने पढ़ने वालों को यह बता देना चाहते हैं कि यह मार्के की घटना बलिया ज़िले की है और दो बरस से ज़ियादा पुरानी है.

पूछताछ कमेटी इसी गये जून के महीने में वहां पहुँची और उसी के एक मेम्बर मुजीब रिज़वी साहब की क़लम से लिखा हुआ यह लेख है जिसका ख़ुलासा हमने ऊपर दिया है.

بلیا کی تقدیر

'یو پی کا تیلنگانا' سر نامہ سے ایک لیکھ ہمیں دیکھنے کو ملا ہے جو یو. پی کے بلیا ضلع سے سمبندھ رکھتا ہے. وہ لیکھ کئی اخباروں میں نکل چکا ہے. ہمارا خیال ہے جن کے غور کرنے کے لئے وہ لیکھ لکھا گیا ہے اُن کی نظروں سے ضرور گذر گیا ہوگا.

پڑھنے والوں کے لئے ہم کچھ اِشارے دیتے ہیں جس سے ہمارے نوٹ کو سمجھنے میں آسانی ہو.

وہ یہ ہیں:—

1. سرخی—ہے یو. پی کا تیلنگانا.

2. بلیا کے گاؤں والوں کی دکھ بھری زندگی.

3. کسی کانفرنس کا ہونا.

4. پولیس کی ناراضگی اور گولی چلنے تک کی نوبت آ جانا.

5. ایک پوچھ تاچھ کمیٹی کا الہ آباد سے جانا. اس پوچھ تاچھ کے نتیجے کی خاص باتیں یہ ہیں.

(ک) مکانوں کا پولیس کے ہاتھوں لٹنا، اور آگ سے جلنا.

(کھ) پولیس کے ہاتھوں عورتوں مردوں کی مار پیٹ اور بے عزتی.

(گ) پولیس کے بوٹوں سے ایک تین دن کے بچے کا کچلا جانا، پولیس کا ایک تین چار برس کی لڑکی کو ڈھکیلنا اور اس کا بایاں ہاتھ جل کر ہمیشہ کے لئے بیکار ہو جانا. پولیس کی مار سے ایک دس برس کے بچے کے ہاتھ اور پاؤں بیکار ہو جانا.

(گھ) ایک آدمی کا پولیس کی گولی سے وہیں پر مر جانا، اور دسیوں کا گھایل ہو جانا.

6. سرکار کا اس طرف دھیان دلانا اور کہنا کہ لوگ اس وقت کم سے کم یہ چاہتے ہیں کہ جن کے خلاف مقدمے چل رہے ہیں اور جو جیل میں ہیں اِن کو راج کاجی قیدی مانا جائے اور ان کے بچاؤ کے لئے اچھے وکیل کا سبھیتا ہو اور موقع ملے.

اِن سب باتوں پر کچھ لکھنے سے پہلے ہم اپنے پڑھنے والوں کو یہ بتا دینا چاہتے ہیں کہ یہ مارکے کی گھٹنا بلیا ضلع کی ہے اور دو برس سے زیادہ پرانی ہے.

پوچھ تاچھ کمیٹی اِسی گئے جون کے مہینے میں وہاں پہنچی اور اُسی کے ایک ممبر مجیب رضوی صاحب کی قلم سے لکھا ہوا یہ لیکھ ہے جس کا خلاصہ ہم نے اوپر دیا ہے.

लड़ाई के कुछ ऐसे उसूल सब इन्सानी समाज क़ायम कर चुका है जिन से इसके बुरे नतीजे कम से कम दिखाई दें और आदमी की आत्मा पर इसका मैल कम से कम चढ़े और जल्दी से जल्दी उतर सके. वह उसूल बहुत सीधे सादे उसूल हैं. हम केवल चन्द मिसालें यहां देंगे.

महाभारत के ज़माने में अगर लड़ते लड़ते दुश्मन के हाथ से हथियार गिर जाते थे तो सामने का लड़ने वाला अपने बढ़े हुए हाथ को फ़ौरन रोक लेता था. बे हथियार आदमी पर हथियार चलाना सिपाही की शान के ख़िलाफ़ समझा जाता था. मिसालें हिन्दुस्तान के पुराने इतिहास में भरी पड़ी हैं.

मुहम्मद [redacted] के बादशाह की हैसियत से कई लड़ाइयों में हिस्सा लेना पड़ा. वह जब किसी जत्थे को लड़ने के लिये भेजते तो हमेशा उसे इन लफ़्ज़ों में हिदायत करते—"जो हथियार बांध कर तुम्हारे सामने नहीं खड़ा हुआ है उस पर कभी हमला न करना. औरतों और बच्चों पर कभी हमला न करना. कभी किसी फलदार दरख़्त को न काटना, किसी की खड़ी खेती बरबाद न करना, किसी की इबादत गाह या मज़हबी बुज़ुर्गों पर हमला न करना, दुश्मन अगर लड़ते लड़ते भी सुलह करना चाहे तो फ़ौरन अपना हाथ रोक देना. सचमुच अल्लाह दूसरों के साथ नेकी करने वालों को प्यार करता है."

हज़रत अली की ज़िन्दगी की एक घटना मशहूर है. एक लड़ाई में वह अपने किसी दुश्मन को जंगल में पकड़ पाए. दोनों लड़े. आख़िर हज़रत अली उसे गिरा कर उसकी छाती पर चढ़ बैठे और क़रीब था कि अपने ख़ंजर से उसका काम तमाम कर दें उसने नीचे से पड़े पड़े हज़रत अली के मुंह पर थूक दिया. हज़रत अली का हाथ एक दम रुक गया. वह कुछ सोचने लगे. उन्होंने ख़ंजर हाथ से फेंक दिया और उस आदमी से अलग हट कर खड़े हो गये. दुश्मन भी उठ खड़ा हुआ. उसने हैरान हो कर हज़रत अली से पूछा—"आपने यह क्या किया, मेरी जान आपके हाथ में थी, आपने मुझे कैसे छोड़ दिया." हज़रत अली ने जवाब दिया—"जब मैं तुझ पर वार करने वाला था उस वक़्त मैं तुझे दीन का दुश्मन जान कर अल्लाह की राह में वार कर रहा था. लेकिन जब तू ने मेरे मुंह पर थूका तो मुझे गुस्सा आ गया और अन्दर बदले की आग भड़की. यह दोनों हराम हैं. गुस्से में जो भी काम किया जाये वह अल्लाह की राह में नहीं हो सकता. इसलिये मैंने ख़ंजर फेंक दिया. अगर अब तू चाहे तो मुझे मार सकता है. मैं ऐसी हालत में तुझ पर वार न करूंगा." कहा जाता है कि दुश्मन पर इसका इतना गहरा असर हुआ कि वह फ़ौरन हज़रत अली के क़दमों पर गिर पड़ा.

لڑائی کے کچھ ایسے اُصول سب انسانی سماج قائم کرچکا ہے جن سے اِس کے بُرے نتیجے کم سے کم دکھائی دیں اور آدمی کی آتما پر اِس کا میل کم سے کم چڑھے اور جلدی سے جلدی اُتر سکے۔ یہ اُصول بہت سیدھے سادے اُصول ہیں۔ ہم کیول چند مثالیں یہاں دیں گے۔

مہابھارت کے زمانے میں اگر لڑتے لڑتے دشمن کے ہاتھ سے ہتھیار گر جاتے تھے تو سامنے کا لڑنے والا اپنے بڑھے ہوئے ہاتھ کو فوراً روک لیتا تھا۔ بے ہتھیار آدمی پر ہتھیار چلانا سپاہی کی آن کے خلاف سمجھا جاتا تھا۔ مثالیں ہندوستان کے پرانے اتہاس میں بھری پڑی ہیں۔

محمد صاحب کو عرب کے بادشاہ کی حیثیت سے کئی لڑائیوں میں حصہ لینا پڑا۔ وہ جب کسی جتھے کو لڑنے کے لئے بھیجتے تو ہمیشہ اُسے اِن لفظوں میں ہدایت کرتے—"جو ہتھیار باندھ کر تمہارے سامنے نہیں کھڑا ہوا ہے اُس پر کبھی حملہ نہ کرنا۔ عورتوں اور بچوں پر کبھی حملہ نہ کرنا۔ کبھی کسی پھلدار درخت کو نہ کاٹنا، کسی کی کھڑی کھیتی برباد نہ کرنا، کسی کی عبادت گاہ یا مذہبی بزرگوں پر حملہ نہ کرنا، دشمن اگر لڑتے لڑتے بھی صلح کرنا چاہے تو فوراً اپنا ہاتھ روک دینا۔ سچ مچ اللہ دوسروں کے ساتھ نیکی کرنے والوں کو پیار کرتا ہے۔"

حضرت علی کی زندگی کی ایک گھٹنا مشہور ہے۔ ایک لڑائی میں وہ اپنے کسی دشمن کو جنگل میں پکڑ پائے۔ دونوں لڑے۔ آخر حضرت علی اُسے گرا کر اُس کی چھاتی پر چڑھ بیٹھے اور قریب تھا کہ اپنے خنجر سے اُس کا کام تمام کردیں اُس نے نیچے سے پڑے پڑے حضرت علی کے منہ پر تھوک دیا۔ حضرت علی کا ہاتھ ایک دم رک گیا۔ وہ کچھ سوچنے لگے۔ اُنہوں نے خنجر ہاتھ سے پھینک دیا اور اُس آدمی سے الگ ہٹ کر کھڑے ہوگئے۔ دشمن بھی اُٹھ کھڑا ہوا۔ اُس نے حیران ہوکر حضرت علی سے پوچھا—"آپ نے یہ کیا کیا، میری جان آپ کے ہاتھ میں تھی، آپ نے مجھے کیسے چھوڑ دیا۔" حضرت علی نے جواب دیا—"جب میں تجھ پر وار کرنے والا تھا اُس وقت میں تجھے دین کا دشمن جان کر اللہ کی راہ میں وار کر رہا تھا۔ لیکن جب تو نے میرے منہ پر تھوکا تو مجھے غصہ آگیا اور اندر بدلے کی آگ بھڑکی۔ یہ دونوں حرام ہیں۔ غصے میں جو بھی کام کیا جائے وہ اللہ کی راہ میں نہیں ہوسکتا۔ اس لئے میں نے خنجر پھینک دیا۔ اگر اب تو چاہے تو مجھے مار سکتا ہے۔ میں ایسی حالت میں تجھ پر وار نہ کرونگا۔" کہا جاتا ہے کہ دشمن پر اِس کا اتنا گہرا اثر ہوا کہ وہ فوراً حضرت علی کے قدموں پر گر پڑا۔